﴿وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ﴾
"আর আমি অবশ্যই কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি
উপদেশ গ্রহণের জন্য। সুতরাং উপদেশ গ্রহণের কেউ আছে কি?"
تيسير القرآن
في ترجمة معاني القرآن
তাফসীর
তাইসীরুল কুরআন
অর্থানুবাদঃ
অধ্যাপক মোহাম্মদ মোজাম্মেল হক
তাওহীদ
পাবলিকেশন্স
প্রকাশনায় :
তাওহীদ পাবলিকেশন্স

تيسير القرآن

في ترجمة معاني القرآن

তাফসীর
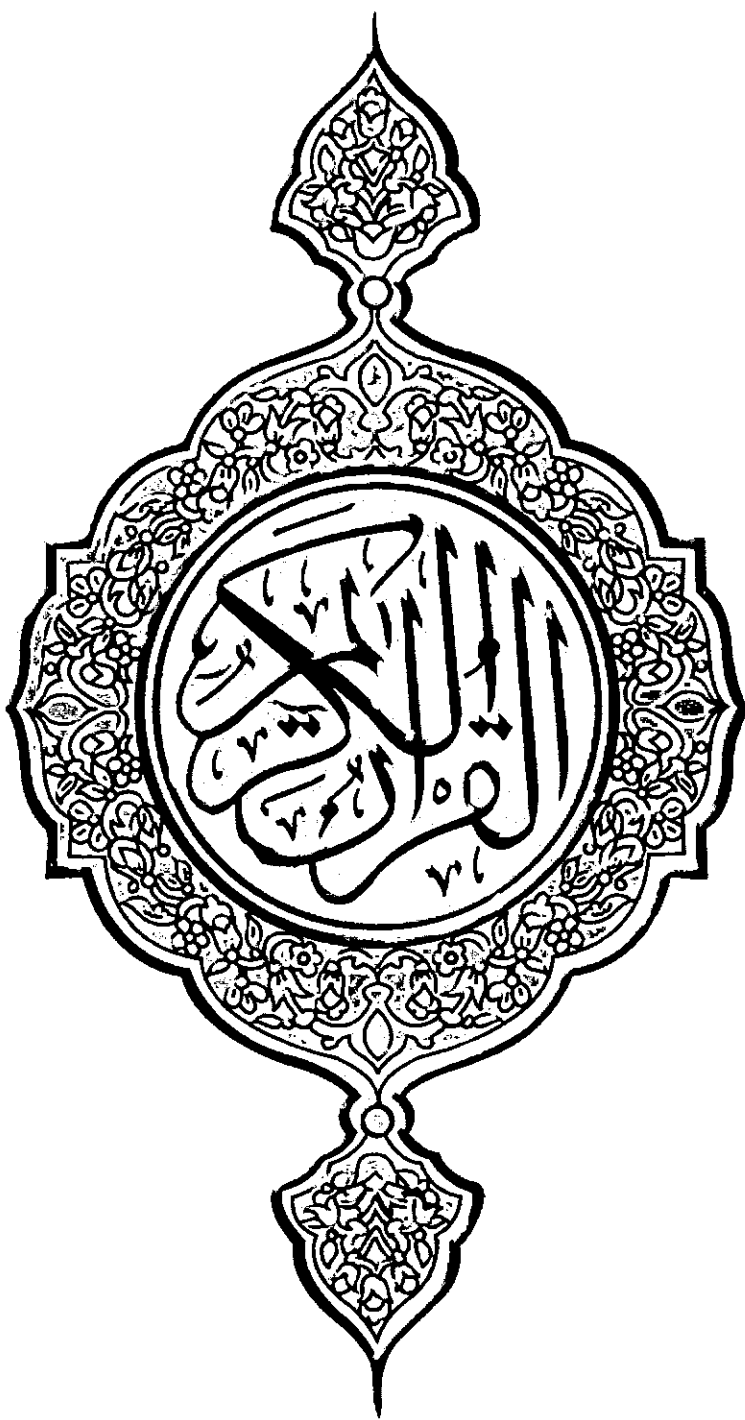
তাইসীরুল কুরআন

অর্থানুবাদঃ

অধ্যাপক মোহাম্মাদ মোজাম্মেল হক

সম্পাদনায়ঃ

ড. আবদুল্লাহ্ ফারুক

(পিএইচডি আলীগড়), সউদী দূতাবাসের অনুবাদ কর্মকর্তা ও সাবেক চেয়ারম্যান, (ইসলামিক স্টাডিজ বিভাগ) চট্টগ্রাম আন্তর্জাতিক ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়।

মুহাম্মাদ সাইফুল্লাহ

কামিল, মাদরাসা-ই আলিয়া ঢাকা, বি এস অনার্স, কিং সঊদ ইউনিভার্সিটি রিয়াদ;
এম এ এরাবিক, দারুল ইহসান বিশ্ববিদ্যালয়
সাবেক অনুবাদ কর্মকর্তা, রাজকীয় সউদী দূতাবাস, বাংলাদেশ;
প্রিন্সিপ্যাল অফিসার, সেন্ট্রাল শরীয়াহ বোর্ড ফর ইসলামিক ব্যাংকস ইন বাংলাদেশ

সম্পাদনা সহযোগীঃ

হাফিয আনিসুর রহমান (লিসান্স, কুল্লিয়াতুল কুরআন, মাদীনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়)
আবদুর রব আফফান (লিসান্স, মাদীনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়)
মুহাম্মাদ মুকাম্মাল হক (বি এ অনার্স, কিং সঊদ ইউনিভার্সিটি, রিয়াদ)
আবূ রাশাদ আজমাল বিন আবদুন নূর (লিসান্স, মাদীনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়)
হাফিয মুহাম্মাদ সানাউল্লাহ (লিসান্স, মাদীনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়)
মুহাম্মাদ ইবরাহীম আল-মাদানী (দাঈ, ধর্ম মন্ত্রণালয় সু'উদী আরব, দক্ষিণ কোরিয়া)
আবদুল ওয়াসে আবদুল কাইয়ুম (দাওরায়ে হাদীস, ঢাকা)

প্রকাশনায়ঃ

তাওহীদ পাবলিকেশন্স

ঢাকা, বাংলাদেশ

তাফসীর তাইসীরুল কুরআন

অর্থানুবাদঃ অধ্যাপক মোহাম্মাদ মোজাম্মেল হক

বিজ্ঞ উলামায়ে কিরাম কর্তক সম্পাদিত

প্রকাশনায়:

তাওহীদ পাবলিকেশন্স

৯০, হাজী আবদুল্লাহ সরকার লেন, বংশাল, ঢাকা-১১০০

ফোন : ৭১১২৭৬২, ০১১৯০-৩৬৮২৭২, ০১৭১১-৬৪৬৩৯৬, ০১৯১৯-৬৪৬৩৯৬

ওয়েবসাইট: www.tawheedpublications.com

ইমেল: tawheedpp(@)gmail.com, tawheedpublications@gmail.com

প্রথম প্রকাশ (বাংলাদেশে): রামাযান ১৪২৮ হিজরী, সেপ্টেম্বর ২০০৭ ঈসায়ী

দ্বিতীয় সংস্করণ ও তৃতীয় মুদ্রণ (বাংলাদেশে): জানুয়ারী ২০১২ ঈসায়ী

মুদ্রণে: হেরা প্রিন্টার্স, হেমেন্দ্র দাস, রোড, ঢাকা

বিনিময়: ১২০০/- (এক হাজার দুই শত টাকা মাত্র) (বিষয়সূচীসহ)
৬০০/- (ছয় শত টাকা মাত্র) (বিষয়সূচী ছাড়া)

ISBN: 978-984-8766-01-9

9 789848 766019

Tafsir Taiseerul Quraan *Translated by:* Muhammad Muzammil Haque. *Edited by:* Dr. Abdullah Farooq Al-Salafi & Muhammad Saifullah. *Published by:* Tawheed Publichtions 90 Hazi Abdullah Sarkar Lane. Bongshal, Dhaka-1100, Phone: 7112762, 01190-368272, 01711-646396, 01919-646396 Price: BDT. (With Index) 1200/- *(One Thousand and Two Haundred Taka Only)* (Without Index) 600/- *(Six Haundred Taka Only)*

এ তাফসীটির বিশেষ বৈশিষ্ট্যসমূহ

১. অতি সহজ ভাষায় অনূদিত।

২. আসমা ওয়াস-সিফাত, অর্থাৎ আল্লাহ তা'আলার গুণবাচক নাম সম্বলিত আয়াতসহ আক্বীদাহ বিষয়ক আয়াতগুলোর সঠিক তরজমা

৩ আয়াত সংশ্লিষ্ট হাদীসগুলো শুধুমাত্র বুখারী ও মুসলিম থেকে গ্রহণ করা হয়েছে।

৪. সহীহ হাদীসগুলোর নয়টি গ্রন্থের (বুখারী, মুসলিম, তিরমিযী, নাসাঈ, আবূ দাউদ, ইবনু মাজাহ, মুওয়াত্তা, মুসনাদ আহমাদ ও দারেমী) আলোকে তাখরীজ ও সহায়ক হাদীস নম্বর উল্লেখ করা হয়েছে। বুখারী, মুসলিম ও ইবনু মাজাহর নম্বর নেয়া হয়েছে ফুয়াদ আবদুল বাকী সম্পাদিত গ্রন্থ থেকে। তিরমিযীর নম্বর নেয়া হয়েছে আহমাদ শাকের সম্পাদিত গ্রন্থ থেকে। আবূ দাউদের নম্বর নেয়া হয়েছে মুহীউদ্দীন সম্পাদিত গ্রন্থ থেকে। আহমাদের নম্বর নেয়া হয়েছে এহইয়াতুত তুরাস সম্পাদিত গ্রন্থ থেকে। মুওয়াত্তা মালিকের নম্বর তার নিজস্ব। সর্বশেষে দারেমীর নম্বর নেয়া হয়েছে আলামী ও রামযালী সম্পাদিত গ্রন্থ থেকে। অর্থাৎ হাদীসের বিস্ময়কর সূচীগ্রন্থ আল-মু'জামুল মুফাহরাস লি আল-ফাযিল হাদীস অবলম্বনে হাদীস নম্বর সংযোজিত হয়েছে।

৫. আল-কুরআনুল কারীমের বিষয়ভিত্তিক ধারাবাহিক সূচীপত্র প্রস্তুত করা হয়েছে। যেখানে প্রায় আড়াই হাজার বিষয়ে প্রথমে সূরা নম্বর ও পরে আয়াত নম্বর উল্লেখ করা হয়েছে।

৬. বাংলা বিষয়সূচীর সাথে সাথে আরবী ভাষাতেও বিষয়গুলোকে উল্লেখ করা হয়েছে এবং আরবী বাক্যের হারাকাত দিয়ে সর্বসাধারণ ও শিক্ষার্থীদের পাঠোপযোগী করা হয়েছে।

৭. বাংলাভাষী পাঠকদের সহজ পাঠের জন্য আরবীর বিশেষ ফন্ট ব্যবহার করা হয়েছে।

৮. সর্বোপরি উন্নতমানের কাগজে মুদ্রিত হয়েছে এবং মজবুত ও আকর্ষণীয়ভাবে বাইন্ডিং করা হয়েছে

Contents

بسم الله الرحمن الرحيم

MOHAMMAD SHAHIDULLAH KHAN
LICENSE: ISLAMIC UNIVERSITY OF MADINA
AL-DAIYAH FROM MINISTRY OF ISLAMIC AFFAIRS K.S.A
PRINCIPAL OF MADTASA DA-RUS SUNNAH, MIRPUR-12 DHAKA

محمد شهيد الله خان بن محمد عبد المنان خان
خريج الجامعة الإسلامية بالمدينة المنورة
الداعية من وزارة الشؤون الإسلامية والأوقاف
والدعوة والإرشاد بالمملكة العربية السعودية
مدير مدرسة دار السنة، ميربور، دكا، بنغلاديش.

Ref: رقم الملف:

Date: التاريخ:

إلي من يهمه الأمر

الحمد لله والصلاة والسلام على رسول الله وعلى آله وصحبه أجمعين أما بعد

فقد تصفحت ترجمة معانى القرآن الكريم (تيسير القرآن في ترجمة معانى القرآن) باللغة البنغلية التى قام بترجمتها الأستاذ/محمد مزمل الحق وقام بمراجعتها فضيلة الدكتور/عبد الله فاروق السلفي وفضيلة الشيخ/سيف الله بن مزمل الحق، فوجدتها أحسن بين الترجمات البنغلية الاخرى وسليمة من الأخطاء اللغوية البنغالية

وارجو من الجهه الخاصة القيام بطباعتها ونشرها بين المسلمين البنغاليين حيث أنهم بأمس الحاجة إليها

وأسال الله تعالى أن يتقبل منكم هذا العمل الصالح ويجعله في ميزان حسناتكم وينفع به الإسلام والمسلمين. وصلى الله على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين

أخوكم في الله

محمد شهيد الله خان

الداعية من قبل وزارة الشؤون الإسلامية
والأوقاف والدعوة والإرشاد بالرياض في بنغلاديش
ومدير مدرسة دار السنة، ميربور، دكا، بنغلاديش.

بسم الله الرحمن الرحيم

د. محمد عبد الصمد خبير الدين

بكالوريوس اللغة العربية، والماجستير، والدكتوراة (نحو وصرف)
جامعة الإمام محمد بن سعود الإسلامية بالرياض
المملكة العربية السعوديه
الأستاذ المساعد ورئيس قسم اللغة العربية وآدابها
بالجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، فرع دكا
تلفون: ٨٦١٣٢٩٤، فاكس: ٨٦٢٤٦٩٢-٢-٠٠٨٨
عضو اللجنة الشرعية
للبنك الإسلامي البنغلاديشي المحدود

Dr. Mohd. Abdus Samad
B.A (Hons.) M.A. Ph.D (Al-Imam Islamic University
K.S.A
Assit Professor & Head
Dept of Arabic Language & Literature
International Islamic University chittagong (IIUC)
Dhaka Campus
House # 22/B Road # 02, Dhanmandi, Dhaka 1205
Phone 8620115 8613294
Member Shariah Council
Islami Bank Bangladesh Ltd (IBBL)
Tel 02-9569038(0
Mobile : 01715-033597

إلى من يهمه الأمر

الحمد لله وحده والصلاة والسلام على من لا نبي بعده وعلى آله وصحبه أجمعين

وبعد

فقد قرأت ترجمة معاني القرآن الكريم باللغة البنغالية التي قام بترجمتها الأخ الاستاذ مزمل الحق وقام بمراجعتة فضيلة الدكتور عبد الله فاروق السلفي وفضيلة الشيخ سيف الله مزمل الحق، فوجدتها جيدة وسليمة من الأخطاء اللغوية والأسلوبية وأنها صالحة للطباعة والنشر والتوزيع

ونظرا لحاجة أبناء المسلمين الذين يتكلمون بهذه اللغة أرجو من الجهة المعنية القيام بطباعتها ونشرها

وأسأل الله تعالى أن يتقبل منكم هذا العمل خالصًا لوجهه الكريم ويجعل ذلك في ميزان حسناتكم وجزاكم الله تعالى عن المسلمين خير الجزاء

أخوكم في الله

(د. محمد عبد الصمد خبير الدين)

الأستاذ المساعد ورئيس قسم اللغة العربية وآدابها

فرع دكا، الجامعة الإسلامية العالمية شتاغونغ

بسم الله الرحمن الرحيم

Dr. Abdullah Farooque Al-Salafi
Translator
Royal Embassy of Saudi Arabia in Dhaka
Ex. Head & Asst. Prof. Dept. of Dawah & Islamic Studies, Int. Islamic University of Chittagong

د. عبد الله فاروق السلفي
المترجم بسفارة المملكة العربية السعودية لدى دكا
ورئيس قسم الدعوة والدراسات الإسلامية سابقا
بالجامعة الإسلامية العالمية شيتاغونغ، بنغلاديش

Ref :   Date ....

المقدمة

الحمد لله وكفى والصلاة والسلام على عنده المصطفى، أما بعد :

فإن القرآن الكريم هو رسالة ربانية خالدة ومعجزة سماوية باهرة أنزله الله سبحانه تعالى على خاتم الأنبياء والمرسلين بواسطة جبريل الأمين لهداية الناس أجمعين وهو كنز العقائد الإيمانية ومصدر الأحكام الشرعية ونبراس مضيء لكافة البشرية وهو كتاب تربية وتوجيه وهداية وإرشاد ليخرج الناس من الظلمات إلى النور ويهدي للتي هي أقوم فقد انزله الله سبحانه وتعالى هدى للناس وبينات من الهدى والفرقان وأنزله شفاء للصدور وأنزله مباركا ومصدقا ومهيمنا على الكتب السماوية الأخرى

وهو كتاب أحكمت آياته ثم فصلت من لدن حكيم خبير، وحاجة الناس إليه أشد وأعظم من حاجاتهم إلى المياه والهواء لأنه بمثابة الروح من الجسد حيث يقول الله عز وجل وَكَذَٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ رُوحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنتَ تَدْرِى مَا ٱلْكِتَٰبُ وَلَا ٱلْإِيمَٰنُ وَلَٰكِن جَعَلْنَٰهُ نُورًا نَّهْدِى بِهِۦ مَن نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِىٓ إِلَىٰ صِرَٰطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿٥٢﴾ (الشورى : ٥٢)

لقد كان ولا يزال موضع عناية الدارسين والباحثين منذ بداية نزوله إلى يومنا هذا في كل مصر وعصر ولم يفهمه العرب وحدهم بل فهمه العجم كذلك إما عن طريق دراسة اللغة العربية وإما عن طريق دراسة ترجمة معانيه وتفسيره إلى مختلف لغات العالم وقد درسه المؤمنون كما لا يزال يدرسونه إلى يوم القيامة بكرة وأصيلا وركعا وسجدا ليزدادوا إيمانا وقد ألف العلماء والمفسرون عبر الأزمان المؤلفات الكثيرة لشرح ألفاظه وللكشف عن مراميه وأسراره واستخرجوا الكنوز من معدنه الذى لا ينفد واللؤلؤ والمرجان من بحاره .

إن الترجمة أحد الفنون الصعبة وأما ترجمة معاني القرآن الكريم فهو أصعبها لأنه معجزة خالدة ربانية فكيف يمكن لبشر أن يوفي حق الترجمة لنص يعجز عن الإتيان بمثله كل العجز

وهذا هو السبب أن الترجمة للكتب السماوية قد تعرضت للمعارضات الشديدة في كل عصر من قبل طائفة من المسلمين وعلى الرغم من ذلك قد تصدى العلماء سلفا وخلفا لترجمة معانيه لما ان ﴿هدى للناس﴾ من أهم أسباب نزوله

ولخدمة دين الله المتين قام فضيلة الأستاذ مزمل الحق بترجمة معاني القرآن الكريم وتفسيره باللغة البنغالية التي قمت أنا الموقع أدناه وفضيلة الشيخ سيف الله مزمل الحق بمراجعته. وقد ساعدنا بهذا الخصوص أصحاب الفضيلة محمد عبد الرب عفان وأبو رشاد أجمل بن عبد النور ومحمد مكمل حسين والحافظ أنيس الرحمن ومحمد عبد الواسع عبد القيوم والحافظ ثناء الله.

والأستاذ مزمل الحق صاحب التصانيف تمتاز كتاباته بوضوح وسهولة وأسلوب أدبي شيق وتمتاز هذه الترجمة بمزايا عديدة ومن أهمها : العناية التامة بمنهج السلف الصالح وخاصة في المسائل العقدية، ولغة الترجمة سهلة واضحة يفهمها ويستفيد منها العوام والخواص، وذكر الأحاديث الصحيحة تفسيرا وتوضيحا للآيات الكريمة وتخريج الأحاديث المذكورة فيها من الكتب التسعة، وذكر تحقيق العلامة الفقيد محمد ناصر الدين الالباني سوى الصحيحين، وذكر قائمة موضوعات القرآن الكريم في آخر الكتاب تفصيلا وهذا سوف يساعد العلماء والباحثين والدعاة والخطباء في إلقاء كلماتهم وتوجيهاتهم في ضوء القرآن الكريم

والله أسأل أن يجزي عنا وعن المسلمين الإخوان الأفاضل الذين تكرموا بطبعتها ونشرها وتوزيعها خير الجزا وأخص بالذكر فضيلة الأستاذ الشيخ ضحيان عبد الله الضحيان الذي أعرب عن رغبته الصادقة لطباعتها في ديار المملكة العربية السعودية وأتم الإجراءات لهذا العمل الجليل كما أتوجه بجزيل الشكر إلى فضيلة الاخ العزيز محمد عبد الرب عمان لإتصاله به وبنا مناشرا وهاتفيا فتقبل الله هذا العمل المتواضع خالصا لوجهه الكريم ويجعله في ميزان حسناتهم يوم لا ينفع مال ولا بنون

وصلى الله على سيدنا ونبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين

كتبه

(د. عبد الله فاروق السلفي)

Contents

বিশ্ববিদ্যালয়ের সাবেক সহকারী অধ্যাপক **ড. আবদুল্লাহ ফারূক**। মাদরাসা-ই আলিয়া ঢাকা'র এমএম, রিয়াদের কিং সউদ ইউনিভার্সিটি থেকে বিএ অনার্স; ঢাকার দারুল ইহ্সান বিশ্ববিদ্যালয় থেকে এরাবিকে এমএ (গোল্ড মেডালিস্ট), বাংলাদেশস্থ সউদী দূতাবাসের সাবেক অনুবাদ কর্মকর্তা ও বর্তমানে সেন্ট্রাল শরীয়াহ বোর্ড অব ইসলামী ব্যাংকস বাংলাদেশ এর সিনিয়র অফিসার **মুহাম্মাদ সাইফুল্লাহ**। এ কাজে সাহায্য করেছেন মদীনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়ের লেসান্স (কুল্লিয়াতুল কুরআন) এবং মাদরাসা মুহাম্মাদিয়া আরাবিয়া, ঢাকা'র মুদাররিস **হাফিয আনিসুর রহমান**।

আমি আশা করি বাংলাদেশ তথা বিশ্বের বাংলা ভাষাভাষী কুরআনের পাঠক ও গবেষক এবং ইসলামী গ্রন্থপ্রণেতাগণ এ অনুবাদের মাধ্যমে কুরআনের কাছাকাছি পৌঁছতে পারবেন। আল্লাহর সঙ্গে তাদের গভীর সম্পর্ক গড়ে উঠবে। তারা ইসলামের নাবী ও ইসলামকে গভীরভাবে চিনতে পারবেন এবং ইসলামী জ্ঞান-গৌরব নতুন উদ্দীপনা লাভ করবে। অনুবাদের ক্ষেত্রে কোন প্রকার ত্রুটি বিচ্যুতি উল্লেখ ও দিক নির্দেশনা কৃতজ্ঞতার সঙ্গে গ্রহণ করা হবে। আল্লাহ! তুমি আমাদের ক্ষুদ্র প্রচেষ্টাকে গ্রহণ কর। আমীন!

আল্লাহ তাওফীক দানকারী এবং মুহাম্মাদ (সাঃ) এর উপর সালাত ও সালাম বর্ষিত হোক।

মোহাম্মদ মোজ্জাম্মেল হক
তাং ১০-০৯-২০০৭

Contents

بسم الله الرحمن الرحيم

অনুবাদকের কথা

نحمده ونصلي على رسوله الكريم

আমি আমার অন্তরের অন্তঃস্থল থেকে করুণাময় আল্লাহ সুবহানুহু ওয়া তা'আলার শুকরিয়া আদায় করছি যিনি দুনিয়ার মানুষের প্রতি তাঁর সর্বশেষ বাণী আল-কুরআনুল কারীমের সঙ্গে সংশ্লিষ্ট হওয়ার দুর্লভ সুযোগ আমাকে দান করেছেন। আমি মা'আনিল কুরআনের অনুবাদক নই। এ সম্পর্কিত আরবী ভাষার গভীর জ্ঞান আমার নেই। কুরআনকে বুঝার অদম্য স্পৃহা নিয়ে আমি কয়েকটি অনুবাদগ্রন্থ অধ্যয়ন করেছি। কিন্তু সেগুলোতে করআনকে বুঝার; কমের পক্ষে আয়াতগুলোর বাংলা মর্মার্থ উদ্ধার করার ব্যাপারে আমি অনেক ক্ষেত্রেই হতাশ হয়েছি। বহুদিন থেকেই মনে আশা পোষণ করছিলাম কুরআনের যদি এমন একটা তরজমা হত যা কুরআনের পাঠক তেমনিভাবে বুঝতে পারবেন যেভাবে তারা নিজ মাতৃভাষায় লিখিত গ্রন্থ বুঝে থাকেন। একদিন আমার পুত্র তাওহীদ পাবলিকেশন্সের স্বত্বাধিকারী মোঃ ওয়ালীউল্লাহর উদ্যোগে ও আগ্রহে এ বিশাল কাজে হাত দিলাম। আমার বিদ্যা কম থাকলেও আল্লাহর প্রতি ভরসা আছে অনেক অনেক বেশি। তাই আমি সব সময়ই দৃঢ় চিত্ত ছিলাম যে আল্লাহর ফযল ও করমে এ কাজটি আমি করতে পারব। আমি সামনে রাখলাম আমাদের জাতীয় প্রতিষ্ঠান ইসলামিক ফাউন্ডেশন প্রকাশিত আল-কুরআনের তরজমা যা খুবই যথার্থ ও উচ্চাঙ্গের অনুবাদ গ্রন্থ। কিন্তু আমাদের দেশের অধিকাংশ পাঠক এর অর্থ বোঝার সামর্থ্য রাখে না। সামনে রাখলাম মাওলানা মুহীউদ্দিন খান কৃত তরজমা। এটি বেশ সুন্দর ও ঝরঝরে ভাষায় লেখা। কিন্তু এটির ভাষাও উচ্চাঙ্গের বৈকি। আরো সামনে রেখেছি মদীনা মুনাওওরার বাদশাহ ফাহাদ প্রিন্টিং কমপ্লেক্স প্রকাশিত ড. তাকীউদ্দীন হিলালী ও ড. মুহাম্মদ মুহসিন খান কৃত ইংরেজি তরজমা এবং খ্যাতনামা ইসলামী চিন্তাবিদ মাওলানা মওদূদীর তাফহীমুল কুরআনের মাওলানা আব্দুর রহীম কৃত তরজমা। তরজমার মাঝে বন্ধনীতে প্রয়োজনীয় কিছু কথা লিখে কুরআনের আয়াতগুলো বুঝিয়ে দেয়ার ব্যাপারে আমি শেষোক্ত গ্রন্থদ্বয় হতে সাহায্য গ্রহণ করেছি। অবশেষে পেয়েছি কোলকাতার হাফিয মাওলানা আইনুল বারী আলিয়াভীর তরজমা। এটি আমাকে কিছু কিছু আয়াতের সঠিক অর্থ বুঝতে সাহায্য করেছে। আরবী ভাষায় যাঁদের দক্ষতা আছে এমন বিদ্বজ্জনের দ্বারা আমার অনুবাদকর্ম দেখিয়ে নেয়ার প্রয়োজন ছিল খুব বেশি। এ দায়িত্ব পালন করেছেন পিএইচডি আলীগড়, সউদী দূতাবাসের অনুবাদ কর্মকর্তা ও চট্টগ্রাম আন্তর্জাতিক ইসলামী

﴿وَاللهُ غَالِبٌ عَلَىٰ أَمْرِهِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ﴾ (٢١) سورة يوسف

আল্লাহর ইরাদা বোঝা মানুষের সাধ্যের বাইরে। তাওহীদ পাবলিকেশন্স থেকে ৬ খণ্ডে সহীহুল বুখারীর পূর্ণাঙ্গ বঙ্গানুবাদ বের হয়েছে যা ইতোমধ্যে চারিদিকে বেশ সাড়া জাগিয়েছে। ঠিক এ সময় তাফসীর ছাপানোর জন্য প্রয়োজনীয় টাকা যোগাড় হবে এ কথ কল্পনাও করিনি। ভেবেছি ইনশাআল্লাহ দু'এক বছরের মধ্যে আমাদের দেশেও এটি ছাপানোর কথা চিন্তা করব। আল্লাহ চাহেতো আগে সউদী আরবে ছাপা হোক। ঘটনাক্রমে এক দ্বীনী বোন (গাফারাল্লাহু লাহা)-কে এ গ্রন্থটির কথা বললে তিনি তাঁর পরিচিত আরেক দ্বীনী বোনকে এ ব্যাপারে দীর্ঘ মেয়াদী করযে হাসানা প্রদানের জন্য উৎসাহ প্রদান করার সাথে সাথে তিনি রাজি হয়ে যান (জাযাহুমাল্লাহু আহসানুল জাযা ফিদ দারাইন)। ফলশ্রুতিতে আল্লাহর রহমতে এটির মুদ্রণ কাজ তরান্বিত হয়।

এদিকে এটির কাজ চলার সময় দেশের বিভিন্ন প্রান্ত হতে আসা আলিমদের অনেকেই এটির বিন্যাস পদ্ধতি দেখে তরিৎ প্রাপ্তির জন্য অতিশয় আগ্রহ প্রকাশ করেন। ফলে মুদ্রণের পূর্বেই এর অনেকগুলো কপি বিক্রি হয়ে যায়। আল-হামদু লিল্লাহ।

এ গ্রন্থটির বহুল পঠন ও দীর্ঘ স্থায়িত্বের কথা চিন্তা করে এর মুদ্রণ, কাগজ, বাঁধাই সকল ক্ষেত্রেই প্রথম শ্রেণীর মান বজায় রাখতে গিয়ে, সর্বোপরি কাগজের অগ্নিমূল্যের কারণে ব্যয় কিছুটা বেড়ে গেছে। আপনাদের ক্রয়কষ্টের জন্য আমরাও সমব্যথী।

ভুল-ত্রুটি এড়ানোর জন্য আমাদের আন্তরিকতার কোন ত্রুটি ছিল না। বিশেষ করে আল-কুরআনুল কারীম মুদ্রণের ব্যাপারে সর্তকতা আরো বেশে অবলম্বন করেছি। তথাপি এর মধ্যে কোনরূপ ত্রুটি পরিলক্ষিত হলে, সুহৃদ-পাঠক যদি তা আমাদের অবগত করেন তাহলে আমরা মনে করব এ কল্যাণকর কাজের অগ্রযাত্রায় আপনিও আমাদের কাতারে শামিল হয়েছেন। আল্লাহ আমাদের অনিচ্ছাকৃত ভুল-ত্রুটিগুলো ক্ষমা করুন। আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা'আলা একাজে জড়িত সকলের জন্য একাজটিকে পরকালে নাযাতের ওয়াসিলা বানিয়ে দিন।

﴿رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا إِنَّكَ أَنتَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ﴾ (١٢٧) سورة البقرة

আসুন! আমরা প্রতিদিন কুরআন পড়ি, কুরআনের বাণীকে আত্মস্থ করি। কুরআনের মর্মবানীকে সহজপাঠ্য ও সহজবোধ্য করে তুলি। ঘরে ঘরে এর চর্চা ও অনুশীলন বৃদ্ধি করে তদানুযায়ী আমল করি। ইনশাআল্লাহ এটি পরকালে শাফা'আতকারী হিসেবে দাঁড়াবে এবং মুক্তির পথকে সুগম করবে।

বিনীত
প্রকাশক

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

অফুরন্ত গুণগান একমাত্র আল্লাহ তা'আলার জন্য নির্দিষ্ট যিনি মানব ও জ্বিনের হিদায়াতের জন্য কুরআন অবতীর্ণ করেছেন। যা অতি সহজ, সরল, সুস্পষ্ট, মর্মস্পর্শী ও মু'যিজাসম্বলিত একমাত্র আসমানী গ্রন্থ। জান্নাতের ভাষা আরবী, প্রিয় রসূল (ﷺ)-এর মাতৃবাষা আরবী, আর আল্লাহ রাব্বুল 'আলামীন মহাগ্রন্থ আল-কুরআন'কে মহানাবীর মাতৃভাষা আরবীতে নাযিল করেছেন। মহানাবীর প্রতি শতকোটি দরূদ ও সালাম বর্ষিত হোক।

অধিকাংশ বাংলাভাষীর পক্ষে বঙ্গানুবাদ ছাড়া কুরআন বুঝার উপায় নেই। এ পর্যন্ত বহু আলিম এ গ্রন্থটির বঙ্গনুবাদ করলেও তাঁরা অনেকেই উচ্চাঙ্গের ভাষা ব্যবহার করেছন। ফলে স্বল্প শিক্ষিত এ বিশাল সমাজের নিকট এ মর্মার্থ যেমন রয়ে গেছে দুর্বোধ্য, তেমনি এর মর্মার্থ বোঝার ব্যাপারেও দেখা যায় উদাসীনতা।

বহুদিনের সুপ্ত আকাঙ্ক্ষা ছিল সর্বসাধাপরণের নিকট যদি এমন একটি সহজ অনুবাদ পেশ করা যেত, যাতে তারা আল-কুরআনের মর্মোদ্ধারে সক্ষম হতেন।

শেষ পযন্ত আল্লাহ সুবহানাহু ওয়া তা'আলা তার কয়েকজন বান্দাকে এ কাজে মনোনীত করলেন। আমার শ্রদ্ধেয় আব্বা অধ্যাপক মোহাম্মাদ মোজাম্মেল হক অদম্য স্পৃহা নিয়ে এ কাজে হাত দিলেন। কয়েক বছরের অক্লন্ত পরিশ্রমের ফলে এটির অনুবাদ সম্পাদিত হল। তৎসঙ্গে এর সম্পাদনার গুরু দায়িত্ব অর্পণ করা হলো দু'জন বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ, অনুবাদক, লেখক ড. আবদুল্লাহ ফারুক ও মাহাম্মাদ সাইফুল্লাহর উপর, যাঁদের পরিচয় গ্রন্থের প্রথমভাগে উল্লেখ করা হয়েছে। মাদীনা ইসলামী বিশ্ববিদ্যালয়ের লিসান্স (কুল্লিয়াতুল কুরআন) সনদপ্রাপ্ত এবং মাদরাসা মুহাম্মাদিয়া আরাবিয়া, ঢাকা'র মুদাররিস হাফিয আনিসুর রহমানও এটির মুরাজে'আর কাজে অংশ নেন।

২০০৫ সালেরস দিকে যখন এর অনুবাদ প্রায় শেষ পর্যায়ে তখন অনুবাদক হাজ্জে গমন করেন। সেখানে গিয়ে দেখা হয় বাংলাদেশের বিশিষ্ট আলিম সউদী আরবের ইসলামিক সেন্টারে দাঈ হিসেবে কর্মরত আবদুর রব আফফানের সাথে। প্রসঙ্গতঃ এ গ্রন্থটির কথা উঠতেই ততিনি এটিকে সউদী আরবে চাপিয়ে সেখানকার বাংল ভাষাভাষীদের মাঝে নামমাত্র মূল্যে বিতরণের পরিকল্পনার কথা জানান। মূলতঃ শাইখ আবদুর রব 'আফফানের ঐকান্তিক প্রচেষ্টায় তরজমাটি শাইখ যাহইয়ান আবদুল্লাহ আযযাহইয়ান এর নিকট পেশ করা হয়। তিনি গ্রন্থটিকে সউদী আরবে প্রকাশের ইচ্ছা ব্যক্ত করেন।

আমরা সউদী আরবের উসায শাইখ যাহইয়ান আবদুল্লাহ আযযাইহহীনকে (আল্লাহ তা'আলা তাঁর নেক খেয়ালকে আরও বিস্তৃত করন এবং তাঁকে এর উত্তম প্রতিদান করুন) শুধুমাত্র সউদী আরবে এটি ছাপানোর অনুমোদন প্রদান করি। অনুবাদক হাজ্জ থেকে ফিরে এসে বাকী কাজ সম্পন্ন করলে আমরা দু' দফা এর কপি সউদী আরবে পাঠাই। সেখানে আবদুর রব 'আফফানসহ বাংলাদেশ ও ভারতের ৫ জন বিশিষ্ট আলিম এ গ্রন্থটি পুঙ্খানুপুঙ্খভাবে পরীক্ষা-নিরীক্ষা করে উপ-সম্পাদনার কাজ শেষ করে বাংলাদেশে প্রেরণ করেন। আল্লাহ রব্বুল 'আলামীন তাদের সকলকে এর উত্তম প্রতিদান দান করুন। আমীন!

কুরআন মাজীদের সূরাভিত্তিক সূচীপত্র

Contents

১. সূরাহ আল-ফাতিহাহ*

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ

আয়াতঃ ৭, রুকূঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ (١)

১. (আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ (٢)

২. যাবতীয় প্রশংসা জগৎসমূহের প্রতিপালক আল্লাহ্‌রই জন্য।

الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ (٣)

৩. যিনি পরম করুণাময় অতি দয়ালু।

مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ؕ (٤)

৪. যিনি প্রতিফল দিবসের মালিক।

إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ؕ (٥)

৫. আমরা কেবল তোমারই 'ইবাদাত করি এবং কেবলমাত্র তোমারই সাহায্য প্রার্থনা করি।

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ (٦)

৬. আমাদেরকে সরল সঠিক পথ প্রদর্শন কর ও তার প্রতি অটুট থাকার তাওফীক দান কর।

صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ۬ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ع (٧)

৭. তাদের পথ, যাদের প্রতি তুমি অনুগ্রহ করেছ। তাদের পথ, যারা গযবপ্রাপ্ত (ইয়াহূদী) নয় ও পথভ্রষ্ট (খ্রিস্টান) নয়।

---

*'উবাদাহ ইব্‌নু সামিত (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি সলাতে সূরাহ্ আল-ফাতিহা পড়ল না, তার নামায হলো না। –বুখারী ৭৫৬, [মুসলিম ৩৯৪, তিরমিযী ২৪৭, নাসায়ী ৯১০, ৯১১; আবূ দাউদ ৮২২, ইবনে মাজাহ ৮৩৭, আহমাদ ২২১৬৩, ২২১৮৬, ২২২৩৭]

আবূ সা'ঈদ ইব্‌নু মু'আল্লা (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি একদা মাসজিদে নাববীতে নামায আদায় করছিলাম, এমন সময় রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমাকে ডাকেন। কিন্তু ডাকে আমি সাড়া দেইনি। পরে আমি বললাম, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমি নামায আদায় করছিলাম। তখন তিনি বললেন, আল্লাহ কি বলেননি যে, "ওহে যারা ঈমান এনেছ! তোমরা সাড়া দেবে আল্লাহ্ ও রসূলের ডাকে, যখন তিনি তোমাদেরকে ডাক দেন" (সূরাহ আনফাল ৮/২৪)। তারপর তিনি আমাকে বললেন, তুমি মাসজিদ থেকে বের হওয়ার আগেই তোমাকে আমি কুরআনের এক অতি মহান সূরাহ্ শিক্ষা দিব। তারপর তিনি আমার হাত ধরেন। এরপর যখন তিনি মাসজিদ থেকে বের হওয়ার ইচ্ছা করেন তখন আমি তাঁকে বললাম, আপনি কি বলেননি যে আমাকে কুরআনের অতি মহান সূরাহ্ শিক্ষা দিবেন? তিনি বললেন: ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ –সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ্‌র জন্য যিনি বিশ্ব জগতের প্রতিপালক, এটা বারবার পঠিত সাতটি আয়াত এবং মহান কুরআন যা কেবল আমাকেই দেয়া হয়েছে। –বুখারী ৪৪৭৪ [৪৬৪৭, ৪৭০৩, ৫০০৬; নাসায়ী ৯১৩, আবূ দাউদ ১৪৫৮, ইবনে মাজাহ ৩৭৮৫, আহমাদ ১৫৩০৩, ১৭৯৩৫; দারিমী ১৪৯২, ৩৩৭১]

আবূ সাঈদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ)-এর একদল সাহাবী কোন এক সফরে যাত্রা করেন। তারা এক আরব গোত্রে পৌঁছে তাদের মেহমান হতে চাইলেন। কিন্তু তারা তাদের মেহমানদারী করতে অস্বীকার করল। সে গোত্রের সরদার বিচ্ছু দ্বারা দংশিত হল। লোকেরা তার (আরোগ্যের) জন্য সব ধরনের চেষ্টা করল। কিন্তু কিছুতেই কোন উপকার হল না। তখন তাদের কেউ বলল, এ কাফেলা যারা এখানে অবতরণ করেছে তাদের কাছে তোমরা গেলে ভাল হত। সম্ভবত, তাদের কারো কাছে কিছু থাকতে পারে। ওরা তাদের নিকট গেল এবং বলল, হে যাত্রীদল! আমাদের সরদারকে বিচ্ছু দংশন করেছে, আমরা সব রকমের চেষ্টা করেছি, কিন্তু কিছুতেই উপকার হচ্ছে না। তোমাদের কারো কাছে কিছু আছে কি? তাদের (সাহাবীদের) একজন বললেন, হ্যাঁ, আল্লাহর কসম আমি ঝাড়-ফুঁক করতে পারি। আমরা তোমাদের মেহমানদারী কামনা করেছিলাম, কিন্তু তোমরা আমাদের জন্য মেহমানদারী

২. সূরাহ: আল-বাক্বারাহ

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ

আয়াতঃ ২৮৬, রুকূ'ঃ ৪০, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আলিফ, লাম, মীম।

الٓمّٓ ج (١)

২. এটা ঐ (মহান) কিতাব যাতে কোন সন্দেহ নেই, মুত্তাকীদের জন্য পথ নির্দেশ।

ذٰلِكَ الْكِتَابُ لَا رَيْبَ صلے فِيهِ ج هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ لا (٢)

৩. যারা গায়বের প্রতি ঈমান আনে, নামায কায়িম করে এবং আমি যে রিযিক তাদেরকে দিয়েছি তাথেকে তারা ব্যয় করে।

اَلَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ لا (٣)

৪. আর তোমার প্রতি যা নাযিল হয়েছে ও তোমার পূর্বে যা নাযিল হয়েছে তাতে তারা বিশ্বাস স্থাপন করে এবং পরকালের প্রতিও তারা নিশ্চিত বিশ্বাসী।

وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ج وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ط (٤)

৫. তারাই তাদের প্রতিপালকের হিদায়াতের উপর প্রতিষ্ঠিত আছে, আর তারাই সফলকাম।

أُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ق وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٥)

৬. নিশ্চয় যারা কুফরী করেছে তাদেরকে তুমি ভয় দেখাও আর না দেখাও উভয়টাই তাদের

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَأَنْذَرْتَهُمْ

করনি। কাজেই আমি তোমাদের ঝাড়-ফুঁক করব না, যে পর্যন্ত না তোমরা আমাদের জন্য পারিশ্রমিক নির্ধারণ কর। তখন তারা এক পাল বকরীর শর্তে তাদের সাথে চুক্তিবদ্ধ হল। তারপর তিনি গিয়ে ﴿اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ﴾ (সূরা ফাতিহা) পড়ে তার উপর ফুঁ দিতে লাগলেন। ফলে সে (এমনভাবে নিরাময় হল) যেন বন্ধন হতে মুক্ত হল এবং সে এমনভাবে চলতে ফিরতে লাগল যেন তার কোন কষ্টই ছিল না।......... হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ২২৭৬ [৫০০৭, ৫৭৩৬, ৫৭৪৯, মুসলিম ৩৯/২৩, হাঃ ২২০১, আহমাদ ১১৩৯৯]

আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেন, যখন ইমাম বলবে: ﴿غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ لا وَلَا الضَّآلِّيْنَ﴾ তখন তোমরা বলবে آمِيْنَ –আল্লাহ আপনি কবূল করুন। যার পড়া ফেরেশতার পড়ার সময় হবে, তার আগের গুনাহ ক্ষমা করে দেয়া হবে। –বুখারী ৪৪৭৫ [৭৮২; মুসলিম ৪১০, তিরমিযী ২৫০, নাসায়ী ৯২৭, ৯২৮, ৯২৯, ৯৩০; আবূ দাউদ ৯৩৫, ৯৩৬; ইবনে মাজাহ ৮৫১, ৮৫৩; আহমাদ ৭১৪৭, ৭২০৩, ৭৬০৪; মালিক ১৯৫-১৯৭, দারিমী ১২৪৭]

أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (٦)

জন্য সমান, তারা ঈমান আনবে না।

خَتَمَ اللهُ عَلَى قُلُوْبِهِمْ وَعَلَى سَمْعِهِمْ ط وَعَلَى أَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ز وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ع (٧)

৭. আল্লাহ তাদের অন্তর ও কানের উপর মোহর করে দিয়েছেন, আর তাদের চোখে আছে আবরণ আর তাদের জন্য আছে মহা শাস্তি।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ بِمُؤْمِنِيْنَ م (٨)

৮. মানুষের মধ্যে এমন লোক আছে যারা বলে, "আমরা আল্লাহ্‌র প্রতি এবং আখেরাতের দিনের প্রতি ঈমান এনেছি" কিন্তু প্রকৃতপক্ষে তারা মু'মিন নয়।

يُخَادِعُوْنَ اللهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ج وَمَا يَخْدَعُوْنَ إِلَّآ أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ط (٩)

৯. তারা আল্লাহ ও মু'মিনদেরকে প্রতারিত করে, আসলে তারা নিজেদেরকে ছাড়া অন্য কাউকে প্রতারিত করে না, কিন্তু এটা তারা উপলব্ধি করতে পারে না।

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ لا فَزَادَهُمُ اللهُ مَرَضًا ج وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ لا ٥ بِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ (١٠)

১০. তাদের অন্তরে আছে ব্যাধি, অতঃপর আল্লাহ তাদের ব্যাধি বাড়িয়ে দিয়েছেন আর তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি, কারণ তারা মিথ্যেবাদী।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ لا قَالُوْٓا إِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ (١١)

১১. তাদেরকে যখন বলা হয়, 'পৃথিবীতে ফাসাদ সৃষ্টি করো না'; তারা বলে, 'আমরা তো সংশোধনকারী'।

أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ لَّا يَشْعُرُوْنَ (١٢)

১২. মূলতঃ তারাই অশান্তি সৃষ্টিকারী, কিন্তু তারা তা বুঝতে পারে না।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَا اٰمَنَ النَّاسُ قَالُوْٓا أَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ السُّفَهَآءُ ط أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ (١٣)

১৩. যখন তাদেরকে বলা হয়, যে সব লোক ঈমান এনেছে তাদের মতো তোমরাও ঈমান আন, তারা বলে, 'নির্বোধেরা যেমন ঈমান এনেছে, আমরাও কি তেমনি ঈমান আনব'? আসলে তারাই নির্বোধ, কিন্তু তারা তা' বুঝতে পারে না।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا صلے ج وَإِذَا

১৪. যখন তারা মু'মিনদের সংস্পর্শে আসে তখন বলে, 'আমরা ঈমান এনেছি'; আর

خَلَوْا إِلٰى شَيَاطِيْنِهِمْ لا قَالُوْٓا إِنَّا مَعَكُمْ لا إِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِئُوْنَ (١٤)

যখন তারা নিভৃতে তাদের শয়ত্বানদের (সর্দারদের) সঙ্গে মিলিত হয় তখন বলে, 'আমরা তোমাদের সাথেই আছি, আমরা শুধু তাদের সঙ্গে ঠাট্টা-তামাশা করি মাত্র'।

اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (١٥)

১৫. আল্লাহ তাদের সঙ্গে (জবাবে) উপহাস করেন এবং তাদের অবাধ্যতায় বিভ্রান্তের মত তাদেরকে ঘুরে মরার অবকাশ দেন।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى ص فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ (١٦)

১৬. তারাই হিদায়াতের বিনিময়ে গোমরাহী ক্রয় করেছে, কিন্তু তাতে তাদের ব্যবসা লাভজনক হয়নি, আর তারা সৎপথপ্রাপ্তও নয়।

مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِي اسْتَوْقَدَ نَارًا ج فَلَمَّآ أَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ فِيْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ (١٧)

১৭. তাদের উদাহরণ, যেমন এক ব্যক্তি আগুন জ্বালালো, তা যখন তার চারদিক আলোকিত করল আল্লাহ তখন তাদের জ্যোতি অপসারণ করে দিলেন এবং তাদেরকে এমন ঘন অন্ধকারে ফেলে দিলেন যে, তারা কিছুই দেখতে পায় না।

صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ لا (١٨)

১৮. তারা বধির, মূক, অন্ধ; কাজেই তারা (হিদায়াতের দিকে) ফিরে আসবে না।

أَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ج يَجْعَلُوْنَ أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ط وَاللّٰهُ مُحِيْطٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ (١٩)

১৯. অথবা যেমন আকাশের বর্ষণমুখর মেঘ, যাতে আছে গাঢ় অন্ধকার, বজ্রধ্বনি ও বিদ্যুৎ চমক, বজ্রধ্বনিতে মৃত্যু ভয়ে তারা তাদের কানে আঙ্গুল ঢুকিয়ে দেয়। আল্লাহ কাফেরদেরকে পরিবেষ্টন করে আছেন।

يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ أَبْصَارَهُمْ ط كُلَّمَآ أَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ لا ق وَإِذَآ أَظْلَمَ عَلَيْهِمْ قَامُوْا ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ بِسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ط إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ع (٢٠)

২০. বিদ্যুৎচমক তাদের দৃষ্টিশক্তি প্রায় কেড়ে নেয়, যখনই বিদ্যুৎচমক তাদের সামনে প্রকাশিত হয়, তখনই তারা পথ চলতে থাকে এবং যখন তাদের উপর অন্ধকার ছেয়ে যায়, তখন তারা থমকে দাঁড়ায়, আল্লাহ ইচ্ছে করলে তাদের শ্রবণ ও দৃষ্টি শক্তি কেড়ে নিতে পারতেন, আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ لا (٢١)

২১. হে মানুষ! 'তোমরা তোমাদের সেই প্রতিপালকের 'ইবাদাত কর যিনি তোমাদেরকে ও তোমাদের পূর্ববর্তীদেরকে সৃষ্টি করেছেন, যাতে তোমরা মুত্তাকী (পরহেযগার) হতে পার'।

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً ص وَّأَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَّكُمْ ج فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ أَنْدَادًا وَّأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٢٢)

২২. যিনি তোমাদের জন্য পৃথিবীকে বিছানা ও আকাশকে ছাদ করেছেন এবং আকাশ হতে পানি বর্ষণ ক'রে তা দ্বারা তোমাদের জীবিকার জন্য ফলমূল উৎপাদন করেন, কাজেই জেনে বুঝে কাউকেও আল্লাহ্র সমকক্ষ দাঁড় করো না।

وَإِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ مِّثْلِهٖ ص وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٢٣)

২৩. আমি আমার বান্দাহ্র প্রতি যা নাযিল করেছি তাতে তোমাদের কোন সন্দেহ থাকলে তোমরা তার মত কোন সূরাহ এনে দাও আর তোমরা যদি সত্যবাদী হও, তবে আল্লাহ ছাড়া তোমাদের সকল সাহায্যকারীকে আহ্বান কর।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ صلے ج أُعِدَّتْ لِلْكَافِرِيْنَ (٢٤)

২৪. যদি তোমরা না পার এবং কক্ষনো পারবেও না, তাহলে সেই আগুনকে ভয় কর, যার ইন্ধন হবে মানুষ এবং পাথর, যা প্রস্তুত রয়েছে কাফেরদের জন্য।

وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ أَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ط كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ رِّزْقًا لا قَالُوْا هٰذَا الَّذِيْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ لا وَأُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ط وَلَهُمْ فِيْهَآ أَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّهُمْ فِيْهَا خَالِدُوْنَ (٢٥)

২৫. যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে তাদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্য আছে জান্নাত, যার তলদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত। তাদেরকে যখনই ফলমূল খেতে দেয়া হবে, তখনই তারা বলবে, আমাদেরকে পূর্বে জীবিকা হিসেবে যা দেয়া হতো, এতো তারই মতো। একই রকম ফল তাদেরকে দেয়া হবে এবং সেখানে রয়েছে তাদের জন্য পবিত্র সঙ্গিণী, তারা সেখানে চিরস্থায়ী হবে।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيِيْٓ أَنْ يَّضْرِبَ مَثَلًا مَّا

২৬. নিশ্চয় আল্লাহ্তো মশা অথবা তার চেয়েও ক্ষুদ্র কোন বস্তুর উদাহরণ দিতে লজ্জাবোধ

بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ وَمَا يُضِلُّ بِهٖٓ إِلَّا الْفَاسِقِيْنَ ۙ (٢٦)

করেন না; অতএব যারা ঈমানদার তারা জানে যে, এ সত্য তাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে এসেছে, কিন্তু যারা অবিশ্বাসী তারা বলে যে, আল্লাহ কী উদ্দেশে এ উদাহরণ পেশ করেছেন? (আসল ব্যাপার হল) তিনি এর দ্বারা অনেককেই বিভ্রান্ত করেন, আবার অনেককেই সৎপথে পরিচালিত করেন। বস্তুতঃ তিনি ফাসিকদের ছাড়া আর কাউকেও বিভ্রান্ত করেন না।

الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللهِ مِنْ ۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ ۖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ أَمَرَ اللهُ بِهٖٓ أَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ ؕ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْخَاسِرُوْنَ (٢٧)

২৭. যারা আল্লাহ্‌র সঙ্গে সুদৃঢ় অঙ্গীকার করার পর তা ভঙ্গ করে এবং যে সম্পর্ক অক্ষুণ্ণ রাখার নির্দেশ আল্লাহ করেছেন, তা ছিন্ন করে এবং পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করে, তারাই ক্ষতিগ্রস্ত।

كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللهِ وَكُنْتُمْ أَمْوَاتًا فَأَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٢٨)

২৮. তোমরা আল্লাহ্‌কে কীভাবে অস্বীকার করছ? অথচ তোমরা ছিলে মৃত, অতঃপর তিনি তোমাদেরকে জীবন্ত করেছেন, আবার তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন, তারপর আবার জীবিত করবেন, তারপর তাঁর দিকেই তোমরা ফিরে যাবে।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰٓى إِلَى السَّمَآءِ فَسَوّٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٢٩)

২৯. পৃথিবীর সবকিছু তিনি তোমাদের জন্য সৃষ্টি করেছেন, তারপর তিনি আকাশের দিকে মনোসংযোগ করেন এবং তা সপ্তাকাশে বিন্যস্ত করেন, তিনি সকল বিষয়ে বিশেষভাবে অবহিত।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّيْ جَاعِلٌ فِي الْأَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا أَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ قَالَ إِنِّيْٓ أَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٣٠)

৩০. স্মরণ কর, তোমার প্রতিপালক যখন ফেরেশতাদেরকে বললেন, 'আমি যমীনে প্রতিনিধি সৃষ্টি করছি'; তারা বলল, 'আপনি কি সেখানে এমন কাউকেও পয়দা করবেন যে অশান্তি সৃষ্টি করবে ও রক্তপাত ঘটাবে? আমরাই তো আপনার প্রশংসামূলক তাসবীহ পাঠ ও পবিত্রতা ঘোষণা করি'। তিনি বললেন, 'আমি যা জানি, তোমরা তা জান না'।

Contents

وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْأَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلَآئِكَةِ فَقَالَ أَنْبِئُوْنِيْ بِأَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِيْنَ (٣١)

৩১. এবং তিনি আদাম (عليه السلام)-কে সকল বস্তুর নাম শিক্ষা দিলেন, তারপর সেগুলো ফেরেশতাদের সামনে উপস্থাপন করলেন এবং বললেন, 'এ বস্তুগুলোর নাম আমাকে বলে দাও, যদি তোমরা সত্যবাদী হও'।

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ إِلَّا مَا عَلَّمْتَنَا ط إِنَّكَ أَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (٣٢)

৩২. তারা বলল, 'আপনি পবিত্র মহান, আপনি আমাদেরকে যা শিক্ষা দিয়েছেন, তাছাড়া আমাদের কোন জ্ঞানই নেই, নিশ্চয়ই আপনি সর্বজ্ঞ ও প্রজ্ঞাময়'।

قَالَ يٰٓاٰدَمُ أَنْبِئْهُمْ بِأَسْمَآئِهِمْ ج فَلَمَّآ أَنْبَأَهُمْ بِأَسْمَآئِهِمْ لا قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ إِنِّيْٓ أَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لا وَأَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ (٣٣)

৩৩. তিনি নির্দেশ করলেন, 'হে আদাম! এ জিনিসগুলোর নাম তাদেরকে জানিয়ে দাও'। যখন সে এ সকল নাম তাদেরকে বলে দিল, তখন তিনি বললেন, 'আমি কি তোমাদেরকে বলিনি যে, নভোমণ্ডল ও ভূমণ্ডলের অদৃশ্য বস্তু সম্পর্কে আমি নিশ্চিতভাবে অবহিত এবং তোমরা যা প্রকাশ কর ও গোপন কর, আমি তাও অবগত'?

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلَآئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا إِلَّآ إِبْلِيْسَ ط أَبٰى وَاسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ (٣٤)

৩৪. যখন আমি ফেরেশতাদেরকে বললাম, আদামকে সাজদাহ কর, তখন ইবলীস ছাড়া সকলেই সাজদাহ করল, সে অমান্য করল ও অহঙ্কার করল, কাজেই সে কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ص وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (٣٥)

৩৫. আমি বললাম, 'হে আদাম! তুমি ও তোমার স্ত্রী জান্নাতে বসবাস কর এবং যেখানে যা ইচ্ছে খাও, কিন্তু এই গাছের নিকটে যেয়ো না, গেলে তোমরা সীমালঙ্ঘনকারীদের মধ্যে শামিল হবে'।

৩১। আনাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, ক্বিয়ামাতের দিন মু'মিনগণ একত্রিত হবে এবং তারা বলবে, আমরা যদি আমাদের রবের কাছে আমাদের জন্য একজন সুপারিশকারী পেতাম। এরপর তারা আদম (عليه السلام)-এর কাছে আসবে এবং তাঁকে বলবে, আপনি মানব জাতির পিতা। আপনাকে আল্লাহ তা'আলা নিজ হাতে সৃষ্টি করেছেন। তাঁর মালায়িকাহ দ্বারা আপনাকে সাজদাহ্ করিয়েছেন এবং যাবতীয় বস্তুর নাম আপনাকে শিক্ষা দিয়েছেন। অতঃপর .... হাদীসের শেষ পর্যন্ত। −বুখারী ৪৪৭৬ [৪৪; মুসলিম ১৯৩, তিরমিযী ২৫৯৩, ইবনে মাজাহ ৪৩১২, আহমাদ ১১৭৪৩, ১২০৬০, দারিমী ৫২]

فَأَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَأَخْرَجَهُمَا مِمَّا كَانَا فِيْهِ ص وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ج وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ إِلٰى حِيْنٍ (٣٦)

৩৬. কিন্তু শয়ত্বান তা থেকে তাদের পদস্খলন ঘটাল এবং তারা দু'জন যেখানে ছিল, তাদেরকে সেখান থেকে বের করে দিল; আমি বললাম, 'নেমে যাও, তোমরা পরস্পর পরস্পরের শত্রু, দুনিয়াতে কিছু কালের জন্য তোমাদের বসবাস ও জীবিকা আছে'।

فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ عَلَيْهِ ط إِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ (٣٧)

৩৭. তারপর আদাম ('আ.) তার প্রতিপালকের নিকট হতে কিছু বাণী প্রাপ্ত হল, অতঃপর আল্লাহ তার প্রতি ক্ষমা প্রদর্শন করলেন, তিনি অত্যন্ত ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ج فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ هُدَايَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٣٨)

৩৮. আমি বললাম, 'তোমরা সকলেই এখান হতে নেমে যাও, পরে যখন আমার নিকট হতে তোমাদের কাছে সৎপথের নির্দেশ আসবে তখন যারা আমার সৎপথের অনুসরণ করবে তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা দুঃখিতও হবে না'।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ع (٣٩)

৩৯. আর যারা কুফরী করবে ও আমার নিদর্শনগুলোকে অস্বীকার করবে, তারাই জাহান্নামী; সেখানে তারা চিরকাল থাকবে।

يٰبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَوْفُوْا بِعَهْدِيْٓ أُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ج وَإِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ (٤٠)

৪০. হে বানী ইসরাঈল! আমার সেই অনুগ্রহকে স্মরণ কর, যদ্দারা আমি তোমাদেরকে অনুগৃহীত করেছি এবং আমার সঙ্গে তোমাদের অঙ্গীকার পূর্ণ কর, আমিও তোমাদের সঙ্গে আমার অঙ্গীকার পূর্ণ করব এবং তোমরা কেবল আমাকেই ভয় কর।

وَاٰمِنُوْا بِمَآ أَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا أَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ ص وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ز وَّإِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ (٤١)

৪১. আর তোমরা ঈমান আন সেই কিতাবের প্রতি, যা তোমাদের নিকট আছে তার প্রত্যয়নকারী এবং তোমরাই তার প্রথম প্রত্যাখ্যানকারী হয়ো না এবং আমার আয়াতের বিনিময়ে সামান্য মূল্য গ্রহণ করো না, তোমরা কেবল আমাকেই ভয় কর।

وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٤٢)

৪২. তোমরা সত্যকে মিথ্যের সাথে মিশ্রিত করো না এবং জেনে শুনে সত্য গোপন করো না।

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَارْكَعُوْا مَعَ

৪৩. তোমরা নামায কায়িম কর, যাকাত দাও

الرّٰكِعِيْنَ (٤٣)

এবং রুকূ'কারীদের সঙ্গে রুকূ' কর।

أَتَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَأَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٤٤)

৪৪. তোমরা কি মানুষকে সৎকর্মের নির্দেশ দিবে এবং নিজেদের কথা ভুলে যাবে, অথচ তোমরা কিতাব পাঠ কর, তবে কি তোমরা বুঝ না?

وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ط وَإِنَّهَا لَكَبِيْرَةٌ إِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ لا (٤٥)

৪৫. তোমরা ধৈর্য ও সলাতের মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা কর, আর তা আল্লাহভীরু ব্যক্তিবর্গ ছাড়া অন্য সকলের কাছে নিশ্চিতভাবে কঠিন

الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ أَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَأَنَّهُمْ إِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ع (٤٦)

৪৬. যারা নিশ্চিত বিশ্বাস করে যে, তাদের প্রতিপালকের সঙ্গে তাদের সাক্ষাৎ ঘটবেই এবং তাঁরই দিকে তারা ফিরে যাবে।

يٰبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (٤٧)

৪৭. হে বানী ইসরাঈল! আমার সেই অনুগ্রহকে স্মরণ কর যদ্দারা আমি তোমাদেরকে অনুগৃহীত করেছিলাম এবং পৃথিবীতে সকলের উপরে তোমাদেরকে শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ (٤٨)

৪৮. তোমরা সেদিনকে ভয় কর যেদিন কেউ কারো উপকারে আসবে না এবং কারও সুপারিশ গৃহীত হবে না এবং কারও নিকট থেকে ক্ষতিপূরণ গ্রহণ করা হবে না আর তারা কোন রকম সাহায্যও পাবে না।

وَإِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ

৪৯. স্মরণ কর, আমি যখন তোমাদেরকে ফেরাউন গোষ্ঠী হতে মুক্তি দিয়েছিলাম, যারা

৪৩। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) মু'আয (রাঃ)-কে ইয়ামান দেশে (শাসক হিসেবে) প্রেরণ করেন। অতঃপর বললেন, সেখানকার অধিবাসীদেরকে এ সাক্ষ্য দানের প্রতি আহবান করবে যে, আল্লাহ ব্যতীত প্রকৃত কোন উপাস্য নেই এবং আমি আল্লাহর রসূল। যদি তারা তা মেনে নেয় তবে তাদেরকে অবগত কর যে, আল্লাহ তা'আলা তাদের উপর প্রতি দিনে ও রাতে পাঁচ ওয়াক্ত নামায ফারয করেছেন। যদি সেটাও তারা মেনে নেয় তবে তাদেরকে অবগত কর যে, আল্লাহ তা'আলা তাদের উপর তাদের সম্পদের মধ্য থেকে সদাকাহ (যাকাত) ফারয করেছেন। যেটা ধনীদের নিকট থেকে গৃহীত হবে আর দরিদ্রদের মাঝে প্রদান করা হবে। –বুখারী ১৩৯৫ [১৪৫৮, ১৪৯৬, ২৪৪৮, ৪৩৪৭, ৭৩৭১, ৭৩৭২; মুসলিম ১৯, তিরমিযী ৬২৫, ২০১৪; নাসায়ী ১৪৩৫, আবূ দাউদ ১৫৮৪, ইবনে মাজাহ ১৭৮৩, আহমাদ ২০৭২, দারিমী ১৬১৪]

سُوْٓءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ط وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ (٤٩)

তোমাদের পুত্র সন্তানকে হত্যা ক'রে আর তোমাদের নারীদেরকে জীবিত রেখে তোমাদেরকে মর্মান্তিক যাতনা দিত আর এতে তোমাদের প্রভুর পক্ষ হতে ছিল মহাপরীক্ষা।

وَإِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَأَنْجَيْنٰكُمْ وَأَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ (٥٠)

৫০. স্মরণ কর, যখন তোমাদের জন্য সাগরকে বিভক্ত করেছিলাম এবং তোমাদেরকে উদ্ধার করেছিলাম এবং ফিরআউন গোষ্ঠীকে নিমজ্জিত করেছিলাম আর তোমরা তা চেয়ে চেয়ে দেখছিলে।

وَإِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰىٓ أَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَأَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ (٥١)

৫১. যখন মূসার উপর চল্লিশ রাতের ওয়া'দা করেছিলাম (কিতাব প্রদানের জন্য), তার (চলে যাওয়ার) পর তোমরা তখন বাছুরকে উপাস্যরূপে গ্রহণ করেছিলে, বস্তুতঃ তোমরা তো ছিলে যালিম।

ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٥٢)

৫২. এরপরও আমি তোমাদেরকে ক্ষমা করেছি যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَإِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ (٥٣)

৫৩. স্মরণ কর, যখন আমি মূসাকে কিতাব ও ফুরকান দিয়েছিলাম, যাতে তোমরা সৎপথ অবলম্বন কর।

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ إِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ أَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْٓا إِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا أَنْفُسَكُمْ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ط فَتَابَ عَلَيْكُمْ ط إِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ (٥٤)

৫৪. স্মরণ কর, মূসা যখন আপন কওমের লোককে বলল, 'হে আমার কওম! বাছুরকে উপাস্যরূপে গ্রহণ ক'রে তোমরা নিজেদের প্রতি কঠিন অত্যাচার করেছ, কাজেই তোমরা তোমাদের সৃষ্টিকর্তার নিকট তাওবাহ কর এবং তোমরা নিজেদেরকে (নিরাপরাধীরা অপরাধীদেরকে) হত্যা কর, তোমাদের স্রষ্টার নিকট এটাই শ্রেয়, অতঃপর তিনি তোমাদের প্রতি ক্ষমা প্রদর্শন করলেন, তিনি অত্যন্ত ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।'

وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْكُمُ الصّٰعِقَةُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ (٥٥)

৫৫. স্মরণ কর, যখন তোমরা বলেছিলে, 'হে মূসা! আমরা আল্লাহ্‌কে সরাসরি না দেখা পর্যন্ত তোমাকে কক্ষনো বিশ্বাস করব না'। তখন বজ্র তোমাদেরকে পাকড়াও করেছিল আর তোমরা নিজেরাই তা প্রত্যক্ষ করছিলে।

ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٥٦)

৫৬. অতঃপর তোমাদের মৃত্যুর পর আমি তোমাদেরকে আবার জীবিত করলাম, যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ط كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ط وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (٥٧)

৫৭. আমি মেঘ দ্বারা তোমাদের উপর ছায়া বিস্তার করলাম, তোমাদের কাছে মান্না ও সালওয়া প্রেরণ করলাম, (আর বললাম) তোমাদেরকে যা দান করেছি তা থেকে বৈধ বস্তুগুলো খাও, আর মূলত তারা আমার প্রতি কোন যুল্ম করেনি, বরং তারা নিজেদের প্রতিই যুল্ম করেছিল।

وَإِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ط وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ (٥٨)

৫৮. স্মরণ কর, যখন আমি বললাম, এ জনপদে প্রবেশ কর, সেখানে যা ইচ্ছে আহার কর, দরজা দিয়ে মাথা নুইয়ে প্রবেশ কর এবং বল; 'ক্ষমা চাই'। আমি তোমাদের অপরাধ ক্ষমা করব এবং সৎকর্মশীলদের প্রতি আমার দান বৃদ্ধি করব।

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَأَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ع (٥٩)

৫৯. কিন্তু যারা অত্যাচার করেছিল তারা তাদেরকে যা বলা হয়েছিল তার পরিবর্তে অন্য কথা বলল, কাজেই যালিমদের প্রতি আমি আকাশ হতে শাস্তি প্রেরণ করলাম, কারণ তারা সত্য ত্যাগ করেছিল।

وَإِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ط فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ط قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ

৬০. স্মরণ কর, যখন মূসা ('আ.) তার কওমের জন্য পানি প্রার্থনা করল, আমি বললাম, 'তোমার লাঠি দ্বারা পাথরে আঘাত কর'। ফলে তাথেকে বারটি ঝর্ণা প্রবাহিত হল, প্রত্যেক গোত্র নিজ নিজ পানের জায়গা চিনে নিল, (বললাম)

৫৭। সা'ঈদ ইবনু যায়দ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেনঃ "আল কামাআত" (ব্যাঙের ছাতা) মান্ন জাতীয়। আর তার পানি চোখের রোগের প্রতিষেধক। –বুখারী ৪৪৭৮ [৪৬৩৯, ৫৭০৮; মুসলিম ২০৪৯, তিরমিযী ২০৬৭, ইবনে মাজাহ ৩৪৫৪, আহমাদ ১৬২৮, ১৬৩৫]

৫৮। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেন, বানী ইসরাঈলকে বলা হয়েছিল যে, তোমরা সাজদাহ্ অবস্থায় নগর দ্বারে প্রবেশ কর এবং বল حِطَّةٌ (ক্ষমা চাই) কিন্তু তারা প্রবেশ করল নিতম্ব হেঁচড়াতে হেঁচড়াতে এবং শব্দকে পরিবর্তন করে তদস্থলে বলল حِنْطَةٌ , গম ও যবের দানা। –বুখারী ৪৪৭৯ [৩৪০৩; মুসলিম ৩০১৫, তিরমিযী ২৯৫৬, ৪৪৮০]

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللهِ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ (٦٠)

'আল্লাহ প্রদত্ত রিয্‌ক হতে তোমরা পানাহার কর এবং ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের মত পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করো না'।

وَإِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْأَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ط قَالَ أَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ أَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ط اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَإِنَّ لَكُمْ مَّا سَأَلْتُمْ ط وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ط ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ع (٦١)

৬১. স্মরণ কর, যখন তোমরা বলেছিলে, 'হে মূসা! আমরা একই রকম খাদ্যে কক্ষনো ধৈর্য ধারণ করব না, কাজেই তুমি তোমার প্রতিপালকের কাছে আমাদের জন্য দু'আ কর, তিনি যেন ভূমি হতে উৎপাদিত দ্রব্য শাক-সব্জি, কাঁকড়, গম, মসুর ও পেঁয়াজ আমাদের জন্য উৎপাদন করেন'। মূসা বললঃ 'তোমরা কি উৎকৃষ্ট বস্তুকে নিকৃষ্ট বস্তুর সঙ্গে বদল করতে চাও, তবে কোন নগরে প্রবেশ কর; তোমরা যা চাও তা সেখানে আছে' এবং তাদেরকে লাঞ্ছনা ও দারিদ্র্যের কশাঘাত করা হল ও তারা আল্লাহ্‌র কোপে পতিত হল। তা এজন্য যে, তারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনকে অস্বীকার করত এবং নাবীগণকে অন্যায়ভাবে হত্যা করত। অবাধ্যতা ও সীমালঙ্ঘন করার জন্যই তাদের এ পরিণতি হয়েছিল।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِئِيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ صلے ج وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٦٢)

৬২. নিশ্চয় যারা ঈমান এনেছে, যারা ইয়াহূদী হয়েছে এবং খৃষ্টান ও সাবিঈন– যারাই আল্লাহ ও শেষ দিবসে বিশ্বাস করে ও সৎকাজ করে, তাদের জন্য পুরস্কার তাদের প্রতিপালকের নিকট আছে, তাদের কোন ভয় নেই এবং তারা দুঃখিত হবে না।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ط خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ (٦٣)

৬৩. স্মরণ কর, যখন তোমাদের শপথ নিয়েছিলাম এবং তূর পর্বতকে তোমাদের উপর তুলে ধরেছিলাম, বলেছিলাম, 'আমি যা দিলাম দৃঢ়তার সাথে গ্রহণ কর এবং তাতে যা আছে তা স্মরণ রেখ, যেন তোমরা সাবধান হয়ে চলতে পার'।

ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ (٦٤)

৬৪. এরপরেও তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিলে; আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও অনুকম্পা তোমাদের প্রতি না থাকলে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্তদের পর্যায়ভুক্ত হয়ে যেতে।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ ۚ (٦٥)

৬৫. তোমাদের মধ্যে যারা শনিবার সম্পর্কে সীমালঙ্ঘন করেছিল, তাদেরকে তোমরা অবশ্যই জান, আমি তাদেরকে বলেছিলাম, 'তোমরা ঘৃণিত বানরে পরিণত হও'।

فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ (٦٦)

৬৬. আমি তা তাদের সমসাময়িক ও পরবর্তীগণের শিক্ষা গ্রহণের জন্য দৃষ্টান্ত এবং মুত্তাকীদের জন্য উপদেশ স্বরূপ করেছি।

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖٓ إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ۭ قَالُوْٓا أَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ۭ قَالَ أَعُوْذُ بِاللّٰهِ أَنْ أَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ (٦٧)

৬৭. স্মরণ কর, যখন মূসা ('আ.) স্বীয় সম্প্রদায়কে বলেছিল, 'আল্লাহ তোমাদেরকে একটি গরু যবহ করার আদেশ দিচ্ছেন'; তারা বলেছিল, 'তুমি কি আমাদের সঙ্গে ঠাট্টা করছো'? মূসা বলল, আল্লাহ্‌র আশ্রয় নিচ্ছি, যাতে আমি অজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত না হই।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۭ قَالَ إِنَّهٗ يَقُوْلُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ۭ عَوَانٌۢ بَيْنَ ذٰلِكَ ۭ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ (٦٨)

৬৮. তারা বলল, 'আমাদের জন্য তোমার প্রতিপালককে স্পষ্টভাবে জানিয়ে দিতে বল তা কীরূপ'? মূসা বলল, 'আল্লাহ বলছেন, তা এমন এক গরু যা বৃদ্ধও নয় এবং অল্প বয়স্কও নয়- মধ্য বয়সী। সুতরাং যা (করতে) আদিষ্ট হয়েছ, তা পালন কর'।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا لَوْنُهَا ۭ قَالَ إِنَّهٗ يَقُوْلُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ (٦٩)

৬৯. তারা বলল, 'আমাদের জন্য তোমার প্রতিপালককে স্পষ্টভাবে জানিয়ে দিতে বল, ওর রং কী'? মূসা বলল, 'আল্লাহ বলছেন, তা হলুদ বর্ণের গরু, তার রং উজ্জ্বল গাঢ়, যা দর্শকদেরকে আনন্দ দেয়'।

قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ إِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ۭ وَإِنَّآ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ (٧٠)

৭০. তারা বলল, 'আমাদের জন্য তোমার প্রতিপালককে স্পষ্টভাবে জানিয়ে দিতে বল গরুটি কেমন? কারণ সব গরু আমাদের কাছে সমান, আর আল্লাহ ইচ্ছা করলে নিশ্চয় আমরা পথের দিশা পাব।'

قَالَ إِنَّهُ يَقُوْلُ إِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ تُثِيْرُ الْأَرْضَ وَلَا تَسْقِي الْحَرْثَ ج مُسَلَّمَةٌ لَّاشِيَةَ فِيْهَا ط قَالُوا الْآنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ط فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ع (٧١)

৭১. মূসা বলল, 'তিনি বলছেন, তা এমন এক গরু যা জমি চাষে ও ক্ষেতে পানি সেচের জন্য ব্যবহৃত হয়নি বরং সুস্থ ও নিখুঁত'। তারা বলল, 'এখন তুমি সত্য প্রকাশ করেছ'। তারা তাকে যবহ করল যদিও তাদের জন্য সেটা প্রায় অসম্ভব ছিল।

وَإِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَأْتُمْ فِيْهَا ط وَاللهُ مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ج (٧٢)

৭২. স্মরণ কর, তোমরা যখন এক ব্যক্তিকে হত্যা করেছিলে এবং একে অন্যের প্রতি দোষারোপ করছিলে, তোমরা যা গোপন করছিলে আল্লাহ্ তা প্রকাশ করে দিলেন।

فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ط كَذٰلِكَ يُحْيِ اللهُ الْمَوْتٰى وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (٧٣)

৭৩. আমি বললাম, 'তার (অর্থাৎ যবহকৃত গরুর) কোন অংশ দ্বারা একে আঘাত কর'। এভাবে আল্লাহ্ মৃতকে জীবন দান করেন, আর তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শন দেখিয়ে থাকেন যাতে তোমরা জ্ঞানলাভ করতে পার।

ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ ۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَهِيَ كَالْحِجَارَةِ أَوْ أَشَدُّ قَسْوَةً ط وَإِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ مِنْهُ الْأَنْهٰرُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ط وَإِنَّ مِنْهَا لَمَا يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللهِ ط وَمَا اللهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (٧٤)

৭৪. এরপরও তোমাদের হৃদয় কঠিন হয়ে গেল, তা পাথর কিংবা তদপেক্ষা কঠিন। কতক পাথরও এমন আছে যে তা হতে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হয় এবং কতক এরূপ যে, ফেটে যাওয়ার পর তা হতে পানি নির্গত হয়। আবার কতক এমন যা আল্লাহ্র ভয়ে ধ্বসে পড়ে এবং তোমরা যা কর আল্লাহ্ সে সম্বন্ধে বেখেয়াল নন।

أَفَتَطْمَعُوْنَ أَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلَامَ اللهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهُ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (٧٥)

৭৫. তোমরা কি এই আশা কর যে, তারা তোমাদের কথায় ঈমান আনবে? অথচ তাদের একদল আল্লাহ্র বাণী শ্রবণ করত ও বুঝার পর জেনে শুনে তা বিকৃত করত।

وَإِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْآ اٰمَنَّا صلے ج وَإِذَا

৭৬. যখন তারা মু'মিনদের সংস্পর্শে আসে তখন বলে, 'আমরা বিশ্বাস স্থাপন করেছি'। আবার যখন

خَلَا بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ قَالُوْآ أَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللهُ عَلَيْكُمْ لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٧٦)

তারা নিভৃতে একে অন্যের সঙ্গে মিলিত হয় তখন বলে, 'আল্লাহ তোমাদের কাছে যা (তাওরাতে) ব্যক্ত করেছেন [মুহাম্মাদ (ﷺ) সম্পর্কে] তোমরা কি তা তাদেরকে বলে দাও যাতে এর দ্বারা তারা তোমাদের প্রতিপালকের সম্মুখে তোমাদের বিরুদ্ধে যুক্তি পেশ করবে? তোমরা কি বুঝ না'?

أَوَلَا يَعْلَمُوْنَ أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ (٧٧)

৭৭. তাদের কি জানা নেই যে, যা তারা গোপন রাখে অথবা প্রকাশ করে অবশ্যই আল্লাহ তা জানেন?

وَمِنْهُمْ أُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ إِلَّآ أَمَانِيَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّوْنَ (٧٨)

৭৮. তাদের মাঝে এমন কিছু নিরক্ষর লোক আছে, যাদের মিথ্যা আকাঙ্ক্ষা ছাড়া কিতাবের কোন জ্ঞানই নেই, তারা কেবল অলীক ধারণা পোষণ করে।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ بِأَيْدِيْهِمْ ق ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ عِنْدِ اللهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ط فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ أَيْدِيْهِمْ وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ (٧٩)

৭৯. সুতরাং অভিসম্পাত তাদের জন্য যারা নিজ হাতে কিতাব রচনা করে এবং নিকৃষ্ট মূল্য লাভের জন্য বলে এটা আল্লাহ্র নিকট হতে, তাদের হাত যা রচনা করেছে তার জন্য তাদের শাস্তি অবধারিত এবং তারা যা উপার্জন করে তার জন্যও শাস্তি রয়েছে।

وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّآ أَيَّامًا مَّعْدُوْدَةً ط قُلْ أَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللهِ عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللهُ عَهْدَهٗٓ أَمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٨٠)

৮০. তারা বলে, 'গুটি কয়েক দিন ছাড়া আগুন কক্ষনো আমাদেরকে স্পর্শ করবে না'। বল, 'তোমরা কি আল্লাহ্র নিকট হতে প্রতিশ্রুতি নিয়েছো যে প্রতিশ্রুতি আল্লাহ ভঙ্গ করবেন না? কিংবা আল্লাহ সম্পর্কে এমন কিছু বলছ, যা তোমরা জান না'।

بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّأَحَاطَتْ بِهٖ خَطِيْٓـئَتُهٗ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٨١)

৮১. তবে হাঁ, যারা পাপ কাজ করে এবং যাদের পাপরাশি তাদেরকে ঘিরে ফেলে তারাই জাহান্নামী, সেখানে তারা চিরকাল থাকবে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٨٢)

৮২. আর যারা ঈমান আনে ও নেক 'আমাল করে তারাই জান্নাতবাসী, তারা সেখানে চিরস্থায়ী হবে।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ لَا تَعْبُدُوْنَ إِلَّا اللهَ قف وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا وَّأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ط ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَأَنْتُمْ مُّعْرِضُوْنَ (٨٣)

৮৩. আর স্মরণ কর, যখন বানী ইসরাঈলের শপথ নিয়েছিলাম যে, তোমরা আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো 'ইবাদাত করবে না, মাতা-পিতা, আত্মীয়-স্বজন, অনাথ ও দরিদ্রদের প্রতি সদয় ব্যবহার করবে এবং মানুষের সাথে সদালাপ করবে, নামায কায়িম করবে এবং যাকাত দিবে। কিন্তু অল্প সংখ্যক লোক ছাড়া তোমরা অগ্রাহ্যকারী হয়ে মুখ ফিরিয়ে নিলে।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ أَنْفُسَكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ ثُمَّ أَقْرَرْتُمْ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ (٨٤)

৮৪. আর যখন তোমাদের শপথ নিয়েছিলাম যে, তোমরা একে অন্যের রক্তপাত করবে না এবং স্বজনদেরকে স্বদেশ হতে বহিষ্কার করবে না, তারপর তোমরা তা স্বীকার করেছিলে আর এ বিষয়ে তোমরাই সাক্ষী।

ثُمَّ أَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ أَنْفُسَكُمْ وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ط وَإِنْ يَّأْتُوْكُمْ أُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ إِخْرَاجُهُمْ ط أَفَتُؤْمِنُوْنَ بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ج فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ إِلَّا خِزْيٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ إِلٰٓى أَشَدِّ الْعَذَابِ ط وَمَا اللهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (٨٥)

৮৫. পরন্ত তোমরাই সেই লোক যারা পরস্পর নিজেদেরকে হত্যা করছ এবং তোমাদের একদলকে স্বদেশ থেকে বহিষ্কার করছ, তোমরা নিজেরা তাদের বিরুদ্ধে অন্যায় ও সীমালঙ্ঘন করে পরস্পরের সহযোগিতা করছ এবং তারা যখন বন্দীরূপে তোমাদের নিকট হাজির হয়, তখন তোমরা মুক্তিপণ আদায় কর, মূলতঃ তাদের বহিষ্করণই তোমাদের জন্য ছিল নিষিদ্ধ; তাহলে কি তোমরা কিতাবের কিছু অংশকে বিশ্বাস কর এবং কিছু অংশকে প্রত্যাখ্যান কর? অতএব তোমাদের যারা এমন করে তাদের পার্থিব জগতে লাঞ্ছনা ও অবমাননা ছাড়া আর কী প্রতিদান হতে পারে? এবং ক্বিয়ামাতের দিন তারা কঠিন শাস্তির মধ্যে নিক্ষিপ্ত হবে, আর তারা যা করে সে সম্পর্কে আল্লাহ গাফেল নন।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ز فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ع (٨٦)

৮৬. তারাই পরকালের বিনিময়ে পার্থিব জীবন ক্রয় করে। কাজেই তাদের শাস্তি কম করা হবে না এবং তারা সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَأَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ط أَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ رَسُوْلٌۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى أَنْفُسُكُمُ اسْتَكْبَرْتُمْ ج فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ز وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ (٨٧)

৮৭. এবং নিশ্চয়ই আমি মূসাকে কিতাব দিয়েছি এবং তার পরে ক্রমান্বয়ে রসূলদেরকে প্রেরণ করেছি, মারইয়াম পুত্র ঈসাকে সুস্পষ্ট প্রমাণ দিয়েছি এবং 'পবিত্র আত্মা'যোগে (জিব্রীলের মাধ্যমে) তাকে শক্তিশালী করেছি, অতঃপর যখনই কোন রসূল এমন কিছু এনেছে যা তোমাদের মনঃপুত নয়, তখনই তোমরা অহংকার করেছ এবং কিছু সংখ্যককে অস্বীকার করেছ এবং কিছু সংখ্যককে হত্যা করেছ।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ط بَلْ لَّعَنَهُمُ اللهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا يُؤْمِنُوْنَ (٨٨)

৮৮. তারা দাবী করেছিল যে, 'আমাদের হৃদয় আচ্ছাদিত', বরং কুফরী করার কারণে আল্লাহ তাদেরকে অভিসম্পাত করেছেন, অতএব তাদের অল্প সংখ্যকই ঈমান আনে।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ لا وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ج فَلَمَّا جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ز فَلَعْنَةُ اللهِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (٨٩)

৮৯. তাদের কাছে যা আছে, তার সমর্থক কিতাব যখন আল্লাহ্‌র নিকট থেকে আসল, যদিও পূর্বে কাফিরদের বিরুদ্ধে তারা এর সাহায্যে বিজয় প্রার্থনা করত, আর সেটাকে তারা চিনতেও পারল, তবুও যখন তা তাদের নিকট আসল, তখন তারা তা অবিশ্বাস করল; সুতরাং অবিশ্বাসকারীদের প্রতি আল্লাহ্‌র অভিসম্পাত।

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ أَنْفُسَهُمْ أَنْ يَّكْفُرُوْا بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ بَغْيًا أَنْ يُّنَزِّلَ اللهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ج فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى غَضَبٍ ط وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (٩٠)

৯০. তা কতই না নিকৃষ্ট যার বিনিময়ে তারা নিজেদের আত্মাকে বিক্রি করেছে, তা এই যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন, জিদের বশে তারা তা প্রত্যাখ্যান করত শুধু এজন্য যে, আল্লাহ তাঁর বান্দাহ্‌দের মধ্য হতে যাকে ইচ্ছে অনুগ্রহ করেন, অতএব তারা ক্রোধের উপর ক্রোধের পাত্র হল এবং কাফিরদের জন্যই লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ

৯১. আর যখন তাদেরকে বলা হয়, 'আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তাতে ঈমান আন'; তারা বলে, 'আমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তাতে

بِمَآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ق وَهُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ط قُلْ فَلِمَ تَقْتُلُوْنَ أَنْۢبِيَآءَ اللهِ مِنْ قَبْلُ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٩١)

আমরা বিশ্বাস করি'। অথচ পরবর্তী কিতাবকে (কুরআনকে) তারা প্রত্যাখ্যান করে, যদিও তা সত্য এবং যা তাদের নিকট আছে তার সমর্থক। বল, 'যদি তোমরা বিশ্বাসী ছিলে তবে কেন তোমরা পূর্বে নাবীদেরকে হত্যা করেছিলে'?

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ وَأَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ (٩٢)

৯২. এবং নিশ্চয়ই মূসা তোমাদের নিকট স্পষ্ট প্রমাণসহ এসেছে, তারপরেও তোমরা যালিম সেজে গো-বৎসকে উপাস্যরূপে গ্রহণ করেছিলে।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ط خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ط قَالُوْا سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا ق وَأُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ط قُلْ بِئْسَمَا يَأْمُرُكُمْ بِهٖٓ إِيْمٰنُكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٩٣)

৯৩. স্মরণ কর, যখন তোমাদের শপথ নিয়েছিলাম এবং তূর পর্বতকে তোমাদের উর্ধ্বে তুলেছিলাম এবং বলেছিলাম, 'যা দিলাম তা দৃঢ়রূপে ধারণ কর এবং শ্রবণ কর'। তারা বলেছিল, আমরা শুনলাম ও অমান্য করলাম। কুফ্রীর কারণে তাদের অন্তরে গো-বৎস-প্রীতি শিকড় গেড়ে বসেছিল। বল, 'যদি তোমরা বিশ্বাসী হও, তবে তোমাদের বিশ্বাস যার নির্দেশ দেয়, তা কতই না নিকৃষ্ট'!

قُلْ إِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ عِنْدَ اللهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٩٤)

৯৪. বল, 'যদি আল্লাহ্র নিকট পরকালের বাসস্থান অন্যলোক ছাড়া কেবলমাত্র তোমাদের জন্যই হয়, তাহলে তোমরা মৃত্যু কামনা কর, যদি সত্যবাদী হয়ে থাক'।

وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ أَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْهِمْ ط وَاللهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ (٩٥)

৯৫. কিন্তু তাদের কৃতকর্মের জন্য তারা কক্ষনো তা কামনা করবে না এবং আল্লাহ যালিমদের সম্পর্কে খুবই অবহিত।

وَلَتَجِدَنَّهُمْ أَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى حَيٰوةٍ ج وَمِنَ الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا ج يَوَدُّ أَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ أَلْفَ سَنَةٍ ج وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ أَنْ يُّعَمَّرَ ط وَاللهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ع (٩٦)

৯৬. অবশ্যই তুমি তাদেরকে বেঁচে থাকার ব্যাপারে সকল মানুষ এমনকি মুশরিক অপেক্ষাও অধিক লোভী দেখতে পাবে, তাদের প্রত্যেকেই আকাঙ্ক্ষা করে যদি হাজার বছর আয়ু দেয়া হত, কিন্তু দীর্ঘায়ু তাদেরকে শাস্তি হতে রেহাই দিতে পারবে না, তারা যা করে, আল্লাহ তার দ্রষ্টা।

قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَإِنَّهُ نَزَّلَهُ عَلَىٰ قَلْبِكَ بِإِذْنِ اللهِ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرَىٰ لِلْمُؤْمِنِيْنَ (٩٧)

৯৭. বল, 'যে ব্যক্তি জিবরাঈলের শত্রু হয়েছে, (সে রাগে মরে যাক) কেননা সে তো আল্লাহ্‌র হুকুমে তোমার অন্তরে কুরআন পৌঁছিয়ে দিয়েছে, যা এর পূর্ববর্তী কিতাবের সমর্থক এবং যাতে ঈমানদারদের জন্য পথনির্দেশ ও সুসংবাদ রয়েছে'।

مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰلَ فَإِنَّ اللهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ (٩٨)

৯৮. যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র, তাঁর ফেরেশতাদের ও তাঁর রসূলগণের এবং জিবরীলের ও মীকাইলের শত্রু সাজবে, নিশ্চয়ই আল্লাহও (এসব) কাফিরদের শত্রু।

وَلَقَدْ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ج وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ إِلَّا الْفٰسِقُوْنَ (٩٩)

৯৯. এবং আমি তোমার নিকট সুস্পষ্ট আয়াত নাযিল করেছি, ফাসিকরা ছাড়া অন্য কেউ তা অস্বীকার করে না।

أَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٠٠)

১০০. এটা কি নয় যে তারা যখনই কোন অঙ্গীকার করে, তখনই তাদের কোন না কোন দল সেই অঙ্গীকারকে বর্জন করে? বরং তাদের অধিকাংশই ঈমান রাখে না।

وَلَمَّا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللهِ مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ مِّنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ لا كِتٰبَ اللهِ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ كَأَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ز (١٠١)

১০১. এবং যখন তাদের কাছে আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে রসূল আসল যে এদের নিকট যে কিতাব রয়েছে, সেই কিতাবের সমর্থক, তখন যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তাদের একদল আল্লাহ্‌র কিতাবকে পিঠের পিছনে ফেলে দিল, যেন তারা কিছুই জানে না।

৯৭। আনাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'আবদুল্লাহ ইবনু সালাম (رضي الله عنه) রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর শুভাগমনের খবর পেলেন। তখন তিনি ('আবদুল্লাহ ইবনু সালাম) বাগানে ফল সংগ্রহ করছিলেন। তিনি নাবী (ﷺ) -এর কাছে এসে বললেন, আমি আপনাকে তিনটি বিষয়ে জিজ্ঞেস করব যা নাবী ব্যতীত অন্য কেউ জানেন না। তা হল ক্বিয়ামাতের প্রথম আলামাত কী? জান্নাতীদের প্রথম খাদ্য কী হবে? এবং সন্তান কখন পিতার মত হয় আর কখন মাতার মত হয়? নাবী (ﷺ) বললেন, আমাকে জিব্‌রীল (عليه السلام) এখনই এসব ব্যাপারে জানিয়ে গেলেন, 'আবদুল্লাহ ইবনু সালাম বললেন, জিবরীল? নাবী (ﷺ) বলল, হ্যাঁ। ইবনু সালাম বললেন, সে তো মালায়িকাদের মধ্যে ইয়াহূদীদের শত্রু। তখন নাবী (ﷺ) এই আয়াত পাঠ করলেন,............হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৪৮০ [৩৩২৯; আহমাদ ১১৬৪৬, ১২৫৫৮]

Contents

১০২. এবং সুলায়মানের রাজত্বকালে শয়ত্বানরা যা পাঠ করত, তারা তা অনুসরণ করত, মূলতঃ সুলায়মান কুফরী করেনি বরং শয়ত্বানরাই কুফরী করেছিল, তারা মানুষকে যাদু শিক্ষা দিত এবং যা বাবিলের দু'জন ফেরেশতা হারূত ও মারূতের উপর পৌঁছানো হয়েছিল এবং ফেরেশতাদ্বয় কাকেও (তা) শিখাতো না যে পর্যন্ত না বলত, আমরা পরীক্ষা স্বরূপ, কাজেই তুমি কুফরী কর না, এতদসত্ত্বেও তারা উভয়ের নিকট হতে এমন জিনিস শিক্ষা করতো, যদ্দারা তারা স্বামী-স্ত্রীর মধ্যে বিচ্ছেদ সৃষ্টি করতো, মূলতঃ তারা তাদের এ কাজ দ্বারা আল্লাহ্‌র বিনা হুকুমে কারও ক্ষতি করতে পারত না, বস্তুতঃ এরা এমন বিদ্যা শিখত, যদ্দারা তাদের ক্ষতি সাধিত হত আর এদের কোন উপকার হত না এবং অবশ্যই তারা জানত যে, যে ব্যক্তি ঐ কাজ অবলম্বন করবে পরকালে তার কোনই অংশ থাকবে না, আর যার পরিবর্তে তারা স্বীয় আত্মাগুলোকে বিক্রয় করেছে, তা কতই না জঘন্য, যদি তারা জানত!

وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيَاطِيْنُ عَلٰى مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ج وَمَا كَفَرَ سُلَيْمَانُ وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ النَّاسَ السِّحْرَ ق وَمَآ أُنْزِلَ عَلَى الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ط وَمَا يُعَلِّمَانِ مِنْ أَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَآ إِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ط فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ط وَمَا هُمْ بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ أَحَدٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللهِ ط وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ ط وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ مَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ط قف وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖٓ أَنْفُسَهُمْ ط لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (١٠٢)

১০৩. আর যদি তারা ঈমান আনত এবং মুত্তাকী হত তবে আল্লাহ্‌র নিকট শ্রেষ্ঠতর সুফল ছিল, যদি তারা জানত!

وَلَوْ أَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ عِنْدِ اللهِ خَيْرٌ ط لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ع (١٠٣)

১০৪. হে বিশ্বাসীগণ! তোমরা 'রা'এনা' বলে সম্বোধন করো না, (যার অর্থ আমাদের রাখাল) বরং তোমরা বলবে "উনযুরনা" (অর্থাৎ আমাদের প্রতি নেকদৃষ্টি দিবেন!) এবং শুনে নাও, বস্তুতঃ অবিশ্বাসীদের জন্যই রয়েছে কষ্টদায়ক শাস্তি।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ط وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١٠٤)

১০৫. গ্রন্থধারীদের মধ্যে যারা অবিশ্বাসী তারা ও মুশরিকরা এটা চায় না যে, তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে তোমাদের প্রতি কোন কল্যাণ অবতীর্ণ হোক অথচ আল্লাহ যাকে ইচ্ছে স্বীয় দয়ায় নির্দিষ্ট করে নেন এবং আল্লাহ মহা

مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ أَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ط وَاللهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط

وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (١٠٥)

অনুগ্রহশীল।

مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ أَوْ نُنْسِهَا نَأْتِ بِخَيْرٍ مِّنْهَآ أَوْ مِثْلِهَا ط أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٠٦)

১০৬. আমি কোন আয়াত রহিত করলে কিংবা ভুলিয়ে দিলে, তাথেকে উত্তম কিংবা তারই মত আয়াত নিয়ে আসি, তুমি কি জান না যে, আল্লাহ প্রত্যেক বস্তুর উপর ক্ষমতাবান।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللّٰهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (١٠٧)

১০৭. তুমি কি জান না যে, আকাশমণ্ডলী ও ভূমণ্ডলের রাজত্ব সেই আল্লাহ্‌রই এবং আল্লাহ ছাড়া তোমাদের কোনও অভিভাবক নেই এবং সাহায্যকারীও নেই।

أَمْ تُرِيْدُوْنَ أَنْ تَسْأَلُوْا رَسُوْلَكُمْ كَمَا سُئِلَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ط وَمَنْ يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ (١٠٨)

১০৮. তোমরা কি তোমাদের রসূলকে তেমন প্রশ্ন করতে চাও যেমন মূসাকে প্রশ্ন করা হয়েছিল? যে ব্যক্তি ঈমানের পরিবর্তে কুফরী করে, সে ব্যক্তি অবশ্যই সরল পথ হতে বিচ্যুত হয়।

وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْ ۢبَعْدِ إِيْمَانِكُمْ كُفَّارًا صلے حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ أَنْفُسِهِمْ مِّنْ ۢبَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ج فَاعْفُوْا وَاصْفَحُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللّٰهُ بِأَمْرِهِ ط إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٠٩)

১০৯. গ্রন্থধারীগণের অনেকেই তাদের কাছে সত্য স্পষ্ট হয়ে যাওয়ার পরও তাদের অন্তরে পোষিত হিংসার দাহনে ইচ্ছে পোষণ করে যে, যদি তোমাদেরকে তোমাদের ঈমান আনার পর কুফরীতে ফিরিয়ে নিতে পারত; সুতরাং তোমরা ক্ষমা কর ও মার্জনা কর যে পর্যন্ত না আল্লাহ স্বীয় হুকুম প্রকাশ করেন, নিশ্চয়ই আল্লাহ সকল বস্তুর উপর ক্ষমতাবান।

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ط وَمَا تُقَدِّمُوْا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ ط إِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (١١٠)

১১০. এবং তোমরা নামায কায়িম কর এবং যাকাত দাও এবং যা কিছু সৎ কার্যাবলী তোমরা স্বীয় আত্মার জন্যে আগে পাঠাবে, তোমরা তা আল্লাহ্‌র নিকট পাবে, তোমরা যা কিছু করছো নিশ্চয়ই আল্লাহ তা' দেখছেন।

১০৬। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'উমার (রাঃ) বলেন, উবাই (রাঃ) আমাদের মধ্যে শ্রেষ্ঠতম ক্বারী, আর 'আলী (রাঃ) আমাদের মধ্যে শ্রেষ্ঠতম বিচারক। কিন্তু আমরা উবাই (রাঃ)-এর কিছু কথা বাদ দেই। কারণ উবাই (রাঃ) বলেন, আমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) থেকে যা শুনেছি তার কিছুই ছাড়ব না। অথচ আল্লাহ তা'আলা বলেন, আমি যে আয়াত রহিত করি অথবা ভুলিয়ে দেই ....। -বুখারী ৪৪৮১ [৫০০৫; আহমাদ ২০৫৮১]

وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ إِلَّا مَنْ كَانَ هُوْدًا أَوْ نَصٰرٰى ط تِلْكَ أَمَانِيُّهُمْ ط قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١١١)

১১১. তারা বলে, ইয়াহূদী এবং নাসারাগণ ছাড়া কেউ জান্নাতে প্রবেশ করতে পারবে না, ওটা তাদের আকাঙ্ক্ষা মাত্র। বল, 'যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তবে নিজেদের দলীল পেশ কর'।

بَلٰى ق مَنْ أَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ فَلَهٗٓ أَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ص وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ع (١١٢)

১১২. বরং যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র কাছে আত্মসমর্পণ করে আর সৎকর্মশীল হয়, তার জন্য তার প্রতিপালকের নিকট পুণ্যফল রয়েছে, তাদের কোন ভয় নেই, তাদের কোন দুঃখ নেই।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى عَلٰى شَيْءٍ ص وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ لا وَّهُمْ يَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ط كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ج فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (١١٣)

১১৩. আর ইয়াহূদীরা বলে যে, নাসারাদের মাযহাবের কোন ভিত্তি নেই; নাসারারা বলে যে, ইয়াহূদীদের মাযহাবের কোন ভিত্তি নেই, অথচ তারা কিতাব পাঠ করে, এভাবে যারা কিছু জানে না তারাও ওদের মতই বলে, যার সম্বন্ধে তারা মতবিরোধ করছে, আল্লাহ ক্বিয়ামাতের দিন তাদের মধ্যে সেই বিষয়ের সমাধান করবেন।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ اللّٰهِ أَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِيْ خَرَابِهَا ط أُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ أَنْ يَّدْخُلُوْهَآ إِلَّا خَآئِفِيْنَ ط۵ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْأٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (١١٤)

১১৪. তার চেয়ে বড় যালেম কে, যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র মাসজিদগুলোতে আল্লাহ্‌র নাম নিতে বাধা দেয় এবং ওগুলোর ধ্বংস সাধনের চেষ্টা করে? অথচ ভয়ে ভীত না হয়ে তাদের জন্য মাসজিদে প্রবেশ সঙ্গত ছিল না, এদের জন্য দুনিয়াতে আছে লাঞ্ছনা এবং পরকালে তাদের জন্য রয়েছে কঠিন শাস্তি।

وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ق فَأَيْنَمَا تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ط إِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (١١٥)

১১৫. পূর্ব পশ্চিম আল্লাহ্‌রই, সুতরাং তোমরা যে দিকেই মুখ কর না কেন, সেদিকেই আছে আল্লাহ্‌র চেহারা, আল্লাহ সুবিস্তৃত, সর্বজ্ঞ।

وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا لا سُبْحٰنَهٗ ط بَلْ لَّهٗ مَا

১১৬. তারা বলে যে, আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করেছেন, তিনি অতি পবিত্র, বরং যা কিছু

فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ (١١٦)

আকাশসমূহে এবং ভূমণ্ডলে আছে সমস্তই তাঁর, সকলই তাঁর অনুগত।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ وَإِذَا قَضٰى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ (١١٧)

১১৭. আল্লাহ আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর সৃজনকারী, যখন কোন কাজ করতে মনস্থ করেন, তখন তার জন্য শুধু বলেন, হয়ে যাও, তক্ষুনি তা হয়ে যায়।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ أَوْ تَأْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ (١١٨)

১১৮. যারা কিছু জানে না তারা বলে, কেন আল্লাহ আমাদের সঙ্গে কথা বলেন না? কিংবা আমাদের নিকট কোন নির্দেশ কেন আসে না? এভাবে আগের লোকেরাও তাদের মতই বলত, এদের অন্তরগুলো একই রকম, আমি দৃঢ় বিশ্বাসীদের জন্য নিদর্শনাবলী পরিষ্কারভাবে বিবৃত করেছি।

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْأَلُ عَنْ أَصْحٰبِ الْجَحِيْمِ (١١٩)

১১৯. আমি তোমাকে সত্যদ্বীনসহ সুসংবাদদাতা এবং ভয় প্রদর্শনকারী হিসেবে প্রেরণ করেছি, জাহান্নামীদের সম্বন্ধে তোমাকে কোন প্রশ্ন করা হবে না।

وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ إِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِيْ جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (١٢٠)

১২০. ইয়াহূদী ও নাসারারা তোমার প্রতি রাজী হবে না যে পর্যন্ত না তুমি তাদের ধর্মের আদর্শ গ্রহণ কর। বল, 'আল্লাহ্‌র দেখানো পথই প্রকৃত সুপথ এবং তুমি যদি জ্ঞান আসার পরেও এদের ইচ্ছে অনুযায়ী চল, তাহলে তোমার জন্য আল্লাহ্‌র ক্রোধ হতে রক্ষা করার মত কোন অভিভাবক ও সাহায্যকারী থাকবে না'।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَتْلُوْنَهٗ حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ع (١٢١)

১২১. আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছি, তারা যথাযথভাবে কিতাব তিলাওয়াত করে, তারাই এতে বিশ্বাস পোষণ করে আর যারা এর প্রতি অবিশ্বাস করে, তারাই ক্ষতিগ্রস্ত।

১১৬। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেন, আল্লাহ তা'আলা বলেন, আদম সন্তান আমার ব্যাপারে মিথ্যা কথা বলে। অথচ তার এ কাজ ঠিক নয়। আমাকে গালি দিয়েছে অথচ তার জন্য এটা ঠিক নয়। তার আমার প্রতি মিথ্যারোপ হল, সে বলে যে, আমি তাকে (মৃত্যুর) পূর্বের মত পুনরায় জীবিত করতে সক্ষম নই। আর আমাকে তার গালি দেয়া হল-তার এ কথা যে, আমার সন্তান আছে অথচ আমি স্ত্রী ও সন্তান গ্রহণ থেকে পবিত্র। -বুখারী ৪৪৮২ [আহমাদ ২০৫৮১]

يٰبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَأَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (١٢٢)

১২২. হে বানী ইসরাঈল! আমার সেই অনুগ্রহ স্মরণ কর, যা আমি তোমাদের প্রতি করেছি এবং আমি তোমাদেরকে বিশ্বজগতের সকলের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ نَّفْسٍ شَيْئًا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ (١٢٣)

১২৩. আর তোমরা সেই দিনের ভয় কর, যে দিন কেউ কারো কোন কাজে আসবে না এবং কারো পক্ষ হতে কোন ক্ষতিপূরণ গ্রহণ করা হবে না এবং কারও সুপারিশ ফল দিবে না এবং তারা সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না।

وَإِذِ ابْتَلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ فَأَتَمَّهُنَّ ط قَالَ إِنِّيْ جَاعِلُكَ لِلنَّاسِ إِمَامًا ط قَالَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ط قَالَ لَا يَنَالُ عَهْدِي الظّٰلِمِيْنَ (١٢٤)

১২৪. এবং স্মরণ কর যখন ইব্‌রাহীমকে তার প্রতিপালক কতিপয় বিষয়ে পরীক্ষা করলেন, অতঃপর সে সেগুলো পূর্ণ করল, তখন আল্লাহ বললেন, 'আমি তোমাকে মানবজাতির নেতা করছি'। ইব্‌রাহীম আরয করল, 'আর আমার বংশধর হতেও'? নির্দেশ হল, আমার অঙ্গীকারের মধ্যে যালিমরা শামিল নয়।

وَإِذْ جَعَلْنَا الْبَيْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ وَأَمْنًا ط وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ إِبْرَاهِيْمَ مُصَلًّى ط وَعَهِدْنَآ إِلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ أَنْ طَهِّرَا بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْعٰكِفِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ (١٢٥)

১২৫. এবং স্মরণ কর যখন আমি কা'বাগৃহকে মানুষের জন্য মিলনকেন্দ্র এবং নিরাপদস্থল করলাম এবং বললাম, 'মাকামে ইব্‌রাহীমকে সলাতের স্থান হিসেবে গ্রহণ কর' এবং ইব্‌রাহীম ও ইসমাঈলকে বলেছিলাম, 'আমার গৃহকে তাওয়াফকারী, ই'তিকাফকারী এবং রুকূ' ও সাজদাহ্‌কারীদের জন্য পবিত্র রাখবে'।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ أَهْلَهٗ مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَأُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ أَضْطَرُّهٗٓ إِلٰى عَذَابِ النَّارِ

১২৬. স্মরণ কর যখন ইব্‌রাহীম প্রার্থনা করেছিল, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি এ শহরকে নিরাপদস্থল কর এবং এর অধিবাসীদের মধ্যে যারা আল্লাহ ও পরকালের উপর ঈমান আনে, তাদেরকে ফলমূল হতে জীবিকা প্রদান কর'। নির্দেশ হল, 'যে কেউ কুফরী করবে তাকেও আমি কিছু দিনের জন্য উপকার লাভ করতে

১২৫। আনাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'উমার (রাঃ) বলেছেন, তিনটি বিষয়ে আমার মতামত আল্লাহ্‌র ওয়াহীর অনুরূপ হয়েছে অথবা (তিনি বলেছেন) তিনটি বিষয়ে আমার মতামতের অনুকূলে আল্লাহ ওয়াহী অবতীর্ণ করেছেন। তা হল, আমি বলেছিলাম হে আল্লাহ্‌র রসূল! যদি আপনি মাকামে ইব্‌রাহীমকে সলাতের স্থান হিসাবে গ্রহণ করতেন। এ বিষয়ে আল্লাহ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন .... তোমরা ইবরাহীমের দাঁড়ানোর জায়গাকে সলাতের জায়গারূপে গ্রহণ কর..........হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৪৮৩ [মুসলিম ২৩৯৯, তিরমিযী ২৯৫৯, ২৯৬০; ইবনে মাজাহ ১০০৯, আহমাদ ১৫৮, দারিমী ১৮৪৯]

ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (١٢٦)

দেব এবং তারপর তাকে জাহান্নামের আগুনে দাখিল করব, আর কতই না নিকৃষ্ট তাদের ফেরার জায়গা'!

وَإِذْ يَرْفَعُ إِبْرَاهِيْمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَإِسْمَاعِيْلُ ط رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ط إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (١٢٧)

১২৭. আর (স্মরণ কর) যখন ইবরাহীম ও ইসমাঈল কাবাগৃহের ভিত্তি তুলছিল, তখন প্রার্থনা করল, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের পক্ষ থেকে কবুল কর, নিশ্চয়ই তুমি সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞাতা'।

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَآ أُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ص وَأَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ج إِنَّكَ أَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ (١٢٨)

১২৮. হে আমাদের প্রতিপালক! 'আমাদেরকে তোমার অনুগত কর, আমাদের খান্দানে একদল সৃষ্টি কর, যারা তোমার আজ্ঞাবহ হয় আর আমাদেরকে ইবাদাতের নিয়ম-কানুন শিক্ষা দাও এবং আমাদের অপরাধ ক্ষমা কর, নিশ্চয়ই তুমি অত্যন্ত ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু'।

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ط إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ع (١٢٩)

১২৯. 'হে আমাদের প্রতিপালক! এদের কাছে একজন রসূল এদের মধ্য হতে প্রেরণ কর, যে এদেরকে তোমার আয়াতগুলো পড়ে শুনাবে এবং এদেরকে কিতাব ও জ্ঞান-বিজ্ঞান শিক্ষা দেবে এবং এদেরকে বিশুদ্ধ করবে, নিশ্চয় তুমি ক্ষমতাশালী, প্রজ্ঞাময়।'

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ إِبْرَاهِيْمَ إِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ط وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا ج وَإِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ (١٣٠)

১৩০. সেই নির্বোধ ছাড়া অন্য এমন কে আছে যে মিল্লাতে ইবরাহীম হতে ফিরে যাবে এবং নিশ্চয় আমি তাকে পছন্দ করেছি এবং আখেরাতেও সে নেককারদের অন্তর্গত হবে।

إِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗٓ أَسْلِمْ لا قَالَ أَسْلَمْتُ لِرَبِّ

১৩১. তার প্রতিপালক যখন তাকে বলেছিলেন, 'তুমি আত্মসমর্পণ কর', উত্তরে

১২৭: নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ হতে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেন, তোমার কি জানা নেই যে, তোমার সম্প্রদায় কুরাইশ কা'বা তৈরী করেছে এবং ইবরাহীম -এর ভিত্তির থেকে ছোট নির্মাণ করেছে? ['আয়িশাহ বলেন] আমি তখন বললাম, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আপনি কি ইবরাহীম -এর ভিত্তির উপর কা'বাকে আবার নির্মাণ করবেন না? তিনি বললেন, যদি তোমার গোত্রের কুফরীর যুগ নিকট অতীতে না হত। এ কথা শুনে 'আবদুল্লাহ ইবনু 'উমার বললেন, যদি 'আয়িশাহ এ কথা রসূলুল্লাহ (ﷺ) হতে শুনে থাকেন, তবে আমার মনে হয় যে এ কারণেই রসূলুল্লাহ (ﷺ) হাজরে আসওয়াদ সংলগ্ন দু' রুকনকে চুম্বন করতেন না, বর্জন করেছেন, যেহেতু বাইতুল্লাহ্‌র নির্মাণ কাজ ইবরাহীম -এর ভিত্তের উপর সম্পূর্ণ করা হয়নি। –বুখারী ৪৪৮৩ [১২৬; মুসলিম ১৩৩৩, তিরমিযী ৮৭৫, নাসায়ী ২৯০২, ২৯০৩, ২৯১০; আবূ দাঊদ ২০২৮, ইবনু মাজাহ ২৯৫৫, আহমাদ ২৩৭৭৬, ২৩৮৬৩; মুওয়াত্তা ৮১৩, দারিমী ১৮৬৮, ১৮৬৯]

الْعٰلَمِيْنَ (١٣١)

সে বলল, 'আমি সারা জগতের প্রতিপালকের কাছে আত্মসমর্পণ করলাম'।

وَوَصّٰى بِهَآ إِبْرَاهِيْمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ط يٰبَنِيَّ إِنَّ اللهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ط (١٣٢)

১৩২. আর এ বিষয়ে ইব্রাহীম ও ইয়া'কূব স্বীয় পুত্রগণকে অন্তিম উপদেশ দান করে গেছে– 'হে পুত্রগণ! আল্লাহ এ দ্বীনকে তোমাদের জন্য পছন্দ করেছেন; কাজেই তোমরা মুসলিম না হয়ে মৃত্যুবরণ করো না'।

أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ إِذْ حَضَرَ يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ لا إِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ بَعْدِيْ ط قَالُوْا نَعْبُدُ إِلٰهَكَ وَإِلٰهَ اٰبَآئِكَ إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ وَإِسْحَاقَ إِلٰـهًا وَّاحِدًا صلے ج وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (١٣٣)

১৩৩. তোমরা কি সে সময় উপস্থিত ছিলে, যখন ইয়াকুবের মৃত্যু এসে পৌঁছেছিল? তখন সে তার পুত্রদেরকে জিজ্ঞেস করেছিল, 'আমার পরে তোমরা কার উপাসনা করবে'? পুত্রগণ উত্তর দিয়েছিল, 'আমরা আপনার এবং আপনার পূর্বপুরুষ ইবরাহীম, ইসমাঈল ও ইসহাকের উপাস্যের উপাসনা করব, যিনি অদ্বিতীয় উপাস্য এবং আমরা তাঁরই প্রতি আত্মসমর্পিত।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ج لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ج وَلَا تُسْأَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٣٤)

১৩৪. এ লোকেরা গত হয়ে গেছে, তাদের জন্য তাদের কৃতকর্ম এবং তোমাদের জন্য তোমাদের কৃতকর্ম এবং তাদের কৃতকর্ম সম্বন্ধে তোমাদেরকে জিজ্ঞেস করা হবে না।

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا أَوْ نَصَارٰى تَهْتَدُوْا ط قُلْ بَلْ مِلَّةَ إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا ط وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٣٥)

১৩৫. ওরা বলে, 'তোমরা ইয়াহূদী বা নাসারা হয়ে যাও তাহলে সঠিক পথ পাবে'। বল, 'বরং একনিষ্ঠ হয়ে ইব্রাহীমের ধর্মাদর্শ অনুসরণ কর আর তিনি মুশরিকদের অন্তর্গত ছিলেন না'।

قُوْلُوْآ اٰمَنَّا بِاللهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ إِلٰى إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ أُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ج لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ

১৩৬. তোমরা বল, 'আমরা আল্লাহ্‌র উপর ঈমান এনেছি এবং যা আমাদের প্রতি নাযিল করা হয়েছে এবং যা ইব্‌রাহীম ও ইসমা'ঈল এবং ইসহাক ও ইয়াকূব ও বংশধরদের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছে এবং যা মূসা ও 'ঈসাকে দেয়া হয়েছে আর যা অন্যান্য নাবীগণকে তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে দেয়া হয়েছে (এ সবের প্রতিও ঈমান এনেছি), আমরা এদের মধ্য হতে

أَحَدٍ مِّنْهُمْ ز وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُوْنَ (١٣٦)

কোন একজনের ব্যাপারেও কোন পার্থক্য করি না এবং আমরা তাঁরই কাছে আত্মসমর্পিত'।

فَإِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ج وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ج فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ج وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ط (١٣٧)

১৩৭. সুতরাং এরা যদি তেমন ঈমান আনে, যেমন তোমরা ঈমান এনেছো, তাহলে তারা সঠিক পথ পাবে আর যদি অস্বীকার করে, তবে তারা ভেদাভেদে লিপ্ত, সে অবস্থায় তোমার জন্য তাদের (অনিষ্ট হতে বাঁচার জন্য) আল্লাহ্ই যথেষ্ট এবং তিনিই সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞাতা।

صِبْغَةَ اللّٰهِ ج وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ز وَّنَحْنُ لَهٗ عٰبِدُوْنَ (١٣٨)

১৩৮. (আমাদের দ্বীন) আল্লাহ্র রঙে রঞ্জিত এবং আল্লাহ্র রঙ অপেক্ষা আর কার রঙ উত্তম হবে? এবং আমরা তাঁরই 'ইবাদাতকারী।

قُلْ أَتُحَآجُّوْنَنَا فِي اللّٰهِ وَهُوَ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ج وَلَنَآ أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ج وَنَحْنُ لَهٗ مُخْلِصُوْنَ لا (١٣٩)

১৩৯. বল, 'তোমরা কি আল্লাহ্র সম্বন্ধে আমাদের সাথে ঝগড়া করছ? অথচ তিনি আমাদেরও প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক এবং আমাদের জন্য আমাদের কৃতকর্ম এবং তোমাদের জন্য তোমাদের কৃতকর্ম এবং আমরা তাঁর প্রতি একনিষ্ঠ।'

أَمْ تَقُوْلُوْنَ إِنَّ إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْمَاعِيْلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطَ كَانُوْا هُوْدًا أَوْ نَصٰرٰى ط قُلْ أَأَنْتُمْ أَعْلَمُ أَمِ اللّٰهُ ط وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (١٤٠)

১৪০. তোমরা কি বলছ, 'ইব্রাহীম ও ইসমাঈল এবং ইসহাক ও ইয়াকূব এবং তার বংশধর সকলেই ইয়াহূদী কিংবা নাসারা ছিল'? বল, 'তোমরাই বেশী জান নাকি আল্লাহ'? ঐ ব্যক্তি হতে বড় যালিম আর কে হবে, যে আল্লাহ্র পক্ষ হতে আগত সাক্ষ্যকে গোপন করে? তোমরা যা কিছু করছ, আল্লাহ সে বিষয়ে গাফিল নন।

تِلْكَ أُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ج لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ج وَلَا تُسْأَلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ع (١٤١)

১৪১. এ সব লোক যারা ছিল, তারা গত হয়ে গেছে, তাদের জন্য তাদের কামাই আর তোমাদের জন্য তোমাদের কামাই আর তারা যা করত সে সম্পর্কে তোমাদেরকে জিজ্ঞেস করা হবে না।

১৩৬। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আহলে কিতাব (ইয়াহূদী) ইবরানী ভাষায় তাওরাত পাঠ করে মুসলিমদের কাছে তা আরবী ভাষায় ব্যখ্যা করত। তখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, তোমরা আহলে কিতাবকে বিশ্বাসও কর না আর অবিশ্বাসও কর না এবং (আল্লাহ্র বাণী) "তোমরা বল, আমরা আল্লাহ্তে ঈমান এনেছি এবং যা অবতীর্ণ করা হয়েছে তাতে . . . .।" –বুখারী ৪৪৮৫ [৭৩৬২, ৭৫৪২]

سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِيْ كَانُوْا عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (١٤٢)

১৪২. শীঘ্রই এ নির্বোধেরা বলবে, কিসে তাদেরকে ফিরিয়ে দিল তাদের সেই ক্বিবলা হতে যা তারা অনুসরণ করে আসছিল। বল, পূর্ব এবং পশ্চিম আল্লাহ্‌রই, তিনি যাকে ইচ্ছে সরল পথ প্রদর্শন করেন।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ أُمَّةً وَّسَطًا لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِيْ كُنْتَ عَلَيْهَآ إِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى عَقِبَيْهِ ؕ وَإِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً إِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللهُ ؕ وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِيْعَ إِيْمَانَكُمْ ؕ إِنَّ اللهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (١٤٣)

১৪৩. আর এভাবে আমি তোমাদেরকে মধ্যপন্থী উম্মাত করেছি, যাতে তোমরা লোকেদের উপর সাক্ষী হও এবং নাবী তোমাদের উপর সাক্ষী হয়। আর তুমি এ যাবৎ যে ক্বিবলার উপর ছিলে, তাকে এ উদ্দেশে ক্বিবলা করেছিলাম, যাতে আমি জানতে পারি কে রসূলের অনুসরণ করে আর কে পায়ের ভরে উল্টো দিকে ফিরে যায়। আল্লাহ যাদেরকে হিদায়াত দিয়েছেন তারা বাদে অন্যের নিকট এটা বড়ই কষ্টকর ছিল। আর আল্লাহ তোমাদের ঈমান বিনষ্ট করবেন না, নিশ্চয়ই আল্লাহ মানুষের প্রতি করুণাশীল, অতি দয়ালু।

১৪২। বারা' (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) মাদীনাহ্‌তে ষোল অথবা সতের মাস যাবৎ বাইতুল মাকদিসের দিকে মুখ করে নামায আদায় করেন। অথচ নাবী (ﷺ) বাইতুল্লাহ্‌র দিকে তাঁর কিবলা হওয়াকে পছন্দ করতেন। নাবী (ﷺ) 'আসর এর নামায (কা'বার দিকে মুখ করে) আদায় করেন এবং লোকেরাও তাঁর সঙ্গে নামায আদায় করেন। এরপর তাঁর সঙ্গে নামায আদায়কারী একজন বের হন এবং তিনি একটি মাসজিদের লোকেদের পার্শ্ব দিয়ে গেলেন তখন তারা রুকু অবস্থায় ছিলেন। তিনি বললেন, আমি আল্লাহ্‌কে সাক্ষী রেখে বলছি যে, আমি নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে মক্কাহ্‌র দিকে মুখ করে নামায আদায় করেছি। এ কথা শোনার পর তাঁরা যে অবস্থায় ছিলেন, সে অবস্থায় বাইতুল্লাহ্‌র দিকে ফিরে গেলেন। আর যারা কিবলা বাইতুল্লাহর দিকে পরিবর্তনের পূর্বে বাইতুল মাকদিসের দিকে নামায আদায় অবস্থায় মারা গিয়েছেন ও শহীদ হয়েছেন, তাদের সম্পর্কে আমরা কী বলব তা আমাদের জানা ছিল না। তখন আল্লাহ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করেন– "আল্লাহ এমন নন যে, তোমাদের ঈমান বিনষ্ট করে দেবেন। নিশ্চয় আল্লাহ মানুষের প্রতি পরম মমতাময়, পরম দয়ালু।" –বুখারী ৪৪৮৬ [৪০; মুসলিম ৫২৫, তিরমিযী ৩৪০, নাসায়ী ৪৮৮, ৪৮৯, ৭৪২; ইবনু মাজাহ ১০১০, আহমাদ ১৮০২৬, ১৮০৬৮, ১৮৩৩২]

১৪৩। আবূ সা'ঈদ খুদরী (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, ক্বিয়ামাতের দিন নূহ্‌ (ﷺ)-কে ডাকা হবে। তখন তিনি বলবেনঃ হে আমাদের রব! আমি আপনার নিকট হাযির (তখন আল্লাহ জিজ্ঞেস করবেন) তুমি কি (আল্লাহ্‌র বাণী) পৌঁছে দিয়েছিলে? তিনি বলবেন, হ্যাঁ। এরপর তার উম্মতকে জিজ্ঞেস করা হবে, [নূহ (ﷺ)] কি তোমাদের নিকট (আল্লাহ্‌র বাণী) পৌঁছে দিয়েছে? তারা তখন বলবে, আমাদের কাছে কোন ভয়প্রদর্শনকারী আসেনি। তখন আল্লাহ তা'আলা [নূহ (ﷺ)-কে] বলবেন, তোমার পক্ষে কে সাক্ষ্য দেবে? তিনি বলবেন, মুহাম্মাদ (ﷺ) এবং তাঁর উম্মতগণ। তখন তারা সাক্ষ্য দেবে যে, নূহ (ﷺ) তাঁর উম্মতের নিকট আল্লাহ্‌র বাণী পৌঁছে দিয়েছেন এবং রসূল (ﷺ) তোমাদের জন্য সাক্ষী হবেন। এটাই মহান আল্লাহ্‌র বাণী "আর এ ভাবেই আমি তোমাদেরকে একটি মধ্যপন্থী উম্মাত করেছি যাতে তোমরা মানবজাতির সাক্ষী হতে পার আর রসূল তোমাদের সাক্ষী হন।" –বুখারী ৪৪৮৭ [৩৩৩৯]

قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِي السَّمَآءِ ج فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً تَرْضٰهَا ص فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ط وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ط وَإِنَّ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ط وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ (١٤٤)

১৪৪. নিশ্চয়ই আমি তোমার আকাশের দিকে মুখ ফিরিয়ে দেখাকে লক্ষ্য করেছি, যে ক্বিবলা তুমি পছন্দ কর, আমি তোমাকে সেদিকে ফিরে যেতে আদেশ করছি। তুমি মাসজিদুল হারামের দিকে মুখ ফিরাও এবং তোমরা যেখানেই থাক, ওরই দিকে মুখ ফিরাও; বস্তুতঃ যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তাদের জানা আছে যে, ক্বিবলার পরিবর্তন তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রকৃতই সত্য এবং তারা যা করে আল্লাহ সে সম্পর্কে মোটেই গাফিল নন।

وَلَئِنْ أَتَيْتَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ج وَمَآ أَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ج وَمَا بَعْضُهُمْ بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ط وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ لا إِنَّكَ إِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ م (١٤٥)

১৪৫. আর যদি তুমি কিতাবধারীদের সামনে সমুদয় দলীল হাজির কর, তবুও তারা তোমার ক্বিবলার অনুসরণ করবে না আর তুমিও তাদের ক্বিবলার অনুসরণকারী নও, আর তারা একে অপরের ক্বিবলার অনুসরণকারী নয়। যদি তুমি তোমার নিকট জ্ঞান আসার পরেও তাদের মনগড়া মতবাদসমূহের অনুসরণ কর, সে অবস্থায় তুমিও অবাধ্য দলেরই অন্তর্ভুক্ত হবে।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ أَبْنَآءَهُمْ ط وَإِنَّ فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ـــ (١٤٦)

১৪৬. আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছি, তারা তাকে সে রকমই চিনে, যেমন চিনে নিজের পুত্রদেরকে, আর ওদের কতকলোক জেনে শুনে সত্যকে গোপন করে থাকে।

১৪৪। আনাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যারা উভয় কিবলার (বাইতুল মাকদাস ও কা'বা-এর) দিকে মুখ করে নামায আদায় করেছেন তাদের মধ্যে আমি ব্যতীত আর কেউ বেঁচে নেই। -বুখারী ৪৪৮৯ [মুসলিম ৫২৬, নাসায়ী ৪৯৩, ৭৪৫; আহমাদ ৪৬২৮, ৪৭৭৯; মালিক ৪৫৮, দারিমী ১২৩৪]

১৪৫। ইবনু 'উমার (ﷺ) হতে বর্ণিত। একদা লোকেরা মাসজিদে কুবায় ফাজ্‌রের নামায আদায় করছিলেন। এমন সময় তাদের কাছে একজন লোক এসে বলল, এ রাতে রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর উপর কুরআনের আয়াত অবতীর্ণ হয়েছে এবং কা'বার দিকে মুখ করে নামায আদায় করার জন্য তিনি নির্দেশিত হয়েছেন। অতএব আপনারা কা'বার দিকে মুখ ফিরিয়ে নিন। আর তখন লোকেদের চেহারা শামের দিকে ছিল। তখন তারা তাদের চেহারা কা'বার দিকে ঘুরিয়ে নিলেন। -বুখারী ৪৪৯০ [৪০৩]

১৪৬। 'আবদুল্লাহ ইবনু 'উমার (ﷺ) হতে বর্ণিত। ইয়াহূদীরা আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর খিদমতে এসে বলল, তাদের একজন পুরুষ ও একজন মহিলা ব্যভিচার করেছে। নাবী (ﷺ) জিজ্ঞেস করলেন, প্রস্তর নিক্ষেপে হত্যা করা সম্পর্কে তাওরাতে কি বিধান পেয়েছ? তারা বলল, আমরা এদেরকে অপমানিত করব এবং তাদের বেত্রাঘাত করা হবে। 'আবদুল্লাহ ইবনু সালাম (ﷺ) বললেন, তোমরা মিথ্যা বলছ। তাওরাতে প্রস্তর নিক্ষেপে হত্যার বিধান রয়েছে। তারা তাওরাত নিয়ে এসে বাহির করল এবং প্রস্তর হত্যা করা সম্পর্কীয় আয়াতের উপর হাত রেখে তার আগের ও

১৪৭. প্রকৃত সত্য তোমার প্রতিপালকের নিকট হতেই (এসেছে), কাজেই তোমরা সন্দেহকারীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ع (١٤٧)

১৪৮. প্রত্যেকের জন্যই একটা নির্দিষ্ট লক্ষ্য আছে, সেদিকেই সে মুখ করে। কাজেই তোমরা সৎ কাজের দিকে ধাবমান হও। যেখানেই তোমরা অবস্থান কর, আল্লাহ তোমাদের সকলকে একত্রিত করবেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ সকল বস্তুর উপর ক্ষমতাবান।

وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ط أَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَأْتِ بِكُمُ اللهُ جَمِيْعًا ط إِنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٤٨)

১৪৯. আর তুমি যেখান থেকেই বের হও, নিজের মুখ মাসজিদে হারামের দিকে ফেরাও, নিশ্চয়ই তা তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে পাঠানো সত্য, বস্তুতঃ তোমরা যা করছ আল্লাহ সে সম্পর্কে মোটেই গাফিল নন।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ط وَإِنَّهُ لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ط وَمَا اللهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (١٤٩)

১৫০. তুমি যেখান থেকেই বের হও, নিজের মুখ মাসজিদে হারামের দিকে ফিরাও, তোমরা যেখানেই থাক না কেন, নিজেদের মুখগুলো ওর দিকে করিও, যাতে তাদের মধ্যেকার যালিম লোক ছাড়া অন্যান্য লোকেদের তোমাদের বিরুদ্ধে কোন কথা বলার না থাকে, কাজেই তাদেরকে ভয় করো না, আমাকেই ভয় কর, যাতে আমি তোমাদের প্রতি আমার নি'মাত পূর্ণ করতে পারি, যাতে তোমরা সত্য পথে পরিচালিত হতে পার।

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ط وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهُ لا لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ق إِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ق فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ق وَلِأُتِمَّ نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ لا (١٥٠)

১৫১. যেমন (তোমরা আমার একটি অনুগ্রহ লাভ করেছ যে) আমি তোমাদেরই মধ্য হতে তোমাদের কাছে একজন রসূল পাঠিয়েছি, যে

كَمَآ أَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ وَيُعَلِّمُكُمُ

পরের আয়াতগুলি পাঠ করল। 'আবদুল্লাহ ইব্‌নু সালাম (রাঃ) বললেন, তোমার হাত সরাও। সে হাত সরাল। তখন দেখা গেল প্রস্তর নিক্ষেপে হত্যা করার আয়াত আছে। তখন ইয়াহূদীরা বলল, হে মুহাম্মাদ! তিনি সত্যই বলছেন। তাওরাতে প্রস্তর নিক্ষেপে হত্যার আয়াতই আছে। তখন নাবী (ﷺ) প্রস্তর নিক্ষেপে দু'জনকে হত্যা করার নির্দেশ দিলেন। 'আবদুল্লাহ (রাঃ) বলেন, আমি ঐ পুরুষটিকে মেয়েটির দিকে ঝুঁকে পড়তে দেখেছি। সে মেয়েটিকে বাঁচানোর চেষ্টা করছিল। -বুখারী ৩৬৩৫ [মুসলিম ১৩৯৯, আবূ দাউদ ৪৪৪৬, ৪৪৪৯; ইবনু মাজাহ ২৫৫৬, আহমাদ ৪৪৮৪, ৪৮১৫; মালিক ১৫৫১, ২৩২১]

Contents

ٱلْكِتَٰبَ وَٱلْحِكْمَةَ وَيُعَلِّمُكُم مَّا لَمْ تَكُونُوا۟ تَعْلَمُونَ ﴿١٥١﴾

আমার আয়াতগুলো তোমাদেরকে পড়ে শুনায়, তোমাদেরকে শুদ্ধ করে, তোমাদেরকে কিতাব ও জ্ঞান-বিজ্ঞান (সুন্নাত) শিক্ষা দেয় এবং তোমাদেরকে এমন সব বিষয় শিক্ষা দেয় যা তোমরা জানতে না।

فَٱذْكُرُونِىٓ أَذْكُرْكُمْ وَٱشْكُرُوا۟ لِى وَلَا تَكْفُرُونِ ﴿١٥٢﴾

১৫২. কাজেই তোমরা আমাকে স্মরণ কর, আমিও তোমাদেরকে স্মরণ করব এবং আমার শোকর করতে থাক, না-শোকরী করো না।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ٱسْتَعِينُوا۟ بِٱلصَّبْرِ وَٱلصَّلَوٰةِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٥٣﴾

১৫৩. হে মু'মিনগণ! ধৈর্য ও সলাতের মাধ্যমে সাহায্য প্রার্থনা কর, নিশ্চয় আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সঙ্গে আছেন।

وَلَا تَقُولُوا۟ لِمَن يُقْتَلُ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَمْوَٰتٌۢ ۚ بَلْ أَحْيَآءٌ وَلَٰكِن لَّا تَشْعُرُونَ ﴿١٥٤﴾

১৫৪. আর আল্লাহ্‌র পথে নিহতদেরকে মৃত বলো না, বরং তারা জীবিত, কিন্তু তোমরা বুঝ না।

وَلَنَبْلُوَنَّكُم بِشَىْءٍ مِّنَ ٱلْخَوْفِ وَٱلْجُوعِ وَنَقْصٍ مِّنَ ٱلْأَمْوَٰلِ وَٱلْأَنفُسِ وَٱلثَّمَرَٰتِ ۗ وَبَشِّرِ ٱلصَّٰبِرِينَ ﴿١٥٥﴾

১৫৫. তোমাদেরকে ভয় ও ক্ষুধা এবং ধন-সম্পদ, জীবন ও ফল-ফসলের ক্ষয়-ক্ষতি (এসবের) কোনকিছুর দ্বারা নিশ্চয়ই পরীক্ষা করব, ধৈর্যশীলদেরকে সুসংবাদ প্রদান কর।

ٱلَّذِينَ إِذَآ أَصَٰبَتْهُم مُّصِيبَةٌ قَالُوٓا۟ إِنَّا لِلَّهِ وَإِنَّآ إِلَيْهِ رَٰجِعُونَ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. নিশ্চয়ই যারা বিপদকালে বলে থাকে, 'আমরা আল্লাহ্‌রই আর আমরা তাঁরই দিকে প্রত্যাবর্তনকারী'।

أُو۟لَٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوَٰتٌ مِّن رَّبِّهِمْ وَرَحْمَةٌ

১৫৭. এদের প্রতি রয়েছে তাদের প্রতিপালকের

১৫৫। খাব্বাব ইবনুল আরাত (ﷺ) থেকে বর্ণিত, তিনি বলেন, আমরা রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে এমন এক সময় অভিযোগ করলাম যখন তিনি কা'বা ঘরের ছায়ায় চাদর দিয়ে বালিশ করে বিশ্রাম নিচ্ছিলেন। আমরা বললাম, আমাদের জন্য কি সাহায্য প্রার্থনা করবেন না, আমাদের জন্য কি দু'আ করবেন না? তিনি বললেন; তোমাদের পূর্বেকার ঈমানদার লোকদের ধরে এনে যমীনে গর্ত করে তাতে পুতে দেয়া হত। অতঃপর তাদের মাথা বরাবর করাত চালিয়ে দ্বিখণ্ডিত করা হত। লোহার আঁচড়া দিয়ে শরীরের গোশত হাড় পৃথক করা হত। কিন্তু এ নির্মম অত্যাচারও তাদেরকে তাদের দ্বীন থেকে বিরত করতে পারেনি। আল্লাহ্‌র কসম! এ দ্বীন পূর্ণরূপে বিজয়ী হবে। এমন একদিন আসবে যখন কোন ভ্রমণকারী নির্বিঘ্নে সান'আ থেকে হাযরা মাউত পর্যন্ত ভ্রমণ করতে পারবে। তখন আল্লাহ ছাড়া আর কাউকে ভয় করতে হবে না। আর মেষপালের জন্য শুধু বাঘের ভয় বাকী থাকবে। কিন্তু তোমরা খুব তাড়াহুড়া করছ। –বুখারী ৬৯৪৩ [আবূ দাউদ ২৬৪৯, আহমাদ ২০৫৫৩, ২০৫৬৮, ২৬৬৭৫]

قلے وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ (١٥٧)

পক্ষ হতে অনুগ্রহ ও করুণা আর এরাই হিদায়াতপ্রাপ্ত।

إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ج فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ أَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ط وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا لا فَإِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ (١٥٨)

১৫৮. নিশ্চয়ই 'সাফা' এবং 'মারওয়া' আল্লাহ্‌র নিদর্শনগুলোর অন্যতম। কাজেই যে ব্যক্তি কাবাগৃহের হাজ্জ অথবা 'উমরাহ করবে, এ দু'টোর সাঈ করাতে তাদের কোনই গুনাহ নেই এবং যে ব্যক্তি স্বেচ্ছায় কোন সৎ কাজ করবে তাহলে নিশ্চয় আল্লাহ (তার ব্যাপারে) গুণগ্রাহী এবং সর্বজ্ঞ।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ أَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِي الْكِتٰبِ لا أُولَٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَيَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ لا (١٥٩)

১৫৯. নিশ্চয়ই যারা আমার অবতীর্ণ কোন দলীল এবং হিদায়াতকে লোকেদের জন্য আমি কিতাবের মধ্যে বর্ণনা করার পরেও গোপন করে, আল্লাহ তাদেরকে অভিসম্পাত করেন আর অভিসম্পাতকারীরাও তাদের প্রতি অভিসম্পাত করে থাকে।

১৫৮। 'উরওয়াহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (رضي الله عنها)-কে জিজ্ঞেস করলাম– আর তখন আমি অল্প বয়সের ছিলাম– মহান আল্লাহ্‌র বাণীঃ ﴿إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ﴾এ আয়াত সম্পর্কে আপনার অভিমত কী? "নিশ্চয় সাফা ও মারওয়াহ হল আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহের অন্তর্ভুক্ত। সুতরাং যে কেউ কা'বা ঘরে হাজ্জ বা 'উমরাহ পালন করে তার পক্ষে এ দু'টির মধ্যে প্রদক্ষিণ করাতে কোন পাপ নেই।" আমি মনে করি উক্ত দুই পর্বত এর মাঝে সায়ী না করলে কোন ব্যক্তির উপর গুনাহ বর্তাবে না। তখন 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বললেন, কক্ষনো তা নয়। তুমি যা বলছ যদি তাই হত তাহলে বলা হত এভাবে "فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ أَنْ لَا يَطَّوَّفَ" উভয় পর্বত তাওয়াফ না করাতে কোন গুনাহ বর্তাবে না। বস্তুতঃ এই আয়াত অবতীর্ণ হয়েছে আনসারদের ব্যাপারে। তারা 'মানাত'-এর পূজা করত। আর 'মানাত' ছিল কুদায়েদের পথে অবস্থিত। আনসারগণ সাফা এবং মারওয়াহ্‌র মধ্যে সায়ী করা খারাপ জানত। ইসলামের আগমনের পর তারা এ সম্পর্কে রসূলুল্লাহ (ﷺ) -কে জিজ্ঞেস করল। তখন আল্লাহ অবতীর্ণ করলেন– إِنَّ الصَّفَا وَالْمَرْوَةَ مِنْ شَعَائِرِ اللّٰهِ। –বুখারী ৪৪৯৫ [১৬৪৩; মুসলিম ১২৭৭, তিরমিযী ২৯৬৫, নাসায়ী ২৯৬৭, ২৯৬৮; আবূ দাউদ ১৯০১, আহমাদ ২৪৫৮৮, ২৪৭৭০, ২৫৩৭৭; মালিক ৮৩৮]

১৫৯-১৬০। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ লোকে বলে, আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) অধিক হাদীস বর্ণনা করে। (জেনে রাখ,) কিতাবে দু'টি আয়াত যদি না থাকত, তবে আমি একটি হাদীসও পেশ করতাম না। অতঃপর তিনি তিলাওয়াত করলেনঃ "আমি সেসব স্পষ্ট নিদর্শন ও পথ-নির্দেশ অবতীর্ণ করেছি মানুষের জন্য কিতাবে তা বিস্তারিত বর্ণনার পরও যারা তা গোপন রাখে আল্লাহ্ তাদেরকে অভিশাপ দেন এবং অভিশাপকারীগণও তাদেরকে অভিশাপ দেয় কিন্তু যারা তাওবাহ করে এবং আত্মসংশোধন করে এবং প্রকাশ করে দেয় যে, আমি তাদের (ক্ষমার) জন্য ফিরে আসি, আর আমি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।" (প্রকৃত ঘটনা এই যে,) আমার মুহাজির ভাইয়েরা বাজারে কেনাবেচায় এবং আমার আনসার ভাইয়েরা জমা-জমির কাজে মশগুল থাকত। আর আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) (অভুক্ত থেকে) তুষ্ট থেকে আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর সঙ্গে লেগে থাকত। তাই তারা যখন উপস্থিত থাকত না, তখন সে উপস্থিত থাকত এবং তারা যা আয়ত্ত করত না সে তা আয়ত্ত রাখত। –বুখারী ১১৮ [১১৯, ২০৪৭, ২৩৫০, ৩৬৪৮, ৭৩৫৪; মুসলিম ২৪৯২, ইবনু মাজাহ ২৬২, আহমাদ ৭২৩৩, ৭৬৪৮, ৮২০৪]

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَأَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَأُولٰٓئِكَ أَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ج وَأَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ (١٦٠)

১৬০. কিন্তু যারা তাওবাহ করে এবং সংশোধন করে নেয় এবং (সত্যকে) সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করে, তাদের তাওবাহ আমি কবুল করি, বস্তুতঃ আমি অত্যধিক তাওবাহ কবুলকারী, পরম দয়ালু।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ أُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ لا (١٦١)

১৬১. নিশ্চয় যারা কাফির এবং কাফের অবস্থাতেই মারা যায়, এমন লোকেদের প্রতি আল্লাহ্‌র, ফেরেশতাদের এবং সকল মানুষের অভিসম্পাত।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ج لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ (١٦٢)

১৬২. তাতে তারা চিরকাল থাকবে, তাদের উপর 'আযাব হালকা করা হবে না আর তাদেরকে বিরামও দেয়া হবে না।

وَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ع (١٦٣)

১৬৩. তোমাদের উপাস্য হচ্ছেন এক আল্লাহ, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন উপাস্য নেই। তিনি পরম করুনাময়, অতি দয়ালু।

إِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِيْ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ النَّاسَ وَمَآ أَنْزَلَ اللهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ مَّآءٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ص وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (١٦٤)

১৬৪. নিশ্চয়ই আকাশসমূহ ও পৃথিবীর সৃষ্টির মধ্যে, রাত ও দিনের বিবর্তনের মধ্যে, লোকের উপকারী দ্রব্যাদিসহ সমুদ্রে চলাচলকারী জলযানের মধ্যে এবং আকাশ হতে আল্লাহ্‌র বর্ষিত সেই পানির মধ্যে যদ্দারা তিনি পৃথিবীকে- ম'রে যাওয়ার পর আবার জীবিত করেন এবং তাতে সকল প্রকার জীব-জন্তুর বিস্তারণে এবং বাতাসের গতি পরিবর্তনের মধ্যে এবং আকাশ ও ভূমণ্ডলের মধ্যস্থলে নিয়ন্ত্রিত মেঘপুঞ্জের মধ্যে বিবেকসম্পন্ন লোকেদের জন্য নিদর্শনাবলী রয়েছে।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ دُوْنِ اللهِ أَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ كَحُبِّ اللهِ ط وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَشَدُّ حُبًّا لِّلّٰهِ ط وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا إِذْ

১৬৫. আর কোন কোন লোক এমনও আছে, যে আল্লাহ ছাড়া অন্যান্যকে আল্লাহ্‌র সমকক্ষরূপে গ্রহণ করে, আল্লাহ্‌কে ভালবাসার মত তাদেরকে ভালবাসে। কিন্তু যারা মু'মিন আল্লাহ্‌র সঙ্গে তাদের ভালবাসা প্রগাঢ় এবং কী উত্তমই হত যদি এ যালিমরা শাস্তি দেখার পর

يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ أَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ۙ وَّأَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ (١٦٥)

যেমন বুঝবে তা যদি এখনই বুঝত যে, সমস্ত শক্তি আল্লাহ্‌রই জন্য এবং আল্লাহ শাস্তি দানে অত্যন্ত কঠোর।

إِذْ تَبَرَّأَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَأَوُا الْعَذَابَ وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْأَسْبَابُ (١٦٦)

১৬৬. স্মরণ কর, যাদেরকে অনুসরণ করা হত তারা অনুসরণকারীদের সঙ্গে তাদের কোন সম্পর্কের কথা অস্বীকার করবে, তারা শাস্তি দেখবে আর তাদের মধ্যেকার যাবতীয় সম্পর্ক সম্বন্ধ ছিন্ন হয়ে যাবে।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَتَبَرَّأَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ؕ كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ أَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ع (١٦٧)

১৬৭. অনুসরণকারীরা বলবে, যদি কোনও প্রকারে আমাদের ফিরে যাবার সুযোগ ঘটত, তাহলে আমরাও তাদের সঙ্গে সম্পর্ক ছিন্ন করতাম যেমনভাবে তারা সম্পর্ক ছিন্ন করল। এভাবে আল্লাহ তাদেরকে তাদের কাজগুলো দেখাবেন তাদের জন্য আক্ষেপরূপে এবং জাহান্নাম হতে তারা বের হতে পারবে না।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْأَرْضِ حَلٰلًا طَيِّبًا ز وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (١٦٨)

১৬৮. ওহে মনুষ্যজাতি! ভূমণ্ডলে বিদ্যমান বস্তুগুলো হতে হালাল উত্তম জিনিসগুলো খাও এবং শায়ত্বনের পদাঙ্ক অনুসরণ করে চলো না, বস্তুতঃ সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

إِنَّمَا يَأْمُرُكُمْ بِالسُّوْٓءِ وَالْفَحْشَآءِ وَأَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (١٦٩)

১৬৯. সে তোমাদেরকে শুধু অসৎ এবং অশ্লীল কাজের নির্দেশ দেয়, আর তোমাদেরকে নির্দেশ দেয় আল্লাহ্‌র সম্বন্ধে এমন কথা বলার যা তোমরা জান না।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ أَلْفَيْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ أَوَلَوْ كَانَ

১৭০. যখন তাদেরকে বলা হয়, তোমরা ঐ জিনিসের অনুসরণ কর যা আল্লাহ নাযিল করেছেন, তখন তারা বলে, বরং আমরা তারই উপর চলব, যার উপর আমরা আমাদের বাপ-দাদাদের পেয়েছি, যদিও তাদের বাপ-দাদারা

১৬৫। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'উদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) একটি কথা বললেন, আর আমি একটি বললাম। নাবী (ﷺ) বললেন, যে ব্যক্তি আল্লাহ ব্যতীত অন্যকে তাঁর সমকক্ষ হিসেবে আহ্বান করা অবস্থায় মারা যায়, সে জাহান্নামে যাবে। আর আমি বললাম, যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সঙ্গে কাউকে সমকক্ষ হিসেবে আহ্বান না করা অবস্থায় মারা যায়? (তিনি বললেন) সে জান্নাতে যাবে। –বুখারী ৪৪৯৭ [১২৩৮; মুসলিম ৯২, আহমাদ ৩৫৪২, ৩৬১৮, ৩৮০১]

أٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ (١٧٠)

কিছুই বুঝত না এবং সঠিক পথে চলত না তবুও।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ إِلَّا دُعَآءً وَّنِدَآءً ط صُمٌّ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ (١٧١)

১৭১. এ কাফিরদের তুলনা সেই ব্যক্তির মত যে এমন কিছুকে ডাকে যা হাঁক-ডাক ছাড়া আর কিছুই শোনে না, বধির, মূক ও অন্ধ; কাজেই তারা বুঝবে না।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ (١٧٢)

১৭২. হে মু'মিনগণ! আমার দেয়া পবিত্র বস্তুগুলো খেতে থাক এবং আল্লাহ্র উদ্দেশে শোকর করতে থাক, যদি তোমরা তাঁরই 'ইবাদত করে থাক।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ أُهِلَّ بِهٖ لِغَيْرِ اللّٰهِ ج فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ط إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٧٣)

১৭৩. নিশ্চয় আল্লাহ তোমাদের প্রতি হারাম করেছেন মৃত-জীব, রক্ত এবং শূকরের মাংস এবং সেই জন্তু যার প্রতি আল্লাহ ছাড়া অন্যের নাম নেয়া হয়েছে, তবে যে ব্যক্তি নিরুপায় হয়ে পড়ে কিন্তু সে নাফরমান ও সীমালঙ্ঘনকারী নয়, তার উপর কোন গুনাহ নেই, নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, দয়ালু।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا لا أُولٰٓئِكَ مَا يَأْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ إِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ صلے وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١٧٤)

১৭৪. কিতাব হতে আল্লাহ যা নাযিল করেছেন, যারা এটা গোপন করে এবং এর বিনিময়ে স্বল্প মূল্য গ্রহণ করে, এরা নিজেদের পেটে একমাত্র আগুন ভক্ষণ করে, ওদের সাথে আল্লাহ ক্বিয়ামাতের দিন কথা বলবেন না এবং ওদেরকে পবিত্রও করবেন না; এবং ওদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ج فَمَآ أَصْبَرَهُمْ عَلَى النَّارِ (١٧٥)

১৭৫. এরা এমন লোক, যারা হিদায়াতের বিনিময়ে গোমরাহী এবং ক্ষমার বিনিময়ে শাস্তি ক্রয় করেছে, তারা আগুন সহ্য করতে কতই না ধৈর্যশীল!

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ ط وَإِنَّ الَّذِيْنَ

১৭৬. (তাদের প্রতি শাস্তির হুকুম দেয়া হয়েছে) এজন্য যে, আল্লাহ্ই কিতাবকে সত্যরূপে নাযিল

اخْتَلَفُوْا فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ع (١٧٦)

করেছেন আর যারা কিতাব সম্বন্ধে মতভেদ করেছে তারা চরম মতভেদে পড়ে আছে।

لَيْسَ الْبِرَّ أَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ج وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ لا وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِي الرِّقَابِ ج وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ج وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ إِذَا عٰهَدُوْا ج وَالصّٰبِرِيْنَ فِي الْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ وَحِيْنَ الْبَأْسِ ط أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ط وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ (١٧٧)

১৭৭. তোমরা নিজেদের মুখ পূর্ব দিকে কর কিংবা পশ্চিম দিকে এতে কোন কল্যাণ নেই বরং কল্যাণ আছে এতে যে, কোন ব্যক্তি ঈমান আনবে আল্লাহ্‌, শেষ দিবস, ফেরেশতাগণ, কিতাবসমূহ ও নাবীগণের প্রতি এবং আল্লাহ্‌র ভালবাসার্থে ধন-সম্পদ আত্মীয়-স্বজন, ইয়াতীম-মিসকীন, মুসাফির ও যাচঞাকারীদের এবং দাসত্বজীবন হতে নিস্কৃতি দিতে দান করবে এবং নামায কায়িম করবে ও যাকাত দিতে থাকবে, ওয়া'দা করার পর স্বীয় ওয়া'দা পূর্ণ করবে এবং অভাবে, দুঃখ-ক্লেশে ও সংকটে ধৈর্য ধারণ করবে, এ লোকেরাই সত্যপরায়ণ আর এ লোকেরাই মুত্তাকী।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِصَاصُ فِي الْقَتْلٰى ط اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْأُنْثٰى بِالْأُنْثٰى ط فَمَنْ عُفِيَ لَهٗ مِنْ أَخِيْهِ شَيْءٌ فَاتِّبَاعٌۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ ط ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ط فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ج (١٧٨)

১৭৮. হে মু'মিনগণ! তোমাদের প্রতি নিহতদের কিসাস সম্পর্কে আদেশ দেয়া যাচ্ছে, স্বাধীন ব্যক্তির বদলে স্বাধীন, গোলামের বদলে গোলাম এবং স্ত্রীলোকের বদলে স্ত্রীলোক, অতঃপর যাকে তার ভাইয়ের পক্ষ হতে কিছু অংশ মাফ ক'রে দেয়া হয়, সে অবস্থায় যথাযথ বিধির অনুসরণ করা ও সততার সঙ্গে তার দেয় আদায় করা বিধেয়, এটা তোমাদের প্রভুর পক্ষ হতে ভার লাঘব ও অনুগ্রহ, এরপর যে কেউ বাড়াবাড়ি করবে, তার জন্য যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

১৭৮। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, বানী ইসরাঈল সম্প্রদায়ের কিসাস প্রথা চালু ছিল কিন্তু দিয়াত তাদের মধ্যে চালু ছিল না। অনন্তর আল্লাহ তা'আলা এ উম্মতের জন্য এ আয়াত অবতীর্ণ করেনঃ হত্যার ক্ষেত্রে কিসাস বা খুনের বদলে খুন তোমাদের জন্য ফরয করা হয়েছে। স্বাধীন মানুষের বদলে স্বাধীন মানুষ, ক্রীতদাসের বদলে ক্রীতদাস এবং স্ত্রীলোকের বদলে স্ত্রীলোকের কিসাস নেয়া হবে। হাঁ, কোন হত্যাকারীর সঙ্গে তার কোন (মুসলিম) ভাই নম্রতা দেখাতে চাইলে। উল্লিখিত আয়াতে আলআফুব فَالْعَفْوُ -এর অর্থ ইচ্ছাকৃত হত্যার ক্ষেত্রে দিয়াত গ্রহণ করতঃ কিসাস ক্ষমা করে দেয়া। فَاتِّبَاعٌ بِالْمَعْرُوْفِ وَأَدَآءٌ إِلَيْهِ بِإِحْسَانٍ

وَلَكُمْ فِي الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰأُولِي الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ (١٧٩)

১৭৯. কিসাসের মধ্যে তোমাদের জন্য জীবন নিহিত রয়েছে, যাতে হে জ্ঞানী সমাজ! (হত্যানুষ্ঠান হতে) তোমরা নিবৃত্ত থাক।

كُتِبَ عَلَيْكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ إِنْ تَرَكَ خَيْرًا صلے ج ۨالْوَصِيَّةُ لِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ج حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ط (١٨٠)

১৮০. তোমাদেরকে নির্দেশ দেয়া যাচ্ছে যে, যখন তোমাদের কারও সামনে মৃত্যু উপস্থিত হয় এবং সেই ব্যক্তি কিছু সম্পত্তি ছেড়ে যায়, তবে সে ব্যক্তি যেন সঙ্গতভাবে ওয়াসীয়াত করে যায় পিতা-মাতা ও নিকট সম্পর্কীয়দের জন্য, মুত্তাকীদের জন্য এটা একটা কর্তব্য।

فَمَنْ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَإِنَّمَآ إِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ط إِنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ط (١٨١)

১৮১. অতঃপর যে ব্যক্তি তা শুনে নেয়ার পর ওয়াসীয়াতের পরিবর্তন ঘটাবে, তবে তার গুনাহ সেই লোকদেরই প্রতি যারা তার পরিবর্তন ঘটাবে, নিশ্চয় আল্লাহ সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (١٨٢)

১৮২. যে ব্যক্তি ওয়াসীয়াতকারীর পক্ষ হতে পক্ষপাতিত্বের ভয় করে কিংবা অন্যায়ের আশঙ্কা করে, অতঃপর সে যদি তাদের মধ্যে মিটমাট করে দেয়, তবে তার কোনই গুনাহ নেই, নিশ্চয় আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ لا (١٨٣)

১৮৩. হে ঈমানদারগণ! তোমাদের প্রতি রোযা ফরয করা হয়েছে, যেমন তোমাদের আগের লোকেদের প্রতি ফরয করা হয়েছিল, যাতে তোমরা মুত্তাকী হতে পার।

অর্থাৎ এ ব্যাপারে যথাযথ বিধি মেনে চলবে এবং নিষ্ঠার সঙ্গে দিয়াত আদায় করে দেবে। তোমাদের পূর্বের লোকেদের উপরে আরোপিত কিসাস হতে তোমাদের প্রতি দিয়াত ব্যবস্থা আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে তোমাদের প্রতি শাস্তি হ্রাস ও বিশেষ অনুগ্রহ। দিয়াত কবূল করার পরও যদি হত্যা করে তাহলে তার জন্য কঠিন শাস্তি রয়েছে। –বুখারী ৪৪৯৮ [৬৮৮১; নাসায়ী ৪৭৮১, ৪৭৮২]

১৮৩। ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, জাহিলী যুগের লোকেরা আশুরার সওম পালন করত। এরপর যখন রমাযানের সওমের বিধান অবতীর্ণ হল, তখন নাবী (ﷺ) বললেন, যার ইচ্ছা সে আশুরার সওম পালন করবে আর যার ইচ্ছা সে তার সওম পালন করবে না। –বুখারী ৪৫০১ [১৮৯২; মুসলিম ১১২৬, আবূ দাউদ ২৪৪৩, ইবনু মাজাহ ১৭৩৭, আহমাদ ৪৪৬৯, দারিমী ১৭৬২]

أَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ؕ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَّرِيْضًا أَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ؕ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ؕ فَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ؕ وَأَنْ تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (١٨٤)

১৮৪. (রোযা) নির্দিষ্ট কয়েকটি দিনের জন্য, অতঃপর তোমাদের মধ্যে যে পীড়িত কিংবা মুসাফির সে অন্য সময় এ সংখ্যা পূরণ করে নেবে এবং শক্তিহীনদের উপর কর্তব্য হচ্ছে ফিদ্য়া প্রদান করা, এটা একজন মিসকীনকে অন্নদান করা এবং যে ব্যক্তি নিজের খুশীতে সৎ কাজ করতে ইচ্ছুক, তার পক্ষে তা আরও উত্তম আর সে অবস্থায় রোযা পালন করাই তোমাদের পক্ষে উত্তম, যদি তোমরা বুঝ।

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ فِيْهِ الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ؕ وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا أَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ؕ يُرِيْدُ اللهُ بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ؗ وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا اللهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (١٨٥)

১৮৫. রমাযান মাস– যার মধ্যে কুরআন নাযিল করা হয়েছে লোকেদের পথ প্রদর্শক এবং হিদায়াতের সুস্পষ্ট বর্ণনারূপে এবং সত্য-মিথ্যার পার্থক্যকারীরূপে, কাজেই তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি এ মাস পাবে, সে যেন এ মাসে রোযা পালন করে আর যে পীড়িত কিংবা সফরে আছে, সে অন্য সময় এ সংখ্যা পূরণ করবে, আল্লাহ তোমাদের জন্য যা সহজ তা চান, যা কষ্টদায়ক তা চান না যেন তোমরা মেয়াদ পূর্ণ করতে পার, আর তোমাদেরকে সৎপথে পরিচালিত করার কারণে তোমরা আল্লাহর মাহাত্ম্য ঘোষণা কর, আর যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করতে পার।

وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَإِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا

১৮৬. যখন আমার বান্দাগণ আমার সম্পর্কে তোমার নিকট জিজ্ঞেস করে, আমি তো (তাদের) নিকটেই, আহ্বানকারী যখন আমাকে আহ্বান করে আমি তার আহ্বানে সাড়া দেই; সুতরাং তাদের উচিত আমার নির্দেশ মান্য করা

১৮৪। ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি: فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ আয়াতটি পড়ে বলেছেন যে, এটা মানসূখ (রহিত)। –বুখারী ৪৫০৬ [১৯৪৯]

১৮৫। ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি পাঠ করতেন, فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ । রাবী বলেন, আয়াত فَمَنْ .. الخ شَهِدَ আয়াত দ্বারা) রহিত হয়ে গেছে। –বুখারী ৪৫০৬ [১৯৪৯]

لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ (١٨٦)

এবং আমার প্রতি ঈমান আনা, যাতে তারা সরলপথ প্রাপ্ত হয়।

أُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ إِلٰى نِسَآئِكُمْ ط هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ وَأَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ط عَلِمَ اللهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ج فَالْئٰنَ بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللهُ لَكُمْ ص وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكُمُ الْخَيْطُ الْأَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ الْأَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ص ثُمَّ أَتِمُّوا الصِّيَامَ إِلَى اللَّيْلِ ج وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَأَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ فِي الْمَسَاجِدِ ط تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ط كَذٰلِكَ

১৮৭. তোমাদের জন্য রমাযানের রাতে তোমাদের বিবিগণের নিকট গমন করা জায়িয করা হয়েছে, তারা তোমাদের আচ্ছাদন আর তোমরা তাদের আচ্ছাদন। আল্লাহ জানতেন যে, তোমরা নিজেদের সঙ্গে প্রতারণা করছিলে। সুতরাং তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন এবং তোমাদের অব্যাহতি দিলেন। অতএব, এখন থেকে তোমরা তাদের সঙ্গে সহবাস করতে পার এবং আল্লাহ তোমাদের জন্য যা কিছু বিধিবদ্ধ করেছেন তা লাভ কর এবং তোমরা আহার ও পান করতে থাক যে পর্যন্ত তোমাদের জন্য কালো রেখা হতে ঊষাকালের সাদা রেখা প্রকাশ না পায়। তৎপর রাতের আগমন পর্যন্ত রোযা পূর্ণ কর, আর মাসজিদে ই'তিকাফ অবস্থায় তাদের সাথে সহবাস করো না। এসব আল্লাহ্‌র আইন, কাজেই এগুলোর নিকটবর্তী হয়ো না। আল্লাহ মানবজাতির জন্য নিজের আয়াতসমূহ বিস্তারিতভাবে বর্ণনা করেন, যাতে তারা মুত্তাকী হতে পারে।

১৮৭। বারাআ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যখন রমাযানের সওমের হুকুম অবতীর্ণ হল তখন মুসলিমরা গোটা রমাযান মাস স্ত্রীদের নিকটবর্তী হতেন না আর কিছু সংখ্যক লোক এ ব্যাপারে নিজেদের উপর (স্ত্রী-সম্ভোগ করে) অবিচার করে বসে। তখন আল্লাহ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করেন, عَلِمَ اللهُ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ أَنْفُسَكُمْ فَتَابَ عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ –"আল্লাহ জানতেন যে, তোমরা নিজেদের সঙ্গে প্রতারণা করছিলে। সুতরাং তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন এবং তোমাদের অব্যাহতি দিলেন। অতএব, এখন থেকে তোমরা তাদের সঙ্গে সহবাস করতে পার এবং আল্লাহ তোমাদের জন্য যা কিছু বিধিবদ্ধ করেছেন তা লাভ কর।" –বুখারী ৪৫০৮ [১৯১৬; তিরমিযী ২৯৬৮, নাসায়ী ২১৬৮, আবূ দাঊদ ২৩১৪, আহমাদ ১৮১৩৭, দারিমী ১৬৯৩]

'আদী (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি ('আদী) একটি সাদা ও একটি কালো সুতা সঙ্গে রাখলেন। কিন্তু রাত অতিবাহিত হলে খুলে দেখলেন কিন্তু তার কাছে সাদা কালোর কোন পার্থক্য নিরূপিত হল না। যখন সকাল হল তখন তিনি বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমি আমার বালিশের নিচে (সাদা ও কালো রংয়ের দু'টি সুতা) রেখেছিলাম (এবং তিনি রাতের ঘটনাটি বললেন)। তখন নাবী (ﷺ) বললেন, তোমার বালিশ তো খুবই বড় দেখছি, যদি কালো ও সাদা সুতা (সুবহি কাযিব ও সুবহি সাদিক) তোমার বালিশের নিচে থেকে থাকে। (রসূল (ﷺ) 'আদী (রাঃ)-এর বর্ণনা শুনে কৌতুক করে বলেছেন যে, গোটা পূর্বাকাশ যদি তোমার বালিশের নিচে রেখে থাক তাহলে সে বালিশ তো খুব বড়ই দেখছি) –বুখারী ৪৫০৯ [১৯১৬; মুসলিম ১০৯০, তিরমিযী ২৯৭০, ২৯৭১; নাসায়ী ২১৬৯, আবূ দাঊদ ২৩৪৯, আহমাদ ১৮৮৮০, দারিমী ১৬৯৪]

يُبَيِّنُ اللهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (١٨٧)

وَلَا تَأْكُلُوْٓا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ إِلَى الْحُكَّامِ لِتَأْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ أَمْوَالِ النَّاسِ بِالْإِثْمِ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ع (١٨٨)

১৮৮. আর তোমরা অন্যায়ভাবে পরস্পরের মাল গ্রাস করো না এবং জানা সত্ত্বেও অসৎ উপায়ে লোকের মাল গ্রাস করার উদ্দেশে তা বিচারকের নিকট নিয়ে যেও না।

يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْأَهِلَّةِ ط قُلْ هِيَ مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ط وَلَيْسَ الْبِرُّ بِأَنْ تَأْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ اتَّقٰى ج وَأْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ أَبْوٰبِهَا ص وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (١٨٩)

১৮৯. লোকেরা তোমাকে নতুন চাঁদ সম্পর্কে প্রশ্ন করছে। বল, তা মানুষের ও হাজ্জের জন্য সময় নির্ধারক। তোমরা যে গৃহের পেছন দিক দিয়ে প্রবেশ কর, তাতে কোন পুণ্য নেই, বরং পুণ্য আছে কেউ তাকওয়া অবলম্বন করলে, কাজেই তোমরা (সদর) দরজাগুলো দিয়ে গৃহে প্রবেশ কর এবং আল্লাহ্কে ভয় করতে থাক, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পার।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ط إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ (١٩٠)

১৯০. তোমরা আল্লাহ্‌র পথে সেই লোকেদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, যারা তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে, কিন্তু সীমা অতিক্রম করো না। আল্লাহ নিশ্চয়ই সীমা অতিক্রমকারীকে ভালবাসেন না।

وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ وَأَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ أَخْرَجُوْكُمْ وَالْفِتْنَةُ أَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ج وَلَا تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ج فَإِنْ قٰتَلُوْكُمْ

১৯১. তাদেরকে যেখানেই পাও হত্যা কর এবং তাদেরকে বের করে দাও যেখান থেকে তারা তোমাদেরকে বের করে দিয়েছে। বস্তুতঃ ফিতনা হত্যার চেয়েও গুরুতর। তোমরা মাসজিদে হারামের নিকট তাদের সাথে যুদ্ধ করো না, যে পর্যন্ত তারা তোমাদের সাথে

১৮৯। আবূ ইসহাক (রহ.) হতে বর্ণিত, তিনি বলেন, আমি বারা (ﷺ)-কে বলতে শুনেছি, এ আয়াতটি আমাদের সম্পর্কে নাযিল হয়েছিল। হাজ্জ করে এসে আনসারগণ তাদের বাড়িতে সদর দরজা দিয়ে প্রবেশ না করে পেছনের দরজা দিয়ে প্রবেশ করতেন। এক আনসার ফিরে এসে তার বাড়ির সদর দরজা দিয়ে প্রবেশ করলে তাকে এ জন্য লজ্জা দেয়া হয়। তখনই নাযিল হয়ঃ "পশ্চাৎ দিক দিয়ে তোমাদের গৃহ-প্রবেশ করাতে কোন কল্যাণ নেই। বরং কল্যাণ আছে যে তাকওয়া অবলম্বন করে। সুতরাং তোমরা (সামনের) দরজা দিয়ে গৃহে প্রবেশ কর।" –বুখারী ১৮০৩ [৪৫১২, মুসলিম ৩০২৬]

Contents

فَاقْتُلُوْهُمْ ؕ كَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ (١٩١)

সেখানে যুদ্ধ না করে, কিন্তু যদি তারা তোমাদের সাথে যুদ্ধ করে, তবে তোমরাও তাদের হত্যা কর, এটাই কাফিরদের প্রতিদান।

فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٩٢)

১৯২. অতঃপর যদি তারা বিরত হয়, তবে আল্লাহ ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَقٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلهِ ؕ فَإِنِ انْتَهَوْا فَلَا عُدْوَانَ إِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ (١٩٣)

১৯৩. ফিত্না দূরীভূত না হওয়া পর্যন্ত এবং দীন আল্লাহ্র জন্য নির্ধারিত না হওয়া পর্যন্ত তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, অতঃপর যদি তারা বিরত হয় তবে যালিমদের উপরে ছাড়া কোনও প্রকারের কঠোরতা অবলম্বন জায়িয হবে না।

اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ص وَاتَّقُوا اللهَ وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ (١٩٤)

১৯৪. সম্মানিত মাস হচ্ছে সম্মানিত মাসের বিনিময়ে এবং পবিত্রতা রক্ষার দায়িত্ব সবার জন্য সমান, কাজেই যে কেউ তোমাদের প্রতি কঠোর আচরণ করে, তবে তোমরাও তাদের প্রতি কঠোর আচরণ কর যেমনি কঠোরতা সে তোমাদের প্রতি করেছে এবং আল্লাহ্কে ভয় কর এবং জেনে রেখ, আল্লাহ মুত্তাকীদের সঙ্গে আছেন।

وَأَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَلَا تُلْقُوْا بِأَيْدِيْكُمْ إِلَى التَّهْلُكَةِ ۛج وَأَحْسِنُوْا ۛج إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (١٩٥)

১৯৫. তোমরা আল্লাহ্র পথে ব্যয় কর এবং স্বহস্তে নিজেদেরকে ধ্বংসে নিক্ষেপ করো না এবং কল্যাণকর কাজ করে যাও, নিশ্চয়ই আল্লাহ কল্যাণকারীদেরকে ভালবাসেন।

১৯৩। ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তাঁর কাছে দুই ব্যক্তি 'আবদুল্লাহ ইবনু যুবায়রের যুগে সৃষ্ট ফিতনার সময় আগমন করল এবং বলল, লোকেরা সব ধ্বংস হয়ে যাচ্ছে আর আপনি উমার (রাঃ)-এর পুত্র এবং নাবী (ﷺ) -এর সহাবী! কী কারণে আপনি বের হন না? তিনি উত্তর দিলেন আমাকে নিষেধ করেছে এই কথা–'নিশ্চয় আল্লাহ তা'আলা আমার ভাইয়ের রক্ত হারাম করেছেন। তারা দু'জন বললেন, আল্লাহ কি এ কথা বলেননি যে, তোমরা তাদের সঙ্গে যুদ্ধ কর যাবৎ না ফিতনার অবসান ঘটে। তখন ইবনু উমার (রাঃ) বললেন, আমরা তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করেছি যাবৎ না ফিতনার অবসান ঘটেছে এবং দ্বীনও আল্লাহ্র জন্য হয়ে গেছে। আর তোমরা ফিতনা প্রতিষ্ঠার জন্য যুদ্ধ করার ইচ্ছা করছ আর যেন আল্লাহ ব্যতীত অন্যের জন্য দ্বীন হয়ে গেছে। –বুখারী ৪৫১৩ [৩১৩০; তিরমিযী ৩৭০৬, আহমাদ ৫৭৩৮, ৫৯৭৫]

১৯৫। হুযাইফাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, "আর ব্যয় কর আল্লাহ্র পথে এবং নিজেদের হাতে নিজেদেরকে তোমরা ধ্বংসের মধ্যে নিক্ষেপ করো না।" এ আয়াত আল্লাহ্র পথে ব্যয় করা সম্পর্কে অবতীর্ণ হয়েছে। –বুখারী ৪৫১৬

وَأَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۖ وَلَا تَحْلِقُوا رُءُوسَكُمْ حَتَّىٰ يَبْلُغَ الْهَدْيُ مَحِلَّهُ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ مَرِيضًا أَوْ بِهِ أَذًى مِنْ رَأْسِهِ فَفِدْيَةٌ مِنْ صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَا أَمِنْتُمْ فَمَنْ تَمَتَّعَ بِالْعُمْرَةِ إِلَى الْحَجِّ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ فَمَنْ لَمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلَاثَةِ أَيَّامٍ فِي الْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ ذَٰلِكَ لِمَنْ لَمْ يَكُنْ أَهْلُهُ حَاضِرِي الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاتَّقُوا اللَّهَ وَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ (١٩٦)

১৯৬. আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টির উদ্দেশে হাজ্জ ও 'উমরাহ্‌কে পূর্ণ কর, কিন্তু যদি তোমরা বাধাগ্রস্ত হও, তবে যা সম্ভব কুরবানী দিবে এবং কুরবানী যথাস্থানে না পৌঁছা পর্যন্ত নিজেদের মস্তক মুণ্ডন করো না, তবে তোমাদের মধ্যে যে পীড়িত কিংবা মাথায় যন্ত্রণাগ্রস্ত, সে রোযা কিংবা সদাক্বাহ বা কুরবানী দ্বারা ফিদ্‌য়া দিবে এবং যখন তোমরা নিরাপদ থাক, তখন যে কেউ 'উমরাহ্‌কে হাজ্জের সঙ্গে মিলিয়ে উপকার লাভ করতে ইচ্ছুক, সে যেমন সম্ভব কুরবানী দিবে এবং যার পক্ষে সম্ভব না হয়, সে ব্যক্তি হাজ্জের দিনগুলোর মধ্যে তিনদিন এবং গৃহে ফেরার পর সাতদিন, এই মোট দশদিন রোযা পালন করবে। এটা সেই লোকের জন্য, যার পরিবারবর্গ মাসজিদে হারামের বাসিন্দা নয়। আল্লাহ্‌কে ভয় কর আর জেনে রেখ, নিশ্চয়ই আল্লাহ শাস্তিদানে কঠোর।

اَلْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ فَمَنْ فَرَضَ فِيهِنَّ الْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِي

১৯৭. হাজ্জ হয় কয়েকটি নির্দিষ্ট মাসে, অতঃপর এ মাসগুলোতে যে কেউ হাজ্জ করার মনস্থ করবে, তার জন্য হাজ্জের মধ্যে স্ত্রী সম্ভোগ, অন্যায় আচরণ ও ঝগড়া-বিবাদ বৈধ

১৯৬। 'আবদুল্লাহ ইবনু মা'কিল (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি কা'ব ইবনু উজরা-এর নিকট এই কূফার মাসজিদে বসে থাকাকালে সওমের ফিদ্‌য়া সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, আমার চেহারায় উকুন ছড়িয়ে পড়া অবস্থায় আমাকে নাবী (ﷺ) -এর কাছে আনা হয়। তিনি তখন বললেন, আমি মনে করি যে, এতে তোমার কষ্ট হচ্ছে। তুমি কি একটি বকরী সংগ্রহ করতে পার? আমি বললাম, না। তিনি বললেন, তুমি তিনদিন সওম পালন কর অথবা ছয়জন দরিদ্রকে খাদ্য দান কর। প্রতিটি দরিদ্রকে অর্ধ সা' খাদ্য দান করতে হবে এবং তোমার মাথার চুল কামিয়ে ফেল। তখন আমার ব্যাপারে বিশেষভাবে আয়াত অবতীর্ণ হয়। তবে তোমাদের সকলের জন্য এই হুকুম। –বুখারী ৪৫১৭ [১৮১৪; মুসলিম ১২০১, তিরমিযী ৯৫৩, ২৯৭৩; নাসায়ী ২৮৫১, ২৮৫২; আবূ দাঊদ ১৮৫৬-১৮৬০, ইবনু মাজাহ ৩০৭৯, ৩০৮০; আহমাদ ১৭৬৩৫, ১৭৬৪৩; মালিক ৯৫৫, ৯৫৬]

'ইমরান ইবনু হুসায়ন (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, তামাত্তুর ('উমরাহ ও হাজ্জ একসঙ্গে করে লাভবান হওয়ার) আয়াত আল্লাহ্‌র কিতাবে অবতীর্ণ হয়েছে। এরপর আমরা নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে তা করেছি এবং এর নিষিদ্ধতা ঘোষণা করে কুরআনে এমন কোন আয়াত অবতীর্ণ হয়নি এবং নাবী (ﷺ) ইন্তিকাল পর্যন্ত তা থেকে নিষেধও করেননি। এ ব্যাপারে এক ব্যক্তি নিজের ইচ্ছানুযায়ী মতামত ব্যক্ত করেছেন। –বুখারী ৪৫১৮ [১৫৭১; মুসলিম ১২২৬, নাসায়ী ২৭২৬-২৭২৮, ২৭৩৯; ইবনু মাজাহ ২৯৭৮, আহমাদ ১৯৩৩২, ১৯৩৪০; দারিমী ১৮১৩]

ٱلْحَجِّ ۗ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ يَّعْلَمْهُ اللّٰهُ ؕ وَتَزَوَّدُوْا فَإِنَّ خَيْرَ الزَّادِ التَّقْوٰى ز وَاتَّقُوْنِ يٰٓأُولِي الْأَلْبَابِ (١٩٧)

নয় এবং তোমরা যে কোন সৎ কাজই কর, আল্লাহ্ তা জানেন এবং তোমরা পাথেয়ের ব্যবস্থা করবে আর তাক্বওয়াই শ্রেষ্ঠ পাথেয়। হে জ্ঞানী সমাজ! আমাকেই ভয় করতে থাক।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَبْتَغُوْا فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ فَإِذَآ أَفَضْتُمْ مِّنْ عَرَفٰتٍ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ عِنْدَ الْمَشْعَرِ الْحَرَامِ ص وَاذْكُرُوْهُ كَمَا هَدٰىكُمْ ج وَإِنْ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الضَّآلِّيْنَ (١٩٨)

১৯৮. তোমাদের প্রতি কোন গুনাহ নেই যদি তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের অনুগ্রহ খোঁজ কর এবং যখন তোমরা আরাফাত হতে ফিরবে তখন মাশ'আরুল হারামের নিকট আল্লাহ্কে স্মরণ করবে এবং তাঁকে স্মরণ করবে যেরূপ তিনি তোমাদেরকে শিক্ষা দিয়েছেন, বস্তুতঃ তোমরা এর আগে ছিলে পথভ্রষ্টদের অন্তর্গত।

ثُمَّ أَفِيْضُوْا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ وَاسْتَغْفِرُوا اللّٰهَ ؕ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٩٩)

১৯৯. তারপর তোমরা ফিরে আসবে যেখান থেকে লোকেরা ফিরে আসে এবং আল্লাহ্র নিকট ক্ষমা প্রার্থী হও, নিশ্চয় আল্লাহ ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

فَإِذَا قَضَيْتُمْ مَّنَاسِكَكُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَذِكْرِكُمْ اٰبَآءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ ذِكْرًا ؕ فَمِنَ

২০০. অতঃপর মহান হাজ্জের করণীয় কার্যাবলী সমাপ্ত করবে, তখন আল্লাহ্র স্মরণে মশগুল হও, যেমন তোমরা নিজেদের বাপ-দাদাদের

১৯৭। আবূ হুরাইরাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেন, যে ব্যক্তি এ ঘরের হাজ্জ আদায় করল এবং স্ত্রী সহবাস করল না এবং অন্যায় আচরণ করল না, সে প্রত্যাবর্তন করবে মাতৃগর্ভ হতে সদ্য প্রসূত শিশুর মত হয়ে। –বুখারী ১৮১৯ [১৫২১, মুসলিম ১৩৫০, তিরমিযী ৮১১, নাসায়ী ২৬২৭, ইবনু মাজাহ ২৮৮৯, আহমাদ ৭০৯৬, ৭৩২৪; দারিমী ১৭৯৬]

১৯৮। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, উকায, মাজান্না এবং যুল-মাজায নামক স্থানে জাহিলী যুগে বাজার ছিল। মুসলিমগণ সেখানে হাজ্জ মওসুমে ব্যবসা করতে যাওয়া দূষণীয় মনে করত। তাই অবতীর্ণ হলঃ "তোমাদের পালনকর্তার অনুগ্রহ অন্বেষণ করায় তোমাদের কোন পাপ নেই।" –বুখারী ৪৫১৯ [১৭৭০; আবূ দাউদ ১৭৩৪]

১৯৯। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, কুরাইশ এবং যারা তাদের দ্বীনের অনুসারী ছিল তারা (হাজ্জের সময়) মুযদালেফাতে অবস্থান করত। আর কুরাইশগণ নিজেদেরকে 'হুমুস' ও (ধর্মে অটল) বলে অভিহিত করত এবং অপরাপর আরবগণ আরাফাতে অবস্থান করত। অতঃপর ইসলামের আগমন ঘটলে আল্লাহ তা'আলা তাঁর নাবী (ﷺ) -কে 'আরাফাতে আসার, সেখানে ওকুফের (অবস্থান করার) এবং এরপর সেখান থেকে ফেরার নির্দেশ দিলেন। أَفِيضُوا مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ النَّاسُ আয়াত আল্লাহ এ সম্পর্কেই ব্যক্ত করেছেন। –বুখারী ৪৫২০ [১৬৬৫; মুসলিম ১২১৯, তিরমিযী ৮৮৪, নাসায়ী ৩০১২, আবূ দাউদ ১৯১০]

النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ (٢٠٠)

স্মরণে মশগুল থাক, বরং তার চেয়েও বেশি স্মরণ কর। লোকেদের কেউ কেউ বলে থাকে– হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এ দুনিয়াতেই প্রদান কর, বস্তুতঃ সে আখেরাতে কিছুই পাবে না।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ (٢٠١)

২০১. লোকেদের মধ্যে কিছু লোক এমন আছে, যারা বলে থাকে, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে দুনিয়াতেও কল্যাণ দাও এবং আখেরাতেও কল্যাণ দাও এবং আমাদেরকে জাহান্নামের আযাব হতে রক্ষা কর।

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۖ وَاللهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (٢٠٢)

২০২. এরাই সেই লোক, যাদের কৃতকার্যের তাদের প্রাপ্য অংশ রয়েছে এবং আল্লাহ সত্বর হিসাবগ্রহণকারী।

وَاذْكُرُوا اللهَ فِيْٓ أَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۖ فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَأَخَّرَ فَلَآ إِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۖ وَاتَّقُوا اللهَ وَاعْلَمُوْٓا أَنَّكُمْ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٢٠٣)

২০৩. তোমরা নির্দিষ্ট দিনগুলোতে আল্লাহ্‌কে স্মরণ করবে; অতঃপর যে ব্যক্তি তাড়াতাড়ি ক'রে দু'দিনে চলে যায় তার প্রতি কোন গুনাহ নেই এবং যে ব্যক্তি অধিক সময় পর্যন্ত বিলম্ব করবে, তার প্রতিও গুনাহ নেই, এটা তার জন্য যে ব্যক্তি তাকওয়া অবলম্বন করবে এবং আল্লাহ্‌কে ভয় করতে থাকবে এবং জেনে রেখ, তোমরা সকলেই তাঁরই দিকে একত্রিত হবে।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللهَ عَلٰى مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَهُوَ أَلَدُّ الْخِصَامِ (٢٠٤)

২০৪. মানুষের মধ্যে এমন আছে, পার্থিব জীবন সম্পর্কিত যার কথাবার্তা তোমাকে চমৎকৃত করে, আর সে ব্যক্তি তার অন্তরে যা আছে সে সম্পর্কে আল্লাহ্‌কে সাক্ষী রাখে অথচ সে ব্যক্তি খুবই ঝগড়াটে।

২০১। আনাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী ﷺ এই বলে দু'আ করতেনঃ رَبَّنَا اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ "হে আমাদের প্রভু! এ দুনিয়াতেও আমাদের কল্যাণ দান কর এবং আখিরাতেও কল্যাণ দান কর এবং দোজখের 'আযাব থেকে আমাদের রক্ষা কর"– " –বুখারী ৪৫২২ [মুসলিম ২৬৮৮, তিরমিযী ৩৪৮৭, আবূ দাউদ ১৫১৯, আহমাদ ১১৫৭০, ১১৬৩৮]

২০৪। 'আয়িশাহ (রাঃ) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেন, নাবী (ﷺ) বলেন, আল্লাহ্‌র নিকট অতিশয় ঘৃণিত মানুষ হচ্ছে অতিরিক্ত ঝগড়াটে ব্যক্তি। –বুখারী ৪৫২৩ [২৪৫৭; মুসলিম ২৬৬৮, তিরমিযী ২৯৭৬, নাসায়ী ৪৫২৩, আহমাদ ২৩৭৫৬, ২৩৮২২, ২৫১৭৬]

وَإِذَا تَوَلَّى سَعَى فِي الْأَرْضِ لِيُفْسِدَ فِيهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ وَالنَّسْلَ ۗ وَاللَّهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ (٢٠٥)

২০৫. যখন তোমার কাছ থেকে সে ব্যক্তি ফিরে যায়, তখন দেশের মধ্যে অনিষ্ট ঘটাতে এবং শস্যাদি ও পশুসমূহকে ধ্বংস করতে চেষ্টা করে কিন্তু আল্লাহ্ ফাসাদ পছন্দ করেন না।

وَإِذَا قِيلَ لَهُ اتَّقِ اللَّهَ أَخَذَتْهُ الْعِزَّةُ بِالْإِثْمِ فَحَسْبُهُ جَهَنَّمُ ۚ وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ (٢٠٦)

২০৬. যখন তাকে বলা হয়, আল্লাহ্কে ভয় কর, তখন অহঙ্কার তাকে গুনাহ্র দিকে আকর্ষণ করে, জাহান্নামই তার জন্য যথেষ্ট আর তা কতই না জঘন্য আবাসস্থল!

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَشْرِي نَفْسَهُ ابْتِغَاءَ مَرْضَاتِ اللَّهِ ۗ وَاللَّهُ رَءُوفٌ بِالْعِبَادِ (٢٠٧)

২০৭. মানুষের মধ্যে এমন আছে যে, আল্লাহ্র সন্তুষ্টি অর্জনে নিজের প্রাণ দিয়ে থাকে, বস্তুতঃ আল্লাহ্ তাঁর বান্দাদের প্রতি অত্যধিক দয়ালু।

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ (٢٠٨)

২০৮. হে মু'মিনগণ! ইসলামের মধ্যে পূর্ণভাবে প্রবেশ কর এবং শায়ত্বনের পদাঙ্ক অনুসরণ করে চলো না, নিশ্চয়ই সে তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

فَإِنْ زَلَلْتُمْ مِنْ بَعْدِ مَا جَاءَتْكُمُ الْبَيِّنَاتُ فَاعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ (٢٠٩)

২০৯. তোমাদের নিকট সুস্পষ্ট হুকুম পৌঁছার পরেও যদি তোমাদের পদস্খলন ঘটে তবে জেনে রেখ, নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাপরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাময়।

هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ يَأْتِيَهُمُ اللَّهُ فِي ظُلَلٍ مِنَ الْغَمَامِ وَالْمَلَائِكَةُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ (٢١٠)

২১০. এরা কি এজন্য অপেক্ষা করছে যে, মেঘমালার ছত্র লাগিয়ে ফেরেশতাদের সঙ্গে নিয়ে আল্লাহ তাদের কাছে আগমন করবেন, অতঃপর সবকিছুর মীমাংসা হয়ে যাবে? বস্তুতঃ সকল কার্য আল্লাহ্র নিকটেই ফিরে যায় (চূড়ান্ত সিদ্ধান্তের জন্য)।

سَلْ بَنِي إِسْرَائِيلَ كَمْ آتَيْنَاهُمْ مِنْ

২১১. বানী ইসরাঈলকে জিজ্ঞেস কর, আমি তাদেরকে কত সুস্পষ্ট নিদর্শন দিয়েছি। কোন

'আবদুল্লাহ বলেন, আমার কাছে সুফ্ইয়ান হাদীস বর্ণনা করেন, সুফ্ইয়ান বলেন, আমার কাছে ইবনু জুরায়জ ইবনু আবূ মুলাইকাহ হতে 'আয়িশাহ (রাঃ) সূত্রে নাবী (ﷺ) থেকে এই মর্মে বর্ণনা করেছেন।

اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَمَنْ يُّبَدِّلْ نِعْمَةَ اللهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ فَإِنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (٢١١)

ব্যক্তি আল্লাহ্‌র নিয়ামাত তার নিকট পৌঁছার পর পরিবর্তন করলে, নিশ্চয়ই আল্লাহ শাস্তি দানে কঠোর।

زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ؕ وَاللهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٢١٢)

২১২. কাফিরদের নিকট পার্থিব জীবন মোহনীয় করা হয়েছে এবং তারা মুমিনদেরকে বিদ্রূপ করে থাকে, বস্তুতঃ ক্বিয়ামাতের দিন মুত্তাকীগণ তাদের চেয়ে উন্নত অবস্থায় থাকবে, আল্লাহ যাকে ইচ্ছে অপরিমিত রিয্‌ক দিয়ে থাকেন।

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً ۣ فَبَعَثَ اللهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۖ وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ؕ وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ إِلَّا الَّذِيْنَ أُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَاتُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ بِإِذْنِهٖ ؕ وَاللهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٢١٣)

২১৩. মানুষ একই দলভুক্ত ছিল। তারপর আল্লাহ তাদের নিকট নাবীগণকে প্রেরণ করেন সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে এবং তাদের মাধ্যমে কিতাব নাযিল করেন সত্যভাবে, মানুষদের মধ্যে মীমাংসা করার জন্য যে বিষয়ে তারা মতপার্থক্য করেছিল। এতদসত্ত্বেও যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল, তাদের নিকট সুস্পষ্ট প্রমাণাদি আসার পর পারস্পরিক জিদের কারণেই তারা মতভেদ সৃষ্টি করল। অতঃপর আল্লাহ বিশ্বাসীদেরকে সেই সত্য পথ নিজের করুণায় দেখিয়ে দিলেন, যে সম্বন্ধে তারা মতভেদ করছিল, আল্লাহ যাকে ইচ্ছে সোজা পথ প্রদর্শন করেন।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ ؕ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَآءُ وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللهِ ؕ

২১৪. তোমরা কি এমন ধারণা পোষণ কর যে, তোমরা জান্নাতে প্রবেশ লাভ করবে, অথচ এখনও পর্যন্ত তোমাদের আগের লোকেদের মত অবস্থা তোমাদের সামনে আসেনি? তাদেরকে অভাবের তীব্র তাড়না এবং মসীবত স্পর্শ করেছিল এবং তারা এতদূর বিকম্পিত হয়েছিল যে, নাবী ও তার সঙ্গের মু'মিনগণ চিৎকার করে বলেছিল– আল্লাহ্‌র সাহায্য কখন আসবে? জেনে রেখ, নিশ্চয়ই আল্লাহ্‌র সাহায্য

أَلَآ إِنَّ نَصْرَ اللهِ قَرِيْبٌ (٢١٤)

নিকটবর্তী।

يَسْأَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلْ مَآ أَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ط وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللهَ بِهٖ عَلِيْمٌ (٢١٥)

২১৫. তোমাকে লোকে জিজ্ঞেস করছে, তারা কী ব্যয় করবে? বলে দাও, সৎকাজে যা-ই ব্যয় কর, তা তোমাদের মাতা-পিতা ও নিকটাত্মীয়, ইয়াতীম ও অভাবগ্রস্ত মুসাফিরদের প্রাপ্য। তোমরা যা কিছু সৎ কাজ কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সে বিষয়ে বিশেষভাবে অবহিত।

كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ كُرْهٌ لَّكُمْ ج وَعَسٰٓى أَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ج وَعَسٰى أَنْ تُحِبُّوْا شَيْئًا وَّهُوَ شَرٌّ لَّكُمْ ط وَاللهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ع (٢١٦)

২১৬. তোমাদের প্রতি যুদ্ধ লিপিবদ্ধ করে দেয়া হয়েছে, অথচ তা তোমাদের কাছে অপ্রিয় কিন্তু তোমরা কোন কিছু অপছন্দ কর সম্ভবতঃ তোমাদের জন্য তা কল্যাণকর এবং সম্ভবতঃ কোন কিছু তোমাদের কাছে প্রিয় অথচ তা তোমাদের জন্য অকল্যাণকর। বস্তুতঃ আল্লাহ্ই জানেন, তোমরা জান না।

يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ فِيْهِ ط قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ط وَصَدٌّ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ق وَإِخْرَاجُ أَهْلِهٖ مِنْهُ أَكْبَرُ عِنْدَ اللهِ ج وَالْفِتْنَةُ أَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ط

২১৭. পবিত্র মাসে লড়াই করা সম্বন্ধে তোমাকে তারা জিজ্ঞেস করছে। বল, এতে যুদ্ধ করা ভয়ঙ্কর গুনাহ। পক্ষান্তরে আল্লাহ্র পথ হতে বাধা দান, আল্লাহ্র সঙ্গে কুফরী, কা'বা গৃহে যেতে বাধা দেয়া এবং তাথেকে তার বাসিন্দাদেরকে বের করে দেয়া আল্লাহ্র নিকট

২১৪। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহ্র বাণীঃ "এমনকি যখন রসূলগণ নিরাশ হয়ে পড়ল এবং ভাবতে লাগল যে, তাদেরকে মিথ্যা আশ্বাস দেয়া হয়েছে-" (সূরাহ ইউসুফ ১২/১১০)। তখন ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) এই আয়াতসহ সূরাহ আল-বাকারাহ্র আয়াতের শরণাপন্ন হন ও তিলাওয়াত করেন, যেমনঃ حَتّٰى يَقُوْلَ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ آمَنُوْا مَعَهٗ مَتٰى نَصْرُ اللهِ أَلَآ إِنَّ نَصْرَ اللهِ قَرِيْبٌ এমনকি রসূল (ﷺ) এবং তাঁর সঙ্গে ঈমান আনয়নকারীগণ বলে উঠেছিল-আল্লাহ্র সাহায্য কখন আসবে? হ্যাঁ, হ্যাঁ, আল্লাহ্র সাহায্য নিকটেই- -বুখারী ৪৫২৪

রাবী বলেন, এরপর আমি 'উরওয়াহ ইবনু যুবায়রের সঙ্গে সাক্ষাৎ করে তাকে এ সম্পর্কে জানালে তিনি বলেন যে, 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেছেন, আমি আল্লাহ্র কাছে আশ্রয় চাচ্ছি, আল্লাহ্র কসম! আল্লাহ তা'আলা তাঁর রসূলের নিকট যেসব অঙ্গীকার করেছেন, তিনি জানতেন যে, তা তাঁর মৃত্যুর পূর্বেই বাস্তবে পরিণত হবে। কিন্তু রসূলগণের প্রতি সমূহ বিপদাপদ আসতে থাকবে। এমনকি তারা (সঙ্গী মু'মিনরা) আশঙ্কা করবে যে, সঙ্গী-সাথীরা তাঁদেরকে (রসূলদেরকে) মিথ্যুক সাব্যস্ত করবে। এ প্রসঙ্গে 'আয়িশাহ (রাঃ) এ আয়াত পাঠ করতেন- وَظَنُّوْا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِّبُوْا ভাবল যে, তারা তাদেরকে মিথ্যুক সাব্যস্ত করবে।

'আয়িশাহ (রাঃ) كُذِّبُوْا 'যাল' হরফটি তাশদীদযুক্ত পড়তেন। -বুখারী ৪৫২৫ [৩৩৮৯]

وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ إِنِ اسْتَطَاعُوْا ط وَمَنْ يَّرْتَدِدْ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ فَأُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٢١٧)

তার চেয়ে অধিক অন্যায়। ফিতনা হত্যা হতেও গুরুতর অন্যায়। যদি তাদের সাধ্যে কুলায় তারা তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতেই থাকবে, যে পর্যন্ত না তারা তোমাদেরকে তোমাদের দ্বীন হতে ফিরিয়ে না দেয় এবং তোমাদের যে কেউ নিজের দ্বীন হতে ফিরে যায়, অতঃপর সেই ব্যক্তি কাফির অবস্থায় মারা যায়, তবে এমন লোকের কর্ম দুনিয়াতে এবং আখেরাতে ব্যর্থ হয়ে যাবে। আর এরা অগ্নিবাসী, চিরকালই তাতে থাকবে।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هٰجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ لا أُولٰٓئِكَ يَرْجُوْنَ رَحْمَتَ اللهِ ط وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٢١٨)

২১৮. নিশ্চয়ই যারা ঈমান এনেছে এবং হিজরত করেছে ও আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করেছে, এরাই আল্লাহ্‌র রহমত আশা করে, আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ط قُلْ فِيْهِمَآ إِثْمٌ كَبِيْرٌ وَّمَنٰفِعُ لِلنَّاسِ ز وَإِثْمُهُمَآ أَكْبَرُ مِنْ نَّفْعِهِمَا ط وَيَسْأَلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ط قُلِ الْعَفْوَ ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ لا (٢١٩)

২১৯. তোমাকে লোকে মদ ও জুয়া সম্পর্কে জিজ্ঞেস করছে। বল, 'ঐ দু'টোতে আছে ভয়ঙ্কর গুনাহ এবং মানুষের জন্য উপকারও কিন্তু এ দু'টোর পাপ এ দু'টোর উপকার অপেক্ষা অধিক'। তোমাকে জিজ্ঞেস করছে, কী তারা ব্যয় করবে? বল, 'যা উদ্বৃত্ত'। এভাবে আল্লাহ তোমাদের প্রতি আদেশাবলী বিস্তারিতভাবে বর্ণনা করছেন, যাতে তোমরা চিন্তা কর

فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ط وَيَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْيَتٰمٰى ط قُلْ إِصْلَاحٌ لَّهُمْ خَيْرٌ ط وَإِنْ تُخَالِطُوْهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ط وَاللهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ط وَلَوْ شَآءَ اللهُ لَأَعْنَتَكُمْ ط إِنَّ اللهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٢٢٠)

২২০. দুনিয়া এবং আখিরাত সম্বন্ধে। আরও তারা তোমাকে ইয়াতীমদের সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে; বল, 'তাদের উপকার করা উত্তম' এবং যদি তাদের সঙ্গে তোমরা একত্রে থাক, তবে তারা তো তোমাদেরই ভাই। বস্তুতঃ আল্লাহ জানেন কে অনিষ্টকারী আর কে কল্যাণকামী এবং আল্লাহ যদি ইচ্ছে করতেন, নিশ্চয়ই এ বিষয়ে তোমাদেরকে কঠোরতার মধ্যে নিক্ষেপ করতেন, নিঃসন্দেহে আল্লাহ প্রবল পরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাময়।

২২১. মুশরিকা নারীরা ঈমান না আনা পর্যন্ত তোমরা তাদেরকে বিবাহ করো না। মূলতঃ মু'মিন ক্রীতদাসী মুশরিকা নারী হতে উত্তম ওদেরকে তোমাদের যতই ভাল লাগুক না কেন, ঈমান না আনা পর্যন্ত মুশরিক পুরুষদের সাথে বিবাহ দিও না, বস্তুতঃ মুশরিককে তোমাদের যতই ভাল লাগুক না কেন, মু'মিন গোলাম তার চেয়ে উত্তম। ওরা অগ্নির দিকে আহ্বান করে আর আল্লাহ নিজের অনুগ্রহে জান্নাত ও ক্ষমার দিকে আহ্বান করেন। তিনি মানুষদের জন্য নিজের হুকুমগুলো বিস্তারিতভাবে বর্ণনা করছেন যাতে তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।

وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكٰتِ حَتّٰى يُؤْمِنَّ ؕ وَلَاَمَةٌ مُّؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكَةٍ وَّلَوْ اَعْجَبَتْكُمْ ۚ وَلَا تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَتّٰى يُؤْمِنُوْا ؕ وَلَعَبْدٌ مُّؤْمِنٌ خَيْرٌ مِّنْ مُّشْرِكٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكُمْ ؕ اُولٰٓئِكَ يَدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۖۚ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۚ (٢٢١)

২২২. লোকেরা তোমাকে ঋতু সম্বন্ধে জিজ্ঞেস করছে। বল, 'তা অশুচি'। কাজেই ঋতুকালে স্ত্রী-সহবাস হতে বিরত থাক এবং যে পর্যন্ত পবিত্র না হয়, তাদের নিকটবর্তী হয়ো না। তারপর যখন পবিত্র হবে, তখন তাদের সঙ্গে সহবাস কর, যেভাবে আল্লাহ অনুমতি দিয়েছেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ তওবাহ্কারীদেরকে ভালবাসেন আর পবিত্রতা অবলম্বীদেরকেও ভালবাসেন।

وَيَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ؕ قُلْ هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَأْتُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ (٢٢٢)

২২৩. তোমাদের স্ত্রীগণ তোমাদের শস্যক্ষেত্র। সুতরাং তোমরা তোমাদের শস্যক্ষেত্রে যে প্রকারে ইচ্ছে গমন কর এবং নিজেদের জন্য ভবিষ্যতের বন্দোবস্ত কর এবং আল্লাহ্কে ভয় কর এবং জেনে রেখ যে, তোমাদেরকে তাঁর কাছে হাজির হতে হবে। আর বিশ্বাসীদেরকে সুসংবাদ শুনিয়ে দাও।

نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۖ فَأْتُوْا حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ز وَقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ (٢٢٣)

২২৪. তোমরা সৎকাজ, তাকওয়া অবলম্বন এবং মানুষের মধ্যে শান্তি স্থাপন হতে বিরত থাকবে– আল্লাহ্র নামে এমন শপথ করে তাকে

وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ

২২৩। জাবির (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, ইয়াহূদীরা বলত যে, যদি কেউ স্ত্রীর পেছন দিক থেকে সহবাস করে তাহলে সন্তান টেরা চোখের হয়। তখন (এর প্রতিবাদে) نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ আয়াত অবতীর্ণ হয়। –বুখারী ৪৫২৮ [মুসলিম ১৪৩৫, তিরমিযী ২৯৭৭, আবূ দাউদ ২১৬৩, ইবনু মাজাহ ১৯২৫, দারিমী ১১৩২, ২২১৪]

سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٢٢٤)

ওজুহাত করে নিও না। বস্তুতঃ আল্লাহ সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞাতা।

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ أَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ط وَاللهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ (٢٢٥)

২২৫. আল্লাহ তোমাদের অর্থহীন শপথের জন্য তোমাদেরকে পাকড়াও করবেন না, কিন্তু তোমাদের অন্তরের সংকল্পের জন্য দায়ী করবেন। আল্লাহ ক্ষমাশীল, সহনশীল।

لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ أَرْبَعَةِ أَشْهُرٍ ج فَإِنْ فَآءُوْ فَإِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٢٢٦)

২২৬. যারা নিজেদের স্ত্রীদের নিকট না যাওয়ার জন্য শপথ গ্রহণ করে, তাদের জন্য চার মাসের অবকাশ আছে। যদি তারা (উক্ত সময়ের মধ্যে) ফিরে আসে, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَإِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَإِنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٢٢٧)

২২৭. এবং তারা যদি তালাক দেয়ার দৃঢ়প্রত্যয় গ্রহণ করে, তবে আল্লাহ সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

وَالْمُطَلَّقَاتُ يَتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ط وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ أَنْ يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللهُ فِيْٓ أَرْحَامِهِنَّ إِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط وَبُعُوْلَتُهُنَّ أَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ إِنْ أَرَادُوْٓا إِصْلَاحًا ط وَلَهُنَّ مِثْلُ الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ص وَلِلرِّجَالِ عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ط وَاللهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ع (٢٢٨)

২২৮. তালাকপ্রাপ্তা নারীরা তিন মাসিক পর্যন্ত প্রতীক্ষা করবে এবং তাদের পক্ষে জায়িয নয় সে বস্তু গোপন করা যা তাদের পেটে আল্লাহ সৃজন করেছেন, যদি তারা আল্লাহ ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস রাখে। তাদের স্বামীরা তাদেরকে উক্ত সময়ের মধ্যে পুনঃ গ্রহণে অধিক হকদার, যদি তারা আপোস-নিষ্পত্তি করতে চায় এবং পুরুষদের উপর নারীদেরও হাক্ব আছে, যেমন নিয়ম অনুযায়ী পুরুষদের নারীদের উপরও হাক্ব আছে, অবশ্য নারীদের উপর পুরুষদের বিশেষ মর্যাদা আছে এবং আল্লাহ মহাপরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাশীল।

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ص فَإِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِإِحْسَانٍ ط وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَأْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْئًا إِلَّآ أَنْ يَّخَافَآ أَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللهِ ط فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللهِ لا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا افْتَدَتْ

২২৯. তালাক দুই দফা, অতঃপর হয় ভালভাবে পুনঃ গ্রহণ কিংবা সদ্ব্যবহার সহকারে বিদায় দান এবং তোমাদের পক্ষে তাদেরকে দেয়া মালের কিছুই ফিরিয়ে নেয়া জায়িয হবে না, কিন্তু যদি তারা উভয়ে আশঙ্কা করে যে তারা আল্লাহ্র নির্ধারিত সীমারেখা রক্ষা করে চলতে পারবে না (তাহলে অন্য ব্যবস্থা)। অতঃপর যদি তোমরা (উভয় পক্ষের শালিসগণ) আশঙ্কা কর যে উভয়পক্ষ আল্লাহ্র আইনসমূহ ঠিক রাখতে

بِهٖ ؕ تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللهِ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (٢٢٩)

পারবে না, তাহলে উভয়ের প্রতি কোন গুনাহ নেই যদি কোন কিছুর বিনিময়ে স্ত্রী নিজেকে মুক্ত করতে চায়। এগুলো আল্লাহ্‌র আইন, কাজেই তোমরা এগুলোকে লঙ্ঘন করো না, আর যারা আল্লাহ্‌র আইনসমূহ লঙ্ঘন করবে, তারাই যালিম।

فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ حَتّٰى تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ؕ فَإِنْ طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ أَنْ يَّتَرَاجَعَآ إِنْ ظَنَّآ أَنْ يُّقِيْمَا حُدُوْدَ اللهِ ؕ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (٢٣٠)

২৩০. অতঃপর যদি সে তাকে (চূড়ান্ত) তালাক দেয়, তবে এরপর সেই পুরুষের পক্ষে সেই স্ত্রী (বিবাহ) হালাল হবে না, যে পর্যন্ত না সে অন্য কাউকে স্বামী হিসেবে গ্রহণ করে। অতঃপর যদি সে তাকে তালাক দেয়, তবে উভয়ের পুনরায় মিলিত হওয়াতে গুনাহ নেই, যদি উভয়ের আস্থা জন্মে যে উভয়ে আল্লাহ্‌র আইনসমূহ ঠিক রাখতে পারবে। এসব আল্লাহ্‌র (আইন) সীমাসমূহ, এগুলোকে সেই লোকদের জন্য তিনি বর্ণনা করেন যারা জ্ঞানী।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ سَرِّحُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ص وَلَا تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَا تَتَّخِذُوْآ اٰيٰتِ اللهِ هُزُوًا ز وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ وَاتَّقُوا اللهَ وَاعْلَمُوْآ أَنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ع (٢٣١)

২৩১. যখন তোমরা স্ত্রীদেরকে তালাক দাও এবং তাদের ইদ্দৎ পূর্ণ হয়ে আসে তখন হয় তাদেরকে ভালভাবে গ্রহণ করে রেখে দাও, নইলে ভালভাবে বিদায় দাও, আর বাড়াবাড়ি করে তাদের ক্ষতি করার উদ্দেশে আটকে রেখো না। যে এমন করবে, সে নিজেরই উপর যুলম করে। তোমরা আল্লাহ্‌র আহকামকে হাসি-ঠাট্টারূপে গ্রহণ করো না এবং তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ, তাঁর কিতাব ও জ্ঞানগর্ভ বাক্যাবলী (সুন্নাত) যা তিনি তোমাদের প্রতি নাযিল করেছেন, যদ্দ্বারা তিনি তোমাদেরকে উপদেশ দেন, তা স্মরণ কর আর আল্লাহ্‌কে ভয় কর আর জেনে রেখ, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

وَإِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ أَنْ يَّنْكِحْنَ أَزْوَاجَهُنَّ إِذَا تَرَاضَوْا بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ؕ ذٰلِكَ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

২৩২. যখন তোমরা স্ত্রীদেরকে তালাক দাও, তারপর তাদের ইদ্দৎ পূর্ণ হয়ে যায়, সে অবস্থায় তারা স্বামীদের সাথে বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ হতে চাইলে তাদেরকে বাধা দিও না যখন তারা বৈধভাবে উভয়ে আপোষে সম্মত হয়। তোমাদের মধ্যে যে ব্যক্তি আল্লাহ ও শেষ দিনে বিশ্বাসী তাকে এ উপদেশ দেয়া হচ্ছে। এটা

ۚ ذٰلِكُمْ أَزْكٰى لَكُمْ وَأَطْهَرُ ۚ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (٢٣٢)

তোমাদের পক্ষে অতি বিশুদ্ধতা ও পবিত্রতার বিষয় এবং আল্লাহ্ই বিশেষরূপে জানেন, তোমরা জান না।

وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ أَوْلَادَهُنَّ حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ أَرَادَ أَنْ يُتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۚ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهُ رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ إِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ وَالِدَةٌۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهُ بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ فَإِنْ أَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۚ وَإِنْ أَرَدْتُّمْ أَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا أَوْلَادَكُمْ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِذَا سَلَّمْتُمْ مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٢٣٣)

২৩৩. যে ব্যক্তি দুধপান কাল পূর্ণ করাতে ইচ্ছুক তার জন্য মায়েরা নিজেদের সন্তানদেরকে পূর্ণ দু' বৎসরকাল স্তন্য দান করবে। জনকের উপর দায়িত্ব হল ভালভাবে তাদের অন্নবস্ত্রের ব্যবস্থা করা। কাউকেও সাধ্যের অতিরিক্ত হুকুম দেয়া হয় না, যেন মাকে তার সন্তানের জন্য এবং সন্তানের জন্মদাতাকে সন্তানের জন্য কষ্ট দেয়া না হয় এবং ওয়ারিশের প্রতিও একই রকম নির্দেশ, তৎপর যদি উভয়ের সম্মতি ও যুক্তিক্রমে দুধ ছাড়াতে ইচ্ছে করে, তবে তাদের প্রতি কোন গুনাহ নেই এবং যদি তোমরা স্বীয় সন্তানদেরকে কোন ধাত্রী দ্বারা দুধ পান করাতে ইচ্ছে কর, তবে তোমাদের প্রতি কোন গুনাহ নেই, যদি তোমরা যা দিতে চাচ্ছিলে তা যথারীতি আদায় করে দাও। আল্লাহ্কে ভয় কর এবং জেনে রেখ, তোমরা যা কিছুই কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ أَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِأَنْفُسِهِنَّ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ

২৩৪. তোমাদের মধ্য হতে যারা স্ত্রীদেরকে রেখে মারা যাবে সে অবস্থায় স্ত্রীরা নিজেদেরকে চার মাস দশ দিন বিরত রাখবে। তারপর যখন তাদের ইদ্দৎকাল পূর্ণ হবে, তখন তোমাদের নিজেদের সম্বন্ধে বৈধভাবে যা কিছু করবে

২৩২। মা'কিল ইবনু ইয়াসার (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমার এক বোনের বিয়ের পয়গাম আমার নিকট পেশ করা হয়। আবূ 'আবদুল্লাহ (রহ.) বলেন যে, ইবরাহীম (রহ.) ইউনুস (রহ.) থেকে, তিনি হাসান বসরী (রহ.) থেকে এবং তিনি মা'কিল ইবনু ইয়াসার (রহ.) থেকে বর্ণনা করেছেন। আবূ মা'মার (রহ.) .... হাসান (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, মা'কিল ইবনু ইয়াসার (ﷺ)-এর বোনকে তার স্বামী তালাক দিয়ে আলাদা করে রাখে। যখন ইদ্দত কাল পূর্ণ হয় তখন তার স্বামী তাকে আবার পয়গাম পাঠায়। মা'কিল (ﷺ) অমত করে তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হয়। .... "তখন যদি তারা পরস্পর সম্মত হয়ে নিজেদের স্বামীদের বিধিমত বিয়ে করতে চায় তাহলে তোমরা তাদের বাধা দিবে না।" –বুখারী ৪৫২৯ [৫১৩০, ৫৩৩০, ৫৩৩১]

فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ أَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (٢٣٤)

তাতে তোমাদের কোন গুনাহ নেই। বস্তুতঃ তোমরা যা কিছু করছ, আল্লাহ সে বিষয়ে পরিজ্ঞাত।

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ أَوْ أَكْنَنْتُمْ فِيْٓ أَنْفُسِكُمْ ط عَلِمَ اللهُ أَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا إِلَّآ أَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ط وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ أَجَلَهٗ ط وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ أَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ج وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ع (٢٣٥)

২৩৫. তোমাদের প্রতি গুনাহ নেই যদি তোমরা কথার ইশারায় নারীদেরকে বিবাহের প্রস্তাব পাঠাও, কিংবা নিজেদের মনে গোপন রাখ। আল্লাহ অবগত আছেন যে, ঐ স্ত্রীলোকদের সাথে তোমাদের বিবাহ করার খেয়াল সত্ত্বরই জাগবে, কিন্তু তাদের সাথে গোপন অঙ্গীকার করো না, কিন্তু বৈধভাবে কথাবার্তা বলতে পার এবং তোমরা বিবাহ সম্পাদনের সংকল্প করো না যে পর্যন্ত ইদ্দৎ পূর্ণ না হয় এবং জেনে রেখ, আল্লাহ নিশ্চয়ই তোমাদের মনোভাব জ্ঞাত আছেন, সুতরাং তাঁকে ভয় কর এবং জেনে রেখ, নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, পরম সহিষ্ণু।

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ أَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً صلے ج وَّمَتِّعُوْهُنَّ ج عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ج مَتَاعًا بِالْمَعْرُوْفِ ج حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ (٢٣٦)

২৩৬. তোমাদের প্রতি কোন গুনাহ নেই, যদি তোমরা স্ত্রীদেরকে স্পর্শ না ক'রে, কিংবা তাদের মহর ধার্য না করে তালাক দাও এবং তোমরা স্ত্রীদের জন্য খরচের সংস্থান করবে, অবস্থাপন্ন ব্যক্তি তার সাধ্যমত এবং অবস্থাহীন ব্যক্তি তার সাধ্যমত বিধি অনুযায়ী খরচপত্রের ব্যবস্থা করবে, পুণ্যবানদের উপর এটা দায়িত্ব।

وَإِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ إِلَّآ أَنْ يَّعْفُوْنَ أَوْ يَعْفُوَ الَّذِيْ بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ط وَأَنْ تَعْفُوْٓا أَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ط وَلَا تَنْسَوُا الْفَضْلَ

২৩৭. যদি তোমরা তাদেরকে স্পর্শ করার পূর্বে তালাক দাও, অথচ তাদের মহর ধার্য করা হয়, সে অবস্থায় ধার্যকৃত মহরের অর্ধেক, কিন্তু যদি স্ত্রীরা দাবী মাফ করে দেয় কিংবা যার হাতে বিয়ের বন্ধন আছে সে মাফ করে দেয়, বস্তুতঃ ক্ষমা করাই তাকওয়ার অধিক নিকটবর্তী এবং তোমরা পারস্পরিক সহায়তা হতে বিমুখ হয়ো

২৩৪। 'আবদুল্লাহ ইবনু যুবায়র (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি 'উসমান ইবনু 'আফ্ফান (رضي الله عنه)-কে উক্ত আয়াত সম্পর্কে বললাম যে, এ আয়াত তো অন্য আয়াত দ্বারা মানসূখ (রহিত) হয়ে গেছে। অতএব উক্ত আয়াত আপনি মুসহাফে কেন লিখেছেন, (অথবা রাবী বলেন) কেন বর্জন করছেন না, তখন তিনি ['উসমান (رضي الله عنه)] বললেন, হে ভাতিজা! আমি মুসহাফের স্থান থেকে কোন জিনিস পরিবর্তন করব না। –বুখারী ৪৫৩০, ৪৫৩৬

بَيْنَكُمْ ط إِنَّ اللهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٢٣٧)

না, যা কিছু তোমরা করছ আল্লাহ নিশ্চয়ই তার সম্যক দ্রষ্টা।

حَافِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ الْوُسْطٰى ق وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ (٢٣٨)

২৩৮. তোমরা সলাতের প্রতি যত্নবান হও, বিশেষ করে মধ্যবর্তী সলাতের প্রতি এবং আল্লাহ্‌র সামনে বিনীতভাবে দণ্ডায়মান হও।

فَإِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا أَوْ رُكْبَانًا ج فَإِذَآ أَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ (٢٣٩)

২৩৯. যদি তোমরা ভয় কর, তবে পদচারী কিংবা আরোহী অবস্থায়ই নামায আদায় করবে। যখন নিরুদ্বেগ হবে, তখন আল্লাহ্‌কে স্মরণ কর যেভাবে আল্লাহ তোমাদেরকে শিক্ষা দিয়েছেন, যা তোমরা জানতে না।

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ أَزْوَاجًا صلے ج وَّصِيَّةً لِّأَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا إِلَى الْحَوْلِ غَيْرَ إِخْرَاجٍ ج فَإِنْ خَرَجْنَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ أَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ط وَاللهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٢٤٠)

২৪০. তোমাদের মধ্যে যারা বিবিদেরকে রেখে মারা যাবে, তারা বিবিদের জন্য অসিয়ত করবে যেন এক বৎসরকাল সুযোগ-সুবিধা পায় এবং গৃহ হতে বের ক'রে দেয়া না হয়, তবে যদি তারা নিজেরাই বের হয়ে যায়, তবে তোমাদের প্রতি গুনাহ নেই তারা নিজেদের ব্যাপারে বৈধভাবে কিছু করলে; আল্লাহ মহাশক্তিধর, সুবিজ্ঞ।

وَلِلْمُطَلَّقَاتِ مَتَاعٌ ۢبِالْمَعْرُوْفِ ط حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ (٢٤١)

২৪১. তালাকপ্রাপ্তা নারীদের সঙ্গতভাবে ভরণ-পোষণ করা মুত্তাকীদের কর্তব্য।

كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ

২৪২. তোমাদের জন্য আল্লাহ নিজের আহকাম এমনভাবে ব্যাখ্যা করে বর্ণনা করছেন, যাতে

২৩৮। যায়দ ইবনু আরকাম (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা সলাতের মধ্যে কথাবার্তা বলতাম আর আমাদের কেউ অন্য ভাইয়ের প্রয়োজন নিয়ে কথা বলতেন। তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হয়ঃ حَافِظُوا عَلَى الصَّلَوَاتِ وَالصَّلَاةِ الْوُسْطَى وَقُومُوا لِلّٰهِ قَانِتِيْنَ তখন আমাদেরকে চুপ থাকার নির্দেশ দেয়া হয়। -বুখারী ৪৫৩৪ [১২০০; মুসলিম ৫৩৯, তিরমিযী ৪০৫, ২৯৮৬; নাসায়ী ১২১৯, আবূ দাউদ ৯৪৯, আহমাদ ১৮৭৯২]

২৪০। ইবনু আবূ মুলাইকাহ (রহঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, ইবনু যুবায়র (রাঃ) বললেন, আমি 'উসমান (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করলাম যে, সূরাহ আল-বাকারাহ্‌র এ আয়াতটি وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ أَزْوَاجًا কে তো অন্য একটি আয়াত রহিত করে দিয়েছে। তারপরও আপনি তা কেন লিখছেন? জবাবে 'উসমান (রাঃ) বললেন, ভ্রাতুষ্পুত্র। আমরা তা যথাস্থানে রেখে দিয়েছি। আপন স্থান থেকে কোন কিছুই আমরা সরিয়ে ফেলিনি। হুমায়দ (রহ.) বললেন, অথবা প্রায় এ রকমই উত্তর দিয়ে দিলেন। -বুখারী ৪৫৩৬, ৪৫৩০

تَعْقِلُوْنَ ع (٢٤٢)

তোমরা বুঝতে পার।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَهُمْ أُلُوْفٌ حَذَرَ الْمَوْتِ ص فَقَالَ لَهُمُ اللهُ مُوْتُوْا قف ثُمَّ أَحْيٰهُمْ ط إِنَّ اللهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ (٢٤٣)

২৪৩. তুমি কি সেই লোকদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যারা মৃত্যুকে এড়াবার জন্য নিজেদের ঘর থেকে হাজারে হাজারে বের হয়ে গিয়েছিল, তখন আল্লাহ তাদেরকে বললেন, 'তোমাদের মৃত্যু হোক'। তৎপর তাদেরকে জীবিত করে উঠালেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ লোকেদের প্রতি দয়াশীল কিন্তু অধিকাংশ লোক শোকর করে না।

وَقَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٢٤٤)

২৪৪. তোমরা আল্লাহ্র পথে যুদ্ধ কর এবং জেনে রেখ, আল্লাহ নিশ্চয়ই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗٓ أَضْعَافًا كَثِيْرَةً ط وَاللهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ص وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٢٤٥)

২৪৫. এমন ব্যক্তি কে আছে যে আল্লাহ্কে উত্তম কর্জ প্রদান করবে? তাহলে তার সেই কর্জকে তার জন্য আল্লাহ বহু গুণ বর্ধিত করে দেবেন এবং আল্লাহই সীমিত ও প্রসারিত ক'রে থাকেন এবং তাঁর দিকেই তোমরা ফিরে যাবে।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الْمَلَإِ مِنْۢ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ إِذْ قَالُوْا لِنَبِيٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ط قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ أَلَّا تُقَاتِلُوْا ط قَالُوْا وَمَا لَنَآ أَلَّا نُقَاتِلَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَقَدْ أُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَأَبْنَآئِنَا ط فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ط وَاللهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ (٢٤٦)

২৪৬. তুমি কি মূসার পরবর্তী বানী ইসরাঈলের প্রধানদের প্রতি লক্ষ্য করনি? তারা তাদের নাবীকে বলেছিল, 'আমাদের জন্য একজন বাদশাহ ঠিক করুন, যাতে আমরা আল্লাহ্র পথে জিহাদ করি'। নির্দেশ হল, 'এমন সম্ভাবনা আছে কি যে, যদি তোমাদের প্রতি জিহাদের হুকুম দেয়া হয় তবে তোমরা জিহাদ করবে না'? তারা বলল, 'আমরা কী ওজরে আল্লাহ্র পথে জিহাদ করব না, যখন আমরা আমাদের গৃহ ও সন্তানাদি হতে বহিস্কৃত হয়েছি'। অতঃপর যখন তাদের প্রতি জিহাদের হুকুম হল, তখন তাদের অল্প সংখ্যক লোক ছাড়া সকলেই ফিরে দাঁড়াল এবং আল্লাহ যালিমদেরকে খুব ভালভাবেই জানেন।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اللهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ

২৪৭. তাদেরকে তাদের নাবী বলল, আল্লাহ যথার্থই তালুতকে তোমাদের বাদশাহ ঠিক

طَالُوْتَ مَلِكًا ط قَالُوْٓا أَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ أَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ط قَالَ إِنَّ اللهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهُ بَسْطَةً فِي الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ط وَاللهُ يُؤْتِيْ مُلْكَهُ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (٢٤٧)

করেছেন। তারা বলল, ‘আমাদের উপর কী প্রকারে তার রাজক্ষমতা মিলতে পারে যখন তার চেয়ে আমরাই রাজশক্তির অধিক যোগ্যপাত্র আর তাকে আর্থিক স্বচ্ছলতাও প্রদান করা হয়নি’! নাবী বলল, আল্লাহ তাকেই তোমাদের উপর পছন্দ করেছেন এবং তাকে জ্ঞানে ও দেহে সমৃদ্ধ করেছেন, আল্লাহ যাকে ইচ্ছে নিজের রাজ্য দান করেন, বস্তুতঃ আল্লাহ পর্যাপ্ত দাতা ও প্রজ্ঞাময়।

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ إِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖٓ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ع (٢٤٨)

২৪৮. তাদের নাবী তাদেরকে বলল, তালুতের বাদশাহ হওয়ার নিদর্শন এই যে, তোমাদের নিকট সিন্দুক আসবে, যার মধ্যে তোমাদের প্রতিপালকের শান্তি বাণী রয়েছে এবং সেই অবশিষ্ট জিনিস, যা মূসা ও হারূন সম্প্রদায় রেখে গেছে, ওটা ফেরেশতাগণ উঠিয়ে আনবে, এতে তোমাদের জন্য নিদর্শন আছে যদি তোমরা মু’মিন হও।

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ لا قَالَ إِنَّ اللهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ج فَمَنْ شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ج وَمَنْ لَّمْ يَطْعَمْهُ فَإِنَّهُ مِنِّيْٓ إِلَّا مَنِ اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ج فَشَرِبُوْا مِنْهُ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ط فَلَمَّا جَاوَزَهُ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهُ لا قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ ط قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ أَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللهِ لا كَمْ مِّنْ فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ بِإِذْنِ اللهِ ط وَاللهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ (٢٤٩)

২৪৯. অতঃপর যখন তালুত সৈন্যসহ রওয়ানা হল, বলল, ‘আল্লাহ একটা নদী দ্বারা তোমাদের পরীক্ষা করবেন, মূলতঃ যে কেউ ওটার পানি পান করবে সে ব্যক্তি আমার দলভুক্ত নয় আর যে তা খাবে না, সে নিশ্চয়ই আমার দলভুক্ত হবে, কিন্তু যে এক অঞ্জলি পানি নিবে সেও (আমার দলভুক্ত)’। অতঃপর অতি অল্প সংখ্যক ছাড়া তারা সকলেই তাথেকে পান করল। এরপর তালুত এবং তার সাথী মু’মিনগণ নদী পার হয়ে বলল, ‘আজ জ্বালুত ও তার সৈন্যদের সাথে যুদ্ধ করার শক্তি আমাদের নেই। কিন্তু যাদের এ ধারণা ছিল যে, তাদেরকে আল্লাহ্র সামনে হাজির হতে হবে তারা বলল, ‘আল্লাহ্র হুকুমে বহু ক্ষেত্রে ক্ষুদ্র দল বৃহৎ দলের উপর জয়যুক্ত হয়েছে’। আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সঙ্গে আছেন।

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا رَبَّنَآ

২৫০. যখন তারা জ্বালুত ও তার সৈন্যদের সম্মুখীন হল, তখন বলল, ‘হে আমাদের

أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ط (٢٥٠)

প্রতিপালক! আমাদেরকে ধৈর্যধারণের শক্তি দান কর এবং আমাদের পদগুলো দৃঢ় রেখ এবং কাফির দলের উপর আমাদেরকে জয়যুক্ত কর'।

فَهَزَمُوْهُمْ بِإِذْنِ اللهِ لا قف وَقَتَلَ دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰهُ اللهُ الْمُلْكَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ط وَلَوْلَا دَفْعُ اللهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّفَسَدَتِ الْأَرْضُ وَلٰكِنَّ اللهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (٢٥١)

২৫১. অতঃপর তারা আল্লাহ্‌র হুকুমে তাদেরকে (শত্রুদেরকে) পরাজিত করল এবং দাঊদ জালুতকে কতল করল এবং আল্লাহ দাঊদকে রাজ্য ও হেকমত দান করলেন এবং তাকে শিক্ষা দিলেন যা ইচ্ছে। যদি আল্লাহ মানবজাতির একদলকে অন্যদল দ্বারা প্রতিহত না করতেন, তাহলে পৃথিবী বিপর্যস্ত হয়ে যেত, কিন্তু আল্লাহ সর্বজগতের প্রতি কৃপালু।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ط وَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (٢٥٢)

২৫২. এসব আল্লাহ্‌রই আয়াত, যা আমি সঠিকভাবে তোমাকে পড়িয়ে শুনাচ্ছি এবং নিশ্চয়ই তুমি রসূলদের অন্তর্ভুক্ত।

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ وَمِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۫ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ع (٢٥٣)

২৫৩. এ রসূলগণ এরূপ যে, তাদের মধ্যে কাউকে অন্য কারও উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি। তাদের মধ্যে কেউ এমন আছে যে, তাদের সাথে আল্লাহ কথা বলেছেন এবং তাদের কাউকে পদমর্যাদায় উচ্চ করেছেন। আমি মারইয়ামের পুত্র ঈসাকে সুস্পষ্ট দলীলসমূহ প্রদান করেছি, রূহুল কুদুস (জিব্রীল) দ্বারা সাহায্য করেছি এবং আল্লাহ যদি ইচ্ছে করতেন, তাহলে তাদের পরবর্তীরা তাদের নিকট সুস্পষ্ট দলীল পৌঁছার পর পরস্পর যুদ্ধ বিগ্রহ করত না, কিন্তু তারা পরস্পর মতভেদ সৃষ্টি করল, তাদের কেউ কেউ ঈমান আনল এবং কেউ কেউ কুফরী করল, আল্লাহ যদি ইচ্ছে করতেন, তাহলে তারা যুদ্ধবিগ্রহ করত না, কিন্তু আল্লাহ যা ইচ্ছে করেন, তা-ই করে থাকেন।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (٢٥٤)

২৫৪. হে ঈমানদারগণ! আমার দেয়া জীবিকা থেকে খরচ কর সেদিন আসার পূর্বে যেদিন কোন বিক্রয়, বন্ধুত্ব এবং সুপারিশ কাজে আসবে না। বস্তুতঃ কাফিরগণই অত্যাচারী।

اَللّٰهُ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ۬ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ (٢٥٥)

২৫৫. আল্লাহ, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন উপাস্য নেই, তিনি চিরঞ্জীব, সর্বদা রক্ষণাবেক্ষণকারী। তাঁকে তন্দ্রা ও নিদ্রা স্পর্শ করে না। আকাশমণ্ডলে ও ভূমণ্ডলে যা কিছু আছে, তাঁরই। কে সেই ব্যক্তি যে তাঁর অনুমতি ছাড়া তাঁর নিকট সুপারিশ করে? তিনি লোকদের সমুদয় প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য অবস্থা জানেন। পক্ষান্তরে মানুষ তাঁর জ্ঞানের কোনকিছুই আয়ত্ত করতে সক্ষম নয়, তিনি যে পরিমাণ ইচ্ছে করেন সেটুকু ছাড়া। তাঁর কুরসী আকাশ ও পৃথিবী পরিবেষ্টন করে আছে এবং এ দু'য়ের রক্ষণাবেক্ষণ তাঁকে ক্লান্ত করে না, তিনি উচ্চ মর্যাদাশীল, মহান।

২৫৫। আবূ হুরাইরাহ (রাযি) হতে বর্ণিত এক দীর্ঘ হাদীস থেকে জানা যায় রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন যে- কেউ রাতে শুতে যাওয়ার সময় আয়াতুল কুরসী পাঠ করলে তার জন্য আল্লাহ্‌র তরফ হতে একজন রক্ষক নিযুক্ত থাকবেন এবং ভোর পর্যন্ত তার নিকট কোন শয়ত্বান আসতে পারবে না। -বুখারী ২৩১১ [মুসলিম ১৪২৫, তিরমিযী ১১১৪,

لَآ إِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ج قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ج فَمَنْ يَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ م بِاللهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ج لَا انْفِصَامَ لَهَا ط وَاللهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٢٥٦)

২৫৬. দীনের মধ্যে জবরদস্তির অবকাশ নেই, নিশ্চয় হিদায়াত গোমরাহী হতে সুস্পষ্ট হয়ে গেছে। কাজেই যে ব্যক্তি মিথ্যে মা'বুদদেরকে (তাগুতকে) অমান্য করল এবং আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান আনল, নিশ্চয়ই সে দৃঢ়তর রজ্জু ধারণ করল যা ছিন্ন হওয়ার নয়। আল্লাহ সর্বশ্রোতা এবং সর্বজ্ঞাতা।

اَللهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ ط وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْآ أَوْلِيَـٰٓؤُهُمُ الطَّاغُوْتُ يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ إِلَى الظُّلُمٰتِ ط أُولَـٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ع (٢٥٧)

২৫৭. আল্লাহ মু'মিনদের অভিভাবক, তাদেরকে অন্ধকার থেকে আলোর দিকে বের করে আনেন এবং কাফিরদের অভিভাবক হচ্ছে তাগুত, সে তাদেরকে আলো থেকে অন্ধকারের দিকে নিয়ে যায়। এরাই আগুনের বাসিন্দা, এরা চিরকাল সেখানে থাকবে।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْ حَآجَّ إِبْرَاهِيْمَ فِيْ رَبِّهٖٓ أَنْ اٰتٰهُ اللهُ الْمُلْكَ م إِذْ قَالَ إِبْرَاهِيْمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ لا قَالَ أَنَا أُحْيٖ وَأُمِيْتُ ط قَالَ إِبْرَاهِيْمُ فَإِنَّ اللهَ يَأْتِيْ بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَأْتِ بِهَا مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ط وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ج (٢٥٨)

২৫৮. তুমি কি সেই ব্যক্তির ঘটনা সম্পর্কে চিন্তা কর নি, যে ইব্‌রাহীমের সঙ্গে তার প্রতিপালক সম্বন্ধে তর্ক করেছিল, যেহেতু আল্লাহ তাকে রাজত্ব দান করেছিলেন। ইব্‌রাহীম তাকে যখন বলল, 'আমার প্রতিপালক তিনিই, যিনি জীবিত করেন এবং মৃত্যু ঘটান'। সে বলল, 'আমিও জীবিত করি এবং মৃত্যু ঘটাই'। ইব্‌রাহীম বলল, 'আল্লাহ সূর্যকে পূর্ব দিক থেকে উদিত করেন, তুমি তাকে পশ্চিম দিক থেকে উদিত কর'। তখন সেই কাফিরটি হতভম্ব হয়ে গেল। বস্তুতঃ আল্লাহ যালিমদেরকে সুপথ দেখান না।

নাসায়ী ৩২৮০, ৩৩৫৯, আবূ দাউদ ২১১১, ইবনু মাজাহ ১৮৮৯, আহমাদ ২২২৯২, ২২৩৪৩; মুওয়াত্তা ১১১৮, দারিমী ২২০১]

আনাস (رضي الله عنه) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি। (তিনি বলেছেন) ক্বিয়ামাতের দিন আমার শাফা'আত কবুল করা হবে। আমি বলবো, হে রব, যার অন্তরে এক সরিষা পরিমাণ ঈমানও আছে তাকেই জান্নাত দান করো, সুতরাং তাদেরকে জান্নাতে দাখিল করা হবে। এরপর আমি আবার বলবো, যাদের অন্তরে সামান্যতম ঈমানও আছে তাদেরকেও জান্নাত দান করো। আনাস বলেছেন, (এ সময় রসূল (ﷺ) হাত দ্বারা ইশারা করছিলেন) আমি যেন এখনও নাবী (ﷺ) -এর হাতের আঙ্গুলগুলো দেখতে পাচ্ছি। -বুখারী ৭৫০৯ [মুসলিম ১৯৩, তিরমিযী ২৫৯৩, ইবনু মাজাহ ৪৩১২, আহমাদ ১১৭৪৩, ১২০৬০; দারিমী ৫২]

أَوْ كَالَّذِي مَرَّ عَلَىٰ قَرْيَةٍ وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلَىٰ عُرُوشِهَا ج قَالَ أَنَّىٰ يُحْيِي هَٰذِهِ اللَّهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ج فَأَمَاتَهُ اللَّهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ بَعَثَهُ ط قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ط قَالَ لَبِثْتُ يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ط قَالَ بَل لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانظُرْ إِلَىٰ طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ج وَانظُرْ إِلَىٰ حِمَارِكَ قف وَلِنَجْعَلَكَ آيَةً لِّلنَّاسِ وَانظُرْ إِلَى الْعِظَامِ كَيْفَ نُنشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوهَا لَحْمًا ط فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهُ لا قَالَ أَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ (٢٥٩)

২৫৯. কিংবা এমন ব্যক্তির ঘটনা সম্পর্কে (তুমি কি চিন্তা করনি) যে এক নগর দিয়ে এমন অবস্থায় যাচ্ছিল যে তা উজাড় অবস্থায় ছিল। সে বলল, 'আল্লাহ এ নগরীকে এর মৃত্যুর পরে কীভাবে জীবিত করবেন'? তখন আল্লাহ তাকে একশ' বছর মৃত রাখলেন। তারপর তাকে জীবিত করে তুললেন ও জিজ্ঞেস করলেন, 'তুমি এ অবস্থায় কতকাল ছিলে'? সে বলল, 'একদিন ছিলাম কিংবা একদিন হতেও কম'। আল্লাহ বললেন, 'বরং তুমি একশ' বছর ছিলে, এক্ষণে তুমি তোমার খাদ্যের ও পানীয়ের দিকে লক্ষ্য কর, এটা পচে যায়নি। আর গাধাটার দিকে তাকিয়ে দেখ, আর এতে উদ্দেশ্য এই যে, আমি তোমাকে মানুষের জন্য উদাহরণ করব। আবার তুমি হাড়গুলোর দিকে লক্ষ্য কর, আমি কীভাবে ওগুলো জোড়া লাগিয়ে দেই, তারপর গোশত দ্বারা ঢেকে দেই। এরপর যখন তার কাছে স্পষ্ট হয়ে গেল, তখন সে বলল, 'এখন আমি পূর্ণ বিশ্বাস করছি যে, আল্লাহ্ই সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান'।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيمُ رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ ط قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن ط قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي ط قَالَ فَخُذْ أَرْبَعَةً مِّنَ الطَّيْرِ فَصُرْهُنَّ إِلَيْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلَىٰ كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ ادْعُهُنَّ يَأْتِينَكَ سَعْيًا ط وَاعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ع (٢٦٠)

২৬০. যখন ইব্‌রাহীম বলেছিল, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি মৃতকে কীরূপে জীবিত করবে আমাকে দেখাও'। আল্লাহ বললেন, 'তুমি কি বিশ্বাস কর না'? সে আরয করল, 'নিশ্চয়ই, তবে যাতে আমার অন্তঃকরণ স্বস্তি লাভ করে (এজন্য তা দেখতে চাই)'। আল্লাহ বললেন, তাহলে চারটি পাখী নাও এবং তাদেরকে বশীভূত কর। তারপর ওদের এক এক টুকরো প্রত্যেক পাহাড়ের উপর রেখে দাও, অতঃপর সেগুলোকে ডাক দাও, তোমার নিকট দৌড়ে আসবে। জেনে রেখ যে, নিশ্চয় আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

مَثَلُ الَّذِينَ يُنفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ

২৬১. যারা আল্লাহ্র পথে নিজেদের মাল ব্যয়

২৬০। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন যে, ইবরাহীম (আঃ) যখন رَبِّ أَرِنِي كَيْفَ تُحْيِي الْمَوْتَىٰ قَالَ أَوَلَمْ تُؤْمِن قَالَ بَلَىٰ وَلَٰكِن لِّيَطْمَئِنَّ قَلْبِي -হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে দেখাও কেমন করে তুমি মৃতকে জীবিত কর? তখন ইবরাহীম (আঃ)-এর তুলনায় সন্দেহ করার ব্যাপারে আমিই অগ্রসর ছিলাম। -বুখারী ৪৫৩৭ [৩৩৭২; মুসলিম ১৫১, ইবনু মাজাহ ৪০২৬, আহমাদ ৮১২৯

كَمَثَلِ حَبَّةٍ أَنْۢبَتَتْ سَبْعَ سَنَابِلَ فِيْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ مِّائَةُ حَبَّةٍ ط وَاللهُ يُضَاعِفُ لِمَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (٢٦١)

করে, তাদের (দানের) তুলনা সেই বীজের মত, যাথেকে সাতটি শীষ জন্মিল, প্রত্যেক শীষে একশত করে দানা এবং আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন, বর্ধিত হারে দিয়ে থাকেন। বস্তুতঃ আল্লাহ প্রাচুর্যের অধিকারী, জ্ঞানময়।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ لَا يُتْبِعُوْنَ مَآ أَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ أَذًى لا لَّهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٢٦٢)

২৬২. যারা আল্লাহ্‌র পথে নিজেদের ধন ব্যয় ক'রে নিজেদের দানের কথা মনে করিয়ে দেয় না আর (দান গ্রহীতাকে) কষ্ট দেয় না, তাদের প্রতিদান তাদের প্রতিপালকের নিকট নির্ধারিত আছে, তাদের কোন ভয় নেই, মর্মপীড়াও নেই।

قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَيْرٌ مِّنْ صَدَقَةٍ يَّتْبَعُهَآ أَذًى ط وَاللهُ غَنِيٌّ حَلِيْمٌ (٢٦٣)

২৬৩. যে দানের পর কষ্ট দেয়া হয় তার চেয়ে ভাল কথা ও ক্ষমা উত্তম; বস্তুতঃ আল্লাহ অভাবমুক্ত ও পরম সহিষ্ণু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا صَدَقَاتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْأَذٰى لا كَالَّذِيْ يُنْفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفْوَانٍ عَلَيْهِ تُرَابٌ فَأَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ صَلْدًا ط لَا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّمَّا كَسَبُوْا ط وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ (٢٦٤)

২৬৪. হে ঈমানদারগণ! দানের কথা মনে করিয়ে দিয়ে ও কষ্ট দিয়ে তোমরা নিজেদের দান-খয়রাতকে সে ব্যক্তির ন্যায় ব্যর্থ করে দিও না যে নিজের ধন লোক দেখানোর জন্য ব্যয় করে থাকে, অথচ সে আল্লাহ ও পরকালে বিশ্বাসী নয়। তার তুলনা সেই মসৃণ পাথরের মত, যাতে সামান্য কিছু মাটি আছে, অতঃপর প্রবল বৃষ্টিপাত তাকে পরিষ্কার করে ফেলে। তারা স্বীয় কৃত কার্যের ফল কিছুই পাবে না; আল্লাহ কাফিরদেরকে পথপ্রদর্শন করেন না।

وَمَثَلُ الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللهِ وَتَثْبِيْتًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبْوَةٍ أَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتْ أُكُلَهَا ضِعْفَيْنِ ج فَإِنْ لَّمْ يُصِبْهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ط وَاللهُ

২৬৫. যারা আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টি সাধন ও নিজেদের মনে (ঈমানের) দৃঢ়তা সৃষ্টির উদ্দেশে নিজেদের ধন ব্যয় করে থাকে তাদের তুলনা সেই বাগানের ন্যায় যা উচ্চভূমিতে অবস্থিত, তাতে মুষলধারে বৃষ্টিপাতের ফলে দ্বিগুণ ফল ধরে, যদি তাতে বৃষ্টিপাত নাও হয়, তবে শিশির বিন্দুই যথেষ্ট, তোমরা যা কিছুই কর, আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٢٦٥)

أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُوْنَ لَهُ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّأَعْنَابٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهَارُ لا لَهُ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ لا وَأَصَابَهُ الْكِبَرُ وَلَهُ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ صلے ج فَأَصَابَهَآ إِعْصَارٌ فِيْهِ نَارٌ فَاحْتَرَقَتْ ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَتَفَكَّرُوْنَ ع (٢٦٦)

২৬৬. তোমাদের কেউ কি পছন্দ করে যে, তার এমন একটা খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান হোক, যার নীচ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তার জন্য তাতে সব রকম ফল আছে, আর তার বার্ধক্যও সমুপস্থিত, তার কতকগুলো সন্তান-সন্ততি আছে যারা কাজকর্মের লায়েক নয়, এ অবস্থায় বাগানের উপর অগ্নি হাওয়া বয়ে গেল, যার ফলে সেটি জ্বলে গেল? আল্লাহ তোমাদের জন্য নিদর্শনসমূহ এভাবে বর্ণনা করছেন, যাতে তোমরা চিন্তা করে দেখ।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْفِقُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبْتُمْ وَمِمَّآ أَخْرَجْنَا لَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ ص وَلَا تَيَمَّمُوا الْخَبِيْثَ مِنْهُ تُنْفِقُوْنَ وَلَسْتُمْ بِاٰخِذِيْهِ إِلَّآ أَنْ تُغْمِضُوْا فِيْهِ ط وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ (٢٦٧)

২৬৭. হে মু'মিনগণ! তোমাদের উপার্জিত উত্তম সম্পদ থেকে এবং তোমাদের জন্য ভূমি থেকে যা উৎপন্ন করেছি তাথেকে ব্যয় কর এবং নিকৃষ্ট বস্তু ব্যয় করার নিয়ত করো না, বস্তুতঃ তোমরা তা গ্রহণ কর না, যদি না তোমাদের চক্ষু বন্ধ করে থাক। আর জেনে রেখ, আল্লাহ অমুখাপেক্ষী, প্রশংসিত।

اَلشَّيْطَانُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَأْمُرُكُمْ

২৬৮. শয়ত্বান তোমাদেরকে গরীব হয়ে যাওয়ার ভয় দেখায় এবং লজ্জাকর বিষয়ের নির্দেশ দেয়

২৬৬। 'উবায়দ ইবনু 'উমায়র (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, একদা 'উমার (ﷺ) নাবী (ﷺ)-এর সহাবীদের জিজ্ঞেস করলেন যে, أَيَوَدُّ أَحَدُكُمْ أَنْ تَكُوْنَ لَهُ جَنَّةٌ এ আয়াতটি যে উপলক্ষে অবতীর্ণ হয়েছে, সে ব্যাপারে আপনাদের মতামত কী? তখন তারা বললেন, আল্লাহই জানেন। 'উমার (ﷺ) এতে রেগে গিয়ে বললেন, বল আমরা জানি অথবা আমরা জানি না। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) বললেন, হে আমীরুল মু'মিনীন! এ ব্যাপারে আমার অন্তরে কিছুটা ধারণা আছে। 'উমার (ﷺ) বললেন, বৎস! বলে ফেল এবং নিজেকে তুচ্ছ ভেবো না। তখন ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) বললেন, এটা কর্মের দৃষ্টান্ত হিসেবে পেশ করা হয়েছে। 'উমার (ﷺ) বললেন, কোন্ কর্মের? ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) বললেন, একটি কর্মের। 'উমার (ﷺ) বললেন, এটি উদাহরণ হচ্ছে সেই ধনবান ব্যক্তির, যে মহান ও পরাক্রমশালী আল্লাহ্র 'ইবাদাত করতে থাকে, এরপর আল্লাহ তা'আলা তাঁর প্রতি শয়ত্বানকে প্রেরণ করেন। অতঃপর সে কাজ করে শেষ পর্যন্ত তাঁর সকল সৎকর্ম বরবাদ করে ফেলে-বুখারী ৪৫৩৮

২৬৭। 'আবদুল্লাহ ইব্নু 'উমার (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেছেনঃ বৃষ্টি ও প্রবাহিত পানি দ্বারা সিক্ত ভূমিতে উৎপাদিত ফসল বা সেচ ব্যতীত উর্বরতার ফলে উৎপন্ন ফসলের উপর (দশমাংশ) 'উশর ওয়াজিব হয়। আর সেচ দ্বারা উৎপাদিত ফসলের উপর অর্ধ (বিশ ভাগের এক ভাগ) 'উশর। -বুখারী ১৪৮৩ [তিরমিযী ৬৪০, নাসায়ী ২৪৮৮, আবূ দাউদ ১৫৯৬, ইবনু মাজাহ ১৮১৭]

بِالْفَحْشَآءِ ج وَاللهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً مِّنْهُ وَفَضْلًا ط وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ج صلے لا (٢٦٨)

এবং আল্লাহ নিজ পক্ষ হতে তোমাদের সাথে ক্ষমার ও অনুগ্রহের ওয়াদা করছেন এবং আল্লাহ প্রাচুর্যের অধিকারী, মহাজ্ঞানী।

يُّؤْتِي الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ج وَمَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ أُوْتِيَ خَيْرًا كَثِيْرًا ط وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ (٢٦٩)

২৬৯. যাকে ইচ্ছে তিনি হিকমাত দান করেন এবং যে ব্যক্তি এ জ্ঞানপ্রাপ্ত হয়, নিঃসন্দেহে সে মহাসম্পদ প্রাপ্ত হয় এবং উপদেশ তারাই গ্রহণ করে, যারা জ্ঞানী।

وَمَآ أَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ أَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَإِنَّ اللهَ يَعْلَمُهُ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارٍ (٢٧٠)

২৭০. তোমরা যে ব্যয়ই কর কিংবা যে কোন মানৎ কর, আল্লাহ নিশ্চয়ই তা জানেন কিন্তু যালিমদের জন্য কোন সাহায্যকারী নেই।

إِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ج وَإِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ط وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (٢٧١)

২৭১. যদি তোমরা প্রকাশ্যে দান কর তবে তাও উত্তম, আর যদি তোমরা তা গোপনে কর এবং তা অভাবগ্রস্তদেরকে দান কর, তবে তা তোমাদের জন্য আরো উত্তম, অধিকন্তু তিনি তোমাদের কিছু গুনাহ মোচন করে দেবেন, বস্তুতঃ যা কিছু তোমরা করছ, আল্লাহ তার খবর রাখেন।

لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰهُمْ وَلٰكِنَّ اللهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلِأَنْفُسِكُمْ ط وَمَا تُنْفِقُوْنَ إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللهِ ط وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ

২৭২. তাদেরকে ঠিক পথে নিয়ে আসা তোমার দায়িত্ব নয়, বরং আল্লাহ যাকে ইচ্ছে ঠিক পথে পরিচালিত করেন, বস্তুতঃ তোমরা যা কিছু ব্যয় কর, তা তোমাদের নিজেদের জন্যই এবং তোমরা তো শুধু আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টির জন্যই ব্যয় করে থাক এবং যা কিছু তোমরা মাল হতে ব্যয় করবে, তোমাদেরকে তার ফল পুরোপুরি দেয়া হবে এবং

২৬৯। হুমায়দ ইব্‌নু 'আবদুর রহমান (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেনঃ আমি মু'আবিয়াহ (رضي الله عنه)-কে খুৎবায় বলতে শুনেছি, তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি, আল্লাহ্ যার মঙ্গল চান, তাকে দীনের 'ইল্‌ম দান করেন। আমি তো বিতরণকারী মাত্র, আল্লাহ্‌ই (জ্ঞান) দাতা। সর্বদাই এ উম্মাত কিয়ামাত পর্যন্ত আল্লাহ্‌র হুকুমের উপর কায়িম থাকবে, বিরোধিতাকারীরা তাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না। –বুখারী ৭১ [৩১১৬, ৩৬৪১,৭৩১২, ৭৪৬০; মুসলিম ১০৩৭, ইবনু মাজাহ ২২১, আহমাদ ১৬৩৯২, ১৬৪০৭; মুওয়াত্তা ১৬৬৭, দারিমী ২২৪, ২২৬]

إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ (٢٧٢)

তোমাদের প্রতি অন্যায় করা হবে না।

لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ أُحْصِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِي الْأَرْضِ ز يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ أَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ج تَعْرِفُهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ج لَا يَسْأَلُوْنَ النَّاسَ إِلْحَافًا ط وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ع (٢٧٣)

২৭৩. ওটা সেই অভাবগ্রস্তদের প্রাপ্য যারা আল্লাহ্‌র পথে আবদ্ধ আছে, দেশময় ঘুরে বেড়াতে পারে না, ভিক্ষাবৃত্তি অবলম্বী না হওয়ার কারণে অজ্ঞ লোকেরা তাদেরকে অভাবমুক্ত মনে করে, তাদের চেহারা দেখে তুমি তাদেরকে চিনতে পারবে। তারা লোকেদের কাছে নাছোড় হয়ে ভিক্ষা করে না এবং তোমাদের মাল হতে যা কিছু ব্যয় করবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ সে সম্পর্কে সুপরিজ্ঞাত।

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٢٧٤)

২৭৪. যারা নিজেদের মাল রাতে ও দিনে, প্রকাশ্যে অপ্রকাশ্যে ব্যয় করে থাকে, তাদের জন্য সেই দানের সওয়াব তাদের প্রতিপালকের নিকট রয়েছে এবং তাদের কোন ভয় নেই, তারা চিন্তিতও হবে না।

اَلَّذِيْنَ يَأْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ إِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْٓا إِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ الرِّبٰوا م وَأَحَلَّ اللهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ الرِّبٰوا ط فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ط

২৭৫. যারা সূদ খায়, তারা সেই লোকের মত দাঁড়াবে যাকে শয়ত্বান স্পর্শ দ্বারা বেহুশ করে দেয়, এ শাস্তি এজন্য যে, তারা বলে, 'ক্রয়-বিক্রয় সূদের মতই', অথচ কারবারকে আল্লাহ হালাল করেছেন এবং তিনি সূদকে হারাম করেছেন। সুতরাং যার নিকট তার প্রতিপালকের পক্ষ হতে উপদেশবাণী পৌঁছল এবং সে বিরত হল, পূর্বে যা (সূদের আদান-প্রদান) হয়ে গেছে, তা তারই, তার বিষয় আল্লাহ্‌র জিম্মায় এবং যারা আবার আরম্ভ করবে তারাই অগ্নির

২৭২। 'আদী ইবনু হাতিম (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি, তোমরা জাহান্নাম হতে আত্মরক্ষা কর এক টুকরা খেজুর সদাকাহ করে হলেও। –বুখারী ১৪১৭ [১৪১৩; মুসলিম ১০১৬, নাসায়ী ২৫৫২, ২৫৫৩; আহমাদ ১৭৭৮২]

২৭৩। আবূ হুরাইরাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেছেন, প্রকৃত মিসকীন সে নয় যে মানুষের কাছে ভিক্ষার জন্য ঘুরে বেড়ায় এবং এক-দু' লুকমা অথবা এক-দু'টি খেজুর পেলে ফিরে যায় বরং প্রকৃত মিসকীন সেই ব্যক্তি, যার এতটুকু সম্পদ নেই যাতে তার প্রয়োজন মিটতে পারে এবং তার অবস্থা সেরূপ বোঝা যায় না যে, তাকে দান খয়রাত করা যাবে আর সে মানুষের কাছে যাচঞা করে বেড়ায় না। –বুখারী ১৪৭৯ [১৪৭৬; মুসলিম ১০৩৯, নাসায়ী ২৫৭১-২৫৭৩, আবূ দাউদ ১৬৩১, আহমাদ ৭৪৮৬, ৮৮৬৭; মুওয়াত্তা ১৪৩৭, দারিমী ১৬১৫]

وَأَمْرُهٗٓ إِلَى اللّٰهِ ط وَمَنْ عَادَ فَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيهَا خٰلِدُوْنَ (٢٧٥)

বাসিন্দা, তারা তাতে চিরকাল থাকবে।

يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ط وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ أَثِيمٍ (٢٧٦)

২৭৬. আল্লাহ সূদকে বিলুপ্ত করেন এবং খয়রাতকে বৃদ্ধি করেন, আল্লাহ অকৃতজ্ঞ পাপীদেরকে ভালবাসেন না।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٢٧٧)

২৭৭. যারা ঈমান আনে, সৎকাজ করে, নামায কায়িম করে এবং যাকাত আদায় করে, তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট সওয়াব নির্ধারিত আছে। তাদের কোন ভয় নেই, তারা চিন্তিতও না।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٢٧٨)

২৭৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ্কে ভয় কর এবং বাকী সূদ ছেড়ে দাও, যদি তোমরা ঈমানদার হও।

২৭৫। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, সুদ সম্পর্কে সূরাহ আল-বাকারাহ্র শেষ আয়াতগুলো যখন অবতীর্ণ হল তখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) লোকেদের নিকট তা পাঠ করে শোনালেন। তারপর মদের ব্যবসা নিষিদ্ধ করে দিলেন। –বুখারী ৪৫৪০ [৪৫৯; মুসলিম ১৫৮০, নাসায়ী ৪৬৬৫, আবূ দাঊদ ৩৪৯০, ইবনু মাজাহ ৩৩৮২, ৩৮২৩; আহমাদ ২৩৬৭৩, ২৪১৭১; দারিমী ২৫৬৯, ২৫৭০]

২৭৭। আবূ হুরাইরাহ্ (রাযিয়াল্লাহু আনহু) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেনঃ যে ব্যক্তি হালাল কামাই থেকে একটি খেজুর পরিমাণ সদাকাহ করবে, (আল্লাহ তা কবূল করবেন) এবং আল্লাহ কেবল পবিত্র মাল কবূল করেন আর আল্লাহ তাঁর ডান হাত [কুরআনের বিভিন্ন আয়াত ও হাদীস থেকে জানা যায়, আল্লাহর হাত আছে, পা আছে। কিন্তু এই হাত পা কেমন সে সম্পর্কে আমরা কোন ধারণাও করতে পারি না চিন্তাও করতে পারি না। সৃষ্টিজগতে তাঁর কোন তুলনা নেই। কেননা আল্লাহ তা'আলা নিজের সম্পর্কে বলেছেন, لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ তাঁর সদৃশ কোন কিছুই নেই, তিনি সবকিছু শুনেন ও দেখেন– (সূরা শূরা ১১)। কুদরাতি হাত বা কুদরাতি পা বা কুদরাতি চক্ষু ইত্যাদি অর্থ করা আল্লাহর গুণাবলীর বিকৃতি সাধন করার শামিল।] দিয়ে তা কবূল করেন। এরপর আল্লাহ দাতার কল্যাণার্থে তা প্রতিপালন করেন যেমন তোমাদের কেউ অশ্ব শাবক প্রতিপালন করে থাকে, অবশেষে সেই সদাকাহ পাহাড় বরাবর হয়ে যায়।

সুলায়মান (রহ.) ইব্নু দীনার (রহ.) থেকে হাদীস বর্ণনায় 'আবদুর রহমান (রহ.)-এর অনুসরণ করেছেন এবং ওয়ারকা (রহ.) ইবনু দীনার থেকে তিনি সাঈদ বিন ইয়াসার থেকে আবূ হুরাইরাহ্ (রাযিয়াল্লাহু আনহু)-এর সূত্রে নাবী (ﷺ) হাদীসটি বর্ণনা করে বলেছেন এবং মুসলিম ইবনু আবূ মারয়াম, যায়দ ইব্নু আসলাম ও সুহায়ল (রহ.) আবূ সালিহ (রহ.)-এর মাধ্যমে আবূ হুরাইরাহ্ (রাযিয়াল্লাহু আনহু)-এর সূত্রে নাবী (ﷺ) হতে হাদীসটি বর্ণনা করেন। –বুখারী ১৪১০ [৭৪৩০; মুসলিম ১০১৪, তিরমিযী ৬২১, নাসায়ী ২৫২৫, ইবনু মাজাহ ১৮৪২, আহমাদ ৭৫৭৮, ৮১৮১; মুওয়াত্তা ১৮৭৪, দারিমী ১৬৭৫]

২৭৯. অতঃপর যদি না ছাড় তবে আল্লাহ ও তাঁর রসূলের নিকট হতে যুদ্ধের ঘোষণা শুনে লও। কিন্তু যদি তোমরা তাওবাহ কর, তবে তোমরা তোমাদের মূলধন পাবে, এতে তোমাদের দ্বারা অত্যাচার হবে না, আর তোমরাও অত্যাচারিত হবে না।

فَإِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَأْذَنُوْا بِحَرْبٍ مِّنَ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ ج وَإِنْ تُبْتُمْ فَلَكُمْ رُؤُوْسُ أَمْوَالِكُمْ ج لَا تَظْلِمُوْنَ وَلَا تُظْلَمُوْنَ (٢٧٩)

২৮০. যদি সে (ঋণ গ্রহণকারী) দরিদ্র হয়, তবে স্বচ্ছল অবস্থা আসা পর্যন্ত অবকাশ দিবে আর মাফ করে দেয়া তোমাদের পক্ষে অতি উত্তম, যদি তোমরা জানতে!

وَإِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ إِلٰى مَيْسَرَةٍ ط وَأَنْ تَصَدَّقُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٢٨٠)

২৮১. তোমরা সেদিনের ভয় কর, যেদিন তোমাদেরকে আল্লাহ্‌র দিকে ফিরিয়ে নেয়া হবে। অতঃপর প্রত্যেক লোককে তার কৃতকর্মের বিনিময় দেয়া হবে এবং তারা কিছুমাত্র অত্যাচারিত হবে না।

وَاتَّقُوْا يَوْمًا تُرْجَعُوْنَ فِيْهِ إِلَى اللهِ قف ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ع (٢٨١)

২৮২. হে বিশ্বাসীগণ! যখন তোমরা নির্দিষ্ট সময়ের জন্য ধারে কারবার করবে, তখন তা লিখে রাখবে, তোমাদের মধ্যে যেন কোন একজন লেখক ন্যায্যভাবে লিখে দেয়, লেখক যেন লিখতে অস্বীকার না করে, যেরূপ আল্লাহ তাকে শিক্ষা দিয়েছেন, কাজেই সে যেন লিখে এবং কর্জ-গ্রহীতা যেন লেখার বিষয়বস্তু বলে দেয় এবং তার প্রতিপালক আল্লাহ্‌র ভয় রাখে এবং প্রাপ্য হতে যেন কোনও প্রকারের কাটছাঁট না করে। যদি কর্জ-গ্রহীতা স্বল্প-বুদ্ধি অথবা দুর্বল কিংবা লেখার বিষয়বস্তু বলতে অক্ষম হয়, তবে তার অভিভাবক যেন লেখার বিষয়বস্তু ন্যায্যভাবে বলে দেয় এবং তোমাদের আপন পুরুষ লোকের মধ্য হতে দু'জন সাক্ষী রাখ, যদি দু'জন পুরুষ না পাওয়া যায়, তাহলে একজন পুরুষ ও দু'জন স্ত্রী লোক, যাদের সাক্ষ্য সম্পর্কে তোমরা রাজী আছ, এটা এজন্য যে, যদি একজন ভুলে যায় তবে অন্যজন স্মরণ করিয়ে দেবে এবং যখন সাক্ষীগণকে ডাকা হবে, তখন যেন (সাক্ষ্য দিতে) অস্বীকার না করে। ছোট হোক বা বড় হোক তোমরা নির্দিষ্ট মেয়াদসহ লিখে

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا تَدَايَنْتُمْ بِدَيْنٍ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوْهُ ط وَلْيَكْتُبْ بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ص وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَنْ يَّكْتُبَ كَمَا عَلَّمَهُ اللهُ فَلْيَكْتُبْ ج وَلْيُمْلِلِ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللهَ رَبَّهٗ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ط فَإِنْ كَانَ الَّذِيْ عَلَيْهِ الْحَقُّ سَفِيْهًا أَوْ ضَعِيْفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيْعُ أَنْ يُّمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهٗ بِالْعَدْلِ ط وَاسْتَشْهِدُوْا شَهِيْدَيْنِ مِنْ رِّجَالِكُمْ ج فَإِنْ لَّمْ يَكُوْنَا رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَّامْرَأَتٰنِ مِمَّنْ تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَآءِ أَنْ تَضِلَّ إِحْدٰىهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدٰىهُمَا الْأُخْرٰى ط وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَآءُ إِذَا مَا دُعُوْا ط وَلَا تَسْأَمُوْٓا أَنْ

تَكْتُبُوْهُ صَغِيْرًا أَوْ كَبِيْرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ط ذٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ وَأَقْوَمُ لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوْآ إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً حَاضِرَةً تُدِيْرُوْنَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَلَّا تَكْتُبُوْهَا ط وَأَشْهِدُوْآ إِذَا تَبَايَعْتُمْ ص وَلَا يُضَارَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ط٥ وَإِنْ تَفْعَلُوْا فَإِنَّهٗ فُسُوْقٌ ۢ بِكُمْ ط وَاتَّقُوا اللهَ ط وَيُعَلِّمُكُمُ اللهُ ط وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٢٨٢)

রাখাকে তাচ্ছিল্যভরে উপেক্ষা করো না, এ লিখে রাখা আল্লাহ্‌র নিকট ইনসাফ বজায় রাখার জন্য দৃঢ়তর, সঠিক প্রমাণের জন্য সহজতর এবং তোমরা যাতে কোনও সন্দেহে পতিত না হও এর নিকটবর্তী। কিন্তু যদি কোন সওদা তোমরা পরস্পর নগদ নগদ সম্পাদন কর, তবে না লিখলেও তোমাদের কোন দোষ নেই। আর তোমরা যখন পরস্পর কেনাবেচা কর তখন সাক্ষী রেখ। কোনও লেখক ও সাক্ষীকে যেন কষ্ট দেয়া না হয় এবং যদি এরূপ কর, তাহলে তোমাদের গুনাহ হবে। কাজেই আল্লাহ্‌কে ভয় কর এবং আল্লাহ তোমাদেরকে শিক্ষা দিচ্ছেন এবং আল্লাহ সর্ববিষয়ে সুপরিজ্ঞাত।

وَإِنْ كُنْتُمْ عَلَىٰ سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ط فَإِنْ أَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ الَّذِي اؤْتُمِنَ أَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ اللهَ رَبَّهٗ ط وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ط وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَإِنَّهٗٓ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ع (٢٨٣)

২৮৩. যদি তোমরা সফরে থাক এবং কোন লেখক না পাও, তাহলে বন্ধক রাখার জিনিসগুলো অন্যের দখলে রাখতে হবে, যদি তোমরা পরস্পর পরস্পরকে বিশ্বাস কর তাহলে যাকে বিশ্বাস করা হয়েছে সে যেন আমানত ফিরিয়ে দেয় এবং তার প্রতিপালক আল্লাহ্‌কে ভয় করে। তোমরা সাক্ষ্য গোপন করো না, যে ব্যক্তি তা গোপন করে, তার অন্তর পাপী। তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে বিশেষভাবে অবহিত।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَإِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللهُ ط فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٢٨٤)

২৮৪. যা কিছু আকাশসমূহে ও ভূমণ্ডলে আছে, সবকিছু আল্লাহ্‌রই। তোমাদের অন্তরে যা আছে, তা তোমরা প্রকাশ কর কিংবা গোপন কর আল্লাহ তার হিসাব তোমাদের নিকট হতে গ্রহণ করবেন। সুতরাং যাকে ইচ্ছে তিনি ক্ষমা করবেন এবং যাকে ইচ্ছে তিনি শাস্তি দিবেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে ক্ষমতাবান।

২৮৪। মারওয়ান আল আসফার (ﷺ) নাবী (ﷺ) -এর সহাবীদের কোন একজন থেকে বর্ণনা করেন, আর তিনি হচ্ছেন ইবনু 'উমার (ﷺ) যে, وَإِنْ تُبْدُوا مَا فِي أَنْفُسِكُمْ أَوْ تُخْفُوهُ (তোমাদের অন্তরের কথা প্রকাশ কর আর গোপন কর তার হিসাব আল্লাহ তোমাদের থেকে নেবেন) আয়াতটি রহিত হয়ে গেছে। –বুখারী ৪৫৪৫ [৪৫৪৬]

ءَامَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ط كُلٌّ ءَامَنَ بِاللهِ وَمَلَآئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ قف لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ قف وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ (٢٨٥)

২৮৫. রসূল (ﷺ) তার প্রতিপালকের পক্ষ হতে যা তার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তাতে ঈমান এনেছে এবং মু'মিনগণও। তারা সবাই আল্লাহ্‌র উপর, তাঁর ফেরেশতাদের উপর, তাঁর কিতাবসমূহের উপর এবং রসূলগণের উপর বিশ্বাস স্থাপন করেছে, (তারা বলে), 'আমরা রসূলগণের মধ্যে কারও ব্যাপারে তারতম্য করি না' এবং তারা এ কথাও বলে যে, 'আমরা শুনেছি এবং মেনে নিয়েছি। হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে ক্ষমা কর আর প্রত্যাবর্তন তোমারই দিকে'।

لَا يُكَلِّفُ اللهُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ط لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ط رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ إِنْ نَّسِيْنَآ أَوْ أَخْطَأْنَا ج رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ إِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ج وَاعْفُ عَنَّا وقفة وَاغْفِرْ لَنَا وقفة وَارْحَمْنَا وقفة أَنْتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ع (٢٨٦)

২৮৬. আল্লাহ কোন ব্যক্তির উপর তার সাধ্যের অতিরিক্ত কিছু আরোপ করেন না, সে ভাল যা করেছে সে তার সওয়াব পাবে এবং স্বীয় মন্দ কৃতকর্মের জন্য সে নিজেই নিগ্রহ ভোগ করবে। হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা যদি ভুলে যাই কিংবা ভুল করি, তাহলে আমাদেরকে পাকড়াও করো না, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের আগের লোকেদের উপর যেমন গুরু-দায়িত্ব অর্পণ করেছিলে, আমাদের উপর তেমন দায়িত্ব অর্পণ করো না; হে আমাদের প্রতিপালক! যে ভার বহনের ক্ষমতা আমাদের নেই, এমন ভার আমাদের উপর চাপিয়ে দিও না, (ভুল-ত্রুটি উপেক্ষা করে) আমাদেরকে রেহাই দাও, আমাদেরকে ক্ষমা কর এবং আমাদের প্রতি দয়া কর; তুমিই আমাদের প্রতিপালক, কাজেই আমাদেরকে কাফিরদের উপর জয়যুক্ত কর।

২৮৬। আনাস ইবনু মালিক (রাঃ) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক সময় নাবী (ﷺ) আমাদের কাছে এসে দেখতে পেলেন যে, দু'টি খুঁটির মাঝে রশি টাঙ্গানো আছে। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, এই রশিটা কিসের জন্য। লোকেরা বলল, এ রশি যায়নাবের (লটকানো) রাতের বেলা তিনি 'ইবাদাত করতে করতে ক্লান্ত হয়ে পড়লে এর উপর গা এলিয়ে দেন (অর্থাৎ এর উপর ঝুলে পড়েন)। এসব শুনে নাবী (ﷺ) বললেন, না, ওটা খুলে দাও। মনে ফূর্তি ও সতেজ ভাব থাকা পর্যন্তই তোমাদের যে কোন লোকের 'ইবাদাত বন্দেগী (ফরয ব্যতীত) করা উচিত। যখন সে ক্লান্ত হয়ে পড়বে তখন তার বসে পড়া উচিত। (অন্য এক বর্ণনায়) আবূ মা'মার 'আয়িশাহ থেকে বর্ণনা করেছেন। তিনি ('আয়িশাহ বলেন, বানী আসাদ গোত্রের একজন মহিলা আমার কাছে উপস্থিত ছিলেন। এমতাবস্থায় নাবী (ﷺ) আমার কাছে আগমন করলেন এবং (মাহিলাটিকে দেখে) জিজ্ঞেস করলেন, মহিলাটি কে? আমি বললাম, অমুক মহিলা আর তার সলাতের কথা উল্লেখ করে বললাম যে সে রাতে ঘুমায় না। এসব শুনে নাবী (ﷺ) বিরক্তির স্বরে) বললেন, থামো! সাধ্য অনুসারেই তোমাদের 'আমাল বা কাজ করা উচিত। কেননা, তোমরা ক্লান্ত না হওয়া পর্যন্ত আল্লাহ ক্লান্ত হন না (অর্থাৎ তোমরা ক্লান্ত ও বিরক্ত হয়ে যখন কাজ বন্ধ করে দাও আল্লাহ তা'আলা তখনই

Contents

৩. সূরাহ আলু-'ইমরান

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرَانَ

আয়াতঃ ২০০ রুকূ'ঃ ২০, মাদানী

পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আলিফ-লাম-মীম।

الٓمّٓ ج لا (١)

২. আল্লাহ, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তিনি চিরঞ্জীব সকলের রক্ষণাবেক্ষণকারী।

اللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ط (٢)

৩. তিনি সত্য সহকারে তোমার উপর কিতাব অবতীর্ণ করেছেন, যা পূর্বতন কিতাবের সমর্থক এবং তিনি তাওরাত ও ইঞ্জিল অবতীর্ণ করেছেন

نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَأَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ لا (٣)

৪. ইতোপূর্বে মানবজাতির পথ প্রদর্শনের জন্য; আর তিনি সেই মানদণ্ড নাযিল করেছেন যা হাক্ব ও বাতিলের পার্থক্য দেখিয়ে দেয়; নিশ্চয়ই যারা আল্লাহ্‌র আয়াতের সাথে কুফুরী করে, তাদের জন্য কঠিন শাস্তি রয়েছে। আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, দণ্ডদাতা।

مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَأَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ط إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ط وَاللهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ط (٤)

৫. নিশ্চয়ই ভূমণ্ডলের ও নভোমণ্ডলের কোন জিনিসই আল্লাহ্‌র নিকট গোপন থাকে না।

إِنَّ اللهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ط (٥)

৬. তিনিই তোমাদেরকে মায়ের পেটে যেভাবে ইচ্ছে আকৃতি দেন, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তিনি মহাশক্তিমান ও প্রজ্ঞাশীল।

هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْأَرْحَامِ كَيْفَ يَشَآءُ ط لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٦)

৭. তিনিই তোমার উপর এমন কিতাব নাযিল করেছেন, যার কতিপয় আয়াত মৌলিক-সুস্পষ্ট অর্থবোধক, এগুলো হল কিতাবের মূল আর অন্যগুলো পুরোপুরি স্পষ্ট নয়; কিন্তু যাদের

هُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ أُمُّ الْكِتٰبِ وَأُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ط

সওয়াব বা পুরস্কার প্রদান বন্ধ করে দেন। –বুখারী ১১৫০ [মুসলিম ৭৮৪, নাসায়ী ১৬৪৩, আবূ দাউদ ১৩১২, ইবনু মাজাহ ১৩৭১, আহমাদ ১১৫৭৫, ১২৫০৪]

فَأَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَأْوِيْلِهِ ۚ وَمَا يَعْلَمُ تَأْوِيْلَهُۤ إِلَّا اللهُ ۘ وَالرَّاسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهِ ۙ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ إِلَّآ أُولُوا الْأَلْبَابِ (٧)

অন্তরে বক্রতা আছে, তারা গোলযোগ সৃষ্টির উদ্দেশে এবং ভুল ব্যাখ্যার উদ্দেশে উক্ত আয়াতগুলোর অনুসরণ করে যেগুলো পুরোপুরি স্পষ্ট নয়। মূলত: এর মর্ম আল্লাহ ছাড়া কেউই জানে না। যারা জ্ঞানে সুগভীর তারা বলে যে, আমরা তার উপর ঈমান এনেছি, এ সবকিছুই আমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে এসেছে, মূলতঃ জ্ঞানবান ব্যক্তিরা ছাড়া কেউই নসীহত গ্রহণ করে না।

رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ إِذْ هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (٨)

৮. হে আমাদের প্রতিপালক! সৎ পথ প্রদর্শনের পরে তুমি আমাদের অন্তরগুলোকে বক্র করে দিও না, আমাদেরকে তোমার নিকট হতে রহমত প্রদান কর, মূলতঃ তুমিই মহান দাতা।

رَبَّنَآ إِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۗ إِنَّ اللهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ع (٩)

৯. হে আমাদের প্রতিপালক! নিশ্চয়ই তুমি সমুদয় মানুষকে একদিন সমবেত করবে, যাতে কোনও সন্দেহ নাই। নিশ্চয়ই আল্লাহ অঙ্গীকারের খেলাফ করেন না।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللهِ شَيْئًا ۗ وَأُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۙ (١٠)

১০. নিশ্চয়ই যারা কুফরী করে তাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি আল্লাহ্‌র সামনে কোন কাজে লাগবে না এবং তারাই আগুনের ইন্ধন।

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۗ

১১. তাদের স্বভাব ফেরাওনী দল এবং তাদের

৭। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) আয়াতটি هُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتَابَ ...... إِلَّا أُولُوا الْأَلْبَابِ –"তিনিই তোমার প্রতি এ কিতাব অবতীর্ণ করেছেন যার কতক আয়াত সুস্পষ্ট, দ্ব্যর্থহীন। এগুলো কিতাবের মূল অংশ; আর অন্যগুলো দৃষ্টান্তজ্ঞাপক; যাদের অন্তরে সত্য-লঙ্ঘন প্রবণতা রয়েছে শুধু তারাই ফিতনা এবং ভুল ব্যাখ্যার উদ্দেশে যা দৃষ্টান্তজ্ঞাপক তার অনুসরণ করে। আল্লাহ ব্যতীত অন্য কেউ এর ব্যাখ্যা জানে না। আর যারা জ্ঞানে সুগভীর, তাঁরা বলেন, আমরা এতে ঈমান এনেছি, এসবই আমাদের প্রভুর তরফ থেকে এসেছে। জ্ঞানবানরা ব্যতীত কেউ নাসীহাত গ্রহণ করে না।" নাবী (ﷺ) পাঠ করলেন। 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) ঘোষণা করেছেন যে, যারা মুতাশাবাহাত আয়াতের পেছনে ছুটে তাদের যখন তুমি দেখবে তখন মনে করবে যে, তাদের কথাই আল্লাহ তা'আলা কুরআনে বলেছেন। সুতরাং তাদের ব্যাপারে সাবধান থাকবে। –বুখারী ৪৫৪৭ [মুসলিম ৪৭/১, হাঃ ২৬৬৫, তিরমিযী ২৯৯৩, ২৯৯৪; আবূ দাউদ ৪৫৯৮, ইবনু মাজাহ ৪৭, আহমাদ ২৩৬৯০, ২৪৪০৮; দারিমী ১৪৫]

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ج فَأَخَذَهُمُ اللهُ بِذُنُوْبِهِمْ ط وَاللهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (١١)

আগের লোকেদের মত যারা আমার আয়াতগুলোকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছে; সুতরাং আল্লাহ তাদের গুনাহের দরুন তাদেরকে পাকড়াও করলেন, আল্লাহ শাস্তি দানে অত্যন্ত কঠোর।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ وَتُحْشَرُوْنَ إِلٰى جَهَنَّمَ ط وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٢)

১২. যারা কুফরী করে তাদেরকে বলে দাও, ‘তোমরা অচিরেই পরাজিত হবে আর তোমাদেরকে জাহান্নামের দিকে হাঁকানো হবে, ওটা কতই না নিকৃষ্ট আবাসস্থান’!

قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ الْتَقَتَا ط فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَأُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ رَأْيَ الْعَيْنِ ط وَاللهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ (١٣)

১৩. তোমাদের জন্য অবশ্যই নিদর্শন আছে সেই দু’দল সৈন্যের মধ্যে যারা পরস্পর প্রতিদ্বন্দ্বীরূপে দাঁড়িয়েছিল (বদর প্রান্তরে)। একদল আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধ করেছিল এবং অপরদল ছিল কাফির, কাফিররা মুসলিমদেরকে প্রকাশ্য চোখে দ্বিগুণ দেখছিল। আল্লাহ যাকে ইচ্ছে স্বীয় সাহায্যের দ্বারা শক্তিশালী করে থাকেন, নিশ্চয়ই এতে দৃষ্টিমানদের জন্য শিক্ষা রয়েছে।

زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَالْأَنْعَامِ وَالْحَرْثِ ط ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَاللهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ (١٤)

১৪. মানুষের কাছে সুশোভিত করা হয়েছে নারী, সন্তান, স্তূপীকৃত স্বর্ণ ও রৌপ্যভাণ্ডার, চিহ্নযুক্ত অশ্বরাজি, গৃহপালিত পশু এবং শস্যক্ষেত্র, এসব পার্থিব জীবনের সম্পদ, আর আল্লাহ –তাঁরই নিকট রয়েছে উত্তম আশ্রয়স্থল।

قُلْ أَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ط لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَأَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللهِ ط وَاللهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ج (١٥)

১৫. বল, আমি কি তোমাদেরকে এ সব হতেও অতি উত্তম কোন কিছুর সংবাদ দেব? যারা মুত্তাকী তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট এমন বাগান রয়েছে, যার নিম্নে নদী প্রবাহিত, তারা তাতে চিরকাল থাকবে আর রয়েছে পবিত্র সঙ্গী এবং আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টি, বস্তুতঃ আল্লাহ বান্দাগণের সম্পর্কে সম্যক দ্রষ্টা।

اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ إِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ج (١٦)

১৬. যারা প্রার্থনা করে, ‘হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা ঈমান এনেছি, অতএব আমাদের গুনাহসমূহ ক্ষমা কর এবং আমাদেরকে জাহান্নামের শাস্তি হতে রক্ষা কর’।

اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ (١٧)

১৭. তারা ধৈর্যশীল, সত্যবাদী, (আল্লাহ্‌র প্রতি) আজ্ঞাবহ, (আল্লাহ্‌র পথে) ব্যয়কারী এবং শেষ রাতে ক্ষমাপ্রার্থনাকারী।

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢبِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ؕ (١٨)

১৮. আল্লাহ সাক্ষ্য দেন যে, তিনি ছাড়া সত্যিকার কোন ইলাহ নেই এবং ফেরেশতাগণ ও ন্যায়নীতিতে প্রতিষ্ঠিত জ্ঞানীগণও (সাক্ষ্য দিচ্ছে যে,) তিনি ছাড়া সত্যিকার কোন ইলাহ নেই, তিনি মহাপরাক্রান্ত, মহাজ্ঞানী।

اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۗ وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (١٩)

১৯. নিশ্চয় আল্লাহ্‌র নিকট একমাত্র দ্বীন হল ইসলাম। বস্তুতঃ যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তারা জ্ঞান লাভের পর একে অন্যের উপর প্রাধান্য লাভের জন্য মতভেদ সৃষ্টি করেছে এবং যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহকে অস্বীকার করবে, (সে জেনে নিক) নিশ্চয়ই আল্লাহ হিসাব গ্রহণে অতিশয় তৎপর।

فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ؕ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ؕ فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ع (٢٠)

২০. অতঃপর যদি (আহলে কিতাব) তোমার সাথে তর্ক করে তবে বলে দাও, 'আমি আল্লাহ্‌র নিকট আত্মসমর্পণ করেছি আর আমার অনুসারীগণও আত্মসমর্পণ করেছে এবং আহলে কিতাব ও উম্মীগণকে বল, 'তোমরা কি আত্মসমর্পণ করেছ'? অতঃপর যদি তারা আত্মসমর্পণ করে তবে নিশ্চয়ই তারা পথ পাবে আর তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তোমার দায়িত্ব শুধু প্রচার করা। আল্লাহ বান্দাদের সম্পর্কে সম্যক দ্রষ্টা।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ (٢١)

২১. যারা আল্লাহ্‌র আয়াতসমূহকে অমান্য করে, নাবীদেরকে অন্যায়ভাবে হত্যা করে এবং মানুষদের মধ্যে যারা ন্যায়-নীতি শিক্ষা দেয় তাদেরকে হত্যা করে, তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সংবাদ দাও।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ز وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (٢٢)

২২. এরাই তারা যাদের সমুদয় 'আমাল দুনিয়া ও আখেরাতে নিষ্ফল হবে এবং তাদের কোন সাহায্যকারী নেই।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ أُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ إِلٰى كِتٰبِ اللهِ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ (٢٣)

২৩. তুমি কি তাদের প্রতি দৃষ্টি নিক্ষেপ করনি যাদেরকে কিতাবের অংশ দেয়া হয়েছিল? তাদেরকে আল্লাহ্র কিতাবের দিকে আহ্বান করা হয়েছিল, যাতে এটা তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দেয়, এরপর তাদের একদল বিমুখতা অবলম্বন করে ফিরে যায়।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ إِلَّآ أَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ص وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (٢٤)

২৪. এটা এজন্য যে, তারা বলে, দিন কতক ছাড়া জাহান্নামের আগুন কক্ষনো আমাদেরকে স্পর্শ করবে না এবং তাদের কল্পিত ধারণাসমূহ দ্বীনের ব্যাপারে তাদেরকে ধোঁকায় ফেলে রেখেছে।

فَكَيْفَ إِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ فِيْهِ قف وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (٢٥)

২৫. অনন্তর তাদের কী দশা ঘটবে, যখন আমি তাদেরকে সেই দিনে একত্রিত করব, যে দিনটি সংঘটিত হওয়ার ব্যাপারে কোনই সন্দেহ নেই এবং প্রত্যেককে তার অর্জিত প্রতিফল পূর্ণভাবে দেয়া হবে আর তাদের প্রতি কোন যুল্ম করা হবে না।

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٢٦)

২৬. বল, 'হে আল্লাহ! তুমি সমুদয় রাজ্যের মালিক, যাকে ইচ্ছে রাজ্য দান কর আর যার থেকে ইচ্ছে রাজ্য কেড়ে নাও এবং যাকে ইচ্ছে সম্মানিত কর আর যাকে ইচ্ছে অপদস্থ কর, তোমারই হাতে সব রকম কল্যাণ, নিশ্চয়ই তুমি সকল বস্তুর উপর ক্ষমতাবান'।

تُوْلِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ ز وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٢٧)

২৭. তুমিই রাতকে দিনের ভিতর আর দিনকে রাতের ভিতর ঢুকিয়ে দাও, তুমিই জীবিতকে মৃত হতে বের কর এবং মৃতকে জীবিত হতে বের কর আর যাকে ইচ্ছে বেহিসাব রিয্ক্ব দান কর।

لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ج وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ اللهِ فِيْ شَيْءٍ إِلَّآ أَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ تُقٰةً ط وَيُحَذِّرُكُمُ اللهُ نَفْسَهٗ ط وَإِلَى اللهِ الْمَصِيْرُ (٢٨)

২৮. মু'মিনগণ যেন মু'মিনগণ ছাড়া কাফিরদের সঙ্গে বন্ধুত্ব না করে, মূলতঃ যে এমন করবে আল্লাহ্‌র সাথে তার কোন কিছুরই সম্পর্ক নেই, তবে ব্যতিক্রম হল যদি তোমরা তাদের যুল্‌ম হতে আত্মরক্ষার জন্য সতর্কতা অবলম্বন কর। আর আল্লাহ তাঁর নিজের সম্বন্ধে তোমাদেরকে সাবধান করছেন এবং আল্লাহ্‌রই দিকে প্রত্যাবর্তন।

قُلْ إِنْ تُخْفُوْا مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ أَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللهُ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَاللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٢٩)

২৯. বল, 'তোমরা তোমাদের অন্তরের বিষয়কে গোপন কর অথবা প্রকাশ কর, আল্লাহ তা জানেন, আর তিনি জানেন যা কিছু আকাশসমূহে এবং ভূভাগে আছে; আল্লাহ সকল বস্তুর উপর ক্ষমতাবান'।

يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ج صلے وَّمَا عَمِلَتْ مِنْ سُوْٓءٍ ج تَوَدُّ لَوْ أَنَّ بَيْنَهَا وَبَيْنَهٗٓ أَمَدًا بَعِيْدًا ط وَيُحَذِّرُكُمُ اللهُ نَفْسَهٗ ط وَاللهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ع (٣٠)

৩০. যে দিন প্রত্যেক আত্মা যা কিছু নেক 'আমাল করেছে এবং যা কিছু বদ 'আমাল করেছে তা বিদ্যমান পাবে; সেই আত্মা কামনা করবে যদি তার এবং ওর (অর্থাৎ তার মন্দ কর্মফলের) মধ্যে দুস্তর ব্যবধান হত। আল্লাহ তাঁর নিজের সম্পর্কে তোমাদেরকে সাবধান করছেন, বস্তুতঃ আল্লাহ বান্দাগণের প্রতি খুবই করুণাশীল।

قُلْ إِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللهَ فَاتَّبِعُوْنِيْ يُحْبِبْكُمُ اللهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣١)

৩১. বলে দাও, 'যদি তোমরা আল্লাহ্‌কে ভালবাস, তবে আমার অনুসরণ কর, আল্লাহ তোমাদেরকে ভালবাসবেন এবং তোমাদের গুনাহ্‌সকল ক্ষমা করবেন, বস্তুতঃ আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু'।

قُلْ أَطِيْعُوا اللهَ وَالرَّسُوْلَ ج فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ (٣٢)

৩২. বল, 'তোমরা আল্লাহ্‌র ও রসূলের আজ্ঞাবহ হও'। অতঃপর যদি তারা না মানে, তবে (জেনে রেখ) আল্লাহ কাফিরদেরকে ভালবাসেন না।

إِنَّ اللهَ اصْطَفٰٓى اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ إِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ لا (٣٣)

৩৩. নিশ্চয় আল্লাহ আদাম ও নূহকে এবং ইব্‌রাহীমের ও 'ইমরানের গোত্রকে বিশ্বজগতের উপর মনোনীত করেছেন।

ذُرِّيَّةًۢ بَعْضُهَا مِنْۢ بَعْضٍ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ج (٣٤)

৩৪. এরা একে অন্যের বংশধর এবং আল্লাহ সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

إِذْ قَالَتِ امْرَأَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ إِنِّيْ نَذَرْتُ لَكَ مَا فِيْ بَطْنِيْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ مِنِّيْ ج إِنَّكَ أَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٣٥)

৩৫. (স্মরণ কর) যখন ‘ইমরানের স্ত্রী আরয করেছিল, হে আমার প্রতিপালক! আমার উদরে যা আছে, তাকে আমি একান্ত তোমার উদ্দেশে উৎসর্গ করলাম, কাজেই আমার পক্ষ হতে তা গ্রহণ কর, নিশ্চয়ই তুমি সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ إِنِّيْ وَضَعْتُهَآ أُنْثٰى ؕ وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِمَا وَضَعَتْ ؕ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْأُنْثٰى ج وَإِنِّيْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَإِنِّيْٓ أُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ (٣٦)

৩৬. অতঃপর যখন সে তাকে প্রসব করল, বলে উঠল, হে আমার প্রতিপালক! আমি কন্যা প্রসব করেছি এবং আল্লাহ ভাল করেই জানেন যা সে প্রসব করেছে; বস্তুতঃ পুত্র কন্যার মত নয় এবং আমি তার নাম রাখলাম মারইয়াম এবং আমি তাকে ও তার বংশধরকে বিতাড়িত শয়ত্বান হতে তোমার আশ্রয়ে ছেড়ে দিলাম।

فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ وَّأَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا زَكَرِيَّا ؕ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ج قَالَ يٰمَرْيَمُ أَنّٰى لَكِ هٰذَا ؕ قَالَتْ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ؕ إِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٣٧)

৩৭. তখন তার প্রতিপালক তাকে সন্তুষ্টি সহকারে গ্রহণ করলেন এবং তাকে উত্তমরূপে লালন পালন করলেন এবং যাকারিয়াকে তার তত্ত্বাবধায়ক করলেন। যখনই যাকারিয়া মারইয়ামের কক্ষে প্রবেশ করত, তার কাছে খাদ্য সামগ্রী দেখতে পেত; জিজ্ঞেস করত- হে মারইয়াম! ‘এসব কোত্থেকে তোমার কাছে আসে’? মারইয়াম বলত, ‘ওসব আল্লাহ্‌র নিকট হতে (আসে)’। নিশ্চয়ই আল্লাহ যাকে ইচ্ছে বেহিসাব রিয্‌ক দান করেন।

هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ج قَالَ رَبِّ هَبْ لِيْ مِنْ

৩৮. ওখানেই যাকারিয়া নিজ প্রতিপালকের কাছে প্রার্থনা করে বলল, ‘হে আমার প্রতিপালক! আমাকে

৩৬। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেন, প্রত্যেক নবপ্রসূত বাচ্চার জন্মের সময় শয়ত্বান অবশ্যই তাকে স্পর্শ করে। ফলে শয়তানের স্পর্শমাত্র সে চীৎকার করে উঠে। কিন্তু মারইয়াম (আঃ) ও তাঁর পুত্র ঈসা (আঃ)-কে পারেনি। তারপর আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) বলতেন, যদি তোমরা (এটা জানতে) ইচ্ছা কর তাহলে পড়ঃ وإِنِّي أُعِيذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ –বুখারী ৪৫৪৮ [৩২৮৬; মুসলিম ২৩৬৬, ২৩৬৭; আহমাদ ৭১৪২, ৭৬৫১, ৭৮৫৫]

لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً طَيِّبَةً ج إِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ (٣٨)

তোমার পক্ষ হতে একটি সুসন্তান দান কর। নিশ্চয় তুমি প্রার্থনা শ্রবণকারী'।

فَنَادَتْهُ الْمَلَٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ يُّصَلِّيْ فِي الْمِحْرَابِ لا أَنَّ اللهَ يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰي مُصَدِّقًا بِكَلِمَةٍ مِّنَ اللهِ وَسَيِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (٣٩)

৩৯. যখন যাকারিয়া 'ইবাদাত কক্ষে সলাতে দণ্ডায়মান তখন ফেরেশতারা তাকে সম্বোধন করে বললঃ আল্লাহ তোমাকে ইয়াহ্ইয়া'র সুসংবাদ দিচ্ছেন, সে হবে আল্লাহ্র পক্ষ হতে আগত কালেমার সত্যতার সাক্ষ্যদাতা, নেতা, গুনাহ হতে বিরত ও নেক বান্দাগণের মধ্য হতে একজন নাবী।

قَالَ رَبِّ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّقَدْ بَلَغَنِيَ الْكِبَرُ وَامْرَأَتِيْ عَاقِرٌ ط قَالَ كَذٰلِكَ اللهُ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ (٤٠)

৪০. যাকারিয়া বলল, হে আমার প্রতিপালক! আমার সন্তান হবে কীভাবে, আমি তো বার্ধক্যে পৌঁছেছি এবং আমার স্ত্রীও বন্ধ্যা। তিনি বললেন, 'এভাবেই, আল্লাহ যা ইচ্ছে করেন তা-ই সম্পন্ন করে থাকেন'।

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْٓ اٰيَةً ط قَالَ اٰيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ أَيَّامٍ إِلَّا رَمْزًا ط وَاذْكُرْ رَّبَّكَ كَثِيْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ع (٤١)

৪১. সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমার জন্য কোন নিদর্শন দাও'। তিনি বললেন, 'তোমার জন্য নিদর্শন এই যে, তিনদিন তুমি ইশারা ছাড়া লোকের সঙ্গে কথা বলতে পারবে না এবং তোমার প্রতিপালককে অধিক স্মরণ করবে এবং সকালে ও সন্ধ্যায় তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করবে'।

وَإِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللهَ اصْطَفٰكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰكِ عَلٰى نِسَآءِ الْعٰلَمِيْنَ (٤٢)

৪২. স্মরণ কর, যখন ফেরেশতারা বলেছিল, 'হে মারইয়াম! আল্লাহ তোমাকে বেছে নিয়েছেন এবং তোমাকে পবিত্র করেছেন, আর তামাম দুনিয়ার নারীদের উপর তোমাকে মনোনীত করেছেন'।

يٰمَرْيَمُ اقْنُتِيْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِيْ وَارْكَعِيْ مَعَ الرّٰكِعِيْنَ (٤٣)

৪৩. হে মারইয়াম! 'তুমি তোমার প্রতিপালকের অনুগত হও, সাজদাহ কর এবং রুকূ'কারীদের সঙ্গে রুকূ' কর'।

ذٰلِكَ مِنْ أَنْـبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ إِلَيْكَ ط وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يُلْقُوْنَ أَقْلَامَهُمْ أَيُّهُمْ

৪৪. এসব অদৃশ্যের সংবাদ, আমি তোমার কাছে তা ওয়াহী দ্বারা পৌঁছে দিচ্ছি। বস্তুতঃ তুমি তাদের নিকট উপস্থিত ছিলে না যখন তাদের কোন্ ব্যক্তি মারইয়ামকে লালন-পালন

يَكْفُلُ مَرْيَمَ ص وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ يَخْتَصِمُوْنَ (٤٤)

করবে সেই ভাগ্য নির্ণয়ের জন্য কলম নিক্ষেপ করছিল এবং তুমি তাদের নিকট উপস্থিত ছিলে না, যখন তারা (মারইয়ামের অভিভাবক কে হবে তা নিয়ে) বাদানুবাদ করছিল।

إِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ يٰمَرْيَمُ إِنَّ اللهَ يُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ قلے اسْمُهُ الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ وَجِيْهًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ لا (٤٥)

৪৫. (স্মরণ কর) যখন ফেরেশতারা বলল, 'হে মারইয়াম! নিশ্চয় আল্লাহ তোমাকে তাঁর একটি কথার সুসংবাদ দিচ্ছেন। তার নাম মারইয়ামের পুত্র ঈসা-মসীহ, সে দুনিয়া ও আখেরাতে সম্মানিত ও সান্নিধ্য প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।'

وَيُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا وَّمِنَ الصّٰلِحِيْنَ (٤٦)

৪৬. 'সে লোকেদের সাথে দোলনা থাকা অবস্থায় এবং বয়োঃপ্রাপ্ত অবস্থায় কথা বলবে এবং নেক বান্দাদের অন্তর্গত হবে।

قَالَتْ رَبِّ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ وَلَدٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ ط قَالَ كَذٰلِكِ اللهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ط إِذَا قَضٰٓى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ (٤٧)

৪৭. মারইয়াম বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! কীভাবে আমার পুত্র হবে, অথচ আমাকে কোন মানব স্পর্শ করেনি'। তিনি বললেন, 'এভাবেই' আল্লাহ সৃজন করেন যা তিনি ইচ্ছে করেন, তিনি যখন কিছু স্থির করেন তখন বলেন, "হয়ে যাও" সুতরাং তা হয়ে যায়।

وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ ج (٤٨)

৪৮. আর তিনি তাকে কিতাব, হিকমাত, তাওরাত ও ইঞ্জিল শিক্ষা দেবেন।

وَرَسُوْلًا إِلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ لا أَنِّيْ قَدْ

৪৯. 'আর তিনি তাকে বানী ইসরাঈলের নিকট রসূল হিসেবে প্রেরণ করবেন'। সে বলবে,

---

৪৪। 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) সফরের ইচ্ছা পোষণ করলে তাঁর স্ত্রীদের মাঝে কুর'আ নিক্ষেপ করতেন। যার নাম বের হত তাকে সঙ্গে নিয়েই তিনি সফরে বের হতেন। আর তিনি স্ত্রীদের প্রত্যেকের জন্যই দিন রাত বণ্টন করতেন। তবে সাওদা বিনতে যাম'আহ (رضي الله عنها) তাঁর অংশের দিন রাত নাবী (ﷺ) -এর স্ত্রী 'আয়িশাহ (رضي الله عنها)-কে দান করে দিলেন। তিনি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর সন্তুষ্টি অর্জনের জন্য তা করেছিলেন। –বুখারী ২৬৮৮ [২৫৯৩; মুসলিম ২৪৪৫, ২৭৭০; আবূ দাউদ ২১৩৮, ইবনু মাজাহ ১৯৭০, ২৩৪৭; আহমাদ ২৪৩১৩, ২৪৩৩৮; দারিমী ২২০৮, ২৪২৩]

جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ج لا أَنِّيْ أَخْلُقُ
لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ فَأَنْفُخُ فِيْهِ
فَيَكُوْنُ طَيْرًا بِإِذْنِ اللهِ ج وَأُبْرِئُ الْأَكْمَهَ
وَالْأَبْرَصَ وَأُحْيِ الْمَوْتٰى بِإِذْنِ اللهِ ج
وَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَأْكُلُوْنَ وَمَا تَدَّخِرُوْنَ لا فِيْ
بُيُوْتِكُمْ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ إِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ج (٤٩)

'নিশ্চয় আমি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে নিদর্শনসহ তোমাদের নিকট এসেছি, আমি তোমাদের জন্য মাটি দ্বারা পাখীর মত একটা কায়া গঠন করব, অতঃপর তাতে ফুঁৎকার দেব, ফলে আল্লাহ্‌র হুকুমে তা পাখি হয়ে যাবে এবং আল্লাহ্‌র হুকুমে আমি জন্মান্ধ ও কুষ্ঠরোগীকে আরোগ্য করব ও আল্লাহ্‌র হুকুমে মৃতকে জীবিত করব এবং আমি তোমাদেরকে বলে দেব তোমাদের গৃহে তোমরা যা আহার কর এবং সঞ্চয় করে রাখ; নিশ্চয়ই এ কাজে তোমাদের জন্য নিদর্শন রয়েছে, যদি তোমরা মু'মিন হও।'

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ
وَلِأُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ حُرِّمَ
عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ قف
فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ (٥٠)

৫০. '(আর আমি এসেছি) আমার সামনে তাওরাতের নিদর্শন যা রয়েছে তার সমর্থকরূপে যেন তোমাদের জন্য কোন কোন জিনিস হালাল করে দেই যা তোমাদের প্রতি হারাম ছিল এবং আমি তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে নিদর্শনসহ তোমাদের নিকট এসেছি, কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর এবং আমাকে অনুসরণ কর'।

إِنَّ اللهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ط هٰذَا
صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (٥١)

৫১. 'নিশ্চয় আল্লাহ আমার প্রতিপালক এবং তোমাদেরও প্রতিপালক, অতএব তাঁর 'ইবাদাত কর, এটাই সরল পথ'।

فَلَمَّآ أَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ قَالَ
مَنْ أَنْصَارِيْٓ إِلَى اللهِ ط قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ
نَحْنُ أَنْصَارُ اللهِ ج اٰمَنَّا بِاللهِ ج وَاشْهَدْ بِأَنَّا
مُسْلِمُوْنَ (٥٢)

৫২. অতঃপর 'ঈসা যখন তাদের অবিশ্বাস অনুভব করল, তখন বলল, 'কেউ আছে কি যে আল্লাহ্‌র পথে আমার সহায়ক হবে'। হাওয়ারীগণ বলল, 'আমরাই আল্লাহ্‌র সাহায্যকারী, আমরা আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান এনেছি এবং সাক্ষী থাকুন যে, আমরা আত্মসমর্পণকারী'।

رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ أَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ
فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ (٥٣)

৫৩. 'হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি যা অবতীর্ণ করেছ আমরা তার উপর ঈমান এনেছি, রসূলের আনুগত্য স্বীকার করেছি, সুতরাং আমাদেরকে সাক্ষ্যদানকারীদের মধ্যে লিপিবদ্ধ কর।'

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللهُ ط وَاللهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ع (٥٤)

৫৪. এবং তারা কৌশল করেছিল এবং আল্লাহ্ও (জবাবে) কৌশল করেছিলেন, আল্লাহ কৌশলীদের শ্রেষ্ঠ।

إِذْ قَالَ اللهُ يٰعِيْسٰٓى إِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ إِلَيَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ج ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ (٥٥)

৫৫. (স্মরণ কর) যখন আল্লাহ 'ঈসাকে বলেছিলেন, 'হে 'ঈসা! আমি তোমার সাথে কৃত ওয়াদা পূর্ণ করব (তোমাকে মৃত্যু ছাড়াই দুনিয়া থেকে কবজ করব) এবং তোমাকে আমার কাছে উঠিয়ে নেব এবং তোমাকে কাফিরদের হতে মুক্ত করব আর তোমার অনুসরণকারীদেরকে ক্বিয়ামাত পর্যন্ত অবিশ্বাসীদের উপর বিজয়ী রাখব; অতঃপর আমার কাছে তোমাদের প্রত্যাবর্তন, তখন আমি তোমাদের মধ্যে ফায়সালা করে দেব যে বিষয়ে তোমরা মতভেদ করছ।'

فَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَأُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ز وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (٥٦)

৫৬. অতঃপর যারা অবিশ্বাসী, তাদেরকে দুনিয়া ও আখেরাতে কঠোর শাস্তি দেব এবং কেউই তাদের সাহায্যকারী নেই।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ أُجُوْرَهُمْ ط وَاللهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ (٥٧)

৫৭. পক্ষান্তরে যারা ঈমান এনেছে এবং সৎ কাজ করেছে, তাদেরকে তিনি পুরোপুরি সাওয়াব দান করবেন, বস্তুতঃ আল্লাহ যালিমদেরকে ভালবাসেন না।

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ (٥٨)

৫৮. এসব আমি তোমাকে পড়ে শুনাচ্ছি আয়াতসমষ্টি ও জ্ঞানগর্ভ বাণী হতে।

إِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ط خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ (٥٩)

৫৯. আল্লাহ্র নিকট ঈসার অবস্থা আদামের অবস্থার মত, মাটি দ্বারা তাকে গঠন করে তাকে হুকুম করলেন, হয়ে যাও, ফলে সে হয়ে গেল।

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ (٦٠)

৬০. এ বাস্তব ঘটনা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতেই, সুতরাং তুমি সংশয়কারীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْ ۢبَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ

৬১. তোমার নিকট জ্ঞান আসার পর যে ব্যক্তি তোমার সাথে (ঈসার সম্বন্ধে) বিতর্ক করবে

الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ أَبْنَآءَنَا وَأَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَأَنْفُسَنَا وَأَنْفُسَكُمْ قف ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ لَّعْنَتَ اللهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ (٦١)

তাকে বল, 'আসো, আমাদের পুত্রদেরকে এবং তোমাদের পুত্রদেরকে আর আমাদের নারীদেরকে এবং তোমাদের নারীদেরকে এবং আমাদের নিজেদেরকে এবং তোমাদের নিজেদেরকে আহ্বান করি, অতঃপর আমরা মুবাহলা করি আর মিথ্যুকদের প্রতি আল্লাহ্‌র অভিসম্পাত বর্ষণ করি।

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ج وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللهُ ط وَإِنَّ اللهَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٦٢)

৬২. নিশ্চয়ই এটা প্রকৃত ঘটনা। আল্লাহ ছাড়া অন্য সত্য ইলাহ নেই। আর নিশ্চয়ই আল্লাহ মহাপরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাময়।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّ اللهَ عَلِيْمٌ م بِالْمُفْسِدِيْنَ ع (٦٣)

৬৩. তা' সত্ত্বেও যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে নিশ্চয়ই আল্লাহ কলহ সৃষ্টিকারীদের বিষয়ে বিশেষভাবে অবহিত।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا إِلٰى كَلِمَةٍ سَوَآءٍ م بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ أَلَّا نَعْبُدَ إِلَّا اللهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ شَيْئًا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا أَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللهِ ط فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِأَنَّا مُسْلِمُوْنَ (٦٤)

৬৪. বল, 'হে আহলে কিতাব! এমন এক কথার দিকে আসো, যা আমাদের ও তোমাদের মধ্যে একই, তা এই যে, আমরা আল্লাহ ভিন্ন অন্য কারো 'ইবাদাত করব না এবং কোন কিছুকে তাঁর শরীক করব না এবং আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে আমাদের মধ্যে কেউ কাউকে রব হিসেবে গ্রহণ করব না। তারপরও যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে বলে দাও, তোমরা এ বিষয়ে সাক্ষী থাক যে, আমরা আত্মসমর্পণকারী।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْٓ إِبْرٰهِيْمَ وَمَآ

৬৫. হে আহলে কিতাব! তোমরা কেন

৬৪। রসূলুল্লাহ (ﷺ) দাহ্‌ইয়াতুল কালবী (রাঃ)'র মাধ্যমে রোমসম্রাট হিরাক্লিয়াসের উদ্দেশে যে চিঠি প্রেরণ করেছিলেন তাতে লেখা ছিল– "দয়াময় পরম দয়ালু আল্লাহর নামে, আল্লাহর রসূল মুহাম্মাদ (ﷺ) -এর পক্ষ থেকে রোমের অধিপতি হিরাক্লিয়াসের প্রতি। হিদায়াতের অনুসারীর প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক। এরপর আমি আপনাকে ইসলামের দাওয়াত দিচ্ছি। ইসলাম গ্রহণ করুন, মুক্তি পাবেন। ইসলাম গ্রহণ করুন, আল্লাহ তা'আলা আপনাকে দ্বিগুণ প্রতিদান দেবেন। আর যদি মুখ ফিরিয়ে থাকেন তাহলে সকল প্রজার পাপরাশিও আপনার উপর নিপতিত হবে। "হে কিতাবধারীগণ! এসো সে কথায় যা আমাদের ও তোমাদের মধ্যে একই যে, আমরা আল্লাহ ব্যতীত অন্য কারো ইবাদাত করব না, কোন কিছুতেই তাঁর সঙ্গে শরীক করব না। আর আমাদের একে অন্যকে আল্লাহ ব্যতীত প্রতিপালকরূপে গ্রহণ করব না। যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে বল, তোমরা সাক্ষী থাক, আমরা মুসলিম।" –বুখারী ৪৫৫৩ [মুসলিম ১৭৭৩, তিরমিযী ২৭১৭, আবূ দাউদ ৫১৩৬, আহমাদ ২৩৬৬]

أُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْإِنْجِيْلُ إِلَّا مِنْ بَعْدِهٖ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٦٥)

ইব্রাহীম সম্পর্কে তর্ক করছ? তাওরাত এবং ইঞ্জিল তো তারপরেই অবতীর্ণ হয়েছে, তোমরা কি তাও বুঝ না?

هٰأَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَآجُّوْنَ فِيْمَا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ط وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (٦٦)

৬৬. বস্তুতঃ তোমরাই এমন লোক যে, যে সম্পর্কে তোমাদের কিছু জ্ঞান আছে, সে বিষয়ে তো বিতর্ক করেছ, তোমরা এমন বিষয়ে কেন বিতর্ক করছ যে বিষয়ে তোমাদের কোনই জ্ঞান নেই? বস্তুতঃ আল্লাহ্ই জ্ঞাত আছেন, তোমরা জ্ঞাত নও।

مَا كَانَ إِبْرَاهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ط وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (٦٧)

৬৭. ইব্রাহীম না ইয়াহূদী ছিল, না নাসারা, বরং একনিষ্ঠ আত্মসমর্পণকারী এবং সে মুশরিক দলের অন্তর্ভুক্ত ছিল না।

إِنَّ أَوْلَى النَّاسِ بِإِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ وَهٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ط وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ (٦٨)

৬৮. নিশ্চয় ইব্রাহীমের সঙ্গে ঘনিষ্ঠতায় সেই লোকেরাই অধিক হকদার যারা তার অনুসরণ করেছে এবং এই নাবী, আর যারা ঈমান এনেছে, বস্তুতঃ আল্লাহ মু'মিনদের অভিভাবক।

وَدَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ط وَمَا يُضِلُّوْنَ إِلَّآ أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ (٦٩)

৬৯. কিতাবধারীদের একদল চায় যাতে তোমাদেরকে পথভ্রষ্ট করতে পারে, অথচ তারা নিজেদেরকে ছাড়া অন্য কাউকেও পথভ্রষ্ট করে না, কিন্তু তারা উপলব্ধি করতে পারে না।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَأَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ (٧٠)

৭০. হে আহলে কিতাব! কেন তোমরা আল্লাহ্র আয়াতগুলোকে অস্বীকার করছ, অথচ তোমরা নিজেরাই তার সাক্ষী?

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ع (٧١)

৭১. হে আহলে কিতাব! কেন তোমরা সত্যকে মিথ্যার সঙ্গে মিশ্রিত করছ আর জেনে বুঝে সত্যকে গোপন করছ।

وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ اٰمِنُوْا

৭২. আহলে কিতাবের একটা দল বলল, যারা

بِالَّذِيْٓ أُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْآ اٰخِرَهٗ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ج صلے (٧٢)

ঈমান এনেছে তাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তার উপর দিনের শুরুতে তোমরা ঈমান আন এবং দিনের শেষে অস্বীকার (কুফরী) কর, হয়ত তারা (ইসলাম ত্যাগ করে) ফিরে আসবে।

وَلَا تُؤْمِنُوْآ إِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ط قُلْ إِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللهِ لا أَنْ يُّؤْتٰٓى أَحَدٌ مِّثْلَ مَآ أُوْتِيْتُمْ أَوْ يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ط قُلْ إِنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللهِ ج يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ج لا (٧٣)

৭৩. 'এবং তোমাদের দ্বীনের অনুসারী ছাড়া আর কাউকেও বিশ্বাস করো না। তাদেরকে বলে দাও, আল্লাহ্র (নির্দেশিত) পথই একমাত্র পথ; (এবং এটা আল্লাহ্র নীতি যে) একদিন তোমাদেরকে যা দেয়া হয়েছিল তা-ই অন্য কাউকে দেয়া হবে অথবা অন্য লোকেরা তোমাদের প্রতিপালকের সামনে তোমাদের বিরুদ্ধে পেশ করার জন্য মযবুত প্রমাণ পেয়ে যাবে। বল, 'কল্যাণ আল্লাহ্রই হাতে, তিনি যাকে ইচ্ছে তা দান করেন এবং আল্লাহ প্রাচুর্যশালী ও সর্বজ্ঞ'।

يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (٧٤)

৭৪. তিনি যাকে ইচ্ছে নিজের দয়ার জন্য খাস করে বেছে নেন এবং আল্লাহ মহা কল্যাণের অধিকারী।

وَمِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ ج وَمِنْهُمْ مَّنْ إِنْ تَأْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ إِلَيْكَ إِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي الْأُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ج وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (٧٥)

৭৫. আহলে কিতাবের মধ্যে কেউ কেউ এমন আছে যে, যদি তাদের নিকট স্বর্ণের স্তূপ গচ্ছিত রাখ, তবে তোমাকে তা ফেরত দেবে, পক্ষান্তরে তাদের কেউ কেউ এমন যে, একটি দিনারও যদি তাদের নিকট গচ্ছিত রাখ, তার পেছনে লেগে না থাকলে সে তোমাকে তা ফেরত দেবে না, এটা এজন্য যে, তারা বলে, 'নিরক্ষরদের প্রতি আমাদের কোন দায়-দায়িত্ব নেই', বস্তুতঃ তারা জেনে শুনে আল্লাহ্র সম্পর্কে মিথ্যে বলে।

بَلٰى مَنْ أَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَإِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ (٧٦)

৭৬. তবে হ্যাঁ, যে ব্যক্তি নিজের ওয়া'দা পূর্ণ করবে এবং আল্লাহ্কে ভয় করে চলবে, নিশ্চয় আল্লাহ (এই) মুত্তাকীদেরকে ভালবাসেন।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ اللهِ وَأَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا أُولٰٓئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ وَلَا

৭৭. নিশ্চয় যারা আল্লাহ্র সাথে কৃত অঙ্গীকার এবং নিজেদের শপথকে তুচ্ছ মূল্যে বিক্রয় করে, এরা আখেরাতের কোন অংশই পাবে না

يُكَلِّمُهُمُ اللهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ص وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٧٧)

এবং আল্লাহ ক্বিয়ামাতের দিন তাদের সঙ্গে কথা বলবেন না, তাদের প্রতি দৃষ্টিপাত করবেন না এবং তাদেরকে পবিত্র করবেন না, বস্তুতঃ তাদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

وَإِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ أَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ج وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ ج وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (٧٨)

৭৮. এদের মধ্যে একদল আছে যারা কিতাবকে জিহ্বা দ্বারা বিকৃত করে যাতে তোমরা তাকে কিতাবের অংশ বলে মনে কর, মূলতঃ তা কিতাবের অংশ নয় এবং তারা বলে, 'এটা আল্লাহ্‌র নিকট হতে অবতীর্ণ, বস্তুতঃ তা আল্লাহ্‌র নিকট হতে অবতীর্ণ নয়, তারা জেনে শুনে আল্লাহ্‌র প্রতি মিথ্যারোপ করে।

مَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّؤْتِيَهُ اللهُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّيْ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبَّانِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ لا (٧٩)

৭৯. কোন মানব সন্তানের পক্ষে এটা সম্ভব নয় যে, আল্লাহ তাকে কিতাব, জ্ঞান ও নুবুওয়াত দান করেন, অতঃপর সে লোকেদেরকে বলে, 'তোমরা আল্লাহ্‌কে ছেড়ে আমার বান্দা হয়ে যাও, বরং (সে বলবে), 'তোমরা আল্লাহ্‌ওয়ালা হও; যেহেতু তোমরা কিতাব শিক্ষা দান কর এবং নিজেরাও পাঠ কর'।

وَلَا يَأْمُرَكُمْ أَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ وَالنَّبِيّٖنَ أَرْبَابًا ط أَيَأْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ بَعْدَ إِذْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ع (٨٠)

৮০. সে ব্যক্তি তোমাদেরকে বলবে না যে, তোমরা ফেরেশতাদেরকে এবং নাবীদেরকে মা'বূদরূপে গ্রহণ কর, তোমরা মুসলিম হওয়ার পরও কি সে তোমাদেরকে কুফরীর নির্দেশ দিতে পারে?

৭৭। 'আবদুল্লাহ ইবনু আবূ আওফা (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, এক ব্যক্তি বিক্রি করার জন্য বাজারে কিছু জিনিস আনলো এবং কসম করে বলতে শুরু করলো যে, লোকে এ জিনিসের এতো এতো মূল্য দিচ্ছে। অথচ কেউ তা দেয়নি। এ মিথ্যা বলার উদ্দেশ্য হলো, মুসলিমরা যাতে তার এ কথা বিশ্বাস করে তার নিকট থেকে জিনিসটা ক্রয় করে। এর পরিপ্রেক্ষিতে এ আয়াত অবতীর্ণ হলঃ "যারা আল্লাহ্‌র প্রতি কৃত প্রতিশ্রুতি ও কসম নগণ্য মূল্যে বিক্রি করে, আখিরাতে তাদের অংশে কিছুই অবশিষ্ট থাকলো না। ক্বিয়ামাতের দিন আল্লাহ তাদের সঙ্গে কথা বলবেন না, তাদের প্রতি তাকাবেন না এবং তাদেরকে পবিত্র করবেন না। আর তাদের জন্য প্রস্তুত রয়েছে কঠিন কষ্টদায়ক শাস্তি।" –বুখারী ৪৫৫১ [২০৮৮]

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ط قَالَ ءَأَقْرَرْتُمْ وَأَخَذْتُمْ عَلٰى ذٰلِكُمْ إِصْرِيْ ط قَالُوْآ أَقْرَرْنَا ط قَالَ فَاشْهَدُوْا وَأَنَا مَعَكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ (٨١)

৮১. (স্মরণ কর) যখন আল্লাহ নাবীদের নিকট হতে এ অঙ্গীকার নিয়েছিলেন যে, আমি তোমাদেরকে কিতাব এবং জ্ঞান যা কিছু প্রদান করেছি, অতঃপর তোমাদের কাছে যা আছে তার সমর্থক কোন রসূল যখন তোমাদের নিকট আসবে, তখন অবশ্য তোমরা তার প্রতি ঈমান আনবে এবং তাকে সাহায্য করবে। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, 'তোমরা অঙ্গীকার করলে তো? এবং যে বিষয়ে আমি তোমাদের নিকট হতে অঙ্গীকার নিলাম, তোমরা তা মানলে তো?' তারা বলল, 'আমরা অঙ্গীকার করলাম'। আল্লাহ বললেন, 'তোমরা সাক্ষী থাক এবং আমিও তোমাদের সাথে সাক্ষী থাকলাম'।

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (٨٢)

৮২. অতঃপর যারা মুখ ফিরিয়ে নিবে তারাই হল ফাসেক।

أَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ أَسْلَمَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّإِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ (٨٣)

৮৩. এরা কি আল্লাহ্‌র দ্বীন ছাড়া অন্য দ্বীনের সন্ধান করছে? অথচ আসমান ও যমীনে যা আছে সবই ইচ্ছেয় ও অনিচ্ছেয় তাঁরই কাছে আত্মসমর্পণ করেছে এবং তাঁরই দিকে সকলের প্রত্যাবর্তন।

قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ عَلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطِ وَمَآ أُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ص لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ ز وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (٨٤)

৮৪. বল, 'আমরা আল্লাহ্‌র উপর এবং আমাদের প্রতি ও ইব্‌রাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব এবং তাঁর বংশধরের প্রতি যা কিছু অবতীর্ণ হয়েছে এবং মূসা, ঈসা ও অন্যান্য নাবীগণকে তাঁদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে যা কিছু দেয়া হয়েছে তার উপর ঈমান এনেছি; আমরা তাঁদের মধ্যে কোন পার্থক্য করি না এবং আমরা তাঁরই কাছে আত্মসমর্পিত।'

وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْإِسْلَامِ دِيْنًا فَلَنْ يُّقْبَلَ

৮৫. আর যে ব্যক্তি ইসলাম ব্যতীত অন্য কোন দ্বীন গ্রহণ করতে চাইবে কক্ষনো তার সেই দ্বীন কবূল করা হবে না এবং আখেরাতে সে ব্যক্তি

مِنْهُ ج وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (٨٥)

ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

كَيْفَ يَهْدِي اللهُ قَوْمًا كَفَرُوْا بَعْدَ إِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْآ أَنَّ الرَّسُوْلَ حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ط وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (٨٦)

৮৬. আল্লাহ কীরূপে সেই সম্প্রদায়কে সুপথ দেখাবেন যারা ঈমান আনার পর, এ রসূলকে সত্য বলে স্বীকার করার পর এবং তাদের নিকট সুস্পষ্ট দলীল আসার পর কুফরী করে? বস্তুতঃ আল্লাহ যালিম কওমকে পথ দেখান না।

أُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ أَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ اللهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ لا (٨٧)

৮৭. এরাই তারা যাদের প্রতিফল এই যে, তাদের প্রতি আল্লাহ্‌র, ফেরেশতাদের এবং সমুদয় মানবের অভিসম্পাত।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ج لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ لا (٨٨)

৮৮. তারা ওতেই চিরকাল থাকবে, তাদের শাস্তি লঘু করা হবে না এবং তাদেরকে বিরামও দেয়া হবে না।

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوْا

৮৯. কিন্তু এরপর যারা তাওবাহ করে এবং নিজেদেরকে সংশোধন করে তারা ব্যতীত।

৮৫। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা আল্লাহর রসূল (ﷺ) জনসমক্ষে উপবিষ্ট ছিলেন, এমন সময় তাঁর নিকট এক ব্যক্তি এসে জিজ্ঞেস করলেন 'ঈমান কী?' তিনি বললেনঃ 'ঈমান হল, আপনি বিশ্বাস রাখবেন আল্লাহ্‌র প্রতি, তাঁর ফেরেশতাগণের প্রতি, (ক্বিয়ামাতের দিন) তাঁর সঙ্গে সাক্ষাতের প্রতি এবং তাঁর রসূলগণের প্রতি। আপনি আরো বিশ্বাস রাখবেন পুনরুত্থানের প্রতি।' তিনি জিজ্ঞেস করলেন, 'ইসলাম কী?' তিনি বললেনঃ 'ইসলাম হল, আপনি আল্লাহ্‌র ইবাদত করবেন এবং তাঁর সাথে অংশীদার স্থাপন করবেন না, নামায প্রতিষ্ঠা করবেন, ফার্‌য যাকাত আদায় করবেন এবং রমাযান-এর রোযাব্রত পালন করবেন।' ঐ ব্যক্তি জিজ্ঞেস করলেন, 'ইহসান কী?' তিনি বললেনঃ 'আপনি এমনভাবে আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করবেন যেন আপনি তাঁকে দেখছেন, আর যদি আপনি তাঁকে দেখতে না পান তবে (মনে করবেন) তিনি আপনাকে দেখছেন।' ঐ ব্যক্তি জিজ্ঞেস করলেন, 'কিয়ামত কবে?' তিনি বললেনঃ 'এ ব্যাপারে যাকে জিজ্ঞেস করা হচ্ছে, তিনি জিজ্ঞেসকারী অপেক্ষা অধিক জ্ঞাত নন। তবে আমি আপনাকে ক্বিয়ামাতের আলামতসমূহ বলে দিচ্ছিঃ বাঁদী যখন তার প্রভুকে প্রসব করবে এবং উটের নগণ্য রাখালেরা যখন বড় বড় অট্টালিকা নির্মাণে প্রতিযোগিতা করবে। (ক্বিয়ামাতের জ্ঞান) সেই পাঁচটি জিনিসের অন্তর্ভুক্ত, যা আল্লাহ্ ব্যতীত কেউ জানে না।' অতঃপর আল্লাহর রসূল (ﷺ) এই আয়াতটি শেষ পর্যন্ত তিলাওয়াত করলেনঃ 'কিয়ামাতের জ্ঞান কেবল আল্লাহ্‌রই নিকট......।' (সূরাহ্ লুক্বমান ৩১/৩৪)

এরপর ঐ ব্যক্তি চলে গেলে তিনি বললেনঃ 'তোমরা তাকে ফিরিয়ে আন।' তারা কিছুই দেখতে পেল না। তখন তিনি বললেন, 'ইনি জিবরীল (عليه السلام)। লোকদেরকে তাদের দীন শেখাতে এসেছিলেন।' আবূ 'আবদুল্লাহ বুখারী (রহ.) বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) এসব বিষয়কে ঈমানের অন্তর্ভুক্ত করেছেন। –বুখারী ৫০ [৪৭৭৭; মুসলিম ৯, ১০; নাসায়ী ৪৯৯১, ইবনু মাজাহ ৬৪, ৪০৪৪; আহমাদ ৮৮৮৩, ৯২১৭, ১০৪৭৭]

قف فَإِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٨٩)

নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ إِيْمَانِهِمْ ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ تَوْبَتُهُمْ ج وَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ (٩٠)

৯০. নিশ্চয়ই যারা ঈমান আনার পর কুফরী করল, অতঃপর তাদের কুফরী বেড়েই চলল, তাদের তাওবাহ কক্ষনো কবুল করা হবে না এবং এ লোকেরাই পথভ্রষ্ট।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَمَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ أَحَدِهِمْ مِّلْءُ الْأَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى بِهٖ ط أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ لا وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ع (٩١)

৯১. নিশ্চয়ই যারা কুফরী করে এবং সেই কাফির অবস্থায়ই মারা যায়, তাদের কেউ পৃথিবী-ভরা স্বর্ণও বিনিময় স্বরূপ প্রদান করতে চাইলে তা তার কাছ থেকে কক্ষণো গ্রহণ করা হবে না। এরাই তারা যাদের জন্য যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে এবং তাদের কোন সাহায্যকারী নেই।

৯২. তোমরা তোমাদের প্রিয়বস্তু খরচ না করা পর্যন্ত কক্ষনো পুণ্য লাভ করবে না, যা কিছু তোমরা খরচ কর–নিশ্চয়ই আল্লাহ সে বিষয়ে খুব ভালভাবেই অবগত।

لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ ط ۚ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ (٩٢)

৯৩. তাওরাত নাযিলের পূর্বে ইয়াকুব নিজের উপর যা হারাম করেছিল, তাছাড়া সকল খাদ্য বানী ইসরাঈলের জন্য হালাল ছিল। বল, 'তোমরা তাওরাত নিয়ে এসো, এবং তা পাঠ কর, যদি তোমরা সত্যবাদী হও'।

كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ إِلَّا مَا حَرَّمَ إِسْرَآئِيْلُ عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ أَنْ تُنَزَّلَ التَّوْرٰىةُ ط قُلْ فَأْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ فَاتْلُوْهَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٩٣)

৯৪. এরপরও যারা আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যারোপ করবে, তারা যালিম।

فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (٩٤)

৯৫. বল, 'আল্লাহ সত্য বলেছেন, সুতরাং তোমরা একনিষ্ঠভাবে ইব্‌রাহীমের অনুসরণ কর, সে মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত নয়'।

قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ قف فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ إِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ط وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (٩٥)

৯৬. নিঃসন্দেহে প্রথম ঘর যা মানুষের জন্য স্থাপন করা হয়েছিল, তাতো মক্কায়, যা বরকতমণ্ডিত এবং সারা জাহানের জন্য পথপ্রদর্শক।

إِنَّ أَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ج (٩٦)

৯৭. তাতে সুস্পষ্ট নিদর্শনাবলী রয়েছে (যেমন) মাক্বামে ইব্‌রাহীম (ইব্‌রাহীমের দাঁড়ানোর

فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ إِبْرٰهِيْمَ ج ۚ وَمَنْ

৯২। আনাস ইবনু মালিক (ﷺ) বলেন, মাদীনায় আবূ ত্বলহা (ﷺ)-ই অধিক সংখ্যক খেজুর গাছের মালিক ছিলেন। তাঁর নিকট সর্বাধিক প্রিয় সম্পদ ছিল "বাইরুহা" নামক বাগানটি। এটা ছিল মাসজিদের সম্মুখে। রসূলুল্লাহ (ﷺ) সেখানে আসতেন এবং সেখানকার (কূপের) সুমিষ্ট পানি পান করতেন। যখন لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا تُحِبُّوْنَ আয়াতটি অবতীর্ণ হল, তখন আবূ ত্বলহা (ﷺ) উঠে দাঁড়ালেন এবং বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আল্লাহ বলছেন, "তোমরা কখনও পুণ্য লাভ করবে না যে পর্যন্ত না নিজেদের প্রিয়বস্তু থেকে ব্যয় করবে।" আমার সবচেয়ে প্রিয় সম্পদ বাইরুহা। এটা আল্লাহ্‌র রাস্তায় আমি দান করে দিলাম। আমি আল্লাহ্‌র নিকট পুণ্য ও তার ভাণ্ডার চাই। আল্লাহ আপনাকে যেভাবে নির্দেশ দেন সেভাবে তা ব্যয় করুন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, বাহ! ওটি তো অস্থায়ী সম্পদ, ওটা তো অস্থায়ী সম্পদ, তুমি যা বলেছ আমি শুনেছি। তুমি তা তোমার নিকটাত্মীয়কে দিয়ে দাও, আমি এ সিদ্ধান্ত দিচ্ছি। আবূ ত্বলহা (ﷺ) বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমি তা করব। তারপর আবূ ত্বলহা (ﷺ) সেটা তাঁর চাচাত ভাই-বোন ও আত্মীয়দের মধ্যে বণ্টন করে দিলেন। 'আবদুল্লাহ ইবনু ইউসুফ ও ইবনু 'উবাদাহ্ (ﷺ)-এর বর্ণনায় "ওটা তো লাভজনক সম্পত্তি" বলে উল্লেখিত হয়েছে। –বুখারী ৪৫৫৪ [১৪৬১; মুসলিম ৯৯৮, তিরমিযী ২৯৯৭, নাসায়ী ৩৬০২, আবূ দাউদ ১৬৮৯, আহমাদ ১১৭৩৪, ১২০৩০; মুওয়াত্তা ১৮৭৫, দারিমী ১৬৫৫]

دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ؕ وَلِلّٰهِ عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ اسْتَطَاعَ إِلَيْهِ سَبِيْلًا ؕ وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (٩٧)

জায়গা)। যে কেউ তাতে প্রবেশ করবে নিরাপদ হবে। আল্লাহ্‌র জন্য উক্ত ঘরের হাজ্জ করা লোকেদের উপর আবশ্যক যার সে পর্যন্ত পৌঁছার সামর্থ্য আছে এবং যে ব্যক্তি অস্বীকার করবে, (সে জেনে রাখুক) নিঃসন্দেহে আল্লাহ বিশ্ব জাহানের মুখাপেক্ষী নন।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ق صلے وَاللّٰهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُوْنَ (٩٨)

৯৮. বল, 'হে কিতাবধারীগণ! তোমরা আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহকে কেন অমান্য করছ? বস্তুতঃ তোমরা যা করছ, আল্লাহ তার সাক্ষী'।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُوْنَهَا عِوَجًا وَّأَنْتُمْ شُهَدَآءُ ؕ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (٩٩)

৯৯. বল, হে কিতাবধারীগণ! যে ব্যক্তি ঈমান এনেছে তাকে কেন আল্লাহ্‌র পথে বাধা দিচ্ছ, ওকে বক্র করার পথ খুঁজছ, অথচ তোমরাই (এ পথের সত্যতার) সাক্ষী? এমতাবস্থায় আল্লাহ তোমাদের কার্যাবলী সম্বন্ধে বে-খবর নন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ تُطِيْعُوْا فَرِيْقًا مِّنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ يَرُدُّوْكُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ كٰفِرِيْنَ (١٠٠)

১০০. হে মু'মিনগণ! তোমরা যদি কিতাবীদের মধ্য হতে কোন দলের কথা মেনে নাও, তবে তারা তোমাদের ঈমান আনার পর আবার তোমাদেরকে কাফির বানিয়ে ছাড়বে।

وَكَيْفَ تَكْفُرُوْنَ وَأَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيْكُمْ رَسُوْلُهٗ ؕ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ع (١٠١)

১০১. আর তোমরা কেমন করে কুফরী করতে পার যখন তোমাদেরকে আল্লাহ্‌র আয়াতসমূহ পড়ে শুনানো হচ্ছে এবং তোমাদের মাঝে তাঁর রসূলও মওজুদ আছেন? যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌কে সুদৃঢ়ভাবে গ্রহণ করে, নিশ্চয়ই সে সরল পথের দিকে পরিচালিত হবে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ إِلَّا وَأَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (١٠٢)

১০২. হে মু'মিনগণ! আল্লাহ্‌কে ভয় কর যেমনভাবে তাঁকে ভয় করা উচিত। তোমরা মুসলিম না হয়ে কক্ষনো মরো না।

وَاعْتَصِمُوْا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيْعًا وَّلَا تَفَرَّقُوْا ص وَاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ كُنْتُمْ أَعْدَآءً فَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ

১০৩. আল্লাহ্‌র রজ্জুকে সমবেতভাবে দৃঢ়ভাবে ধারণ কর, পরস্পর বিচ্ছিন্ন হয়ো না এবং তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র নি'মাত স্মরণ কর, যখন তোমরা ছিলে পরস্পর শত্রু, তিনি তোমাদের অন্তরে প্রীতির সঞ্চার করলেন, ফলে

بِنِعْمَتِهٖٓ إِخْوَانًا ج وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ النَّارِ فَأَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ (١٠٣)

তোমরা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহে পরস্পর ভাই ভাই হয়ে গেলে। তোমরা অগ্নি-গহ্বরের প্রান্তে ছিলে, অতঃপর আল্লাহ তোমাদেরকে তাথেকে রক্ষা করলেন। এভাবে আল্লাহ নিজের নিদর্শনাবলী তোমাদের কাছে স্পষ্টভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা সঠিক পথ প্রাপ্ত হও।

وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ أُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ إِلَى الْخَيْرِ وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ط وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (١٠٤)

১০৪. তোমাদের মধ্যে এমন একটা দল হোক, যারা কল্যাণের দিকে আহ্বান করে, সৎ কাজের আদেশ করে এবং অসৎ কাজ হতে নিষেধ করে আর এরাই সফলকাম।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ تَفَرَّقُوْا وَاخْتَلَفُوْا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ط وَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ لا (١٠٥)

১০৫. তোমরা সেই লোকদের মত হয়ে যেয়ো না যারা তাদের নিকট সুস্পষ্ট নিদর্শন পৌঁছার পরে বিভক্ত হয়েছে ও মতভেদ করেছে এবং এ শ্রেণীর লোকেদের জন্য আছে মহা শাস্তি।

يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ج فَأَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ قف أَكَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ (١٠٦)

১০৬. সে দিন কতক মুখ উজ্জ্বল হবে আর কতক মুখ কালো হবে, যাদের মুখ কালো হবে, (তাদেরকে বলা হবে), তোমরা কি ঈমান আনার পরও কুফরী করেছিলে? কাজেই নিজেদের কুফরীর জন্য শাস্তি ভোগ করতে থাক।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ رَحْمَةِ اللّٰهِ ط هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (١٠٧)

১০৭. যাদের মুখ উজ্জ্বল হবে, তারা আল্লাহ্‌র রহমতের মধ্যে থাকবে, তারা তাতে চিরকাল থাকবে।

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ط وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ (١٠٨)

১০৮. এসব আল্লাহ্‌র আয়াত, যা ঠিকভাবে আমি তোমাকে পড়ে শুনাচ্ছি এবং আল্লাহ বিশ্বজগতের প্রতি যুল্‌ম করতে চান না।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ ع (١٠٩)

১০৯. যা কিছু আসমানে আছে আর যমীনে আছে সব আল্লাহ্‌রই এবং যাবতীয় বিষয়াদি আল্লাহ্‌র দিকেই ফিরে যাবে।

كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ ط وَلَوْ اٰمَنَ أَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ط مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَأَكْثَرُهُمُ الْفٰسِقُوْنَ (١١٠)

১১০. তোমরাই সর্বোত্তম উম্মাত, মানবজাতির (সর্বাত্মক কল্যাণের) জন্য তোমাদের আবির্ভূত করা হয়েছে, তোমরা সৎকাজের আদেশ দাও এবং অসৎ কাজ হতে নিষেধ কর ও আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান রক্ষা করে চল। যদি আহলে কিতাব ঈমান আনত, তাহলে নিশ্চয়ই তাদের জন্য ভাল হত, তাদের মধ্যে কেউ কেউ মু'মিন এবং তাদের অধিকাংশই ফাসেক।

لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ إِلَّآ أَذًى ط وَإِنْ يُّقٰتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْأَدْبَارَ قف ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ (١١١)

১১১. সামান্য কষ্ট দেয়া ব্যতীত তারা তোমাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না, আর যদি তোমাদের সাথে যুদ্ধে লিপ্ত হয়, তবে তোমাদেরকে পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে, অতঃপর তারা সাহায্যপ্রাপ্ত হবে না।

ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ أَيْنَ مَا ثُقِفُوْٓا إِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللهِ وَحَبْلٍ مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْأَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ط ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ق (١١٢)

১১২. আল্লাহ্‌র অনুকম্পা ও মানুষের আশ্রয় ছাড়া যেখানেই তারা অবস্থান করুক, সেখানেই তারা হয়েছে লাঞ্ছিত, তারা আল্লাহ্‌র গযবে পরিবেষ্টিত এবং তাদের উপর পতিত হয়েছে দারিদ্র্যের কশাঘাত। এটা এজন্য যে, তারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহ প্রত্যাখ্যান করত এবং নাবীগণকে অন্যায়ভাবে হত্যা করত, এটা এজন্য যে, তারা অবাধ্যতা এবং সীমালঙ্ঘন করত।

لَيْسُوْا سَوَآءً ط مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ أُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللهِ اٰنَآءَ اللَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ (١١٣)

১১৩. তারা সবাই সমান নয়। আহলে কিতাবদের কত লোক এমনও আছে যারা দ্বীনের উপর প্রতিষ্ঠিত আছে, তারা রাত্রিকালে আল্লাহ্‌র আয়াতসমূহ পাঠ করে থাকে এবং তারা সাজদাহ করে থাকে।

১১০। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) كُنْتُمْ خَيْرَ أُمَّةٍ أُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ আয়াত সম্পর্কে বলেন, মানুষের জন্য মানুষ কল্যাণকর তখনই হয় যখন তাদের গ্রীবাদেশে (আল্লাহ্‌র আনুগত্যের) শিকল লাগিয়ে নিয়ে আসে। অতঃপর তারা ইসলামে প্রবেশ করে। –বুখারী ৪৫৫৭ [৩০১০; আবূ দাঊদ ২৬৭৭, আহমাদ ৭৯৫৩, ৯০১৮]

يُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ؕ وَأُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (١١٤)

১১৪. তারা আল্লাহ্‌র ও পরকালের প্রতি বিশ্বাস পোষণ করে, সৎকাজের আদেশ দেয় এবং অসৎকাজ হতে নিষেধ করে এবং কল্যাণকর কাজে তৎপর থাকে। বস্তুতঃ তারা পুণ্যবানদের মধ্যে গণ্য।

وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ وَاللهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ (١١٥)

১১৫. তারা যা কিছু সৎকাজ করুক কোন কিছুই প্রত্যাখ্যান করা হবে না এবং আল্লাহ মুত্তাকীদের বিষয়ে বিশেষরূপে পরিজ্ঞাত।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللهِ شَيْئًا ؕ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (١١٦)

১১৬. যারা কুফরী করে, আল্লাহ্‌র নিকটে তাদের ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি কক্ষনো কোন কাজে আসবে না এবং তারা হচ্ছে অগ্নির অধিবাসী, তারা তাতে চিরকাল থাকবে।

مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ أَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فَأَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللهُ وَلٰكِنْ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (١١٧)

১১৭. এ পার্থিব জীবনে তারা যা ব্যয় করে তার দৃষ্টান্ত হিমশীতল বাতাসের মত যা নিজেদের প্রতি যুল্‌মকারী সম্প্রদায়ের শস্যক্ষেত্রকে আঘাত করে এবং তাকে নষ্ট করে। মূলতঃ তাদের প্রতি আল্লাহ কোন প্রকার যুল্‌ম করেননি, বরং তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুল্‌ম করে থাকে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَأْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ۚ وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ أَكْبَرُ ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ (١١٨)

১১৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের নিজেদের লোক ছেড়ে অন্য কাউকেও বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, কারণ তারা তোমাদেরকে নষ্ট করতে ত্রুটি করবে না, তারা কেবল তোমাদের দুর্ভোগ কামনা করে, বস্তুতঃ তাদের মুখেও শত্রুতা প্রকাশিত হয়ে পড়ে এবং তাদের অন্তর যা লুকিয়ে রাখে তা আরও ভয়ঙ্কর, আমি তোমাদের কাছে তাদের লক্ষণগুলো স্পষ্ট করে দিলাম, যদি তোমরা অনুধাবন কর।

هٰٓأَنْتُمْ أُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا يُحِبُّوْنَكُمْ

১১৯. অবশ্য তোমরাই সেই লোক যে, তোমরা তাদেরকে মহব্বত কর, কিন্তু তারা তোমাদের

وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ج وَإِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ج وَإِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْأَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ط قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ط إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (١١٩)

সাথে মহব্বত রাখে না, উপরন্তু তোমরা সকল কিতাবের প্রতিও বিশ্বাস রাখ এবং যখন তারা তোমাদের সঙ্গে সাক্ষাৎ করে তখন বলে যে, 'আমরাও ঈমান এনেছি' এবং যখন তারা একান্তে মিলিত হয় তখন তোমাদের প্রতি গোস্বায় নিজেদের আঙ্গুলের মাথা কামড়াতে থাকে। তাদেরকে বল, 'তোমরা নিজেদের গোস্বায় মরতে থাক'। বস্তুতঃ অন্তরে যা আছে আল্লাহ তা খুব ভালভাবেই জানেন।

إِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ز وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَّفْرَحُوْا بِهَا ط وَإِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ط إِنَّ اللهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ع (١٢٠)

১২০. যদি তোমাদের কল্যাণ হয়, তা তাদেরকে দুঃখ দেয়, আর যদি তোমাদের অকল্যাণ হয়, তাতে তারা আনন্দিত হয়, যদি তোমরা ধৈর্যশীল হও এবং তাকওয়া অবলম্বন কর তবে তাদের চক্রান্ত তোমাদের কিছুই ক্ষতি করতে পারবে না, নিশ্চয় তারা যা কিছু করছে, আল্লাহ তা পরিবেষ্টন করে আছেন।

وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ الْمُؤْمِنِيْنَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ط وَاللهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ لا (١٢١)

১২১. (স্মরণ কর) যখন তুমি সকাল বেলায় তোমার পরিজন হতে বের হয়ে মু'মিনদেরকে যুদ্ধের জন্য জায়গায় জায়গায় মোতায়েন করছিলে, আল্লাহ সবকিছুই শুনেন, সবকিছুই জানেন।

إِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتٰنِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا لا وَاللهُ وَلِيُّهُمَا ط وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (١٢٢)

১২২. যখন তোমাদের মধ্যকার দু'দল ভীরুতা প্রকাশ করতে মনস্থ করেছিল, কিন্তু আল্লাহ উভয়ের বন্ধু ছিলেন, মু'মিনদের উচিত আল্লাহর উপর ভরসা করা।

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللهُ بِبَدْرٍ وَّأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ج فَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (١٢٣)

১২৩. এবং আল্লাহ তোমাদের হীন অবস্থায় বাদ্‌র যুদ্ধক্ষেত্রে তোমাদের সাহায্য করেছেন, সুতরাং আল্লাহ্‌কে ভয় করে চল, যেন তোমরা শোকরগুজার হতে পার।

১২২। জাবির ইবনু 'আবদুল্লাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, إِذْ هَمَّتْ طَّآئِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ تَفْشَلَا وَاللهُ وَلِيُّهُمَا আয়াতটি আমাদের ব্যাপারেই অবতীর্ণ হয়েছে। তিনি বলেন, আমরা দু'দল বানী হারিসা আর বানী সালমা। وَلِيُّهُمَا وَاللهُ (উহূদের যুদ্ধে যখন মুনাফিক 'আবদুল্লাহ বিন উবাই তার অনুগত ৩০০ সৈন্যকে ফিরিয়ে নিয়েছিল তখন এ দল দু'টির সাহস হারাবার উপক্রম হয়েছিল)—"আল্লাহ উভয়ের অভিভাবক" উল্লেখ আছে, সেহেতু এটা অবতীর্ণ না হওয়া আমরা পছন্দ করতাম না। সুফ্‌ইয়ান (রহ.)-এর এক বর্ণনায় আছে وَمَا يَسُرُّنِيْ —'আমাকে ভাল লাগেনি'। —বুখারী ৪৫৫৮ [৪০৫১; মুসলিম ২৫০৫]

إِذْ تَقُوْلُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ أَلَنْ يَّكْفِيَكُمْ أَنْ يُّمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلٰثَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُنْزَلِيْنَ ط (١٢٤)

১২৪. (স্মরণ কর) যখন তুমি মু'মিনদেরকে বলছিলে, 'তোমাদের জন্য কি এটা যথেষ্ট নয় যে, তোমাদের প্রতিপালক তিন সহস্র ফেরেশতা অবতরণপূর্বক তোমাদের সাহায্য করবেন?'

بَلٰٓى لا إِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا وَيَأْتُوْكُمْ مِّنْ فَوْرِهِمْ هٰذَا يُمْدِدْكُمْ رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ اٰلٰفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ مُسَوِّمِيْنَ (١٢٥)

১২৫. হ্যাঁ, যদি তোমরা ধৈর্যধারণ কর এবং তাকওয়া অবলম্বন কর এবং তারা (অর্থাৎ শত্রুরা) মুহূর্তের মধ্যে এখানে তোমাদের উপর এসে পড়ে, তাহলে তোমাদের প্রতিপালক বিশেষভাবে চিহ্নিত পাঁচ সহস্র ফেরেশতা দ্বারা তোমাদেরকে সাহায্য করবেন।

وَمَا جَعَلَهُ اللهُ إِلَّا بُشْرٰى لَكُمْ وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُكُمْ بِهٖ ط وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ لا (١٢٦)

১২৬. এটা আল্লাহ কেবলমাত্র তোমাদের সুসংবাদের জন্য এবং তা দ্বারা তোমাদের চিত্ত-প্রশান্তির জন্য করেছেন, মূলতঃ সাহায্য তো শুধু আল্লাহ্‌রই নিকট হতে, যিনি পরাক্রান্ত, প্রজ্ঞাময়।

لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا خَآئِبِيْنَ (١٢٧)

১২৭. যাতে তিনি কাফিরদের দলবিশেষকে ধ্বংস করে দেন কিংবা লাঞ্ছিত করেন, ফলে তারা নিরাশ হয়ে প্রত্যাবর্তন করে।

لَيْسَ لَكَ مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ أَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ أَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَإِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ (١٢٨)

১২৮. আল্লাহ তাদের প্রতি ক্ষমাশীল হবেন অথবা তাদেরকে শাস্তি প্রদান করবেন- এ ব্যাপারে তোমার কিছু করার নেই। কেননা তারা হচ্ছে যালিম।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ

১২৯. আকাশসমূহে ও যমীনে যা কিছুই আছে সেসব আল্লাহ্‌রই, তিনি যাকে ইচ্ছে ক্ষমা করেন এবং যাকে ইচ্ছে শাস্তি প্রদান করেন। আল্লাহ

১২৮। সালিম (রহ.) তার পিতা থেকে বর্ণনা করেন যে, তিনি রসূলুল্লাহ (ﷺ) থেকে শুনেছেন যে, তিনি ফাজ্‌রের সলাতের শেষ রাকআতে রুকূ' থেকে মাথা তুলে 'সামি'আল্লাহু লিমান হামিদাহ্ (আল্লাহ তাঁর প্রশংসাকারীর প্রশংসা শোনেন। হে আমাদের প্রতিপালক! তোমার জন্য সমস্ত প্রশংসা)', 'রব্বানা ওয়ালাকাল হাম্‌দ' বলার পর এটা বলতেনঃ হে আল্লাহ! অমুক, অমুক এবং অমুককে লানত করুন। তখন আল্লাহ এ আয়াত অবতীর্ণ করলেনঃ "তিনি তাদের প্রতি ক্ষমাশীল হবেন অথবা তাদের শাস্তি দিবেন, এ বিষয়ে তোমার করণীয় কিছুই নেই। কারণ তারা যালিম।" ইসহাক ইবনু রাশিদ (রহ.) ইমাম যুহরী (রহ.) থেকে এটা বর্ণনা করেছেন। –বুখারী ৪৫৫৯ [৪০৬৯; তিরমিযী ৩০০৫, নাসায়ী ১০৭৮, আহমাদ ৫৬৪১, ৫৭৭৮]

غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (١٢٩)

ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَأْكُلُوا الرِّبٰوٓا أَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ص وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ج (١٣٠)

১৩০. হে মু'মিনগণ! তোমরা সুদ খেও না ক্রমবর্ধিতভাবে, আল্লাহ্‌কে ভয় কর, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পার।

وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ أُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ ج (١٣١)

১৩১. ভয় কর সেই আগুনকে, যা কাফিরদের জন্য প্রস্তুত করা হয়েছে।

وَأَطِيْعُوا اللهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ج (١٣٢)

১৩২. আল্লাহ্‌র ও রসূলের আনুগত্য কর, যাতে তোমরা কৃপাপ্রাপ্ত হতে পার।

وَسَارِعُوْٓا إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ لا أُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ لا (١٣٣)

১৩৩. তোমরা দ্রুত অগ্রসর হও তোমাদের প্রতিপালকের ক্ষমার দিকে ও সেই জান্নাতের দিকে যার বিস্তৃতি হচ্ছে আসমানসমূহ ও যমীনের সমান, যা মুত্তাকীদের জন্য তৈরী করা হয়েছে।

الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ وَالضَّرَّآءِ وَالْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ وَالْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ط وَاللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ج (١٣٤)

১৩৪. যারা সচ্ছল ও অসচ্ছল অবস্থায় (আল্লাহ্‌র পথে) ব্যয় করে এবং যারা ক্রোধ সংবরণকারী এবং মানুষের প্রতি ক্ষমাশীল, আল্লাহ সৎকর্মশীলদের ভালবাসেন।

وَالَّذِيْنَ إِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً أَوْ ظَلَمُوْٓا

১৩৫. যারা কোন পাপ কাজ করে ফেললে কিংবা নিজেদের প্রতি যুল্‌ম করলে আল্লাহ্‌কে স্মরণ

১৩০। 'আওন ইবনু আবূ জুহাইফাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমার পিতাকে দেখেছি, তিনি এক গোলাম খরিদ করেন যে শিঙ্গা লাগানোর কাজ করত। তিনি তার শিঙ্গার যন্ত্রপাতি সম্পর্কে নির্দেশ দিলেন এবং তা ভেঙ্গে ফেলা হল। আমি এ ব্যাপারে তাঁকে জিজ্ঞেস করলে তিনি বললেন, নাবী (ﷺ) কুকুরের মূল্য এবং রক্তের মূল্য গ্রহণ করতে নিষেধ করেছেন [রক্ত মোক্ষণ করে পারিশ্রমিক গ্রহণ করার অবৈধতা পরবর্তীতে উল্লেখিত হাদীস দ্বারা বাতিল হয়ে গেছে। চিত্র অঙ্কণকারী বলতে জীবনসম্পন্ন প্রাণীর চিত্র অঙ্কণকারী বুঝানো হয়েছে যা অন্য হাদীস দ্বারা আমরা জানতে পারি। কোন প্রাণীর চিত্র অঙ্কণ করা হারাম– হাদীস নং ২১০৫], আর দেহে দাগ দেয়া ও নেয়া হতে নিষেধ করেছেন। সুদ খাওয়া ও খাওয়ানো নিষেধ করেছেন আর ছবি অংকণকারীর উপর লা'নাত করেছেন। –বুখারী ২০৮৬ [২২৩৮,৫৩৪৭, ৫৯৪৫, ৫৯৬২; আবূ দাউদ ৩৪৮৩, আহমাদ ১৮২৮১, ১৮২৮৮]

১৩৪। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেনঃ প্রকৃত বীর সে নয়, যে কাউকে কুস্তিতে হারিয়ে দেয়। বরং সেই প্রকৃত বাহাদুর, যে ক্রোধের সময় নিজেকে নিয়ন্ত্রণ করতে সক্ষম। –বুখারী ৬১১৪ [মুসলিম ২৬০৯, আহমাদ ৭১৭৮,৭৫৮৪, ১০৩২৪; মালিক ১৬৮১]

أَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ قف وَمَنْ يَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ إِلَّا اللّٰهُ ص قف وَلَمْ يُصِرُّوْا عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (١٣٥)

করে এবং নিজেদের পাপের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করে এবং আল্লাহ ব্যতীত গুনাহসমূহের ক্ষমাকারী কেই বা আছে এবং তারা জেনে শুনে নিজেদের (পাপ) কাজের পুনরাবৃত্তি করে না।

أُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَنِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ط (١٣٦)

১৩৬. এরাই তারা যাদের জন্য রয়েছে তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে ক্ষমা এবং এমন এক জান্নাত যার নিম্নে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তারা তার স্থায়ী অধিবাসী এবং সৎকর্মশীলদের পুরস্কার কতই না উত্তম!

قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ لا فَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ (١٣٧)

১৩৭. তোমাদের পূর্বেও অনেক সম্প্রদায় গত হয়েছে, তোমরা দুনিয়া পর্যটন কর, তারপর দেখ, যারা মিথ্যা ব'লে অমান্য করেছিল তাদের পরিণাম কী দাঁড়িয়েছে।

هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ (١٣٨)

১৩৮. এটা হচ্ছে মানুষের জন্য সুস্পষ্ট বর্ণনা এবং মুত্তাকীদের জন্য হিদায়াত ও নাসীহাত।

وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٣٩)

১৩৯. তোমরা হীনবল ও দুঃখিত হয়ো না, বস্তুতঃ তোমরাই জয়ী থাকবে যদি তোমরা মু'মিন হও।

إِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ط وَتِلْكَ الْأَيَّامُ نُدَاوِلُهَا بَيْنَ النَّاسِ ج وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ط وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ لا (١٤٠)

১৪০. যদি তোমাদেরকে আঘাত স্পর্শ করে, অনুরূপ আঘাত তো অপর পক্ষকেও স্পর্শ করেছিল। (জয়-পরাজয়ের) এ দিনগুলোকে আমি মানুষের মধ্যে আবর্তিত করে থাকি যাতে আল্লাহ মু'মিনদেরকে চিনে নিতে পারেন এবং তোমাদের মধ্যে কাউকে কাউকে শহীদ হিসেবে গ্রহণ করতে পারেন, বস্তুতঃ আল্লাহ যালিমদেরকে ভালবাসেন না।

وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ الْكٰفِرِيْنَ (١٤١)

১৪১. এবং (এ জন্যেও) যেন আল্লাহ মু'মিনদেরকে সংশোধন করেন ও কাফিরদের নিশ্চিহ্ন করেন।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ (١٤٢)

১৪২. তোমরা কি ভেবেছ যে, তোমরা জান্নাতে প্রবেশ করবে, অথচ আল্লাহ এখন পর্যন্তও পরখ করেননি তোমাদের মধ্যে কে জিহাদ করেছে আর কারা ধৈর্যশীল।

وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَلْقَوْهُ ص فَقَدْ رَأَيْتُمُوْهُ وَأَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ع (١٤٣)

১৪৩. (শাহাদাতের) মৃত্যুর সাক্ষাৎ লাভের পূর্বে তোমরা তা কামনা করতে, এখন তো তোমরা তা দিব্যদৃষ্টিতে দেখলে।

وَمَا مُحَمَّدٌ إِلَّا رَسُوْلٌ ج قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ط أَفَائِنْ مَّاتَ أَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى أَعْقَابِكُمْ ط وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ اللّٰهَ شَيْئًا ط وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ (١٤٤)

১৪৪. মুহাম্মাদ হচ্ছে একজন রসূল মাত্র, তাঁর পূর্বে আরও অনেক রসূল গত হয়েছে; কাজেই যদি সে মারা যায় কিংবা নিহত হয়, তবে কি তোমরা উল্টাদিকে ঘুরে দাঁড়াবে? এবং যে ব্যক্তি উল্টাদিকে ফিরে দাঁড়ায় সে আল্লাহ্‌র কোনই ক্ষতি করতে পারবে না এবং আল্লাহ কৃতজ্ঞদেরকে অতিশীঘ্র বিনিময় প্রদান করবেন।

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تَمُوْتَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ط وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ج وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ مِنْهَا ط

১৪৫. কোন জীবই আল্লাহ্‌র অনুমতি ছাড়া মরতে পারে না, তার মেয়াদ নির্ধারিত। যে ব্যক্তি পার্থিব ফল চায়, আমি তাথেকে তাকে দেই, আর যে ব্যক্তি আখেরাতের ফল চায়, আমি তাকে তাথেকে দেই এবং কৃতজ্ঞদেরকে আমি

১৪৪। ইমাম যুহরী (রহ.) বলেন, আমাকে আবূ সালামাহ (ﷺ) ‘আবদুল্লাহ ইবনু ‘আব্বাস (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেছেন, আবূ বাক্‌র (ﷺ) বের হয়ে আসেন তখন ‘উমার (ﷺ) লোকজনের সঙ্গে কথা বলছিলেন। আবূ বাক্‌র (ﷺ) তাঁকে বললেন, হে ‘উমার (ﷺ) বসে পড়। ‘উমার (ﷺ) বসতে অস্বীকার করলেন। তখন সহাবীগণ ‘উমার (ﷺ)-কে ছেড়ে আবূ বাক্‌র (ﷺ)-এর দিকে গেলেন। তখন আবূ বাক্‌র (ﷺ) বললেন– “অতঃপর আপনাদের মধ্যে যারা মুহাম্মাদ -এর ইবাদাত করতেন, তিনি তো ইন্তিকাল করেছেন। আর যারা আপনাদের মধ্যে আল্লাহ্‌র ‘ইবাদাত করতেন (জেনে রাখুন) আল্লাহ চিরঞ্জীব, কখনো মরবেন না। আল্লাহ বলেন, ... –মুহাম্মাদ একজন রসূল মাত্র, তাঁর পূর্বে বহু রসূল গত হয়েছেন। ... কৃতজ্ঞদের পুরস্কৃত করবেন।
ইবনু ‘আব্বাস (ﷺ) বলেন, আল্লাহ্‌র কসম! আবূ বাক্‌র (ﷺ)-এর পাঠ করার পূর্বে লোকেরা যেন জানত না যে, আল্লাহ তা‘আলা এরূপ আয়াত অবতীর্ণ করেছেন। এরপর সমস্ত সহাবী তাঁর থেকে উক্ত আয়াত শিখে নিলেন। তখন সবাইকে উক্ত আয়াত তিলাওয়াত করতে শুনলাম। আমাকে সা‘ঈদ ইবনু মুসাইয়্যাব (রহ.) জানিয়েছেন, ‘উমার (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ্‌র কসম! আমি যখন আবূ বাক্‌র (ﷺ)-কে উক্ত আয়াত তিলাওয়াত করতে শুনলাম, তখন ভীত হয়ে পড়লাম এবং আমার পা দু'টি যেন আমার ভার নিতে পারছিল না, এমনকি আমি মাটিতে পড়ে গেলাম যখন শুনতে পেলাম যে, তিনি তিলাওয়াত করছেন যে নাবী (ﷺ) ইন্তিকাল করেছেন। –বুখারী ৪৪৫৪ [১২৪২; মুসলিম ২২১৩, নাসায়ী ১৮৩৯-১৮৪১; ইবনু মাজাহ ১৬২৭, আহমাদ ২৪৩৪২, ২৭৮০৭]

وَسَنَجْزِي الشّٰكِرِيْنَ (١٤٥)

শীঘ্রই বিনিময় প্রদান করব।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ لا مَعَهٗ رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ج فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ أَصَابَهُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَمَا ضَعُفُوْا وَمَا اسْتَكَانُوْا ط وَاللهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ (١٤٦)

১৪৬. কত নাবী যুদ্ধ করেছে, তাদের সাথে ছিল বহু লোক, তখন তারা আল্লাহ্র পথে তাদের উপর সংঘটিত বিপদের জন্য হীনবল হয়নি, দুর্বল হয়নি, দুর্বল, অপারগ হয়নি, বস্তুতঃ আল্লাহ্ ধৈর্যশীলদেরকে ভালবাসেন।

وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوْا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَإِسْرَافَنَا فِيْٓ أَمْرِنَا وَثَبِّتْ أَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (١٤٧)

১৪৭. তাদের মুখ হতে কেবল এ কথাই বেরিয়েছিল– 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের অপরাধগুলো এবং আমাদের কাজ-কর্মে বাড়াবাড়িগুলোকে তুমি ক্ষমা করে দাও, আমাদেরকে দৃঢ়পদ রেখ এবং কাফিরদলের উপর আমাদেরকে সাহায্য কর।'

فَاٰتٰهُمُ اللهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَحُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ط وَاللهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ع (١٤٨)

১৪৮. সুতরাং আল্লাহ তাদেরকে পার্থিব সুফল প্রদান করলেন আর পরকালীন উৎকৃষ্ট সুফল। আল্লাহ্ সৎকর্মশীলদেরকে ভালবাসেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ تُطِيْعُوا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى أَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ (١٤٩)

১৪৯. হে বিশ্বাসীগণ! যদি তোমরা কাফিরদের আনুগত্য কর তাহলে তারা তোমাদেরকে পশ্চাদ্দিকে ফিরিয়ে নিয়ে যাবে, তখন তোমরা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে পড়বে।

بَلِ اللهُ مَوْلٰكُمْ ج وَهُوَ خَيْرُ النّٰصِرِيْنَ (١٥٠)

১৫০. বরং আল্লাহ্ই তোমাদের অভিভাবক এবং তিনিই সর্বশ্রেষ্ঠ সাহায্যকারী।

سَنُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ بِمَآ أَشْرَكُوْا بِاللهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ج وَمَأْوٰهُمُ النَّارُ ط وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ (١٥١)

১৫১. অতিসত্বরই আমি কাফিরদের অন্তরে ভয় সঞ্চার করব, কারণ তারা আল্লাহ্র শরীক গ্রহণ করেছে যার স্বপক্ষে তিনি কোনও সনদ অবতীর্ণ করেননি, তাদের নিবাস হবে জাহান্নাম এবং যালিমদের নিবাস কতই না জঘন্য!

১৫১। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেন, অল্প শব্দে ব্যাপক অর্থবোধক বাক্য বলার শক্তি সহ আমাকে পাঠানো হয়েছে এবং শত্রুর মনে ভীতি সঞ্চারের মাধ্যমে আমাকে সাহায্য করা হয়েছে। একবার আমি নিদ্রায় ছিলাম, তখন পৃথিবীর ধনভাণ্ডার সমূহের চাবি আমার হাতে দেয়া হয়েছে। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) বলেন,

وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللهُ وَعْدَهٗۤ إِذْ تَحُسُّوْنَهُمْ بِإِذْنِهٖ ج حَتّٰۤى إِذَا فَشِلْتُمْ وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ مِّنْ بَعْدِ مَآ أَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ط مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ج ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ج وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ط وَاللهُ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ (١٥٢)

১৫২. (উহুদের রণক্ষেত্রে) আল্লাহ তোমাদেরকে স্বীয় ওয়া'দা সঠিকরূপে দেখালেন, যখন তোমরা আল্লাহ্‌র নির্দেশে কাফিরদেরকে নিপাত করছিলে, অতঃপর যখন তোমরা নিজেরাই (পার্থিব লাভের বশে) দুর্বল হয়ে গেলে এবং (নেতার) হুকুম সম্বন্ধে মতভেদ করলে এবং তোমাদেরকে তোমাদের আকাঙ্ক্ষিত বস্তু দেখানোর পর তোমরা অবাধ্য হলে, তোমাদের কেউ কেউ দুনিয়ার প্রত্যাশী হলে এবং কেউ কেউ পরকাল চাইলে, অতঃপর তিনি তোমাদেরকে শত্রুদের হতে ফিরিয়ে দিলেন তোমাদেরকে পরীক্ষা করার জন্য, আল্লাহ অবশ্য তোমাদেরকে ক্ষমা করলেন, বস্তুতঃ আল্লাহ মু'মিনদের প্রতি অনুগ্রহশীল।

إِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰۤى أَحَدٍ وَّالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ فِيْۤ أُخْرٰىكُمْ فَأَثَابَكُمْ غَمًّاۢ بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا مَآ أَصَابَكُمْ ط وَاللهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (١٥٣)

১৫৩. (স্মরণ কর) যখন তোমরা উঁচু জমির দিকে উঠছিলে এবং কারও দিকে ফিরে তাকানোর মত হুঁশটুকু তোমাদের ছিল না এবং রসূল তোমাদের পশ্চাতে থেকে তোমাদেরকে ডাকছিল। ফলে আল্লাহ তোমাদেরকে কষ্টের উপর কষ্ট প্রদান করলেন, যাতে তোমরা যা হারিয়েছ অথবা তোমাদের উপর যে বিপদ এসেছে (তার কারণ উপলব্ধি করার পর ভবিষ্যতে) তার জন্য দুঃখিত না হও, বস্তুতঃ তোমরা যা-ই কর আল্লাহ সে ব্যাপারে বিশেষভাবে অবহিত।

আল্লাহর রসূল (ﷺ) তো চলে গেছেন আর তোমরা ওগুলো বাহির করছ। −বুখারী ২৯৭৭ [৬৯৯৮, ৭০১৩, ৭২৭৩] (মুসলিম ৫২৩, তিরমিযী ১৫৫৩, নাসায়ী ৩০৮৭, ৩০৮৯; আহমাদ ৭৩৫৫, ৭৫৩১]

১৫২। বারাআ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, উহুদ যুদ্ধের দিন আমরা মুখোমুখী অবতীর্ণ হলে নাবী (ﷺ) 'আবদুল্লাহ ইবনু যুবায়র (رضي الله عنه)-কে তীরন্দাজ বাহিনীর প্রধান নিযুক্ত করে তাদেরকে (নির্দিষ্ট এক স্থানে) মোতায়েন করলেন এবং বললেন, যদি তোমরা আমাদেরকে দেখ যে, আমরা তাদের উপর বিজয় লাভ করেছি, তাহলেও তোমরা এখান থেকে নড়বে না। আর যদি তোমরা তাদেরকে দেখ যে, তারা আমাদের উপর বিজয় লাভ করেছে, তবুও তোমরা এই স্থান ত্যাগ করে আমাদের সাহায্যের জন্য এগিয়ে আসবে না। এরপর আমরা তাদের সঙ্গে যুদ্ধ শুরু করলে তারা পালাতে আরম্ভ করল। এমনকি আমরা দেখতে পেলাম যে, মহিলারা দ্রুত দৌড়ে পর্বতে আশ্রয় নিচ্ছে। তারা পায়ের গোছা থেকে কাপড় টেনে তুলেছে, ফলে পায়ের অলঙ্কারগুলো পর্যন্ত বেরিয়ে পড়ছে। এ সময় তারা (তীরন্দাজরা) বলতে লাগলেন, গানীমাত-গানীমাত! তখন 'আবদুল্লাহ (رضي الله عنه) বললেন, তোমরা যাতে এ স্থান ত্যাগ না কর এ ব্যাপারে নাবী (ﷺ) আমাকে নির্দেশ দিয়েছেন। তারা অগ্রাহ্য করল। যখন তারা অগ্রাহ্য করল, তখন তাদের মুখ ফিরিয়ে দেয়া হলো এবং তাদের সত্তর জন শাহীদ হলেন।...........হাদীসের শেষ পর্যন্ত। −বুখারী ৪০৪৩ [আবূ দাউদ ২৬৬২, আহমাদ ১৮১২০, ১৮১২৬]

ثُمَّ أَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ الْغَمِّ أَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى طَآئِفَةً مِّنْكُمْ لا وَطَآئِفَةٌ قَدْ أَهَمَّتْهُمْ أَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ط يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْأَمْرِ مِنْ شَيْءٍ ط قُلْ إِنَّ الْأَمْرَ كُلَّهٗ لِلّٰهِ ط يُخْفُوْنَ فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ مَّا لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ط يَقُوْلُوْنَ لَوْ كَانَ لَنَا مِنَ الْأَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا هٰهُنَا ط قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ إِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ج وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ ۢبِذَاتِ الصُّدُوْرِ (١٥٤)

১৫৪. অতঃপর কষ্টের পর আল্লাহ তোমাদের প্রতি শান্তি-তন্দ্রা প্রেরণ করলেন, যা তোমাদের একদলকে আচ্ছন্ন করল এবং অন্যদল মূর্খের মতো আল্লাহ্‌র প্রতি কুধারণা পোষণ করতঃ নিজেরাই নিজেদের জীবনকে উদ্বেগাকুল করে বলল, কাজ-কর্মের ব্যাপারে (সিদ্ধান্ত গ্রহণের) আমাদের কিছুমাত্র অধিকার আছে কি? বল, 'সমস্তই আল্লাহ্‌র নিরঙ্কুশ অধিকারভুক্ত'। তারা এমন সব কথা অন্তরে পোষণ করে– যা তোমার কাছে প্রকাশ করে না। তারা বলে, 'যদি মতামত প্রদানের অধিকার আমাদের কিছুমাত্রও থাকত, তাহলে আমরা এ স্থলে নিহত হতাম না'। বলে দাও, 'যদি তোমরা তোমাদের ঘরেও থাকতে, তথাপি যাদের ভাগ্যে মৃত্যু লেখা ছিল, তারা তাদের এ মৃত্যুশয্যার পানে বের হয়ে পড়ত'। এবং এজন্যও যে আল্লাহ তোমাদের অন্তরের ভেতরের বিষয়গুলো পরীক্ষা করেন এবং তোমাদের অন্তরস্থ বিষয়গুলোকে পরিষ্কার করেন, বস্তুতঃ আল্লাহ সকলের অন্তরের কথা সম্পর্কে বিশেষভাবে অবহিত।

إِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ لا إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا ج وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ عَنْهُمْ ط إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ع (١٥٥)

১৫৫. দু'দল পরস্পর সম্মুখীন হওয়ার দিন তোমাদের মধ্যে যারা পলায়নপর হয়েছিল, তোমাদের কোন কোন অতীত কার্যকলাপের জন্য শয়ত্বান তাদের পদস্খলন ঘটিয়েছিল এবং নিঃসন্দেহে আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করেছেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ ক্ষমাপরায়ণ, অতি সহনশীল।

১৫৫। 'উসমান ইবনু মাওহাব (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, হাজ্জ পালনের উদ্দেশে এক ব্যক্তি বাইতুল্লাহ্য় এসে সেখানে একদল লোককে উপবিষ্ট অবস্থায় দেখে জিজ্ঞেস করলেন, এ উপবিষ্ট লোকগুলো কে? তারা বললেন, এরা হচ্ছেন কুরাইশ গোত্রের লোক। লোকটি আবার জিজ্ঞেস করলেন, এ বৃদ্ধ লোকটি কে? তারা বললেন, ইনি হচ্ছেন ইবনু 'উমার (রাঃ)। তখন লোকটি তাঁর কাছে গিয়ে বললেন, আমি আপনাকে কিছু কথা জিজ্ঞেস করব, আপনি আমাকে বলে দেবেন কি? এরপর লোকটি বললেন, আমি আপনাকে এই ঘরের রবের কসম দিয়ে বলছি, উহুদের দিন 'উসমান ইবনু আফফান (রাঃ) পালিয়েছিলেন, এ কথা আপনি কি জানেন? তিনি বললেন, হ্যাঁ। লোকটি বললেন, তিনি বাদ্‌রে অনুপস্থিত ছিলেন, যুদ্ধে অংশগ্রহণ করেননি– এ কথাও কি আপনি জানেন? তিনি বললেন, হ্যাঁ। লোকটি আবার বললেন, তিনি বায়'আতে রিদওয়ানেও অনুপস্থিত ছিলেন– এ কথাও কি আপনি জানেন? তিনি বললেন, হ্যাঁ। বর্ণনাকারী বলেন, লোকটি তখন আল্লাহু আকবার ধ্বনি উচ্চারণ করল। তখন ইবনু 'উমার (রাঃ) বললেন, এসো,

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ لَا تَكُونُوا۟ كَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ وَقَالُوا۟ لِإِخْوَٰنِهِمْ إِذَا ضَرَبُوا۟ فِى ٱلْأَرْضِ أَوْ كَانُوا۟ غُزًّى لَّوْ كَانُوا۟ عِندَنَا مَا مَاتُوا۟ وَمَا قُتِلُوا۟ ج لِيَجْعَلَ ٱللَّهُ ذَٰلِكَ حَسْرَةً فِى قُلُوبِهِمْ ط وَٱللَّهُ يُحْىِۦ وَيُمِيتُ ط وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ (١٥٦)

১৫৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা তাদের মত হয়ো না, যারা কুফরী করে এবং তাদের ভাই-বন্ধুগণ যখন বিদেশে সফর করে কিংবা কোথাও যুদ্ধে লিপ্ত হয় তাদের সম্বন্ধে বলে, 'তারা আমাদের কাছে থাকলে মরত না, নিহতও হত না'। ফলে আল্লাহ এটিকে তাদের মনের অনুতাপে পরিণত করে দেন, বস্তুতঃ আল্লাহ্ই জীবিত করেন ও মৃত্যুদান করেন আর তোমরা যা কিছু কর, আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

وَلَئِن قُتِلْتُمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ ٱللَّهِ وَرَحْمَةٌ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُونَ (١٥٧)

১৫৭. যদি তোমরা আল্লাহ্‌র পথে নিহত হও কিংবা মৃত্যুবরণ কর, তবে আল্লাহ্‌র দয়া ও ক্ষমা অতি উত্তম তারা যা সঞ্চয় করে তার চেয়ে।

وَلَئِن مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى ٱللَّهِ تُحْشَرُونَ (١٥٨)

১৫৮. তোমরা মারা গেলে বা নিহত হলে অবশ্যই আল্লাহ্‌র নিকট তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ ٱللَّهِ لِنتَ لَهُمْ ج وَلَوْ كُنتَ فَظًّا غَلِيظَ ٱلْقَلْبِ لَٱنفَضُّوا۟ مِنْ حَوْلِكَ ص فَٱعْفُ عَنْهُمْ وَٱسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ فِى ٱلْأَمْرِ ج فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى ٱللَّهِ ط إِنَّ ٱللَّهَ يُحِبُّ ٱلْمُتَوَكِّلِينَ (١٥٩)

১৫৯. সুতরাং আল্লাহ্‌র পরম অনুগ্রহ যে তুমি তাদের উপর দয়ার্দ্র রয়েছ, এবং যদি তুমি রূঢ় মেজাজ ও কঠিন হৃদয় হতে তবে অবশ্যই তারা তোমার নিকট হতে সরে যেত। সুতরাং তাদের দোষ ক্ষমা কর এবং আল্লাহ্‌র কাছে তাদের গুনাহের জন্য ক্ষমা চাও এবং কাজ-কর্মে তাদের সঙ্গে পরামর্শ কর, অতঃপর যখন (কোন ব্যাপারে) সংকল্পবদ্ধ হও, তখন আল্লাহ্‌রই প্রতি ভরসা কর; নিশ্চয় আল্লাহ ভরসাকারীদেরকে পছন্দ করেন।

إِن يَنصُرْكُمُ ٱللَّهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ ج وَإِن يَخْذُلْكُمْ فَمَن ذَا ٱلَّذِى يَنصُرُكُم مِّنۢ بَعْدِهِۦ ط وَعَلَى ٱللَّهِ

১৬০. যদি আল্লাহ তোমাদের সাহায্য করেন, তবে তোমাদের উপর কেউই বিজয়ী হতে পারবে না এবং যদি তিনি তোমাদের সাহায্য না করেন, সে অবস্থায় এমন কে আছে যে, তোমাদেরকে সাহায্য করবে? মু'মিনদের

এখন আমি তোমাকে সব ব্যাপারে জানিয়ে দেই এবং তোমার প্রশ্নগুলোর উত্তর খুলে বলি। (১) উহূদের দিন তাঁর পালানোর ব্যাপার সম্বন্ধে আমি সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আল্লাহ তাঁকে ক্ষমা করে দিয়েছেন।..............হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪০৬৬ [তিরমিযী ৩৭০৬, আহমাদ ৫৭৩৮, ৫৯৭৫]

فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (١٦٠)

আল্লাহ্র প্রতি নির্ভর করাই উচিত।

وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّغُلَّ ط وَمَنْ يَّغْلُلْ يَأْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ج ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (١٦١)

১৬১. কোন নাবী খিয়ানাত করতে পারে না, যে ব্যক্তি খিয়ানাত করবে, সে খিয়ানাতকৃত বস্তুসহ ক্বিয়ামাতের দিন উপস্থিত হবে, অতঃপর প্রত্যেককে যা সে অর্জন করেছে তা পুরোপুরি দেয়া হবে, কারও প্রতি কোন প্রকার যুল্ম করা হবে না।

أَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللهِ كَمَنْۢ بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللهِ وَمَأْوٰهُ جَهَنَّمُ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (١٦٢)

১৬২. যে ব্যক্তি আল্লাহ্র সন্তুষ্টি অনুসরণ করে, সে কি আল্লাহ্র আক্রোশে পতিত লোকের ন্যায় হতে পারে? তার নিবাস হল জাহান্নাম, আর তা কতই না নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তনস্থল!

هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللهِ ط وَاللهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ (١٦٣)

১৬৩. আল্লাহ্র নিকট তাদের বিভিন্ন মর্যাদা রয়েছে, বস্তুতঃ তারা যা কিছুই করছে, আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

لَقَدْ مَنَّ اللهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ أَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ج وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (١٦٤)

১৬৪. নিশ্চয় আল্লাহ মু'মিনদের প্রতি অত্যন্ত অনুকম্পা প্রদর্শন করেছেন, যখন তাদের নিকট তাদের নিজস্ব একজনকে রসূল করে পাঠিয়েছেন, সে তাদেরকে আল্লাহ্র আয়াত পড়ে শুনাচ্ছে, তাদেরকে পরিশোধন করছে, তাদেরকে কিতাব ও হিকমাত (সুন্নাহ) শিক্ষা দিচ্ছে, যদিও তারা পূর্বে সুস্পষ্ট গোমরাহীতে ছিল।

أَوَلَمَّآ أَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ أَصَبْتُمْ مِّثْلَيْهَا لا قُلْتُمْ أَنّٰى هٰذَا ط قُلْ هُوَ مِنْ عِنْدِ أَنْفُسِكُمْ ط إِنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٦٥)

১৬৫. কী ব্যাপার! তোমাদের উপর যখন বিপদ এসেছে অথচ তোমরা তো (বদ্‌র যুদ্ধে তোমাদের শত্রুদের) এটা অপেক্ষা দ্বিগুণ বিপদ ঘটিয়েছিলে, এখন তোমরা বলছ, 'এটা কোত্থেকে আসল'? (তাদেরকে) বল, 'ওটা তোমাদের নিজেদের নিকট থেকেই এসেছে', নিশ্চয় আল্লাহ সকল বস্তুর উপর ক্ষমতাবান।

وَمَآ أَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ فَبِإِذْنِ اللهِ وَلِيَعْلَمَ الْمُؤْمِنِيْنَ لا (١٦٦)

১৬৬. দু'দল পরস্পরের সম্মুখীন হওয়ার দিন যে বিপদ পৌঁছেছিল, তা আল্লাহ্র হুকুমে ঘটেছিল, এর উদ্দেশ্য ছিল প্রকৃত মু'মিনদেরকে জেনে নেয়া।

وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ج صلے وَقِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ أَوِ ادْفَعُوْا ط قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّاتَّبَعْنٰكُمْ ط هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ أَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْإِيْمَانِ ج يَقُوْلُوْنَ بِأَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ط وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ج (١٦٧)

১৬৭. আর মুনাফিকদেরকেও জেনে নেয়া। তাদেরকে বলা হয়েছিল; এসো, 'আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধ কর, কিংবা (কমপক্ষে) নিজেদের প্রতিরক্ষার ব্যবস্থা কর'। তখন তারা বলল, 'যদি আমরা জানতাম যুদ্ধ হবে, তাহলে অবশ্যই তোমাদের অনুসরণ করতাম'। তারা ঐ দিন ঈমানের চেয়ে কুফরীরই নিকটতম ছিল, তারা মুখে এমন কথা বলে যা তাদের অন্তরে নেই, যা কিছু তারা গোপন করে আল্লাহ তা বিশেষরূপে জ্ঞাত আছেন।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِإِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ أَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ط قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ أَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١٦٨)

১৬৮. যারা বসে থেকে নিজেদের ভাইদের সম্বন্ধে বলতে লাগল, আমাদের কথামত চললে তারা নিহত হত না। বল, তোমরা সত্যবাদী হলে তোমাদের নিজেদের উপর থেকে মরণকে হটিয়ে দাও।

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ أَمْوَاتًا ط بَلْ أَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ لا (١٦٩)

১৬৯. যারা আল্লাহ্‌র পথে নিহত হয়েছে, তাদেরকে মৃত ভেব না, বরং তারা জীবিত, তাদের প্রতিপালকের সান্নিধ্যে থেকে তারা রিয্‌কপ্রাপ্ত হচ্ছে।

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهٖ لا وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ لا أَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ م (١٧٠)

১৭০. আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে যা দিয়েছেন তা লাভ করে তারা আনন্দিত আর যে সব ঈমানদার লোক তাদের পেছনে (পৃথিবীতে) রয়ে গেছে, এখনও তাদের সাথে এসে মিলিত হয়নি, তাদের কোন ভয় ও চিন্তে নেই জেনে তারা আনন্দিত।

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللهِ وَفَضْلٍ لا وَّأَنَّ اللهَ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ج (١٧١)

১৭১. আল্লাহ্‌র নি'মাত এবং অনুগ্রহের কারণে তারা আনন্দ প্রকাশ করে আর এটা জেনে যে, আল্লাহ মু'মিনদের সাওয়াব বিনষ্ট করেন না।

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْ بَعْدِ مَآ أَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ط ۛ لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوْا مِنْهُمْ

১৭২. আঘাতপ্রাপ্ত হওয়ার পরও যারা আল্লাহ এবং রসূলের ডাকে সাড়া দিয়েছে তাদের মধ্যে যারা সৎকাজ করে ও তাকওয়া অবলম্বন করে

Contents

وَاتَّقَوْا أَجْرٌ عَظِيمٌ ج (١٧٢)

তাদের জন্য রয়েছে মহা প্রতিদান।

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ إِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ إِيْمَانًا ق صلى وَّقَالُوْا حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ (١٧٣)

১৭৩. যাদেরকে লোকে খবর দিয়েছিল যে, একটা বড় বাহিনী তোমাদের বিরুদ্ধে জড় হচ্ছে, কাজেই তাদেরকে ভয় কর। তখন তা তাদের ঈমান বৃদ্ধি করে দিল এবং তারা বলল, 'আমাদের জন্যে আল্লাহ্ই যথেষ্ট এবং তিনি কতই না উত্তম কর্মবিধায়ক!'

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ لا وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللهِ ط وَاللهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ (١٧٤)

১৭৪. অতঃপর তারা আল্লাহ্র নি'মাত ও অনুগ্রহসহ ফিরে আসল, কোনও প্রকার অনিষ্ট তাদেরকে স্পর্শ করেনি, তারা আল্লাহ্র সন্তুষ্টির অনুসরণ করেছিল এবং আল্লাহ মহাকল্যাণময়।

إِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ أَوْلِيَآءَهٗ ص فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٧٥)

১৭৫. এ লোকেরা হচ্ছে শয়ত্বান; তোমাদেরকে তার বন্ধুদের ভয় দেখায়, তোমরা তাদেরকে ভয় করো না, আমাকেই ভয় কর, যদি তোমরা মু'মিন হও।

وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ ج إِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللهَ شَيْئًا ط يُرِيْدُ اللهُ أَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا فِي الْاٰخِرَةِ ج وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (١٧٦)

১৭৬. যারা কুফরীর দিকে দ্রুত ধাবমান তারা যেন তোমাকে মর্মপীড়া না দেয়। তারা কক্ষনো আল্লাহ্র কিছুই ক্ষতি করতে পারবে না। পরকালে কোন অংশই আল্লাহ তাদেরকে দিতে ইচ্ছে করেন না, তাদের জন্য আছে মহাশাস্তি।

১৭২। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, তিনি উরওয়াহ (রাঃ)-কে বললেন, হে ভাগ্নে জান? "জখম হওয়ার পর যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আহ্বানে সাড়া দিয়েছেন, তাদের মধ্যে যারা সৎকাজ করে এবং তাকওয়া অবলম্বন করে তাদের জন্য আছে বিরাট পুরস্কার।" (এ আয়াতটিতে যাদের কথা বলা হয়েছে) তাদের মধ্যে তোমার পিতা যুবায়র (রাঃ) এবং আবূ বাক্র (রাঃ)-ও ছিলেন। উহূদের দিন রসূলুল্লাহ (ﷺ) বহু দুঃখ-কষ্টে আপতিত হয়েছিলেন। মুশরিকগণ চলে গেলে তিনি আশঙ্কা করলেন যে, তারা আবারও ফিরে আসতে পারে। তিনি বললেন, কে এদের পশ্চাদ্ধাবনের জন্য প্রস্তুত আছে। এতে সত্তরজন সহাবী সাড়া দিয়ে প্রস্তুত হলেন। 'উরওয়াহ (রাঃ) বলেন, তাদের মধ্যে আবূ বাক্র ও যুবায়র (রাঃ)-ও ছিলেন। –বুখারী ৪০৭৭ [মুসলিম ২৪১৮, ইবনু মাজাহ ১২৪]

১৭৩। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ কথাটি ইবরাহীম (আঃ) বলেছিলেন, যখন তিনি আগুনে নিক্ষিপ্ত হয়েছিলেন। আর মুহাম্মাদ (ﷺ) বলেছিলেন যখন লোকেরা বলল, "নিশ্চয় তোমাদের বিরুদ্ধে কাফিররা বিরাট সাজ-সরঞ্জামের সমাবেশ করেছে, সুতরাং তোমরা তাদের ভয় কর। এ কথা তাদের ঈমানের তেজ বাড়িয়ে দিল এবং তারা বললঃ আমাদের জন্য আল্লাহই যথেষ্ট এবং তিনিই উত্তম কার্যনির্বাহক।" –বুখারী ৪৫৬৩ [৪৫৬৪]

Contents

إِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ بِالْإِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْئًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١٧٧)

১৭৭. যারা ঈমানের বিনিময়ে কুফরী ক্রয় করেছে, তারা কক্ষনো আল্লাহ্‌র কিছুমাত্র অনিষ্ট করতে পারবে না, তাদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّأَنْفُسِهِمْ ۗ إِنَّمَا نُمْلِيْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا إِثْمًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (١٧٨)

১৭৮. কাফিরগণ যেন কিছুতেই এ ধারণা পোষণ না করে যে, তাদেরকে আমি যে অবকাশ দিয়েছি তা তাদের জন্য মঙ্গলজনক; আমি তাদেরকে শুধু এজন্য অবকাশ দেই যে, যেন তাদের পাপের পরিমাণ বেড়ে যায়, তাদের জন্য আছে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি।

مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مَآ أَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ۗ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَجْتَبِيْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۖ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَإِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ أَجْرٌ عَظِيْمٌ (١٧٩)

১৭৯. অসৎকে সৎ থেকে পৃথক না করা পর্যন্ত তোমরা যে অবস্থায় আছ, আল্লাহ মু'মিনদেরকে সে অবস্থায় ছেড়ে দিতে পারেন না এবং আল্লাহ তোমাদেরকে গায়িবের বিধান জ্ঞাত করেন না, তবে আল্লাহ তাঁর রাসূলগণের মধ্যে যাকে ইচ্ছে বেছে নেন, কাজেই তোমরা আল্লাহ এবং তাঁর রসূলগণের প্রতি ঈমান আন। যদি তোমরা ঈমান আন আর তাকওয়া অবলম্বন কর, তাহলে তোমাদের জন্য আছে মহাপুরস্কার।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ بِمَآ اٰتٰهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ خَيْرًا لَّهُمْ ۗ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ۗ سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۚ (١٨٠)

১৮০. আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে যা তাদেরকে দিয়েছেন তাতে যারা কৃপণতা করে, তারা যেন মনে না করে যে, তা তাদের জন্য কল্যাণকর, বরং তা তাদের জন্য (খুবই) অকল্যাণকর, তারা যাতে কৃপণতা করেছে, সত্বর ক্বিয়ামাতের দিন তারই বেড়ি তাদের গলায় পরিয়ে দেয়া হবে। আসমান ও যমীনের স্বত্বাধিকার কেবল আল্লাহ্‌রই। তোমরা যা কিছুই করছ আল্লাহ সে সম্পর্কে পূর্ণরূপে অবহিত।

১৮০। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, যাকে আল্লাহ তা'আলা ধন-সম্পদ দেন, তারপর সে তার যাকাত আদায় করে না– ক্বিয়ামাতের দিন তার ধন-সম্পদকে তার জন্যে লোমবিহীন কালো-চিহ্ন যুক্ত সর্পে রূপ দেয়া হবে এবং তার গলায় পরিয়ে দেয়া হবে। মুখের দু'দিক দিয়ে সে তাকে দংশন করতে থাকবে এবং বলবে, 'আমি তোমার সম্পদ, আমি তোমার সঞ্চয়'। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) এই আয়াত তিলাওয়াত করলেনঃ "এবং আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে যা তাদেরকে দিয়েছেন তাতে যারা কৃপণতা করে তাদের জন্য তা

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ أَغْنِيَآءُ ـ سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْأَنْـبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ج لا وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (١٨١)

১৮১. আল্লাহ অবশ্যই তাদের উক্তি শ্রবণ করেছেন যারা বলে, 'আল্লাহ দরিদ্র এবং আমরা ধনী', তারা যা বলে তা আমি অবশ্যই লিপিবদ্ধ করে রাখব এবং (তাদের) অন্যায়ভাবে নাবীগণকে হত্যা করার বিষয়টিও (লিপিবদ্ধ করে রাখব) এবং আমি বলব– 'জাহান্নামের দহন যন্ত্রণা ভোগ কর'।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْكُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ج (١٨٢)

১৮২. এটা তোমাদের আগেই পাঠানো কাজের বিনিময়, কারণ আল্লাহ স্বীয় বান্দাগণের প্রতি কোন প্রকার যুল্ম করেন না।

اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ إِلَيْنَآ أَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى يَأْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَأْكُلُهُ النَّارُ ط قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوْهُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١٨٣)

১৮৩. যারা ব'লে থাকে যে, 'আল্লাহ আমাদের কাছে অঙ্গীকার নিয়েছেন, যেন আমরা আগুনে গ্রাস করে এমন কোন কুরবানী আমাদের সামনে না দেখানো পর্যন্ত কোন রসূলের প্রতি ঈমান না আনি'। বল; 'আমার পূর্বে বহু রসূল বহু প্রমাণসহ তোমাদের নিকট এসেছিল এবং তোমাদের কথিত সেই মু'জিযা নিয়েও (এসেছিল)। যদি তোমরা সত্যবাদী হও, তাহলে কেন তোমরা তাদেরকে হত্যা করেছিলে?'

فَإِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ (١٨٤)

১৮৪. তারপরও যদি কাফিরগণ তোমাকে অস্বীকার করে, তবে তোমার পূর্বেও রসূলগণকে অস্বীকার করা হয়েছিল যারা স্পষ্ট নিদর্শন, অনেক সহীফা এবং দীপ্তিমান কিতাব নিয়ে এসেছিল।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ط وَإِنَّمَا تُوَفَّوْنَ أُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط فَمَنْ زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَأُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ فَازَ ط وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ (١٨٥)

১৮৫. প্রতিটি জীবন মৃত্যুর আস্বাদ গ্রহণ করবে এবং ক্বিয়ামাতের দিন তোমাদেরকে পূর্ণমাত্রায় বিনিময় দেয়া হবে। যে ব্যক্তিকে জাহান্নামের আগুন হতে রক্ষা করা হল এবং জান্নাতে দাখিল করা হল, অবশ্যই সে ব্যক্তি সফলকাম হল, কেননা পার্থিব জীবন ছলনার বস্তু ছাড়া আর কিছুই নয়।

মঙ্গলজনক এটা যেন তারা কিছুতেই মনে না করে ......" আয়াতের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৫৬৫ [১৪০৩; মুসলিম ৯৮৭, নাসায়ী ২৪৪৮, ২৪৮২; আবূ দাউদ ১৬৫৮, ইবনু মাজাহ ১৭৮৬, আহমাদ ৭৫০৯, ৭৬৬৩; মুওয়াত্তা ৫৯৬]

لَتُبْلَوُنَّ فِيٓ أَمْوَالِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتَٰبَ مِن قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِينَ أَشْرَكُوٓا أَذًى كَثِيرًا ۚ وَإِن تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا فَإِنَّ ذَٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُورِ (١٨٦)

১৮৬. অবশ্যই তোমরা তোমাদের ধনের ও জনের ব্যাপারে পরীক্ষিত হবে এবং তোমরা নিশ্চয়ই তোমাদের আগের কিতাবধারীদের ও মুশরিকদের নিকট হতে দুঃখজনক অনেক কথা শুনবে এবং তোমরা যদি ধৈর্যধারণ কর আর তাকওয়া অবলম্বন কর, তবে অবশ্যই তা হবে দৃঢ় সংকল্পের কাজ।

১৮৬। উসামাহ ইবনু যায়দ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) একটি গাধার পিঠে আরোহণ করেছিলেন, একটি ফদকী চাদর তাঁর পরনে ছিল। উসামাহ ইবনু যায়দ (ﷺ)-কে তাঁর পেছনে বসিয়েছিলেন। তিনি বানী হারিস ইবনু খাযরায গোত্রে অসুস্থ সা'দ ইবনু 'উবাদাহ (ﷺ)-কে দেখতে যাচ্ছিলেন। এটা ছিল বাদ্‌র যুদ্ধের পূর্বেকার ঘটনা। বর্ণনাকারী বলেন যে, যেতে যেতে নাবী (ﷺ) এমন একটি মজলিসের কাছে পৌঁছলেন, যেখানে 'আবদুল্লাহ ইবনু উবাই বিন সালুলও ছিল–সে তখনও ইসলাম গ্রহণ করেনি। সে মজলিসে মুসলিম, মুশরিক, প্রতিমাপূজারী এবং ইয়াহূদী সকল প্রকারের লোক ছিল এবং তথায় 'আবদুল্লাহ ইবনু রাওয়াহা (ﷺ)-ও ছিলেন। জন্তুর পদধূলি যখন মজলিসকে আচ্ছন্ন করল, তখন 'আবদুল্লাহ ইবনু উবাই আপন চাদরে নাক ঢেকে ফেলল। তারপর বলল, আমাদের এখানে ধূলো উড়িয়ো না। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) এদেরকে সালাম করলেন। তারপর বাহন থেকে অবতরণ করলেন এবং তাদেরকে আল্লাহ্‌র প্রতি দাওয়াত দিলেন এবং তাদের কাছে কুরআন মাজীদ পাঠ করলেন। 'আবদুল্লাহ ইবনু উবাই বলল, এই লোকটি! তুমি যা বলছ তা যদি সত্য হয় তাহলে এর চেয়ে উত্তম কিছুই নেই। তবে আমাদের মজলিসে আমাদেরকে জ্বালাতন করবে না। তুমি তোমার তাঁবুতে যাও। যে তোমার কাছে যাবে তাকে তুমি তোমার কথা বলবে। অনন্তর 'আবদুল্লাহ ইবনু রাওয়াহা (ﷺ) বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আপনি আমাদের মজলিসে এগুলো আমাদের কাছে বলবেন, কারণ আমরা তা পছন্দ করি। এতে মুসলিম, মুশরিক এবং ইয়াহূদীরা পরস্পর গালাগালি শুরু করল। এমনকি তারা মারামারিতে লিপ্ত হওয়ার পর্যায়ে উপনীত হল। রসূলুল্লাহ (ﷺ) তাদেরকে থামাচ্ছিলেন। অবশেষে তারা থামল। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) তাঁর পশুটির পিঠে চড়ে রওয়ানা দিলেন এবং সা'দ ইবনু উবাদাহ (ﷺ)-এর কাছে গেলেন। নাবী (ﷺ) তাঁকে বললেন, হে সা'দ! আবূ হুবাব অর্থাৎ 'আবদুল্লাহ ইবনু উবাই কী বলেছে, তুমি শুনেছ কি? সে এমন বলেছে। সা'দ ইবনু 'উবাদাহ্ (ﷺ) বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! তাকে ক্ষমা করে দিন। তার দিকে ভ্রুক্ষেপ করবেন না। যিনি আপনার উপর কিতাব অবতীর্ণ করেছেন, তাঁর শপথ করে বলছি, আল্লাহ আপনার উপর যা অবতীর্ণ করেছেন তা সত্য। এতদঞ্চলের অধিবাসীগণ চুক্তি সম্পাদন করেছিল যে, তাকে শাহী টুপী পরাবে এবং নেতৃত্বের আসনে অধিষ্ঠিত করবে। যখন আল্লাহ তা'আলা সত্য প্রদানের মাধ্যমে এ পরিকল্পনা অস্বীকার করলেন তখন সে ক্রুদ্ধ ও ক্ষুব্ধ হয়ে উঠে এবং আপনার সঙ্গে যে ব্যবহার করেছে যা আপনি দেখেছেন। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) তাকে ক্ষমা করে দিলেন। নাবী (ﷺ) এবং তাঁর সহাবীগণ (ﷺ) মুশরিক এবং কিতাবীদেরকে ক্ষমা করে দিতেন এবং তাদের জ্বালাতনে ধৈর্য ধারণ করতেন। আল্লাহ তা'আলা বলেছেন, "আর অবশ্যই তোমরা শুনতে পাবে পূর্ববর্তী আহ্‌লে কিতাবের এবং মুশরিকদের নিকট হতে অনেক কষ্টদায়ক কথা"– (সূরাহ আলু ইমরান ৩/১৮৬)। আল্লাহ তা'আলা আরো বলেছেন, "কিতাবীদের কাছে সত্য প্রকাশিত হওয়ার পরও তাদের অনেকেই ঈর্ষা বশতঃ তোমাদের ঈমান আনার পর আবার তোমাদের কাফিররূপে ফিরে পাওয়ার আকাঙ্ক্ষা করে। যতক্ষণ না আল্লাহ্‌র কোন নির্দেশ আসে ততক্ষণ পর্যন্ত তোমরা ক্ষমা কর ও উপেক্ষা কর। নিশ্চয় আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বশক্তিমান"– (সূরাহ আল-বাকারাহ ২/১০৯)।

আল্লাহ তা'আলার নির্দেশ মোতাবেক নাবী (ﷺ) ক্ষমার দিকেই ফিরে যেতেন। শেষ পর্যন্ত তাদের সম্পর্কে আল্লাহ তা'আলা অনুমতি দিলেন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) যখন বদরের যুদ্ধ চালিয়ে গেলেন এবং তাঁর মাধ্যমে আল্লাহ তা'আলা কাফির কুরাইশ নেতাদেরকে হত্যা করলেন তখন ইবনু উবাই ইবনু সালূল তার সঙ্গী মুশরিক এবং প্রতীমা

وَإِذْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيثَاقَ الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهُ لِلنَّاسِ وَلَا تَكْتُمُونَهُ ز فَنَبَذُوهُ وَرَآءَ ظُهُورِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهِ ثَمَنًا قَلِيلًا ط فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُونَ (١٨٧)

১৮৭. (স্মরণ কর) আল্লাহ আহলে কিতাবদের নিকট থেকে অঙ্গীকার নিয়েছিলেন- তোমরা অবশ্যই তা (অর্থাৎ কিতাব) মানুষের কাছে স্পষ্টভাবে বর্ণনা করবে আর তা গোপন করবে না, কিন্তু তারা তা অগ্রাহ্য করল এবং সামান্য মূল্যে বিক্রি করল, তারা যা ক্রয় করল সে বস্তু কতই না মন্দ!

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِينَ يَفْرَحُونَ بِمَآ أَتَوْا وَّيُحِبُّونَ أَنْ يُّحْمَدُوا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ج وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (١٨٨)

১৮৮. তোমরা এ সব লোককে আযাব থেকে সুরক্ষিত মনে করো না যারা নিজেদের কৃতকর্মের জন্য আনন্দিত এবং এমন কাজের জন্য প্রশংসিত হতে চায় মূলতঃ যা তারা করেনি, তাদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ع (١٨٩)

১৮৯. বস্তুতঃ আসমান ও যমীনে আছে আল্লাহ্‌রই রাজত্ব এবং আল্লাহ সকল জিনিসের উপর ক্ষমতাবান।

إِنَّ فِي خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ج صلے (١٩٠)

১৯০. নিশ্চয়ই আসমানসমূহ ও যমীনের সৃষ্টিতে এবং রাত্র ও দিনের আবর্তনে জ্ঞানবানদের জন্য বহু নিদর্শন আছে।

পূজারীরা বলল, এটাতো এমন একটি ব্যাপার যা বিজয় লাভ করেছে। এরপর তারা রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে ইসলামের বাই'আত করে প্রকাশ্যে ইসলাম গ্রহণ করল। -বুখারী ৪৫৬৬ [২৯৮৭; মুসলিম ১৭৯৮, তিরমিযী ২৭০২, আহমাদ ২১২৬০]

১৮৮। আবূ সা'ঈদ খুদরী (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর যুগে তিনি যখন যুদ্ধে বের হতেন তখন কিছু সংখ্যক মুনাফিক ঘরে বসে থাকত এবং রসূলুল্লাহ (ﷺ) বেরিয়ে যাওয়ার পর বসে থাকতে পারায় আনন্দ প্রকাশ করত। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) ফিরে আসলে তাঁর কাছে শপথ করে ওজর পেশ করত এবং যে কাজ করেনি সে কাজের জন্য প্রশংসিত হতে পছন্দ করত। তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হল।....হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৫৬৭ [মুসলিম ২৭৭৭]

১৯০। ইবনু 'আব্বাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, আমি আমার খালা মাইমূনাহ (رضي الله عنها)-এর কাছে রাত কাটিয়েছিলাম। রসূলুল্লাহ (ﷺ) তাঁর পরিবারবর্গের সঙ্গে কিছুক্ষণ আলাপ-আলোচনা করে শুয়ে পড়লেন। তারপর রাত্রির শেষ তৃতীয়াংশে তিনি উঠলেন এবং আসমানের দিকে তাকিয়ে আয়াতটি তিলাওয়াত করলেন। এরপর দাঁড়ালেন এবং উযূ করে মিসওয়াক করে এগার রাক'আত নামায আদায় করলেন। এরপর বিলাল (رضي الله عنه) আযান দিলে তিনি দু' রাক'আত নামায আদায় করলেন। তারপর বের হলেন এবং ফাজ্‌রের নামায আদায় করলেন।

১৯১. যারা আল্লাহ্কে দণ্ডায়মান, উপবিষ্ট এবং শায়িত অবস্থায় স্মরণ করে থাকে এবং আসমান ও যমীনের সৃষ্টির ব্যাপারে চিন্তা করে (ও বলে): 'হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি এসব অনর্থক সৃষ্টি করনি, তোমার পবিত্রতা বর্ণনা করছি, সুতরাং আমাদেরকে অগ্নির শাস্তি হতে রক্ষা কর।

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ج سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (١٩١)

১৯২. হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি যাকে আগুনে নিক্ষেপ করবে, তাকে অবশ্যই তুমি অপমান করবে আর যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

رَبَّنَآ إِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ أَخْزَيْتَهٗ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارٍ (١٩٢)

১৯৩. হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা একজন ঘোষণাকারীকে ঈমানের ঘোষণা করতে শুনেছি যে, 'তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান আনো'। সে অনুযায়ী আমরা ঈমান এনেছি। সুতরাং হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের গুনাহ্গুলো ক্ষমা কর এবং আমাদের থেকে আমাদের মন্দ কাজগুলো বিদূরিত কর আর নেক বান্দাদের সঙ্গে শামিল করে আমাদের মৃত্যু ঘটাও।

رَبَّنَآ إِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْإِيْمَانِ أَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ق صلے رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْأَبْرَارِ ج (١٩٣)

১৯৪. 'হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি স্বীয়

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا

–বুখারী ৪৫৬৯ [১১৭; মুসলিম ৭৬৩, তিরমিযী ২৩২, ৪৪২; নাসায়ী ৪৪২, ৮০৬, ১১২১, ১৬২০; আবূ দাউদ ৫৮, ৬১০, ১৩৫৩, ১৩৫৫-১৩৫৭, ১৩৬৪, ১৩৬৫, ১৩৬৭, ৫০৪৩; আহমাদ ১৮৮৪, ১৯১৪; মুওয়াত্তা ২৬৭, ১২৬২; দারিমী ১২৫৫]

১৯১। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আমার খালা মাইমূনাহ (রাঃ)-এর নিকট রাত কাটিয়েছিলাম। আমি স্থির করলাম যে, অবশ্যই আমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর নামায আদায় করা দেখব। রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর জন্য একটি বিছানা বিছানো হল। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) সেটার লম্বালম্বি দিকে ঘুমালেন। এরপর জাগ্রত হয়ে মুখমণ্ডল থেকে ঘুমের প্রভাব মুছতে লাগলেন এবং সূরাহ আলু 'ইমরানের শেষ দশ আয়াত পাঠ করে শেষ করলেন। তারপর ঝুলন্ত একটি পুরাতন মশকের পানিপাত্রের নিকটে এসে তা ধরলেন এবং উযূ করে সলাতে দাঁড়ালেন, আমি দাঁড়িয়ে তিনি যা যা করছিলেন তা তা করলাম। তারপর আমি এসে তাঁর বাম পার্শ্বে দাঁড়ালাম। তিনি আমার মাথায় হাত রাখলেন, তারপর আমার কানে ধরে মলতে লাগলেন এবং কান ধরে তাঁর ডান পার্শ্বে দাঁড় করালেন। তারপর দু'রাক'আত, তারপর দু'রাক'আত, তারপর দু'রাক'আত, তারপর দু'রাক'আত, তারপর দু'রাক'আত, তারপর দু'রাক'আত নামায আদায় করলেন এবং তারপর বিতরের নামায আদায় করলেন। –বুখারী ৪৫৭০ [১১৭; মুসলিম ৭৬৩, তিরমিযী ২৩২, ৪৪২; নাসায়ী ৪৪২, ৮০৬, ১১২১, ১৬২০; আবূ দাউদ ৫৮, ৬১০, ১৩৫৩, ১৩৫৫-১৩৫৭, ১৩৬৪, ১৩৬৫, ১৩৬৭, ৫০৪৩; আহমাদ ১৮৮৪, ১৯১৪; মুওয়াত্তা ২৬৭, ১২৬২; দারিমী ১২৫৫]

تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ إِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (١٩٤)

রসূলদের মারফত আমাদেরকে যেসব বস্তুর ওয়াদা শুনিয়েছ, তা আমাদেরকে দান কর এবং ক্বিয়ামাতের দিন আমাদেরকে লাঞ্ছিত করো না, নিশ্চয়ই তুমি ওয়া'দা খেলাফ কর না।'

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ أَنِّيْ لَآ أُضِيْعُ عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْ ۢبَعْضٍ ۚ فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَأُخْرِجُوْا مِنْ دِيٰرِهِمْ وَأُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَأُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَأُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ اللهِ ۗ وَاللهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ (١٩٥)

১৯৫. তখন তাদের প্রতিপালক তাদের ডাকে সাড়া দিয়ে বললেন, তোমাদের মধ্যে পুরুষ হোক কিংবা নারীই হোক কোন কর্মীরই কর্মফল আমি নষ্ট করি না, তোমরা একে অপরের অংশ। সুতরাং যারা হিজরাত করবে এবং স্বীয় গৃহ হতে বিতাড়িত হবে ও আমার পথে নির্যাতিত হবে, যুদ্ধ করবে ও নিহত হবে, নিশ্চয় আমি তাদের গুনাহসমূহ দূর করে দেব এবং নিশ্চয়ই তাদেরকে এমন জান্নাতে দাখিল করবো, যার নীচ দিয়ে বয়ে যাচ্ছে নদ-নদী, আল্লাহ্র নিকট হতে পুরস্কার হিসেবে, বস্তুতঃ আল্লাহ্র নিকটেই উত্তম বিনিময়।

لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِي الْبِلَادِ ۗ (١٩٦)

১৯৬. দেশে দেশে কাফিরদের সদম্ভ পদচারণা তোমাকে যেন বিভ্রান্ত না করে।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ ثُمَّ مَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٩٧)

১৯৭. সামান্য ভোগ, তারপর জাহান্নাম তাদের আবাস, আর তা কতই না নিকৃষ্ট বিশ্রামস্থল!

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللهِ ۗ وَمَا عِنْدَ اللهِ خَيْرٌ لِّلْأَبْرَارِ (١٩٨)

১৯৮. কিন্তু যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে, তাদের জন্য আছে জান্নাত যার পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তারা তাতে চিরকাল থাকবে, এ হল আল্লাহ্র নিকট হতে আতিথ্য আর আল্লাহ্র নিকট যা আছে, তা সৎকর্মপরায়ণদের জন্য অতি উত্তম।

وَإِنَّ مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ يُّؤْمِنُ بِاللهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ أَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۗ إِنَّ اللهَ

১৯৯. আহলে কিতাবদের মধ্যেকার কিছু লোক নিঃসন্দেহে এমনও আছে, যারা আল্লাহ্র উপর এবং তোমাদের উপর অবতীর্ণ কিতাবের এবং তাদের প্রতি অবতীর্ণ কিতাবের উপর ঈমান রাখে, তারা আল্লাহ্র প্রতি বিনয়াবনত, তারা আল্লাহ্র আয়াতকে তুচ্ছমূল্যে বিক্রয় করে না, এরাই তারা যাদের জন্য তাদের কর্মফল

سَرِيْعُ الْحِسَابِ (١٩٩)

নির্ধারিত রয়েছে তাদের প্রতিপালকের নিকট, আল্লাহ হিসেব গ্রহণে ত্বরিতগতি।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا وَرَابِطُوْا قف وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ع (٢٠٠)

২০০. হে মু'মিনগণ! ধৈর্য অবলম্বন কর, দৃঢ়তা প্রদর্শন কর, নিজেদের প্রতিরক্ষাকল্পে পারস্পরিক বন্ধন মজবুত কর এবং আল্লাহ্কে ভয় কর, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পার।

سُوْرَةُ النِّسَاءِ

৪. সূরাহ আন্-নিসা

আয়াতঃ ১৭৬, রুকূ'ঃ ২৪, মাদীনাহ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে ।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا وَّنِسَآءً ج وَاتَّقُوا اللهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْأَرْحَامَ ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا (١)

১. হে মনুষ্য সমাজ! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর, যিনি তোমাদেরকে একটি মাত্র ব্যক্তি হতে পয়দা করেছেন এবং তা হতে তার জোড়া সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর সেই দু'জন হতে বহু নর-নারী ছড়িয়ে দিয়েছেন এবং তোমরা আল্লাহ্কে ভয় কর, যাঁর নামে তোমরা পরস্পর পরস্পরের নিকট (হাক্ব) চেয়ে থাক এবং সতর্ক থাক জ্ঞাতি-বন্ধন সম্পর্কে, নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদের উপর তীক্ষ্ণ দৃষ্টি রাখেন।

وَاٰتُوا الْيَتٰمٰٓى أَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا الْخَبِيْثَ بِالطَّيِّبِ ص وَلَا تَأْكُلُوْٓا أَمْوَالَهُمْ إِلٰٓى أَمْوَالِكُمْ ط إِنَّهٗ كَانَ حُوْبًا كَبِيْرًا (٢)

২. এবং ইয়াতীমদেরকে তাদের ধন-সম্পদ প্রদান কর এবং ভালোর সাথে মন্দের বদল করো না এবং তাদের মাল নিজেদের মালের সঙ্গে মিশিয়ে গ্রাস করো না, নিশ্চয় এটা মহাপাপ।

وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوْا فِي الْيَتٰمٰى فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ مَثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ج فَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ط ذٰلِكَ

৩. যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে, (নারী) ইয়াতীমদের প্রতি সুবিচার করতে পারবে না, তবে নারীদের মধ্য হতে নিজেদের পছন্দমত দুই-দুই, তিন-তিন ও চার-চার জনকে বিবাহ কর, কিন্তু যদি তোমরা আশঙ্কা কর যে, তোমরা সুবিচার করতে পারবে না, তাহলে একজনকে

أَدْنٰٓى أَلَّا تَعُوْلُوْا ط (٣)

কিংবা তোমাদের অধীনস্থ দাসীকে; এটাই হবে অবিচার না করার কাছাকাছি।

وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ط فَإِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَيْءٍ مِّنْهُ نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِيْٓـئًا مَّرِيْٓـئًا (٤)

৪. নারীদেরকে তাদের মহর স্বতঃস্ফূর্ত হয়ে দেবে, অতঃপর তারা যদি সন্তোষের সঙ্গে তাথেকে তোমাদের জন্য কিছু ছেড়ে দেয়, তবে তা তৃপ্তির সঙ্গে ভোগ কর।

وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ أَمْوَالَكُمُ الَّتِيْ جَعَلَ اللهُ لَكُمْ قِيٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ فِيْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا (٥)

৫. এবং তোমরা অল্প-বুদ্ধিসম্পন্নদেরকে নিজেদের মাল প্রদান করো না, যা আল্লাহ তোমাদের জীবনে প্রতিষ্ঠিত থাকার উপকরণ করেছেন এবং সে মাল হতে তাদের অন্ন-বস্ত্রের ব্যবস্থা করবে এবং তাদের সঙ্গে দয়ার্দ্র ন্যায়ানুগ কথা বলবে।

وَابْتَلُوا الْيَتٰمٰى حَتّٰىٓ إِذَا بَلَغُوا النِّكَاحَ ج فَإِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا فَادْفَعُوْٓا إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ ج وَلَا تَأْكُلُوْهَآ إِسْرَافًا وَّبِدَارًا أَنْ يَّكْبَرُوْا ط وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ ج وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ط فَإِذَا

৬. ইয়াতীমদেরকে পরখ কর যে পর্যন্ত না তারা বিবাহযোগ্য হয়, যদি তাদের মধ্যে বিচারবোধ লক্ষ্য কর, তবে তাদেরকে তাদের মাল ফিরিয়ে দেবে। তাদের বয়ঃপ্রাপ্তির ভয়ে অপব্যয় করে এবং তাড়াতাড়ি করে তাদের মাল খেয়ে ফেলো না। আর যে অভাবমুক্ত, সে যেন নিবৃত্ত থাকে এবং যে অভাবগ্রস্ত সে ন্যায়সঙ্গতভাবে ভোগ

৩। 'উরওয়াহ ইবনু যুবায়র (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি 'আয়িশাহ (رضي الله عنها)-কে জিজ্ঞেস করলেন মহান আল্লাহ্‌র বাণী : وَإِنْ خِفْتُمْ أَلَّا تُقْسِطُوا فِي الْيَتٰمٰى সম্পর্কে। তিনি উত্তরে বললেন, হে ভাগ্নে! সে হচ্ছে পিতৃহীনা বালিকা, অভিভাবকের তত্ত্বাবধানে থাকে এবং তার সম্পত্তিতে অংশীদার হয় এবং তার রূপ ও সম্পদ তাকে (অভিভাবককে) আকৃষ্ট করে। এরপর সেই অভিভাবক উপযুক্ত মাহ্‌র না দিয়ে তাকে বিবাহ করতে চায়। তদুপরি অন্য ব্যক্তি যে পরিমাণ মাহ্‌র দেয় তা না দিয়ে এবং তার প্রতি ন্যায়বিচার না করে তাকে বিয়ে করতে চায়। এরপর তাদের পারিবারিক ঐতিহ্যের সঙ্গে সঙ্গতিপূর্ণ মাহ্‌র এবং ন্যায় ও সমুচিত মাহ্‌র প্রদান ব্যতীত তাদের বিয়ে করতে নিষেধ করা হয়েছে এবং তদ্ব্যতীত যে সকল মহিলা পছন্দ হয় তাদেরকে বিয়ে করতে অনুমতি দেয়া হয়েছে। 'উরওয়াহ (রহ.) বলেন যে, 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বলেছেন, এ আয়াত অবতীর্ণ হওয়ার পর লোকেরা রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে মহিলাদের ব্যাপারে জানতে চাইলে আল্লাহ তা'আলা অবতীর্ণ করেন وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ –এবং লোকেরা আপনার কাছে নারীদের বিষয়ে জানতে চান ....। 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বলেন, আল্লাহ্‌র বাণী অন্য এক আয়াতে–তোমরা তাদেরকে বিয়ে করতে আগ্রহ প্রকাশ কর। অথচ ইয়াতীম বালিকার ধন-সম্পদ কম হলে এবং সুন্দরী না হলে তাকে বিবাহ কতে আগ্রহ প্রকাশ করো না। 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বলেন, তাই ইয়াতীম বালিকাদের মাল ও সৌন্দর্যের আকর্ষণে বিবাহ করতে নিষেধ করা হয়েছে। তবে ন্যায়বিচার করলে ভিন্ন কথা। কেননা তারা সম্পদের অধিকারী না হলে এবং সুন্দরী না হলে তাদের কেউ বিবাহ করতে আগ্রহ প্রকাশ করে না। –বুখারী ৪৫৭৪ [২৪৯৪; মুসলিম ৩০১৮, নাসায়ী ৩৩৪৬, আবূ দাউদ ৩০৬৮]

دَفَعْتُمْ إِلَيْهِمْ أَمْوَالَهُمْ فَأَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ط وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا (٦)

করবে এবং যখন তাদের মাল তাদেরকে সমর্পণ করবে, তাদের সামনে সাক্ষী রাখবে; হিসাব গ্রহণে আল্লাহ্ই যথেষ্ট।

لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْأَقْرَبُوْنَ ص وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدَانِ وَالْأَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ أَوْ كَثُرَ ط نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا (٧)

৭. মাতা-পিতা এবং আত্মীয়দের রেখে যাওয়া সম্পত্তিতে পুরুষদের অংশ রয়েছে; আর মাতা-পিতা এবং আত্মীয়দের রেখে যাওয়া সম্পত্তিতে নারীদেরও অংশ আছে, তা অল্পই হোক আর বেশিই হোক, এক নির্ধারিত অংশ।

وَإِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ أُولُو الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا (٨)

৮. (সম্পত্তি) বণ্টনকালে স্বজন, ইয়াতীম এবং মিসকীন উপস্থিত থাকলে তাদেরকেও তাথেকে কিছু দিয়ে দেবে, তাদের সঙ্গে দয়ার্দ্র ন্যায়ানুগ কথা বলবে।

وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا عَلَيْهِمْ ص فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا (٩)

৯. তারা যেন ভয় করে যে, অসহায় সন্তান পেছনে ছেড়ে গেলে তারাও তাদের জন্য চিন্তিত হত, সুতরাং তারা যেন আল্লাহ্কে ভয় করে এবং সঙ্গত কথা বলে।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَأْكُلُوْنَ أَمْوَالَ الْيَتٰمٰى ظُلْمًا إِنَّمَا يَأْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ نَارًا ط وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ع (١٠)

১০. যারা ইয়াতীমদের মাল অন্যায়ভাবে গ্রাস করে, তারা তো নিজেদের পেটে কেবল অগ্নিই ভক্ষণ করে, তারা শীঘ্রই জ্বলন্ত আগুনে জ্বলবে।

৬। 'আয়িশাহ হতে বর্ণিত যে, আল্লাহ্র বাণী وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا فَلْيَسْتَعْفِفْ وَمَنْ كَانَ فَقِيرًا فَلْيَأْكُلْ بِالْمَعْرُوفِ সম্পদশালী গ্রহণ করবে না আর যে ব্যক্তি অভাবগ্রস্ত সে সঙ্গত পরিমাণ ভোগ করবে– অবতীর্ণ হয়েছে ইয়াতীমের সম্পদ উপলক্ষে, যদি তত্ত্বাবধায়ক দরিদ্র হয় তাহলে তত্ত্বাবধানের বিনিময়ে ন্যায্য পরিমাণে তা থেকে ভোগ করবে। –বুখারী ৪৫৭৫ [২২১২; মুসলিম ৩০১৯]

৮। ইব্নু 'আব্বাস হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, লোকদের ধারণা। উক্ত আয়াতটি মানসূখ হয়ে গেছে; কিন্তু আল্লাহ্র কসম। আয়াতটি মানসূখ হয়নি; বরং লোকেরা এর উপর আমল করতে অনীহা প্রকাশ করছে। আত্মীয় দু' ধরনের- এক- আত্মীয় যারা ওয়ারিস হয়, এবং তারা উপস্থিতদের কিছু দিবে। দুই- এমন আত্মীয় যারা ওয়ারিস নয়, তারা উপস্থিতদের সঙ্গে সদালাপ করবে এবং বলবে, তোমাদেরকে কিছু দেয়ার ব্যাপারে আমাদের কোন অধিকার নেই। –বুখারী ২৭৫৯ [৪৫৭৬; মুসলিম ৫৮, তিরমিযী ২৬৩২, নাসায়ী ৫০২০, আবূ দাউদ ৪৬৮৮, আহমাদ ৬৭২৯, ৬৮২৫]

১০। আবূ হুরাইরাহ্ সূত্রে নাবী () হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, সাতটি ধ্বংসকারী বিষয় থেকে তোমরা বিরত থাকবে। সহাবীগণ বললেন, হে আল্লাহর রসূল! সেগুলো কী? তিনি বললেন, (১) আল্লাহ্র সঙ্গে শরীক করা

يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ أَوْلَادِكُمْ ق لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ج فَإِنْ كُنَّ نِسَآءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ج وَإِنْ كَانَتْ وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ط وَلِأَبَوَيْهِ لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهُ وَلَدٌ ج فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُ وَلَدٌ وَّوَرِثَهُ أَبَوَاهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ج فَإِنْ كَانَ لَهُ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ط اٰبَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ ج لَا تَدْرُوْنَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ط فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (١١)

১১. আল্লাহ তোমাদেরকে তোমাদের সন্তান-সন্ততির (অংশ) সম্পর্কে নির্দেশ দিচ্ছেন, পুরুষ দুই নারীর অংশের সমান পাবে, তবে সন্তান-সন্ততি যদি শুধু দু'জন নারীর অধিক হয় তাহলে তাঁরা রেখে যাওয়া সম্পত্তির তিন ভাগের দু' ভাগ পাবে, আর কেবল একটি কন্যা থাকলে সে অর্ধেক পাবে এবং তার পিতা-মাতা উভয়ের প্রত্যেকে রেখে যাওয়া সম্পত্তির ছয় ভাগের এক ভাগ পাবে যদি তার সন্তান থাকে, আর যদি তার সন্তান না থাকে এবং তার ওয়ারিশ মাতা-পিতাই হয়, সে অবস্থায় তার মাতার জন্য এক তৃতীয়াংশ, কিন্তু তার ভাই-বোন থাকলে, তার মাতা পাবে ছয় ভাগের এক ভাগ, (ঐসব বণ্টন হবে) তার কৃত ওয়াসীয়াত অথবা ঋণ পরিশোধের পর। তোমরা জান না তোমাদের পিতা এবং সন্তানদের মধ্যে কে তোমাদের পক্ষে উপকারের দিক দিয়ে অধিকতর নিকটবর্তী। (এ বণ্টন) আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে নির্ধারিত করে দেয়া হয়েছে, নিশ্চয় আল্লাহ মহাজ্ঞানী, প্রজ্ঞাশীল।

وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ج فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ط وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ج فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ط وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ

১২. তোমাদের স্ত্রীদের রেখে যাওয়া সম্পত্তির অর্ধেক তোমাদের জন্য- যদি তাদের কোন সন্তান না থাকে আর যদি সন্তান থাকে, তবে তোমাদের জন্য তাদের রেখে যাওয়া সম্পত্তির এক চতুর্থাংশ, তাদের কৃত ওয়াসীয়াত কিংবা ঋণ পরিশোধের পর এবং তারা তোমাদের রেখে যাওয়া সম্পত্তির সিকি অংশ পাবে যদি তোমাদের কোন সন্তান না থাকে, আর তোমাদের সন্তান থাকলে তাদের জন্য তোমাদের সম্পত্তির আট ভাগের একভাগ- তোমাদের কৃত ওয়াসীয়ত কিংবা ঋণ পরিশোধের পর। যদি পিতা-মাতাহীন ও

(২) যাদু (৩) আল্লাহ্ তা'আলা যাকে হত্যা করা হারাম করেছেন, শরীয়ত সম্মত কারণ ব্যতিরেকে তাকে হত্যা করা (৪) সুদ খাওয়া (৫) ইয়াতীমের মাল গ্রাস করা (৬) রণক্ষেত্র থেকে পালিয়ে যাওয়া এবং (৭) সরল স্বভাবা সতী-সাধ্বী মু'মিনাদের অপবাদ দেয়া। -বুখারী ২৭৬৬ [৫৭৬৪, ৬৮৫৭; মুসলিম ৮৯, নাসায়ী ৩৬৭১, আবূ দাঊদ ২৮৭৬]

كَلٰلَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَّلَهٗٓ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ج فَإِنْ كَانُوْٓا أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ أَوْ دَيْنٍ لا غَيْرَ مُضَآرٍّ ج وَصِيَّةً مِّنَ اللهِ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ط (١٢)

সন্তানহীন কোন পুরুষ বা নারীর শুধু বৈপিত্রেয় একটি ভাই বা একটি ভগ্নি থাকে, তবে প্রত্যেকের জন্য ছ' ভাগের এক ভাগ। যদি তারা তার চেয়ে অধিক হয়, তবে সকলেই তৃতীয়াংশে শরীক হবে কৃত ওয়াসীয়াত কিংবা ঋণ পরিশোধের পরে, যদি কারো জন্য ক্ষতিকর না হয়, এ হল আল্লাহ্‌র বিধান, আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সহনশীল।

تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ ط وَمَنْ يُّطِعِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١٣)

১৩. এসব আল্লাহ্‌র নির্ধারিত সীমা এবং যে ব্যক্তি আল্লাহ এবং তাঁর রসূলের অনুসরণ করবে, আল্লাহ তাকে জান্নাতে দাখিল করবেন, যার পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তারা তাতে চিরবাসী হবে এবং এটা বিরাট সাফল্য।

وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا خٰلِدًا فِيْهَا ص وَلَهٗ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ع (١٤)

১৪. আর যে ব্যক্তি আল্লাহ এবং তাঁর রসূলের নাফরমানী করবে এবং তাঁর নির্ধারিত সীমালঙ্ঘন করবে, আল্লাহ তাকে জাহান্নামে দাখিল করবেন, সে তাতে চিরবাসী হবে এবং সে অবমাননাকর শাস্তি ভোগ করবে।

وَالّٰتِيْ يَأْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ أَرْبَعَةً مِّنْكُمْ ج فَإِنْ شَهِدُوْا فَأَمْسِكُوْهُنَّ فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ أَوْ يَجْعَلَ اللهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا (١٥)

১৫. তোমাদের যে সব নারী ব্যভিচার করবে, তোমরা তাদের বিরুদ্ধে তোমাদের চারজনের সাক্ষ্য গ্রহণ কর। যদি তারা সাক্ষ্য দেয়, তবে তোমরা তাদেরকে সে সময় পর্যন্ত গৃহে আবদ্ধ করে রাখবে যে পর্যন্ত না তাদের মৃত্যু হয় কিংবা আল্লাহ তাদের জন্য কোন পৃথক পথ বের করেন।

وَالَّذٰنِ يَأْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ج فَإِنْ تَابَا وَأَصْلَحَا فَأَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ط إِنَّ اللهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا (١٦)

১৬. তোমাদের মধ্যেকার যে দু'জন তাতে লিপ্ত হবে, তোমরা সে দু'জনকে শাস্তি দেবে, অতঃপর যদি তারা তাওবাহ করে এবং নিজেদেরকে সংশোধন করে তবে তাদের ব্যাপারে নিবৃত্ত হও, নিশ্চয় আল্লাহ অতিশয় তাওবাহ কবূলকারী, পরম দয়ালু।

إِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ

১৭. নিশ্চয়ই যারা অজ্ঞতাবশতঃ মন্দ কাজ ক'রে বসে, তৎপর সত্বর তাওবাহ করে, এরাই তারা

بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَأُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (١٧)

যাদের তাওবাহ্ আল্লাহ্ কবূল করেন। আল্লাহ্ মহাজ্ঞানী, মহাবিজ্ঞানী।

وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ج حَتّٰٓى إِذَا حَضَرَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ إِنِّيْ تُبْتُ الْئٰنَ وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ أُولٰٓئِكَ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا (١٨)

১৮. এমন লোকেদের তাওবাহ্ নিস্ফল যারা গুনাহ করতেই থাকে, অতঃপর মৃত্যুর মুখোমুখী হলে বলে, আমি এখন তাওবাহ্ করছি এবং (তাওবাহ্) তাদের জন্যও নয় যাদের মৃত্যু হয় কাফির অবস্থায়। এরাই তারা যাদের জন্য ভয়াবহ শাস্তির ব্যবস্থা করে রেখেছি।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ إِلَّآ أَنْ يَّأْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ج وَعَاشِرُوْهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ج فَإِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ فَعَسٰٓى أَنْ تَكْرَهُوْا شَيْئًا وَّيَجْعَلَ اللهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا (١٩)

১৯. হে ঈমানদারগণ! জোরপূর্বক নারীদের ওয়ারিশ হওয়া তোমাদের জন্য বৈধ নয় আর তাদেরকে দেয়া মাল হতে কিছু উসূল করে নেয়ার উদ্দেশে তাদের সঙ্গে রূঢ় আচরণ করবে না, যদি না তারা সুস্পষ্ট ব্যভিচার করে। তাদের সাথে দয়া ও সততার সঙ্গে জীবন যাপন কর, যদি তাদেরকে না-পছন্দ কর, তবে হতে পারে যে তোমরা যাকে না-পছন্দ করছ, বস্তুতঃ তারই মধ্যে আল্লাহ্ বহু কল্যাণ দিয়ে রেখেছেন।[২২]

وَإِنْ أَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ زَوْجٍ لا وَّاٰتَيْتُمْ إِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا تَأْخُذُوْا مِنْهُ شَيْئًا ؕ أَتَأْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا (٢٠)

২০. যদি তোমরা এক স্ত্রী বদলিয়ে তদস্থলে অন্য স্ত্রী গ্রহণের ইচ্ছে কর এবং তাদের একজনকে অগাধ সম্পদও দিয়ে থাক, তবুও তাথেকে কিছুই ফিরিয়ে নিও না। তোমরা কি (স্ত্রীর নামে) মিথ্যে দুর্নাম রটিয়ে সুস্পষ্ট গুনাহ করে তা ফেরত নেবে?

---

২২ ১৯। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, يَا أَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوا لا يَحِلُّ لَكُمْ أَنْ تَرِثُوا النِّسَاءَ كَرْهاً وَلا تَعْضُلُوهُنَّ لِتَذْهَبُوا بِبَعْضِ مَا آتَيْتُمُوهُنَّ –ইসলামের প্রথম যুগে অবস্থা এমন ছিল যে, কোন ব্যক্তি মারা গেলে তার অভিভাবকগণ তার স্ত্রীর মালিক হয়ে বসত। তারা ইচ্ছা করলে নিজেরা ঐ মহিলাকে বিয়ে করত। ইচ্ছা করলে অন্যের কাছে দিত। কিংবা তাকে মৃত্যু পর্যন্ত আটকে রাখত। কারও কাছে বিয়ে দিত না। মহিলার পরিবারের চেয়ে এরা অধিক হকদার হয়ে বসত। এরপর এ আয়াত অবতীর্ণ হল। –বুখারী ৪৫৭৯ [৬৯৪৮; আবূ দাউদ ২০৮৯, ২০৯০]

وَكَيْفَ تَأْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ أَفْضٰى بَعْضُكُمْ إِلٰى بَعْضٍ وَّأَخَذْنَ مِنْكُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا (٢١)

২১. কেমন করেই বা তোমরা তা গ্রহণ করবে যখন তোমরা একে অন্যের সাথে সঙ্গত হয়েছ এবং তারা তোমাদের নিকট হতে (বিবাহ বন্ধনের) সুস্পষ্ট প্রতিশ্রুতি নিয়েছে।

وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَآؤُكُمْ مِّنَ النِّسَآءِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ط إِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ط وَسَآءَ سَبِيْلًا ع (٢٢)

২২. যাদেরকে তোমাদের পিতৃপুরুষ বিয়ে করেছে, সেসব নারীকে বিয়ে করো না, পূর্বে যা হয়ে গেছে হয়ে গেছে, নিশ্চয়ই তা অশ্লীল, অতি ঘৃণ্য ও নিকৃষ্ট পন্থা।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ أُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ وَأَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ الْأَخِ وَبَنٰتُ الْأُخْتِ وَأُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ أَرْضَعْنَكُمْ وَأَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ وَأُمَّهٰتُ نِسَآئِكُمْ وَرَبَآئِبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَآئِكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ بِهِنَّ ز فَإِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ز وَحَلَآئِلُ أَبْنَآئِكُمُ الَّذِيْنَ مِنْ أَصْلَابِكُمْ لا وَأَنْ تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْأُخْتَيْنِ إِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ط إِنَّ اللهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا لا (٢٣)

২৩. তোমাদের প্রতি হারাম করা হয়েছে তোমাদের মা এবং মেয়ে, বোন, ফুফু, খালা, ভাইঝি, ভাগিনী, দুধ মা, দুধ বোন, শ্বাশুড়ী, তোমাদের স্ত্রীদের মধ্যে যার সাথে সঙ্গত হয়েছ তার পূর্ব স্বামীর ঔরসজাত মেয়ে যারা তোমাদের তত্ত্বাবধানে আছে, কিন্তু যদি তাদের সাথে তোমরা সহবাস না করে থাক, তবে (তাদের বদলে তাদের মেয়েদেরকে বিয়ে করলে) তোমাদের প্রতি গুনাহ নেই এবং (তোমাদের প্রতি হারাম করা হয়েছে) তোমাদের ঔরসজাত পুত্রের স্ত্রী এবং এক সঙ্গে দু' বোনকে (বিবাহ বন্ধনে) রাখা, পূর্বে যা হয়ে গেছে, হয়ে গেছে, নিশ্চয়ই আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, দয়ালু।

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ إِلَّا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ج كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ج وَأُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ أَنْ تَبْتَغُوْا بِأَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ ط فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ط وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (٢٤)

২৪. নারীদের মধ্যে বিবাহবন্ধনে আবদ্ধ নারীগণও তোমাদের জন্য নিষিদ্ধ, কিন্তু তোমাদের অধিকারভুক্ত দাসীদের বাদে, আল্লাহ এসব ব্যবস্থা তোমাদের উপর ফরয করে দিয়েছেন। তোমাদের জন্য নিষিদ্ধ নারীদের ছাড়া অন্যান্য সকল নারীদেরকে মহ্‌রের অর্থের বদলে বিবাহ বন্ধনে আবদ্ধ করতে চাওয়া তোমাদের জন্য বৈধ করা হয়েছে, অবৈধ যৌন সম্পর্কের জন্য নয়। অতঃপর তাদের মধ্যে যাদের তোমরা সম্ভোগ করেছ, তাদেরকে তাদের ধার্যকৃত মহ্‌র প্রদান কর। তোমাদের প্রতি কোনও গুনাহ নেই মহ্‌র ধার্যের পরও তোমরা উভয়ের সম্মতির ভিত্তিতে মহ্‌রের পরিমাণে হেরফের করলে, নিশ্চয় আল্লাহ সবিশেষ পরিজ্ঞাত ও পরম কুশলী।

وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا أَنْ يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ط وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِكُمْ ط بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ج فَانْكِحُوْهُنَّ بِإِذْنِ أَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ وَّلَا مُتَّخِذٰتِ أَخْدَانٍ ج فَإِذَآ أُحْصِنَّ فَإِنْ أَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ط ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ط وَأَنْ تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (٢٥)

২৫. তোমাদের যে ব্যক্তির স্বাধীনা মু'মিন নারী বিবাহের ক্ষমতা না থাকে, সে যেন তোমাদের অধীনস্থ মু'মিনা দাসী বিবাহ করে এবং আল্লাহ বিশেষরূপে তোমাদের ঈমানকে জানেন। তোমাদের একজন অন্যজন থেকে উদ্ভূত, কাজেই তাদেরকে বিয়ে কর তাদের মালিকের অনুমতি নিয়ে, ন্যায়সঙ্গতভাবে তাদের মহ্‌র তাদেরকে দিয়ে দাও, তারা হবে সচ্চরিত্রা, ব্যভিচারিণী নয়, উপপতি গ্রহণকারিণীও নয়। বিবাহের দূর্গে সুরক্ষিত হওয়ার পর তারা যদি ব্যভিচার করে, তবে তাদের শাস্তি আজাদ নারীদের অর্ধেক; এ ব্যবস্থা তার জন্য তোমাদের যে ব্যক্তি (অবিবাহিত থাকার কারণে) ব্যভিচারের ভয় করে। ধৈর্য ধারণ করা তোমাদের পক্ষে উত্তম এবং আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ط

২৬. আল্লাহ ইচ্ছে করেন তোমাদের নিকট সবিস্তারে বর্ণনা করতে তোমাদের আগেকার লোকেদের নিয়মনীতি তোমাদের দেখানোর গ্রহণের জন্য, আর তোমাদেরকে ক্ষমা করার জন্য; বস্তুতঃ

وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٢٦)

আল্লাহ সুপরিজ্ঞাত, পরম কুশলী।

وَاللهُ يُرِيْدُ أَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ قف وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ أَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا (٢٧)

২৭. আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করতে চান, পক্ষান্তরে কুপ্রবৃত্তির অনুসারীরা চায় যে, তোমরা (আল্লাহ্‌র নিকট হতে) দূরে বহু দূরে সরে যাও।

يُرِيْدُ اللهُ أَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ج وَخُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيْفًا (٢٨)

২৮. আল্লাহ তোমাদের ভার লঘু করতে চান, কারণ মানুষকে দুর্বলরূপে সৃষ্টি করা হয়েছে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَأْكُلُوْٓا أَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَ تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ قف وَلَا تَقْتُلُوْٓا أَنْفُسَكُمْ ط إِنَّ اللهَ كَانَ بِكُمْ رَحِيْمًا (٢٩)

২৯. হে ঈমানদারগণ! তোমরা অন্যায়ভাবে একে অন্যের সম্পদ গ্রাস করো না, তবে পারস্পরিক সম্মতিতে ব্যবসায় বৈধ এবং নিজেদের ধ্বংস ডেকে এনো না কিংবা তোমরা পরস্পরকে হত্যা করো না, নিশ্চয় আল্লাহ তোমাদের প্রতি কৃপাময়।

وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ط وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرًا (٣٠)

৩০. যে ব্যক্তি সীমালঙ্ঘন ক'রে অন্যায়ভাবে এটা করবে, তাকে আমি অতিসত্বর অগ্নিতে দগ্ধ করব, এটা আল্লাহ্‌র পক্ষে সহজ।

إِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا كَرِيْمًا (٣١)

৩১. যদি তোমরা নিষিদ্ধ কাজের বড় বড় গুলো হতে বিরত থাক, তাহলে আমি তোমাদের ছোট ছোট পাপগুলো ক্ষমা ক'রে দেব এবং তোমাদেরকে এক মহামর্যাদার স্থানে প্রবেশ করাব।

২৯। আবূ উমামাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেনঃ যে ব্যক্তি কোন মুসলিমের সম্পদ আত্মসাৎ করার উদ্দেশে মিথ্যা- শপথ করে, আল্লাহ্ তার জন্যে জাহান্নাম ওয়াজিব ও জান্নাত হারাম করেছেন। এক ব্যক্তি তাঁকে জিজ্ঞেস করলো, হে আল্লাহর রসূল! যদিও তা ক্ষুদ্র জিনিস হয়? তিনি বললেনঃ যদি তা বাবলা বা দাঁতন গাছের একটি শাখাও (ডাল) হয় তবুও। [মুসলিম ২৬১, তিরমিযী ২৭৫৭, নাসায়ী ৫০৪০-৫০৪২, আবূ দাউদ ৫৩, ইবনু মাজাহ ২৯৩, আহমাদ ২৪৫৩৯]

৩১। 'আবদুল্লাহ ইবনু 'আম্র (রাঃ) বর্ণনা করেন, জনৈক বেদুঈন নাবী (ﷺ) -এর নিকটে আসল এবং বলল, হে আল্লাহর নাবী! কাবীরা (বৃহত্তম) গুনাহসমূহ কি? নাবী (ﷺ) বললেন, আল্লাহর সাথে অন্য কাউকে শারীক করা।

وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (٣٢)

৩২. তোমরা তা কামনা করো না যা দ্বারা আল্লাহ তোমাদের কাউকে কারো উপর মর্যাদা প্রদান করেছেন। পুরুষেরা তাদের কৃতকার্যের অংশ পাবে, নারীরাও তাদের কৃতকর্মের অংশ পাবে এবং তোমরা আল্লাহ্‌র নিকট তাঁর অনুগ্রহ কামনা কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞ।

وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ وَالْأَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ع (٣٣)

৩৩. মাতা-পিতা ও স্বজনদের রেখে যাওয়া সম্পদে আমি প্রত্যেক উত্তরাধিকারের অংশ স্থির করেছি এবং যাদের সঙ্গে তোমাদের অঙ্গীকার রয়েছে, কাজেই তাদেরকে তাদের অংশ প্রদান কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্ববিষয়ে প্রত্যক্ষদর্শী।

اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ وَّبِمَآ أَنْفَقُوْا مِنْ أَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي

৩৪. পুরুষগণ নারীদের উপর কর্তৃত্বশীল এ কারণে যে, আল্লাহ তাদের এককে অন্যের উপর মর্যাদা প্রদান করেছেন, আর এজন্য যে, পুরুষেরা স্বীয় ধন-সম্পদ হতে ব্যয় করে। ফলে পুণ্যবান স্ত্রীরা (আল্লাহ ও স্বামীর প্রতি) অনুগতা থাকে এবং পুরুষের অনুপস্থিতিতে তারা তা (অর্থাৎ তাদের সতীত্ব ও স্বামীর সম্পদ) সংরক্ষণ করে যা আল্লাহ সংরক্ষণ করতে আদেশ দিয়েছেন। যদি তাদের মধ্যে অবাধ্যতার সম্ভাবনা দেখতে পাও, তাদেরকে সদুপদেশ দাও

বেদুঈন (পুনরায়) বলল, এছাড়া আর কি? নাবী (ﷺ) বললেনঃ কারো পিতা-মাতার প্রতি কর্তব্য পালনে অবহেলা করা। বেদুঈন (আবার) বলল, এছাড়া আর কি? নাবী (ﷺ) বলেনঃ ক্ষমার অযোগ্য মিথ্যা কসম গ্রহণ করা। বেদুঈন বলল, ক্ষমার অযোগ্য মিথ্যা কসম কি? নাবী (ﷺ) বললেন, এমন মিথ্যা কসম যা দ্বারা কেউ কোন মুসলিমকে তার সম্পত্তি থেকে (অন্যায়ভাবে) বঞ্চিত করে। −বুখারী ৬৪৪০ [মুসলিম ১০৩৪, ১০৩৫; তিরমিযী ২৪৬৩, নাসায়ী ২৫৩১, ২৫৩৪, ২৫৪৩, ২৫৪৪, ২৬০১-২৬০৩; আবূ দাউদ ১৬৬৭, আহমাদ ৭১১৫, ৭৩০১; দারিমী ১৬৫০, ১৬৫১, ১৬৫৩, ২৭৫০]

৩৩। ইবনু 'আব্বাস (رضي الله عنهما) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ হচ্ছে বংশীয় উত্তরাধিকারী: وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ أَيْمَانُكُمْ হচ্ছে মুহাজিরগণ যখন মাদীনায় এসেছিলেন তখন তারা আনসারদের উত্তরাধিকারী হতেন। আত্মীয়তার জন্য নয় বরং রসূলুল্লাহ (ﷺ) কর্তৃক তাঁদের মধ্যে ভ্রাতৃত্ব স্থাপনের কারণে। যখন وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ অবতীর্ণ হল, তখন এ হুকুম রহিত হয়ে গেল। তারপর বললেন, যাদের সঙ্গে তোমরা চুক্তি করে থাক সাহায্য-সহযোগিতা ও পরস্পরের উপকার করার। আগের উত্তরাধিকার ব্যবস্থা রহিত হল এবং এদের জন্য ওয়াসীয়াত বৈধ করা হল। হাদীসটি আবূ উসামাহ ইদরীসের কাছে থেকে এবং ইদরীস ত্বলহার নিকট হতে শুনেছেন। −বুখারী ৪৫৮০ [২২৯২; আবূ দাউদ ২৯২১, ২৯২২]

الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ج فَإِنْ أَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ سَبِيْلًا ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيًّا كَبِيْرًا (٣٤)

এবং তাদের সাথে শয্যা বন্ধ কর এবং তাদেরকে (সঙ্গতভাবে) প্রহার কর, অতঃপর যদি তারা তোমাদের অনুগত হয়, তাহলে তাদের উপর নির্যাতনের বাহানা খোঁজ করো না, নিশ্চয় আল্লাহ সর্বোচ্চ, সর্বশ্রেষ্ঠ।

وَإِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا حَكَمًا مِّنْ أَهْلِهِ وَحَكَمًا مِّنْ أَهْلِهَا ج إِنْ يُّرِيْدَآ إِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ اللهُ بَيْنَهُمَا ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيْمًا خَبِيْرًا (٣٥)

৩৫. যদি তোমরা তাদের মধ্যে অনৈক্যের আশংকা কর, তবে স্বামীর আত্মীয়-স্বজন হতে একজন এবং স্ত্রীর আত্মীয়-স্বজন হতে একজন সালিস নিযুক্ত কর। যদি উভয়ে মীমাংসা করিয়ে দেয়ার ইচ্ছে করে, তবে আল্লাহ উভয়ের মধ্যে নিষ্পত্তির ব্যবস্থা করবেন, নিশ্চয় আল্লাহ সব কিছু জানেন, সকল কিছুর খবর রাখেন।

وَاعْبُدُوا اللهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا وَّبِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ لا وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ ط إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرًا لا (٣٦)

৩৬. তোমরা আল্লাহ্র 'ইবাদাত কর, কিছুকেই তাঁর শরীক করো না এবং মাতা-পিতা, আত্মীয়-স্বজন, ইয়াতীম অভাবগ্রস্ত, নিকট প্রতিবেশী, দূর প্রতিবেশী, সাথী, মুসাফির এবং তোমাদের আয়ত্তাধীন দাস-দাসীদের সঙ্গে সদ্ব্যবহার কর, নিশ্চয়ই আল্লাহ ঐ লোককে ভালবাসেন না, যে অহংকারী, দাম্ভিক।

الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰهُمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهٖ ط وَأَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ج (٣٧)

৩৭. যারা কৃপণতা করে অধিকন্তু লোকেদেরকেও কার্পণ্য করার আদেশ দেয় এবং আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে যা দিয়েছেন তা গোপন করে, (ঐসব) কাফিরদের জন্য আমি লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

৩৪। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেন, নারীদের সাথে উত্তম ও উপদেশপূর্ণ কথা বলো। কেননা, নারী জাতিকে পাঁজরের হাড় থেকে সৃষ্টি করা হয়েছে। আর পাঁজরের হাড়ের মধ্যে একেবারে উপরের হাড়টি অধিক বাঁকা। যদি তা সোজা করতে যাও, ভেঙ্গে যাবে। আর যদি ছেড়ে দাও, তবে সবসময় বাঁকাই থাকবে। সুতরাং তোমরা নারীদের সাথে উপদেশপূর্ণ কথাই বলবে। -বুখারী ৩৩৩১ [মুসলিম ৪৭, ১৪৬৮; তিরমিযী ১১৮৮, আহমাদ ৭৫৭১, ৯২৪০; দারিমী ২২২২]

৩৬। ইবনু 'উমার (রাঃ) বর্ণনা করেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেন, জিবরাঈল (আঃ) সব সময়ই প্রতিবেশীর হক্ব আদায়ের ব্যাপারে আমাকে এত বেশী ওয়াসীয়াত করেন যে, শেষ পর্যন্ত আমার ধারণা হয়ে গেল, অনতিবিলম্বে তিনি প্রতিবেশীকে ওয়ারিশ বানিয়ে দেবেন। -বুখারী ৬০১৫ [মুসলিম ২৬২৫, আহমাদ ৫৫৫২]

وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْأٰخِرِ ط وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا فَسَآءَ قَرِيْنًا (٣٨)

৩৮. (আর সেসব লোককেও আল্লাহ পছন্দ করেন না) যারা মানুষকে দেখানোর জন্য নিজেদের ধন-সম্পদ খরচ করে এবং আল্লাহ ও আখিরাত দিবসের উপর বিশ্বাস রাখে না। শয়ত্বান কারো সঙ্গী হলে সে সঙ্গী কতই না জঘন্য!

وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْأٰخِرِ وَأَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ط وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا (٣٩)

৩৯. তাদের কী ক্ষতি হত যদি তারা আল্লাহ ও আখিরাত দিবসের উপর ঈমান আনত, আর আল্লাহ তাদেরকে যে রিয্ক দিয়েছেন তাথেকে ব্যয় করত, বস্তুতঃ আল্লাহ তাদের বিষয় খুব জ্ঞাত আছেন।

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ج وَإِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَيُؤْتِ مِنْ لَّدُنْهُ أَجْرًا عَظِيْمًا (٤٠)

৪০. আল্লাহ অণু পরিমাণও যুল্ম করেন না, আর কোন পুণ্য কাজ হলে তাকে তিনি দ্বিগুণ করেন এবং নিজের নিকট হতেও বিরাট পুরস্কার দান করেন।

৪০। আবূ সা'ঈদ খুদ্রী (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা বললাম, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমরা ক্বিয়ামাতের দিন আমাদের প্রতিপালকের দর্শন লাভ করব কি? তিনি বললেনঃ মেঘমুক্ত আকাশে তোমরা সূর্য দেখতে কোন বাধাপ্রাপ্ত হও কি? আমরা বললাম, না। তিনি বললেনঃ সেদিন তোমরাও তোমাদের প্রতিপালককে দেখতে বাধাপ্রাপ্ত হবে না। এতটুকু ব্যতীত যতটুকু সূর্য দেখার সময় পেয়ে থাক। সেদিন একজন ঘোষণাকারী ঘোষণা করবেন, যারা যে জিনিসের 'ইবাদাত করতে, তারা সে জিনিসের কাছে গমন কর। এরপর যারা ক্রুশধারী ছিল, তারা যাবে তাদের ক্রুশের কাছে। মূর্তিপূজারীরা যাবে তাদের মূর্তির সঙ্গে। সকলেই তাদের উপাস্যের সঙ্গে যাবে। অবশিষ্ট থাকবে একমাত্র আল্লাহ্‌র 'ইবাদাতকারীরা। নেক্কার ও গুনাহ্‌গার সবাই। এবং আহলে কিতাবের কিছু সংখ্যক লোকও থাকবে। অতঃপর জাহান্নামকে আনা হবে। সেটি তখন থাকবে মরীচিকার মত। ইয়াহূদীদেরকে সম্বোধন করে জিজ্ঞেস করা হবে, তোমরা কিসের 'ইবাদাত করতে? তারা উত্তর করবে, আমরা আল্লাহ্‌র পুত্র উযায়র (আঃ)-এর 'ইবাদাত করতাম। তখন তাদেরকে বলা হবে, তোমরা মিথ্যা বলছ। কারণ আল্লাহ্‌র কোন স্ত্রীও নেই এবং নেই তাঁর কোন সন্তান। এখন তোমরা কি চাও? তারা বলবে, আমরা চাই, আমাদেরকে পানি পান করান। তখন তাদেরকে বলা হবে, তোমরা পানি পান কর। এরপর তারা জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হতে থাকবে। তারপর নাসারাদেরকে বলা হবে, তোমরা কিসের 'ইবাদাত করতে? তারা বলে উঠবে, আমরা আল্লাহ্‌র পুত্র মসীহের 'ইবাদাত করতাম। তখন তাদেরকে বলা হবে, তোমরা মিথ্যা বলছ। আল্লাহ্‌র কোন স্ত্রীও ছিল না, সন্তানও ছিল না। এখন তোমরা কি চাও? তারা বলবে, আমাদের ইচ্ছা আপনি আমাদেরকে পানি পান করতে দিন। তাদেরকে উত্তর দেয়া হবে, তোমরা পান কর। তারপর তারা জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হতে থাকবে। পরিশেষে অবশিষ্ট থাকবে একমাত্র আল্লাহ্‌র 'ইবাদাতকারীগণ। তাদের নেক্কার ও গুনাহ্‌গার সবাই। তাদেরকে লক্ষ্য করে বলা হবে, কোন্ জিনিস তোমাদেরকে আটকে রেখেছে? অথচ অন্যরা তো চলে গিয়েছে। তারা বলবে, আমরা তো সেদিন তাদের থেকে পৃথক রয়েছি, সেদিন আজকের অপেক্ষা তাদের অধিক প্রয়োজন ছিল। আমরা একজন ঘোষণাকারীর এ ঘোষণাটি দিতে শুনেছি যে, যারা যাদের 'ইবাদাত করত তারা যেন ওদের সঙ্গে যায়। আমরা প্রতীক্ষা করছি আমাদের প্রতিপালকের জন্য। নাবী (ﷺ) বলেনঃ এরপর মহাপরাক্রমশালী আল্লাহ্‌ তাদের কাছে আগমন করবেন। আবার তিনি সে আকৃতিতে আগমন করবেন না, যেটিতে তাঁকে প্রথমবার ঈমানদারগণ দেখেছিলেন। এসে তিনি ঘোষণা দেবেন– আমি তোমাদের প্রতিপালক,

৪১. সুতরাং তখন কী অবস্থা দাঁড়াবে, যখন আমি প্রত্যেক উম্মাতের মধ্য হতে এক একজনকে সাক্ষী উপস্থিত করব এবং তোমাকেও হাজির করব তাদের উপর সাক্ষ্য দানের জন্য।	فَكَيْفَ إِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَاۤءِ شَهِيْدًا ط‍س(٤١)
৪২. যারা অস্বীকার করেছে এবং রসূল-এর নাফরমানী করেছে, তারা সে দিন কামনা করবে,	يَوْمَئِذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا

সবাই তখন বলে উঠবে আপনিই আমাদের প্রতিপালক। আর সেদিন নাবীগণ ছাড়া তাঁর সঙ্গে কেউ কথা বলতে পারবে না। আল্লাহ্ তাদেরকে বলবেন, তোমাদের এবং তাঁর মাঝখানে পরিচায়ক কোন আলামত আছে কি? তারা বলবেন, পায়ের নলা। তখন পায়ের নলা খুলে দেয়া হবে। এই দেখে ঈমানদারগণ সবাই সাজদাহ্য় পতিত হবে। বাকি থাকবে তারা, যারা লোক-দেখানো এবং লোক-শোনানো সাজদাহ্ করেছিল। তবে তারা সাজদাহ্র মনোবৃত্তি নিয়ে সাজদাহ্ করার জন্য যাবে, কিন্তু তাদের মেরুদণ্ড একটি তক্তার মত শক্ত হয়ে যাবে। এমন সময় পুল স্থাপন করা হবে জাহান্নামের উপর। সহাবীগণ আরয করলেন, সে পুলটি কী ধরনের হবে হে আল্লাহ্র রসূল? তিনি বললেনঃ দুর্গম পিচ্ছিল জায়গা। এর ওপর আংটা ও হুক থাকবে, শক্ত চওড়া উল্টো কাঁটা বিশিষ্ট হবে, যা নাজ্দ দেশের সাদান বৃক্ষের কাঁটার মত হবে। সে পুলের উপর দিয়ে ঈমানদারগণের কেউ অতিক্রম করবে চোখের পলকের মতো, কেউ বিজলির মতো, কেউ বা বাতাসের মতো আবার কেউ তীব্রগামী ঘোড়া ও সওয়ারের মতো। তবে মুক্তিপ্রাপ্তগণ কেউ নিরাপদে চলে আসবেন, আবার কেউ জাহান্নামের আগুনে ক্ষতবিক্ষত হয়ে যাবে। একবারে শেষে পার হবে যে ব্যক্তিটি, সে হেঁচড়িয়ে কোন রকমে পার হয়ে আসবে। এখন তোমরা হকের ব্যাপারে আমার অপেক্ষা অধিক কঠোর নও, যতটুকু সেদিন ঈমানদারগণ আল্লাহ্র সমীপে হয়ে থাকবে, যা তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট হয়ে গেছে। যখন ঈমানদারগণ এ দৃশ্যটি অবলোকন করবে যে, তাদের ভাইদেরকে রেখে একমাত্র তারাই নাজাত পেয়েছে, তখন তারা বলবে, হে আমাদের রব! আমাদের সেসব ভাই কোথায়, যারা আমাদের সঙ্গে নামায আদায় করত, সওম পালন করত, নেক কাজ করত? তখন আল্লাহ্ তা'আলা তাদেরকে বলবেন, তোমরা যাও, যাদের অন্তরে এক দীনার বরাবর ঈমান পাবে, তাদেরকে জাহান্নাম থেকে বের করে আন। আল্লাহ্ তা'আলা তাদের মুখমণ্ডল জাহান্নামের ওপর হারাম করে দিয়েছেন। এদের কেউ কেউ দু'পা ও দু'পায়ের নলার অধিক পর্যন্ত জাহান্নামের মধ্যে থাকবে। তারা যাদেরকে চিনতে পারে, তাদেরকে বের করবে। তারপর এরা আবার প্রত্যাবর্তন করবে। আল্লাহ্ আবার তাদেরকে বলবেন, তোমরা যাও, যাদের অন্তরে অর্ধ দীনার পরিমাণ ঈমান পাবে, তাদেরকে বের করে নিয়ে আসবে। তারা গিয়ে তাদেরকেই বের করে নিয়ে আসবে, যাদেরকে তারা চিনতে পারবে। তারপর আবার প্রত্যাবর্তন করবে। আল্লাহ্ তাদেরকে আবার বলবেন, তোমরা যাও, যাদের অন্তরে অণু পরিমাণ ঈমান পাবে, তাদেরকে বের করে নিয়ে আসবে। তারা যাদেরকে চিনতে পাবে তাদেরকে বের করে নিয়ে আসবে। বর্ণনাকারী আবূ সা'ঈদ খুদ্রী (ﷺ) বলেন, তোমরা যদি আমাকে বিশ্বাস না কর, তাহলে আল্লাহ্র এ বাণীটি পড়ঃ "আল্লাহ্ অণু পরিমাণও যুল্ম করেন না এবং অণু পরিমাণ পুণ্য কাজ হলেও আল্লাহ্ তাকে দ্বিগুণ করেন।" ....হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৭৪৩৯ [২২; মুসলিম ১৮২-১৮৫, ১৯৪; তিরমিযী ২৪৩৪, ৩১৮৪; নাসায়ী ১১৪০, ইবনু মাজাহ ৪২৮০, ৪৩০৯; আহমাদ ৭৬৬০, ১০৬৩৩, দারিমী ২৮০১, ২৮০৩, ২৮১৭]

৪১। 'আম্র ইবনু মুররাহ্ হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) আমাকে বললেন, আমার কাছে কুরআন পাঠ কর। আমি বললাম, আমি আপনার কাছে পাঠ করব? অথচ আপনার কাছেই তা অবতীর্ণ হয়েছে। তিনি বললেন, অন্যের মুখ থেকে শুনতে আমি পছন্দ করি। এরপর আমি তাঁর নিকট সূরাহ 'নিসা' পাঠ করলাম, যখন আমি এ আয়াত পর্যন্ত পাঠ করলাম, তিনি বললেন, থাম, থাম, তখন তাঁর দু'চোখ হতে টপ টপ করে অশ্রু ঝরছিল।
–বুখারী ৪৫৮২ [৫০৪৯, ৫০৫০, ৫০৫৫, ৫০৫৬; মুসলিম ৮০০, তিরমিযী ৩০২৪, ৩০২৫; আবূ দাউদ ৩৬৬৮, ইবনু মাজাহ ৪১৯৪, আহমাদ ৩৫৪০, ৩৫৯৫]

الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْأَرْضُ ط وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا ع (٤٢)

হায়! তারা যদি মাটির সাথে মিশে যেত এবং তারা আল্লাহ হতে কোন কথাই লুকিয়ে রাখতে পারবে না।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا إِلَّا عَابِرِيْ سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ط وَإِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰى أَوْ عَلٰى سَفَرٍ أَوْ جَآءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ أَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيْكُمْ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا (٤٣)

৪৩. হে ঈমানদারগণ! তোমরা নেশাগ্রস্ত অবস্থায় সলাতের নিকটবর্তী হয়ো না যতক্ষণ না তোমরা যা বল, তা বুঝতে পার এবং অপবিত্র অবস্থায়ও (সলাতের কাছে যেও না) গোসল না করা পর্যন্ত (মসজিদে) পথ অতিক্রম করা ব্যতীত; এবং যদি তোমরা পীড়িত হও কিংবা সফরে থাক; অথবা তোমাদের কেউ শৌচস্থান হতে আসে অথবা তোমরা স্ত্রী সঙ্গম করে থাক, অতঃপর পানি না পাও, তবে পবিত্র মাটি দিয়ে তায়াম্মুম কর, আর তা দিয়ে তোমাদের মুখমণ্ডল ও হস্তদ্বয় মাসহ কর; আল্লাহ নিশ্চয়ই পাপ মোচনকারী, ক্ষমাশীল।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ أُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ أَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ ط (٤٤)

৪৪. তুমি কি সেই লোকেদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যাদেরকে কিতাবের অংশ দেয়া হয়েছিল? তারা নিজেরা পথভ্রষ্টতার সওদা করে আর তারা চায় তোমরাও পথভ্রষ্ট হয়ে যাও।

وَاللّٰهُ أَعْلَمُ بِأَعْدَآئِكُمْ ط وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَلِيًّا وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا (٤٥)

৪৫. আল্লাহ তোমাদের শত্রুদেরকে ভালভাবে জানেন, অভিভাবক হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট এবং সাহায্যকারী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট।

مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ

৪৬. ইয়াহূদীদের কতক লোক কথাকে প্রকৃত স্থান থেকে সরিয়ে বিকৃত করে এবং বলে,

---

৪৩। ‘আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমার কাছ থেকে আসমা (রাঃ)-এর একটি হার হারিয়ে গিয়েছিল। সেটা খোঁজার জন্য রসূলুল্লাহ (ﷺ) কয়েকজন লোক পাঠিয়েছিলেন। তখন সলাতের সময় হল, তাদের কাছে পানি ছিল না। তারা উযূর অবস্থায় ছিলেন না, আবার পানিও পেলেন না। এরপর বিনা উযূতে নামায আদায় করে ফেললেন। তখন আল্লাহ তা‘আলা তায়াম্মুমের নিয়মবিধি অবতীর্ণ করলেন। –বুখারী ৪৫৮৩ [৩৩৪; মুসলিম ৩৬৭, নাসায়ী ৩১০, ৩৩২; আবূ দাঊদ ৩১৭, ইবনু মাজাহ ৫৬৮, আহমাদ ২৩৬৭৮, ২৪৯২৭; মালিক ১২২, দারিমী ৭৪৬]

وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا لَيًّا بِأَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ط وَلَوْ أَنَّهُمْ قَالُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ لا وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا (٤٦)

'আমরা শুনলাম ও অমান্য করলাম' এবং শুন না শোনার মত আর নিজেদের জিহ্বা কুঞ্চিত ক'রে এবং দ্বীনের প্রতি দোষারোপ ক'রে বলে, 'রাইনা' (আমাদের রাখাল)। কিন্তু তারা যদি বলত 'আমরা শুনলাম ও মেনে নিলাম, শোন এবং আমাদের প্রতি লক্ষ্য কর, তবে তা তাদের জন্য উত্তম এবং সঙ্গত হত, কিন্তু তাদের কুফরীর কারণে আল্লাহ তাদেরকে লা'নত করেছেন, তারা স্বল্পসংখ্যক ব্যতীত ঈমান আনবে না।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوْا بِمَا نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ نَّطْمِسَ وُجُوْهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى أَدْبَارِهَآ أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ أَصْحٰبَ السَّبْتِ ط وَكَانَ أَمْرُ اللهِ مَفْعُوْلًا (٤٧)

৪৭. ওহে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে, আমি যা নাযিল করেছি, তার উপর তোমরা ঈমান আন, যা তোমাদের কাছে যা আছে তার সমর্থক আমি তোমাদের মুখগুলোকে বিকৃত করে সেগুলোকে পিছনের দিকে ফিরিয়ে দেয়ার পূর্বে (ঈমান আন), কিংবা শনিবারওয়ালাদেরকে যেমন অভিসম্পাত করেছিলাম, এদেরকেও তেমনি অভিসম্পাত করার পূর্বে। বস্তুতঃ আল্লাহ্র হুকুম কার্যকরী হয়েই থাকে।

إِنَّ اللهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ج وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى إِثْمًا عَظِيْمًا (٤٨)

৪৮. নিশ্চয় আল্লাহ্ তাঁর সাথে শরীক করা ক্ষমা করবেন না। এটা ছাড়া অন্য সব যাকে ইচ্ছে মাফ করবেন এবং যে আল্লাহ্র সাথে শরীক করল, সে এক মহা অপবাদ আরোপ করল।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ أَنْفُسَهُمْ ط بَلِ اللهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا (٤٩)

৪৯. তুমি কি তাদেরকে দেখনি, যারা নিজেদেরকে পবিত্র ব'লে দাবী করে? বরং আল্লাহ্ই যাকে ইচ্ছে পবিত্র করেন। (কেউ প্রকৃতই পবিত্রতা অর্জন করলে তা অগ্রাহ্য করতঃ) তাদের প্রতি সামান্য পরিমাণও অন্যায় করা হবে না।

أُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ ط وَكَفٰى بِهٖٓ إِثْمًا مُّبِيْنًا ع (٥٠)

৫০. দেখ, এরা আল্লাহ্র সম্বন্ধে কেমন মিথ্যে রচনা করে, সুস্পষ্ট গুনাহের জন্য এটাই যথেষ্ট।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ أُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ الْكِتٰبِ يُؤْمِنُوْنَ

৫১. যারা কিতাবের জ্ঞানের একাংশ প্রদত্ত হয়েছে,

بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوْتِ وَيَقُوْلُوْنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا هٰٓؤُلَآءِ أَهْدٰى مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا سَبِيْلًا (٥١)

সেই লোকদের প্রতি তুমি কি লক্ষ্য করনি, তারা অমূলক যাদু, প্রতিমা ও তাগূতের প্রতি বিশ্বাস করে এবং কাফিরদের সম্বন্ধে বলে যে তারা মু'মিনগণের তুলনায় অধিক সঠিক পথে রয়েছে।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللهُ ط وَمَنْ يَّلْعَنِ اللهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيْرًا ط (٥٢)

৫২. এরা সেই লোক, যাদেরকে আল্লাহ অভিশাপ দিয়েছেন এবং যাকে আল্লাহ অভিশাপ দেন, তুমি কক্ষনো তার সাহায্যকারী পাবে না।

أَمْ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا يُؤْتُوْنَ النَّاسَ نَقِيْرًا لا (٥٣)

৫৩. তাদের কি শাসন ক্ষমতায় কোন অংশ আছে? তা থাকলে তারা লোকেদেরকে তিল পরিমাণও দিত না।

أَمْ يَحْسُدُوْنَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتَاهُمُ اللهُ مِنْ فَضْلِهٖ ج فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ إِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ مُّلْكًا عَظِيْمًا (٥٤)

৫৪. কিংবা আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে লোকেদেরকে যেসব নি'মাত দান করেছেন, সেজন্য কি এরা তাদের হিংসা করে, আমি ইব্রাহীমের বংশধরদেরকেও তো কিতাব ও হিকমাত দিয়েছিলাম, তাদেরকে সুবিশাল রাজ্যও প্রদান করেছিলাম।

فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ صَدَّ عَنْهُ ط وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا (٥٥)

৫৫. অতঃপর তাদের মধ্যে কেউ কেউ তার উপর ঈমান আনল এবং তাদের মধ্যে কেউ কেউ তার থেকে মুখ ফিরিয়ে রাখল, (দগ্ধ করার জন্য) প্রজ্জ্বলিত জাহান্নামই যথেষ্ট।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ نُصْلِيْهِمْ نَارًا ط كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا الْعَذَابَ ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (٥٦)

৫৬. যারা আমার আয়াতসমূহকে প্রত্যাখ্যান করে নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে আগুনে দগ্ধ করব, যখন তাদের গায়ের চামড়া দগ্ধ হবে, আমি সেই চামড়াকে নতুন চামড়া দ্বারা বদলে দেব যেন তারা (শাস্তির পর) শাস্তি ভোগ করে। আল্লাহ নিশ্চয়ই পরাক্রমশালী ও বিজ্ঞানময়।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ط لَهُمْ فِيْهَآ أَزْوَاجٌ

৫৭. যারা ঈমান এনেছে এবং সৎকাজ করেছে নিশ্চয়ই আমি তাদেরকে জান্নাতে দাখিল করব যার নিম্নে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরবাসী হবে, তাতে তাদের জন্য থাকবে পবিত্র স্ত্রী এবং আমি তাদেরকে চির স্নিগ্ধ ঘন ছায়ায় দাখিল করব।

مُّطَهَّرَةٌ ز وَّنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيْلًا (٥٧)

৫৮. নিশ্চয়ই আল্লাহ তোমাদেরকে নির্দেশ দিচ্ছেন, হকদারদের হক তাদের কাছে পৌঁছে দিতে। তোমরা যখন মানুষের মাঝে বিচার করবে তখন ন্যায়পরায়ণতার সঙ্গে বিচার করবে। আল্লাহ তোমাদেরকে কত উত্তম উপদেশই না দিচ্ছেন; নিশ্চয়ই আল্লাহ সবকিছু শোনেন, সবকিছু দেখেন।

إِنَّ اللّٰهَ يَأْمُرُكُمْ أَنْ تُؤَدُّوا الْأَمٰنٰتِ إِلٰٓى أَهْلِهَا لا وَإِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ أَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ط إِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًاۢ بَصِيْرًا (٥٨)

৫৯. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আল্লাহ্‌র অনুগত হও এবং রসূলের অনুগত হও এবং তোমাদের মধ্যকার কর্তৃস্থানীয় ব্যক্তিগণের; যদি কোন বিষয়ে তোমাদের মধ্যে মতভেদ ঘটে, তাহলে সেই বিষয়কে আল্লাহ এবং রসূলের (নির্দেশের) দিকে ফিরিয়ে দাও যদি তোমরা আল্লাহ এবং আখিরাত দিবসের প্রতি ঈমান এনে থাক; এটাই উত্তম এবং সুন্দরতম মর্মকথা।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ ج فَإِنْ تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ إِلَى اللّٰهِ وَالرَّسُوْلِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّأَحْسَنُ تَأْوِيْلًا ع (٥٩)

৬০. তুমি কি সেই লোকেদের প্রতি লক্ষ্য করনি, যারা তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ কিতাবের এবং তোমার আগে অবতীর্ণ কিতাবের উপর ঈমান এনেছে বলে দাবী করে, কিন্তু তাগূতের কাছে বিচারপ্রার্থী হতে চায়, অথচ তাকে প্রত্যাখ্যান করার জন্য তাদেরকে নির্দেশ দেয়া হয়েছে, শয়ত্বান তাদেরকে পথভ্রষ্ট করে বহুদূরে নিয়ে যেতে চায়।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ أَنَّهُمْ اٰمَنُوْا بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ أَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا إِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ أُمِرُوْٓا أَنْ يَّكْفُرُوْا بِهٖ ط وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ أَنْ يُّضِلَّهُمْ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا (٦٠)

৬১. যখন তাদেরকে বলা হয়– তোমরা আল্লাহ্‌র অবতীর্ণ কিতাবের এবং রসূলের দিকে এসো, তখন তুমি ঐ মুনাফিকদেরকে দেখবে, তারা তোমা হতে ঘৃণা ভরে মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছে।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلٰى مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ وَإِلَى الرَّسُوْلِ رَأَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا ج (٦١)

৫৯। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, أَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَأُولِي الْأَمْرِ مِنْكُمْ আয়াতটি অবতীর্ণ হয়েছে 'আবদুল্লাহ ইবনু হুযাফাহ ইবনু ক্বায়স ইবনু আদী সম্পর্কে যখন তাকে নাবী (ﷺ) একটি সৈন্য দলের দলনায়ক করে প্রেরণ করেছিলেন। –বুখারী ৪৫৮৪ [মুসলিম ১৮৩৪, তিরমিযী ১৬৭২, নাসায়ী ৪১৯৪, আবূ দাউদ ২৬২৪]

فَكَيْفَ إِذَآ أَصَابَتْهُمْ مُّصِيبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيهِمْ ثُمَّ جَآءُوكَ يَحْلِفُونَ ۖۗ بِاللّٰهِ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّآ إِحْسَانًا وَّتَوْفِيقًا (٦٢)

৬২. যখন তাদের কৃতকার্যের জন্য তাদের উপর বিপদ আপতিত হবে, তখন কী অবস্থা হবে? তখন তারা আল্লাহ্‌র নামে শপথ করতে করতে তোমার কাছে এসে বলবে, 'আমরা সদ্ভাব ও সম্প্রীতি ছাড়া অন্য কিছু চাইনি।'

أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِي قُلُوبِهِمْ ۗ فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ لَّهُمْ فِيٓ أَنْفُسِهِمْ قَوْلًا ۢبَلِيغًا (٦٣)

৬৩. তারা সেই লোক, যাদের অন্তরস্থিত বিষয়ে আল্লাহ পরিজ্ঞাত, কাজেই তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর, তাদেরকে সদুপদেশ দান কর, আর তাদেরকে এমন কথা বল যা তাদের অন্তর স্পর্শ করে।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُولٍ إِلَّا لِيُطَاعَ بِإِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ أَنَّهُمْ إِذْ ظَّلَمُوٓا أَنْفُسَهُمْ جَآءُوكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُولُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ تَوَّابًا رَّحِيمًا (٦٤)

৬৪. আমি রসূল এ উদ্দেশেই প্রেরণ করেছি, যেন আল্লাহ্‌র নির্দেশে তাঁর আনুগত্য করা হয়। যখন তারা নিজেদের উপর যুল্‌ম করেছিল, তখন যদি তোমার নিকট চলে আসত আর আল্লাহ্‌র কাছে ক্ষমাপ্রার্থী হত এবং রসূলও তাদের পক্ষে ক্ষমা চাইত, তাহলে তারা আল্লাহ্‌কে নিরতিশয় তাওবাহ কবূলকারী ও পরম দয়ালুরূপে পেত।

فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُونَ حَتّٰى يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوا فِيٓ أَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوا تَسْلِيمًا (٦٥)

৬৫. কিন্তু না, তোমার প্রতিপালকের শপথ! তারা মু'মিন হবে না, যে পর্যন্ত না তারা তাদের বিবাদ-বিসম্বাদের মীমাংসার ভার তোমার উপর ন্যস্ত না করে, অতঃপর তোমার ফয়সালার ব্যাপারে তাদের মনে কিছু মাত্র কুণ্ঠাবোধ না থাকে, আর তারা তার সামনে নিজেদেরকে পূর্ণরূপে সমর্পণ করে।

৬৫। 'উরওয়াহ্ হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, হাররা বা মাদীনাহ্‌র কঙ্করময় ভূমিতে একটি পানির নালাকে কেন্দ্র করে একজন আনসার যুবায়র (رضي الله عنه)-এর সাথে ঝগড়া করেছিলেন। নাবী (ﷺ) বললেন, হে যুবায়র! প্রথমত তুমি তোমার জমিতে পানি দাও, তারপর তুমি প্রতিবেশীর জমিতে পানি ছেড়ে দেবে। আনসারী বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! সে আপনার ফুফাত ভাই, তাই এই ফয়সালা। এতে রসূল (ﷺ) -এর চেহারা রক্তিম হয়ে গেল। তারপর তিনি বললেন, হে যুবায়র! তুমি তোমার জমিতে পানি দাও। তারপর সেচ নালা ভর্তি করে পানি রাখো, অতঃপর তোমার প্রতিবেশিকে পানি দাও। আনসারী যখন রসূল (ﷺ) -কে রাগান্বিত করলেন তখন তিনি তার হক পুরোপুরি যুবায়র (رضي الله عنه)-কে প্রদানের জন্য স্পষ্ট নির্দেশ দিলেন। তাদেরকে প্রথমে নাবী (ﷺ) এমন একটি নির্দেশ দিয়েছিলেন যাতে প্রশস্ততা ছিল। যুবায়র (رضي الله عنه) বলেন, আয়াতটি এ উপলক্ষে অবতীর্ণ হয়েছে বলে আমি মনে করি। –বুখারী ৪৫৮৫ [২৩৬০; মুসলিম ২৩৫৭, তিরমিযী ১৩৬৩, ৩০২৭; নাসায়ী ৫৪০৭, ৫৪১৬; আবূ দাঊদ ৩৬৩৭, ইবনু মাজাহ ১৫, ২৪৮০; আহমাদ ১৪২২]

وَلَوْ أَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ أَنِ اقْتُلُوْٓا أَنْفُسَكُمْ أَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ مَّا فَعَلُوْهُ إِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ط وَلَوْ أَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَشَدَّ تَثْبِيْتًا ۙ (٦٦)

৬৬. যদি আমি তাদের প্রতি ফরয করে দিতাম যে তোমরা নিজেদেরকে হত্যা কর, কিংবা নিজেদের দেশ থেকে বেরিয়ে যাও, তবে স্বল্পসংখ্যক লোক ছাড়া কেউ তা পালন করত না, যা করতে তাদেরকে উপদেশ দেয়া হয় তা যদি তারা পালন করত, তবে তা তাদের পক্ষে কল্যাণকর হত এবং দৃঢ় চিত্ততার কারণ হত।

وَّإِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ أَجْرًا عَظِيْمًا ۙ (٦٧)

৬৭. সে অবস্থায় অবশ্যই আমি তাদেরকে আমার নিকট হতে মহাপুরস্কার দান করতাম।

وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا (٦٨)

৬৮. এবং তাদেরকে অবশ্যই সঠিক পথ প্রদর্শন করতাম।

وَمَنْ يُّطِعِ اللهَ وَالرَّسُوْلَ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ج وَحَسُنَ أُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا ط (٦٩)

৬৯. যারা আল্লাহ ও রসূলের আনুগত্য করে, তারা নাবী, সিদ্দীক, শহীদ এবং নেককার লোকদের সঙ্গী হবে, যাদের প্রতি আল্লাহ নি'মাত দান করেছেন, তারা কতই না উত্তম সঙ্গী!

ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللهِ ط وَكَفٰى بِاللهِ عَلِيْمًا ع (٧٠)

৭০. এটা আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে অনুগ্রহ, সর্বজ্ঞ হিসেবে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ أَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا (٧١)

৭১. হে ঈমানদারগণ! তোমরা সতর্কতা অবলম্বন কর এবং দলে দলে ভাগ হয়ে কিংবা মিলিতভাবে অগ্রসর হও।

وَإِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ج فَإِنْ أَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيَّ إِذْ لَمْ أَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا (٧٢)

৭২. এবং তোমাদের কেউ কেউ নিশ্চয়ই পশ্চাতে সরে থাকবে, অতঃপর তোমাদের উপর কোন বিপদ আসলে সে বলবে, 'আল্লাহ আমার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন যে, আমি তাদের সঙ্গে উপস্থিত ছিলাম না।'

৬৯। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, আমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি যে, প্রত্যেক নাবী (ﷺ) অন্তিম সময়ে পীড়িত হলে তাঁকে দুনিয়া ও আখিরাতের যে কোন একটি গ্রহণ করতে বলা হয়। যে অসুখে তাঁকে উঠিয়ে নেয়া হয়েছে সে অসুখে তাঁর ভীষণ শ্বাসকষ্ট আরম্ভ হয়েছিল। সে সময় আমি তাঁকে مَعَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِنَ النَّبِيّٖنَ وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَاءِ وَالصَّالِحِيْنَ তাঁরা নাবীগণ, সত্যপরায়ণ, শহীদ ও সৎকর্মশীল যাদের প্রতি আল্লাহ অনুগ্রহ বর্ষণ করেছেন, তাঁদের সঙ্গী হবেন বলতে শুনেছি। এরপর আমি বুঝে নিয়েছি যে, তাঁকে (দুনিয়া বা আখিরাতে) যে কোন একটি বেছে নেয়ার অবকাশ দেয়া হয়েছে। –বুখারী ৪৫৮৬ [৪৪৩৫; মুসলিম ২১৯২, ২৪৪৩, ২৪৪৪; তিরমিযী ৩৪৯৬, ইবনু মাজাহ ১৬২০, আহমাদ ২৩৬৯৬, ২৩৯৩৩; মালিক ৫৬২]

وَلَئِنْ أَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللهِ لَيَقُوْلَنَّ كَأَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُ مَوَدَّةٌ يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَأَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا (٧٣)

৭৩. আর যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ হয়, তবে যেন তোমাদের ও তাদের মধ্যে কোন প্রকারের সম্পর্ক ছিল না, এমনিভাবে অবশ্যই বলে উঠবে, 'হায় পরিতাপ! আমিও যদি তাদের সঙ্গে থাকতাম তাহলে মহা সাফল্য লাভ করতাম।'

فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ الَّذِيْنَ يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ط وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَيُقْتَلْ أَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ أَجْرًا عَظِيْمًا (٧٤)

৭৪. সুতরাং যারা আখেরাতের বিনিময়ে পার্থিব জীবন বিক্রয় করে তারা আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করুক এবং যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করবে, অতঃপর সে নিহত হোক অথবা বিজয়ী হোক, অচিরেই আমি তাকে মহা প্রতিফল দান করব।

وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ أَهْلُهَا ج وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ج لا وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا ط (٧٥)

৭৫. তোমাদের কী হয়েছে যে, তোমরা আল্লাহ্‌র পথে এবং অসহায় নারী-পুরুষ আর শিশুদের (রক্ষার) জন্য লড়াই করবে না, যারা দু'আ করছে- 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এ যালিম অধ্যুষিত জনপথ হতে মুক্তি দাও, তোমার পক্ষ হতে কাউকেও আমাদের বন্ধু বানিয়ে দাও এবং তোমার পক্ষ হতে কাউকেও আমাদের সাহায্যকারী করে দাও।'

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ج وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا أَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ج إِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا ع (٧٦)

৭৬. ঈমানদারগণ আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধ করে আর যারা কাফির তারা তাগুতের পথে যুদ্ধ করে। কাজেই তোমরা শায়ত্বনের বন্ধুদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, শায়ত্বনের ফন্দি অবশ্যই দুর্বল।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا أَيْدِيَكُمْ وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ج فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللهِ أَوْ أَشَدَّ خَشْيَةً ج

৭৭. তুমি কি তাদেরকে দেখনি, যাদেরকে বলা হয়েছিল, তোমরা তোমাদের হাত সংযত রাখ, নামায কায়িম কর এবং যাকাত দাও? অতঃপর যখন তাদের প্রতি জিহাদ ফরয করা হল, তখন তাদের একদল মানুষকে এমন ভয় করতে লাগল যেমন আল্লাহ্‌কে ভয় করা উচিত, বরং তার চেয়েও বেশী এবং বলতে লাগল, 'হে আমাদের

৭৫। 'উবাইদুল্লাহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, আমি ইবনু 'আব্বাস (ﷺ)-কে বলতে শুনেছি তিনি বলেছেন যে, আমি এবং আমার আম্মা (আয়াতে বর্ণিত) অসহায়দের অন্তর্ভুক্ত ছিলাম। -বুখারী ৪৫৮৭ [১৩৫৭]

وَقَالُوْا رَبَّنَا لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ج لَوْلَآ أَخَّرْتَنَآ إِلٰٓى أَجَلٍ قَرِيْبٍ ط قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ ج وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى قف وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا (٧٧)

প্রতিপালক! কেন আমাদের প্রতি জিহাদ ফরয করলে, আমাদেরকে আরও কিছু অবসর দিলে না কেন?' বল, 'পার্থিব ভোগ সামান্য, যে তাকওয়া অবলম্বন করে তার জন্য আখিরাতই উত্তম, তোমাদের প্রতি বিন্দুমাত্র অন্যায় করা হবে না।'

أَيْنَمَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ط وَإِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللهِ ج وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ط قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللهِ ط فَمَالِ هٰٓؤُلَآءِ الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا (٧٨)

৭৮. তোমরা যেখানেই থাক না কেন, মৃত্যু তোমাদেরকে পেয়ে বসবেই, যদিও তোমরা সুউচ্চ সুদৃঢ় দূর্গ মধ্যে অবস্থান কর। যদি তাদের কোন কল্যাণ ঘটে, তখন তারা বলে, এটা আল্লাহ্‌র তরফ হতে। পক্ষান্তরে যদি তাদের কোন অকল্যাণ ঘটে তখন বলে, 'এটা তো তোমার তরফ হতে।' বল, 'সবকিছুই আল্লাহ্‌র তরফ হতে।' এ সম্প্রদায়ের হল কী যে, তারা কোন কথাই বুঝে না।

مَآ أَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللهِ ز وَمَآ أَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ط وَأَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ط وَكَفٰى بِاللهِ شَهِيْدًا (٧٩)

৭৯. তোমার কোন কল্যাণ হলে তা হয় আল্লাহ্‌র তরফ হতে এবং তোমার যে কোন অকল্যাণ হলে তা হয় তোমার নিজের কারণে এবং আমি তোমাকে মানুষের জন্য রসূলরূপে প্রেরণ করেছি, (এ কথার) সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট।

مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ أَطَاعَ اللهَ ج وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ أَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ط (٨٠)

৮০. যে রসূলের আনুগত্য করল, সে তো আল্লাহ্‌রই আনুগত্য করল, কেউ মুখ ফিরিয়ে নিলে (জোরপূর্বক তাকে সৎপথে আনার জন্য) আমি তোমাকে তাদের প্রতি পাহারাদার করে পাঠাইনি।

وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ز فَإِذَا بَرَزُوْا مِنْ عِنْدِكَ بَيَّتَ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ تَقُوْلُ ط وَاللهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ج فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ط وَكَفٰى بِاللهِ وَكِيْلًا (٨١)

৮১. তারা মুখেই আনুগত্য করে, কিন্তু যখন তোমার নিকট থেকে চলে যায়, তখন তাদের মধ্যে একটা দল রাত্রিবেলা একত্রিত হয়ে তোমার কথার বিরুদ্ধে সলা পরামর্শ করে, আল্লাহ তাদের রাত্রিকালীন মন্ত্রণাগুলো লিখে রাখছেন, কাজেই তাদের প্রতি ভ্রূক্ষেপ করো না, আল্লাহ্‌র উপর ভরসা কর এবং আল্লাহ্‌ই কর্মবিধায়ক হিসেবে যথেষ্ট।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ؕ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ غَيْرِ اللهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا (٨٢)

৮২. তারা কি কুরআনের মর্ম বিষয়ে চিন্তে-ভাবনা করে না? যদি তা আল্লাহ ছাড়া অন্য কারো নিকট হতে আসত, তবে তাতে তারা অবশ্যই বহু অসঙ্গতি পেত।

وَإِذَا جَآءَهُمْ أَمْرٌ مِّنَ الْأَمْنِ أَوِ الْخَوْفِ أَذَاعُوْا بِهٖ ؕ وَلَوْ رَدُّوْهُ إِلَى الرَّسُوْلِ وَإِلٰٓى أُولِي الْأَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ مِنْهُمْ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطَانَ إِلَّا قَلِيْلًا (٨٣)

৮৩. যখন তাদের নিকট নিরাপত্তার কিংবা ভয়ের কোন সংবাদ আসে তখন তারা তা রটিয়ে দেয়। যদি তারা তা রসূলের কিংবা তাদের মধ্যে যারা ক্ষমতার অধিকারী তাদের গোচরে আনত, তবে তাদের মধ্য হতে তথ্যানুসন্ধানীগণ প্রকৃত তথ্য জেনে নিত। যদি তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র দয়া ও করুণা না থাকত তবে তোমাদের অল্প সংখ্যক ছাড়া সকলেই শায়ত্বনের অনুসরণ করত।

فَقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ج لَا تُكَلَّفُ إِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ج عَسَى اللهُ أَنْ يَّكُفَّ بَأْسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَاللهُ أَشَدُّ بَأْسًا وَّأَشَدُّ تَنْكِيْلًا (٨٤)

৮৪. কাজেই আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধ কর, তোমাকে শুধু তোমার নিজের জন্য দায়ী করা হবে, মু'মিনদের উদ্বুদ্ধ কর, হতে পারে যে আল্লাহ কাফিরদের শক্তি সংযত করবেন এবং আল্লাহ শক্তিতে অতি প্রবল, শাস্তিদানে অতি কঠোর।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ج وَمَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ؕ وَكَانَ اللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا (٨٥)

৮৫. যে ব্যক্তি ভাল কাজের জন্য সুপারিশ করবে, তার জন্য তাতে (সাওয়াবের) অংশ আছে এবং যে মন্দ কাজের জন্য সুপারিশ করবে, তার জন্য তাতে অংশ আছে, আল্লাহ সকল বিষয়ে খোঁজ রাখেন।

وَإِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِأَحْسَنَ مِنْهَآ أَوْ رُدُّوْهَا ؕ إِنَّ اللهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَسِيْبًا (٨٦)

৮৬. যখন তোমাদেরকে সসম্মানে সালাম প্রদান করা হয়, তখন তোমরা তার চেয়ে উত্তমরূপে জওয়াবী সালাম দাও কিংবা (কমপক্ষে) অনুরূপভাবে দাও, নিশ্চয়ই আল্লাহ (ক্ষুদ্র-বৃহৎ) সকল বিষয়ে হিসাব গ্রহণকারী।

اَللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ

৮৭. আল্লাহ, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তিনি ক্বিয়ামাত দিবসে সকলকে একত্র করবেনই, এতে কোনই সন্দেহ নেই, আল্লাহ অপেক্ষা আর কার কথা অধিক সত্য

اللّٰهِ حَدِيْثًا ع (٨٧)

হতে পারে?

فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ وَاللّٰهُ أَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ط أَتُرِيْدُوْنَ أَنْ تَهْدُوْا مَنْ أَضَلَّ اللّٰهُ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا (٨٨)

৮৮. তোমাদের কী হল যে, মুনাফিকদের ব্যাপারে (কী নীতি অবলম্বন করা হবে সে বিষয়ে) তোমরা দু' দলে বিভক্ত হয়ে গেলে? বস্তুতঃ আল্লাহ তাদের এ কার্যকলাপের কারণে তাদেরকে উল্টা মুখে ফিরিয়ে দিয়েছেন (ইসলাম থেকে আবার কুফরের দিকে)। আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেছেন, তোমরা কি তাকে সুপথ দেখাতে চাও? বস্তুতঃ আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন, তার জন্য কক্ষনো পথ খুঁজে পাবে না।

وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ أَوْلِيَآءَ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط فَإِنْ تَوَلَّوْا فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ص وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ٧ (٨٩)

৮৯. তারা আকাঙ্ক্ষা করে যে, তারা নিজেরা যেমন কুফরী করেছে, তোমরাও তেমনি কুফরী কর, যাতে তোমরা তাদের সমান হয়ে যাও। কাজেই তাদের মধ্য হতে কাউকেও বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, যে পর্যন্ত তারা আল্লাহ্র পথে হিজরত না করে। যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে তাদেরকে গ্রেফতার কর এবং যেখানেই তাদেরকে পাও, হত্যা কর। তাদের মধ্য হতে কোন বন্ধু ও সাহায্যকারী গ্রহণ করো না।

إِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ إِلٰى قَوْمٍ ۢ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ أَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ صُدُوْرُهُمْ أَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ أَوْ يُقَاتِلُوْا قَوْمَهُمْ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ج فَإِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَأَلْقَوْا إِلَيْكُمُ السَّلَمَ ٧ فَمَا

৯০. কিন্তু (সে সব মুনাফিক এ কথার মধ্যে শামিল নয়) যারা তোমাদের সাথে চুক্তিবদ্ধ কোন জাতির সঙ্গে গিয়ে মিলিত হয়। তেমনি (তারাও এর মধ্যে শামিল নয়) যারা তোমার কাছে আসে আর তারা ঝগড়া-বিবাদে উৎসাহী নয়, তারা না তোমাদের বিরুদ্ধে লড়াই করতে চায়, না নিজের জাতির বিরুদ্ধে। আল্লাহ যদি ইচ্ছে করতেন, তবে তাদেরকে তোমাদের উপর প্রবল করে দিতেন, সে অবস্থায় তারা নিশ্চয় তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করত। কাজেই তারা যদি তোমাদের হতে সরে থাকে, তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ না করে

৮৮। যায়দ ইবনু সাবিত (রাঃ) হতে বর্ণিত। فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ –উহূদের যুদ্ধ থেকে একদল লোক দলত্যাগ করে ফিরে এসেছিল, এরপর তাদের ব্যাপারে লোকেরা দু'দল হয়ে গেল, একদল বলছে, তাদেরকে হত্যা করে ফেল; অপরদল বলছে তাদেরকে হত্যা করো না, তখন অবতীর্ণ হলঃ فَمَا لَكُمْ فِي الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ অর্থাৎ নাবী (ﷺ) বলেছেন, এই মাদীনাহ হল পবিত্র স্থান, আগুন যেভাবে রৌপ্যের কালিমা দূর করে এটাও অপবিত্রতা দূর করে দেয়। –বুখারী ৪৫৮৯ [১৮৮৪; মুসলিম ২৭৭৬, তিরমিযী ৩০২৮, আহমাদ ২১০৮৯, ২১১২০]

جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا (٩٠)

ও তোমাদের নিকট শান্তি প্রস্তাব করে, তবে আল্লাহ তোমাদের জন্য তাদের বিরুদ্ধে কোনও ব্যবস্থা অবলম্বনের পথ রাখেননি।

سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ أَنْ يَّأْمَنُوْكُمْ وَيَأْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ط كُلَّ مَا رُدُّوْآ إِلَى الْفِتْنَةِ أُرْكِسُوْا فِيْهَا ج فَإِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْآ إِلَيْكُمُ السَّلَمَ وَيَكُفُّوْآ أَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ط وَأُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطَانًا مُّبِيْنًا ع (٩١)

৯১. অচিরেই তোমরা কতক লোককে এমনও পাবে, যারা তোমাদের কাছ থেকেও নিরাপদ থাকতে চায়, তাদের নিজ সম্প্রদায় থেকেও নিরাপদ থাকতে চায়, যখন তাদেরকে ফিতনার দিকে মনোনিবেশ করানো হয় তখন তাতেই জড়িয়ে পড়ে। কাজেই যদি তারা তোমাদের শত্রুতা হতে সরে না যায় এবং তোমাদের নিকট শান্তি প্রস্তাব না করে এবং তাদের হস্ত সংবরণ না করে, তবে তাদেরকে গ্রেফতার কর আর যেখানেই পাও হত্যা কর, এরাই হচ্ছে সেই সব লোক তোমাদেরকে যাদের বিরুদ্ধাচরণের স্পষ্ট অধিকার দিয়েছি।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ أَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا إِلَّا خَطَأً ج وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَأً فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلٰٓى أَهْلِهٖٓ إِلَّآ أَنْ يَّصَّدَّقُوْا ط فَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ط وَإِنْ كَانَ مِنْ قَوْمٍ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ إِلٰٓى أَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ج فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ز تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (٩٢)

৯২. কোন মু'মিনকে হত্যা করা কোন মু'মিনের কাজ নয় তবে ভুলবশত হতে পারে, কেউ কোন মু'মিনকে ভুলক্রমে হত্যা করলে, একজন মু'মিন দাস মুক্ত করা বা তার পরিবারবর্গকে রক্তপণ দেয়া কর্তব্য, যদি না তারা ক্ষমা করে দেয়। যদি সে তোমাদের শত্রুপক্ষের লোক হয় এবং মু'মিন হয় তবে একজন মু'মিন গোলাম আযাদ করা কর্তব্য, আর যদি সে এমন গোত্রের লোক হয় যাদের মধ্যে ও তোমাদের মধ্যে চুক্তি রয়েছে তবে তার পরিবারকে রক্তপণ দেয়া এবং একজন মু'মিন গোলাম আযাদ করা কর্তব্য এবং যে ব্যক্তি সঙ্গতিহীন সে একাদিক্রমে দু' মাস রোযা পালন করবে। এটাই হল আল্লাহ্‌র নিকট তাওবাহ করার ব্যবস্থা, আল্লাহ মহাজ্ঞানী, সুবিজ্ঞ।

وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ

৯৩. যে ব্যক্তি কোন মু'মিনকে ইচ্ছাপূর্বক হত্যা করে, তার শাস্তি জাহান্নাম। যাতে স্থায়ীভাবে থাকবে, তার উপর আল্লাহ্‌র ক্রোধ ও অভিসম্পাত। আল্লাহ তার জন্য মহাশাস্তি নির্দিষ্ট

وَأَعَدَّ لَهُ عَذَابًا عَظِيمًا (٩٣)

করে রেখেছেন।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا ضَرَبْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ج تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ز فَعِنْدَ اللهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ط كَذٰلِكَ كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللهُ عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ط إِنَّ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (٩٤)

৯৪. হে মু'মিনগণ! যখন তোমরা আল্লাহ্‌র পথে যাত্রা করবে তখন কে বন্ধু আর কে শত্রু তা পরীক্ষা করে নেবে, কেউ তোমাদেরকে সালাম করলে তাকে বলো না, 'তুমি মু'মিন নও', তোমরা ইহজগতের সম্পদের আকাঙ্ক্ষা কর, বস্তুতঃ আল্লাহ্‌র নিকট তোমাদের জন্য প্রচুর গনীমত আছে। তোমরাও এর পূর্বে এ রকমই ছিলে (অর্থাৎ তোমারাও তাদের মতই তোমাদের ঈমানকে তোমাদের কওম থেকে গোপন করতে), তৎপর আল্লাহ তোমাদের প্রতি কৃপা করেছেন, কাজেই অগ্রে বিশেষভাবে পরীক্ষা করে নিবে; তোমরা যা কিছু কর, সে বিষয়ে আল্লাহ সবিশেষ অবহিত।

لَا يَسْتَوِي الْقَاعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ غَيْرُ أُولِي الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ط فَضَّلَ اللهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقَاعِدِيْنَ دَرَجَةً ط وَكُلًّا وَّعَدَ اللهُ الْحُسْنٰى ط وَفَضَّلَ اللهُ الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى

৯৫. অক্ষম নয় এমন বসে-থাকা মু'মিনরা আর জান-মাল দ্বারা আল্লাহ্‌র পথে জিহাদকারীগণ সমান নয়; নিজেদের ধন-প্রাণ দ্বারা জিহাদকারীদেরকে বসে-থাকা লোকেদের উপর আল্লাহ মর্যাদা দিয়েছেন। আল্লাহ সকলের জন্যই কল্যাণের ওয়াদা করেছেন এবং মুজাহিদদেরকে বসে-থাকা লোকেদের তুলনায় আল্লাহ

৯৩। সা'ঈদ ইবনু যুবায়র (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, এ আয়াত সম্পর্কে কূফাবাসীগণ ভিন্ন ভিন্ন মত প্রকাশ করল। (কেউ বলেন মানসূখ, কেউ বলেন মানসূখ নয়। এ ব্যাপারে আমি ইবনু 'আব্বাস (ﷺ)-এর কাছে গেলাম এবং তাঁকে জিজ্ঞেস করলাম, উত্তরে তিনি বললেন, এ আয়াতটি অবতীর্ণ হয়েছে এবং এটি শেষের দিকে অবতীর্ণ আয়াত; এটাকে কোন কিছু রহিত করেনি। -বুখারী ৪৫৯০ [৩৮৫৫; মুসলিম ৩০২৩, নাসায়ী ৪০০২, আবূ দাউদ ৪২৭৩, ৪২৭৫]

৯৪। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, وَلَا تَقُوْلُوا لِمَنْ أَلْقَى إِلَيْكُمُ السَّلَامَ لَسْتَ مُؤْمِنًا আয়াতের ঘটনা হচ্ছে এই যে, এক ব্যক্তির কিছু ছাগল ছিল, মুসলিমদের সঙ্গে তার সাক্ষাৎ হলে সে তাঁদেরকে বলল "আস্সালামু আলাইকুম", মুসলিমরা তাকে হত্যা করল এবং তার ছাগলগুলো নিয়ে নিল, এ প্রসঙ্গে আল্লাহ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করলেন عَرَضَ الْحَيَاةِ الدُّنْيَا -পার্থিব সম্পদের লালসায়-আর সে সম্পদ হচ্ছে এ ছাগল পাল। 'আত্বা (রহ.) বলেন, ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) السَّلَامَ পড়েছেন। -বুখারী ৪৫৯১ [মুসলিম ৩০২৫, তিরমিযী ৩০৩০, আবূ দাউদ ৩৯৭৪]

الْقَعِدِينَ أَجْرًا عَظِيمًا ۙ (٩٥)

মহাপুরস্কার দিয়ে মর্যাদা দান করেছেন।

دَرَجَٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَرَحْمَةً ۚ وَكَانَ اللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا ع (٩٦)

৯৬. ওটা আল্লাহ্‌র নিকট হতে পদমর্যাদা, ক্ষমা ও দয়া; আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়াবান।

إِنَّ الَّذِينَ تَوَفَّىٰهُمُ الْمَلَٰٓئِكَةُ ظَالِمِيٓ أَنفُسِهِمْ قَالُوا۟ فِيمَ كُنتُمْ ۖ قَالُوا۟ كُنَّا مُسْتَضْعَفِينَ فِي الْأَرْضِ ۚ قَالُوٓا۟ أَلَمْ تَكُنْ أَرْضُ اللَّهِ وَٰسِعَةً فَتُهَاجِرُوا۟ فِيهَا ۚ فَأُو۟لَٰٓئِكَ مَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ۖ وَسَآءَتْ مَصِيرًا ۙ (٩٧)

৯৭. যারা নিজেদের আত্মার উপর যুল্‌ম করেছিল এমন লোকেদের প্রাণ হরণের সময় ফেরেশতারা তাদেরকে জিজ্ঞেস করে– 'তোমরা কোন্ কাজে নিমজ্জিত ছিলে'? তারা বলে, 'দুনিয়ায় আমরা দুর্বল ক্ষমতাহীন ছিলাম', ফেরেশতারা বলে, 'আল্লাহ্‌র যমীন কি প্রশস্ত ছিল না যাতে তোমরা হিজরাত করতে'? সুতরাং তাদের আবাসস্থল হবে জাহান্নাম এবং তা কতই না নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তন স্থান!

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ وَالْوِلْدَٰنِ لَا يَسْتَطِيعُونَ حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا ۙ (٩٨)

৯৮. কিন্তু যে সকল সহায়হীন পুরুষ, নারী ও বালক যারা উপায় বের করতে পারে না আর তারা পথও পায় না,

---

৯৫। যায়দ ইবনু সাবিত (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) তাঁকে এ আয়াতটি লেখার নির্দেশ দিয়েছিলেন। তিনি আমাকে বলছিলেন এমন সময় ইবনু উম্মু মাকতুম (ﷺ) তাঁর কাছে আসলেন এবং বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল (ﷺ) ! আল্লাহ্‌র শপথ, যদি আমার জিহাদ করার ক্ষমতা থাকত তা হলে অবশ্যই জিহাদ করতাম। তিনি অন্ধ ছিলেন। এরপর আল্লাহ তা'আলা তাঁর রসূল (ﷺ) -এর উপর ওয়াহী নাযিল করলেন, এমন অবস্থায় যে তাঁর উরু আমার উরুর উপর ছিল। তা আমার কাছে এতই ভারী লাগছিল যে, আমি আমার উরু ভেঙ্গে যাওয়ার আশঙ্কা করছিলাম। তারপর তাঁর থেকে এই অবস্থা কেটে গেল, আর আল্লাহ তা'আলা অবতীর্ণ করলেনঃ غَيْرُ أُوْلِي الضَّرَرِ ব্যক্তিরা ব্যতীত। –বুখারী ৪৫৯২ [২৮৩২; মুসলিম ১৮৯৮, তিরমিযী ৩০৩৩, নাসায়ী ৩০৯৯, ৩১০০; আহমাদ ২১০৯১, ২১১৫৬]

৯৭। আবুল আসওয়াদ মুহাম্মাদ ইবনু 'আবদুর রহমান (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, একদল সৈন্য পাঠানোর জন্যে মাদীনাহ্‌বাসীদের উপর নির্দেশ দেয়া হলে আমাকেও তাতে অন্তর্ভুক্ত করা হল। আমি ইবনু 'আব্বাস (ﷺ)-এর মুক্ত গোলাম ইকরামাহ্‌র সঙ্গে দেখা করলাম এবং তাঁকে এ ব্যাপারে জানালাম। তিনি আমাকে এ ব্যাপারে কঠোরভাবে নিষেধ করলেন, তারপর বললেন কিছু সংখ্যক মুসলিম মুশরিকদের সঙ্গে থেকে রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর বিরুদ্ধে মুশরিকদের দল ভারী করেছিল, তীর এসে তাদের কারো উপর পড়ত এবং তাকে মেরে ফেলত অথবা তাদের কেউ মার খেত এবং নিহত হত তখন আল্লাহ তা'আলা এ আয়াতটি অবতীর্ণ করলেন। আবুল আসওয়াদ থেকে লায়স এটা বর্ণনা করেছেন। –বুখারী ৪৫৯৬ [৭০৮৫]

৯৮। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। এ আয়াতটি সম্পর্কে তিনি বলেছেন যে, আল্লাহ তা'আলা যাদের অক্ষমতা কবূল করেছেন আমার মাতা তাঁদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন। –বুখারী ৪৫৯৭ [১৩৫৭]

فَأُولَٰٓئِكَ عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّعْفُوَ عَنْهُمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَفُوًّا غَفُوْرًا (٩٩)

৯৯. আশা আছে যে, আল্লাহ্ তাদেরকে ক্ষমা করবেন এবং আল্লাহ গুনাহ মোচনকারী, বড়ই ক্ষমাশীল।

وَمَنْ يُّهَاجِرْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يَجِدْ فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيْرًا وَّسَعَةً ط وَمَنْ يَّخْرُجْ مِنْ بَيْتِهٖ مُهَاجِرًا إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ط وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ع (١٠٠)

১০০. যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র পথে হিজরাত করবে, সে পৃথিবীতে বহু আশ্রয়স্থল এবং প্রাচুর্য প্রাপ্ত হবে; এবং যে ব্যক্তি নিজের গৃহ হতে আল্লাহ ও তাঁর রসূলের দিকে হিজরাত করে বের হয়, অতঃপর মৃত্যু তাকে পেয়ে বসে তার সাওয়াব আল্লাহ্‌র জিম্মায় সাব্যস্ত হয়ে গেছে এবং আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوْا مِنَ الصَّلٰوةِ ق صلے إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَّفْتِنَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط إِنَّ الْكٰفِرِيْنَ كَانُوْا لَكُمْ عَدُوًّا مُّبِيْنًا (١٠١)

১০১. যখন তোমরা দেশে-বিদেশে সফর কর, তখন নামায কসর করাতে তোমাদের কিছুমাত্র দোষ নেই, যদি তোমরা ভয় কর যে, কাফিরগণ তোমাদেরকে বিপদগ্রস্ত করবে। নিঃসন্দেহে কাফিরগণ তো তোমাদের প্রকাশ্য শত্রু।

وَإِذَا كُنْتَ فِيْهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلٰوةَ فَلْتَقُمْ طَآئِفَةٌ مِّنْهُمْ مَّعَكَ وَلْيَأْخُذُوْآ أَسْلِحَتَهُمْ قف فَإِذَا سَجَدُوْا فَلْيَكُوْنُوْا مِنْ وَّرَآئِكُمْ ص وَلْتَأْتِ طَآئِفَةٌ أُخْرٰى لَمْ يُصَلُّوْا فَلْيُصَلُّوْا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوْا حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ ج وَدَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ تَغْفُلُوْنَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ فَيَمِيْلُوْنَ عَلَيْكُمْ مَّيْلَةً وَّاحِدَةً ط وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ

১০২. এবং যখন তুমি মু'মিনদের মাঝে অবস্থান করবে আর তাদের সঙ্গে নামায কায়িম করবে তখন তাদের একটি দল যেন তোমার সঙ্গে দাঁড়ায় এবং সশস্ত্র থাকে, তাদের সাজদাহ করা হলে তারা যেন তোমাদের পশ্চাতে অবস্থান করে এবং অপর যে দলটি নামায আদায় করেনি তারা যেন তোমার সঙ্গে নামায আদায় করে এবং সতর্ক ও সশস্ত্র থাকে; কাফিরগণ কামনা করে যে, তোমরা যেন তোমাদের অস্ত্রশস্ত্র ও সরঞ্জামের ব্যাপারে অসতর্ক হও, যাতে তারা একজোটে তোমাদের উপর ঝাঁপিয়ে পড়তে পারে। যদি তোমাদের বৃষ্টির কারণে কষ্ট হয়,

---

১০১। ইবনু 'উমার (رضي الله عنه) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহর রসূলু (ﷺ) -এর সাহচর্যে থেকেছি। তিনি সফরে কখনো দু' রাক'আতের বেশী (নামায) পড়তেন না। আবূ বাক্র এবং 'উমারও তদ্রূপ করেছেন।
–বুখারী ১১০২ [মুসলিম ৬৮৯, ৬৯৪; তিরমিযী ৫৪৪, নাসায়ী ১৪৫০, ১৪৫৭, ১৪৫৮; আবূ দাউদ ১২২৩, ইবনু মাজাহ ১০৭১, ৪৫১৯; দারিমী ১৮৭৫]

أَذًى مِّنْ مَّطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَّرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوْٓا أَسْلِحَتَكُمْ ۚ وَخُذُوْا حِذْرَكُمْ ۗ إِنَّ اللهَ أَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا (١٠٢)

কিংবা তোমরা পীড়িত হও, তবে অস্ত্র রেখে দিলে তোমাদের কোন গুনাহ নেই, কিন্তু সতর্কতা অবলম্বন করবে, আল্লাহ্ কাফিরদের জন্য অবমাননাকর শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছেন।

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِكُمْ ۚ فَإِذَا اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۚ إِنَّ الصَّلٰوةَ كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ كِتٰبًا مَّوْقُوْتًا (١٠٣)

১০৩. যখন তোমরা নামায আদায় করে নেবে, তখন দাঁড়িয়ে, বসে, শুয়ে আল্লাহ্কে স্মরণ করবে, অতঃপর যখন তোমরা নিরাপদ হবে তখন (যথানিয়মে) নামায কায়িম করবে। নির্দিষ্ট সময়ে নামায কায়িম করা মু'মিনদের জন্য অবশ্য কর্তব্য।

১০২। শু'আয়ব (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি যুহরী (রহ.)-কে জিজ্ঞেস করলাম, নাবী (ﷺ) কি নামায আদায় করতেন অর্থাৎ খাওফের নামায? তিনি বললেন, আমাকে সালিম (রহ.) জানিয়েছেন যে, 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু 'উমার (رضي الله عنه) বলেছেন, আমি আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর সঙ্গে নাজ্দ এলাকায় যুদ্ধ করেছিলাম। সেখানে আমরা শত্রুর মুখোমুখী কাতারবন্দী হয়ে দাঁড়ালাম। অতঃপর আল্লাহর রসূল (ﷺ) আমাদের নিয়ে নামায আদায় করলেন। একদল তাঁর সঙ্গে সলাতে দাঁড়ালেন এবং অন্য একটি দল শত্রুর মুখোমুখী অবস্থান করলেন। আল্লাহর রসূল (ﷺ) তাঁর সংগে যাঁরা ছিলেন তাঁদের নিয়ে রুকূ' ও দু'টি সাজদাহ্ করলেন। অতঃপর এ দলটি যারা নামায আদায় করেনি, তাঁদের স্থানে চলে গেলেন এবং তাঁরা আল্লাহর রসূল (ﷺ) এর পিছনে এগিয়ে এলেন, তখন আল্লাহর রসূল (ﷺ) তাঁদের সঙ্গে এক রুকূ' ও দু' সাজদাহ্ করলেন এবং পরে সালাম ফিরালেন। অতঃপর তাদের প্রত্যেকে উঠে দাঁড়ালেন এবং নিজে নিজে একটি রুকূ' ও দু'টি সাজদাহ্ (সহ নামায) শেষ করলেন। -বুখারী ৯৪২ [৯৪৩, ৪১৩২, ৪১৩৩, ৪৫৩৫; মুসলিম ৮৩৯, তিরমিযী ৫৬৪, নাসায়ী ১৫৩৯-১৫৪২, আবূ দাউদ ১২৪৩, ইবনু মাজাহ ১২৫৮, আহমাদ ৬১২৪, ৬৩১৫; মুওয়াত্তা ৪৪২, দারিমী ১৫২১]

১০৩। ইব্নু শিহাব (রহ.) হতে বর্ণিত। 'উমার ইব্নু 'আবদুল 'আযীয (রহ.) একদা কোন এক নামায আদায়ে বিলম্ব করলেন। তখন 'উরওয়াহ ইব্নু যুবায়র (رضي الله عنه) তাঁর নিকট গেলেন এবং তাঁর নিকট বর্ণনা করলেন যে, ইরাকে অবস্থানকালে মুগীরাহ ইব্নু শু'বাহ (رضي الله عنه) একদা এক নামায আদায়ে বিলম্ব করেছিলেন। ফলে আবূ মাস'উদ আনসারী (رضي الله عنه) তাঁর নিকট গিয়ে বললেন, হে মুগীরাহ! একী? তুমি কি অবগত নও যে, জিব্রীল (عليه السلام) অবতরণ করে নামায আদায় করলেন, আর আল্লাহর রসূল (ﷺ) ও নামায আদায় করলেন। আবার তিনি নামায আদায় করলেন। আল্লাহর রসূল (ﷺ) ও নামায আদায় করলেন। পুনরায় তিনি নামায আদায় করলেন এবং আল্লাহর রসূল (ﷺ) ও নামায আদায় করলেন। আবার তিনি নামায আদায় করলেন এবং আল্লাহর রসূল (ﷺ) ও নামায আদায় করলেন। পুনরায় তিনি নামায আদায় করলেন এবং আল্লাহর রসূল (ﷺ) ও নামায আদায় করলেন। অতঃপর জিব্রীল (عليه السلام) বললেন, আমি এজন্য আদিষ্ট হয়েছি। 'উমার (ইব্নু 'আবদুল 'আযীয) (রহ.) 'উরওয়াহ (রহ.)-কে বললেন, "তুমি যা রিওয়ায়াত করছ তা একটু ভেবে দেখ। জিব্রীলই কি আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর জন্য সলাতের ওয়াক্ত নির্ধারণ করে দিয়েছিলেন?" 'উরওয়াহ (রহ.) বললেন, বাশীর ইব্নু আবূ মাস'উদ (রহ.) তার পিতা হতে এমনই বর্ণনা করতেন। -বুখারী ৫২১ [৩২২১, ৪০০৭; মুসলিম ৬১০, ৬১১; তিরমিযী ১৫৯, নাসায়ী ৫০৫, আবূ দাউদ ৩৯৪, ৪০৭; আহমাদ ১৬৬৪০, ২১৮৪৮; মুওয়াত্তা ২, দারিমী ১১৮৫]

وَلَا تَهِنُوْا فِي ابْتِغَآءِ الْقَوْمِ ط إِنْ تَكُوْنُوْا تَأْلَمُوْنَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُوْنَ كَمَا تَأْلَمُوْنَ ج وَتَرْجُوْنَ مِنَ اللهِ مَا لَا يَرْجُوْنَ ط وَكَانَ اللهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ع (١٠٤)

১০৪. এ (শত্রু) কওমের পশ্চাদ্ধাবণে দুর্বলতা দেখাবে না, কেননা যদি তোমরা কষ্ট পাও, তবে তোমাদের মত তারাও তো কষ্ট পায়, আর তোমরা আল্লাহ হতে এমন কিছু আশা কর, যা তারা আশা করে না। আল্লাহ মহাজ্ঞানী, বিজ্ঞানময়।

إِنَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ بِمَآ أَرٰىكَ اللهُ ط وَلَا تَكُنْ لِّلْخَآئِنِيْنَ خَصِيْمًا لا (١٠٥)

১০৫. অবশ্যই আমি সত্য সহকারে তোমার প্রতি কিতাব নাযিল করেছি, যেন তুমি যা আল্লাহ তোমাকে জানিয়েছেন, সে অনুসারে মানুষের মধ্যে বিচার ফায়সালা কর এবং খিয়ানতকারীদের পক্ষে তর্ক করো না।

وَّاسْتَغْفِرِ اللهَ ط إِنَّ اللهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ج (١٠٦)

১০৬. আর আল্লাহ্‌র নিকট ক্ষমা চাও, নিশ্চয় আল্লাহ অতিশয় ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِيْنَ يَخْتَانُوْنَ أَنْفُسَهُمْ ط إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيْمًا ج لا (١٠٧)

১০৭. নিজেদের (বিবেক ও জ্ঞানের) প্রতি খিয়ানতকারীদের পক্ষে তুমি বাদানুবাদ করো না, কারণ আল্লাহ অতি খিয়ানতকারী চরম পাপীকে পছন্দ করেন না।

يَّسْتَخْفُوْنَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُوْنَ مِنَ اللهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُوْنَ مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ط وَكَانَ اللهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطًا (١٠٨)

১০৮. তারা মানুষ হতে গোপন করে থাকে, কিন্তু তারা আল্লাহ হতে গোপন করতে পারে না; কেননা যে সময়ে তারা রাত্রে এমন বিষয়ে পরামর্শ করে যা আল্লাহ পছন্দ করেন না, তখনও তিনি তাদের সঙ্গেই থাকেন; আল্লাহ তাদের সমুদয় কার্যকলাপকে বেষ্টন করে আছেন।

هٰأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا قف فَمَنْ يُّجَادِلُ اللهَ عَنْهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ أَمْ مَّنْ يَّكُوْنُ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا (١٠٩)

১০৯. দেখ, ওরা সেই লোক যাদের পক্ষে পার্থিব জীবনে তোমরা বিতর্ক করছ কিন্তু ক্বিয়ামাত দিবসে তাদের পক্ষ হতে আল্লাহ্‌র সম্মুখে কে ঝগড়া করবে? কিংবা কে তাদের উকীল হবে?

وَمَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهٗ ثُمَّ يَسْتَغْفِرِ اللهَ يَجِدِ اللهَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (١١٠)

১১০. যে ব্যক্তি অসৎকাজ করে কিংবা নিজের আত্মার প্রতি যুল্ম করে, অতঃপর আল্লাহ হতে ক্ষমা ভিক্ষে করে, সে আল্লাহ্‌কে অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু পাবে।

وَمَنْ يَّكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ عَلٰى نَفْسِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (١١١)

১১১. এবং যে ব্যক্তি কোন পাপকাজ করে, সে নিজের বিরুদ্ধেই তা করে, বস্তুতঃ আল্লাহ মহাবিজ্ঞানী, প্রজ্ঞাময়।

وَمَنْ يَّكْسِبْ خَطِيْٓئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ بِهٖ بَرِيْٓئًا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا ع (١١٢)

১১২. যে ব্যক্তি কোন ত্রুটি কিংবা পাপ ক'রে তা কোন নির্দোষ ব্যক্তির উপর চাপিয়ে দেয়, সে তো জ্বলন্ত অপবাদ এবং সুস্পষ্ট গুনাহ নিজের উপর চাপিয়ে নেয়।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ لَهَمَّتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ أَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا يُضِلُّوْنَ إِلَّآ أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ مِنْ شَيْءٍ ؕ وَأَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا (١١٣)

১১৩. যদি তোমার প্রতি আল্লাহ্‌র করুণা এবং দয়া না হত, তবে তাদের একদল তো তোমাকে পথভ্রষ্ট করতেই চেয়েছিল; বস্তুতঃ তারা নিজেদেরকে ছাড়া অন্য কাউকে পথভ্রষ্ট করে না আর তারা তোমার কিছুই অনিষ্ট করতে পারবে না, কারণ আল্লাহ তোমার প্রতি কিতাব ও হিকমাত নাযিল করেছেন এবং তুমি যা জানতে না তা তোমাকে শিক্ষা দিয়েছেন এবং তোমার উপর রয়েছে আল্লাহ্‌র অপরিসীম অনুগ্রহ।

لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰهُمْ إِلَّا مَنْ أَمَرَ بِصَدَقَةٍ أَوْ مَعْرُوْفٍ أَوْ إِصْلَاحٍ ۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ أَجْرًا عَظِيْمًا (١١٤)

১১৪. তাদের অধিকাংশ গোপন পরামর্শের মধ্যে কোন কল্যাণ নেই, কিন্তু কল্যাণ আছে যে ব্যক্তি দান-খয়রাত অথবা কোন সৎকাজের কিংবা লোকেদের মধ্যে মিলমিশের নির্দেশ দেয়। যে কেউ আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টি সাধন উদ্দেশে এমন কাজ করবে, আমি তাকে মহা পুরস্কার দান করব।

وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْ ۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ع (١١٥)

১১৫. যে ব্যক্তি সত্য পথ প্রকাশিত হওয়ার পরও রসূলের বিরোধিতা করে এবং মু'মিনদের পথ বাদ দিয়ে ভিন্ন পথ অনুসরণ করে, আমি তাকে সে পথেই ফিরাব যে পথে সে ফিরে যায়, আর তাকে জাহান্নামে দগ্ধ করব, কত মন্দই না সে আবাস!

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ

১১৬. নিশ্চয়ই আল্লাহ তাঁর সঙ্গে শরীক করাকে ক্ষমা করেন না, এছাড়া অন্য সব যাকে ইচ্ছে মাফ করেন এবং যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সঙ্গে শরীক করে, সে চরমভাবে গোমরাহীতে পতিত হল।

فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢبَعِيْدًا (١١٦)

إِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ إِلَّآ إِنٰثًا ج وَإِنْ يَّدْعُوْنَ إِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا لا (١١٧)

১১৭. তারা আল্লাহ্কে ছেড়ে শুধু কতকগুলো দেবীরই পূজা করে, তারা কেবল আল্লাহদ্রোহী শায়ত্বনের পূজা করে।

لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَأَتَّخِذَنَّ مِنْ عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا لا (١١٨)

১১৮. আল্লাহ তাকে লা'নাত করেছেন কারণ সে বলেছিল, 'আমি তোমার বান্দাদের থেকে নির্দিষ্ট অংশকে আমার অনুসারী হিসেবে গ্রহণ করব।'

وَّلَأُضِلَّنَّهُمْ وَلَأُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْأَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ط وَمَنْ يَّتَّخِذِ الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط فَقَدْ خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ط (١١٩)

১১৯. তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই পথভ্রষ্ট করব, তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই বহু প্রলোভন দেব এবং তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই নির্দেশ দেব, ফলে তারা জন্তু-জানোয়ারের কান ছেদন করবে, আমি তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই নির্দেশ দেব, ফলে তারা অবশ্য অবশ্যই আল্লাহ্র সৃষ্টি বিকৃত করবে। আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে যে কেউ শয়ত্বানকে অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করে, সে সুস্পষ্টত ক্ষতিগ্রস্ত।

يَعِدُهُمْ وَيُمَنِّيْهِمْ ط وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ إِلَّا غُرُوْرًا (١٢٠)

১২০. সে তাদেরকে আশ্বাস দেয়, মিথ্যা প্রলোভন দেয়, বস্তুতঃ শয়ত্বান তাদেরকে যে আশ্বাস দেয় তা ছলনা ছাড়া আর কিছুই নয়।

أُولٰٓئِكَ مَأْوٰهُمْ جَهَنَّمُ ز وَلَا يَجِدُوْنَ عَنْهَا مَحِيْصًا (١٢١)

১২১. এরাই তারা যাদের আবাসস্থল জাহান্নাম এবং তারা তাথেকে নিস্কৃতি পাওয়ার কোন পথ পাবে না।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ط وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ط وَمَنْ أَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ قِيْلًا (١٢٢)

১২২. আর যারা ঈমান এনেছে ও নেক কাজ করেছে অবিলম্বে আমি তাদেরকে জান্নাতে দাখিল করব; যার পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তারা তাতে চিরকাল চিরস্থায়ী হয়ে থাকবে, আল্লাহ্র ওয়া'দা সত্য, কথায় আল্লাহ অপেক্ষা কে বেশি সত্যবাদী?

لَيْسَ بِأَمَانِيِّكُمْ وَلَآ أَمَانِيِّ أَهْلِ الْكِتٰبِ ط مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ لا وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ

১২৩. তোমাদের বাসনা আর আহলে কিতাবদের বাসনা কোন কাজে আসবে না। যে ব্যক্তি কোন কুকর্ম করবে, সে তার বিনিময় প্রাপ্ত হবে, সে

دُوْنِ اللهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (١٢٣)

আল্লাহ ছাড়া তার জন্য কোন অভিভাবক পাবে না, কোন সাহায্যকারীও না।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا (١٢٤)

১২৪. পুরুষ ও নারীর মধ্যে যে সৎকাজ করবে আর সে ঈমানদারও বটে, তাহলে তারা জান্নাতে প্রবেশ করবে, তাদের প্রতি তিল পরিমাণও অন্যায় করা হবে না।

وَمَنْ أَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ أَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ إِبْرَاهِيْمَ حَنِيْفًا ط وَاتَّخَذَ اللهُ إِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا (١٢٥)

১২৫. সে ব্যক্তি অপেক্ষা দ্বীনে কে বেশি উত্তম যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র কাছে আত্মসমর্পণ করে, অধিকন্তু সে সৎকর্মশীল এবং একনিষ্ঠভাবে ইব্‌রাহীমের দ্বীন অনুসরণ করে। আল্লাহ ইব্‌রাহীমকে একান্ত বন্ধুরূপে গ্রহণ করেছিলেন।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَكَانَ اللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ع (١٢٦)

১২৬. আসমান ও যমীনে যা কিছু আছে সব আল্লাহ্‌রই এবং আল্লাহ সবকিছুকেই পরিবেষ্টন করে আছেন।

وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ط قُلِ اللهُ يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ لا وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الْوِلْدَانِ لا وَأَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى بِالْقِسْطِ ط وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَإِنَّ اللهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا (١٢٧)

১২৭. লোকেরা তোমার কাছে নারীদের সম্বন্ধে বিধান জানতে চাচ্ছে। বলে দাও, 'আল্লাহ তাদের সম্বন্ধে তোমাদেরকে বিধান জানিয়ে দিচ্ছেন সেসব নারী সম্পর্কে যাদের প্রাপ্য তোমরা প্রদান কর না অথচ তাদেরকে বিয়ে করতে চাও এবং অসহায় শিশুদের সম্পর্কে এবং ইয়াতীমদের প্রতি তোমাদের ন্যায়বিচার করা সম্পর্কে যা কিতাবে তোমাদেরকে শুনানো হয় তাও জানিয়ে দেন।' যা কিছু সৎ কাজ তোমরা কর, তদ্বিষয়ে আল্লাহ ভালভাবেই জ্ঞাত।

১২৭। 'আয়িশাহ ﵂ হতে বর্ণিত। এ আয়াত সম্পর্কে তিনি বলেছেন যে, সে হচ্ছে ঐ ব্যক্তি যার নিকট ইয়াতীম বালিকা থাকে সে তার অভিভাবক এবং তার মুরুব্বী, এরপর সেই বালিকা সেই অভিভাবকের সম্পদের অংশীদার হয়ে যায়, এমনকি খেজুর বাগানেও। সে ব্যক্তি তাকে বিয়েও করে না এবং অন্য কারো নিকট বিয়ে দিতেও অপছন্দ করে এ আশঙ্কায় যে, তার যেই সম্পদে বালিকা অংশীদার সেই সম্পদে অন্য ব্যক্তি অংশীদার হয়ে যাবে। এভাবে সেই ব্যক্তি ঐ বালিকাকে আটকে রাখে। তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হয়। –বুখারী ৪৬০০ [২৪৯৪; মুসলিম ৩০১৮, নাসায়ী ৩৩৪৬, আবূ দাঊদ ২০৬৮]

وَإِنِ امْرَأَةٌ خَافَتْ مِنْ بَعْلِهَا نُشُوْزًا أَوْ إِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ أَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ط وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ط وَأُحْضِرَتِ الْأَنْفُسُ الشُّحَّ ط وَإِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَإِنَّ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (١٢٨)

১২৮. এবং যদি কোন নারী স্বীয় স্বামী হতে রূঢ়তা কিংবা উপেক্ষার আশঙ্কা করে, তবে তারা পরস্পর আপোষ করলে তাদের কোন গুনাহ নেই, বস্তুতঃ আপোষ করাই উত্তম। আর নফস্ কৃপণতার দিকে সহজেই ঝুঁকে পড়ে, আর যদি তোমরা সৎকর্ম কর এবং তাকওয়া অবলম্বন কর তবে তোমরা যা কর আল্লাহ তার খবর রাখেন।

وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْآ أَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ط وَإِنْ تُصْلِحُوْا وَتَتَّقُوْا فَإِنَّ اللهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (١٢٩)

১২৯. তোমরা কক্ষনো স্ত্রীদের মধ্যে সমতা রক্ষা করতে পারবে না যদিও প্রবল ইচ্ছে কর, তোমরা একজনের দিকে সম্পূর্ণরূপে ঝুঁকে পড়ো না এবং অন্যকে ঝুলিয়ে রেখ না। যদি তোমরা নিজেদেরকে সংশোধন কর এবং তাকওয়া অবলম্বন কর, তবে আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَإِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللهُ كُلًّا مِّنْ سَعَتِهِ ط وَكَانَ اللهُ وَاسِعًا حَكِيْمًا (١٣٠)

১৩০. তারা যদি উভয়ে পৃথক হয়ে যায় তবে আল্লাহ আপন প্রাচুর্য দিয়ে প্রত্যেককে অভাবমুক্ত করে দেবেন, আল্লাহ প্রাচুর্যময়, মহাকুশলী।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَإِيَّاكُمْ أَنِ اتَّقُوا اللهَ ط وَإِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَكَانَ اللهُ غَنِيًّا حَمِيْدًا (١٣١)

১৩১. যা কিছু আকাশসমূহে ও ভূমণ্ডলে আছে সমস্ত আল্লাহ্‌রই এবং অবশ্যই আমি তোমাদের আগে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তাদেরকে আর তোমাদেরকেও আদেশ দিয়েছি যে, আল্লাহ্‌কে ভয় কর আর যদি অমান্য কর তবে আকাশসমূহে যা আছে ও ভূমণ্ডলে যা আছে তা আল্লাহ্‌রই। আল্লাহ অভাবমুক্ত, অতিশয় প্রশংসিত।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط

১৩২. আসমানে যা আছে আর যমীনে যা আছে সব আল্লাহ্‌রই, কার্যনির্বাহক হিসেবে আল্লাহ্‌ই

১২৮। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। এ আয়াত সম্পর্কে তিনি বলেছেন যে, কোন ব্যক্তির বিবাহ বন্ধনে কোন মহিলা থাকে কিন্তু স্বামী তার প্রতি আকৃষ্ট নয় বরং তাকে আলাদা করে দিতে চায়, তখন স্ত্রী বলে আমার এই দাবী থেকে আমি তোমাকে অব্যাহতি দিচ্ছি, এ সম্পর্কে এ আয়াত অবতীর্ণ হল। -বুখারী ৪৬০১ [২৪৫০; মুসলিম ৩০২১, আবূ দাউদ ৩১৩৫]

وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا (١٣٢)

যথেষ্ট।

إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ أَيُّهَا النَّاسُ وَيَأْتِ بِاٰخَرِيْنَ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا (١٣٣)

১৩৩. তিনি ইচ্ছে করলে হে মানুষ! তোমাদেরকে বিলুপ্ত ক'রে তিনি অন্য সম্প্রদায়কে আনতে পারেন, আল্লাহ তা করতে পুরোপুরি সক্ষম।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ط وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا ۢبَصِيْرًا ع (١٣٤)

১৩৪. যে ব্যক্তি পার্থিব পুরস্কার কামনা করে সে জেনে রাখুক যে আল্লাহর নিকট ইহলৌকিক ও পারলৌকিক পুরস্কার আছে। আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ أَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْأَقْرَبِيْنَ ج إِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا أَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ أَوْلٰى بِهِمَا قف فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰٓى أَنْ تَعْدِلُوْا ج وَإِنْ تَلْوٗٓا أَوْ تُعْرِضُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (١٣٥)

১৩৫. হে ঈমানদারগণ! ন্যায়ের প্রতি সুপ্রতিষ্ঠ ও আল্লাহর জন্য সাক্ষ্যদাতা হও যদিও তা তোমাদের নিজেদের কিংবা মাতা-পিতা এবং আত্মীয়গণের বিরুদ্ধে হয়, কেউ ধনী হোক বা দরিদ্র হোক, আল্লাহ উভয়েরই ঘনিষ্ঠতর। অতএব প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না যাতে তোমরা ন্যায়বিচার করতে পার এবং যদি তোমরা বক্রভাবে কথা বল কিংবা সত্যকে এড়িয়ে যাও তবে নিশ্চয় তোমরা যা করছ, আল্লাহ সে বিষয়ে সম্পূর্ণ অবগত।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ مِنْ قَبْلُ ط وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا ۢبَعِيْدًا (١٣٦)

১৩৬. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আল্লাহ, তাঁর রসূলের, তাঁর রসূলের নিকট তিনি অবতীর্ণ করেছেন সেই কিতাবের এবং পূর্বে নাযিলকৃত কিতাবের উপর ঈমান আন। যে ব্যক্তি আল্লাহকে ও তাঁর ফেরেশতাদেরকে, তাঁর কিতাবসমূহকে, তাঁর রসূলগণকে এবং শেষ দিবসকে অস্বীকার করে সে সীমাহীন পথভ্রষ্টতায় পতিত হয়।

১৩৬। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেনঃ ঈমানের সত্তরের অধিক শাখা রয়েছে অথবা (বলেছেন) ষাটের কিছু বেশী শাখা আছে। এর সর্বোত্তম শাখা হচ্ছেঃ লা- ইলা-হা ইল্লাল্লা-হ 'আল্লাহ্ ছাড়া কোন সত্যিকার ইলাহ্ নেই' বলা এবং সাধারণ অর্থাৎ নিম্নস্তরের শাখা হচ্ছে চলার পথ থেকে কষ্টদায়ক বস্তু সরিয়ে দেয়া। আর লজ্জা হচ্ছে ঈমানের একটি বিশেষ শাখা। –মুসলিম ৩৫ [বুখারী ৯, তিরমিযী ২৬১৪, নাসায়ী ৫০০৫, ৫০০৬; আবূ দাউদ ৪৬৭৬, ইবনু মাজাহ ৫৭, আহমাদ ৮৭০৭, ৯০৯৭]

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ط (١٣٧)

১৩৭. যারা ঈমান আনল, অতঃপর কুফরী করল আবার ঈমান আনল আবার কুফরী করল, অতঃপর কুফরীতে অগ্রসর হতে থাকল, আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন না এবং পথপ্রদর্শন করবেন না।

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِأَنَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا لا (١٣٨)

১৩৮. মুনাফিকদেরকে সুসংবাদ শুনিয়ে দাও যে, তাদের জন্য যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি রয়েছে।

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ط أَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ الْعِزَّةَ فَإِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ط (١٣٩)

১৩৯. যারা মু'মিনদেরকে ছেড়ে কাফিরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করে তারা কি তাদের নিকট ইয্যত চায়? ইয্যতের সবকিছুই আল্লাহ্র অধিকারে।

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ أَنْ إِذَا سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَأُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ز صلے إِنَّكُمْ إِذًا مِّثْلُهُمْ ط إِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعًا لا (١٤٠)

১৪০. কিতাবে তোমাদের নিকট তিনি নাযিল করেছেন যে, যখন তোমরা শুনবে আল্লাহ্র আয়াতের প্রতি কুফরী হচ্ছে এবং তার প্রতি ঠাট্টা করা হচ্ছে, তখন তাদের নিকট বসো না যে পর্যন্ত তারা অন্য আলোচনায় লিপ্ত না হয়, নচেৎ তোমরাও তাদের মত হয়ে যাবে, নিশ্চয় আল্লাহ মুনাফিক ও কাফিরদের সকলকেই জাহান্নামে একত্রিত করবেন।

الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ج فَإِنْ كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْا أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ز صلے وَإِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ نَصِيْبٌ لا قَالُوْا أَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط فَاللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ع (١٤١)

১৪১. তারা (অর্থাৎ মুনাফিকরা) তোমাদের ব্যাপারে ওঁৎ পেতে থাকে, তারা আল্লাহ্র তরফ হতে তোমাদের জয়লাভ হলে বলে আমরা কি তোমাদের সঙ্গে ছিলাম না? আর যদি কাফিরদের কিছু বিজয় ঘটে তখন তারা বলে, আমরা কি তোমাদের উপর বিজয়ী ছিলাম না এবং আমরা কি তোমাদেরকে মু'মিনদের হতে রক্ষা করিনি? এমতাবস্থায় আল্লাহ ক্বিয়ামাত দিবসে তোমাদের মধ্যে মীমাংসা করে দেবেন এবং আল্লাহ কক্ষনো মু'মিনদের বিরুদ্ধে কাফিরদেরকে (জয়লাভের) পথ করে দেবেন না।

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللهَ وَهُوَ خَادِعُهُمْ ج وَإِذَا قَامُوْٓا إِلَى الصَّلٰوةِ قَامُوْا كُسَالٰى لا يُرَآؤُوْنَ النَّاسَ وَلَا يَذْكُرُوْنَ اللهَ إِلَّا قَلِيْلًا ز لا (١٤٢)

১৪২. নিশ্চয় মুনাফিকগণ আল্লাহ্‌র সঙ্গে ধোঁকাবাজি করে, তিনি তাদেরকে ধোঁকায় ফেলে শাস্তি দেন এবং তারা যখন সলাতের জন্য দাঁড়ায়, তখন শৈথিল্যভরে দাঁড়ায়, লোক দেখানোর জন্য, তারা আল্লাহ্‌কে সামান্যই স্মরণ করে।

مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ق صلے لَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ وَلَآ إِلٰى هٰٓؤُلَآءِ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا (١٤٣)

১৪৩. তারা মাঝখানে দোদুল্যমান, না এদের দিকে, না ওদের দিকে; বস্তুতঃ আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তুমি তার জন্য কক্ষনো কোন পথ পাবে না।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ط أَتُرِيْدُوْنَ أَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا (١٤٤)

১৪৪. হে ঈমানদারগণ! তোমরা মু'মিনদের পরিবর্তে কাফিরদেরকে তোমাদের বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, তোমরা কি তোমাদের নিজেদের বিরুদ্ধে আল্লাহ্‌র কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ পেশ করতে চাও?

إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْأَسْفَلِ مِنَ النَّارِ ج وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا لا (١٤٥)

১৪৫. মুনাফিকরা থাকবে জাহান্নামের সর্বনিম্ন স্তরে, তুমি তাদের জন্য কক্ষনো কোন সাহায্যকারী পাবে না।

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَأَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا بِاللهِ وَأَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط وَسَوْفَ يُؤْتِ اللهُ الْمُؤْمِنِيْنَ أَجْرًا عَظِيْمًا (١٤٦)

১৪৬. অবশ্য তারা এদের মধ্যে শামিল নয় যারা তাওবাহ করবে, নিজেদেরকে সংশোধন করবে, আল্লাহ্‌কে মজবুতভাবে ধারণ করবে, আর নিজেদের দ্বীনকে আল্লাহ্‌র জন্য একনিষ্ঠ করবে। তখন তারা মু'মিনদের সঙ্গী হিসেবে গণ্য হবে আর আল্লাহ অচিরেই মু'মিনদেরকে মহা প্রতিফল দান করবেন।

مَا يَفْعَلُ اللهُ بِعَذَابِكُمْ إِنْ شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ط وَكَانَ اللهُ شَاكِرًا عَلِيْمًا (١٤٧)

১৪৭. তোমরা যদি শোকরগুজারি কর আর ঈমান আন তাহলে তোমাদেরকে শাস্তি দিয়ে আল্লাহ কী করবেন? আল্লাহ (সৎকাজের বড়ই) পুরস্কারদাতা, সর্ববিষয়ে জ্ঞাত।

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ إِلَّا مَنْ ظُلِمَ ط وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا (١٤٨)

১৪৮. খারাপ কথার প্রচার প্রপাগাণ্ডা আল্লাহ পছন্দ করেন না, তবে যার প্রতি অন্যায় করা হয়েছে (তার কথা আলাদা), আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

إِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا أَوْ تُخْفُوْهُ أَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا (١٤٩)

১৪৯. তোমরা যদি ভাল কাজ প্রকাশ্যে কর কিংবা তা গোপনে কর কিংবা মন্দকে ক্ষমা কর তবে আল্লাহও দোষত্রুটি মোচনকারী, ক্ষমতার অধিকারী।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ أَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ لا وَّيُرِيْدُوْنَ أَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا لا (١٥٠)

১৫০. যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলদেরকে অস্বীকার করে আর আল্লাহ ও রসূলদের মাঝে পার্থক্য সৃষ্টি করতে চায় আর বলে (রসূলদের) কতককে আমরা মানি আর কতককে মানি না, আর তারা তার (কুফর ও ঈমানের) মাঝ দিয়ে একটা রাস্তা বের করতে চায়

أُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ج وَأَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا (١٥١)

১৫১. তারাই হল প্রকৃত কাফির আর কাফিরদের জন্য আমি অবমাননাকর শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ أُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ أُجُوْرَهُمْ ط وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ع (١٥٢)

১৫২. আর যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলদের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে আর তাদের কারো মধ্যে কোন পার্থক্য করে না, তিনি অবশ্যই তাদেরকে তাদের পুরস্কার দান করবেন, আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

يَسْئَلُكَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَأَلُوْا مُوْسٰٓى أَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا أَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَأَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ج ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ج وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا (١٥٣)

১৫৩. কিতাবধারীগণ তোমাকে আসমান থেকে তাদের সামনে কিতাব নিয়ে আসতে বলে। তারা তো মূসার কাছে এর চেয়েও বড় দাবী পেশ করেছিল। তারা বলেছিল- আমাদেরকে প্রকাশ্যে আল্লাহ্‌কে দেখাও। তখন তাদের অন্যায় ও বাড়াবাড়ির কারণে বিদ্যুৎ তাদের উপর আঘাত হেনেছিল। অতঃপর তাদের কাছে স্পষ্ট প্রমাণ আসার পরেও তারা গো-বৎসকে (উপাস্য) গ্রহণ করেছিল, তাও আমি ক্ষমা করে দিয়েছিলাম, আর মূসাকে সুস্পষ্ট কর্তৃত্ব দান করেছিলাম।

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا

১৫৪. তাদের নিকট হতে অঙ্গীকার গ্রহণের জন্য

لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِي السَّبْتِ وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا (١٥٤)

আমি তূর পাহাড়কে তাদের উর্ধ্বে তুলে ধরেছিলাম, আর তাদেরকে বলেছিলাম- অবনত মস্তকে (নগর) দ্বারে প্রবেশ কর আর তাদেরকে বলেছিলাম শনিবারের আইন ভঙ্গ করো না, আর তাদের নিকট থেকে নিয়েছিলাম পাকা প্রতিশ্রুতি।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ بِاٰيٰتِ اللهِ وَقَتْلِهِمُ الْأَنْبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ط بَلْ طَبَعَ اللهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا ص (١٥٥)

১৫৫. (তাদের প্রতি আল্লাহ্র অসন্তোষ নেমে এসেছে) তাদের ওয়া'দা ভঙ্গের কারণে, আর আল্লাহ্র নিদর্শনসমূহকে অস্বীকার করার কারণে, অন্যায়ভাবে নাবীগণকে তাদের হত্যা করার কারণে, আর 'আমাদের হৃদয়গুলো আচ্ছাদিত' তাদের এ কথা বলার কারণে– বরং তাদের অস্বীকৃতির কারণে আল্লাহ তাদের হৃদয়গুলোতে মোহর মেরে দিয়েছেন। যে কারণে তাদের অল্পসংখ্যক ছাড়া ঈমান আনে না।

وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ بُهْتَانًا عَظِيْمًا لا (١٥٦)

১৫৬. (তাদের প্রতি আল্লাহ্র অসন্তোষ নেমে এসেছে) তাদের কুফরীর জন্য আর মারইয়ামের প্রতি তাদের গুরুতর অপবাদপূর্ণ কথা উচ্চারণের জন্য।

وَّقَوْلِهِمْ إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللهِ ج وَمَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ط وَإِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ط مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ إِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ج وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا لا (١٥٧)

১৫৭. আর 'আমরা আল্লাহর রসূল মাসীহ ঈসা ইবনু মারইয়ামকে হত্যা করেছি' তাদের এ উক্তির জন্য। কিন্তু তারা না তাকে হত্যা করেছে, না তাকে ক্রুশবিদ্ধ করেছে, কেবলমাত্র তাদের জন্য (এক লোককে) তার সদৃশ করা হয়েছিল, আর যারা এ বিষয়ে মতভেদ করেছিল তারাও এ সম্পর্কে সন্দেহে পতিত হয়েছিল। শুধু অমূলক ধারণার অনুসরণ ছাড়া এ ব্যাপারে তাদের কোন জ্ঞানই ছিল না। এটা নিশ্চিত সত্য যে, তারা তাকে হত্যা করেনি।

بَلْ رَّفَعَهُ اللهُ إِلَيْهِ ط وَكَانَ اللهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (١٥٨)

১৫৮. বরং আল্লাহ তাকে নিজের কাছে উঠিয়ে নিয়েছেন, আর আল্লাহ হলেন মহাপরাক্রমশালী, মহাবিজ্ঞানী।

وَإِنْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ إِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ قَبْلَ مَوْتِهٖ ج وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ج (١٥٩)

১৫৯. কিতাবওয়ালাদের মধ্যে এমন কেউ নেই যে, তার মৃত্যুর পূর্বে তার প্রতি অবশ্যই ঈমান আনবে না, আর ক্বিয়ামাতের দিন সে তাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে।

فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ طَيِّبٰتٍ أُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ كَثِيْرًا ۙ (١٦٠)

১৬০. আমি ইয়াহূদীদের জন্য পবিত্র বস্তুসমূহ যা তাদের জন্য হালাল ছিল, তা হারাম করে দিয়েছি তাদের বাড়াবাড়ির কারণে আর বহু লোককে আল্লাহ্‌র পথে তাদের বাধা দেয়ার কারণে।

وَّأَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ وَأَكْلِهِمْ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ط وَأَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا (١٦١)

১৬১. এবং তাদের সুদ গ্রহণের কারণে যদিও তাথেকে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল এবং তাদের অন্যায়ভাবে লোকেদের ধন-সম্পদ গ্রাস করার কারণে এবং আমি তাদের মাঝে যারা অবিশ্বাসী তাদের জন্যে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط أُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ أَجْرًا عَظِيْمًا ع (١٦٢)

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যে যারা জ্ঞানে পরিপক্ক আর মু'মিনগণ তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে আর তোমার পূর্বে যা অবতীর্ণ হয়েছে তাতে বিশ্বাস স্থাপন করে আর তারা নামায ক্বায়িমকারী ও যাকাত আদায়কারী এবং আল্লাহ্‌তে ও শেষ দিনের প্রতি বিশ্বাসী; এদেরকেই আমি শীঘ্র মহাপুরস্কার দান করব।

إِنَّآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ كَمَآ أَوْحَيْنَآ إِلٰى نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ج وَأَوْحَيْنَآ إِلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْمٰعِيْلَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْأَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَأَيُّوْبَ وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ج وَاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا ج (١٦٣)

১৬৩. আমি তোমার কাছে ওয়াহী পাঠিয়েছি যেমন নূহ ও তার আগের নাবীগণের নিকট ওয়াহী পাঠিয়েছিলাম, আর ইব্‌রাহীম, ইসমাঈল, ইসহাক, ইয়াকুব ও তার বংশধর আর ঈসা, আইয়ূব, ইউনুস, হারূন ও সুলায়মানের নিকটও ওয়াহী পাঠিয়েছিলাম আর আমি দাঊদকে যাবূর প্রদান করেছিলাম।

১৬৩। আবূ তাহির আহমাদ ইবনু 'আম্‌র ইবনু 'আবদুল্লাহ ইবনু 'আম্‌র ইবনু সারহ (রহঃ) .... 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর নিকট ওয়াহীর সূচনা হয়েছিল সত্য স্বপ্নের মাধ্যমে। আর তিনি যে স্বপ্নই দেখতেন তা সকালের সূর্যের মতই সুস্পষ্টরূপে সত্যে পরিণত হত। তাঁর কাছে একাকী থাকা প্রিয় হয়ে পড়ে এবং তারপর তিনি হেরা গুহায় নির্জনে কাটাতে থাকেন। আপন পরিবারের কাছে ফিরে আসার পূর্ব পর্যন্ত সেখানে তিনি একাধারে বেশ কয়েক রাত 'ইবাদাতে মগ্ন থাকতেন এবং এর জন্য কিছু খাদ্য সামগ্রী সঙ্গে নিয়ে যেতেন। তারপর তিনি খাদীজার কাছে ফিরে যেতেন এবং আরও কয়েক দিনের জন্য অনুরূপভাবে খাদ্য সামগ্রী নিয়ে আসতেন। তিনি হিরা গুহায় যখন ধ্যানে রত ছিলেন, তখন তাঁর নিকট ফেরেশতা আসলেন। বললেনঃ পড়ুন! তিনি (ﷺ) বললেনঃ আমি তো পড়তে

وَرُسُلاً قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ وَرُسُلاً لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوسٰى تَكْلِيمًا ج (١٦٤)

১৬৪. আমি সেই রসূলদের প্রতিও ওয়াহী পাঠিয়েছি যাদের সম্পর্কে আমি তোমাকে আগেই বলেছি, আর অনেক রসূল যাদের কথা আমি তোমাকে বলিনি। আর আল্লাহ মূসার সাথে কথা বলেছেন সরাসরি।

رُسُلاً مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (١٦٥)

১৬৫. রসূলগণ ছিলেন সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী যাতে রসূলদের আগমনের পর আল্লাহ্র বিরুদ্ধে মানুষের কোন অযুহাতের সুযোগ না থাকে। আল্লাহ হলেন মহাপরাক্রমশালী, বিজ্ঞানময়।

لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ أَنْزَلَ إِلَيْكَ أَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ج وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ (١٦٦)

১৬৬. কিন্তু আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, যা তিনি নাযিল করেছেন তা তাঁর জ্ঞানের ভিত্তিতেই নাযিল করেছেন। ফেরেশতারাও সে সাক্ষ্য দিচ্ছে আর সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا (١٦٧)

১৬৭. যারা কুফরী করে আর লোকেদেরকে আল্লাহ্র পথ হতে ফিরিয়ে রাখে তারা চরম পথভ্রষ্টতায় পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا لا (١٦٨)

১৬৮. যারা কুফরী করেছে আর বাড়াবাড়ি করেছে, আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করবেন না, তাদেরকে কোন পথও দেখাবেন না

إِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا (١٦٩)

১৬৯. জাহান্নামের পথ ছাড়া, যাতে তারা চিরকালের জন্য স্থায়ী হবে, আর এটা আল্লাহ্র জন্য সহজ।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ بِالْحَقِّ

১৭০. হে মানুষ! রসূল তোমাদের কাছে

জানি না। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেনঃ তখন ফেরেশতা আমাকে জড়িয়ে ধরে এমন চাপ দিলেন যে, আমার খুবই কষ্ট হল। তারপর আমাকে ছেড়ে দিয়ে বললেনঃ পড়ুন! আমি বললাম, আমি তো পড়তে সক্ষম নই। তারপর আমাকে জড়িয়ে ধরলেন এবং দ্বিতীয়বারও এমন জোরে চাপ দিলেন যে, আমার খুবই কষ্ট হল। পরে ছেড়ে দিয়ে বললেনঃ পড়ুন! আমি বললামঃ আমি তো পড়তে পারি না। এরপর আবার আমাকে জড়িয়ে ধরলেন এবং তৃতীয়বারও এমন জোরে চাপ দিলেন যে আমার খুবই কষ্ট হল। এরপর আমাকে ছেড়ে দিয়ে বললেনঃ "পাঠ করুন! আপনার প্রতিপালকের নামে, যিনি সৃষ্টি করেছেন; সৃষ্টি করেছেন মানুষকে 'আলাক' হতে। পাঠ করুন! আর আপনার প্রতিপালক মহিমান্বিত, যিনি কলমের সাহায্যে শিক্ষা দিয়েছেন, শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে যা সে জানত না" (সূরা আলাক ১০৫)। ....হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -মুসলিম ১৬০ [বুখারী ৪, আহমাদ ২৫৩৩৭, ২৫৪২৮]

مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ط وَإِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (١٧٠)

তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে সত্য বিধান নিয়ে এসেছে, কাজেই তোমরা ঈমান আন, এটা তোমাদের জন্য কল্যাণকর হবে, আর যদি কুফরী কর (তাহলে জেনে রেখ) আকাশসমূহে আর যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ্‌র আর আল্লাহ হলেন সর্বজ্ঞ, মহা কুশলী।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ ط إِنَّمَا الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَكَلِمَتُهُ ج أَلْقٰهَآ إِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ مِّنْهُ ز فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهِ قف وَلَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ط إِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ط إِنَّمَا اللّٰهُ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ط سُبْحٰنَهُ أَنْ يَّكُوْنَ لَهُ وَلَدٌ م لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ع (١٧١)

১৭১. ওহে কিতাবধারীগণ! তোমরা তোমাদের দ্বীনের ব্যাপারে বাড়াবাড়ি করো না, আর আল্লাহ সম্বন্ধে সত্য ছাড়া কিছু বলো না, ঈসা মাসীহ তো আল্লাহ্‌র রসূল আর তাঁর বানী যা তিনি মারইয়ামের নিকট প্রেরণ করেছিলেন, আর তাঁর পক্ষ হতে নির্দেশ, কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌র প্রতি ও তাঁর রসূলগণের প্রতি ঈমান আনো, আর বলো না 'তিন' (জন ইলাহ আছে), নিবৃত্ত হও, তা হবে তোমাদের জন্য কল্যাণকর, আল্লাহ তো একক ইলাহ, তিনি পবিত্র এথেকে যে, তাঁর সন্তান হবে। আসমানসমূহে আর যমীনে যা আছে সব কিছু তাঁরই, আর কর্মবিধায়ক হিসেবে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট।

لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ أَنْ يَّكُوْنَ عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰٓئِكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ط وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهِ وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ إِلَيْهِ جَمِيْعًا (١٧٢)

১৭২. মাসীহ আল্লাহ্‌র বান্দা হওয়াকে তুচ্ছ জ্ঞান করে না, আর নৈকট্যের অধিকারী ফেরেশতারাও না। যে তাঁর 'ইবাদাতকে হেয় জ্ঞান করে আর অহঙ্কার করে, তিনি তাদের সকলকে শীঘ্রই তাঁর কাছে একত্রিত করবেন।

فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ أُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهِ ج وَأَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ٥ لا وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (١٧٣)

১৭৩. কিন্তু যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে আল্লাহ তাদের পুরস্কার পুরোপুরি দান করবেন, আর নিজ অনুগ্রহে আরো বেশি দেবেন। আর যারা তুচ্ছ জ্ঞান করবে ও অহঙ্কার করবে তাদেরকে কষ্টদায়ক শাস্তি দান করবেন। আল্লাহ ব্যতীত তাদের জন্য তারা না পাবে কোন অভিভাবক, না (পাবে) কোন সাহায্যকারী।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمْ بُرْهَانٌ مِّنْ

১৭৪. হে মানবমণ্ডলী! তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে তোমাদের কাছে উজ্জ্বল প্রমাণ এসে

رَبِّكُمْ وَأَنْزَلْنَآ إِلَيْكُمْ نُوْرًا مُّبِيْنًا (١٧٤)

পৌঁছেছে, আর আমি তোমাদের নিকট সুস্পষ্ট জ্যোতি অবতীর্ণ করেছি।

فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ وَّيَهْدِيْهِمْ إِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ط (١٧٥)

১৭৫. অতঃপর যারা আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান আনে আর তাঁকে দৃঢ়ভাবে আঁকড়ে ধরে থাকে, অচিরেই তিনি তাদেরকে তাঁর রহমত ও অনুগ্রহের মধ্যে দাখিল করবেন এবং তাঁর দিকে সরল-সুদৃঢ় পথে পরিচালিত করবেন।

يَسْتَفْتُوْنَكَ ط قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي الْكَلٰلَةِ ط إِنِ امْرُؤٌ هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗٓ أُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ج وَهُوَ يَرِثُهَآ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ط فَإِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ط وَإِنْ كَانُوْٓا إِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْأُنْثَيَيْنِ ط يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ أَنْ تَضِلُّوْا ط وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ع (١٧٦)

১৭৬. লোকেরা তোমার কাছে ফাতাওয়া জিজ্ঞেস করছে; বল, আল্লাহ তোমাদেরকে পিতা-মাতাহীন নিঃসন্তান ব্যক্তি সম্পর্কে ফাতাওয়া দিচ্ছেন, কোন ব্যক্তি মারা গেলে তার যদি সন্তান না থাকে আর তার একটি বোন থাকে, তবে রেখে যাওয়া সম্পত্তির অর্ধেক সে পাবে, আর সে (মৃত নারী) যদি সন্তানহীনা হয় তবে তার ভাই তার উত্তরাধিকারী হবে, আর দু' বোন থাকলে তারা তার রেখে যাওয়া সম্পত্তির দু'-তৃতীয়াংশ পাবে, আর যদি ভাই ও বোন দু'ই থাকে, তবে পুরুষ পাবে দু'জন নারীর সমান। আল্লাহ সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করেছেন যাতে তোমরা বিভ্রান্তিতে পতিত না হও। আল্লাহ যাবতীয় ব্যাপারে পূর্ণরূপে অবহিত।

سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ

৫. সূরাহ আল-মায়িদাহ

আয়াতঃ ১২০, রুকূ'ঃ ১৬, মাদানী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ط ٥ أُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْأَنْعَامِ إِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّي الصَّيْدِ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ ط إِنَّ اللّٰهَ

১. ওহে মু'মিনগণ! তোমরা অঙ্গীকারসমূহ পূর্ণ কর। তোমাদের জন্য গৃহপালিত চতুস্পদ জন্তু হালাল করা হল- সেগুলো ছাড়া যেগুলোর বিবরণ তোমাদেরকে দেয়া হচ্ছে, আর ইহরাম অবস্থায় শিকার করা অবৈধ। আল্লাহ যা চান

১৭৬। আবূ ইসহাক (রহ.) হতে বর্ণিত। আমি বারাআ (রাঃ)-কে বলতে শুনেছি যে, সর্বশেষ নাযিলকৃত সূরাহ হচ্ছে "বারাআত" এবং এটি হচ্ছে সর্বশেষ নাযিলকৃত আয়াত। -বুখারী ৪৬০৫ [৪৩৬৪; মুসলিম ১৬১৮, তিরমিযী ৩০৪১, আবূ দাঊদ ২৮৮৯, আহমাদ ১৮১৬৪]

يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ (١)

হুকুম দেন।

يَٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَآ آٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ط وَإِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ط وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ أَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ أَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ص وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط إِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (٢)

২. ওহে মু'মিনগণ! আল্লাহ্‌র নিদর্শনাবলীর, হারাম মাসের, কা'বায় প্রেরিত কুরবানীর পশুর এবং গলদেশে মাল্য পরিহিত পশুর অসম্মান করো না, যারা নিজ প্রতিপালকের অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি লাভের উদ্দেশে পবিত্র গৃহের আশ্রয়ে চলেছে তাদেরও (অবমাননা) করো না। তোমরা যখন ইহরামমুক্ত হবে তখন শিকার করতে পার। তোমাদেরকে যারা মসজিদে হারাম থেকে বাধা প্রদান করেছিল, তাদের প্রতি শত্রুতা তোমাদেরকে যেন অবশ্যই সীমালঙ্ঘনে প্ররোচিত না করে। সৎকাজ ও তাক্বওয়ার ব্যাপারে তোমরা পরস্পরকে সহযোগিতা কর, পাপ ও সীমালঙ্ঘনের কাজে পরস্পরকে সহযোগিতা করো না। আল্লাহ্‌কে ভয় কর, আল্লাহ শাস্তি দানে অত্যন্ত কঠোর।

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ أَكَلَ السَّبُعُ إِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ قف وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَأَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْأَزْلَامِ ط ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ط اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ط اَلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَأَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْإِسْلَامَ دِيْنًا ط فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ

৩. তোমাদের জন্য হারাম করা হয়েছে মৃতজন্তু, (প্রবাহিত) রক্ত, শূকরের মাংস, আল্লাহ ছাড়া অন্যের নামে যবহকৃত পশু, আর শ্বাসরুদ্ধ হয়ে মৃত জন্তু, আঘাতে মৃত জন্তু, উপর থেকে পতনের ফলে মৃত, সংঘর্ষে মৃত আর হিংস্র জন্তুতে খাওয়া পশু– তবে জীবিত পেয়ে যা তোমরা যবহ করতে পেরেছ তা বাদে, আর যা কোন আস্তানায় (বা বেদীতে) যবহ করা হয়েছে, আর জুয়ার তীর দ্বারা ভাগ্য নির্ণয় করা (এগুলো তোমাদের জন্য হারাম করা হয়েছে)। এসবগুলো পাপ কাজ। আজ কাফিরগণ তোমাদের দ্বীনের বিরোধিতা করার ব্যাপারে পুরোপুরি নিরাশ হয়ে গেছে, কাজেই তাদেরকে ভয় করো না, কেবল আমাকেই ভয় কর। আজ আমি তোমাদের জন্য তোমাদের দ্বীনকে পূর্ণাঙ্গ করে দিলাম, তোমাদের প্রতি আমার নি'আমাত পূর্ণ করে দিলাম এবং ইসলামকে তোমাদের দ্বীন হিসেবে কবূল করে নিলাম। তবে কেউ পাপ করার প্রবণতা ব্যতীত ক্ষুধার জ্বালায় (নিষিদ্ধ বস্তু খেতে) বাধ্য হলে

مُتَجَانِفٍ لِّإِثْمٍ ۙ فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣)

আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يَسْئَلُوْنَكَ مَاذَآ أُحِلَّ لَهُمْ ۭ قُلْ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ ز فَكُلُوْا مِمَّآ أَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ص وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (٤)

৪. লোকেরা তোমাকে জিজ্ঞেস করছে তাদের জন্য কী কী হালাল করা হয়েছে। বল, যাবতীয় ভাল ও পবিত্র বস্তু তোমাদের জন্য হালাল করা হয়েছে, আর শিকারী পশু-পক্ষী- যাদেরকে তোমরা শিক্ষা দিয়েছ যেভাবে আল্লাহ তোমাদেরকে শিক্ষা দিয়েছেন- সুতরাং তারা যা তোমাদের জন্য ধরে রাখে তা তোমরা ভক্ষণ করবে আর তাতে আল্লাহ্‌র নাম উচ্চারণ করবে, আর আল্লাহ্‌কে ভয় করবে, আল্লাহ হিসাব গ্রহণে ত্বরিৎগতি।

اَلْيَوْمَ أُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۭ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ص وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ز وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ إِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ أَخْدَانٍ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْإِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ز وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ع (٥)

৫. আজ তোমাদের জন্য যাবতীয় ভাল ও পবিত্র বস্তু হালাল করা হল আর যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তাদের খাদ্য তোমাদের জন্য হালাল, আর তোমাদের খাদ্য তাদের জন্য হালাল, সচ্চরিত্রা মু'মিন নারী এবং তোমাদের পূর্বে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তাদের সচ্চরিত্রা নারী তোমাদের জন্য হালাল করা হল যখন তোমরা তাদেরকে মোহরানা প্রদান কর, বিবাহের দূর্গে স্থান দানের উদ্দেশে, ব্যভিচারী হিসেবে নয় এবং গোপন সঙ্গী গ্রহণকারী হিসেবে নয়। কেউ ঈমান অমান্য করলে, তার কার্যাদি নিষ্ফল হবে। আর সে আখেরাতে ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا قُمْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ إِلَى الْمَرَافِقِ

৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন সলাতের জন্য উঠবে, তখন তোমাদের মুখমণ্ডল এবং কনুই পর্যন্ত হস্তদ্বয় ধৌত করবে। আর তোমাদের মাথা

৩। ত্বরিক ইবনু শিহাব হতে বর্ণিত। ইয়াহূদীগণ 'উমার ফারূক (রাঃ)-কে বলল যে, আপনারা এমন একটি আয়াত পড়ে থাকেন তা যদি আমাদের মধ্যে নাযিল হত, তবে আমরা সেটাকে "ঈদ" হিসেবে গ্রহণ করতাম। 'উমার (রাঃ) বললেন, আমি জানি এটা কখন নাযিল হয়েছে, কোথায় নাযিল হয়েছে এবং নাযিলের সময় রসূলুল্লাহ (ﷺ) কোথায় ছিলেন, আয়াতটি আরাফাতের দিন নাযিল হয়েছিল। আল্লাহ্‌র শপথ আমরা সবাই 'আরাফাতে ছিলাম, সেই আয়াতটি হল: اَلْيَوْمَ أَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ আজ আমি তোমাদের জন্য তোমাদের দ্বীনকে পূর্ণ করে দিলাম। সুফ্ইয়ান সাওরী বলেন, এ ব্যাপারে আমার সন্দেহ আছে। -বুখারী ৪৬০৬ [৪৫; মুসলিম ৩০১৭, তিরমিযী ৩০৪৩, নাসায়ী ৩০০২, ৫০১২, আহমাদ ১৮৯, ২৭৪]

وَامْسَحُوْا بِرُؤُوْسِكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ إِلَى الْكَعْبَيْنِ ط وَإِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ط وَإِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰى أَوْ عَلٰى سَفَرٍ أَوْ جَآءَ أَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآئِطِ أَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَأَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ط مَا يُرِيْدُ اللهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٦)

মাসেহ করবে এবং পা গোড়ালি পর্যন্ত ধৌত করবে। তোমরা যদি অপবিত্র অবস্থায় থাক তবে বিধিমত পবিত্রতা অর্জন করবে। আর যদি পীড়িত হও বা সফরে থাক অথবা তোমাদের কেউ যদি মলত্যাগ করে আসে অথবা যদি তোমরা স্ত্রীদের সাথে সহবাস কর আর পানি না পাও তাহলে পবিত্র মাটি দিয়ে তায়াম্মুম করবে তা দিয়ে তোমাদের মুখমণ্ডল ও হাত মাসেহ করবে। আল্লাহ তোমাদের উপর সংকীর্ণতা চাপিয়ে দিতে চান না, তিনি তোমাদেরকে পবিত্র করতে চান আর তোমাদের প্রতি তাঁর নি'আমাত পূর্ণ করতে চান, যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖٓ لا إِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ز وَاتَّقُوا اللهَ ط إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٧)

৭. তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র নিআমতের কথা স্মরণ কর আর তাঁর অঙ্গীকারের কথা যা তিনি তোমাদের নিকট থেকে গ্রহণ করেছিলেন যখন তোমরা বলেছিলে– আমরা শুনলাম ও মেনে নিলাম। আল্লাহ্‌কে ভয় কর, অন্তরে যা আছে সে সম্পর্কে আল্লাহ খুব ভালভাবেই অবগত আছেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ز وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰٓى أَلَّا تَعْدِلُوْا ط اِعْدِلُوْا قف هُوَ أَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ز وَاتَّقُوا اللهَ ط إِنَّ اللهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (٨)

৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা ন্যায়ের সাক্ষ্যদাতা হিসেবে আল্লাহ্‌র পথে দৃঢ়ভাবে দণ্ডায়মান থাক, কোন সম্প্রদায়ের প্রতি শত্রুতা তোমাদেরকে যেন এতটা উত্তেজিত না করে যে তোমরা ইনসাফ করা ত্যাগ করবে, সুবিচার কর, এটা তাক্বওয়ার নিকটবর্তী, তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আল্লাহ সম্পূর্ণ ওয়াকিফহাল।

৬। 'আম্মার ইবনু ইয়াসার (রাঃ) থেকে বর্ণিত। তিনি একদা 'উমার ইবনু খাত্তাবকে বললেন, আপনার কি মনে আছে যে, আমি ও আপনি সফরে ছিলাম এবং উভয়ই যুনুবী (অপবিত্র) হয়েছিলাম। কিন্তু আপনি নামায আদায় করলেন না। কিন্তু আমি মাটিতে গড়াগড়ি করলাম ও নামায আদায় করলাম। তারপর আমি নাবী (ﷺ) -কে এ বিষয়ে জানালাম। তিনি বললেন, এটিই তো তোমার জন্য যথেষ্ট ছিল। এ বলে নাবী (ﷺ) তাঁর দু'হাতের তালু মাটিতে মারলেন এবং তা ফুঁ দিয়ে ঝাড়লেন। তারপর তার সাহায্যে নিজের মুখমণ্ডল ও হস্তদ্বয় মাসাহ্‌ করলেন। -বুখারী ৩৩৮ [৩৩৯, ৩৪০, ৩৪২, ৩৪৩, ৩৪৫-৩৪৭; মুসলিম ৩৬৮, নাসায়ী ৩১২, ৩১৬, ৩১৭, ৩১৯, ৩২০; আবূ দাঊদ ৩২১, ৩২২; ইবনু মাজাহ ৫৬৯, আহমাদ ১৭৮৫১, ১৭৮৫৫, ১৮৪০৩; দারিমী ৭৪৫]

وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ عَظِيْمٌ (٩)

৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকাজ করে তাদের প্রতি আল্লাহ ওয়া'দা করেছেন যে, তাদের জন্য রয়েছে ক্ষমা ও মহা পুরস্কার।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ (١٠)

১০. যারা কুফরী করে, আর আমার নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করে তারা হল জাহান্নামের অধিবাসী।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ هَمَّ قَوْمٌ أَنْ يَّبْسُطُوْٓا إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ج وَاتَّقُوا اللّٰهَ ط وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ع (١١)

১১. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহর নি'আমাতের কথা স্মরণ কর যখন একটি সম্প্রদায় তোমাদের বিরুদ্ধে তাদের হস্ত উত্তোলন করতে চেয়েছিল, তখন তিনি তোমাদের থেকে তাদের হাত নিবৃত্ত করেছিলেন। আল্লাহ্কে ভয় কর, আর মুমিনগণ যেন আল্লাহরই উপর ভরসা করে।

وَلَقَدْ أَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ج وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ط وَقَالَ اللّٰهُ إِنِّيْ مَعَكُمْ ط لَئِنْ أَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَأَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا لَّأُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَلَأُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ج فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ (١٢)

১২. আল্লাহ বানী ইসরাঈলের নিকট থেকে প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছিলেন, আর তাদের মধ্যে বারজন প্রধান নিযুক্ত করেছিলেন। আর আল্লাহ বলেছিলেন, আমি তোমাদের সঙ্গে আছি, যদি তোমরা নামায কায়িম কর, যাকাত আদায় কর এবং আমার রসূলগণের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর আর তাদেরকে সাহায্য-সহযোগিতা কর আর আল্লাহ্কে ঋণ দান কর উত্তম ঋণ, তাহলে আমি তোমাদের পাপগুলো অবশ্য অবশ্যই দূর করে দেব, আর অবশ্য অবশ্যই তোমাদেরকে জান্নাতে দাখিল করাব যার নিম্নে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। এরপরও তোমাদের মধ্যে যারা কুফুরী করবে তারা সত্য সঠিক পথ হারিয়ে ফেলবে।

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ج يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ج وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ مِّنْهُمْ إِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ط إِنَّ اللّٰهَ

১৩. তাদের অঙ্গীকার ভঙ্গের কারণে আমি তাদেরকে লা'নাত করেছি আর তাদের হৃদয়কে আরো শক্ত করে দিয়েছি, তারা শব্দগুলোকে স্বস্থান থেকে বিচ্যুত করেছিল এবং তাদেরকে দেয়া উপদেশের বড় অংশ তারা ভুলে গিয়েছিল। তুমি অল্প সংখ্যক ছাড়া তাদেরকে সর্বদা বিশ্বাসঘাতকতা করতে দেখতে পাবে। কাজেই তাদেরকে ক্ষমা কর, মার্জনা কর, আল্লাহ

Contents

يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (١٣)

সৎকর্মশীলদের ভালবাসেন।

وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّا نَصٰرٰٓى أَخَذْنَا مِيْثَاقَهُمْ
فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ص فَأَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ
الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ط وَسَوْفَ
يُنَبِّئُهُمُ اللهُ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ (١٤)

১৪. আর যারা বলে "আমরা খ্রীস্টান" আমি তাদের হতেও অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলাম। কিন্তু তারা তাদের প্রতি উপদেশের একটা বড় অংশ ভুলে গিয়েছিল। কাজেই আমি কিয়ামাত পর্যন্ত তাদের পরস্পরের মধ্যে শত্রুতা ও বিদ্বেষ জিইয়ে দিয়েছি। তারা যা করছিল অচিরেই আল্লাহ তা তাদেরকে জানিয়ে দিবেন।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ
لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ط قَدْ جَآءَكُمْ مِّنَ اللهِ
نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ لا (١٥)

১৫. হে কিতাবধারীগণ! তোমাদের কাছে আমার রসূল এসে গেছে, সে তোমাদেরকে অনেক বিষয় বর্ণনা করে কিতাব থেকে যা তোমরা গোপন করতে আর অনেক বিষয় উপেক্ষা করে। তোমাদের নিকট আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে জ্যোতি ও স্পষ্ট কিতাব এসেছে।

يَّهْدِيْ بِهِ اللهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ سُبُلَ
السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ
بِإِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (١٦)

১৬. আল্লাহ তদ্দ্বারা তাদেরকে শান্তি ও নিরাপত্তার পথে পরিচালিত করেন যারা তাঁর সন্তুষ্টি অনুসন্ধান করে এবং নিজ অনুমতিক্রমে তিনি তাদেরকে অন্ধকার হতে বের করে আলোর দিকে নিয়ে আসেন আর তাদেরকে সরল সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّ اللهَ هُوَ الْمَسِيْحُ
ابْنُ مَرْيَمَ ط قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ مِنَ اللهِ شَيْئًا
إِنْ أَرَادَ أَنْ يُّهْلِكَ الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهٗ
وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا ط وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ط يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ط وَاللهُ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٧)

১৭. তারা কুফরী করেছে যারা বলে মাসীহ্ ইবনে মারইয়ামই আল্লাহ। বল, মাসীহ ইবনে মারইয়াম, আর তার মা এবং পৃথিবীতে যারা আছে সকলকে ধ্বংস করতে চাইলে আল্লাহ্‌র বিরুদ্ধে কারো এতটুকু ক্ষমতা আছে কি? আসমানসমূহে আর পৃথিবীতে ও এদের মধ্যে যা কিছু আছে সব আল্লাহ্‌রই মালিকানাধীন। তিনি যা ইচ্ছে সৃষ্টি করেন। আল্লাহ্ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ أَبْنٰٓؤُا اللهِ
وَأَحِبَّآؤُهٗ ط قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ بِذُنُوْبِكُمْ ط

১৮. ইয়াহূদী ও নাসারারা বলে, আমরা আল্লাহ্‌র পুত্র ও তাঁর প্রিয়পাত্র। বল, তাহলে তোমাদের পাপের জন্য আল্লাহ তোমাদেরকে শাস্তি দেন কেন? বরং তিনি যাদের সৃষ্টি করেছেন তোমরা তাদের

بَلْ أَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ خَلَقَ ط يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ط وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ز وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ (١٨)

অন্তর্গত মানুষ, তিনি যাকে ইচ্ছে ক্ষমা করেন, যাকে ইচ্ছে শাস্তি দেন, আকাশসমূহ ও পৃথিবী আর এদের মধ্যে যা আছে সবকিছুর সার্বভৌমত্ব আল্লাহ্‌রই জন্য, আর প্রত্যাবর্তন তাঁরই পানে।

يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ أَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْ م بَشِيْرٍ وَّلَا نَذِيْرٍ ز فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ع (١٩)

১৯. ওহে আহলে কিতাব! রসূল প্রেরণে বিরতির পর তোমাদের কাছে আমার রসূল এসে স্পষ্টভাবে তোমাদের নিকট বর্ণনা করে দিচ্ছে যাতে তোমরা বলতে না পার যে, আমাদের কাছে কোন সুসংবাদদাতা ও সাবধানকারী আগমন করেনি। এখন তাই সুসংবাদদাতা ও সাবধানকারী এসে গেছে। আর আল্লাহ হচ্ছেন সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ أَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ق وَّاٰتٰكُمْ مَّا لَمْ يُؤْتِ أَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ (٢٠)

২০. স্মরণ কর, যখন মূসা তার সম্প্রদায়কে বলেছিল, হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র নি'য়ামাত স্মরণ কর যে, তিনি তোমাদের মধ্যে নাবী করেছেন এবং তোমাদেরকে বাদশাহ করেছেন আর তোমাদেরকে তিনি এমন কিছু দিয়েছেন যা বিশ্বভুবনে অন্য কাউকে দেননি।

يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْأَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ الَّتِيْ كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوْا عَلٰى أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ (٢١)

২১. হে আমার সম্প্রদায়! তোমাদের জন্য যে পবিত্র ভূমি আল্লাহ নির্দিষ্ট করেছেন তাতে প্রবেশ কর আর পশ্চাতে ঘুরে দাঁড়িও না, তা করলে ধ্বংসে পতিত হবে।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى إِنَّ فِيْهَا قَوْمًا جَبَّارِيْنَ ق صلے وَإِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوْا مِنْهَا ج فَإِنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُوْنَ (٢٢)

২২. তারা বলল, হে মূসা! ওখানে অত্যন্ত শক্তিধর এক সম্প্রদায় আছে, তারা ওখান থেকে বের না হওয়া পর্যন্ত আমরা ওখানে প্রবেশ করব না, তারা যদি বের হয় তাহলেই আমরা প্রবেশ করব।

قَالَ رَجُلٰنِ مِنَ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ أَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوْا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ج فَإِذَا دَخَلْتُمُوْهُ فَإِنَّكُمْ غٰلِبُوْنَ ج ە وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوْٓا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٢٣)

২৩. যারা (আল্লাহকে) ভয় করছিল তাদের মধ্যে দু'জন লোক যাদেরকে আল্লাহ অনুগ্রহ করেছিলেন বলল, তাদের দরজায় হানা দাও, ঢুকলেই তোমরা জয়ী হয়ে যাবে। তোমরা মু'মিন হলে আল্লাহর উপর ভরসা কর।

Contents

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى إِنَّا لَنْ نَّدْخُلَهَآ أَبَدًا مَّا دَامُوْا فِيْهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ فَقٰتِلَآ إِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُوْنَ (٢٤)

২৪. তারা বলল, হে মূসা! তারা ওখানে যদ্দিন থাকবে তদ্দিন আমরা ওখানে কক্ষনো প্রবেশ করব না, কাজেই তুমি আর তোমার প্রতিপালক যাও আর যুদ্ধ কর, আমরা এখানেই বসে রইলাম।

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ لَآ أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِيْ وَأَخِيْ فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (٢٥)

২৫. সে বলল, "হে আমার প্রতিপালক! আমার আর আমার ভাইয়ের উপর ছাড়া কারো উপর আমার ক্ষমতা নেই, কাজেই এই বিদ্রোহী সম্প্রদায় থেকে আমাদেরকে পৃথক করে দিন।

قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِيْنَ سَنَةً ج يَتِيْهُوْنَ فِي الْأَرْضِ ط فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ ع (٢٦)

২৬. আল্লাহ বললেন, তবে তা চল্লিশ বছর পর্যন্ত তাদের জন্য নিষিদ্ধ হল, উদভ্রান্তের মত তারা যমীনে ঘুরে বেড়াবে, কাজেই এই অবাধ্য সম্প্রদায়ের জন্য হা-হুতাশ করো না।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ اٰدَمَ بِالْحَقِّ م إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْاٰخَرِ ط قَالَ لَأَقْتُلَنَّكَ ط قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ (٢٧)

২৭. আদামের দু'পুত্রের খবর তাদেরকে সঠিকভাবে জানিয়ে দাও। উভয়ে যখন একটি করে কুরবানী হাজির করেছিল তখন তাদের একজনের নিকট হতে কবূল করা হল। অন্যজনের নিকট হতে কবূল করা হল না। সে বলল, আমি তোমাকে অবশ্য অবশ্যই হত্যা করব। অন্যজন বলল, 'আল্লাহ কেবল মুত্তাকীদের কুরবানী কবূল করেন,

لَئِنْۢ بَسَطْتَّ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِيْ مَآ أَنَا بِبَاسِطٍ يَّدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ج إِنِّيْٓ أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ (٢٨)

২৮. আমাকে হত্যা করার জন্য তুমি আমার দিকে হাত বাড়ালেও আমি তোমাকে হত্যা করার জন্য তোমার দিকে হাত বাড়াব না, আমি বিশ্ব জগতের প্রতিপালক আল্লাহ্কে ভয় করি।

إِنِّيْٓ أُرِيْدُ أَنْ تَبُوْٓأَ بِإِثْمِيْ وَإِثْمِكَ فَتَكُوْنَ مِنْ أَصْحٰبِ النَّارِ ج وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ج (٢٩)

২৯. আমি চাই তুমি আমার ও তোমার পাপের বোঝা বহন কর আর অগ্নিবাসী হয়ে যাও, অন্যায়কারীদের এটাই প্রতিদান।'

২৪। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'উদ বলেন যে, বাদ্‌র যুদ্ধের দিন মিক্‌দাদ (রাঃ) বলেছিলেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! ইসরাঈলীরা মূসা (আঃ)-কে যেমন বলেছিল, "যাও তুমি ও তোমার প্রতিপালক যুদ্ধ কর, আমরা এখানে বসে থাকব"– আমরা আপনাকে সে রকম বলব না বরং আপনি এগিয়ে যান, আমরা আপনার সঙ্গেই আছি, তখন রসূল (সাঃ) থেকে সব দুশ্চিন্তা দূর হয়ে গেল। –বুখারী ৪৬০৯ [৩৯৫২; আহমাদ ৩৬৯০, ৪০৫৯, ৪৩৬৩]

فَطَوَّعَتْ لَهٗ نَفْسُهٗ قَتْلَ أَخِيْهِ فَقَتَلَهٗ فَأَصْبَحَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (٣٠)

৩০. অতঃপর তার আত্মা তাকে ভ্রাতৃহত্যার কাজে প্ররোচিত করল। ফলতঃ সে তাকে হত্যা করল এবং ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَّبْحَثُ فِي الْأَرْضِ لِيُرِيَهٗ كَيْفَ يُوَارِيْ سَوْءَةَ أَخِيْهِ ط قَالَ يَا وَيْلَتٰٓى أَعَجَزْتُ أَنْ أَكُوْنَ مِثْلَ هٰذَا الْغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوْءَةَ أَخِيْ ج فَأَصْبَحَ مِنَ النّٰدِمِيْنَ ج ۛ(٣١)

৩১. তারপর আল্লাহ একটি কাক পাঠালেন, সে মাটি খনন করতে লাগল, সে তার ভাইয়ের লাশ কীভাবে গোপন করবে তা দেখানোর জন্য। সে বলল, ধিক আমাকে! আমি এই কাকটির মতও হতে পারলাম না যাতে আমার ভাইয়ের লাশ গোপন করতে পারি? তাই সে অনুতপ্ত হল।

مِنْ أَجْلِ ذٰلِكَ ج ۛ كَتَبْنَا عَلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ أَنَّهٗ مَنْ قَتَلَ نَفْسًاۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ أَوْ فَسَادٍ فِي الْأَرْضِ فَكَأَنَّمَا قَتَلَ النَّاسَ جَمِيْعًا ط وَمَنْ أَحْيَاهَا فَكَأَنَّمَآ أَحْيَا النَّاسَ جَمِيْعًا ط وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا بِالْبَيِّنٰتِ ز ثُمَّ إِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ فِي الْأَرْضِ لَمُسْرِفُوْنَ (٣٢)

৩২. এ কারণেই আমি বানী ইসরাঈলের জন্য বিধান দিয়েছিলাম যে, যে ব্যক্তি মানুষ হত্যা কিংবা যমীনে সন্ত্রাস সৃষ্টির কারণ ব্যতীত কাউকে হত্যা করবে সে যেন তামাম মানুষকেই হত্যা করল। আর যে মানুষের প্রাণ বাঁচালো, সে যেন তামাম মানুষকে বাঁচালো। তাদের কাছে আমার রসূলগণ সুস্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে এসেছিল, এরপরও তাদের অধিকাংশই পৃথিবীতে বাড়াবাড়িই করেছিল।

إِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِيْنَ يُحَارِبُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا أَنْ يُّقَتَّلُوْٓا أَوْ يُصَلَّبُوْٓا أَوْ تُقَطَّعَ أَيْدِيْهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ مِّنْ خِلَافٍ أَوْ يُنْفَوْا مِنَ الْأَرْضِ ط ذٰلِكَ لَهُمْ خِزْيٌ فِي الدُّنْيَا وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ لا (٣٣)

৩৩. যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করে আর যমীনে বিশৃঙ্খলা ছড়িয়ে বেড়ায় তাদের শাস্তি হল এই যে, তাদেরকে হত্যা করা হবে অথবা ক্রুশবিদ্ধ করা হবে অথবা তাদের হাত পা বিপরীত দিক থেকে কেটে ফেলা হবে, অথবা তাদেরকে দেশ থেকে নির্বাসিত করা হবে। এ হল তাদের জন্য দুনিয়াতে লাঞ্ছনা, আর তাদের জন্য আখেরাতে রয়েছে মহাশাস্তি।

৩৩। আবূ ক্বিলাবাহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি 'উমার ইবনু 'আবদুল 'আযীয (রহ.)-এর পেছনে উপবিষ্ট ছিলেন। তাঁরা কাসামাত দণ্ড সম্পর্কিত হাদীসটি আলোচনা করলেন এবং এর অবস্থা সম্পর্কে আলাপ করলেন, তাঁরা মৃত্যুদণ্ডের পক্ষে বললেন এবং এও বললেন যে, খুলাফায়ে রাশিদীন এ পদ্ধতিতে মৃত্যুদণ্ড কার্যকর করেছেন। এরপর তিনি আবূ কিলাবার প্রতি তাকালেন, আবূ কিলাবাহ তাঁর পেছনে ছিলেন। তিনি 'আবদুল্লাহ ইবনু যায়দ নামে কিংবা আবূ কিলাবাহ নামে ডেকে বললেন, এ ব্যাপারে তোমার মতামত কী? আমি বললাম, বিয়ের পর ব্যভিচার, কিসাস নয়

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهِمْ ج فَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (٣٤)

৩৪. (তবে এ শাস্তি) তাদের জন্য নয় যারা তোমাদের আয়ত্বে আসার পূর্বে তাওবা করবে। জেনে রেখ, আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَابْتَغُوْٓا إِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (٣٥)

৩৫. হে ঈমানদারগণ! আল্লাহকে ভয় কর, তাঁর নৈকট্য অনুসন্ধান কর এবং তাঁর পথে জিহাদ কর যাতে তোমরা সফলকাম হতে পার।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهُ مَعَهُ لِيَفْتَدُوْا بِهِ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ج وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٣٦)

৩৬. যারা কুফরী করেছে দুনিয়ায় যা কিছু আছে সব যদি তাদের হয় এবং আরো সমপরিমাণও হয় ক্বিয়ামাত দিবসের শাস্তি থেকে পরিত্রাণের মুক্তিপণ হিসেবে, তবুও তা তাদের থেকে গ্রহণ করা হবে না; তাদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

يُرِيْدُوْنَ أَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ز وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (٣٧)

৩৭. তারা আগুন থেকে বেরিয়ে আসতে চাইবে, কিন্তু তারা তাথেকে বের হতে পারবে না, তাদের জন্য আছে স্থায়ী শাস্তি।

وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا أَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا مِّنَ اللهِ ط وَاللهُ

৩৮. আর চোর ও চোরনী তাদের হাত কেটে দাও, তাদের কৃতকর্মের ফল স্বরূপ, আল্লাহর পক্ষ থেকে দৃষ্টান্তমূলক শাস্তি। আল্লাহ হলেন

এমন হত্যা এবং আল্লাহ ও তাঁর রসূল -এর বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণার কোন একটি ব্যতীত অন্য কোন কারণে কাউকে মৃত্যুদণ্ড দেয়া ইসলামে বৈধ বলে আমার জানা নেই।

আনবাসা বললেন, আনাস (ﷺ) আমাদেরকে হাদীস এভাবে বর্ণনা করেছেন (অর্থাৎ হাদীসে অরনীন)। আমি (আবূ ক্বিলাবাহ) বললাম, আমাকেও আনাস (ﷺ) এ হাদীস বর্ণনা করেছেন। তিনি বলেছেন, একদল লোক নাবী (ﷺ) -এর নিকট এসে তাঁর সঙ্গে আলাপ করল, তারা বলল, আমরা এ দেশের আবহাওয়ার সঙ্গে নিজেদেরকে খাপ খাওয়াতে পারছি না। রসূল (ﷺ) বললেন, এগুলো আমার উট, ঘাস খাওয়ার জন্যে বের হচ্ছে, তোমরা এগুলোর সঙ্গে যাও এবং এদের দুধ ও পেশাব পান কর। তারা ওগুলোর সঙ্গে বেরিয়ে গেল এবং দুধ ও প্রস্রাব পান করে সুস্থ হয়ে উঠল, এরপর রাখালের উপর আক্রমণ করে তাকে হত্যা করে পশুগুলো লুট করে নিয়ে গেল। এখন তাদেরকে হত্যা না করার পক্ষে আর কোন যুক্তিই থাকল না। তারা নরহত্যা করেছে, আল্লাহ ও তাঁর রসূল (ﷺ) -এর বিরুদ্ধে যুদ্ধ ঘোষণা করেছে এবং রসূল (ﷺ) -কে ভয় দেখিয়েছে। 'আনবাসা আশ্চর্য হয়ে বলল, সুবহানাল্লাহ! আমি বললাম, আমার এ হাদীস সম্পর্কে তুমি কি আমাকে মিথ্যা অপবাদ দেবে? 'আনবাসা বলল, আনাস (ﷺ) আমাদেরকে এ হাদীস বর্ণনা করেছেন, আবূ কিলাবাহ বললেন, তখন 'আনবাসা বলল, হে এ দেশবাসী (অর্থাৎ সিরিয়াবাসী) এ রকম ব্যক্তিবর্গ যতদিন তোমাদের মধ্যে থাকবে ততদিন তোমরা কল্যাণের মধ্যে থাকবে। –বুখারী ৪৬১০ [২৩৩; মুসলিম ১৬৭১, তিরমিযী ৭২, ১৭৭৩, ১৮৪৫; নাসায়ী ৩০৫, ৩০৬, ৪০২৪, ৪০২৫, ৪০২৭-৪০৩২, ৪০৩৪, ৪০৩৫; আবূ দাঊদ ৪৩৬৪, ইবনু মাজাহ ২৫৭৮, ৩৫০৩; আহমাদ ১১৬৩১, ১২২২৮]

عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٣٨)

মহাপরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَأَصْلَحَ فَإِنَّ اللهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ؕ إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣٩)

৩৯. কিন্তু অন্যায় করার পর কেউ তাওবা করলে এবং (নিজেকে) সংশোধন করলে, আল্লাহ তার প্রতি ক্ষমাদৃষ্টি করেন, আল্লাহ হলেন বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٤٠)

৪০. তুমি কি জান না আল্লাহ, আকাশসমূহ ও যমীনের সার্বভৌমত্ব তাঁরই, যাকে ইচ্ছে তিনি শাস্তি দেন, যাকে ইচ্ছে ক্ষমা করেন, আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

يٰٓأَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِأَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَأْتُوْكَ ؕ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ إِنْ أُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَإِنْ لَّمْ تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ؕ وَمَنْ يُّرِدِ اللهُ فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ

৪১. হে রসূল! কুফরীর ব্যাপারে তাদের প্রতিযোগিতা যেন তোমাকে দুঃখ না দেয়, যারা মুখে বলে ঈমান এনেছি কিন্তু তাদের অন্তর ঈমান আনেনি। আর যারা ইয়াহূদী, তারা মিথ্যা কথা শুনতে বিশেষ পারদর্শী, তারা তোমার কথাগুলো অন্য সম্প্রদায়ের স্বার্থে কান পেতে শোনে যারা তোমার নিকট (কখনো) আসেনি, এরা আল্লাহর কিতাবের শব্দগুলোকে প্রকৃত অর্থ হতে বিকৃত করে। তারা বলে, তোমরা এ রকম নির্দেশপ্রাপ্ত হলে মানবে, আর তা না হলে বর্জন করবে। বস্তুত আল্লাহই যাকে ফিতনায় ফেলতে

৩৮। 'আয়িশাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, মাখযুমী গোত্রের এক মহিলা চুরি করেছিল। তার এ ব্যাপারটি কুরাইশদের বিশিষ্ট ব্যক্তিগণকে ভীষণ দুশ্চিন্তায় ফেলল। (কারণ একটি অভিজাত পরিবারের মেয়ের হাত চুরির অপরাধে কিভাবে কাটা যেতে পারে?) তারা বলতে লাগলো, তার এই ব্যাপারে নাবী (ﷺ) -এর সাথে কে- (সুপারিশের) কথা বলবে? কয়েকজন বললো, যদি (এ ব্যাপারে) তাঁর কাছে কেউ বলার সাহস করে, তবে একমাত্র উসামা ইবনু যায়দই করতে পারে। তিনি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর প্রিয়তম ব্যক্তি। (তাঁকে পাঠানো হলো) অতঃপর উসামা (এ ব্যাপারে) রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর সাথে কথা বললেন। নাবী (ﷺ) বললেনঃ তুমি কি আল্লাহর (জারি করা) দণ্ডবিধানগুলোর মধ্যে একটি সাজার বিধান মূলতবী করার ব্যাপারে সুপারিশ করছ? অতঃপর তিনি উঠে পড়লেন এবং (সবার সামনে) এক ভাষণ দান করলেন। বললেন, তোমাদের পূর্ববর্তী জাতিগুলো এ জন্যেই ধ্বংস হয়েছে যে, তাদের মধ্যে যখন কোন উচ্চ বংশের লোক চুরি করতো, তারা তাকে ছেড়ে দিত। আর যদি তাদের মধ্যে দুর্বল কেউ চুরি করতো তবে তাকে সাজা দিত। আল্লাহর কসম! যদি মুহাম্মাদ (ﷺ) -এর মেয়ে (অর্থাৎ আমার মেয়ে) ফাতিমাও চুরি করে, তবে অবশ্যই তার হাতও আমি কেটে ফেলব। –বুখারী ৩৪৭৫ [২৬৪৮, ৩৭৩৩, ৪৩০৪, ৬৭৮৭, ৬৭৮৮, ৬৮০০; মুসলিম ১৬৮৮, তিরমিযী ১৪৩০, নাসায়ী ৪৮৯৫, ৪৮৯৭-৪৯০৩; আবূ দাউদ ৪৩৭৩, ইবনু মাজাহ ২৫৪৭, আহমাদ ২২৯৬৮, ২৪৭৬৯; দারিমী ২৩০২]

Contents

مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۗ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ أَنْ يُّطَهِّرَ قُلُوْبَهُمْ ۗ لَهُمْ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ ۖ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (٤١)

চান, তার জন্য আল্লাহর কাছে তোমার কিছুই করার নেই। ওরা হল সেই লোক, যাদের অন্ত রাত্মাকে আল্লাহ পবিত্র করতে চান না। তাদের জন্য দুনিয়াতে আছে লাঞ্ছনা, আর তাদের জন্য আখেরাতে আছে মহা শাস্তি।

سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ أَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ۗ فَإِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ أَوْ أَعْرِضْ عَنْهُمْ ۚ وَإِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ۗ وَإِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ (٤٢)

৪২. তারা বেশিবেশি মিথ্যে শুনতে আগ্রহী, হারাম ভক্ষণকারী, তারা যদি তোমার কাছে আসে তাহলে (ইচ্ছে হলে) তাদের বিবাদ নিস্পত্তি কর নতুবা অস্বীকার কর। অস্বীকার করলে তারা তোমার কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। যদি বিচার ফায়সালা কর তাহলে ইনসাফের সাথে তাদের বিচার ফায়সালা কর, আল্লাহ্ ন্যায়পরায়ণদেরকে ভালবাসেন।

وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۗ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ؏ (٤٣)

৪৩. এরা তোমাকে কীভাবে বিচারক মানতে পারে যখন তাদের মাঝেই তাওরাত বিদ্যমান আছে, তার ভিতর আল্লাহর বিধান আছে, এর পরেও তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, বস্তুত তারা মু'মিনই নয়।

إِنَّآ أَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ أَسْلَمُوْا لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۗ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ (٤٤)

৪৪. আমি তাওরাত অবতীর্ণ করেছিলাম, তাতে ছিল সঠিক পথের দিশা ও আলো। অনুগত নাবীগণ এর দ্বারা ইয়াহূদীদেরকে ফায়সালা দিত। দরবেশ ও আলিমরাও (তাই করত) কারণ তাদেরকে আল্লাহর কিতাবের রক্ষক করা হয়েছিল আর তারা ছিল এর সাক্ষী। কাজেই মানুষকে ভয় করো না, আমাকেই ভয় কর, আর আমার আয়াতকে নগণ্য মূল্যে বিক্রয় করো না। আল্লাহ যা নাযিল করেছেন, সে অনুযায়ী যারা বিচার ফায়সালা করে না তারাই কাফির।

وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَآ أَنَّ النَّفْسَ بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْأَنْفَ بِالْأَنْفِ وَالْأُذُنَ بِالْأُذُنِ وَالسِّنَّ بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ۗ فَمَنْ تَصَدَّقَ

৪৫. আমি তাদের জন্য তাতে বিধান দিয়েছিলাম যে, জানের বদলে জান, চোখের বদলে চোখ, নাকের বদলে নাক, কানের বদলে কান, আর দাঁতের বদলে দাঁত। আর জখমের বদলে অনুরূপ জখম। কেউ ক্ষমা করে দিলে তাতে

بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (٤٥)

তারই পাপ মোচন হবে। আল্লাহ যা নাযিল করেছেন সে অনুযায়ী যারা বিচার ফায়সালা করে না তারাই যালিম।

وَقَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ ص وَاٰتَيْنٰهُ الْإِنْجِيْلَ فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ لا وَّمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ط (٤٦)

৪৬. তাদের পশ্চাতে মারইয়াম পুত্র ‘ঈসাকে পাঠিয়েছিলাম তাদের সামনে তাওরাত কিতাবের যা কিছু ছিল তার সত্যতা প্রতিপাদনকারী হিসেবে। তাকে ইঞ্জিল দিয়েছিলাম, যাতে ছিল সত্য পথের দিশা ও আলো, এবং ইহা পূর্ববর্তী কিতাব তাওরাতকে সত্যায়নকারী এবং মুত্তাকীদের জন্য সঠিক পথের দিশা ও নাসীহাত।

وَلْيَحْكُمْ أَهْلُ الْإِنْجِيْلِ بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ فِيْهِ ط وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (٤٧)

৪৭. ইঞ্জিলের অনুসারীগণ যেন আল্লাহ তাতে যে বিধান দিয়েছেন তদনুযায়ী বিচার ফয়সালা করে। আল্লাহ যা নাযিল করেছেন তদনুযায়ী যারা বিচার ফায়সালা করে না তারাই ফাসিক।

وَأَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ مِنَ الْحَقِّ ط لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً وَّمِنْهَاجًا ط وَلَوْ شَآءَ اللهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ

৪৮. আর আমি সত্য বিধানসহ তোমার প্রতি কিতাব নাযিল করেছি যা পূর্ববর্তী কিতাবসমূহের সত্যায়নকারী ও সংরক্ষক। কাজেই মানুষদের মধ্যে বিচার ফায়সালা কর আল্লাহ যা নাযিল করেছেন তদনুসারে, আর তোমার কাছে যে সত্যবিধান এসেছে তা ছেড়ে দিয়ে তাদের খেয়াল খুশির অনুসরণ করো না। আমি তোমাদের প্রত্যেকের জন্য একটি শরীয়াত ও একটি কর্মপথ নির্ধারণ করেছি। আল্লাহ ইচ্ছে করলে তোমাদেরকে এক উম্মাত করতেন। কিন্তু তিনি তোমাদেরকে যা দিয়েছেন সেই ব্যাপারে

৪৫। আনাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, রুবাঈ যিনি আনাস (ﷺ)-এর ফুফু, এক আনসার মহিলার সামনের একটি বড় দাঁত ভেঙ্গে ফেলেছিল। এরপর আহত মহিলার গোত্র এর কিসাস দাবী করে। তারা নাবী (ﷺ) -এর নিকট এলো, নাবী (ﷺ) কিসাসের নির্দেশ দিলেন, আনাস ইবনু মালিকের চাচা আনাস ইবনু নযর বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আল্লাহ্‌র শপথ রুবাঈ-এর দাঁত ভাঙ্গা হবে না। রসূল (ﷺ) বললেন, হে আনাস! আল্লাহ্‌র কিতাব তো "বদলা"র বিধান দেয়। পরবর্তীতে বিরোধীপক্ষ রাযী হয়ে মুক্তিপণ বা দিয়ত গ্রহণ করল। এরপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, আল্লাহ্‌র কতক বান্দা আছে যারা আল্লাহ্‌র নামে কসম করলে আল্লাহ তা'আলা তাদের কসম সত্যে পরিণত করেন। –বুখারী ৪৬১১ [২৭০৩; মুসলিম ১৬৭৫, নাসায়ী ৪৭৫৫-৪৭৫৭, আবূ দাউদ ৪৫৯৫, ইবনু মাজাহ ২৬৪৯, আহমাদ ১১৮৯৩, ১২২৯৩]

لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتَاكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ط إِلَى اللهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ لا (٤٨)

তিনি তোমাদের পরীক্ষা করতে চান। কাজেই তোমরা সৎকর্মে অগ্রগামী হও, তোমাদের সকলের প্রত্যাবর্তন আল্লাহ্‌র দিকেই। অতঃপর তোমরা যে বিষয়ে মতভেদ করছিলে, সে সম্বন্ধে তিনি তোমাদেরকে অবহিত করবেন।

وَأَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَآ أَنْزَلَ اللهُ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ أَنْ يَّفْتِنُوْكَ عَنْۢ بَعْضِ مَآ أَنْزَلَ اللهُ إِلَيْكَ ط فَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ أَنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ أَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ط وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ (٤٩)

৪৯. আর তুমি তাদের মধ্যে বিচার ফয়সালা কর আল্লাহ যা নাযিল করেছেন তদনুযায়ী, তাদের খেয়াল খুশির অনুসরণ করবে না। আর তাদের থেকে সতর্ক থাক তারা যেন আল্লাহ তোমার প্রতি যা নাযিল করেছেন তার কোন কিছু থেকে তোমাকে ফেতনায় না ফেলতে পারে। যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তবে জেনে রেখ, আল্লাহ তাদের কোন কোন পাপের কারণে তাদেরকে শাস্তি দিতে চান, মানুষদের অধিকাংশই প্রকৃতপক্ষে সত্য ত্যাগী।

أَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ط وَمَنْ أَحْسَنُ مِنَ اللهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ع (٥٠)

৫০. তারা কি জাহিলী যুগের আইন বিধান চায়? দৃঢ় বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্য আইন-বিধান প্রদানে আল্লাহ হতে কে বেশী শ্রেষ্ঠ?

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ وَالنَّصٰرٰٓى أَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ط وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَإِنَّهُ مِنْهُمْ ط إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (٥١)

৫১. হে ঈমানদারগণ! তোমরা ইয়াহূদ ও নাসারাদেরকে বন্ধু হিসেবে গ্রহণ করো না, তারা একে অপরের বন্ধু। তোমাদের মধ্যে কেউ তাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করলে সে তাদেরই অন্তর্ভুক্ত হবে। আল্লাহ যালিমদেরকে সৎপথে পরিচালিত করেন না।

فَتَرَى الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰى أَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ط فَعَسَى اللهُ أَنْ يَّأْتِيَ بِالْفَتْحِ أَوْ أَمْرٍ مِّنْ

৫২. যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তুমি তাদেরকে দেখবে তারা তাদের (অর্থাৎ ইয়াহূদী, নাসারা মুশরিকদের) দৌড়ে গিয়ে বলবে, আমাদের ভয় হয় আমরা বিপদের চক্করে পড়ে না যাই। হয়তো আল্লাহ বিজয় দান করবেন কিংবা

৫১। 'আম্‌র ইবনুল 'আস (রাঃ) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -কে গোপনে নয় বরং প্রকাশ্যেই বলতে শুনেছিঃ সাবধান! অমুক বংশের লোকেরা আমার বন্ধু নয়। বরং আমার বন্ধু হচ্ছেন আল্লাহ ও পুণ্যবান মু'মিনগণ। –মুসলিম ২১৫ [বুখারী ৫৯৯০, আহমাদ ১৭৩৪৮]

عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا عَلٰى مَآ أَسَرُّوْا فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ (٥٢)

নিজের পক্ষ হতে এমন কিছু দিবেন যাতে তারা তাদের অন্তরে যা লুকিয়ে রেখেছিল তার কারণে লজ্জিত হবে।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ أَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ أَقْسَمُوْا بِاللهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ ۙ إِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَأَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ (٥٣)

৫৩. মু'মিনগণ বলবে, এরা কি তারাই যারা আল্লাহ্‌র নামে শক্ত কসম খেয়ে বলত যে, তারা অবশ্যই তোমাদের সঙ্গে আছে। তাদের কৃতকর্ম নিস্ফল হয়ে গেছে, যার ফলে তারা ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَأْتِي اللهُ بِقَوْمٍ يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗٓ ۙ أَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ أَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ؗ يُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (٥٤)

৫৪. হে ঈমানদারগণ! তোমাদের মধ্য হতে কেউ তার দ্বীন হতে ফিরে গেলে সত্বর আল্লাহ এমন এক সম্প্রদায়কে নিয়ে আসবেন যাদেরকে তিনি ভালবাসেন আর তারাও তাঁকে ভালবাসবে, তারা মু'মিনদের প্রতি কোমল আর কাফিরদের প্রতি কঠোর হবে, তারা আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধ করবে, কোন নিন্দুকের নিন্দাকে তারা ভয় করবে না, এটা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ– যাকে ইচ্ছে তিনি দান করেন এবং আল্লাহ প্রাচুর্যের অধিকারী, সর্বজ্ঞ।

إِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ (٥٥)

৫৫. তোমাদের বন্ধু কেবল আল্লাহ, তাঁর রসূল ও মু'মিনগণ যারা নামায কায়িম করে, যাকাত আদায় করে এবং আল্লাহ্‌র কাছে অবনত হয়।

وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَإِنَّ حِزْبَ اللهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ ع (٥٦)

৫৬. যে কেউ আল্লাহ ও তাঁর রসূল এবং ঈমানদারগণকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করবে (সে দেখতে পাবে যে) আল্লাহ্‌র দলই বিজয়ী হবে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ أَوْلِيَآءَ ج وَاتَّقُوا اللهَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٥٧)

৫৭. হে ঈমানদারগণ! তোমাদের পূর্বে যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তাদের মধ্যে যারা তোমাদের দ্বীনকে হাসি-তামাসা ও খেলার বস্তু হিসেবে গ্রহণ করে তাদেরকে এবং কাফিরদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না আর আল্লাহকে ভয় কর যদি তোমরা মু'মিন হও।

وَإِذَا نَادَيْتُمْ إِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا هُزُوًا وَّلَعِبًا ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ (٥٨)

৫৮. তোমরা যখন সলাতের জন্য আহবান জানাও তখন তারা সেটিকে তামাশা ও খেলার বস্তু হিসেবে গ্রহণ করে। এটা এজন্য যে, তারা হল নির্বোধ সম্প্রদায়।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ اٰمَنَّا بِاللهِ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَمَآ أُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ لا وَأَنَّ أَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ (٥٩)

৫৯. বল, 'ওহে কিতাবধারী সম্প্রদায়! তোমরা এ ছাড়া অন্য কারণে আমাদের প্রতি রাগান্বিত নও যে, আমরা আল্লাহর প্রতি এবং আমাদের প্রতি আর আমাদের পূর্বে যা নাযিল হয়েছিল তার প্রতি ঈমান এনেছি, তোমাদের অধিকাংশই তো হচ্ছে ফাসিক।'

قُلْ هَلْ أُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ مَثُوْبَةً عِنْدَ اللهِ ط مَنْ لَّعَنَهُ اللهُ وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ط أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ (٦٠)

৬০. বল, আমি তোমাদেরকে কি এর চেয়ে খারাপ কিছুর সংবাদ দেব যা আল্লাহ্‌র নিকট প্রতিদান হিসেবে আছে? (আর তা হল) যাকে আল্লাহ লা'নাত করেছেন, যার উপর তিনি ক্রোধান্বিত হয়েছেন, যাদের কতককে তিনি বানর ও শুকরে পরিণত করেছেন আর যারা তাগুতের 'ইবাদাত করেছে তারাই সবচেয়ে নিকৃষ্ট মানের লোক এবং সরল সত্য পথ হতে সবচেয়ে বিচ্যুত।

وَإِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ط وَاللهُ أَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ (٦١)

৬১. যখন তারা তোমাদের কাছে আসে তখন বলে "আমরা ঈমান এনেছি"। বাস্তবে তারা কুফরী নিয়েই প্রবেশ করে, কুফরী নিয়েই বেরিয়ে যায়, তারা যা লুকিয়ে রাখে আল্লাহ সে সম্পর্কে পূর্ণরূপে অবগত।

وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِي الْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ط لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٦٢)

৬২. তাদের অনেককেই তুমি পাপ, শত্রুতা আর হারাম ভক্ষণের প্রতিযোগিতায় ব্যস্ত দেখতে পাবে। তারা যা করে তা কতই না নিকৃষ্ট!

لَوْلَا يَنْهٰهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْأَحْبَارُ عَنْ قَوْلِهِمُ الْإِثْمَ وَأَكْلِهِمُ السُّحْتَ ط لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ (٦٣)

৬৩. দরবেশ ও পুরোহিতগণ তাদেরকে পাপের কথা বলা হতে এবং হারাম ভক্ষণ থেকে নিষেধ করে না কেন? তারা যা করে তা কতই না নিকৃষ্ট!

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللهِ مَغْلُوْلَةٌ ط غُلَّتْ أَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا م بَلْ يَدَاهُ مَبْسُوْطَتٰنِ لا يُنْفِقُ كَيْفَ يَشَآءُ ط وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ط وَأَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ ط كُلَّمَآ أَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ أَطْفَأَهَا اللهُ لا وَيَسْعَوْنَ فِي الْأَرْضِ فَسَادًا ط وَاللهُ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ (٦٤)

৬৪. ইয়াহূদীরা বলে, আল্লাহ্‌র হাত আবদ্ধ, তাদের হাতই আবদ্ধ, তাদের (প্রলাপ) উক্তির কারণে তারা হয়েছে অভিশপ্ত, বরং আল্লাহ্‌র উভয় হাত প্রসারিত, যেভাবে ইচ্ছে করেন দান করেন, তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে তোমার নিকট যা অবতীর্ণ হয়েছে তা তাদের অনেকের সীমালঙ্ঘন ও কুফরী অবশ্য অবশ্যই বাড়িয়ে দিবে, আর ক্বিয়ামাত অবধি আমি তাদের পরস্পরের মধ্যে শত্রুতা ও বিদ্বেষ সৃষ্টি করে দিয়েছি। যখনই তারা যুদ্ধের আগুন প্রজ্জ্বলিত করে, আল্লাহ তা নিভিয়ে দেন, আর তারা দুনিয়ায় ফাসাদ ছড়িয়ে বেড়ায়, আল্লাহ ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের পছন্দ করেন না।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَأَدْخَلْنٰهُمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (٦٥)

৬৫. গ্রন্থধারীরা যদি ঈমান আনতো আর তাকওয়া অবলম্বন করত তাহলে আমি তাদের পাপ অবশ্যই মোচন করে দিতাম আর তাদেরকে নিআমতে ভরা জান্নাতে অবশ্যই দাখিল করতাম।

وَلَوْ أَنَّهُمْ أَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَأَكَلُوْا مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ ط مِنْهُمْ أُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ط وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ع (٦٦)

৬৬. তারা যদি তাওরাত ইঞ্জিল আর তাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে যা তাদের প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তার নিয়ম-বিধান প্রতিষ্ঠিত করত, তাহলে তাদের উপর থেকে আর তাদের পায়ের নীচ থেকে আহার্য পেত। তাদের মধ্যে একটি সত্যপন্থী দল আছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই যা করে তা খারাপ।

يٰأَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ط وَإِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ رِسَالَتَهٗ ط وَاللهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ط إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ (٦٧)

৬৭. হে রসূল! তোমার প্রতিপালকের নিকট থেকে যা তোমার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তা প্রচার কর, যদি না কর তাহলে তুমি তাঁর বার্তা পৌঁছানোর দায়িত্ব পালন করলে না। মানুষের অনিষ্ট হতে আল্লাহ্‌ই তোমাকে রক্ষা করবেন, আল্লাহ কাফির সম্প্রদায়কে কক্ষনো সৎপথ প্রদর্শন করবেন না।

৬৭। 'আয়িশাহ (রাযিআল্লাহু আনহা) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, যদি কেউ তোমাকে বলে যে, তাঁর অবতীর্ণ বিষয়ের সামান্য কিছুও মুহাম্মাদ (ﷺ) গোপন করেছেন তা হলে অবশ্যই, সে মিথ্যা বলেছে। আল্লাহ বলেছেন, "হে রসূল!

قُلْ يَٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَيْءٍ حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ج فَلَا تَأْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (٦٨)

৬৮. বল, হে গ্রন্থধারীগণ! তোমরা তাওরাত, ইঞ্জিল আর তোমাদের রবের নিকট হতে যা তোমাদের প্রতি নাযিল হয়েছে তার বিধি-বিধান প্রতিষ্ঠিত না করা পর্যন্ত তোমরা কোন ভিত্তির উপরই দণ্ডায়মান নও। তোমার রবের নিকট হতে যা তোমার প্রতি অবতীর্ণ হয়েছে তা তাদের অনেকের সীমালঙ্ঘন আর কুফরী অবশ্য অবশ্যই বৃদ্ধি করবে। কাজেই কাফির সম্প্রদায়ের জন্য তুমি আফসোস করো না।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٦٩)

৬৯. যারা ঈমান এনেছে আর যারা ইয়াহূদী হয়েছে আর সাবিয়ী সম্প্রদায় আর নাসারা, যে কেউ আল্লাহ আর আখিরাত দিবসের প্রতি ঈমান আনবে আর সৎকাজ করবে, তাদের জন্য কোন ভয় নেই, চিন্তা-ভাবনা নেই।

لَقَدْ أَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ وَأَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ ۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى أَنْفُسُهُمْ لا فَرِيْقًا كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ق (٧٠)

৭০. আমি বানী ইসরাঈলের নিকট হতে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম আর তাদের কাছে রসূলগণকে পাঠিয়েছিলাম। যখনই কোন রসূল তাদের কাছে এমন কিছু নিয়ে এসেছে যা তাদের মনঃপুত নয়, তখন কতককে তারা অমান্য করেছে আর কতককে হত্যা করেছে।

وَحَسِبُوْٓا أَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللهُ بَصِيْرٌ ۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ (٧١)

৭১. তারা ভেবেছিল তাদের কোন বিপর্যয় হবে না এজন্য তারা অন্ধ ও বধির হয়ে গিয়েছিল। অতঃপর আল্লাহ তাদের প্রতি ক্ষমা দৃষ্টি করলেন। তারপর তাদের অনেকেই পুনরায় অন্ধ ও বধির হয়ে গেল। তারা যা করে আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّ اللهَ هُوَ الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ يٰبَنِيْٓ

৭২. তারা অবশ্যই কুফরী করেছে যারা বলে, মারইয়াম পুত্র মাসীহই হচ্ছেন আল্লাহ। মাসীহ তো বলেছিল, হে বানী ইসরাঈল! তোমরা আল্লাহর 'ইবাদাত কর যিনি আমার প্রতিপালক

আপনি তা পৌঁছে দিন যা আপনার প্রতি আপনার রবের তরফ থেকে অবতীর্ণ করা হয়েছে।" –বুখারী ৪৬১২ [৩২৩৪; মুসলিম ১৭৭, তিরমিযী ৩০৬৮, ৩২৭৮]

إِسْرَآئِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ؕ إِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَأْوٰهُ النَّارُ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ أَنْصَارٍ (٧٢)

এবং তোমাদেরও প্রতিপালক। যে ব্যক্তি আল্লাহর সঙ্গে অংশীস্থাপন করে তার জন্য আল্লাহ অবশ্যই জান্নাত হারাম করে দিয়েছেন আর তার আবাস হল জাহান্নাম। যালিমদের জন্য কোন সাহায্যকারী নেই।

لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّ اللّٰهَ ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّآ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ؕ وَإِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٧٣)

৭৩. তারা অবশ্যই কুফরী করেছে যারা বলে আল্লাহ তিন জনের মধ্যে একজন, কারণ এক ইলাহ ছাড়া আর কোন সত্যিকার ইলাহ নেই। তারা যা বলছে তা থেকে তারা যদি নিবৃত্ত না হয়, তাহলে তাদের মধ্যে যারা কুফরী করেছে তাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক আযাব গ্রাস করবেই।

أَفَلَا يَتُوْبُوْنَ إِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٧٤)

৭৪. তারা কি আল্লাহ্র নিকট তাওবা করবে না, তাঁর কাছে ক্ষমা চাইবে না, আল্লাহ তো হলেন বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ إِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَأُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَأْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ أُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ لَهُمُ الْأٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ (٧٥)

৭৫. মারইয়াম পুত্র 'ঈসা রসূল ছাড়া কিছুই ছিল না। তার পূর্বে আরো রসূল অতীত হয়ে গেছে, তার মা ছিল সত্যপন্থী মহিলা, তারা উভয়েই খাবার খেত; লক্ষ্য কর তাদের কাছে (সত্যের) নিদর্শনসমূহ কেমন সুস্পষ্টভাবে তুলে ধরছি আর এটাও লক্ষ্য কর যে, কীভাবে তারা (সত্য হতে) বিপরীত দিকে চলে যাচ্ছে।

قُلْ أَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٧٦)

৭৬. বল, তোমরা আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে কি এমন কিছুর 'ইবাদাত করছ যাদের না আছে কোন ক্ষতি করার ক্ষমতা, আর না আছে উপকার করার। আর আল্লাহ তিনি হলেন সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

قُلْ يٰٓأَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْٓا أَهْوَآءَ قَوْمٍ قَدْ ضَلُّوْا

৭৭. বল, হে কিতাবধারীগণ! তোমরা তোমাদের দ্বীন সম্বন্ধে অন্যায়ভাবে বাড়াবাড়ি করো না, আর সেই সম্প্রদায়ের খেয়াল খুশির অনুসরণ করো না যারা ইতোপূর্বে পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে, অনেককে

৭২। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'ঊদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেন, যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে শির্ক করে মৃত্যু বরণ করে, সে জাহান্নামে প্রবেশ করবে। কিন্তু আমি (বর্ণনাকারী) বলছি, যে ব্যক্তি আল্লাহর সাথে কোন কিছুকে শারীক না করে মারা যাবে সে জান্নাতে প্রবেশ করবে। –বুখারী ১২৩৮ [৪৪৯৭, ৬৬৮৩; মুসলিম ৯২, আহমাদ ৩৫৪২, ৩৬১৮]

مِنْ قَبْلُ وَأَضَلُّوْا كَثِيْرًا وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ع (٧٧)

পথভ্রষ্ট করেছে আর সোজা পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে গেছে।

لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْۢ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ط ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ (٧٨)

৭৮. বানী ইসরাঈলের মধ্যে যারা কুফরী করেছিল তাদেরকে দাউদ ও মারইয়াম পুত্র ঈসার মুখে (উচ্চারিত কথার দ্বারা) অভিশাপ দেয়া হয়েছে। এটা এই কারণে যে তারা অমান্য করেছিল আর তারা ছিল সীমালঙ্ঘনকারী।

كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ ط لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ (٧٩)

৭৯. তারা যে সব অসৎকর্ম করত তাথেকে একে অন্যকে নিষেধ করত না। তারা যা করত তা কতই না নিকৃষ্ট!

تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ أَنْفُسُهُمْ أَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ هُمْ خٰلِدُوْنَ (٨٠)

৮০. তাদের অনেককে তুমি এমন লোকেদের সঙ্গে বন্ধুত্ব করতে দেখবে যারা কুফরী করে। তাদের আত্মা তাদের জন্য আগে যা পাঠিয়েছে তা কতই না নিকৃষ্ট যার জন্য আল্লাহর গোস্বা তাদের উপর পতিত হয়েছে আর তারা চিরস্থায়ী 'আযাবে নিমজ্জিত হবে।

وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ أَوْلِيَآءَ وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ (٨١)

৮১. তারা যদি আল্লাহর, নাবীর ও তার প্রতি যা নাযিল হয়েছে তার উপর ঈমান আনতো তবে তাদেরকে (অর্থাৎ কাফিরদেরকে) বন্ধুরূপে গ্রহণ করত না, কিন্তু তাদের অধিকাংশই ফাসিক।

لَتَجِدَنَّ أَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا ج وَلَتَجِدَنَّ أَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ قَالُوْٓا إِنَّا نَصٰرٰى ط ذٰلِكَ بِأَنَّ مِنْهُمْ قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّأَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ (٨٢)

৮২. যারা ঈমান এনেছে তাদের প্রতি মানুষের মধ্যে ইয়াহূদ ও মুশরিকদেরকে তুমি অবশ্যই সবচেয়ে বেশি শত্রুতাপরায়ণ দেখতে পাবে, আর যারা বলে "আমরা নাসারা" তাদেরকে তুমি যারা ঈমান এনেছে তাদের জন্য বন্ধুত্বে নিকটতর দেখতে পাবে, কেননা তাদের মধ্যে 'ইবাদাতকারী 'আলিম ও সংসার বিরাগী আছে আর তারা অহংকারও করে না।

وَإِذَا سَمِعُوْا مَآ أُنْزِلَ إِلَى الرَّسُوْلِ تَرَٰى أَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ج يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ (٨٣)

৮৩. রসূলের প্রতি যা অবতীর্ণ হয় তারা যখন তা শুনে, তুমি দেখবে, সত্যকে চিনতে পারার কারণে তখন তাদের চক্ষু অশ্রুসিক্ত হয়ে উঠে। তারা বলে, হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা ঈমান এনেছি, কাজেই তুমি আমাদেরকে সাক্ষীদাতাদের তালিকাভূক্ত কর।

وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا مِنَ الْحَقِّ لا وَنَطْمَعُ أَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ (٨٤)

৮৪. আমাদের কী হয়েছে যে, আমরা আল্লাহ্তে এবং যে সত্যবিধান আমাদের নিকট এসেছে তাতে ঈমান আনব না, আর আমরা প্রত্যাশা করি যে, আমাদের প্রতিপালক আমাদেরকে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত করবেন।

فَأَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ (٨٥)

৮৫. তাদের এ কথার কারণে আল্লাহ তাদেরকে জান্নাত দান করবেন, যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তাতে তারা চিরকাল থাকবে, আর এটাই হল সৎকর্মশীলদের পুরস্কার।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ع (٨٦)

৮৬. আর যারা আমার আয়াতগুলোকে প্রত্যাখ্যান করবে ও মিথ্যা জানবে, তারা হবে জাহান্নামের অধিবাসী।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ مَآ أَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ط إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ (٨٧)

৮৭. ওহে ঈমানদারগণ! পবিত্র বস্তুরাজি যা আল্লাহ তোমাদের জন্য হালাল করে দিয়েছেন সেগুলোকে হারাম করে নিও না আর সীমালঙ্ঘন করো না, অবশ্যই আল্লাহ সীমালঙ্ঘনকারীদের ভালবাসেন না।

وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ص وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ أَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ (٨٨)

৮৮. যে সমস্ত হালাল ও পবিত্র জীবিকা আল্লাহ তোমাদেরকে দিয়েছেন সেগুলো ভক্ষণ কর, যে আল্লাহ্র প্রতি তোমরা ঈমান এনেছ তাঁকে ভয় কর।

৮৭। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'উদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন যে, আমরা নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে যুদ্ধে বের হতাম, তখন আমাদের সঙ্গে স্ত্রীগণ থাকত না, তখন আমরা বলতাম আমরা কি খাসি হয়ে যাব না? তিনি আমাদেরকে এ থেকে নিষেধ করলেন এবং কাপড়ের বিনিময়ে হলেও মহিলাদেরকে বিয়ে করার অর্থাৎ নিকাহে মুত'আর অনুমতি দিলেন এবং আয়াতটি পাঠ করলেন [প্রকাশ থাকে যে, মুতআ বিবাহ খায়বারের যুদ্ধে চিরতরে হারাম করা হয়েছে]।-বুখারী ৪৬১৫ [৫০৭১, ৫০৭৫; মুসলিম ১৪০৪, আহমাদ ৩৬৪২, ৩৬৯৮]

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ أَيْمَانِكُمْ وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ الْأَيْمَانَ ج فَكَفَّارَتُهٗٓ إِطْعَامُ عَشَرَةِ مَسٰكِيْنَ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ أَهْلِيْكُمْ أَوْ كِسْوَتُهُمْ أَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ط فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ أَيَّامٍ ط ذٰلِكَ كَفَّارَةُ أَيْمَانِكُمْ إِذَا حَلَفْتُمْ ط وَاحْفَظُوْٓا أَيْمَانَكُمْ ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٨٩)

৮৯. তোমাদের অর্থহীন শপথের জন্য আল্লাহ তোমাদেরকে পাকড়াও করবেন না, কিন্তু বুঝে সুঝে যে সব শপথ তোমরা কর তার জন্য তোমাদেরকে পাকড়াও করবেন। (এ পাকড়াও থেকে অব্যাহতির) কাফফারা হল দশ জন মিসকিনকে মধ্যম মানের খাদ্যদান যা তোমরা তোমাদের স্ত্রী পরিবারকে খাইয়ে থাক, অথবা তাদেরকে বস্ত্রদান অথবা একজন ক্রীতদাস মুক্তকরণ। আর এগুলো করার যার সামর্থ্য নেই তার জন্য তিন দিন রোযা পালন। এগুলো হল তোমাদের শপথের কাফফারা যখন তোমরা শপথ কর। তোমরা তোমাদের শপথ রক্ষা করবে। আল্লাহ তাঁর আয়াতসমূহ তোমাদের জন্য বিষদভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা শোকর আদায় কর।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنَّمَا الْخَمْرُ وَالْمَيْسِرُ وَالْأَنْصَابُ وَالْأَزْلَامُ رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (٩٠)

৯০. হে বিশ্বাসীগণ! মদ, জুয়া আর মূর্তী ও ভাগ্য নির্ধারক তীর ঘৃণিত শয়তানী কাজ, তোমরা তা বর্জন কর, যাতে তোমরা সাফল্যমণ্ডিত হতে পার।

إِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ أَنْ يُّوْقِعَ بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ الصَّلٰوةِ ج

৯১. মদ আর জুয়ার মাধ্যমে শয়তান তো চায় তোমাদের মাঝে শত্রুতা আর বিদ্বেষ সৃষ্টি করতে, আল্লাহ্র স্মরণ আর নামায থেকে তোমাদেরকে বাধা দিতে। কাজেই তোমরা কি এসব থেকে বিরত থাকবে?

৮৯। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, আয়াতটি অবতীর্ণ হয়েছে মানুষের উদ্দেশ্যহীন لَا وَاللّٰهِ না আল্লাহ্র শপথ, بَلٰى وَاللّٰهِ হ্যাঁ আল্লাহ্র শপথ ইত্যাদি উপলক্ষে। –বুখারী ৪৬১৩ [৬৬৬৩; আবূ দাঊদ ৩২৫৪, মুওয়াত্তা ১০৩২]

৯০। আনাস ইবনু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন যে, তোমরা যেটাকে ফাযীখ অর্থাৎ কাঁচা খুরমা ভিজানো পানি নাম রেখেছ সেই ফাযীখ ব্যতীত আমাদের অন্য কোন মদ ছিল না। একদিন আমি দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে আবূ ত্বলহা, অমুক এবং অমুককে তা পান করাচ্ছিলাম। তখনই এক ব্যক্তি এসে বলল, আপনাদের কাছে এ সংবাদ এসেছে কি? তাঁরা বললেন, ঐ সংবাদ কী? সে বলল, মদ হারাম করে দেয়া হয়েছে, তাঁরা বললেন, হে আনাস! এই বড় বড় মটকাগুলো থেকে মদ ঢেলে ফেলে দাও। আনাস (রাঃ) বললেন যে, এ ব্যক্তির সংবাদের পর তাঁরা এ ব্যাপারে কিছু জিজ্ঞেসও করেননি এবং দ্বিতীয়বার পানও করেননি। –বুখারী ৪৬১৭ [২৪৬৪; মুসলিম ১৯৮০, নাসায়ী ৫৫৪১-৫৫৪৩, আবূ দাঊদ ৩৬৭৩, আহমাদ ১২৪৫৮, ১২৪৭৭; মালিক ১৫৯৯, দারিমী ২০৮৯]

فَهَلْ أَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ (٩١)

وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاحْذَرُوْا ج فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا أَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (٩٢)

৯২. তোমরা আল্লাহ্কে মেনে চল আর তাঁর রসূলকে মেনে চল আর (মন্দ থেকে) সতর্ক থাক আর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও, তাহলে জেনে রেখ আমার রসূলের দায়িত্ব হল সুস্পষ্টভাবে (আমার বাণী) পৌঁছে দেয়া।

لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا إِذَا مَا اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّأَحْسَنُوْا ط وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ع (٩٣)

৯৩. যারা ঈমান আনে আর সৎকর্ম করে তারা পূর্বে যা খেয়েছে তার জন্য তাদের উপর কোন পাপ নেই যদি তারা (হারাম থেকে) বিরত থাকে, আর ঈমান আনে ও সৎকাজ করে, অতঃপর সাবধানতা অবলম্বন করে আর ঈমানের উপর থাকে, অতঃপর আল্লাহকে ভয় করে এবং সৎকাজ করে। আল্লাহ সৎকর্মশীলদের ভালবাসেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ أَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ج فَمَنِ اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٩٤)

৯৪. ওহে ঈমানদারগণ! আল্লাহ তোমাদেরকে কঠিন পরীক্ষার সম্মুখীন করবেন (মুহরিম অবস্থায়) শিকারের ব্যাপারে যা তোমাদের হাত আর বর্শার নাগালের ভিতর এসে যায়, এটা জেনে নেয়ার জন্য যে অদৃশ্যে থেকেও কে আল্লাহকে ভয় করে। (সুস্পষ্টভাবে জানানো হয়েছে) এরপরও যারা সীমালঙ্ঘন করে তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ وَأَنْتُمْ حُرُمٌ ط وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا

৯৫. ওহে বিশ্বাসীগণ! ইহরাম অবস্থায় তোমরা শিকার হত্যা করো না। জেনে বুঝে তোমাদের কেউ তা হত্যা করলে তার বিনিময় হচ্ছে অনুরূপ গৃহপালিত জন্তু। যে ব্যাপারে তোমাদের মধ্যের

৯৩। আনাস (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, ঢেলে দেয়া মদগুলো ছিল ফাযীখ। আবূ নু'মান থেকে মুহাম্মাদ ইবনু সাল্লাম আরও অতিরিক্ত বর্ণনা করেছেন, আনাস (ﷺ) বলেছেন, আমি আবূ ত্বলহা (ﷺ)-এর ঘরে লোকেদেরকে মদ পান করাচ্ছিলাম, তখনই মদের নিষেধাজ্ঞা অবতীর্ণ হল। রসূলুল্লাহ (ﷺ) একজন ঘোষককে তা প্রচারের নির্দেশ দিলেন। এরপর সে ঘোষণা দিল। আবূ ত্বল্হা বললেন, বেরিয়ে দেখ তো শব্দ কিসের? আনাস (ﷺ) বলেন, আমি বেরুলাম এবং বললাম যে, একজন ঘোষক ঘোষণা দিচ্ছে যে, জেনে রাখ মদ হারাম করে দেয়া হয়েছে। এরপর তিনি আমাকে বললেন যাও, এগুলো সব ঢেলে দাও। আনাস (ﷺ) বলেন, সেদিন মাদীনাহ্ মনোওয়ারার রাস্তায় রাস্তায় মদের স্রোত প্রবাহিত হয়েছিল। তিনি বলেন, সে যুগে তাদের মদ ছিল ফাযীখ, তখন একজন বললেন, যাঁরা পেটে মদ নিয়ে শহীদ হয়েছেন তাঁদের কী অবস্থা হবে? তিনি বলেন, এরপর আল্লাহ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করলেন।

–বুখারী ৪৬২০ [২৪৬৪; মুসলিম ১৯৮০, নাসায়ী ৫৫৪১-৫৫৪৩, আবূ দাউদ ৩৬৭৩, আহমাদ ১২৪৫৮, ১২৪৭৭; মালিক ১৫৯৯, দারিমী ২০৮৯]

فَجَزَآءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًام بٰلِغَ الْكَعْبَةِ أَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ أَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ أَمْرِهٖ ط عَفَا اللهُ عَمَّا سَلَفَ ط وَمَنْ عَادَ فَيَنْتَقِمُ اللهُ مِنْهُ ط وَاللهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ (٩٥)

ন্যায়পরায়ণ দু'জন লোক ফায়সালা করে দেবে, তা কা'বাতে কুরবানীর জন্য পাঠাতে হবে। কিংবা তার কাফফারা হল কয়েকজন মিসকিনকে খাদ্য দান অথবা তদনুরূপ রোযা পালন, যেন সে স্বীয় কৃতকর্মের ফল ভোগ করে, পূর্বে যা হয়ে গেছে আল্লাহ তা ক্ষমা করেছেন; কেউ (পাপকাজ) পুনরায় করলে আল্লাহ তার নিকট হতে প্রতিশোধ গ্রহণ করবেন। আল্লাহ মহা পরাক্রমশালী, প্রতিশোধ গ্রহণে পূর্ণ সক্ষম।

أُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ج وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ط وَاتَّقُوا اللهَ الَّذِيْٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٩٦)

৯৬. সমুদ্রের শিকার ও তা ভক্ষণ তোমাদের জন্য হালাল করা হয়েছে, তোমাদের আর সফরকারীদের ভোগের জন্য। ইহরাম অবস্থায় থাকা পর্যন্ত স্থলের শিকার তোমাদের জন্য হারাম করা হয়েছে। আল্লাহকে ভয় কর যাঁর কাছে তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

جَعَلَ اللهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ وَالْقَلَآئِدَ ط ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَأَنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٩٧)

৯৭. পবিত্র ক্বা'বাগৃহকে আল্লাহ তোমাদের জন্য (জীবনে) প্রতিষ্ঠার উপকরণ করে দিয়েছেন, আর হারাম মাস, কুরবানীর উদ্দেশে ক্বা'বায় প্রেরিত পশু এবং তাকে চিহ্নিত করার গলার মালাকেও। এটা এজন্য যাতে তোমরা জানতে পার যে, যা কিছু আসমানসমূহে আছে আর যা কিছু যমীনে আছে, আল্লাহ তা জানেন, আর আল্লাহ সকল বিষয়ে সবচেয়ে বেশি অবহিত।

إِعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَأَنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ط (٩٨)

৯৮. জেনে রেখ যে, শাস্তি দানে আল্লাহ অত্যন্ত কঠোর আর আল্লাহ হলেন বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

مَا عَلَى الرَّسُوْلِ إِلَّا الْبَلٰغُ ط وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ (٩٩)

৯৯. (আল্লাহর বাণী) পৌঁছে দেয়া ছাড়া রসূলের উপর দায়িত্ব নেই। তোমরা যা প্রকাশ কর আর গোপন কর, আল্লাহ তা জানেন।

قُلْ لَّا يَسْتَوِي الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ أَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ج فَاتَّقُوا اللهَ يٰٓأُولِي

১০০. বল, অপবিত্র আর পবিত্র সমান নয়, যদিও অপবিত্র বস্তুর প্রাচুর্য তোমাকে আকৃষ্ট করে। কাজেই হে জ্ঞানী সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহকে

Contents

الْأَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ع (١٠٠)

ভয় কর যাতে তোমরা সফলকাম হতে পার।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْأَلُوْا عَنْ أَشْيَآءَ إِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ج وَإِنْ تَسْأَلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ تُبْدَ لَكُمْ ط عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ (١٠١)

১০১. হে ঈমানদারগণ! তোমরা এমন বিষয়ে প্রশ্ন করো না, যা তোমাদের কাছে প্রকাশ করা হলে তা তোমাদেরকে কষ্ট দিবে। যে কালে কুরআন নাযিল হচ্ছে সে সময় যদি ওসব বিষয়ে প্রশ্ন কর তবে তা তোমাদের জন্য প্রকাশ করে দেয়া হবে। (এ পর্যন্ত যা করেছ) আল্লাহ তা ক্ষমা করেছেন, আর আল্লাহ হলেন বড়ই ক্ষমাশীল, পরম সহিষ্ণু।

قَدْ سَأَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ أَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ (١٠٢)

১০২. তোমাদের পূর্বে এক সম্প্রদায় (অর্থাৎ ইয়াহূদীরা) তা জিজ্ঞেস করেছিল অত:পর (তা অমান্য করে) তারা কাফিরে পরিণত হয়েছিল।

مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ لا وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ط وَأَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ (١٠٣)

১০৩. আল্লাহ না নির্দিষ্ট করেছেন বাহীরাহ্, না সাইবাহ্, না ওয়াসীলাহ্, না হাম বরং যারা কুফরী করেছে তারাই আল্লাহর নামে মিথ্যা আরোপ করে, তাঁদের অধিকাংশই নির্বোধ।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا إِلٰى مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ وَإِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ

১০৪. তাদেরকে যখন বলা হয় আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তার দিকে ও রসূলের দিকে এসো (তখন) তারা বলে, আমরা আমাদের পিতৃপুরুষকে যা করতে দেখেছি (যে পথ ও

১০১। আবূ ওয়াক্কাস (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেছেনঃ মুসলিমদের সবচেয়ে বড় অপরাধী সেই ব্যক্তি যে এমন বিষয়ে প্রশ্ন করে যা পূর্বে হারাম ছিল না। কিন্তু তার প্রশ্নের কারণে তা হারাম হয়ে গেছে। –বুখারী ৭২৮৯ [মুসলিম ২৩৫৮, আবূ দাউদ ৪৬১০, আহমাদ ১৫২৩, ১৫৪৮]

১০৩। সা'ঈদ ইবনু মুসায়্যাব (রহ.) বলেছেন, بَحِيْرَةٌ –বাহীরাহ জন্তুর স্তন প্রতিমার উদ্দেশে সংরক্ষিত থাকে কেউ তা দোহন করে না। سَآئِبَةٌ –সা-য়িবাহ, যে জন্তু তারা তাদের উপাস্যের নামে ছেড়ে দিত এবং তা দিয়ে বোঝা বহন করা হত না। তিনি বর্ণেন, আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) বলেন যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন যে, আমি 'আমর ইবনু আমির খুযায়ীকে জাহান্নামের মধ্যে দেখেছি সে তার নাড়িভুঁড়ি টানছে, সে-ই প্রথম ব্যক্তি যে সায়িবা প্রথা প্রথম চালু করে। وَصِيْلَةٌ –ওয়াসীলাহ, যে উষ্ট্রী প্রথমবারে মাদী বাচ্চা প্রসব করে এবং দ্বিতীয়বারেও মাদী বাচ্চা প্রসব করে, ঐ উষ্ট্রীকে তারা তাদের তাগূতের উদ্দেশে ছেড়ে দিত। وَلَا حَامٍ –হাম, নর উট যা দ্বারা কয়েকবার প্রজনন কার্য নেয়া হয়, প্রজনন কার্য সমাপ্ত হলে সেটাকে তারা তাদের প্রতিমার জন্যে ছেড়ে দেয় এবং বোঝা বহন থেকে ওটাকে মুক্তি দেয়। সেটির উপর কিছু বহন করা হয় না। এটাকে তারা 'হাম' নামে অভিহিত করত।........হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৬২৩ [৩৫২১; মুসলিম ২৮৫৬]

اٰبَآءَنَا ط أَوَلَوْ كَانَ اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ (١٠٤)

পন্থা অবলম্বন করতে দেখেছি) আমাদের জন্য তাই যথেষ্ট। যদিও তাদের পিতৃপুরুষরা কিছুই জানত না এবং সঠিক পথপ্রাপ্ত ছিল না (তবুও কি তারা তাদের পথেই চলবে)?

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ أَنْفُسَكُمْ ج لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ إِذَا اهْتَدَيْتُمْ ط إِلَى اللهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (١٠٥)

১০৫. হে মু'মিনগণ! তোমাদের দায়িত্ব তোমাদের উপর। যখন তোমরা সত্যপথ প্রাপ্ত হয়েছ তখন যারা পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে তারা তোমাদের কোন ক্ষতি করতে পারবে না। তোমাদের সকলের প্রত্যাবর্তন আল্লাহর দিকে, অতঃপর তোমরা যা করছিলে সে সম্পর্কে তোমাদেরকে জানিয়ে দেয়া হবে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ إِذَا حَضَرَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ أَوْ اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ إِنْ أَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَأَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ط تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللهِ إِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى لا وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ لا اللهِ إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ (١٠٦)

১০৬. হে বিশ্বাসীগণ! তোমাদের কারো মৃত্যু উপস্থিত হলে যখন ওসিয়াত করবে তখন তোমাদের মধ্য হতে দু'জন ন্যায়পরায়ণ লোককে সাক্ষী করবে, আর সফররত অবস্থায় মৃত্যুর মুসিবত উপস্থিত হলে তোমাদের ছাড়া অন্যদের থেকে দু'জন সাক্ষী রাখবে। (সাক্ষীদের সত্যতা সম্পর্কে) তোমাদের সন্দেহ হলে সলাতের পর তাদেরকে রেখে দেবে আর তারা আল্লাহর নামে শপথ করবে যে, আমরা কোন কিছুর বিনিময়ে সাক্ষ্য বিক্রয় করব না, যদিও সে আমাদের আত্মীয় হয়, আর আল্লাহ্‌র ওয়াস্তে কৃত সাক্ষ্য গোপন করব না, করলে পাপীদের মধ্যে গণ্য হয়ে যাব।

فَإِنْ عُثِرَ عَلٰٓى أَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ إِثْمًا فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْأَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللهِ لَشَهَادَتُنَآ أَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا اعْتَدَيْنَآ ز صلے إِنَّآ إِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (١٠٧)

১০৭. যদি জানা যায় যে, তারা পাপে জড়িয়ে পড়েছে, তবে তাদের স্থলে অন্য দু'জন সেই লোকেদের মধ্য হতে দাঁড়াবে, যাদের স্বত্ব পূর্বের দু'জন সাক্ষী নষ্ট করতে চেয়েছিল। তারা আল্লাহর নামে শপথ করে বলবে যে, আমাদের সাক্ষ্য অবশ্যই তাদের সাক্ষ্য অপেক্ষা অধিক সত্য (আর আমরা আমাদের সাক্ষ্যদানের ব্যাপারে) সীমালঙ্ঘন করিনি, করলে আমরা অবশ্য যালিমদের মধ্যে গণ্য হয়ে যাব।

ذٰلِكَ أَدْنٰىٓ أَنْ يَّأْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى وَجْهِهَآ

১০৮. এ পন্থায় বেশি সম্ভাবনা আছে যে, লোকে

أَوْ يَخَافُوْٓا أَنْ تُرَدَّ أَيْمَانٌۢ بَعْدَ أَيْمَانِهِمْ ۗ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ۗ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ع (١٠٨)

ঠিকভাবে সাক্ষ্যদান করবে, কিংবা অন্ততঃপক্ষে তারা এ ভয় অবশ্যই করবে যে, তাদের কসম করার পর অপর কোন কসম দ্বারা তাদের প্রতিবাদ করা না হয়। আল্লাহ্কে ভয় কর আর শোন; আল্লাহ সত্য পরিত্যাগকারী সম্প্রদায়কে সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ أُجِبْتُمْ ۗ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ۗ إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ (١٠٩)

১০৯. আল্লাহ যে দিন রসূলগণকে একত্রিত করবেন; অতঃপর বলবেন, তোমাদেরকে কী জবাব দেয়া হয়েছিল। তারা বলবে, আমরা কিছুই জানি না, তুমিই সকল গোপন তত্ত্ব জান।

إِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ إِذْ أَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ قف تُكَلِّمُ النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ج وَإِذْ عَلَّمْتُكَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْإِنْجِيْلَ ج وَإِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْئَةِ الطَّيْرِ بِإِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِإِذْنِيْ وَتُبْرِئُ الْأَكْمَهَ وَالْأَبْرَصَ بِإِذْنِيْ ج وَإِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِإِذْنِيْ ج وَإِذْ كَفَفْتُ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ عَنْكَ إِذْ جِئْتَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (١١٠)

১১০. যখন আল্লাহ বলেন, "হে 'ঈসা বিন মারইয়াম! তুমি তোমার প্রতি আর তোমার মায়ের প্রতি আমার নি'মাতের কথা স্মরণ কর। আমি তোমাকে রূহুল কুদুর (জিব্রীল) দিয়ে শক্তিশালী করেছি, তুমি দোলনায় থাকা অবস্থায় আর পূর্ণ বয়সেও মানুষের সাথে কথা বলেছ। স্মরণ কর আমি তোমাকে কিতাব, হিকমাত, তাওরাত ও ইঞ্জিল শিক্ষা দিয়েছিলাম। তুমি আমার অনুমতিক্রমে মাটি দ্বারা পাখীর মত আকৃতি গঠন করতে আর তাতে ফুঁক দিতে তখন তা আমার হুকুমে পাখী হয়ে যেত, জন্মান্ধ আর কুষ্ঠ ব্যাধিগ্রস্ত ব্যক্তিকে তুমি আমার হুকুমে আরোগ্য করতে, স্মরণ কর আমার হুকুমে তুমি মৃতকে জীবিত করতে, স্মরণ কর যখন আমি তোমার থেকে বানী ইসরাঈলকে নিবৃত্ত রেখেছিলাম যখন তুমি তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শনাদি নিয়ে আসলে, তখন তাদের মধ্যে যারা কুফরী করেছিল তারা বলল– "এটা তো স্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই নয়।

وَإِذْ أَوْحَيْتُ إِلَى الْحَوَارِيّٖنَ أَنْ اٰمِنُوْا بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ج قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ بِأَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ (١١١)

১১১. স্মরণ কর যখন আমি হাওয়ারীদেরকে হুকুম করেছিলাম যে, আমার প্রতি আর আমার রসূলের প্রতি ঈমান আন; তারা বলেছিল, আমরা ঈমান আনলাম আর তুমি সাক্ষী থেক যে, আমরা মুসলিম।

إِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ أَنْ يُّنَزِّلَ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ط قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١١٢)

১১২. (স্মরণ কর) যখন হাওয়ারীরা বলেছিল, হে ‘ঈসা ইবনু মারইয়াম! আপনার প্রতিপালক কি আমাদের নিকট আসমান থেকে খাঞ্চা ভর্তি খাদ্য পাঠাতে পারবেন? সে বলেছিল, তোমরা যদি মু’মিন হয়ে থাক তাহলে আল্লাহ্‌কে ভয় কর।

قَالُوْا نُرِيْدُ أَنْ نَّأْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَئِنَّ قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ أَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ (١١٣)

১১৩. তারা বলেছিল, আমরা চাই যে আমরা তাথেকে কিছু খাব, তাতে আমাদের অন্তর পরিতৃপ্তি লাভ করবে, আর আমরা জানতে পারব যে, আপনি আমাদেরকে সত্য বলেছেন, আর সে ব্যাপারে আমরা সাক্ষী হয়ে থাকব।

قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ أَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ لَنَا عِيْدًا لِّأَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ج وَارْزُقْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (١١٤)

১১৪. ‘ঈসা ইবনু মারইয়াম বলেছিল, হে আল্লাহ! আমাদের প্রতিপালক আমাদের নিকট আসমান থেকে খাদ্য ভর্তি খাঞ্চা প্রেরণ কর যা আমাদের প্রথম থেকে শেষ সকল ব্যক্তির জন্য আনন্দের ব্যাপার হবে আর হবে তোমার থেকে একটা নিদর্শন। আর আমাদেরকে জীবিকা দান কর; তুমিই সর্বোত্তম রিযকদাতা।

قَالَ اللّٰهُ إِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ج فَمَنْ يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَإِنِّيْٓ أُعَذِّبُهٗ عَذَابًا لَّآ أُعَذِّبُهٗٓ أَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ع (١١٥)

১১৫. আল্লাহ বললেন, আমি তোমাদের কাছে তা নাযিল করব, অতঃপর তোমাদের কেউ কুফরী করলে আমি তাকে এমনভাবে শাস্তি প্রদান করব, যে শাস্তি আমি বিশ্বজগতের কাউকে দেইনি।

وَإِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَأَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَأُمِّيَ إِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ أَنْ أَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ق بِحَقٍّ ط إِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ط تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ أَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ط إِنَّكَ أَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ (١١٦)

১১৬. স্মরণ কর, যখন আল্লাহ ঈসা ইবনু মারইয়ামকে বললেন, তুমি কি লোকেদেরকে বলেছিলে, আল্লাহকে ছেড়ে আমাকে আর আমার মাতাকে ইলাহ বানিয়ে নাও।’ (উত্তরে) সে বলেছিল, ‘পবিত্র মহান তুমি, এমন কথা বলা আমার শোভা পায় না যে কথা বলার কোন অধিকার আমার নেই, আমি যদি তা বলতাম, সেটা তো তুমি জানতেই; আমার অন্তরে কী আছে তা তুমি জান কিন্তু তোমার অন্তরে কী আছে তা আমি জানি না, তুমি অবশ্যই যাবতীয় গোপনীয় তত্ত্ব সম্পর্কে পূর্ণরূপে ওয়াকেফহাল।

مَا قُلْتُ لَهُمْ إِلَّا مَآ أَمَرْتَنِيْ بِهِۦٓ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَأَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (١١٧)

১১৭. তুমি আমাকে যে ব্যাপারে নির্দেশ করেছ তা ছাড়া আমি তাদেরকে অন্য কিছুই বলিনি, (তা এই) যে, তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর যিনি আমার ও তোমাদের প্রতিপালক, আর তাদের কাজ কর্মের ব্যাপারে সাক্ষী ছিলাম যদ্দিন আমি তাদের মাঝে ছিলাম, অতঃপর যখন তুমি আমাকে উঠিয়ে নিলে, তখন তুমিই ছিলে তাদের কার্যকলাপের তত্ত্বাবধায়ক, আর তুমি হলে প্রত্যেক ব্যাপারে সাক্ষী।

إِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَإِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَإِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَإِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (١١٨)

১১৮. তুমি যদি তাদেরকে শাস্তি দাও তবে তারা তো তোমারই বান্দাহ আর যদি তাদেরকে ক্ষমা কর তুমি তো মহাপরাক্রান্ত মহাপ্রজ্ঞার অধিকারী।'

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ

১১৯. আল্লাহ বলবেন, আজকের দিনে সত্যপন্থীদের সত্যপন্থা উপকার দিবে, তাদের জন্য রয়েছে জান্নাত যার তলদেশে ঝর্ণাধারা

১১৭। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) এক দিন খুতবা দিলেন, বললেন, হে লোক সকল! তোমরা নগ্ন পদ, উলঙ্গ এবং খতনাবিহীন অবস্থায় আল্লাহ্‌র নিকট একত্রিত হবে, তারপর তিনি পড়লেন, "যেভাবে আমি প্রথম সৃষ্টির সূচনা করেছিলাম সেভাবে পুনরায় সৃষ্টি করব, প্রতিশ্রুতি পালন আমার কর্তব্য, আমি তা পালন করবই।............ আয়াতের শেষ পর্যন্ত।" [সূরাহ আম্বিয়া ২১/১০৪] তারপর তিনি বললেন, ক্বিয়ামাতের দিন সর্বপ্রথম যাকে বস্ত্র পরিধান করানো হবে তিনি হচ্ছেন ইবরাহীম (আঃ)। তোমরা জেনে রাখ, আমার উম্মতের কতকগুলো লোককে হাজির করা হবে এবং তাদেরকে বামদিকে অর্থাৎ জাহান্নামের দিকে দেয়া হবে। আমি তখন বলব, প্রভু হে! এগুলো তো আমার কতক সহাবী, তখন বলা হবে যে, আপনার পর তারা কী নবোদ্ভাবিত কাজ করেছে তা আপনি জানেন না।

এরপর পুণ্যবান বান্দা যেমন বলেছিলেন আমি তেমন বলবঃ كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيداً مَا دُمْتُ فِيهِمْ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِي كُنْتَ أَنْتَ الرَّقِيبَ عَلَيْهِمْ "আমি যতদিন তাদের মাঝে ছিলাম ততদিন তাদের খোঁজখবর নিয়েছি, অতঃপর আপনি যখন আমাকে উঠিয়ে নিয়েছেন তখন থেকে আপনিই তাদের রক্ষক"।

এরপর বলা হবে আপনি তাদেরকে ছেড়ে আসার পর থেকে তারা পেছনে ফিরে গিয়ে ধর্মত্যাগী হয়েছে।

–বুখারী ৪৬২৫ [৩৩৪৯; মুসলিম ২৮৬০, তিরমিযী ২৪২৩, ৩১৬৭, ৩৩৩২; নাসায়ী ২০৮১, ২০৮২, ২০৮৭; আহমাদ ১৯১৬, ১৯৫১; দারিমী ২৮০২]

১১৮। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেছেন, তিনি বলেছেন, তোমাদের উঠিয়ে একত্রিত করা হবে এবং কিছু সংখ্যক লোককে বাম দিকে নিয়ে যাওয়া হবে, তখন আমি নেককার বান্দার অর্থাৎ 'ঈসা (আঃ)-এর মতো বলব, (১১৭-১১৮ নং আয়াত) "আমি যতদিন তাদের মাঝে ছিলাম, ততদিন তাদের খোঁজখবর নিয়েছি, তারপর যখন আপনি আমাকে উঠিয়ে নিয়েছেন তখন থেকে আপনিই তাদের তত্ত্বাবধায়ক। আপনি সব কিছুর ওপরে ক্ষমতাবান। আপনি যদি তাদেরকে শাস্তি দেন তাহলে তারা তো আপনার বান্দা। আর যদি তাদেরকে ক্ষমা করেন তাহলে আপনি পরাক্রমশালী ও সুবিজ্ঞ।" –বুখারী ৪৬২৬ [৩৩৪৯; মুসলিম ২৮৬০, তিরমিযী ২৪২৩, ৩১৬৭, ৩৩৩২; নাসায়ী ২০৮১, ২০৮২, ২০৮৭; আহমাদ ১৯১৬, ১৯৫১; দারিমী ২৮০২]

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١١٩)

প্রবাহিত, তাতে তারা স্থায়ী হয়ে চিরকাল থাকবে, আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট হয়েছেন আর তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট। এটাই হল মহা সাফল্য।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٢٠)

১২০. আসমানসমূহের আর যমীনের আর এদের মাঝে যা কিছু আছে তার সার্বভৌমত্ব আল্লাহ্‌রই, আর তিনি সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

سُوْرَةُ الْأَنْعَامِ

৬. সূরাহ আল-আন'আম

আয়াতঃ ১৬৫, রুকূঃ ২০, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۚ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ (١)

১. সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ্‌র জন্য যিনি আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন আর সৃষ্টি করেছেন অন্ধকার ও আলো, এতদসত্ত্বেও যারা কুফরী করেছে তারা (অন্যকে) তাদের প্রতিপালকের সমকক্ষ দাঁড় করিয়েছে।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى أَجَلًا ۚ وَأَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ أَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ (٢)

২. যিনি মাটি থেকে তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন অতঃপর (তোমাদের জীবনের জন্য) একটি নির্দিষ্ট মেয়াদ নির্ধারিত করেছেন, এছাড়া আরেকটি নির্ধারিত মেয়াদ আছে (যে সম্পর্কিত জ্ঞান আছে) তাঁর কাছে, কিন্তু তোমরা সন্দেহই করে চলেছ।

وَهُوَ اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَفِي الْأَرْضِ ۚ يَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَيَعْلَمُ مَا تَكْسِبُوْنَ (٣)

৩. আসমানসমূহ আর যমীনে তিনিই আল্লাহ, তোমাদের গোপন বিষয়াদি আর তোমাদের প্রকাশ্য বিষয়াদি সম্পর্কে তিনি জানেন, আর তিনি জানেন যা তোমরা উপার্জন কর।

وَمَا تَأْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ إِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ (٤)

৪. তাদের রবের নিদর্শনাবলী হতে এমন কোন নিদর্শন তাদের কাছে আসে না যা থেকে তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় না।

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ فَسَوْفَ يَأْتِيْهِمْ أَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ (٥)

৫. (এখন) যে সত্য তাদের কাছে এসেছে তারা তা অস্বীকার করেছে। শীঘ্রই তাদের কাছে সে খবর আসবে যে সম্পর্কে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْأَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ لَّكُمْ وَأَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَيْهِمْ مِّدْرَارًا ص وَّجَعَلْنَا الْأَنْهٰرَ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمْ فَأَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَأَنْشَأْنَا مِنْ ۢبَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ (٦)

৬. তারা কি লক্ষ্য করে না তাদের পূর্বে আমি কত জনগোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছি, তাদেরকে দুনিয়ায় (এমনভাবে) প্রতিষ্ঠিত করেছিলাম যে শক্তি-প্রতিষ্ঠা তোমাদেরকে দেয়া হয়নি, তাদের জন্য প্রচুর বৃষ্টিপাত ঘটিয়েছিলাম, তৈরি করেছিলাম নদী যা তাদের নিম্নদেশ দিয়ে প্রবাহিত হত, অতঃপর তাদের পাপের কারণে তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছি আর তাদের পরে নতুন জনগোষ্ঠীর উত্থান ঘটালাম।

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ كِتٰبًا فِيْ قِرْطَاسٍ فَلَمَسُوْهُ بِأَيْدِيْهِمْ لَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٧)

৭. আমি যদি তোমার উপর কাগজে লেখা কিতাব নাযিল করতাম আর তা তারা তাদের হাতে স্পর্শ করত, তাহলে অবিশ্বাসীরা অবশ্যই বলত এটা স্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছু না।

وَقَالُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ مَلَكٌ ط وَلَوْ أَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِيَ الْأَمْرُ ثُمَّ لَا يُنْظَرُوْنَ (٨)

৮. আর তারা বলে, আমাদের কাছে ফেরেশতা পাঠানো হয় না কেন? আমি যদি ফেরেশতা পাঠাতাম তাহলে (যাবতীয় ব্যাপারে) চূড়ান্ত ফায়সালাই তো হয়ে যেত, অতঃপর তাদেরকে আর অবকাশ দেয়া হত না।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا وَّلَلَبَسْنَا عَلَيْهِمْ مَّا يَلْبِسُوْنَ (٩)

৯. আর আমি যদি তাকে ফেরেশতা করতাম তবে তাকে মানুষের আকৃতি বিশিষ্টই করতাম, আর তাদেরকে অবশ্যই গোলকধাঁধায় ফেলে দিতাম যেমন ধাঁধাঁয় তারা এখন পড়েছে।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ع (١٠)

১০. তোমার পূর্বেও রসূলদেরকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করা হয়েছে, অতঃপর যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত তাই তাদেরকে পরিবেষ্টন করে ফেলল।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ (١١)

১১. বল, দুনিয়ায় পরিভ্রমণ কর, অতঃপর দেখ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের পরিণাম কী দাঁড়িয়েছিল।

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ قُلْ لِّلّٰهِ ؕ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ؕ لَيَجْمَعَنَّكُمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٢)

১২. বল, আসমানে আর যমীনে যা আছে তা কার? বল, আল্লাহরই। দয়া করা তিনি তাঁর জন্য কর্তব্য স্থির করে নিয়েছেন, তিনি কিয়ামাত দিবসে তোমাদের সবাইকে একত্রিত করবেন, এতে কোন সন্দেহ নেই। যারা নিজেরাই নিজেদের ক্ষতি করেছে তারা ঈমান আনবে না।

وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِي الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (١٣)

১৩. রাতে (অন্ধকারে) আর দিনে (আলোয়) যা বাস করে তা তাঁরই, তিনি হলেন সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

قُلْ أَغَيْرَ اللّٰهِ أَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ ؕ قُلْ إِنِّيْٓ أُمِرْتُ أَنْ أَكُوْنَ أَوَّلَ مَنْ أَسْلَمَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٤)

১৪. বল, আমি কি আসমান যমীনের সৃষ্টিকর্তা আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে অন্যকে অভিভাবক বানিয়ে নেব, অথচ তিনিই খাওয়ান, তাঁকে খাওয়ানো হয় না, বল আমাকে আদেশ করা হয়েছে আমি যেন আত্মসমর্পণকারীদের প্রথম হই, আর তুমি কিছুতেই মুশরিকদের মধ্যে শামিল হবে না।

قُلْ إِنِّيْٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (١٥)

১৫. বল, যদি আমি আমার রবের অবাধ্য হই, তবে আমি বড় (ভয়াবহ) দিনের শাস্তির ভয় করি।

مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمَهٗ ؕ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ (١٦)

১৬. সে দিন যাকে (শাস্তি থেকে) রক্ষা করা হবে তাকে তো বড় অনুগ্রহ করা হবে। আর এটাই হবে সুস্পষ্ট সাফল্য।

وَإِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗٓ إِلَّا هُوَ ؕ وَإِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٧)

১৭. আল্লাহ তোমার কোন ক্ষতি করতে চাইলে তিনি ছাড়া কেউ তা সরাতে পারবে না। আর তিনি যদি তোমার কল্যাণ করতে চান, তবে তো সব কিছুই করার তাঁর ক্ষমতা রয়েছে।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ (١٨)

১৮. তিনি তাঁর বান্দাদের উপর একচ্ছত্র নিয়ন্ত্রণকারী, তিনি হলেন প্রজ্ঞাময়, সর্ববিষয়ে ওয়াকিফহাল।

قُلْ أَيُّ شَيْءٍ أَكْبَرُ شَهَادَةً ط قُلِ اللّٰهُ قف شَهِيْدٌ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ قف وَأُوْحِيَ إِلَيَّ هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِأُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْ بَلَغَ ط أَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ أَنَّ مَعَ اللّٰهِ اٰلِهَةً أُخْرٰى ط قُلْ لَّآ أَشْهَدُ ج قُلْ إِنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّإِنَّنِيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ـ (١٩)

১৯. বল, সাক্ষ্যে সবচেয়ে বড় বিষয় কোন্‌টি? বল, আল্লাহ আমার ও তোমাদের মধ্যে সাক্ষী। আর এ কুরআন আমার প্রতি নাযিল করা হয়েছে যাতে আমি তার সাহায্যে তোমাদেরকে আর যাদের কাছে তা পৌঁছবে তাদেরকে সতর্ক করি। তোমরা কি এমন সাক্ষ্য দিতে পার যে, আল্লাহর সঙ্গে অন্য ইলাহও আছে? বল, আমি এমন সাক্ষ্য দেই না, বল তিনি তো এক ইলাহ আর তোমরা যে তাঁর অংশীদার স্থাপন কর, তা থেকে আমি সম্পূর্ণ মুক্ত।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ كَمَا يَعْرِفُوْنَ أَبْنَآءَهُمْ ـ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ع (٢٠)

২০. আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছি তারা তাকে (অর্থাৎ নাবীকে) তেমনি চিনে যেমন চিনে তাদের নিজেদের সন্তানদেরকে, যারা নিজেদের আত্মার ধ্বংস সাধন করেছে, তারা ঈমান আনতে পারবে না।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ط إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ (٢١)

২১. তার থেকে বড় যালিম আর কে আছে যে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে রচনা করে অথবা তাঁর নিদর্শনসমূহকে প্রত্যাখ্যান করে? যালিমরা কক্ষনো সফলকাম হবে না।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ أَشْرَكُوْٓا أَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ (٢٢)

২২. স্মরণ করে সে দিনকে, যে দিন আমি তাদের সবাইকে একত্রিত করব আর যারা শির্‌ক করেছিল তাদেরকে বলব– যাদেরকে তোমরা আমার শরীক মনে করতে তারা কোথায়?

ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوْا وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ (٢٣)

২৩. তখন তারা এ কথা বলা ছাড়া আর কোন ফিতনা সৃষ্টি করতে পারবে না যে, আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ্‌র কসম! আমরা মুশরিক ছিলাম না।

أُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (٢٤)

২৪. লক্ষ্য কর তারা নিজেদের সম্পর্কে কেমন মিথ্যে কথা বলবে, আর তারা মিছেমিছি যা উদ্ভাবন করেছিল তা নিস্ফল হয়ে যাবে।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ إِلَيْكَ ج وَجَعَلْنَا عَلٰى

২৫. তাদের মধ্যে কতক লোক আছে যারা তোমার

قُلُوْبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَإِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ؕ حَتّٰٓى إِذَا جَآءُوْكَ يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ هٰذَآ إِلَّآ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ (٢٥)

দিকে কান্ পাতে। তাদের অন্তরের উপর আমি পর্দা ঢেলে দিয়েছি যাতে তারা উপলব্ধি করতে না পারে, তাদের কানে আছে বধিরতা, সমস্ত নিদর্শন দেখলেও তারা তাতে ঈমান আনবে না, এমনকি যখন তারা তোমার কাছে আসে তোমার সাথে বিতর্ক করে। কাফিরগণ বলে এটা তো পূর্বেকার লোকেদের গল্প-কাহিনী ছাড়া আর কিছুই নয়।

وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْئَوْنَ عَنْهُ ج وَإِنْ يُّهْلِكُوْنَ إِلَّآ أَنْفُسَهُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ (٢٦)

২৬. তারা তা (শোনা) থেকে অন্যদের বিরত করে, আর নিজেরাও তাথেকে দূরে সরে থাকে, তারা নিজেরাই নিজেদের ধ্বংস সাধন করে কিন্তু সে বোধ তাদের নেই।

وَلَوْ تَرٰٓى إِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (٢٧)

২৭. যদি তুমি দেখতে যখন তাদেরকে জাহান্নামের কিনারায় দাঁড় করানো হবে তখন তারা বলবে হায়! আমাদেরকে যদি আবার (পৃথিবীতে) পাঠানো হত, তাহলে আমরা আমাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলীকে মিথ্যে মনে করতাম না, আর আমরা মু'মিনদের অন্তর্ভুক্ত হতাম।

بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (٢٨)

২৮. বরং (আসল ব্যাপার হল) আগে (দুনিয়াতে) তারা (মিথ্যের আবরণে) যা গোপন করে রাখত এখন তা তাদের কাছে প্রকাশ করা হয়েছে আর তাদেরকে (পৃথিবীতে) ফিরিয়ে দেয়া হলে তারা আবার তা-ই করবে যা করতে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছে, নিশ্চয় তারা হল মিথ্যুক।

وَقَالُوْٓا إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ (٢٩)

২৯. তারা বলে, আমাদের দুনিয়ার জীবন ছাড়া আর কোন জীবন নেই, আমাদেরকে আবার (জীবিত করে) উঠানো হবে না।

وَلَوْ تَرٰٓى إِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ أَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ع (٣٠)

৩০. তুমি যদি দেখতে যখন তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের সামনে দাঁড় করানো হবে, তখন তিনি বলবেন, (তোমরা এখন যে পরিস্থিতির সম্মুখীন হয়েছ) তা কি সত্য নয়? তারা বলবে, আমাদের রবের কসম তা সত্য। তিনি বলবেন, তোমরা কুফরী করেছিলে তার জন্য এখন শাস্তি ভোগ কর।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللهِ ؕ حَتّٰٓى إِذَا

৩১. যারা আল্লাহর সাক্ষাতকে মিথ্যে জেনেছিল তারা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে গেছে। এমনকি যখন

جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا لا وَهُمْ يَحْمِلُوْنَ أَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ط أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ (٣١)

কিয়ামাত হঠাৎ তাদের কাছে হাজির হবে তখন তারা বলবে, হায় আক্ষেপ! আমরা এ ব্যাপারে অবহেলা করেছিলাম। তারা তাদের পিঠে তাদের পাপের বোঝা বহন করবে। দেখ, তারা যা বহন করবে তা কতই না নিকৃষ্ট!

وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ط وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٣٢)

৩২. দুনিয়ার জীবন খেল-তামাশা ছাড়া আর কিছুই না। যারা তাকওয়া অবলম্বন করে তাদের জন্য পরকালের জীবনই অতি কল্যাণময়, তবুও কি তোমাদের বোধদয় হবে না?

قَدْ نَعْلَمُ إِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ فَإِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ يَجْحَدُوْنَ (٣٣)

৩৩. তারা যা বলে তা তোমাকে কষ্ট দেয় এটা আমি অবশ্যই ভালভাবে অবগত, কেননা তারা তো তোমাকে মিথ্যে মনে করে না, প্রকৃতপক্ষে যালিমরা আল্লাহর আয়াতকেই প্রত্যাখ্যান করে।

وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَأُوْذُوْا حَتّٰٓى أَتٰهُمْ نَصْرُنَا ج وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللهِ ج وَلَقَدْ جَآءَكَ مِنْ نَّبَإِئ الْمُرْسَلِيْنَ (٣٤)

৩৪. তোমার পূর্বেও রসূলগণকে মিথ্যে মনে করা হয়েছে কিন্তু তাদেরকে মিথ্যে মনে করা এবং কষ্ট দেয়া সত্ত্বেও তারা ধৈর্যধারণ করেছে, যতক্ষণ না তাদের কাছে আমার সাহায্য এসেছে। আল্লাহর ওয়াদার পরিবর্তন হয় না, নাবীগণের কিছু সংবাদ তো তোমার নিকট পৌঁছেছেই।

وَإِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ إِعْرَاضُهُمْ فَإِنِ اسْتَطَعْتَ أَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِي الْأَرْضِ أَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَآءِ فَتَأْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ط وَلَوْ شَآءَ اللهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ (٣٥)

৩৫. তাদের উপেক্ষা যদি তোমার কাছে কঠিন বলে মনে হয় তাহলে পারলে ভূগর্ভে সুড়ঙ্গের কিংবা আকাশে আরোহণের জন্য সিঁড়ির সন্ধান কর অত:পর তাদের কাছে (নতুন) নিদর্শন হাজির কর। আল্লাহ ইচ্ছে করলে তাদের সকলকে সৎপথে একত্র করতেন। কাজেই তুমি মূর্খদের মত হয়ো না।

إِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ طـــ وَالْمَوْتٰى

৩৬. যারা শোনে শুধু তারাই ডাকে সাড়া দেয়। আর মৃতকে আল্লাহ আবার জীবিত করবেন;

يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ إِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۩ (٣٦)

অতঃপর তাঁর দিকেই তাদেরকে ফিরিয়ে নেয়া হবে।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ط قُلْ إِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى أَنْ يُّنَزِّلَ اٰيَةً وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٣٧)

৩৭. তারা বলে, তার কাছে তার রবের নিকট হতে কোন নিদর্শন নাযিল হয় না কেন? বল, অবশ্যই আল্লাহ নিদর্শন অবতীর্ণ করতে সক্ষম। কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোকই অবগত নয়।

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ إِلَّآ أُمَمٌ أَمْثَالُكُمْ ط مَا فَرَّطْنَا فِي الْكِتٰبِ مِنْ شَيْءٍ ثُمَّ إِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ (٣٨)

৩৮. ভূপৃষ্ঠে বিচরণশীল এমন কোন জীব নেই, আর দু'ডানা সহযোগে উড্ডয়নশীল এমন কোন পাখি নেই যারা তোমাদের মত একটি উম্মাত নয়। (লাওহে মাহ্ফুয অথবা আল-কুরআন) কিতাবে আমি কোন কিছুই বাদ দেইনি। অতঃপর তাদের প্রতিপালকের কাছে তাদেরকে একত্রিত করা হবে।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ فِي الظُّلُمٰتِ ط مَنْ يَّشَإِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ط وَمَنْ يَّشَأْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٣٩)

৩৯. যারা আমার আয়াতকে মিথ্যে জানে তারা বধির ও মুক। তারা আছে গভীর অন্ধকারে, আল্লাহ যাকে চান পথভ্রষ্ট করে দেন, আর যাকে চান সঠিক পথে স্থাপন করেন।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتٰكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ أَوْ أَتَتْكُمُ السَّاعَةُ أَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ج إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٤٠)

৪০. বল, তোমরা কি ভেবে দেখেছ, তোমাদের উপর যদি আল্লাহর শাস্তি এসে পড়ে কিংবা তোমাদের উপর ক্বিয়ামাত এসে যায় তাহলে কি তোমরা আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কাউকে ডাকবে? (বল না) তোমরা যদি সত্যবাদী হও।

بَلْ إِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ مَا تَدْعُوْنَ إِلَيْهِ إِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ مَا تُشْرِكُوْنَ ع (٤١)

৪১. বরং (এমন অবস্থায়) তোমরা একমাত্র তাঁকেই ডেকে থাক, অতঃপর ইচ্ছে করলে তিনি তা দূর করে দেন যার জন্য তোমরা তাঁকে ডাক আর তোমরা যাদেরকে তাঁর অংশীদার বানাও তাদের কথা ভুলে যাও।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلٰٓى أُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَخَذْنٰهُمْ بِالْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَتَضَرَّعُوْنَ (٤٢)

৪২. তোমার পূর্বে আমি অনেক জাতির কাছে রসূল পাঠিয়েছি, কিন্তু তাদের অবাধ্যতার কারণে) অভাব অনটন আর দুঃখ-ক্লেশ দিয়ে তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম যাতে তারা বিনীত হয়।

فَلَوْلَآ إِذْ جَآءَهُمْ بَأْسُنَا تَضَرَّعُوْا وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٤٣)

৪৩. আমার শাস্তি যখন তাদের উপর পড়ল তখন তারা বিনয় নম্রতা অবলম্বন করল না কেন? বরং তাদের অন্তর আরো শক্ত হয়ে গেল, আর তারা যা করছিল শয়তান সেগুলোকে তাদের জন্য (খুব ভাল কাজ হিসেবে) সুশোভিত করে দিয়েছিল।

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ أَبْوَابَ كُلِّ شَيْءٍ ط حَتّٰٓى إِذَا فَرِحُوْا بِمَآ أُوْتُوْآ أَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً فَإِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ (٤٤)

৪৪. তাদেরকে যে নাসীহাত করা হয়েছিল তারা যখন তা ভুলে গেল, তখন আমি তাদের জন্য যাবতীয় নি'আমাতের দরজা খুলে দিলাম; পরিশেষে, তাদেরকে যা দেয়া হল তাতে তারা যখন আনন্দে মেতে উঠল, হঠাৎ করে তাদেরকে ধরে বসলাম। তখন (যাবতীয় কল্যাণ থেকে) তারা নিরাশ হয়ে গেল।

فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ط وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٤٥)

৪৫. অতঃপর যারা যুল্ম করেছিল তাদের শিকড় কেটে দেয়া হল, আর সমস্ত প্রশংসা বিশ্বজগতের প্রতিপালকের জন্য।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ وَأَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِهٖ ط أُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ (٤٦)

৪৬. (হে রসূল) বল, তোমরা কি ভেবে দেখেছ আল্লাহ যদি তোমাদের শ্রবণশক্তি আর দর্শন শক্তি কেড়ে নেন, আর তোমাদের অন্তরে মোহর লাগিয়ে দেন তাহলে আল্লাহ ছাড়া আর কে ইলাহ আছে সেগুলো তোমাদেরকে ফিরিয়ে দেবে? লক্ষ্য কর আমি আমার (শক্তি-ক্ষমতার) নিদর্শনগুলোকে কেমন বিশদভাবে বর্ণনা করি কিন্তু তা সত্ত্বেও তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

قُلْ أَرَأَيْتَكُمْ إِنْ أَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً أَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ (٤٧)

৪৭. বল, তোমরা কি চিন্তা করে দেখেছ, যদি তোমাদের কাছে আকস্মিক বা প্রকাশ্যে আল্লাহর শাস্তি নেমে আসে তাহলে যালিম সম্প্রদায় ছাড়া আর কে ধ্বংস হবে?

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ إِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ج فَمَنْ اٰمَنَ وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٤٨)

৪৮। আমি তো রসূলদেরকে কেবল সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী করে পাঠিয়েছি, অতঃপর (রসূলের আনুগত্য করে) যারা ঈমান আনে ও নিজেকে সংশোধন করে তাদের নেই কোন ভয়, নেই তাদের কোন দুঃখ।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ (٤٩)

৪৯. আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যে মনে করে, শাস্তি তাদেরকে স্পর্শ করবে, কেননা তারা নাফরমানীতে লিপ্ত ছিল।

قُلْ لَّآ أَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللهِ وَلَآ أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ أَقُوْلُ لَكُمْ إِنِّيْ مَلَكٌ ج إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ ط قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ط أَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ع (٥٠)

৫০. বল, আমি তোমাদেরকে বলি না যে, আমার কাছে আল্লাহর ধন-ভাণ্ডার আছে, আর আমি অদৃশ্যের খবরও জানি না। আর আমি তোমাদেরকে এ কথাও বলি না যে, আমি ফেরেশতা, আমার প্রতি যা অবতীর্ণ করা হয় তাছাড়া (অন্য কিছুর) আমি অনুসরণ করি না। বল, অন্ধ আর চোখওয়ালা কি সমান, তোমরা কি চিন্তা করে দেখ না?

وَأَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ أَنْ يُّحْشَرُوْآ إِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (٥١)

৫১. তুমি তা দিয়ে (অর্থাৎ কুরআন দিয়ে) তাদেরকে সতর্ক কর যারা ভয় করে যে, তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের দিকে একত্রিত করা হবে, যিনি ছাড়া তাদের জন্য কোন অভিভাবক নেই এবং সুপারিশকারী নেই– যাতে তারা সংযত হয়ে চলে।

وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ط مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (٥٢)

৫২. যারা তাদের প্রতিপালকের সন্তুষ্টি লাভের উদ্দেশ্যে সকাল-সন্ধ্যায় তাঁকে ডাকে তাদেরকে (অর্থাৎ তোমার নিকট সমাগত গরীব মু'মিনদেরকে) তুমি দূরে সরিয়ে দিও না। তাদের কোন 'আমালের জন্য তোমাকে কোন জবাবদিহি করতে হবে না, আর তোমার কোন 'আমালের জন্যও তাদেরকে কোন জবাবদিহি করতে হবে না, কাজেই তুমি যদি তাদেরকে অর্থাৎ (গরীব মু'মিনদেরকে) দূরে সরিয়ে দাও তবে তুমি যালিমদের মধ্যে গণ্য হবে।

وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْآ أَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ط أَلَيْسَ اللهُ بِأَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ (٥٣)

৫৩. আর এভাবেই আমি তাদের একদলকে অন্যদলের মাধ্যমে পরীক্ষা করেছি যাতে তারা বলে, এরা কি সেই লোক আমাদের মধ্যে যাদেরকে আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন, আল্লাহ কি তাঁর কৃতজ্ঞ বান্দাহদের সম্পর্কে অধিক অবগত নন?

وَإِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا فَقُلْ

৫৪. আমার আয়াতে বিশ্বাসী লোকেরা যখন

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ أَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ سُوْٓءًا ۢبِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْ ۢبَعْدِهٖ وَأَصْلَحَ ۙ فَأَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥٤)

তোমার কাছে আসে তখন তাদেরকে বল, "তোমাদের প্রতি সালাম"। তোমাদের প্রতিপালক দয়া-রহমাতের নীতি নিজের প্রতি অবধারিত করে নিয়েছেন আর তা হচ্ছে যদি তোমাদের কোন ব্যক্তি না জেনে অন্যায় পাপ করে, অতঃপর তাওবাহ করে ও নিজেকে সংশোধন করে, তাহলে আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ع (٥٥)

৫৫. এভাবেই আমি আমার আয়াতগুলোকে সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করি যাতে অপরাধীদের পথ পরিষ্কাররূপে প্রকাশ পেয়ে যায়।

قُلْ إِنِّيْ نُهِيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ ط قُلْ لَّآ أَتَّبِعُ أَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ إِذًا وَّمَآ أَنَا۠ مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ (٥٦)

৫৬. বল, তোমরা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে যাদেরকে ডাকো, তাদের ইবাদত করতে আমাকে নিষেধ করা হয়েছে। বল, আমি তোমাদের খোশ-খেয়ালের অনুসরণ করি না, তা করলে আমি পথভ্রষ্ট হয়ে যাব, সে অবস্থায় আমি আর হিদায়াতপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত থাকতে পারব না।

قُلْ إِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ بِهٖ ط مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ط إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ط يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ (٥٧)

৫৭. বল, আমি আমার প্রতিপালকের নিকট থেকে পাওয়া এক উজ্জ্বল প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত; অথচ তোমরা তা মিথ্যে মনে করেছ। যা তোমরা খুব তাড়াতাড়ি পেতে চাও (অর্থাৎ আল্লাহ্‌র আযাব) তা আমার আয়ত্তে নেই। হুকুম বা কর্তৃত্বের মালিকানা আল্লাহ ছাড়া কারো কাছে নেই। তিনিই সত্যকথা বর্ণনা করেন, আর তিনিই সর্বোত্তম ফায়সালাকারী।

قُلْ لَّوْ أَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ لَقُضِيَ الْأَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ط وَاللهُ أَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ (٥٨)

৫৮. বল, তোমরা যা তাড়াতাড়ি চাচ্ছ তা যদি আমার কাছে থাকত তাহলে আমার আর তোমাদের মধ্যে যে ব্যাপার তার ফায়সালা হয়ে যেত, অন্যায়কারীদের সম্পর্কে আল্লাহ খুবভাবেই অবহিত।

وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ إِلَّا هُوَ ط وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ط وَمَا تَسْقُطُ مِنْ

৫৯. সমস্ত গায়বের চাবিকাঠি তাঁর কাছে, তিনি ছাড়া আর কেউ তা জানে না, জলে-স্থলে যা আছে তা তিনি জানেন, এমন একটা পাতাও পড়ে না যা তিনি জানেন না। যমীনের গহীন অন্ধকারে

Contents

وَرَقَةٍ إِلَّا يَعْلَمُهَا وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْأَرْضِ وَلَا رَطْبٍ وَّلَا يَابِسٍ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (٥٩)

কোন শস্য দানা নেই, নেই কোন ভেজা ও শুকনো জিনিস যা সুস্পষ্ট কিতাবে (লিখিত) নেই।

وَهُوَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰكُمْ بِاللَّيْلِ وَيَعْلَمُ مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ يَبْعَثُكُمْ فِيْهِ لِيُقْضٰٓى أَجَلٌ مُّسَمًّى ج ثُمَّ إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ يُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ع (٦٠)

৬০. তিনিই রাত্রিকালে তোমাদের আত্মাকে নিয়ে নেন, আর দিনের বেলা যা তোমরা কর তা তিনি জানেন। অতঃপর দিনের বেলা তিনি তোমাদের জাগিয়ে দেন, যাতে জীবনের নির্দিষ্টকাল পূর্ণ হয়। অতঃপর তাঁর পানেই তোমাদের প্রত্যাবর্তন, অতঃপর তিনি তোমাদের নিকট বর্ণনা করে দেবেন যা তোমরা করছিলে।

وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَيُرْسِلُ عَلَيْكُمْ حَفَظَةً ط حَتّٰىٓ إِذَا جَآءَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا يُفَرِّطُوْنَ (٦١)

৬১. তিনি তাঁর বান্দাহ্দের উপর পূর্ণ কর্তৃত্বশীল, আর তিনি তোমাদের উপর রক্ষক নিযুক্ত করেন। অতঃপর তোমাদের কারো মৃত্যুর সময় উপস্থিত হলে আমার প্রেরিতগণ (ফেরেশতারা) তার মৃত্যু ঘটায়। নিজেদের কর্তব্য পালনে তারা বিন্দুমাত্র ত্রুটি করে না।

ثُمَّ رُدُّوْٓا إِلَى اللهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقِّ ط أَلَا لَهُ الْحُكْمُ قف وَهُوَ أَسْرَعُ الْحٰسِبِيْنَ (٦٢)

৬২. অতঃপর তাদেরকে তাদের প্রকৃত প্রতিপালকের নিকট ফিরিয়ে নেয়া হবে। সাবধান! কর্তৃত্ব তাঁরই, আর তিনি হিসাব গ্রহণে সর্বাপেক্ষা ত্বরিতগতি।

قُلْ مَنْ يُّنَجِّيْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ج لَئِنْ أَنْجٰنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (٦٣)

৬৩. বল, বিনীতভাবে আর সংগোপনে যখন তাঁকে ডাক তখন জল-স্থলের অন্ধকার হতে কে তোমাদেরকে রক্ষা করে। (বিপদে পড়লে বলতে থাক) এথেকে তুমি যদি আমাদেরকে রক্ষা কর তাহলে আমরা অবশ্যই কৃতজ্ঞদের অন্তর্ভুক্ত হব।

قُلِ اللهُ يُنَجِّيْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ

৬৪. বল, আল্লাহ্ই তোমাদেরকে এথেকে আর সমস্ত বিপদ থেকে রক্ষা করেন, অতঃপর তোমরা তাঁর অংশী স্থির কর।

৫৯। সালিম ইবনু 'আবদুল্লাহ (ﷺ) তাঁর পিতা থেকে বর্ণনা করেছেন যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, অদৃশ্যের চাবি পাঁচটি– "নিশ্চয় আল্লাহ্রই কাছে রয়েছে ক্বিয়ামাত সম্বন্ধীয় জ্ঞান এবং তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন, আর তিনিই জানেন যা কিছু আছে গর্ভাধারে। কেউ জানে না আগামীকল্য সে কী উপার্জন করবে এবং কেউ জানে না কোথায় তার মৃত্যু ঘটবে। নিশ্চয় আল্লাহ সবকিছু জানেন, সব খবর রাখেন"– (সূরাহ লুকমান ৩১/৩৪)। –বুখারী ৪৬২৭ [১০৩৯; আহমাদ ৪৭৫২, ৫১১২]

ثُمَّ أَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ (٦٤)

قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى أَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ ط اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّهُمْ يَفْقَهُوْنَ (٦٥)

৬৫. বল, তিনি তোমাদের উপর থেকে অথবা পদতল থেকে 'আযাব পাঠাতে (সক্ষম) অথবা তোমাদেরকে দলে দলে বিভক্ত করার মাধ্যমে একদলকে অন্যদলের সংঘাত সংঘর্ষ ও হিংসা হানাহানির আস্বাদ গ্রহণ করাতে সক্ষম। লক্ষ্য কর, আমি নিদর্শনাবলী কেমন বিস্তারিত বর্ণনা করছি যাতে তারা উপলব্ধি করতে পারে।

وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ط قُلْ لَّسْتُ عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ط (٦٦)

৬৬. তোমার কওম তা (অর্থাৎ 'আযাবকে) মিথ্যে মনে করছে কিন্তু তা প্রকৃত সত্য। বল, আমি তোমাদের কর্মবিধায়ক নই।

لِكُلِّ نَبَإٍ مُّسْتَقَرٌّ ز وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (٦٧)

৬৭. প্রত্যেক (ভবিষ্যৎ) বাণীর (সত্যরূপে প্রকাশিত হওয়ার) জন্য একটা সময় নির্ধারিত করা আছে আর তা তোমরা শীঘ্রই জানতে পারবে।

وَإِذَا رَأَيْتَ الَّذِيْنَ يَخُوْضُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ غَيْرِهٖ ط وَإِمَّا يُنْسِيَنَّكَ الشَّيْطٰنُ فَلَا تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٦٨)

৬৮. যখন তুমি দেখ আমার আয়াত নিয়ে তারা উপহাসপূর্ণ আলোচনা করছে তখন তাদের থেকে সরে পড় যে পর্যন্ত তারা অন্য বিষয়ের আলোচনায় প্রবৃত্ত না হয়। আর যখন শয়ত্বান তোমাকে (আল্লাহ্‌র এই নাসীহাত) ভুলিয়ে দেয় তখন স্মরণ হয়ে গেলেই যালিম সম্প্রদায়ের সঙ্গে আর বসবে না।

وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (٦٩)

৬৯. তাদের কোন কাজের হিসেব দেয়ার দায়-দায়িত্ব মুত্তাকীদের উপর নেই। কিন্তু উপদেশ দেয়া কর্তব্য যাতে ওরাও তাকওয়া অবলম্বন করে।

৬৫। জাবির ইবনু 'আবদুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, যখন এ আয়াত قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰٓى أَنْ يَّبْعَثَ عَلَيْكُمْ عَذَابًا مِّنْ فَوْقِكُمْ অবতীর্ণ হল তখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, "আপনার কাছে আশ্রয় চাচ্ছি, আবার যখন أَوْ مِنْ تَحْتِ أَرْجُلِكُمْ অবতীর্ণ হল, তখনও বললেন, আপনার কাছে আশ্রয় চাচ্ছি এবং যখন أَوْ يَلْبِسَكُمْ شِيَعًا وَّيُذِيْقَ بَعْضَكُمْ بَأْسَ بَعْضٍ অবতীর্ণ হল তখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, এটা অপেক্ষাকৃত হালকা, তিনি هٰذَا أَهْوَنُ কিংবা هٰذَا أَيْسَرُ বলেছেন। -বুখারী ৪৬২৮ [৭৩১৩, ৭৪০৬; তিরমিযী ৩০৬৫, আহমাদ ১৩৯০৪]

وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَذَكِّرْ بِهٖٓ أَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ق صلے لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ج وَإِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ط أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ أُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ج لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ أَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ع (٧٠)

৭০. যারা তাদের দ্বীনকে খেলা তামাশা বানিয়ে নিয়েছে আর পার্থিব জীবন যাদেরকে প্রতারিত করেছে তুমি তাদেরকে বর্জন কর। আর তা (অর্থাৎ কুরআন) দিয়ে তাদেরকে উপদেশ দাও যাতে কেউ স্বীয় কৃতকর্মের কারণে ধ্বংস না হয়, আল্লাহ ছাড়া তার কোন অভিভাবক নেই এবং কোন সুপারিশকারী নেই, (মুক্তির) বিনিময়ে সব কিছু দিতে চাইলেও তা তার থেকে গ্রহণ করা হবে না, ওরাই তারা যারা তাদের কৃতকর্মের জন্য ধ্বংস হবে, তাদের জন্য আছে ফুটন্ত গরম পানীয় আর মহা শাস্তি, যেহেতু তারা কুফরীতে লিপ্ত ছিল।

قُلْ أَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ مَا لَا يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى أَعْقَابِنَا بَعْدَ إِذْ هَدٰىنَا اللهُ كَالَّذِي اسْتَهْوَتْهُ الشَّيٰطِيْنُ فِي الْأَرْضِ حَيْرَانَ ص لَهٗٓ أَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ إِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ط قُلْ إِنَّ هُدَى اللهِ هُوَ الْهُدٰى ط وَأُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لا (٧١)

৭১. বল, আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে আমরা কি এমন কিছুকে ডাকব যা আমাদের উপকারও করে না, অপকারও করে না? আল্লাহ আমাদেরকে হিদায়াত দানের পর আমরা কি পিছনে ফিরে যাব তার মত শয়ত্বান যাকে বিভ্রান্ত করে দিয়েছে আর দুনিয়ায় সে ঘুরে মরছে। অথচ তার সঙ্গী সাথীরা তাকে সঠিক পথের দিকে ডাক দিয়ে বলছে, এদিকে এসো। বল, আল্লাহ্‌র হিদায়াতই হচ্ছে সত্যিকারের হিদায়াত, বিশ্বজগতের প্রতিপালকের কাছে আত্মসমর্পণ করার জন্যই আমাদেরকে আদেশ দেয়া হয়েছে।

وَأَنْ أَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ط وَهُوَ الَّذِيْٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٧٢)

৭২. আরও (আদিষ্ট হয়েছি) নামায কায়িম করতে আর তাঁকে ভয় করতে আর তিনি হলেন (সেই সত্ত্বা) যাঁর কাছে তোমাদেরকে সমবেত করা হবে।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ط وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ە ط قَوْلُهُ الْحَقُّ ط وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ ط عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ط وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ (٧٣)

৭৩. তিনি আসমান আর যমীনকে সত্যিকারভাবে সৃষ্টি করেছেন (খেলা-তামাশার জন্য নয়)। আর যখনই তিনি বলবেন, (কিয়ামাত) 'হও', তখনই তা হয়ে যাবে, তাঁর কথাই প্রকৃত সত্য। যেদিন সিঙ্গায় ফুৎকার দেয়া হবে সেদিন কর্তৃত্ব থাকবে তাঁরই হাতে। অদৃশ্য ও দৃশ্য সম্বন্ধে ওয়াকেফহাল, তিনি হিকমাতওয়ালা, সবকিছুর

ব্যাপারে তিনি সবিশেষ জ্ঞাত।

وَإِذْ قَالَ إِبْرٰهِيْمُ لِأَبِيْهِ اٰزَرَ أَتَتَّخِذُ أَصْنَامًا اٰلِهَةً ج إِنِّيْٓ أَرٰىكَ وَقَوْمَكَ فِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ (٧٤)

৭৪. আর (স্মরণ কর) যখন ইব্রাহীম তার পিতা আজরকে বলেছিল, আপনি কি মূর্তিগুলোকে 'ইলাহ'রূপে গ্রহণ করেছেন, আমি তো আপনাকে আর আপনার জাতিকে স্পষ্টভাবে পথভ্রষ্টতায় নিমজ্জিত দেখছি।

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ إِبْرَاهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ (٧٥)

৭৫. এভাবে আমি ইব্রাহীমকে আকাশ ও পৃথিবী রাজ্যের ব্যবস্থাপনা দেখিয়েছি যাতে সে নিশ্চিত বিশ্বাসীদের অন্তর্ভুক্ত হতে পারে।

فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ اللَّيْلُ رَأٰى كَوْكَبًا ج قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ج فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَآ أُحِبُّ الْاٰفِلِيْنَ (٧٦)

৭৬. রাতের আঁধার যখন তাকে আচ্ছন্ন করল তখন সে নক্ষত্র দেখতে পেল, (তখন) বলল, এটাই হচ্ছে আমার প্রতিপালক। কিন্তু যখন তা অস্তমিত হল, সে বলল, যা অস্তমিত হয়ে যায় তার প্রতি আমার কোন অনুরাগ নেই।

فَلَمَّا رَأَى الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ج فَلَمَّآ أَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ لَأَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ (٧٧)

৭৭. অতঃপর সে যখন চন্দ্রকে উজ্জ্বল হয়ে উঠতে দেখল তখন বলল, এটা হচ্ছে আমার প্রতিপালক। কিন্তু যখন তা অস্তমিত হল তখন সে বলল, আমার প্রতিপালক যদি আমাকে সঠিক পথের দিশা না দেন তাহলে আমি অবশ্যই পথভ্রষ্ট সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাব।

فَلَمَّا رَأَى الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا رَبِّيْ هٰذَآ أَكْبَرُ ج فَلَمَّآ أَفَلَتْ قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ (٧٨)

৭৮. অতঃপর যখন সে সূর্যকে অতি উজ্জ্বল হয়ে উদিত হতে দেখল তখন বলল, এটাই হচ্ছে আমার প্রতিপালক, এটাই হচ্ছে সব থেকে বড়। অতঃপর যখন তা অস্তমিত হল তখন সে বলল, হে আমার জাতির লোকেরা! তোমরা যেগুলোকে (আল্লাহ্‌র) অংশীদার স্থির কর সেগুলোর সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই।

إِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ج (٧٩)

৭৯. আমি একনিষ্ঠ হয়ে তাঁর দিকে আমার মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছি যিনি আকাশমণ্ডলী আর পৃথিবীকে সৃষ্টি করেছেন। আর আমি মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত নই।

وَحَآجَّهُ قَوْمُهُ ط قَالَ أَتُحَآجُّوْنِّيْ فِي اللهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ط وَلَآ أَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ بِهٖٓ

৮০. তার জাতি তার সাথে বাদানুবাদ করল। সে বলল, তোমরা আল্লাহ্‌র ব্যাপারে আমার সাথে বাদানুবাদ করছ অথচ তিনি আমাকে সৎপথ দেখিয়েছেন। তোমরা যাদেরকে তার অংশীদার

إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْئًا ط وَسِعَ رَبِّيْ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ط أَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ (٨٠)

স্থির কর আমি তাদেরকে ভয় করি না। অবশ্য আল্লাহ যদি কিছু ইচ্ছে করেন (তবে সে কথা আলাদা)। প্রতিটি বস্তু সম্পর্কে আমার প্রতিপালকের জ্ঞান পরিব্যাপ্ত, তোমরা কি তা বুঝবে না?

وَكَيْفَ أَخَافُ مَآ أَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ أَنَّكُمْ أَشْرَكْتُمْ بِاللهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ط فَأَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ أَحَقُّ بِالْأَمْنِ ج إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ م (٨١)

৮১. তোমরা যাদেরকে (আল্লাহ্‌র) অংশীদার স্থির করেছ আমি তাদেরকে কীভাবে ভয় করতে পারি, যেখানে তোমরা আল্লাহ্‌র অংশীদার বানিয়ে নিতে ভয় কর না যে সম্পর্কে আল্লাহ কোন প্রমাণই নাযিল করেননি। নিরাপত্তা লাভের ব্যাপারে (এ) দু'টি দলের মধ্যে কোন্‌টি বেশি হকদার? বল, যদি তোমাদের জানা থাকে।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا إِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ أُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْأَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ع (٨٢)

৮২. যারা ঈমান এনেছে আর যুল্‌ম (অর্থাৎ শিরক্‌) দ্বারা তাদের ঈমানকে কলুষিত করেনি, নিরাপত্তা লাভ তারাই করবে আর তারাই হল সঠিক পথপ্রাপ্ত।

وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ إِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ط نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ط إِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ (٨٣)

৮৩. এ হল আমার যুক্তি-প্রমাণ যা আমি ইব্‌রাহীমকে দিয়েছিলাম তার কাওমের বিপক্ষে, আমি যাকে ইচ্ছে মর্যাদায় উন্নীত করি। তোমাদের প্রতিপালক নিশ্চয়ই হিকমাতওয়ালা, সর্বজ্ঞ।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ إِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ط كُلًّا هَدَيْنَا ج وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَأَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ لا (٨٤)

৮৪. আমি তাকে দান করেছিলাম ইসহাক আর ইয়াকূব; তাদের প্রত্যেককে সৎ পথ দেখিয়েছিলাম, আর এর পূর্বে নূহকে সৎ পথ দেখিয়েছিলাম আর তার বংশধর থেকে দাঊদ, সুলাইমান, আইউব, ইউসুফ, মূসা ও হারূনকে (সৎ পথ দেখিয়েছিলাম), সৎ কর্মশীলদের আমি এভাবেই পুরস্কৃত করে থাকি।

وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَإِلْيَاسَ ط كُلٌّ مِّنَ

৮৫. আর যাকারিয়া, ইয়াহ্‌ইয়া, 'ঈসা ও ইল্‌য়্যাস- এরা সবাই সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত।

৮২। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'উদ (রাঃ) বলেন, যখন وَلَمْ يَلْبِسُوا إِيمَانَهُمْ بِظُلْمٍ আয়াত অবতীর্ণ হল, তখন তাঁর সহাবীগণ বললেন, "যুল্‌ম করেনি আমাদের মধ্যে এমন কোন্‌ ব্যক্তি আছে?" এরপর অবতীর্ণ হল إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيمٌ –"নিশ্চয় শির্‌ক মহা যুল্‌ম"– (সূরাহ লুক্বমান ৩১/১৩)। –বুখারী ৪৬২৯ [৩২; মুসলিম ১২৪, তিরমির্যী ৩০৬৭, আহমাদ ৩৫৭৮, ৪০২১]

الصّٰلِحِيْنَ ۙ (٨٥)

وَإِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ط وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۙ (٨٦)

৮৬. আর ইসমাঈল, আল ইয়াসা'আ, ইউনুস ও লূত– এদের প্রত্যেককে আমি বিশ্বজগতে জাতিসমূহের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছিলাম।

وَمِنْ اٰبَآئِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَإِخْوَانِهِمْ ج وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٨٧)

৮৭. তাদের পিতৃপুরুষ, বংশধর ও ভ্রাতৃবর্গ থেকে তাদেরকে বেছে নিয়েছি আর সত্য-সঠিক পথে পরিচালিত করেছি।

ذٰلِكَ هُدَى اللهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ط وَلَوْ أَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٨٨)

৮৮. এ হচ্ছে আল্লাহ্র হিদায়াত, তিনি তাঁর বান্দাহ্দের থেকে যাকে ইচ্ছে হিদায়াত করেন, তারা যদি শির্ক করত তবে তাদের সব কৃতকর্ম বিনষ্ট হয়ে যেত।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ج فَإِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَآءِ فَقَدْ وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ (٨٩)

৮৯. এরা তারাই যাদেরকে আমি কিতাব, হিকমাত ও নবুওত দান করেছিলাম, এখন যদি তারা (অর্থাৎ বিধর্মীরা) এগুলোকে মেনে নিতে অস্বীকার করে তাহলে আমি এগুলোর ভার এমন সম্প্রদায়ের কাছে সোপর্দ করেছি যারা (অর্থাৎ মু'মিনরা) এগুলোর অস্বীকারকারী হবে না।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللهُ فَبِهُدٰهُمُ اقْتَدِهْ ط قُلْ لَّآ أَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ط إِنْ هُوَ

৯০. ওরা হল তারা যাদেরকে আল্লাহ হিদায়াত দান করেছিলেন, তুমি তাদের পথ অনুসরণ কর; বল, এর জন্য (অর্থাৎ বাণী পৌঁছে দেয়ার জন্য) আমি তোমাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাই না। এটা সারা দুনিয়ার মানুষের জন্য উপদেশ বাণী।

৮৬। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেছেন, তিনি বলেছেন, "আমি ইউনুস ইবনু মাত্তা থেকে উত্তম" এমন কথা বলা কারও জন্যে শোভনীয় নয়। –বুখারী ৪৬৩০ [৩৩৯৫; মুসলিম ১৬৫, ২৩৭৭; আবূ দাউদ ৪৬৬৯, আহমাদ ২১৬৮, ২১৯৮]

৯০। মুজাহিদ ইবনু 'আব্বাস (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করেছিলেন যে, সূরাহ সোয়াদ-এ সাজদাহ্ আছে কি না। তিনি উত্তরে বললেন, হ্যাঁ আছে। এরপর এই আয়াত তিলাওয়াত করলেন– ﴿وَوَهَبْنَا لَهٗ إِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ...... فَبِهُدَاهُمُ اقْتَدِهْ﴾ – তারপর বললেন যে, তিনি অর্থাৎ দাউদ (আঃ) তাঁদের অন্তর্ভুক্ত। ইয়াযীদ ইবনু হারূন, মুহাম্মাদ ইবনু 'উবায়দ এবং সাহল ইবনু ইউসুফ আওয়াম থেকে, তিনি মুজাহিদ থেকে একটু বেশি বর্ণনা করেছেন, মুজাহিদ বললেন যে, আমি ইবনু 'আব্বাস (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করেছিলাম, এরপর তিনি বললেন, যাদের অনুসরণ করতে বলা হয়েছে তোমাদের নাবী (ﷺ) তাঁদের অন্তর্ভুক্ত। –বুখারী ৪৬৩২ [৩৪২১; তিরমিযী ৫৭৭, নাসায়ী ৯৫৭, আবূ দাউদ ১৪০৯, আহমাদ ২৫১৭, ৩৩৭৭, ৩৪২৬; দারিমী ১৪৬৭]

إِلَّا ذِكْرٰى لِلْعٰلَمِيْنَ ع (٩٠)

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ إِذْ قَالُوْا مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ط قُلْ مَنْ أَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَآءَ بِهٖ مُوْسٰى نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ج وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا أَنْتُمْ وَلَآ اٰبَآؤُكُمْ ط قُلِ اللّٰهُ لا ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ (٩١)

৯১. তারা আল্লাহ্‌কে যথাযথ মর্যাদা দিতে পারেনি যখন তারা এ কথা বলেছে যে, আল্লাহ কোন মানুষের কাছে কোন কিছুই অবতীর্ণ করেননি। বল, তাহলে ঐ কিতাব কে অবতীর্ণ করেছিলেন যা নিয়ে এসেছিলেন মূসা, যা ছিল মানুষের জন্য আলোকবর্তিকা ও সঠিক পথের দিকদিশারী, কাগজের পৃষ্ঠায় যা তোমরা প্রকাশ কর আর বেশির ভাগই গোপন কর, যার সাহায্যে তোমাদেরকে জানিয়ে দেয়া হয়েছে যা তোমরাও জানতে না, তোমাদের বাপ-দাদারাও জানত না? বল, (মূসার প্রতি ঐ কিতাব) আল্লাহ্‌ই (নাযিল করেছিলেন), অতঃপর তাদেরকে তাদের নিরর্থক আলোচনায় মত্ত হয়ে থাকতে দাও।

وَهٰذَا كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا ط وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ (٩٢)

৯২. আর [এখন যা মুহাম্মাদ (ﷺ)-এর প্রতি নাযিল করা হয়েছে] এ কিতাব বরকতে ভরপুর, তাদের কাছে যে কিতাব আছে তার সত্যতা প্রতিপাদনকারী, আর তা মক্কা ও তার চতুষ্পার্শ্বস্থ এলাকার লোকেদেরকে সতর্ক করার জন্য প্রেরিত। যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে তারা এতে বিশ্বাস করে, আর তারা তাদের সলাতের হিফাযাত করে।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا أَوْ قَالَ أُوْحِيَ إِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ إِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ قَالَ سَأُنْزِلُ مِثْلَ مَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ ط وَلَوْ تَرٰٓى إِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَاسِطُوْٓا أَيْدِيْهِمْ ج أَخْرِجُوْٓا أَنْفُسَكُمْ ط اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ

৯৩. তার থেকে বড় যালিম আর কে যে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে কথা রচনা করে অথবা বলে, আমার প্রতি ওয়াহী নাযিল হয়; যদিও তার কাছে কিছুই অবতীর্ণ হয় না। আর যে বলেঃ আল্লাহ যা নাযিল করেন আমি শীঘ্রই তার অনুরূপ নাযিল করব। হায়! যদি তুমি ঐ যালিমদেরকে দেখতে পেতে যখন তারা মৃত্যু যন্ত্রণায় ছটফট করতে থাকবে, আর ফেরেশতারা হাত বাড়িয়ে দিয়ে বলবে, তোমাদের জানগুলোকে বের করে দাও, আজ তোমাদেরকে অবমাননাকর আযাব দেয়া হবে যেহেতু তোমরা আল্লাহ সম্পর্কে এমন কথা বলতে যা প্রকৃত সত্য নয় আর তাঁর

اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ (٩٣)

নিদর্শনগুলোর ব্যাপারে ঔদ্ধত্য প্রদর্শন করতে।

وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ج وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ أَنَّهُمْ فِيْكُمْ شُرَكٰٓؤُا ط لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ع (٩٤)

৯৪. (ক্বিয়ামাতের দিন আল্লাহ বলবেন) তোমরা আমার নিকট তেমনই নিঃসঙ্গ অবস্থায় হাজির হয়েছ যেমনভাবে আমি তোমাদেরকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছিলাম, তোমাদেরকে যা (নি'মাতরাজি) দান করেছিলাম তা তোমরা তোমাদের পেছনে ফেলে রেখে এসেছ, আর তোমাদের সাথে সেই সুপারিশকারীগণকেও দেখছি না যাদের সম্পর্কে তোমরা ধারণা করতে যে তোমাদের কার্য উদ্ধারের ব্যাপারে তাদের অংশ আছে। তোমাদের মধ্যেকার সম্পর্ক একেবারেই ছিন্ন হয়ে গেছে, আর তোমরা যে সব ধারণা করতে সে সব অকার্যকর প্রমাণিত হয়েছে।

إِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ط يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ مِنَ الْحَيِّ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَأَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ (٩٥)

৯৫. আল্লাহ্ই হচ্ছেন শস্য দানা ও বীজ বিদীর্ণকারী, তিনি মৃত থেকে জীবন্তকে বের করেন এবং জীবন্ত থেকে মৃতকে। এই হচ্ছেন আল্লাহ; সৎপথ থেকে তোমরা কোথায় চলে যাচ্ছ?

فَالِقُ الْإِصْبَاحِ ج وَجَعَلَ اللَّيْلَ سَكَنًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ط ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (٩٦)

৯৬. তিনি ঊষার উন্মেষ ঘটান, তিনি রাত সৃষ্টি করেছেন শান্তি ও আরামের জন্য, সূর্য ও চন্দ্র বানিয়েছেন গণনার জন্য। এসব মহাপরাক্রমশালী সর্বজ্ঞাতা কর্তৃক নির্ধারিত।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ط قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (٩٧)

৯৭. তিনি তোমাদের জন্য নক্ষত্ররাজি সৃষ্টি করেছেন যাতে তোমরা সেগুলোর সাহায্যে জলে স্থলে অন্ধকারে পথের দিশা লাভ করতে পার। আমি আমার নিদর্শনগুলোকে জ্ঞানীদের জন্য বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি।

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَنْشَأَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ط قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ (٩٨)

৯৮. তিনি তোমাদেরকে একটি প্রাণ হতে সৃষ্টি করেছেন, তারপর প্রত্যেকের জন্য একটা অবস্থান স্থল আছে আর একটি আছে তাকে গচ্ছিত রাখার জায়গা। জ্ঞান-বুদ্ধি সম্পন্ন লোকেদের জন্য আমি আমার আয়াতগুলোকে বিশদভাবে বর্ণনা করে দিয়েছি।

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ج فَأَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَيْءٍ فَأَخْرَجْنَا مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ج وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ لا وَّجَنّٰتٍ مِّنْ أَعْنَابٍ وَّالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ط أُنْظُرُوْٓا إِلٰى ثَمَرِهٖٓ إِذَآ أَثْمَرَ وَيَنْعِهٖ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكُمْ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٩٩)

৯৯. তিনিই আকাশ থেকে বৃষ্টি বর্ষণ করেন অতঃপর তা দ্বারা আমি সকল প্রকার উদ্ভিদ উদ্গত করি, অতঃপর তা থেকে সবুজ পাতা উদ্গত করি, অতঃপর তা থেকে ঘন সন্নিবিষ্ট শস্যদানা উৎপন্ন করি, খেজুর গাছের মোচা থেকে ঝুলন্ত কাঁদি নির্গত করি, আঙ্গুরের বাগান সৃষ্টি করি, আর সৃষ্টি করি জায়তুন ও ডালিম, সেগুলো একই রকম এবং বিভিন্ন রকমও। লক্ষ্য কর তার ফলের প্রতি যখন গাছে ফল আসে আর ফল পাকে। এসবের ভিতরে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই নিদর্শন আছে।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِيْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ط سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يَصِفُوْنَ ع (١٠٠)

১০০. তারা জ্বীনকে আল্লাহর অংশীদার স্থির করে অথচ তাদেরকে তিনিই সৃষ্টি করেছেন, তারা না জেনে না বুঝে আল্লাহর জন্য পুত্র-কন্যা স্থির করে, তাদের এসব কথা হতে তিনি পবিত্র ও মহান।

بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط أَنّٰى يَكُوْنُ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ط وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ ج وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (١٠١)

১০১. তিনি আকাশমণ্ডলী ও যমীনের উদ্ভাবক, কীভাবে তাঁর সন্তান হতে পারে যেহেতু তাঁর কোন সঙ্গীনীই নেই, সব কিছু তো তিনিই সৃষ্টি করেছেন, আর প্রতিটি জিনিস সম্পর্কে তিনি পূর্ণ জ্ঞান রাখেন।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ج لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ (١٠٢)

১০২. এই হলেন তোমাদের প্রতিপালক, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, সব কিছুর স্রষ্টা; কাজেই তোমরা তাঁরই 'ইবাদাত কর, তিনি সমস্ত বিষয়ের কর্মবিধায়ক।

لَا تُدْرِكُهُ الْأَبْصَارُ ز وَهُوَ يُدْرِكُ الْأَبْصَارَ ج وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ (١٠٣)

১০৩. দৃষ্টি তার নাগাল পায় না বরং তিনিই সকল দৃষ্টি নাগালে রাখেন, তিনি অতিশয় সূক্ষ্মদর্শী, সব বিষয়ে ওয়াকিফহাল।

قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ج فَمَنْ أَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ عَمِيَ فَعَلَيْهَا ط وَمَآ

১০৪. তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে (অন্তরের) আলো এসে পৌঁছেছে, যে লোক (এই আলো দিয়ে) দেখবে তাতে তার নিজেরই কল্যাণ হবে, আর যে অন্ধ থাকবে, তার

أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ (١٠٤)

অকল্যাণ তার ঘাড়েই পড়বে। (বাণী পৌঁছে দেয়ার দায়িত্ব দিয়ে আমাকে পাঠানো হয়েছে) আমি তোমাদেরকে পাহারা দেয়ার জন্য দায়িত্বপ্রাপ্ত হইনি।

وَكَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ وَلِيَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَيِّنَهٗ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (١٠٥)

১০৫. এভাবেই আমি নিদর্শনগুলোকে বার বার নানাভাবে বর্ননা করি। যার ফলে তারা (অর্থাৎ অবিশ্বাসীরা) বলে, তুমি (এসব কথা অন্যের কাছ থেকে) শিখে নিয়েছ, বস্তুত আমি জ্ঞানী লোকদের জন্য তা সুস্পষ্টভাবে বিবৃত করি।

اِتَّبِعْ مَآ أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ج لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ (١٠٦)

১০৬. তুমি তোমার প্রতিপালকের নিকট থেকে যে ওয়াহী পাও তার অনুসরণ কর, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তুমি মুশরিকদের দিক থেকে মুখ ফিরিয়ে নাও।

وَلَوْ شَآءَ اللهُ مَآ أَشْرَكُوْا ط وَمَا جَعَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ج وَمَآ أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ (١٠٧)

১০৭. আল্লাহ ইচ্ছে করলে তারা আল্লাহ্‌র অংশী স্থির করত না, (আসল শিক্ষা তাদেরকে জানিয়ে দেয়া হয়েছে, এখন তারা মানুক বা না মানুক) আমি তোমাকে তাদের উপর পাহারাদার পাঠায়নি (জোর করে আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করিয়ে নেয়ার জন্য), আর তুমি তাদের পক্ষ থেকে কর্মসম্পাদনকারীও নও।

وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ فَيَسُبُّوا اللهَ عَدْوًام بِغَيْرِ عِلْمٍ ط كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ أُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ص ثُمَّ إِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٠٨)

১০৮. (ওহে মুমিনগণ!) আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে যাদেরকে তারা ডাকে তোমরা তাদেরকে গালি দিও না, কেননা তারা তাদের অজ্ঞতাপ্রসূত শত্রুতার বশবর্তী হয়ে আল্লাহ্‌কে গালি দেবে। আর এভাবেই আমি প্রত্যেক জাতির জন্য তাদের কার্যকলাপকে তাদের দৃষ্টিতে চাকচিক্যময় করে দিয়েছি, অতঃপর তাদের প্রত্যাবর্তন (ঘটবে) তাদের প্রতিপালকের নিকট, তখন তিনি তাদেরকে জানিয়ে দিবেন যা কিছু তারা করতো।

وَأَقْسَمُوْا بِاللهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ط قُلْ إِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ لا أَنَّهَآ إِذَا جَآءَتْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٠٩)

১০৯. তারা আল্লাহ্‌র নামে কঠিন শপথ করে বলে– তাদের নিকট যদি কোন নিদর্শন আসত তবে তারা অবশ্যই তাঁর প্রতি ঈমান আনত। বল, নিদর্শন (আনার ব্যাপারটি) হল আল্লাহ্‌র ইখতিয়ারভুক্ত। নিদর্শন আসলেও তারা যে ঈমান আনবে না, এ কথা কীভাবে তোমাদেরকে বুঝানো যাবে?

وَنُقَلِّبُ أَفْئِدَتَهُمْ وَأَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ع (١١٠)

১১০. আর আমিও এদের অন্তর ও দৃষ্টিসমূহকে (অন্য দিকে) ফিরিয়ে দেব, আর তাদেরকে তাদের অবাধ্যতার ঘূর্ণিপাকে অন্ধের মত ঘুরে মরার সুযোগ দেব।

وَلَوْ أَنَّنَا نَزَّلْنَآ إِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللهُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ يَجْهَلُوْنَ (١١١)

১১১. আমি যদি তাদের কাছে ফেরেশতা অবতীর্ণ করতাম আর মৃতরা তাদের সাথে কথা বলত আর আমি তাদের সামনে যাবতীয় বস্তু হাজির করে দিতাম তবুও আল্লাহ্‌র ইচ্ছে ব্যতীত তারা ঈমান আনত না, মূলতঃ তাদের অধিকাংশই অজ্ঞতাপূর্ণ কাজ করে।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا شَيٰطِيْنَ الْإِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ط وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ (١١٢)

১১২. এভাবে আমি প্রত্যেক নাবীর জন্য মানুষ আর জ্বীন শয়তানদের মধ্য হতে শত্রু বানিয়ে দিয়েছি, প্রতারণা করার উদ্দেশে তারা একে অপরের কাছে চিত্তাকর্ষক কথাবার্তা বলে। তোমার প্রতিপালক ইচ্ছে করলে তারা তা করত না, কাজেই তাদেরকে আর তাদের মিথ্যে চর্চাকে উপেক্ষা করে চল।

وَلِتَصْغٰٓى إِلَيْهِ أَفْئِدَةُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْأٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَلِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ (١١٣)

১১৩. তার দিকে (অর্থাৎ চিত্তাকর্ষক প্রতারণার দিকে) সে সব লোকের অন্তর আকৃষ্ট হতে দাও যারা আখেরাতের প্রতি ঈমান আনে না, আর তাতেই তাদেরকে সন্তুষ্ট থাকতে দাও আর যে পাপকাজ তারা করতে চায় তা তাদেরকে করতে দাও।

أَفَغَيْرَ اللهِ أَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ إِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ط وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ أَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ (١١٤)

১১৪. বল, আমি কি আল্লাহ ছাড়া অন্যকে বিচারক মানব, যখন তিনি সেই (সত্তা) যিনি তোমাদের নিকট কিতাব নাযিল করেছেন, যা বিশদভাবে বিবৃত। আমি যাদেরকে (পূর্বে) কিতাব দিয়েছিলাম তারা জানে যে, তা সত্যতা সহকারে তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে অবতীর্ণ হয়েছে। কাজেই কিছুতেই তুমি সন্দেহ পোষণকারীদের মধ্যে শামিল হয়ো না।

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ط لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ج وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (١١٥)

১১৫. সত্যতা ও ইনসাফের দিক দিয়ে তোমার প্রতিপালকের বাণী পরিপূর্ণ। তাঁর বাণী পরিবর্তন করার কেউ নেই। আর তিনি হলেন সর্বশ্রোতা ও সর্বজ্ঞ।

وَإِنْ تُطِعْ أَكْثَرَ مَنْ فِي الْأَرْضِ يُضِلُّوْكَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ ط إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ

১১৬. তুমি যদি পৃথিবীর অধিকাংশ লোকের অনুসরণ কর তাহলে তারা তোমাকে আল্লাহ্‌র পথ হতে বিচ্যুত করে ফেলবে, তারা তো কেবল আন্দাজ-অনুমানের অনুসরণ করে চলে, তারা

وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُوْنَ (١١٦)

মিথ্যাচার ছাড়া কিছু করে না।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ج وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ (١١٧)

১১৭. তোমার রব্ব খুব ভাল করেই জানেন কে তাঁর পথ থেকে ভ্রষ্ট হয়ে গেছে আর তিনি হিদায়াতপ্রাপ্তদের সম্পর্কেও সর্বাধিক অবহিত।

فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ (١١٨)

১১৮. কাজেই যে পশু যবেহ করার সময় আল্লাহ্র নাম নেয়া হয়েছে তা তোমরা খাও যদি তাঁর নিদর্শনাবলীতে তোমরা বিশ্বাসী হয়ে থাক।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تَأْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ إِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ إِلَيْهِ ط وَإِنَّ كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِأَهْوَآئِهِمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ط إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِالْمُعْتَدِيْنَ (١١٩)

১১৯. তোমাদের কী হয়েছে যে, যাতে আল্লাহ্র নাম নেয়া হয়েছে তা তোমরা খাবে না? তোমাদের জন্য যা হারাম করা হয়েছে তা তোমাদের জন্য বিশদভাবে বাতলে দেয়া হয়েছে, তবে যদি তোমরা নিরুপায় হও (তবে ততটুকু নিষিদ্ধ বস্তু খেতে পার যাতে প্রাণে বাঁচতে পার), কিন্তু অনেক লোকই অজ্ঞানতাবশতঃ তাদের খেয়াল খুশী দ্বারা অবশ্যই (অন্যদেরকে) পথভ্রষ্ট করে, তোমার প্রতিপালক সীমালঙ্ঘনকারীদের সম্পর্কে সবচেয়ে বেশি অবগত।

وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْإِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ط إِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْإِثْمَ سَيُجْزَوْنَ بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ (١٢٠)

১২০. তোমরা প্রকাশ্য ও গোপন পাপ বর্জন কর, যারা পাপ অর্জন করে তারা তাদের অর্জনের যথোচিত প্রতিফল পাবে।

وَلَا تَأْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللهِ عَلَيْهِ وَإِنَّهٗ لَفِسْقٌ ط وَإِنَّ الشَّيٰطِيْنَ لَيُوْحُوْنَ إِلٰٓى أَوْلِيَآئِهِمْ لِيُجَادِلُوْكُمْ ج وَإِنْ أَطَعْتُمُوْهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُوْنَ ع (١٢١)

১২১. যাতে (যবহ করার সময়) আল্লাহ্র নাম নেয়া হয়নি তা তোমরা মোটেই খাবে না, তা হচ্ছে পাপাচার, শায়ত্বনেরা তাদের বন্ধুদেরকে তোমাদের সঙ্গে তর্ক-ঝগড়া করার জন্য প্ররোচিত করে; যদি তোমরা তাদের কথা মান্য করে চল তাহলে তোমরা অবশ্যই মুশরিক হয়ে যাবে।

أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنٰهُ وَجَعَلْنَا لَهٗ نُوْرًا يَّمْشِيْ بِهٖ فِي النَّاسِ كَمَنْ مَّثَلُهٗ فِيْ

১২২. যে ব্যক্তি মৃত ছিল, তাকে আমি জীবিত করলাম, তার জন্য আলোর ব্যবস্থা করলাম যার সাহায্যে সে মানুষের মাঝে চলাফেরা করে, সে

الظُّلُمٰتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ مِّنْهَا ؕ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكٰفِرِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٢٢)

কি তার মত যে অন্ধকারে নিমজ্জিত, যাথেকে সে কক্ষনো বেরিয়ে আসতে পারবে না। এটা এজন্য যে, কাফিররা যা করছে তা তাদের জন্য চাকচিক্যময় করে দেয়া হয়েছে।

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ أَكٰبِرَ مُجْرِمِيْهَا لِيَمْكُرُوْا فِيْهَا ؕ وَمَا يَمْكُرُوْنَ إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ (١٢٣)

১২৩. এভাবে আমি প্রত্যেক জনপদে সেখানকার অপরাধী প্রধানদেরকে চক্রান্তজাল বিস্তার করার সুযোগ দিয়েছি, কিন্তু এ চক্রান্তের ফাঁদে তারা নিজেরাই পতিত হয়, কিন্তু সেটা তারা উপলব্ধিই করতে পারে না।

وَإِذَا جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ قَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ حَتّٰى نُؤْتٰى مِثْلَ مَآ أُوْتِيَ رُسُلُ اللهِ ؕ ﴿اَللهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ؕ سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ أَجْرَمُوْا صَغَارٌ عِنْدَ اللهِ وَعَذَابٌ شَدِيْدٌۢ بِمَا كَانُوْا يَمْكُرُوْنَ (١٢٤)

১২৪. যখন তাদের কাছে কোন নিদর্শন আসে তখন তারা বলে, 'আমরা কক্ষনো বিশ্বাস করব না যতক্ষণ না আমাদেরকে তা দেয়া হয় যা আল্লাহ্‌র রসূলগণকে দেয়া হয়েছিল। (নির্বোধেরা এ আবদার করলেও) আল্লাহ খুব ভালভাবেই জানেন তাঁর রিসালাতের দায়িত্ব কোথায় দিতে হবে, অপরাধীরা শীঘ্রই তাদের চক্রান্তের প্রতিফল হিসেবে আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে লাঞ্ছনা ও কঠিন শাস্তির সম্মুখীন হবে।

فَمَنْ يُّرِدِ اللهُ أَنْ يَّهْدِيَهٗ يَشْرَحْ صَدْرَهٗ لِلْإِسْلَامِ ۚ وَمَنْ يُّرِدْ أَنْ يُّضِلَّهٗ يَجْعَلْ صَدْرَهٗ ضَيِّقًا حَرَجًا كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَآءِ ؕ كَذٰلِكَ يَجْعَلُ اللهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٢٥)

১২৫. আল্লাহ যাকে সৎপথ দেখাতে চান, তার অন্তরকে ইসলামের জন্য খুলে দেন, আর যাকে পথভ্রষ্ট করতে চান তার অন্তরকে সংকীর্ণ সংকুচিত করে দেন, (তার জন্য ইসলাম মান্য করা এমনি কঠিন) যেন সে আকাশে আরোহণ করছে। যারা ঈমান আনে না তাদের উপর আল্লাহ এভাবে লাঞ্ছনা চাপিয়ে দেন।

وَهٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيْمًا ؕ قَدْ فَصَّلْنَا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ (١٢٦)

১২৬. অথচ (ইসলামের) এ পথই তোমার প্রতিপালকের সরল-সঠিক পথ, যারা নাসীহাত গ্রহণ করে আমি তাদের জন্য নিদর্শনাবলী বিশদভাবে বিবৃত করে দিয়েছি।

لَهُمْ دَارُ السَّلٰمِ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٢٧)

১২৭. তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের কাছে আছে শান্তিধাম, তিনিই তাদের পৃষ্ঠপোষক এজন্য যে তারা (সঠিক) 'আমাল করেছিল।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ۚ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِّنَ الْإِنْسِ ۚ وَقَالَ أَوْلِيٰٓؤُهُمْ مِّنَ الْإِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ أَجَلَنَا الَّذِيْٓ أَجَّلْتَ لَنَا ۚ قَالَ النَّارُ مَثْوٰكُمْ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ إِلَّا مَا شَآءَ اللهُ ۗ إِنَّ رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ (١٢٨)

১২৮. যেদিন তাদের সবাইকে একত্রিত করা হবে, (সেদিন আল্লাহ বলবেন) হে জ্বিন সমাজ! তোমরা মানব সমাজের উপর খুব বাড়াবাড়ি করেছ। মানব সমাজের মধ্য থেকে তাদের বন্ধুরা বলবে, হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা পরস্পরে পরস্পরের নিকট হতে লাভবান হয়েছি আর আমরা আমাদের নির্ধারিত সময়ে পৌঁছে গেছি যা তুমি আমাদের জন্য নির্ধারিত করেছিলে। আল্লাহ বলবেন, জাহান্নামই হল তোমাদের বাসস্থান, তার মধ্যেই হবে তোমাদের চিরবাস, তবে আল্লাহ যদি অন্যরূপ ইচ্ছে করেন (তবে তাই হবে)। তোমার প্রতিপালক কুশলী এবং সর্বজ্ঞ।

وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ع (١٢٩)

১২৯. এভাবেই আমি (পরকালে) যালিমদেরকে পরস্পরের সঙ্গী বানিয়ে দেব সেই উপার্জনের বিনিময়ে যা তারা (দুনিয়াতে পরস্পরে এক সঙ্গে মিলে) করছিল।

يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۗ قَالُوْا شَهِدْنَا عَلٰٓى أَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ (١٣٠)

১৩০. (আল্লাহ জিজ্ঞেস করবেন) হে জ্বিন ও মানব সমাজ! তোমাদের কাছে তোমাদের মধ্য হতে কি রসূলগণ আসেননি যারা তোমাদের কাছে আমার আয়াত বর্ণনা করত আর এ দিনের সাথে যে সাক্ষাৎ ঘটবে সে ব্যাপারে তোমাদেরকে ভয় প্রদর্শন করত? তারা বলবে, আমরা আমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিচ্ছি; মূলতঃ এ দুনিয়ার জীবন তাদেরকে প্রতারিত করেছে, তারা নিজেদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে যে তারা কাফির ছিল।

ذٰلِكَ أَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّأَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ (١٣١)

১৩১. এটা এজন্য যে আল্লাহ কোন জনপদকে ধ্বংস করেন না অন্যায়ভাবে এবং (সত্যপথ কোন্‌টি আর ভুলপথ কোন্‌টি সে সম্পর্কে) যখন তারা থাকে অনবহিত।

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ (١٣٢)

১৩২. প্রত্যেককে তার 'আমাল অনুযায়ী মর্যাদা দেয়া হবে আর তারা যা করে সে ব্যাপারে তোমার প্রতিপালক বে-খবর নন।

وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ۗ إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ

১৩৩. তোমার প্রতিপালক অমুখাপেক্ষী, অত্যন্ত দয়াশীল। তিনি ইচ্ছে করলে তোমাদেরকে

وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ كَمَآ أَنْشَأَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ط (١٣٣)

অপসারিত করবেন এবং যাকে ইচ্ছে তোমাদের স্থলাভিষিক্ত করবেন যেমন তিনি তোমাদেরকে অন্য সম্প্রদায়ের বংশ হতে সৃষ্টি করেছেন।

إِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ لا وَّمَآ أَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (١٣٤)

১৩৪. যা ঘটবে বলে তোমাদেরকে ওয়াদা দেয়া হয়েছে তা ঘটবেই, তা ব্যর্থ করে দেয়ার ক্ষমতা তোমাদের নেই।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّيْ عَامِلٌ ج فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لا مَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ط إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ (١٣٥)

১৩৫. বল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা তোমাদের (ধর্মীয়) অবস্থানে থেকে যা করছ করে যাও, আমিও আমার কাজ করছি, তোমরা শীঘ্রই জানতে পারবে কল্যাণময় পরিণতি কার হবে। যালিমগণ কখনও সফলকাম হয় না।

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَأَ مِنَ الْحَرْثِ وَالْأَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ج فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ فَلَا يَصِلُ إِلَى اللّٰهِ ج وَمَا كَانَ لِلّٰهِ فَهُوَ يَصِلُ إِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ط سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (١٣٦)

১৩৬. আল্লাহ যে শস্য ও গবাদি পশু সৃষ্টি করেছেন তাথেকে তারা আল্লাহ্‌র জন্য একটা অংশ নির্দিষ্ট করে আর তারা তাদের ধারণামত বলে এ অংশ আল্লাহ্‌র জন্য, আর এ অংশ আমাদের দেবদেবীদের জন্য। যে অংশ তাদের দেবদেবীদের জন্য তা আল্লাহ্‌র নিকট পৌঁছে না, কিন্তু যে অংশ আল্লাহ্‌র তা তাদের দেবদেবীদের নিকট পৌঁছে। কতই না নিকৃষ্ট এই লোকদের ফায়সালা!

وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ قَتْلَ أَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ (١٣٧)

১৩৭. আর এভাবে তাদের দেবদেবীরা বহু মুশরিকদের চোখে নিজেদের সন্তান হত্যাকে আকর্ষণীয় করে দিয়েছে তাদেরকে ধ্বংস করার জন্য এবং তাদের দ্বীনকে সন্দেহপূর্ণ করার জন্য। আল্লাহ যদি ইচ্ছে করতেন তবে তারা তা করতে পারত না, কাজেই তাদেরকে ছেড়ে দাও, তারা তাদের মিথ্যে নিয়ে মগ্ন থাকুক।

وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ أَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ق صلے لَّا يَطْعَمُهَآ إِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ وَأَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَأَنْعَامٌ لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً عَلَيْهِ ط سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (١٣٨)

১৩৮. তারা তাদের ধারণা অনুসারে বলে, এই এই গবাদি পশু ও ফসল সুরক্ষিত। আমরা যার জন্য ইচ্ছে করব সে ছাড়া কেউ এগুলো খেতে পারবে না। এ সব তাদের কল্পিত। কতক গবাদি পশুর পিঠে চড়া নিষিদ্ধ করা হয়েছে, কতক গবাদি পশু যবহ করার সময় তারা আল্লাহ্‌র নাম নেয় না, (এসব বাধা-নিষেধ) আল্লাহর প্রতি মিথ্যে রচনা স্বরূপ করে থাকে। এসব মিথ্যে রচনার প্রতিফল তিনি শীঘ্রই তাদেরকে প্রদান করবেন।

وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْأَنْعَامِ خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى أَزْوَاجِنَا ۚ وَإِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ فِيْهِ شُرَكَآءُ ۚ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۚ إِنَّهُ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ (١٣٩)

১৩৯. তারা আরো বলে, এসব গবাদি পশুর গর্ভে যা আছে তা আমাদের পুরুষদের জন্য নির্দিষ্ট, আর আমাদের স্ত্রীলোকদের জন্য নিষিদ্ধ, কিন্তু তা (অর্থাৎ গর্ভস্থিত বাচ্চা) যদি মৃত হয় তবে সকলের তাতে অংশ আছে। তাদের এই মিথ্যে রচনার প্রতিফল অচিরেই তিনি তাদেরকে দেবেন, তিনি বড়ই হিকমাতওয়ালা, সর্বজ্ঞ।

قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا أَوْلَادَهُمْ سَفَهًا بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللهُ افْتِرَآءً عَلَى اللهِ ۚ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ع (١٤٠)

১৪০. যারা মূর্খের মত না জেনে তাদের সন্তানদের হত্যা করেছে আর আল্লাহ্‌র নামে মিথ্যে কথা বানিয়ে নেয়ার মাধ্যমে আল্লাহ্‌র দেয়া জীবিকাকে হারাম করে নিয়েছে, তারা নিশ্চিতরূপে ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে। তারা পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে আর তারা কস্মিনকালেও হিদায়াতপ্রাপ্ত ছিল না।

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَنْشَأَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ مُخْتَلِفًا أُكُلُهُ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۚ كُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖٓ إِذَآ أَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهُ يَوْمَ حَصَادِهٖ ز صلے وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ لا (١٤١)

১৪১. আর তিনি (আল্লাহ) যিনি লতাগুল্ম বিশিষ্ট আর লতা-বিশিষ্ট নয় এমন উদ্যানরাজি, খেজুর গাছ ও বিভিন্ন স্বাদের খাদ্যশস্য, একই ধরনের ও আলাদা ধরনের যায়তুন ও ডালিম সৃষ্টি করেছেন। যখন ফল ধরে তখন ফল খাও, আর ফসল তোলার দিন (নির্ধারিত ওশর ও অনির্ধারিত দানের মাধ্যমে) হক আদায় কর, অপচয় করো না, নিশ্চয় তিনি অপচয়কারীদের পছন্দ করেন না।

وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُوْلَةً وَّفَرْشًا ۚ كُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللهُ وَلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ لا (١٤٢)

১৪২. গবাদি পশুর মধ্যে কতক আছে ভারবাহী আর কতক আছে গোশত ও আচ্ছাদনের সামগ্রী দানকারী, আল্লাহ তোমাদেরকে যে রিয্ক্ব দিয়েছেন তাত্থেকে ভক্ষণ কর আর শায়ত্বনের পদাঙ্ক অনুসরণ করো না, সে তোমাদের খোলাখুলি দুশমন।

ثَمٰنِيَةَ أَزْوَاجٍ ج مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ ۚ وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۚ قُلْ ءٰٓالذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ

১৪৩. (নর-মাদী চার) জোড়ায় আট প্রকার, মেষের দু'টি, ছাগলের দু'টি। বল, তিনি কি নর দু'টি হারাম করেছেন, না মাদী দু'টি কিংবা

الْأُنْثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ (١٤٣)

মাদী দু'টির গর্ভে যা আছে তা? এ সম্পর্কিত জ্ঞানের ভিত্তিতে জবাব দাও যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাক।

وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (١٤٤)

১৪৪. আর উটের দু'টি, আর গরুর দু'টি। বল, এদের নর দু'টি কি তিনি হারাম করেছেন, না মাদী দু'টি অথবা মাদী দু'টির গর্ভে যা আছে তা? তোমরা কি তখন উপস্থিত ছিলে যখন আল্লাহ এ রকম নির্দেশ দিয়েছিলেন? যে ব্যক্তি মানুষদেরকে পথভ্রষ্ট করার উদ্দেশে কোন রকম 'ইল্‌ম ছাড়াই আল্লাহ্‌র সম্বন্ধে মিথ্যে রচনা করে তার থেকে বড় যালিম আর কে হতে পারে? বস্তুতঃ আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে হিদায়াত দান করেন না।

قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ (١٤٥)

১৪৫. বল, আমার প্রতি যে ওয়াহী করা হয়েছে তাতে মানুষ যা আহার করে তার কিছুই নিষিদ্ধ পাই না মৃত, প্রবহমান রক্ত ও শূকরের মাংস ছাড়া। কারণ তা অপবিত্র অথবা আল্লাহ ছাড়া অন্যের নামে যবহ করা ফাসিকী কাজ। তবে যে ব্যক্তি নিরুপায় হয়ে পড়ে কিন্তু সে নাফরমান ও সীমালঙ্ঘনকারী নয়, তাহলে তোমার প্রতিপালক বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ (١٤٦)

১৪৬. যারা ইয়াহূদী হয়েছে তাদের জন্য আমি যাবতীয় তীক্ষ্ণধার নখযুক্ত পশু হারাম করেছিলাম আর তাদের জন্য গরু-ছাগলের চর্বিও হারাম করেছিলাম, এগুলোর পিঠের কিংবা নাড়িভুড়ির বা হাড়ের সাথে লেগে থাকা চর্বি ছাড়া। তাদের অবাধ্যতার শাস্তি এভাবে তাদেরকে দিয়েছিলাম, আমি অবশ্যই সত্য কথা বলছি।

১৪৬। জাবির ইবনু 'আবদুল্লাহ (রাঃ) বলেছেন যে, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি যে, আল্লাহ তা'আলা ইয়াহূদীদেরকে অভিসম্পাত করেছেন, যখন তিনি তাদের উপর চর্বি নিষিদ্ধ করেছেন তখন তারা ওটাকে তরল করে জমা করেছে, তারপর বিক্রি করে তার মূল্য ভক্ষণ করেছে। আবূ আসিম (রহ.) .... হাদীস বর্ণনা করেছেন জাবির

فَإِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ وَّاسِعَةٍ ج وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ (١٤٧)

১৪৭. অতঃপর যদি তারা তোমাকে মিথ্যে মনে করে তবে তাদেরকে বল, তোমাদের প্রতিপালক প্রশস্ত দয়ার মালিক, (কিন্তু তাওবা না করে অপরাধীই থেকে গেলে) তবে অপরাধী সম্প্রদায়ের উপর হতে তাঁর শাস্তি রদ হয় না।

سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللهُ مَآ أَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ شَيْءٍ ط كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ حَتّٰى ذَاقُوْا بَأْسَنَا ط قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ط إِنْ تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَخْرُصُوْنَ (١٤٨)

১৪৮. যারা শিরক্ করেছে তারা বলবে, আল্লাহ ইচ্ছে করলে আমরা শিরক্ করতাম না, আর আমাদের পিতৃপুরুষরাও করত না, আর কোন কিছুই (আমাদের উপর) হারাম করে নিতাম না, এভাবে তাদের আগের লোকেরাও সত্যকে মিথ্যে গণ্য করেছিল, অবশেষে তারা আমার শাস্তি আস্বাদন করেছিল। বল, তোমাদের কাছে কি প্রকৃত জ্ঞান আছে, থাকলে তা আমাদের কাছে পেশ কর, তোমরা তো কেবল ধারণা-অনুমানের অনুসরণ করে চলেছ, তোমরা তো মিথ্যাচারই করে যাচ্ছ।

قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ج فَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ أَجْمَعِيْنَ (١٤٩)

১৪৯. চূড়ান্ত সত্য-নির্ভর প্রমাণ তো আল্লাহ্‌র কাছে আছে, আল্লাহ যদি চাইতেন তাহলে তিনি অবশ্যই তোমাদের সকলকে সত্যপথে পরিচালিত করতেন।

قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ أَنَّ اللهَ حَرَّمَ هٰذَا ج فَإِنْ شَهِدُوْا فَلَا تَشْهَدْ مَعَهُمْ ج وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ع (١٥٠)

১৫০. বল, আল্লাহ যে এটা হারাম করেছেন সে ব্যাপারে যারা সাক্ষ্য দেবে তাদেরকে হাজির কর। তারা সাক্ষ্য দিলেও তুমি তাদের সাথে সাক্ষ্য দিও না। যারা আমার আয়াতগুলোকে অমান্য করে, আর যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না আর তাদের প্রতিপালকের সমকক্ষ দাঁড় করায় তুমি কক্ষনো তাদের খেয়ালখুশির অনুসরণ করো না।

قُلْ تَعَالَوْا أَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ عَلَيْكُمْ أَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْئًا وَّبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ج

১৫১. বল, 'এসো, তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের জন্য যা নিষিদ্ধ করেছেন তা পড়ে শোনাই, তা এই যে, তাঁর সাথে কোন কিছুকে

(ﷺ) নাবী (ﷺ) থেকে। –বুখারী ৪৬৩৩ [২২৩৬; মুসলিম ১৫৮১, তিরমিযী ১২৯৭, নাসায়ী ৪২৫৬, ৪৬৬৯; আবূ দাউদ ৩৪৮৬, ইবনু মাজাহ ২১৬৭, আহমাদ ১৪৬৩, ১৪৮৬]

وَلَا تَقْتُلُوْٓا أَوْلَادَكُمْ مِّنْ إِمْلَاقٍ ط نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَإِيَّاهُمْ ج وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ ج وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ط ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (١٥١)

শরীক করো না, পিতা-মাতার সঙ্গে সদ্ব্যবহার কর, দরিদ্রতার ভয়ে তোমাদের সন্তানদের হত্যা করো না, আমিই তোমাদেরকে আর তাদেরকে জীবিকা দিয়ে থাকি, প্রকাশ্য বা গোপন কোন অশ্লীলতার কাছেও যেয়ো না, আল্লাহ যে প্রাণ হরণ করা হারাম করেছেন তা ন্যায় সঙ্গত কারণ ছাড়া হত্যা করো না। এ সম্পর্কে তিনি তোমাদেরকে নির্দেশ দিচ্ছেন যাতে তোমরা চিন্তা-ভাবনা করে কাজ কর।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ إِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ أَشُدَّهٗ ج وَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ج لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ج وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوْا وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ج وَبِعَهْدِ اللهِ أَوْفُوْا ط ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ لا (١٥٢)

১৫২. (ইয়াতীমরা) বয়ঃপ্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত কল্যাণ সাধনের উদ্দেশ্য ছাড়া ইয়াতীমদের সম্পত্তির নিকটবর্তী হয়ো না। পরিমাপ ও ওজন ন্যায়সঙ্গতভাবে পূর্ণ কর, আমি কোন ব্যক্তির উপর সাধ্যের অতিরিক্ত দায়িত্ব চাপিয়ে দেই না, যখন কথা বলবে তখন ইনসাফপূর্ণ কথা বলবে- নিকটাত্মীয়দের সম্পর্কে হলেও, আর আল্লাহ্‌র সঙ্গে কৃত ওয়াদা পূর্ণ কর। এসব ব্যাপারে তিনি নির্দেশ দিচ্ছেন যাতে তোমরা উপদেশ গ্রহণ কর।

وَأَنَّ هٰذَا صِرَاطِيْ مُسْتَقِيْمًا فَاتَّبِعُوْهُ ج وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ سَبِيْلِهٖ ط ذٰلِكُمْ وَصّٰكُمْ بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ (١٥٣)

১৫৩. আর এটাই আমার সঠিক সরল পথ, কাজেই তোমরা তার অনুসরণ কর, আর নানান পথের অনুসরণ করো না, করলে তা তোমাদেরকে তাঁর পথ থেকে বিচ্ছিন্ন করে ফেলবে। এভাবে তিনি তোমাদেরকে নির্দেশ দিচ্ছেন যাতে তোমরা তাঁকে ভয় করে যাবতীয় পাপ থেকে বেঁচে চলতে পার।

ثُمَّ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ تَمَامًا عَلَى الَّذِيْٓ أَحْسَنَ وَتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى

১৫৪. অতঃপর (তোমরা অবগত হও যে) আমি মূসাকে কিতাব দিয়েছিলাম যার মাধ্যমে আমি আমার নি'য়ামাত পূর্ণ করে দিয়েছিলাম তাদের জন্য যারা উত্তম কাজ করে, তাতে ছিল যাবতীয় বিষয়ের বিশদ বিবরণ, (তা ছিল) সঠিক পথের দিশারী ও দয়া স্বরূপ

১৫১। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'উদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। নিষিদ্ধ কার্যে মু'মিনদেরকে বাধা দানকারী আল্লাহ্‌র চেয়ে অধিক কেউ নেই, এজন্যই প্রকাশ্য-অপ্রকাশ্য যাবতীয় অশ্লীলতা নিষিদ্ধ করেছেন, আল্লাহ্‌র প্রশংসা প্রকাশ করার চেয়ে প্রিয় তাঁর কাছে অন্য কিছু নেই, সেজন্যেই আল্লাহ আপন প্রশংসা নিজেই করেছেন।..... হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৬৩৪ [৪৬৩৭, ৫২২০, ৭৪০৩; মুসলিম ২৭৬০, তিরমিযী ৩৫৩০, আহমাদ ৩৬০৫, ৪০৩৪; দারিমী ২২২৫]

وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ ع (١٥٤)

যাতে তারা তাদের প্রতিপালকের সঙ্গে সাক্ষাতের ব্যাপারে বিশ্বাস স্থাপন করে।

وَهٰذَا كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ فَاتَّبِعُوْهُ وَاتَّقُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ لا (١٥٥)

১৫৫. আর এ কিতাব যা আমি অবতীর্ণ করলাম তা বরকতময়, কাজেই তা মান্য কর, আর আল্লাহ্‌কে ভয় করে চল, যাতে তোমাদের উপর দয়া বর্ষিত হয়।

أَنْ تَقُوْلُوْٓا إِنَّمَآ أُنْزِلَ الْكِتٰبُ عَلٰى طَآئِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا ص وَإِنْ كُنَّا عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغٰفِلِيْنَ لا (١٥٦)

১৫৬. যাতে তারা না বলতে পারে যে কিতাব তো শুধু আমাদের পূর্বের দু'দল (ইয়াহূদী ও খ্রীস্টান) এর উপর অবতীর্ণ হয়েছিল আর আমরা জানতাম না ওরা কী পড়ত আর পড়াত।

أَوْ تَقُوْلُوْا لَوْ أَنَّآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتٰبُ لَكُنَّآ أَهْدٰى مِنْهُمْ ج فَقَدْ جَآءَكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ ج فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِ اللهِ وَصَدَفَ عَنْهَا ط سَنَجْزِي الَّذِيْنَ يَصْدِفُوْنَ عَنْ اٰيٰتِنَا سُوْٓءَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يَصْدِفُوْنَ (١٥٧)

১৫৭. অথবা তোমরা না বলতে পার যে আমাদের উপর যদি কিতাব অবতীর্ণ হত তাহলে আমরা তাদের চেয়ে বেশি হিদায়াতপ্রাপ্ত হতাম। তাই এখন তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে সুস্পষ্ট প্রমাণ, হিদায়াত ও রহমত এসেছে। অতঃপর যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র (এ সব) আয়াতসমূহকে মিথ্যে মনে ক'রে তাথেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে তার চেয়ে বড় যালিম আর কে আছে? আমার আয়াতসমূহ থেকে যারা মুখ ফিরিয়ে নেয়, তাদেরকে অচিরেই আমি তাদের মুখ ফিরিয়ে নেয়ার কারণে নিকৃষ্টতম শাস্তি প্রদান করব।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّآ أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ ط يَوْمَ يَأْتِيْ بَعْضُ اٰيٰتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ نَفْسًا إِيْمَانُهَا لَمْ تَكُنْ اٰمَنَتْ مِنْ قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِيْٓ إِيْمَانِهَا خَيْرًا ط قُلِ انْتَظِرُوْٓا إِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ (١٥٨)

১৫৮. তারা কি এই অপেক্ষায় আছে যে, তাদের কাছে ফেরেশতারা আসবে অথবা তোমার প্রতিপালক (স্বয়ং) আসবেন কিংবা তোমার রব্বের কিছু নিদর্শন আসবে (তখন তারা ঈমান আনবে)? যে দিন তোমার রব্বের কতক নিদর্শন এসে যাবে সে দিন ঐ ব্যক্তির ঈমান কোন সুফল দিবে না যে পূর্বে ঈমান আনেনি বা ঈমানের মাধ্যমে কল্যাণ অর্জন করেনি। বল, তোমরা অপেক্ষা কর (তাহলে দেখতে পাবে তোমাদের কুফরীর পরিণাম কী দাঁড়ায়), আমরাও অপেক্ষায় থাকলাম (আমাদের পুরস্কার প্রাপ্তি ও তোমাদের

পরিণতি দেখার জন্য)।

إِنَّ الَّذِينَ فَرَّقُوا دِينَهُمْ وَكَانُوا شِيَعًا لَّسْتَ مِنْهُمْ فِي شَيْءٍ ۚ إِنَّمَا أَمْرُهُمْ إِلَى اللَّهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُم بِمَا كَانُوا يَفْعَلُونَ (١٥٩)

১৫৯. যারা নিজেদের (পূর্ণ পরিণত) দ্বীনকে খণ্ডে খণ্ডে বিভক্ত করে নিয়েছে আর (আপন আপন অংশ নিয়ে) দলে দলে ভাগ হয়ে গেছে তাদের কোন কাজের সাথে তোমার কোন সম্পর্ক নেই। তাদের ব্যাপারটি পুরোপুরি আল্লাহ্‌র ইখতিয়ারভুক্ত। (সময় হলেই) তিনি তাদেরকে জানিয়ে দেবেন তাদের কৃতকর্ম সম্পর্কে।

مَن جَاءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهُ عَشْرُ أَمْثَالِهَا ۖ وَمَن جَاءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَىٰ إِلَّا مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ (١٦٠)

১৬০. যে ব্যক্তি সৎকর্ম করবে তার জন্য আছে দশ গুণ পুরস্কার, আর যে ব্যক্তি অসৎকাজ করবে তাকে শুধু কৃতকর্মের তুল্য প্রতিফল দেয়া হবে, তাদের উপর অত্যাচার করা হবে না।

قُلْ إِنَّنِي هَدَانِي رَبِّي إِلَىٰ صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ دِينًا قِيَمًا مِّلَّةَ إِبْرَاهِيمَ حَنِيفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِينَ (١٦١)

১৬১. বল, আমাকে আমার রব্ব সরল সঠিক পথে পরিচালিত করেছেন (যা) সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন, একনিষ্ঠ ইবরাহীমের পথ। সে মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত ছিল না।

قُلْ إِنَّ صَلَاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (١٦٢)

১৬২. বল, আমার নামায, আমার যাবতীয় 'ইবাদাত, আমার জীবন, আমার মরণ (সব কিছুই) বিশ্বজগতের প্রতিপালক আল্লাহ্‌র জন্যই (নিবেদিত)।

لَا شَرِيكَ لَهُ ۖ وَبِذَٰلِكَ أُمِرْتُ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُسْلِمِينَ (١٦٣)

১৬৩. তাঁর কোন শরীক নেই, আমাকে এরই নির্দেশ দেয়া হয়েছে আর আমিই সর্বপ্রথম আত্মসমর্পণকারী।

১৫৮। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, "পশ্চিম দিক থেকে সূর্যোদয়ের পূর্ব পর্যন্ত ক্বিয়ামাত অনুষ্ঠিত হবে না। লোকেরা যখন তা দেখবে, তখন পৃথিবীর সকলে ঈমান আনবে এবং সেটি হচ্ছে এমন সময় "পূর্বে ঈমান আনেনি এমন ব্যক্তির ঈমান তার কাজে আসবে না"। -বুখারী ৪৬৩৫ [৮৫; মুসলিম ১৫৭, আবূ দাঊদ ৪২৫৫, ইবনু মাজাহ ৪০৪৭, ৪০৫২; আহমাদ ৭১৪৬, ৭৪৯৬]

১৬০। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেনঃ যখন তোমাদের কেও তাঁর ইসলামকে সুন্দর করে তোলে, তখন সে যে ভাল কাজ করে তার বিনিময় দশ থেকে সাতশ গুণ পর্যন্ত তার জন্য সাওয়াব লেখা হয়। কিন্তু সে যে মন্দ কাজ করে তার বিনিময় তার জন্য (কেবলমাত্র) ততটুকুই লেখা হয়। -বুখারী ৪২ [মুসলিম ১২৮-১৩০, তিরমিযী ৩০৭৩, আহমাদ ৭১৫৫, ৭২৫৪]

قُلْ أَغَيْرَ اللهِ أَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ كُلِّ شَيْءٍ ط وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ إِلَّا عَلَيْهَا ج وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ج ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ (١٦٤)

১৬৪. আমি কি আল্লাহ্‌কে ছেড়ে অন্য প্রতিপালক তালাশ করব? (অথচ প্রকৃতপক্ষে) তিনিই সব কিছুর প্রতিপালক। প্রত্যেক ব্যক্তি যা অর্জন করে তার জন্য সে নিজেই দায়ী হবে। কোন ভারবহনকারীই অন্যের গুনাহের ভার বহন করবে না। অবশেষে তোমাদের প্রত্যাবর্তন স্থল তোমাদের প্রতিপালকের নিকটেই, তখন তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দেবেন যে সকল বিষয়ে তোমরা মতভেদে লিপ্ত ছিলে (সে সব বিষয়ে প্রকৃত সত্য কোন্‌টি)।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْأَرْضِ وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰكُمْ ط إِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ الْعِقَابِ ق ز صلے وَإِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (١٦٥)

১৬৫. তিনিই তোমাদেরকে পৃথিবীতে পরস্পরের স্থলাভিষিক্ত বানিয়েছেন, মর্যাদায় তোমাদের কতককে কতকের উপরে স্থান দিয়েছেন, আমি তোমাদেরকে যা দিয়েছি ওগুলোর মাধ্যমে তোমাদেরকে পরীক্ষা করার জন্য, তোমার রব্ব তো শাস্তি দানে দ্রুত (ব্যবস্থা গ্রহণ করেন) আর তিনি অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

---

৭. সূরাহ আল-আ'রাফ

سُوْرَةُ الْأَعْرَافِ

আয়াতঃ ২০৬, রুকূ'ঃ ২৪, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

الٓمّٓصٓ ج (١)

১. আলিফ, লাম, মীম, সাদ।

كِتٰبٌ أُنْزِلَ إِلَيْكَ فَلَا يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ (٢)

২. এটি একটি কিতাব যা তোমার উপর নাযিল করা হয়েছে, এ ব্যাপারে তোমার অন্তরে যেন কোন প্রকার কুণ্ঠাবোধ না হয়, (এটা নাযিল করা হয়েছে অমান্যকারীদেরকে) এর দ্বারা ভয় প্রদর্শনের জন্য এবং মু'মিনদেরকে উপদেশ প্রদানের জন্য।

اِتَّبِعُوْا مَآ أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ ط قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ (٣)

৩. তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে তোমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তোমরা তা মান্য করে চল, তাঁকে ছাড়া (অন্যদের) অভিভাবক মান্য করো না, তোমরা খুব সামান্য উপদেশই গ্রহণ কর।

وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَأْسُنَا بَيَاتًا أَوْ هُمْ قَآئِلُوْنَ (٤)

৪. আমি কত জনপদকে ধ্বংস করে দিয়েছি। আমার শাস্তি তাদের নিকট এসেছিল হঠাৎ রাত্রিবেলা কিংবা দুপুর বেলা তারা যখন বিশ্রাম নিচ্ছিল।

فَمَا كَانَ دَعْوٰهُمْ إِذْ جَآءَهُمْ بَأْسُنَآ إِلَّآ أَنْ قَالُوْآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٥)

৫. আমার শাস্তি যখন তাদের উপর এসেছিল তখন এ কথা বলা ছাড়া তারা আর কোন ধ্বনি উচ্চারণ করতে পারেনি যে, "অবশ্যই আমরা যালিম ছিলাম"।

فَلَنَسْئَلَنَّ الَّذِيْنَ أُرْسِلَ إِلَيْهِمْ وَلَنَسْئَلَنَّ الْمُرْسَلِيْنَ لا (٦)

৬. অতঃপর যাদের নিকট রসূল পাঠানো হয়েছিল আমি অবশ্যই তাদেরকে জিজ্ঞেস করব আর রসূলগণকেও (আল্লাহ্‌র বাণী পৌঁছে দেয়া সম্পর্কে) অবশ্যই জিজ্ঞেস করব।

فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا غَآئِبِيْنَ (٧)

৭. অতঃপর পরিপূর্ণ জ্ঞানের ভিত্তিতে তাদের নিকট তাদের সমস্ত কাহিনী অবশ্যই জানিয়ে দেব, কেননা আমি তো মোটেই অনুপস্থিত ছিলাম না।

وَالْوَزْنُ يَوْمَئِذِنِ الْحَقُّ ج فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهُ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٨)

৮. সেদিনের ওজন হবে ঠিক ঠিক। ফলে যাদের পাল্লা ভারী হবে তারা সফলকাম হবে।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهُ فَأُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْآ أَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا بِأٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ (٩)

৯. যাদের পাল্লা হালকা হবে তারা হল যারা নিজেদেরকে ক্ষতিগ্রস্ত করেছে, কারণ তারা আমার নিদর্শনসমূহকে প্রত্যাখ্যান করেছিল।

وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْأَرْضِ وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ط قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ع (١٠)

১০. আমি তোমাদেরকে যমীনে প্রতিষ্ঠিত করেছি; আর সেখানে তোমাদের জন্য জীবিকার ব্যবস্থা করেছি তোমরা খুব সামান্যই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِأٰدَمَ ق صلے فَسَجَدُوْآ إِلَّآ إِبْلِيْسَ ط لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ (١١)

১১. আমি তো তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, অতঃপর তোমাদের আকৃতি দিয়েছি, অতঃপর ফেরেশতাদের নির্দেশ দিলাম আদামকে সাজদাহ করার জন্য। তখন ইবলিস ছাড়া সবাই সিজদা করল। সে সিজদাকারীদের অন্তর্ভুক্ত হল না।

قَالَ مَا مَنَعَكَ أَلَّا تَسْجُدَ إِذْ أَمَرْتُكَ ط قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ج خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهُ مِنْ طِيْنٍ (١٢)

১২. (আল্লাহ) বললেন, 'আমি নির্দেশ দেয়ার পরেও কিসে তোকে সাজদাহ থেকে নিবৃত্ত রাখল?' সে বলল, 'আমি তার চেয়ে উত্তম, আমাকে সৃষ্টি করেছ আগুন থেকে আর তাকে সৃষ্টি করেছ কাদা থেকে।'

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ أَنْ تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ إِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ (١٣)

১৩. তিনি বললেন, ‘নেমে যা এখান থেকে, এর ভিতরে থেকে অহঙ্কার করবে তা হতে পারে না, অতএব বেরিয়ে যা, অধমদের মাঝে তোর স্থান।’

قَالَ أَنْظِرْنِيْٓ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (١٤)

১৪. সে বলল, ‘তাহলে যেদিন সবাই (দুনিয়া ছেড়ে) উঠবে সেদিন পর্যন্ত আমাকে সময় দাও।’

قَالَ إِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ (١٥)

১৫. তিনি বললেন, নিশ্চয়ই তুই নিকৃষ্টদের অন্তর্ভুক্ত

قَالَ فَبِمَآ أَغْوَيْتَنِيْ لَأَقْعُدَنَّ لَهُمْ صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ۙ (١٦)

১৬. সে বলল, যেহেতু তার কারণেই (পথ থেকে) আমাকে ছুঁড়ে ফেলে দিয়েছ, কাজেই আমি অবশ্যই তোমার সরল পথে মানুষদের জন্য ওৎ পেতে থাকব।

ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْ ۢبَيْنِ أَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ وَعَنْ أَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ وَلَا تَجِدُ أَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ (١٧)

১৭. তারপর আমি তাদের সামনে দিয়ে, তাদের পেছন দিয়ে, তাদের ডান দিয়ে, তাদের বাম দিয়ে, তাদের কাছে অবশ্যই আসব, তুমি তাদের অধিকাংশকেই শোকর আদায়কারী পাবে না।

قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ أَجْمَعِيْنَ (١٨)

১৮. তিনি বললেন, ধিকৃত আর বিতাড়িত হয়ে এখান থেকে বেরিয়ে যা, তাদের মধ্যে যারা তোকে মান্য করবে তোমাদের সবাইকে দিয়ে আমি অবশ্যই জাহান্নাম ভর্তি করব।

وَيٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ أَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ (١٩)

১৯. ‘আর, হে আদাম! তুমি ও তোমার স্ত্রী জান্নাতে বাস করতে থাক, দু’জনে যা পছন্দ হয় খাও আর এই গাছের কাছে যেও না, তাহলে যালিমদের দলে শামিল হয়ে যাবে।’

فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا مَا وُرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ مَا نَهٰكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ أَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ (٢٠)

২০. অতঃপর শয়ত্বান তাদেরকে কুমন্ত্রণা দিল তাদের লজ্জাস্থান প্রকাশ করার জন্য যা তাদের পরস্পরের নিকট গোপন রাখা হয়েছিল; আর বলল, ‘তোমাদেরকে তোমাদের রব্ব এ গাছের নিকটবর্তী হতে যে নিষেধ করেছেন তার কারণ এছাড়া আর কিছুই নয় যে (নিকটবর্তী হলে) তোমরা দু’জন ফেরেশতা হয়ে যাবে কিংবা (জান্নাতে) স্থায়ী হয়ে যাবে।’

وَقَاسَمَهُمَآ إِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ۙ (٢١)

২১. সে শপথ করে তাদের বলল, ‘আমি তোমাদের সত্যিকারের হিতাকাঙ্ক্ষী।’

فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ج فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفَانِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ط وَنَادٰىهُمَا رَبُّهُمَآ أَلَمْ أَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ وَأَقُلْ لَّكُمَآ إِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (٢٢)

২২. এভাবে সে ধোঁকা দিয়ে তাদের অধঃপতন ঘটিয়ে দিল। যখন তারা গাছের ফলের স্বাদ নিল, তখন তাদের গোপনীয় স্থান পরস্পরের নিকট প্রকাশিত হয়ে গেল, তারা জান্নাতের পাতা দিয়ে নিজেদেরকে ঢাকতে লাগল। তখন তাদের প্রতিপালক তাদেরকে ডেকে বললেন, 'আমি কি তোমাদেরকে এ গাছের কাছে যেতে নিষেধ করিনি আর বলিনি– শয়ত্বান হচ্ছে তোমাদের উভয়ের খোলাখুলি দুশমন?'

قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَآ أَنْفُسَنَا سكتة وَإِنْ لَّمْ تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (٢٣)

২৩. তারা বলল, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা নিজেদের প্রতি অন্যায় করে ফেলেছি, যদি তুমি আমাদেরকে ক্ষমা না কর আর দয়া না কর তাহলে আমরা অবশ্য অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাব।'

قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ج وَلَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ إِلٰى حِيْنٍ (٢٤)

২৪. তিনি বললেন, 'তোমরা নেমে যাও, তোমরা একে অন্যের শত্রু, পৃথিবীতে তোমাদের অবস্থান ও জীবিকা থাকবে একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্য।'

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ع (٢٥)

২৫. বললেন, 'ওখানে তোমরা জীবন যাপন করবে, ওখানেই তোমাদের মৃত্যু হবে, আর তাথেকেই তোমাদেরকে বের করা হবে।'

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ أَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ط وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ذٰلِكَ خَيْرٌ ط ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ (٢٦)

২৬. হে আদাম সন্তান! আমি তোমাদেরকে পোষাক-পরিচ্ছদ দিয়েছি তোমাদের লজ্জাস্থান আবৃত করার জন্য এবং শোভা বর্ধনের জন্য। আর তাকওয়ার পোশাক হচ্ছে সর্বোত্তম পোশাক। ওটা আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহের মধ্যে একটি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ أَخْرَجَ أَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ط إِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ط إِنَّا جَعَلْنَا

২৭. হে আদাম সন্তান! শয়ত্বান যেন তোমাদেরকে কিছুতেই ফিতনায় ফেলতে না পারে যেমনভাবে তোমাদের পিতা-মাতাকে (আদম ও হাওয়াকে) জান্নাত থেকে বের করেছিল। সে তাদের পরস্পরকে লজ্জাস্থান দেখানোর জন্য তাদের দেহ হতে পোষাক খুলিয়ে ফেলেছিল। সে আর তার সাথীরা তোমাদেরকে এমনভাবে দেখতে পায় যে তোমরা তাদেরকে দেখতে পাও না। যারা ঈমান

Contents

الشَّيٰطِيْنَ أَوْلِيَآءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ (٢٧)

আনে না তাদের জন্য আমি শয়ত্বানকে অভিভাবক বানিয়ে দিয়েছি।

وَإِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَآءَنَا وَاللهُ أَمَرَنَا بِهَا ط قُلْ إِنَّ اللهَ لَا يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ ط أَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٢٨)

২৮. তারা যখন কোন অশ্লীল কাজ করে তখন তারা বলে– 'আমরা আমাদের পিতৃপুরুষদেরকে এ কাজই করতে দেখেছি, আর আল্লাহ আমাদেরকে এসব কাজ করার আদেশ দিয়েছেন।' বল, 'আল্লাহ অশ্লীলতার নির্দেশ দেন না, আল্লাহ্‌র সম্বন্ধে তোমরা কি এমন কথা বলছ যা তোমরা জান না?'

قُلْ أَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ قف وَأَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ە ط كَمَا بَدَأَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ط (٢٩)

২৯. বল, 'আমার প্রতিপালক ন্যায়পরায়ণতার নির্দেশ দিয়েছেন', আর প্রত্যেক সলাতে তোমাদের লক্ষ্য ও মনোযোগকে (তাঁর প্রতি) নিবদ্ধ কর, তাঁর আনুগত্যে বিশুদ্ধ-চিত্ত হয়ে তাঁকে ডাক। যেভাবে তোমাদেরকে প্রথমে সৃষ্টি করা হয়েছে (তোমাদের মৃত্যুর পর আবার জীবিত হয়ে) সেভাবেই তোমরা ফিরে আসবে।

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ط إِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ (٣٠)

৩০. একদলকে তিনি সঠিক পথ দেখিয়েছেন, আর অন্য দলের প্রতি গোমরাহী নির্ধারিত হয়েছে, তারা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে শয়ত্বানদেরকে তাদের অভিভাবক করে নিয়েছে আর মনে করছে যে তারা সঠিক পথে আছে।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ج ط إِنَّهُ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ع (٣١)

৩১. হে আদাম সন্তান! প্রত্যেক সলাতের সময় তোমরা সাজসজ্জা গ্রহণ কর, আর খাও, পান কর কিন্তু অপচয় করো না, অবশ্যই তিনি অপচয়কারীদেরকে পছন্দ করেন না।

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللهِ الَّتِيْٓ أَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ط قُلْ هِيَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ط كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (٣٢)

৩২. বল, 'যে সব সৌন্দর্য-শোভামণ্ডিত বস্তু ও পবিত্র জীবিকা তিনি তাঁর বান্দাদের জন্য সৃষ্টি করেছেন কে তা হারাম করল'? বল, 'সে সব হচ্ছে ঈমানদারদের জন্য দুনিয়ার জীবনে বিশেষতঃ ক্বিয়ামাতের দিনে। এভাবে আমি জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বিবৃত করি।'

قُلْ إِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْإِثْمَ وَالْبَغْيَ بِغَيْرِ الْحَقِّ

৩৩. বল, 'আমার প্রতিপালক অবশ্যই প্রকাশ্য ও গোপন অশ্লীলতা, পাপ, অন্যায়, বিরোধিতা, আল্লাহ্‌র অংশীদার স্থির করা যে ব্যাপারে তিনি

وَأَنْ تُشْرِكُوْا بِاللهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّأَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٣٣)

কোন প্রমাণ নাযিল করেননি, আর আল্লাহ সম্পর্কে তোমাদের অজ্ঞতাপ্রসূত কথাবার্তা নিষিদ্ধ করে দিয়েছেন।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ج فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ (٣٤)

৩৪. প্রতিটি জাতির জন্য সময় নির্ধারিত আছে। তাদের নির্ধারিত সময় যখন এসে যাবে তখন এক মুহূর্তকাল পশ্চাৎ-অগ্র হবে না।

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ إِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ لا فَمَنِ اتَّقٰى وَأَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٣٥)

৩৫. হে আদাম সন্তান! তোমাদের কাছে তোমাদেরই মধ্যে থেকে যখন রসূলগণ আসে যারা তোমাদের কাছে আমার আয়াতগুলোকে বিশদভাবে ব্যাখ্যা করে, তখন যারা তাকওয়া অবলম্বন করে আর নিজেদেরকে সংশোধন করে নেয়, তাদের কোন ভয় নেই, তারা চিন্তিত হবে না।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٣٦)

৩৬. আর যারা আমার আয়াতগুলোকে অস্বীকার করবে আর সেগুলোর ব্যাপারে ঔদ্ধত্য দেখাবে, তারাই হল জাহান্নামের বাসিন্দা, তাতে তারা চিরকাল থাকবে।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ط أُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ ط حَتّٰٓى إِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا يَتَوَفَّوْنَهُمْ لا قَالُوْٓا أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ ط قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ أَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ (٣٧)

৩৭. তাখেকে বড় যালিম আর কে আছে যে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে রচনা করে অথবা তাঁর আয়াতগুলোকে অস্বীকার করে? কিতাবে লিখিত (দুনিয়াতে তাদের জন্য) নির্দিষ্ট অংশ তাদের কাছে পৌঁছবে, যে পর্যন্ত না আমার প্রেরিত ফেরেশতা তাদের জান কব্য করার জন্য তাদের কাছে আসবে। তারা (অর্থাৎ ফেরেশতারা) জিজ্ঞেস করবে, 'আল্লাহ ছাড়া যাদেরকে তোমরা আহ্বান করতে তারা কোথায়'? তারা বলবে, 'তারা আমাদের থেকে উধাও হয়ে গেছে' আর তারা নিজেদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিবে যে তারা কাফির ছিল।

৩৩। 'আম্‌র ইবনু মুররাহ্ (রহঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আবূ ওয়ায়িলকে জিজ্ঞেস করলাম, আপনি কি এটা 'আবদুল্লাহ ইবনু মসউদ (রাঃ) থেকে শুনেছেন? তিনি বললেন, হ্যাঁ এবং তিনি এটাকে মারফূ' হাদীস হিসেবে বর্ণনা করেছেন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, অন্যায়কে ঘৃণাকারী আল্লাহর তুলনায় অন্য কেউ নেই, এজন্যেই তিনি প্রকাশ্য-অপ্রকাশ্য যাবতীয় অশ্লীলতা নিষিদ্ধ করে দিয়েছেন. আবার আল্লাহর চেয়ে প্রশংসা-প্রীতি অন্য কারো নেই, তাই তিনি নিজে নিজের প্রশংসা করেছেন। -বুখারী ৪৬৩৭ {৪৬৩৪; মুসলিম ২৭৬০, তিরমিযী ৩৫৩০, আহমাদ ৩৬০৫, ৪০৩৪,; দারিমী ২২২৫}

قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ فِي النَّارِ ط كُلَّمَا دَخَلَتْ أُمَّةٌ لَّعَنَتْ أُخْتَهَا ط حَتّٰٓى إِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا لا قَالَتْ أُخْرٰهُمْ لِأُوْلٰهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ أَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ۵ ط قَالَ لِكُلٍّ ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ (٣٨)

৩৮. আল্লাহ্ বলবেন, 'তোমাদের আগে জ্বিন ও মানুষের মধ্যে যারা জাহান্নামে প্রবেশ করেছে, তাদের মাঝে প্রবেশ কর।' যখনই একটি দল প্রবেশ করবে, তখন তারা অন্যদলকে অভিসম্পাত করবে। অবশেষে সবাই যখন তার ভিতর একত্রিত হবে, তখন প্রত্যেকটি পরবর্তী দল আগের দল সম্পর্কে বলবে, 'হে আমাদের প্রতিপালক! ওরাই আমাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছে, কাজেই ওদেরকে আগুনে দ্বিগুণ শাস্তি দাও।' আল্লাহ্ বলবেন, 'প্রত্যেকের শাস্তি দ্বিগুণ করা হয়েছে (নিজেরা পথভ্রষ্ট হওয়ার জন্য এবং অন্যদের পথভ্রষ্ট করার জন্য) কিন্তু তোমরা জান না।'

وَقَالَتْ أُوْلٰهُمْ لِأُخْرٰهُمْ فَمَا كَانَ لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ع (٣٩)

৩৯. তাদের পূর্ববর্তী দল (আগের জেনারেশন) পরবর্তী দলকে (পরের জেনারেশনকে) বলবে, 'আমাদের চেয়ে তোমাদের বেশি কোন মর্যাদা নেই, কাজেই তোমাদের কৃতকর্মের জন্য শাস্তিও স্বাদ গ্রহণ কর।'

إِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ أَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ سَمِّ الْخِيَاطِ ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ (٤٠)

৪০. যারা আমার আয়াতগুলোকে অস্বীকার করে আর এ ব্যাপারে ঔদ্ধত্য প্রকাশ করে তাদের জন্য আকাশের দরজাগুলো উন্মুক্ত হবে না আর তারা জান্নাতে প্রবেশ করবে না-যতক্ষণ না সূঁচের ছিদ্রে উট প্রবেশ করে। এভাবেই আমি অপরাধীদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ غَوَاشٍ ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ (٤١)

৪১. তাদের জন্য হবে জাহান্নামের বিছানা, আর উপরে ভাঁজের পর ভাঁজ করা অগ্নির আচ্ছাদন। আর এভাবেই আমি যালিমদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَآ ز أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٤٢)

৪২. আর যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে– আমি কারো উপর সাধ্যের অতিরিক্ত দায়িত্ব চাপিয়ে দেইনা– তারা হবে জান্নাতের অধিবাসী, সেখানে তারা হবে স্থায়ী।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ ج وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ

৪৩. তাদের অন্তর থেকে হিংসা-বিদ্বেষ দূর করে দেব, তাদের পাদদেশে নির্ঝরিণী প্রবাহিত হবে, আর তারা বলবে, যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্র যিনি

هَدٰىنَا لِهٰذَا ۖ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ لَوْلَآ أَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۗ وَنُوْدُوْٓا أَنْ تِلْكُمُ الْجَنَّةُ أُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٤٣)

আমাদেরকে এ পথ দেখিয়েছেন, আমরা কিছুতেই পথ পেতাম না যদি না আল্লাহ আমাদেরকে পথ দেখাতেন। আমাদের প্রতিপালকের রসূলগণ প্রকৃত সত্য নিয়েই এসেছিলেন। তাদেরকে আহ্বান করে জানানো হবে- 'তোমরা (দুনিয়াতে) যে 'আমাল করতে তার ফলে তোমরা এ জান্নাতের উত্তরাধিকারী হয়েছ।'

وَنَادٰٓى أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ أَصْحٰبَ النَّارِ أَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ۗ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَأَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ بَيْنَهُمْ أَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۙ (٤٤)

৪৪. জান্নাতবাসীরা জাহান্নামবাসীদেরকে সম্বোধন করে বলবে যে, 'আমাদেরকে আমাদের প্রতিপালক যে ওয়া'দা দিয়েছিলেন তা আমরা ঠিক ঠিক পেয়েছি। আর তোমরাও কি তোমাদের প্রতিপালকের ওয়া'দা ঠিক মত পেয়েছ?' তারা বলবে, 'হাঁ'। তখন একজন ঘোষণাকারী তাদের মাঝে ঘোষণা করবে যে, যালিমদের উপর আল্লাহ্র অভিশাপ

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۘ (٤٥)

৪৫. যারা আল্লাহ্র পথে বাধা সৃষ্টি করে আর তাকে বাঁকা করতে চায়, আর তারা পরকাল অস্বীকারকারী।

وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْأَعْرَافِ رِجَالٌ يَّعْرِفُوْنَ كُلًّاۢ بِسِيْمٰهُمْ ۚ وَنَادَوْا أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ أَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۖ لَمْ يَدْخُلُوْهَا وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ (٤٦)

৪৬. উভয় দলের মাঝে আছে পর্দা আর আ'রাফে (জান্নাত ও জাহান্নামের মধ্যবর্তী অংশ) কিছু লোক থাকবে যারা প্রত্যেক লোককে তার চিহ্ন দ্বারা চিনতে পারবে (যে সে জান্নাতের বাসিন্দা না জাহান্নামের)। জান্নাতবাসীদেরকে ডেকে তারা বলবে, 'তোমাদের প্রতি সালাম'। তারা (আ'রাফবাসীরা) তখনও জান্নাতে প্রবেশ করেনি কিন্তু তারা আশা করছে।

وَإِذَا صُرِفَتْ أَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ أَصْحٰبِ النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ع (٤٧)

৪৭. যখন তাদের দৃষ্টি অগ্নিবাসীদের দিকে ঘুরিয়ে দেয়া হবে তখন তারা বলবে, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে যালিমদের সঙ্গী করো না।'

وَنَادٰٓى أَصْحٰبُ الْأَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ قَالُوْا مَآ أَغْنٰى عَنْكُمْ

৪৮. আ'রাফবাসীরা যাদেরকে চিহ্ন দেখে চিনতে পারবে তাদেরকে ডেকে বলবে, 'তোমাদের দলবল আর গর্ব-অহঙ্কার কোন

جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ (٤٨)

কাজে আসল না।'

أَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ أَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللهُ بِرَحْمَةٍ ط اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ (٤٩)

৪৯. এরাই (অর্থাৎ জান্নাতবাসীরা) কি ঐ সব লোক যাদের ব্যাপারে তোমরা শপথ করে বলতে যে আল্লাহ তাদের প্রতি কোন দয়া দেখাবেন না। (আজ এদেরকেই বলা হল) তোমরা জান্নাতে প্রবেশ কর, তোমাদের কোন ভয় নেই, তোমরা দুঃখিতও হবে না।

وَنَادٰٓى أَصْحٰبُ النَّارِ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ أَنْ أَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ أَوْ مِمَّا رَزَقَكُمُ اللهُ ط قَالُوْٓا إِنَّ اللهَ حَرَّمَهُمَا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ لا (٥٠)

৫০. জাহান্নামীরা জান্নাতীদের ডেকে বলবে, 'আমাদেরকে কিছু পানি ঢেলে দাও কিংবা আল্লাহ তোমাদেরকে যে রিযক্ দিয়েছেন তাথেকে কিছু দাও।' তারা বলবে, 'আল্লাহ এ দু'টো কাফিরদের জন্য নিষিদ্ধ করে দিয়েছেন।'

الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ج فَالْيَوْمَ نَنْسٰهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا لا وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ (٥١)

৫১. 'যারা তাদের দ্বীনকে খেলা-তামাশা বানিয়ে নিয়েছিল আর দুনিয়ার জীবন যাদেরকে প্রতারিত করেছিল।' কাজেই আজকের দিনে তাদেরকে আমি ভুলে যাব যেভাবে তারা এ দিনের সাক্ষাৎকে ভুলে গিয়েছিল এবং আমার আয়াতসমূহকে অস্বীকার করে চলেছিল।

وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٥٢)

৫২. আমি অবশ্যই তাদের কাছে এক কিতাব এনে দিয়েছিলাম যা ছিল পূর্ণ জ্ঞানের ভিত্তিতে বিশদভাবে বিবৃত যা ছিল বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্য সঠিক পথের দিশারী ও রহমত স্বরূপ।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّا تَأْوِيْلَهٗ ط يَوْمَ يَأْتِيْ تَأْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ج فَهَلْ لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ أَوْ نُرَدُّ فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ط قَدْ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ع (٥٣)

৫৩. তারা কি তার পরিণামের অপেক্ষা করছে (কাফিরদেরকে যে পরিণামের ব্যাপারে এ কিতাব খবর দিয়েছে) যখন তার (খবর দেয়া) পরিণাম এসে যাবে তখন পূর্বে যারা এর কথা ভুলে গিয়েছিল তারা বলবে, আমাদের প্রতিপালকের রসূলগণ তো প্রকৃত সত্য নিয়েই এসেছিল, এখন কোন সুপারিশকারী আছে কি যারা আমাদের জন্য সুপারিশ করবে অথবা আমাদেরকে (পৃথিবীতে) ফিরে যেতে দেয়া হবে কি যাতে আমরা যে 'আমাল করছিলাম তাথেকে ভিন্নতর 'আমাল করি? তারা নিজেদেরকে ক্ষতিগ্রস্ত করে ফেলেছে, আর তারা যে মিথ্যে রচনা করত তাও তাদের কাছ থেকে উধাও হয়ে গেছে।

৫৪. তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহ যিনি ছয় দিনে আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর আরশে সমুন্নত হয়েছেন। দিনকে তিনি রাতের পর্দা দিয়ে ঢেকে দেন, তারা একে অন্যকে দ্রুতগতিতে অনুসরণ করে এবং সূর্য, চন্দ্র, তারকারাজি তাঁরই আজ্ঞাবহ। জেনে রেখ, সৃষ্টি তাঁর, হুকুমও (চলবে) তাঁর, বরকতময় আল্লাহ বিশ্বজগতের প্রতিপালক।

إِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ قف يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا لا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍۭ بِأَمْرِهٖ ط أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ط تَبٰرَكَ اللهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (٥٤)

৫৫. তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে বিনয়ের সঙ্গে এবং গোপনে আহ্বান কর, তিনি সীমালঙ্ঘনকারীদেরকে পছন্দ করেন না।

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ط إِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ج (٥٥)

৫৬. শান্তি-শৃঙ্খলা স্থাপিত হওয়ার পর পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করো না, আর তাঁকে ভয়-ভীতি ও আশা-ভরসা নিয়ে ডাকতে থাক, আল্লাহ্‌র দয়া তো (সব সময়) তাদের নিকটে আছে যারা সৎ কাজ করে।

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ط إِنَّ رَحْمَتَ اللهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ (٥٦)

৫৭. তিনি তাঁর রহমতের পূর্বে সুসংবাদের ঘোষক হিসেবে বায়ু প্রেরণ করেন, অতঃপর যখন তা মেঘের ভারী বোঝা বহন করে, তখন আমি তাকে মৃত ভূখণ্ডের দিকে তাড়িয়ে নিয়ে যাই, যাথেকে আমি পানি বর্ষণ করি, অতঃপর তাথেকে আমি সর্বপ্রকার ফল উৎপন্ন করি। এভাবেই আমি মৃতকে জীবিত করি যাতে তোমরা শিক্ষা গ্রহণ কর।

وَهُوَ الَّذِي يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۭ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ط حَتّٰى إِذَآ أَقَلَّتْ سَحَابًا ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَنْزَلْنَا بِهِ الْمَآءَ فَأَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ط كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (٥٧)

৫৮. উৎকৃষ্ট ভূমি তার প্রতিপালকের নির্দেশে বৃক্ষলতা উৎপাদন করে, আর নিকৃষ্ট যমীন থেকে কঠিন পরিশ্রম না করলে কিছুই উৎপন্ন হয় না। এভাবেই আমি আয়াতগুলো বারবার বিবৃত করি কৃতজ্ঞ সম্প্রদায়ের জন্য।

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِإِذْنِ رَبِّهٖ ج وَالَّذِي خَبُثَ لَا يَخْرُجُ إِلَّا نَكِدًا ط كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْأٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ع (٥٨)

৫৯. আমি নূহকে তার সম্প্রদায়ের নিকট পাঠিয়েছিলাম। সে বলেছিল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি

لَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط إِنِّيْٓ

أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (٥٩)

ছাড়া তোমাদের কোন ইলাহ নাই।' (তোমরা আল্লাহ্‌র নির্দেশ অমান্য করলে) মহাদিনে আমি তোমাদের জন্য শাস্তির আশঙ্কা করি।

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٦٠)

৬০. তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ বলেছিল, 'আমরা নিশ্চিতভাবে তোমাকে প্রকাশ্য গোমরাহীতে নিমজ্জিত দেখছি।'

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٦١)

৬১. সে বলল, 'হে আমার সম্প্রদায়! আমাতে কোন বিভ্রান্তি নেই, বরং আমি বিশ্বজগতের প্রতিপালকের পক্ষ হতে প্রেরিত রসূল।'

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَأَنْصَحُ لَكُمْ وَأَعْلَمُ مِنَ اللهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٦٢)

৬২. আমি তোমাদের কাছে আমার প্রতিপালকের বাণী পৌঁছে দিচ্ছি আর তোমাদেরকে নাসীহাত করছি, আর আমি আল্লাহ্‌র নিকট হতে (এমন সব বিষয়) জানি যা তোমরা জান না।

أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (٦٣)

৬৩. 'তোমরা কি এ বিষয়ে বিস্ময় প্রকাশ করছ যে তোমাদের মধ্যেকার একজন লোকের নিকট তোমাদের জন্য তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে উপদেশ বাণী এসেছে তোমাদেরকে সতর্ক করার জন্য যাতে তোমরা তাক্বওয়া অবলম্বন করে আল্লাহ্‌র রহমতপ্রাপ্ত হতে পার।'

فَكَذَّبُوْهُ فَأَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ فِي الْفُلْكِ وَأَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ع (٦٤)

৬৪. কিন্তু তারা তাকে (মিথ্যেবাদী মনে করে) অস্বীকার করল। অতঃপর আমি তাকে আর তার সঙ্গে নৌকায় যারা ছিল তাদেরকে বাঁচিয়ে দিলাম আর আমার আয়াতগুলোকে যারা অস্বীকার করেছিল তাদেরকে ডুবিয়ে মারলাম। তারা ছিল এক অন্ধ সম্প্রদায়।

وَإِلٰى عَادٍ أَخَاهُمْ هُوْدًا ط قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ط أَفَلَا تَتَّقُوْنَ (٦٥)

৬৫. আর 'আদ জাতির কাছে (পাঠিয়েছিলাম) তাদের ভাই হূদকে। সে বলেছিল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের অন্য কোন ইলাহ নেই, তোমরা কি তাক্বওয়া অবলম্বন করবে না?'

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهِ إِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْ سَفَاهَةٍ وَّإِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٦٦)

৬৬. তার জাতির প্রধানগণ- যারা ইমান আনতে অস্বীকার করেছিল, বলল, 'তুমি নিশ্চিতই নির্বুদ্ধিতায় ডুবে আছ, আর আমরা মনে করি তুমি মিথ্যেবাদী।'

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٦٧)

৬৭. সে বলল, 'হে আমার সম্প্রদায়! আমার মাঝে কোন নির্বুদ্ধিতা নেই, বরং আমি বিশ্বজগতের প্রতিপালকের প্রেরিত রসূল।'

أُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَأَنَا لَكُمْ نَاصِحٌ أَمِيْنٌ (٦٨)

৬৮. 'আমি তোমাদের কাছে আমার প্রতিপালকের বাণী পৌঁছে দিচ্ছি, আর আমি তোমাদের বিশ্বস্ত কল্যাণকামী।

أَوَعَجِبْتُمْ أَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ط وَاذْكُرُوْآ إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ج فَاذْكُرُوْآ اٰلَآءَ اللهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (٦٩)

৬৯. তোমরা কি আশ্চর্য হচ্ছ যে, তোমাদেরই মধ্যে একজন লোকের উপর তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে উপদেশ এসেছে তোমাদেরকে সাবধান করার উদ্দেশে। আরো স্মরণ কর তিনি তোমাদেরকে নূহের কওমের পর তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছেন আর দৈহিক গঠনে অধিকতর বলিষ্ঠ করেছেন, কাজেই আল্লাহ্‌র অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর যাতে তোমরা সাফল্যমণ্ডিত হতে পার।'

قَالُوْآ أَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللهَ وَحْدَهٗ وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ج فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٧٠)

৭০. তারা বলল, 'তুমি কি আমাদের কাছে এজন্য এসেছ যাতে আমরা এক আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করি আর আমাদের পিতৃপুরুষগণ যার 'ইবাদাত করত তা ত্যাগ করি? কাজেই তুমি যদি সত্যবাদী হও তাহলে আমাদেরকে যে জিনিসের ওয়াদা করছ (ভয় দেখাচ্ছ) তা নিয়ে এসো।'

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ وَّغَضَبٌ ط أَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ أَسْمَآءٍ سَمَّيْتُمُوْهَآ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ط فَانْتَظِرُوْآ إِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ (٧١)

৭১. সে বলল, 'তোমাদের উপর তোমাদের প্রতিপালকের অসন্তোষ ও ক্রোধ নেমে এসেছে। তাহলে তোমরা কি আমার সঙ্গে এমন কতকগুলো নাম সম্পর্কে বিতর্ক করছ যেগুলোর নামকরণ তোমরা আর তোমাদের বাপ-দাদারাই করেছে যে সম্পর্কে আল্লাহ কোন প্রমাণ নাযিল করেননি? তাহলে তোমরা অপেক্ষা কর, আমিও তোমাদের সঙ্গে অপেক্ষমান থাকলাম।'

فَأَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ع (٧٢)

৭২. আমার করুণায় আমি তাকে ও তার সঙ্গী-সাথীদেরকে রক্ষা করলাম আর আমার নিদর্শনাবলীকে যারা অস্বীকার করেছিল এবং ঈমান আনেনি তাদের মূল উৎপাটন করলাম।

وَإِلَىٰ ثَمُودَ أَخَاهُمْ صَالِحًا ۗ قَالَ يَٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ غَيْرُهُۥ ۖ قَدْ جَآءَتْكُم بَيِّنَةٌ مِّن رَّبِّكُمْ ۖ هَٰذِهِۦ نَاقَةُ اللَّهِ لَكُمْ ءَايَةً ۖ فَذَرُوهَا تَأْكُلْ فِىٓ أَرْضِ اللَّهِ ۖ وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ (٧٣)

৭৩. আমি সামুদ জাতির কাছে তাদের ভাই সালিহ্‌কে পাঠিয়েছিলাম। সে বলেছিল, হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র ‘ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন ইলাহ নেই। তোমাদের নিকট তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে সুস্পষ্ট প্রমাণ এসেছে। এটি হল আল্লাহ্‌র উটনী, তোমাদের জন্য নিদর্শন, তাকে আল্লাহ্‌র যমীনে চরে খেতে দাও, মন্দ উদ্দেশে একে স্পর্শ করবে না, করলে পীড়াদায়ক শাস্তি তোমাদেরকে গ্রাস করবে।

وَاذْكُرُوٓا إِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنۢ بَعْدِ عَادٍ وَبَوَّأَكُمْ فِى الْأَرْضِ تَتَّخِذُونَ مِن سُهُولِهَا قُصُورًا وَتَنْحِتُونَ الْجِبَالَ بُيُوتًا ۖ فَاذْكُرُوٓا ءَالَآءَ اللَّهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ (٧٤)

৭৪. স্মরণ কর, ‘আদ জাতির পরে তিনি তোমাদেরকে তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছেন আর তোমাদেরকে যমীনে বসতি দান করেছেন, তোমরা তার সমতলে প্রাসাদ নির্মাণ করছ আর পাহাড় কেটে ঘর তৈরি করছ, কাজেই আল্লাহ্‌র অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর, পৃথিবীতে ফাসাদ সৃষ্টি কর না।

قَالَ الْمَلَأُ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوا مِن قَوْمِهِۦ لِلَّذِينَ اسْتُضْعِفُوا لِمَنْ ءَامَنَ مِنْهُمْ أَتَعْلَمُونَ أَنَّ صَٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّن رَّبِّهِۦ ۚ قَالُوٓا إِنَّا بِمَآ أُرْسِلَ بِهِۦ مُؤْمِنُونَ (٧٥)

৭৫. তার জাতির গর্বিত প্রধানগণ ঐসব লোকদেরকে বলেছিল যাদেরকে দুর্বল করে রাখা হয়েছিল, যারা তাদের মধ্যে ঈমান এনেছিল– “তোমরা কি জান যে সালিহ তার প্রতিপালক কর্তৃক প্রেরিত? তারা বলেছিল, ‘তিনি যে বাণী নিয়ে প্রেরিত হয়েছেন তাতে আমরা বিশ্বাসী’।

قَالَ الَّذِينَ اسْتَكْبَرُوٓا إِنَّا بِالَّذِىٓ ءَامَنتُم بِهِۦ كَٰفِرُونَ (٧٦)

৭৬. যারা অহঙ্কার করেছিল তারা বলেছিল, ‘তোমরা যাতে বিশ্বাস করেছ আমরা তা অস্বীকার করছি।’

فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ وَقَالُوا يَٰصَٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِن كُنتَ مِنَ الْمُرْسَلِينَ (٧٧)

৭৭. অতঃপর তারা উষ্ট্রীটিকে মেরে ফেলল এবং তাদের প্রতিপালকের স্পষ্ট বিরোধিতা করে চলল আর বলল, ‘হে সালিহ! তুমি যদি রসূল হয়েই থাক তাহলে তা নিয়ে এসো আমাদেরকে যার ওয়াদা করছ (ভয় দেখাচ্ছ)।’

فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا فِى دَارِهِمْ

৭৮. অতঃপর ভূমিকম্প তাদেরকে হঠাৎ পাকড়াও করল আর তারা তাদের ঘরগুলোতে

جٰثِمِيْنَ (٧٨)

মুখ থুবড়ে পড়ে রইল।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ (٧٩)

৭৯. আর সালিহ্ এ কথা বলে তাদেরকে পরিত্যাগ করল যে, হে আমার সম্প্রদায়! 'আমি তোমাদের কাছে আমার প্রতিপালকের বাণী পৌঁছে দিয়েছি, আর তোমাদেরকে সদুপদেশ দিয়েছি কিন্তু সদুপদেশ দানকারীদেরকে তোমরা পছন্দ কর না।'

وَلُوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَتَأْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ (٨٠)

৮০. আর আমি লূতকে পাঠিয়েছিলাম। যখন সে তার জাতিকে বলেছিল, 'তোমরা এমন নির্লজ্জতার কাজ করছ যা বিশ্বজগতে তোমাদের পূর্বে কোন একজনও করেনি।'

إِنَّكُمْ لَتَأْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ط بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ (٨١)

৮১. তোমরা যৌন তাড়নায় স্ত্রীদের বাদ দিয়ে পুরুষদের নিকট গমন করছ, তোমরা হচ্ছ এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।

وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوْٓا أَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ج إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ (٨٢)

৮২. তার জাতির এ ছাড়া আর কোন জবাব ছিল না যে, 'তোমাদের জনপদ থেকে এদেরকে বের করে দাও, এরা এমন লোক যারা খুব পবিত্র হতে চায়।'

فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ زصلے كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِيْنَ (٨٣)

৮৩. অতঃপর আমি তাকে আর তার পরিবার-পরিজনকে রক্ষা করলাম কিন্তু তার স্ত্রী ছাড়া, কেননা সে ছিল পেছনে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ط فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ع (٨٤)

৮৪. তাদের উপর এক পাথরের বৃষ্টি বর্ষিয়ে দিলাম। তারপর দেখ, অপরাধীদের পরিণতি কী হয়েছিল!

وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ط قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَوْفُوا الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ بَعْدَ إِصْلَاحِهَا ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ

৮৫. আমি মাদ্‌য়ানবাসীদের কাছে তাদের ভাই শু'আয়বকে পাঠিয়েছিলাম। (সে বলেছিল) 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন ইলাহ নেই, তোমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে তোমাদের কাছে তো স্পষ্ট নিদর্শন এসে গেছে, কাজেই মাপ ও ওজন সঠিকভাবে কর, লোকেদেরকে তাদের প্রাপ্য বিষয়ে ক্ষতিগ্রস্ত করো না, পৃথিবীর সংশোধনের পর তাতে বিপর্যয় সৃষ্টি কর না,

مُّؤْمِنِيْنَ ج (٨٥)

এটাই তোমাদের জন্য কল্যাণকর যদি তোমরা সত্যিই মু'মিন হয়ে থাক।'

وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ مَنْ اٰمَنَ بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ج وَاذْكُرُوْآ إِذْ كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ ص وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ (٨٦)

৮৬. 'যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে ভয় দেখানোর জন্য আর আল্লাহ্র পথ থেকে বাধা দেয়ার জন্য প্রতিটি পথে পাহারা বসিও না, আর তাতে (অর্থাৎ আল্লাহ্র সহজ-সরল পথে) বক্রতা অনুসন্ধান কর না।' স্মরণ কর, 'তোমরা সংখ্যায় অল্প ছিলে, অতঃপর আল্লাহ তোমাদেরকে সংখ্যাধিক্য করে দিয়েছেন। লক্ষ্য কর, বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণতি কী হয়েছিল।'

وَإِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ أُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللهُ بَيْنَنَا ج وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ (٨٧)

৮৭. 'আমি যা নিয়ে প্রেরিত হয়েছি তাতে যদি তোমাদের একদল ঈমান আনে আর একদল ঈমান না আনে, তাহলে ধৈর্য ধারণ কর যে পর্যন্ত না আল্লাহ আমাদের আর তোমাদের মাঝে মীমাংসা করে দেন, তিনি হলেন সর্বোত্তম মীমাংসাকারী।'

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ج (٨٨)

৮৮. তার জাতির উদ্ধত সর্দারগণ বলল, 'ওহে শু'আয়ব! আমরা তোমাকে আর তোমার সঙ্গে যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে আমাদের জনপদ থেকে বের করে দেবই, অথবা তুমি আমাদের ধর্মবিশ্বাসে অবশ্যই ফিরে আসবে।' সে বলল, 'আমরা যদি তাতে রাজী না হই তবুও?'

قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ؕ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ؕ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ؕ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ؕ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ (٨٩)

৮৯. আল্লাহ যখন আমাদেরকে তোমাদের ধর্মবিশ্বাস থেকে রক্ষা করেছেন, তখন যদি আমরা তাতে ফিরে যাই, তাহলে তো আমরা আল্লাহ্‌র প্রতি মিথ্যারোপ করে ফেলব। আমরা তাতে ফিরে যেতে পারি না আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ্‌র ইচ্ছে ব্যতীত। প্রতিটি বিষয় সম্পর্কে আমাদের প্রতিপালকের জ্ঞান পরিব্যাপ্ত, আমরা আল্লাহ্‌রই প্রতি নির্ভর করি। হে আমাদের প্রতিপালক! 'তুমি আমাদের আর আমাদের জাতির মধ্যে সঠিকভাবে ফায়সালা করে দাও আর তুমি হলে সর্বোত্তম মীমাংসাকারী।'

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ (٩٠)

৯০. তার জাতির যারা কুফরী করেছিল সেই প্রধানগণ বলল, 'তোমরা যদি শু'আয়বের কথা মেনে নাও তাহলে তোমরা ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।'

فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ج ۛ صلے لا (٩١)

৯১. অতঃপর ভূমিকম্প তাদেরকে হঠাৎ আঘাত হানল আর তারা তাদের ঘরবাড়িতে উপুড় হয়ে পড়ে রইল।

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ج ۛ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ (٩٢)

৯২. যেন শু'আয়বকে অস্বীকারকারীরা সেখানে কোনদিন বসবাস করেনি। যারা শু'আয়বকে মিথ্যা প্রতিপন্ন করেছিল তারা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে গেল।

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ج فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ع (٩٣)

৯৩. সে তাদেরকে ত্যাগ করল আর বলল, 'হে আমার জাতির লোকেরা! আমি তোমাদের কাছে আমার প্রতিপালকের প্রেরিত বাণী পৌঁছে দিয়েছি, আর তোমাদেরকে সদুপদেশ দিয়েছি, কাজেই আমি কাফির জাতির জন্য কী করে আক্ষেপ করতে পারি।'

وَمَآ أَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّآ أَخَذْنَآ أَهْلَهَا بِالْبَأْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ (٩٤)

৯৪. আমি কোন জনপদে এমন কোন নাবীই পাঠাইনি যেখানকার অধিবাসীদেরকে অভাব-অনটন আর দুঃখ-কষ্ট কশাঘাত করেনি যাতে তারা নম্রতা ও কাতরতা প্রকাশ করে।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَأَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٩٥)

৯৫. অতঃপর আমি দূরাবস্থাকে সচ্ছলতা দিয়ে বদলে দিলাম আর শেষ পর্যন্ত তারা প্রাচুর্যে বেড়ে গেল আর বলল, 'আমাদের পিতৃপুরুষের উপরও এ রকম সুখ-দুঃখের দিন আসত।' অতঃপর আমি তাদেরকে হঠাৎ পাকড়াও করলাম অথচ তারা টের করতেও পারল না।

وَلَوْ أَنَّ أَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَأَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٩٦)

৯৬. জনপদগুলোর লোকেরা যদি ঈমান আনত আর তাক্বওয়া অবলম্বন করত তাহলে আমি তাদের জন্য আসমান আর যমীনের কল্যাণ উন্মুক্ত করে দিতাম কিন্তু তারা (সত্যকে) প্রত্যাখ্যান করল। কাজেই তাদের কৃতকর্মের কারণে তাদেরকে পাকড়াও করলাম।

أَفَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرٰٓى أَنْ يَّأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ط (٩٧)

৯৭. জনপদের লোকেরা কি নিজেদেরকে নিরাপদ মনে করছে যে আমার শাস্তি তাদের উপর পতিত হবে না রাতের বেলা যখন তারা ঘুমিয়ে থাকবে?

أَوَأَمِنَ أَهْلُ الْقُرٰٓى أَنْ يَّأْتِيَهُمْ بَأْسُنَا ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ (٩٨)

৯৮. অথবা জনপদের লোকেরা কি নিজেদেরকে নিরাপদ মনে করছে যে আমার শাস্তি তাদের উপর প্রকাশ্য দিবালোকে আসবে না যখন তারা খেলাধূলায় মত্ত থাকবে?

أَفَأَمِنُوْا مَكْرَ اللهِ ج فَلَا يَأْمَنُ مَكْرَ اللهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ع (٩٩)

৯৯. তারা কি আল্লাহ্‌র কৌশল থেকে নির্ভয় হয়ে গেছে? নিশ্চিত ক্ষতিগ্রস্ত সম্প্রদায় ছাড়া আল্লাহ্‌র কৌশল হতে কেউ নির্ভয় হতে পারে না।

أَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ أَهْلِهَآ أَنْ لَّوْ نَشَآءُ أَصَبْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ ج وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ (١٠٠)

১০০. যারা কোন দেশের উত্তরাধিকার লাভ করেছে সেখানকার (আগের) অধিবাসীদের পর, তারা কি এ শিক্ষা লাভ করে না যে, আমি তাদেরকে তাদের পাপের কারণে পাকড়াও করতে পারি আর তদের অন্তরে সীল লাগিয়ে দিতে পারি যাতে তারা কিছুই শুনবে না?

تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْۢبَآئِهَا ج

১০১. এসব জনপদের কিছু বিবরণ তোমাকে জানালাম। তাদের কাছে তো তাদের রসূলগণ

وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ج فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ قَبْلُ ط كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الْكٰفِرِيْنَ (١٠١)

স্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে এসেছিল, কিন্তু যেহেতু তারা আগেভাগেই প্রত্যাখ্যান করে দিয়েছিল এজন্য আর ঈমান আনতে প্রস্তুত ছিল না। এভাবে আল্লাহ্ কাফিরদের অন্তরে সীল লাগিয়ে দেন।

وَمَا وَجَدْنَا لِأَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ج وَإِنْ وَّجَدْنَآ أَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ (١٠٢)

১০২. তাদের অধিকাংশকেই আমি প্রতিশ্রুতি পালনকারী পাইনি, বরং অধিকাংশকে ফাসিকই পেয়েছি।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ج فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ (١٠٣)

১০৩. তাদের পরে আমি মূসাকে আমার নিদর্শনাবলী সহকারে ফির'আওন ও তার প্রধানদের কাছে পাঠিয়েছিলাম। কিন্তু সে সবের প্রতি তারা অন্যায় আচরণ প্রদর্শন করে। লক্ষ্য কর, তারপর বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের পরিণতি কেমন হয়েছিল!

وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ إِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ لا (١٠٤)

১০৪. মূসা বলেছিল, হে ফির'আওন! আমি বিশ্বজগতের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রেরিত রসূল।

حَقِيْقٌ عَلٰى أَنْ لَّآ أَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ إِلَّا الْحَقَّ ط قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَأَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ط (١٠٥)

১০৫. আমার জন্য অবশ্য করণীয় এই যে, আমি প্রকৃত সত্য ছাড়া আল্লাহ্‌র সম্বন্ধে কিছু বলি না, তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে স্পষ্ট প্রমাণ সহকারে তোমাদের কাছে এসেছি। কাজেই বানী ইসরাঈলকে আমার সঙ্গে পাঠিয়ে দাও।

قَالَ إِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَأْتِ بِهَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (١٠٦)

১০৬. ফির'আওন বলল, নিদর্শন নিয়েই তুমি যদি এসে থাক, তাহলে সত্যবাদী হলে তুমি তা পেশ কর।

فَأَلْقٰى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ج صلے (١٠٧)

১০৭. সে তার লাঠি নিক্ষেপ করল আর তখন তা একটা প্রকাশ্য অজগর হয়ে গেল।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَإِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ع (١٠٨)

১০৮. আর সে তার হাত (বগল থেকে) টেনে বের করল, তখন তা দর্শকদের দৃষ্টিতে সাদা উজ্জ্বল হয়ে দেখা দিল।

قَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ لا (١٠٩)

১০৯. ফির'আওন গোষ্ঠীর প্রধানরা বলল, নিশ্চয় সে বিজ্ঞ যাদুকর।'

يُّرِيْدُ أَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ ج

১১০. 'সে চায় তোমাদেরকে বের করে

فَمَاذَا تَأْمُرُوْنَ (١١٠)

দিতে তোমাদের দেশ থেকে। এখন তোমাদের পরামর্শ কী?’

قَالُوْٓا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَأَرْسِلْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۙ (١١١)

১১১. তারা বলল, ‘তাকে ও তার ভাইকে অবকাশ দাও, আর নগরে নগরে সংগ্রাহক পাঠিয়ে দাও’।

يَأْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ (١١٢)

১১২. তারা তোমার কাছে সব বড় বড় যাদুকরকে নিয়ে আসবে।

وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا إِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ (١١٣)

১১৩. যাদুকররা ফির‘আওনের নিকট এসে বলল, আমরা যদি বিজয়ী হই, তবে আমাদের জন্য পুরস্কা আছে তো?

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (١١٤)

১১৪. সে বলল, হাঁ, তোমরা অবশ্যই (আমার) নৈকট্যলাভকারীদের মধ্যে শামিল হবে।

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى إِمَّآ أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّآ أَنْ نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ (١١٥)

১১৫. তারা বলল, ‘হে মূসা! তুমিই কি (প্রথমে যাদু) ছুঁড়বে, না আমরাই ছুঁড়ব?’

قَالَ أَلْقُوْا ج فَلَمَّآ أَلْقَوْا سَحَرُوْٓا أَعْيُنَ النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ (١١٦)

১১৬. সে বলল, ‘তোমরাই ছুঁড়’। যখন তারা বান ছুঁড়ল তখন লোকজনের চোখ যাদুগ্রস্ত হয়ে গেল, তারা ভীত সন্ত্রস্ত হয়ে পড়ল। তারা বড়ই সাংঘাতিক এক যাদু দেখাল।

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰٓى أَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ج فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُوْنَ ج (١١٧)

১১৭. আমি মূসার কাছে ওয়াহী করলাম, ‘তোমার লাঠি ছুঁড়ে দাও’। তখন তা তাদের অলীক বস্তুগুলোকে গ্রাস করতে শুরু করল।

فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ج (١١٨)

১১৮. প্রকৃত সত্য প্রকাশ হয়ে গেল, তারা যা সাজিয়েছিল তা নিষ্ফল হয়ে গেল।

فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ج (١١٩)

১১৯. তারা সেখানে পরাজিত হল আর লাঞ্ছিত অবস্থায় ফিরে গেল।

وَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۙ (١٢٠)

১২০. আর যাদুকররা সাজদায় লুটিয়ে পড়ল।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۙ (١٢١)

১২১. তারা বলল, ‘আমরা বিশ্বজগতের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান আনলাম।

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (١٢٢)

১২২. মূসা আর হারূনের প্রতিপালকের প্রতি।’

قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ أَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ج إِنَّ

১২৩. ফির‘আওন বলল, ‘আমি হুকুম দেয়ার আগেই তোমরা তার প্রতি ঈমান আনলে? অবশ্যই এটা

هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِي الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ أَهْلَهَا ج فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (١٢٣)

তোমাদের ষড়যন্ত্র যেটা নগরে বসে তোমরা পাকিয়েছ, এর বাসিন্দাদের বহিস্কৃত করার উদ্দেশে। এর পরিণাম শীঘ্রই টের পাবে।

لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ ثُمَّ لَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِيْنَ (١٢٤)

১২৪. তোমাদের হাত পাগুলোকে বিপরীত দিক থেকে অবশ্যই আমি কেটে দেব, তারপর তোমাদের সব্বাইকে শূলে চড়াব।

قَالُوْٓا إِنَّآ إِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ج (١٢٥)

১২৫. তারা বলল, আমরা অবশ্যই আমাদের প্রতিপালকের দিকে প্রত্যাবর্তন করব।

وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ إِلَّآ أَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ط رَبَّنَآ أَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ع (١٢٦)

১২৬. তুমি আমাদের উপর প্রতিশোধ নিচ্ছ শুধু এ কারণে যে, আমাদের কাছে যখন আমাদের প্রতিপালকের নিদর্শন এসেছে তখন আমরা তাতে বিশ্বাস স্থাপন করেছি। হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে ধৈর্য ও দৃঢ়তা অবলম্বনের গুণে অভিষিক্ত কর আর মুসলমান হিসেবে আমাদের মৃত্যু দান কর।

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ أَتَذَرُ مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ط قَالَ سَنُقَتِّلُ أَبْنَآءَهُمْ وَنَسْتَحْيِ نِسَآءَهُمْ ج وَإِنَّا فَوْقَهُمْ قٰهِرُوْنَ (١٢٧)

১২৭. ফির'আওন গোষ্ঠীর সরদারগণ বলল, 'আপনি কি মূসা আর তার জাতির লোকেদেরকে যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করার জন্য ছেড়ে দেবেন আর দেবেন আপনাকে আর আপনার মা'বূদদেরকে বর্জন করতে?' সে বলল, 'আমি তাদের পুত্র সন্তানদেরকে হত্যা করব আর তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখব, আমরা তাদের উপর অপ্রতিরোধ্য।'

قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ وَاصْبِرُوْا ج إِنَّ الْأَرْضَ لِلّٰهِ قف لا يُوْرِثُهَا مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ط وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ (١٢٨)

১২৮. মূসা তার সম্প্রদায়কে বলল, 'তোমরা আল্লাহ্‌র সাহায্য কামনা কর আর ধৈর্য অবলম্বন কর, যমীনের মালিক হলেন আল্লাহ, তিনি তাঁর বান্দাহ্‌দের মধ্য হতে যাকে ইচ্ছে করবেন তার উত্তরাধিকারী বানাবেন, কল্যাণময় পরিণাম হচ্ছে মুত্তাকীদের জন্য।'

قَالُوْٓا أُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ أَنْ تَأْتِيَنَا وَمِنْ بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ط قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ع (١٢٩)

১২৯. তারা বলল, 'আমাদের নিকট তোমার আসার পূর্বেও আমাদেরকে জ্বালাতন করা হয়েছে আর তোমার আসার পরেও।' সে বলল, 'সত্বর তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের দুশমনকে ধ্বংস করবেন আর তোমাদেরকে দেশে প্রতিনিধিত্ব দান করবেন, অতঃপর তিনি দেখবেন তোমরা কেমন 'আমাল কর।'

وَلَقَدْ أَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ وَنَقْصٍ

১৩০. আমি ফির'আওনী গোষ্ঠীকে দুর্ভিক্ষ আর

مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ (١٣٠)

ফল-ফসলের ক্ষয়-ক্ষতি দিয়ে পাকড়াও করেছিলাম যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

فَإِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ج وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗ ط أَلَآ إِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ اللهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (١٣١)

১৩১. তারা সুদিনের মুখ দেখলে বলত, 'এটাই তো আমাদের প্রাপ্য।' আর যখন তারা দুর্দিনে পতিত হত তখন মূসা আর তার সঙ্গী-সাথীদেরকে অলক্ষুণে বলে দোষারোপ করত। প্রকৃতপক্ষে তাদের মন্দভাগ্য তো আল্লাহ্‌র হাতে নিবদ্ধ, কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।

وَقَالُوْا مَهْمَا تَأْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا بِهَا لا فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ (١٣٢)

১৩২. তারা বলল, 'আমাদেরকে যাদুগ্রস্ত করার জন্য তুমি যে কোন নিদর্শনই নিয়ে আস না কেন, আমরা কিছুতেই তোমাতে বিশ্বাস করব না।'

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ قف فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ (١٣٣)

১৩৩. অতঃপর আমি তাদের উপর প্লাবন, পঙ্গপাল, উকুন, ব্যাঙ ও রক্তের বিপদ পাঠিয়েছিলাম সুস্পষ্ট নিদর্শন হিসেবে, কিন্তু তারা ঔদ্ধত্য প্রকাশ করল। তারা ছিল এক অপরাধী জাতি।

وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ج لَئِنْ كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ ج (١٣٤)

১৩৪. যখন তাদের উপর কোন বালা-মুসিবত আসত তখন তারা বলত, 'হে মূসা! তোমার প্রতিপালকের নিকট আমাদের জন্য প্রার্থনা জানাও যে মতে তিনি তোমার সাথে অঙ্গীকার করেছেন, যদি আমাদের থেকে বিপদ দূর করে দাও তাহলে আমরা অবশ্যই তোমাতে ঈমান আনব আর বানী ইসরাঈলকে অবশ্যই তোমার সাথে পাঠিয়ে দেব।'

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ إِلٰٓى أَجَلٍ هُمْ بٰلِغُوْهُ إِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ (١٣٥)

১৩৫. অতঃপর যখন তাদের উপর থেকে বিপদ সরিয়ে দিতাম একটা নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত যা তাদেরকে পূর্ণ করতে হত, তখন তারা অঙ্গীকার ভঙ্গ করত।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ (١٣٦)

১৩৬.তখন আমি তাদের উপর প্রতিশোধ নিলাম আর তাদেরকে সমুদ্রে ডুবিয়ে মারলাম কেননা তারা আমার নিদর্শনসমূহকে অস্বীকার করেছিল আর এ ব্যাপারে তারা ছিল চিন্তা-ভাবনাহীন।

وَأَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ مَشَارِقَ الْأَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ط

১৩৭. আর আমি দুর্বল করে রাখা লোকেদেরকে সেই যমীনের পূর্বের আর পশ্চিমের উত্তরাধিকারী বানিয়ে দিলাম যাতে আমি কল্যাণ নিহিত

وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ ۙ لا بِمَا صَبَرُوْا ط وَدَمَّرْنَا مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ (١٣٧)

রেখেছি। এভাবে বানী ইসরাঈলের ব্যাপারে তাদের ধৈর্য ধারণের কারণে তোমার প্রতিপালকের কল্যাণময় অঙ্গীকার পূর্ণ হল আর ফির'আওন ও তার লোকজনের গৌরবময় কাজ ও সুন্দর প্রাসাদগুলোকে ধ্বংস করে দিলাম।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَأَتَوْا عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى أَصْنَامٍ لَّهُمْ ج قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ إِلٰهًا كَمَا لَهُمْ اٰلِهَةٌ ط قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ (١٣٨)

১৩৮. বানী ইসরাঈলকে আমি সমুদ্র পার করিয়ে দিলাম, অতঃপর তারা এমন এক জাতির নিকট এলো যারা ছিল প্রতিমা পূজারী। মূসার লোকজন বলল, হে মূসা! আমাদের জন্যও 'কোন দেবতা বানিয়ে দাও যেমন তাদের দেবতা আছে। মূসা বলল, তোমরা হলে এমন এক সম্প্রদায় যারা মূর্খদের মতো আচরণ করে।'

إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٣٩)

১৩৯. এসব লোক যাতে মত্ত আছে তা ধ্বংস হয়ে যাবে আর তারা যে সব কাজ করছে তা সব বাতিল।

قَالَ أَغَيْرَ اللهِ أَبْغِيْكُمْ إِلٰهًا وَّهُوَ فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ (١٤٠)

১৪০. সে বলল, 'আমি কি আল্লাহ ছাড়া তোমাদের জন্য অন্য ইলাহ খুঁজব অথচ তিনি তোমাদেরকে বিশ্বজগতের উপর প্রাধান্য দিয়েছেন?'

وَإِذْ أَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ج يُقَتِّلُوْنَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ط وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ع (١٤١)

১৪১. স্মরণ কর, আমি তোমাদেরকে ফির'আওনী গোষ্ঠী থেকে রক্ষা করেছি যারা তোমাদেরকে কঠিন আযাবে ডুবিয়ে রেখেছিল, যারা তোমাদের ছেলে সন্তানগুলোকে হত্যা করছিল আর তোমাদের নারীদেরকে জীবিত রাখছিল, এতে তোমাদের জন্য ছিল তোমাদের রব্বের পক্ষ হতে এক কঠিন পরীক্ষা।

وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّأَتْمَمْنٰهَا بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ أَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ج وَقَالَ مُوْسٰى لِأَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ فِيْ قَوْمِيْ وَأَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ الْمُفْسِدِيْنَ (١٤٢)

১৪২. আমি মূসার জন্য (সিনাই পর্বতের উপর) ত্রিশ রাত্রি নির্ধারণ করলাম। অতঃপর আরো দশ (বাড়িয়ে) দিয়ে (সেই সময়) পূর্ণ করলাম। এভাবে তার প্রতিপালকের নির্ধারিত চল্লিশ রাত্রি পূর্ণ হল। মূসা তার ভাই হারূনকে বলল, 'আমার অনুপস্থিতিতে আমার সম্প্রদায়ের জন্য তুমি আমার প্রতিনিধিত্ব কর, সংশোধন কর, বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের অনুসরণ করো না।'

وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ رَبُّهٗ لا

১৪৩. মূসা যখন আমার নির্ধারিত সময়ে আসল, আর তার রব্ব তার সঙ্গে কথা বললেন, তখন সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমাকে দেখা দাও,

قَالَ رَبِّ أَرِنِيٓ أَنْظُرْ إِلَيْكَ ۚ قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ إِلَى الْجَبَلِ فَإِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ أَفَاقَ قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ إِلَيْكَ وَأَنَا أَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ (١٤٣)

আমি তোমাকে দেখব'। তিনি বললেন, 'তুমি আমাকে কক্ষনো দেখতে পাবে না, বরং তুমি পাহাড়ের দিকে তাকাও, যদি তা নিজ স্থানে স্থির থাকতে পারে তাহলে তুমি আমাকে দেখতে পাবে।' অতঃপর তার প্রতিপালক যখন পাহাড়ে নিজ জ্যোতি বিচ্ছুরিত করলেন, তখন তা পাহাড়কে চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দিল আর মূসা চৈতন্য হারিয়ে পড়ে গেল। যখন চেতনা ফিরে পেল, তখন সে বলল, 'পবিত্র তোমার সত্ত্বা, আমি অনুশোচনা ভরে তোমার পানেই ফিরে এলাম, আর আমি প্রথম ঈমান আনছি।'

قَالَ يٰمُوْسٰٓى إِنِّي اصْطَفَيْتُكَ عَلَى النَّاسِ بِرِسٰلٰتِيْ وَبِكَلَامِيْ ۖ فَخُذْ مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ (١٤٤)

১৪৪. তিনি বললেন, 'হে মূসা! আমি আমার রিসালাত (যা তোমাকে দিয়েছি) ও আমার বাক্য (যা তোমার সঙ্গে বলেছিলাম তার) দ্বারা সকল লোকের মধ্য থেকে তোমাকে নির্বাচিত করেছি। কাজেই যা তোমাকে দিয়েছি তা গ্রহণ কর আর শোকর আদায়কারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।

وَكَتَبْنَا لَهٗ فِي الْأَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَيْءٍ ۚ فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّأْمُرْ قَوْمَكَ يَأْخُذُوْا بِأَحْسَنِهَا ۚ سَأُرِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ (١٤٥)

১৪৫. আমি তার জন্য ফলকে লিখে দিলাম সকল বিষয় সংক্রান্ত নাসীহাত আর সকল বিষয়ে স্পষ্ট ব্যাখ্যা (আর তাকে বললাম) এগুলো শক্ত হাতে ধর, তোমার লোকজনকে আদেশ দাও এগুলো উত্তম পন্থায় মান্য করে চলতে। শীঘ্রই আমি তোমাদেরকে (আল্লাহ্‌র নির্দেশ অমান্য করে ধ্বংসস্তূপে পরিণত) ফাসিকদের বাসস্থান দেখাব।

سَأَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِيَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ فِي

১৪৬. যারা অন্যায়ভাবে পৃথিবীতে অহঙ্কার করে বেড়ায় আমি শীঘ্রই তাদের দৃষ্টিকে আমার নিদর্শন

১৪৩। আবূ সা'ঈদ খুদরী (رضي الله عنه) বলেছেন যে, এক ইয়াহূদী নাবী (ﷺ) -এর দরবারে উপস্থিত হল। তার মুখমণ্ডলে চপেটাঘাত খেয়ে সে বলল, হে মুহাম্মাদ! আপনার এক আনসারী সহাবী আমার মুখমণ্ডলে চপেটাঘাত করেছে। তিনি বললেন, তাকে ডেকে আন। তারা ওকে ডেকে আনল, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, "একে চপেটাঘাত করেছ কেন?" সে বলল, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমি এই ইয়াহূদীর পার্শ্ব দিয়ে অতিক্রম করছিলাম। তখন শুনলাম সে বলছে তাঁরই শপথ যিনি মূসা (عليه السلام)-কে মানবজাতির উপর মনোনীত করেছেন, আমি বললাম মুহাম্মাদ (ﷺ) -এর উপরও মনোনীত করেছেন কি? এরপর আমার রাগ চেপে গিয়েছিল, তাই তাকে চপেটাঘাত করেছি। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, তোমরা আমাকে অন্যান্য নাবীর থেকে উত্তম বলো না। কারণ ক্বিয়ামাত দিবসে সব মানুষই জ্ঞানশূন্য হয়ে পড়বে, সর্বপ্রথম আমিই জ্ঞান ফিরে পাব। তিনি বলেন, তখন আমি দেখব যে, মূসা (عليه السلام) আরশের খুঁটি ধরে আছেন, আমি বুঝতে পারব না যে, তিনি কি আমার পূর্বে জ্ঞান ফিরে পেয়েছেন নাকি তূর পর্বতের জ্ঞানশূন্যতার পুরস্কার হিসেবে তাঁকে পুনরায় জ্ঞানশূন্য করা হয়নি। –বুখারী ৪৬৩৮ [২৪১২; মুসলিম ২৩৭৪, আবূ দাউদ ৪৬৬৮, আহমাদ ১০৮৭২, ১০৮৯৪]

الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ وَإِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَإِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَإِنْ يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَيِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ؕ ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ (١٤٦)

হতে ফিরিয়ে দেব। তারা আমার নিদর্শন দেখলেও তাতে বিশ্বাস করবে না। তারা সত্যপথ দেখলেও তাকে পথ হিসেবে গ্রহণ করবে না। তারা বক্র পথ দেখলে তাকে পথ হিসেবে গ্রহণ করবে। তার কারণ হল তারা আমার নিদর্শনগুলোকে মিথ্যে বলে উড়িয়ে দিয়েছে আর এগুলোর ব্যাপারে তারা ছিল একেবারে চিন্তা ভাবনাহীন।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ؕ هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ع (١٤٧)

১৪৭. যারা আমার নিদর্শনগুলোকে আর আখেরাতের সাক্ষাৎকে মিথ্যে জেনে অস্বীকার করে তাদের 'আমালগুলো নিস্ফল। তারা যা করত সে অনুযায়ী প্রতিফল ছাড়া তারা কী আর আশা করতে পারে?

وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْ ۢبَعْدِهٖ مِنْ حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ؕ أَلَمْ يَرَوْا أَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ (١٤٨)

১৪৮. মূসার অনুপস্থিতিতে তার জাতির লোকেরা তাদের অলঙ্কারের সাহায্যে গো-বৎসের একটা অবয়ব তৈরি করল যা গরুর ন্যায় 'হাম্বা' আওয়াজ করত। তারা কি দেখল না যে তা তাদের সঙ্গে কথা বলে না, আর তাদেরকে পথও দেখায় না। কিন্তু তা সত্ত্বেও তারা তাকে মা'বূদ হিসেবে গ্রহণ করল। তারা ছিল যালিম।

وَلَمَّا سُقِطَ فِيْٓ أَيْدِيْهِمْ وَرَأَوْا أَنَّهُمْ قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (١٤٩)

১৪৯. অতঃপর যখন তারা অনুতপ্ত হল আর বুঝতে পারল যে তারা পথহারা হয়ে গেছে, তারা বলল, 'আমাদের প্রতিপালক যদি আমাদের উপর দয়া না করেন আর আমাদেরকে ক্ষমা না করেন তাহলে আমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাব।'

وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى إِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ أَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِيْ مِنْ ۢبَعْدِيْ ۚ أَعَجِلْتُمْ أَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَأَلْقَى الْأَلْوَاحَ وَأَخَذَ بِرَأْسِ أَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ إِلَيْهِ ؕ قَالَ ابْنَ أُمَّ إِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِيْ وَكَادُوْا يَقْتُلُوْنَنِيْ ز صلے فَلَا تُشْمِتْ بِيَ الْأَعْدَآءَ

১৫০. তারপর মূসা যখন ক্ষোভ আর ক্রোধ নিয়ে তার লোকজনের কাছে ফিরে এল তখন বলল, 'আমার অনুপস্থিতিতে তোমরা কত নিকৃষ্টভাবেই না আমার প্রতিনিধির দায়িত্ব পালন করেছ! তোমাদের প্রতিপালকের নির্দেশ লাভের আগেই তোমরা তাড়াহুড়ো করে বসলে?' অতঃপর সে ফলকগুলো ছুঁড়ে ফেলে দিল, আর নিজ ভাইয়ের মাথার চুল ধরে নিজের কাছে টেনে নিয়ে আসল। হারূন বলল, 'হে আমার মায়ের পেটের ভাই! লোকেরা আমাকে দুর্বল করে দিয়েছিল আর আমাকে হত্যা করতে উদ্যত হয়েছিল, কাজেই আমার ব্যাপারে দুশমনদেরকে

وَلَا تَجْعَلْنِيْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (١٥٠)

আনন্দিত হওয়ার সুযোগ দিও না আর আমাকে যালিম সম্প্রদায়ের মধ্যে গণ্য করো না।'

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِأَخِيْ وَأَدْخِلْنَا فِيْ رَحْمَتِكَ ز صلے وَأَنْتَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ع (١٥١)

১৫১. মূসা বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমাকে আর আমার ভাইকে ক্ষমা কর, আর আমাদেরকে তোমার রহমতের মধ্যে দাখিল কর, তুমিই সর্বাধিক বড় দয়াবান।'

إِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُفْتَرِيْنَ (١٥٢)

১৫২. যারা গো-বৎসকে (মা'বূদ হিসেবে) গ্রহণ করেছে, পার্থিব জীবনে তাদের উপর তাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে রাগ ও লাঞ্ছনা পতিত হবে। মিথ্যা রচনাকারীদেরকে আমরা এভাবেই শাস্তি দিয়ে থাকি।

وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ ۢبَعْدِهَا وَاٰمَنُوْآ ز إِنَّ رَبَّكَ مِنْ ۢبَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٥٣)

১৫৩. আর যারা অসৎ কাজ করে, অতঃপর তাওবাহ করে আর ঈমান আনে তাহলে এ সবের পর তোমার প্রতিপালক অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ أَخَذَ الْأَلْوَاحَ ج صلے وَفِيْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ (١٥٤)

১৫৪. মূসার ক্রোধ যখন ঠাণ্ডা হল তখন সে ফলকগুলো উঠিয়ে নিল, সেগুলোর লেখায় ছিল ঐসব লোকেদের জন্য পথ নির্দেশ আর রহমত যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে।

وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا لِّمِيْقَاتِنَا ج فَلَمَّآ أَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ رَبِّ لَوْ شِئْتَ أَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ وَإِيَّايَ ط أَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ مِنَّا ج إِنْ هِيَ إِلَّا فِتْنَتُكَ ط تُضِلُّ بِهَا مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِيْ مَنْ تَشَآءُ ط أَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ (١٥٥)

১৫৫. মূসা তার জাতির সত্তর জন লোককে বাছাই করল আমার নির্ধারিত সময়ে উপস্থিত হওয়ার জন্য। যখন ভূমিকম্প তাদের উপর আঘাত হানল তখন সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি ইচ্ছে করলে তো এদেরকে আর আমাকেও আগেই ধ্বংস করে দিতে পারতে! আমাদের মধ্যেকার নির্বোধেরা যা করেছে তার জন্য কি তুমি আমাদেরকে ধ্বংস করে দেবে? ওটা তো কেবল তোমার পরীক্ষা, যাকে চাও তদ্দ্বারা পথভ্রষ্ট কর, আর যাকে চাও সত্য পথে পরিচালিত কর, তুমি আমাদের প্রতি দয়া কর, তুমিই তো সবচেয়ে বেশী ক্ষমাশীল।'

وَاكْتُبْ لَنَا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ إِنَّا هُدْنَآ إِلَيْكَ ط قَالَ عَذَابِيْٓ

১৫৬. 'আমাদের জন্য এ দুনিয়ার কল্যাণ লিখে দাও আর পরকালেও। আমরা তোমার দিকেই প্রত্যাবর্তন করছি।' আল্লাহ বললেন, 'শাস্তি তো

أُصِيبُ بِهٖ مَنْ أَشَآءُ ج وَرَحْمَتِيْ وَسِعَتْ كُلَّ شَيْءٍ ط فَسَأَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ج(١٥٦)

আমি যাকে ইচ্ছে দেই, আর আমার রহমত সব বিষয়ে পরিব্যাপ্ত আর তা আমি তাদের জন্য লিখে দিব যারা তাক্বওয়া অবলম্বন করবে, যাকাত দিবে আর যারা আমার নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাসী হবে।'

اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ وَالْإِنْجِيْلِ ز يَأْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ إِصْرَهُمْ وَالْأَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ط فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ مَعَهٗٓ لا أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ع(١٥٧)

১৫৭. যারা প্রেরিত উম্মী নাবীকে অনুসরণ করবে যা তাদের কাছে রক্ষিত তাওরাত ও ইনজীলে তারা লিখিত পাবে। সে তাদেরকে সৎকাজের নির্দেশ দেয়, অসৎ কাজ করতে নিষেধ করে, পবিত্র বস্তুসমূহ তাদের জন্য হালাল করে, অপবিত্র বস্তুগুলো তাদের জন্য নিষিদ্ধ করে, তাদের থেকে গুরুভার সরিয়ে দেয় আর সেই শৃংখল (হালাল-হারামের বানোয়াট বিধি-নিষেধ) যাতে ছিল তারা বন্দী। কাজেই যারা তার প্রতি ঈমান আনে, তাকে সম্মান প্রদর্শন করে, তাকে সাহায্য-সহযোগিতা করে আর তার উপর অবতীর্ণ আলোর অনুসরণ করে, তারাই হচ্ছে সফলকাম।

قُلْ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنِّيْ رَسُوْلُ اللهِ إِلَيْكُمْ جَمِيْعًا نِ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ص فَاٰمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللهِ

১৫৮. বল, হে মানুষ! আমি তোমাদের সকলের জন্য আল্লাহ্র রসূল, (সেই আল্লাহ্র) যিনি আকাশসমূহ আর পৃথিবীর রাজত্বের মালিক, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তিনিই জীবিত করেন আর মৃত্যু আনেন। কাজেই তোমরা ঈমান আন আল্লাহ্র প্রতি ও তাঁর প্রেরিত সেই উম্মী বার্তাবাহকের প্রতি যে নিজে আল্লাহ্র প্রতি ও তাঁর যাবতীয় বাণীর প্রতি বিশ্বাস করে, তোমরা তাঁর অনুসরণ কর যাতে তোমরা সঠিক পথ পেতে পার।২

১৫৮। আবূদ দারদা (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা আবূ বাক্র (রাঃ) ও 'উমার (রাঃ)-এর মধ্যে বিতর্ক হল, আবূ বাক্র (রাঃ) 'উমার (রাঃ)-কে রাগিয়ে দিয়েছিলেন, এরপর রাগান্বিত অবস্থায় 'উমার (রাঃ) সেখান থেকে চলে গেলেন, আবূ বাক্র (রাঃ) তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করতে করতে তাঁর পিছু নিলেন কিন্তু 'উমার (রাঃ) ক্ষমা করলেন না, বরং তাঁর সম্মুখের দরজা বন্ধ করে দিলেন। এরপর আবূ বাক্র (রাঃ) রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর দরবারে আসলেন। আবূ দারদা (রাঃ) বলেন, আমরা তখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে ছিলাম, ঘটনা শোনার পর রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেন, তোমাদের এ সঙ্গী আবূ বাক্র আগে কল্যাণ লাভ করেছে। তিনি বলেন, এতে 'উমার লজ্জিত হলেন এবং সালাম করে নাবী (ﷺ) -এর পাশে বসে পড়লেন ও সবকথা রসূল (ﷺ) -এর কাছে বর্ণনা করলেন। আবূ দারদা (রাঃ) বলেন, এতে রসূলুল্লাহ (ﷺ) অসন্তুষ্ট হলেন। আবূ বাক্র সিদ্দীক (রাঃ) বারবার বলছিলেন, হে আল্লাহ্র রসূল (ﷺ)! আমি অধিক দোষী ছিলাম। অতঃপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, তোমরা আমার খাতিরে আমার সাথীর ত্রুটি উপেক্ষা

Contents

وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ (١٥٨)

وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰىٓ أُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ (١٥٩)

১৫৯. মূসার সম্প্রদায়ের মধ্যে এক দল লোক আছে যারা সত্য বিধান অনুযায়ী (অন্যকে) পথ দেখায় আর সত্য বিধান অনুযায়ী ইনসাফ করে।

وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ أَسْبَاطًا أُمَمًا ؕ وَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰىٓ إِذِ اسْتَسْقٰهُ قَوْمُهٗٓ أَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ج فَانْۢبَجَسَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ أُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ وَأَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ كَانُوْآ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (١٦٠)

১৬০. আমি তাদেরকে বারটি গোত্রে বা জাতিতে বিভক্ত করেছিলাম। মূসার জাতির লোকেরা যখন তার কাছে পানি চাইল তখন আমি মূসার প্রতি ওয়াহী অবতীর্ণ করলাম যে, তোমার লাঠি দিয়ে পাথরে আঘাত কর। এর ফলে তাত্থেকে বারটি ঝর্ণা উৎসারিত হল। প্রত্যেক গোত্র তাদের পানি পানের স্থান চিনে নিল, তাদেরকে মেঘের ছায়ায় আশ্রয় দিলাম, তাদের উপর আমি মান্না ও সালওয়া অবতীর্ণ করলাম আর বললাম, 'তোমাদেরকে আমি যে জীবিকা দিয়েছি তাত্থেকে পবিত্র বস্তুগুলো আহার কর।' (কিন্তু তারা আমার নির্দেশ অমান্য করে) আমার প্রতি কোন যুল্ম করেনি, প্রকৃতপক্ষে তারা নিজেদের উপরই যুল্ম করছিল।

وَإِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ وَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُوْلُوْا حِطَّةٌ وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓئٰتِكُمْ ؕ سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ (١٦١)

১৬১. স্মরণ কর, তাদেরকে যখন বলা হয়েছিল- "এই জনপদে বাস কর, যেখানে ইচ্ছে আহার কর আর বল '(আমাদেরকে) ক্ষমা কর', অবনত মস্তকে দ্বারে প্রবেশ কর, (তাহলে) তোমাদের ত্রুটিগুলো ক্ষমা করে দেব, আর নেককার লোকদেরকে অতিরিক্ত আরো দেব।"

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ

১৬২. কিন্তু তাদের মধ্যেকার যালিম লোকেরা তাদেরকে বলা কথাকে বদলে ফেললো। কাজেই তাদের উপর আকাশ থেকে আযাব পাঠালাম,

---

করবে কি? তোমরা আমার খাতিরে আমার সঙ্গীর ত্রুটি উপেক্ষা করবে কি? এমন একদিন ছিল যখন আমি বলেছিলাম, "হে মানুষেরা! আমি তোমাদের সকলের জন্য রসূল, তখন তোমরা বলেছিলে, "তুমি মিথ্যা বলেছ" আর আবূ বাক্‌র (رضي الله عنه) বলেছিল, "আপনি সত্য বলেছেন"। -বুখারী ৪৬৪০ [৩৬৬১]

৩ ১৬০। সা'ঈদ ইবনু যায়দ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেছেন, اَلْكَمْأَةُ (খাদ্য উপযোগী) ছত্রাক জাতীয় উদ্ভিদ মান্না-এর মতো এবং এর পানি চক্ষুরোগ আরোগ্যকারী। -বুখারী ৪৬৩৯ [৪৪৭৮; মুসলিম ২০৪৯, তিরমিযী ২০৬৭, ইবনু মাজাহ ৩৪৫৪, আহমাদ ১৬২৮, ১৬৩৫]

السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ع (١٦٢)

সীমালঙ্ঘনে তাদের লিপ্ত থাকার কারণে।

وَسْئَلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ حَاضِرَةَ الْبَحْرِ ـ إِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ إِذْ تَأْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ لا لَا تَأْتِيْهِمْ ج ـ كَذٰلِكَ ج ـ نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ (١٦٣)

১৬৩. তাদেরকে জিজ্ঞেস কর ঐ জনবসতি সম্পর্কে যা সমুদ্রের উপকূলে বিদ্যমান ছিল। তারা শনিবারের সীমালঙ্ঘন করেছিল। শনিবার পালনের দিন মাছগুলো প্রকাশ্যতঃ তাদের নিকটে আসত। আর যেদিন শনিবারের অনুষ্ঠান থাকত না সেদিন সেগুলো আসত না। এটা হত এজন্য যে, তারা অবাধ্যতায় লিপ্ত থাকার কারণে তাদেরকে পরীক্ষায় ফেলে দিয়েছিলাম।

وَإِذْ قَالَتْ أُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ قَوْمَا نِ اللهُ مُهْلِكُهُمْ أَوْ مُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ط قَالُوْا مَعْذِرَةً إِلٰى رَبِّكُمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (١٦٤)

১৬৪. স্মরণ কর, যখন তাদের একদল বলেছিল- 'তোমরা এমন লোকদেরকে কেন নাসীহাত করছ যাদেরকে আল্লাহ ধ্বংস করবেন অথবা কঠিন শাস্তি দিবেন'। নাসীহাতকারীগণ বলেছিল, 'তোমাদের প্রতিপালকের নিকট (দায়িত্ব পালন না করার) অভিযোগ থেকে মুক্ত হওয়ার জন্য আর তারা যাতে তাক্বওয়া অবলম্বন করে।'

فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ أَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَأَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا بِعَذَابٍ بَئِيْسٍ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ (١٦٥)

১৬৫. যে উপদেশ তাদেরকে দেয়া হচ্ছিল তারা যখন তা ভুলে গেল তখন যারা মন্দ কাজ থেকে (অন্যদেরকে) নিষেধ করত তাদেরকে রক্ষা করলাম। আর যালিমদেরকে কঠিন আযাবে পাকড়াও করলাম যেহেতু তারা অবাধ্যতায় লিপ্ত ছিল।

فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِئِيْنَ (١٦٦)

১৬৬. যখন তারা চরম ধৃষ্টতা দেখিয়ে ঐ কাজগুলো করতে থাকল যা করতে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল, তখন তাদের উদ্দেশে বললাম, 'ঘৃণিত অপমানিত, বানরে রূপান্তরিত হয়ে যাও'।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ط إِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ ج صلے وَإِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٦٧)

১৬৭. স্মরণ কর, যখন তোমার প্রতিপালক ঘোষণা করলেন যে, আমি অবশ্যই ক্বিয়ামাত পর্যন্ত বানী ইসরাঈলের উপর এমন লোকদেরকে পাঠাব যারা তাদেরকে কঠিন শাস্তি দিতে থাকবে, তোমার প্রতিপালক তো শাস্তিদানে খুবই তৎপর, আর তিনি (মন্দ পরিত্যাগকারীদের জন্য) অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أُمَمًا ج مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ ز وَبَلَوْنٰهُمْ

১৬৮. পৃথিবীতে আমি তাদেরকে নানা দলে বিভক্ত করে দিয়েছিলাম, তাদের মধ্যে কিছু দল ছিল সৎ, কতক দল অন্য রকম এবং সুখ আর দুখ দিয়ে

بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (١٦٨)

তাদেরকে পরীক্ষা করেছিলাম যাতে তারা (আল্লাহ্‌র নির্দেশের পথে) ফিরে আসে।

فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ يَأْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْأَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ سَيُغْفَرُ لَنَا ج وَإِنْ يَّأْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ يَأْخُذُوْهُ ط أَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ الْكِتٰبِ أَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللهِ إِلَّا الْحَقَّ وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ط وَالدَّارُ الْأٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (١٦٩)

১৬৯. তাদের পরে (পাপিষ্ঠ) বংশধরগণ তাদের স্থলাভিষিক্ত হয়ে কিতাবের উত্তরাধিকারী হয় যারা দুনিয়ার নিকৃষ্ট স্বার্থ গ্রহণ করে আর বলে, '(আমরা যা কিছুই করি না কেন) আমাদেরকে ক্ষমা করা হবে'। আর দুনিয়ার স্বার্থ তাদের সামনে আসলে আবার তা গ্রহণ করে নেয়। (তাওরাত) কিতাবে কি তাদের নিকট থেকে এ অঙ্গীকার নেয়া হয়নি যে তারা আল্লাহ সম্বন্ধে প্রকৃত সত্য ছাড়া বলবে না? তারা তো ঐ কিতাবে যা আছে তা পাঠ করেও থাকে। যারা তাক্বওয়া অবলম্বন করে তাদের জন্য পরকালের আবাসই উত্তম, তোমরা কি বুঝবে না?

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ ط إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ (١٧٠)

১৭০. যারা কিতাবকে শক্তভাবে আঁকড়ে ধরে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, আমি (এসব) সৎকর্মশীলদের কর্মফল কখনো বিনষ্ট করি না।

وَإِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَأَنَّهٗ ظُلَّةٌ وَّظَنُّوْٓا أَنَّهٗ وَاقِعٌ بِهِمْ ج خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ع (١٧١)

১৭১. স্মরণ কর, আমি যখন পাহাড়কে বানী ইসরাঈলদের উপর তুলে ধরলাম তা যেন একটা সামিয়ানা। তারা ভাবল, ওটা তাদের উপর বুঝি পতিত হবে। (এমত অবস্থায় তাদেরকে বললাম) 'তোমাদেরকে যা দিলাম তা শক্তভাবে ধারণ কর আর তাতে যা আছে তা মনে রেখ, যাতে তোমরা তাক্বওয়া লাভ করতে পার'।

وَإِذْ أَخَذَ رَبُّكَ مِنْ بَنِيْٓ اٰدَمَ مِنْ ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَأَشْهَدَهُمْ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ ج أَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ط قَالُوْا بَلٰى ج شَهِدْنَا ج أَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ إِنَّا كُنَّا عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ لا (١٧٢)

১৭২. স্মরণ কর, যখন তোমার প্রতিপালক আদম সন্তানদের পৃষ্ঠ হতে তাদের বংশধরদের বের করলেন আর তাদেরকেই সাক্ষী বানিয়ে জিজ্ঞেস করলেন, 'আমি কি তোমাদের প্রতিপালক নই?' তারা বলল, 'হ্যাঁ; এ ব্যাপারে আমরা সাক্ষ্য দিচ্ছি।' (এটা এজন্য করা হয়েছিল) যাতে তোমরা ক্বিয়ামাতের দিন না বল যে, 'এ সম্পর্কে আমরা একেবারেই বে-খবর ছিলাম'।

أَوْ تَقُوْلُوْٓا إِنَّمَآ أَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ

১৭৩. অথবা তোমরা এ কথা না বল যে, 'পূর্বে আমাদের পিতৃ-পুরুষরাই শিরক্ করেছে আর

وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْ بَعْدِهِمْ ۚ أَفَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ (١٧٣)

তাদের পরে আমরা তাদেরই সন্তানাদি (যা করতে দেখেছি তাই করছি) তাহলে ভ্রান্ত পথের অনুসারীরা যা করেছে তার জন্য কি আপনি আমাদেরকে ধ্বংস করবেন?'

وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (١٧٤)

১৭৪. এভাবে আমি নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বিবৃত করছি, আর হয়ত তারা (আমার পথে) ফিরে আসবে।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ الَّذِيْٓ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَأَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ (١٧٥)

১৭৫. তাদেরকে ঐ লোকের সংবাদ পড়ে শোনাও যাকে আমি আমার নিদর্শনসমূহ প্রদান করেছিলাম। কিন্তু সে সেগুলোকে এড়িয়ে যায়। অতঃপর শয়ত্বান তাকে অনুসরণ করে, ফলে সে পথভ্রষ্টদের দলে শামিল হয়ে যায়।

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ أَخْلَدَ إِلَى الْأَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ إِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ أَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ۚ ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (١٧٦)

১৭৬. আমি ইচ্ছে করলে আমার নিদর্শনের মাধ্যমে তাকে অবশ্যই উচ্চতর মর্যাদা দিতাম। কিন্তু সে দুনিয়ার প্রতিই ঝুঁকে পড়ল আর তার প্রবৃত্তির অনুসরণ করল। তাই তার দৃষ্টান্ত হল কুকুরের দৃষ্টান্তের মত। যদি তুমি তার উপর বোঝা চাপাও তাহলে জিভ বের করে হাঁপাতে থাকে এবং তাকে ছেড়ে দিলেও জিভ বের করে হাঁপাতে থাকে। এটাই হল ঐ সম্প্রদায়ের উদাহরণ যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যে মনে করে অমান্য করে। তুমি এ কাহিনী শুনিয়ে দাও যাতে তারা চিন্তা-ভাবনা করে।

سَآءَ مَثَلًا ِۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَأَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ (١٧٧)

১৭৭. যে সম্প্রদায় আমার আয়াতগুলোকে মিথ্যে মনে করে প্রত্যাখ্যান করে আর নিজেদের উপর যুল্ম করতে থাকে তাদের উদাহরণ কতই না মন্দ!

مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (١٧٨)

১৭৮. আল্লাহ যাকে হিদায়াত করেন সেই হিদায়াত লাভ করে, আর যাকে পথভ্রষ্ট করেন তারাই হয় ক্ষতিগ্রস্ত।

وَلَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ۡ

১৭৯. আমি বহু সংখ্যক জ্বীন আর মানুষকে জাহান্নামের জন্য সৃষ্টি করেছি, তাদের হৃদয় আছে কিন্তু তা দিয়ে উপলব্ধি করে না, তাদের চোখ

وَلَهُمْ أَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ز وَلَهُمْ اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ط أُولٰٓئِكَ كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ ط أُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ (١٧٩)

আছে কিন্তু তা দিয়ে দেখে না, তাদের কান আছে কিন্তু তা দিয়ে শোনে না, তারা জন্তু-জানোয়ারের মত, বরং তার চেয়েও পথভ্রষ্ট, তারা একেবারে বে-খবর।

وَلِلّٰهِ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ص وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ أَسْمَآئِهٖ ط سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٨٠)

১৮০. সুন্দর যত নাম সবই আল্লাহ্‌র জন্য। কাজেই তাঁকে ডাক ঐ সব নামের মাধ্যমে। যারা তার নামের মধ্যে বিকৃতি ঘটায় তাদেরকে পরিত্যাগ কর। তারা যা করছে তার ফল তারা শীঘ্র পাবে।

وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ أُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ع (١٨١)

১৮১. আমি যাদেরকে সৃষ্টি করেছি তাদের মধ্যে একদল আছে যারা সঠিকভাবে পথ নির্দেশ দেয়, আর তার মাধ্যমেই সুবিচার করে।

وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ج (١٨٢)

১৮২. যারা আমার আয়াতগুলোকে প্রত্যাখ্যান করে আমি তাদেরকে ধাপে ধাপে এমনভাবে ধ্বংসের দিকে নিয়ে যাই যে, তারা টেরও করতে পারে না।

وَأُمْلِيْ لَهُمْ ط إِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ (١٨٣)

১৮৩. আমি তাদেরকে অবকাশ ও সুযোগ দেই, আমার কুশলী ব্যবস্থাপনা অত্যন্ত মযবুত।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا سكتة مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ جِنَّةٍ ط إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (١٨٤)

১৮৪. তারা কি চিন্তা-ভাবনা করে না যে তাদের সঙ্গী (আমার রসূল) তো উন্মাদ নয়, সে তো প্রকাশ্য এক সতর্ককারী।

أَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ لا وَّأَنْ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ أَجَلُهُمْ ج فَبِأَيِّ حَدِيْثٍ م بَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ (١٨٥)

১৮৫. তারা কি আসমান-যমীনের রাজত্বে আর আল্লাহ যে সব বস্তু সৃষ্টি করেছেন তাতে কিছুই দেখে না? তারা কি চিন্তা করে না যে হয়ত তাদের জীবনের মেয়াদ নিকটেই এসে গেছে? এরপর তারা কোন বাণীর উপর ঈমান আনবে?

مَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ ط وَيَذَرُهُمْ فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (١٨٦)

১৮৬. আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার জন্য কোন হিদায়াত নেই। তিনি তাদেরকে তাদের বিদ্রোহী ভূমিকায় বিভ্রান্ত হয়ে ঘুরপাক খেতে ছেড়ে দেন।

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسٰهَا ط قُلْ

১৮৭. তারা তোমাকে ক্বিয়ামাত সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে কখন তা সংঘটিত হবে। বল, 'এ বিষয়ে

إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ ج لَا يُجَلِّيْهَا لِوَقْتِهَآ إِلَّا هُوَ ط ثَقُلَتْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط لَا تَأْتِيْكُمْ إِلَّا بَغْتَةً ط يَسْئَلُوْنَكَ كَأَنَّكَ حَفِيٌّ عَنْهَا ط قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (١٨٧)

জ্ঞান রয়েছে আমার প্রতিপালকের নিকট। তিনি ছাড়া কেউ প্রকাশ করতে পারে না কখন তা ঘটবে। আসমান ও যমীনে তা হবে বড় এক কঠিন দিন। আকস্মিকভাবে তা তোমাদের উপর এসে পড়বে।' লোকেরা তোমাকে এ সম্পর্কে এমনভাবে জিজ্ঞেস করছে যেন তুমি আগ্রহ সহকারে এটার খোঁজে ব্যস্ত আছ। বল, 'এ বিষয়ের জ্ঞান তো শুধু আল্লাহ্‌রই নিকট আছে। কিন্তু (এ সত্যটা) অধিকাংশ লোকই জানে না।'

قُلْ لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِيْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا إِلَّا مَا شَآءَ اللهُ ط وَلَوْ كُنْتُ أَعْلَمُ الْغَيْبَ لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَيْرِ ج وَمَا مَسَّنِيَ السُّوْٓءُ ج إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ع (١٨٨)

১৮৮. বল, আল্লাহ্ যা ইচ্ছে করেন তা ছাড়া আমার নিজের ভাল বা মন্দ করার কোন ক্ষমতা আমার নেই। আমি যদি অদৃশ্যের খবর জানতাম তাহলে নিজের জন্য অনেক বেশি ফায়দা হাসিল করে নিতাম, আর কোন প্রকার অকল্যাণই আমাকে স্পর্শ করত না। যারা ঈমান আনবে আমি সেই সম্প্রদায়ের প্রতি সতর্ককারী ও সুসংবাদদাতা ছাড়া অন্য কিছু নই।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِيَسْكُنَ إِلَيْهَا ج فَلَمَّا تَغَشّٰهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِيْفًا فَمَرَّتْ بِهٖ ج فَلَمَّآ أَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ اٰتَيْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (١٨٩)

১৮৯. তিনিই তোমাদেরকে এক ব্যক্তি হতে সৃষ্টি করেছেন আর তাথেকে তার জোড়া সৃষ্টি করেছেন যাতে সে তার কাছে শান্তি পায়। যখন সে স্ত্রীর সাথে সঙ্গত হয় তখন সে লঘু গর্ভধারণ করে আর তা নিয়ে চলাফেরা করে। গর্ভ যখন ভারী হয়ে যায় তখন উভয়ে তাদের প্রতিপালক আল্লাহ্‌কে ডেকে বলে, 'যদি তুমি আমাদেরকে (গঠন ও স্বভাবে) ভাল সন্তান দান কর তাহলে আমরা কৃতজ্ঞ থাকব।'

فَلَمَّآ اٰتٰهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ فِيْمَآ اٰتٰهُمَا ج فَتَعٰلَى اللهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (١٩٠)

১৯০. যখন তিনি তাদেরকে সর্বাঙ্গ-সুন্দর সন্তান দান করেন, তখন তারা তাদেরকে যা দেয়া হয় তাতে অন্যকে আল্লাহর শরীক গণ্য করে। তারা যাদেরকে শরীক গণ্য করে আল্লাহ তাদের থেকে অনেক ঊর্ধ্বে।

أَيُشْرِكُوْنَ مَا لَا يَخْلُقُ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ج (١٩١)

১৯১. তারা কি এমন কিছুকে শরীক করে যারা কিছুই সৃষ্টি করে না? বরং তাদেরকেই সৃষ্টি করা হয়েছে।

وَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَآ أَنْفُسَهُمْ

১৯২. তারা না পারে তাদেরকে (অর্থাৎ তাদের 'ইবাদাতকারীদেরকে) সাহায্য করতে, না পারে

يَنْصُرُوْنَ (١٩٢)

নিজেদেরকে সাহায্য করতে।

وَإِنْ تَدْعُوْهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا يَتَّبِعُوْكُمْ ط سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ أَدَعَوْتُمُوْهُمْ أَمْ أَنْتُمْ صَامِتُوْنَ (١٩٣)

১৯৩. তোমরা তাদেরকে যদি সত্যপথে চলার জন্য ডাক, তারা তোমাদের অনুসরণ করবে না। তাদেরকে ডাক কিংবা চুপচাপ থাক, তোমাদের জন্য উভয়ই সমান।

إِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ عِبَادٌ أَمْثَالُكُمْ فَادْعُوْهُمْ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١٩٤)

১৯৪. আল্লাহ ছাড়া যাদেরকে তোমরা ডাক তারা তোমাদের মতই বান্দাহ্। (ঠিক আছে) তাদেরকে ডাকতে থাক, তোমরা যদি সত্যবাদী হয়ে থাক তাহলে তারা তোমাদের ডাকে সাড়া দিক।

أَلَهُمْ أَرْجُلٌ يَّمْشُوْنَ بِهَآ ز أَمْ لَهُمْ أَيْدٍ يَّبْطِشُوْنَ بِهَآ ز أَمْ لَهُمْ أَعْيُنٌ يُّبْصِرُوْنَ بِهَآ ز أَمْ لَهُمْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا ط قُلِ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ كِيْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ (١٩٥)

১৯৫. তাদের কি পা আছে যা দিয়ে তারা চলাফেরা করে? তাদের কি হাত আছে যা দিয়ে তারা ধরে? তাদের কি চোখ আছে যা দিয়ে তারা দেখে? তাদের কি কান আছে যা দিয়ে তারা শোনে? বল, তোমরা যাদেরকে আল্লাহ্‌র শরীক করছ তাদেরকে আহ্বান কর, আর আমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র কর এবং আমাকে অবকাশ দিও না।

إِنَّ وَلِيِّيَ اللهُ الَّذِيْ نَزَّلَ الْكِتٰبَ ز صلے وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ (١٩٦)

১৯৬. আল্লাহ্ই হলেন আমার অভিভাবক যিনি কিতাব অবতীর্ণ করেছেন, আর তিনিই সৎকর্মশীলদের অভিভাবকত্ব করে থাকেন।

وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَكُمْ وَلَآ أَنْفُسَهُمْ يَنْصُرُوْنَ (١٩٧)

১৯৭. তাঁকে (অর্থাৎ আল্লাহ্‌কে) ছাড়া যাদেরকে তোমরা ডাক, তারা তোমাদেরকে সাহায্য করার কোন ক্ষমতা রাখে না, পারে না নিজেদেরকেও সাহায্য করতে।

وَإِنْ تَدْعُوْهُمْ إِلَى الْهُدٰى لَا يَسْمَعُوْا ط وَتَرٰىهُمْ يَنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ (١٩٨)

১৯৮. তাদেরকে যদি সঠিক পথের দিকে ডাক, তারা শোনে না, তুমি দেখ যে তারা তোমার দিকে তাকিয়ে আছে কিন্তু আসলে তারা কিছুই দেখতে পায় না।

خُذِ الْعَفْوَ وَأْمُرْ بِالْعُرْفِ وَأَعْرِضْ عَنِ

১৯৯. ক্ষমাশীলতার নীতি অবলম্বন কর, সত্য-সঠিক কাজের আদেশ দাও আর জাহিলদেরকে

ٱلْجَٰهِلِينَ (١٩٩)

এড়িয়ে চল।

وَإِمَّا يَنزَغَنَّكَ مِنَ ٱلشَّيْطَٰنِ نَزْغٌ فَٱسْتَعِذْ بِٱللَّهِ ۚ إِنَّهُۥ سَمِيعٌ عَلِيمٌ (٢٠٠)

২০০. শয়ত্বান যদি উস্কানি দিয়ে তোমাকে প্ররোচিত করতে চায় তাহলে আল্লাহ্র আশ্রয় প্রার্থনা কর, তিনি হলেন সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

إِنَّ ٱلَّذِينَ ٱتَّقَوْا۟ إِذَا مَسَّهُمْ طَٰٓئِفٌ مِّنَ ٱلشَّيْطَٰنِ تَذَكَّرُوا۟ فَإِذَا هُم مُّبْصِرُونَ (٢٠١)

২০১. যারা তাক্বওয়া অবলম্বন করে শায়ত্বনের স্পর্শে তাদের মনে কুমন্ত্রণা জাগলে তারা আল্লাহ্কে স্মরণ করে, তখন তাদের ঈমান-চক্ষু খুলে যায়।

وَإِخْوَٰنُهُمْ يَمُدُّونَهُمْ فِى ٱلْغَىِّ ثُمَّ لَا يُقْصِرُونَ (٢٠٢)

২০২. কিন্তু তাদের (অর্থাৎ শায়ত্বনের) সঙ্গী-সাথীরা (কাফির ও মুনাফিক্বরা) তাদেরকে ভ্রান্ত পথে নিয়ে যায় আর এ ব্যাপারে চেষ্টার কোন ত্রুটি করে না।

وَإِذَا لَمْ تَأْتِهِم بِـَٔايَةٍ قَالُوا۟ لَوْلَا ٱجْتَبَيْتَهَا ۚ قُلْ إِنَّمَآ أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰٓ إِلَىَّ مِن رَّبِّى ۚ هَٰذَا بَصَآئِرُ مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ (٢٠٣)

২০৩. যখন তুমি তাদের কাছে কোন নিদর্শন হাজির কর না, তখন তারা বলে, তুমি নিজেই একটা নিদর্শন বেছে নাও না কেন? বল, 'আমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে আমার প্রতি যা ওয়াহী করা হয় আমি তো তারই অনুসরণ করি। এটা তোমাদের রব্বের পক্ষ হতে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্য উজ্জ্বল আলো, হিদায়াত ও রহমত।'

وَإِذَا قُرِئَ ٱلْقُرْءَانُ فَٱسْتَمِعُوا۟ لَهُۥ وَأَنصِتُوا۟

২০৪. যখন কুরআন পাঠ করা হয় তখন তোমরা তা মনোযোগের সঙ্গে শ্রবণ কর আর নীরবতা

১৯৯। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, "উয়াইনাহ ইবনু হিস্ন ইবনু হুযাইফাহ এসে তাঁর ভাতিজা হুর ইবনু কাইসের কাছে অবস্থান করলেন। 'উমার (রাঃ) যাদেরকে পার্শ্বে রাখতেন হুর ছিলেন তাদের একজন। কারীগণ, যুবক-বৃদ্ধ সকলেই 'উমার ফারূক (রাঃ)-এর মজলিসের সদস্য এবং উপদেষ্টা ছিলেন। এরপর 'উয়াইনাহ তাঁর ভাতিজাকে ডেকে বললেন, এই আমীরের কাছে তো তোমার একটা মর্যাদা আছে, সুতরাং তুমি আমার জন্য তাঁর কাছে প্রবেশের অনুমতি নিয়ে দাও। তিনি বললেন, হ্যাঁ, আমি তাঁর কাছে আপনার প্রবেশের অনুমতি প্রার্থনা করব। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) বলেন, এরপর হুর অনুমতি প্রার্থনা করলেন উয়াইনাহ্র জন্যে এবং 'উমার (রাঃ) অনুমতি দিলেন। উয়াইনাহ 'উমারের কাছে গিয়ে বললেন, হ্যাঁ আপনি তো আমাদেরকে অধিক অধিক দানও করেন না এবং আমাদের মাঝে সুবিচারও করেন না। 'উমার (রাঃ) রাগান্বিত হলেন এবং তাঁকে কিছু একটা করতে উদ্যত হলেন। তখন হুর বললেন, হে আমিরুল মু'মিনীন! আল্লাহ তা'আলা তো তাঁর নাবী (ﷺ) -কে বলেছেন, "ক্ষমা অবলম্বন কর, সৎকাজের আদেশ দাও এবং মূর্খদেরকে উপেক্ষা কর" আর এই ব্যক্তি তো অবশ্যই মূর্খদের অন্তর্ভুক্ত। আল্লাহ্র কসম 'উমার (রাঃ) আয়াতের নির্দেশ অমান্য করেননি। 'উমার আল্লাহ্র কিতাবের বিধানের সামনে চুপ হয়ে যেতেন। -বুখারী ৪৬৪২ [৭২৮৬]

لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (٢٠٤)

বজায় রাখ যাতে তোমাদের প্রতি রহম করা হয়।

وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ (٢٠٥)

২০৫. তোমার প্রতিপালককে মনে মনে বিনয়ের সঙ্গে ভয়-ভীতি সহকারে অনুচ্চস্বরে সকাল-সন্ধ্যায় স্মরণ কর আর উদাসীনদের দলভুক্ত হয়ো না।

إِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ع السجدة (٢٠٦)

২০৬. যারা তোমার প্রতিপালকের নিকট আছে তারা তাঁর 'ইবাদাত করার ব্যাপারে ঔদ্ধত্য প্রকাশ করে না, তারা তাঁর মহিমা ঘোষণা করে আর তাঁর জন্য সাজদাহ্য় অবনত হয়।[সাজদা]

৮. সূরাহ আল-আনফাল

سُوْرَةُ الْأَنْفَالِ

আয়াতঃ ৭৫, রুকূ'ঃ ১০, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ط قُلِ الْأَنْفَالُ لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ج فَاتَّقُوا اللهَ وَأَصْلِحُوْا ذَاتَ بَيْنِكُمْ ص وَأَطِيْعُوا اللهَ وَرَسُوْلَهٗٓ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١)

১. তারা তোমাকে যুদ্ধে প্রাপ্ত সম্পদ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করছে। বল, 'যুদ্ধে প্রাপ্ত সম্পদ হচ্ছে আল্লাহ ও তাঁর রসূলের; কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর আর নিজেদের সম্পর্ককে সুষ্ঠু সুন্দর ভিত্তির উপর প্রতিষ্ঠিত কর। তোমরা যদি মু'মিন হয়ে থাক তবে তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য কর।'

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ إِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ج ٧ (٢)

২. মু'মিন তো তারাই আল্লাহ্‌র কথা আলোচিত হলেই যাদের অন্তর কেঁপে উঠে, আর তাদের কাছে যখন তাঁর আয়াত পঠিত হয়, তখন তা তাদের ঈমান বৃদ্ধি করে আর তারা তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ

৩. তারা নামায ক্বায়িম করে, আর আমি তাদেরকে যে জীবিকা দিয়েছি তাথেকে ব্যয় করে।

১। সা'ঈদ ইবনু যুবায়র (রহঃ) হতে বর্ণিত। আমি ইবনু 'আব্বাস (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করলাম সূরাহ আল-আনফাল সম্পর্কে, তিনি বললেন, বদ্‌রের যুদ্ধ সম্পর্কে নাযিল হয়েছে। –বুখারী ৪৬৪৫ [৪০২৯; মুসলিম ৩০৩১]

يُنْفِقُوْنَ ط (٣)

৪. এসব লোকেরাই হল প্রকৃত মু'মিন। এদের জন্য এদের প্রতিপালকের নিকট আছে নানান মর্যাদা, ক্ষমা আর সম্মানজনক জীবিকা।

أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ط لَهُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ج (٤)

৫. (তারা যেমন প্রকৃত মু'মিন) ঠিক তেমনি প্রকৃতভাবেই তোমার প্রতিপালক তোমাকে তোমার ঘর হতে বের করে এনেছিলেন যদিও মু'মিনদের একদল তা পছন্দ করেনি।

كَمَآ أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْۢ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ص وَإِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ لا (٥)

৬. সত্য স্পষ্ট হওয়ার পরও তারা তোমার সঙ্গে বাদানুবাদে লিপ্ত হয়েছিল, (তাদের অবস্থা দেখে মনে হচ্ছিল যে,) তারা যেন চেয়ে চেয়ে দেখছিল যে, তাদেরকে মৃত্যুর দিকে তাড়িয়ে নেয়া হচ্ছে।

يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُوْنَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ط (٦)

৭. স্মরণ কর, যখন আল্লাহ তোমাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলেন যে, দু'টি দলের মধ্যে একটি তোমরা পাবে, আর তোমরা চেয়েছিলে যেন নিরস্ত্র দলটি তোমরা লাভ কর আর আল্লাহ চেয়েছিলেন তাঁর বাণী দ্বারা সত্যকে সত্যরূপে প্রতিষ্ঠিত করতে আর কাফিরদের জড় কেটে দিতে।

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللهُ إِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللهُ أَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ لا (٧)

৮. যাতে তিনি সত্যকে সত্য হিসেবে প্রতিষ্ঠিত করেন আর মিথ্যেকে মিথ্যে প্রমাণিত করেন, যদিও তা পাপীদের কাছে পছন্দনীয় নয়।

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ج (٨)

৯. স্মরণ কর, যখন তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট সাহায্য প্রার্থনা করছিলে তখন তিনি তোমাদেরকে জবাব দিলেন, 'আমি তোমাদেরকে এক হাজার ফেরেশতা দিয়ে সাহায্য

إِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِأَلْفٍ مِّنَ الْمَلٰٓئِكَةِ

৭। 'আবদুল্লাহ ইব্নু কা'ব (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি কা'ব ইব্নু মালিক (রাঃ)-কে বলতে শুনেছি যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) যে সব যুদ্ধে অংশ গ্রহণ করেছেন তার মধ্যে তাবূকের যুদ্ধ ব্যতীত অন্য কোন যুদ্ধে আমি অনুপস্থিত ছিলাম না। তবে বাদ্‌র যুদ্ধে আমি অনুপস্থিত ছিলাম। কিন্তু বাদ্‌র যুদ্ধে যারা যোগদান করেননি তাদেরকে কোন প্রকার দোষারোপ করা হয়নি। আসলে রসূলুল্লাহ (ﷺ) কুরাইশ কাফিলার উদ্দেশেই যাত্রা করেছিলেন। কিন্তু পূর্ব নির্ধারিত পরিকল্পনা ব্যতীতই আল্লাহ্ তা'আলা তাদের (মুসলিমদের) সঙ্গে তাদের দুশমনদের মুকাবালা করিয়ে দেন। –বুখারী ৩৯৫১ [২৭৫৭; মুসলিম ২৭৬৯, তিরমিযী ৩১০২, নাসায়ী ৩৮২৪-৩৮২৬, আবূ দাউদ ২২০২, ৩৩১৭, ৩৩১৯, ৩৩২১, ৪৬০০; আহমাদ ১৫৩৪৩, ১৫৩৪৫]

مُرْدِفِيْنَ (٩)

করব যারা পর পর আসবে।'

وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ إِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ع (١٠)

১০. আর আল্লাহ যে এটা করেছিলেন তার উদ্দেশ্য তোমাদেরকে সুসংবাদ দান ছাড়া অন্য কিছু নয় আর যাতে এর মাধ্যমে তোমাদের অন্তর প্রশান্তি লাভ করে। কেননা, সাহায্য তো একমাত্র আল্লাহর নিকট থেকেই আসে। আল্লাহ তো মহাপরাক্রমশালী, মহাবিজ্ঞানী।

إِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ أَمَنَةً مِّنْهُ وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً لِّيُطَهِّرَكُمْ بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ وَلِيَرْبِطَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ ۚ (١١)

১১. স্মরণ কর, যখন আল্লাহ তাঁর নিকট হতে প্রশান্তি ধারা হিসেবে তোমাদেরকে তন্দ্রায় আচ্ছন্ন করেছিলেন, আকাশ হতে তোমাদের উপর বৃষ্টিধারা বর্ষণ করেছিলেন তোমাদেরকে তা দিয়ে পবিত্র করার জন্য। তোমাদের থেকে শয়ত্বানী পংকিলতা দূর করার জন্য, তোমাদের দিলকে মজবুত করার জন্য আর তা দিয়ে তোমাদের পায়ের ভিত শক্ত করার জন্য।

إِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ إِلَى الْمَلٰٓئِكَةِ أَنِّيْ مَعَكُمْ فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ سَأُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۚ (١٢)

১২. স্মরণ কর যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদের প্রতি ওয়াহী পাঠিয়েছিলেন, 'আমি তোমাদের সঙ্গেই আছি; অতএব মু'মিনদেরকে তোমরা দৃঢ়পদ রেখ'। অচিরেই আমি কাফিরদের দিলে ভীতি সঞ্চার করব, কাজেই তাদের স্কন্ধে আঘাত হান, আঘাত হান প্রত্যেকটি আঙ্গুলের গিঁটে গিঁটে।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (١٣)

১৩. এর কারণ হল, তারা আল্লাহ ও রসূলের বিরোধিতা করে আর যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের বিরোধিতা করবে (তাদের জেনে রাখা দরকার) আল্লাহ শাস্তিদানে বড়ই কঠোর।

৯। ইব্‌নু মাস'উদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি মিকদাদ ইব্‌নু আসওয়াদের এমন একটি বিষয় দেখেছি যা আমি করলে তা দুনিয়ার সব কিছুর তুলনায় আমার নিকট প্রিয় হত। তিনি নাবী (ﷺ) -এর কাছে আসলেন, তখন তিনি (ﷺ) মুশরিকদের বিরুদ্ধে দু'আ করছিলেন। এতে মিকদাদ ইব্‌নু আসওয়াদ (রাঃ) বললেন, মূসা (আঃ) এর কাওম যেমন বলেছিল যে, "তুমি আর তোমার প্রতিপালক যাও এবং যুদ্ধ কর"– (সূরাহ আল-মায়িদাহ ৫/২৪)। আমরা তেমন বলব না, বরং আমরা আপনার ডানে, বামে, সামনে, পেছনে সর্বদিক থেকে যুদ্ধ করব। ইব্‌নু মাস'উদ (রাঃ) বলেন, আমি দেখলাম, নাবী (ﷺ) -এর মুখ উজ্জ্বল হয়ে উঠল এবং তার কথা তাঁকে খুব আনন্দিত করল। –বুখারী ৩৯৫২ [৪৬০৯; আহমাদ ৩৬৯০, ৪০৫৯]

ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَأَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابَ النَّارِ (١٤)

১৪. এটাই তোমাদের শাস্তি, অতএব তার স্বাদ গ্রহণ কর, কাফিরদের জন্য আছে আগুনের (জাহান্নামের) শাস্তি।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْأَدْبَارَ ج (١٥)

১৫. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন যোদ্ধা-বাহিনীরূপে কাফিরদের সম্মুখীন হও, তখন তাদেরকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে না।

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗٓ إِلَّا مُتَحَرِّفًا لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ بِغَضَبٍ مِّنَ اللهِ وَمَأْوٰىهُ جَهَنَّمُ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (١٦)

১৬. এমন দিনে যুদ্ধে কৌশল অবলম্বন বা নিজ দলের সঙ্গে মিলিত হওয়ার উদ্দেশ্য ছাড়া কেউ তাদেরকে পৃষ্ঠপ্রদর্শন করলে সে তো আল্লাহ্র গজবে পরিবেষ্টিত হয়ে পড়ল, জাহান্নামই তার ঠিকানা আর তা কতই না নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তনস্থল।

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللهَ قَتَلَهُمْ ص وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللهَ رَمٰى ج وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ط إِنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (١٧)

১৭. (আসল ব্যাপার হল) তোমরা তাদেরকে হত্যা করনি, বরং আল্লাহ্ই তাদেরকে হত্যা করেছেন, তুমি যখন নিক্ষেপ করছিলে তাতো তুমি নিক্ষেপ করনি, বরং আল্লাহ্ই নিক্ষেপ করেছিলেন যাতে তিনি মু'মিনদেরকে এক সুন্দরতম পরীক্ষায় সফলতার সঙ্গে উত্তীর্ণ করতে পারেন। আল্লাহ হলেন সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

ذٰلِكُمْ وَأَنَّ اللهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ (١٨)

১৮. আমার এ ব্যবস্থা তোমাদের জন্য, (আর কাফিরদের সম্পর্কে কথা এই যে) আল্লাহ কাফিরদের ষড়যন্ত্রকে অকেজো করে দেন।

إِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ج وَإِنْ تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ج وَإِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ج وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ كَثُرَتْ لا وَأَنَّ اللهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ع (١٩)

১৯. (ওহে কাফিরগণ!) তোমরা মীমাংসা চাচ্ছিলে, মীমাংসা তো তোমাদের কাছে এসে গেছে; আর যদি তোমরা (অন্যায় থেকে) বিরত হও, তবে তা তোমাদের জন্যই কল্যাণকর, তোমরা যদি আবার (অন্যায়) কর, আমিও আবার শাস্তি দিব, তোমাদের দল-বাহিনী সংখ্যায় অধিক হলেও তোমাদের কোন উপকারে আসবে না এবং আল্লাহ তো মু'মিনদের সঙ্গে আছেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَطِيْعُوا اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ (٢٠)

২০. ওহে বিশ্বাসীগণ! আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য কর এবং আদেশ শোনার পর তা অমান্য কর না।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ (٢١)

২১. তোমরা তাদের মত হয়ো না যারা বলেছিল, 'আমরা শুনলাম'; প্রকৃতপক্ষে তারা শোনেনি।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ (٢٢)

২২. আল্লাহ্‌র নিকট সবচেয়ে নিকৃষ্ট জীব হচ্ছে যারা (হক্ব কথা শুনার ব্যাপারে) বধির এবং (হক্ব কথা বলার ব্যাপারে) বোবা, যারা কিছুই বোঝে না।

وَلَوْ عَلِمَ اللهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّأَسْمَعَهُمْ ط وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ (٢٣)

২৩. আল্লাহ যদি দেখতেন যে, তাদের মধ্যে কোন ভাল গুণ নিহিত আছে তবে তিনি তাদেরকে শুনবার তাওফীক দিতেন। আর (গুণ না থাকা অবস্থায়) তিনি যদি তাদেরকে শুনতে দিতেন তাহলে তারা উপেক্ষা করে মুখ ফিরিয়ে নিত।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ج وَاعْلَمُوْآ أَنَّ اللهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهٖ وَأَنَّهٗٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٢٤)

২৪. ওহে বিশ্বাসীগণ! তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের ডাকে সাড়া দাও যখন তোমাদেরকে ডাকা হয় (এমন বিষয়ের দিকে) যা তোমাদের মাঝে জীবন সঞ্চার করে, আর জেনে রেখ যে আল্লাহ মানুষ ও তার অন্তরের মাঝে প্রতিবন্ধক হয়ে যান আর তোমাদেরকে তাঁর কাছেই একত্রিত করা হবে।

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْكُمْ خَآصَّةً ج وَاعْلَمُوْآ أَنَّ اللهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (٢٥)

২৫. সতর্ক থাক সেই শাস্তি হতে যা বিশেষভাবে তোমাদের যালিম লোকেদেরকেই আক্রমন করবে না। আর জেনে রেখ যে আল্লাহ শাস্তিদানে খুবই কঠোর।

وَاذْكُرُوْآ إِذْ أَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُوْنَ أَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ

২৬. স্মরণ কর সে সময়ের কথা যখন তোমরা ছিলে সংখ্যায় অল্প, দুনিয়াতে তোমাদেরকে দুর্বল হিসেবে গণ্য করা হত। তোমরা আশঙ্কা করতে

২২। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। এ আয়াত সম্পর্কে তিনি বলেছেন যে, তারা হচ্ছে বানী আবদুদ্দার গোষ্ঠীর একটি দল। -বুখারী ৪৬৪৬

২৪। আবূ সা'ঈদ ইবনু মু'আল্লা (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি একদা সলাতে রত ছিলাম, এমন সময় রসূল (ﷺ) আমার পাশ দিয়ে গেলেন এবং আমাকে ডাকলেন। নামায শেষ না করা পর্যন্ত আমি তাঁর কাছে যাইনি, তারপর গেলাম। তিনি বললেন, তোমাকে আসতে বাধা দিল কিসে? আল্লাহ কী বলেননি "রসূল (ﷺ) তোমাদেরকে ডাকলে আল্লাহ ও রসূলের ডাকে সাড়া দেবে?" ..... হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৬৪৭ [৪৪৭৪; নাসায়ী ৯১৩, আবূ দাউদ ১৪৫৮, ইবনু মাজাহ ৩৭৮৫, আহমাদ ১৫৩০৩, ১৭৩৯৫; দারিমী ১৪৯২, ৩৩৭১]

فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٢٦)

যে, মানুষেরা তোমাদের কখন না হঠাৎ ধরে নিয়ে যায়। এমন অবস্থায় তিনি তোমাদেরকে আশ্রয় দিলেন, তাঁর সাহায্য দিয়ে তোমাদেরকে শক্তিশালী করলেন, উত্তম জীবিকা দান করলেন যাতে তোমরা (তাঁর নির্দেশ পালনের মাধ্যমে) কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْۤا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٢٧)

২৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা জেনে বুঝে আল্লাহ ও তাঁর রসূলের সঙ্গে বিশ্বাসঘাতকতা করো না, আর যে বিষয়ে তোমরা আমানাত প্রাপ্ত হয়েছ তাতেও বিশ্বাস ভঙ্গ করো না।

وَاعْلَمُوْۤا اَنَّمَاۤ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗۤ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ع (٢٨)

২৮. জেনে রেখ, তোমাদের ধন-সম্পদ আর সন্তান-সন্ততি হচ্ছে পরীক্ষার সামগ্রী মাত্র। (এ পরীক্ষায় যারা উত্তীর্ণ হবে তাদের জন্য) আল্লাহ্‌র নিকট রয়েছে মহাপুরস্কার।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (٢٩)

২৯. ওহে ঈমানদারগণ! তোমরা যদি আল্লাহ্‌কে ভয় কর তাহলে তিনি তোমাদেরকে ভাল ও মন্দের মধ্যে পার্থক্য করার শক্তি প্রদান করবেন, তোমাদের দোষ-ত্রুটি দূর করে দিবেন, তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন, আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহশীল।

وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ؕ وَيَمْكُرُوْنَ وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ (٣٠)

৩০. স্মরণ কর, সেই সময়ের কথা যখন কাফিরগণ তোমাকে বন্দী করার কিংবা হত্যা করার কিংবা দেশ থেকে বের করে দেয়ার জন্য ষড়যন্ত্র করে। তারা চক্রান্ত করে আর আল্লাহ্‌ও কৌশল করেন। আল্লাহ্‌ই হচ্ছেন সর্বশ্রেষ্ঠ কৌশলী।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَآءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَاۤ ۙ اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (٣١)

৩১. তাদের কাছে যখন আমার আয়াত পাঠ করা হয় তখন তারা বলে, 'শুনলাম তো, ইচ্ছে করলে এ রকম কথা আমরাও বলতে পারি, এগুলো তো আগে কালের কেচ্ছা কাহিনী ছাড়া আর কিছুই না।'

وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً مِّنَ

৩২. স্মরণ কর, যখন তারা বলেছিল, 'হে আল্লাহ! এটা যদি তোমার নিকট থেকে (প্রেরিত) সত্য (দ্বীন) হয় তাহলে আমাদের উপর আসমান থেকে

السَّمَآءِ أَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ (٣٢)

পাথর বর্ষণ কর, কিংবা আমাদের উপর কোন যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি নিয়ে এসো।'

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيْهِمْ ط وَمَا كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ (٣٣)

৩৩. তুমি তাদের মাঝে থাকা অবস্থায় আল্লাহ তাদেরকে শাস্তি দিবেন না এবং যখন তারা ক্ষমা প্রার্থনা করতে থাকবে এরূপ অবস্থায়ও আল্লাহ তাদেরকে শাস্তি দিবেন না।

وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْآ أَوْلِيَآءَهٗ ط إِنْ أَوْلِيَآؤُهٗٓ إِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٣٤)

৩৪. আল্লাহ যে তাদেরকে শাস্তি দিবেন না এ ব্যাপারে ওজর পেশ করার জন্য তাদের কাছে কী আছে যখন তারা (মানুষদেরকে) মাসজিদুল হারাম-এর পথে বাধা দিচ্ছে? তারা তো ওর (প্রকৃত) মুতাওয়াল্লী নয়, মুত্তাকীরা ছাড়া কেউ তার মুতাওয়াল্লী হতে পারে না, কিন্তু তাদের অধিকাংশ লোক এ সম্পর্কে অবগত নয়।

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ط فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ (٣٥)

৩৫. আল্লাহ্‌র ঘরের নিকট তাদের নামায হাত তালি মারা আর শিশ দেয়া ছাড়া আর কিছুই না, (এসব অপরাধে লিপ্ত ব্যক্তিদেরকে বলা হবে) "আযাব ভোগ কর যেহেতু তোমরা কুফরীতে লিপ্ত ছিলে"।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط فَسَيُنْفِقُوْنَهَا ثُمَّ

৩৬. যে সব লোক সত্যকে মেনে নিতে অস্বীকার করেছে তারা আল্লাহ্‌র পথ হতে (লোকেদেরকে) বাধা দেয়ার জন্য তাদের ধন-সম্পদ ব্যয় করে থাকে, তারা তা ব্যয় করতেই থাকবে, অতঃপর

৩২-৩৪। আনাস ইবনু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। আবূ জাহ্‌ল বলেছিল, "হে আল্লাহ! এটা যদি তোমার পক্ষ থেকে সত্য হয়, তবে আমাদের উপর আকাশ হতে প্রস্তর বর্ষণ কর কিংবা আমাদেরকে মর্মন্তুদ শাস্তি দাও।" তখনই অবতীর্ণ হল–

وَمَا كَانَ ٱللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنتَ فِيهِمْ ۚ وَمَا كَانَ ٱللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ - وَمَا لَهُمْ أَلَّا يُعَذِّبَهُمُ ٱللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ

"আর আল্লাহ্ তো এরূপ নন যে, তিনি তাদের শাস্তি দেবেন অথচ আপনি তাদের মধ্যে থাকবেন এবং আল্লাহ্ এমনও নন যে, তিনি তাদের শাস্তি দেবেন অথচ তারা ক্ষমা প্রার্থনা করবে। আর তাদের এমন কী আছে যে জন্য আল্লাহ্ তাদের শাস্তি দেবেন না, অথচ তারা মাসজিদে হারামে যেতে বাধা প্রদান করে? আর তারা সে মাসজিদের তত্ত্বাবধায়কও নয়। তার তত্ত্বাবধায়ক তো মুত্তাকীরা ব্যতীত আর কেউ নয়। কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।" –বুখারী ৪৬৪৮ [৪৬৪৯; মুসলিম ২৭৯৬]

تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ە ط وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ لا (٣٦)

এটাই তাদের দুঃখ ও অনুশোচনার কারণ হবে। পরে তারা পরাজিতও হবে। যারা কুফরী করে তাদেরকে (অবশেষে) জাহান্নামের পানে একত্রিত করা হবে।

لِيَمِيْزَ اللهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا فَيَجْعَلَهٗ فِيْ جَهَنَّمَ ط أُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ع (٣٧)

৩৭. যাতে আল্লাহ পবিত্র থেকে অপবিত্রকে আলাদা করে দেন, অতঃপর অপবিত্রদের এককে অন্যের উপর রাখবেন, সকলকে স্তুপীকৃত করবেন; অতঃপর এই সমষ্টিকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করবেন। এরাই হল সর্বস্বান্ত।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ج وَإِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِيْنَ (٣٨)

৩৮. যারা কুফরী করে তাদেরকে বল, 'তারা যদি নিবৃত্ত হয় তাহলে তারা পূর্বে যা করেছে তা ক্ষমা করা হবে, আর যদি (কুফরীর) পুনরাবৃত্তি করে, তাহলে আগের লোকেদের (প্রতি অনুসৃত) নীতির দৃষ্টান্ত তো অতীতের পাতাতেই আছে।'

وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ج فَإِنِ انْتَهَوْا فَإِنَّ اللهَ بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٣٩)

৩৯. তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ চালিয়ে যাও যে পর্যন্ত না ফিতনা (কুফর ও শির্ক) খতম হয়ে যায় আর দ্বীন পুরোপুরিভাবে আল্লাহ্‌র জন্য হয়ে যায়। অতঃপর তারা যদি বিরত হয় তাহলে তারা (ন্যায় বা অন্যায়) যা করে আল্লাহ তার সম্যক দ্রষ্টা।

وَإِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ مَوْلٰىكُمْ ط نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ (٤٠)

৪০. আর তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে জেনে রেখ যে, আল্লাহ্‌ই তোমাদের অভিভাবক, কতই না উত্তম অভিভাবক! কতই না উত্তম সাহায্যকারী!

৩৯। ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। এক ব্যক্তি তাঁর কাছে এসে বলল, হে আবূ 'আবদুর রহমান! আল্লাহ তাঁর কিতাবে যা উল্লেখ করেছেন আপনি কি তা শোনেন না? {وَإِنْ طَائِفَتَانِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا}–মু'মিনদের দু'দল দ্বন্দ্বে লিপ্ত হলে তোমরা তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দিবে .... সুতরাং আল্লাহ্‌র কিতাবের নির্দেশ মুতাবিক যুদ্ধ করতে কোন্ বস্তু আপনাকে নিষেধ করছে? এরপর তিনি বললেন, হে ভাতিজা! এ আয়াতের তাবীল বা ব্যাখ্যা করে যুদ্ধ না করা আমার কাছে অধিক প্রিয় {وَمَنْ يَقْتُلْ مُؤْمِنًا مُتَعَمِّدًا} "যে স্বেচ্ছায় মু'মিন খুন করে" আয়াত তাবীল করার তুলনায়। সে ব্যক্তি বলল, আল্লাহ বলেছেন–{وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ} "তোমরা ফিতনা নির্মূল না হওয়া পর্যন্ত যুদ্ধ করবে", ইবনু 'উমার (রাঃ) বললেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর যুগে আমরা তা করেছি যখন ইসলাম দুর্বল ছিল। ফলে লোক তার দীন নিয়ে ফিতনায় পড়ত, হয়ত কাফিররা তাকে হত্যা করত নতুবা বেঁধে রাখত। ক্রমে ক্রমে ইসলামের প্রসার ঘটল এবং ফিতনা থাকল না।............হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৬৫০ [৩১৩০; তিরমিযী ৩৭০৬, আহমাদ ৫৭৩৮, ৫৯৭৫]

وَاعْلَمُوْآ أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَأَنَّ لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ لا إِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ أَنْزَلْنَا عَلٰى عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى الْجَمْعٰنِ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٤١)

৪১. তোমরা জেনে রেখ যে, যুদ্ধে যা তোমরা লাভ কর তার এক-পঞ্চমাংশ হচ্ছে আল্লাহ, তাঁর রসূল, রসূলের আত্মীয়স্বজন, ইয়াতীম, মিসকীন ও মুসাফিরদের জন্য যদি তোমরা আল্লাহ্‌র উপর আর চূড়ান্ত ফায়সালার দিন অর্থাৎ দু'পক্ষের (মুসলমান ও কাফের বাহিনীর) মিলিত হওয়ার দিন আমি যা আমার বান্দাহ্‌র উপর অবতীর্ণ করেছিলাম তার উপর বিশ্বাস করে থাক। আর আল্লাহ হলেন সকল বিষয়ের উপর ক্ষমতাবান।

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنْكُمْ ط وَلَوْ تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيْعٰدِ لا وَلٰكِنْ لِّيَقْضِيَ اللّٰهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا لا ۵ لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ط وَإِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ عَلِيْمٌ لا (٤٢)

৪২. স্মরণ কর, যখন তোমরা উপত্যকার নিকট প্রান্তে ছিলে আর তারা ছিল দূরের প্রান্তে আর উটের আরোহী কাফেলা (আবূ সুফইয়ানের নেতৃত্বে কুরাইশের সম্পদ সহ কাফেলা) ছিল তোমাদের অপেক্ষা নিম্নভূমিতে। যদি তোমরা যুদ্ধ করার ব্যাপারে পরস্পরের মধ্যে পূর্বেই সিদ্ধান্ত গ্রহণ করতে, তবুও যুদ্ধ করার এ সিদ্ধান্ত তোমরা অবশ্যই রক্ষা করতে পারতে না (তোমাদের দুর্বল অবস্থার কারণে), যাতে আল্লাহ সে কাজ সম্পন্ন করতে পারেন যা ছিল পূর্বেই স্থিরীকৃত, যেন যাকে ধ্বংস হতে হবে সে যেন সুস্পষ্ট দলীলের ভিত্তিতে ধ্বংস হয় আর যাকে জীবিত থাকতে হবে সেও যেন সুস্পষ্ট দলীলের ভিত্তিতে জীবিত থাকে। আল্লাহ নিশ্চয়ই সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

إِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِيْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ط وَلَوْ أَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنٰزَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ط إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٤٣)

৪৩. স্মরণ কর, আল্লাহ তোমাকে স্বপ্নের মাধ্যমে তাদের সংখ্যাকে অল্প করে দেখিয়েছিলেন, যদি তিনি তাদের সংখ্যাকে তোমার নিকট বেশি করে দেখাতেন তাহলে তোমরা অবশ্যই সাহস হারিয়ে ফেলতে আর যুদ্ধের বিষয় নিয়ে অবশ্যই ঝগড়া শুরু করে দিতে। কিন্তু আল্লাহ্‌ই তোমাদেরকে রক্ষা করেছিলেন, অন্তরে যা আছে সে সম্পর্কে তিনি খুবই ভালভাবে অবহিত।

وَإِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيْٓ أَعْيُنِكُمْ قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِيْٓ أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللّٰهُ أَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا

৪৪. স্মরণ কর, যখন তোমরা পরস্পরের সম্মুখীন হয়েছিলে তখন তিনি তোমাদের চোখে তাদেরকে স্বল্প সংখ্যক দেখিয়েছিলেন এবং তাদের চোখে তোমাদেরকে স্বল্প সংখ্যক দেখিয়েছিলেন সেই ব্যাপারটি সম্পন্ন করার জন্য যা ছিল পূর্ব স্থিরীকৃত। যাবতীয় বিষয় (অবশেষে) আল্লাহ্‌রই

ط وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ ط (٤٤)

নিকট ফিরে আসে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ج (٤٥)

৪৫. হে ঈমানদারগণ! যখন তোমরা কোন বাহিনীর সম্মুখীন হবে তখন অবিচল থাকবে আর আল্লাহ্‌কে বেশি বেশি স্মরণ করবে, যাতে তোমরা সাফল্য লাভ করতে পার।

وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ط إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ج (٤٦)

৪৬. আল্লাহ্ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য কর, পরস্পরে ঝগড়া বিবাদ করো না, তা করলে তোমরা সাহস হারিয়ে ফেলবে, তোমাদের শক্তি-ক্ষমতা বিলুপ্ত হবে। আর ধৈর্য ধারণ করবে, আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সঙ্গে আছেন।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ (٤٧)

৪৭. তোমরা তাদের মত হয়ো না যারা গর্ব অহঙ্কারসহ লোক দেখানোর জন্য এবং আল্লাহ্‌র পথে বাধা দেয়ার জন্য নিজেদের ঘর হতে বের হয়েছিল, তারা যা কিছুই করুক না কেন, আল্লাহ তাদেরকে ঘিরে রেখেছেন।

وَإِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ وَإِنِّيْ جَارٌ لَّكُمْ ج فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ إِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكُمْ إِنِّيْٓ أَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ إِنِّيْٓ أَخَافُ اللّٰهَ ط وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ع (٤٨)

৪৮. স্মরণ কর, যখন শয়ত্বান তাদের কার্যকলাপকে তাদের দৃষ্টিতে খুবই চাকচিক্যময় করে দেখিয়েছিল আর তাদেরকে বলেছিল, 'আজ তোমাদেরকে পরাজিত করতে পারে মানুষের মাঝে এমন কেউই নাই, আমি তোমাদের পাশেই আছি।' অতঃপর দল দু'টি যখন পরস্পরের দৃষ্টির গোচরে আসলো তখন সে পিছনে সরে পড়ল আর বলল, 'তোমাদের সাথে আমার কোনই সম্পর্ক নেই, আমি তো দেখি (কাফিরদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করার জন্য আল্লাহ্‌র নাযিলকৃত ফেরেশতা) যা তোমরা দেখতে পাও না, আমি অবশ্যই আল্লাহ্‌কে ভয় করি কেননা আল্লাহ শাস্তিদানে অত্যন্ত কঠোর।'

إِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ط وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ فَإِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٤٩)

৪৯. স্মরণ কর, মুনাফিক্বরা আর যাদের অন্তরে রোগ আছে তারা বলে, 'এই লোকগুলোকে তাদের দ্বীন ধোঁকায় ফেলে দিয়েছে'। (কিন্তু আসল ব্যাপার হল) কেউ যদি আল্লাহ্‌র উপর ভরসা করে তাহলে আল্লাহ তো প্রবল পরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

وَلَوْ تَرٰٓى إِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا

৫০. তুমি যদি দেখতে যখন ফেরেশতারা কাফিরদের প্রাণবায়ু নির্গত করছে তখন তাদের

الْمَلَٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ ج وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (٥٠)

মুখে আর পিঠে প্রহার করছে আর বলছে অগ্নিতে দগ্ধ হওয়ার যন্ত্রণা ভোগ কর।

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْكُمْ وَأَنَّ اللهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ لا (٥١)

৫১. এটা হল তাই যা তোমাদের হস্তগুলো (অর্জন করে) আগে পাঠিয়েছে কেননা আল্লাহ্ তো তাঁর বান্দাহ্দের প্রতি অত্যাচারী নন।

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ لا وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللهِ فَأَخَذَهُمُ اللهُ بِذُنُوْبِهِمْ ط إِنَّ اللهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (٥٢)

৫২. ফির'আওনের লোকজন ও তাদের আগের লোকেদের মতই ওরা আল্লাহ্র নিদর্শনাবলীকে প্রত্যাখ্যান করেছে, কাজেই তাদের পাপের কারণে আল্লাহ তাদেরকে পাকড়াও করেছেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ শক্তিমান, শাস্তিদানে অত্যন্ত কঠোর।

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ لا وَأَنَّ اللهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ لا (٥٣)

৫৩. এটা এজন্য যে, আল্লাহ কোন সম্প্রদায়ের নিকট দেয়া তাঁর অবদানকে পরিবর্তন করেন না যতক্ষণ না তারা নিজেরাই (তাদের কর্মনীতির মাধ্যমে) তা পরিবর্তন করে। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

كَدَأْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ لا وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَأَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ج وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ (٥٤)

৫৪. ফির'আওনের লোকজন ও তাদের আগের লোকেদের মতই তারা তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনগুলোকে মিথ্যা জেনেছিল। কাজেই তাদের পাপের কারণে আমি তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছিলাম আর ফির'আওনের লোকজনকে ডুবিয়ে মেরেছিলাম। এরা সবাই ছিল যালিম।

إِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ صلے ج (٥٥)

৫৫. যারা কুফরী করে আল্লাহ্র নিকট তারাই নিকৃষ্টতম জীব, অতঃপর আর তারা ঈমান আনবে না।

اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ (٥٦)

৫৬. তাদের মধ্যে (বিশেষভাবে নিকৃষ্ট তারা) তুমি যাদের সঙ্গে চুক্তিতে আবদ্ধ হও, অতঃপর তারা সে চুক্তি প্রত্যেকবার ভঙ্গ করে আর তারা (আল্লাহ্কে) ভয় করে না।

فَإِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ (٥٧)

৫৭. যুদ্ধে তোমরা যদি তাদেরকে বাগে পেয়ে যাও তাহলে ওদের পেছনে যারা ওদের সাথী-সঙ্গী আছে তাদের থেকে ওদেরকে এমনভাবে ছিন্ন-বিচ্ছিন্ন করে ফেলবে যাতে মনে রাখার মত তারা একটা শিক্ষা পেয়ে যায়।

৫৮. আর যদি তুমি কোন সম্প্রদায়ের চুক্তি ভঙ্গের আশঙ্কা কর তাহলে (তাদের চুক্তিকে) তাদের প্রতি নিক্ষেপ কর যাতে সমান সমান অবস্থা বিরাজিত হয়। আল্লাহ নিশ্চয়ই (ওয়াদা-চুক্তি-প্রতিশ্রুতি) ভঙ্গকারীদের পছন্দ করেন না।

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْبِذْ إِلَيْهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۚ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ (٥٨)

৫৯. যারা কুফরী করে তারা যেন এটা ধারণা না করে যে তারা প্রাধান্য লাভ করে নিয়েছে, তারা মু'মিনদেরকে কক্ষনো পরাজিত করতে পারবে না।

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ (٥٩)

৬০. আর তাদেরকে মুকাবালা করার জন্য যথাসাধ্য শক্তি ও অশ্ব-বাহিনী সদা প্রস্তুত রাখবে যদ্দ্বারা তোমরা ভয় দেখাতে থাকবে আল্লাহ্‌র শত্রু আর তোমাদের শত্রুকে, আর তাদের ছাড়াও অন্যান্যদেরকেও যাদেরকে তোমরা জান না কিন্তু আল্লাহ তাদেরকে জানেন। তোমরা আল্লাহ্‌র পথে যা খরচ কর তার পুরোপুরি প্রতিদান তোমাদেরকে দেয়া হবে, আর তোমাদের সাথে কক্ষনো যুল্‌ম করা হবে না।

وَأَعِدُّوا لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِنْ قُوَّةٍ وَمِنْ رِبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ عَدُوَّ اللَّهِ وَعَدُوَّكُمْ وَآخَرِينَ مِنْ دُونِهِمْ ۚ لَا تَعْلَمُونَهُمُ ۚ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا مِنْ شَيْءٍ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوَفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ (٦٠)

৬১. তারা যদি সন্ধির দিকে ঝুঁকে, তুমিও তার দিকে ঝুঁকে পড়, আর আল্লাহ্‌র উপর নির্ভর কর, নিশ্চয়ই তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

وَإِنْ جَنَحُوا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ (٦١)

৬২. আর তারা যদি তোমাকে ধোঁকা দেয়ার নিয়্যাত করে, সেক্ষেত্রে আল্লাহ্‌ই তোমার জন্য যথেষ্ট। তিনি তো তাঁর সাহায্য ও মু'মিনদের দ্বারা তোমাকে শক্তিশালী করেছেন।

وَإِنْ يُرِيدُوا أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيَّدَكَ بِنَصْرِهِ وَبِالْمُؤْمِنِينَ (٦٢)

৬৩. তিনি তাদের হৃদয়গুলোকে প্রীতির বন্ধনে জুড়ে দিয়েছেন। দুনিয়ায় যা কিছু আছে তার সবটুকু খরচ করলেও তুমি তাদের অন্তরগুলোকে প্রীতির ডোরে বাঁধতে পারতে না, কিন্তু আল্লাহ তাদের মধ্যে বন্ধন সৃষ্টি করে দিয়েছেন, তিনি তো

وَأَلَّفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا مَا أَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَٰكِنَّ اللَّهَ أَلَّفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ عَزِيزٌ

৬০। আবূ হুরাইরাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেন, যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান ও তাঁর প্রতিশ্রুতির প্রতি বিশ্বাস রেখে আল্লাহ্‌র পথে জিহাদের জন্য ঘোড়া প্রস্তুত রাখে, কিয়ামাতের দিন সেই ব্যক্তির দাঁড়ি পাল্লায় ঘোড়ার খাদ্য, পানীয়, গোবর ও পেশাব ওজন করা হবে। -বুখারী ২৮৫৩ [মুসলিম ৯৮৭, তিরমিযী ১৬৩৬, নাসায়ী ৩৫৬৩, ৩৫৮২; ইবনু মাজাহ ২৭৮৮, আহমাদ ৭৫০৯, ৮৬৪৯; মুওয়াত্তা ৯৭৫]

حَكِيْمٌ (٦٣)

প্রবল পরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ع (٦٤)

৬৪. হে নাবী! আল্লাহ্ই তোমার আর তোমার অনুসারী ঈমানদারদের জন্য যথেষ্ট।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى الْقِتَالِ ط إِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ج وَإِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْآ أَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ (٦٥)

৬৫. হে নাবী! যুদ্ধের ব্যাপারে মু'মিনদেরকে উদ্বুদ্ধ কর। তোমাদের মধ্যে বিশজন ধৈর্যশীল থাকলে তারা দু'শ জনের উপর জয়ী হবে এবং তোমাদের মধ্যে (ঐরূপ) একশ' জন থাকলে তারা একহাজার কাফিরের উপর বিজয়ী হবে। কেননা তারা হচ্ছে এমন লোক যারা (ন্যায়-অন্যায় সম্পর্কে) কোন বোধ রাখে না।

اَلْئٰنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيْكُمْ ضَعْفًا ط فَإِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ج وَإِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ أَلْفٌ يَّغْلِبُوْآ أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللّٰهِ ط وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ (٦٦)

৬৬. (তবে) এখন আল্লাহ তোমাদের দায়িত্বভার কমিয়ে দিয়েছেন। আল্লাহ তো জানেন যে তোমাদের ভিতর দুর্বলতা রয়ে গেছে, কাজেই তোমাদের মাঝে যদি একশ' জন ধৈর্যশীল হয় তবে তারা দু'শ জনের উপর বিজয়ী হবে। আর যদি তোমাদের মাঝে এক হাজার (ঐ রকম) লোক পাওয়া যায় তাহলে তারা আল্লাহ্র হুকুমে দু'হাজার লোকের উপর জয়ী হবে। আর আল্লাহ ধৈর্যশীলদের সাথে (আছেন)।

৬৫। আনাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। আল্লাহ্র রসূল (ﷺ) খন্দকের দিকে বের হলেন, হিম শীতল সকালে আনসার ও মুহাজিররা পরীখা খনন করছেন, আর তাদের এ কাজ করার জন্য তাদের কোন গোলাম ছিল না। যখন তিনি তাদের দেখতে পেলেন যে, তারা কষ্ট এবং ক্ষুধায় আক্রান্ত, তখন বললেন, হে আল্লাহ্! সুখের জীবন আখিরাতের জীবন। তুমি আনসার ও মুহাজিরদের ক্ষমা করে দাও। এর উত্তরে তারা বলে উঠেনঃ আমরা সেই ব্যক্তি যারা মুহাম্মাদ (ﷺ) -এর হাতে জিহাদের বাই'আত গ্রহণ করেছি, যদ্দিন আমরা বেঁচে আছি। –বুখারী ২৮৩৪ [২৮৩৫, ২৯৬১, ৩৭৯৫, ৩৭৯৬, ৪০৯৯, ৪১০০, ৬৪১৩, ৭২০১; মুসলিম ১৮০৫, তিরমিযী ৩৮৫৭, ইবনু মাজাহ ৭৪২, আহমাদ ১১৭৬৮, ১২৩১১]

৬৬। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, (আল্লাহ্র বাণীঃ) مِائَتَيْنِ যখন অবতীর্ণ হল। এরপর দশজন কাফিরের বিপরীত একজন মুসলিম থাকলেও পলায়ন না করা ফরয করে দেয়া হল। সুফ্ইয়ান ইবনু 'উয়াইনাহ (ﷺ) আবার বর্ণনা করেন, দু'শ জন কাফিরের বিপক্ষে ২০ জন মুসলিম থাকলেও পলায়ন করা যাবে না। তারপর এ আয়াতটি অবতীর্ণ হল– আল্লাহ এখন তোমাদের বোঝা হালকা করে দিয়েছেন এবং তিনি জানেন যে, তোমাদের মধ্যে দুর্বলতা আছে। সুতরাং যদি তোমাদের মধ্যে একশ' জন দৃঢ়পদ লোক থাকে তবে তারা দু'শ জনের উপর জয়লাভ করবে,

Contents

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّكُوْنَ لَهٗٓ أَسْرٰى حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْأَرْضِ ط تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ الدُّنْيَا ق صلے وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ط وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٦٧)

৬৭. কোন নাবীর জন্য এটা সঠিক কাজ নয় যে, দেশে (আল্লাহ্‌র দুশমনদেরকে) পুরোমাত্রায় পরাভূত না করা পর্যন্ত তার (হাতে) যুদ্ধ-বন্দী থাকবে। তোমরা দুনিয়ার স্বার্থ চাও আর আল্লাহ চান আখিরাত (এর সাফল্য), আল্লাহ প্রবল পরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

لَوْلَا كِتٰبٌ مِّنَ اللّٰهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيْمَآ أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (٦٨)

৬৮. আল্লাহ্‌র লেখন যদি পূর্বেই লেখা না হত তাহলে তোমরা যা (মুক্তিপণ হিসেবে) গ্রহণ করেছ তজ্জন্য তোমাদের উপর মহাশাস্তি পতিত হত।

فَكُلُوْا مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلٰلًا طَيِّبًا ز صلے وَّاتَّقُوا اللّٰهَ ط إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (٦٩)

৬৯. এক্ষণে, যুদ্ধে গানীমাত হিসেবে যা তোমরা লাভ করেছ তা ভোগ কর, তা বৈধ ও পবিত্র। আল্লাহ্‌কে ভয় করে চলো, নিশ্চয়ই আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِيْٓ أَيْدِيْكُمْ مِّنَ الْأَسْرٰى لا إِنْ يَّعْلَمِ اللّٰهُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ خَيْرًا يُّؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ أُخِذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٧٠)

৭০. হে নাবী! তোমাদের হাতে যে সব যুদ্ধবন্দী আছে তাদেরকে বল, 'আল্লাহ যদি তোমাদের অন্তরে ভাল কিছু দেখেন তাহলে তোমাদের কাছ থেকে (মুক্তিপণ) যা নেয়া হয়েছে তাথেকে উত্তম কিছু তোমাদেরকে তিনি দান করবেন আর তোমাদেরকে ক্ষমা করে দেবেন। আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।'

وَإِنْ يُّرِيْدُوْا خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٧١)

৭১. আর যদি তারা তোমার সাথে খিয়ানাত করার ইচ্ছে করে (তবে সেটা অসম্ভব কিছু নয়, কারণ এর থেকেও গুরুতর যে) তারা পূর্বে আল্লাহ্‌র সাথে খিয়ানাত করেছে, কাজেই আল্লাহ তাদেরকে তোমার অধীন করে দিয়েছেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ে বিশেষভাবে অবগত, সর্বশ্রেষ্ঠ প্রজ্ঞাবান।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا أُولٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ

৭২. যারা ঈমান এনেছে, হিজরাত করেছে, নিজেদের মাল দিয়ে জান দিয়ে আল্লাহ্‌র রাস্তায় জিহাদ করেছে আর যারা তাদেরকে আশ্রয় দিয়েছে, সাহায্য করেছে, এরা পরস্পর পরস্পরের বন্ধু। আর যারা ঈমান এনেছে কিন্তু

আর তোমাদের মধ্যে এক হাজার থাকলে আল্লাহ্‌র হুকুমে তারা দু'হাজারের উপর জয়লাভ করবে। আর আল্লাহ আছেন দৃঢ়পদ লোকদের সঙ্গে।...........হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৬৫২ [৪৬৫৩; আবূ দাঊদ ২৬৪৬]

ط وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يُهَاجِرُوْا مَا لَكُمْ مِّنْ وَّلَايَتِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ حَتّٰى يُهَاجِرُوْا ج وَاِنِ اسْتَنْصَرُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ اِلَّا عَلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٧٢)

হিজরাত করেনি তারা হিজরাত না করা পর্যন্ত তাদের পৃষ্ঠপোষকতা করার কোন দায়-দায়িত্ব তোমার উপর নেই, তবে তারা যদি দ্বীনের ব্যাপারে তোমাদের সাহায্য চায় তাহলে তাদেরকে সাহায্য করা তোমাদের কর্তব্য, তবে তাদের বিরুদ্ধে নয় যাদের সঙ্গে তোমাদের মৈত্রী চুক্তি রয়েছে। তোমরা যা কর আল্লাহ তা দেখেন।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ط اِلَّا تَفْعَلُوْهُ تَكُنْ فِتْنَةٌ فِي الْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيْرٌ ط (٧٣)

৭৩. আর যারা কুফরী করে তারা একে অপরের বন্ধু। যদি তোমরা তা না কর (অর্থাৎ তোমরা পরস্পর পরস্পরের সাহায্যে এগিয়ে না আস) তাহলে দুনিয়াতে ফিতনা ও মহাবিপর্যয় দেখা দিবে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالَّذِيْنَ اٰوَوْا وَّنَصَرُوْٓا أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ط لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ (٧٤)

৭৪. যারা ঈমান এনেছে, হিজরাত করেছে, আল্লাহ্‌র রাস্তায় জিহাদ করেছে আর যারা তাদেরকে আশ্রয় দিয়েছে, সাহায্য-সহযোগিতা করেছে- তারাই প্রকৃত ঈমানদার। তাদের জন্য আছে ক্ষমা আর সম্মানজনক জীবিকা।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَأُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ط وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ ط اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ع (٧٥)

৭৫. যারা পরে ঈমান এনেছে, হিজরাত করেছে আর তোমাদের সাথে মিলিত হয়ে জিহাদ করেছে, এসব লোক তোমাদেরই মধ্যে গণ্য। কিন্তু আল্লাহ্‌র বিধানে রক্ত সম্পর্কীয়গণ পরস্পর পরস্পরের নিকট অগ্রগণ্য। আল্লাহ সকল বিষয়ে সবচেয়ে বেশী অবগত।

৯. সূরাহ আত্-তাওবাহ

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ

আয়াতঃ ১২৯, রুকূ'ঃ ১৬ মাদানী

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ط (١)

১. মুশরিকদের মধ্যেকার যাদের সঙ্গে তোমরা সন্ধিচুক্তি করেছিলে তাদের সাথে আল্লাহ ও তাঁর রসূলের পক্ষ হতে সম্পর্কচ্ছেদের ঘোষণা দেয়া হল।

২. অতঃপর (হে কাফিরগণ!) চার মাস তোমরা যমীনে (ইচ্ছে মত) চলাফেরা করে নাও; আর জেনে রেখ যে, তোমরা আল্লাহ্‌কে নত করতে পারবে না, আল্লাহ্‌ই সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদেরকে লাঞ্ছিত করবেন।

فَسِيْحُوْا فِي الْأَرْضِ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَّاعْلَمُوْٓا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللهِ ۙ وَأَنَّ اللهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ (٢)

৩. আল্লাহ ও তাঁর রসূলের পক্ষ হতে বড় হাজ্জের দিনে মানুষদের কাছে ঘোষণা দেয়া হল যে আল্লাহ মুশরিকদের সাথে সম্পর্কহীন এবং তাঁর রসূলও। কাজেই এখন যদি তোমরা তাওবাহ কর, তাতে তোমাদেরই ভাল হবে, আর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে জেনে রেখ যে, তোমরা আল্লাহ্‌কে হীন-দুর্বল করতে পারবে না, আর যারা কুফরী করে চলেছে তাদেরকে ভয়াবহ শাস্তির সুসংবাদ শুনিয়ে দাও।

وَأَذَانٌ مِّنَ اللهِ وَرَسُوْلِهٖٓ إِلَى النَّاسِ يَوْمَ الْحَجِّ الْأَكْبَرِ أَنَّ اللهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ۬ وَرَسُوْلُهٗ ؕ فَإِنْ تُبْتُمْ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا أَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللهِ ؕ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ ۙ (٣)

৪. কিন্তু মুশরিকদের মধ্যে যারা তোমাদের সঙ্গে চুক্তি রক্ষার ব্যাপারে বিন্দুমাত্র ত্রুটি করেনি, আর তোমাদের বিরুদ্ধে কাউকে সাহায্যও করেনি, তাদের সাথে নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত চুক্তি পূর্ণ কর। অবশ্যই আল্লাহ মুত্তাকীদের ভালবাসেন।

إِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْئًا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا عَلَيْكُمْ أَحَدًا فَأَتِمُّوْٓا إِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ إِلٰى مُدَّتِهِمْ ؕ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ (٤)

৫. তারপর (এই) নিষিদ্ধ মাস অতিক্রান্ত হয়ে গেলে মুশরিকদেরকে যেখানে পাও হত্যা কর,

فَإِذَا انْسَلَخَ الْأَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا

২। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আবূ বাক্‌র (রাঃ) নবম হিজরীর হাজ্জে আমাকে এ আদেশ দিয়ে পাঠিয়ে দেন যে, আমি কুরবানীর দিন ঘোষণাকারীদের সঙ্গে মিনায় (সমবেত লোকদের) এ ঘোষণা করে দেই যে, এ বছরের পর কোন মুশরিক হাজ্জ করতে পারবে না। আল্লাহ্‌র ঘর নগ্নদেহে তাওয়াফ করবে না।
হুমায়দ ইবনু 'আবদুর রহমান (রহঃ) বলেনঃ রসূলুল্লাহ (ﷺ) 'আলী (রাঃ)-কে পুনরায় এ নির্দেশ দিয়ে প্রেরণ করলেন যে, তুমি সূরায়ে বারাআতের বিধানসমূহ ঘোষণা করে দাও। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) বলেন, মীনায় অবস্থানকারীদের মাঝে (কুরবানীর পর) 'আলী (রাঃ) আমাদের সঙ্গে ছিলেন এবং সূরায়ে বারাআতের বিধানসমূহ ঘোষণা করলেন– এ বছরের পর কোন মুশরিক হাজ্জ করতে পারবে না। কেউ নগ্ন অবস্থায় ঘর তওয়াফ করবে না। –বুখারী ৪৬৫৫ [৩৬৯; মুসলিম ১৩৪৭, নাসায়ী ২৯৫৭, ২৯৫৮; আবূ দাউদ ১৯৪৬, আহমাদ ৭৯১৭, দারিমী ১৪৩০]
৪। 'আবদুল্লাহ ইবনু 'উমার (রাঃ) থেকে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেনঃ যে ব্যক্তি চুক্তিবদ্ধ সম্প্রদায়ের কোন লোককে হত্যা করবে সে জান্নাতের সুবাস পর্যন্ত লাভ করবে না, যদিও তার সুবাস চল্লিশ বছরের দূরত্ব থেকেও পাওয়া যাবে। –বুখারী ৩১৬৬ [৬৯১৪; নাসায়ী ৪৭৫০, ইবনু মাজাহ ২৬৮৬, আহমাদ ৬৭০৬]

ٱلْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ ج فَإِنْ تَابُوْا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥)

তাদেরকে পাকড়াও কর, তাদেরকে ঘেরাও কর, তাদের অপেক্ষায় প্রত্যেক ঘাঁটিতে ওৎ পেতে বসে থাক। কিন্তু তারা যদি তাওবাহ করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে, তাহলে তাদের পথ ছেড়ে দাও, নিশ্চয়ই আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَإِنْ أَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ فَأَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللهِ ثُمَّ أَبْلِغْهُ مَأْمَنَهٗ ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ع (٦)

৬. মুশরিকদের কেউ যদি তোমার কাছে আশ্রয় প্রার্থনা করে তবে তাকে আশ্রয় দাও যাতে সে আল্লাহ্‌র বাণী শোনার সুযোগ পায়; তারপর তাকে তার নিরাপদ জায়গায় পৌঁছে দাও। এটা এজন্য করতে হবে যে, এরা এমন এক সম্প্রদায় যারা (ভাল-মন্দ, সত্য-মিথ্যা সম্পর্কে) অজ্ঞ।

كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ اللهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ إِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ج فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ط إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ (٧)

৭. আল্লাহ ও তাঁর রসূলের সঙ্গে মুশরিকদের চুক্তি কী করে কার্যকর থাকতে পারে? অবশ্য ঐসব লোক ছাড়া যাদের সঙ্গে তোমরা মাসজিদুল হারামের নিকট চুক্তিবদ্ধ হয়েছিলে; তারা যদ্দিন তোমাদের সঙ্গে চুক্তি ঠিক রাখে, তোমরাও তাদের সঙ্গে কৃত চুক্তিতে দৃঢ় থাক। নিশ্চয়ই আল্লাহ মুত্তাকীদের ভালবাসেন।

كَيْفَ وَإِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا فِيْكُمْ إِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ط يُرْضُوْنَكُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ وَتَأْبٰى قُلُوْبُهُمْ ج وَأَكْثَرُهُمْ فٰسِقُوْنَ ج (٨)

৮. কীভাবে (চুক্তি থাকতে পারে) যদি তারা তোমাদেরকে পরাজিত করতে পারে তাহলে তারা তোমাদের সঙ্গে না আত্মীয়তার মর্যাদা দেয়, আর না ওয়াদা-অঙ্গীকারের; তারা তাদের মুখের কথায় তোমাদেরকে সন্তুষ্ট রাখতে চায় কিন্তু তাদের অন্তর তা অস্বীকার করে, তাদের অধিকাংশই সত্যত্যাগী অপরাধী।

إِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ط إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٩)

৯. আল্লাহ্‌র আয়াতকে তারা (দুনিয়াবী স্বার্থে) অতি তুচ্ছ মূল্যে বিক্রি করে দিয়েছে, আল্লাহ্‌র পথে (মানুষদের চলার ক্ষেত্রে) প্রতিবন্ধকতা সৃষ্টি করেছে। তারা যা করে কতই না জঘন্য সে কাজ।

لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ إِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ط وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ (١٠)

১০. কোন ঈমানদার ব্যক্তির ব্যাপারে তারা না কোন আত্মীয়তার মর্যাদা দেয়, আর না কোন ওয়াদা-অঙ্গীকারের। এরা হল সেই লোক যারা সীমালঙ্ঘনকারী।

فَإِنْ تَابُوْا وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (١١)

১১. এখন যদি তারা তাওবাহ করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে তাহলে তারা তোমাদের দ্বীনী ভাই। জ্ঞান-বুদ্ধিসম্পন্ন লোকেদের জন্য আমি স্পষ্ট করে নিদর্শন বলে দিলাম।

وَإِنْ نَّكَثُوْٓا أَيْمَانَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ عَهْدِهِمْ وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقٰتِلُوْٓا أَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ إِنَّهُمْ لَآ أَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ (١٢)

১২. তারা যদি চুক্তি করার পর তাদের শপথ ভঙ্গ করে আর তোমাদের দীনের বিরুদ্ধে কটুক্তি করে, তাহলে কাফিরদের নেতৃবৃন্দের বিরুদ্ধে লড়াই কর, শপথ বলে কোন জিনিস তাদের কাছে নেই, (কাজেই শক্তি প্রয়োগ কর) যাতে তারা (শয়তানী কার্যকলাপ থেকে) নিবৃত্ত হয়।

أَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا أَيْمَانَهُمْ وَهَمُّوْا بِإِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ بَدَءُوْكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ أَتَخْشَوْنَهُمْ ج فَاللهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشَوْهُ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٣)

১৩. তোমরা সেই সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে লড়াই কেন করবে না যারা তাদের প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করেছে, যারা রসূলকে দেশ থেকে বের করে দেয়ার ষড়যন্ত্র করেছিল? প্রথমে তারাই তোমাদেরকে আক্রমণ করেছিল। তোমরা কি তাদেরকে ভয় কর? তোমরা যাকে ভয় করবে তার সবচেয়ে বেশি হকদার হলেন আল্লাহ যদি তোমরা মু'মিন হয়ে থাক।

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللهُ بِأَيْدِيْكُمْ وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ۙ (١٤)

১৪. তাদের বিরুদ্ধে লড়াই কর, তোমাদের হাত দিয়েই আল্লাহ তাদেরকে শাস্তি দিবেন, তাদেরকে অপমানিত করবেন, তাদের বিরুদ্ধে তোমাদেরকে সাহায্য করবেন আর মু'মিনদের প্রাণ ঠাণ্ডা করবেন।

وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَيَتُوْبُ اللهُ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (١٥)

১৫. তিনি তাদের মনের জ্বালা নিভিয়ে দিবেন, আল্লাহ যাকে চাইবেন তাওবাহ করার তাওফীক দিবেন, আর আল্লাহ হলেন সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللهُ

১৬. তোমরা কি মনে কর যে, তোমাদেরকে এমনিই ছেড়ে দেয়া হবে যে পর্যন্ত আল্লাহ জেনে

১২। যায়দ ইবনু ওয়াহ্‌ব (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা আমরা হুযাইফাহ (রাঃ)-এর কাছে ছিলাম, তখন তিনি বলেন, এ আয়াতের সঙ্গে সম্পর্কিত ব্যক্তিদের মধ্যে শুধু তিনজন মুসলিম এবং চারজন মুনাফিক বেঁচে আছে। এমন সময় একজন বেদুঈন বলেন, আপনারা সকলে মুহাম্মাদ (ﷺ) - এর সহাবী। আমাদের এমন লোকদের অবস্থা সম্পর্কে খবর দিন যারা আমাদের ঘরে সিঁদ কেটে ঘরের অতি মূল্যবান জিনিসগুলো চুরি করে নিয়ে যাচ্ছে, কেননা তাদের অবস্থা সম্পর্কে আমরা জানি না। হুযাইফাহ (রাঃ) বলেন, তারা সবাই ফাসিক। হ্যাঁ, তাদের মধ্য হতে চার ব্যক্তি এখনও জীবিত–তাদের মধ্যে একজন এতই বৃদ্ধ যে, শীতল পানি পান করার পর সে তার শীতলতা অনুভব করতে পারে না। –বুখারী ৪৬৫৮

الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ وَلِيْجَةً ط وَاللهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ع (١٦)

না নেবেন তোমাদের মধ্যে কারা তাঁর পথে জিহাদ করেছে, আর আল্লাহ, তাঁর রসূল ও মু'মিনদের ছাড়া অন্য কাউকে বন্ধু ও অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করেন নি? তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আল্লাহ বিশেষভাবে অবহিত।

مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ أَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ط أُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ ج صلے وَفِي النَّارِ هُمْ خٰلِدُوْنَ (١٧)

১৭. মুশরিকদের এটা কাজ নয় যে, তারা আল্লাহ্‌র মাসজিদের রক্ষণাবেক্ষণকারী সেবক হবে যখন তারা নিজেরাই নিজেদের কুফরীর সাক্ষ্য দেয়, তাদের সমস্ত কাজ বরবাদ হয়ে গেছে, জাহান্নামেই তারা হবে চিরস্থায়ী।

إِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَأَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ إِلَّا اللهَ قف فَعَسٰٓى أُولٰٓئِكَ أَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ (١٨)

১৮. আল্লাহ্‌র মাসজিদের আবাদ তো তারাই করবে যারা আল্লাহ ও শেষ দিবসের প্রতি ঈমান আনে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত আদায় করে আর আল্লাহ ছাড়া অন্য কাউকে ভয় করে না। আশা করা যায়, তারাই হবে সঠিক পথপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত।

أَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَجٰهَدَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ط لَا يَسْتَوُوْنَ عِنْدَ اللهِ ط وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ م (١٩)

১৯. হাজীদেরকে পানি পান করানো আর মাসজিদে হারামের আবাদ করাকে কি তোমরা তাদের কাজের সমান মনে কর যারা আল্লাহ ও শেষ দিনে বিশ্বাস করে আর আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করে? আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে এরা সমান নয়। (যারা ভ্রান্তপথে আল্লাহ্‌ও সন্তুষ্টি খুঁজে এমন) যালিম সম্প্রদায়কে আল্লাহ সৎপথে পরিচালিত করেন না।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجٰهَدُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ لا أَعْظَمُ دَرَجَةً عِنْدَ اللهِ ط وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (٢٠)

২০. যারা ঈমান আনে, হিজরাত করে, আর নিজেদের জান-মাল দিয়ে আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করে, আল্লাহ্‌র নিকট তাদের বিরাট মর্যাদা রয়েছে, এরাই হল সফলকাম।

يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ لا (٢١)

২১. তাদের প্রতিপালক তাদেরকে সুসংবাদ দিচ্ছেন তাঁর দয়া ও সন্তুষ্টির, আর জান্নাতের যেখানে তাদের জন্য আছে স্থায়ী সুখ-সামগ্রী।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ط إِنَّ اللهَ عِنْدَهٗٓ أَجْرٌ عَظِيْمٌ (٢٢)

২২. যেখানে তারা চিরদিন থাকবে। আল্লাহ্‌র কাছেই তো রয়েছে মহাপুরস্কার।

Contents

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْٓا اٰبَآءَكُمْ وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ عَلَى الْإِيْمَانِ ط وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (٢٣)

২৩. হে বিশ্বাসীগণ! তোমরা তোমাদের পিতা আর ভাইদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না যদি তারা ঈমানের চেয়ে কুফরীকেই বেশি ভালবাসে। তোমাদের মধ্যে যারা তাদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করে, তারাই যালিম।

قُلْ إِنْ كَانَ اٰبَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيْرَتُكُمْ وَأَمْوَالُ ۨاقْتَرَفْتُمُوْهَا وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِّنَ اللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَجِهَادٍ فِيْ سَبِيْلِهٖ فَتَرَبَّصُوْا حَتّٰى يَأْتِيَ اللهُ بِأَمْرِهٖ ط وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ع (٢٤)

২৪. বল, 'যদি তোমাদের পিতারা, আর তোমাদের সন্তানেরা, আর তোমাদের ভাইয়েরা, আর তোমাদের স্ত্রীরা, আর তোমাদের গোষ্ঠীর লোকেরা আর ধন-সম্পদ যা তোমরা অর্জন করেছ, আর ব্যবসা তোমরা যার মন্দার ভয় কর, আর বাসস্থান যা তোমরা ভালবাস (এসব) যদি তোমাদের নিকট প্রিয়তর হয় আল্লাহ, তাঁর রসূল ও তাঁর পথে জিহাদ করা হতে, তাহলে অপেক্ষা কর যতক্ষণ না আল্লাহ তাঁর চূড়ান্ত ফয়সালা তোমাদের কাছে নিয়ে আসেন।' আর আল্লাহ অবাধ্য আচরণকারীদেরকে সঠিক পথ প্রদর্শন করেন না।

لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللهُ فِيْ مَوَاطِنَ كَثِيْرَةٍ لا وَّيَوْمَ حُنَيْنٍ لا إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْئًا وَّضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُّدْبِرِيْنَ ج (٢٥)

২৫. বস্তুতঃ আল্লাহ তোমাদেরকে বহু যুদ্ধ ক্ষেত্রে সাহায্য করেছেন আর হুনায়নের যুদ্ধের দিন, তোমাদের সংখ্যার আধিক্য তোমাদেরকে গর্বে মাতোয়ারা করে দিয়েছিল, কিন্তু তা তোমাদের কোন কাজে আসেনি, যমীন সুপ্রশস্ত হওয়া সত্ত্বেও তা তোমাদের নিকট সংকীর্ণই হয়ে গিয়েছিল, আর তোমরা পিছন ফিরে পালিয়ে গিয়েছিলে।

২৫-২৭। আবূ ক্বাতাদাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, হুনায়নের বছর আমরা নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে যুদ্ধে অংশ নিয়েছিলাম। আমরা যখন শত্রুর মুখোমুখী হলাম তখন মুসলিমদের মধ্যে বিশৃঙ্খলা দেখা দিল। এ সময় আমি মুশরিকদের এক ব্যক্তিকে দেখলাম, সে মুসলিমদের এক ব্যক্তিকে পরাভূত করে ফেলেছে। তাই আমি কাফির লোকটির পশ্চাৎ দিকে গিয়ে তরবারি দিয়ে তার কাঁধ ও ঘাড়ের মাঝে শক্ত শিরার উপর আঘাত হানলাম এবং লোকটির গায়ের লৌহ বর্মটি কেটে ফেললাম। এ সময় সে আমার উপর আক্রমণ করে বসল এবং আমাকে এত জোরে চাপ দিয়ে জড়িয়ে ধরল যে, আমি আমার মৃত্যুর বাতাস অনুভব করলাম। এরপর মৃত্যু লোকটিকে পেয়ে বসল আর আমাকে ছেড়ে দিল। এরপর আমি 'উমার [ইবনুল খাত্তাব (রাঃ)]-এর কাছে গিয়ে জিজ্ঞেস করলাম, মুসলিমদের অবস্থা কী? তিনি বললেন, মহান শক্তিধর আল্লাহর ইচ্ছা। এরপর সবাই (আবার) ফিরে এল এবং মুশরিকদের উপর

Contents

ثُمَّ أَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَأَنْزَلَ جُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ج وَعَذَّبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط وَذٰلِكَ جَزَآءُ الْكٰفِرِيْنَ (٢٦)

২৬. তারপর আল্লাহ তাঁর রসূলের উপর, আর মু'মিনদের উপর তাঁর প্রশান্তির অমিয়ধারা বর্ষণ করলেন, আর পাঠালেন এমন এক সেনাবাহিনী যা তোমরা দেখতে পাওনি, আর তিনি কাফিরদেরকে শাস্তি প্রদান করলেন। এভাবেই আল্লাহ কাফিরদেরকে প্রতিফল দিয়ে থাকেন।

ثُمَّ يَتُوْبُ اللّٰهُ مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٢٧)

২৭. এরপরও আল্লাহ যার জন্য ইচ্ছে করবেন তাকে ক্ষমার দৃষ্টিতে দেখবেন, আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ إِنَّمَا الْمُشْرِكُوْنَ نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ عَامِهِمْ هٰذَا ج وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ يُغْنِيْكُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖٓ إِنْ شَآءَ ط إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٢٨)

২৮. ওহে বিশ্বাসীগণ! মুশরিকরা হল অপবিত্র, কাজেই এ বছরের পর তারা যেন মাসজিদে হারামের নিকট না আসে। তোমরা যদি দরিদ্রতার ভয় কর, তবে আল্লাহ ইচ্ছে করলে অচিরেই তাঁর অনুগ্রহের মাধ্যমে তোমাদেরকে অভাব-মুক্ত করে দেবেন। নিশ্চয়ই আল্লাহ সর্বজ্ঞ, মহাবিজ্ঞানী।

قَاتِلُوا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَلَا يُحَرِّمُوْنَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ع (٢٩)

২৯. যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছে তাদের মধ্যে যারা আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান আনে না, আর শেষ দিনের প্রতিও না, আর আল্লাহ ও তাঁর রসূল যা হারাম করেছেন তাকে হারাম গণ্য করে না, আর সত্য দ্বীনকে নিজেদের দ্বীন হিসেবে গ্রহণ করে না তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর যে পর্যন্ত না তারা বশ্যতা সহকারে স্বেচ্ছায় ট্যাক্স দেয়।

وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ط ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ بِأَفْوَاهِهِمْ ج يُضَاهِئُوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ط قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ج أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ (٣٠)

৩০. ইয়াহূদীরা বলে, 'উযায়র আল্লাহ্‌র পুত্র। আর নাসারারা বলে, 'মাসীহ আল্লাহ্‌র পুত্র। এসব তাদের মুখের কথা। এতে তারা তাদের পূর্বেকার কাফিরদের কথারই অনুকরণ করে। আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করুন! কেমনভাবে তারা সত্য পথ থেকে দূরে ছিটকে পড়েছে।

اِتَّخَذُوْآ أَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ أَرْبَابًا مِّنْ

৩১. আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে তারা তাদের 'আলিম

হামলা চালিয়ে যুদ্ধে জয়ী হল।............হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৩২১ [২১০০; মুসলিম ১৭৫১, তিরমিযী ১৫৬২, আবূ দাউদ ২৭১৭, ইবনু মাজাহ ২৮৩৭, আহমাদ ২২১২, ২২২১; মুওয়াত্তা ৯৯০]

دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ وَمَآ أُمِرُوْٓا إِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا إِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ۗ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٣١)

আর দরবেশদেরকে রব বানিয়ে নিয়েছে; আর মারইয়াম-পুত্র মাসীহ্কেও। অথচ তাদেরকে এক ইলাহ ব্যতীত (অন্যের) 'ইবাদাত করার আদেশ দেয়া হয়নি। তিনি ব্যতীত সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, পবিত্রতা আর মহিমা তাঁরই, (বহু ঊর্ধ্বে তিনি) তারা যাদেরকে (তাঁর) অংশীদার গণ্য করে তাথেকে।

يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِأَفْوَاهِهِمْ وَيَأْبَى اللّٰهُ إِلَّآ أَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ (٣٢)

৩২. তারা তাদের মুখের ফুঁৎকারে আল্লাহ্র আলোকে নিভিয়ে দিতে চায়, কিন্তু আল্লাহ তা হতে দিবেন না, তিনি তাঁর আলোকে পূর্ণ না করে ছাড়বেন না, যদিও কাফিরগণ তা অপছন্দ করে।

هُوَ الَّذِيْٓ أَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ (٣٣)

৩৩. তিনি তাঁর রসূলকে হিদায়াত আর সঠিক দ্বীনসহ পাঠিয়েছেন যাবতীয় দ্বীনের উপর একে বিজয়ী করার জন্য যদিও মুশরিকগণ অপছন্দ করে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْأَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَأْكُلُوْنَ أَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۗ وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ ۙ (٣٤)

৩৪. হে বিশ্বাসীগণ! অবশ্যই 'আলিম ও দরবেশদের অনেকেই ভুয়ো কর্মকাণ্ডের মাধ্যমে মানুষদের সম্পদ গ্রাস করে থাকে আর আল্লাহ্র পথে বাধা সৃষ্টি করে। যারা স্বর্ণ ও রৌপ্য জমা করে আর আল্লাহ্র পথে তা ব্যয় করে না তাদেরকে ভয়াবহ শাস্তির সুসংবাদ দাও।

৩৪। যায়দ ইবনু ওয়াহ্ব (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি একদা রাবাযা নামক স্থানে আবূ যার (রাঃ)-এর নিকট দিয়ে যাচ্ছিলাম। আমি (তাকে) জিজ্ঞেস করলাম, আপনি কেন এ ভূমিতে এসেছেন? তিনি বললেন, আমি সিরিয়ায় ছিলাম, তখন আমি [মু'আবিয়াহ (রাঃ)-এর সামনে] এ আয়াত পাঠ করে শোনালাম।

وَٱلَّذِينَ يَكْنِزُونَ ٱلذَّهَبَ وَٱلْفِضَّةَ وَلَا يُنفِقُونَهَا فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ فَبَشِّرْهُم بِعَذَابٍ أَلِيمٍ

"আর যারা জমা করে রাখে স্বর্ণ ও রৌপ্য এবং তা আল্লাহ্র পথে ব্যয় করে না, তাদেরকে আপনি শুনিয়ে দিন যন্ত্রণাদায়ক শাস্তির সুসংবাদ।"

মু'আবিয়াহ (রাঃ) এ আয়াত শুনে বললেন, এ আয়াত আমাদের ব্যাপারে অবতীর্ণ হয়নি। বরং আহলে কিতাবদের (ইয়াহূদী ও নাসারাদের) ব্যাপারে অবতীর্ণ হয়েছে। আমি বললাম, এ আয়াত আমাদের ও তাদের সম্পর্কে অবতীর্ণ হয়েছে। (এ কারণে চলে এসেছি।) –বুখারী ৪৬৬০ [১৪০৬]

يَّوۡمَ يُحۡمٰى عَلَيۡهَا فِىۡ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكۡوٰى بِهَا جِبَاهُهُمۡ وَجُنُوۡبُهُمۡ وَظُهُوۡرُهُمۡ ؕ هٰذَا مَا كَنَزۡتُمۡ لِاَنۡفُسِكُمۡ فَذُوۡقُوۡا مَا كُنۡتُمۡ تَكۡنِزُوۡنَ (٣٥)

৩৫. যেদিন জাহান্নামের আগুনে তা উত্তপ্ত করা হবে আর তা দিয়ে তাদের কপালে, পার্শ্বদেশে ও পিঠে দাগ দেয়া হবে, (আর তাদেরকে বলা হবে) 'এটা হল, যা তোমরা নিজেদের জন্য স্তুপীকৃত করেছিলে, কাজেই যা জমা করছিলে তার স্বাদ গ্রহণ কর।'

اِنَّ عِدَّةَ الشُّهُوۡرِ عِنۡدَ اللّٰهِ اثۡنَا عَشَرَ شَهۡرًا فِىۡ كِتٰبِ اللّٰهِ يَوۡمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ مِنۡهَاۤ اَرۡبَعَةٌ حُرُمٌ ؕ ذٰ لِكَ الدِّيۡنُ الۡقَيِّمُ ۙ۬ فَلَا تَظۡلِمُوۡا فِيۡهِنَّ اَنۡفُسَكُمۡ ۚ وَقَاتِلُوا الۡمُشۡرِكِيۡنَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُوۡنَكُمۡ كَآفَّةً ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الۡمُتَّقِيۡنَ (٣٦)

৩৬. আসমান-যমীন সৃষ্টির দিন থেকেই আল্লাহ্‌র কিতাবে (লৌহ মাহফুজে) মাসগুলোর সংখ্যা হল বার। তার মধ্যে চারটি নিষিদ্ধ মাস। এটা হল সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন। কাজেই ঐ সময়ের মধ্যে নিজেদের উপর যুল্‌ম করো না। মুশরিকদের বিরুদ্ধে সর্বাত্মকভাবে যুদ্ধ কর, যেমন তারা তোমাদের বিরুদ্ধে সর্বাত্মকভাবে যুদ্ধ করে। জেনে রেখ, আল্লাহ অবশ্যই মুত্তাকীদের সঙ্গে আছেন।

اِنَّمَا النَّسِىۡٓءُ زِيَادَةٌ فِى الۡكُفۡرِ يُضَلُّ بِهِ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا يُحِلُّوۡنَهٗ عَامًا وَّيُحَرِّمُوۡنَهٗ عَامًا لِّيُوَاطِـُٔوۡا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوۡا مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ؕ زُيِّنَ لَهُمۡ سُوۡٓءُ اَعۡمَالِهِمۡ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ع (٣٧)

৩৭. নিষিদ্ধ মাসকে পিছিয়ে দেয়া কুফরীর উপর আরেক কুফরী কাজ যা দ্বারা কাফিরদেরকে পথভ্রষ্ট করা হয়। এক বছর তারা একটি মাসকে হালাল করে, আরেক বছর ঐ মাসটিকে হারাম করে যাতে আল্লাহ্‌র হারাম করা মাসগুলোর সংখ্যা পূর্ণ করা যায়। এভাবে তারা আল্লাহ্‌র হারাম করা মাসগুলোকে হারাম করে নেয়। তাদের খারাপ কাজগুলো তাদের কাছে আনন্দদায়ক। আল্লাহ কাফির সম্প্রদায়কে সঠিক পথ দেখান না।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا مَا لَـكُمۡ اِذَا قِيۡلَ

৩৮. হে ঈমানদারগণ! তোমাদের হয়েছে কী যে, যখন তোমাদেরকে আল্লাহ্‌র পথে বের হওয়ার

৩৫। খালিদ ইবনু আসলাম (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা 'আবদুল্লাহ ইবন 'উমার (রাঃ)- এর সঙ্গে বের হলাম। তখন তিনি বললেন, এ আয়াতটি যাকাতের বিধান অবতীর্ণ হওয়ার পূর্বের। এরপর যাকাতের বিধান অবতীর্ণ হলে আল্লাহ তা সম্পদের পরিশুদ্ধকারী করেন। –বুখারী ৪৬৬১ [১৪০৪]

৩৬। আবূ বাক্‌র (রাঃ) কর্তৃক নাবী (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বললেন, আল্লাহ যেদিন আসমান যমীন সৃষ্টি করেন সেদিন যেভাবে যামানা ছিল তা আজও তেমনি আছে। বারমাসে এক বছর, তার মধ্যে চার মাস পবিত্র। যার তিন মাস ধারাবাহিক যথা যিলকাদ, যিলহাজ্জ ও মুহাররম আর মুযার গোত্রের রাজব যা জামাদিউস্‌সানী ও শাবান মাসের মধ্যবর্তী। –বুখারী ৪৬৬২ [৬৭; মুসলিম ১৬৭৯, ইবনু মাজাহ ২৩৩, আহমাদ ১৯৮৭৩, ১৯৮৯৪; দারিমী ১৯১৬]

لَكُمُ انْفِرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ اثَّاقَلْتُمْ إِلَى الْأَرْضِ ط أَرَضِيْتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا مِنَ الْاٰخِرَةِ ج فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا قَلِيْلٌ (٣٨)

নির্দেশ দেয়া হয় তখন তোমরা আরো জোরে মাটি কামড়ে ধর। তোমরা কি আখেরাতের স্থলে দুনিয়ার জীবনকেই বেশি পছন্দ কর? আখেরাতের তুলনায় পার্থিব জীবনের ভোগ সামগ্রী তো অতি সামান্য।

إِلَّا تَنْفِرُوْا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ۙ ۙ لا وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوْهُ شَيْئًا ط وَاللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٣٩)

৩৯. তোমরা যদি যুদ্ধাভিযানে বের না হও, তাহলে তোমাদেরকে ভয়াবহ শাস্তি দেয়া হবে, আর তোমাদের স্থলে অন্য সম্প্রদায়কে আনা হবে (অথচ) তোমরা তাঁর কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বশক্তিমান।

إِلَّا تَنْصُرُوْهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللهُ إِذْ أَخْرَجَهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا فِي الْغَارِ إِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ إِنَّ اللهَ مَعَنَا ج فَأَنْزَلَ اللهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ وَأَيَّدَهٗ بِجُنُوْدٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ كَلِمَةَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ط وَكَلِمَةُ اللهِ هِيَ الْعُلْيَا ط وَاللهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٤٠)

৪০. যদি তোমরা তাকে [অর্থাৎ রসূল (ﷺ)-কে] সাহায্য না কর (তাতে কোনই পরোয়া নেই) কারণ আল্লাহ তো তাকে সেই সময় সাহায্য করেছেন যখন কাফিররা তাকে বের করে দিয়েছিল, সে ছিল দু'জনের দ্বিতীয়জন যখন তারা দু'জন গুহার মধ্যে ছিল, যখন সে তার সঙ্গীকে বলছিল, 'চিন্তা করো না, আল্লাহ আমাদের সঙ্গে আছেন'। তখন আল্লাহ তার প্রতি তাঁর প্রশান্তি বর্ষণ করলেন আর তাকে এমন সেনাবাহিনী দিয়ে শক্তিশালী করলেন তোমরা যা দেখতে পাওনি, আর তিনি কাফিরদের মুখের বুলিকে গভীর নীচে ফেলে দিলেন। আর আল্লাহ্‌র বাণীই রয়েছে সর্বোচ্চ। আল্লাহ হলেন প্রবল পরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِأَمْوَالِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ط

৪১. যুদ্ধাভিযানে বেরিয়ে পড়, অবস্থা হালকাই হোক আর ভারীই হোক (অস্ত্র কম থাকুক আর বেশি থাকুক) আর আল্লাহ্‌র রাস্তায় তোমাদের মাল দিয়ে আর তোমাদের জান দিয়ে জিহাদ কর,

---

৪০। আনাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আবূ বাক্‌র (رضي الله عنه) আমার কাছে বলেছেন, আমি নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে (সওর) গুহায় ছিলাম। তখন আমি মুশরিকদের পদচিহ্ন দেখতে পেয়ে [নাবী (ﷺ) -কে] বললাম, হে আল্লাহ্‌র রসূল! যদি তাদের কেউ পা উঠায় তাহলে আমাদের দেখে ফেলবে। তখন তিনি বললেন, এমন দু'জন সম্পর্কে তোমার কী ধারণা, যাদের তৃতীয় জন হলেন আল্লাহ। –বুখারী ৪৬৬৩ [৩৬৫৩; মুসলিম ২৩৮১, তিরমিযী ৩০৯৬, আহমাদ ১২]

ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٤١)

এটাই তোমাদের জন্য সর্বোত্তম, তোমরা যদি জানতে!

لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ الشُّقَّةُ ط وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ج يُهْلِكُوْنَ أَنْفُسَهُمْ ج وَاللهُ يَعْلَمُ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ع (٤٢)

৪২. দুনিয়াবী কোন স্বার্থ থাকলে আর যাত্রা সহজ হলে তারা অবশ্যই তোমার সাথে যেত। কিন্তু পথ তাদের কাছে দীর্ঘ ও ভারী মনে হয়েছে। অচিরেই তারা আল্লাহ্‌র নামে হলফ করে বলবে, 'আমরা যদি পারতাম তাহলে অবশ্যই তোমাদের সঙ্গে বের হতাম।' আসলে তারা নিজেরাই নিজেদেরকে ধ্বংস করছে, আর আল্লাহ জানেন যে, তারা অবশ্যই মিথ্যেবাদী।

عَفَا اللهُ عَنْكَ ج لِمَ أَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ الْكٰذِبِيْنَ (٤٣)

৪৩. আল্লাহ তোমাকে মাফ করুন। কারা সত্য বলেছে তা স্পষ্ট না হতেই আর মিথ্যাবাদীদেরকে তুমি না চিনেই কেন তুমি তাদেরকে অব্যাহতি দিয়ে দিলে?

لَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ أَنْ يُّجَاهِدُوْا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ بِالْمُتَّقِيْنَ (٤٤)

৪৪. যারা আল্লাহ্‌য় ও শেষ দিনে বিশ্বাস করে তারা তাদের মাল দিয়ে আর জান দিয়ে জিহাদ করা থেকে অব্যাহতি পাওয়ার জন্য তোমার কাছে অনুমতি প্রার্থনা করে না। মুত্তাকীদের সম্পর্কে আল্লাহ খুবই অবগত আছেন।

إِنَّمَا يَسْتَأْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ (٤٥)

৪৫. তোমার কাছে অব্যাহতি প্রার্থনা তারাই করে যারা আল্লাহ্ ও শেষ দিবসে বিশ্বাস করে না, যাদের অন্তর সন্দেহপূর্ণ, কাজেই তারা তাদের সন্দেহের মধ্যে ঘুরপাক খাচ্ছে।

وَلَوْ أَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَأَعَدُّوْا لَهُ عُدَّةً وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللهُ انْبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ (٤٦)

৪৬. (যুদ্ধাভিযানে) বের হওয়ার তাদের যদি ইচ্ছেই থাকত তবে তারা সেজন্য অবশ্যই প্রস্তুতি নিত। কিন্তু তাদের অভিযানে গমনই আল্লাহ্‌র পছন্দ নয়, কাজেই তিনি তাদেরকে পশ্চাতে ফেলে রাখেন আর তাদেরকে বলা হয়, 'যারা (নিষ্ক্রিয় হয়ে) বসে থাকে তাদের সাথে বসে থাক'।

لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ إِلَّا خَبَالًا وَّلَأَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ

৪৭. তারা যদি তোমাদের সঙ্গে বের হত তাহলে বিশৃঙ্খলা ছাড়া আর কিছুই বাড়াত না আর তোমাদের মাঝে ফিতনা সৃষ্টির উদ্দেশে তোমাদের মাঝে ছুটাছুটি করত, আর তোমাদের মাঝে

الْفِتْنَةَ ج وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ط وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ (٤٧)

তাদের কথা শুনার লোক আছে। আল্লাহ যালিমদের সম্পর্কে খুব ভালভাবেই অবহিত আছেন।

لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ الْأُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ أَمْرُ اللّٰهِ وَهُمْ كٰرِهُوْنَ (٤٨)

৪৮. আগেও তারা ফিতনা সৃষ্টি করতে চেয়েছে আর তোমার অনেক কাজ নষ্ট করেছে যতক্ষণ না প্রকৃত সত্য এসে হাজির হল আর আল্লাহ্‌র বিধান প্রকাশিত হয়ে গেল যদিও এতে তারা ছিল নাখোশ।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ط أَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ط وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ (٤٩)

৪৯. তাদের মাঝে এমন লোক আছে যারা বলে, 'আমাকে অব্যাহতি দিন, আমাকে পরীক্ষায় ফেলবেন না।' জেনে রেখ, তারা তো ফিতনাতে পড়েই আছে। বস্তুতঃ জাহান্নাম কাফিরদেরকে চারদিক থেকে ঘিরেই রেখেছে।

إِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ج وَإِنْ تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ أَخَذْنَآ أَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ (٥٠)

৫০. তোমার মঙ্গল হলে তা তাদেরকে মনোকষ্ট দেয়, আর তোমার উপর বিপদ আসলে তারা খুশির সঙ্গে এ কথা বলতে বলতে সরে পড়ে যে, 'আমরা আগেই সাবধানতা অবলম্বন করেছিলাম।'

قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ إِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ج هُوَ مَوْلٰنَا ج وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (٥١)

৫১. বলে দাও, 'আল্লাহ আমাদের জন্য যা নির্দিষ্ট করে দিয়েছেন তাছাড়া অন্য কিছুই আমাদের ঘটবে না, তিনিই আমাদের রক্ষক, আর আল্লাহ্‌র উপরই মু'মিনদের ভরসা করা দরকার।'

قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ إِلَّآ إِحْدَى الْحُسْنَيَيْنِ ط وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ أَنْ يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ أَوْ بِأَيْدِيْنَا ق ز صلے فَتَرَبَّصُوْٓا إِنَّا مَعَكُمْ مُّتَرَبِّصُوْنَ (٥٢)

৫২. বল, 'তোমরা আমাদের জন্য যে জিনিসের অপেক্ষা করছ তা দু'টো ভালোর একটি ছাড়া আর কিছুই না (শাহাদাত কিংবা বিজয়) আর আমরা অপেক্ষা করছি এজন্য যে, আল্লাহ নিজেই তোমাদেরকে শাস্তি দেন অথবা আমাদের হাত দিয়ে দেয়ান। কাজেই অপেক্ষায় থাক, আমরা তোমাদের সাথে অপেক্ষায় থাকলাম।'

قُلْ أَنْفِقُوْا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ مِنْكُمْ ط إِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ (٥٣)

৫৩. বল, 'স্বেচ্ছায় দান কর আর অনিচ্ছায়, তোমাদের থেকে কক্ষনো তা গ্রহণ করা হবে না; তোমরা হলে এক ফাসিক সম্প্রদায়।'

وَمَا مَنَعَهُمْ أَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ إِلَّآ

৫৪. তাদের কাছ থেকে অর্থ সাহায্য গ্রহণ নিষিদ্ধ করার কারণ এ ছাড়া আর কিছু নয় যে তারা

أَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَأْتُوْنَ الصَّلٰوةَ إِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ إِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ (٥٤)

আল্লাহ ও তাঁর রসূলকে অস্বীকার করে, সলাতে আসলে আসে শৈথিল্যভরে আর দান করলেও করে অনিচ্ছা নিয়ে।

فَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَلَا أَوْلَادُهُمْ ط إِنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ (٥٥)

৫৫. কাজেই তাদের ধন-সম্পত্তি আর সন্তান-সন্ততি যেন তোমার চোখ ধাঁধিয়ে না দেয়, ওসব দিয়েই আল্লাহ দুনিয়াতে ওদেরকে শাস্তি দিতে চান আর কাফির অবস্থাতেই যেন তাদের জান বাহির হয়।

وَيَحْلِفُوْنَ بِاللهِ إِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ط وَمَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ (٥٦)

৫৬. তারা আল্লাহ্র নামে কসম করে বলে যে, তারা তোমাদেরই মধ্যের লোক, তারা কক্ষনো তোমাদের মধ্যের লোক নয়, প্রকৃতপক্ষে তারা ভীত-সন্ত্রস্ত লোক।

لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَأً أَوْ مَغٰرٰتٍ أَوْ مُدَّخَلًا لَّوَلَّوْا إِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ (٥٧)

৫৭. তারা পালিয়ে গিয়ে আশ্রয় নেয়ার জায়গা পেলে কিংবা গিরিগুহা বা ঢুকে থাকার মত জায়গা পেলে সেখানেই তারা ক্ষিপ্রগতিতে ছুটে যেত।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ج فَإِنْ أُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَإِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ إِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ (٥٨)

৫৮. তাদের মধ্যে এমন লোক আছে যারা সদাক্বাহ (বণ্টনের) ব্যাপারে তোমার প্রতি দোষারোপ করে, তাথেকে দেয়া হলে খুশি হয়, আর তাথেকে না দেয়া হলে সাথে সাথে ক্ষুব্ধ হয়ে পড়ে।

وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰهُمُ اللهُ وَرَسُوْلُهٗ لا وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللهُ سَيُؤْتِيْنَا اللهُ مِنْ فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ لا إِنَّآ إِلَى اللهِ رٰغِبُوْنَ ع (٥٩)

৫৯. আল্লাহ ও তাঁর রসূল তাদেরকে যা দিয়েছেন তারা যদি তাতে সন্তুষ্ট থাকত আর বলত, 'আমাদের জন্য আল্লাহ্ই যথেষ্ট, অচিরেই আল্লাহ অনুগ্রহ করে আমাদেরকে দিবেন আর তাঁর রসূলও, আমরা আশা ভরসা নিয়ে আল্লাহ্র দিকেই চেয়ে থাকি।'

إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ط

৬০. সদাক্বাহ হল ফকীর, মিসকীন ও তৎসংশ্লিষ্ট কর্মচারী ও যাদের মন জয় করা উদ্দেশ্য তাদের জন্য, দাসমুক্তি ও ঋণগ্রস্তদের জন্য, আল্লাহ্র পথে (ব্যয়ের জন্য) আর মুসাফিরের জন্য। এটা আল্লাহ কর্তৃক নির্ধারিত ফরয। আর আল্লাহ হলেন

فَرِيْضَةً مِّنَ اللهِ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٦٠)

সর্বজ্ঞ, মহাবিজ্ঞানী।

وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ هُوَ أُذُنٌ ط قُلْ أُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ط وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ رَسُوْلَ اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٦١)

৬১. তাদের মাঝে এমন লোকও আছে যারা নাবীকে কষ্ট দেয় আর বলে তিনি কান কথা শুনেন। বল, 'তোমাদের যাতে ভালো আছে সে তাই শোনে'। সে আল্লাহ্য় বিশ্বাস রাখে, আর মু'মিনদেরকেও বিশ্বাস করে, আর তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে তাদের জন্য রহমত। অপরপক্ষে আল্লাহ্র রসূলকে যারা কষ্ট দেয় তাদের জন্য রয়েছে ভয়াবহ 'আযাব।

يَحْلِفُوْنَ بِاللهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ج وَاللهُ وَرَسُوْلُهٗٓ أَحَقُّ أَنْ يُّرْضُوْهُ إِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ (٦٢)

৬২. তোমাদেরকে খুশি করার জন্য তারা তোমাদের সামনে আল্লাহ্র নামে কসম করে। তারা যদি মু'মিন হয়ে থাকে তবে কাউকে খুশি করতে চাইলে আল্লাহ ও তাঁর রসূলই এর সবচেয়ে বেশি হকদার।

أَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَأَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدًا فِيْهَا ط ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ (٦٣)

৬৩. তারা কি জানে না যে, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রসূলের বিরোধিতা করে তার জন্য আছে জাহান্নামের আগুন যেখানে সে হবে চিরস্থায়ী? আর এটা খুবই লাঞ্ছনার ব্যাপার।

يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ط قُلِ اسْتَهْزِءُوْا ج إِنَّ اللهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ (٦٤)

৬৪. মুনাফিকরা ভয় পায় তাদের মনের কথা প্রকাশ করে তাদের ব্যাপারে কোন সূরাহ নাযিল হয়ে যায় নাকি। বল, 'ঠাট্টা করতে থাক, তোমরা যে ব্যাপারে ভয় পাও, আল্লাহ তা প্রকাশ করে দিবেন'।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ وَنَلْعَبُ ط قُلْ أَبِاللهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ (٦٥)

৬৫. তাদেরকে জিজ্ঞেস করলে তারা জোর দিয়েই বলবে, 'আমরা হাস্য রস আর খেল-তামাশা করছিলাম।' বল, 'আল্লাহ, তাঁর আয়াত ও তাঁর রসূলকে নিয়ে তোমরা বিদ্রূপ করছিলে?'

৬০। আবূ সা'ঈদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) -এর কাছে কিছু জিনিস প্রেরণ করা হল। এরপর তিনি সেগুলো চারজনের মধ্যে বণ্টন করে দিলেন। আর বললেন, তাদেরকে (এর দ্বারা) ইসলামের প্রতি আকৃষ্ট করছি।...... হাদীসের শেষ পর্যন্ত। −বুখারী ৪৬৬৭ [৩৩৪৪; মুসলিম ১০৬৪, নাসায়ী ২৫৭৮, ৪১০১; আবূ দাউদ ৪৭৬৪, আহমাদ ১০৬২৫, ১০৮৭৪]

لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ ۗ إِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ طَآئِفَةً ۢ بِأَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ع (٦٦)

৬৬. ওযর পেশের চেষ্টা করো না, ঈমান আনার পর তোমরা কুফরী করেছ। তোমাদের মধ্যেকার কোন দলকে ক্ষমা করলেও অন্যদেরকে শাস্তি দেব, কারণ তারা অপরাধী।

اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ يَأْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ أَيْدِيَهُمْ ۗ نَسُوا اللهَ فَنَسِيَهُمْ ۗ إِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (٦٧)

৬৭. মুনাফিক পুরুষ আর মুনাফিক নারী সব এক রকম, তারা অন্যায় কাজের নির্দেশ দেয় আর সৎ কাজ করতে নিষেধ করে, (আল্লাহ্‌র পথে ব্যয় করার ব্যাপারে) হাত গুটিয়ে রাখে, তারা আল্লাহ্‌কে ভুলে গেছে, তাই তিনিও তাদেরকে ভুলে গেছেন। মুনাফিকরাই তো ফাসিক।

وَعَدَ اللهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ وَلَعَنَهُمُ اللهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۙ (٦٨)

৬৮. আল্লাহ মুনাফিক পুরুষ, মুনাফিক নারী ও কাফিরদের জন্য জাহান্নামের আগুনের ওয়া'দা দিয়েছেন, তাতে তারা চিরদিন থাকবে, তা-ই তাদের জন্য যথেষ্ট। তাদের উপর আছে আল্লাহ্‌র অভিশাপ, আর আছে তাদের জন্য স্থায়ী 'আযাব।

كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْآ أَشَدَّ مِنْكُمْ قُوَّةً وَّأَكْثَرَ أَمْوَالًا وَّأَوْلَادًا ۗ فَاسْتَمْتَعُوْا بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ كَالَّذِيْ خَاضُوْا ۗ أُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (٦٩)

৬৯. (তোমাদের কাজ-কারবার) তোমাদের আগের লোকেদের মতই, যারা ছিল তোমাদের চেয়ে অধিক শক্তির অধিকারী, আর ধন-মাল আর সন্তান-সন্ততিতেও তোমাদের চেয়ে অধিক সমৃদ্ধিশালী, তাদের প্রাপ্য অংশ তারা ভোগ করে গেছে, এখন তোমরাও তোমাদের প্রাপ্য অংশ ভোগ কর যেমন তোমাদের আগের লোকেরা তাদের প্রাপ্য অংশ ভোগ করেছে, আর তোমরা অনর্থক কথাবার্তায় লিপ্ত আছ যেমন তারা অনর্থক কথাবার্তায় লিপ্ত ছিল, এরাই হল তারা দুনিয়া ও আখেরাতে যাদের কাজ-কর্ম নিস্ফল হয়ে গেছে, আর তারাই ক্ষতিগ্রস্ত।

أَلَمْ يَأْتِهِمْ نَبَأُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ۬ وَقَوْمِ إِبْرَاهِيْمَ وَأَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ۗ أَتَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ

৭০. তাদের কাছে কি তাদের আগের লোকদের সংবাদ আসেনি, নূহের জাতি, 'আদ, সামূদ, ইব্‌রাহীমের সম্প্রদায় এবং মাদ্‌য়্যানের অধিবাসীবৃন্দ আর উল্টে দেয়া নগরসমূহের? তাদের কাছে তাদের রসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিল, আল্লাহ তাদের উপর যুল্‌ম করেননি, আসলে (তারাই তাদের অন্যায় কার্যকলাপের

كَانُوْٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (٧٠)

মাধ্যমে) নিজেদের আত্মার উপর যুল্ম করেছিল।

وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ـ يَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ ط أُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللهُ ط إِنَّ اللهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٧١)

৭১. মু'মিন পুরুষ আর মু'মিন নারী পরস্পর পরস্পরের বন্ধু, তারা সৎকাজের নির্দেশ দেয়, অন্যায় কাজ থেকে নিষেধ করে, নামায ক্বায়িম করে, যাকাত দেয়, আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করে। তাদের প্রতিই আল্লাহ করুণা প্রদর্শন করবেন। আল্লাহ তো প্রবল পরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাবান।

وَعَدَ اللهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ط وَرِضْوَانٌ مِّنَ اللهِ أَكْبَرُ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ع (٧٢)

৭২. মু'মিন পুরুষ আর মু'মিন নারীর জন্য আল্লাহ অঙ্গীকার করেছেন জান্নাতের যার নিম্নদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তাতে তারা চিরদিন থাকবে, আর জান্নাতে চিরস্থায়ী উত্তম বাসগৃহের; আর সবচেয়ে বড় (যা তারা লাভ করবে তা) হল আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টি। এটাই হল বিরাট সাফল্য।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ط وَمَأْوَاهُمْ جَهَنَّمُ ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (٧٣)

৭৩. হে নাবী! কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, তাদের প্রতি কঠোরতা অবলম্বন কর, তাদের বাসস্থান হল জাহান্নাম, আর তা কতই না নিকৃষ্ট আশ্রয়স্থল!

يَحْلِفُوْنَ بِاللهِ مَا قَالُوْا ط وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ إِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ج وَمَا نَقَمُوْٓا إِلَّآ أَنْ أَغْنٰهُمُ اللهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ج فَإِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ج وَإِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللهُ عَذَابًا أَلِيْمًا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج وَمَا لَهُمْ فِي الْأَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (٧٤)

৭৪. তারা আল্লাহ্‌র নামে শপথ করে বলে যে তারা (অন্যায়) কিছু বলেনি, কিন্তু তারা তো কুফরী কথা বলেছে আর ইসলাম গ্রহণ করার পরও কুফরী করেছে। তারা ষড়যন্ত্র করেছিল কিন্তু তাতে সফল হয়নি, তাদের এ প্রতিশোধ স্পৃহার কারণ এছাড়া আর কিছু ছিল না যে আল্লাহ করুণাবশতঃ ও তাঁর রসূল তাদেরকে সম্পদশালী করে দিয়েছেন। এখন যদি তারা অনুশোচনাভরে এ পথ থেকে ফিরে আসে তবে তা তাদের জন্যই কল্যাণকর। আর যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে আল্লাহ তাদেরকে দুনিয়া ও আখেরাতে ভয়াবহ শাস্তি দিবেন। পৃথিবীতে রক্ষক আর সাহায্যকারী হিসেবে কাউকে তারা পাবে না।

وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰنَا مِنْ فَضْلِهٖ لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (٧٥)

৭৫. তাদের মধ্যেকার কিছুলোক আল্লাহ্‌র সঙ্গে ওয়া'দা করেছিল, 'যদি তিনি আমাদেরকে তাঁর অনুগ্রহ হতে দান করেন তবে আমরা অবশ্যই দান করব আর অবশ্যই সৎ লোকদের মধ্যে শামিল থাকব।'

فَلَمَّآ اٰتٰهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ (٧٦)

৭৬. অতঃপর আল্লাহ যখন তাদেরকে স্বীয় করুণার দানে ধন্য করলেন, তখন তারা দান করার ব্যাপারে কার্পণ্য করল আর বে-পরোয়াভাবে মুখ ফিরিয়ে নিল।

فَأَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ إِلٰى يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَآ أَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ (٧٧)

৭৭. পরিণামে আল্লাহ্‌র সঙ্গে কৃত তাদের ওয়াদা ভঙ্গের কারণে এবং মিথ্যাচারে লিপ্ত থাকার কারণে তাদের অন্তরে মুনাফিকী বদ্ধমূল করে দিলেন; ঐ দিন পর্যন্ত যেদিন তারা তাঁর সাথে সাক্ষাৎ করবে।

أَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰهُمْ وَأَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ج (٧٨)

৭৮. তারা কি জানে না যে, আল্লাহ তাদের গোপন কথাবার্তা আর গোপন পরামর্শ সম্পর্কে অবহিত আছেন আর আল্লাহ তো যাবতীয় অদৃশ্য সম্পর্কে সবচেয়ে বেশি অবগত আছেন।

اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ إِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ط سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ز وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٧٩)

৭৯. মু'মিনদের মধ্যে যারা মুক্ত হস্তে দান করে, তাদেরকে যারা দোষারোপ করে আর সীমাহীন কষ্টে দানকারীদেরকে যারা বিদ্রূপ করে আল্লাহ তাদেরকে জবাবে বিদ্রূপ করেন আর তাদের জন্য রয়েছে ভয়াবহ শাস্তি।

إِسْتَغْفِرْ لَهُمْ أَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ط إِنْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ

৮০. তুমি তাদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা কর বা না কর (উভয়ই সমান), তুমি তাদের জন্য সত্তর বার ক্ষমা প্রার্থনা করলেও আল্লাহ কক্ষনো তাদেরকে ক্ষমা করবেন না। এটা এজন্য যে, তারা আল্লাহ

৭৯। আবূ মাস'উদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যখন আমাদের সদাকাহ্ দানের আদেশ দেয়া হল, তখন আমরা মজুরীর বিনিময়ে বোঝা বহন করতাম। একদিন আবূ 'আকীল (রাঃ) অর্ধ সা' খেজুর (দান করার উদ্দেশে) নিয়ে আসলেন এবং অন্য এক ব্যক্তি ('আবদুর রহমান ইবনু 'আওফ) তার চেয়ে অধিক মালামাল নিয়ে উপস্থিত হলেন। মুনাফিকরা বলতে লাগল, আল্লাহ এ ব্যক্তির সদাকাহ্‌র মুখাপেক্ষী নন। আর দ্বিতীয় ব্যক্তি ['আবদুর রহমান ইবন 'আওফ (রাঃ)] শুধু মানুষ দেখানোর জন্য অধিক মালামাল দান করেছে। এ সময় এ আয়াতটি অবতীর্ণ হয়– "মু'মিনদের মধ্যে যারা স্বতঃস্ফূর্তভাবে সদাকাহ দেয় এবং যারা নিজেদের পরিশ্রমলব্ধ বস্তু ব্যতীত ব্যয় করার কিছুই পায় না, তাদেরকে যারা দোষারোপ করে ও ঠাট্টা-বিদ্রূপ করে, আল্লাহ তাদের বিদ্রূপ করেন। তাদের জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।" –বুখারী ৪৬৬৮ [১৪১৫; মুসলিম ১০১৮, ২৫২৯, ২৫৩০; ইবনু মাজাহ ৪১৫৫]

لَهُمْ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ع (٨٠)

ও তাঁর রসূলের সাথে কুফুরী করেছে। আর আল্লাহ ফাসিক লোকদেরকে সঠিক পথ প্রদর্শন করেন না।

فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ؕ قُلْ نَارُ جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ؕ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ (٨١)

৮১. (তাবুক অভিযানে) যারা পিছনে থেকে গিয়েছিল তারা রসূলের বিরোধিতায় বসে থাকাতেই আনন্দ প্রকাশ করেছিল আর তাদের ধন-সম্পদ ও জান দিয়ে আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করতে তারা অপছন্দ করেছিল। তারা বলেছিল, 'গরমের মধ্যে অভিযানে বেরিও না'। বল, 'জাহান্নামের আগুনই তাপে প্রচণ্ডতম'। তারা যদি বুঝত!

فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٨٢)

৮২. তারা যেন কম হাসে এবং বেশী কাঁদে, তারা যে (পাপ) কামাই করছে তার ফলস্বরূপ।

فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ؕ اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ (٨٣)

৮৩. আল্লাহ যদি তোমাকে তাদের কোন দলের কাছে ফিরিয়ে নিয়ে আসেন আর যদি তারা (তোমার সঙ্গে) অভিযানে বের হবার জন্য অনুমতি প্রার্থনা করে তখন বলবে, 'আমার সাথে কক্ষনো বের হতে পারবে না আর কক্ষনো আমার সঙ্গে গিয়ে শত্রুর বিরুদ্ধে লড়তে পারবে না, তোমরা প্রথমবারেই নিষ্ক্রিয় হয়ে বসে থাকাকেই বেশি পছন্দ করে নিয়েছো, কাজেই (এখন) পিছ-পড়াদের সাথেই বসে থাক'।

৮০-৮৪। ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'আবদুল্লাহ ইবনু উবাই মারা গেল, তখন তার ছেলে 'আবদুল্লাহ ইবনু 'আবদুল্লাহ (রাঃ) রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর দরবারে আসলেন এবং তার পিতাকে রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর জামাটি দিয়ে কাফন দেবার আবেদন করলেন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) জামা প্রদান করলেন, এরপর তিনি জানাযার নামায আদায়ের জন্য নাবী (ﷺ) -এর কাছে আবেদন জানালেন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) জানাযার নামায পড়ানোর জন্য (বসা থেকে) উঠে দাঁড়ালেন, ইত্যবসরে 'উমার (রাঃ) রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাপড় টেনে ধরে আবেদন করলেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আপনি কি তার জানাযার নামায আদায় করতে যাচ্ছেন? অথচ আপনার রব আপনাকে তার জন্য দু'আ করতে নিষেধ করেছেন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, আল্লাহ তা'আলা এ ব্যাপারে আমাকে (দু'আ) করা বা না করার সুযোগ দিয়েছেন। আর আল্লাহ তো ইরশাদ করেছেন, "তুমি তাদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা কর আর না কর; যদি সত্তরবারও তাদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা কর তবু আমি তাদের ক্ষমা করব না"। সুতরাং আমি তার জন্য সত্তরবারের চেয়েও বেশি ক্ষমা প্রার্থনা করব। 'উমার (রাঃ) বললেন, সে তো মুনাফিক, শেষ পর্যন্ত রসূলুল্লাহ (ﷺ) তার জানাযার নামায আদায় করলেন, এরপর এ আয়াত অবতীর্ণ হয়– "তাদের (মুনাফিকদের) কেউ মারা গেলে আপনি কক্ষনো তাদের জানাযাহ্‌র নামায আদায় করবেন না এবং তাদের কবরের কাছেও দাঁড়াবেন না। –বুখারী ৪৬৭০ [১২৬৯; মুসলিম ২৪০০, ২৭৭৪; তিরমিযী ৩০৯৮, নাসায়ী ১৯০০, ইবনু মাজাহ ১৫২৩, আহমাদ ৪৬৬৬]

৮৪. তাদের কেউ মারা গেলে তুমি কক্ষনো তাদের জন্য (জানাযার) নামায পড়বে না, আর তাদের কবরের পাশে দণ্ডায়মান হবে না। তারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের সঙ্গে কুফুরী করেছে আর বিদ্রোহী পাপাচারী অবস্থায় তাদের মৃত্যু হয়েছে।

وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى أَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ أَبَدًا وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ط إِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ (٨٤)

৮৫. তাদের মালধন আর সন্তান-সন্ততি তোমার যেন চোখ ধাঁধিয়ে না দেয়, দুনিয়াতে আল্লাহ সে সব দিয়েই তাদেরকে শাস্তি দেয়ার ইচ্ছে করেন আর কাফির অবস্থায় যেন তাদের প্রাণবায়ু নির্গত হয়।

وَلَا تُعْجِبْكَ أَمْوَالُهُمْ وَأَوْلَادُهُمْ ط إِنَّمَا يُرِيْدُ اللهُ أَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ أَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ (٨٥)

৮৬. যখন কোন সূরাহ অবতীর্ণ করা হয় যে, ‘আল্লাহ্‌র প্রতি বিশ্বাস স্থাপন কর আর তাঁর রসূলের সঙ্গে থেকে জিহাদ কর’- তখন শক্তি-সামর্থ্য সম্পন্ন লোকেরা তোমার নিকট অব্যাহতি প্রার্থনা করে আর বলে, ‘আমাদেরকে রেহাই দিন, যারা (ঘরে) বসে থাকে আমরা তাদের সঙ্গেই থাকব।’

وَإِذَآ أُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ أَنْ اٰمِنُوْا بِاللهِ وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَأْذَنَكَ أُولُوا الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ (٨٦)

৮৭. তারা পিছনে (ঘরে বসে) থাকা স্ত্রীলোকদের সাথে থাকাকেই পছন্দ করে, তাদের হৃদয়কে সীল করে দেয়া হয়েছে, কাজেই তারা কিছুই বুঝতে পারে না।

رَضُوْا بِأَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ (٨٧)

৮৮. কিন্তু রসূল আর তার সাথে যারা ঈমান এনেছে তারা তাদের মাল দিয়ে এবং জান দিয়ে জিহাদ করে। যাবতীয় কল্যাণ তো তাদেরই জন্য। সফলকাম তো তারাই।

لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ جٰهَدُوْا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ ط وَأُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْخَيْرٰتُ ز وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٨٨)

৮৯. আল্লাহ তাদের জন্য জান্নাত প্রস্তুত করে রেখেছেন যার নিম্নদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত যাতে তারা চিরকাল থাকবে। এটাই হল বিরাট সফলতা।

أَعَدَّ اللهُ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ع (٨٩)

৯০. বেদইনদের মধ্যেও ওজর-আপত্তি পেশকারীরা এসে অব্যাহতির আবেদন জানালো। যারা (নিজেদের ঈমান থাকার ব্যাপারে) আল্লাহ ও তাঁর রসূলের নিকট মিথ্যা বলেছিল তারাও পিছনে রয়ে গেল। তাদের (অর্থাৎ বেদুইনদের) মধ্যে

وَجَآءَ الْمُعَذِّرُوْنَ مِنَ الْأَعْرَابِ لِيُؤْذَنَ لَهُمْ وَقَعَدَ الَّذِيْنَ كَذَبُوا اللهَ وَرَسُوْلَهٗ ط

سَيُصِيْبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٩٠)

যারা কুফুরী করেছে শীঘ্রই এক ভয়ঙ্কর 'আযাব তাদেরকে পাকড়াও করবে।

لَيْسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الْمَرْضٰى وَلَا عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ مَا يُنْفِقُوْنَ حَرَجٌ إِذَا نَصَحُوْا لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ط مَا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ مِنْ سَبِيْلٍ ط وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ لا (٩١)

৯১. দুর্বলের উপর, পীড়িতের উপর আর ব্যয় করার মত কোন সম্বল যাদের নেই তাদের উপর কোন অভিযোগ নেই, যদি তারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি বিশ্বস্ত হয়ে থাকে। সৎ কর্মপরায়ণদের বিরুদ্ধে অভিযোগ উত্থাপন করার কোন সুযোগ নেই, আর আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَّلَا عَلَى الَّذِيْنَ إِذَا مَآ أَتَوْكَ لِتَحْمِلَهُمْ قُلْتَ لَآ أَجِدُ مَآ أَحْمِلُكُمْ عَلَيْهِ ص تَوَلَّوْا وَّأَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ حَزَنًا أَلَّا يَجِدُوْا مَا يُنْفِقُوْنَ ط (٩٢)

৯২. তাদের বিরুদ্ধেও কোন অভিযোগ নেই যারা তোমার কাছে যখন বাহন চাওয়ার জন্য এসেছিল তখন তুমি বলেছিলে, 'আমি তো তোমাদের জন্য কোন বাহন পাচ্ছি না'। তখন তারা ফিরে গেল, আর সে সময় তাদের চোখ থেকে অশ্রু ঝরে পড়ছিল- এ দুঃখে যে, ব্যয় বহন করার মত কোন কিছু তাদের ছিল না।

إِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَسْتَأْذِنُوْنَكَ وَهُمْ أَغْنِيَآءُ ج رَضُوْا بِأَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ لا وَطَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٩٣)

৯৩. অভিযোগ তো তাদের বিরুদ্ধে যারা সম্পদশালী হওয়া সত্ত্বেও (যুদ্ধে যাওয়া হতে) তোমার কাছে অব্যাহতি প্রার্থনা করেছিল, যারা ঘরে বসা থাকা (স্ত্রী লোকদের) সঙ্গে থাকতেই পছন্দ করেছিল, আল্লাহ তাদের হৃদয়কে সীল করে দিয়েছেন আর এজন্য (কিসে নিজেদের কল্যাণ আছে আর কিসে অকল্যাণ) তা তারা জানে না।

يَعْتَذِرُوْنَ إِلَيْكُمْ إِذَا رَجَعْتُمْ إِلَيْهِمْ ط قُلْ لَّا تَعْتَذِرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكُمْ قَدْ نَبَّأَنَا اللهُ مِنْ أَخْبَارِكُمْ ط وَسَيَرَى اللهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ إِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٩٤)

৯৪। তোমরা তাদের কাছে (যুদ্ধ শেষে) ফিরে আসলে তারা তোমাদের কাছে ওজর পেশ করবে। বল- ওজর পেশ করো না, তোমাদেরকে আমরা কক্ষনো বিশ্বাস করব না। আল্লাহ তোমাদের খবর আমাদের কাছে জানিয়ে দিয়েছেন। আল্লাহ ও তাঁর রসূল অবশ্যই তোমাদের কাজকর্মের প্রতি দৃষ্টি রাখবেন। অতঃপর দৃশ্য ও অদৃশ্য সম্পর্কে যিনি জ্ঞাত তাঁর কাছে তোমাদেরকে ফিরিয়ে নেয়া হবে, অতঃপর তোমরা যা করতে সে সম্পর্কে তিনি তোমাদের জানিয়ে দিবেন।

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللهِ لَكُمْ إِذَا انْقَلَبْتُمْ إِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ط فَأَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ط إِنَّهُمْ رِجْسٌ ز وَّمَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٩٥)

৯৫। তোমরা তাদের কাছে ফিরে আসলে তারা তোমাদের নিকট আল্লাহ্‌র নামে শপথ করবে যাতে তোমরা তাদেরকে উপেক্ষা কর। কাজেই তোমরা তাদেরকে উপেক্ষা কর, তারা অপবিত্র, তাদের বাসস্থান জাহান্নাম, তারা যা করেছে এটাই তার ন্যায্য প্রাপ্য।

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ج فَإِنْ تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَإِنَّ اللهَ لَا يَرْضٰى عَنِ الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (٩٦)

৯৬। তারা তোমাদের কাছে শপথ করবে যাতে তোমরা তাদের উপর খুশি হয়ে যাও, কিন্তু তোমরা তাদের উপর খুশি হলেও, আল্লাহ অবাধ্য সম্প্রদায়ের প্রতি সন্তুষ্ট হবেন না।

اَلْأَعْرَابُ أَشَدُّ كُفْرًا وَّنِفَاقًا وَّأَجْدَرُ

৯৭। বেদুঈন আরবরা কুফরী আর মুনাফিকীতে সবচেয়ে কঠোর, আর আল্লাহ তাঁর রসূলের প্রতি যা

৯৪। ....(তাবূকের যুদ্ধে) অনুপস্থিতদের মধ্যে যারা রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে মিথ্যা কথা বলেছে এবং যারা মিথ্যা অজুহাত দেখিয়েছে তাদের জঘন্যভাবে নিন্দাবাদ করা হয়েছে। আল্লাহ তা'আলা ইরশাদ করেন, "তারা তোমাদের কাছে ওযর পেশ করবে যখন তোমরা তাদের কাছে ফিরে আসবে। আপনি বলে দিনঃ তোমরা ওযর পেশ করো না, আমরা কখনও তোমাদের বিশ্বাস করব না; আল্লাহ তো আমাদের জানিয়ে দিয়েছেন তোমাদের খবর; আর ভবিষ্যতেও আল্লাহ তোমাদের কার্যকলাপ লক্ষ্য রাখবেন এবং তাঁর রসূলও।" -বুখারী ৪৬৭৭ [২৭৫৭]

৯৫-৯৬। 'আবদুল্লাহ ইবনু কা'ব ইবনু মালিক (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি কা'ব ইবনু মালিক (রাঃ)-কে বলতে শুনেছি, তিনি যখন তাবূকের যুদ্ধে পিছনে রয়ে গেলেন, ঐ ঘটনা বর্ণনা করতে গিয়ে বলেন: আল্লাহ্‌র কসম! তখন আল্লাহ আমাকে এমন এক নিয়ামত দান করেন যে মুসলিম হওয়ার পর থেকে এ পর্যন্ত এত বড় নিয়ামত পাইনি। তা হল রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে সত্য কথা প্রকাশ করা। আমি তাঁর কাছে মিথ্যা বলিনি। যদি মিথ্যা বলতাম, তবে অন্যান্য (মুনাফিক ও) মিথ্যাচারী যেভাবে ধ্বংস হয়েছে, আমিও সেভাবে ধ্বংস হয়ে যেতাম। সে সময় ওয়াহী অবতীর্ণ হল- "তারা তোমাদের সামনে কসম করবে যাতে তোমরা তাদের প্রতি রাজি হও। যদি তোমরা তাদের প্রতি রাজি হয়ে যাও তবুও আল্লাহ এসব ফাসিক লোকদের প্রতি রাজি হবেন না।" -বুখারী ৪৬৭৩ [২৭৫৭; মুসলিম ২৭৬৯, তিরমিযী ৩১০২, নাসায়ী ৩৮২৪-৩৮২৬, আবূ দাঊদ ২২০২, ৩৩১৭, ৩৩১৯, ৩৩২১, ৪৬০০; আহমাদ ১৫৩৪৩, ১৫৩৪৫]

أَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَآ أَنْزَلَ اللهُ عَلَى رَسُوْلِهٖ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٩٧)

অবতীর্ণ করেছেন তার সীমারেখার ব্যাপারে অজ্ঞ থাকার তারা অধিক উপযুক্ত, আর আল্লাহ সর্বজ্ঞ, মহা প্রজ্ঞাবান।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ط عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ط وَاللهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٩٨)

৯৮। কতক বেদুঈন যা তারা আল্লাহর পথে ব্যয় করে তাকে জরিমানা বলে গণ্য করে আর তোমাদের দুঃখ মুসিবতের জন্য অপেক্ষা করতে থাকে, মন্দের চক্র তাদেরকেই ঘিরে ধরুক। আর আল্লাহ তো সব কিছুই শুনেন, সব কিছু জানেন।

وَمِنَ الْأَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللهِ وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ط أَلَآ إِنَّهَا قُرْبَةٌ لَّهُمْ ط سَيُدْخِلُهُمُ اللهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (٩٩)

৯৯। কতক বেদুঈন আল্লাহতে ও শেষ দিবসে বিশ্বাস করে আর তারা যা আল্লাহর পথে ব্যয় করে তাকে তারা আল্লাহর নৈকট্য ও রসূলের দু'আ লাভের মাধ্যম মনে করে, সত্যিই তা তাদের (আল্লাহ্র) নৈকট্য লাভের মাধ্যম, অচিরেই আল্লাহ তাদেরকে তাঁর রহমাতের মধ্যে প্রবিষ্ট করবেন, অবশ্যই আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

وَالسّٰبِقُوْنَ الْأَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ وَالْأَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِإِحْسَانٍ لا رَّضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ تَحْتَهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١٠٠)

১০০। মুহাজির ও আনসারদের মধ্যে যারা প্রথম সারির অগ্রণী আর যারা তাদেরকে যাবতীয় সৎকর্মে অনুসরণ করেছে, আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট আর তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট, তাদের জন্য তিনি প্রস্তুত করে রেখেছেন জান্নাত যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, সেখানে তারা চিরকাল থাকবে। এটাই হল মহান সফলতা।

وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْأَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ط وَمِنْ أَهْلِ الْمَدِيْنَةِ قف مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ قف لَا تَعْلَمُهُمْ ط نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ط سَنُعَذِّبُهُمْ مَّرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ إِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ج (١٠١)

১০১। তোমাদের চতুষ্পার্শ্বে কতক বেদুঈন হল মুনাফিক, আর মাদীনাবাসীদের কেউ কেউ মুনাফিকীতে অনড়, তুমি তাদেরকে চেন না, আমি তাদেরকে চিনি, আমি তাদেরকে দ্বিগুণ শাস্তি দেব, (ক্ষুধা বা নিহত হওয়া এবং কবরের শাস্তি) অতঃপর তাদেরকে মহা শাস্তির পানে ফিরিয়ে আনা হবে।

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ط عَسَى اللهُ أَنْ يَّتُوْبَ

১০২। আর অন্য কতক লোক তাদের অপরাধ স্বীকার করেছে, তারা একটি সৎ কাজের সাথে আরেকটি মন্দ কাজকে মিশ্রিত করেছে, আশা করা

عَلَيْهِمْ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٠٢)

যায় আল্লাহ তাদের তাওবা কবুল করবেন, অবশ্যই আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, অতীব দয়ালু।

خُذْ مِنْ أَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ط إِنَّ صَلٰوتَكَ سَكَنٌ لَّهُمْ ط وَاللهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (١٠٣)

১০৩। তাদের সম্পদ থেকে সদাকাহ গ্রহণ করবে যাতে তা দিয়ে তাদেরকে পবিত্র ও পরিশুদ্ধ করতে পার। তুমি তাদের জন্য দু'আ করবে, বস্তুতঃ তোমার দু'আ তাদের জন্য স্বস্তিদায়ক, আর আল্লাহ সবকিছু শোনেন সব কিছু জানেন।

أَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَأْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَأَنَّ اللهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ (١٠٤)

১০৪। তারা কি জানে না যে, আল্লাহ তাঁর বান্দাদের (অনুশোচনাপূর্ণ) ক্ষমাপ্রার্থনা কবুল করে থাকেন আর সদাকাহ গ্রহণ করেন। আর আল্লাহই তো তাওবাহ কবূলকারী, অতি দয়ালু।

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللهُ عَمَلَكُمْ وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ط وَسَتُرَدُّوْنَ إِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ج (١٠٥)

১০৫। বল, তোমরা আমল করতে থাক। অচিরেই আল্লাহ তোমাদের আমালের প্রতি লক্ষ্য রাখবেন এবং তাঁর রসূল ও মু'মিনগণও (লক্ষ্য রাখবে), আর অচিরেই তোমাদেরকে দৃশ্য ও অদৃশ্যের পরিজ্ঞাতার দিকে ফিরিয়ে আনা হবে, আর তিনি তখন তোমরা যে আমল করছিলে তা তোমাদের জানিয়ে দিবেন।

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِأَمْرِ اللهِ إِمَّا يُعَذِّبُهُمْ وَإِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (١٠٦)

১০৬। আর কতক আল্লাহ্র ফায়সালার অপেক্ষায় থাকল, তিনি তাদেরকে শাস্তি দিবেন অথবা তাদের তাওবাহ কবূল করবেন; আল্লাহ সর্বজ্ঞ, বড়ই প্রজ্ঞাময়।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا وَّتَفْرِيْقًا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَإِرْصَادًا لِّمَنْ

১০৭। আর যারা মাসজিদ তৈরী করেছে ক্ষতিসাধন, কুফুরী আর মু'মিনদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টির উদ্দেশে, আর যে ব্যক্তি ইতোপূর্বে আল্লাহ ও

১০২। সামূরাহ্ ইবনু জুনদুব (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) আমাদের বলেছেন, রাতে দু'জন ফেরেশতা এসে আমাকে নিদ্রা থেকে জাগ্রত করলেন। এরপর আমরা এমন এক শহরে পৌছলাম, যা স্বর্ণ ও রৌপ্যের ইট দ্বারা নির্মিত। সেখানে এমন কিছু সংখ্যক লোকের সঙ্গে আমাদের সাক্ষাৎ ঘটল, যাদের শরীরের অর্ধেক খুবই সুশ্রী যা তোমরা কখনও দেখনি এবং আর বাকী অর্ধেক এত কুৎসিত যা তোমরা কখনও দেখনি। ফেরেশতা দু'জন তাদেরকে বললেন, তোমরা ঐ ঝর্ণায় গিয়ে ডুব দাও। তারা সেখানে গিয়ে ডুব দিয়ে আমাদের নিকট ফিরে আসল। তখন তাদের বিশ্রী চেহারা সম্পূর্ণ দূর হয়ে গেল এবং তারা সুশ্রী চেহারা লাভ করল। ফেরেশতাদ্বয় আমাকে বললেন, এটা হল 'জান্নাতে আদন' এটাই হল আপনার আসল ঠিকানা। ফেরেশতাদ্বয় বললেন, (আপনি) যেসব লোকের দেহের অর্ধেক সুশ্রী এবং অর্ধেক বিশ্রী (দেখেছেন), তারা ঐ সকল লোক যারা দুনিয়াতে সৎকর্মের সঙ্গে অসৎকর্ম মিশিয়ে ফেলেছে। আল্লাহ তা'আলা দয়া করে তাদের ক্ষমা করে দিয়েছেন। –বুখারী ৪৬৭৪ [৮৪৫; মুসলিম ২২৭৫, তিরমিযী ২২৯৪, আহমাদ ১৯৫৯০, ১৯৫৯৫]

حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ؕ وَلَيَحْلِفُنَّ إِنْ أَرَدْنَآ إِلَّا الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١٠٧)

তাঁর রসূলের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করেছে তার ঘাঁটি হিসেবে ব্যবহারের নিমিত্তে, তারা অবশ্য অবশ্যই শপথ করবে যে, আমাদের উদ্দেশ্য সৎ ব্যতীত নয়। আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে তারা অবশ্যই মিথ্যাবাদী।

لَا تَقُمْ فِيْهِ أَبَدًا ؕ لَمَسْجِدٌ أُسِّسَ عَلَى التَّقْوٰى مِنْ أَوَّلِ يَوْمٍ أَحَقُّ أَنْ تَقُوْمَ فِيْهِ ؕ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ أَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ (١٠٨)

১০৮। তুমি ওর ভিতরে কক্ষনো দাঁড়াবে না। প্রথম দিন থেকেই যে মাসজিদের ভিত্তি তাকওয়ার উপর প্রতিষ্ঠিত, তোমার দাঁড়ানোর জন্য সেটাই অধিক উপযুক্ত, সেখানে এমন সব লোক আছে যারা পবিত্রতা লাভ করতে ভালবাসে, আর আল্লাহ পবিত্রতা লাভকারীদের ভালবাসেন।

أَفَمَنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهٖ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (١٠٩)

১০৯। কে উত্তম যে তার ভিত্তি আল্লাহভীরুতা ও আল্লাহর সন্তুষ্টির উপর স্থাপন করে সে, না ঐ ব্যক্তি যে তার ভিত্তি স্থাপন করে পতনোম্মুখ একটি ধ্বসের কিনারায় যা তাকে নিয়ে জাহান্নামের আগুনে ধ্বসে পড়বে? আল্লাহ যালিমদের সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِيْ بَنَوْا رِيْبَةً فِيْ قُلُوْبِهِمْ إِلَّآ أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ع (١١٠)

১১০। তাদের তৈরি ঘরটি তাদের অন্তরে সদা-সর্বদা সন্দেহের উদ্রেক করে যাবে যে পর্যন্ত না তাদের হৃদয়গুলো ছিন্ন ভিন্ন হয়ে যায়। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, মহা প্রজ্ঞাময়।

إِنَّ اللّٰهَ اشْتَرٰى مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ أَنْفُسَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ؕ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيَقْتُلُوْنَ وَيُقْتَلُوْنَ قف وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرٰىةِ وَالْإِنْجِيْلِ وَالْقُرْاٰنِ ؕ وَمَنْ أَوْفٰى بِعَهْدِهٖ مِنَ اللّٰهِ فَاسْتَبْشِرُوْا بِبَيْعِكُمُ الَّذِيْ بَايَعْتُمْ بِهٖ ؕ

১১১। নিশ্চয় আল্লাহ মু'মিনদের কাছ থেকে তাদের জান আর মাল কিনে নিয়েছেন কারণ তাদের জন্য (বিনিময়ে) আছে জান্নাত। তারা আল্লাহর পথে যুদ্ধ করে। অতঃপর (দুশমনদের) হত্যা করে এবং (নিজেরা) নিহত হয়। এ ওয়া'দা তাঁর উপর অবশ্যই পালনীয় যা আছে তাওরাত, ইঞ্জিল ও কুরআনে। আল্লাহর চেয়ে আর কে বেশী নিজ ওয়া'দা পালনকারী? কাজেই তোমরা যে ক্রয় বিক্রয় সম্পন্ন করেছ তার জন্য আনন্দিত হও, আর

وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١١١)

এটাই হল মহান সফলতা।

اَلتَّآئِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّآئِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَالنَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللهِ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ (١١٢)

১১২। তারা অনুশোচনাভরে (আল্লাহ্র দিকে) প্রত্যাবর্তনকারী, 'ইবাদাতকারী, আল্লাহ্র প্রশংসাকারী, রোযা পালনকারী, রুকু'কারী, সাজদাহ্কারী, সৎকাজের আদেশ দানকারী, অন্যায় কাজ হতে নিষেধকারী, আল্লাহর নির্ধারিত সীমা সংরক্ষণকারী, কাজেই (এসব) মু'মিনদেরকে সুসংবাদ দাও।

مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ اَنْ يَّسْتَغْفِرُوْا لِلْمُشْرِكِيْنَ وَلَوْ كَانُوْا أُولِيْ قُرْبٰى مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ (١١٣)

১১৩। নাবী ও মু'মিনদের জন্য শোভনীয় নয় মুশরিকদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করা, তারা আত্মীয়-স্বজন হলেও, যখন এটা তাদের কাছে সুস্পষ্ট যে, তারা জাহান্নামের অধিবাসী।

وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرٰهِيْمَ لِأَبِيْهِ إِلَّا عَنْ مَّوْعِدَةٍ وَّعَدَهَآ إِيَّاهُ ج فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗٓ أَنَّهٗ عَدُوٌّ لِّلّٰهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ؕ إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيْمٌ (١١٤)

১১৪। ইব্রাহীমের পিতার জন্য ক্ষমা প্রার্থনার ব্যাপারটি কেবলমাত্র তার প্রতিশ্রুতি রক্ষার্থে যা সে তার পিতাকে দিয়েছিল। কিন্তু যখন এটা তার কাছে স্পষ্ট হয়ে গেল যে, সে আল্লাহর শত্রু, তখন সে তার থেকে সম্পর্ক ছিন্ন করল; ইবরাহীম ছিল অতি কোমল হৃদয়, সহিষ্ণু।

وَمَا كَانَ اللهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ

১১৫। আল্লাহ কোন সম্প্রদায়কে হিদায়াত দানের পর তাদেরকে গুমরাহ করেন না যে পর্যন্ত না তিনি

১১১। 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু মাস'উদ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আল্লাহর রসূল (ﷺ) -কে জিজ্ঞেস করলাম, 'হে আল্লাহর রসূল! কোন্ কাজ সর্বোত্তম?' তিনি বললেন, 'সময় মত নামায আদায় করা।' আমি বললাম, 'অতঃপর কোন্টি?' তিনি বলেন, 'অতঃপর পিতা-মাতার সঙ্গে সদাচরণ করা।' আমি বললাম, 'অতঃপর কোন্টি?' তিনি বললেন, 'আল্লাহ্র পথে জিহাদ।' অতঃপর আল্লাহর রসূল (ﷺ) -কে আর কিছু জিজ্ঞেস না করে আমি চুপ রইলাম। আমি যদি আরো বলতাম, তবে তিনি আরও অধিক বলতেন। বুখারী ২৭৮২ [৫২৭; মুসলিম ৮৫, তিরমিযী ১৭৩, ১৮৯৮; নাসায়ী ৬১০, ৬১১; আহমাদ ৩৮৮০, ৩৯৬৩; দারিমী ১২২৫]

১১৩। মুসাইয়্যাব (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আবূ ত্বালিবের মৃত্যু ঘনিয়ে আসলে নাবী (ﷺ) তার কাছে গেলেন। এ সময় আবূ জাহ্ল এবং 'আবদুল্লাহ ইবনু আবূ উমাইয়াহ্ও সেখানে বসা ছিল। নাবী (ﷺ) বললেন, হে চাচা! আপনি পড়ুন 'লা ইলাহা ইল্লাল্লাহ'। আপনার মুক্তির জন্য আল্লাহ্র নিকট এটা দলীল হিসেবে পেশ করব। এ কথা শুনে আবূ জাহ্ল ও 'আবদুল্লাহ ইবনু উমাইয়াহ বলল, হে আবূ ত্বালিব! তুমি কি 'আবদুল মুত্তালিবের ধর্ম ত্যাগ করে দিবে? নাবী (ﷺ) বললেন, হে চাচা! আমি আপনার জন্য আল্লাহ্র তরফ থেকে যতক্ষণ আমাকে নিষেধ না করা হবে ততক্ষণ ক্ষমা চাইতে থাকব। তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হয়– "নাবী ও মুমিনদের পক্ষে উচিত নয় যে, তারা ক্ষমা প্রার্থনা করবে মুশরিকদের জন্য যদি তারা নিকটাত্মীয়ও হয় যখন তাদের কাছে এ কথা স্পষ্ট হয়ে গেছে যে, তারা জাহান্নামী"– (সূরাহ বারাআত ৯/১১৩)। –বুখারী ৪৬৭৫ [১৩৬০; মুসলিম ২৪, নাসায়ী ২০৩৫, আহমাদ ২৩১৬২]

هَدٰىهُمْ حَتّٰى يُبَيِّنَ لَهُمْ مَّا يَتَّقُوْنَ ط إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (١١٥)

তাদের কাছে স্পষ্ট করে দেন কোন্ বিষয়ে তাদেরকে তাকওয়া অবলম্বন করতে হবে। আল্লাহ হলেন সর্ব বিষয়ে সর্বাধিক অবহিত।

إِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ ط وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (١١٦)

১১৬। আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর রাজত্ব আল্লাহ্‌রই, তিনিই জীবন দান করেন আর তিনিই মৃত্যু ঘটান। আল্লাহ ছাড়া তোমাদের নেই কোন অভিভাবক, নেই কোন সাহায্যকারী।

لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ وَالْأَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ ط إِنَّهٗ بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ لا (١١٧)

১১৭। আল্লাহ অনুগ্রহ করেছেন নাবীর প্রতি, এবং মুহাজির ও আনসারদের প্রতি যারা সংকটকালে তাকে অনুসরণ করেছিল। এমনকি তাদের মধ্যে কিছু লোকের অন্তর বেঁকে যাওয়ার উপক্রম হওয়ার পরেও আল্লাহ তাদেরকে ক্ষমা করে দিয়েছিলেন। তিনি তাদের প্রতি বড়ই স্নেহশীল, বড়ই দয়ালু।

وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا ط حَتّٰى إِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْأَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ أَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْا أَنْ لَّا مَلْجَأَ مِنَ اللّٰهِ إِلَّا إِلَيْهِ ط ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا ط إِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ع (١١٨)

১১৮। আর (তিনি অনুগ্রহ করলেন) ঐ তিনজনের প্রতিও যারা (তাবুকের যুদ্ধে অংশগ্রহণ করা থেকে) পিছনে থেকে গিয়েছিল [কা'ব ইবনে মালিক, মুরারা ইবনে রাবী'আ ও হিলাল ইবনে উমায়্যা (রাযি।)] তাঁরা অনুশোচনার আগুনে এমনি দগ্ধীভূত হয়েছিলেন যে] শেষ পর্যন্ত পৃথিবী তার পূর্ণ বিস্তৃতি নিয়েও তাদের প্রতি সংকুচিত হয়ে গিয়েছিল আর তাদের জীবন দুর্বিষহ হয়ে উঠল আর তারা বুঝতে পারল যে, আল্লাহ ছাড়া তাদের কোন আশ্রয়স্থল নেই তাঁর পথে ফিরে যাওয়া ব্যতীত। অতঃপর তিনি তাদের প্রতি অনুগ্রহ করলেন যাতে তারা অনুশোচনায় তাঁর দিকে ফিরে আসে। আল্লাহ অতিশয় তাওবাহ কবূলকারী, বড়ই দয়ালু।

---

১১৮. 'আবদুল্লাহ ইবনু কা'ব (রাঃ) হতে বর্ণিত। কা'ব (রাঃ) যখন অন্ধ হয়ে পড়লেন, তখন তার ছেলেদের মধ্যে যার সাহায্যে তিনি চলাফেরা করতেন, তিনি বলেন, আমি (আমার পিতা) কা'ব ইবনু মালিক (রাঃ) থেকে وَعَلَى الثَّلٰثَةِ এ আয়াত- সম্পর্কে হাদীস বর্ণনা করতে শুনেছি। তিনি তার ঘটনা বর্ণনার সর্বশেষে বলতেন, আমি আমার তওবা কবূল হওয়ার খুশীতে আমার সকল মাল আল্লাহ ও তাঁর রসূলের পথে দান করতে চেয়েছিলাম। কিন্তু নাবী (ﷺ) বললেন, কিছু মাল নিজের জন্য রেখে দাও। এটাই তোমার জন্য কল্যাণকর হবে। –বুখারী ৪৬৭৬ [২৭৫৭; মুসলিম ২৭৬৯, তিরমিযী ৩১০২, নাসায়ী ৩৮২৪-৩৮২৬, আবূ দাঊদ ২২০২, ৩৩১৭, ৩৩১৯, ৩৩২১, ৪৬০০; আহমাদ ১৫৩৪৩, ১৫৩৪৫]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا ٱتَّقُوا ٱللَّهَ وَكُونُوا مَعَ ٱلصَّٰدِقِينَ (١١٩)

১১৯। ওহে বিশ্বাসীগণ! তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর এবং সত্যপন্থীদের অর্ন্তভুক্ত হও।

مَا كَانَ لِأَهْلِ ٱلْمَدِينَةِ وَمَنْ حَوْلَهُم مِّنَ ٱلْأَعْرَابِ أَن يَتَخَلَّفُوا عَن رَّسُولِ ٱللَّهِ وَلَا يَرْغَبُوا بِأَنفُسِهِمْ عَن نَّفْسِهِۦ ۚ ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ لَا يُصِيبُهُمْ ظَمَأٌ وَلَا نَصَبٌ وَلَا مَخْمَصَةٌ فِي سَبِيلِ ٱللَّهِ وَلَا يَطَـُٔونَ مَوْطِئًا يَغِيظُ ٱلْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُونَ مِنْ عَدُوٍّ نَّيْلًا إِلَّا كُتِبَ لَهُم بِهِۦ عَمَلٌ صَٰلِحٌ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ لَا يُضِيعُ أَجْرَ ٱلْمُحْسِنِينَ ﻻ (١٢٠)

১২০। মাদীনাবাসী ও তার চতুষ্পার্শ্বস্থ বেদুঈনদের জন্য উচিত নয় আল্লাহ্‌র রসূলের (সঙ্গ বাদ দিয়ে) পেছনে থেকে যাওয়া আর নিজেদের জীবনকে তাঁর জীবনের চেয়ে প্রিয় জ্ঞান করা। কেননা এমন কক্ষনো হবে না যে, তারা আল্লাহ্‌র পথে তৃষ্ণা, দৈহিক ক্লেশ ও ক্ষুধা ভোগ করবে, আর কাফিরদের ক্রোধ উদ্রেককারী কোন পদক্ষেপ গ্রহণ করবে আর শত্রুদের নিকট থেকে কিছু লাভ করবে আর তার বিনিময়ে তাদের জন্য কোন নেক 'আমাল লেখা হবে না (অবশ্যই লেখা হবে)। নিশ্চয় আল্লাহ সৎকর্মশীলদের প্রতিফল বিনষ্ট করেন না।

وَلَا يُنفِقُونَ نَفَقَةً صَغِيرَةً وَلَا كَبِيرَةً وَلَا يَقْطَعُونَ وَادِيًا إِلَّا كُتِبَ لَهُمْ لِيَجْزِيَهُمُ ٱللَّهُ أَحْسَنَ مَا كَانُوا يَعْمَلُونَ (١٢١)

১২১। আর এটাও হবে না যে, তারা কম বা বেশী মাল (আল্লাহ্‌র পথে) খরচ করবে আর (জিহাদে) তারা কোন উপত্যকা অতিক্রম করবে অথচ তা তাদের নামে লেখা হবে না (অবশ্যই লেখা হবে) যাতে আল্লাহ তাদেরকে তাদের কাজের উৎকৃষ্ট প্রতিদান দিতে পারেন।

১১৯। 'আবদুল্লাহ ইবনু কা'ব ইবনু মালিক (রহ.) হতে বর্ণিত। যিনি কা'ব ইবনু মালিক (দৃষ্টিহীন হওয়ার পরে)-তার পথপ্রদর্শক হিসেবে ছিলেন। তিনি ('আবদুল্লাহ) বলেন, আমি কা'ব ইবনু মালিক (রাঃ)-কে, তাবূক যুদ্ধে যারা পশ্চাতে থেকে গিয়েছিলেন তাদের ঘটনা বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেন, আল্লাহ্‌র কসম! হয়ত আল্লাহ (রসূলুল্লাহ্‌র কাছে) সত্য কথা প্রকাশের কারণে, অন্য কাউকে এত বড় সুন্দর পরীক্ষা করেননি যতটুকু আমাকে পরীক্ষা করেছেন। যখন আমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে তাবূক যুদ্ধে না যাওয়ার সঠিক কারণ বর্ণনা করেছি তখন থেকে আজ পর্যন্ত মিথ্যা বলার ইচ্ছাও করিনি। শেষ পর্যন্ত আল্লাহ তা'আলা রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর ওপর এ আয়াতটি নাযিল করেন– {لَقَدْ تَابَ اللهُ ..... وَكُوْنُوا مَعَ الصَّادِقِيْنَ} "আল্লাহ অনুগ্রহপরায়ণ হলেন নাবীর প্রতি এবং মুহাজির ও আনসারদের প্রতি .... এবং সত্যবাদীদের অন্তর্ভুক্ত হও।" –বুখারী ৪৬৭৮ [২৭৫৮, ২৯৪৭-২৯৫০, ৩০৮৮, ৩৫৫৬, ৩৮৮৯, ৩৯৫১, ৪৪১৮, ৪৬৭৩, ৭৬৭৬, ৭৬৭৭, ৬২৫৫, ৬৬৯০, ৭২২৫; মুসলিম ২৭৬৯, তিরমিযী ৩১০২, নাসায়ী ৩৮২৪-৩৮২৬, আবূ দাউদ ২২০২, ৩৩১৭, ৩৩১৯, ৩৩২১, ৪৬০০; আহমাদ ১৫৩৪৩, ১৫৩৪৫]

وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةً ؕ فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِي الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا قَوْمَهُمْ إِذَا رَجَعُوْٓا إِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ يَحْذَرُوْنَ ع (١٢٢)

১২২। মু'মিনদের সকলের একসঙ্গে অভিযানে বের হওয়া ঠিক নয়। তাদের প্রত্যেক দল থেকে একটি অংশ কেন বের হয় না যাতে তারা দ্বীন সম্পর্কে জ্ঞানের অনুশীলন করতে পারে এবং ফিরে আসার পর তাদের সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পারে যাতে তারা (অসদাচরণ) থেকে বিরত হয়?

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ (١٢٣)

১২৩। হে মু'মিনগণ! যে সব কাফির তোমাদের নিকটবর্তী তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ কর, যাতে তারা তোমাদের মধ্যে দৃঢ়তা দেখতে পায়, আর জেনে রেখ যে, আল্লাহ মুত্তাকীদের সঙ্গে আছেন।

وَإِذَا مَآ أُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ أَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ إِيْمَانًا ج فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ إِيْمَانًا وَّهُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ (١٢٤)

১২৪। যখনই কোন সূরাহ নাযিল হয় তখন তাদের কতক লোক (বিদ্রূপ করে) বলে- "এতে তোমাদের কার ঈমান বৃদ্ধি হল?"(মুনাফিকরা জেনে রাখুক) যারাই ঈমান এনেছে তাদের ঈমান বৃদ্ধি হয় আর তারা এতে আনন্দিত হয়।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ رِجْسًا إِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ كٰفِرُوْنَ (١٢٥)

১২৫। আর যাদের অন্তরে ব্যাধি আছে তাদের নাপাকীর উপর আরো নাপাকী বাড়িয়ে দেয় (প্রতিটি নতুন সূরা), আর তাদের মৃত্যু হয় কাফির অবস্থায়।

أَوَلَا يَرَوْنَ أَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِيْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً أَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ (١٢٦)

১২৬। তারা কি দেখে না যে, প্রতি বছরই তাদেরকে একবার বা দু'বার পরীক্ষায় ফেলা হয়; তারপরেও তারা তাওবাও করে না, আর শিক্ষাও গ্রহণ করে না।

وَإِذَا مَآ أُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ أَحَدٍ ثُمَّ انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللهُ قُلُوْبَهُمْ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ (١٢٧)

১২৭। যখনই কোন সূরাহ নাযিল হয় তখনই তারা পরস্পরে চোখ চাওয়া-চাওয়ি করে আর (ইঙ্গিতে জিজ্ঞেস করে) 'তোমাদেরকে কেউ দেখছে না তো?" অতঃপর তারা চুপিসারে সরে পড়ে। আল্লাহ তাদের অন্তরকে (সত্য পথ থেকে) ফিরিয়ে দিয়েছেন, কেননা তারা এমনই এক সম্প্রদায় যারা বুঝে না।

لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ

১২৮। তোমাদের মধ্য থেকেই তোমাদের নিকট একজন রসূল এসেছেন, তোমাদেরকে যা কিছু কষ্ট দেয় তা তার নিকট খুবই কষ্টদায়ক। সে

بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَؤُوْفٌ رَّحِيْمٌ (١٢٨)

তোমাদের কল্যাণকামী, মু'মিনদের প্রতি করুণাসিক্ত, বড়ই দয়ালু।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِيَ اللهُ ز صلے لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ط عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ع (١٢٩)

১২৯। এ সত্ত্বেও যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে বলে দাও– আল্লাহ্ই আমার জন্য যথেষ্ট, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তাঁর উপরই আমি ভরসা করি, তিনি হলেন মহান আরশের মালিক।

سُوْرَةُ يُوْنُسَ

১০. সূরাহ ইউনুস

আয়াতঃ ১০৯, রুকূ'ঃ ১১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

الٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ (١)

১। আলিফ-লাম-র, এগুলো মহা বিজ্ঞানময় গ্রন্থের আয়াতসমূহ।

১২৮-১২৯। যায়দ ইবনু সাবিত (রাঃ) হতে বর্ণিত। যিনি ওয়াহী লেখকদের মধ্যে একজন ছিলেন, তিনি বলেন, আবূ বাক্‌র (রাঃ) (তার খিলাফাতের সময়) এক ব্যক্তিকে আমার কাছে ইয়ামামার যুদ্ধক্ষেত্রে প্রেরণ করলেন। (আমি তার কাছে চলে আসলাম) তখন তার কাছে 'উমার (রাঃ) বসা ছিলেন। তিনি [আবূ বাক্‌র (রাঃ) আমাকে] বললেন, 'উমার (রাঃ) আমার কাছে এসে বললেন যে, ইয়ামামার যুদ্ধ তীব্র গতিতে চলছে, আমার ভয় হচ্ছে, কুরআনের অভিজ্ঞগণ (হাফিযগণ) ইয়ামামার যুদ্ধে শহীদ হয়ে যান নাকি! যদি আপনারা তা সংরক্ষণের ব্যবস্থা না করেন তবে কুরআনের অনেক অংশ চলে যেতে পারে এবং কুরআনকে একত্রিত সংরক্ষণ করা ভাল মনে করি। আবূ বাক্‌র (রাঃ) বলেন, আমি 'উমার (রাঃ)-কে বললাম, আমি এ কাজ কীভাবে করতে পারি, যা রসূলুল্লাহ (ﷺ) করে যাননি। কিন্তু 'উমার (রাঃ) বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! এটা কল্যাণকর। 'উমার (রাঃ) তাঁর এ কথার পুনরুক্তি করতে থাকেন, শেষ পর্যন্ত আল্লাহ তা'আলা এ কাজ করার জন্য আমার অন্তর খুলে দিলেন এবং আমিও 'উমার (রাঃ)-এর মতোই মতামত পেশ করলাম। যায়দ ইবনু সাবিত (রাঃ) বলেন, 'উমার (রাঃ) সেখানে নীরবে বসা ছিলেন, কোন কথা বলছিলেন না। এরপর আবূ বাক্‌র (রাঃ) আমাকে বললেন, দেখ, তুমি যুবক এবং জ্ঞানী ব্যক্তি। আমরা তোমার প্রতি কোনরূপ খারাপ ধারণা রাখি না। কেননা, তুমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর সময়ে ওয়াহী লিপিবদ্ধ করতে। সুতরাং তুমি কুরআনের আয়াত সংগ্রহ করে একত্রিত কর। আল্লাহ্‌র কসম! তিনি কুরআন একত্রিত করার যে নির্দেশ আমাকে দিলেন সেটি আমার কাছে এত ভারী মনে হল যে, তিনি যদি কোন একটি পর্বত স্থানান্তর করার আদেশ দিতেন তাও আমার কাছে এমন ভারী মনে হত না। আমি বললাম, যে কাজটি নাবী (ﷺ) করে যাননি, সে কাজটি আপনারা কীভাবে করবেন? তখন আবূ বাক্‌র (রাঃ) বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! এটাই কল্যাণকর। এরপর আমিও আমার কথার উপর বারবার জোর দিতে লাগলাম। শেষে আল্লাহ যেটা বুঝার জন্য আবূ বাক্‌র (রাঃ) ও 'উমার (রাঃ)-এর অন্তর খুলে দিয়েছিলেন, আমার অন্তরকেও তা বুঝার জন্য খুলে দিলেন। এরপর আমি কুরআন সংগ্রহে লেগে গেলাম এবং হাড়, চামড়া, খেজুর ডাল ও বাকল এবং মানুষের স্মৃতি থেকে তা সংগ্রহ করলাম। অবশেষে খুযাইমাহ আনসারীর কাছে সূরায়ে তাওবার দু'টি আয়াত পেয়ে গেলাম, যা অন্য কারও নিকট হতে সংগ্রহ করতে পারিনি। ....হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৬৭৯ [২৮০৭; তিরমিযী ৩১০৩, ৩১০৪; আহমাদ ২১১৩৫]

২। মানুষের কাছে কি এটা আশ্চর্যের বিষয় যে, আমি তাদেরই মধ্যেকার একজন লোকের কাছে ওয়াহী পাঠিয়েছি যে, লোকদের সতর্ক করে দাও, আর যারা ঈমান আনে তাদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের কাছে আছে মহা মর্যাদা, (কিন্তু) কাফিররা বলে, 'এ ব্যক্তি তো প্রকাশ্য যাদুকর'।

أَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا أَنْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰ رَجُلٍ مِّنْهُمْ أَنْ أَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ أَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ (٢)

৩। নিশ্চয়ই তোমাদের প্রতিপালক হলেন আল্লাহ যিনি আকাশমণ্ডলী আর পৃথিবীকে ছয় দিনে সৃষ্টি করেছেন। অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নত হয়েছেন। তিনি যাবতীয় বিষয়াদি পরিচালনা করেন। তাঁর অনুমতি প্রাপ্তি ছাড়া সুপারিশ করার কেউ নেই। ইনিই হলেন আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক। কাজেই তোমরা তাঁরই 'ইবাদাত কর, তোমরা কি উপদেশ গ্রহণ করবে না?

إِنَّ رَبَّكُمُ اللهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ؕ مَا مِنْ شَفِيْعٍ إِلَّا مِنْ ۢ بَعْدِ إِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللهُ رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (٣)

৪। তাঁর কাছেই তোমাদের সকলের প্রত্যাবর্তন। আল্লাহ্‌র ওয়া'দা নিশ্চিত সত্য। তিনি সৃষ্টির সূচনা করেন, পরে তিনিই আবার সৃষ্টি করবেন যাতে তিনি- যারা ঈমান এনেছে ও সৎকর্ম করেছে- তাদেরকে পূর্ণ ইনসাফের সাথে প্রতিদান দিতে পারেন। আর যারা কুফুরী করেছে তাদের জন্য আছে অতি উত্তপ্ত পানীয় ও বেদনা দায়ক শাস্তি, যেহেতু তারা সত্য প্রত্যাখ্যান করত।

إِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللهِ حَقًّا ؕ إِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ أَلِيْمٌ ۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ (٤)

৫। তিনি সূর্যকে করেছেন তেজোদীপ্ত, আর চন্দ্রকে করেছেন আলোকময় আর তার (হ্রাস বৃদ্ধির) মানযিলসমূহ সঠিকভাবে নির্ধারণ করেছেন যাতে তোমরা বৎসর গুণে (সময়ের) হিসাব রাখতে পার। আল্লাহ এটা অনর্থক সৃষ্টি করেননি, তিনি নিদর্শনগুলোকে বিশদভাবে বর্ণনা করেন জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللهُ ذٰلِكَ إِلَّا بِالْحَقِّ ج يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (٥)

৬। নিশ্চয়ই রাত ও দিনের আবর্তনে, আর আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর মাঝে আল্লাহ যা সৃষ্টি করেছেন তাতে মুত্তাকী সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

إِنَّ فِي اخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ اللهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ (٦)

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَأَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۙ (٧)

৭। যারা আমার সঙ্গে সাক্ষাৎ লাভের আশা রাখে না, এবং দুনিয়ার জীবন নিয়েই সন্তুষ্ট থাকে আর তাতেই নিশ্চিন্ত হয় এবং যারা আমার নিদর্শনগুলো হতে একেবারে উদাসীন,

أُولٰٓئِكَ مَأْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٨)

৮। তাদের আবাস হল জাহান্নাম তাদের কৃতকর্মের কারণে।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (٩)

৯। যারা ঈমান আনে আর সৎ 'আমাল করে, তাদের প্রতিপালক তাদের ঈমানের বদৌলতে তাদেরকে সৎপথে পরিচালিত করবেন। নি'মাতরাজি দ্বারা পরিপূর্ণ জান্নাতে, তাদের পাদদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত হবে।

دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ع (١٠)

১০। তার ভিতরে তাদের দু'আ হবে, "পবিত্র তুমি হে আল্লাহ"। আর সেখানে তাদের অভিবাদন হবে "শান্তি", আর তাদের দু'আর সর্বশেষ কথা হবে "সমস্ত প্রশংসা জগৎসমূহের প্রতিপালক আল্লাহর জন্য"।

وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ إِلَيْهِمْ أَجَلُهُمْ ۖ فَنَذَرُ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (١١)

১১। মানুষের অপকর্মের শাস্তি হিসেবে আল্লাহ যদি মানুষের অকল্যাণ করার ব্যাপারে দ্রুততা অবলম্বন করতেন যতটা দ্রুততার সঙ্গে তারা (দুনিয়ার) কল্যাণ পেতে চায়, তবে তাদের কাজ করার অবকাশ কবেই না খতম করে দেয়া হত, (কিন্তু আল্লাহ তা করেন না)। কাজেই যারা আমার সাক্ষাতের আশা রাখে না, তাদেরকে আমি তাদের অবাধ্যতায় দিশেহারা হয়ে ঘুরে বেড়ানোর অবকাশ দেই।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ أَوْ قَاعِدًا أَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ ضُرَّهٗ مَرَّ كَأَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ إِلٰى ضُرٍّ مَّسَّهٗ ۖ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٢)

১২। মানুষকে যখন দুঃখ ক্লেশ স্পর্শ করে, তখন তারা শুয়ে, বসে ও দাঁড়িয়ে আমাকে ডাকতে থাকে। অতঃপর যখন আমি তার দুঃখ ক্লেশ দূর করে দেই, তখন সে এমনভাবে চলে যায়, মনে হয় যেন তাকে দুঃখ-ক্লেশ স্পর্শ করার কারণে সে আমাকে কখনই ডাকেনি। এভাবেই যারা সীমালঙ্ঘন করে তাদের জন্য তাদের কাজকর্মগুলোকে চাকচিক্যময় বানিয়ে দেয়া হয়েছে।

১৩। তোমাদের পূর্বেকার বহু জনগোষ্ঠীকে আমি ধ্বংস করে দিয়েছি যখন তারা বাড়াবাড়িতে লিপ্ত হয়েছিল, তাদের কাছে রসূলগণ সুস্পষ্ট নিদর্শনসমূহ নিয়ে এসেছিল, কিন্তু তারা আদৌ ঈমান আনেনি। এভাবেই আমি অপরাধীদেরকে (পাপের) প্রতিদান দিয়ে থাকি।

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا لا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ط كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ (١٣)

১৪। অতঃপর তাদের পর আমি তোমাদেরকে পৃথিবীতে তাদের স্থলাভিষিক্ত করেছি এটা দেখার জন্য যে, তোমরা কী রকম 'আমাল কর।

ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ مِنْ ۢبَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ (١٤)

১৫। যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতগুলো তাদের কাছে পঠিত হয়, তখন যারা আমার সাক্ষাতের আশা রাখে না তারা বলে, 'এটা বাদে অন্য আরেকটা কুরআন আন কিংবা ওটাকে বদলাও'। বল, "আমার নিজের ইচ্ছেমত ওটা বদলানো আমার কাজ নয়, আমার কাছে যা ওয়াহী করা হয় আমি কেবল সেটারই অনুসরণ করে থাকি। আমি আমার প্রতিপালকের অবাধ্যতা করলে এক অতি বড় বিভীষিকার দিনে আমি শাস্তির ভয় করি"।

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ لا قَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ غَيْرِ هٰذَآ أَوْ بَدِّلْهُ ط قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيٓ أَنْ أُبَدِّلَهُ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ج إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ ج إِنِّيٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (١٥)

১৬। বল, "আল্লাহর ইচ্ছে হলে আমি তোমাদের কাছে তা তিলাওয়াত করতাম না, আর আল্লাহও তোমাদেরকে তার খবর দিতেন না। আমি তো এর পূর্বে একটা দীর্ঘ সময় তোমাদের মাঝে অতিবাহিত করেছি, তা সত্ত্বেও তোমরা কি বুঝবে না?

قُلْ لَّوْ شَآءَ اللهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ أَدْرٰىكُمْ بِهٖ ق زصلے فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا مِّنْ قَبْلِهٖ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (١٦)

১৭। তার চেয়ে বড় যালিম আর কে হতে পারে যে মিথ্যা রচনা ক'রে আল্লাহ্‌র নামে চালিয়ে দেয় অথবা আল্লাহ্‌র আয়াতসমূহকে মিথ্যা বলে ঘোষণা করে; নিশ্চিতই অপরাধীরা সাফল্য লাভ করতে পারে না।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ط إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْمُجْرِمُوْنَ (١٧)

১৮। আর তারা আল্লাহ্‌কে ছেড়ে 'ইবাদাত করে এমন কিছুর যা না পারে তাদের কোন ক্ষতি করতে, আর না পারে কোন উপকার করতে। আর তারা বলে, "ওগুলো আমাদের জন্য আল্লাহ্‌র কাছে সুপারিশকারী"। বল, "তোমরা কি আল্লাহ্‌কে এমন

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَآءِ شُفَعَآؤُنَا عِنْدَ اللهِ ط قُلْ أَتُنَبِّئُوْنَ اللهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ

فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (١٨)

কিছুর সংবাদ দিতে চাও, যা তিনি অবগত নন, না আকাশমণ্ডলীতে আর না যমীনে? মহান পবিত্র তিনি, তোমরা যা কিছুকে তাঁর শরীক গণ্য কর তাথেকে তিনি বহু উর্ধ্বে।

وَمَا كَانَ النَّاسُ إِلَّآ أُمَّةً وَّاحِدَةً فَاخْتَلَفُوْا ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (١٩)

১৯। মানুষ ছিল এক উম্মতভুক্ত। পরে তারা মতভেদ সৃষ্টি করল। তোমার প্রতিপালক পূর্বেই যদি সিদ্ধান্ত গ্রহণ না করতেন, তাহলে যে বিষয়ে তারা মতভেদ করছে তার মীমাংসা অবশ্যই করে দেয়া হত।

وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ج فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ج إِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ع (٢٠)

২০। তারা বলে, "তাঁর প্রতিপালকের পক্ষ থেকে তাঁর কাছে কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না কেন?" এদের জবাবে বলে দাও, "অদৃশ্য জগতের একচ্ছত্র মালিক হলেন আল্লাহ, কাজেই তোমরা অপেক্ষা কর (এবং ভবিষ্যতে কী হয় দেখ), আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষমান থাকলাম।

وَإِذَآ أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُمْ إِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ؕ قُلِ اللّٰهُ أَسْرَعُ مَكْرًا ؕ إِنَّ رُسُلَنَا يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ (٢١)

২১। দুঃখ কষ্ট মানুষকে স্পর্শ করার পর আমি যখন তাদেরকে অনুগ্রহ আস্বাদন করতে দেই, তখন তারা আমার নিদর্শনগুলোর ব্যাপারে কূট কৌশলের আশ্রয় নেয়। বল, 'কৌশল গ্রহণে আল্লাহ হলেন ক্ষিপ্রগতিসম্পন্ন, তোমরা যে সব কূটচাল গ্রহণ কর আমার ফেরেশতাগণ তা লিপিবদ্ধ করে রাখে।'

هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ حَتّٰٓى إِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ج وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَآءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ وَّجَآءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ أُحِيْطَ بِهِمْ لا دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۚ ؕ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ (٢٢)

২২। তিনি তোমাদেরকে জলে ও স্থলে ভ্রমণ করান। এমনকি যখন তোমরা নৌকায় আরোহণ করে অনুকূল হাওয়ার তালে আমোদ আহলাদে সফর করতে থাক, তখন ঝড়ো হাওয়া আঘাত হানে আর চারদিক থেকে তরঙ্গ ধেয়ে আসে, আর তারা মনে করে যে, তারা তরঙ্গমালায় পরিবেষ্টিত হয়ে পড়েছে। তখন তারা বিশুদ্ধ আনুগত্যে আল্লাহকে ডেকে বলে, 'তুমি যদি এথেকে আমাদেরকে পরিত্রাণ দাও তাহলে অবশ্য অবশ্যই আমরা শুকরগুজার বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাব।'

فَلَمَّآ أَنْجٰهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِي الْأَرْضِ

২৩। অতঃপর যেমনই তিনি তাদেরকে বাঁচিয়ে

بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَا بَغْيُكُمْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٢٣)

দেন, তখন তারা অন্যায়ভাবে যমীনে বিদ্রোহী আচরণ শুরু করে দেয়। ওহে মানুষ! তোমাদের এ বিদ্রোহ তো (প্রকৃতপক্ষে) তোমাদের নিজেদেরই বিপক্ষে, অস্থায়ী দুনিয়ার আনন্দ সামগ্রী মাত্র। অতঃপর আমার কাছেই তোমাদের প্রত্যাবর্তন হবে, তখন আমি তোমাদেরকে জানিয়ে দেব তোমরা যা কিছু করছিলে।

اِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ مِمَّا يَاْكُلُ النَّاسُ وَالْاَنْعَامُ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذَتِ الْاَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ وَظَنَّ اَهْلُهَآ اَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ اَتٰىهَآ اَمْرُنَا لَيْلًا اَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا حَصِيْدًا كَاَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْاَمْسِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (٢٤)

২৪। দুনিয়ার জীবনের দৃষ্টান্ত হচ্ছে যেমন আকাশ থেকে আমি পানি বর্ষণ করি যার সংস্পর্শে ঘন সন্নিবিষ্ট ভূমি জাত উদ্ভিদ উৎপন্ন হয়। যাথেকে ভক্ষণ করে মানুষ আর জীবজন্তু। অবশেষে যমীন যখন সোনালীরূপ ধারণ করে আর শোভামণ্ডিত হয়, আর তার মালিকগণ ভাবতে থাকে যে, ওগুলো তাদের হাতের মুঠোয় তখন রাত্রিকালে কিংবা দিনের বেলা আমার নির্দেশ এসে পড়ে আর আমি ওগুলো এমনভাবে ধ্বংস করে দেই মনে হয় যেন গতকাল সেখানে কোন কিছুই ছিল না। এভাবে আমি আমার নিদর্শনগুলোকে বিশদভাবে বর্ণনা করি ঐ সম্প্রদায়ের জন্য যারা চিন্তাভাবনা করে বুঝতে চেষ্টা করে।

وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ؕ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٢٥)

২৫। আল্লাহ তোমাদেরকে শান্তির কেন্দ্রভূমির দিকে আহ্বান জানান আর যাকে তিনি চান সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ؕ وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ؕ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٢٦)

২৬। যারা কল্যাণকর কাজ করে তাদের জন্য রয়েছে কল্যাণ এবং আরো অতিরিক্ত (পুরস্কার), কলংক ও লাঞ্ছনা তাদের মুখমণ্ডলকে মলিন করবে না, তারাই হল জান্নাতের অধিবাসী, সেখানে তারা থাকবে চিরকাল।

وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ مَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَاَنَّمَآ اُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ؕ اُولٰٓئِكَ

২৭। পক্ষান্তরে যারা মন্দ কাজ করে, তারা তাদের মন্দ কাজের শাস্তি পাবে কাজের অনুপাতে এবং অপমান তাদেরকে আচ্ছাদিত করবে, আল্লাহর (শাস্তি) হতে কেউই তাদেরকে রক্ষা করতে পারবে না– যেন তাদের মুখমণ্ডলকে আচ্ছাদিত করে দেয়া হয়েছে গাঢ় অন্ধকার রাত্রির টুকরো দিয়ে; তারা

أَصْحٰبُ النَّارِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٢٧)

জাহান্নামের অধিবাসী, তারা তার মধ্যে চিরকাল থাকবে।

وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ج فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ إِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ (٢٨)

২৮। সেদিন আমি তাদের সবাইকে একত্রিত করে যারা শির্ক করেছিল তাদেরকে বলব, "তোমরা এবং তোমরা যাদেরকে শরীক করেছিলে তারা নিজ নিজ জায়গায় থাক।" আমি তাদেরকে পরস্পর থেকে পৃথক করে দেব আর তারা যাদেরকে শরীক করেছিল তারা বলবে, 'তোমরা তো আমাদের 'ইবাদাত করতে না।'

فَكَفٰى بِاللهِ شَهِيْدًا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ إِنْ كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ (٢٩)

২৯। এখন আল্লাহই আমাদের আর তোমাদের মাঝে সাক্ষী হিসেবে যথেষ্ট, আমরা তোমাদের 'ইবাদাতের ব্যাপারে সম্পূর্ণ বেখবর ছিলাম।'

هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّا أَسْلَفَتْ وَرُدُّوْآ إِلَى اللهِ مَوْلٰهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ع (٣٠)

৩০। সেখানে প্রতিটি আত্মা তার পূর্বকৃত কাজ (এর ফলাফল) দেখতে পাবে। তাদেরকে তাদের প্রকৃত অভিভাবক আল্লাহ্‌র নিকট ফিরিয়ে আনা হবে, আর তাদের রচিত সকল মিথ্যা তাদের থেকে বিলীন হয়ে যাবে।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْأَمْرَ ط فَسَيَقُوْلُوْنَ اللهُ ج فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ (٣١)

৩১। তাদের জিজ্ঞেস কর, 'আকাশ আর যমীন হতে কে তাদের জীবিকার ব্যবস্থা করে? কিংবা শ্রবণশক্তি ও দর্শনশক্তি কার মালিকানাধীন? আর মৃত থেকে জীবিতকে কে বের করেন আর কে মৃতকে জীবিত থেকে বের করেন? যাবতীয় বিষয়ের শাসন ও নিয়ন্ত্রণ কার অধীনস্থ?' তারা বলে উঠবে, "আল্লাহ"। তাহলে তাদেরকে বল, 'তবুও তোমরা তাক্বওয়াহ অবলম্বন করবে না?'

فَذٰلِكُمُ اللهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ج فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ إِلَّا الضَّلٰلُ ج فَأَنّٰى تُصْرَفُوْنَ (٣٢)

৩২। তিনিই আল্লাহ, তোমাদের প্রকৃত প্রতিপালক। প্রকৃত সত্যের পর গুমরাহী ছাড়া আর কী থাকতে পারে? তোমাদেরকে কোন্‌দিকে ঘুরানো হচ্ছে?

كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ فَسَقُوْآ أَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (٣٣)

৩৩। এভাবে সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের ব্যাপারে তোমার প্রতিপালকের কথা সত্য সাব্যস্ত হয়েছে যে, তারা ঈমান আনবে না।

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ط قُلِ اللهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ

৩৪। বল "তোমরা যাদেরকে শরীক কর তাদের মধ্যে এমন কেউ আছে কি যে সৃষ্টির সূচনা করে এবং তার পুনরাবর্তনও ঘটাতে পারে?" বল

ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَأَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ (٣٤)

"আল্লাহ্ই সৃষ্টির সূচনা করেন এবং তার পুনরাবর্তন ঘটান।" তাহলে কীভাবে তোমরা বিচ্যুত হয়ে যাচ্ছ (সত্য পথ থেকে)?

قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ إِلَى الْحَقِّ ط قُلِ اللهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ط أَفَمَنْ يَّهْدِيْٓ إِلَى الْحَقِّ أَحَقُّ أَنْ يُّتَّبَعَ أَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ إِلَّآ أَنْ يُّهْدٰى ج فَمَا لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ (٣٥)

৩৫। বল "তোমরা যাদেরকে শরীক কর তাদের কেউ কি সত্যের পথ দেখাতে পারে?" বল, 'আল্লাহ্ই সত্যের পথ দেখান।' তবে যিনি সত্য পথে পরিচালিত করেন আনুগত্য লাভের তিনিই বেশি হাকদার, না কি সেই যাকে পথ না দেখালে পথ পায় না? তোমাদের হয়েছে কী? তোমরা কীভাবে সিদ্ধান্ত নিচ্ছ?

وَمَا يَتَّبِعُ أَكْثَرُهُمْ إِلَّا ظَنًّا ط إِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ط إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ (٣٦)

৩৬। তাদের অধিকাংশই কেবল ধারণার অনুসরণ করে, সত্যের মুকাবালায় ধারণা কোন কাজে আসে না। তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আল্লাহ্ সর্বাধিক অবগত।

وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ أَنْ يُّفْتَرٰى مِنْ دُوْنِ اللهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ قف (٣٧)

৩৭। এ কুরআন আল্লাহ্ ছাড়া অন্য কারো রচিত নয়। উপরন্তু তা পূর্বে যা নাযিল হয়েছিল তার সমর্থক আর বিস্তারিত ব্যাখ্যাকৃত কিতাব, এতে কোন সন্দেহ নেই, জগৎসমূহের প্রতিপালকের নিকট হতে (নাযিলকৃত)।

أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ط قُلْ فَأْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٣٨)

৩৮। তারা কি এ কথা বলে যে, সে [অর্থাৎ মুহাম্মাদ (ﷺ)] এটা রচনা করেছে? বল, তাহলে তোমরাও এর মত একটা সূরাহ (রচনা করে) নিয়ে এসো আর আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে যাকে পার তাকে ডেকে নাও যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাক [যে মুহাম্মাদ (ﷺ)-ই তা রচনা করেছেন]।

بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَأْتِهِمْ تَأْوِيْلُهٗ ط كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ (٣٩)

৩৯। বরং যে বিষয় তাদের জ্ঞানের সীমার মধ্যে আসে না, আর যার পরিণাম ফল এখনও উপস্থিত হয়নি তা তারা অস্বীকার করে। এভাবে তাদের পূর্ববর্তী লোকেরাও মিথ্যা মনে ক'রে অমান্য করেছিল। এখন দেখ, এই যালিমদের পরিণতি কী হয়েছে!

৪০। এদের কিছু লোক এতে বিশ্বাস করে আর কতক এতে বিশ্বাস করে না। তোমার প্রতিপালক এই ফাসাদ সৃষ্টিকারী লোকদের সম্পর্কে সবচেয়ে বেশি অবহিত।

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ع (٤٠)

৪১। যদি তারা তোমাকে মিথ্যা জেনে অমান্য ক'রে তাহলে বল, 'আমার কাজের জন্য আমি দায়ী, আর তোমাদের কাজের জন্য তোমরা দায়ী, আমি যা করি তার দায়-দায়িত্ব থেকে তোমরা মুক্ত, আর তোমরা যা কর তার দায়-দায়িত্ব থেকে আমি মুক্ত।'

وَإِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّيْ عَمَلِيْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ج أَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّآ أَعْمَلُ وَأَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ (٤١)

৪২। এদের মধ্যে কেউ কেউ তোমার কথা শুনার ভান করে। তাহলে তুমি কি বধিরকে শুনাবে, তারা না বুঝলেও?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ إِلَيْكَ ؕ أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ (٤٢)

৪৩। তাদের মধ্যে কেউ কেউ তোমার দিকে তাকায়, তুমি কি অন্ধকে পথ দেখাবে, তারা না দেখলেও?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ إِلَيْكَ ؕ أَفَأَنْتَ تَهْدِي الْعُمْيَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ (٤٣)

৪৪। অবশ্যই আল্লাহ মানুষদের প্রতি কোন যুল্‌ম করেন না, কিন্তু মানুষ নিজেদের প্রতি যুল্‌ম ক'রে থাকে।

إِنَّ اللهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْئًا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (٤٤)

৪৫। যে দিন তাদেরকে একত্রিত করা হবে (সেদিন তারা মনে করবে যে) দিনের এক মুহূর্তের বেশি তারা (দুনিয়াতে) অবস্থান করেনি। তারা পরস্পরকে চিনতে পারবে। যারা আল্লাহ্‌র সাক্ষাৎকে অস্বীকার করে তারা ক্ষতিগ্রস্ত হয়েছে আর তারা কখনই সঠিক পথপ্রাপ্ত ছিল না।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَأَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْٓا إِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ (٤٥)

৪৬। আমি তাদেরকে যে পরিণতির ভয় দেখিয়েছি তার কিছু অংশ আমি যদি তোমাকে দেখিয়ে দেই, কিংবা (তার পূর্বেই) তোমাকে যদি উঠিয়ে দেই, (অবস্থা যেটাই হোক না কেন) তাদের প্রত্যাবর্তন তো আমার কাছেই, (সর্বোপরি) তারা যা কিছু করছে আল্লাহ হচ্ছেন তার সাক্ষী।

وَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللهُ شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ (٤٦)

৪৭। প্রত্যেক জাতির জন্য (পাঠানো হয়েছে) একজন রসূল। তাদের রসূল যখন এসেছে তখন ন্যায়পরায়ণতার সঙ্গে তাদের মাঝে ফায়সালা করা

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ج فَإِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ قُضِيَ

بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (٤٧)

হয়েছে। তাদের প্রতি কোন যুল্ম করা হয়নি।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٤٨)

৪৮। তারা বলে, "তোমরা সত্যবাদী হলে (বল তো) এই প্রতিশ্রুতি কখন সত্য হয়ে দেখা দিবে?"

قُلْ لَّآ أَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا إِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ط لِكُلِّ أُمَّةٍ أَجَلٌ ط إِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ (٤٩)

৪৯। বল, 'আল্লাহ্‌র ইচ্ছে ব্যতীত আমার নিজেরও কোন ক্ষতি বা লাভ করার ক্ষমতা নেই।' প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্য একটা নির্দিষ্ট সময় নির্ধারিত আছে। তাদের সেই নির্দিষ্ট সময় চলে আসলে তারা এক মুহূর্তও আগ-পাছ করতে পারবে না।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَتٰـكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا أَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ (٥٠)

৫০। বল, 'তোমরা কি চিন্তা করে দেখেছ যদি তাঁর 'আযাব হঠাৎ করে রাতে বা দিনে তোমাদের উপর এসে পড়ে (তাহলে তো তোমাদের করার কিছুই নেই) অপরাধীরা তার কোন্‌টা তাড়াহুড়ো করে আনতে চায়?

أَثُمَّ إِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ط آٰلْئٰنَ وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ (٥١)

৫১। তাহলে ওটা বাস্তবে ঘটে যাওয়ার পরই কি তোমরা তাতে বিশ্বাস করতে চাও? (ঘটে যাওয়ার পর বলা হবে) 'এখন, (বিশ্বাস করলে) এটার জন্য তোমরা তাড়াহুড়ো করছিলে!'

ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ ج هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ (٥٢)

৫২। অবশেষে যালিমদেরকে বলা হবে- 'স্থায়ী শাস্তির স্বাদ গ্রহণ কর, তোমরা যা কিছু উপার্জন করেছিলে তার প্রতিফল ছাড়া তোমাদের আর কী দেয়া যেতে পারে!

وَيَسْتَنْـبِئُوْنَكَ أَحَقٌّ هُوَ طـ قُلْ إِيْ وَرَبِّيْٓ إِنَّهٗ لَحَقٌّ طـ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ع (٥٣)

৫৩। তারা তোমার কাছে জানতে চায় (তুমি যা বলছ) সেগুলো কি প্রকৃতই সঠিক? বল-'হাঁ, আমার রবের কসম! তা একবারেই সত্য। তোমরা তা বানচাল করতে পারবে না।

وَلَوْ أَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْأَرْضِ لَافْتَدَتْ بِهٖ ط وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ج وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ

৫৪। যুল্ম করেছে এমন প্রত্যেকেই দুনিয়াতে যা কিছু আছে যদি তা সব তার হত তবে সে বিনিময়ে তা প্রদান করে 'আযাব হতে বাঁচতে চাইত। তারা যখন 'আযাব প্রত্যক্ষ করবে তখন মনের দুঃখ-তাপ গোপন করবে। ন্যায়পরায়ণতার সঙ্গে তাদের

لَا يُظْلَمُوْنَ (٥٤)

ব্যাপারে ফায়সালা করা হবে। তাদের প্রতি কোন প্রকার যুল্ম করা হবে না।

أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط أَلَآ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٥٥)

৫৫। জেনে রেখ, আসমানসমূহ আর যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ্র। জেনে রেখ, আল্লাহ্র ওয়া'দা সত্য, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ (এ সকল বিষয়) জানে না।

هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٥٦)

৫৬। তিনি জীবন দান করেন, তিনিই মৃত্যু দেন, আর তাঁর দিকেই তোমরা ফিরে যাবে।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِي الصُّدُوْرِ ٥ لا وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (٥٧)

৫৭। হে মানুষ! তোমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে তোমাদের কাছে এসেছে নাসীহাত আর তোমাদের অন্তরে যা আছে তার নিরাময়, আর মু'মিনদের জন্য সঠিক পথের দিশা ও রহমাত।

قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ فَلْيَفْرَحُوْا ط هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ (٥٨)

৫৮। বল, আল্লাহ্র অনুগ্রহ ও দয়ার বদৌলতে (তা এসেছে), এজন্য তারা আনন্দিত হোক। তারা যা স্তূপীকৃত করছে তার চেয়ে তা (অর্থাৎ হিদায়াত ও রহমাতপূর্ণ কুরআন) উত্তম।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ط قُلْ آٰللّٰهُ أَذِنَ لَكُمْ أَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ (٥٩)

৫৯। বল-তোমরা কি ভেবে দেখেছ আল্লাহ যে রিয্ক তোমাদের জন্য পাঠিয়েছেন, তোমরা তার কতকগুলোকে হারাম আর কতককে হালাল করে নিয়েছ। বল, আল্লাহ কি তোমাদেরকে এর অনুমতি দিয়েছেন? না তোমরা আল্লাহর উপর মিথ্যা অপবাদ দিচ্ছ?

وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط إِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ع (٦٠)

৬০। যারা আল্লাহ্র প্রতি মিথ্যোরোপ করে, কিয়ামাতের দিন (আল্লাহ তাদের সঙ্গে যে ব্যবহার করবেন সে) সম্পর্কে তাদের কী ধারণা? আল্লাহ তো মানুষদের উপর বড়ই অনুগ্রহশীল, কিন্তু তাদের অধিকাংশই আল্লাহ্র শোকর করে না।

وَمَا تَكُوْنُ فِيْ شَأْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ إِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا إِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ط وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ ذَرَّةٍ فِي

৬১। তুমি যে অবস্থাতেই থাক না কেন, আর তুমি কুরআন থেকে যা কিছুই তিলাওয়াত কর না কেন, আর যে 'আমালই তোমরা কর না কেন, আমি তোমাদের উপর রয়েছি প্রত্যক্ষদর্শী, যখন তোমরা তাতে পূর্ণরূপে মনোনিবেশ কর। এমন অণু পরিমাণ বা তাথেকে ছোট বা তাথেকে বড় বস্তু না

الْأَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ وَلَآ أَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرَ إِلَّا فِي كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (٦١)

আছে পৃথিবীতে, আর না আছে আসমানে যা তোমার প্রতিপালকের দৃষ্টির আড়ালে আছে। তা (লেখা) আছে এক সুস্পষ্ট কিতাবে।

أَلَآ إِنَّ أَوْلِيَآءَ اللهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ج (٦٢)

৬২। জেনে রেখ! আল্লাহ্‌র বন্ধুদের কোন ভয় নেই আর তারা দুঃখিতও হবে না।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ط (٦٣)

৬৩। যারা ঈমান আনে আর তাকওয়া অবলম্বন করে

لَهُمُ الْبُشْرٰى فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ط لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللهِ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ط (٦٤)

৬৪। তাদের জন্য সুসংবাদ দুনিয়ার জীবনে আর আখেরাতেও। আল্লাহ্‌র কথার কোন হেরফের হয় না, এটাই হল বিরাট সাফল্য।

وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ـ إِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ط هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٦٥)

৬৫। ওদের কথা যেন তোমাকে দুঃখ না দেয়, যাবতীয় সম্মান আল্লাহ্‌রই জন্য, তিনি সব কিছুই শোনেন, সব কিছু জানেন।

أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ ط وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ شُرَكَآءَ ط إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَإِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُوْنَ (٦٦)

৬৬। জেনে রেখ! যা কিছু আসমানসমূহে আছে আর যারা যমীনে আছে সবাই আল্লাহ্‌র। (এ অবস্থায়) যারা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে (তাদের মনগড়া) শরীকদের ডাকে তারা কিসের অনুসরণ করে? তারা ধারণা-অনুমান ছাড়া অন্য কিছুরই অনুসরণ করে না, আর তারা শুধু মিথ্যাই বলে।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ (٦٧)

৬৭। তিনিই তোমাদের জন্য রাত বানিয়েছেন যেন তোমরা তাতে শান্তি লাভ করতে পার, আর দিন সৃষ্টি করেছেন (সব কিছু) দেখার জন্য। অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে ঐ সম্প্রদায়ের জন্য যারা (মনোযোগ দিয়ে) শোনে।

قَالُوا اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهُ ط هُوَ الْغَنِيُّ ط لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط إِنْ عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ بِهٰذَا ط أَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٦٨)

৬৮। ওরা বলে-“আল্লাহ পুত্র গ্রহণ করেছেন”। মহান পবিত্র তিনি, তিনি কারো মুখাপেক্ষী নন, আসমানসমূহে ও যমীনে যা আছে সবই তাঁর মালিকানাধীন, (আল্লাহ পুত্র গ্রহণ করেছেন) এ ব্যাপারে তোমাদের কাছে কোন প্রমাণ নেই, তাহলে তোমরা কি আল্লাহ সম্পর্কে এমন কথা বলছ যে বিষয়ে তোমাদের কোনই জ্ঞান নেই?

قُلْ إِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ط (٦٩)

৬৯। বল "যারা আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে রচনা করে, তারা কক্ষনো কল্যাণ পাবে না।

مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ إِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ع (٧٠)

৭০। দুনিয়াতে আছে তাদের জন্য সামান্য ভোগ্যবস্তু, অতঃপর আমার কাছেই হবে তাদের প্রত্যাবর্তন, তখন তাদের কুফুরীর কারণে তাদেরকে আমি কঠিন 'আযাব আস্বাদন করাব।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ نُوْحٍ ـ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ إِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ بِاٰيٰتِ اللهِ فَعَلَى اللهِ تَوَكَّلْتُ فَأَجْمِعُوْآ أَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ أَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْآ إِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ (٧١)

৭১। তাদেরকে নূহের কাহিনী পড়ে শোনাও। যখন সে তার সম্প্রদায়কে বলেছিল, 'হে আমার সম্প্রদায়! আমার অবস্থিতি আর আল্লাহ্‌র আয়াতসমূহ দ্বারা তোমাদের প্রতি আমার উপদেশ দান যদি তোমাদের নিকট অসহ্য মনে হয় (তাতে আমার কোন পরোয়া নেই) কারণ আমি ভরসা করি আল্লাহ্‌র উপর। তোমরা তোমাদের শরীকদেরকে নিয়ে সম্মিলিতভাবে সিদ্ধান্ত গ্রহণ কর, পরে তোমাদের সিদ্ধান্তের ব্যাপারে তোমাদের মাঝে যেন অস্পষ্টতা না থাকে, অতঃপর আমার উপর তা কার্যকর কর আর আমাকে কোন অবকাশই দিও না।

فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ ط إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللهِ لا وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (٧٢)

৭২। আর যদি তোমরা (আমার আহ্বান থেকে) মুখ ফিরিয়ে নাও (তাতে আমার কোন ক্ষতি হবে না), আমি তো তোমাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাচ্ছি না, আমার পারিশ্রমিক আছে কেবল আল্লাহ্‌রই নিকট, আমাকে আত্মসমর্পণকারীদের মধ্যে শামিল হওয়ারই আদেশ দেয়া হয়েছে।

فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَأَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ج فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ (٧٣)

৭৩। কিন্তু তারা তাকে মিথ্যে বলে অমান্য করল। তখন আমি তাকে আর তার সঙ্গে যারা নৌকায় ছিল তাদেরকে রক্ষা করলাম আর তাদেরকে (পৃথিবীতে) উত্তরাধিকারী বানালাম, আর যারা আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যে ব'লে অমান্য করেছিল তাদেরকে ডুবিয়ে মারলাম। এখন দেখ যাদেরকে সতর্ক করা হয়েছিল (তারা সতর্ক না হওয়ায়) তাদের কী পরিণাম ঘটেছিল।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْ ۢبَعْدِهٖ رُسُلًا إِلٰى قَوْمِهِمْ

৭৪। নূহের পর আমি রসূলদেরকে তাদের সম্প্রদায়ের কাছে পাঠিয়েছিলাম, তারা তাদের

فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ (٧٤)

কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিল। কিন্তু পূর্বে তারা মিথ্যে জেনে প্রত্যাখ্যান করায় পরে আর ঈমান আনতে প্রস্তুত হয়নি। সীমালজ্ঘনকারীদের হৃদয়ে এভাবেই আমি মোহর লাগিয়ে দেই।

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ (٧٥)

৭৫। তাদের পর আমি মূসা ও হারূনকে আমার নিদর্শন সহকারে ফির‘আওন ও তার প্রধানদের নিকট পাঠিয়েছিলাম। কিন্তু তারা অহঙ্কার করে, তারা ছিল এক অপরাধী সম্প্রদায়।

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْٓا إِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٧٦)

৭৬। অতঃপর আমার নিকট থেকে যখন তাদের কাছে প্রকৃত সত্য এসে পড়ল, তখন তারা বলল, “এটা তো অবশ্যই সুস্পষ্ট যাদু”।

قَالَ مُوْسٰٓى أَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ أَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ (٧٧)

৭৭। মূসা বলল, “প্রকৃত সত্য সম্পর্কে তোমরা (এ রকম) কথা বলছ যখন তা তোমাদের কাছে এসে গেছে। এটা কি যাদু? যাদুকররা মুক্তি পাবে না।”

قَالُوْٓا أَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِي الْأَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ (٧٨)

৭৮। তারা বলল, “তোমরা কি আমাদেরকে ঐ পথ থেকে সরিয়ে দেয়ার জন্য এসেছ আমরা আমাদের পিতৃপুরুষদেরকে যে পথের উপর পেয়েছি আর এজন্য যে যমীনে তোমাদের দু’জনের প্রাধান্য প্রতিষ্ঠিত হয়? আমরা তোমাদের কথা মোটেই মেনে নেব না।”

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِيْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ (٧٩)

৭৯। ফির‘আওন বলল, “সকল পারদর্শী যাদুকরদের আমার কাছে নিয়ে এসো”।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى أَلْقُوْا مَآ أَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ (٨٠)

৮০। যাদুকররা যখন এসে গেল, তখন মূসা তাদেরকে বলল, “নিক্ষেপ কর তোমরা যা নিক্ষেপ করবে”।

فَلَمَّآ أَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ السِّحْرُ ؕ إِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ إِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ (٨١)

৮১। তারা যখন নিক্ষেপ করল, তখন মূসা বলল, “তোমরা যা নিয়ে এসেছ তাতো যাদু, আল্লাহ এখনই তা ব্যর্থ করে দেবেন, আল্লাহ বিশৃঙ্খলাকারীদের কাজকে সংশোধন করেন না”।

وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ع (٨٢)

৮২। আল্লাহ তাঁর বাণীর সাহায্যে প্রকৃত সত্যকে প্রতিষ্ঠিত করবেনই, অপরাধীদের কাছে তা যতই অপ্রীতিকর হোক না কেন।

فَمَآ اٰمَنَ لِمُوْسٰى إِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ أَنْ يَّفْتِنَهُمْ ط وَإِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِي الْأَرْضِ ج وَإِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ (٨٣)

৮৩। মূসার উপর তার জাতির মধ্য হতে গুটিকয়েক লোক ব্যতীত কেউ ঈমান আনেনি ফির‘আওন ও তার প্রধানদের নির্যাতনের ভয়ে। বাস্তবিকই ফির‘আওন দুনিয়াতে খুবই উদ্ধত ছিল, আর সে ছিল অবশ্যই সীমালঙ্ঘনকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ إِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا إِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ (٨٤)

৮৪। মূসা বলেছিল, “হে আমার জাতির লোকেরা! তোমরা যদি আল্লাহ্‌র প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে থাক তাহলে তোমরা তাঁরই উপর ভরসা কর যদি তোমরা আত্মসমর্পণকারী হও”।

فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ج رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ لا (٨٥)

৮৫। তখন তারা বলল, “আমরা আল্লাহ্‌র উপরই ভরসা করি, হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে যালিম জাতির অত্যাচারের পাত্র করো না,

وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ (٨٦)

৮৬। আর তোমার অনুগ্রহে আমাদেরকে কাফির সম্প্রদায় থেকে রক্ষা কর।”

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰى وَأَخِيْهِ أَنْ تَبَوَّاٰ لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ قِبْلَةً وَّأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ط وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ (٨٧)

৮৭। আমি মূসা আর তার ভাইয়ের প্রতি ওয়াহী করলাম যে, “মিসরে তোমাদের সম্প্রদায়ের জন্য ঘর তৈরি কর আর তোমাদের ঘরগুলোকে ‘ইবাদাত গৃহ কর, আর নামায প্রতিষ্ঠা কর এবং মু’মিনদেরকে সুসংবাদ দাও”।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ إِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ وَمَلَأَهٗ زِيْنَةً وَّأَمْوَالًا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا لا رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ج رَبَّنَا اطْمِسْ عَلٰٓى أَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيْمَ (٨٨)

৮৮। মূসা বলল, “হে আমার প্রতিপালক! তুমি ফির‘আওন আর তার প্রধানদেরকে এ পার্থিব জগতে চাকচিক্য আর ধন সম্পদ দান করেছ আর এর দ্বারা হে আমাদের রব্ব! তারা মানুষকে তোমার পথ থেকে বিচ্যুত করছে, হে আমার প্রতিপালক! তাদের সম্পদ ধ্বংস করে দাও, আর তাদের হৃদয়কে কঠিন করে দাও, যাতে তারা ভয়াবহ ‘আযাব দেখার পূর্ব পর্যন্ত ঈমান আনতে সক্ষম না হয় (যেহেতু তারা বার বার আল্লাহ্‌র নিদর্শন দেখেও সত্য দ্বীনের শত্রুতায় অটল হয়ে আছে)।

قَالَ قَدْ أُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ (٨٩)

৮৯। আল্লাহ তা'আলা জবাব দিলেন, "তোমাদের দু'জনের দু'আ কবূল করা হল, কাজেই তোমরা মজবুত হয়ে থাক, আর তোমরা কক্ষনো তাদের পথ অনুসরণ করো না যারা কিছুই জানে না।

وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ الْبَحْرَ فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ط حَتّٰىٓ إِذَآ أَدْرَكَهُ الْغَرَقُ قَالَ اٰمَنْتُ أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا إِسْرَآئِيْلَ وَأَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (٩٠)

৯০। আমি বানী ইসরাঈলকে সমুদ্র পার করিয়ে নিলাম আর ফির'আওন ও তার সৈন্য সামন্ত ঔদ্ধত্য ও সীমালঙ্ঘন ক'রে তাদের পেছনে ছুটল, অতঃপর যখন সে ডুবতে শুরু করল তখন সে বলল, 'আমি ঈমান আনছি যে, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই যাঁর প্রতি বানী ইসরাঈল ঈমান এনেছে, আর আমি আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত।'

آٰلْئٰنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ (٩١)

৯১। "এখন (ঈমান আনছ), আগে তো অমান্য করেছ আর ফাসাদকারীদের অন্তর্ভুক্ত থেকেছ।

فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ خَلْفَكَ اٰيَةً ط وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ع (٩٢)

৯২। আজ আমি তোমার দেহকে রক্ষা করব যাতে তুমি তোমার পরবর্তীদের জন্য নিদর্শন হতে পার।' অধিকাংশ মানুষই আমার নিদর্শনাবলী সম্পর্কে নিশ্চিতই উদাসীন।"

وَلَقَدْ بَوَّأْنَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ مُبَوَّأَ صِدْقٍ وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ج فَمَا اخْتَلَفُوْا حَتّٰى جَآءَهُمُ الْعِلْمُ ط إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (٩٣)

৯৩। আমি বানী ইসরাঈলকে মর্যাদাপূর্ণ আবাসস্থলে প্রতিষ্ঠিত করেছিলাম আর তাদেরকে উত্তম রিয্ক দিয়েছিলাম। অতঃপর তাদের কাছে (আল্লাহ্‌র প্রেরিত) সঠিক জ্ঞান আসার পূর্ব পর্যন্ত তারা মতভেদ করেনি। তারা যে বিষয়ে মতভেদ করেছিল কিয়ামাত দিবসে তোমার প্রতিপালক অবশ্যই তা মীমাংসা করে দিবেন।

فَإِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِيْنَ يَقْرَؤُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ ج لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ لا (٩٤)

৯৪। আমি তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ করেছি তাতে যদি তুমি সন্দেহ পোষণ কর তাহলে তোমার পূর্বে থেকে যারা কিতাব পাঠ করে আসছে তাদেরকে জিজ্ঞেস কর। তোমার কাছে তোমার প্রতিপালকের নিকট থেকে প্রকৃত সত্য এসেছে। কাজেই তুমি কক্ষনো সন্দেহ পোষণকারীদের মধ্যে শামিল হয়ো না।

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (٩٥)

৯৫। আর তুমি কক্ষনো তাদের মধ্যে শামিল হয়ো না যারা আল্লাহ্‌র আয়াতসমূহকে মিথ্যে জেনে অমান্য করে, তাহলে তুমি ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

إِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ لا (٩٦)

৯৬। তাদের সম্পর্কে তোমার প্রতিপালকের বাক্য সত্য প্রমাণিত হয়েছে যে, তারা ঈমান আনবে না,

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيْمَ (٩٧)

৯৭। এমনকি তাদের কাছে প্রত্যেকটি নিদর্শন আসলেও– যে পর্যন্ত না তারা ভয়াবহ শাস্তি প্রত্যক্ষ করবে।

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ إِيْمَانُهَآ إِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ط لَمَّآ اٰمَنُوْا كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ إِلٰى حِيْنٍ (٩٨)

৯৮। এমন কোন জনপদের দৃষ্টান্ত আছে কি যে তারা (শাস্তি দেখার পর) ঈমান আনল আর তাদের ঈমান উপকারে আসল– একমাত্র ইউনুসের সম্প্রদায় ছাড়া? তারা যখন ঈমান আনল, তখন আমি দুনিয়ার জীবনে তাদের থেকে হীনতাব্যঞ্জক 'আযাব সরিয়ে দিলাম, আর একটা নির্দিষ্ট মেয়াদ পর্যন্ত তাদেরকে জীবন উপভোগ করার সুযোগ দিলাম।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْأَرْضِ كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ط أَفَأَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (٩٩)

৯৯। তোমার প্রতিপালক ইচ্ছে করলে দুনিয়ার সমস্ত লোক অবশ্যই ঈমান আনত, তাহলে কি তুমি ঈমান আনার জন্য মানুষদের উপর জবরদস্তি করবে?

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ أَنْ تُؤْمِنَ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ط وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ (١٠٠)

১০০। আল্লাহ্‌র অনুমতি ব্যতিরেকে কেউ ঈমান আনতে পারবে না, আর যারা বিবেক বুদ্ধি খাটায় না, আল্লাহ তাদের উপর ভুমরাহী চাপিয়ে দেন।

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَا تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ (١٠١)

১০১। বল "আসমানসমূহ আর যমীনে যা কিছু আছে তার দিকে চেয়ে দেখ, যারা ঈমান আনে না তাদের জন্য নিদর্শনাবলী আর ভয়-ভীতি প্রদর্শন কোন কাজে আসে না।

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ إِلَّا مِثْلَ أَيَّامِ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ط قُلْ فَانْتَظِرُوْآ إِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ (١٠٢)

১০২। তবে তারা কি তাদের পূর্বে যে সব দিনগুলো ঘটে গেছে সে রকম ঘটা ছাড়া অন্য কিছুর অপেক্ষা করছে? বল, "তাহলে অপেক্ষা কর, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষমান থাকলাম।"

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ج حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ع (١٠٣)

১০৩। অবশেষে আমি আমার রসূলদেরকে আর মু'মিনদেরকে রক্ষা করি, এভাবে মু'মিনদেরকে রক্ষা করা আমার কর্তব্য।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ دِيْنِيْ فَلَاۤ أَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ أَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ يَتَوَفّٰىكُمْ ج صلے وَأُمِرْتُ أَنْ أَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لا (١٠٤)

১০৪। বল, "হে মানুষ! আমার দ্বীন সম্পর্কে যদি তোমাদের কোন সন্দেহ থাকে তাহলে জেনে রেখ, তোমরা আল্লাহকে বাদ দিয়ে যার 'ইবাদাত কর, আমি তাদের 'ইবাদাত করি না, বরং আমি আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করি যিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটান, আর আমি আদিষ্ট হয়েছি মু'মিনদের অন্ত র্ভুক্ত হওয়ার জন্য।

وَأَنْ أَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ج وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٠٥)

১০৫। আর আমাকে এও আদেশ দেয়া হয়েছে যে, তুমি দ্বীনের দিকে তোমার মুখ প্রতিষ্ঠিত কর একনিষ্ঠভাবে, আর তুমি কক্ষনো মুশরিকদের মধ্যে শামিল হয়ো না।

وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا يَضُرُّكَ ج فَإِنْ فَعَلْتَ فَإِنَّكَ إِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ (١٠٦)

১০৬। আর আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে আহ্বান করো না এমন কিছুকে যা না পারে তোমার কোন উপকার করতে, আর না পারে ক্ষতি করতে; যদি তুমি তা কর তাহলে তুমি যালিমদের মধ্যে শামিল হয়ে যাবে।

وَإِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ إِلَّا هُوَ ج وَإِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ لِفَضْلِهٖ ط يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ط وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (١٠٧)

১০৭। আল্লাহ যদি তোমাকে কষ্ট দিতে চান তাহলে তিনি ছাড়া তা দূর করার কেউ নেই, আর আল্লাহ যদি তোমার কল্যাণ করতে চান, তাহলে তাঁর অনুগ্রহ রদ করার কেউ নেই। তিনি তাঁর বান্দাহদের মধ্যে যাকে চান অনুগ্রহ দিয়ে ধন্য করেন। তিনি বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ج فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ج وَمَآ أَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ط (١٠٨)

১০৮। বল, "হে মানুষ! তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে তোমাদের কাছে প্রকৃত সত্য এসে পৌঁছেছে। অতঃপর যে সঠিক পথ অবলম্বন করবে, সে নিজের কল্যাণের জন্যই সঠিক পথ ধরবে। আর যারা পথভ্রষ্ট হবে তারা পথভ্রষ্ট হবে নিজেদেরই ক্ষতি করার জন্য, আমি তোমাদের হয়ে কাজ উদ্ধার করে দেয়ার কেউ নেই।

وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى إِلَيْكَ وَاصْبِرْ حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ج وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ع (١٠٩)

১০৯। তোমার নিকট যে ওয়াহী অবতীর্ণ করা হয়েছে তুমি তার অনুসরণ কর আর তুমি ধৈর্য অবলম্বন কর যে পর্যন্ত না আল্লাহ ফায়সালা প্রদান করেন। বস্তুতঃ তিনিই হলেন সর্বোত্তম ফায়সালাকারী।

Contents

১১. সূরাহ হূদ

سُوْرَةُ هُوْدٍ

আয়াতঃ ১২৩, রুকূ'ঃ ১০, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

الٓرٰ قف كِتٰبٌ أُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ خَبِيْرٍ لا (١)

১। আলিফ, লাম, রা; এটা এমন একটা গ্রন্থ, এর আয়াতগুলো সুদৃঢ়, অতঃপর সবিস্তারে ব্যাখ্যাকৃত মহাজ্ঞানী, সর্বজ্ঞের নিকট হতে।

أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا اللهَ ط إِنَّنِيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ لا (٢)

২। (এটা শিক্ষা দেয়) যে, তোমরা আল্লাহ ছাড়া কারো 'ইবাদাত করবে না, আমি অবশ্যই তাঁর পক্ষ হতে তোমাদের জন্য ভয় প্রদর্শনকারী ও সুসংবাদদাতা।

وَّأَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا إِلَيْهِ يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِيْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ط وَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ كَبِيْرٍ (٣)

৩। (এটা শিক্ষা দেয়) যে, তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা চাও, আর অনুশোচনাভরে তাঁর দিকেই ফিরে এসো, তাহলে তিনি একটা নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত তোমাদেরকে উত্তম জীবন সামগ্রী ভোগ করতে দিবেন, আর অনুগ্রহ লাভের যোগ্য প্রত্যেক ব্যক্তিকে তিনি তাঁর অনুগ্রহ দানে ধন্য করবেন। আর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে আমি তোমাদের উপর বড় এক কঠিন দিনের 'আযাবের আশঙ্কা করছি।

إِلَى اللهِ مَرْجِعُكُمْ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٤)

৪। তোমাদের প্রত্যাবর্তন আল্লাহ্‌র কাছেই, আর তিনি সব কিছুই করতে সক্ষম।

أَلَآ إِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا مِنْهُ ط أَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ لا يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ج إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٥)

৫। লক্ষ্য কর, এরা নিজেদের বুক ঘুরিয়ে নেয় যাতে তারা তাঁর (অর্থাৎ আল্লাহ্‌র) থেকে লুকিয়ে থাকতে পারে। সাবধান! এরা যখন কাপড় দিয়ে নিজেরা নিজেদেরকে ঢেকে নেয়, তখন তারা যা গোপন করে আর প্রকাশ করে তিনি তা জানেন। তাদের মনের গভীরে যা আছে সে বিষয়ে তিনি সবচেয়ে বেশি অবহিত।

৫। ৪৬৮২. মুহাম্মাদ ইবনু 'আব্বাদ ইবনু জা'ফর (রহ.) হতে বর্ণিত যে, ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) أَلَا إِنَّهُمْ تَثْنَوْنِى صُدُوْرُهُمْ পাঠ করলেন। আমি বললাম, যে আবুল 'আব্বাস تَثْنَوْنِى صُدُوْرُهُمْ দ্বারা কী বুঝানো হয়েছে? তিনি বললেন, কতক লোক স্বীয় স্ত্রী সহবাসের সময় অথবা পেশাব-পায়খানার সময় (নগ্ন হতে) লজ্জাবোধ করত, তখন أَلَا إِنَّهُمْ تَثْنَوْنِى صُدُوْرُهُمْ আয়াত নাযিল হয়। [৪৬৮১] (আ.প্র. ৪৩২১, ই.ফা. ৪৩২২)

وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِي الْأَرْضِ إِلَّا عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا وَمُسْتَوْدَعَهَا ط كُلٌّ فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (٦)

৬. যমীনে বিচরণশীল এমন কোন জীব নেই যার জীবিকার দায়িত্ব আল্লাহ্‌র উপর নেই, তিনি জানেন তাদের থাকার জায়গা কোথায় আর কোথায় তাদেরকে (মৃত্যুর পর) রাখা হয়, সব কিছুই আছে সুস্পষ্ট লিপিকায়।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ط وَلَئِنْ قُلْتَ إِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٧)

৭. আর তিনিই আসমানসমূহ আর যমীনকে ছ'দিনে সৃষ্টি করেছেন। ইতোপূর্বে তাঁর আরশ ছিল পানির উপর। (সৃষ্টি করেছেন) তোমাদেরকে পরীক্ষা করার উদ্দেশে যে, তোমাদের মধ্যে 'আমালের ক্ষেত্রে কারা শ্রেষ্ঠ। তুমি যদি বল, "মৃত্যুর পর তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই আবার উঠানো হবে, তাহলে কাফিররা অবশ্যই বলবে যে, এতো সুস্পষ্ট যাদু।

وَلَئِنْ أَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِلٰٓى أُمَّةٍ مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ط أَلَا يَوْمَ يَأْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِئُوْنَ ع (٨)

৮. আমি যদি নির্দিষ্ট সময়ের জন্য তাদের থেকে শাস্তি বিলম্বিত করি, তাহলে তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে যে, 'কিসে ওটাকে আটকে রাখল? সাবধান! এমন দিন তাদের কাছে আসবে যা তাদের থেকে কেউ ফিরিয়ে দিতে পারবে না, আর যা নিয়ে তারা ঠাট্টা বিদ্রূপ করছিল তাই তাদেরকে ঘিরে ফেলবে।

وَلَئِنْ أَذَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ج إِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ (٩)

৯. আমি যদি মানুষকে আমার পক্ষ থেকে রহমত আস্বাদন করাই অতঃপর তা তার থেকে ছিনিয়ে নেই, তখন সে অবশ্যই হতাশ ও অকৃতজ্ঞ হয়ে পড়ে।

وَلَئِنْ أَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّيْ ط إِنَّهٗ لَفَرِحٌ

১০. আর যদি তার উপরে আসা দুঃখ কষ্টের পর তাকে নি'মাতের স্বাদ আস্বাদন করাই, তখন সে অবশ্য অবশ্যই বলবে, 'আমার দূরবস্থা কেটে গেছে'। তখন সে আনন্দে উৎফুল্ল হয়, হয়ে পড়ে

৭। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ তা'আলা বলেন, তুমি খরচ কর। আমি তোমার উপর খরচ করব এবং [রসূলুল্লাহ (ﷺ)] বললেন, আল্লাহ তা'আলার হাত পরিপূর্ণ। রাতদিন অনবরত খরচেও তা কমে না। তিনি বলেন, তোমরা কি দেখ না, যখন থেকে আসমান ও যমীন সৃষ্টি করেছেন, তখন থেকে কী পরিমাণ খরচ করেছেন? কিন্তু এত খরচ করার পরও তাঁর হাতের সম্পদ কমে যায়নি। আর আল্লাহ তা'আলার 'আরশ পানির উপর ছিল। তাঁর হাতেই রয়েছে দাঁড়িপাল্লা। তিনি নিচু করেন, তিনি উপরে তোলেন।.......হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৬৮৪ [৫৩৫২, ৭৪১১, ৭৪১৯, ৭৪৯৬; মুসলিম ৯৯৩, তিরমিযী ৩০৪৫, ইবনু মাজাহ ১৯৭, আহমাদ ৭২৫৬, ২৭৩৫৭]

فَخُوْرٌ لا (١٠)

অহঙ্কারী।

إِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ط أُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ (١١)

১১. কিন্তু যারা ধৈর্যশীল ও নেক 'আমালকারী তারা ওরকম নয়। আর এরাই হল যাদের জন্য আছে ক্ষমা ও বিরাট প্রতিদান।

فَلَعَلَّكَ تَارِكٌۢ بَعْضَ مَا يُوْحٰٓى إِلَيْكَ وَضَآئِقٌۢ بِهٖ صَدْرُكَ أَنْ يَّقُوْلُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ط إِنَّمَآ أَنْتَ نَذِيْرٌ ط وَاللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ط (١٢)

১২. তুমি কি তোমার প্রতি যা ওয়াহী করা হয়েছে তার কিছু অংশ পরিত্যাগ করতে চাও আর তোমার মন সংকুচিত করতে চাও তাদের এ কথা বলার কারণে যে "তার কাছে ধনভাণ্ডার অবতীর্ণ হয় না কেন, কিংবা তার কাছে ফেরেশতা আসে না কেন?" তুমি তো কেবল ভয় প্রদর্শনকারী, যাবতীয় কাজ পরিচালনার দায়িত্ব আল্লাহ্‌র।

أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ط قُلْ فَأْتُوْا بِعَشْرِ سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١٣)

১৩. তারা কি বলে "সে [অর্থাৎ মুহাম্মাদ (ﷺ)] ওটা রচনা করেছে? বল, "তাহলে তোমরা এর মত দশটি সূরাহ রচনা করে আন, আর (এ কাজে সাহায্য করার জন্য) আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাকে ডাকতে পার ডেকে নাও যদি তোমরা সত্যবাদী হয়েই থাক ।

فَإِلَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكُمْ فَاعْلَمُوْٓا أَنَّمَآ أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللهِ وَأَنْ لَّآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (١٤)

১৪. তারা যদি তোমাদের ডাকে সাড়া না দেয় তাহলে জেনে নাও যে, আল্লাহ্‌র জ্ঞান অনুসারেই তা অবতীর্ণ হয়েছে। আরো জেনে রাখ যে, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই। তাহলে এখন কি তোমরা আত্মসমর্পণ করবে?

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ فِيْهَا وَهُمْ فِيْهَا لَا يُبْخَسُوْنَ (١٥)

১৫. যারা এ দুনিয়ার জীবন আর তার শোভা সৌন্দর্য কামনা করে, তাদেরকে এখানে তাদের কর্মের পুরোপুরি ফল আমি দিয়ে দেই, আর তাতে তাদের প্রতি কোন কমতি করা হয় না।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا النَّارُ ز صلے وَحَبِطَ مَا صَنَعُوْا فِيْهَا وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٦)

১৬. কিন্তু আখেরাতে তাদের জন্য আগুন ছাড়া কিছুই নাই, এখানে যা কিছু তারা করেছে তা নিষ্ফল হয়ে গেছে, আর তাদের যাবতীয় কাজকর্ম ব্যর্থ হয়ে গেছে।

أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ وَيَتْلُوْهُ شَاهِدٌ

১৭. তাহলে যে লোক তার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে স্পষ্ট প্রমাণের উপর আছে এবং তাঁর পক্ষ

مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ط أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ط وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ مَوْعِدُهٗ ج فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ ق إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٧)

হতে এক সাক্ষী ওটা পড়ে শোনাচ্ছে (সে কি অবিশ্বাসীদের সমান হতে পারে?) আর তার পূর্বে পথ প্রদর্শক ও রহমত স্বরূপ এসেছিল মূসার কিতাব। ওরাই তাতে (অর্থাৎ কুরআনে) বিশ্বাসী। যারাই এটাকে অস্বীকার করবে, জাহান্নামই হল তাদের প্রতিশ্রুত স্থান। কাজেই এ সম্পর্কে তুমি কোন প্রকার সন্দেহে নিপতিত হয়ো না। এটা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে আগত প্রকৃত সত্য, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ বিশ্বাস করে না।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ط أُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ وَيَقُوْلُ الْأَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ج أَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ لا (١٨)

১৮. যারা আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা রচনা করে তাদের থেকে বড় যালিম আর কে হতে পারে? তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের সামনে উপস্থিত করা হবে আর সাক্ষীরা সাক্ষ্য দিবে যে, এই লোকরাই তাদের রব্বের বিরুদ্ধে মিথ্যা বলেছিল। শুনে রেখ! আল্লাহ্‌র অভিশাপ সেই যালিমদের উপর

الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ط وَهُمْ بِالْآخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ (١٩)

১৯. যারা আল্লাহ্‌র পথ হতে লোকেদেরকে ফিরিয়ে রাখে আর তাকে বক্র করতে চায়, আর তারা আখিরাতকে অস্বীকার করে।

أُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ م يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ط مَا كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا يُبْصِرُوْنَ (٢٠)

২০. দুনিয়াতে তারা আল্লাহকে অক্ষম করে দিতে পারত না, আর আল্লাহ ছাড়া তাদের কোন সাহায্যকারীও ছিল না, তাদের শাস্তি দ্বিগুণ করা হবে। তারা না শুনতে পারত, আর না দেখতে পারত।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (٢١)

২১. এরা সেই লোক যারা নিজেদেরকে নিজেরাই ক্ষতিগ্রস্ত করেছে, আর তারা যা কিছু রচনা করেছিল তা তাদের কাছ থেকে উধাও হয়ে গেছে।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْآخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُوْنَ (٢٢)

২২. এতে কোন সন্দেহ নেই যে আখেরাতে এরাই সবচেয়ে ক্ষতিগ্রস্ত।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَأَخْبَتُوْٓا إِلٰى رَبِّهِمْ لا أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ج هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٢٣)

২৩. নিশ্চয় যারা ঈমান আনে, সৎকর্ম করে আর তাদের রব্বের কাছে বিনীত, তারাই জান্নাতের অধিবাসী, তারা সেখানে স্থায়ী হবে।

Contents

مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْأَعْمٰى وَالْأَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ وَالسَّمِيْعِ ۭ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۭ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ع (٢٤)

২৪. দু'শ্রেণীর লোকের দৃষ্টান্ত হল যেমন একজন হল অন্ধ ও বধির, অন্যজন চক্ষুষ্মান ও শ্রবণশীল, এ দু'জন কি তুলনায় সমান হতে পারে? এরপরও কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ ز إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ لا (٢٥)

২৫. আমি নূহকে তার কাওমের কাছে পাঠিয়েছিলাম। (সে বলেছিল) আমি তোমাদের জন্য একজন স্পষ্ট সতর্ককারী,

أَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا اللهَ ۭ إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ أَلِيْمٍ (٢٦)

২৬. যে, তোমরা আল্লাহ ছাড়া কারো 'ইবাদাত করো না, অন্যথায় আমি আশঙ্কা করছি যে, তোমাদের উপর একদিন বেদনাদায়ক 'আযাব আসবে।

فَقَالَ الْمَلَأُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا نَرٰىكَ إِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ اتَّبَعَكَ إِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ أَرَاذِلُنَا بَادِيَ الرَّأْيِ ج وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ (٢٧)

২৭. জওয়াবে তার জাতির প্রধানগণ– যারা অবিশ্বাসী ছিল তারা বলল, 'আমরা তোমাকে আমাদের মত মানুষ ছাড়া অন্য কিছু দেখছি না, আর প্রকাশ্যতঃ আমাদের হীন অধম লোকগুলো ছাড়া তোমার পথ অবলম্বন করতে দেখছি না, আমাদের উপর তোমার কোন প্রাধান্যও দেখছি না, বরং আমরা তোমাদেরক মিথ্যুক বলেই মনে করি।'

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ عَلَيْكُمْ ۭ أَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَأَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ (٢٨)

২৮. সে বলল, "হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা চিন্তা-ভাবনা করে দেখ, আমি যদি আমার প্রতিপালকের নিকট হতে প্রাপ্ত সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত থাকি আর তিনি তাঁর পক্ষ থেকে আমাকে অনুগ্রহ প্রদান করে থাকেন যা তোমাদের দৃষ্টি থেকে গোপনে রাখা হয়েছে, এমতাবস্থায় তা গ্রহণ করার ব্যাপারে আমি কি তোমাদেরকে বাধ্য করতে পারি যখন তোমরা তা অপছন্দ কর?

وَيٰقَوْمِ لَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللهِ وَمَآ أَنَا بِطَارِدِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ إِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ وَلٰكِنِّيْٓ أَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ (٢٩)

২৯. হে আমার জাতির লোকেরা! আমি এ কাজে তোমাদের কাছে কোন ধন-সম্পদ চাই না, আমার পারিশ্রমিক আছে কেবল আল্লাহ্র কাছে। আর মু'মিনদের তাড়িয়ে দেয়া আমার জন্য শোভনীয় নয়, তারা তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাৎ অবশ্যই লাভ করবে, কিন্তু আমি দেখছি তোমরা এমন এক জাতি যারা মূর্খের আচরণ করছ।

৩০. হে আমার জাতির লোকেরা! আমি যদি এই লোকদেরকে তাড়িয়ে দেই তাহলে আমাকে আল্লাহ্‌র পাকড়াও থেকে কে বাঁচাবে? তবুও কি তোমরা উপদেশ নিবে না?	وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللهِ إِنْ طَرَدْتُّهُمْ ط أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (٣٠)
৩১. আমি তো তোমাদেরকে এ কথা বলছি না যে, আমার কাছে আল্লাহ্‌র ধন-ভাণ্ডারসমূহ আছে। আর আমি অদৃশ্যের খবরও জানি না। আর আমি এ কথাও বলি না যে, আমি ফেরেশতা। আমি এ কথাও বলি না যে, তোমাদের চোখ যে সব লোককে অবজ্ঞা করে, আল্লাহ কক্ষনো তাদের কল্যাণ করবেন না। তাদের অন্তরে কী আছে আল্লাহ্‌ই তা বেশী জানেন। (এ রকম কথা বললে) আমি তো যালিমদের শামিল হয়ে যাবো।	وَلَآ أَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللهِ وَلَآ أَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ أَقُوْلُ إِنِّيْ مَلَكٌ وَّلَآ أَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللهُ خَيْرًا ط اَللهُ أَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ صلے إِنِّيْٓ إِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (٣١)
৩২. তারা বলল, 'হে নূহ! তুমি আমাদের সাথে ঝগড়া করেছ, খুব বেশি বেশি ঝগড়া করেছ, এখন যার ভয় আমাদেরকে দেখাচ্ছ তা আমাদের কাছে নিয়ে এসো, যদি তুমি সত্যবাদী হও।'	قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَأَكْثَرْتَ جِدَالَنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٣٢)
৩৩. নূহ বলল, "আল্লাহ্‌ই তা তোমাদের কাছে নিয়ে আসবেন যদি তিনি চান, তোমরা ব্যর্থ করতে পারবে না।	قَالَ إِنَّمَا يَأْتِيْكُمْ بِهِ اللهُ إِنْ شَآءَ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (٣٣)
৩৪. আমি তোমাদের কোন কল্যাণ করতে চাইলেও আমার কল্যাণ কামনা তোমাদের কোন উপকারে আসবে না যদি আল্লাহ তোমাদেরকে পথহারা করতে চান। তিনিই তোমাদের রব্ব, আর তাঁর কাছেই তোমরা ফিরে যাবে।"	وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ إِنْ أَرَدْتُّ أَنْ أَنْصَحَ لَكُمْ إِنْ كَانَ اللهُ يُرِيْدُ أَنْ يُّغْوِيَكُمْ ط هُوَ رَبُّكُمْ قف وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ط (٣٤)
৩৫. তারা কি বলে যে, এ লোকই এ সব রচনা করেছে? বল, আমি যদি তা রচনা করে থাকি, তাহলে আমার অপরাধের দায়িত্ব আমার উপর। তোমরা যে অপরাধ করেছ তাথেকে আমি মুক্ত।	أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ط قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهٗ فَعَلَيَّ إِجْرَامِيْ وَأَنَا بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ع (٣٥)
৩৬. নূহের কাছে ওয়াহী পাঠানো হয়েছিল যে, যারা ঈমান এনেছে তারা ছাড়া তোমার সম্প্রদায়ের আর কোন লোক কক্ষনো ঈমান আনবে না, কাজেই তারা যা করছে তার জন্য তুমি হা-হুতাশ করো না।	وَأُوْحِيَ إِلٰى نُوْحٍ أَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ قَوْمِكَ إِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ج (٣٦)

Contents

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِأَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ج إِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ (٣٧)

৩৭. অতএব আমার পর্যবেক্ষণের অধীনে আর আমার ওয়াহী অনুসারে তুমি নৌকা তৈরি কর, আর যারা বাড়াবাড়ি করেছে তাদের ব্যাপারে আমার কাছে কোন আবেদন করো না, তারা অবশ্যই ডুববে।

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ قف وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَأٌ مِّنْ قَوْمِه سَخِرُوْا مِنْهُ ط قَالَ إِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَإِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ ط (٣٨)

৩৮. নূহ নৌকা তৈরি করছিল, আর যখনই তার জাতির প্রধান ব্যক্তিরা তার নিকট দিয়ে যাচ্ছিল, তারা তাকে ঠাট্টা করছিল। সে বলল, 'তোমরা যদি আমাদেরকে ঠাট্টা কর, তাহলে আমরাও তোমাদেরকে (ভবিষ্যতে) ঠাট্টা করব যেমনভাবে তোমরা (এখন) ঠাট্টা করছ,

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لا مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (٣٩)

৩৯. তোমরা (শীঘ্রই) জানতে পারবে কার উপর লাঞ্ছনাকর 'আযাব আসে আর কার উপর আসে স্থায়ী 'আযাব।

حَتّٰىٓ إِذَا جَآءَ أَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ لا قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَأَهْلَكَ إِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ط وَمَآ اٰمَنَ مَعَهٗٓ إِلَّا قَلِيْلٌ (٤٠)

৪০. শেষে যখন আমার নির্দেশ এসে গেল, আর তন্দুর (পানিতে) উথলে উঠল, আমি বললাম, 'প্রত্যেক শ্রেণীর যুগলের দু'টি তাতে তুলে নাও আর তোমার পরিবার পরিজনকে, তাদের ছাড়া যাদের ব্যাপারে আগেই ঘোষণা দেয়া হয়েছে। আর যারা ঈমান এনেছে তাদেরকেও (তুলে নাও)। তার সঙ্গে ঈমান এনেছিল খুব অল্প কয়েকজনই।

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰهَا ط إِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٤١)

৪১. নূহ বলল, 'এতে আরোহণ কর, আল্লাহ্র নামে এর গতি ও এর স্থিতি, আমার প্রতিপালক অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।'

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ قف وَنَادٰى نُوْحُ ۨابْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ (٤٢)

৪২. পর্বত সদৃশ তরঙ্গমালার মধ্য দিয়ে তা তাদেরকে নিয়ে বয়ে চলল। তখন নূহ তার পুত্রকে– যে তাদের থেকে আলাদা হয়ে গিয়েছিল– ডাক দিয়ে বলল, 'হে আমার পুত্র! আমাদের সঙ্গে আরোহণ কর, কাফিরদের সঙ্গে থেক না।

قَالَ سَاٰوِيْٓ إِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ط قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ أَمْرِ اللهِ إِلَّا

৪৩. সে (অর্থাৎ নূহের পুত্র) বলল, 'আমি এক্ষুণি পাহাড়ে আশ্রয় নেব যা আমাকে পানি থেকে রক্ষা করবে।' নূহ বলল, 'আজ আল্লাহ্র হুকুম থেকে কোন কিছুই রক্ষা করতে পারবে না, অবশ্য আল্লাহ

مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ (٤٣)

যার প্রতি দয়া করবেন সে রক্ষা পাবে।' অতঃপর ঢেউ তাদের দু'জনার মাঝে আড়াল করল আর সে ডুবে যাওয়া লোকেদের মধ্যে শামিল হয়ে গেল।

وَقِيْلَ يٰٓأَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ أَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْأَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٤٤)

৪৪. অতঃপর বলা হল, 'হে যমীন! তোমার পানি গিলে ফেল, আর হে আকাশ, থাম।' অতঃপর পানি যমীনে বসে গেল, কার্য সমাপ্ত হল, নৌকা জুদী পর্বতে এসে ভিড়ল, আর বলা হল– 'যালিম লোকেরা ধ্বংস হোক!'

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ إِنَّ ابْنِيْ مِنْ أَهْلِيْ وَإِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَأَنْتَ أَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ (٤٥)

৪৫. নূহ তার প্রতিপালককে আহ্বান জানাল। সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমার পুত্র তো আমার পরিবারভুক্ত, আর তোমার ও'য়াদা সত্য আর তুমি বিচারকদের সর্বশ্রেষ্ঠ বিচারক।'

قَالَ يٰنُوْحُ إِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ أَهْلِكَ ۚ إِنَّهٗ عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۖ فَلَا تَسْئَلْنِ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۗ إِنِّيْٓ أَعِظُكَ أَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ (٤٦)

৪৬. তিনি বললেন, 'ওহে নূহ! সে তো তোমার পরিবারের লোক নয়, তার আচার আচরণ অসৎ, কাজেই যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই সে বিষয়ে আমার কাছে আবেদন করো না, আমি তোমাকে উপদেশ দিচ্ছি, তুমি যেন মূর্খদের মধ্যে শামিল না হও।

قَالَ رَبِّ إِنِّيْٓ أَعُوْذُ بِكَ أَنْ أَسْئَلَكَ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَإِلَّا تَغْفِرْ لِيْ وَتَرْحَمْنِيْٓ أَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ (٤٧)

৪৭. সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! যে বিষয়ে আমার কোন জ্ঞান নেই সে বিষয়ে প্রশ্ন করা হতে আমি তোমার কাছে আশ্রয় চাচ্ছি। যদি তুমি আমাকে ক্ষমা না কর আর আমার প্রতি দয়া না কর তাহলে আমি ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাব।'

قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى أُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۗ وَأُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٤٨)

৪৮. বলা হল, 'হে নূহ! তুমি নেমে পড়, আমার পক্ষ হতে শান্তি ও বরকত তোমার প্রতি আর তোমার সঙ্গীদের মধ্যে অনেক দলের প্রতি, আর এ ছাড়া অন্য লোকেদের আমি জীবন উপভোগ করতে দেব, (কিন্তু) পরে আমার নিকট হতে মর্মান্তিক 'আযাব তাদেরকে স্পর্শ করবে।'

تِلْكَ مِنْ أَنْبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ إِلَيْكَ ۚ مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ أَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ إِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ع (٤٩)

৪৯. এ সব হল অদৃশ্যের খবর যা তোমাকে ওয়াহী দ্বারা জানিয়ে দিচ্ছি, যা এর পূর্বে না তুমি জানতে, না তোমার জাতির লোকেরা জানত। কাজেই ধৈর্য ধর, শুভ পরিণতি মুত্তাকীদের জন্যই নির্দিষ্ট।

وَإِلٰى عَادٍ أَخَاهُمْ هُوْدًا ط قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط إِنْ
أَنْتُمْ إِلَّا مُفْتَرُوْنَ (٥٠)

৫০. আর 'আদ জাতির নিকট তাদের ভাই হূদকে পাঠিয়েছিলাম। সে বলেছিল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোন ইলাহ নেই। তোমরা তো শুধু মিথ্যে বানিয়ে নিয়েছ।

يٰقَوْمِ لَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا ط إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٥١)

৫১. হে আমার সম্প্রদায়! এর বিনিময়ে আমি তোমাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাই না। আমার পারিশ্রমিক তো তাঁর জিম্মায় যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন, তবুও কি তোমরা জ্ঞান-বুদ্ধি খাটাবে না?

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْآ إِلَيْهِ
يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ
قُوَّةً إِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ (٥٢)

৫২. হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা তোমাদের রব্বের কাছে ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতঃপর অনুশোচনাভরে তাঁর দিকেই ফিরে যাও, তিনি তোমাদের জন্য প্রচুর বৃষ্টি বর্ষণ করবেন, তোমাদের শক্তিকে আরো শক্তি দিয়ে বাড়িয়ে দিবেন, আর অপরাধী হয়ে মুখ ফিরিয়ে নিও না।

قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ
بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ لَكَ
بِمُؤْمِنِيْنَ (٥٣)

৫৩. তারা বলল, 'হে হূদ! তুমি আমাদের কাছে কোন সুস্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে আসনি, আর তোমার কথায় আমরা আমাদের উপাস্যগুলোকে ত্যাগ করতে পারি না, আমরা তোমাতে বিশ্বাসী নই।

إِنْ نَّقُوْلُ إِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا
بِسُوْٓءٍ ط قَالَ إِنِّيْٓ أُشْهِدُ اللهَ وَاشْهَدُوْٓا أَنِّيْ
بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ لا (٥٤)

৫৪. আমরা এ কথাই বলি যে, তোমার উপর আমাদের কোন উপাস্যের অশুভ ছায়া পড়েছে।' সে বলল, 'আমি আল্লাহকে সাক্ষী রাখছি আর তোমরাও সাক্ষী হও যে, তোমরা আল্লাহ ছাড়া যাকে তাঁর শরীক কর তার সাথে আমি পুরোপুরি সম্পর্কহীন।

مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ لَا
تُنْظِرُوْنِ (٥٥)

৫৫. তাঁকে (আল্লাহ) ব্যতীত তোমরা সবাই মিলে আমার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র কর আর আমাকে একটুও অবকাশ দিও না।

إِنِّيْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ط مَا
مِنْ دَآبَّةٍ إِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ط إِنَّ رَبِّيْ
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٥٦)

৫৬. আমি নির্ভর করি আল্লাহ্‌র উপর যিনি আমার আর তোমাদের রব, এমন কোন জীব নেই যার কর্তৃত্ব তাঁর হাতে নয়, নিশ্চয়ই আমার রব সরল পথের উপর প্রতিষ্ঠিত।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ أَبْلَغْتُكُمْ مَّآ أُرْسِلْتُ

৫৭. এরপরও যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে লও (তবে জেনে রেখ), আমাকে যা দিয়ে তোমাদের কাছে

بِهٖۤ اِلَيْكُمْ ؕ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ (٥٧)

পাঠানো হয়েছে আমি তো তোমাদের কাছে তা পৌঁছে দিয়েছি, এখন আমার প্রতিপালক তোমাদের স্থলে অন্য সম্প্রদায়কে নিয়ে আসবেন আর তোমরা তাঁর কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। আমার প্রতিপালক সব কিছুর রক্ষণাবেক্ষণকারী।

وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيْظٍ (٥٨)

৫৮. আমার নির্দেশ যখন এসে গেল, তখন আমি হূদকে আর তার সঙ্গে যারা ঈমান এনেছিল তাদেরকে আমার দয়ায় রক্ষা করলাম, আর তাদেরকে বাঁচিয়ে নিলাম এক কঠিন 'আযাব হতে।

وَتِلْكَ عَادٌ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْۤا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ (٥٩)

৫৯. এই হল 'আদ, তারা তাদের প্রতিপালকের আয়াতসমূহকে অস্বীকার করেছিল, আর তাদের রসূলদেরকে অমান্য করেছিল, প্রত্যেক প্রবল পরাক্রান্ত, সত্য-দ্বীনের দুশমনের নির্দেশের তারা অনুসরণ করেছিল।

وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ؕ اَلَا بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۚ (٦٠)

৬০. এ দুনিয়াতে তাদের পিছনে লা'নত রয়েছে, আর কিয়ামাতের দিনেও। জেনে রেখ, 'আদ জাতি তাদের প্রতিপালককে অস্বীকার করেছিল। জেনে রেখ! ধ্বংস করা হয়েছিল 'আদকে যারা ছিল হূদের সম্প্রদায়।

وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ هُوَ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ (٦١)

৬১. আমি সামূদ জাতির কাছে তাদের ভাই সালিহকে পাঠিয়েছিলাম। সে বলল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের আর কোন ইলাহ নেই, তিনিই তোমাদেরকে মাটি থেকে পয়দা করেছেন, আর তাতেই তোমাদেরকে প্রতিষ্ঠিত করেছেন, কাজেই তাঁর কাছে তোমরা ক্ষমা প্রার্থনা কর, আর তাঁর পানেই ফিরে এসো, আমার প্রতিপালক তো অতি নিকটে, আর তিনি আহ্বানে সাড়াদানকারী।'

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا قَبْلَ هٰذَاۤ اَتَنْهٰنَاۤ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَاۤ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ (٦٢)

৬২. তারা বলল, "হে সালিহ! এর পূর্বে তুমি তো আমাদের মাঝে ছিলে আশা-আকাঙ্ক্ষার পাত্র, তুমি কি আমাদেরকে সেই মা'বূদদের 'ইবাদাত করতে নিষেধ করছ আমাদের পিতৃ পুরুষরা যার 'ইবাদাত করত? তুমি আমাদেরকে যে দিকে ডাকছ সে সম্পর্কে আমরা বিভ্রান্তিকর সংশয়ে পড়ে আছি।

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللهِ إِنْ عَصَيْتُهٗ قف فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ (٦٣)

৬৩. সালিহ বলল, "হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা কি চিন্তা করে দেখেছ, যদি আমি আমার প্রতিপালকের সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর থাকি আর তাঁর পক্ষ থেকে আমাকে অনুগ্রহ করা হয়, এমতাবস্থায় আমি যদি তার অবাধ্য হই তাহলে আল্লাহ্‌র ('আযাব) থেকে আমাকে কে রক্ষা করবে? তোমরা তো কেবল আমার ক্ষতিই বাড়িয়ে দিতে চাও।

وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا تَأْكُلْ فِيْٓ أَرْضِ اللهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ (٦٤)

৬৪. হে আমার জাতির লোকেরা! এটা আল্লাহ্‌র উষ্ট্রী, তোমাদের জন্য একটা নিদর্শন। একে আল্লাহ্‌র যমীনে চলে ফিরে খেয়ে বেড়াতে দাও, একে কোন প্রকার কষ্ট দিও না, নচেৎ শীঘ্রই তোমাদেরকে 'আযাব পাকড়াও করবে।'

فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ ثَلٰثَةَ أَيَّامٍ ط ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ (٦٥)

৬৫. কিন্তু তারা উষ্ট্রীটির পাগুলো কেটে ফেলল। তখন সে তাদেরকে বলল, 'তোমরা তোমাদের ঘরে তিনটি দিন জীবন উপভোগ করে নাও, এটা এমন এক ও'য়াদা যা মিথ্যে হতে পারে না।'

فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ يَوْمِئِذٍ ط إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ (٦٦)

৬৬. অতঃপর আমার হুকুম যখন আসল তখন আমি সালিহ আর তার সঙ্গে যারা ঈমান এনেছিল তাদেরকে আমার দয়ায় বাঁচিয়ে নিলাম আর সে দিনের লাঞ্ছনা হতে রক্ষা করলাম। তোমার প্রতিপালক তিনিই তো শক্তিশালী, প্রতাপশালী।

وَأَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ لا (٦٧)

৬৭. যারা যুল্‌ম করেছিল এক প্রচণ্ড শব্দ তাদেরকে আঘাত হানল, আর তারা নিজ নিজ গৃহে নতজানু হয়ে পড়ে রইল–

كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ط أَلَآ إِنَّ ثَمُوْدَا۟ كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ط أَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ ع (٦٨)

৬৮. যেন তারা সেখানে কোন দিনই বাস করেনি। জেনে রেখ, সামুদজাতি তাদের প্রতিপালককে অমান্য করেছিল। জেনে রেখ, সামূদকে (রহমাত থেকে) দূরে নিক্ষেপ করা হয়েছিল।

৬৫। 'আবদুল্লাহ ইবনু যাম'আহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) হতে শুনেছি এবং তিনি যে লোক [সালিহ (আঃ)-এর] উটনী কেটেছিল তার উল্লেখ করেছেন। তিনি বলেছেন, উটনীকে হত্যা করার জন্য এমন এক লোক (কিদার) তৈরী হয়েছিল যে তার গোত্রের ভিতর প্রভাবশালী ও শক্তিশালী ছিল, যেমন ছিল আবূ যাম'আহ। –বুখারী ৩৩৭৭ [৪৯৪২, ৫২০৪, ৬০৪২; মুসলিম ২৮৫৫, তিরমিযী ৩৩৪৩, ইবনু মাজাহ ১৯৮৩, আহমাদ ১৫৭৮৮, দারিমী ২২২০]

৬৮। 'আবদুল্লাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) যখন 'হিজ্‌র' নামক স্থান অতিক্রম করলেন, তখন তিনি বললেন, তোমরা এমন লোকদের আবাস স্থল প্রবেশ করো না যারা নিজেরাই নিজেদের উপর যুল্‌ম করেছে। প্রবেশ

وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ أَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ (٦٩)

৬৯. আমার প্রেরিত ফেরেশতাগণ ইব্‌রাহীমের কাছে সুসংবাদ নিয়ে এসেছিল। তারা এসে বলল "তোমার প্রতি সালাম! সেও বলল, 'তোমাদের প্রতিও সালাম!' অনতিবিলম্বে সে ভুনা করা বাছুর নিয়ে আসলো।

فَلَمَّا رَآ أَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ إِلَيْهِ نَكِرَهُمْ وَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ ؕ (٧٠)

৭০. যখন সে দেখল তাদের হাত তার (অর্থাৎ খাবারের) দিকে পৌঁছেছে না, সে তাদের সম্পর্কে সন্দিগ্ধ হল আর তাদের ব্যাপারে ভীতি অনুভব করল। তারা বলল, 'ভয় পেয়ো না, আমাদেরকে পাঠানো হয়েছে লূতের সম্প্রদায়ের প্রতি।'

وَامْرَأَتُهٗ قَآئِمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا بِإِسْحٰقَ لا وَمِنْ وَّرَآءِ إِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ (٧١)

৭১. (ইব্‌রাহীমের) স্ত্রী দাঁড়িয়েছিল, সে হেসে ফেলল। তখন আমি তাকে ইসহাকের আর ইসহাকের পর ইয়া'কূবের সুসংবাদ দিলাম।

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَأَلِدُ وَأَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا بَعْلِيْ شَيْخًا ؕ إِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عَجِيْبٌ (٧٢)

৭২. সে বলল, 'হায় আমার কপাল! সন্তান হবে আমার, আমি তো অতি বুড়ি আর আমার এই স্বামীও বৃদ্ধ, এতো এক আশ্চর্য ব্যাপার।'

قَالُوْٓا أَتَعْجَبِيْنَ مِنْ أَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ أَهْلَ الْبَيْتِ ؕ إِنَّهٗ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (٧٣)

৭৩. তারা বলল, 'আল্লাহ্‌র কাজে তুমি আশ্চর্য হচ্ছ, ওহে (ইব্‌রাহীমের) পরিবারবর্গ! তোমাদের উপর রয়েছে আল্লাহ্‌র দয়া ও বরকতসমূহ, তিনি বড়ই প্রশংসিত, বড়ই মহান।'

فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ إِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِيْ قَوْمِ لُوْطٍ ؕ (٧٤)

৭৪. পরে যখন ইব্‌রাহীমের আতঙ্ক দূর হল, আর তার কাছে সুসংবাদ আসল, তখন সে লূত জাতির ব্যাপারে আমার সাথে ঝগড়া করল।

إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ أَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ (٧٥)

৭৫. অবশ্যই ইব্‌রাহীম ছিল বড়ই সহিষ্ণু, কোমল হৃদয় আর আল্লাহমুখী।

يٰٓإِبْرٰهِيْمُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ج إِنَّهٗ قَدْ جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ج وَإِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ غَيْرُ مَرْدُوْدٍ (٧٦)

৭৬. 'হে ইব্‌রাহীম! এথেকে তুমি নিবৃত্ত হও, তোমার প্রতিপালকের নির্দেশ এসে গেছে, তাদের প্রতি শাস্তি আসবেই যা রদ হবার নয়।

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِيْٓءَ بِهِمْ

৭৭. আমার প্রেরিত বার্তাবাহকগণ যখন লূতের

করলে ক্রন্দনরত অবস্থায় করবে, যেন তাদের প্রতি যে বিপদ এসেছিল তোমাদের প্রতি সে রকম বিপদ না আসে। অতঃপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) বাহনের উপর আরোহী অবস্থায় নিজ চাদর দিয়ে চেহারা ঢেকে নিলেন। -বুখারী ৩৩৮০ [৪৩৩; মুসলিম ২৯৮০, আহমাদ ৪৫৪৭, ৫২০৩]

وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ عَصِيْبٌ (٧٧)

কাছে আসলো, তাদের আগমনে সে ঘাবড়ে গেল। (তাদেরকে রক্ষায়) নিজেকে অসমর্থ মনে করল, আর বলল, 'আজ বড়ই বিপদের দিন।

وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ إِلَيْهِ ط وَمِنْ قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ط قَالَ يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِيْ هُنَّ أَطْهَرُ لَكُمْ فَاتَّقُوا اللهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِيْ ضَيْفِيْ ط أَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ (٧٨)

৭৮. তার কওমের লোকেরা হুড়মুড় করে তার কাছে ছুটে আসলো, আগে থেকেই তারা এ রকম অসৎ কাজে অভ্যস্ত ছিল। সে বলল, 'হে আমার সম্প্রদায়! এই আমার (নিজের বা জাতির) কন্যারা আছে, তারা তোমাদের জন্য অধিক পবিত্র (যদি তোমরা বিয়ে কর), কাজেই তোমরা আল্লাহ্কে ভয় কর, আমার মেহমানদের ব্যাপারে আমাকে লজ্জিত করো না, তোমাদের মধ্যে কি ভাল মানুষ একটিও নেই?'

قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِيْ بَنٰتِكَ مِنْ حَقٍّ ج وَإِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ (٧٩)

৭৯. তারা বলল, 'তোমার তো জানাই আছে যে, তোমার (নিজের বা জাতির) কন্যাদের আমাদের কোন দরকার নেই, আমরা কী চাই তাতো তুমি অবশ্যই জান।'

قَالَ لَوْ أَنَّ لِيْ بِكُمْ قُوَّةً أَوْ اٰوِيْٓ إِلٰى رُكْنٍ شَدِيْدٍ (٨٠)

৮০. সে বলল, 'তোমাদেরকে দমন করার ক্ষমতা আমার যদি থাকত! অথবা কোন মজবুত আশ্রয়ে যদি আশ্রয় নিতে পারতাম!'

قَالُوْا يٰلُوْطُ إِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا إِلَيْكَ فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ إِلَّا امْرَأَتَكَ ط إِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ أَصَابَهُمْ ط إِنَّ مَوْعِدَهُمُ الصُّبْحُ ط أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيْبٍ (٨١)

৮১. আগুন্তুকরা বলল, 'হে লূত! আমরা তোমার প্রতিপালক প্রেরিত বার্তাবাহক, তারা তোমার কাছে কক্ষনো পৌঁছতে পারবে না, কাজেই কিছুটা রাত বাকী থাকতে তুমি তোমার পরিবার-পরিজন নিয়ে বেরিয়ে পড়, তোমাদের কেউ যেন পিছনের দিকে না তাকায়। কিন্তু তোমার স্ত্রী (তোমাদের সঙ্গী হতে পারবে না) তারও তাই ঘটবে, অন্যদের যা ঘটবে। সকাল হল তাদের (শাস্তি আসার) নির্ধারিত সময়, সকাল কি নিকটবর্তী নয়?'

فَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عٰلِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ٥ لا مَّنْضُوْدٍ لا (٨٢)

৮২. তারপর আমার নির্দেশ যখন এসে গেল, তখন আমি সেই জনপদকে উপর নীচ করে উল্টে দিলাম, আর তাদের উপর স্তরে স্তরে পাকানো মাটির প্রস্তর বর্ষণ করলাম।

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ ط وَمَا هِيَ مِنَ

৮৩. যে প্রস্তর খণ্ডের প্রতিটিই তোমার প্রতিপালকের নিকট চিহ্নিত ছিল। যালিমদের জন্য

الظّٰلِمِيْنَ بِبَعِيْدٍ ع (٨٣)

এ শাস্তি বেশী দূরের ব্যাপার নয়।

وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ط قَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهُ ط وَلَا تَنْقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ إِنِّيْٓ أَرٰىكُمْ بِخَيْرٍ وَّإِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيْطٍ (٨٤)

৮৪. আর মাদইয়ানবাসীদের কাছে আমি তাদের ভাই শু'আয়বকে পাঠিয়েছিলাম। সে বলেছিল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন সত্য ইলাহ নেই, আর মাপে ও ওজনে কম দিও না, আমি তোমাদেরকে ভাল অবস্থাতেই দেখছি। কিন্তু আমি তোমাদের জন্য শাস্তির আশঙ্কা করছি সে দিনের যেদিন তোমাদেরকে চতুর্দিক থেকে ঘিরে ধরবে।

وَيٰقَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ (٨٥)

৮৫. হে আমার সম্প্রদায়! মাপ ও ওজন ইনসাফের সঙ্গে পূর্ণ করো, লোকদেরকে তাদের প্রাপ্য কম দিও না, আর যমীনে ফাসাদ সৃষ্টি করে বেড়িও না।

بَقِيَّتُ اللهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ج وَمَآ أَنَا عَلَيْكُمْ بِحَفِيْظٍ (٨٦)

৮৬. আল্লাহ্‌র অনুমোদিত উদ্বৃত্ত (অর্থাৎ লাভ) তোমাদের জন্য উত্তম, যদি তোমরা মু'মিন হও, আমি তোমাদের পর্যবেক্ষক নই।'

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ أَصَلٰوتُكَ تَأْمُرُكَ أَنْ نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَآ أَوْ أَنْ نَّفْعَلَ فِيْٓ أَمْوَالِنَا مَا نَشٰٓؤُا ط إِنَّكَ لَأَنْتَ الْحَلِيْمُ الرَّشِيْدُ (٨٧)

৮৭. তারা বলল, 'হে শু'আয়ব! তোমার ইবাদত কি তোমাকে এই হুকুম দেয় যে, আমাদের পিতৃপুরুষ যার 'ইবাদাত করত আমরা তা পরিত্যাগ করি বা আমাদের ধন-সম্পদের ব্যাপারে আমাদের ইচ্ছে (মাফিক ব্যয় করা) বর্জন করি, তুমি তো দেখছি বড়ই ধৈর্যশীল, ভাল মানুষ।'

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَءَيْتُمْ إِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَرَزَقَنِيْ مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ط وَمَآ أُرِيْدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلٰى مَآ أَنْهٰكُمْ عَنْهُ ط إِنْ أُرِيْدُ إِلَّا الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ط وَمَا تَوْفِيْقِيْٓ إِلَّا بِاللهِ ط عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ أُنِيْبُ (٨٨)

৮৮. সে বলল, 'হে আমার জাতির লোকেরা! তোমরা কি ভেবে দেখেছ যদি আমি আমার প্রতিপালকের স্পষ্ট প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত হয়ে থাকি আর তিনি আমাকে তাঁর পক্ষ থেকে উত্তম রিয্‌ক দিয়ে থাকেন (তাহলে আমি কীভাবে তোমাদের অন্যায় কাজের সঙ্গী হতে পারি?), আমি তোমাদেরকে যে কাজ করতে নিষেধ করি সেটা তোমাদের প্রতি বিরুদ্ধাচরণ করার ইচ্ছায় নয়, আমি তো সাধ্যমত সংশোধন করতে চাই, আমার কাজের সাফল্য তো আল্লাহ্‌রই পক্ষ হতে, আমি তাঁর উপরই নির্ভর করি, আর তাঁর দিকেই মুখ করি।

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ أَنْ يُّصِيْبَكُمْ مِّثْلُ مَآ أَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ أَوْ قَوْمَ هُوْدٍ أَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ط وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ (٨٩)

৮৯. হে আমার সম্প্রদায়! আমার সঙ্গে বিরোধ তোমাদেরকে যেন কিছুতেই এমন কাজে উদ্বুদ্ধ না করে যাতে তোমাদের উপর এমন বিপদ আসে যেমন বিপদ এসেছিল নূহের জাতির কিংবা হূদের জাতির কিংবা সালিহ্‌র জাতির উপর। আর লূতের জাতির অবস্থান তো তোমাদের থেকে মোটেই দূরে নয়।

وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا إِلَيْهِ ط إِنَّ رَبِّيْ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ (٩٠)

৯০. তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, অতঃপর তাঁরই নিকট তাওবাহ কর। আমার প্রতিপালক তো পরম দয়ালু, বড়ই ভালবাসা পোষণকারী।'

قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ وَإِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ج وَلَوْلَا رَهْطُكَ لَرَجَمْنٰكَ ز وَمَآ أَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ (٩١)

৯১. তারা বলল, 'হে শু'আয়ব! তুমি যা বল তার অনেক কথাই আমরা বুঝি না, আমরা আমাদের মধ্যে তোমাকে অবশ্যই দুর্বল দেখছি, তোমার গোত্র না থাকলে আমরা তোমাকে অবশ্যই পাথর নিক্ষেপ ক'রে মেরে ফেলতাম, আমাদের উপর তোমার কোন ক্ষমতাই নেই।

قَالَ يٰقَوْمِ أَرَهْطِيْٓ أَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللهِ ط وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ط إِنَّ رَبِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ (٩٢)

৯২. সে বলল, 'হে আমার সম্প্রদায়! আমার স্বজনরা কি তোমাদের কাছে আল্লাহ্‌র চেয়েও প্রবল! তোমরা তো তাঁকে সম্পূর্ণতঃ পেছনে ফেলে রেখেছ, তোমরা যা করছ আমার প্রতিপালক তা সব কিছুই অবগত।'

وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّيْ عَامِلٌ ط سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لا مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ط وَارْتَقِبُوْٓا إِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ (٩٣)

৯৩. হে আমার সম্প্রদায়! 'তোমরা নিজ নিজ অবস্থানে থেকে কাজ করতে থাক, আমিও আমার কাজ করতে থাকি, তোমরা অচিরেই জানতে পারবে কার উপর আসবে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তি আর কে মিথ্যেবাদী। কাজেই তোমরা অপেক্ষায় থাক, আমিও তোমাদের সাথে অপেক্ষায় থাকলাম।'

وَلَمَّا جَآءَ أَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ج وَأَخَذَتِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ لا (٩٤)

৯৪. আমার হুকুম যখন আসলো, তখন আমি আমার দয়ায় শু'আয়ব আর তার সঙ্গে যারা ঈমান এনেছিল তাদেরকে বাঁচিয়ে দিলাম। আর যারা যুল্‌ম করেছিল তাদেরকে এক প্রচণ্ড শব্দ আঘাত হানল যার ফলে তারা নিজেদের গৃহে নতজানু হয়ে পড়ে রইল।

৯৫. (এমনভাবে) যেন তারা সেখানে কোনদিনই বসবাস করেনি। জেনে রেখ, মাদইয়ানবাসীদেরকে দূরে নিক্ষেপ করা হল, যেমনভাবে দূরে নিক্ষেপ করা হয়েছিল সামূদজাতিকে।	كَأَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ط أَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ع (٩٥)
৯৬. আমি মূসাকে পাঠিয়েছিলাম আমার নিদর্শন আর স্পষ্ট প্রমাণ সহকারে	وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِيْنٍ لا (٩٦)
৯৭. ফির'আওন আর তার প্রধানদের কাছে, কিন্তু তারা ফির'আওনের হুকুমই মেনে নিল, আর ফির'আওনের হুকুম সত্য নির্ভর ছিল না।	إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا أَمْرَ فِرْعَوْنَ ج وَمَآ أَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ (٩٧)
৯৮. ক্বিয়ামাতের দিন সে তার সম্প্রদায়ের পুরোভাগে থাকবে আর তাদেরকে জাহান্নামে নিয়ে যেতে নেতৃত্ব দেবে, কতই না নিকৃষ্ট এ অবতরণ স্থল যাতে তারা উপনীত হবে।	يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَأَوْرَدَهُمُ النَّارَ ط وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ (٩٨)
৯৯. এ দুনিয়াতেও অভিশাপ তাদের পেছনে ছুটছে আর ক্বিয়ামাতের দিনেও। কত নিকৃষ্টই না সে পুরস্কার যা তাদেরকে দেয়া হবে।	وَأُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ (٩٩)
১০০. এ হল জনপদসমূহের কিছু খবরাদি যা আমি তোমার নিকট বর্ণনা করলাম, তাদের কতক এখনও দাঁড়িয়ে আছে আর কতক কর্তিত ফসলের দশা প্রাপ্ত হয়েছে।	ذٰلِكَ مِنْ أَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ (١٠٠)
১০১. আমি তাদের উপর যুল্‌ম করিনি বরং তারাই নিজেদের উপর যুল্‌ম করেছিল, কিন্তু তোমার প্রতিপালকের হুকুম যখন এসে গেল, তখন আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে তারা যেসব ইলাহকে ডাকত ওগুলো তাদের কোনই কাজে আসল না, তারা ধ্বংস ছাড়া কিছুই বৃদ্ধি করতে পারল না।	وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فَمَآ أَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ أَمْرُ رَبِّكَ ط وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ (١٠١)
১০২. তোমার প্রতিপালকের পাকড়াও এ রকমই হয়ে থাকে যখন তিনি পাকড়াও করেন কোন জনপদকে যখন তারা যুল্‌মে লিপ্ত থাকে। অবশ্যই তাঁর পাকড়াও ভয়াবহ, বড়ই কঠিন।	وَكَذٰلِكَ أَخْذُ رَبِّكَ إِذَآ أَخَذَ الْقُرٰى وَهِيَ ظٰلِمَةٌ ط إِنَّ أَخْذَهٗٓ أَلِيْمٌ شَدِيْدٌ (١٠٢)

১০২। আবূ মূসা আশ'আরী (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ তা'আলা যালিমদের ঢিল দিয়ে থাকেন। অবশেষে যখন তাকে ধরেন, তখন আর ছাড়েন না। (বর্ণনাকারী বলেন) এরপর তিনি

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ (١٠٣)

১০৩. এতে অবশ্যই নিদর্শন আছে তার জন্য যে আখেরাতের শাস্তিকে ভয় করে। এটা এমন দিন, যে দিনের জন্য সব মানুষকে একত্রিত করা হবে, এটা হাযির হওয়ার দিন।

وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ إِلَّا لِأَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ؕ (١٠٤)

১০৪. আমি একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্য তাকে বিলম্বিত করি মাত্র।

يَوْمَ يَأْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ إِلَّا بِإِذْنِهٖ ۚ فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ (١٠٥)

১০৫. সে দিন যখন আসবে তখন তাঁর অনুমতি ছাড়া কেউ মুখ খুলতে পারবে না, তাদের কেউ হবে হতভাগা, আর কেউ হবে সৌভাগ্যবান।

فَأَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۙ (١٠٦)

১০৬. যারা হতভাগা হবে তারা জাহান্নামে যাবে, সেখানে তাদের জন্য আছে হা-হুতাশ আর আর্ত চীৎকার।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ إِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ (١٠٧)

১০৭. সেখানে তারা স্থায়ী হবে চিরকালের জন্য যে পর্যন্ত আকাশসমূহ ও পৃথিবী বিদ্যমান থাকবে যদি না তোমার প্রতিপালক অন্য কিছু ইচ্ছে করেন। তোমার প্রতিপালক অবশ্যই করতে সক্ষম যা তিনি করতে চান।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ إِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ (١٠٨)

১০৮. আর যারা সৌভাগ্যবান হবে, তারা জান্নাতে স্থায়ী হবে যে পর্যন্ত আকাশসমূহ ও পৃথিবী বিদ্যমান থাকবে, যদি না তোমার প্রতিপালক অন্য রকম ইচ্ছে করেন। এ হল এক অব্যাহত পুরস্কার।

فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ مَا يَعْبُدُوْنَ إِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ مِّنْ قَبْلُ ؕ وَإِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۚ (١٠٩)

১০৯. কাজেই তারা যেগুলোর 'ইবাদাত করে সেগুলোর ব্যাপারে সন্দেহে পতিত হয়ো না। তারা যেগুলোর 'ইবাদাত করে সেগুলো তা ছাড়া আর কিছুই নয় যেগুলোর 'ইবাদাত পূর্বে তাদের পিতৃপুরুষরা করত, আমি অবশ্যই তাদের প্রাপ্য অংশ তাদেরকে পূর্ণ মাত্রাতেই দেব, কোনই কমতি করা হবে না।

[নাবী (ﷺ)] এ আয়াত পাঠ করেন- "আর এরকমই বটে আপনার রবের পাকড়াও, যখন তিনি কোন জনপদবাসীকে পাকড়াও করেন তাদের যুল্মের দরুন। নিঃসন্দেহে তাঁর পাকড়াও বড় যন্ত্রণাদায়ক, অত্যন্ত কঠিন।" –বুখারী ৪৬৮৬ [মুসলিম ২৫৮৩, তিরমিযী ৩১১০, ইবনু মাজাহ ৪০১৮]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَإِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ (١١٠)

১১০. ইতোপূর্বে আমি মূসাকেও কিতাব দিয়েছিলাম, কিন্তু তাতেও মতবিরোধ করা হয়েছিল। তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে একটি কথা যদি আগেই বলে দেয়া না হত, তাহলে তাদের মাঝে অবশ্যই ফায়সালাই ক'রে দেয়া হত, এ ব্যাপারে তারা অবশ্য সন্দেহপূর্ণ সংশয়ে পড়ে আছে।

وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ أَعْمَالَهُمْ ؕ إِنَّهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (١١١)

১১১. এতে সন্দেহ নেই যে, তোমার প্রতিপালক প্রত্যেককেই তাদের 'আমালের প্রতিফল অবশ্য অবশ্যই পুরোপুরি দান করবেন, তারা যা করে সে বিষয়ে তিনি পূর্ণ ওয়াকিফহাল।

فَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ وَلَا تَطْغَوْا ؕ إِنَّهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (١١٢)

১১২. কাজেই তুমি ও তোমার সাথে যারা (আল্লাহ্‌র দিকে) তাওবা করেছে সুদৃঢ় হয়ে থাক আল্লাহ যেভাবে তোমাকে আদেশ দিয়েছেন, আর সীমালজ্ঘন করো না। তোমরা যা কিছু কর তিনি তা ভালভাবেই দেখেন।

وَلَا تَرْكَنُوْآ إِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ مِنْ أَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ (١١٣)

১১৩. তোমরা যালিমদের প্রতি ঝুঁকে পড়ো না, তাহলে আগুন তোমাদেরকে স্পর্শ করবে, আর তখন আল্লাহ ছাড়া কেউ তোমাদের অভিভাবক থাকবে না, অত:পর তোমাদেরকে সাহায্যও করা হবে না।

وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا مِّنَ الَّيْلِ ؕ إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ج (١١٤)

১১৪. তুমি নামায প্রতিষ্ঠা কর দিনের দু' প্রান্ত সময়ে আর কিছুটা রাত অতিবাহিত হওয়ার পর, পূণ্যরাজি অবশ্যই পাপরাশিকে দূর করে দেয়, এটা তাদের জন্য উপদেশ যারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللهَ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (١١٥)

১১৫. তুমি ধৈর্য ধর, কারণ আল্লাহ সৎকর্মশীল লোকদের কর্মফল কখনও বিনষ্ট করেন না।

১১৪। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাস'ঊদ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একবার এক ব্যক্তি এক মহিলাকে চুমু দিল। তারপর রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে এসে এ ঘটনা বলল, তখন (এ ঘটনা উপলক্ষে) এ আয়াত নাযিল হয়। "নামায কায়িম করবে দিনের দু' প্রান্তে এবং রাতের প্রথমভাগে। পুণ্যসমূহ অবশ্যই মুছে ফেলে বদ কাজ। যারা উপদেশ গ্রহণ করে তাদের জন্য এটি এক উপদেশ"– (সূরাহ হূদ ১১/১১৪)। তখন সে লোকটি বলল, এ ফলাফল কি কেবল আমার জন্য? রসূলুল্লাহ (ﷺ) বললেন, আমার উম্মাতের যেই এর 'আমাল করবে তার জন্য। –বুখারী ৪৬৮৭ [৫২৬; মুসলিম ২৭৬৩, তিরমিযী ৩১১২, ৩১১৪; আবূ দাঊদ ৪৪৬৮, ইবনু মাজাহ ১৩৯৮, ৪২৫৪; আহমাদ ৩৬৪৫, ৩৮৪৪]

فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ أُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ج وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ أُتْرِفُوْا فِيْهِ وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ (١١٦)

১১৬. তাহলে তোমাদের পূর্ব যুগের লোকদের মধ্যে এমন সৎকর্মশীল কেন হয়নি যারা যমীনে বিপর্যয় সৃষ্টি করা হতে বাধা দিত? এমন লোক কমই ছিল আর তাদেরকে আমি বাঁচিয়ে নিয়েছিলাম। যালিমরা তো তাদেরকে দেয়া সামগ্রীর সুখ স্বাচ্ছন্দ্যেই লিপ্ত থাকতো আর তারা ছিল অপরাধী।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّأَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ (١١٧)

১১৭. তোমার প্রতিপালক এমন নন যে, তিনি অন্যায়ভাবে কোন জনপদ ধ্বংস করবেন এমতাবস্থায় যে, তার অধিবাসীরা সদাচারী।

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ لا (١١٨)

১১৮. তোমার প্রতিপালক চাইলে মানুষকে অবশ্যই এক জাতি করতে পারতেন, কিন্তু তারা মতভেদ করতেই থাকবে।

إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ط وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ط وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ (١١٩)

১১৯. তবে তোমার প্রতিপালক যাদের প্রতি দয়া করেন তারা (মতবিরোধ করবে) না। এই উদ্দেশ্যেই তিনি তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, আর তোমার প্রতিপালকের এ বাণী পূর্ণ হবেই যে, আমি জাহান্নামকে জ্বিন আর মানুষ দিয়ে অবশ্য অবশ্যই ভরে দেব।

وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْـبَـآءِ الرُّسُلِ مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ج وَجَآءَكَ فِيْ هٰذِهِ الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ (١٢٠)

১২০. রসূলদের যে সব সংবাদসমূহ আমি তোমার কাছে বর্ণনা করলাম, এর দ্বারা আমি তোমার দিলকে মযবুত করছি, এতে তুমি প্রকৃত সত্যের জ্ঞান লাভ করবে আর মু'মিনদের জন্য এটা উপদেশ ও স্মারক।

وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ ط إِنَّا عٰمِلُوْنَ لا (١٢١)

১২১. যারা ঈমান আনে না তাদেরকে বল, 'তোমরা নিজেদের মত ও পথে থেকে কাজ করে যাও, আমরা (আমাদের) কাজ করছি।

وَانْتَظِرُوْا ج إِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ (١٢٢)

১২২. আর তোমরা অপেক্ষা কর, আমরাও অপেক্ষায় থাকলাম।'

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَإِلَيْهِ يُرْجَعُ الْأَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ عَلَيْهِ ط وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ع (١٢٣)

১২৩. আসমানসমূহ ও যমীনের অদৃশ্যের জ্ঞান কেবল আল্লাহ্‌রই রয়েছে। সকল বিষয়ই (চূড়ান্ত সিদ্ধান্তের জন্য) তাঁর কাছে ফিরে যায়, কাজেই তুমি তাঁরই 'ইবাদাত কর, আর তাঁর উপরই নির্ভর কর, তোমরা যা কিছু করছ, সে সম্পর্কে তোমার প্রতিপালক মোটেই বে-খবর নন।

سُوْرَةُ يُوْسُفَ

১২. সূরাহ ইউসুফ

আয়াতঃ ১১১, রুকূ'ঃ ১২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

الٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ قف (١)

১. আলিফ, লাম-রা, এগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াতসমূহ।

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (٢)

২. আমি তা অবতীর্ণ করেছি, আরবী ভাষার কুরআন, যাতে তোমরা ভালভাবে বুঝতে পার।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ أَحْسَنَ الْقَصَصِ بِمَآ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ق صلے وَإِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهِ لَمِنَ الْغٰفِلِيْنَ (٣)

৩. আমি তোমার কাছে সর্বোত্তম কাহিনী বর্ণনা করছি, এ কুরআন তোমার কাছে ওয়াহী যোগে পাঠিয়ে, যদিও এর পূর্বে তুমি না-জানা লোকদের মধ্যেই শামিল ছিলে।

إِذْ قَالَ يُوْسُفُ لِأَبِيْهِ يٰٓأَبَتِ إِنِّيْ رَأَيْتُ أَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ رَأَيْتُهُمْ لِيْ سٰجِدِيْنَ (٤)

৪. স্মরণ কর, ইউসুফ যখন তার পিতাকে বলেছিল, 'হে আব্বাজান! আমি (স্বপ্নে) দেখেছি এগারটি তারকা আর সূর্য ও চন্দ্র; দেখলাম তারা আমাকে সাজদাহ করছে।'

قَالَ يٰبُنَيَّ لَا تَقْصُصْ رُؤْيَاكَ عَلٰٓى إِخْوَتِكَ فَيَكِيْدُوْا لَكَ كَيْدًا ط إِنَّ الشَّيْطٰنَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (٥)

৫. তার পিতা বললেন, 'হে আমার পুত্র! তোমার স্বপ্নের কথা তোমার ভাইদের কাছে বর্ণনা করো না। যদি কর তাহলে তারা তোমার বিরুদ্ধে চক্রান্ত করবে। শাইত্বন তো মানুষের প্রকাশ্য দুশমন।

وَكَذٰلِكَ يَجْتَبِيْكَ رَبُّكَ وَيُعَلِّمُكَ مِنْ تَأْوِيْلِ الْأَحَادِيْثِ وَيُتِمُّ نِعْمَتَهُ عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اٰلِ يَعْقُوْبَ كَمَآ أَتَمَّهَا عَلٰٓى أَبَوَيْكَ مِنْ قَبْلُ إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْحٰقَ ط إِنَّ رَبَّكَ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ع (٦)

৬. (স্বপ্নে যেমন দেখেছ) এভাবে তোমার প্রতিপালক তোমাকে মনোনীত করবেন, তোমাকে স্বপ্নের ব্যাখ্যা শিক্ষা দিবেন এবং তিনি তাঁর অনুগ্রহ তোমার প্রতি আর ইয়া'কূব পরিবারের প্রতি পূর্ণ করবেন যেভাবে তিনি তা পূর্বে তোমার পিতৃ-পুরুষ ইব্‌রাহীম ও ইসহাকের প্রতি পূর্ণ করেছিলেন, নিশ্চয়ই তোমার রব্ব সর্বজ্ঞ, বড়ই প্রজ্ঞাবান।'

৬। 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু 'উমার (رضي الله عنهما) হতে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেনঃ সম্মানিত ব্যক্তির পুত্র সম্মানিত এবং তাঁর পিতাও সম্মানিত ব্যক্তির পুত্র সম্মানিত। তিনি হলেন ইউসুফ (عليه السلام) যাঁর পিতা ইয়াকুব (عليه السلام), যাঁর পিতা ইসহাক (عليه السلام) যাঁর পিতা ইব্‌রাহীম (عليه السلام)। -বুখারী ৪৬৮৮ [৩৩৮২; আহমাদ ৫৬৭৯]

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَإِخْوَتِهٖٓ اٰيٰتٌ لِّلسَّآئِلِيْنَ (٧)

৭. ইউসুফ আর তার ভাইদের ঘটনায় সত্য সন্ধানীদের জন্য অবশ্যই নিদর্শনাবলী আছে।

إِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَأَخُوْهُ أَحَبُّ إِلٰٓى أَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ط إِنَّ أَبَانَا لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ لا صلے (٨)

৮. স্মরণ কর, যখন তারা (বৈমাত্রেয় ভাইগণ) বলাবলি করছিল, 'নিশ্চয়ই ইউসুফ আর তার (সহোদর) ভাই আমাদের পিতার কাছে আমাদের চেয়ে বেশি প্রিয়, অথচ আমরা পুরো একটা দল, আমাদের পিতা স্পষ্ট ভুলের মধ্যে আছেন।

اِقْتُلُوْا يُوْسُفَ أَوِ اطْرَحُوْهُ أَرْضًا يَّخْلُ لَكُمْ وَجْهُ أَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ قَوْمًا صٰلِحِيْنَ (٩)

৯. তোমরা ইউসুফকে হত্যা করে ফেল কিংবা তাকে কোন ভূমিতে ফেলে আস, তাহলে তোমাদের পিতার দৃষ্টি তোমাদের প্রতিই নিবদ্ধ হবে, তার পর তোমরা (তাওবাহ করে) ভাল লোক হয়ে যাবে।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ وَأَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ السَّيَّارَةِ

১০. তাদের একজন বলল, তোমরা ইউসুফকে হত্যা করো না, তোমাদেরকে যদি কিছু করতেই হয় বরং তাকে কোন অন্ধ কূপে ফেলে দাও, কোন

৭। আবূ মূসা (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) যখন রোগাক্রান্ত হয়ে পড়লেন, তখন তিনি বললেন, আবূ বাক্‌রকে বল, সে যেন লোকদের নামায আদায় করিয়ে দেয়। তখন 'আয়িশাহ (রাঃ) বললেন, আবূ বাক্‌র (রাঃ) তো এ রকম লোক। অতঃপর নাবী (ﷺ) অনুরূপ বললেন, তখন 'আয়িশাহ (রাঃ) ও ঐরূপই বললেন, তখন নাবী (ﷺ) বললেন, আবূ বাক্‌রকে বল। হে আয়িশা! নিশ্চয় তোমরা ইউসুফ (আঃ)-এর ঘটনার নিন্দাকারী নারীদের সমমনা। অতঃপর আবূ বাক্‌র (রাঃ) নাবী (ﷺ) -এর জীবদ্দশায় ইমামত করলেন। বর্ণনাকারী হুসাইন (রহ.) যায়িদা (রহ.) হতে বর্ণনা করেছেন, এখানে رَجُلٌ كَذَا এর স্থলে رَجُلٌ رَقِيْقٌ আছে অর্থাৎ তিনি একজন কোমল হৃদয়ের লোক। –বুখারী ৩৩৮৫ [৬৭৮; মুসলিম ৪২০, আহমাদ ১৯২০১]

আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) দু'আ করেছেন, হে আল্লাহ! আয়্যাশ ইবনু আবূ রবী'আকে মুক্তি দিন। হে আল্লাহ! সালাম ইবনু হিশামকে নাজাত দিন। হে আল্লাহ! ওয়ালীদ ইবনু ওয়ালীদকে নাজাত দিন। হে আল্লাহ! দুর্বল মুমিনদেরকে মুক্তি দিন। হে আল্লাহ! মুযার গোত্রকে শক্তভাবে পাকড়াও করুন। হে আল্লাহ! এ গোত্রের উপর এমন দুর্ভিক্ষ ও অনটন নাযিল করুন যেমন দুর্ভিক্ষ ইউসুফ (আঃ)-এর যামানায় হয়েছিল। –বুখারী ৩৩৮৬ [মুসলিম ৬৭৫, নাসায়ী ১০৭৪, আবূ দাউদ ১৪৪২, ইবনু মাজাহ ১২৪৪, আহমাদ ৭২১৯, ৭৪১৫; দারিমী ১৫৯৫]

আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ লূত (আঃ)-এর উপর রহম করুন। তিনি একটি সুদৃঢ় খুঁটির আশ্রয় চেয়েছিলেন আর ইউসুফ (আঃ) যত দীর্ঘ সময় জেলখানায় কাটিয়েছেন, আমি যদি অত দীর্ঘ সময় কারাগারে কাটাতাম এবং পরে রাজদূত আমার নিকট আসত তবে নিশ্চয়ই আমি তার ডাকে সাড়া দিতাম। –বুখারী ৩৩৮৭ [৩৩৭২; মুসলিম ১৫১, ইবনু মাজাহ ৪০২৬, আহমাদ ৮১২৯]

إِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ (١٠)

যাত্রীদল তাকে উঠিয়ে নিয়ে যাবে।'

قَالُوْا يٰٓأَبَانَا مَا لَكَ لَا تَأْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ وَإِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ (١١)

১১. তারা বলল, 'হে আমাদের আব্বাজান! কী ব্যাপার, আপনি ইউসুফের ব্যাপারে আমাদেরকে বিশ্বাস করেন না কেন, অথচ আমরা অবশ্যই তার কল্যাণকামী।

أَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَإِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (١٢)

১২. তাকে আগামীকাল আমাদের সঙ্গে পাঠিয়ে দিন, সে আমোদ করবে আর খেলবে, আমরা তার পুরোপুরি দেখাশুনা করব।'

قَالَ إِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْٓ أَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ وَأَخَافُ أَنْ يَّأْكُلَهُ الذِّئْبُ وَأَنْتُمْ عَنْهُ غٰفِلُوْنَ (١٣)

১৩. পিতা বলল, 'তোমরা যে তাকে নিয়ে যাবে সেটা আমাকে অবশ্যই কষ্ট দেবে আর আমি ভয় করছি যে, নেকড়ে বাঘ তাকে খেয়ে ফেলবে, আর তখন তার সম্পর্কে তোমরা বে-খেয়াল হয়ে থাকবে।'

قَالُوْا لَئِنْ أَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ إِنَّآ إِذًا لَّخٰسِرُوْنَ (١٤)

১৪. তারা বলল, 'আমরা একটা দল থাকতে তাকে যদি নেকড়ে বাঘে খেয়ে ফেলে, তাহলে তো আমরা অপদার্থই বনে যাবো।'

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَأَجْمَعُوْٓا أَنْ يَّجْعَلُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ج وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ بِأَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (١٥)

১৫. অতঃপর যখন তারা তাকে নিয়ে গেল, আর তাকে অন্ধ কূপে ফেলার ব্যাপারে মতৈক্যে পৌঁছল, এমতাবস্থায় আমি ইউসুফকে ওয়াহী করলাম– এক সময় আসবে যখন তুমি তাদেরকে তাদের এ কর্মের কথা অবশ্য অবশ্যই ব্যক্ত করবে।' অথচ তারা (অর্থাৎ ইউসুফের ভাইয়েরা) মোটেই টের পাবে না।

وَجَآءُوْٓ أَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ط (١٦)

১৬. রাতের প্রথম প্রহরে তারা তাদের পিতার কাছে কাঁদতে কাঁদতে আসল।

قَالُوْا يٰٓأَبَانَآ إِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَأَكَلَهُ الذِّئْبُ ج وَمَآ أَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ (١٧)

১৭. তারা বলল, 'হে আমাদের আব্বাজান! আমরা দৌড়ের প্রতিযোগিতা করছিলাম, আর ইউসুফকে আমরা আমাদের জিনিসপত্রের কাছে রেখে গিয়েছিলাম, তখন তাকে নেকড়ে বাঘে খেয়ে ফেলল, কিন্তু আপনি তো আমাদের কথা বিশ্বাস করবেন না, আমরা সত্যবাদী হলেও।'

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ط قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ط فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ط وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا

১৮. তারা তার জামায় মিছেমিছি রক্ত মাখিয়ে নিয়ে এসেছিল। পিতা বলল, 'না, বরং তোমাদের প্রবৃত্তি তোমাদেরকে একটা কাহিনী বানাতে উদ্বুদ্ধ করেছে। ঠিক আছে, আমি পুরোপুরি ধৈর্য ধারণ করব, তোমরা যা বানিয়েছ সে ব্যাপারে আল্লাহই

আমার আশ্রয়স্থল।'

تَصِفُوْنَ (١٨)

১৯. সেখানে একটা কাফেলা আসলো। তারা তাদের পানি সংগ্রহকারীকে পাঠালো। সে তার পানির বালতি নামিয়ে দিল। সে বলল, 'কী খুশির খবর! এযে দেখছি এক বালক!' তারা তাকে পণ্য দ্রব্য জ্ঞানে লুকিয়ে দিল, আর তারা যা করছিল সে সম্পর্কে আল্লাহ খুবই অবহিত।

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَأَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَأَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَأَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللهُ عَلِيْمٌ ۢبِمَا يَعْمَلُوْنَ (١٩)

২০. তারা তাকে স্বল্প মূল্যে– মাত্র কয়টি দিরহামের বিনিময়ে বিক্রি করে দিল, তারা ছিল তাকে তুচ্ছ জ্ঞানকারী!

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍ ۢبَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ج وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ ع (٢٠)

২১.. মিসরের যে লোক তাকে ক্রয় করেছিল, সে তার স্ত্রীকে বলল, 'তার থাকার সুব্যবস্থা কর, সম্ভবতঃ সে আমাদের উপকারে আসবে কিংবা তাকে আমরা পুত্র হিসেবেও গ্রহণ করে নিতে পারি।' এভাবে আমি ইউসুফকে সে দেশে প্রতিষ্ঠিত করলাম তাকে স্বপ্ন ব্যাখ্যার কিছু জ্ঞান শিক্ষা দেয়ার জন্য। আল্লাহ তাঁর কাজের ব্যাপারে পূর্ণ কর্তৃত্বশীল। কিন্তু অধিকাংশ লোকই (তা) জানে না।

وَقَالَ الَّذِي اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَأَتِهٖٓ أَكْرِمِيْ مَثْوٰىهُ عَسٰٓى أَنْ يَّنْفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْأَرْضِ ز وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَأْوِيْلِ الْأَحَادِيْثِ ؕ وَاللهُ غَالِبٌ عَلٰٓى أَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (٢١)

২২. যখন সে তার পরিপূর্ণ যৌবনে পৌঁছল, তখন তাকে বিচার-বুদ্ধি ও জ্ঞান দান করলাম, আমি সৎকর্মশীলদেরকে এভাবেই প্রতিদান দিয়ে থাকি।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهٗٓ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (٢٢)

৪৬৯০. যুহ্‌রী (রহ.) 'উরওয়াহ ইবনু যুবায়ের, সা'ঈদ ইবনু মুসাইয়্যিব, 'আলক্বামাহ ইবনু ওয়াক্কাস এবং 'উবাইদুল্লাহ ইবনু 'আবদুল্লাহ থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ)-এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) "ইফ্‌ক সম্পর্কে أَهْلُ الإِفْكِ যা বলেছেন, তা শুনেছি। অতঃপর আল্লাহ তাকে সবকিছু থেকে নির্দোষ ঘোষণা করেছেন। (বর্ণনাকারীদের) একদল থেকে আমি হাদীসটির কিছু অংশ শুনেছি। রসূলুল্লাহ (ﷺ) ['আয়িশাহ (رضي الله عنها)-কে] বললেন, যদি তুমি নির্দোষ হয়ে থাক তবে অতিশীঘ্র আল্লাহ্ তোমার নির্দোষিতা প্রকাশ করে দিবেন; আর যদি তোমার দ্বারা এ গুনাহ্ সংঘটিত হয়ে থাকে, তবে আল্লাহ্‌র নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর এবং তাওবাহ কর। 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! এ সময় আমি ইউসুফ (عليه السلام)-এর পিতা [ইয়াকুব (عليه السلام)]-এর উদাহরণ ব্যতীত আর কিছুই জবাব দেয়ার মতো খুঁজে পাচ্ছি না। (আমিও তাঁর মত বলছি)ঃ সুতরাং পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়, তোমরা যা বলছ সে বিষয়ে একমাত্র আল্লাহ্‌ই আমার সাহায্যস্থল। অবশেষে আল্লাহ্ তা'আলা (আমার নির্দোষিতা ঘোষণা করে) إِنَّ الَّذِيْنَ جَاءُوْا بِالْإِفْكِ সহ দশটি আয়াত অবতীর্ণ করেছেন। –বুখারী ৪৬৯০ [২৫৯৩; মুসলিম ২৪৪৫, ২৭৭০; ইবনু মাজাহ ১৯৭০, ২৩৪৭; আহমাদ ২৬৫৩০; দারিমী ২৪২৩]

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِيْ هُوَ فِيْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْأَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ط قَالَ مَعَاذَ اللهِ إِنَّهٗ رَبِّيْٓ أَحْسَنَ مَثْوَايَ ط إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ (٢٣)

২৩. যে মহিলার ঘরে সে ছিল, সে (মহিলাটি) তার থেকে অসৎ কর্ম কামনা করল। সে দরজাগুলো বন্ধ করে দিল আর বলল, 'এসো'। সে (ইউসুফ) বলল, 'আমি আল্লাহ্‌র আশ্রয় নিচ্ছি। তিনি আমার রব্ব, তিনি আমার থাকার ব্যবস্থা কত উত্তম করেছেন, যালিমরা কক্ষনো সাফল্য লাভ করতে পারে না।

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ وَهَمَّ بِهَا ج لَوْلَآ أَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ط كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ط إِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ (٢٤)

২৪. সেই মহিলা তার প্রতি আসক্ত হয়েছিল আর সে (ইউসুফ)ও তার প্রতি আসক্ত হয়েই যেত যদি সে তার প্রতিপালকের নিদর্শন না দেখত। আমি তা দেখিয়েছিলাম তাকে অসৎ কর্ম ও নির্লজ্জতা থেকে সরিয়ে রাখার উদ্দেশ্যে, সে ছিল বিশুদ্ধ-হৃদয় বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ دُبُرٍ وَّأَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ط قَالَتْ مَا جَزَآءُ مَنْ أَرَادَ بِأَهْلِكَ سُوْٓءًا إِلَّآ أَنْ يُّسْجَنَ أَوْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٢٥)

২৫. তারা উভয়ে দরজার দিকে দৌড় দিল আর স্ত্রীলোকটি পিছন হতে তার জামা ছিঁড়ে ফেলল। এ সময় স্ত্রীলোকটির স্বামীকে তারা দু'জনে দরজার কাছে পেল। মহিলাটি বলল, 'যে তোমার পরিবারের সাথে অপকর্ম করতে চায় তাকে জেলে পাঠানো অথবা ভয়াবহ শাস্তি ছাড়া উপযুক্ত দণ্ড কী আর দেয়া যেতে পারে?'

قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ أَهْلِهَا ط إِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٢٦)

২৬. সে (ইউসুফ) বলল, 'সে-ই আমা হতে অসৎ কর্ম কামনা করেছে'। তখন মহিলাটির পরিবারের এক সাক্ষী সাক্ষ্য দিল– 'যদি তার জামা সম্মুখ দিক থেকে ছেঁড়া হয়ে থাকে, তবে মহিলাটি সত্য বলেছে আর সে মিথ্যাবাদীদের অন্তর্ভুক্ত।

وَإِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٢٧)

২৭. আর যদি তার জামা পেছন হতে ছেঁড়া হয়ে থাকে, তবে মহিলাটি মিথ্যে বলেছে আর সে সত্যবাদীদের অন্তর্ভুক্ত।'

فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ إِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ط إِنَّ كَيْدَكُنَّ عَظِيْمٌ (٢٨)

২৮. স্বামী যখন ইউসুফের জামাটি পেছন হতে ছেঁড়া দেখতে পেল, তখন সে বলল, 'এ সব হল তোমাদের নারীদের ছলনা, তোমাদের কূট কৌশল বড়ই কঠিন।

يُوْسُفُ أَعْرِضْ عَنْ هٰذَا سكتة وَاسْتَغْفِرِيْ

২৯. ওহে ইউসুফ! তুমি ব্যাপারটা উপেক্ষা কর, আর ওহে নারী! তুমি তোমার অপরাধের জন্য ক্ষমা

لِذَنْـبِكِ ۚ صلے إِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِئِيْنَ ع (٢٩)

চাও, প্রকৃতপক্ষে তুমিই অপরাধী।'

وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَأَتُ الْعَزِيْزِ تُرَاوِدُ فَتٰهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ۖ إِنَّا لَنَرٰىـهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٣٠)

৩০. নগরীর কতক মহিলা বলল, 'আযীযের স্ত্রী তার যুবক ক্রীতদাসের প্রতি আকৃষ্ট হয়ে পড়েছে, ভালবাসা তাকে উন্মাদ করে ফেলেছে, আমরা নিশ্চিতই তাকে প্রকাশ্য ভ্রান্তিতে নিপতিত দেখছি।'

فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ أَرْسَلَتْ إِلَيْهِنَّ وَأَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَأً وَّاٰتَتْ كُلَّ وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَأَيْنَهٗ أَكْبَرْنَهٗ وَقَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ز وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا هٰذَا بَشَرًا ۖ إِنْ هٰذَا إِلَّا مَلَكٌ كَرِيْمٌ (٣١)

৩১. মহিলাটি যখন তাদের চক্রান্তের কথা জানতে পারল, তখন তাদেরকে ডেকে পাঠাল আর তাদের জন্য হেলান দিয়ে বসার ব্যবস্থা করল, আর তাদের প্রত্যেককে একটা করে ছুরি দিল। অতঃপর ইউসুফকে বলল, 'ওদের সামনে বেরিয়ে এসো।' যখন তারা তাকে দেখল, বিস্ময়ে অভিভূত হয়ে গেল আর নিজেদের হাত কেটে ফেলল, আর বলল, 'আল্লাহ আমাদের রক্ষা করুন, এ তো মানুষ নয়, এতো এক সম্মানিত ফেরেশতা।'

قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ۖ وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ۖ وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ وَلَيَكُوْنًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ (٣٢)

৩২. মহিলাটি বলল, 'এ হল সেই যার ব্যাপারে তোমরা আমাকে ভর্ৎসনা করছ, আমিই তো তাকে ভুলাতে চেষ্টা করেছি, কিন্তু সে নিজেকে নিষ্পাপ রেখেছে, আমি তাকে যে আদেশ করি তা যদি সে না করে, তাহলে তাকে অবশ্যই কয়েদ করা হবে, আর সে হীন লোকদের অন্তর্ভুক্ত হবে।'

قَالَ رَبِّ السِّجْنُ أَحَبُّ إِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ إِلَيْهِ ۚ وَإِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ أَصْبُ إِلَيْهِنَّ وَأَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ (٣٣)

৩৩. সে (ইউসুফ) বলল, 'হে আমার রব্ব! তারা আমাকে যে দিকে ডাকছে তার চেয়ে জেলখানা আমার কাছে অধিক প্রিয়। তুমি যদি আমা হতে তাদের অপকৌশল সরিয়ে না দাও তা হলে আমি তাদের প্রতি আকৃষ্ট হয়ে পড়ব, আর অজ্ঞদের দলে শামিল হয়ে যাব।'

فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ كَيْدَهُنَّ ۖ إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٣٤)

৩৪. তখন তার প্রতিপালক তার ডাকে সাড়া দিলেন আর তার থেকে তাদের কূট কৌশল অপসারিত করলেন, তিনি সব কিছু শুনেন, সব কিছু জানেন।

ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَأَوُا الْاٰيٰتِ لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ع (٣٥)

৩৫. নিদর্শনবলী দেখার পর তাদের মনে হল যে, কিছু দিনের জন্য তাকে অবশ্য অবশ্যই কারারুদ্ধ করতে হবে।

وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۖ قَالَ

৩৬. তার সঙ্গে দু'যুবকও কারাগারে প্রবেশ

أَحَدُهُمَآ إِنِّيٓ أَرٰىنِيٓ أَعْصِرُ خَمْرًا ج وَقَالَ الْأٰخَرُ إِنِّيٓ أَرٰىنِيٓ أَحْمِلُ فَوْقَ رَأْسِيْ خُبْزًا تَأْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ط نَبِّئْنَا بِتَأْوِيْلِهٖ ج إِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ (٣٦)

করেছিল। তাদের একজন বলল, 'আমি স্বপ্নে দেখলাম যে আমি মদ তৈরি করছি।' অন্যজন বলল, 'আমি স্বপ্নে দেখলাম, আমি মাথায় রুটি বহন করছি আর পাখী তাথেকে খাচ্ছে। আমাদেরকে এর ব্যাখ্যা বলে দাও, আমরা দেখছি তুমি একজন সৎকর্মশীল লোক।'

قَالَ لَا يَأْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ إِلَّا نَبَّأْتُكُمَا بِتَأْوِيْلِهٖ قَبْلَ أَنْ يَّأْتِيَكُمَا ط ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ط إِنِّيْ تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَهُمْ بِالْأٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ (٣٧)

৩৭. সে (ইউসুফ) বলল, 'তোমাদেরকে যে খাবার দেয়া হয় তা আসার আগেই আমি তোমাদেরকে তার ব্যাখ্যা জানিয়ে দেব। আমার প্রতিপালক আমাকে যে জ্ঞান দান করেছেন এটা সেই জ্ঞানেরই অংশ। যে সম্প্রদায় আল্লাহ্‌তে বিশ্বাস করে না আর আখেরাতে অবিশ্বাসী, আমি তাদের নিয়ম নীতি পরিত্যাগ করেছি।

وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَآءِيْٓ إِبْرٰهِيْمَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ط مَا كَانَ لَنَآ أَنْ نُّشْرِكَ بِاللهِ مِنْ شَيْءٍ ط ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللهِ عَلَيْنَا وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُوْنَ (٣٨)

৩৮. আমি আমার পূর্বপুরুষ ইব্‌রাহীম, ইসহাক ও ইয়া'কূবের আদর্শের অনুসরণ করি। আল্লাহ্‌র সাথে কোন কিছুকে শরীক করা আমাদের কাজ নয়। এটা আমাদের প্রতি ও মানুষের প্রতি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ, কিন্তু অধিকাংশ লোকই শোকর করে না।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَأَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ خَيْرٌ أَمِ اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ط (٣٩)

৩৯. হে আমার জেলের সঙ্গীদ্বয়! ভিন্ন ভিন্ন প্রতিপালক ভালো, না মহাপরাক্রমশালী এক আল্লাহ?

مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ إِلَّآ أَسْمَآءً سَمَّيْتُمُوْهَآ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ط إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ط أَمَرَ أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّآ إِيَّاهُ ط ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (٤٠)

৪০. তাঁকে বাদ দিয়ে তোমরা যার 'ইবাদাত করছ তা কতকগুলো নাম ছাড়া আর কিছুই নয়, যে নামগুলো তোমরা আর তোমাদের পিতৃ পুরুষরা রেখেছ। এ ব্যাপারে আল্লাহ কোন প্রমাণ নাযিল করেননি। আল্লাহ ছাড়া কোন বিধান দাতা নেই। তিনি আদেশ করেছেন যে, তোমরা তাঁকে ছাড়া আর কারো 'ইবাদাত করবে না, এটাই সঠিক দ্বীন, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই তা জানে না।

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ أَمَّآ أَحَدُكُمَا فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ج وَأَمَّا الْأٰخَرُ فَيُصْلَبُ فَتَأْكُلُ

৪১. হে আমার জেলের সঙ্গীদ্বয়! তোমাদের দু'জনের একজন তার প্রভুকে মদ পান করাবে আর অন্যজনকে শূলে দেয়া হবে, আর পাখী তার মস্তক ঠুকরে খাবে। তোমরা দু'জন যে সম্পর্কে জানতে

Contents

الطَّيْرُ مِنْ رَّأْسِهِ ط قُضِيَ الْأَمْرُ الَّذِي فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ط (٤١)

চেয়েছ তার ফায়সালা হয়ে গেছে।'

وَقَالَ لِلَّذِي ظَنَّ أَنَّهُ نَاجٍ مِّنْهُمَا اذْكُرْنِي عِنْدَ رَبِّكَ ز فَأَنْسٰهُ الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهِ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ بِضْعَ سِنِيْنَ ع (٤٢)

৪২. তাদের দু'জনের মধ্যে যে জন মুক্তি পাবে ব'লে সে (ইউসুফ) মনে করল তাকে বলল, 'তোমার প্রভুর কাছে আমার সম্পর্কে বলিও।' কিন্তু শয়তান তাকে তার প্রভুর কাছে ইউসুফের কথা উল্লেখ করতে ভুলিয়ে দিল। ফলে ইউসুফ বেশ কয়েক বছর কারাগারে আটক থেকে গেল।

وَقَالَ الْمَلِكُ إِنِّيْ أَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّأُخَرَ يٰبِسٰتٍ ط يٰٓأَيُّهَا الْمَلَأُ أَفْتُوْنِيْ فِيْ رُؤْيَايَ إِنْ كُنْتُمْ لِلرُّؤْيَا تَعْبُرُوْنَ (٤٣)

৪৩. রাজা বললেন, 'আমি স্বপ্নে দেখলাম সাতটি হৃষ্টপুষ্ট গাভী, সাতটি জীর্ণশীর্ণ গাভী তাদেরকে খাচ্ছে। (আর দেখলাম) সাতটি সবুজ সতেজ শীষ আর অন্য সাতটি শুকনো। ওহে সভাষদগণ! আমার কাছে তোমরা আমার স্বপ্নের ব্যাখ্যা কর যদি তোমরা ব্যাখ্যা করতে পার।'

قَالُوْٓا أَضْغَاثُ أَحْلَامٍ ج وَمَا نَحْنُ بِتَأْوِيْلِ الْأَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ (٤٤)

৪৪. তারা বলল, 'এতো অস্পষ্ট (অর্থহীন) স্বপ্নের কথা, আর আমরা এ ধরনের স্বপ্ন ব্যাখ্যায় অভিজ্ঞ নই।'

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ أُمَّةٍ أَنَا أُنَبِّئُكُمْ بِتَأْوِيْلِهِ فَأَرْسِلُوْنِ (٤٥)

৪৫. দু'জনের মধ্যে যে জন জেল থেকে মুক্তি পেয়েছিল আর দীর্ঘকাল পর যার স্মরণ হল সে বলল, 'আমি তোমাদেরকে তার ব্যাখ্যা বলে দেব, তবে তোমরা আমাকে (জেলখানায় ইউসুফের কাছে) পাঠাও।

يُوْسُفُ أَيُّهَا الصِّدِّيْقُ أَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّأْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّأُخَرَ يٰبِسٰتٍ لا لَّعَلِّيْٓ أَرْجِعُ إِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ (٤٦)

৪৬. সে বলল, 'হে সত্যবাদী ইউসুফ! সাতটি হৃষ্টপুষ্ট গাভী, যাদেরকে খাচ্ছে জীর্ণশীর্ণ সাতটি গাভী আর সাতটি সবুজ সতেজ শীষ আর অন্যগুলো শুকনো। (আমাদেরকে এর ব্যাখ্যা জানিয়ে দাও) যাতে আমি তাদের কাছে ফিরে যেতে পারি আর তারা জেনে নিতে পারে।'

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَأَبًا ج فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَأْكُلُوْنَ (٤٧)

৪৭. সে (ইউসুফ) বলল, 'সাত বছর তোমরা এক নাগাড়ে চাষ করবে, অতঃপর যখন ফসল কাটবে তখন তোমরা যে সামান্য পরিমাণ খাবে তা বাদে শিষ সমেত সংরক্ষণ করবে।

৪৮. এরপর আসবে সাতটি কঠিন বছর। এ সময়ের জন্য পূর্বে যা তোমরা সঞ্চয় করেছিলে তা লোকে খাবে, কেবল সেই অল্পটুকু বাদে যা তোমরা সঞ্চয় করবে।	ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ يَّأْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ (٤٨)
৪৯. এর পর আসবে একটা বছর যখন মানুষের জন্য প্রচুর বৃষ্টিপাত হবে আর মানুষ প্রচুর ভোগবিলাস করবে।'	ثُمَّ يَأْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ ع (٤٩)
৫০. রাজা বলল, 'তোমরা তাকে (ইউসুফকে) আমার কাছে নিয়ে এসো।' দূত যখন তার কাছে আসলো তখন ইউসুফ বলল, 'তোমার প্রভুর কাছে ফিরে যাও এবং তাকে জিজ্ঞেস কর, সেই মহিলাদের ব্যাপারটি কী যারা তাদের হাত কেটে ফেলেছিল? আমার প্রতিপালক অবশ্যই তাদের কৌশল সম্পর্কে অবগত।'	وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ج فَلَمَّا جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ إِلٰى رَبِّكَ فَاسْأَلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ قَطَّعْنَ أَيْدِيَهُنَّ ط إِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ عَلِيْمٌ (٥٠)
৫১. রাজা মহিলাদের জিজ্ঞেস করল– 'তোমরা যখন ইউসুফকে ভুলাতে চেষ্টা করেছিলে তখন তোমাদের কী হয়েছিল?' তারা বলল, 'আল্লাহ আমাদেরকে রক্ষা করুন! আমরা তার মাঝে কোন দোষ দেখতে পাইনি।' আযীযের স্ত্রী বলল, 'এখন সত্য প্রকাশিত হয়ে পড়েছে, আমিই তাকে ভুলাতে চেষ্টা করেছিলাম, নিশ্চয়ই সে ছিল সত্যবাদী।'	قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ إِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ عَنْ نَّفْسِهٖ ط قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ مِنْ سُوْٓءٍ ط قَالَتِ امْرَأَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ حَصْحَصَ الْحَقُّ ز أَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ وَإِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٥١)
৫২. (ইউসুফ বলল) 'আমার উদ্দেশ্য এই যে, সে (অর্থাৎ আযীয) যেন জানতে পারে যে, তার অনুপস্থিতিতে আমি তার প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করিনি আর আল্লাহ বিশ্বাসঘাতকদের কৌশলকে অবশ্যই সফল হতে দেন না।'	ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ أَنِّيْ لَمْ أَخُنْهُ بِالْغَيْبِ وَأَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَآئِنِيْنَ (٥٢)

৫০-৫১। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ্ তা'আলা লূত (আঃ)-এর উপর রহম করুন। তিনি তাঁর সম্প্রদায়ের চরম শত্রুতায় বাধ্য হয়ে, নিজের নিরাপত্তার জন্য শক্ত খুঁটি অর্থাৎ আল্লাহ্র নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করেছিলেন। যতদিন পর্যন্ত ইউসুফ (আঃ) (বন্দীখানায়) ছিলেন, আমি যদি এভাবে বন্দীখানায় থাকতাম, তবে মুক্তি পাবার ডাকে অবশ্যই সাড়া দিতাম। আমরা (সন্দেহভঞ্জন করার ব্যাপারে) ইব্রাহীম (আঃ)-এর চেয়েও আগে বেড়ে যেতাম– যখন আল্লাহ্ তাঁকে বললেন, তুমি কি বিশ্বাস কর না? জবাবে তিনি বললেন, হ্যাঁ। তবে আমার মনের প্রশান্তির জন্য। –বুখারী ৪৬৯৪ [৩৩৭২; মুসলিম ১৫১, ইবনু মাজাহ ৪০২৬, আহমাদ ৮১২৯]

وَمَآ أُبَرِّئُ نَفْسِيْ ج إِنَّ النَّفْسَ لَأَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْٓءِ إِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ط إِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥٣)

৫৩. (সে বলল), 'আমি নিজেকে দোষমুক্ত মনে করি না, নফস্ তো মন্দ কাজে প্ররোচিত করতেই থাকে, আমার প্রতিপালক যার প্রতি দয়া করেন সে ছাড়া। আমার প্রতিপালক বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।'

وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ أَسْتَخْلِصْهُ لِنَفْسِيْ ج فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ إِنَّكَ الْيَوْمَ لَدَيْنَا مَكِيْنٌ أَمِيْنٌ (٥٤)

৫৪. রাজা বললেন, 'তাকে আমার কাছে নিয়ে এসো, আমি তাকে আমার জন্য বিশেষভাবে নির্দিষ্ট করে নেব।' অতঃপর সে (ইউসুফ) যখন তার সাথে কথা বলল, তখন রাজা বলল, 'আজ তুমি আমাদের কাছে খুবই মর্যাদাশীল ও বিশ্বস্ত হিসেবে পরিগণিত।'

قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰى خَزَآئِنِ الْأَرْضِ ج إِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ (٥٥)

৫৫. সে (ইউসুফ) বলল- 'আমাকে দেশের ধন-ভাণ্ডারের দায়িত্ব দিন, আমি উত্তম রক্ষক ও যথেষ্ট জ্ঞানের অধিকারী।'

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِي الْأَرْضِ ج يَتَبَوَّأُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ط نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (٥٦)

৫৬. এভাবে আমি ইউসুফকে সে দেশে প্রতিষ্ঠিত করলাম। দেশের যেখানে ইচ্ছে সে নিজের স্থান করে নিতে পারত, আমি যাকে চাই আমার রহমাত দিয়ে ধন্য করি, আমি সৎকর্মশীলদের কর্মফল কক্ষনো বিনষ্ট করি না।

وَلَأَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ع (٥٧)

৫৭. আর আখেরাতের কর্মফল তাদের জন্য অবশ্যই উত্তম যারা ঈমান আনে আর তাকওয়া অবলম্বন করে কাজ করতে থাকে।

وَجَآءَ إِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ (٥٨)

৫৮. ইউসুফের ভাইয়েরা আসল এবং তার কাছে হাযির হল। সে তাদেরকে চিনতে পারল, কিন্তু তারা তাকে চিনতে পারল না।

وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِيْ بِأَخٍ لَّكُمْ مِّنْ أَبِيْكُمْ ج أَلَا تَرَوْنَ أَنِّيْٓ أُوْفِي الْكَيْلَ وَأَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ (٥٩)

৫৯. সে যখন তাদের দ্রব্য সামগ্রীর ব্যবস্থা করে দিল তখন সে বলল, 'তোমরা তোমাদের সৎ ভাইকে আমার কাছে নিয়ে আসবে, তোমরা কি দেখছ না, আমি কীভাবে পাত্র ভরে দেই, আর আমি উত্তম অতিথি সেবক।

فَإِنْ لَّمْ تَأْتُوْنِيْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ عِنْدِيْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ (٦٠)

৬০. তোমরা যদি তাকে না নিয়ে আসো তাহলে আমার কাছে তোমাদের জন্য কোন শস্য বরাদ্দ হবে না, আর আমার কাছেও আসতে পারবে না।'

قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ أَبَاهُ وَإِنَّا لَفٰعِلُوْنَ (٦١)

৬১. তারা বলল- 'এ ব্যাপারে আমরা তার পিতাকে রাযী করাতে চেষ্টা করব আর আমরা তা করবই।'

وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ فِيْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ إِذَا انْقَلَبُوْآ إِلٰٓى أَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (٦٢)

৬২. সে (ইউসুফ) তার খাদেমদেরকে বলল, 'তারা যে পণ্যমূল্য দিয়েছে তা তাদের মাল পত্রের মধ্যে গোপনে রেখে দাও, যাতে তারা তাদের পরিবারবর্গের কাছে ফিরে গিয়ে তা জানতে পারে, তাহলে তারা আবার আসবে।'

فَلَمَّا رَجَعُوْآ إِلٰٓى أَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓأَبَانَا مُنِعَ مِنَّا الْكَيْلُ فَأَرْسِلْ مَعَنَآ أَخَانَا نَكْتَلْ وَإِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (٦٣)

৬৩. তারপর যখন তারা তাদের পিতার কাছে ফিরে গেল তখন বলল, 'হে আমাদের পিতা! আমাদের জন্য শষ্যের বরাদ্দ নিষিদ্ধ করা হয়েছে, কাজেই আমাদের ভাইকে আমাদের সঙ্গে পাঠিয়ে দিন, যাতে আমরা শস্যের বরাদ্দ পেতে পারি, আমরা অবশ্যই তার হিফাযাত করব।'

قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ إِلَّا كَمَآ أَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى أَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ط فَاللّٰهُ خَيْرٌ حٰفِظًا ص وَّهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ (٦٤)

৬৪. (পিতা) বলল, 'আমি কি তার ব্যাপারে তোমাদেরকে তেমনি বিশ্বাস করব ইতোপূর্বে যেমন তোমাদেরকে তার ভাইয়ের ব্যাপারে বিশ্বাস করেছিলাম? আল্লাহই উত্তম সংরক্ষক আর তিনিই সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু।'

وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ رُدَّتْ إِلَيْهِمْ ط قَالُوْا يٰٓأَبَانَا مَا نَبْغِيْ ط هٰذِهٖ بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ إِلَيْنَا ج وَنَمِيْرُ أَهْلَنَا وَنَحْفَظُ أَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ط ذٰلِكَ كَيْلٌ يَّسِيْرٌ (٦٥)

৬৫. তারা যখন তাদের মাল-পত্র খুলল তখন দেখতে পেল যে, তাদেররকে তাদের পণ্যমূল্য ফিরিয়ে দেয়া হয়েছে। তারা বলল, 'হে আমাদের আব্বাজান! আমরা আর কী চাই। এই দেখুন, আমাদের পণ্যমূল্য আমাদেরকে ফিরিয়ে দেয়া হয়েছে, আমরা আমাদের পরিবারের জন্য (আরো) খাদ্য আনব, আমাদের ভাইয়ের হিফাযাতও করব, আরো এক উট-বোঝাই মাল বেশি আনব, এ পরিমাণ সহজেই পাওয়া যাবে।'

قَالَ لَنْ أُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَأْتُنَّنِيْ بِهٖٓ إِلَّآ أَنْ يُّحَاطَ بِكُمْ ج فَلَمَّآ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ (٦٦)

৬৬. (পিতা) বলল- 'আমি তাকে তোমাদের সাথে কিছুতেই পাঠাব না যতক্ষণ না তোমরা আল্লাহ্‌র নামে শপথ কর যে, তোমরা তাকে আমার কাছে নিয়ে আসবেই যদি না তোমাদেরকে এক যোগে ঘিরে ফেলা হয়।' অতঃপর তারা যখন তার কাছে প্রতিজ্ঞা করল তখন সে বলল, 'আমরা যে কথা বলছি আল্লাহই তার সাক্ষী ও অভিভাবক।'

وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ وَّادْخُلُوْا مِنْ أَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَآ أُغْنِيْ عَنْكُمْ مِّنَ اللهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ إِنِ الْحُكْمُ إِلَّا لِلّٰهِ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ج وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ (٦٧)

৬৭. পিতা বলল, 'হে আমার সন্তানেরা! তোমরা এক দ্বার দিয়ে (মিসরে) প্রবেশ কর না, বরং ভিন্ন ভিন্ন দরজা দিয়ে প্রবেশ করবে (মানুষের সন্দেহ কিংবা কুদৃষ্টি এড়ানোর জন্য)। আমি আল্লাহ্‌র হুকুমের বিরুদ্ধে তোমাদের কোনই উপকার করতে পারব না। আল্লাহ ছাড়া হুকুম দাতা কেউ নেই, আমি তাঁর উপরই নির্ভর করি, যারা নির্ভর করতে চায়, তারা তাঁর উপর নির্ভর করুক।'

وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ أَمَرَهُمْ أَبُوْهُمْ ؕ مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللهِ مِنْ شَيْءٍ إِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰهَا ؕ وَإِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ع (٦٨)

৬৮. তাদের পিতা যেভাবে আদেশ করেছিল যখন তারা সেভাবে প্রবেশ করল, তখন আল্লাহ্‌র হুকুমের বিরুদ্ধে তা তাদের কোন কাজে আসল না। তবে ইয়া'কুব তার মনের একটা অভিপ্রায় পূর্ণ করেছিল মাত্র। আমার দেয়া শিক্ষার বদৌলতে অবশ্যই সে ছিল জ্ঞানবান, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ প্রকৃত ব্যাপার সম্পর্কে অবগত নয়।

وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى إِلَيْهِ أَخَاهُ قَالَ إِنِّيْۤ أَنَا أَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٦٩)

৬৯. যখন তারা ইউসুফের কাছে হাজির হল, তখন সে তার সহোদর ভাইকে নিজের কাছে রাখল। আর বলল, 'আমিই তোমার ভাই, কাজেই ওরা যা করত তার জন্য দুঃখ করো না।'

فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ فِيْ رَحْلِ أَخِيْهِ ثُمَّ أَذَّنَ مُؤَذِّنٌ أَيَّتُهَا الْعِيْرُ إِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ (٧٠)

৭০. অতঃপর ইউসুফ যখন তাদের রসদপত্র প্রস্তুত করে দিল, তখন সে তার সহোদর ভাইয়ের রসদপত্রের ভিতর পান পাত্রটি রেখে দিল। তখন এক ঘোষক ঘোষণা দিল, 'হে কাফেলার লোক! তোমরা নিশ্চয়ই চোর।'

قَالُوْا وَأَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ (٧١)

৭১. তারা তাদের দিকে ফিরে বলল, 'তোমাদের কী হারিয়েছে?'

قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّأَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ (٧٢)

৭২. তারা বলল- 'আমরা রাজার পান পাত্র হারিয়েছি, (তাদের প্রধান ব্যক্তি বলল) যে তা এনে দিতে পারবে তার জন্য আছে এক উট-বোঝাই মাল। আর আমিই এ ব্যাপারে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ।

قَالُوْا تَاللهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ فِي الْأَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ (٧٣)

৭৩. ইউসুফের ভাইয়েরা বলল, 'আল্লাহ্‌র শপথ! তোমরা তো জান আমরা এ দেশে অশান্তি সৃষ্টি করতে আসিনি, আর আমরা চোরও নই।'

قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ (٧٤)

৭৪. রাজকর্মচারীরা বলল, ‘তোমরা মিথ্যেবাদী হলে যে চুরি করেছে তার শাস্তি কী হবে?’

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ط كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ (٧٥)

৭৫. তারা বলল, ‘তার শাস্তি হল যার মালের ভিতর ওটা পাওয়া যাবে তাকেই ধরে রাখা হবে। সীমালঙ্ঘনকারীদেরকে আমরা এভাবেই শাস্তি দিয়ে থাকি।’

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ط كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ط مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّاۤ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ط نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ط وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ (٧٦)

৭৬. অতঃপর ইউসুফ তার নিজ ভাইয়ের মালপত্র তল্লাশির আগে অন্যদের মাল তল্লাশি শুরু করল। অতঃপর সেটি তার নিজ ভাইয়ের মালপত্র থেকে বের করল। এভাবে আমি ইউসুফের জন্য পরিকল্পনা করেছিলাম। রাজার আইন অনুযায়ী সে তার সহোদর ভাইকে আটক করতে পারত না-আল্লাহ্‌র ইচ্ছে ব্যতীত। আমি যার জন্য ইচ্ছে করি মর্যাদা উচ্চ করি, প্রত্যেক জ্ঞানীর উপরে আছেন একজন সর্বজ্ঞ।

قَالُوْۤا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ج فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ج قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ج وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ (٧٧)

৭৭. ইউসুফের ভাইয়েরা বলল, ‘সে যদি চুরি করে থাকে (তবে তা অসম্ভব নয়, কেননা) এর পূর্বে তার সহোদর ভাইও চুরি করেছিল। তখন ইউসুফ এ ব্যাপারটি তার মনেই গোপন রাখল, তা তাদের কাছে প্রকাশ করল না। সে (মনে মনে) বলল- তোমাদের অবস্থান তো আরো নিকৃষ্টতম, তোমরা যা বলছ সে সম্পর্কে আল্লাহ খুব ভালভাবেই অবগত।

قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗۤ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ج اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ (٧٨)

৭৮. তারা বলল, ‘হে ‘আযীয! এর পিতা আছেন যিনি খুবই বৃদ্ধ, কাজেই তার স্থলে আমাদের একজনকে রাখুন, আমরা তো আপনাকে বড়ই সদাচারী লোকদের অন্তর্ভুক্ত দেখছি।’

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗۤ لا اِنَّاۤ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ع (٧٩)

৭৯. সে বলল, ‘যার কাছে আমাদের মাল পেয়েছি তাকে ছাড়া অন্যকে ধরার কাজ থেকে আল্লাহ্‌র পানাহ চাচ্ছি, তা করলে আমরা যালিম হিসেবে পরিগণিত হব।’

فَلَمَّا اسْتَيْاَسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ط قَالَ

৮০. যখন তারা ইউসুফের নিকট থেকে নিরাশ হয়ে গেল তখন তারা নির্জনে গিয়ে পরামর্শ

كَبِيْرُهُمْ أَلَمْ تَعْلَمُوْآ أَنَّ أَبَاكُمْ قَدْ أَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ج فَلَنْ أَبْرَحَ الْأَرْضَ حَتّٰى يَأْذَنَ لِيْٓ أَبِيْٓ أَوْ يَحْكُمَ اللهُ لِيْ ج وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ (٨٠)

করল। তাদের মধ্যে বয়সে সবার বড় ভাইটি বলল, 'তোমরা কি জান না যে, তোমাদের পিতা তোমাদের থেকে আল্লাহ্‌র নামে শপথ গ্রহণ করেছেন, আর এর পূর্বেও তোমরা ইউসুফের ব্যাপারে (তোমাদের কর্তব্য পালনে) ব্যর্থ হয়েছ, কাজেই আমি কিছুতেই এখান থেকে নড়বো না যতক্ষণ না আমার পিতা আমাকে অনুমতি দিবেন কিংবা আল্লাহ আমার ব্যাপারে কোন নির্দেশ দিবেন, কেননা তিনি হলেন সর্বোত্তম ফায়সালাকারী।

إِرْجِعُوْآ إِلٰٓى أَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓأَبَانَآ إِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ج وَمَا شَهِدْنَآ إِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ (٨١)

৮১. তোমরা তোমাদের পিতার কাছে ফিরে যাও, গিয়ে বল, 'হে আমাদের পিতা! আপনার ছেলে চুরি করেছে। আমরা যেটুকু জানি তারই চাক্ষুষ বিবরণ দিচ্ছি, চোখের আড়ালের ঘটনা তত্ত্বাবধান করার ক্ষমতা আমাদের নেই।

وَسْئَلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ أَقْبَلْنَا فِيْهَا ط وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ (٨٢)

৮২. আমরা যে জনপদে ছিলাম তার বাসিন্দাদের জিজ্ঞেস করুন আর যে কাফেলার সঙ্গে আমরা এসেছি তাদেরকেও, আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।'

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ أَنْفُسُكُمْ أَمْرًا ط فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ط عَسَى اللهُ أَنْ يَّأْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ط إِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (٨٣)

৮৩. ই'য়াকুব বলল, 'না, বরং তোমরা নিজেরাই একটা কাহিনী সাজিয়ে নিয়ে এসেছ, কাজেই ধৈর্য ধারণই আমার জন্য শ্রেয়, সম্ভবতঃ আল্লাহ তাদেরকে একত্রে আমার কাছে এনে দেবেন। তিনি হলেন সর্বজ্ঞ, বড়ই প্রজ্ঞাময়।'

وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰٓأَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ (٨٤)

৮৪. তিনি তাদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নিলেন আর বললেন, 'ইউসুফের জন্য বড়ই পরিতাপ।' শোকে দুঃখে তার দু'চোখ সাদা হয়ে গিয়েছিল, আর সে অস্ফুট মনস্তাপে ভুগছিল।

قَالُوْا تَاللهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى تَكُوْنَ حَرَضًا أَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ (٨٥)

৮৫. তারা বলল, 'আল্লাহ্‌র শপথ! আপনি ইউসুফের স্মরণ ত্যাগ করবেন না যতক্ষণ না আপনি মুমূর্ষু হবেন কিংবা আপনি মৃত্যুবরণ করেন।

قَالَ إِنَّمَآ أَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْٓ إِلَى اللهِ

৮৬. সে বলল, 'আমি আমার দুঃঃখ বেদনা আল্লাহ্‌র কাছেই নিবেদন করছি, আর আমি

وَأَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٨٦)

আল্লাহ্‌র নিকট হতে যা জানি, তোমরা তা জান না।

يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ وَأَخِيْهِ وَلَا تَيْئَسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ط إِنَّهٗ لَا يَايْئَسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ إِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ (٨٧)

৮৭. হে আমার ছেলেরা! তোমরা যাও, গিয়ে ইউসুফ আর তার ভাইয়ের খোঁজ খবর লও, আল্লাহ্‌র রহমাত থেকে নিরাশ হয়ো না, কেননা কাফির সম্প্রদায় ছাড়া আল্লাহ্‌র রহমাত হতে কেউ নিরাশ হয় না।'

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰأَيُّهَا الْعَزِيْزُ مَسَّنَا وَأَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ مُّزْجٰةٍ فَأَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ عَلَيْنَا ط إِنَّ اللّٰهَ يَجْزِي الْمُتَصَدِّقِيْنَ (٨٨)

৮৮. যখন তারা ইউসুফের দরবারে উপস্থিত হল, তারা বলল, 'হে আযীয! আমাদেরকে আর আমাদের পরিবারবর্গকে বিপদে ঘিরে ধরেছে, আর আমরা স্বল্প পুঁজি নিয়ে এসেছি, আমাদেরকে পূর্ণ ওজনের শষ্য দিন আর আমাদেরকে দান খায়রাত করুন। আল্লাহ দানশীলদেরকে পুরস্কৃত করেন।'

قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ وَأَخِيْهِ إِذْ أَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ (٨٩)

৮৯. সে বলল, 'তোমরা কি জান তোমরা ইউসুফ আর তার ভাইয়ের সঙ্গে কেমন ব্যবহার করেছিলে, যখন তোমরা অজ্ঞ-মূর্খ ছিলে?'

قَالُوْآ أَإِنَّكَ لَأَنْتَ يُوْسُفُ ط قَالَ أَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَآ أَخِيْ ز قَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا ط إِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (٩٠)

৯০. তারা বলল, 'তাহলে তুমিই কি ইউসুফ?' সে বলল, 'আমিই ইউসুফ আর এটা হল আমার ভাই। আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন। যে ব্যক্তি তাকওয়া অবলম্বন করে আর ধৈর্যধারণ করে এমন সৎকর্মশীলদের কর্মফল আল্লাহ কক্ষনো বিনষ্ট করেন না।'

قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَإِنْ كُنَّا لَخٰطِئِيْنَ (٩١)

৯১. তারা বলল, 'আল্লাহ্‌র কসম! আল্লাহ তোমাকে আমাদের উপর মর্যাদা দিয়েছেন, আমরাই ছিলাম অপরাধী।'

قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ط يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ز وَهُوَ أَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ (٩٢)

৯২. সে বলল, 'আজ তোমাদের বিরুদ্ধে আমার কোনই অভিযোগ নেই, আল্লাহ তোমাদেরকে মাফ করুন! তিনি হলেন সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু।'

اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَأَلْقُوْهُ عَلٰى وَجْهِ أَبِيْ يَأْتِ بَصِيْرًا ج وَأْتُوْنِيْ بِأَهْلِكُمْ

৯৩. তোমরা আমার এ জামাটি নিয়ে যাও আর তা আমার পিতার মুখমণ্ডলে রাখ, তিনি দৃষ্টিশক্তিসম্পন্ন হয়ে উঠবেন, আর তোমাদের

أَجْمَعِيْنَ ع (٩٣)

পরিবারের সবাইকে আমার কাছে নিয়ে এসো।'

وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ أَبُوْهُمْ إِنِّيْ لَأَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ أَنْ تُفَنِّدُوْنِ (٩٤)

৯৪. যাত্রীদল যখন (মিসর থেকে) বেরিয়ে পড়ল এমন সময়ে তাদের পিতা (বাড়ীর লোকজনকে) বলল, 'তোমরা আমাকে বয়োবৃদ্ধ দিশেহারা মনে না করলে (তোমরা জেনে রাখ) আমি অবশ্যই ইউসুফের ঘ্রাণ পাচ্ছি।'

قَالُوْا تَاللهِ إِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ (٩٥)

৯৫. বাড়ীতে উপস্থিত ব্যক্তিরা বলল, 'আল্লাহ্‌র কসম! তুমি তো সেই তোমার পুরনো বিভ্রান্তি তেই আছ দেখছি।'

فَلَمَّآ أَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ أَلْقٰهُ عَلٰى وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ط ج قَالَ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ ج إِنِّيْ أَعْلَمُ مِنَ اللهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٩٦)

৯৬. সুসংবাদদাতা যখন এসে হাযির হল, তখন সে জামাটি ই'য়াকুবের মুখমণ্ডলের উপর রাখল, তাতে সে দৃষ্টিশক্তি ফিরে পেল। সে বলল, 'আমি কি তোমাদের বলিনি যে, আমি আল্লাহ্‌র নিকট হতে যা জানি তা তোমরা জান না।'

قَالُوْا يٰٓأَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ إِنَّا كُنَّا خٰطِئِيْنَ (٩٧)

৯৭. তারা বলল, 'হে আমাদের পিতা! আমাদের গুনাহসমূহ মাফির জন্য প্রার্থনা করুন। আমরাই ছিলাম অপরাধী।'

قَالَ سَوْفَ أَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ط إِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (٩٨)

৯৮. সে বলল, 'শীঘ্রই আমি আমার রব্বের কাছে তোমাদের ক্ষমার জন্য প্রার্থনা জানাব, তিনি তো বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।'

فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰىٓ إِلَيْهِ أَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ إِنْ شَآءَ اللهُ اٰمِنِيْنَ ط (٩٩)

৯৯. তারা যখন ইউসুফের কাছে উপস্থিত হল, সে তার পিতা-মাতাকে নিজের কাছে স্থান দিল এবং বলল, 'আল্লাহ্‌র ইচ্ছেয় পূর্ণ নিরাপত্তায় মিসরে প্রবেশ করুন।'

وَرَفَعَ أَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ سُجَّدًا ج وَقَالَ يٰٓأَبَتِ هٰذَا تَأْوِيْلُ رُؤْيَايَ مِنْ قَبْلُ ز قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ط وَقَدْ أَحْسَنَ بِيْٓ إِذْ أَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ أَنْ نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ إِخْوَتِيْ ط إِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ط

১০০. সে তার পিতা-মাতাকে সিংহাসনে উঠিয়ে নিল আর সকলে তার সম্মানে সাজদাহ্য় ঝুঁকে পড়ল। ইউসুফ বলল, 'হে পিতা! এ-ই হচ্ছে আমার সে আগের দেখা স্বপ্নের ব্যাখ্যা। আমার রব্ব একে সত্যে পরিণত করেছেন, তিনি আমার প্রতি অনুগ্রহ করেছেন যে, তিনি আমাকে কয়েদখানা থেকে বের করে এনেছেন। আর শাইত্বন আমার আর আমার ভাইদের মধ্যে বিভেদ সৃষ্টি করার পরও তিনি আপনাদেরকে মরু অঞ্চল থেকে এখানে (মিসরে) এনে দিয়েছেন। আমার রব্ব যা করতে ইচ্ছে করেন তা সূক্ষ্ম

إِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (١٠٠)

উপায়ে বাস্তবায়িত করে থাকেন, তিনি বড়ই বিজ্ঞ, বড়ই প্রজ্ঞাময়।

رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ مِنْ تَأْوِيْلِ الْأَحَادِيْثِ ج فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ قف أَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّأَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ (١٠١)

১০১. 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে রাজত্ব দান করেছ, আর আমাকে স্বপ্নের ব্যাখ্যা শিখিয়েছ। আসমান যমীনের সৃষ্টিকর্তা! তুমিই দুনিয়ায় আর আখেরাতে আমার অভিভাবক, তুমি মুসলিম অবস্থায় আমার মৃত্যু দান করো এবং আমাকে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত করো।'

ذٰلِكَ مِنْ أَنْـۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ إِلَيْكَ ج وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ إِذْ أَجْمَعُوْٓا أَمْرَهُمْ وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ (١٠٢)

১০২. অদৃশ্য জগতের খবর থেকে এটা তোমাকে ওয়াহী করে জানালাম। ষড়যন্ত্র করার সময় যখন তারা তাদের কাজে জোটবদ্ধ হয়েছিল তখন তুমি তো তাদের কাছে ছিলে না।

وَمَآ أَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ (١٠٣)

১০৩. তুমি যত প্রবল আগ্রহ ভরেই চাও না কেন, মানুষদের অধিকাংশই ঈমান আনবে না।

وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ط إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ع (١٠٤)

১০৪. তুমি তার জন্য তাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাচ্ছ না, এটা তো বিশ্বজগতের সকলের জন্য উপদেশ মাত্র।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ (١٠٥)

১০৫. আসমানে আর যমীনে বহু নিদর্শন আছে যেগুলোর উপর দিয়ে তারা (প্রতিনিয়ত) অতিক্রম করে কিন্তু এসব কিছু থেকে তারা অবজ্ঞা করছে।

وَمَا يُؤْمِنُ أَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ إِلَّا وَهُمْ مُّشْرِكُوْنَ (١٠٦)

১০৬. অধিকাংশ মানুষ আল্লাহ্‌তে বিশ্বাস করে, কিন্তু সাথে সাথে শির্‌কও করে।

أَفَأَمِنُوْٓا أَنْ تَأْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ اللّٰهِ أَوْ تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (١٠٧)

১০৭. তারা কি নিশ্চিন্ত যে, আল্লাহ্‌র সর্বগ্রাসী 'আযাব তাদের উপর এসে পড়বে না? কিংবা হঠাৎ ক্বিয়ামাত তাদের উপর এসে পড়বে না যা তারা টেরও পাবে না?

قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ أَدْعُوْٓا إِلَى اللّٰهِ قف عَلٰى بَصِيْرَةٍ أَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ط وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ وَمَآ أَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٠٨)

১০৮. বল, 'এটাই আমার পথ, আল্লাহ্‌র পথে আহ্বান জানাচ্ছি, আমি ও আমার অনুসারীরা, স্পষ্ট জ্ঞানের মাধ্যমে। আল্লাহ মহান, পবিত্র; আমি কক্ষনো মুশরিকদের মধ্যে শামিল হব না।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ إِلَيْهِمْ مِّنْ أَهْلِ الْقُرٰى ؕ أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ؕ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (١٠٩)

১০৯. তোমার পূর্বে জনপদবাসীদের মধ্যে যাদের কাছে ওয়াহী করতাম তারা পুরুষ মানুষ ব্যতীত ছিল না। তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করতঃ দেখে না যে, তাদের পূর্ববর্তী লোকেদের পরিণাম কী হয়েছিল? যারা তাকওয়া অবলম্বন করে, নিশ্চিতই পরলোকের ঘর তাদের আরো উত্তম, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

حَتّٰٓى إِذَا اسْتَيْأَسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَآءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ؕ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُنَا عَنِ الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ (١١٠)

১১০. (হে নাবী! তোমার পূর্বেও এমন ঘটেছে যে,) শেষ পর্যন্ত রসূলগণ নিরাশ হয়েছে, আর লোকেরা মনে করেছে যে, তাদেরকে মিথ্যে কথা বলা হয়েছে, তখন তাদের (রাসূলদের) কাছে আমার সাহায্য এসে পৌঁছেছে, এভাবেই আমি যাকে ইচ্ছে রক্ষা করি। অপরাধী সম্প্রদায় থেকে আমার শাস্তি কক্ষনো ফিরিয়ে নেয়া হয় না।

لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّأُولِي الْأَلْبَابِ ؕ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ع (١١١)

১১১. এদের কাহিনীসমূহে বোধশক্তিসম্পন্ন মানুষদের জন্য শিক্ষণীয় বিষয় আছে। এ কুরআন কোন মিথ্যে রচনা নয়, বরং তাদের পূর্বে আগত কিতাবের প্রত্যয়নকারী আর যাবতীয় বিষয়ের বিস্তারিত বিবরণে সমৃদ্ধ, আর মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্য পথের দিশারী ও রহমাত।

১১০। 'উরওয়াহ ইব্‌নু যুবায়র হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি 'আয়িশাহ-কে আল্লাহ্ তা'আলার বাণীঃ حَتّٰٓى إِذَا اسْتَيْئَسَ الرُّسُلُ এর ব্যাখ্যা সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম যে, এ আয়াতে শব্দটা أَكَذِبُوْا না كُذِّبُوْا 'আয়িশাহ বললেন, أُكْذِبُوْا আমি জিজ্ঞেস করলাম, যখন আম্বিয়ায়ে কিরাম পূর্ণ বিশ্বাস করে নিলেন, এখন তাদের সম্প্রদায় তাদের প্রতি মিথ্যারোপ করবে, তখন الظَّن ব্যবহারের উদ্দেশ্য কী? 'আয়িশাহ বললেন, হ্যাঁ, তারা পূর্ণ বিশ্বাস করেই নিয়েছিলেন। আমি তাঁকে বললাম وَظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا অর্থ কী দাঁড়ায়? 'আয়িশাহ বললেন, মা'আযাল্লাহ! রসূলগণ কখনও আল্লাহ্ সম্পর্কে মিথ্যা ধারণা করতে পারেন না। আমি বললাম, তবে আয়াতের অর্থ কী হবে? তিনি বললেন, তারা রসূলদের অনুসারী, যারা তাদের প্রতিপালকের প্রতি ঈমান এনেছে এবং রসূলদের সত্য বলে স্বীকার করেছে, তারপর তাদের প্রতি দীর্ঘকাল ধরে (কাফেরদের) নির্যাতন চলেছে এবং আল্লাহ্‌র সাহায্য আসতেও অনেক দেরী হয়েছে, এমনকি যখন রসূলগণ তাঁদের সম্প্রদায়ের মধ্য থেকে তাঁদের প্রতি মিথ্যারোপকারীদের ঈমান আনা সম্পর্কে নিরাশ হয়ে গেছেন এবং রসূলদের এ ধারণা জন্মেছে যে, এখন তাঁদের অনুসারীরাও তাদের প্রতি মিথ্যারোপ করতে শুরু করবে, এমন সময় তাঁদের কাছে আল্লাহ্‌র সাহায্য এল।
–বুখারী ৪৬৯৫ [৩৩৮৯]

১৩. সূরাহ আর-রা'দ

আয়াতঃ ৪৩, রুকূ'ঃ ৬, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

১. আলিফ-লাম-মীম-র, এগুলো কিতাবের আয়াতসমূহ, আর তোমার প্রতিপালকের নিকট থেকে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা প্রকৃত সত্য, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই ঈমান আনে না।

২. আল্লাহই স্তম্ভ ছাড়াই আকাশমণ্ডলীকে উর্ধ্বে তুলে রেখেছেন, যা তোমরা দেখছ, অতঃপর তিনি আরশে সমুন্নত হয়েছেন তিনিই সূর্য ও চন্দ্রকে নিয়মের বন্ধনে বশীভূত রেখেছেন, প্রত্যেকেই নির্দিষ্ট সময়ের জন্য গতিশীল আছে। যাবতীয় বিষয় তিনিই নিয়ন্ত্রণ করেন, তিনি নিদর্শনসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের সঙ্গে সাক্ষাতের ব্যাপারে দৃঢ় বিশ্বাসী হতে পার।

৩. তিনিই যমীনকে বিছিয়ে দিয়েছেন আর তাতে পর্বত ও নদীনালা সংস্থাপিত করেছেন, আর তাতে সকল প্রকারের ফল জোড়ায় জোড়ায় সৃষ্টি করেছেন। তিনি দিবসের উপর রাতের আবরণ টেনে দেন। চিন্তাশীল সম্প্রদায়ের জন্য এতে অবশ্যই নিদর্শনাবলী রয়েছে।

৪. যমীনে আছে বিভিন্ন ভূখণ্ড যা পরস্পর সংলগ্ন, আছে আঙ্গুরের বাগান, শস্য ক্ষেত, খেজুর গাছ– একই মূল হতে উদ্গত আর একই মূল থেকে উদ্গত নয়– যদিও একই পানিতে সিক্ত। খাওয়ার স্বাদে এদের কতককে কতকের উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি। জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য এতে অবশ্যই নিদর্শনাবলী রয়েছে।

৫. তুমি যদি বিস্ময়বোধ কর তবে বিস্ময়কর হল

سُوْرَةُ الرَّعْدِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓرٰ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ؕ وَالَّذِيْٓ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١)

اَللهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَآءِ رَبِّكُمْ تُوْقِنُوْنَ (٢)

وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْأَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ وَأَنْهٰرًا ؕ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (٣)

وَفِي الْأَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ مِّنْ أَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَآءٍ وَّاحِدٍ ۚ وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰى بَعْضٍ فِي الْأُكُلِ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٤)

وَإِنْ تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا تُرٰبًا

أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ ؕ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ الْأَغْلٰلُ فِيْ أَعْنَاقِهِمْ ۚ وَأُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٥)

তাদের কথাঃ 'আমরা যখন মাটিতে পরিণত হব তখন কি আমাদেরকে নতুনভাবে আবার সৃষ্টি করা হবে?' তারা হল সেই লোক যারা তাদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে, এদের গলায় আছে লোহার শিকল, আর এরা জাহান্নামের অধিবাসী, তাতে তারা চিরকাল থাকবে।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ وَقَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمُ الْمَثُلٰتُ ؕ وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلٰى ظُلْمِهِمْ ۚ وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيْدُ الْعِقَابِ (٦)

৬. কল্যাণের আগে আগে অকল্যাণ নিয়ে আসার জন্য তোমার নিকট তারা তাড়াহুড়া করছে, এদের পূর্বে এর বহু দৃষ্টান্ত অতীত হয়েছে। মানুষ সীমালঙ্ঘন করলেও তোমার প্রতিপালক তাদের প্রতি অবশ্যই ক্ষমাশীল আর তোমার প্রতিপালক অবশ্যই শাস্তিদানেও কঠোর।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ إِنَّمَآ أَنْتَ مُنْذِرٌ وَّلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ع (٧)

৭. যারা কুফুরী করেছে তারা বলে, 'তার কাছে তার প্রতিপালকের পক্ষ হতে কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না কেন?' তুমি তো শুধু সতর্ককারী, আর প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্য রয়েছে একজন সঠিক পথ প্রদর্শনকারী।

اَللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنْثٰى وَمَا تَغِيْضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ؕ وَكُلُّ شَيْءٍ عِنْدَهٗ بِمِقْدَارٍ (٨)

৮. আল্লাহ জানেন প্রতিটি নারী যা গর্ভে বহন করে, প্রত্যেক গর্ভে যা কমে বা বাড়ে তাও, প্রতিটি জিনিস তাঁর কাছে আছে পরিমাণ মত।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيْرُ الْمُتَعَالِ (٩)

৯. গোপন ও প্রকাশ্য সম্পর্কে তিনি জ্ঞাত, তিনি মহান, সর্বোচ্চ।

سَوَآءٌ مِّنْكُمْ مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَنْ جَهَرَ بِهٖ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍۢ بِاللَّيْلِ وَسَارِبٌۢ بِالنَّهَارِ (١٠)

১০. তোমাদের কেউ কথা গোপন করে বা প্রকাশ করে, কেউ রাতে লুকিয়ে থাকে বা দিনে প্রকাশ্যে চলাফেরা করে, সবাই তাঁর কাছে সমান।

৮। ইব্‌নু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। নিশ্চয়ই রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেন, 'ইল্ম গায়েব-এর চাবিকাঠি পাঁচটি, যা আল্লাহ্ ভিন্ন কেউ জানে না। তা হলোঃ আগামী দিন কী হবে, তা আল্লাহ্ ব্যতীত আর কেউ জানে না। মায়ের জরায়ুতে কী আছে, তা আল্লাহ্ ভিন্ন আর কেউ জানে না। বৃষ্টি কখন আসবে, তা আল্লাহ্ ব্যতীত আর কেউ জানে না। কোন ব্যক্তি জানে না তার মৃত্যু কোথায় হবে এবং ক্বিয়ামাত কবে সংঘটিত হবে, তা আল্লাহ্ ব্যতীত আর কেউ জানে না। –বুখারী ৪৬৯৭ [১০৩৯; আহমাদ ৪৭৫২, ৫১১২]

Contents

لَهٗ مُعَقِّبٰتٌ مِّنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ يَحْفَظُوْنَهٗ مِنْ أَمْرِ اللهِ ؕ إِنَّ اللهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِأَنْفُسِهِمْ ؕ وَإِذَآ أَرَادَ اللهُ بِقَوْمٍ سُوْٓءًا فَلَا مَرَدَّ لَهٗ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّالٍ (١١)

১১. মানুষের সামনে ও পেছনে পাহারাদার নিযুক্ত আছে যারা আল্লাহ্‌র হুকুম মোতাবেক তাকে রক্ষণাবেক্ষণ করে। আল্লাহ কোন সম্প্রদায়ের অবস্থা পরিবর্তন করেন না যতক্ষণ না তারা নিজেরাই তাদের অবস্থা পরিবর্তন করে। আল্লাহ কোন সম্প্রদায়ের অকল্যাণ করতে চাইলে তা রদ করার কেউ নেই, আর তিনি ছাড়া তাদের কোন অভিভাবক নেই।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۚ (١٢)

১২. তিনিই তোমাদেরকে দেখান বিদ্যুৎ ভীতিকর ও আশা সঞ্চারক। তিনিই উত্তোলিত করেন মেঘ, (প্রবৃদ্ধির) বৃষ্টিতে ভারাক্রান্ত।

وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي اللهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ؕ (١٣)

১৩. বজ্রনাদ তাঁরই ভয়ে তাঁর প্রশংসা বর্ণনা করে আর ফেরেশতারাও। তিনি গর্জনকারী বজ্র প্রেরণ করেন আর তা দিয়ে যাকে ইচ্ছে আঘাত করেন, আর তারা আল্লাহ সম্পর্কে বিতণ্ডায় লিপ্ত হয়। অথচ তিনি বড়ই শক্তিশালী।

لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ إِلَّا كَبَاسِطِ كَفَّيْهِ إِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ بِبَالِغِهٖ ؕ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ (١٤)

১৪. সত্যিকার আহ্বান-প্রার্থনা তাঁরই প্রাপ্য, যারা তাঁকে ছাড়া অন্যকে ডাকে, তারা তাদেরকে কোনই জবাব দেয় না। তারা হল ঐ লোকের মত, যে তার মুখে পানি পৌঁছবে ভেবে পানির দিকে হাত প্রসারিত করে দেয়, অথচ সে পানি তার মুখে কক্ষনো পৌঁছবে না। কাফিরদের আহ্বান নিষ্ফল ব্যতীত নয়।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ السجدة (١٥)

১৫. আসমানে আর যমীনে যা কিছু আছে ইচ্ছায় বা অনিচ্ছায় সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহ্‌র প্রতি সাজদায় অবনত হয় আর তাদের ছায়াগুলোও।

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ قُلِ اللهُ ؕ قُلْ أَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِأَنْفُسِهِمْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۙ۬ أَمْ هَلْ

১৬. বল, আকাশ ও যমীনের প্রতিপালক কে? বল, আল্লাহ। বল, তোমরা কি তাঁকে বাদ দিয়ে এমন অভিভাবক গ্রহণ করেছ যাদের নিজেদের কোন লাভ-লোকসান করার ক্ষমতা নেই। বল, অন্ধ ও চক্ষুষ্মান কি সমান? কিংবা অন্ধকার আর আলো কি সমান? কিংবা তারা কি আল্লাহ্‌র

تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ وَالنُّوْرُ ۚ أَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۗ قُلِ اللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (١٦)

অংশীদার বানিয়েছে তাদেরকে যারা তাঁর সৃষ্টির মত সৃষ্টি করেছে, যে কারণে সৃষ্টি তাদের কাছে সমান মনে হয়েছে? বল, আল্লাহ সবকিছুর সৃষ্টিকর্তা, তিনি এক, মহা প্রতাপশালী।

أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ أَوْدِيَةٌۢ بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا رَّابِيًا ۗ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ أَوْ مَتَاعٍ زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ۗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۗ فَأَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ جُفَآءً ۚ وَأَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ فِي الْأَرْضِ ۗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْأَمْثَالَ ۗ (١٧)

১৭. তিনি আকাশ থেকে বৃষ্টি বর্ষণ করেন যার ফলে উপত্যকাগুলো পরিমিতভাবে প্লাবিত হয়, প্লাবণে উপরিভাগে ফেনা জমে উঠে, আর এ রকম ফেনা জমে উঠে যখন অলঙ্কার ও তৈজসপত্র বানানোর জন্য সেগুলো আগুনে গলানো হয়। এভাবে আল্লাহ প্রকৃত সত্য ও মিথ্যার দৃষ্টান্ত বর্ণনা করে থাকেন। ফেনা খড়কুটোর মত উড়ে যায়, আর যা মানুষের জন্য উপকারী তা যমীনে স্থিতিশীল হয়। এভাবে আল্লাহ দৃষ্টান্ত দিয়ে (মানুষকে বুঝিয়ে) থাকেন।

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؕ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ أَنَّ لَهُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ ۗ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ وَمَأْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۗ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (١٨)

১৮. যারা তাদের প্রতিপালকের ডাকে সাড়া দেয় তাদের জন্য আছে (যাবতীয়) কল্যাণ। যারা তাঁর ডাকে সাড়া দেয় না, তারা যদি দুনিয়াতে যা কিছু আছে যে সবের মালিক হয় এবং আরো অত পরিমাণও তাদের হয়, নিজেদের মুক্তির বিনিময়ে তা সবই তারা দিতে চাইবে, তাদের হিসাব হবে বড়ই কঠিন, তাদের আবাসস্থল জাহান্নাম, আর তা কতই না নিকৃষ্ট ঠিকানা!

أَفَمَنْ يَّعْلَمُ أَنَّمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ أَعْمٰى ؕ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُو الْأَلْبَابِ ۙ (١٩)

১৯. যে ব্যক্তি জানে যে, তোমার প্রতিপালকের নিকট থেকে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তা সত্য, সে কি ঐ ব্যক্তির সমান যে অন্ধ? বুদ্ধিমান লোকেরাই উপদেশ গ্রহণ করে থাকে

الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۙ (٢٠)

২০. যারা আল্লাহ্‌কে দেয়া তাদের ও'য়াদা রক্ষা করে আর প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করে না।

وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ أَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ أَنْ

২১. তারা সে সব সম্পর্ক সম্বন্ধ বহাল রাখে যা

Contents

يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ سُوْٓءَ الْحِسَابِ ط (٢١)

বহাল রাখার জন্য আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন। তারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে এবং ভয়াবহ হিসাব নিকাশকে ভয় পায়।

وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ لا (٢٢)

২২. তারা তাদের প্রতিপালকের চেহারা (সন্তুষ্টি) কামনায় ধৈর্য ধারণ করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে, আর আমি তাদেরকে যে জীবিকা দিয়েছি তাথেকে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে। তারা অন্যায়কে ন্যায় দ্বারা প্রতিরোধ করে। পরকালের ঘর প্রাপ্তি এদের জন্যই নির্দিষ্ট।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ج (٢٣)

২৩. তা হল স্থায়ী জান্নাত, তাতে তারা প্রবেশ করবে। আর তাদের পিতৃ পুরুষ, স্বামী-স্ত্রী ও সন্তানাদির মধ্যে যারা সৎকর্ম করেছে তারাও। আর ফেরেশতারা সকল দরজা দিয়ে তাদের কাছে হাযির হয়ে সংবর্ধনা জানাবে (এই বলে যে)–

سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى الدَّارِ ط (٢٤)

২৪. "তোমাদের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক, কারণ তোমরা ধৈর্যধারণ করেছিলে। কতই না উত্তম পরকালের এই ঘর!"

وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللهِ مِنْۢ بَعْدِ مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ أَمَرَ اللهُ بِهٖٓ أَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ ج أُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ (٢٥)

২৫. আর যারা আল্লাহ্‌র সাথে শক্ত ও'য়াদা করার পর তা ভঙ্গ করে, আল্লাহ যা বহাল রাখার নির্দেশ দিয়েছেন তা ছিন্ন করে, আর যমীনে অশান্তি সৃষ্টি করে, তাদের প্রতি অভিশাপ, তাদের জন্য আছে অতিশয় মন্দ আবাসস্থল।

اَللهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ط وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ط وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا فِي الْاٰخِرَةِ إِلَّا مَتَاعٌ ع (٢٦)

২৬. আল্লাহ রিয্‌ক সম্প্রসারিত করেন যার জন্য ইচ্ছে করেন, আর যার জন্য চান সীমিত পরিমাণে দেন। তারা পার্থিব জীবনে আনন্দে মেতে আছে অথচ আখেরাতের তুলনায় দুনিয়ার জীবন অতি নগণ্য বস্তু।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ط قُلْ إِنَّ اللهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ

২৭. সত্য প্রত্যাখ্যানকারীরা বলে, 'তার কাছে তার প্রতিপালকের নিকট হতে কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না কেন?' বল, 'আল্লাহ যাকে ইচ্ছে গুমরাহ করেন, আর যে তাঁর অভিমুখী তাকে

وَيَهْدِيْٓ إِلَيْهِ مَنْ أَنَابَ صلے ج (٢٧)

সত্য পথে পরিচালিত করেন।'

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ بِذِكْرِ اللهِ ط أَلَا بِذِكْرِ اللهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ط (٢٨)

২৮. তারাই ঈমান আনে এবং আল্লাহ্র স্মরণে তাদের অন্তর প্রশান্তি লাভ করে। জেনে রেখ, আল্লাহ্র স্মরণের মাধ্যমেই দিলের সত্যিকারের প্রশান্তি লাভ করা যায়।

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ (٢٩)

২৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকাজ করে, সৌভাগ্য তাদেরই, উত্তম পরিণাম তাদের জন্যই।

كَذٰلِكَ أَرْسَلْنٰكَ فِيْٓ أُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهَآ أُمَمٌ لِّتَتْلُوَاْ عَلَيْهِمُ الَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ط قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ مَتَابِ (٣٠)

৩০. (পূর্বে যেমন পাঠিয়েছিলাম) এভাবেই আমি তোমাকে এমন এক সম্প্রদায়ের কাছে পাঠিয়েছি যার পূর্বে অনেক সম্প্রদায় গত হয়ে গেছে, যাতে তুমি তাদের কাছে তেলাওয়াত কর যা আমি তোমার প্রতি ওয়াহী করি, তবুও তারা দয়াময় আল্লাহকে অস্বীকার করে। বল, 'তিনি আমার প্রতিপালক, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, আমি তাঁর উপরই নির্ভর করি আর তিনিই প্রত্যাবর্তনস্থল।'

وَلَوْ أَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ أَوْ قُطِّعَتْ بِهِ الْأَرْضُ أَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ط بَلْ لِّلّٰهِ الْأَمْرُ جَمِيْعًا ط أَفَلَمْ يَاْيْـَٔسِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللهُ لَهَدَى النَّاسَ جَمِيْعًا ط وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ أَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ دَارِهِمْ حَتّٰى يَأْتِيَ وَعْدُ اللهِ ط إِنَّ اللهَ لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ع (٣١)

৩১. কুরআন দিয়ে পর্বতকে যদি গতিশীল করা যেত, কিংবা যমীনকে দীর্ণ করা যেত কিংবা তা দিয়ে মৃত মানুষকে কথা বলানো যেত (তবুও তারা তাতে বিশ্বাস করত না)। (আলৌকিক কিছু করা মানুষের সাধ্যাতীত) বরং সমস্ত কিছুই আল্লাহ্র ক্ষমতাভুক্ত। যারা ঈমান এনেছে তারা কি জানে না যে, আল্লাহ ইচ্ছে করলে সকল মানুষকে সৎ পথে পরিচালিত করতে পারতেন। যারা কুফরী করে তাদের কার্যকলাপের কারণে তাদের উপর কোন না কোন বিপদ আসতেই থাকে কিংবা তাদের ঘরের আশেপাশেই নাযিল হতে থাকে, যতক্ষণ না আল্লাহ্র ও'য়াদা পূর্ণ হয়। নিশ্চয়ই আল্লাহ ওয়াদার ব্যতিক্রম করেন না।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَأَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ قف فَكَيْفَ

৩২. তোমার আগেও বহু রসূলকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করা হয়েছিল, তখন আমি কাফিরদেরকে (ইচ্ছেমত কাজ চালিয়ে যাওয়ার) অবকাশ দিয়েছিলাম, অবশেষে তাদেরকে পাকড়াও

كَانَ عِقَابِ (٣٢)

করেছিলাম। কেমন (ভয়াবহ) ছিল আমার শাস্তি!

أَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلَىٰ كُلِّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ قُلْ سَمُّوْهُمْ ۗ أَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي الْأَرْضِ أَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ (٣٣)

৩৩. প্রত্যেক প্রাণীর উপার্জনের প্রতি যিনি দৃষ্টি রাখেন (তিনি কি তাদের অক্ষম ইলাহ্দের মত?) অথচ তারা আল্লাহ্র শরীক নির্দিষ্ট করে রেখেছে। বল, 'তাদের নাম বল (যাদেরকে তোমরা আল্লাহ্র অংশীদার মনে কর), তোমরা কি পৃথিবীর এমন কোন সংবাদ তাঁকে দিতে চাও যা তিনি জানেন না। নাকি এগুলো কেবল কথার প্রদর্শনী? প্রকৃত ব্যাপার হল, কাফিরদের নিকট তাদের কলা কৌশলকে আকর্ষণীয় করে দেয়া হয়েছে আর তাদেরকে সৎ পথ থেকে বিরত রাখা হয়েছে। আল্লাহ্ যাকে গুমরাহ্ করেন তাঁকে পথ দেখানোর কেউ নেই।

لَهُمْ عَذَابٌ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ (٣٤)

৩৪. দুনিয়ার জীবনে তাদের জন্য আছে শাস্তি, আর আখেরাতের শাস্তি অবশ্যই আরো বেশি কঠিন। আল্লাহ্র শাস্তি থেকে বাঁচানোর তাদের কেউ নেই।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۗ أُكُلُهَا دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ (٣٥)

৩৫. মুত্তাকীদেরকে যে জান্নাতের ওয়া'দা দেয়া হয়েছে তার দৃষ্টান্ত এই যে, তার তলদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তারা ফলফলাদি চিরস্থায়ী আর তার ছায়াও। যারা তাক্ওয়া অবলম্বন করে তাদের পরিণাম হবে এই। আর কাফিরদের পরিণতি হবে জাহান্নামের আগুন।

وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ أُنْزِلَ إِلَيْكَ وَمِنَ الْأَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ بَعْضَهٗ ۗ قُلْ إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللّٰهَ وَلَآ أُشْرِكَ بِهٖ ۗ إِلَيْهِ أَدْعُوْا وَإِلَيْهِ مَاٰبِ (٣٦)

৩৬. আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছিলাম তারা তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তাতে উৎফুল্ল, কিন্তু কতক দল তার কোন কোন কথা মানে না। বল, 'আমি আল্লাহ্র 'ইবাদাত করার জন্য এবং তাঁর সাথে কোন কিছু শারীক না করার জন্য নির্দেশপ্রাপ্ত হয়েছি, আমি তাঁর দিকেই আহ্বান জানাই, আর আমার প্রত্যাবর্তন তাঁর দিকেই।

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ أَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ

৩৭. এভাবে আমি একে বিধানরূপে নাযিল করেছি আরবী ভাষায়। তোমার কাছে জ্ঞান আসার পরেও তুমি যদি তাদের খাহেশের অনুসরণ কর, তবে

ۙ مَا لَكَ مِنَ اللهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ع (٣٧)

আল্লাহ্‌র মোকাবালায় তোমার কোন অভিভাবক থাকবে না, থাকবে না কোন রক্ষাকারী।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ وَجَعَلْنَا لَهُمْ أَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ط وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ أَنْ يَّأْتِيَ بِاٰيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللهِ ط لِكُلِّ أَجَلٍ كِتٰبٌ (٣٨)

৩৮. আমি তোমার পূর্বেও রসূলগণকে পাঠিয়েছিলাম, আর তাদেরকে দিয়েছিলাম স্ত্রী ও সন্তানাদি, আল্লাহ্‌র হুকুম ব্যতীত নিদর্শন হাযির করার শক্তি কোন রসূলের নেই। যাবতীয় বিষয়ের নির্দিষ্ট সময় লিপিবদ্ধ আছে।

يَمْحُوا اللهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ج صلے وَعِنْدَهٗٓ أُمُّ الْكِتٰبِ (٣٩)

৩৯. আল্লাহ যা ইচ্ছে করেন নিশ্চিহ্ন করে দেন আর যা ইচ্ছে প্রতিষ্ঠিত রাখেন, উম্মুল কিতাব তাঁর নিকটই রক্ষিত।

وَإِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ (٤٠)

৪০. আমি তাদেরকে যে শাস্তি দেয়ার ওয়া'দা করেছি তার কিছু যদি তোমাকে দেখাই কিংবা (দেখানোর পূর্বেই) তোমার মৃত্যু ঘটাই, (উভয় অবস্থাতেই) তোমার দায়িত্ব হল প্রচার করে দেয়া, আর হিসেব নেয়ার কাজ হল আমার।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ط وَاللهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ لِحُكْمِهٖ ط وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (٤١)

৪১. তারা কি দেখে না আমি তাদের জন্য যমীনকে চার দিক থেকে সংকীর্ণ করে আনছি? আল্লাহ হুকুম দেন, তাঁর হুকুম পেছনে ঠেলে দেবে এমন কেউ নেই। হিসেব গ্রহণের ব্যাপারে তিনি খুবই দ্রুতগতি।

وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ جَمِيْعًا ط يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ط وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ (٤٢)

৪২. ওদের আগে যারা ছিল তারাও চক্রান্ত করেছিল, যাবতীয় চক্রান্ত আল্লাহ্‌র আয়ত্তাধীন। তিনি জানেন প্রত্যেক ব্যক্তি কী কামাই করছে। আর কাফিরগণ অচিরেই জানতে পারবে ভাল পরিণাম কাদের জন্য।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ط قُلْ كَفٰى بِاللهِ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۙ وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ ع (٤٣)

৪৩. কাফিররা বলে, 'তুমি আল্লাহ্‌র প্রেরিত নও।' বল, 'আমার ও তোমাদের মাঝে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট এবং যাদের কিতাবের জ্ঞান আছে তারাও।'

১৪. সূরাহ ইব্‌রাহীম

سُوْرَةُ إِبْرَاهِيْمَ

আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ৭, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

الٓرٰ قف كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ إِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۙ۬ لا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ إِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ لا (١)

১. আলিফ-লাম-র, একটা কিতাব যা তোমার প্রতি অবতীর্ণ করেছি যাতে তুমি মানুষকে তাদের প্রতিপালকের নির্দেশে অন্ধকার থেকে নিয়ে আসতে পার আলোর দিকে– মহাপরাক্রমশালী প্রশংসিতের পথে।

اللهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ ۙ لا (٢)

২. আল্লাহ- আসমানসমূহে যা কিছু আছে আর পৃথিবীতে যা কিছু আছে, সবই তাঁর মালিকানাধীন। কিন্তু কাফিরদের জন্য আছে কঠিন শাস্তির দুর্ভোগ।

الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ط أُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ ۢبَعِيْدٍ (٣)

৩. যারা আখেরাতের তুলনায় দুনিয়ার জিন্দিগীকে শ্রেয় জ্ঞান করে, যারা আল্লাহ্‌র পথ থেকে (লোকদেরকে) বিরত রাখে আর তাতে বক্রতা আনার আকাঙ্ক্ষা পোষণ করে। এরা গোমরাহীতে বহু দূরে চলে গেছে।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا بِلِسَانِ قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ط فَيُضِلُّ اللهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٤)

৪. আমি কোন রসূলকেই তার জাতির ভাষা ছাড়া পাঠাইনি যাতে তাদের কাছে স্পষ্টভাবে (আমার নির্দেশগুলো) বর্ণনা করতে পারে। অতঃপর আল্লাহ যাকে ইচ্ছে পথহারা করেছেন, আর যাকে ইচ্ছে সঠিক পথ দেখিয়েছেন, তিনি বড়ই পরাক্রান্ত, বিজ্ঞানময়।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ أَنْ أَخْرِجْ قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۙ۬ لا وَذَكِّرْهُمْ بِأَيّٰمِ اللهِ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ (٥)

৫. আর অবশ্যই আমি মূসাকে আমার নিদর্শনসমূহ দিয়ে পাঠিয়েছিলাম আর বলেছিলাম, তোমার জাতিকে অন্ধকার থেকে আলোতে বের করে আন, আর তাদেরকে আল্লাহ্‌র হুকুমে ঘটিত অতীতের ঘটনাবলী দিয়ে উপদেশ দাও। এতে প্রত্যেক পরম সহিষ্ণু ও পরম কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্য অবশ্যই নিদর্শনসমূহ রয়েছে।

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللهِ

৬. স্মরণ কর, যখন মূসা তার সম্প্রদায়কে বলেছিল, 'তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র

عَلَيْكُمْ إِذْ أَنْجٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ أَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ط وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ع (٦)

নি'মাতের কথা স্মরণ কর যখন তিনি তোমাদেরকে ফির'আওনী গোষ্ঠী থেকে রক্ষা করেছিলেন যারা তোমাদেরকে জঘন্য রকমের শাস্তিতে পিষ্ট করছিল। তোমাদের পুত্রদেরকে তারা হত্যা করত আর তোমাদের নারীদেরকে জীবিত রাখত। এটা ছিল তোমাদের জন্য আল্লাহ্র পক্ষ হতে এক কঠিন পরীক্ষা।

وَإِذْ تَأَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ لَأَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ إِنَّ عَذَابِيْ لَشَدِيْدٌ (٧)

৭. স্মরণ কর, যখন তোমাদের প্রতিপালক ঘোষণা করেন, যদি তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর তাহলে আমি অবশ্যই তোমাদের জন্য (আমার নি'য়ামাত) বৃদ্ধি করে দেব, আর যদি তোমরা অকৃতজ্ঞ হও (তবে জেনে রেখ, অকৃতজ্ঞদের জন্য) আমার শাস্তি অবশ্যই কঠিন।

وَقَالَ مُوْسٰٓى إِنْ تَكْفُرُوْٓا أَنْتُمْ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا لا فَإِنَّ اللهَ لَغَنِيٌّ حَمِيْدٌ (٨)

৮. মূসা বলেছিল, তোমরা আর দুনিয়ার সকল লোক যদি অকৃতজ্ঞ হও (তাতে কিছুই যায় আসে না) কারণ আল্লাহ অমুখাপেক্ষী, প্রশংসিত।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ط وَالَّذِيْنَ مِنْ ۢبَعْدِهِمْ ط لَا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا اللهُ ط جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا أَيْدِيَهُمْ فِيْٓ أَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا إِنَّا كَفَرْنَا بِمَآ أُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَإِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا تَدْعُوْنَنَآ إِلَيْهِ مُرِيْبٍ (٩)

৯. তোমাদের পূর্বেকার লোকেদের খবর কি তোমাদের কাছে পৌঁছেনি? নূহ, 'আদ আর সামূদ সম্প্রদায়ের, আর তাদের পরবর্তীদের; তাদের সম্পর্কে আল্লাহ ছাড়া কেউ জানে না। রসূলগণ তাদের কাছে স্পষ্ট নিদর্শনাসমূহ নিয়ে এসেছিল, তখন তারা নিজেদের মুখে হাত চেপে ধরল আর বলল, 'যে জিনিস দিয়ে তোমাদেরকে পাঠানো হয়েছে তা আমরা অস্বীকার করি আর যে বিষয়ের প্রতি তোমরা আমাদেরকে আহ্বান জানাচ্ছ সে সম্পর্কে আমরা বিভ্রান্তিকর সন্দেহের মধ্যে রয়েছি।'

قَالَتْ رُسُلُهُمْ أَفِي اللهِ شَكٌّ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ط قَالُوْٓا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ط تُرِيْدُوْنَ أَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا فَأْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ (١٠)

১০. তাদের রসূলগণ বলেছিল, 'আল্লাহ সম্পর্কে সন্দেহ? যিনি আসমানসমূহ ও যমীনের সৃষ্টিকর্তা, তিনি তোমাদেরকে ডাকছেন তোমাদের অপরাধ মার্জনা করার জন্য আর একটা নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তোমাদেরকে অবকাশ দেয়ার জন্য।' তারা বলল, 'তুমি আমাদেরই মত মানুষ বৈ তো নও, আমাদের পূর্বপুরুষরা যার 'ইবাদাত করত তা থেকে আমাদেরকে তুমি বাধা দিতে চাও, তাহলে তুমি (তোমার দাবীর স্বপক্ষে) আমাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ উপস্থিত কর।

قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ إِنْ نَّحْنُ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ أَنْ نَّأْتِيَكُمْ بِسُلْطَانٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللهِ ؕ وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (١١)

১১. তাদের রসূলগণ তাদেরকে বলেছিল, 'যদিও আমরা তোমাদের মতই মানুষ ব্যতীত নই, কিন্তু আল্লাহ তাঁর বান্দাহদের মধ্যে যার উপর ইচ্ছে অনুগ্রহ করেন। আল্লাহ্র হুকুম ছাড়া তোমাদের কাছে কোন প্রমাণ উপস্থিত করা আমাদের কাজ নয়। মু'মিনদের উচিত আল্লাহ্রই উপর ভরসা করা।

وَمَا لَنَآ أَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللهِ وَقَدْ هَدٰىنَا سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ع (١٢)

১২. আমরা আল্লাহ্র উপর ভরসা করব না কেন, তিনিই তো আমাদেরকে পথ দেখিয়েছেন, তোমরা আমাদেরকে যে ক্লেশই দাওনা কেন, আমরা তাতে অবশ্য অবশ্যই ধৈর্য ধারণ করব, আর ভরসাকারীদের আল্লাহ্রই উপর ভরসা করা উচিত।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ أَرْضِنَآ أَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَأَوْحٰٓى إِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۙ (١٣)

১৩. কাফিরগণ তাদের রসূলদের বলেছিল, 'আমরা তোমাদেরকে আমাদের দেশ থেকে অবশ্য অবশ্যই বের করে দেব, অন্যথায় তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই আমাদের ধর্মমতে ফিরে আসতে হবে।' এমতাবস্থায় রসূলদের প্রতি তাদের প্রতিপালক এ মর্মে ওয়াহী করলেন যে, 'আমি যালিমদেরকে অবশ্য অবশ্যই ধ্বংস করব।

وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِهِمْ ؕ ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ وَعِيْدِ (١٤)

১৪. আর তাদের পরে তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই যমীনে পুনর্বাসিত করব। এ (শুভ) সংবাদ তাদের জন্য যারা আমার সামনে এসে দাঁড়ানোর ব্যাপারে ভয় রাখে আর আমার শাস্তির ভয় দেখানোতে শংকিত হয়।'

وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ (١٥)

১৫. তারা (অর্থাৎ কাফিররা) চূড়ান্ত বিজয়ের ফায়সালা কামনা করেছিল, কিন্তু (আল্লাহ ও তাঁর রসূলদের বিরোধিতা করার কারণে) প্রত্যেক উদ্ধত সীমালঙ্ঘনকারী ব্যর্থ হয়ে গেল।

مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ صَدِيْدٍ ۙ (١٦)

১৬. এদের জন্য পরবর্তীতে আছে জাহান্নাম, আর এদেরকে পান করানো হবে গলিত পুঁজ।

يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَأْتِيْهِ الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ (١٧)

১৭. সে তা খুব কষ্ট করে গিলতে চেষ্টা করবে, আর খুব কমই গিলতে পারবে। মৃত্যু যন্ত্রণা তার কাছে চতুর্দিক থেকে আসবে কিন্তু সে মরবে না, এরপর তার জন্য থাকবে এক কঠিন 'আযাব।

مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ أَعْمَالُهُمْ كَرَمَادِ نِاشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ عَاصِفٍ ط لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى شَيْءٍ ط ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ (١٨)

১৮. যারা তাদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে তাদের ‘আমালের দৃষ্টান্ত হল সেই ছাইয়ের মত যা ঝড়ের দিনে বাতাস প্রচণ্ড বেগে উড়িয়ে নিয়ে যায়। নিজেদের উপার্জনের কিছুই তারা কাজে লাগাতে পারে না। এটাই ঘোর গুমরাহী।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ط إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ لا (١٩)

১৯. তুমি কি দেখ না যে, আল্লাহ যথাযথ নিয়ম বিধানসহ আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন, তিনি চাইলে তোমাদেরকে সরিয়ে দিবেন আর এক নতুন সৃষ্টি নিয়ে আসবেন।

وَّمَا ذٰلِكَ عَلَى اللهِ بِعَزِيْزٍ (٢٠)

২০. এটা আল্লাহর জন্য কঠিন কিছু নয়।

وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ أَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ اللهِ مِنْ شَيْءٍ ط قَالُوْا لَوْ هَدٰنَا اللهُ لَهَدَيْنٰكُمْ ط سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَجَزِعْنَآ أَمْ صَبَرْنَا مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ع (٢١)

২১. তারা সকলে আল্লাহ্র নিকট উপস্থিত হবে। তখন যারা অহঙ্কার করেছিল তাদেরকে দুর্বলরা বলবে, আমরা তো তোমাদেরই অনুসারী ছিলাম, কাজেই এখন আল্লাহ্র শাস্তির কোন কিছু আমাদের থেকে তোমরা দূর করতে পার কি?’ তারা বলবে, ‘আল্লাহ আমাদেরকে সত্যপথে পরিচালিত করলে আমরাও অবশ্যই তোমাদেরকে সত্য পথ দেখাতাম। এখন আমরা ধৈর্যহারা হই কিংবা ধৈর্যধারণ করি দু’টোই আমাদের জন্য সমান, আমাদের কোন নিস্কৃতি নেই।’

وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْأَمْرُ إِنَّ اللهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ فَأَخْلَفْتُكُمْ ط وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّآ أَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ لِيْ ج فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا أَنْفُسَكُمْ ط مَآ أَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ أَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ط إِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ أَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ط إِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٢٢)

২২. বিচার-ফায়সালা সম্পন্ন হলে শয়ত্বান বলবে, ‘আল্লাহ তোমাদের জন্য যে ওয়া'দা করেছিলেন তা ছিল সত্য ওয়া'দা। আর আমিও তোমাদেরকে ওয়া'দা দিয়েছিলাম, কিন্তু আমি তার খেলাপ করেছি, তোমাদের উপর আমার কোনই প্রভাব ছিল না, আমি কেবল তোমাদেরকে আহ্বান জানিয়েছিলাম আর তোমরা আমার আহ্বানে সাড়া দিয়েছিলে। কাজেই তোমরা আমাকে তিরস্কার করো না, বরং নিজেদেরকেই তিরস্কার কর, এখানে না আমি তোমাদের ফরিয়াদ শুনতে পারি, না তোমরা আমার ফরিয়াদ শুনতে পার। ইতোপূর্বে তোমরা যে আমাকে (আল্লাহ্র) শরীক করেছিলে আমি তা অস্বীকার করছি। যালিমদের জন্য আছে ভয়াবহ শাস্তি।’

وَأُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ (٢٣)

২৩. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে তাদেরকে জান্নাতে দাখিল করা হবে যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। সেখানে তারা তাদের প্রতিপালকের অনুমতিক্রমে চিরকাল থাকবে। সেখানে তাদেরকে শান্তির বার্তা দিয়ে সংবর্ধনা জ্ঞাপন করা হবে।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ أَصْلُهَا ثَابِتٌ وَّفَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۙ (٢٤)

২৪. তুমি কি দেখ না কীভাবে আল্লাহ দৃষ্টান্ত উপস্থাপন করেন? উৎকৃষ্ট বাক্যের তুলনা উৎকৃষ্ট গাছের ন্যায় যার মূল সুদৃঢ়ভাবে স্থাপিত আর শাখা-প্রশাখা আকাশপানে বিস্তৃত।

تُؤْتِيْ أُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍۭ بِإِذْنِ رَبِّهَا ؕ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (٢٥)

২৫. তার প্রতিপালকের হুকুমে তা সব সময় ফল দান করে। মানুষদের জন্য আল্লাহ দৃষ্টান্ত বর্ণনা করেন যাতে তারা শিক্ষা গ্রহণ করে।

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ ۨاجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْأَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ (٢٦)

২৬. মন্দ বাক্য মন্দ বৃক্ষের সঙ্গে তুলনীয়, ভূপৃষ্ঠের উপরিভাগেই যাকে মূল থেকে উপড়ে ফেলা হয়েছে, যার কোন স্থায়িত্ব নেই।

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ

২৭. যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে আল্লাহ সুপ্রতিষ্ঠিত বাণীর অবলম্বনে দুনিয়ার জীবনে ও আখেরাতে প্রতিষ্ঠিত রাখবেন আর যালিমদেরকে আল্লাহ ধ্বংস করে দেবেন। তিনি যা ইচ্ছে করেন

২৪। ইব্‌নু 'উমার (رضي الله عنهما) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর কাছে ছিলাম। তিনি বললেন, বল তো সেটা কোন্ বৃক্ষ, যা কোন মুসলিম ব্যক্তির মত, যার পাতা ঝরে না, এরূপ নয়, এরূপ নয় এবং এরূপও নয় যা সর্বদা খাদ্য প্রদান করে। ইব্‌নু 'উমার (رضي الله عنهما) বলেন, আমার মনে হল, এটা খেজুর বৃক্ষ। কিন্তু আমি দেখলাম আবূ বাক্‌র (رضي الله عنه) ও 'উমার (رضي الله عنه) কথা বলছেন না। তাই আমি এ ব্যাপারে বলা পছন্দ করিনি। শেষে যখন কেউ কিছু বললেন না, তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, সেটা খেজুর গাছ। পরে যখন আমরা উঠে গেলাম, তখন আমি 'উমার (رضي الله عنه)-কে বললাম, হে আব্বা! আল্লাহ্‌র কসম! আমার মনেও হয়েছিল, তা খেজুর বৃক্ষ। 'উমার (رضي الله عنه) বললেন, এ কথা বলতে তোমাকে কিসে বাধা দিল? বললেন, আমি আপনাদেরকে কথা বলতে দেখলাম না, তাই আমি কথা বলতে এবং আমার মত ব্যক্ত করতে অপছন্দ করি। 'উমার (رضي الله عنه) বললেন, অবশ্য যদি তুমি বলতে, তবে তা আমার নিকট এত এত থেকে অধিক প্রিয় হত। –বুখারী ৪৬৯৮ [৬১; মুসলিম ২৮১১, তিরমিযী ২৮৬৭, আহমাদ ৪৫৮৫, ৪৮৪৪; দারিমী ২৮২]

الظّٰلِمِيْنَ قف لا وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ع (٢٧)

তাই করেন।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّأَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ لا (٢٨)

২৮. তুমি কি তাদের ব্যাপারে চিন্তা কর না যারা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহের বিনিময়ে অকৃতজ্ঞতার নীতি অবলম্বন করে আর তাদের জাতিকে ধ্বংসের ঘরে নামিয়ে আনে।

جَهَنَّمَ ج يَصْلَوْنَهَا ط وَبِئْسَ الْقَرَارُ (٢٩)

২৯. (তা হল) জাহান্নাম, তাতে তারা প্রবেশ করবে, বসবাসের এ জায়গা কতই না নিকৃষ্ট!

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ط قُلْ تَمَتَّعُوْا فَإِنَّ مَصِيْرَكُمْ إِلَى النَّارِ (٣٠)

৩০. আর তারা (অন্যকে) আল্লাহ্‌র সমকক্ষ স্থির করে তাঁর পথ থেকে বিপথগামী করার উদ্দেশে। বল, 'ভোগ করে নাও, শেষ পর্যন্ত জাহান্নামেই তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে।

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ (٣١)

৩১. আমার বান্দাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে তাদেরকে বল নামায প্রতিষ্ঠা করতে আর যে জীবিকা আমি তাদেরকে দিয়েছি তাথেকে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করতে– সেদিন আসার পূর্বে যেদিন না চলবে কোন কেনা-বেচা আর না কোন বন্ধুত্ব।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ج وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهٖ ج وَسَخَّرَ لَكُمُ الْأَنْهٰرَ ج (٣٢)

৩২. তিনিই আল্লাহ যিনি আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন, তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন যা দিয়ে নানা প্রকার ফলফলাদি জন্মে তোমাদের জীবিকার জন্য। তিনি নৌযানগুলোকে তোমাদের নিয়ন্ত্রণাধীন করে দিয়েছেন, যাতে সেগুলো তাঁর নির্দেশে সমুদ্রে চলাচল করে আর তিনি নদীগুলোকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন।

২৭। বারাআ ইব্‌নু 'আযিব (ﷺ) হতে বর্ণিত। নিশ্চয়ই রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, কবরে মুসলিমকে যখন প্রশ্ন করা হবে, তখন সে সাক্ষ্য দিবেঃ "লা- ইলা-হা ইল্লাল্লাহু ওয়াআন্না মুহাম্মাদার রসূলুল্লাহ্" আল্লাহ্‌র বাণীতে এর প্রতিই ইঙ্গিত করা হয়েছে। বাণীটি হলো এইঃ "যারা শাশ্বত বাণীতে বিশ্বাসী তাদেরকে দুনিয়ার জীবনে ও আখিরাতে আল্লাহ সুপ্রতিষ্ঠিত রাখবেন।" –বুখারী ৪৬৯৯ [১৩৬৯; মুসলিম ২৮৭১, তিরমিযী ৩১২০, নাসায়ী ২০৫৬, ২০৫৭; আবূ দাউদ ৪৭৫০, ইবনু মাজাহ ৪২৬৯, আহমাদ ১৮০১৩, ১৮০৬৩]

২৮। 'আত্বা (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি ইব্‌নু 'আব্বাস (ﷺ)-কে বলতে শুনেছেন, أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا তারা হল মক্কাহ্‌র কাফিরগণ। –বুখারী ৪৭০০ [৩৯৭৭]

৩৩. তিনি সূর্য ও চন্দ্রকে তোমাদের কাজে লাগিয়ে রেখেছেন, তারা অনুগত হয়ে নিজ পথে চলছে। আর তিনি রাত ও দিনকে তোমাদের কাজে লাগিয়ে রেখেছেন।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ج وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ج (٣٣)

৩৪. তিনি তোমাদেরকে সে সব কিছুই দিয়েছেন যা তোমরা চেয়েছ (তোমরা তোমাদের প্রয়োজনীয় সব কিছুই পেয়েছ) আর তোমরা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ গণনা করতে চাইলে কক্ষনো তার সংখ্যা নির্ধারণ করতে পারবে না। মানুষ অবশ্যই বড়ই যালিম, বড়ই অকৃতজ্ঞ।

وَاٰتٰكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ط وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللهِ لَا تُحْصُوْهَا ط اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ع (٣٤)

৩৫. স্মরণ কর, ইব্‌রাহীম যখন বলেছিল, 'হে আমার রব্ব! তুমি এ নগরীকে নিরাপদ কর আর আমাকে আর আমার সন্তানদেরকে প্রতিমা পূজা থেকে রক্ষে কর।

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ط (٣٥)

৩৬. হে আমার প্রতিপালক! এ (প্রতিমা)-গুলো বহু সংখ্যক মানুষকে পথভ্রষ্ট করেছে। কাজেই (প্রতিমাগুলোকে বাদ দিয়ে) যারা আমাকে অনুসরণ করবে তারা আমার দলভুক্ত। আর যে আমার অবাধ্য হবে সেক্ষেত্রে তুমি তো বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ج فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ج وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣٦)

৩৭. হে আমাদের প্রতিপালক! আমি আমার সন্তানদের একাংশকে শস্যক্ষেতহীন উপত্যকায় তোমার সম্মানিত ঘরের নিকট পুনর্বাসিত করলাম। হে আমার প্রতিপালক! তারা যাতে নামায কায়িম করে। কাজেই তুমি মানুষের অন্তরকে তাদের প্রতি অনুরাগী করে দাও আর ফল-ফলাদি দিয়ে তাদের জীবিকার ব্যবস্থা কর যাতে তারা শুকরিয়া আদায় করে।

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ لا رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ (٣٧)

৩৮. হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি তো জান যা আমরা গোপন করি আর যা প্রকাশ করি, আসমান ও যমীনের কোন বস্তুই আল্লাহ হতে গোপন নেই।

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ط وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ (٣٨)

৩৯. যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্‌র যিনি আমার বার্ধক্য অবস্থায় আমাকে ইসমাঈল ও ইসহাককে দান করেছেন, আমার প্রতিপালক অবশ্যই আহ্বান শ্রবণকারী।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ط اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ (٣٩)

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ق صلے رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ (٤٠)

৪০. হে আমার প্রতিপালক! আমাকে নামায প্রতিষ্ঠাকারী বানাও আর আমার সন্তানদেরকেও, হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি আমার প্রার্থনা কবূল কর।

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ع (٤١)

৪১. হে আমাদের প্রতিপালক! হিসাব গ্রহণের দিন আমাকে, আমার পিতা-মাতাকে আর মু'মিনদেরকে ক্ষমা করে দিও,

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۵ ط إِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْأَبْصَارُ لا (٤٢)

৪২. যালিমরা যা করছে সে ব্যাপারে তোমরা আল্লাহ্‌কে কক্ষনো উদাসীন মনে কর না। তিনি তাদেরকে সেদিন পর্যন্ত ঢিল দিচ্ছেন যেদিন ভয়ে আতঙ্কে চক্ষু স্থির হয়ে যাবে।

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُؤُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ إِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ج وَأَفْئِدَتُهُمْ هَوَآءٌ ط (٤٣)

৪৩. আতঙ্কিত হয়ে মাথা তুলে পালাতে থাকবে, দৃষ্টি তাদের নিজেদের পানে ফিরে আসবে না, আর তাদের দিল উড়ে যাবে।

وَأَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَأْتِيْهِمُ الْعَذَابُ فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ أَخِّرْنَآ إِلٰٓى أَجَلٍ قَرِيْبٍ لا نُّجِبْ دَعْوَتَكَ وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَ ط أَوَلَمْ تَكُوْنُوْآ أَقْسَمْتُمْ مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍ لا (٤٤)

৪৪. কাজেই মানুষকে সতর্ক কর সেদিনের ব্যাপারে যেদিন তাদের উপর 'আযাব আসবে। যারা যুল্‌ম করেছিল তারা তখন বলবে, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে অল্পদিনের জন্য সময় দাও, আমরা তোমার আহ্বানে সাড়া দিব আর রসূলদের কথা মেনে চলব।' (তখন তাদেরকে বলা হবে) তোমরা কি পূর্বে শপথ করে বলনি যে, তোমাদের কক্ষনো পতন ঘটবে না?

وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْآ أَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْأَمْثَالَ (٤٥)

৪৫. অথচ তোমরা সেই লোকগুলোর বাসভূমিতে বসবাস করছিলে যারা নিজেদের প্রতি যুল্‌ম করেছিল আর তোমাদেরকে স্পষ্ট করে দেখিয়ে দেয়া হয়েছিল আমি তাদের সঙ্গে কেমন ব্যবহার করেছিলাম। আর আমি বহু উদাহরণ টেনে তোমাদেরকে বুঝিয়েও দিয়েছিলাম।

وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْ ط وَإِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ (٤٦)

৪৬. তারা যে চক্রান্ত করেছিল তা ছিল সত্যিই ভয়ানক, কিন্তু তাদের চক্রান্ত আল্লাহ্‌র দৃষ্টির ভিতরেই ছিল, যদিও তাদের চক্রান্তগুলো এমন ছিল না যে, তাতে পর্বতও টলে যেত।

فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗ ط إِنَّ

৪৭. (অবস্থা যতই প্রতিকূল হোক না কেন) তুমি

اللهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ط (٤٧)

কক্ষনো মনে কর না যে, আল্লাহ তাঁর রসূলগণকে দেয়া ওয়া'দা খেলাপ করবেন, আল্লাহ মহা প্রতাপশালী, প্রবল প্রতিশোধ গ্রহণকারী।

يَوْمَ تُبَدَّلُ الْأَرْضُ غَيْرَ الْأَرْضِ وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (٤٨)

৪৮. যেদিন এ পৃথিবী বদলে গিয়ে অন্য এক পৃথিবীতে রূপান্তরিত হবে আর আসমানসমূহও (বদলে যাবে), আর মানুষ সমুপস্থাপিত হবে এক ও অপ্রতিরোধ্য আল্লাহ্‌র সম্মুখে।

وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ ج (٤٩)

৪৯. সেদিন তুমি অপরাধীদেরকে দেখবে শৃঙ্খলে তাদের হাত পা শক্ত করে বাঁধা।

سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُ لا (٥٠)

৫০. তাদের পোশাক হবে আলকাতরার আর আগুন তাদের মুখমণ্ডল আচ্ছন্ন করবে।

لِيَجْزِيَ اللهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ ط إِنَّ اللهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (٥١)

৫১. (এটা করা হবে এজন্য) যাতে আল্লাহ প্রত্যেক ব্যক্তিকে তার কৃতকর্মের প্রতিফল দিতে পারেন। আল্লাহ তো হিসাব গ্রহণে খুবই দ্রুতগতি।

هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا أَنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ ع (٥٢)

৫২. এটা মানুষদের জন্য একটা বার্তা যার দ্বারা তাদেরকে সতর্ক করা হচ্ছে আর যাতে তারা জানতে পারে যে, তিনি এক ইলাহ আর যাতে বুদ্ধিমান মানুষেরা উপদেশ লাভ করে।

১৫. সূরাহ আল-হিজ্‌র

سُوْرَةُ الْحِجْرِ

আয়াতঃ ৯৯, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

الٓرٰ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ (١)

১. আলিফ-লাম-র, এগুলো কিতাবের এবং সুস্পষ্ট কুরআনে আয়াতসমূহ।

رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا مُسْلِمِيْنَ (٢)

২. এমন একটা সময় আসবে যখন কাফিরগণ আক্ষেপ করে বলবে, 'হায়, আমরা যদি মুসলিম হয়ে যেতাম!'

ذَرْهُمْ يَأْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ الْأَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (٣)

৩. ছেড়ে দাও ওদেরকে, ওরা খেতে থাক আর ভোগ করতে থাক, আর (মিথ্যে) আশা ওদেরকে উদাসীনতায় ডুবিয়ে রাখুক, শীঘ্রই ওরা (ওদের 'আমালের পরিণতি) জানতে পারবে।

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا وَلَهَا كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ (٤)

৪. আমি যে জনপদকেই ধ্বংস করেছি তাদের জন্য ছিল লিখিত একটা নির্দিষ্ট সময়।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُوْنَ (٥)

৫. কোন জাতিই তাদের নির্দিষ্ট কালকে অগ্র-পশ্চাৎ করতে পারে না।

وَقَالُوْا يَآأَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ إِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ط (٦)

৬. তারা বলে, 'ওহে ঐ ব্যক্তি যার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ হয়েছে! তুমি তো অবশ্যই পাগল।

لَوْ مَا تَأْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٧)

৭. তুমি সত্যবাদী হলে আমাদের নিকট ফেরেশতাদের হাজির করছ না কেন?'

مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ إِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا كَانُوْآ إِذًا مُّنْظَرِيْنَ (٨)

৮. যথাযথ কারণ ছাড়া আমি ফেরেশতা পাঠাই না, পাঠালে কাফিরদেরকে আর কোন অবকাশ দেয়া হবে না।

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَإِنَّا لَهُ لَحٰفِظُوْنَ (٩)

৯. নিশ্চয় আমিই কুরআন নাযিল করেছি আর অবশ্যই আমি তার সংরক্ষক।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ الْأَوَّلِيْنَ (١٠)

১০. তোমার পূর্ববর্তী জাতিগুলোর কাছেও আমি রসূল পাঠিয়েছিলাম।

وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِئُوْنَ (١١)

১১. তাদের কাছে এমন কোন রসূল আসেনি যাকে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেনি।

كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ لا (١٢)

১২. এভাবে আমি এ রকম আচরণ পাপীদের অন্তরে বদ্ধমূল করে দেই।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ الْأَوَّلِيْنَ (١٣)

১৩. তারা এর প্রতি ঈমান আনবে না, পূর্ববর্তী লোকেদেরও এ নিয়ম-নীতি চলে এসেছে।

وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۙ (١٤)

১৪. যদি তাদের জন্য আকাশের দরজা খুলে দেয়া হত, আর তারা তাতে উঠতে থাকত,

لَقَالُوْٓا إِنَّمَا سُكِّرَتْ أَبْصَارُنَا بَلْ نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ع (١٥)

১৫. তারা অবশ্যই বলত, 'আমাদের চোখকে বাঁধিয়ে দেয়া হয়েছে, বরং আমাদের উপর যাদু করা হয়েছে।'

وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۙ (١٦)

১৬. আমি আকাশে গ্রহ-নক্ষত্র সৃষ্টি করেছি আর দর্শকদের জন্য তা সুসজ্জিত করে দিয়েছি।

وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۙ (١٧)

১৭. আর প্রত্যেক অভিশপ্ত শয়ত্বান থেকে সেগুলোকে সুরক্ষিত করে দিয়েছি।

إِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَأَتْبَعَهٗ شِهَابٌ مُّبِيْنٌ (١٨)

১৮. কিন্তু কেউ চুরি করে (খবর) শুনতে চাইলে উজ্জ্বল অগ্নিশিখা তার পশ্চাদ্ধাবণ করে।

وَالْأَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَأَنْـبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ مَّوْزُوْنٍ (١٩)

১৯. আর পৃথিবী, আমি সেটাকে বিছিয়ে দিয়েছি আর তাতে পর্বতরাজি সংস্থাপিত করেছি আর তাতে সকল বস্তু উদ্গত করেছি যথাযথ পরিমাণে।

وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ (٢٠)

২০. আর তাতে তোমাদের জীবন ধারণের ব্যবস্থা করেছি আর তাদেরও যাদের রিয্‌কদাতা তোমরা নও।

১৮। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেন যে, তিনি বলেছেন, যখন আল্লাহ্ তা'আলা আকাশে কোন বিষয়ের সিদ্ধান্ত নেন, তখন মালায়িকাহ (ফেরেশতাগণ) তাঁর কথা শোনার জন্য অতি বিনয়ের সঙ্গে নিজ নিজ পালক ঝাড়তে থাকে মসৃণ পাথরের উপর জিঞ্জিরের শব্দের মত। 'আলী (رضي الله عنه) বলেন, صَـفْوَانٍ এর মধ্যে فَـا সাকিন যুক্ত এবং অন্যরা বলেন, فَـا ফাতাহ্ যুক্ত। এভাবে আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর বাণী মালায়িকাহ্কে পৌঁছান। "যখন মালায়িকাহ্র অন্তর থেকে ভয় দূর হয়, তখন তারা একে অপরকে জিজ্ঞেস করে, তোমাদের প্রভু কী বলেছেন? তখন তারা বলে, যা সত্য তিনি তাই বলেছেন, এবং তিনি অতি উচ্চ মহান।" চুরি করে কান লাগিয়ে (শয়ত্বানরা) তা শুনে নেয়। শোনার জন্য শয়ত্বানগুলো একের ওপর এক এভাবে থাকে। সুফ্ইয়ান ডান হাতের আঙ্গুলের ওপর অন্য আঙ্গুল রেখে হাতের ইশারায় ব্যাপারটি প্রকাশ করলেন। তারপর কখনও অগ্নি স্ফুলিঙ্গ শ্রবণকারীকে তার সাথীর কাছে এ কথাটি পৌঁছানোর আগেই আঘাত করে এবং তাকে জ্বালিয়ে দেয়। আবার কখনও সে ফুলকি প্রথম শ্রবণকারী শয়ত্বান পর্যন্ত পৌঁছার পূর্বেই সে তার নিচের সাথীকে খবরটি জানিয়ে দেয়। এমনি করে এ কথা পৃথিবী পর্যন্ত পৌঁছিয়ে দেয়। কখনও সুফ্ইয়ান বলেছেন, এমনি করে পৃথিবী পর্যন্ত পৌঁছে যায়। তারপর তা জাদুকরের মুখে ঢেলে দেয়া হয় এবং সে তার সঙ্গে শত মিথ্যা মিশিয়ে প্রচার করে। তাই তার কথা সত্য হয়ে যায়। তখন লোকেরা বলতে থাকে, এ জাদুকর আমাদের কাছে অমুক অমুক দিন অমুক অমুক কথা বলেছিল। বস্তুত আসমান থেকে শুনে নেয়ার কারণেই আমরা তা সত্যরূপে পেয়েছি। –বুখারী ৪৭০১ [তিরমিযী ৩২২৩, আবূ দাউদ ৩৯৮৯, ইবনু মাজাহ ১৯৪]

وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ ز وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ إِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ (٢١)

২১. এমন কোন জিনিসই নেই যার ভাণ্ডার আমার কাছে নেই, কিন্তু আমি সেগুলো আমার জ্ঞান মোতাবেক নির্দিষ্ট পরিমাণে সরবরাহ করে থাকি।

وَأَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ج وَمَآ أَنْتُمْ لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ (٢٢)

২২. আমি বৃষ্টি-সঞ্চারী বাতাস প্রেরণ করি, অতঃপর আসমান থেকে পানি বর্ষণ করি আর তা তোমাদের পান করাই, তোমরা তার স্টোর কীপার নও।

وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ (٢٣)

২৩. আমিই জীবন দেই আর মৃত্যু ঘটাই আর আমিই চূড়ান্ত উত্তরাধিকারী।

وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَأْخِرِيْنَ (٢٤)

২৪. তোমাদের মধ্যেকার যারা পূর্বে গত হয়ে গেছে আমি তাদেরকে জানি আর পরে যারা আসবে তাদেরকেও জানি।

وَإِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ط إِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ع (٢٥)

২৫. অবশ্যই তোমার প্রতিপালক তিনি সব্বাইকে একত্রিত করবেন, তিনি মহাবিজ্ঞানী, সর্বজ্ঞ।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ ج (٢٦)

২৬. আমি কাল শুষ্ক ঠনঠনে মাটির গাড়া থেকে মানুষকে সৃষ্টি করেছি।

وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ السَّمُوْمِ (٢٧)

২৭. এর পূর্বে আমি জ্বীনকে আগুনের লেলিহান আগুন থেকে সৃষ্টি করেছি।

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُوْنٍ (٢٨)

২৮. স্মরণ কর যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদেরকে বলেছিলেন, 'আমি কাল শুষ্ক ঠনঠনে মাটির কাদা থেকে মানুষ সৃষ্টি করছি।

فَإِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ (٢٩)

২৯. আমি যখন তাকে পূর্ণ মাত্রায় বানিয়ে দেব আর তাতে আমার পক্ষ হতে রূহ ফুঁকে দেব, তখন তোমরা তার প্রতি সাজদায় পড়ে যেও।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ لا (٣٠)

৩০. তখন ফেরেশতারা সবাই সাজদাহ করল।

إِلَّآ إِبْلِيْسَ ط أَبٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ مَعَ السّٰجِدِيْنَ (٣١)

৩১. ইবলীস বাদে, সে সাজদাহ্কারীদের দলভুক্ত হতে অস্বীকৃতি জানাল।

قَالَ يَٰٓإِبۡلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ السّٰجِدِيۡنَ (٣٢)

৩২. আল্লাহ বলবেন, 'হে ইবলীস! তোমার কী হল যে তুমি সাজদাহ্‌কারীদের দলভুক্ত হলে না?'

قَالَ لَمۡ أَكُنۡ لِّأَسۡجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقۡتَهٗ مِنۡ صَلۡصَٰلٍ مِّنۡ حَمَإٍ مَّسۡنُوۡنٍ (٣٣)

৩৩. ইবলীস বলল, 'আমার কাজ নয় মানুষকে সাজদাহ্ করা যাকে তুমি পচা কর্দমের ঠনঠনে গাড়া থেকে সৃষ্টি করেছ।'

قَالَ فَاخۡرُجۡ مِنۡهَا فَإِنَّكَ رَجِيۡمٌ ۙ (٣٤)

৩৪. তিনি বললেন, 'বেরিয়ে যাও এখান থেকে, কারণ তুমি হলে অভিশপ্ত।

وَّإِنَّ عَلَيۡكَ اللَّعۡنَةَ إِلٰى يَوۡمِ الدِّيۡنِ (٣٥)

৩৫. বিচার দিবস পর্যন্ত তোমার উপর থাকল লা'নত।'

قَالَ رَبِّ فَأَنۡظِرۡنِيۡٓ إِلٰى يَوۡمِ يُبۡعَثُوۡنَ (٣٦)

৩৬. সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত আমাকে সময় দিন।'

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الۡمُنۡظَرِيۡنَ ۙ (٣٧)

৩৭. তিনি বললেন, 'তোমাকে সময় দেয়া হল

إِلٰى يَوۡمِ الۡوَقۡتِ الۡمَعۡلُوۡمِ (٣٨)

৩৮. সেদিন পর্যন্ত যার নির্দিষ্ট ক্ষণ আমার জানা আছে।'

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغۡوَيۡتَنِيۡ لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمۡ فِي الۡأَرۡضِ وَلَأُغۡوِيَنَّهُمۡ أَجۡمَعِيۡنَ ۙ (٣٩)

৩৯. সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! যেহেতু আপনি আমাকে ভ্রান্তপথে ঠেলে দিলেন, কাজেই আমিও পৃথিবীতে মানুষের কাছে পাপকাজকে অবশ্য অবশ্যই সুশোভিত করে দেখাব আর তাদের সবাইকে অবশ্য অবশ্যই বিভ্রান্ত করব।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنۡهُمُ الۡمُخۡلَصِيۡنَ (٤٠)

৪০. কিন্তু তাদের মধ্যে আপনার বাছাই করা বান্দাহ্‌দের ছাড়া।'

قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسۡتَقِيۡمٌ (٤١)

৪১. তিনি বললেন– (আমার বাছাই করা বান্দারা যে পথে চলছে) এটাই আমার কাছে পৌঁছার সরল সোজা পথ।

إِنَّ عِبَادِيۡ لَيۡسَ لَكَ عَلَيۡهِمۡ سُلۡطٰنٌ إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الۡغٰوِيۡنَ (٤٢)

৪২. আমার প্রকৃত বান্দাহ্‌দের উপর তোমার কোন আধিপত্য চলবে না, তোমাকে যারা অনুসরণ করে সেই বিভ্রান্তরা ছাড়া।

وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوۡعِدُهُمۡ أَجۡمَعِيۡنَ ۙ (٤٣)

৪৩. আর তাদের সবার জন্য অবশ্যই ওয়া'দাকৃত স্থান হচ্ছে জাহান্নাম।

لَهَا سَبۡعَةُ أَبۡوَابٍ ؕ لِكُلِّ بَابٍ مِّنۡهُمۡ جُزۡءٌ مَّقۡسُوۡمٌ ع (٤٤)

৪৪. তার সাতটা দরজা আছে। প্রত্যেক দরজার জন্য তাদের মধ্যে শ্রেণী নির্দিষ্ট আছে।'

৪৫. অবশ্যই মুত্তাকীরা থাকবে জান্নাতে আর নির্ঝরিণীগুলোর মধ্যে।

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ (٤٥)

৪৬. তাদেরকে বলা হবে, 'পূর্ণ শান্তি ও নিরাপত্তার সাথে তোমরা এতে প্রবেশ কর।'

أُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ (٤٦)

৪৭. তাদের অন্তর থেকে আমি বিদ্বেষ দূরীভূত করব, তারা ভ্রাতৃবন্ধনে আবদ্ধ হয়ে আসনে মুখোমুখী সমাসীন হবে।

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ إِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ (٤٧)

৪৮. কোন ক্লান্তি তাদেরকে স্পর্শ করবে না, আর সেখান থেকে তারা কখনও বহিষ্কৃতও হবে না।

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ (٤٨)

৪৯. আমার বান্দাহ্দেরকে সংবাদ দাও যে, আমি বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ أَنِّيْٓ أَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۙ (٤٩)

৫০. আর আমার শাস্তি– তা বড়ই ভয়াবহ শাস্তি।

وَأَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْأَلِيْمُ (٥٠)

৫১. তাদেরকে ইব্রাহীমের মেহমানের কাহিনী জানিয়ে দাও।

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ إِبْرٰهِيْمَ ۘ (٥١)

৫২. তারা যখন তার কাছে উপস্থিত হল তখন তারা বলল, 'তোমার প্রতি সালাম।' তখন সে বলল, 'তোমাদের দেখে আমরা শংকিত।'

إِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ط قَالَ إِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ (٥٢)

৫৩. তারা বলল, 'শংকা করো না, আমরা তোমাকে এক জ্ঞানী পুত্রের সুখবর দিচ্ছি।'

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ (٥٣)

৫৪. সে বলল, 'বার্ধক্য যখন আমাকে স্পর্শ করেছে তখন তোমরা আমাকে সুখবর দিচ্ছ। আচ্ছা, তোমাদের সুখবরটা কী?'

قَالَ أَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓى أَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ (٥٤)

৫৫. তারা বলল, 'তোমাকে আমরা প্রকৃতই সুসংবাদ দিচ্ছি। কাজেই তুমি নিরাশদের অন্ত র্ভুক্ত হয়ো না।'

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ (٥٥)

৫৬. সে বলল, 'পথভ্রষ্টরা ছাড়া আর কে তার প্রতিপালকের রহমাত থেকে নিরাশ হয়?'

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ إِلَّا الضَّآلُّوْنَ (٥٦)

৫৭. সে বলল, 'হে আল্লাহ্র প্রেরিতরা! তোমরা কোন্ কাজে আগমন করেছ?'

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ (٥٧)

৫৮. তারা বলল, 'আমরা এক অপরাধী জাতির বিরুদ্ধে প্রেরিত হয়েছি।

قَالُوْٓا إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۙ (٥٨)

إِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ؕ إِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۙ (٥٩)

৫৯. তবে লূতের পরিবার বাদে, তাদের সবাইকে আমরা অবশ্যই রক্ষা করব।

إِلَّا امْرَأَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ إِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ع (٦٠)

৬০. তবে তার স্ত্রীকে নয়, আমরা (আল্লাহর নির্দেশক্রমে) তার জন্য নির্ধারিত করে দিয়েছি যে, সে পেছনে থেকে যাওয়া লোকেদের মধ্যে শামিল থাকবে।'

فَلَمَّا جَآءَ اٰلَ لُوْطِ ۨالْمُرْسَلُوْنَ ۙ (٦١)

৬১. আল্লাহ্‌র প্রেরিতরা যখন লূত পরিবারের নিকট আসল,

قَالَ إِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ (٦٢)

৬২. সে বলল, 'আপনাদেরকে তো অপরিচিত লোক মনে হচ্ছে।'

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ (٦٣)

৬৩. তারা বলল, 'আমরা তা-ই নিয়ে এসেছি যে ব্যাপারে এ লোকেরা সন্দেহে পতিত ছিল।

وَأَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ (٦٤)

৬৪. তোমার কাছে আমরা সত্য নিয়েই এসেছি, আর আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।

فَأَسْرِ بِأَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ اللَّيْلِ وَاتَّبِعْ أَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ أَحَدٌ وَّامْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ (٦٥)

৬৫. কাজেই কিছুটা রাত থাকতে তুমি তোমার পরিবারবর্গকে নিয়ে বেরিয়ে পড় আর তুমি তাদের পেছনে পেছনে চলতে থাক। তোমাদের কেউ যেন পেছনে ফিরে না তাকায় বরং যেখানে যেতে বলা হচ্ছে চলে যাও।'

وَقَضَيْنَآ إِلَيْهِ ذٰلِكَ الْأَمْرَ أَنَّ دَابِرَ هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ (٦٦)

৬৬. আমি লূতকে এ সিদ্ধান্ত জানিয়ে দিলাম যে, সকাল হতে না হতেই সমূলে ধ্বংস করা হবে।

وَجَآءَ أَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ (٦٧)

৬৭. শহরের লোকেরা আনন্দ সহকারে (লূতের ঘরে) উপস্থিত হল।

قَالَ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۙ (٦٨)

৬৮. লূত বলল, 'এরা আমার মেহমান, কাজেই তোমরা আমাকে লাঞ্ছিত করো না।

وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ (٦٩)

৬৯. তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর, আমাকে লজ্জিত করো না।'

قَالُوْٓا أَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (٧٠)

৭০. তারা বলল, দুনিয়াব্যাপী বিষয় নিয়ে কথা বলতে আমরা কি তোমাকে নিষেধ করিনি?'

قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ إِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ؕ (٧١)

৭১. (লূত ﷺ) বলল, 'তোমরা যদি কিছু করতেই চাও তাহলে এই আমার (জাতির) কন্যারা আছে।'

لَعَمْرُكَ إِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (٧٢)

৭২. তোমার জীবনের শপথ হে নাবী! তারা উন্মত্ত নেশায় আত্মহারা হয়ে পড়েছিল।

---

*আল্লাহ একমাত্র মুহাম্মদ (ﷺ) এর এর জীবনের কসম করেছেন, এছাড়া অন্য কারো জীবনের কসম করেন নাই,

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۙ (٧٣)

৭৩. সূর্যোদয়ের সময়ে এক প্রচণ্ড ধ্বনি তাদের উপর আঘাত হানল।

فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ؕ (٧٤)

৭৪. আর আমি সে জনপদকে উল্টে (উপর-নীচ) করে দিলাম আর তাদের উপর পাকানো মাটির প্রস্তর বর্ষণ করলাম।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ (٧٥)

৭৫. এতে অবশ্যই অন্তর্দৃষ্টিসম্পন্ন লোকেদের জন্য অনেক নিদর্শন রয়েছে।

وَإِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ (٧٦)

৭৬. এটি মানুষের চলাচল পথের পাশেই বিদ্যমান।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ؕ (٧٧)

৭৭. মু'মিনদের জন্য এতে বড়ই নিদর্শন রয়েছে।

وَإِنْ كَانَ أَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۙ (٧٨)

৭৮. আর আয়কাহ্‌বাসীরাও অবশ্যই যালিম ছিল।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَإِنَّهُمَا لَبِإِمَامٍ مُّبِيْنٍ ؕ ع (٧٩)

৭৯. কাজেই তাদের উপর প্রতিশোধ নিয়েছিলাম, এ দু'টো জনপদই প্রকাশ্য পথের উপর অবস্থিত।

وَلَقَدْ كَذَّبَ أَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ (٨٠)

৮০. হিজর-এর লোকেরাও রসূলদেরকে অমান্য করেছিল।

وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۙ (٨١)

৮১. আমি তাদেরকে আমার নিদর্শনাবলী দিয়েছিলাম কিন্তু তাথেকে তারা মুখ ফিরিয়েই রেখেছিল।

وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ (٨٢)

৮২. তারা পাহাড় খোদাই করতঃ ঘর তৈরি ক'রে নিজেদেরকে নিরাপদ ভাবত।

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۙ (٨٣)

৮৩. অতঃপর এক সকালে প্রচণ্ড ধ্বনি তাদের উপর আঘাত হানল।

فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ؕ (٨٤)

৮৪. তাদের উপার্জন তাদের কোন কাজে আসল না।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ ؕ وَإِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ

৮৫. আমি আসমানসমূহ, যমীন আর এ দু'য়ের মাঝে যা কিছু আছে প্রকৃত উদ্দেশ্য ছাড়া সৃষ্টি করিনি। ক্বিয়ামাত অবশ্যই আসবে, কাজেই উত্তম

এত আল্লাহর নিকট তাঁর বিশেষ মর্যাদার কথা প্রমাণিত হয়। আর আল্লাহ স্রষ্টা হিসেবে যে কোন বিষয়ে কসম করতে পারেন, কিন্তু সৃষ্টিকে কসম করতে হলে একমাত্র আল্লাহর নামেই করতে হবে। (তাফসীর ফাতহুল কাদীর সংক্ষেপিত খ: ৩ পৃ ১৭১-১৭২)

৮০। 'আবদুল্লাহ্‌ ইব্‌নু 'উমার (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। নিশ্চয়ই রসূলুল্লাহ (ﷺ) হিজরবাসীগণ সম্পর্কে সহাবায়ে কিরামদের বললেন, তোমরা ক্রন্দনরত অবস্থা ব্যতিরেকে এ জাতির এলাকায় প্রবেশ করবে না। যদি তোমাদের ক্রন্দন না আসে, তবে তোমরা তাদের এলাকায় প্রবেশই করবে না। হয়ত, তাদের ওপর যা ঘটেছিল তা তোমাদের ওপরও ঘটতে পারে। –বুখারী ৪৭০২ [৪৩৩; মুসলিম ২৯৮০, আহমাদ ৪৫৪৭, ৪২০৩]

فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ (٨٥)

পন্থায় (তাদেরকে) এড়িয়ে যাও।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيْمُ (٨٦)

৮৬. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক তিনি সর্বস্রষ্টা, সর্বজ্ঞ।

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ (٨٧)

৮৭. আমি তোমাকে দিয়েছি পুনঃ পুনঃ আবৃত্ত সপ্ত আয়াত আর মহা কুরআন।

لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ (٨٨)

৮৮. তুমি দুনিয়ার দ্রব্য সামগ্রীর প্রতি চোখ তুলে তাকিও না যা আমি তাদের বিভিন্ন লোকেদের দিয়েছি। (তারা ভুল চিন্তা ও ভুল কর্মের মাধ্যমে নিজেদের ভয়াবহ পরিণাম ডেকে আনছে, এমতাবস্থায়) তাদের জন্য তুমি দুঃখ করো না, আর মু'মিনদের জন্য তোমার (অনুকম্পার) ডানা মেলে দাও।

وَقُلْ إِنِّيْٓ أَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ ج (٨٩)

৮৯. আর বলে দাও, 'আমি তো স্পষ্ট ভাষায় সতর্ককারী মাত্র।'

كَمَآ أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ لا (٩٠)

৯০. যে ধরনের সতর্কীকরণ পাঠানো হয়েছিল (আল্লাহ্‌র কিতাবকে) বিভক্তকারী (ইয়াহূদী ও খ্রীস্টান)দের উপর।

الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ (٩١)

৯১. যারা কুরআনকে (নিজেদের খেয়াল খুশিমত) ভাগ ভাগ করে ফেলেছে (যেটা ইচ্ছে মানছে, যেটা ইচ্ছে অমান্য করছে)।

فَوَرَبِّكَ لَنَسْأَلَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ لا (٩٢)

৯২. অতএব শপথ তোমার রব্বের! তাদের সব্বাইকে অবশ্য অবশ্যই আমি জিজ্ঞেস করব

عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٩٣)

৯৩. তারা যা করছে সে সম্পর্কে।

৮৭। আবূ সা'ঈদ ইব্‌নু মু'আল্লাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমার পার্শ্ব দিয়ে গেলেন, তখন আমি নামায আদায় করছিলাম। তিনি আমাকে ডাক দিলেন। আমি নামায শেষ না করে আসিনি। তারপর আমি বললাম। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমাকে বললেন, আমার কাছে আসতে তোমাকে কিসে বাধা দিয়েছিল। আমি বললাম, আমি নামায আদায় করছিলাম। তিনি বললেন, আল্লাহ্ তা'আলা কি এ কথা বলেননি, "হে ঈমানদারগণ! আল্লাহ্ এবং রাসূলের ডাকে সাড়া দাও?" তারপর তিনি বললেন, আমি মাসজিদ থেকে বের হয়ে যাওয়ার আগেই কি তোমাকে কুরআনের সর্বশ্রেষ্ঠ সূরাটি শিখিয়ে দেব না। তারপর রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) যখন মাসজিদ থেকে বের হতে উদ্যত হলেন, আমি তাকে কথাটি মনে করিয়ে দিলাম। তিনি বললেন, সে সূরাটি হল, "আল্ হামদুলিল্লাহি রাব্বিল আলামীন।" এটি হল, বারবার পঠিত সাতটি আয়াত এবং মহা কুরআন যা আমাকে দেয়া হয়েছে। -বুখারী ৪৭০৩ [৪৪৭৪; নাসায়ী ৯১৩, আবূ দাউদ ১৪৫৮, ইবনু মাজাহ ৩৭৮৫, আহমাদ ১৫৩০৩, ১৭৩৯৫; দারিমী ১৪৯২, ৩৩৭১]

৯০। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) كَمَآ أَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ -এর ব্যাখ্যায় বলেন, তারা কিছু অংশের উপর ঈমান আনে আর কিছু অংশ অস্বীকার করে। এরা হল ইয়াহূদী ও নাসারা। -বুখারী ৪৭০৬ [৩৯৪৫]

فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ (٩٤)

৯৪. কাজেই তোমাকে যে বিষয়ের হুকুম দেয়া হয়েছে তা জোরে শোরে প্রকাশ্যে প্রচার কর, আর মুশরিকদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নাও।

إِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِئِيْنَ ۙ (٩٥)

৯৫. (সেই) ঠাট্টা-বিদ্রূপকারীদের বিরুদ্ধে তোমার জন্য আমিই যথেষ্ট।

الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللهِ إِلٰهًا اٰخَرَ ج فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (٩٦)

৯৬. যারা আল্লাহ্‌র সাথে অন্যকেও ইলাহ বানিয়ে নিয়েছে, (কাজেই শির্কের পরিণতি কী) শীঘ্রই তারা জানতে পারবে।

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ بِمَا يَقُوْلُوْنَ ۙ (٩٧)

৯৭. আমি জানি, তারা যে সব কথা-বার্তা বলে তাতে তোমার মন সংকুচিত হয়।

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۙ (٩٨)

৯৮. কাজেই প্রশংসা সহকারে তুমি তোমার প্রতিপালকের পবিত্রতা ঘোষণা কর, আর সাজদাহ্‌কারীদের দলভুক্ত হও।

وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَأْتِيَكَ الْيَقِيْنُ ع (٩٩)

৯৯. আর তোমার রব্বের 'ইবাদাত করতে থাক তোমার সুনিশ্চিত ক্ষণের (অর্থাৎ মৃত্যুর) আগমন পর্যন্ত।

১৬. সূরাহ আন্‌-নাহ্‌ল

سُوْرَةُ النَّحْلِ

আয়াতঃ ১২৮, রুকূ'ঃ ১৬, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

أَتٰى أَمْرُ اللهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ط سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (١)

১. আল্লাহ্‌র নির্দেশ এসে গেছে, অতএব এর জন্য তাড়াহুড়ো করো না। তিনি মহান পবিত্র, তারা যাকে শরীক সাব্যস্ত করে তাথেকে তিনি বহু ঊর্ধ্বে।

يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ أَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖٓ أَنْ أَنْذِرُوْٓا أَنَّهٗ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ

২. তিনি তাঁর এ রূহকে (ওহীকে) যে বান্দাহ্‌র উপর চান স্বীয় নির্দেশক্রমে ফেরেশতাদের মাধ্যমে অবতীর্ণ করেন (এই মর্মে যে) তোমরা সতর্ক কর যে, আমি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই,

---

৯১। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। "যারা কুরআনকে ভাগ করে ফেলেছে।" এরা হল আহ্‌লে কিতাব (ইয়াহূদী-নাসারা)। তারা কুরআনকে বিভিন্ন অংশে ভাগ করে ফেলেছে। তারা কোন অংশের ওপর বিশ্বাস এনেছে এবং কোন অংশকে অস্বীকার করেছে। –বুখারী ৪৭০৫ [৩৯৪৫]

أَنَا فَاتَّقُوْنِ (٢)

কাজেই আমাকে ভয় কর।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ط تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٣)

৩. তিনি (বিশেষ উদ্দেশ্য সাধনের নিমিত্তে) প্রকৃতভাবেই আসমানসমূহ যমীন সৃষ্টি করেছেন, তারা যাকে আল্লাহ্‌র অংশীদার গণ্য করে তাথেকে তিনি বহু উর্ধ্বে।

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ (٤)

৪. তিনি শুক্র-কীট থেকে মানুষ সৃষ্টি করেছেন অথচ সে প্রকাশ্য ঝগড়াটে সেজে বসল।

وَالْأَنْعَامَ خَلَقَهَا لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ (٥)

৫. তিনি চতুস্পদ জন্তু সৃষ্টি করেছেন এবং তাতে তোমাদের জন্য আছে (শীত) নিবারক আর বহু উপকারিতাও, আর সেগুলো থেকে তোমরা আহার কর।

وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ص (٦)

৬. তোমরা গর্বভরে সৌন্দর্য অনুভব কর যখন তোমরা সন্ধ্যাবেলা সেগুলোকে বাড়ীর পানে হাঁকিয়ে আন আর সকাল বেলা বিচরণের জন্য পাঠাও।

وَتَحْمِلُ أَثْقَالَكُمْ إِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا بٰلِغِيْهِ إِلَّا بِشِقِّ الْأَنْفُسِ ط إِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ لا (٧)

৭. আর এগুলো তোমাদের ভার বোঝা বহন ক'রে এমন স্থান পর্যন্ত নিয়ে যায়, প্রাণান্তকর ক্লেশ ছাড়া যেখানে তোমরা পৌঁছতে পারতে না, তোমাদের প্রতিপালক অবশ্যই বড়ই দয়ার্দ্র, বড়ই দয়ালু।

وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا وَزِيْنَةً ط وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٨)

৮. তিনি ঘোড়া, খচ্চর ও গর্দভ সৃষ্টি করেছেন যাতে তোমরা ওগুলোতে আরোহণ করতে পার আর শোভা-সৌন্দর্যের জন্যও; তিনি পয়দা করেন অনেক কিছু যা তোমাদের জানা নেই।

وَعَلَى اللهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ط وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ أَجْمَعِيْنَ ع (٩)

৯. আল্লাহ্‌রই দায়িত্বে রয়েছে সরল পথপ্রদর্শন। পথগুলোর মধ্যে বাঁকা পথও আছে। তিনি যদি ইচ্ছে করতেন তাহলে অবশ্যই তোমাদের সকলকেই সঠিক পথ প্রদর্শন করতেন।

هُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ (١٠)

১০. তিনি আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন যাতে আছে তোমাদের জন্য পানীয় আর তাতে জন্মে বৃক্ষ লতা যা তোমাদের পশুগুলোকে খাওয়াও।

يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ وَالنَّخِيْلَ وَالْأَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (١١)

১১. তিনি তা দিয়ে তোমাদের জন্য জন্মান শস্য, যায়তূন, খেজুর, আঙ্গুর এবং সর্বপ্রকার ফল। এতে চিন্তাশীল মানুষদের জন্য নিদর্শন রয়েছে।

وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِأَمْرِهٖ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۙ (١٢)

১২. তিনিই রাত ও দিনকে তোমাদের উপকারে নিয়োজিত করেছেন। আর সুরুজ ও চাঁদকেও; এবং তারকারাজিও তাঁরই নির্দেশে নিয়ন্ত্রিত; বিবেকসম্পন্ন লোকেদের জন্য এতে অবশ্যই বহু নিদর্শন রয়েছে।

وَمَا ذَرَأَ لَكُمْ فِي الْأَرْضِ مُخْتَلِفًا أَلْوَانُهٗ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ (١٣)

১৩. আর তিনি তোমাদের জন্য যমীনে বিভিন্ন রং-এর বস্তুরাজি সৃষ্টি করেছেন। এতে ঐ সমস্ত লোকেদের জন্য নিশ্চিতভাবে নিদর্শন আছে যারা উপদেশ গ্রহণ করতে চায়।

وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَأْكُلُوْا مِنْهُ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (١٤)

১৪. তিনিই সমুদ্রকে কল্যাণে নিয়োজিত রেখেছেন যাতে তোমরা তাথেকে তাজা গোশত খেতে পার, আর তাথেকে তোমরা রত্নরাজি সংগ্রহ করতে পার যা তোমরা অলংকার হিসেবে পরিধান কর। আর নৌযানগুলোকে তোমরা দেখতে পাও ঢেউয়ের বুক চিরে তাতে চলাচল করে, যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ তালাশ করতে পার আর শোকর আদায় করতে পার।

وَأَلْقٰى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَأَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۙ (١٥)

১৫. তিনি যমীনে সুদৃঢ় পর্বত সংস্থাপিত করেছেন যাতে যমীন তোমাদেরকে নিয়ে আন্দোলিত না হয়, আর সংস্থাপিত করেছেন নদী নির্ঝরিণী আর পথ যাতে তোমরা পথের সন্ধান পেতে পার।

وَعَلٰمٰتٍ ؕ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ (١٦)

১৬. আর দিক-দিশা প্রদানকারী চিহ্নসমূহ; আর তারকারাজির সাহায্যেও তারা পথনির্দেশ লাভ করে।

أَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ؕ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (١٧)

১৭. যিনি সৃষ্টি করেন তিনি কি তার মত যে সৃষ্টি করে না? তবে কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না?

وَإِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللهِ لَا تُحْصُوْهَا ؕ إِنَّ اللهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٨)

১৮. তোমরা আল্লাহ্‌র নি'মাতসমূহকে গণনা করলে তার সংখ্যা নির্ণয় করতে পারবে না; আল্লাহ অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ (١٩)

১৯. আল্লাহ জানেন তোমরা যা গোপন কর আর যা তোমরা প্রকাশ কর।

وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ ؕ (٢٠)

২০. তারা আল্লাহ ছাড়া অন্য যাদেরকে ডাকে তারা কিছুই সৃষ্টি করে না, তারা (নিজেরাই) সৃষ্ট।

أَمْوَاتٌ غَيْرُ أَحْيَآءٍ ج ط وَمَا يَشْعُرُوْنَ لا أَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ ع (٢١)

২১. তারা প্রাণহীন, জীবিত নয়, তাদের কোনই চেতনা নেই কবে তাদেরকে (পুনর্জীবিত করে) উঠানো হবে।

إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج فَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ (٢٢)

২২. তোমাদের ইলাহ্ হলেন এক ইলাহ। কাজেই যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না, তাদের অন্তর সত্য-অস্বীকারকারী আর তারা অহংকারী।

لَا جَرَمَ أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ط إِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ (٢٣)

২৩. এতে কোন সন্দেহ নেই যে, আল্লাহ জানেন যা তারা গোপন করে আর যা প্রকাশ করে, তিনি অহঙ্কারীদেরকে ভালবাসেন না।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ أَنْزَلَ رَبُّكُمْ لا قَالُوْٓا أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ لا (٢٤)

২৪. তাদেরকে যখন বলা হয়, 'তোমাদের প্রতিপালক কী নাযিল করেছেন' তখন তারা বলে- 'পূর্ববর্তীদের কল্প-কাহিনী'।

لِيَحْمِلُوْٓا أَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ لا وَمِنْ أَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ط أَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ع (٢٥)

২৫. যার ফলে ক্বিয়ামাত দিবসে তারা বহন করবে নিজেদের পাপের বোঝা পূর্ণ মাত্রায়, আর (আংশিক) তাদেরও পাপের বোঝা যাদেরকে তারা গুমরাহ করেছে নিজেদের অজ্ঞতার কারণে। হায়, তারা যা বহন করবে তা কতই না নিকৃষ্ট!

قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتَى اللهُ بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَأَتٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ (٢٦)

২৬. তাদের পূর্বে যারা ছিল তারাও চক্রান্ত করেছিল। ফলে আল্লাহ্ তাদের ইমারাতকে মূল থেকে উৎপাটিত করেছিলেন আর উপর থেকে ছাদ তাদের উপর ভেঙ্গে পড়ল, আর তাদের প্রতি শাস্তি পতিত হল এমন দিক হতে যা তারা এতটুকু টের পায়নি।

ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ أَيْنَ

২৭. অতঃপর ক্বিয়ামাত দিনে তিনি তাদেরকে অপমানিত করবেন আর বলবেন, 'আমার অংশীদাররা

২৫। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেনঃ যে কোন ব্যক্তিকেই অন্যায়ভাবে হত্যা করা হয়, তার পাপের হিস্যা আদাম (আঃ)-এর প্রথম (হত্যাকারী) পুত্রের উপরও বর্তাবে। রাবী সুফ্ইয়ান من دمها তার রক্তপাত ঘটানোর অপরাধ তার উপরেও বর্তাবে উল্লেখ করেছেন। কারণ সেই সর্বপ্রথম হত্যার রীতি প্রবর্তন করে। -বুখারী ৭৩২১ [৩৩৩৫; মুসলিম ১৬৭৭, তিরমিযী ২৬৭৩, নাসায়ী ৩৯৮৫, ইবনু মাজাহ ২৬১৬, আহমাদ ৩৬২৩, ৪০৮১, ৪১১২]

شُرَكَآئِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ إِنَّ الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۙ (٢٧)

কোথায় যাদের সম্পর্কে তোমরা (ঈমানদারদের সঙ্গে) বাক-বিতণ্ডা করতে?' যাদেরকে (দুনিয়ায়) জ্ঞান দেয়া হয়েছিল তারা বলবে, 'আজ অপমান আর দুর্ভাগ্য তো কাফিরদের জন্য

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ أَنْفُسِهِمْ ۖ فَأَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٢٨)

২৮. ফেরেশতারা যাদের মৃত্যু ঘটায় নিজেদের প্রতি যুল্‌ম করা অবস্থায়।' অতঃপর তারা আত্মসমর্পণ ক'রে বলবে, 'আমরা তো কোন খারাপ কাজ করতাম না।' (ফেরেশতারা জবাব দিবে) 'বরং, তোমরা যা করছিলে আল্লাহ সে বিষয়ে খুব ভালভাবেই অবগত।

فَادْخُلُوْٓا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ (٢٩)

২৯. কাজেই জাহান্নামের দরজায় প্রবেশ কর, সেখানে তোমাদেরকে চিরকাল থাকতে হবে, দাম্ভিকদের অবাসস্থল কতই না মন্দ!'

وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ أَنْزَلَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ (٣٠)

৩০. মুত্তাকীদের যখন বলা হয়, 'তোমাদের প্রতিপালক কী অবতীর্ণ করেছেন?' তারা বলে, 'যা কিছু উৎকৃষ্ট (তা-ই অবতীর্ণ করেছেন)।' যারা সৎকর্ম করে তাদের জন্য এ দুনিয়াতে আছে কল্যাণ, আর তাদের পরকালের ঘর তো নিশ্চিতই কল্যাণকর। মুত্তাকীদের আবাসস্থল কতই না উত্তম!

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ كَذٰلِكَ يَجْزِي اللهُ الْمُتَّقِيْنَ ۙ (٣١)

৩১. (তা হল) স্থায়ী জান্নাত যাতে তারা প্রবেশ করবে, তার নিম্নদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তারা যা ইচ্ছে করবে সেখানে তাদের জন্য তা-ই আছে– আল্লাহ মুত্তাকীদেরকে এভাবেই পুরস্কৃত করেন।

الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٣٢)

৩২. ফেরেশতা যাদের মৃত্যু ঘটায় পবিত্র অবস্থায় এই ব'লে যে, 'তোমাদের উপর শান্তি বর্ষিত হোক, তোমরা যে 'আমাল করতে তার ফল হিসেবে জান্নাতে প্রবেশ কর।'

هَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّآ أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَوْ يَأْتِيَ أَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ

৩৩. তারা কি এই অপেক্ষায় আছে যে, ফেরেশতারা তাদের কাছে আসবে কিংবা তোমার প্রতিপালকের ফায়সালা এসে পড়বে? তাদের পূর্ববর্তীরাও এ রকমই করত। আল্লাহ তাদের প্রতি

قَبْلِهِمْ ۚ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (٣٣)

কোন যুল্ম করেননি বরং তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুল্ম করত।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِئُوْنَ ع (٣٤)

৩৪. কাজেই তাদের 'আমালের মন্দ পরিণতি তাদের উপর আপতিত হল আর যে বিষয়কে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত তা-ই তাদেরকে ঘিরে ফেলল।

وَقَالَ الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ۚ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ج فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (٣٥)

৩৫. মুশরিকরা বলে, 'আল্লাহ ইচ্ছে করলে তাঁকে বাদ দিয়ে অন্য কোন কিছুর 'ইবাদাত আমরাও করতাম না, আর আমাদের পিতৃপুরুষরাও না, আর তাঁর হুকুম ছাড়া কোন কিছুকে হারাম গণ্যও করতাম না। তাদের পূর্ববর্তীরাও এ রকমই করত। (তারা রসূলদের কথা অমান্য করলে রসূলদের তো আর কিছুই করার নেই, কারণ) স্পষ্টভাবে পৌঁছে দেয়া ছাড়া রসূলদের উপর কি কোন দায়িত্ব আছে?

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ أُمَّةٍ رَّسُوْلًا أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ج فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ۚ فَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ (٣٦)

৩৬. প্রত্যেক জাতির কাছে আমি রসূল পাঠিয়েছি (এ সংবাদ দিয়ে) যে, আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর আর তাগুতকে বর্জন কর। অতঃপর আল্লাহ তাদের মধ্যে কতককে সৎপথ দেখিয়েছেন, আর কতকের উপর অবধারিত হয়েছে গুমরাহী, অতএব যমীনে ভ্রমণ করে দেখ, সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের পরিণতি কী ঘটেছিল!

إِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (٣٧)

৩৭. তুমি যদি তাদের হিদায়াতের জন্য লালায়িত হও তবে (জেনে রেখে যে) আল্লাহ তাকে সৎপথ দেখান না যাকে তিনি বিপথগামী হতে ছেড়ে দেন আর তাদের কোন সাহায্যকারী নেই।

وَأَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لا لَا يَبْعَثُ اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ۚ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ لا (٣٨)

৩৮. তারা আল্লাহ্‌র নামে শক্ত কসম খেয়ে বলে, 'যার মৃত্যু ঘটে আল্লাহ তাকে পুনরায় জীবিত করবেন না।' অবশ্যই করবেন, এটা তো একটা প্রতিশ্রুতি যা পূরণ করা তাঁর দায়িত্ব, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই তা জানে না।

لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ (٣٩)

৩৯. (তাদেরকে পুনর্জীবিত করা হবে) যারা এ ব্যাপারে মতভেদ করেছিল তাদের কাছে স্পষ্ট করে দেয়ার জন্য, আর কাফিরগণ যাতে জানতে পারে যে, তারা ছিল মিথ্যেবাদী।

إِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ إِذَآ أَرَدْنٰهُ أَنْ نَّقُوْلَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ع (٤٠)

৪০. কোন বিষয়ে আমি ইচ্ছে করলে বলি, 'হয়ে যাও', ফলে তা হয়ে যায়।

وَالَّذِيْنَ هٰجَرُوْا فِي اللهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ط وَلَأَجْرُ الْاٰخِرَةِ أَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ لا (٤١)

৪১. যারা অত্যাচারিত হওয়ার পরও আল্লাহ্‌র পথে হিজরাত করেছে, আমি তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই এ দুনিয়াতে উত্তম আবাস দান করব, আর আখেরাতের পুরস্কার তো অবশ্যই সবচেয়ে বড়। হায়, তারা যদি জানত!

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ (٤٢)

৪২. (আখেরাতের ঐ পুরস্কার তাদের জন্য) যারা ধৈর্যধারণ করে আর তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ إِلَيْهِمْ فَسْئَلُوْٓا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ لا (٤٣)

৪৩. আমি তোমার পূর্বে পুরুষ মানুষ ব্যতীত পাঠাইনি যাদের কাছে আমি ওয়াহী করতাম। তোমরা যদি না জান তাহলে তোমরা আল্লাহ্‌র কিতাব সম্পর্কে যারা অবগত তাদেরকে জিজ্ঞেস কর।

بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ط وَأَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الذِّكْرَ لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ إِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (٤٤)

৪৪. (অতীতের রসূলদেরকে পাঠিয়েছিলাম) স্পষ্ট প্রমাণাদি আর কিতাব দিয়ে; আর এখন তোমার প্রতি কুরআন অবতীর্ণ করছি মানুষকে স্পষ্টভাবে বুঝিয়ে দেয়ার জন্য যা তাদের প্রতি অবতীর্ণ করা হয়েছে আর যাতে তারা চিন্তা-ভাবনা করে।

أَفَأَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ أَنْ يَّخْسِفَ اللهُ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ لا (٤٥)

৪৫. যারা (ইসলামের বিরুদ্ধে) কূট-কৌশল করছে তারা কি নির্ভয় হয়ে গেছে যে, আল্লাহ তাদেরকে যমীনে ধ্বসিয়ে দিবেন না, অথবা তাদের কাছে শাস্তি এসে পড়বে না এমন দিক থেকে যা তারা এতটুকুও টের পাবে না

أَوْ يَأْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ لا (٤٦)

৪৬. কিংবা তাদের চলাফেরার ভিতরেই তিনি তাদেরকে পাকড়াও করবেন না, অতঃপর তারা তো তা ব্যর্থ করে দিতে পারবে না।

أَوْ يَأْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ط فَإِنَّ رَبَّكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (٤٧)

৪৭. অথবা তিনি তাদেরকে পাকড়াও করবেন না যখন তারা আসন্ন মুসীবাতের চিন্তায় ভীত-সন্ত্রস্ত হয়ে থাকবে, (আসল কথা হল আল্লাহ মানুষকে খুবই অবকাশ দিয়ে থাকেন) কেননা তোমাদের প্রতিপালক অবশ্যই অতি দয়ার্দ্র, বড়ই দয়ালু।

৪৮. তারা কি আল্লাহ্‌র সৃষ্টি করা জিনিসের দিকে লক্ষ্য করে না, যার ছায়া আল্লাহ্‌র প্রতি সাজদার অবস্থায় ডানে-বামে পতিত হয়, আর তারা বিনয় প্রকাশ করে?

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَىٰ مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ (٤٨)

৪৯. আকাশসমূহ ও পৃথিবীতে যত জীব-জন্তু ফেরেশতারা, সমস্তই আল্লাহ্‌কে সাজদাহ করে; তারা অহঙ্কার করে না।

وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ (٤٩)

৫০. তারা তাদের উপরে আল্লাহ্‌কে ভয় করে আর তারা তা-ই করে যা তাদেরকে আদেশ দেয়া হয়।[সাজদাহ]

يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ السجدة (٥٠)

৫১. আল্লাহ বললেন, 'তোমরা দু' ইলাহ গ্রহণ করো না, তিনি তো এক ইলাহ; কাজেই আমাকে– কেবল আমাকেই ভয় কর।'

وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا إِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ج إِنَّمَا هُوَ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج فَإِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ (٥١)

৫২. আকাশসমূহ আর যমীনে যা কিছু আছে তা তাঁরই, আর দ্বীন সদা-সর্বদা একান্তভাবে তাঁরই জন্য। তাহলে তোমরা কি আল্লাহ ছাড়া অন্য কাউকে ভয় করবে?

وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَهُ الدِّيْنُ وَاصِبًا ط أَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ (٥٢)

৫৩. যে নি'মাতই তোমরা পেয়েছ তাতো আল্লাহ্‌র নিকট হতেই। আর যখন দুঃখ-কষ্ট তোমাদেরকে স্পর্শ করে, তখন তাঁর কাছেই তোমরা আকুল আবেদন জানাতে থাক।

وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ثُمَّ إِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَإِلَيْهِ تَجْـَٔرُوْنَ ج (٥٣)

৫৪. অতঃপর যখন তিনি তোমাদের থেকে দুঃখ-কষ্ট দূর করে দেন, তখন তোমাদের একদল তাদের প্রতিপালকের সঙ্গে অন্যকে শরীক করে বসে

ثُمَّ إِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ لا (٥٤)

৫৫. আমি তাদেরকে যা দিয়েছি তাদের না-শোকরি করা জন্য। অতএব তোমরা ভোগ করে নাও, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ط فَتَمَتَّعُوْا قف فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (٥٥)

৫৬. আর আমি তাদেরকে যে রিয্‌ক দিয়েছি তার একাংশ তারা ঐ সবের জন্য নির্ধারিত করে যাদের সম্পর্কে তারা কিছুই জানে না। আল্লাহ্‌র শপথ! তোমাদের এই মিথ্যে উদ্ভাবন সম্পর্কে

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ط تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ

تَفْتَرُوْنَ (٥٦)

তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই জিজ্ঞেস করা হবে

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ (٥٧)

৫৭. আর তারা কন্যা সন্তানগুলোকে আল্লাহ্‌র জন্য নির্ধারিত করে, তিনি (তা থেকে) পবিত্র মহান, আর তারা নিজেদের জন্য (নির্ধারিত করে) যা তাদের আকাঙ্ক্ষা হয়।

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِالْأُنْثٰى ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ج (٥٨)

৫৮. তাদের কাউকে যখন কন্যা সন্তানের সুসংবাদ দেয়া হয়, তখন তার মুখ কালো হয়ে যায় আর সে অন্তর্জ্বালায় পুড়তে থাকে।

يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا بُشِّرَ بِهٖ ط أَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ أَمْ يَدُسُّهٗ فِي التُّرَابِ ط أَلَا سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (٥٩)

৫৯. লজ্জায় সে মানুষ থেকে মুখ লুকায় খারাপ সংবাদ পাওয়ার কারণে। সে চিন্তা করে যে অপমান মাথায় করে তাকে রেখে দেবে, না তাকে মাটিতে পুঁতে ফেলবে। হায়, তারা যা সিদ্ধান্ত করে তা কতই না জঘন্য!

لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ السَّوْءِ ج وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْأَعْلٰى ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ع (٦٠)

৬০. যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না, খারাপ উপমা তাদের জন্য। মহোত্তম উপমা সব আল্লাহ্‌র জন্য, তিনি হলেন প্রতাপান্বিত, প্রজ্ঞাময়।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ج فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ لَا يَسْتَأْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ (٦١)

৬১. আল্লাহ যদি মানুষকে তাদের সীমালঙ্ঘনের জন্য পাকড়াও করতেন, তাহলে যমীনের উপর কোন প্রাণীকেই তিনি রেহাই দিতেন না। কিন্তু তিনি একটা নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত তাদেরকে সময় দেন। তাদের সময় এসে গেলে এক মুহূর্তও অগ্র-পশ্চাৎ করা হয় না।

وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ أَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ أَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ط لَا جَرَمَ أَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَأَنَّهُمْ مُّفْرَطُوْنَ (٦٢)

৬২. তারা আল্লাহ্‌র জন্য তা-ই নির্ধারণ করে যা (নিজেদের জন্য) অপছন্দ করে, আর তাদের জিহ্বা মিথ্যা বলে যে, কল্যাণ তাদেরই জন্য। কোন সন্দেহ নেই যে, তাদের জন্য আছে আগুন আর সর্বপ্রথম তাদেরকেই সেখানে জলদি পৌঁছে দেয়া হবে।

تَاللّٰهِ لَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلٰٓى أُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٦٣)

৬৩. আল্লাহ্‌র কসম! তোমার পূর্বে আমি বহু জাতির কাছে রসূল পাঠিয়েছিলাম, কিন্তু শয়ত্বান তাদের কাছে তাদের কার্যকলাপকে শোভনীয় করে দিয়েছিল, আর আজ সে-ই তাদের অভিভাবক, তাদের জন্য রয়েছে ভয়াবহ শাস্তি।

وَمَآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ إِلَّا لِتُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٦٤)

৬৪. আমি তোমার প্রতি কিতাব এজন্য নাযিল করেছি যাতে তুমি সে সকল বিষয় স্পষ্ট করে দিতে পার যে বিষয়ে তারা মতভেদ করেছিল, আর (এ কিতাব) বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্য পথপ্রদর্শক ও রহমাত স্বরূপ।

وَاللّٰهُ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ع (٦٥)

৬৫. আল্লাহ আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, অতঃপর তার দ্বারা যমীনকে তার মৃত্যুর পর পুনরায় জীবিত করেন। এতে ঐ সম্প্রদায়ের জন্য বহু নিদর্শন আছে যারা লক্ষ্য করে শুনে।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ط نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ (٦٦)

৬৬. তোমাদের জন্য গবাদি পশুতেও অবশ্যই শিক্ষা নিহিত আছে। তোমাদেরকে পান করাই ওদের পেটের গোবর আর রক্তের মাঝ থেকে বিশুদ্ধ দুগ্ধ যা পানকারীদের জন্য খুবই উপাদেয়।

وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْأَعْنَابِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٦٧)

৬৭. আর খেজুর ও আঙ্গুর ফল থেকে তোমরা মদ ও উত্তম খাদ্য প্রস্তুত কর, জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য এতে অবশ্যই বহু নিদর্শন রয়েছে।

وَأَوْحٰى رَبُّكَ إِلَى النَّحْلِ أَنِ اتَّخِذِيْ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ ۙ (٦٨)

৬৮. তোমার প্রতিপালক মৌমাছির প্রতি এলহাম করেছেন যে, পাহাড়ে, বৃক্ষে আর উঁচু চালে বাসা তৈরি কর।

ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ط يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ لِّلنَّاسِ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (٦٩)

৬৯. অতঃপর প্রত্যেক ফল থেকে আহার কর, অতঃপর তোমার প্রতিপালকের (শিখানো) সহজ পদ্ধতি অনুসরণ কর। এর পেট থেকে রং-বেরং এর পানীয় বের হয়। এতে মানুষের জন্য আছে আরোগ্য। চিন্তাশীল মানুষের জন্য এতে অবশ্যই নিদর্শন আছে।

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰكُمْ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلٰى أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا يَعْلَمَ بَعْدَ

৭০. আল্লাহ্ই তোমাদেরকে পয়দা করেছেন, অতঃপর তিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন। তোমাদের কাউকে অকর্মণ্য বয়সে ফিরিয়ে দেয়া হয়, যাতে জ্ঞান লাভ করার পরেও আর কোন কিছুর জ্ঞান থাকে না। আল্লাহ সর্বশ্রেষ্ঠ জ্ঞানী,

عِلْمٍ شَيْئًا ؕ إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ع (٧٠)

সর্বাপেক্ষা শক্তিমান।

وَاللهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰى بَعْضٍ فِي الرِّزْقِ ج فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَآدِّيْ رِزْقِهِمْ عَلٰى مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَهُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ ؕ أَفَبِنِعْمَةِ اللهِ يَجْحَدُوْنَ (٧١)

৭১. রিয্‌কের ব্যাপারে আল্লাহ তোমাদের মধ্যে কাউকে কারো উপর প্রাধান্য দিয়েছেন। যাদেরকে প্রাধান্য দেয়া হয়েছে তারা তাদের রিয্‌ক থেকে তাদের অধীনস্থ চাকর- গোলামদেরকে এমনভাবে ফিরিয়ে দেয় না, যাতে এক্ষেত্রে তারা সমান হয়ে যায়। (অথচ তারা নানান কিছুকে আল্লাহ্‌র অংশীদার বানিয়ে ওগুলোকে আল্লাহ্‌র সমান করে ফেলছে) তাহলে কি তারা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ অস্বীকার করে?

وَاللهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ؕ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَتِ اللهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۙ (٧٢)

৭২. আল্লাহ তোমাদের স্বজাতির মধ্য হতেই তোমাদের জোড়া সৃষ্টি করেছেন আর তোমাদের জন্য তোমাদের জোড়া থেকে পুত্র-পৌত্রাদি বানিয়েছেন আর তোমাদেরকে উৎকৃষ্ট রিয্‌ক দিয়েছেন। তবুও কি তারা ভিত্তিহীন বাতিল জিনিসের উপর ঈমান পোষণ করবে আর আল্লাহ্‌র অনুগ্রহকে তারা অস্বীকার করবে?

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ مَا لَا يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ج (٧٣)

৭৩. আর আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে 'ইবাদাত করবে অন্যের যারা আকাশ ও যমীন থেকে তাদের জন্য রিয্‌ক দেয়ার মালিক নয়, আর তারা এ কাজে সক্ষমও নয়।

فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْأَمْثَالَ ؕ إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (٧٤)

৭৪. কাজেই কারো সাথে আল্লাহ্‌র তুলনা দিও না। আল্লাহ জানেন, আর তোমরা জান না।

ضَرَبَ اللهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ

৭৫. আল্লাহ দৃষ্টান্ত দিচ্ছেনঃ অন্যের মালিকানাভুক্ত এক দাস যে কোন কিছু করারই ক্ষমতা রাখে না। আর এক লোক যাকে আমি আমার পক্ষ হতে

৭০। আনাস ইব্‌নু মালিক (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) এ দু'আ করতেন (হে আল্লাহ্!) আমি আপনার কাছে আশ্রয় চাই কৃপণতা থেকে, অলসতা থেকে, চলৎশক্তিহীন বয়স থেকে, কবরের আযাব থেকে, দাজ্জালের ফিত্‌না থেকে এবং জীবন ও মৃত্যুর ফিত্‌না থেকে। –বুখারী ৪৭০৭ [২৮২৩; মুসলিম ২৭০৬, তিরমিযী ৩৪৮৪, ৩৪৮৫, নাসায়ী ৪৪৪৮-৪৪৫২, ৫৪৭৫, ৫৪৫৯, ৫৪৭৬, ৫৪৯৫, ৫৫০৩; আবূ দাঊদ ১৫৪০, ৩৯৭২; আহমাদ ১১৭০৩, ১১৭৫৬]

Contents

يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٧٥)

উত্তম জীবিকা দান করেছি আর তাথেকে সে গোপনে প্রকাশ্যে দান করে, (এ) দু'জন কি সমান? সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ্‌রই জন্য, কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

وَضَرَبَ اللهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ أَحَدُهُمَآ أَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰـهُ ۙ أَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ لَا يَأْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ وَمَنْ يَّأْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ع (٧٦)

৭৬. আল্লাহ আরো দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন দু'ব্যক্তির তাদের একজন হল বোবা, কোন কিছুই করতে সক্ষম নয়। তার মনিবের উপর সে একটা বোঝা, তাকে যেখানেই পাঠানো হোক না কেন, কোন কল্যাণই সে নিয়ে আসবে না। সে কি ঐ ব্যক্তির সমান যে ইনসাফের নির্দেশ দেয় আর সরল সুদৃঢ় পথে প্রতিষ্ঠিত?

وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ وَمَآ أَمْرُ السَّاعَةِ إِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ أَوْ هُوَ أَقْرَبُ ؕ إِنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٧٧)

৭৭. আকাশসমূহ ও যমীনের অদৃশ্যের জ্ঞান কেবল আল্লাহ্‌রই আছে। ক্বিয়ামাতের ব্যাপার তো চোখের পলকের মত বরং তাথেকেও দ্রুত। আল্লাহ সব কিছু করতেই সক্ষম।

وَاللهُ أَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ أُمَّهٰتِكُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْئًا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٧٨)

৭৮. আল্লাহ তোমাদেরকে তোমাদের মায়ের পেট থেকে বের করেন, তোমরা কিছুই জানতে না। তিনি তোমাদেরকে শোনার শক্তি, দেখার শক্তি আর অন্তর দান করেছেন যাতে তোমরা শোকর আদায় করতে পার।

أَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ السَّمَآءِ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا اللهُ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٧٩)

৭৯. আকাশের শূন্যলোকে নিয়ন্ত্রিত পাখীগুলোর প্রতি কি তারা লক্ষ্য করে না? আল্লাহ ছাড়া কেউ তাদেরকে স্থির রাখে না, এতে মু'মিন সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই বহু নিদর্শন রয়েছে।

وَاللهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْأَنْعَامِ بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ إِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ أَصْوَافِهَا وَأَوْبَارِهَا وَأَشْعَارِهَآ أَثَاثًا وَّمَتَاعًا إِلٰى حِيْنٍ (٨٠)

৮০. আল্লাহ তোমাদের গৃহগুলোকে তোমাদের আরাম শান্তির জায়গা বানিয়ে দিয়েছেন। তিনি পশুর চামড়া থেকে তোমাদের জন্য এমন গৃহের ব্যবস্থা করেছেন যা তোমরা হালকাবোধ কর তোমাদের ভ্রমণকালে কিংবা অবস্থানকালে। তিনি ওগুলোর পশম, লোম আর চুল থেকে তোমাদের পরিধেয় ও ব্যবহার্য সামগ্রীর ব্যবস্থা করেছেন যা তোমরা কিছুকাল পর্যন্ত কাজে লাগাও।

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ أَكْنَانًا وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَسَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَأْسَكُمْ ط كَذٰلِكَ يُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ (٨١)

৮১. আল্লাহ যা সৃষ্টি করেছেন তাথেকে তোমাদের জন্য ছায়ার ব্যবস্থা করেছেন, পাহাড়-পর্বতে তোমাদের আত্মগোপনের জায়গা বানিয়েছেন। তিনি তোমাদের জন্য পোশাক দিয়েছেন যা তোমাদেরকে তাপ থেকে রক্ষা করে। আর দিয়েছেন এমন পোশাক যা তোমাদেরকে সংঘাতের সময় রক্ষা করে। এভাবে তিনি তোমাদের জন্য তাঁর নি'মাতসমূহ পূর্ণ করেন যাতে তোমরা তাঁর প্রতি আত্মসমর্পণ কর।

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (٨٢)

৮২. এরপরও যদি তারা মুখ ফিরিয়ে নেয় তবে (জোরপূর্বক তাদেরকে সঠিক পথে আনা তোমার দায়িত্ব নয়) তোমার দায়িত্ব কেবল স্পষ্টভাবে বাণী পৌঁছে দেয়া।

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا وَأَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ ع (٨٣)

৮৩. তারা আল্লাহ্‌র নি'মাতকে চিনতে পারে, কিন্তু তা সত্ত্বেও সেগুলো অগ্রাহ্য করে, তাদের অধিকাংশই অকৃতজ্ঞ।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيْدًا ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ (٨٤)

৮৪. (সেদিন কী অবস্থা হবে) যেদিন আমি প্রত্যেক সম্প্রদায় থেকে একজন সাক্ষী দাঁড় করাব আর কাফিরদেরকে (কোন ওযুহাত পেশ করার) অনুমতি দেয়া হবে না, আর ক্ষমা প্রার্থনা করারও সুযোগ দেয়া হবে না।

وَإِذَا رَأَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ (٨٥)

৮৫. সীমালঙ্ঘনকারীরা যখন 'আযাব প্রত্যক্ষ করবে তাদের থেকে তখন তা কমানো হবে না, আর তাদেরকে সময়-সুযোগও দেয়া হবে না।

وَإِذَا رَأَى الَّذِيْنَ أَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ج فَأَلْقَوْا إِلَيْهِمُ الْقَوْلَ إِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ ج (٨٦)

৮৬. মুশরিকরা যাদেরকে আল্লাহ্‌র শারীক বানিয়েছিল তাদেরকে যখন দেখবে তখন তারা বলবে, 'হে আমাদের রব্ব! এরাই হল আমাদের শারীক মা'বূদ তোমাকে বাদ দিয়ে যাদেরকে আমরা ডাকতাম।' তখন এ কথাকে তাদের দিকেই ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে তাদের সেই মা'বূদরা বলবে, 'তোমরা অবশ্যই মিথ্যেবাদী।'

وَأَلْقَوْا إِلَى اللّٰهِ يَوْمَئِذِ نِالسَّلَمَ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (٨٧)

৮৭. সেদিন তারা আল্লাহ্‌র নিকট খোলাখুলি আত্মসমর্পণ করবে, আর তারা যে সব মিথ্যে উদ্ভাবন করেছিল তা তাদের নিকট হতে হারিয়ে যাবে।

ٱلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ زِدْنٰهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ بِمَا كَانُوْا يُفْسِدُوْنَ (٨٨)

৮৮. যারা আল্লাহ্কে অস্বীকার করে আর আল্লাহ্র পথে বাধা সৃষ্টি করে, আমি তাদের শাস্তির উপর শাস্তি বৃদ্ধি করব, কারণ তারা ফাসাদ সৃষ্টি করত।

وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِيْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيْدًا عَلَيْهِمْ مِّنْ أَنْفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيْدًا عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ ط وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ع (٨٩)

৮৯. সেদিন আমি প্রত্যেক উম্মাত থেকে তাদের নিজেদেরই মধ্য হতে একজন সাক্ষী দাঁড় করাব, আর (তোমার) এই লোকদের ব্যাপারে সাক্ষ্যদাতা হিসেবে (হে মুহাম্মাদ!) আমি তোমাকে আনব। আমি তোমার প্রতি এ কিতাব নাযিল করেছি যা প্রত্যেকটি বিষয়ের সুস্পষ্ট ব্যাখ্যা, সত্য পথের নির্দেশ, রহমাত আর আত্মসমর্পণকারীদের জন্য সুসংবাদ স্বরূপ।

إِنَّ اللهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ وَإِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ ج يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (٩٠)

৯০. আল্লাহ ন্যায়-বিচার, সদাচরণ ও আত্মীয়দেরকে দেয়ার হুকুম দিচ্ছেন, আর তিনি নিষেধ করছেন অশ্লীলতা, অপকর্ম আর বিদ্রোহ থেকে। তিনি তোমাদেরকে উপদেশ দিয়েছেন যাতে তোমরা শিক্ষা গ্রহণ কর।

وَأَوْفُوْا بِعَهْدِ اللهِ إِذَا عٰهَدْتُّمْ وَلَا تَنْقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيْدِهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللهَ عَلَيْكُمْ كَفِيْلًا ط إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ (٩١)

৯১. তোমরা পরস্পর অঙ্গীকারে আবদ্ধ হলে আল্লাহ্র অঙ্গীকার পূর্ণ করবে, নিজেদের অঙ্গীকার পাকা-পোখত করার পর তা ভঙ্গ করো না, যেহেতু তোমরা আল্লাহ্কে নিজেদের উপর সাক্ষী বানিয়ে নিয়েছ, তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে ওয়াকেফহাল।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّتِيْ نَقَضَتْ غَزْلَهَا مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ أَنْكَاثًا ط تَتَّخِذُوْنَ أَيْمَانَكُمْ دَخَلًاۢ بَيْنَكُمْ أَنْ تَكُوْنَ أُمَّةٌ هِيَ أَرْبٰى مِنْ أُمَّةٍ ط إِنَّمَا يَبْلُوْكُمُ اللهُ بِهٖ ط وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ (٩٢)

৯২. তোমরা এমন নারীর মত হয়ো না যে তার সূতাগুলোকে শক্ত করে পাকানোর পর নিজেই তার পাক খুলে টুকরো টুকরো করে দেয়। তোমরা তোমাদের শপথগুলোকে পারস্পরিক ব্যাপারে ধোঁকা-প্রতারণার হাতিয়ার হিসেবে ব্যবহার কর যেন একদল আরেক দল অপেক্ষা বেশি ফায়দা লাভ করতে পারে। আল্লাহ কেবল এর দ্বারা তোমাদেরকে পরীক্ষা করেন। আল্লাহ ক্বিয়ামাতের দিন অবশ্য অবশ্যই স্পষ্ট করে দিবেন যে বিষয়ে তোমরা মতভেদ করতে।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّلٰكِنْ يُّضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ
ط وَلَتُسْئَلُنَّ عَمَّا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٩٣)

৯৩. আল্লাহ ইচ্ছে করলে তোমাদেরকে অবশ্যই এক উম্মাত করে দিতেন, কিন্তু তিনি যাকে ইচ্ছে গুমরাহ্ করেন, আর যাকে ইচ্ছে সঠিক পথপ্রদর্শন করেন। তোমরা যা কর সে সম্পর্কে অবশ্য অবশ্যই তোমাদেরকে জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

وَلَا تَتَّخِذُوْٓا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا ۢ بَيْنَكُمْ
فَتَزِلَّ قَدَمٌ ۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا السُّوْٓءَ
بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ج وَلَكُمْ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ (٩٤)

৯৪. তোমরা তোমাদের নিজেদের শপথগুলোকে পরস্পর ধোঁকা-প্রবঞ্চনার উপায় হিসেবে গ্রহণ করো না, তা করলে দৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত হওয়ার পর পা আবার পিছলে যাবে, আর আল্লাহ্র পথে বাধা দেয়ার কারণে তোমরা মন্দ পরিণতি ভোগ করবে, আর তোমাদের জন্য থাকবে কঠিন শাস্তি।

وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ط إِنَّمَا
عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ (٩٥)

৯৫. তোমরা আল্লাহ্র সঙ্গে কৃত ওয়া'দা নগণ্য মূল্যে বিক্রয় করো না। আল্লাহ্র নিকট যা আছে তোমাদের জন্য তা-ই উত্তম- তোমরা যদি জানতে!

مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ط
وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٩٦)

৯৬. তোমাদের কাছে যা আছে তা শেষ হয়ে যাবে, আর আল্লাহ্র কাছে যা আছে তা টিকে থাকবে। আমরা অবশ্য অবশ্যই ধৈর্যশীলদেরকে তারা যা করে তার চেয়ে উত্তম প্রতিদান দেব।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثٰى وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ج وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٩٧)

৯৭. পুরুষ আর নারীদের মধ্যে যে কেউ সৎকাজ করবে আর সে মু'মিনও, তাকে আমি অবশ্য অবশ্যই উত্তম জীবন দান করব আর তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই তারা যা করে তার চেয়ে উত্তম প্রতিফল দান করব।

فَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ
الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ (٩٨)

৯৮. তুমি যখনি কুরআন পাঠ করবে তখন অভিশপ্ত শয়ত্বান থেকে আল্লাহ্র নিকট আশ্রয় চাইবে।

إِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ (٩٩)

৯৯. যারা ঈমান এনেছে তাদের উপর তার কোন প্রভাব খাটে না, আর তারা তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

إِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ وَالَّذِيْنَ

১০০. তার প্রভাব কেবল তাদের উপরই খাটে যারা তাকে অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করে আর

هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ع (١٠٠)

যারা তাকে আল্লাহ্‌র শরীক করে।

وَإِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ لا وَّاللهُ أَعْلَمُ
بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْآ إِنَّمَآ أَنْتَ مُفْتَرٍ ط بَلْ
أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (١٠١)

১০১. আমি যখন এক আয়াতের বদলে অন্য আয়াত নাযিল করি– আর আল্লাহ ভালভাবেই জানেন, যা তিনি নাযিল করেন– তখন এই লোকেরা বলে, 'তুমি তো মিথ্যা রচনাকারী।' প্রকৃত ব্যাপার এই যে, এ সম্পর্কে তাদের অধিকাংশেরই কোন জ্ঞান নেই।

قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ
لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُسْلِمِيْنَ (١٠٢)

১০২. বল, 'এ কুরআন তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে রুহুল কুদুস (জিবরীল) ঠিক ঠিকভাবে নাযিল করেছেন ঈমানদারদেরকে দৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত রাখার জন্য এবং মুসলিমদের হিদায়াত ও সুসংবাদ দানের জন্য।'

وَلَقَدْ نَعْلَمُ أَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ إِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ
بَشَرٌ ط لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ إِلَيْهِ
أَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ (١٠٣)

১০৩. আমি জানি, তারা বলে, 'এক মানুষ তাকে [অর্থাৎ মুহাম্মাদ (ﷺ)-কে] শিখিয়ে দেয়।' অথচ দুষ্টবুদ্ধি প্রণোদিত হয়ে তারা যে লোকটির কথা বলছে তার ভাষা তো অনারব, অপরপক্ষে কুরআনের ভাষা হল স্পষ্ট আরবী।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللهِ لا لَا
يَهْدِيْهِمُ اللهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١٠٤)

১০৪. যারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাস করে না, আল্লাহ তাদেরকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন না, আর তাদের জন্য আছে ভয়ানক শাস্তি।

إِنَّمَا يَفْتَرِي الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاٰيٰتِ اللهِ ج وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ (١٠٥)

১০৫. যারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহে বিশ্বাস করে না, তারাই মিথ্যে রচনা করে আর তারাই মিথ্যাবাদী।

مَنْ كَفَرَ بِاللهِ مِنْۢ بَعْدِ إِيْمَانِهٖٓ إِلَّا مَنْ
أُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْإِيْمَانِ وَلٰكِنْ مَّنْ
شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ
اللهِ ج وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ (١٠٦)

১০৬. কোন ব্যক্তি তার ঈমান গ্রহণের পর আল্লাহ্‌কে অবিশ্বাস করলে এবং কুফরীর জন্য তার হৃদয় খুলে দিলে তার উপর আল্লাহ্‌র গযব পতিত হবে আর তার জন্য আছে মহা শাস্তি, তবে তার জন্য নয় যাকে (কুফরীর জন্য) বাধ্য করা হয় অথচ তার দিল ঈমানের উপর অবিচল থাকে।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا عَلَى
الْاٰخِرَةِ لا وَأَنَّ اللهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
الْكٰفِرِيْنَ (١٠٧)

১০৭. এর কারণ এই যে, তারা আখিরাত অপেক্ষা দুনিয়ার জীবনকে বেশি ভালবাসে, আর আল্লাহ ঈমান প্রত্যাখ্যানকারীদেরকে সঠিক পথ দেখান না।

Contents

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَأَبْصَارِهِمْ ج وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ (١٠٨)

১০৮. এরা ঐ সব লোক আল্লাহ যাদের অন্তর, কান আর চোখে মোহর মেরে দিয়েছেন আর তারা বে-খেয়াল, উদাসীন।

لَا جَرَمَ أَنَّهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (١٠٩)

১০৯. এতে কোন সন্দেহই নেই যে, আখেরাতে ক্ষতিগ্রস্ত এরাই হবে।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْ ۢبَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا لا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ ۢبَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (١١٠)

১১০. অবশ্যই তোমার প্রতিপালক তাদের জন্য যারা নির্যাতিত হওয়ার পর হিজরাত করে, অতঃপর জিহাদ করে, অতঃপর ধৈর্যধারণ করে, এ সবের পর তোমার প্রতিপালক অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

يَوْمَ تَأْتِيْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (١١١)

১১১. সেদিন প্রত্যেক লোক নিজের পক্ষে যুক্তি পেশ করবে আর প্রত্যেক ব্যক্তিকে তার কৃতকর্মের প্রতিফল পূর্ণমাত্রায় দেয়া হবে, তাদের প্রতি কোন যুল্‌ম করা হবে না।

وَضَرَبَ اللهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً مُّطْمَئِنَّةً يَّأْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِأَنْعُمِ اللهِ فَأَذَاقَهَا اللهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ (١١٢)

১১২. আল্লাহ এক জনবসতির দৃষ্টান্ত পেশ করছেন যা ছিল নিরাপদ, চিন্তা-ভাবনাহীন। সবখান থেকে সেখানে আসত জীবন ধারণের পর্যাপ্ত উপকরণ। অতঃপর সে জনপদ আল্লাহ্‌র নি'মাতরাজির কুফুরী করল, অতঃপর আল্লাহ তাদের কৃতকর্মের কারণে ক্ষুধা ও ভয়-ভীতির মুসীবাত তাদেরকে আস্বাদন করালেন।

وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ فَكَذَّبُوْهُ فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ (١١٣)

১১৩. তাদের কাছে তাদের মধ্য হতেই রসূল এসেছিল কিন্তু তারা তাকে মিথ্যা মনে ক'রে প্রত্যাখ্যান করল, তখন শাস্তি তাদেরকে পাকড়াও করল যখন তারা ছিল সীমালঙ্ঘনে লিপ্ত।

فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ص وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللهِ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ (١١٤)

১১৪. কাজেই আল্লাহ তোমাদেরকে যে সকল বৈধ পবিত্র রিয্‌ক দিয়েছেন তা তোমরা খাও আর আল্লাহ্‌র অনুগ্রহের শুকরিয়া আদায় কর যদি তোমরা প্রকৃতই তাঁর বন্দেগী করতে ইচ্ছুক হও।

إِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ أُهِلَّ لِغَيْرِ اللهِ بِهٖ ج فَمَنِ اضْطُرَّ

১১৫. আল্লাহ তোমাদের জন্য হারাম করেছেন মৃত জীব, রক্ত, শূকরের মাংস আর যা যবেহ করার সময় আল্লাহ ছাড়া অন্যের নাম নেয়া হয়েছে। কিন্তু কেউ ইচ্ছাকৃতভাবে অবাধ্য না হয়ে ও সীমালঙ্ঘন

Contents

غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ فَإِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١١٥)

না ক'রে নিতান্ত নিরুপায় (হয়ে এসব খেতে বাধ্য) হলে আল্লাহ তো বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ أَلْسِنَتُكُمُ الْكَذِبَ هٰذَا حَلَالٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللهِ الْكَذِبَ ط إِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ط (١١٦)

১১৬. তোমাদের জিহ্বা থেকে মিথ্যে কথা বেরোয় বলেই তোমরা আল্লাহ্র প্রতি মিথ্যারোপ করার জন্য এমন কথা বলো না যে, এটা হালাল, আর এটা হারাম। যারা আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে উদ্ভাবন করে, তারা কক্ষনো কল্যাণ লাভ করতে পারে না।

مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ص وَّلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١١٧)

১১৭. (এসব মিথ্যাচারে লাভ হয়) সামান্য ভোগের বস্তু, অতঃপর তাদের জন্য আছে ভয়াবহ শাস্তি।

وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ج وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْآ أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (١١٨)

১১৮. আর যারা ইয়াহূদী হয়েছিল আমি তাদের প্রতি হারাম করেছিলাম যা আমি তোমার কাছে পূর্বেই উল্লেখ করেছি। আমি তাদের উপর কোন যুল্ম করিনি, কিন্তু তারা নিজেরাই নিজেদের প্রতি যুল্ম করত।

ثُمَّ إِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوْٓا إِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (١١٩)

১১৯. তোমার প্রতিপালক তাদের জন্য যারা অজ্ঞতার কারণে খারাপ কাজ করে, অতঃপর তাওবাহ করে ও নিজেদের 'আমাল সংশোধন করে, তোমার প্রতিপালক তাদের জন্য অবশ্যই বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

إِنَّ إِبْرٰهِيْمَ كَانَ أُمَّةً قَانِتًا لِّـلّٰهِ حَنِيْفًا ط وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ لا (١٢٠)

১২০. ইব্রাহীম ছিল আল্লাহ্র প্রতি বিনয়াবনত একনিষ্ঠ এক উম্মাত, আর সে মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত ছিল না।

شَاكِرًا لِّأَنْعُمِهِ ط إِجْتَبٰهُ وَهَدٰىهُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (١٢١)

১২১. সে ছিল আল্লাহ্র নি'মাতরাজির জন্য শোকরগুযার। আল্লাহ তাকে বেছে নিয়েছিলেন আর তাকে সরল সঠিক পথ দেখিয়েছিলেন।

وَاٰتَيْنٰهُ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ط وَإِنَّهُ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ط (١٢٢)

১২২. আমি তাকে দুনিয়াতে কল্যাণ দান করেছিলাম, আর আখেরাতেও সে অবশ্যই সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত।

ثُمَّ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ أَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ إِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ط وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٢٣)

১২৩. অতঃপর তোমার প্রতি ওয়াহী করছি যে, তুমি একনিষ্ঠ ইব্রাহীমের মতাদর্শ অনুসরণ কর; আর সে তো মুশরিকদের দলভুক্ত ছিল না।

إِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ط وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (١٢٤)

১২৪. 'শনিবার পালন' তো তাদের উপর চাপিয়ে দেয়া হয়েছিল যারা এর নিয়ম পালনে মতভেদ করেছিল। যে বিষয়ে তারা মতভেদ করত তোমার প্রতিপালক ক্বিয়ামাতের দিন সে বিষয়ে অবশ্যই তাদের মধ্যে ফায়সালা করে দেবেন।

اُدْعُ إِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ ط إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ (١٢٥)

১২৫. জ্ঞান-বুদ্ধি আর উত্তম উপদেশের মাধ্যমে তুমি (মানুষকে) তোমার প্রতিপালকের পথে আহ্বান জানাও আর লোকেদের সাথে বিতর্ক কর এমন পন্থায় যা অতি উত্তম। তোমার প্রতিপালক ভালভাবেই জানেন কে তাঁর পথ ছেড়ে গুমরাহ হয়ে গেছে। আর কে সঠিক পথে আছে তাও তিনি বেশি জানেন।

وَإِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ط وَلَئِنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَيْرٌ لِّلصّٰبِرِيْنَ (١٢٦)

১২৬. যদি তোমরা প্রতিশোধ গ্রহণ করতে চাও তবে ততটুকু প্রতিশোধ গ্রহণ কর যতটুকু অন্যায় তোমাদের উপর করা হয়েছে। আর যদি তোমরা ধৈর্য ধারণ কর তবে ধৈর্যধারণকারীদের জন্য অবশ্যই তা উত্তম।

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ إِلَّا بِاللهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ (١٢٧)

১২৭. তুমি ধৈর্য ধারণ কর, তোমার ধৈর্য তো কেবল আল্লাহ ব্যতীত নয়, ওদের কার্যকলাপে তুমি দুঃখিত হয়ো না, আর ওদের ষড়যন্ত্র করার কারণে অন্তরে কুণ্ঠাবোধ করো না।

إِنَّ اللهَ مَعَ الَّذِيْنَ اتَّقَوا وَّالَّذِيْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ع (١٢٨)

১২৮. যারা তাক্বওয়া অবলম্বন করে আর সৎকর্মশীল, আল্লাহ তো তাদেরই সঙ্গে আছেন।

১৭. সূরাহ আল-ইসরা

سُوْرَةُ الْإِسْرَآءِ

আয়াতঃ ১১১, রুকূ'ঃ ১২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

سُبْحَانَ الَّذِيْٓ أَسْرٰى بِعَبْدِهٖ لَيْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ إِلَى الْمَسْجِدِ الْأَقْصَى الَّذِيْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِيَهٗ مِنْ اٰيٰتِنَا ط إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ (١)

১. পবিত্র ও মহীয়ান তিনি যিনি তাঁর বান্দাহ্‌কে রাতের বেলা ভ্রমণ করিয়েছেন মাসজিদুল হারাম থেকে মাসজিদুল আকসা পর্যন্ত, যার চারপাশকে আমি কল্যাণময় করেছি। তাকে আমার নিদর্শনাবলী দেখানোর জন্য, তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

وَاٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ أَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ دُوْنِيْ وَكِيْلًا ط (٢)

২. আর আমি মূসাকে কিতাব দিয়েছিলাম আর সেটাকে করেছিলাম ইসরাঈল বংশীয়দের জন্য সত্যপথের নির্দেশক। (তাতে নির্দেশ দিয়েছিলাম) যে, আমাকে ছাড়া অন্যকে কর্ম নিয়ন্তা গ্রহণ করো না।

ذُرِّيَّةَ مَنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ط إِنَّهٗ كَانَ عَبْدًا شَكُوْرًا (٣)

৩. (তোমরা তো) তাদের সন্তান! যাদেরকে আমি নূহের সঙ্গে নৌকায় বহন করেয়েছিলাম, সে ছিল এক শুকরগুজার বান্দা।

وَقَضَيْنَآ إِلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ فِي الْكِتٰبِ لَتُفْسِدُنَّ فِي الْأَرْضِ مَرَّتَيْنِ وَلَتَعْلُنَّ عُلُوًّا كَبِيْرًا (٤)

৪. আমি কিতাবের মাধ্যমে বানী ইসরাঈলকে জানিয়ে দিয়েছিলাম যে, তোমরা অবশ্য অবশ্যই পৃথিবীর বুকে দু' দু'বার বিপর্যয় সৃষ্টি করবে আর অবশ্য অবশ্যই অত্যধিক গর্বে ফুলে উঠবে।

فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ أُوْلٰهُمَا بَعَثْنَا عَلَيْكُمْ عِبَادًا لَّنَآ أُولِيْ بَأْسٍ شَدِيْدٍ فَجَاسُوْا خِلٰلَ

৫. অতঃপর যখন দু'টির মধ্যে প্রথমটির সময় এসে উপস্থিত হল, তখন আমি তোমাদের বিরুদ্ধে পাঠিয়ে দিলাম আমার বান্দাদেরকে যারা ছিল যুদ্ধে অতি শক্তিশালী, তারা (তোমাদের) ঘরের কোণায়

১। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যে রাতে রসূলুল্লাহ (ﷺ) -কে বাইতুল মাকদাসে ভ্রমণ করানো হয়, সে রাতে তাঁর সামনে দু'টি পেয়ালা রাখা হয়েছিল। তার একটিতে ছিল শরাব এবং আরেকটিতে ছিল দুধ। তিনি উভয়টির দিকে তাকালেন এবং দুধ বেছে নিলেন। তখন জিবরীল (আঃ) বললেন, সমস্ত প্রশংসা সে আল্লাহ্‌র, যিনি আপনাকে স্বাভাবিক পথ দেখিয়েছেন। যদি আপনি শরাব বেছে নিতেন, তাহলে আপনার উম্মাত অবাধ্য হয়ে যেত। -বুখারী ৪৭০৯ [৩৩৯৪; মুসলিম ১৬৮, ১৭২; তিরমিযী ৩১৩০, নাসায়ী ৫৬৫৭, আহমাদ ২৭৩০৬, ১০২৬৯; দারিমী ২০৮৮]

الدِّيَارِ ؕ وَكَانَ وَعْدًا مَّفْعُوْلًا (٥)

কোণায় ঢুকে পড়ল, আর সতর্কবাণী পূর্ণ হল।

ثُمَّ رَدَدْنَا لَكُمُ الْكَرَّةَ عَلَيْهِمْ وَأَمْدَدْنٰكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَجَعَلْنٰكُمْ أَكْثَرَ نَفِيْرًا (٦)

৬. অতঃপর আমি তোমাদেরকে তাদের উপর বিজয় দান করলাম আর তোমাদেরকে ধন-সম্পদ আর সন্তানাদি দিয়ে সাহায্য করলাম, তোমাদেরকে জনবলে বহুগুণ বাড়িয়ে দিলাম।

إِنْ أَحْسَنْتُمْ أَحْسَنْتُمْ لِأَنْفُسِكُمْ قف وَإِنْ أَسَأْتُمْ فَلَهَا ؕ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ الْأٰخِرَةِ لِيَسُوْٓءُا وُجُوْهَكُمْ وَلِيَدْخُلُوا الْمَسْجِدَ كَمَا دَخَلُوْهُ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّلِيُتَبِّرُوْا مَا عَلَوْا تَتْبِيْرًا (٧)

৭. তোমরা ভাল কাজ করলে নিজেদের কল্যাণের জন্যই তা করবে, আর যদি তোমরা মন্দ কাজ কর, তাও করবে নিজেদেরই জন্য। অতঃপর যখন দ্বিতীয় প্রতিশ্রুতি পূরণের সময় আসলো, (তখন আমি তোমাদের শত্রুদেরকে শক্তি দিলাম) যেন তারা তোমাদের চেহারা বিকৃত করে দেয়, আর মাসজিদে (আকসায়) ঢুকে পড়ে যেভাবে তারা সেখানে প্রথমবার ঢুকে পড়েছিল, আর তাদের সম্মুখে যা পড়ে তাকে সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করে দেয়।

عَسٰى رَبُّكُمْ أَنْ يَّرْحَمَكُمْ ج وَإِنْ عُدْتُّمْ عُدْنَا ۘ وَجَعَلْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ حَصِيْرًا (٨)

৮. (এরপরও) হয়তো তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের প্রতি দয়া করবেন, কিন্তু যদি তোমরা (তোমাদের পূর্বকৃত পাপের) পুনরাবৃত্তি কর, তবে আমিও (পূর্বে দেয়া শাস্তির) পুনরাবৃত্তি করব। ঈমান প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য আমি জাহান্নামকে কারাগার বানিয়ে রেখেছি।

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَهْدِيْ لِلَّتِيْ هِيَ أَقْوَمُ وَيُبَشِّرُ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا كَبِيْرًا لا (٩)

৯. নিশ্চয়ই এ কুরআন সেই পথ দেখায় যা সোজা ও সুপ্রতিষ্ঠিত, আর যারা সৎ কাজ করে সেই মু'মিনদেরকে সুসংবাদ দেয় যে, তাদের জন্য রয়েছে মহা পুরস্কার।

وَّأَنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْأٰخِرَةِ أَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا ع (١٠)

১০. আর (তা সংবাদ দেয় যে) যারা আখেরাতে ঈমান আনে না, তাদের জন্য আমি ভয়ঙ্কর 'আযাব প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَيَدْعُ الْإِنْسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَهٗ بِالْخَيْرِ ؕ وَكَانَ الْإِنْسَانُ عَجُوْلًا (١١)

১১. মানুষ (তার নির্বুদ্ধিতার কারণে কল্যাণকর ভেবে) অকল্যাণ প্রার্থনা করে যেমনভাবে কল্যাণ প্রার্থনা করা উচিত। মানুষ বড়ই তাড়াহুড়াকারী।

وَجَعَلْنَا اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ اللَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا

১২. আমি রাত আর দিনকে দু'টো নিদর্শন বানিয়েছি। আমি রাতের নিদর্শনটিকে জ্যোতিহীন করেছি, আর দিনের নিদর্শনটিকে করেছি আলোয়

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ۗ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ تَفْصِيْلًا (١٢)

উজ্জ্বল যাতে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের অনুগ্রহ অনুসন্ধান করতে পার আর যাতে বছরের সংখ্যা আর হিসাব জানতে পার; আমি সকল বিষয় বিস্তারিতভাবে ব্যাখ্যা করে দিয়েছি।

وَكُلَّ إِنْسَانٍ أَلْزَمْنٰهُ طٰٓئِرَهٗ فِيْ عُنُقِهٖ ۗ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ كِتٰبًا يَّلْقٰهُ مَنْشُوْرًا (١٣)

১৩. আমি প্রত্যেক লোকের ভাগ্য তার কাঁধেই ঝুলিয়ে রেখেছি (অর্থাৎ তার ভাগ্যের ভাল-মন্দের কারণ তার নিজের মধ্যেই নিহিত আছে) আর ক্বিয়ামতের দিন তার জন্য আমি এক কিতাব বের করব যাকে সে উন্মুক্ত অবস্থায় পাবে।

اِقْرَأْ كِتٰبَكَ ۗ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۗ (١٤)

১৪. (তাকে বলা হবে) 'পাঠ কর তোমার কিতাব, আজ তোমার হিসাব নেয়ার ব্যাপারে তুমিই যথেষ্ট।'

مَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ۗ وَمَا كُنَّا مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا (١٥)

১৫. যে সঠিক পথে চলবে সে তার নিজের কল্যাণের জন্যই সঠিক পথে চলবে, আর যে গুমরাহ হবে তার গুমরাহীর পরিণাম তার নিজের উপরেই পড়বে। কোন বোঝা বহনকারী অন্যের বোঝা বহন করবে না। আমি 'আযাব দেই না যতক্ষণ একজন রসূল না পাঠাই।

وَإِذَآ أَرَدْنَآ أَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً أَمَرْنَا مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا (١٦)

১৬. আমি যখন কোন জনবসতিকে ধ্বংস করতে চাই তখন তাদের সচ্ছল ব্যক্তিদেরকে আদেশ করি (আমার আদেশ মেনে চলার জন্য)। কিন্তু তারা অবাধ্যতা করতে থাকে। তখন সে জনবসতির প্রতি আমার 'আযাবের ফায়সালা সাব্যস্ত হয়ে যায়। তখন আমি তা সম্পূর্ণরূপে বিধ্বস্ত করে দেই।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ نُوْحٍ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا (١٧)

১৭. নূহের পর বহু বংশধারাকে আমি ধ্বংস করে দিয়েছি, বান্দাদের পাপকাজের খবর রাখা আর লক্ষ্য রাখার জন্য তোমার প্রতিপালকই যথেষ্ট।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ فِيْهَا مَا نَشَآءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا (١٨)

১৮. যে কেউ নগদ নগদ পেতে চায় তাকে আমি এখানেই জলদি করে দিয়ে দেই যাকে যা দিতে ইচ্ছে করি, অবশেষে তার জন্য জাহান্নাম নির্ধারণ করি। তাতে সে জ্বলবে ধিকৃত ও রহমাত বঞ্চিত অবস্থায়।

وَمَنْ أَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولٰٓئِكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا (١٩)

১৯. আর যে ব্যক্তি আখিরাত কামনা করে আর তার জন্য চেষ্টা করে যতখানি চেষ্টা করা দরকার আর সে মু'মিনও, এরাই হল তারা যাদের চেষ্টা সাধনা সাদরে গৃহীত হবে।

كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَآءِ وَهٰٓؤُلَآءِ مِنْ عَطَآءِ رَبِّكَ ط وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا (٢٠)

২০. তোমার প্রতিপালকের দান থেকে আমি এদেরকে আর ওদেরকে সকলকেই সাহায্য করে থাকি, তোমার প্রতিপালকের দান তো বন্ধ হওয়ার নয়।

اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ط وَلَلْاٰخِرَةُ أَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّأَكْبَرُ تَفْضِيْلًا (٢١)

২১. লক্ষ্য কর, আমি তাদের কতককে অন্যদের উপর কীভাবে শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছি, আর আখিরাত তো নিশ্চয়ই মর্যাদায় সর্বোচ্চ ও গুণে সর্বোত্তম।

لَا تَجْعَلْ مَعَ اللهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ع (٢٢)

২২. আল্লাহ্‌র সাথে অন্য কোন ইলাহ সাব্যস্ত করো না, করলে তিরস্কৃত হতভাগ্য হয়ে পড়ে থাকবে।

وَقَضٰى رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّآ إِيَّاهُ وَبِالْوَالِدَيْنِ إِحْسَانًا ط إِمَّا يَبْلُغَنَّ عِنْدَكَ الْكِبَرَ أَحَدُهُمَآ أَوْ كِلَاهُمَا فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ أُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا (٢٣)

২৩. তোমার প্রতিপালক হুকুম জারি করেছেন যে, তিনি ছাড়া অন্য কারো 'ইবাদাত করো না, আর পিতা-মাতার সঙ্গে সদ্ব্যবহার করো। তাদের একজন বা তাদের উভয়ে যদি তোমার জীবদ্দশায় বার্ধক্যে উপনীত হয়, তবে তাদেরকে বিরক্তি বা অবজ্ঞাসূচক কথা বলো না, আর তাদেরকে ভর্ৎসনা করো না। তাদের সাথে সম্মানজনক কথা বল।

وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ط (٢٤)

২৪. তাদের জন্য সদয়ভাবে নম্রতার বাহু প্রসারিত করে দাও আর বল, 'হে আমার প্রতিপালক! তাদের প্রতি দয়া কর যেমনভাবে তারা আমাকে শৈশবে লালন পালন করেছেন।'

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ط إِنْ

২৫. তোমাদের প্রতিপালক খুব ভাল করেই জানেন তোমাদের অন্তরে কী আছে। তোমরা যদি

২৩। আবূ হুরাইরা (ﷺ) বর্ণনা করেছেন, এক দিন একজন লোক রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর দরবারে হাজির হয়ে আরয করলোঃ হে আল্লাহর নাবী! আমার কাছে সবচেয়ে উত্তম ব্যবহার পাওয়ার অধিকারী কে? তিনি বললেনঃ তোমার মা। লোকটি জিজ্ঞেস করলোঃ তারপর কে? তিনি বললেনঃ তোমার মা। সে লোকটি আবারও প্রশ্ন করলোঃ তারপর কে? তিনি বললেনঃ তারপরও তোমার মা, লোকটি আবারও জিজ্ঞেস করলোঃ তারপর কে? তিনি বললেনঃ তারপর তোমার পিতা। -বুখারী ৫৯৭১ [মুসলিম ২৫৪৮, ইবনু মাজাহ ২৭০৮, ৩৭০২; আহমাদ ৮১৪৪, ৮৮৩৮, ৮৯৬৫]

Contents

تَكُوْنُوْا صَالِحِيْنَ فَإِنَّهٗ كَانَ لِلْأَوَّابِيْنَ غَفُوْرًا (٢٥)

সৎকর্মশীল হও, তবে যারা বার বার তাঁর দিকে ফিরে আসে তিনি তো তাদের প্রতি পরম ক্ষমাশীল।

وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا (٢٦)

২৬. আর আত্মীয়-স্বজনকে তাদের প্রাপ্য অধিকার দাও এবং মিসকীন ও মুসাফিরদেরকেও, আর অপব্যয়ে অপচয় করো না।

إِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا إِخْوَانَ الشَّيَاطِيْنِ ط وَكَانَ الشَّيْطَانُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا (٢٧)

২৭. অপচয়কারীরা শয়তানের ভাই আর শয়তান তো তার প্রতিপালকের প্রতি না-শোকর।

وَإِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا مَّيْسُوْرًا (٢٨)

২৮. তুমি যদি তাদেরকে (অর্থাৎ অভাবী আত্মীয়, মিসকীন ও মুসাফিরদেরকে) পাশ কাটাতে চাও এজন্য যে, তুমি এখনও নিজের জন্য তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ লাভের সন্ধানে ব্যাপৃত যা তুমি প্রত্যাশা কর, এমতাবস্থায় তাদের সঙ্গে নম্রভাবে কথা বল।

وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً إِلٰى عُنُقِكَ وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا (٢٩)

২৯. তোমার হাতকে তোমার গলার সাথে বেঁধে দিও না, আর তা একেবারে প্রসারিত করেও দিওনা, তা করলে তুমি তিরস্কৃত ও নিঃস্ব হয়ে বসে পড়বে।

إِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ط إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًاۢ بَصِيْرًا ع (٣٠)

৩০. তোমার প্রতিপালক যার জন্য ইচ্ছে রিযক্ প্রশস্ত করেন, যার জন্য ইচ্ছে সীমিত করেন, তিনি তাঁর বান্দাদের সম্পর্কে ওয়াকিফহাল, প্রত্যক্ষদর্শী।

২৬। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত, নাবী (ﷺ) বলেন, যে ব্যক্তি আল্লাহ ও শেষ দিনের উপর ঈমান রাখে, সে যেন অবশ্যই তার মেহমানের আদর-ইজ্জত করে এবং যে ব্যক্তি আল্লাহ ও শেষ দিনে ঈমান রাখে, সে যেন অবশ্যই আত্মীয়ের সম্পর্ক বজায় রাখে, আর যে ব্যক্তি আল্লাহ ও শেষ দিনের উপর ঈমান রাখে, সে যেন ভালো কথা বলে, অথবা চুপ থাকে। –বুখারী ৬০১৮ [৩৩৩১, ৫১৮৪, ৫১৮৬, ৬১৩৬, ৬১৩৮, ৬৪৭৫; মুসলিম ৪৭, ১৪৬৮; তিরমিযী ১১৮৮, আহমাদ ৭৫৭১, ৯২৪০; দারিমী ২২২২]

২৭। মুগীরাহ ইবনু শু'বাহ্র লেখক (কেরানী) বলেন, একদা মু'আবিয়াহ (رضي الله عنه) মুগীরাহ ইবনু শু'বাহ্কে লিখলেন, আমাকে এমন কিছু (কথা) লিখে পাঠাও যা তুমি নাবী (ﷺ) থেকে শুনেছ। তিনি (মুগীরা) তাকে লিখলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছিঃ আল্লাহ তোমাদের জন্য তিনটি কাজ অপছন্দ করেন। (১) অতিরিক্ত বা নিরর্থক কথা বলা, (২) সম্পদ ধ্বংস করা, (৩) বেশী বেশী যাচঞা করা। –বুখারী ১৪৭৭ [৮৪৪, ২৪০৮, ৫৯৭৫, ৬৩৩০, ৬৪৭৩, ৬৬১৫, ৭২৯২; মুসলিম ৫৯৩, নাসায়ী ১৩৪১-১৩৪৩, আবূ দাউদ ১৫০৫, ৩০৭৯; আহমাদ ১৭৬৭৩, ১৭৬৮১; দারিমী ১৩৪৯, ২৭৫১]

وَلَا تَقْتُلُوْٓا أَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ إِمْلَاقٍ ط نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَإِيَّاكُمْ ط إِنَّ قَتْلَهُمْ كَانَ خِطْئًا كَبِيْرًا (٣١)

৩১. দরিদ্রতার ভয়ে তোমরা তোমাদের সন্তানদেরকে হত্যা করো না। আমিই তাদেরকে রিয্ক দেই আর তোমাদেরকেও, তাদের হত্যা মহাপাপ।

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى إِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ط وَسَآءَ سَبِيْلًا (٣٢)

৩২. আর যিনা-ব্যভিচারের কাছেও যেও না, তা হচ্ছে অশ্লীল কাজ আর অতি জঘন্য পথ।

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللهُ إِلَّا بِالْحَقِّ ط وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطَانًا فَلَا يُسْرِفْ فِّي الْقَتْلِ ط إِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا (٣٣)

৩৩. যথাযথ কারণ ছাড়া আল্লাহ যাকে হত্যা করা নিষিদ্ধ করেছেন তাকে হত্যা করো না। কাউকে অন্যায়ভাবে হত্যা করা হলে আমি তার উত্তরাধিকারীকে অধিকার দিয়েছি (কিসাস দাবী করার বা ক্ষমা করে দেয়ার) কাজেই সে যেন হত্যার ব্যাপারে সীমালঙ্ঘন না করে, কারণ তাকে তো সাহায্য করা হয়েছে (আইন-বিধান দিয়ে)।

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ إِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ أَشُدَّهٗ ص وَأَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ج إِنَّ الْعَهْدَ كَانَ مَسْئُوْلًا (٣٤)

৩৪. ইয়াতীম বয়োপ্রাপ্ত না হওয়া পর্যন্ত তার সম্পদের কাছেও যেয়ো না সৎ উদ্দেশ্য ব্যতীত। আর ওয়া'দা পূর্ণ কর, ওয়া'দা সম্পর্কে অবশ্যই জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

وَأَوْفُوا الْكَيْلَ إِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ط ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّأَحْسَنُ تَأْوِيْلًا (٣٥)

৩৫. মাপ দেয়ার সময় মাপ পূর্ণমাত্রায় করবে, আর ওজন করবে ত্রুটিহীন দাঁড়িপাল্লায়। এটাই উত্তম নীতি আর পরিণামেও তা উৎকৃষ্ট।

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ط إِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ أُولٰٓئِكَ كَانَ عَنْهُ مَسْئُوْلًا (٣٦)

৩৬. আর সে বিষয়ের পেছনে ছুটো না, যে বিষয়ে তোমার কোন জ্ঞান নেই। কান, চোখ আর অন্তর- এগুলোর সকল বিষয়ে অবশ্যই জিজ্ঞাসাবাদ করা হবে।

৩৬। 'উরওয়াহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু 'আম্র (রাঃ) আমাদের এ দিক দিয়ে হাজ্জে যাচ্ছিলেন। আমি শুনতে পেলাম, তিনি বলেছেন যে, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি, আল্লাহ তা'আলা তোমাদেরকে যে ইল্ম দান করেছেন, তা হঠাৎ করে ছিনিয়ে নেবেন না বরং ইল্মের বাহক উলামায়ে কিরামকে তাদের ইলমসহ ক্রমশ তুলে নেবেন। তখন শুধুমাত্র মূর্খ লোকেরা অবশিষ্ট থাকবে। তাদের কাছে ফাত্ওয়া চাওয়া হবে। তারা মনগড়া ফাত্ওয়া দেবে। ফলে নিজেরাও পথভ্রষ্ট হবে, অন্যদেরকেও পথভ্রষ্ট করবে। 'উরওয়াহ (রহ.) বলেন, আমি এ হাদীসটি নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (রাঃ)-কে বললাম। তারপর 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু আম্র

৩৭. যমীনে গর্বভরে চলাফেরা করো না, তুমি কক্ষনো যমীনকে বিদীর্ণ করতে পারবে না, আর উচ্চতায় পর্বতের ন্যায় হতেও পারবে না।

وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ج إِنَّكَ لَنْ تَخْرِقَ الْأَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ الْجِبَالَ طُوْلًا (٣٧)

৩৮. এগুলোর মধ্যে যে সমস্ত বিষয় মন্দ, তোমার প্রতিপালকের নিকট তা ঘৃণিত।

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ مَكْرُوْهًا (٣٨)

৩৯. এসব সেই হিকমাতের অন্তর্ভুক্ত যা তোমার প্রতিপালক তোমার প্রতি ওয়াহী করেছেন। আল্লাহ্‌র সঙ্গে অপর কোন ইলাহ স্থির করো না, করলে তুমি নিন্দিত ও যাবতীয় কল্যাণ বঞ্চিত হয়ে জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত হবে।

ذٰلِكَ مِمَّآ أَوْحٰى إِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ الْحِكْمَةِ ط وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَتُلْقٰى فِيْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا (٣٩)

৪০. তাহলে কি (হে কাফিরগণ!) তোমাদের জন্য তোমাদের প্রতিপালক সন্তান নির্বাচিত করেছেন, আর নিজের জন্য ফেরেশতাদের মধ্য হতে কন্যা গ্রহণ করেছেন? বাস্তবিকই তোমরা বড় ভয়ানক কথা বলছো।

أَفَأَصْفَاكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِيْنَ وَاتَّخَذَ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ إِنَاثًا ط إِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ قَوْلًا عَظِيْمًا ع (٤٠)

৪১. আমি এ কুরআনে নানাভাবে (বিষয়াবলী) ব্যাখ্যা করেছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে, কিন্তু তা তাদের (সত্য হতে) পলায়নের মনোবৃত্তিই বৃদ্ধি করেছে।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِيَذَّكَّرُوْا ط وَمَا يَزِيْدُهُمْ إِلَّا نُفُوْرًا (٤١)

৪২. বল- তাঁর সঙ্গে যদি আরো ইলাহ থাকত যেমন তারা বলে, তাহলে তারা অবশ্যই আরশের মালিকের নিকট পৌঁছার জন্য পথের সন্ধান করত।

قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗٓ اٰلِهَةٌ كَمَا يَقُوْلُوْنَ إِذًا لَّابْتَغَوْا إِلٰى ذِي الْعَرْشِ سَبِيْلًا (٤٢)

৪৩. তিনি পবিত্র ও অতি উচ্চ, তারা যা বলে তাথেকে অনেক অনেক ঊর্ধ্বে।

سُبْحَانَهٗ وَتَعَالٰى عَمَّا يَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا (٤٣)

৪৪. সাত আসমান, যমীন আর এগুলোর মাঝে যা আছে সব কিছুই তাঁর মহিমা ঘোষণা করে। এমন কোন জিনিসই নেই যা তাঁর প্রশংসাসহ পবিত্রতা

تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ط وَإِنْ مِّنْ شَيْءٍ إِلَّا يُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ

(রাঃ) পুনরায় হাজ্জ করতে এলেন। তখন 'আয়িশাহ (রাঃ) আমাকে বললেন, হে ভাগ্নে! তুমি 'আবদুল্লাহ্‌র কাছে যাও এবং তার থেকে যে হাদীসটি তুমি আমাকে বর্ণনা করেছিলে, তার সত্যাসত্য পুনরায় তাঁর নিকট থেকে যাচাই করে আস। আমি তাঁর নিকট গেলাম এবং জিজ্ঞেস করলাম। তিনি আমাকে ঠিক সে রূপই বর্ণনা করলেন, যেরূপ পূর্বে বর্ণনা করেছিলেন। আমি 'আয়িশাহ (রাঃ)-র কাছে ফিরে এসে এ কথা জানালাম। তিনি আশ্চর্য হয়ে গেলেন এবং বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! 'আবদুল্লাহ্ ইবনু আম্‌র (রাঃ) ঠিকই স্মরণ রেখেছে। -বুখারী ৭৩০৭ [১০০০; মুসলিম ২৬৭৩, তিরমিযী ২৬৫২, ইবনু মাজাহ ৫২, আহমাদ ৬৪৭৫, ৬৭৪৮, ৬৮৫৭; দারিমী ২৩৯]

وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ تَسْبِيْحَهُمْ ط إِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا (٤٤)

ও মহিমা ঘোষণা করে না। কিন্তু তোমরা বুঝতে পার না কীভাবে তারা তাঁর মহিমা ঘোষণা করে। তিনি পরম সহিষ্ণু, বড়ই ক্ষমাপরায়ণ।

وَإِذَا قَرَأْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَيْنَكَ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ حِجَابًا مَّسْتُوْرًا لا (٤٥)

৪৫. তুমি যখন কুরআন পাঠ কর তখন আমি তোমার আর যারা আখেরাতে বিশ্বাস করে না তাদের মাঝে একটা অদৃশ্য পর্দা স্থাপন ক'রে দিয়েছি।

وَجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ط وَإِذَا ذَكَرْتَ رَبَّكَ فِي الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰٓى أَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا (٤٦)

৪৬. আর আমি তাদের অন্তরের উপর এক আবরণ দিয়ে দিয়েছি যাতে তারা কুরআন বুঝতে না পারে, আর তাদের কানে সৃষ্টি করেছি বধিরতা। আর যখন তুমি কুরআনে তোমার প্রতিপালকের একত্বের উল্লেখ কর, তখন তারা (সত্য থেকে) পালিয়ে পিছনে মুখ ঘুরিয়ে নেয়।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَسْتَمِعُوْنَ بِهٖٓ إِذْ يَسْتَمِعُوْنَ إِلَيْكَ وَإِذْ هُمْ نَجْوٰٓى إِذْ يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ إِنْ تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا (٤٧)

৪৭. আমি ভাল করেই জানি তারা কান লাগিয়ে কী শুনে যখন তারা তোমার কথা কান লাগিয়ে শুনে। আর যখন তারা গোপনে পরস্পর আলোচনায় বসে তখন যালিমরা বলে, 'তোমরা তো কেবল এক যাদুগ্রস্ত লোকের অনুসরণ করে চলেছ।'

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا (٤٨)

৪৮. লক্ষ্য কর, তারা তোমার সম্পর্কে কেমন সব উদাহরণ দিচ্ছে! যার ফলে তারা পথহারা হয়ে গেছে আর তারা কক্ষনো পথ পাবে না।

وَقَالُوْٓا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا (٤٩)

৪৯. তারা বলে, 'কী! আমরা হাড্ডি আর ধূলা-মাটিতে পরিণত হওয়ার পর কি এক নতুন সৃষ্টিরূপে উত্থিত হব?'

قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً أَوْ حَدِيْدًا لا (٥٠)

৫০. বল, 'তোমরা যদি পাথর কিংবা লোহাও হয়ে যাও,

أَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ج فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ط قُلِ الَّذِيْ فَطَرَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ج فَسَيُنْغِضُوْنَ إِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ط قُلْ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا (٥١)

৫১. অথবা এমন কিছু যা তোমাদের ধারণায় (জীবিত হওয়া) খুবই কঠিন (তবুও তোমাদেরকে উঠানো হবে)।' তারা বলবে, 'কে আছে এমন যে আমাদেরকে পুনরায় জীবনে ফিরিয়ে আনবে?' বল, 'তিনিই যিনি তোমাদেরকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন।' তখন তারা (ঠাট্টার ছলে) তোমার সামনে মাথা নাড়বে আর বলবে, 'সেটা কখন ঘটবে?' বল, 'হতে পারে সেটা শীঘ্রই ঘটবে।'

৫২. যে দিন তিনি তোমাদেরকে ডাকবেন আর তোমরা তাঁর প্রশংসা করতে করতে তাঁর ডাকে সাড়া দিবে আর তোমরা ধারণা করবে যে, তোমরা খুব অল্প সময়ই অবস্থান করেছিলে।

يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ وَتَظُنُّوْنَ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا ع (٥٢)

৫৩. আমার বান্দাদেরকে বলতে বল এমন কথা যা খুবই উত্তম। শয়তান মানুষের মাঝে ঝগড়া-বিভেদ-বিশৃঙ্খলা সৃষ্টি করে, শয়তান হল মানুষের প্রকাশ্য দুশমন।

وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ ط إِنَّ الشَّيْطَانَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ط إِنَّ الشَّيْطَانَ كَانَ لِلْإِنْسَانِ عَدُوًّا مُّبِيْنًا (٥٣)

৫৪. তোমাদের প্রতিপালক তোমাদেরকে খুব ভাল ক'রেই জানেন। তিনি ইচ্ছে করলে তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ করবেন, আর ইচ্ছে করলে তোমাদেরকে শাস্তি দেবেন; আমি তোমাকে (হে নাবী!) তাদের কাজকর্মের জন্য দায়িত্বশীল করে পাঠাইনি।

رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِكُمْ ط إِنْ يَّشَأْ يَرْحَمْكُمْ أَوْ إِنْ يَّشَأْ يُعَذِّبْكُمْ ط وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا (٥٤)

৫৫. আসমান আর যমীনে যারা আছে তোমার প্রতিপালক তাদেরকে ভাল ক'রেই জানেন। আমি নাবীগণের কতককে অন্যদের উপর মর্যাদা দান করেছি আর দাঊদকে দিয়েছি যাবূর।

وَرَبُّكَ أَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ عَلٰى بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا (٥٥)

৫৬. বল, 'তোমরা আল্লাহ ছাড়া যাদেরকে ইলাহ মনে কর তাদেরকে ডাক, (ডাকলেও দেখতে পাবে) তারা তোমাদের দুঃখ-বেদনা দূর করতে বা বদলাতে সক্ষম নয়।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ وَلَا تَحْوِيْلًا (٥٦)

৫৭. তারা যাদেরকে ডাকে তারা নিজেরাই তো তাদের প্রতিপালকের নিকট পৌঁছার পথ অনুসন্ধান করে যে, কে তাঁর অধিক নিকটবর্তী হতে পারবে, আর তাঁর দয়া প্রত্যাশা করে এবং তাঁর শাস্তিকে ভয় করে। তোমার প্রতিপালকের

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ إِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ط إِنَّ عَذَابَ

৫৫। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, দাঊদ (আঃ)-এর ওপর (যাবূর) পড়া এত সহজ করে দেয়া হয়েছিল যে, তিনি তার সওয়ারীর উপর জিন বাঁধার জন্য আদেশ দিতেন; জিন বাঁধা শেষ হওয়ার পূর্বেই তিনি তার উপর যা অবতীর্ণ তা পড়ে ফেলতেন। -বুখারী ৪৭১৩ [২০৭৩; আহমাদ ২৭৩৭৭]

رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا (٥٧)

শাস্তি তো ভয় করার মতই।

وَإِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ إِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ يَوْمِ الْقِيَامَةِ أَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ط كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا (٥٨)

৫৮. এমন কোন জনবসতি নেই যাকে আমি ক্বিয়ামাত দিনের পূর্বে ধ্বংস করব না কিংবা তাকে কঠিন শাস্তি দিব না, এটা (আল্লাহ্‌র) কিতাবে লিপিবদ্ধ আছে।

وَمَا مَنَعَنَآ أَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ إِلَّآ أَنْ كَذَّبَ بِهَا الْأَوَّلُوْنَ ط وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا وَمَا نُرْسِلُ بِالْاٰيٰتِ إِلَّا تَخْوِيْفًا (٥٩)

৫৯. আমি নিদর্শন প্রেরণ করা হতে এজন্য বিরত থাকি যে, পূর্বের লোকেরা তা মিথ্যা মনে ক'রে প্রত্যাখ্যান করেছিল। আমি সামূদ জাতির নিকট উষ্ট্রী পাঠিয়েছিলাম এক প্রত্যক্ষ নিদর্শন হিসেবে কিন্তু তারা তার প্রতি যুল্‌ম করল; ভয় প্রদর্শনের উদ্দেশেই কেবল আমি নিদর্শন পাঠিয়ে থাকি।

وَإِذْ قُلْنَا لَكَ إِنَّ رَبَّكَ أَحَاطَ بِالنَّاسِ ط وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِيْٓ أَرَيْنٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ فِي الْقُرْاٰنِ ط وَنُخَوِّفُهُمْ لا فَمَا يَزِيْدُهُمْ إِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ع (٦٠)

৬০. স্মরণ কর, আমি তোমাকে বলেছিলাম যে, তোমার রব্ব মানুষদেরকে ঘিরে রেখেছেন। আমি তোমাকে (মি'রাজের মাধ্যমে) যে দৃশ্য দেখিয়েছি তা এবং কুরআনে উল্লেখিত অভিশপ্ত (জাক্কুম) গাছটিও মানুষদেরকে পরীক্ষা করার জন্য (যে কারা তা বিশ্বাস ক'রে নেক্কার হয় আর কারা তা অবিশ্বাস ক'রে পাপী হয়)। আমি তাদেরকে ভয় দেখাই ও সাবধান করি, কিন্তু তাতে তাদের চরম অবাধ্যতাই বৃদ্ধি পায়।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا إِلَّآ إِبْلِيْسَ ط قَالَ ءَأَسْجُدُ لِمَنْ

৬১. স্মরণ কর, যখন আমি ফেরেশতাগণকে বলেছিলাম, 'আদামকে সাজদাহ কর তখন ইবলিশ ছাড়া সবাই তাকে সাজদাহ করল। সে বলেছিল, 'আমি কি তাকে সাজদাহ করব যাকে তুমি মাটি

৫৭। 'আবদুল্লাহ্ (ﷺ) أُولٰـئِكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ إِلٰى رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ এ আয়াতটি সম্পর্কে বলেন, কিছু লোক জিনের পূজা করত। পরে জিনগুলো ইসলাম ধর্ম গ্রহণ করল। তাদের ব্যাপারে এ আয়াত নাযিল হয়েছে। –বুখারী ৪৭১৫ [৪৭১৪; মুসলিম ৩০৩০]

৬০। ইব্‌নু 'আব্বাস (ﷺ) وَمَا جَعَلْنَا الرُّؤْيَا الَّتِيْٓ أَرَيْنٰكَ إِلَّا فِتْنَةً لِّلنَّاسِ এ আয়াত সম্পর্কে বলেন, এ আয়াতে رُؤْيَا (স্বপ্নে দেখা নয়, বরং) চোখ দ্বারা সরাসরি দেখা বোঝানো হয়েছে, যা রসূলুল্লাহ্ ﷺ-কে মি'রাজের রাতে সরাসরি দেখানো হয়েছিল। আর এখানে الشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ (অভিশপ্ত বৃক্ষ) বলতে 'যাক্কুম'৮ বৃক্ষ বোঝানো হয়েছে। –বুখারী ৪৭১৬ [৩৮৮৮; তিরমিযী ৩১৩৪, আহমাদ ১৯১৯, ৩৪৯০]

خَلَقْتَ طِينًا ج (٦١)

থেকে পয়দা করেছ?'

قَالَ أَرَأَيْتَكَ هَٰذَا الَّذِي كَرَّمْتَ عَلَيَّ ز لَئِنْ أَخَّرْتَنِ إِلَىٰ يَوْمِ الْقِيَامَةِ لَأَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهُ إِلَّا قَلِيلًا (٦٢)

৬২. সে বলল, 'আপনি কি ব্যাপারটা খেয়াল করেছেন যে, আপনি এ ব্যক্তিকে আমার উপর সম্মান দিচ্ছেন! আপনি যদি আমাকে ক্বিয়ামাতের দিন পর্যন্ত সময় দেন, তাহলে আমি অল্প কিছু বাদে তার বংশধরদেরকে অবশ্য অবশ্যই আমার কর্তৃত্বাধীনে এনে ফেলব।'

قَالَ اذْهَبْ فَمَن تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَإِنَّ جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُورًا (٦٣)

৬৩. আল্লাহ্ বললেন, 'যাও, তাদের মধ্যে যারা তোমাকে মেনে চলবে, জাহান্নামই হবে তোমাদের সকলের প্রতিফল, পূর্ণ প্রতিফল।

وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُم بِصَوْتِكَ وَأَجْلِبْ عَلَيْهِم بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ وَعِدْهُمْ ط وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطَانُ إِلَّا غُرُورًا (٦٤)

৬৪. তাদের মধ্যে তুমি যাকে পার উস্কে দাও তোমার কথা দিয়ে, তোমার অশ্বারোহী আর পদাতিক বাহিনী দিয়ে তুমি আক্রমণ চালাও, আর তাদের ধন-সম্পদ ও সন্তানাদিতে ভাগ বসিয়ে দাও (যথেচ্ছভাবে সম্পদ উপার্জন ও ব্যয় করার পরামর্শ দিয়ে আর সন্তান কামনা ও প্রতিপালনে আল্লাহ্র বিধান লঙ্ঘনের উপদেশ দিয়ে) আর তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দাও।' শয়তান তাদেরকে যে প্রতিশ্রুতি দেয় তাতো ছলনা ছাড়া আর কিছুই নয়।

إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطَانٌ ط وَكَفَىٰ بِرَبِّكَ وَكِيلًا (٦٥)

৬৫. 'আমার বান্দাহ্দের ব্যাপার হল, তাদের উপর তোমার কোন আধিপত্য চলবে না।' কর্ম সম্পাদনে তোমার প্রতিপালকই যথেষ্ট।

رَّبُّكُمُ الَّذِي يُزْجِي لَكُمُ الْفُلْكَ فِي الْبَحْرِ لِتَبْتَغُوا مِن فَضْلِهِ ط إِنَّهُ كَانَ بِكُمْ رَحِيمًا (٦٦)

৬৬. তোমাদের (প্রকৃত) প্রতিপালক তো তিনিই, যিনি সমুদ্রে তোমাদের জন্য সুস্থিরভাবে নৌযান পরিচালনা করেন, যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার, তিনি তোমাদের প্রতি বড়ই দয়ালু।

وَإِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَن تَدْعُونَ إِلَّآ إِيَّاهُ ج فَلَمَّا نَجَّاكُمْ إِلَى الْبَرِّ أَعْرَضْتُمْ ط وَكَانَ الْإِنسَانُ كَفُورًا (٦٧)

৬৭. সমুদ্রে যখন বিপদ তোমাদেরকে পেয়ে বসে, তখন তাঁকে ছাড়া অন্য যাদেরকে তোমরা (উপাস্য ভেবে) আহ্বান কর তারা (তখন তোমাদের মন থেকে) হারিয়ে যায়। অতঃপর তিনি যখন তোমাদেরকে স্থলে এনে বাঁচিয়ে দেন, তখন তোমরা মুখ ফিরিয়ে নাও। মানুষ হল বড়ই অকৃতজ্ঞ।

أَفَأَمِنتُمْ أَن يَخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ

৬৮. তোমরা কি নির্ভয় হয়ে গেছ যে তিনি

Contents

أَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ وَكِيْلًا لا (٦٨)

তোমাদেরকে স্থলভাগেই যমীনের মধ্যে ধ্বসিয়ে দিবেন না, কিংবা তোমাদের উপর শিলা বর্ষণকারী ঝড়ো হাওয়া পাঠাবেন না? এমতাবস্থায় তোমাদের রক্ষাকারী কাউকে তোমরা পাবে না।

أَمْ أَمِنْتُمْ أَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً أُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ لا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا (٦٩)

৬৯. তোমরা কি ভয়হীন হয়ে গেছ যে, তিনি তোমাদেরকে আরেকবার সমুদ্রে নিয়ে যাবেন না আর তোমাদের উপর প্রচণ্ড ঝড়ো হাওয়া পাঠাবেন না আর তোমাদের অকৃতজ্ঞতার কারণে তোমাদেরকে ডুবিয়ে দেবেন না? তখন তোমরা আমার বিরুদ্ধে কোন সাহায্যকারী পাবে না।

وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰى كَثِيْرٍ مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ع (٧٠)

৭০. আমি আদাম সন্তানকে সম্মানিত করেছি, তাদের জন্য জলে স্থলে যানবাহনের ব্যবস্থা করেছি, তাদেরকে পবিত্র রিয্ক দিয়েছি আর আমি তাদেরকে আমার অধিকাংশ সৃষ্টির উপর মর্যাদায় শ্রেষ্ঠত্ব দান করেছি।

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ أُنَاسٍۭ بِإِمَامِهِمْ ج فَمَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَأُولٰٓئِكَ يَقْرَأُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا (٧١)

৭১. স্মরণ কর, যেদিন আমি সকল সম্প্রদায়কে তাদের নেতাসহ ডাকব, অতঃপর যাদেরকে তাদের 'আমলনামা ডান হাতে দেয়া হবে, তারা তাদের 'আমালনামা পাঠ করবে (আনন্দচিত্তে) আর তাদের প্রতি এতটুকু যুল্ম করা হবে না।

وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ أَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ أَعْمٰى وَأَضَلُّ سَبِيْلًا (٧٢)

৭২. যে ব্যক্তি এখানে (সত্য পথ দেখার ব্যাপারে) অন্ধ, সে আখেরাতেও হবে অন্ধ, আর সঠিক পথ থেকে অধিক বিচ্যুত।

وَإِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ق صلے وَإِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا (٧٣)

৭৩. আমি তোমার প্রতি যে ওয়াহী করেছি তাত্থেকে তোমাকে পদস্খলিত করার জন্য তারা চেষ্টার কোন ত্রুটি করেনি যাতে তুমি আমার সম্বন্ধে তার (অর্থাৎ নাযিলকৃত ওয়াহীর) বিপরীতে মিথ্যা রচনা কর, তাহলে তারা তোমাকে অবশ্যই বন্ধু বানিয়ে নিত।

وَلَوْلَآ أَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ إِلَيْهِمْ شَيْئًا قَلِيْلًا لا ق (٧٤)

৭৪. আমি তোমাকে দৃঢ় প্রতিষ্ঠিত না রাখলে তুমি তাদের দিকে কিছু না কিছু ঝুঁকেই পড়তে।

إِذًا لَّأَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ وَضِعْفَ

৭৫. তুমি তা করলে আমি তোমাকে এ দুনিয়ায়

Contents

الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا نَصِيْرًا (٧٥)

দ্বিগুণ আর পরকালেও দ্বিগুণ 'আযাবের স্বাদ আস্বাদন করাতাম। সে অবস্থায় তুমি তোমার জন্য আমার বিরুদ্ধে কোন সাহায্যকারী পেতে না।

وَإِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْأَرْضِ لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَإِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ خِلَافَكَ إِلَّا قَلِيْلًا (٧٦)

৭৬. তারা তোমাকে যমীন থেকে উৎখাত করতে চেয়েছিল যাতে তারা তোমাকে তাথেকে বের করে দিতে পারে, সেক্ষেত্রে তারা এখানে তোমার পরে খুব অল্পকালই টিকে থাকত।

سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ع (٧٧)

৭৭. তোমার পূর্বে আমি আমার যে সব রসূল পাঠিয়েছিলাম তাদের ক্ষেত্রে এটাই ছিল নিয়ম আর তুমি আমার নিয়মের কোন পরিবর্তন দেখতে পাবে না।

أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ إِلٰى غَسَقِ اللَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ط إِنَّ قُرْاٰنَ الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا (٧٨)

৭৮. সূর্য পশ্চিমে ঢলে পড়ার সময় হতে রাত্রির গাঢ় অন্ধকার পর্যন্ত নামায প্রতিষ্ঠা কর, আর ফাজ্‌রের সলাতে কুরআন পাঠ (করার নীতি অবলম্বন কর), নিশ্চয়ই ফাজ্‌রের সলাতের কুরআন পাঠ (ফেরেশতাগণের) সরাসরি সাক্ষ্য হয়।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ق صلے عَسٰۤى أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا (٧٩)

৭৯. আর রাত্রির কিছু অংশে তাহাজ্জুদ পড়, ওটা তোমার জন্য নফল, শীঘ্রই তোমার প্রতিপালক তোমাকে প্রশংসিত স্থানে উন্নীত করবেন।

وَقُلْ رَّبِّ أَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ

৮০. বল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমাকে (যেখানেই) প্রবেশ করাও, (সেটা কর) সত্য ও

৭৮। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্‌ (ﷺ) বলেছেন, জামা'আতের সঙ্গে নামায আদায় করার ফাযীলাত একাকী নামায পড়ার চেয়ে পঁচিশ গুণ বেশী। আর ফাজ্‌রের সলাতে রাতের ফেরেশতা এবং দিনের ফেরেশতা সমবেত হয় (এ প্রসঙ্গে) আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) বলেন, তোমরা ইচ্ছা করলে এ আয়াতটি পড়ে নিতে পার। وَقُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ إِنَّ قُرْءَانَ ٱلْفَجْرِ كَانَ مَشْهُودًا (নিশ্চয় কায়িম করবে) "ফাজ্‌রের নামায, ফাজ্‌রের নামায" সাক্ষ্য হিসেবে পেশ করা হয়। –বুখারী ৪৭১৭ [১৭৬; মুসলিম ৬৪৯, তিরমিযী ২১৫, ২১৬; নাসায়ী ৭৩৩, ৭৩৮, আবু দাউদ ৪৬৯-৪৭১, ৫৫৯, ৭৮৬, ৭৮৭; আহমাদ ৭১৪৫, ৭৩৬৭; মুওয়াত্তা ২৯১, ৩৮২, ৩৮৩, ৩৮৫; দারিমী ১২৭৬]

৭৯। ইব্‌নু 'উমার (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নিশ্চয়ই ক্বিয়ামাতের দিন লোকেরা ভিন্ন ভিন্ন দলে বিভক্ত হয়ে পড়বে। প্রত্যেক নাবীর উম্মাত স্বীয় নাবীর অনুসরণ করবে। তারা বলবেঃ হে অমুক (নাবী)! আপনি সুপারিশ করুন। হে অমুক (নাবী)! আপনি সুপারিশ করুন। (কেউ সুপারিশ করতে চাইবেন না)। শেষ পর্যন্ত সুপারিশের দায়িত্ব নাবী মুহাম্মাদ (ﷺ) -এর উপর পড়বে। আর এ দিনেই আল্লাহ্‌ তা'আলা তাঁকে মাকামে মাহমূদ-এ পৌঁছাবেন। –বুখারী ৪৭১৮ [১৪৭৫; মুসলিম ১০৪০, নাসায়ী ২৫৮৫, আহমাদ ৪৬২৪, ৫৫৮৪]

وَّأَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطَانًا نَّصِيْرًا (٨٠)

সম্মানের প্রবেশ, আর আমাকে (যেখান হতেই) বের কর, (সেটা কর) সত্য ও সম্মানের বহির্গমন, আর তোমার নিকট হতে আমাকে এক সাহায্যকারী শক্তি দান কর।

وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ط إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا (٨١)

৮১. বল, 'সত্য এসে গেছে আর মিথ্যা বিলুপ্ত হয়েছে, মিথ্যা তো বিলুপ্ত হওয়ারই।'

وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ لا وَلَا يَزِيْدُ الظَّالِمِيْنَ إِلَّا خَسَارًا (٨٢)

৮২. আমি কুরআন হতে (ক্রমশঃ) অবতীর্ণ করি যা মু'মিনদের জন্য আরোগ্য ও রহমাত, কিন্তু তা যালিমদের ক্ষতিই বৃদ্ধি করে।

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ج وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَؤُوْسًا (٨٣)

৮৩. আমি যখন মানুষের প্রতি অনুগ্রহ বর্ষণ করি তখন সে মুখ ফিরিয়ে নেয়, আর অহঙ্কারে দূরে সরে পড়ে; কিন্তু যখন অমঙ্গল তাকে স্পর্শ করে তখন সে নিরাশ হয়ে যায়।

قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ط فَرَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدٰى سَبِيْلًا ع (٨٤)

৮৪. বল, 'প্রত্যেকেই স্বীয় রীতি-পন্থা অনুযায়ী কাজ করে। এখন তোমার রব্বই ভাল জানেন কে চলার পথে অধিকতর সঠিক পথে আছে।

وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ط قُلِ الرُّوْحُ مِنْ أَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ أُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيْلًا (٨٥)

৮৫. তোমাকে তারা রূহ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করে। বল, 'রূহ হচ্ছে আমার প্রতিপালকের হুকুমের অন্তর্ভুক্ত (একটি হুকুম)। এ সম্পর্কে তোমাকে অতি সামান্য জ্ঞানই দেয়া হয়েছে।'

৮১। 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু মাস'উদ (ﷺ) হতে বর্ণিত। (মক্কাহ বিজয়ের দিন) রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) যখন মক্কাহ্য় প্রবেশ করলেন, তখন কা'বা ঘরের চারপাশে তিনশ' ষাটটি মূর্তি ছিল। তখন তিনি তাঁর হাতের ছড়ি দিয়ে এগুলোকে ঠোকা দিতে লাগলেন এবং বলতে থাকলেন, "সত্য এসেছে আর এবং মিথ্যা বিলুপ্ত হয়েছে। মিথ্যা তো বিলুপ্ত হওয়ারই।" "সত্য এসেছে আর অসত্য না পারে নতুন কিছু সৃষ্টি করতে এবং না পারে পুনরাবৃত্তি করতে।"–বুখারী ৪৭২০ [২৪৭৮; মুসলিম ১৭৮১, তিরমিযী ৩১৩৮, আহমাদ ৩৫৭৪]

১২ ৮৪। 'উমার (ﷺ) হতে বর্ণিত। আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেনঃ কর্মসমূহ সংকল্পের সাথে সম্পৃক্ত এবং প্রতিটি মানুষের প্রাপ্য তার সংকল্প অনুযায়ী। কাজেই যার হিজরাত হবে আল্লাহ্ ও তদীয় রসূলের উদ্দেশে, তার হিজরাত আল্লাহ্ ও তদীয় রসূলের উদ্দেশে হয়েছে বলেই ধরা হবে। আর যার হিজরাত হয় দুনিয়া অর্জনের জন্য বা কোন নারীকে বিবাহ করার উদ্দেশে, তার হিজরাত সে উদ্দেশেই হবে যে উদ্দেশে সে হিজরাত করেছে।–বুখারী ৫৪ [১; মুসলিম ১৯০৭, তিরমিযী ১৬৪৭, নাসায়ী ৭৫, ৩৪৩৭, ৩৭৯৪; আবূ দাউদ ২২০১, ইবনু মাজাহ ৪২২৭, আহমাদ ১৬৯, ৩০২]

৮৫। 'আবদুল্লাহ্ বিন মাস'উদ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা আমি রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর সঙ্গে একটি ক্ষেতের মাঝে উপস্থিত ছিলাম। তিনি একটি খেজুরের লাঠিতে ভর করে দাঁড়িয়েছিলেন। এমন সময় কিছু সংখ্যক ইয়াহূদী যাচ্ছিল। তারা একে অন্যকে বলতে লাগল, তাঁকে রূহ সম্পর্কে জিজ্ঞেস কর। কেউ বলল, কেন তাকে জিজ্ঞেস করতে চাইছ? আবার কেউ বলল, তিনি এমন উত্তর দিবেন না, যা তোমরা অপছন্দ কর। তারপর তারা বলল

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَيْنَا وَكِيْلًا ۙ (٨٦)

৮৬. ইচ্ছে করলে আমি তোমার প্রতি যা ওয়াহী করেছি তা কেড়ে নিতে পারতাম, সে অবস্থায় তুমি আমার বিরুদ্ধে তোমার জন্য কোন কার্য সম্পাদনকারী পাবে না

إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ؕ إِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ عَلَيْكَ كَبِيْرًا (٨٧)

৮৭. তোমার প্রতিপালকের দয়া ছাড়া। তোমার প্রতি তাঁর অনুগ্রহ (সত্যিই) বিরাট।

قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلٰٓى أَنْ يَّأْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لَا يَأْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ ظَهِيْرًا (٨٨)

৮৮. বল, 'এ কুরআনের মত একখানা কুরআন আনার জন্য যদি সমগ্র মানব আর জ্বীন একত্রিত হয় তবুও তারা তার মত আনতে পারবে না, যদিও তারা পরস্পর পরস্পরকে সাহায্য ও সহযোগিতা করে।'

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ز فَأَبٰٓى أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُوْرًا (٨٩)

৮৯. আমি এ কুরআনে মানুষের জন্য যাবতীয় দৃষ্টান্ত বিস্তারিতভাবে বর্ণনা করেছি, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই ঈমান গ্রহণ করতে অস্বীকার করে কেবল কুফরিই করল।

وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْأَرْضِ يَنْۢبُوْعًا ۙ (٩٠)

৯০. তারা বলে, 'আমরা তোমার প্রতি কক্ষনো ঈমান আনব না যে পর্যন্ত তুমি আমাদের জন্য যমীন থেকে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত না করবে।

أَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْأَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِيْرًا ۙ (٩١)

৯১. কিংবা (যতক্ষণ না) তোমার খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান হবে যার ফাঁকে ফাঁকে তুমি ঝর্ণা প্রবাহিত করবে অজস্র ধারায়।

أَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا أَوْ تَأْتِيَ بِاللهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِيْلًا ۙ (٩٢)

৯২. অথবা (যতক্ষণ না) তুমি আকাশকে টুকরো টুকরো করে আমাদের উপর ফেলবে যেমন তুমি বলে থাক (যে তা ঘটবে) কিংবা আল্লাহ্ আর ফেরেশতাগণকে সরাসরি আমাদের সামনে এনে দেবে।

أَوْ يَكُوْنَ لَكَ بَيْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ أَوْ تَرْقٰى

৯৩. কিংবা (যতক্ষণ না) তোমার একটা স্বর্ণখচিত গৃহ হবে কিংবা তুমি আসমানে আরোহণ করবে।

যে, তাঁকে প্রশ্ন কর। এরপরে তাঁকে রূহ সম্পর্কে প্রশ্ন করল। তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) (উত্তরদানে) বিরত থাকলেন, এ সম্পর্কে তাদের কোন উত্তর দিলেন না। (বর্ণনাকারী বলছেন) আমি বুঝতে পারলাম, তাঁর ওপর ওয়াহী অবতীর্ণ হবে। আমি আমার জায়গায় দাঁড়িয়ে রইলাম। তারপর যখন ওয়াহী অবতীর্ণ হল, তখন তিনি [রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)] বললেন, "আর তারা আপনাকে 'রূহ' সম্পর্কে প্রশ্ন করে। আপনি বলে দিনঃ রূহ আমার রবের আদেশের অন্তর্ভুক্ত। এ বিষয়ে তোমাদেরকে খুব সামান্যই জ্ঞান দেয়া হয়েছে।" −বুখারী ৪৭২১ [১২৫; মুসলিম ২৭৯৪, তিরমিযী ৩১৪১, আহমাদ ৩৬৮০, ৩৮৮৮, ৪২৩৬]

Contents

আর তোমার এ আরোহণকেও আমরা কক্ষনো বিশ্বাস করব না যতক্ষণ না তুমি আমাদের প্রতি এক কিতাব অবতীর্ণ করবে যা আমরা পাঠ করব।' বল, 'আমি আমার প্রতিপালকের মহিমা ও পবিত্রতা ঘোষণা করছি, আমি একজন মানুষ রসূল ছাড়া কি অন্য কিছু?

فِي السَّمَآءِ ط وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗ ط قُلْ سُبْحَانَ رَبِّيْ هَلْ كُنْتُ إِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا ع (٩٣)

৯৪. মানুষের কাছে যখন পথের নির্দেশ আসে তখন তাদেরকে ঈমান আনতে তাদের এ কথা ছাড়া অন্য কিছুই বিরত রাখে না যে, 'আল্লাহ কি মানুষকে রসূল বানিয়ে পাঠিয়েছেন?'

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُّؤْمِنُوْٓا إِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰٓى إِلَّآ أَنْ قَالُوْٓا أَبَعَثَ اللّٰهُ بَشَرًا رَّسُوْلًا (٩٤)

৯৫. বল, 'দুনিয়াতে যদি ফেরেশতাগণের বসবাস হত যারা নিশ্চিন্তে নিরাপদে চলাফেরা করত, তাহলে অবশ্যই আমি তাদের কাছে ফেরেশতা রসূল পাঠাতাম।'

قُلْ لَّوْ كَانَ فِي الْأَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ يَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّيْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا (٩٥)

৯৬. বল, 'আমার ও তোমাদের মাঝে আল্লাহ্‌র সাক্ষ্যই যথেষ্ট, তিনি তাঁর বান্দাদের সম্পর্কে পুরোপুরি ওয়াকিফহাল, আর তিনি সর্বদ্রষ্টা।'

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ط إِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا (٩٦)

৯৭. আল্লাহ যাকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন সে পথপ্রাপ্ত আর যাদেরকে তিনি পথভ্রষ্ট করেন, তুমি কক্ষনো তাদের জন্য তাঁকে ছাড়া অন্য কাউকে অভিভাবক পাবে না। ক্বিয়ামাতের দিন আমি তাদেরকে একত্রিত করব তাদের মুখের ভরে অন্ধ, বোবা ও বধির অবস্থায়। তাদের আবাস হচ্ছে জাহান্নাম। যখনই তার আগুন নিস্তেজ হয়ে আসবে, আমি তাদের জন্য অগ্নির দহন শক্তি বৃদ্ধি করে দেব।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ج وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِهٖ ط وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ط مَأْوٰهُمْ جَهَنَّمُ ط كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ سَعِيْرًا (٩٧)

৯৮. এটাই তাদের প্রতিফল, কেননা তারা আমার নিদর্শনসমূহ প্রত্যাখ্যান করেছিল আর বলেছিল, 'যখন আমরা হাড্ডি ও চূর্ণ ধূলায় পরিণত হব তখনও কি আমাদেরকে নতুন এক সৃষ্টির আকারে আবার উঠানো হবে?'

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ بِأَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا وَقَالُوْٓا أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا أَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا (٩٨)

৯৯. তারা কি লক্ষ্য করে না যে আল্লাহ– যিনি আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন– তিনি

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ

وَالْأَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ وَجَعَلَ لَهُمْ أَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ط فَأَبَى الظّٰلِمُوْنَ إِلَّا كُفُوْرًا (٩٩)

তাদের মত মানুষ (পুনরায়) সৃষ্টি করতে সক্ষম। তিনি তাদের জন্য একটা সুনির্দিষ্ট সময় স্থির করেছেন, যাতে কোনই সন্দেহ নেই। কিন্তু যালিমরা অমান্য করে কেবল কুফরিই করল।

قُلْ لَّوْ أَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَآئِنَ رَحْمَةِ رَبِّيْٓ إِذًا لَّأَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْإِنْفَاقِ ط وَكَانَ الْإِنْسَانُ قَتُوْرًا ع (١٠٠)

১০০. বল, 'তোমরা যদি আমার প্রতিপালকের রাহমাতের ভাণ্ডারের মালিক হয়ে যেতে, তবুও খরচ হয়ে যাবার ভয়ে তোমরা তা অবশ্যই ধরে রাখতে।' বাস্তবিকই মানুষ বড়ই সংকীর্ণ-চিত্ত।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ فَسْئَلْ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ إِذْ جَآءَهُمْ فَقَالَ لَهٗ فِرْعَوْنُ إِنِّيْ لَأَظُنُّكَ يٰمُوْسٰى مَسْحُوْرًا (١٠١)

১০১. আমি মূসাকে নয়টি স্পষ্ট নিদর্শন দিয়েছিলাম। বানী ইসরাঈলকে জিজ্ঞেস করে দেখ, যখন সে তাদের (অর্থাৎ ফির'আওন ও তার প্রধানদের) নিকট আসল তখন ফির'আওন তাকে বলল, 'ওহে মূসা! আমি তোমাকে অবশ্যই যাদুগ্রস্ত মনে করি।'

قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ أَنْزَلَ هٰٓؤُلَآءِ إِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ بَصَآئِرَ ج وَإِنِّيْ لَأَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا (١٠٢)

১০২. মূসা বলল, 'তুমি তো জান যে, এসব চোখ-খুলে-দেয়া নিদর্শন আসমানসমূহ ও যমীনের প্রতিপালক ছাড়া অন্য কেউ অবতীর্ণ করেনি, হে ফির'আওন! আমি তো তোমাকে মনে করি এক ধ্বংসপ্রাপ্ত লোক।'

فَأَرَادَ أَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْأَرْضِ فَأَغْرَقْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا لا (١٠٣)

১০৩. অতঃপর ফির'আওন তাদেরকে দুনিয়া থেকে সরিয়ে দিতে চাইল। তখন আমি তাকে আর তার সঙ্গী-সাথীদের সব্বাইকে ডুবিয়ে মারলাম।

وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ اسْكُنُوا الْأَرْضَ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ لَفِيْفًا ط (١٠٤)

১০৪. এরপর আমি বানী ইসরাঈলকে বললাম, 'তোমরা যমীনের উপর বসবাস কর, অতঃপর যখন প্রতিশ্রুত ক্বিয়ামাত আসবে তখন আমি তোমাদেরকে সংমিশ্রিত দলবলে হাজির করব।'

وَبِالْحَقِّ أَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ ط وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ـ (١٠٥)

১০৫. এ কুরআনকে আমি সত্যতা সহকারে নাযিল করেছি আর সত্যতা সহকারেই তা নাযিল হয়েছে। আমি তোমাকে শুধু সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারী হিসেবে পাঠিয়েছি।

وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا (١٠٦)

১০৬. আমি এ কুরআনকে ভাগে ভাগে বিভক্ত করেছি যাতে তুমি থেমে থেমে মানুষকে তা পাঠ করে শুনাতে পার, কাজেই আমি তা ক্রমশঃ নাযিল করেছি।

قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ط اِنَّ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا لا (١٠٧)

১০৭. বল, 'তোমরা কুরআনে বিশ্বাস কর কিংবা বিশ্বাস না কর, ইতোপূর্বে যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তাদেরকে যখন কুরআন পাঠ করে শুনানো হয়, তখন তারা অধোমুখে সাজদাহ্য় লুটিয়ে পড়ে।'

وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا (١٠٨)

১০৮. আর তারা বলে, 'আমাদের রব্ব মহান, পবিত্র; আমাদের রব্বের ও'য়াদা অবশ্যই পূর্ণ হবে।

وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ خُشُوْعًا السجدة (١٠٩)

১০৯.তারা কাঁদতে কাঁদতে অধোমুখে সাজদাহ্য় লুটিয়ে পড়ে আর তা তাদের বিনয়ানম্রতা বাড়িয়ে দেয়।[সাজদাহ]

قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ط اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ج وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا (١١٠)

১১০. বল, 'তোমরা আল্লাহ নামে ডাকো বা রহমান নামে ডাকো, যে নামেই তাঁকে ডাকো না কেন (সবই ভাল) কেননা সকল সুন্দর নামই তো তাঁর।' তোমার সলাতে স্বর উচ্চ করো না, আর তা খুব নীচুও করো না, এ দু'য়ের মধ্যবর্তী পথ অবলম্বন কর।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ

১১১. বল, 'সকল প্রশংসাই আল্লাহ্র যিনি সন্তান গ্রহণ করেন না, যাঁর শাসন-কর্তৃত্বে কোন

১১০। ইব্নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'সালাতে স্বর উঁচু করবে না এবং অতিশয় নিচুও করবে না। এ আয়াতটি এমন সময় নাযিল হয়, যখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) মক্কাহ্য় অপ্রকাশ্যে অবস্থান করছিলেন। তিনি যখন তাঁর সাহাবাদের নিয়ে নামায আদায় করতেন তখন তিনি উচ্চঃস্বরে কুরআন পাঠ করতেন। মুশরিকরা তা শুনে কুরআনকে গালি দিত। আর গালি দিত যিনি তা অবতীর্ণ করেছেন তাঁকে (আল্লাহ্কে) এবং যিনি তা নিয়ে এসেছেন তাকে (জিব্রীল)। এজন্য আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর নাবী (ﷺ) -কে বলেছিলেন, "তুমি তোমার সলাতে উচ্চঃস্বরে কিরাআত পড়বে না, যাতে মুশরিকরা শুনে কুরআনকে গালি দেয় এবং তা এত নিচু স্বরেও পড়বে না, যাতে তোমার সহাবীরা শুনতে না পায়, বরং এ দুয়ের মধ্যবর্তী পথ অবলম্বন কর।" –বুখারী ৪৭২২ [৭৪৯০, ৭৫২৫, ৭৫৪৭; মুসলিম ৪৪৬, তিরমিযী ৩১৪৫, ৩১৪৬, নাসায়ী ১০১১, ১০১২; আহমাদ ১৫৬, ১৮৫৬]

Contents

يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ع (١١١)

অংশীদার নেই, দুর্দশাগ্রস্ত হওয়া থেকে বাঁচার জন্য যাঁর কোন অভিভাবকের প্রয়োজন হয় না। অতএব পূর্ণ শ্রেষ্ঠত্বে তাঁর শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর।

১৮. সূরাহ আল-কাহ্‌ফ

سُوْرَةُ الْكَهْفِ

আয়াতঃ ১১০, রুকূ'ঃ ১২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ط سكتة (١)

১. সকল প্রশংসা আল্লাহ্‌র জন্য যিনি তাঁর বান্দাদের প্রতি কিতাব নাযিল করেছেন, আর তাতে কোন বক্রতার অবকাশ রাখেননি।

قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَأْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ الصّٰلِحٰتِ أَنَّ لَهُمْ أَجْرًا حَسَنًا لا (٢)

২. (তিনি সেটাকে করেছেন) সত্য, স্পষ্ট ও অকাট্য তাঁর কঠিন শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করার জন্য। আর যারা সৎকাজ করে সেই মু'মিনদেরকে সুসংবাদ দেয়ার জন্য যে, তাদের জন্য আছে উত্তম প্রতিফল।

مَّاكِثِيْنَ فِيْهِ أَبَدًا لا (٣)

৩. তাতে তারা চিরকাল থাকবে।

وَّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللهُ وَلَدًا ق (٤)

৪. আর তাদেরকে সতর্ক করার জন্য যারা বলে, 'আল্লাহ পুত্র গ্রহণ করেছেন।'

مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ط كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ أَفْوَاهِهِمْ ط إِنْ يَّقُوْلُوْنَ إِلَّا كَذِبًا (٥)

৫. এ সম্পর্কে তাদের কোন জ্ঞান নেই, আর তাদের পিতৃ-পুরুষদেরও ছিল না। তাদের মুখ থেকে বের হয় বড়ই সাংঘাতিক কথা। তারা যা বলে তা মিথ্যে ছাড়া কিছুই নয়।

فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ إِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ أَسَفًا (٦)

৬. তারা এ বাণীতে (কুরআনে) বিশ্বাস না করার কারণে মনে হচ্ছে (হে নাবী!) তুমি তার দুঃখে তোমার নিজের জান বিনাশ করে দেবে।

إِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْأَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا لِنَبْلُوَهُمْ أَيُّهُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا (٧)

৭. যমীনের উপর যা কিছু আছে আমি সেগুলোকে তার শোভা-সৌন্দর্য করেছি যাতে আমি মানুষকে পরীক্ষা করতে পারি যে, 'আমালের ক্ষেত্রে কারা উত্তম।

وَإِنَّا لَجَاعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ط (٨)

৮. আমি অবশ্যই তার উপর যা আছে তা বৃক্ষলতাহীন শুকনো ধূলা মাটিতে পরিণত করব।

أَمْ حَسِبْتَ أَنَّ أَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا (٩)

৯. তুমি কি মনে কর যে, গুহা ও রকীমের অধিবাসীরা ছিল আমার নিদর্শনগুলোর মধ্যে বিস্ময়কর?

إِذْ أَوَى الْفِتْيَةُ إِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا مِنْ أَمْرِنَا رَشَدًا (١٠)

১০. যুবকরা যখন গুহায় আশ্রয় গ্রহণ করল তখন তারা বলল, 'হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি তোমার নিকট হতে আমাদেরকে রহমত দান কর আর আমাদের ব্যাপারটি সুষ্ঠুভাবে সম্পাদন কর।'

فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ سِنِيْنَ عَدَدًا لا (١١)

১১. অতঃপর আমি তাদেরকে গুহায় ঘুমন্ত অবস্থায় কয়েক বছর রেখে দিলাম।

ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ أَيُّ الْحِزْبَيْنِ أَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا أَمَدًا ع (١٢)

১২. পরে তাদেরকে জাগ্রত করলাম এটা জানার জন্য যে, (গুহাবাসীরা আর যাদের যুগে তারা জাগ্রত হয়েছিল সে যুগের লোকেরা এ) দু'টি দলের মধ্যে কোন্‌টি তাদের অবস্থানকালের সঠিক হিসাব করতে পারে।

نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَأَهُمْ بِالْحَقِّ ط إِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ هُدًى ق صلے (١٣)

১৩. আমি তাদের সঠিক বৃত্তান্ত তোমার কাছে বর্ণনা করছি। তারা ছিল কয়েকজন যুবক, তারা তাদের প্রতিপালকের উপর ঈমান এনেছিল আর আমি তাদের হিদায়াত (ঈমানী চেতনাকে) বৃদ্ধি করে দিয়েছিলাম।

وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ إِذْ قَامُوْا فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَنْ نَّدْعُوَاْ مِنْ دُوْنِهٖٓ إِلٰهًا لَّقَدْ قُلْنَآ إِذًا شَطَطًا (١٤)

১৪. আর তাদের দিল মযবুত করে দিয়েছিলাম যখন তারা (মুশরিক রাজা ও তার অনুসারীদের বিরুদ্ধে) দাঁড়িয়ে গেল তখন বলল, 'আমাদের প্রতিপালক তো তিনিই যিনি আসমানসমূহ যমীনের প্রতিপালক। আমরা কক্ষনো তাঁকে ত্যাগ করে অন্য কোন ইলাহ্‌কে ডাকব না। যদি আমরা ডাকি তাহলে মহা অপরাধের কথাই বলা হবে।

هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ط لَوْلَا يَأْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍ بَيِّنٍ ط فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ط (١٥)

১৫. আমাদের জাতির এই লোকেরা তাঁর পরিবর্তে বহু ইলাহ গ্রহণ করেছে, তারা তাদের ইলাহ্‌দের ব্যাপারে সুস্পষ্ট দলীল প্রমাণ পেশ করে না কেন? তার থেকে বড় যালিম আর কে হতে পারে যে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যা রচনা করে?

Contents

وَإِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ إِلَّا اللهَ فَأْوٗآ إِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ أَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا (١٦)

১৬. এখন যেহেতু তোমরা তাদের থেকে আর তারা আল্লাহ ছাড়া যেগুলোর ‘ইবাদাত করে তাদের থেকে সম্পর্ক ছিন্ন করে নিয়েছ, তখন চল, গুহায় গিয়ে আশ্রয় গ্রহণ কর। তোমাদের জন্য তোমাদের প্রতিপালক তাঁর কল্যাণ বিস্তার করবেন আর তোমাদের কাজ-কর্মকে ফলদায়ক করে দেবেন।’

وَتَرَى الشَّمْسَ إِذَا طَلَعَتْ تَّزَاوَرُ عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَإِذَا غَرَبَتْ تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ فَجْوَةٍ مِّنْهُ ط ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللهِ ط مَنْ يَّهْدِ اللهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ج وَمَنْ يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ع (١٧)

১৭. তুমি দেখতে পেতে সূর্য উদয়ের সময় তাদের গুহা হতে ডান দিকে হেলে যেত, আর যখন তা অস্তমিত হত তখন তা তাদের থেকে বাম দিকে নেমে যেত, আর তারা ছিল গুহার অভ্যন্তরে বিশাল চত্বরে। এ হচ্ছে আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহের অন্যতম। আল্লাহ যাকে সৎপথ দেখান সে সঠিকপথপ্রাপ্ত আর যাকে তিনি পথহারা করেন, তার জন্য তুমি কক্ষনো সৎপথের দিশা দানকারী অভিভাবক পাবে না।

وَتَحْسَبُهُمْ أَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ق صلے وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ق صلے وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ط لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا (١٨)

১৮. তুমি মনে করবে যে তারা সজাগ, অথচ তারা ছিল ঘুমন্ত, আমি তাদের ডানে বামে পার্শ্ব পরিবর্তন করাতাম। আর তাদের কুকুরটি ছিল গুহাদ্বারের সম্মুখে তার সামনের পা দু'টি প্রসারিত করে। তুমি যদি তাদেরকে তাকিয়ে দেখতে তাহলে অবশ্যই পেছন ফিরে পালিয়ে যেতে, আর অবশ্যই তাদের ভয়ে আতঙ্কিত হয়ে পড়তে।

وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ط قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ط قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ط قَالُوْا رَبُّكُمْ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ط فَابْعَثُوْآ أَحَدَكُمْ بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ إِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ أَيُّهَآ أَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَأْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ أَحَدًا (١٩)

১৯. আর তাদের এই অবস্থায় আমি তাদেরকে জাগ্রত করলাম যাতে তারা পরস্পরকে জিজ্ঞাসাবাদ করে। তাদের একজন বলল, ‘তোমরা ক’দ্দিন থাকলে?’ তারা বলল, ‘আমরা একদিন কিংবা একদিনের কিছু অংশ হয়তো রয়েছি।’ (শেষে) তারা (সবাই) বলল, ‘তোমাদের প্রতিপালকই ভাল জানেন তোমরা কতকাল রয়েছ। এখন তোমাদের একজনকে তোমাদের এই মুদ্রা নিয়ে শহরে পাঠিয়ে দাও। সে যেন দেখে উত্তম খাবার কোন্‌টি আর তাথেকে তোমাদের জন্য কিছু খাবার নিয়ে আসে। সে যেন বুদ্ধিমত্তার সঙ্গে কাজ করে, আর তোমাদের ব্যাপারে কেউ যেন কোনক্রমেই টের না পায়।

إِنَّهُمْ إِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ أَوْ يُعِيْدُوْكُمْ فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا إِذًا أَبَدًا (٢٠)

২০. যদি তারা তোমাদের কথা জেনে ফেলে তাহলে তারা তোমাদেরকে পাথর মেরে হত্যা করবে কিংবা তোমাদেরকে তাদের ধর্মে ফিরিয়ে নিবে, সে অবস্থায় তোমরা কক্ষনো কল্যাণ লাভ করতে পারবে না।'

وَكَذٰلِكَ أَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا أَنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَّأَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ فِيْهَا ج إِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ أَمْرَهُمْ فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ط رَبُّهُمْ أَعْلَمُ بِهِمْ ط قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓى أَمْرِهِمْ لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا (٢١)

২১. আমি এভাবে তাদের ব্যাপারটা লোকেদেরকে ওয়াকিফহাল করে দিলাম যাতে তারা জানতে পারে যে, আল্লাহ্র ওয়া'দা সত্য, আর ক্বিয়ামাতের দিন সম্পর্কে কোন সন্দেহ নেই। যখন তারা (অর্থাৎ নগরবাসীরা) নিজেদের কর্তব্য সম্পর্কে নিজেদের মধ্যে বাদানুবাদ করছিল, (কতক) বলল, 'তাদের উপর সৌধ নির্মাণ কর।' তাদের প্রতিপালক তাদের সম্পর্কে ভাল জানেন। তাদের কর্তব্যকর্ম সম্পর্কে যাদের মতামত প্রাধান্য লাভ করল তারা বলল, 'আমরা তাদের উপর অবশ্য অবশ্যই মাসজিদ নির্মাণ করব।'

سَيَقُوْلُوْنَ ثَلَاثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ج وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًا بِالْغَيْبِ ج وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ كَلْبُهُمْ ط قُلْ رَّبِّيْٓ أَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ إِلَّا قَلِيْلٌ ۵ قف فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ إِلَّا مِرَآءً ظَاهِرًا ص وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ أَحَدًا ع (٢٢)

২২. কতক লোক বলবে, 'তারা ছিল তিনজন, তাদের চতুর্থটি ছিল তাদের কুকুর।' আর কতক লোক বলবে, 'তারা ছিল পাঁচ জন, তাদের ষষ্ঠটি ছিল তাদের কুকুর', (এ কথা তারা বলবে) অজানা বিষয়ে সন্দেহপূর্ণ অনুমানের ভিত্তিতে। আবার তাদের কতক লোক বলবে, 'তারা ছিল সাতজন, আর তাদের অষ্টমটি ছিল তাদের কুকুর।' বল, 'তাদের সংখ্যা সম্পর্কে আমার প্রতিপালকই বেশি জানেন।' অল্প কয়জন ছাড়া তাদের সংখ্যা সম্পর্কে কেউ জানে না। কাজেই সাধারণ কথাবার্তা ছাড়া তাদের ব্যাপার নিয়ে বিতর্ক করো না, আর তাদের সম্পর্কে কারো কাছে কিছু জিজ্ঞেসও করো না।

وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَا۠يْءٍ إِنِّيْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا (٢٣)

২৩. কোন বিষয় সম্পর্কে কক্ষনো বল না যে, 'ওটা আমি আগামীকাল করব।'

২৩-২৪। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত, নাবী (ﷺ) ইরশাদ করেছেন, সুলাইমান ইবনু দাউদ (আঃ) বলেছেন, অবশ্যই আমি আজ রাতে (আমার) সত্তর জন স্ত্রীর নিকট যাব। প্রত্যেক স্ত্রী একজন করে অশ্বারোহী মুজাহিদ গর্ভধারণ করবে। এরা আল্লাহর রাস্তায় জিহাদ করবে। সুলাইমানের এক সাথী বললেন, 'ইন্শাআল্লাহ বলুন। সুলাইমান তা বললেন না। অতঃপর একজন স্ত্রী ছাড়া বাকী আর কেউ-ই গর্ভবতী হলো না। সে একটি পুত্র সন্তান প্রসব করল এবং তারও একটি অঙ্গ ছিল না। নাবী (ﷺ) বলেন, যদি তিনি 'ইন্শাআল্লাহ বলতেন, তাহলে সেগুলো

إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللهُ ز وَاذْكُرْ رَّبَّكَ إِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى أَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ لِأَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا (٢٤)

২৪. 'আল্লাহ্ ইচ্ছে করলে' বলা ছাড়া। যদি ভুলে যাও (তবে মনে পড়ার সঙ্গে সঙ্গে) তোমার প্রতিপালককে স্মরণ কর আর বল, 'আশা করি আমার প্রতিপালক আমাকে এর চেয়েও সত্যের নিকটবর্তী পথে পরিচালিত করবেন। (কেননা এক ব্যক্তি যেভাবেই সঠিক পথে চলুক না কেন, তার চেয়েও উত্তমভাবে পথ চলা যেতে পারে)।

وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلَاثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ وَازْدَادُوْا تِسْعًا (٢٥)

২৫. আর (কারো মতে) তারা তাদের গুহায় ছিল তিনশ' বছর আর কিছু লোক নয় বছর বাড়িয়ে নিয়েছে।

قُلِ اللهُ أَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ج لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط أَبْصِرْ بِهٖ وَأَسْمِعْ ط مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ ز وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ أَحَدًا (٢٦)

২৬. বল, 'আল্লাহ্ই ভাল জানেন তারা কতকাল (গুহায়) ছিল।' আসমানসমূহ যমীনের অদৃশ্যের জ্ঞান তাঁরই আছে, কত স্পষ্টই না তিনি দেখেন, কত স্পষ্টই না তিনি শোনেন। তিনি ছাড়া তাদের কোন অভিভাবক নেই, তিনি তাঁর কর্তৃত্বে কাউকে অংশীদার করেন না।

وَاتْلُ مَآ أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنْ كِتٰبِ رَبِّكَ ط لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ج وَلَنْ تَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا (٢٧)

২৭. আর তুমি তোমার কাছে ওয়াহীকৃত তোমার প্রতিপালকের কিতাব থেকে পাঠ করে শুনাও, তাঁর কথা পরিবর্তন করে দেবে এমন কেউ নেই, আর তাঁকে ছাড়া তুমি কক্ষনো অন্য কাউকে আশ্রয়স্থল হিসেবে পাবে না।

وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَيْنٰكَ عَنْهُمْ ج تُرِيْدُ زِيْنَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَلَا تُطِعْ مَنْ أَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ وَكَانَ أَمْرُهٗ فُرُطًا (٢٨)

২৮. তুমি দৃঢ় চিত্ত হয়ে তাদের সাথে অবস্থান কর যারা সকাল-সন্ধ্যা তাদের প্রতিপালককে আহ্বান করে তাঁর সন্তুষ্টি লাভের সন্ধানে। পার্থিব জীবনের শোভা ও চাকচিক্য কামনায় তুমি তাদের থেকে তোমার দৃষ্টি ফিরিয়ে নিও না। তুমি তার আনুগত্য কর না যার অন্তরকে আমি আমার স্মরণ হতে উদাসীন করে দিয়েছি, যে নিজের প্রবৃত্তির আনুগত্য করে আর যার কার্যকলাপ হচ্ছে সীমালঙ্ঘনমূলক।

(সন্তানই জন্ম নিত এবং) আল্লাহর রাস্তায় জিহাদ করতো। শু'আয়ব ও ইবনু আবূ জিনাদ এখানে 'সত্তর'-এর স্থলে 'নিরানব্বই স্ত্রী'-এর কথা উল্লেখ করেছেন এবং এটিই সঠিক রিওয়ায়াত। –বুখারী ৩৪২৪ [৫২৪২, ৬৬৩৯, ৬৭২০, ৬৪৬৯; মুসলিম ১৬৫৪, তিরমিযী ১৫৩২, নাসায়ী ৩৮৩১, আহমাদ ৭০৯৭, ৭৬৫৮, ১০২০২]

وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ قف فَمَنْ شَآءَ فَلْيُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْيَكْفُرْ ج إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلظَّالِمِيْنَ نَارًا أَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ط وَإِنْ يَّسْتَغِيْثُوْا يُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ يَشْوِي الْوُجُوْهَ ط بِئْسَ الشَّرَابُ ط وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا (٢٩)

২৯. আর বলে দাও, 'সত্য এসেছে তোমাদের রব্বের নিকট হতে, কাজেই যার ইচ্ছে ঈমান আনুক আর যার ইচ্ছে সত্যকে অস্বীকার করুক।' আমি (অস্বীকারকারী) যালিমদের জন্য আগুন প্রস্তুত করে রেখেছি যার লেলিহান শিখা তাদেরকে ঘিরে ফেলেছে। তারা পানীয় চাইলে তাদেরকে গলিত শিশার ন্যায় পানি দেয়া হবে যা তাদের মুখমণ্ডল দগ্ধ করবে, কতই না নিকৃষ্ট পানীয়! আর কতই না নিকৃষ্ট আশ্রয়স্থল!

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ إِنَّا لَا نُضِيْعُ أَجْرَ مَنْ أَحْسَنَ عَمَلًا ج (٣٠)

৩০. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে– যে উত্তমভাবে কাজ করে আমি তার কর্মফল বিনষ্ট করি না।

أُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّيَلْبَسُوْنَ ثِيَابًا خُضْرًا مِّنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ط نِعْمَ الثَّوَابُ ط وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ع (٣١)

৩১. তাদের জন্য আছে স্থায়ী জান্নাত যার নিম্নদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। সেখানে তাদেরকে অলংকৃত করা হবে স্বর্ণ কংকণে। সূক্ষ্ম ও গাঢ় রেশমের সবুজ পোশাক তারা পরিধান করবে। তারা গদি লাগানো উচ্চাসনে হেলান দিয়ে বসবে। কতই না উত্তম পুরস্কার! কতই না উত্তম আশ্রয়স্থল!

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَيْنِ جَعَلْنَا لِأَحَدِهِمَا جَنَّتَيْنِ مِنْ أَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَيْنَهُمَا زَرْعًا ط (٣٢)

৩২. তুমি তাদের কাছে দু'ব্যক্তির দৃষ্টান্ত বর্ণনা কর যাদের একজনকে আমি দিয়েছিলাম দু'টি আঙ্গুরের বাগান, আর ওগুলোকে খেজুর গাছ দিয়ে ঘিরে দিয়েছিলাম আর ও দু'টির মাঝে দিয়েছিলাম শষ্যক্ষেত।

كِلْتَا الْجَنَّتَيْنِ اٰتَتْ أُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ مِّنْهُ شَيْئًا لا وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا لا (٣٣)

৩৩. দু'টো বাগানই ফল দিত, এতে এতটুকু ত্রুটি করত না। এ দু'য়ের মাঝে আমি ঝর্ণাধারা প্রবাহিত করেছিলাম।

وَّكَانَ لَهُ ثَمَرٌ ج فَقَالَ لِصَاحِبِهِ وَهُوَ يُحَاوِرُهُ أَنَا أَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّأَعَزُّ نَفَرًا (٣٤)

৩৪. লোকটির উৎপাদন ছিল প্রচুর। একদিন কথাবার্তা বলার সময় সে তার প্রতিবেশীকে বলল, 'আমি সম্পদে তোমা হতে শ্রেষ্ঠ, আর জনবলে তোমা হতে শক্তিশালী।'

৩৫. নিজের প্রতি যুল্ম করে সে তার বাগানে প্রবেশ করল। সে বলল, 'আমি ধারণা করি না যে, এটা কোনদিন ধ্বংস হয়ে যাবে।

وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ج قَالَ مَآ أَظُنُّ أَنْ تَبِيْدَ هٰذِهٖٓ أَبَدًا لا (٣٥)

৩৬. আমি মনে করি না যে কিয়ামাত হবে। আর যদি আমাকে আমার প্রতিপালকের কাছে ফিরিয়ে নেয়া হয়ই, তাহলে অবশ্য অবশ্যই আমি পরিবর্তে আরো উৎকৃষ্ট স্থান পাব।

وَّمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً لا وَّلَئِنْ رُّدِدْتُّ إِلٰى رَبِّيْ لَأَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا مُنْقَلَبًا ج (٣٦)

৩৭. কথার প্রসঙ্গ টেনে তার সাথী বলল, 'তুমি কি তাঁকে অস্বীকার করছ যিনি তোমাকে মাটি থেকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর শুক্র-কীট হতে, অতঃপর তোমাকে পূর্ণাঙ্গ দেহসম্পন্ন মানুষ বানিয়ে দিয়েছেন?

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ أَكَفَرْتَ بِالَّذِيْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ط (٣٧)

৩৮. (আর আমার ব্যাপারে কথা হল) সেই আল্লাহ্ই আমার প্রতিপালক, আমি কাউকে আমার প্রতিপালকের শরীক করব না।

لّٰكِنَّا هُوَ اللهُ رَبِّيْ وَلَآ أُشْرِكُ بِرَبِّيْٓ أَحَدًا (٣٨)

৩৯. তুমি যখন তোমার বাগানে প্রবেশ করলে তখন কেন বললে না, 'আল্লাহ যা ইচ্ছে করেছেন (তা-ই হয়েছে), আল্লাহ ছাড়া কারো কোন শক্তি নেই। যদিও তুমি আমাকে ধনে-জনে তোমার চেয়ে কম দেখ,

وَلَوْلَآ إِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ مَا شَآءَ اللهُ لا لَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ ج إِنْ تَرَنِ أَنَا أَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ج (٣٩)

৪০. সম্ভবতঃ আমার প্রতিপালক আমাকে তোমার বাগান অপেক্ষাও উত্তম কিছু দান করবেন আর তোমার বাগানের উপর আসমান হতে কোন বিপদ পাঠিয়ে দিবেন, ফলে তা শূন্য ময়দানে পরিণত হবে।

فَعَسٰى رَبِّيْٓ أَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا لا (٤٠)

৪১. কিংবা তার পানি ভূ-গর্ভে চলে যাবে, ফলে তুমি কক্ষনো তার খোঁজ পাবে না।'

أَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ لَهٗ طَلَبًا (٤١)

৪২. ধ্বংস তার ফল-ফসলকে ঘিরে ফেলল আর তাতে সে যা খরচ করেছিল তার জন্য হাত মলতে লাগল। তা ছিন্ন ভিন্ন অবস্থায় ভূমিসাৎ হয়ে গিয়েছিল। সে বলল, 'হায়, আমি যদি আমার রব্ব-এর সাথে কাউকে শরীক না করতাম!'

وَأُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَأَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ عَلٰى مَآ أَنْفَقَ فِيْهَا وَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ أُشْرِكْ بِرَبِّيْٓ أَحَدًا (٤٢)

৪৩. আর আল্লাহ ছাড়া তাকে সাহায্য করার কোন দলবলও ছিল না, আর সে নিজেও এর মোকাবিলা করতে পারল না।

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ط (٤٣)

هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ؕ هُوَ خَيْرٌ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ع (٤٤)

৪৪. এ ব্যাপারে যাবতীয় কর্তৃত্ব ক্ষমতা সেই সত্যিকার আল্লাহ্‌র জন্যই নির্দিষ্ট। পুরস্কার দানে তিনিই উৎকৃষ্ট, আর সফল পরিণাম দানে তিনিই শ্রেষ্ঠ।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ فَأَصْبَحَ هَشِيْمًا تَذْرُوْهُ الرِّيَاحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقْتَدِرًا (٤٥)

৪৫. তাদের কাছে দুনিয়ার এ জীবনের দৃষ্টান্ত পেশ করঃ তা হল পানির মত যা তিনি আকাশ হতে বর্ষণ করেন, যা দিয়ে যমীনে গাছ-গাছড়া ঘন হয়ে উদ্গত হয়, অতঃপর তা শুকনো খড়কুটায় পরিণত হয় যাকে বাতাস উড়িয়ে নিয়ে যায়। আল্লাহ হলেন সকল বিষয়ে শক্তিমান।

اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَالْبَاقِيَاتُ الصَّالِحَاتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ أَمَلًا (٤٦)

৪৬. ধন-সম্পদ আর সন্তানাদি পার্থিব জীবনের শোভা-সৌন্দর্য, আর তোমার প্রতিপালকের নিকট পুরস্কার লাভের জন্য স্থায়ী সৎকাজ হল উৎকৃষ্ট আর আকাঙ্ক্ষা পোষণের ভিত্তি হিসেবেও উত্তম।

وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْأَرْضَ بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ أَحَدًا ج (٤٧)

৪৭. (সেদিনের কথা চিন্তা কর) যেদিন আমি পর্বতমালাকে চালিত করব, আর পৃথিবীকে দেখতে পাবে উন্মুক্ত প্রান্তর আর তাদের সব্বাইকে আমি একত্রিত করব, কাউকেও বাদ দেব না।

وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا كَمَا خَلَقْنٰكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ ز بَلْ زَعَمْتُمْ أَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا (٤٨)

৪৮. তাদেরকে তোমার প্রতিপালকের সামনে সারিবদ্ধভাবে হাজির করা হবে (আর তাদেরকে বলা হবে), 'তোমরা আমার কাছে এসেছ তেমনিভাবে যেভাবে আমি তোমাদেরকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছিলাম। কিন্তু তোমরা তো ধারণা করেছিলে যে, আমার কাছে তোমাদের সাক্ষাতের নির্দিষ্টকাল আমি কক্ষনো উপস্থিত করব না।'

وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يَا وَيْلَتَنَا مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً إِلَّآ أَحْصَاهَا ج وَوَجَدُوْا مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ أَحَدًا ع (٤٩)

৪৯. আর 'আমালনামা হাজির করা হবে, আর তাতে যা (লেখে রাখা আছে) তার কারণে তুমি অপরাধী লোকদেরকে দেখতে পাবে ভীত আতঙ্কিত। আর তারা বলবে, 'হায় কপাল! এটা কেমন কিতাব যে ছোট বড় কোন কাজই ছেড়ে দেয়নি বরং সব কিছুর হিসাব রেখেছে।' তারা যা করেছে তা সামনে উপস্থিত পাবে, আর তোমার প্রতিপালক কারো প্রতি যুল্‌ম করবেন না।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ

৫০. স্মরণ কর, যখন আমি ফেরেশতাদেরকে বলেছিলাম, 'আদামকে সাজদাহ কর।' তখন

فَسَجَدُوْٓا إِلَّآ إِبْلِيْسَ ط كَانَ مِنَ الْجِنِّ فَفَسَقَ عَنْ أَمْرِ رَبِّهٖ ط أَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ وَذُرِّيَّتَهٗٓ أَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ لَكُمْ عَدُوٌّ ط بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ بَدَلًا (٥٠)

ইবলিশ ছাড়া তারা সবাই সাজদাহ করল। সে ছিল জ্বীনদের অন্তর্ভুক্ত। সে তার প্রতিপালকের নির্দেশ লঙ্ঘন করল। এতদসত্ত্বেও তোমরা কি আমাকে বাদ দিয়ে তাকে আর তার বংশধরকে অভিভাবক বানিয়ে নিচ্ছ? অথচ তারা তোমাদের দুশমন। যালিমদের এই বিনিময় বড়ই নিকৃষ্ট!

مَآ أَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَا خَلْقَ أَنْفُسِهِمْ ص وَمَا كُنْتُ مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا (٥١)

৫১. আসমান যমীনের সৃষ্টিকালে আমি তাদেরকে সাক্ষী রাখিনি, আর তাদের নিজেদের সৃষ্টি (প্রত্যক্ষ করার জন্য)ও না, পথভ্রষ্টকারীদেরকে সাহায্যকারী গ্রহণ করা আমার কাজ নয়।

وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآئِيَ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا (٥٢)

৫২. সেদিন তিনি বলবেন, 'তোমরা যাদেরকে আমার শরীক মনে করতে তাদেরকে ডাক।' তখন তারা তাদেরকে ডাকবে, কিন্তু তারা তাদের ডাকে সাড়া দেবে না। আর আমি উভয় দলের মাঝে রেখে দেব এক ধ্বংস-গহ্বর।

وَرَاَى الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ع (٥٣)

৫৩. অপরাধীরা আগুন দেখতে পাবে আর মনে করবে যে, তাদেরকে তাতে পতিত হতে হবে, কিন্তু সেখান থেকে ফিরে যাবার তারা কোনই উপায় পাবে না।

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ط وَكَانَ الْإِنْسَانُ أَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا (٥٤)

৫৪. আমি এ কুরআনে মানুষের (জ্ঞান লাভের) জন্য যাবতীয় দৃষ্টান্ত বিশদভাবে বিবৃত করেছি কিন্তু মানুষ অধিকাংশ বিষয়েই বিতর্ককারী।

وَمَا مَنَعَ النَّاسَ أَنْ يُّؤْمِنُوْٓا إِذْ جَآءَهُمُ الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ إِلَّآ أَنْ تَأْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْأَوَّلِيْنَ أَوْ يَأْتِيَهُمُ

৫৫. তাদের কাছে যখন পথের নির্দেশ আসে তখন ঈমান আনতে আর তাদের প্রতিপালকের কাছে ক্ষমা চাইতে মানুষকে এ ছাড়া আর অন্য কিছুই বাধা দেয় না যে, (তারা অপেক্ষায় থাকে যে) অতীতের জাতিগুলোর সঙ্গে যা করা হয়েছে, কখন

৫৪। 'আলী ইব্নু আবূ ত্বালিব (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক রাতে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তাঁর এবং রসূল-কন্যা ফাতিমাহ (ﷺ)-এর নিকট আসলেন। রসূলুল্লাহ (ﷺ) তাদেরকে জিজ্ঞেস করলেন, তোমরা নামায আদায় করেছ কি? 'আলী (ﷺ) বলেন, আমি বললাম, হে আল্লাহ্র রসূল! আমাদের জীবন তো আল্লাহ্র হাতে। তিনি আমাদেরকে যখন (সলাতের জন্য ঘুম থেকে) জাগিয়ে দিতে চান, জাগিয়ে দেন। 'আলী (ﷺ)-এর এ কথা বলার সঙ্গে সঙ্গেই রসূলুল্লাহ (ﷺ) চলে গেলেন, 'আলীর কথার কোন প্রতিউত্তর তিনি আর দিলেন না। 'আলী (ﷺ) বলেন, আমি শুনতে পেলাম, তিনি চলে যাচ্ছেন, আর উরুতে হাত মেরে মেরে বললেনঃ মানুষ অধিকাংশ ব্যাপারেই বিতর্কপ্রিয়। –বুখারী ৭৩৪৭ [১১২৭; মুসলিম ৭৭৫, নাসায়ী ১৬১১, ১৬১২; আহমাদ ৫৭২, ৭০৭, ৯০২]

তাদের সঙ্গেও তাই করা হবে অথবা কখন 'আযাবকে তারা সরাসরি সামনে দেখতে পাবে।

الْعَذَابُ قُبُلًا (٥٥)

৫৬. আমি রসূলদেরকে পাঠিয়ে থাকি একমাত্র সুসংবাদদাতা আর সতর্ককারী হিসেবে। কিন্তু কাফিরগণ মিথ্যা যুক্তি পেশ করে বিতর্ক করছে তা দিয়ে সত্যকে দুর্বল করে দেয়ার উদ্দেশে, আর তারা আমার নিদর্শন ও ভয় দেখানোকে হাসি-তামাশার বিষয় বানিয়ে নিয়েছে।

وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ إِلَّا مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ج وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْآ اٰيٰتِيْ وَمَآ أُنْذِرُوْا هُزُوًا (٥٦)

৫৭. তার থেকে বড় যালিম আর কে আছে যাকে তার প্রতিপালকের আয়াতগুলো স্মরণ করিয়ে দেয়া হলে সে তাথেকে মুখ ফিরিয়ে নেয় আর সে পূর্বে কৃত তার কর্মের (খারাপ পরিণতির) কথা ভুলে যায়। আমি তাদের অন্তরের উপর আবরণ দিয়ে দিয়েছি যাতে তারা তা (অর্থাৎ কুরআন) বুঝতে না পারে, আর তাদের কানে এঁটে দিয়েছি বধিরতা। তুমি তাদেরকে সৎপথে ডাকলেও তারা কক্ষনো সৎপথ গ্রহণ করবে না।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ فَأَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ ط إِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ أَكِنَّةً أَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ط وَإِنْ تَدْعُهُمْ إِلَى الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْآ إِذًا أَبَدًا (٥٧)

৫৮. তোমার প্রতিপালক ক্ষমাশীল, দয়ার আধার। তাদের কৃতকর্মের জন্য তিনি যদি তাদেরকে পাকড়াও করতেন, তাহলে তাদের উপর অবশ্যই শীঘ্রই 'আযাব পাঠাতেন, কিন্তু তাদের সঙ্গে কৃত ওয়া'দার জন্য আছে নির্দিষ্ট সময়, যাকে পাশ কাটিয়ে তারা কক্ষনো আশ্রয়ের কোন জায়গা পাবে না।

وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ط لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ط بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ دُوْنِهٖ مَوْئِلًا (٥٨)

৫৯. ঐ সব জনদপকে আমি ধ্বংস করে দিয়েছিলাম যখন তারা বাড়াবাড়ি করেছিল, আর তাদের ধ্বংস সাধনের জন্য একটা প্রতিশ্রুত সময় স্থির করেছিলাম।

وَتِلْكَ الْقُرٰى أَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ع (٥٩)

৬০. স্মরণ কর, যখন মূসা তার সঙ্গীকে বলেছিল, 'দুই সমুদ্রের মিলনস্থলে পৌঁছা না পর্যন্ত আমি চলতেই থাকবো যদিও বছরের পর বছর চলতেও হয়।'

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ أَبْرَحُ حَتّٰىٓ أَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ أَوْ أَمْضِيَ حُقُبًا (٦٠)

৬১. অতঃপর যখন তারা দু'জনে দুই সমুদ্রের মিলন স্থলে পৌঁছল, তারা তাদের মাছের কথা ভুলে গেল আর সেটি সমুদ্রে তার পথ করে নিল সুড়ঙ্গের মত।

فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ سَرَبًا (٦١)

৬২. যখন তারা আরো এগিয়ে গেল, সে তার সঙ্গীকে বলল, 'আমাদের সকালের খাবার আন,

فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ز لَقَدْ

لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا (٦٢)

আমরা আমাদের এই সফরে বড়ই ক্লান্ত হয়ে পড়েছি।'

قَالَ أَرَأَيْتَ إِذْ أَوَيْنَآ إِلَى الصَّخْرَةِ فَإِنِّي نَسِيْتُ الْحُوْتَ ز وَمَآ أَنْسَانِيْهُ إِلَّا الشَّيْطَانُ أَنْ أَذْكُرَهٗ ج وَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِي الْبَحْرِ ق صلے عَجَبًا (٦٣)

৬৩. সঙ্গীটি বলল, 'আপনি কি লক্ষ্য করেছেন, আমরা যখন শিলাখণ্ডে (বসে) ছিলাম তখন আমি মাছের কথা ভুলে গিয়েছিলাম। সেটার কথা আপনাকে বলতে শয়তানই আমাকে ভুলিয়ে দিয়েছিল আর মাছটি বিস্ময়করভাবে সমুদ্রে তার রাস্তা করে চলে গিয়েছিল।'

قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ق صلے فَارْتَدَّا عَلٰٓى اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۷ (٦٤)

৬৪. মূসা বলল, 'এটাই তো সে জায়গা যেটা আমরা খুঁজছি।' কাজেই তারা তাদের পায়ের চিহ্ন ধরে ফিরে গেল।

فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا (٦٥)

৬৫. তখন তারা আমার বান্দাদের এক বান্দাকে পেল, যার প্রতি আমার পক্ষ থেকে অনুগ্রহ দান করেছিলাম আর আমার পক্ষ থেকে তাকে বিশেষ জ্ঞান দান করেছিলাম।

قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ أَتَّبِعُكَ عَلٰٓى أَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا (٦٦)

৬৬. মূসা তাকে বলল, 'আমি কি এ শর্তে আপনার অনুসরণ করব যে, আপনি আমাকে সেই (বিশেষ) জ্ঞান থেকে শিক্ষা দেবেন যে জ্ঞান আপনাকে শেখানো হয়েছে?'

৬৩-৬৪। ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি এবং হুর ইব্নু কায়স ইব্নু হিসন আল-ফাযারীর মধ্যে মূসা (আ)-এর সম্পর্কে বাদানুবাদ হলো। ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنه) বললেন, তিনি ছিলেন খিযর। ঘটনাক্রমে তখন তাদের পাশ দিয়ে উবাঈ ইব্ন কা'ব (رضي الله عنه) যাচ্ছিলেন। ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنه) তাঁকে ডাক দিয়ে বললেনঃ আমি ও আমার এ ভাই মূসা (আ)-এর সেই সহচর সম্পর্কে বাদানুবাদ করছি যাঁর সাথে সাক্ষাৎ করার জন্য মূসা (আ) আল্লাহ্র নিকট পথের সন্ধান চেয়েছিলেন– আপনি নাবী (ﷺ) -কে তাঁর সম্পর্কে কিছু বলতে শুনেছেন কি? তিনি বললেন, হ্যাঁ, আমি আল্লাহর রসূল (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি, একদা মূসা (আ) বানী ইসরাঈলের কোন এক মাজলিসে উপস্থিত ছিলেন। তখন তাঁর নিকট জনৈক ব্যক্তি এসে বলল, 'আপনি কাউকে আপনার চেয়ে অধিক জ্ঞানী বলে মনে করেন কি?' মূসা (আ) বললেন, 'না।' তখন আল্লাহ্ তা'আলা মূসা (আ)-এর নিকট ওয়াহী প্রেরণ করলেনঃ 'হ্যাঁ, আমার বান্দা খিযর।' অতঃপর মূসা (আ) তাঁর সঙ্গে সাক্ষাৎ করার জন্য পথের সন্ধান চাইলেন। অতঃপর আল্লাহ্ তা'আলা মাছকে তার জন্য নিদর্শন বানিয়ে দিলেন এবং তাঁকে বলা হল, যখন তুমি মাছটি হারিয়ে ফেলবে তখন ফিরে যাবে। কারণ, কিছুক্ষণের মধ্যেই তুমি তাঁর সাথে মিলিত হবে। তখন তিনি সমুদ্রে সে মাছের নিদর্শন অনুসরণ করতে লাগলেন। মূসা (আ)-কে তাঁর সঙ্গী যুবক (ইউশা ইবনু নূন) বললেন, (কুরআন মাজীদের ভাষায়ঃ) আপনি কি লক্ষ্য করেছেন আমরা যখন পাথরের নিকট বিশ্রাম নিচ্ছিলাম তখন আমি মাছের কথা ভুলে গিয়েছিলাম? শয়তানই তার কথা আমাকে ভুলিয়ে দিয়েছিল। মূসা বললেন, আমরা তো সেটিরই সন্ধান করছিলাম। অতঃপর তারা নিজেদের পদ চিহ্ন অনুসরণ করে ফিরে চলল। তাঁরা খিযরকে পেলেন। তাদের ঘটনা সেটাই, যা আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর কিতাবে বিবৃত করেছেন। –বুখারী ৭৪ [২২৬৭, ২৭২৮, ৩২৭৮, ৩৪০০,৩৪০১, ৪৭২৫, ৪৭২৬, ৪৭২৭, ৬৬৭২, ৭৪৭৮; মুসলিম ২৩৮০, তিরমিযী ৩১৪৯, আহমাদ ২০৬০৬, ২০৬১১]

قَالَ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا (٦٧)

৬৭. সে বলল, 'আপনি কিছুতেই আমার সাথে ধৈর্য ধারণ করতে পারবেন না।'

وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا (٦٨)

৬৮. আপনি কীভাবে সে বিষয়ে ধৈর্য ধারণ করবেন যা আপনার জ্ঞানের আয়ত্বের বাইরে?'

قَالَ سَتَجِدُنِيْٓ إِنْ شَآءَ اللهُ صَابِرًا وَّلَآ أَعْصِيْ لَكَ أَمْرًا (٦٩)

৬৯. মূসা বলল, 'আল্লাহ চাইলে আমাকে ধৈর্যশীলই পাবেন, আমি আপনার কোন নির্দেশই লঙ্ঘন করব না।'

قَالَ فَإِنِ اتَّبَعْتَنِيْ فَلَا تَسْأَلْنِيْ عَنْ شَيْءٍ حَتّٰٓى أُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ع (٧٠)

৭০. সে বলল, 'আপনি যেহেতু আমার অনুসরণ করতেই চান, তাহলে আপনি আমাকে কোন ব্যাপারেই প্রশ্ন করবেন না যতক্ষণ না আমি নিজেই সে সম্পর্কে আপনাকে বলি।'

فَانْطَلَقَا قف حَتّٰٓى إِذَا رَكِبَا فِي السَّفِيْنَةِ خَرَقَهَا ط قَالَ أَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ أَهْلَهَا ج لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا إِمْرًا (٧١)

৭১. অতঃপর তারা দু'জনে চলতে লাগল যতক্ষণ না তারা নৌকায় উঠল, অতঃপর লোকটি নৌকায় ছিদ্র করে দিল। মূসা বলল, 'আপনি কি তার আরোহীদেরকে ডুবিয়ে দেয়ার জন্য তাতে ছিদ্র করলেন? আপনি তো এক অদ্ভুত কাজ করলেন।'

قَالَ أَلَمْ أَقُلْ إِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِيَ صَبْرًا (٧٢)

৭২. সে বলল, 'আমি কি আপনাকে বলিনি যে, আপনি কিছুতেই আমার সঙ্গে ধৈর্য ধরতে পারবেন না?'

قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِيْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا تُرْهِقْنِيْ مِنْ أَمْرِيْ عُسْرًا (٧٣)

৭৩. মূসা বলল, 'আমার ভুলের জন্য আমাকে পাকড়াও করবেন না, আর আমার ব্যাপারে আপনি অধিক কড়াকড়ি করবেন না।'

فَانْطَلَقَا قف حَتّٰٓى إِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ لا قَالَ أَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةًۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ط لَقَدْ جِئْتَ شَيْئًا نُّكْرًا (٧٤)

৭৪. তারপর তারা চলতে লাগল। চলতে চলতে এক বালককে তারা দেখতে পেল। তখন সে তাকে হত্যা করে ফেলল। মূসা বলল, 'আপনি কি এক নিরাপরাধ জীবনকে কোন প্রকার হত্যার অপরাধ ছাড়াই হত্যা করে দিলেন? আপনি তো গুরুতর এক অন্যায় কাজ করে ফেললেন!'

قَالَ أَلَمْ أَقُل لَّكَ إِنَّكَ لَن تَسْتَطِيعَ مَعِيَ صَبْرًا (٧٥)

৭৫. সে বলল, 'আমি কি আপনাকে বলিনি যে, আপনি আমার সঙ্গে কক্ষনো ধৈর্য ধরতে পারবেন না?'

قَالَ إِن سَأَلْتُكَ عَن شَيْءٍ بَعْدَهَا فَلَا تُصَاحِبْنِي ۖ قَدْ بَلَغْتَ مِن لَّدُنِّي عُذْرًا (٧٦)

৭৬. মূসা বলল, 'এরপর আমি যদি কোন বিষয়ে আপনাকে জিজ্ঞেস করি, তাহলে আপনি আর আমাকে সঙ্গে রাখবেন না, ওযর অন্যায় আমার পক্ষ থেকেই ঘটেছে।'

فَانطَلَقَا حَتَّىٰ إِذَا أَتَيَا أَهْلَ قَرْيَةٍ اسْتَطْعَمَا أَهْلَهَا فَأَبَوْا أَن يُضَيِّفُوهُمَا فَوَجَدَا فِيهَا جِدَارًا يُرِيدُ أَن يَنقَضَّ فَأَقَامَهُ ۖ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ عَلَيْهِ أَجْرًا (٧٧)

৭৭. তারপর তারা উভয়ে চলতে লাগল, চলতে চলতে তারা এক জনপদে পৌঁছে সেখানকার লোকেদের কাছে খাবার চাইল। কিন্তু তারা তাদের দু'জনকে আতিথ্য প্রদান করতে অস্বীকার করল। তারা দু'জন সেখানে একটা দেয়াল দেখতে পেল যা পড়ে যাবার উপক্রম হয়েছিল। তখন সে ব্যক্তি সেটিকে সুপ্রতিষ্ঠিত করে দিল। মূসা বলল, 'আপনি ইচ্ছে করলে এর জন্য পারিশ্রমিক নিতে পারতেন।'

قَالَ هَٰذَا فِرَاقُ بَيْنِي وَبَيْنِكَ ۚ سَأُنَبِّئُكَ بِتَأْوِيلِ مَا لَمْ تَسْتَطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا (٧٨)

৭৮. লোকটি বলল, 'এখানেই আপনার সাথে আমার সম্পর্কের বিচ্ছেদ ঘটল। এখন আমি আপনাকে ব্যাখ্যা জানিয়ে দেব যে বিষয়ে আপনি ধৈর্য ধরতে পারেননি।

أَمَّا السَّفِينَةُ فَكَانَتْ لِمَسَاكِينَ يَعْمَلُونَ فِي الْبَحْرِ فَأَرَدتُّ أَنْ أَعِيبَهَا وَكَانَ وَرَاءَهُم مَّلِكٌ يَأْخُذُ كُلَّ سَفِينَةٍ غَصْبًا (٧٩)

৭৯. নৌকাটির ব্যাপার হল- তা ছিল কয়েকজন গরীব লোকের, তারা সমুদ্রে জীবিকার জন্য শ্রম করত। আমি সেটাকে খুঁৎযুক্ত করতে চাইলাম, কারণ তাদের পশ্চাতে ছিল এক রাজা, সে জোরপূর্বক সব নৌকা কেড়ে নিত।

وَأَمَّا الْغُلَامُ فَكَانَ أَبَوَاهُ مُؤْمِنَيْنِ فَخَشِينَا أَن يُرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَكُفْرًا ۚ (٨٠)

৮০. আর বালকটির ব্যাপার হল- তার মাতা-পিতা ছিল মু'মিন। আমরা শঙ্কা করলাম যে, সে তার বিদ্রোহমূলক আচরণ ও (আল্লাহ্র প্রতি) কুফ্রী দ্বারা তাদেরকে কষ্ট দেবে।

فَأَرَدْنَا أَن يُبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ زَكَاةً وَأَقْرَبَ رُحْمًا (٨١)

৮১. এ কারণে আমরা চাইলাম যে, তাদের প্রতিপালক তাদেরকে তার পরিবর্তে অধিক পবিত্র ও দয়া-মায়ায় অধিক ঘনিষ্ঠ (সন্তান) দান করবেন।

وَأَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلَامَيْنِ يَتِيمَيْنِ فِي

৮২. আর ঐ দেয়ালটির বিষয় হল- তা ছিল ঐ শহরের দু'জন ইয়াতীম বালকের। তার নীচে ছিল

الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهُ كَنْزٌ لَّهُمَا وَكَانَ أَبُوْهُمَا صَالِحًا ج فَأَرَادَ رَبُّكَ أَنْ يَّبْلُغَآ أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنْزَهُمَا ق صلے رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ج وَمَا فَعَلْتُهٗ عَنْ أَمْرِيْ ط ذٰلِكَ تَأْوِيْلُ مَا لَمْ تَسْطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ط ع (٨٢)

তাদের জন্য রক্ষিত ধন, তাদের পিতা ছিল এক সৎ ব্যক্তি। তাই তোমার প্রতিপালক চাইলেন তারা দু'জন যৌবনে উপনীত হোক আর তাদের গচ্ছিত ধন বের করে নিক- যা হল তোমার প্রতিপালকের রহমত বিশেষ। এ সব আমি নিজের পক্ষ থেকে করিনি। এ হল সে বিষয়ের ব্যাখ্যা যে সম্পর্কে আপনি ধৈর্য ধারণ করতে পারেননি।'

وَيَسْأَلُوْنَكَ عَنْ ذِي الْقَرْنَيْنِ ط قُلْ سَأَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا ط (٨٣)

৮৩. তোমাকে তারা যুলকারনাইন সম্পর্কে জিজ্ঞেস করছে। বল, 'আমি তার বিষয় তোমাদের নিকট কিছু বর্ণনা করব।'

إِنَّا مَكَّنَّا لَهٗ فِي الْأَرْضِ وَاٰتَيْنٰهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا لا (٨٤)

৮৪. আমি তাকে পৃথিবীতে আধিপত্য দান করেছিলাম আর তাকে সব রকমের উপায় উপাদান দিয়েছিলাম।

فَأَتْبَعَ سَبَبًا (٨٥)

৮৫. একবার সে এক রাস্তা ধরল (অর্থাৎ একদিকে একটা অভিযান চালাল)।

حَتّٰى إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَغْرُبُ فِيْ عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَّوَجَدَ عِنْدَهَا قَوْمًا ط ه قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّآ أَنْ تُعَذِّبَ وَإِمَّآ أَنْ تَتَّخِذَ فِيْهِمْ حُسْنًا (٨٦)

৮৬. চলতে চলতে যখন সে সূর্যাস্তের স্থানে পৌঁছল, তখন সে সূর্যকে অস্বচ্ছ জলাশয়ে ডুবতে দেখল আর সেখানে একটি জাতির লোকেদের সাক্ষাৎ পেল। আমি বললাম, 'হে যুলকারনাইন! তুমি তাদেরকে শাস্তি দিতে পার কিংবা তাদের সঙ্গে (সদয়) ব্যবহারও করতে পার।'

قَالَ أَمَّا مَنْ ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ يُرَدُّ إِلٰى رَبِّهٖ فَيُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّكْرًا (٨٧)

৮৭. সে বলল, 'যে ব্যক্তি যুল্‌ম করবে আমি তাকে অচিরেই শাস্তি দেব, অতঃপর তাকে তার প্রতিপালকের কাছে ফিরিয়ে আনা হবে, তখন তিনি তাকে কঠিন 'আযাব দেবেন।

وَأَمَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالْحُسْنٰى ج وَسَنَقُوْلُ لَهٗ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ط (٨٨)

৮৮. আর যে ব্যক্তি ঈমান আনবে আর সৎকাজ করবে তার জন্য আছে উত্তম পুরস্কার আর আমি তাকে সহজ কাজের নির্দেশ দেব।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا (٨٩)

৮৯. তারপর সে আরেক পথ ধরল।

حَتّٰٓى إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن دُونِهَا سِتْرًا ۙ (٩٠)

৯০. চলতে চলতে সে সূর্যোদয়ের স্থানে পৌঁছল। সে সূর্যকে এমন এক জাতির উপর উদয় হতে দেখতে পেল, আমি যাদের জন্য সূর্য থেকে বাঁচার কোন আড়ালের ব্যবস্থা করিনি।

كَذٰلِكَ ؕ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا (٩١)

৯১. এই হল তাদের অবস্থা। তার সামনে যা ছিল আমি সে সম্পর্কে ছিলাম সম্পূর্ণ অবহিত।

ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا (٩٢)

৯২. এরপর সে আরেক পথ ধরল।

حَتّٰٓى إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن دُونِهِمَا قَوْمًا ۙ لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا (٩٣)

৯৩. চলতে চলতে সে দু' পাহাড়ের মাঝে এসে পৌঁছল। সেখানে সে এক সম্প্রদায়কে দেখতে পেল। যারা কথাবার্তা কমই বুঝতে পারে।

قَالُوا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلٰٓى أَن تَجْعَلَ بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا (٩٤)

৯৪. তারা বলল, 'হে যুলক্বারনায়ন! ইয়াজূজ মা'জূজ পৃথিবীতে অশান্তি সৃষ্টি করছে, অতএব আমরা কি আপনাকে কর দেব যে, আপনি আমাদের ও তাদের মাঝে একটা বাঁধ নির্মাণ করে দেবেন?'

قَالَ مَا مَكَّنِّي فِيهِ رَبِّي خَيْرٌ فَأَعِينُونِي بِقُوَّةٍ أَجْعَلْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۙ (٩٥)

৯৫. সে বলল, 'আমাকে আমার প্রতিপালক যা দিয়েছেন তা-ই যথেষ্ট, কাজেই তোমরা আমাকে শক্তি-শ্রম দিয়ে সাহায্য কর, আমি তোমাদের ও তাদের মাঝে এক সুদৃঢ় প্রাচীর গড়ে দেব।

اٰتُونِي زُبَرَ الْحَدِيدِ ؕ حَتّٰٓى إِذَا سَاوٰى بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انفُخُوا ؕ حَتّٰٓى إِذَا جَعَلَهُ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُونِيٓ أُفْرِغْ عَلَيْهِ قِطْرًا ؕ (٩٦)

৯৬. আমার কাছে লোহার পাত এনে দাও।' শেষ পর্যন্ত যখন সে দু'পাহাড়ের মাঝের ফাঁকা জায়গা পুরোপুরি ভরাট করে দিল সে বলল, 'তোমরা হাপরে দম দিতে থাক।' শেষ পর্যন্ত যখন তা আগুনের মত লাল হয়ে গেল তখন সে বলল, 'আনো, আমি এর উপর গলিত তামা ঢেলে দেব।'

فَمَا اسْطَاعُوٓا أَن يَظْهَرُوهُ وَمَا اسْتَطَاعُوا لَهُ نَقْبًا (٩٧)

৯৭. এরপর তারা (অর্থাৎ ইয়াজূজ-মা'জূজ) তা অতিক্রম করতে পারবে না, আর তা ভেদ করতেও পারবে না।

قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّن رَّبِّي ۚ فَإِذَا جَآءَ وَعْدُ رَبِّي جَعَلَهُ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ رَبِّي حَقًّا ؕ (٩٨)

৯৮. সে বলল, 'এ আমার প্রতিপালকের করুণা, যখন আমার প্রতিপালকের ওয়া'দার নির্দিষ্ট সময় আসবে, তখন তিনি তাকে ধূলিসাৎ করে দেবেন

আর আমার প্রতিপালকের ওয়া'দা সত্য।

৯৯. আমি তাদেরকে সেদিন এমন অবস্থায় ছেড়ে দেব যে, তারা একদল আরেক দলের উপর তরঙ্গমালার মত পড়বে। আর শিঙ্গায় ফুঁক দেয়া হবে। অতঃপর আমরা সব মানুষকে একসঙ্গে একত্রিত করব।

وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا ۙ (٩٩)

১০০. আমি সেদিন জাহান্নামকে কাফিরদের জন্য সরাসরি হাযির করব।

وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ عَرْضًا ۙ (١٠٠)

১০১. আমার স্মরণ থেকে যাদের চক্ষু ছিল আবরণে ঢাকা আর তারা শুনতেও সক্ষম ছিল না।

ِالَّذِيْنَ كَانَتْ أَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَمْعًا ع (١٠١)

১০২. যারা কুফুরী নীতি গ্রহণ করেছে তারা কি মনে করে যে, তারা আমার পরিবর্তে আমার বান্দাহ্দেরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করবে? আমি কাফিরদের মেহমানদারির জন্য জাহান্নাম প্রস্তুত করে রেখেছি।

أَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْآ أَنْ يَّتَّخِذُوْا عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْٓ أَوْلِيَآءَ ؕ إِنَّآ أَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا (١٠٢)

১০৩. বল, 'আমি তোমাদেরকে কি সংবাদ দেব নিজেদের 'আমালের ক্ষেত্রে কারা সবচেয়ে বেশি ক্ষতিগ্রস্ত?'

قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِيْنَ أَعْمَالًا ؕ (١٠٣)

১০৪. তারা হল সে সব লোক দুনিয়ার জীবনে যাদের চেষ্টা সাধনা ব্যর্থ হয়ে গেছে আর তারা নিজেরা মনে করছে যে, তারা সঠিক কাজই করছে।

اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ صُنْعًا (١٠٤)

১০৫. তারা হল সে সব লোক যারা তাদের প্রতিপালকের নিদর্শন ও তাঁর সাথে সাক্ষাৎকে অমান্য করে। যার ফলে তাদের যাবতীয় 'আমাল নিস্ফল হয়ে গেছে। কিয়ামাতের দিন আমি তাদের (কাজের) জন্য কোন ওজন কায়িম করব না (অর্থাৎ তাদের এ সব

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ لَهُمْ

১০৩। মুস'আব (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আমার পিতাকে জিজ্ঞেস করলাম, قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْأَخْسَرِيْنَ أَعْمَالًا এ আয়াতে যাদের সম্পর্কে বলা হয়েছে, তারা হল "হারূরী" গ্রামের বাসিন্দা। তিনি বললেন, না, তারা হচ্ছে ইয়াহূদী ও খ্রিস্টান। কেননা, ইয়াহূদীরা মুহাম্মাদ (ﷺ)-কে মিথ্যা সাব্যস্ত করেছিল এবং খ্রিস্টানরা জান্নাতকে অস্বীকার করত এবং বলত, সেখানে কোন খাদ্য-পানীয় নেই। আর "হারূরী" হল তারা, যারা আল্লাহ্র সঙ্গে ওয়াদা করার পরও তা ভঙ্গ করেছিল। সা'দ তাদের বলতেন 'ফাসিক'। –বুখারী ৪৭২৮

يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا (١٠٥)

'আমাল ওজনযোগ্য হিসেবে গণ্য করা হবে না)।

ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا (١٠٦)

১০৬. এটাই তাদের প্রতিফল-জাহান্নাম, কারণ তারা কুফুরী করেছে আর আমার নিদর্শন ও রসূলদেরকে হাসি-তামাশার বিষয় বানিয়েছে।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ۙ (١٠٧)

১০৭. যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তাদের আপ্যায়নের জন্য আছে ফিরদাউসের বাগান।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا (١٠٨)

১০৮. সেখানে তারা স্থায়ী হয়ে থাকবে, সেখান থেকে বের হয়ে আর অন্যত্র যেতে চাইবে না।

قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ أَنْ تَنْفَدَ كَلِمَاتُ رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا (١٠٩)

১০৯. বল, 'সমুদ্রগুলো যদি আমার প্রতিপালকের কথা লেখার জন্য কালি হয়ে যায়, তবে আমার প্রতিপালকের কথা লেখা শেষ হওয়ার আগেই সমুদ্র অবশ্যই নিঃশেষ হয়ে যাবে, আমি যদি এর সাহায্যের জন্য আরো অনুরূপ পরিমাণ সমুদ্র নিয়ে আসি তবুও।'

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صٰلِحًا وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ أَحَدًا ع (١١٠)

১১০. বল, 'আমি তোমাদেরই মত একজন মানুষ, আমার নিকট ওয়াহী করা হয় যে, তোমাদের ইলাহ কেবল এক ইলাহ। কাজেই যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের সঙ্গে সাক্ষাতের আশা করে, সে যেন সৎ 'আমাল করে আর তার প্রতিপালকের 'ইবাদাতে কাউকে শরীক না করে।'

১৯. সূরাহ মারইয়াম

سُوْرَةُ مَرْيَمَ

আয়াতঃ ৯৮, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে ।

كٓهٰيٰعٓصٓ (١)

১. কাফ্-হা-ইয়্যা-'আইন-সাদ।

১০৫। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ্ (সাঃ) বলেন, ক্বিয়ামাতের দিন একজন খুব মোটা ব্যক্তি আসবে; কিন্তু সে আল্লাহ্র কাছে মশার পাখার চেয়ে ক্ষুদ্র হবে। তারপর তিনি বলেন, পাঠ করো, "ক্বিয়ামাত দিবসে তাদের কাজের কোন গুরুত্ব দিব না।" –বুখারী ৪৭২৯ [মুসলিম ২৭৮৫]

ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ عَبْدَهٗ زَكَرِيَّآ ج صلے (٢)

২. এটা তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহের বিবরণ তাঁর বান্দাহ যাকারিয়্যার প্রতি।

إِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا (٣)

৩. যখন সে তার প্রতিপালককে আহ্বান করেছিল- এক গোপন আহ্বানে।

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ وَاشْتَعَلَ الرَّأْسُ شَيْبًا وَّلَمْ أَكُنْۢ بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا (٤)

৪. সে বলেছিল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমার হাড়গুলো দুর্বল হয়ে গেছে, আর বার্ধক্যে আমার মস্তক সাদা হয়ে গেছে, হে আমার প্রতিপালক! তোমাকে ডেকে আমি কখনো বিফল হইনি।

وَإِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآئِيْ وَكَانَتِ امْرَأَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا لا (٥)

৫. আমার পরে আমার স্বগোত্রীয়রা (কী করবে) সে সম্পর্কে আমি আশঙ্কাবোধ করছি, আর আমার স্ত্রী হল বন্ধ্যা, কাজেই তুমি তোমার তরফ থেকে আমাকে একজন উত্তরাধিকারী দান কর

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ق وَاجْعَلْهُ رَبِّ رَضِيًّا (٦)

৬. যে আমার উত্তরাধিকারী হবে আর উত্তরাধিকারী হবে ইয়া'কুব পরিবারের; আর হে আমার প্রতিপালক! তাকে করুন আপনার সন্তুষ্টির পাত্র।

يٰزَكَرِيَّآ إِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلَامِ ۨاسْمُهٗ يَحْيٰي لا لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا (٧)

৭. তিনি বললেন, 'হে যাকারিয়া! আমি তোমাকে একটি পুত্রের শুভ সংবাদ দিচ্ছি যার নাম হবে ইয়াহ্ইয়া, পূর্বে এ নামে আমি কাউকে আখ্যায়িত করিনি।'

قَالَ رَبِّ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلَامٌ وَّكَانَتِ امْرَأَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ عِتِيًّا (٨)

৮. সে বলল, 'হে আমার পালনকর্তা! আমার পুত্র হবে কেমন করে, আমার স্ত্রী তো বন্ধ্যা, আর আমি বার্ধক্যের শেষ স্তরে পৌঁছে গেছি।'

قَالَ كَذٰلِكَ ج قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ شَيْئًا (٩)

৯. তিনি বললেন, 'এভাবেই হবে, তোমার প্রতিপালক বলেছেন, 'এটা আমার পক্ষে সহজ। ইতোপূর্বে আমিই তোমাকে সৃষ্টি করেছি যখন তুমি কিছুই ছিলে না।'

قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْ اٰيَةً ط قَالَ اٰيَتُكَ أَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا (١٠)

১০. সে বলল, 'হে আমার পালনকর্তা! আমার জন্য একটা চিহ্ন স্থির করে দিন।' তিনি বললেন, 'তোমার চিহ্ন এই যে, তুমি তিন রাত মানুষের সঙ্গে কথা বলবে না যদিও তুমি কথা বলতে সক্ষম।'

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَأَوْحٰى

১১. অতঃপর সে তার কুঠরি থেকে বের হয়ে তার সম্প্রদায়ের কাছে গেল এবং ইশারায় তাদেরকে সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহ্‌র প্রশংসা-পবিত্রতা বর্ণনা

إِلَيْهِمْ أَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا (١١)

করতে বলল।

يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحُكْمَ صَبِيًّا ۙ (١٢)

১২. (তার পুত্রের কাছে নির্দেশ আসল) 'হে ইয়াহ্ইয়া! এ কিতাব (তাওরাত) সুদৃঢ়ভাবে ধারণ কর।' আমি তাকে বাল্য কালেই জ্ঞান দান করেছিলাম।

وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۗ وَكَانَ تَقِيًّا ۙ (١٣)

১৩. আর (দিয়েছিলাম) আমার পক্ষ থেকে দয়া-মায়া ও পবিত্রতা। সে ছিল আল্লাহ্ভীরু

وَّبَرًّاۢ بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا (١٤)

১৪. আর পিতা-মাতার প্রতি সদয়, সে দাম্ভিক, অবাধ্য ছিল না।

وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا ع (١٥)

১৫. তার উপর শান্তি যেদিন সে জন্মেছে, যেদিন তার মৃত্যু হবে আর যেদিন সে জীবন্ত হয়ে উত্থিত হবে।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ إِذِ انْتَبَذَتْ مِنْ أَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا ۙ (١٦)

১৬. এ কিতাবে (উল্লেখিত) মারইয়ামের কাহিনী বর্ণনা কর– যখন সে তার পরিবারবর্গ হতে আলাদা হয়ে পূর্ব দিকে এক জায়গায় আশ্রয় নিয়েছিল।

فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا قف فَأَرْسَلْنَآ إِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا (١٧)

১৭. সে তাদের থেকে (আড়াল করার জন্য) পর্দা টানিয়ে দিল। তখন আমি তার কাছে আমার রূহ্কে (অর্থাৎ জিবরীলকে) পাঠিয়ে দিলাম। তখন সে (অর্থাৎ জিবরীল) তার সামনে পূর্ণ মানুষের আকৃতি ধারণ করল।

قَالَتْ إِنِّيْٓ أَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ إِنْ كُنْتَ تَقِيًّا (١٨)

১৮. মারইয়াম বলল, 'আমি তোমা হতে দয়াময় আল্লাহ্র আশ্রয় প্রার্থনা করছি যদি তুমি আল্লাহ্কে ভয় কর' (তবে আমার নিকট এসো না)।'

قَالَ إِنَّمَآ أَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ قصلے لِأَهَبَ لَكِ غُلٰمًا زَكِيًّا (١٩)

১৯. সে বলল, 'আমি তোমার প্রতিপালক কর্তৃক প্রেরিত হয়েছি তোমাকে একটি পূত-পবিত্র পুত্র দানের উদ্দেশ্যে।'

قَالَتْ أَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ بَشَرٌ وَّلَمْ أَكُ بَغِيًّا (٢٠)

২০. সে বলল, 'কেমন করে আমার পুত্র হতে পারে, যখন কোন মানুষ আমাকে স্পর্শ করেনি, আর আমি অসতীও নই।'

قَالَ كَذٰلِكِ ج قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ج وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ج وَكَانَ

২১. সে বলল, 'এভাবেই হবে, তোমার প্রতিপালক বলেছেন- 'ওটা আমার জন্য সহজ, আমি তাকে মানুষের জন্য নিদর্শন বানাতে চাই আর আমার পক্ষ

থেকে এক রহমত, এ ব্যাপারে সিদ্ধান্ত হয়ে গেছে।'	أَمْرًا مَّقْضِيًّا (٢١)
২২. অতঃপর ছেলে তার গর্ভে আসল। তখন সে তা নিয়ে দূরবর্তী জায়গায় চলে গেল।	فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا (٢٢)
২৩. সন্তান প্রসবের বেদনা তাকে এক খেজুর বৃক্ষতলের দিকে তাড়িত করল। সে বলে উঠল, 'হায়! এর আগেই যদি আমি মরে যেতাম আর (মানুষের) স্মৃতি থেকে পুরোপুরি মুছে যেতাম!'	فَأَجَآءَهَا الْمَخَاضُ إِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ج قَالَتْ يَا لَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ نَسْيًا مَّنْسِيًّا (٢٣)
২৪. নিম্নদিক থেকে তাকে ডাক দেয়া হল, 'তুমি দুঃখ করো না, তোমার প্রতিপালক তোমার পাদদেশ দিয়ে এক নির্ঝরিণী প্রবাহিত করে দিয়েছেন।	فَنَادَاهَا مِنْ تَحْتِهَآ أَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا (٢٤)
২৫. খেজুর গাছের কাণ্ড ধরে তুমি তোমার দিকে নাড়া দাও, তা তোমার উপর তাজা পরিপক্ক খেজুর পতিত করবে।	وَهُزِّيْٓ إِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ز (٢٥)
২৬. অতঃপর খাও, পান কর আর (তোমার) চোখ জুড়াও। যদি তুমি কোন লোককে দেখতে পাও তাহলে বলবে- আমি রহমান আল্লাহ্‌র জন্য সাওম পালনের মানৎ করেছি, কাজেই আমি কোন মানুষের সঙ্গে আজ কিছুতেই কথা বলব না।'	فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ج فَإِمَّا تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ أَحَدًا لا فَقُوْلِيْٓ إِنِّيْ نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ أُكَلِّمَ الْيَوْمَ إِنْسِيًّا ج (٢٦)
২৭. অতঃপর সে তার সন্তানকে বয়ে নিয়ে তার সম্প্রদায়ের কাছে আসল। তারা বলল, 'হে মারইয়াম! তুমি তো এক অদ্ভুত জিনিস নিয়ে এসেছ!	فَأَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ط قَالُوْا يٰمَرْيَمُ لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا (٢٧)
২৮. ওহে হারূনের বোন! তোমার পিতা তো খারাপ লোক ছিল না, আর তোমার মাও ছিল না কোন অসতী নারী।'	يَآ أُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ أَبُوْكِ امْرَأَ سَوْءٍ وَّمَا كَانَتْ أُمُّكِ بَغِيًّا صلے ج (٢٨)
২৯. তখন মারইয়াম তার ছেলের দিকে ইশারা করল। তারা বলল, 'আমরা কোলের বাচ্চার সঙ্গে কীভাবে কথা বলব?'	فَأَشَارَتْ إِلَيْهِ ط قف قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا (٢٩)
৩০. শিশুটি বলে উঠল, 'আমি আল্লাহ্‌র বান্দাহ, তিনি আমাকে কিতাব দিয়েছেন, আর আমাকে নবী করেছেন।	قَالَ إِنِّيْ عَبْدُ اللهِ ط قف اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا لا (٣٠)

৩১. আমি যেখানেই থাকি না কেন তিনি আমাকে বরকতময় করেছেন আর আমাকে নামায ও যাকাতের হুকুম দিয়েছেন– যতদিন আমি জীবিত থাকি।

وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا أَيْنَ مَا كُنْتُ ص وَأَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا لا (٣١)

৩২. আর (তিনি আমাকে করেছেন) আমার মাতার প্রতি সদয়, তিনি আমাকে দাম্ভিক হতভাগ্য করেননি।

وَّبَرًّام بِوَالِدَتِيْ ز وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا (٣٢)

৩৩. আমার উপর আছে শান্তি যেদিন আমি জন্মেছি, যেদিন আমার মৃত্যু হবে আর আমি যেদিন জীবিত হয়ে উত্থিত হব।'

وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ أَمُوْتُ وَيَوْمَ أُبْعَثُ حَيًّا (٣٣)

৩৪. এই হচ্ছে মারইয়াম-পুত্র ঈসা, (এটাই) সত্য কথা যে বিষয়ে লোকেরা সন্দেহ পোষণ করে।

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ج قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ (٣٤)

৩৫. সন্তান গ্রহণ করা আল্লাহ্‌র কাজ নয়, তিনি পবিত্র, মহান; যখন তিনি কিছু করার সিদ্ধান্ত করেন তখন তার জন্য শুধু বলেন, 'হয়ে যাও', আর তা হয়ে যায়।

مَا كَانَ لِلّٰهِ أَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ لا سُبْحٰنَهٗ ط إِذَا قَضٰى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ط (٣٥)

৩৬. আল্লাহ্‌ই আমার ও তোমাদের প্রতিপালক, কাজেই তোমরা তাঁরই 'ইবাদাত কর, এটাই সরল সুদৃঢ় পথ।

وَإِنَّ اللهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ط هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (٣٦)

৩৭. অতঃপর দলগুলো তাদের মধ্যে মতভেদ করল। কাজেই সেই ভয়াবহ দিনের উপস্থিতকালে কাফিরদের জন্য ধ্বংস অনিবার্য।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ م بَيْنِهِمْ ج فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (٣٧)

৩৮. যেদিন তারা আমার কাছে আসবে সেদিন কতই না স্পষ্টভাবে তারা শুনতে পাবে আর দেখতে পাবে। কিন্তু যালিমরা আজ স্পষ্ট গুমরাহীর মধ্যে পড়ে আছে।

أَسْمِعْ بِهِمْ وَأَبْصِرْ لا يَوْمَ يَأْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٣٨)

৩৯. বিপদের দিন সম্পর্কে তাদেরকে সতর্ক করে দাও যখন ব্যাপার চূড়ান্ত করা হবে আর (দেখ) এ সম্পর্কে তারা উদাসীন আর তারা

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ إِذْ قُضِيَ الْأَمْرُ م

وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (٣٩)	ঈমান আনে না।
إِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْأَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَإِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ع (٤٠)	৪০. যমীন আর যমীনের উপর যারা আছে তাদের মালিকানা আমারই থাকবে, আর তারা আমার কাছেই ফিরে আসবে।
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِبْرَاهِيْمَ ۚ ط إِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا (٤١)	৪১. এ কিতাবে উল্লেখিত ইব্‌রাহীমের কথা স্মরণ কর, সে ছিল একজন সত্যনিষ্ঠ মানুষ, একজন নবী।
إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ يٰأَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْئًا (٤٢)	৪২. যখন সে তার পিতাকে বলেছিল, 'হে আমার পিতা! আপনি কেন এমন জিনিসের 'ইবাদাত করেন যা শুনে না, দেখে না, আর আপনার কোন কাজেই আসে না?
يٰأَبَتِ إِنِّيْ قَدْ جَآءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَأْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْ أَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا (٤٣)	৪৩. হে আমার পিতা! আমার কাছে এমন জ্ঞান এসেছে যা আপনার কাছে আসেনি, কাজেই আমার অনুসরণ করুন, আমি আপনাকে সরল সঠিক পথ দেখাব।
يٰأَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ط إِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا (٤٤)	৪৪. হে আমার পিতা! আপনি শয়তানের 'ইবাদাত করবেন না, শয়তান হচ্ছে দয়াময়ের বিরুদ্ধে বিদ্রোহী।
يٰأَبَتِ إِنِّيْ أَخَافُ أَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطَانِ وَلِيًّا (٤٥)	৪৫. হে আমার পিতা! আমার ভয় হয় যে, দয়াময়ের 'আযাব আপনাকে ধরে বসবে, তখন আপনি শয়তানের বন্ধু হয়ে যাবেন।'
قَالَ أَرَاغِبٌ أَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ	৪৬. পিতা বলল, 'হে ইব্‌রাহীম! তুমি কি আমার

৩৯। আবূ সা'ঈদ খুদরী (রাঃ) হতে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ্ (সাঃ) বলেন, ক্বিয়ামাত দিবসে মৃত্যুকে একটি ধূসর রঙের মেষের আকারে আনা হবে। তখন একজন সম্বোধনকারী ডাক দিয়ে বলবেন, হে জান্নাতবাসী! তখন তাঁরা ঘাড়-মাথা উঁচু করে দেখতে থাকবে। সম্বোধনকারী বলবে, তোমরা কি একে চিন? তারা বলবেন হ্যাঁ, এ হল মৃত্যু। কেননা সকলেই তাকে দেখেছে। তারপর সম্বোধনকারী আবার ডেকে বলবেন, হে জাহান্নামবাসী! জাহান্নামীরা মাথা উঁচু করে দেখতে থাকবে, তখন সম্বোধনকারী বলবে তোমরা কি একে চিন? তারা বলবে, হ্যাঁ, এ তো মৃত্যু। কেননা তারা সকলেই তাকে দেখেছে। তারপর (সেটিকে) যবহ করা হবে। আর ঘোষক বলবেন, হে জান্নাতবাসী! স্থায়ীভাবে (এখানে) থাক। তোমাদের আর কোন মৃত্যু নেই। আর হে জাহান্নামবাসী! চিরদিন (এখানে) থাক। তোমাদের আর মৃত্যু নেই। এরপর রসূলুল্লাহ্ (সাঃ) পাঠ করলেন– "তাদের সতর্ক করে দাও পরিতাপের দিবস সম্বন্ধে, যখন সকল ফয়সালা হয়ে যাবে অথচ এখন তারা গাফিল, তারা অসতর্ক দুনিয়াবাসী-অবিশ্বাসী।" –বুখারী ৪৭৩০ [মুসলিম ২৮৪৯, তিরমিযী ২৫৫৮, আহমাদ ১০৬৮২]

Contents

يَٰٓإِبْرَٰهِيمُ ۖ لَئِن لَّمْ تَنتَهِ لَأَرْجُمَنَّكَ وَٱهْجُرْنِى مَلِيًّا (٤٦)

দেবদেবীগুলো থেকে মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছ? যদি তুমি বিরত না হও তবে আমি অবশ্যই তোমাকে পাথরের আঘাতে মেরে ফেলব। তুমি চিরতরে আমার কাছ থেকে দূর হয়ে যাও।'

قَالَ سَلَٰمٌ عَلَيْكَ ۖ سَأَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّىٓ ۖ إِنَّهُۥ كَانَ بِى حَفِيًّا (٤٧)

৪৭. ইব্‌রাহীম বলল, 'আপনার প্রতি সালাম, আমি আমার প্রতিপালকের নিকট আপনার জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করব, তিনি আমার প্রতি বড়ই মেহেরবান।

وَأَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَأَدْعُوا۟ رَبِّى عَسَىٰٓ أَلَّآ أَكُونَ بِدُعَآءِ رَبِّى شَقِيًّا (٤٨)

৪৮. আমি পরিত্যাগ করছি আপনাদেরকে আর আপনারা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে যাদেরকে ডাকেন তাদেরকে। আমি আমার প্রতিপালককে ডাকি, আশা করি আমি আমার প্রতিপালককে ডেকে বঞ্চিত হব না।'

فَلَمَّا ٱعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُونَ مِن دُونِ ٱللَّهِ وَهَبْنَا لَهُۥٓ إِسْحَٰقَ وَيَعْقُوبَ ۖ وَكُلًّا جَعَلْنَا نَبِيًّا (٤٩)

৪৯. অতঃপর সে যখন তাদেরকে আর তারা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে যাদের 'ইবাদাত করত তাদেরকে পরিত্যাগ করল, তখন আমি তাকে দান করলাম ইসহাক্ব আর ইয়া'কূব আর তাদের প্রত্যেককে নবী করলাম।

وَوَهَبْنَا لَهُم مِّن رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا (٥٠)

৫০. আমি তাদেরকে দান করলাম আমার অনুগ্রহ আর সত্যিকার নাম-যশের সুউচ্চ সুখ্যাতি।

وَٱذْكُرْ فِى ٱلْكِتَٰبِ مُوسَىٰٓ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ مُخْلَصًا وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا (٥١)

৫১. এ কিতাবে উল্লেখিত মূসার কথা স্মরণ কর, সে ছিল বিশেষভাবে মনোনীত, আর একজন রসূল ও নবী।

وَنَٰدَيْنَٰهُ مِن جَانِبِ ٱلطُّورِ ٱلْأَيْمَنِ وَقَرَّبْنَٰهُ نَجِيًّا (٥٢)

৫২. আমি তাকে ডাক দিয়েছিলাম তূর পাহাড়ের ডান পার্শ্ব থেকে আর গোপনে কথাবার্তা বলার জন্য তাকে নিকটবর্তী করেছিলাম।

وَوَهَبْنَا لَهُۥ مِن رَّحْمَتِنَآ أَخَاهُ هَٰرُونَ نَبِيًّا (٥٣)

৫৩. আর আমি স্বীয় অনুগ্রহে তাকে দান করেছিলাম তার ভাই হারূনকে, সেও ছিল একজন নবী।

وَٱذْكُرْ فِى ٱلْكِتَٰبِ إِسْمَٰعِيلَ ۚ إِنَّهُۥ كَانَ صَادِقَ ٱلْوَعْدِ وَكَانَ رَسُولًا نَّبِيًّا (٥٤)

৫৪. এ কিতাবে উল্লেখিত ইসমাঈলের কথা স্মরণ কর, সে ছিল ওয়া'দা রক্ষায় (দৃঢ়) সত্যবাদী, আর ছিল একজন রসূল ও নবী।

وَكَانَ يَأْمُرُ أَهْلَهُۥ بِٱلصَّلَوٰةِ وَٱلزَّكَوٰةِ

৫৫. সে তার পরিবারবর্গকে নামায ও যাকাতের

وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا (٥٥)

হুকুম দিত আর সে ছিল তার প্রতিপালকের নিকট সন্তুষ্টির পাত্র।

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ إِدْرِيْسَ ز إِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا قلے (٥٦)

৫৬. এ কিতাবে উল্লেখিত ইদরীসের কথা স্মরণ কর, সে ছিল সত্যনিষ্ঠ, একজন নবী।

وَرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا (٥٧)

৫৭. আমি তাকে উচ্চ মর্যাদায় উন্নীত করেছিলাম।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ ق وَمِمَّنْ حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ ز وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ إِبْرَاهِيْمَ وَإِسْرَآئِيْلَ ز وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا ط إِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا سُجَّدًا وَّبُكِيًّا السجدة (٥٨)

৫৮. এরাই হল তারা আদাম বংশের নবীগণের মধ্য হতে, আর নূহের সঙ্গে যাদেরকে (নৌকায়) আরোহণ করিয়েছিলাম তাদের মধ্য হতে, আর ইব্রাহীম ও ইসরাঈলের বংশধরদের মধ্য হতে যাদেরকে আমি অনুগ্রহ করেছিলাম, এরা তাদেরই মধ্য হতে, যাদেরকে আমি পথনির্দেশ দিয়েছিলাম আর বেছে নিয়েছিলাম, এদের নিকট দয়াময়ের আয়াত আবৃত্তি করা হলে তারা সাজদায় অবনত হয়ে কান্নাভরে লুটিয়ে পড়ত।[সেজদা]

فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ أَضَاعُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوَاتِ فَسَوْفَ يَلْقَوْنَ غَيًّا لا (٥٩)

৫৯. অতঃপর তাদের পর এল অপদার্থ পরবর্তীরা, তারা নামায হারালো, আর লালসার বশবর্তী হল। তারা অচিরেই ধ্বংসের সম্মুখীন হবে।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَأُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ شَيْئًا لا (٦٠)

৬০. তারা বাদে যারা তাওবাহ্ করবে, ঈমান আনবে আর সৎ কাজ করবে। ফলে এরাই জান্নাতে প্রবেশ করবে, এদের প্রতি এতটুকু যুল্‌ম করা হবে না।

جَنّٰتِ عَدْنِ ۨالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ بِالْغَيْبِ ط إِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَأْتِيًّا (٦١)

৬১. স্থায়ী জান্নাত, দয়াময় তাঁর বান্দাহ্কে যে অদৃশ্য বিষয়ের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন, তাঁর প্রতিশ্রুতি অবশ্যই পূর্ণ হবে।

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا إِلَّا سَلٰمًا ط وَلَهُمْ رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا (٦٢)

৬২. সেখানে তারা শান্তির সম্ভাষণ ছাড়া কোন অপবাক্য শুনবে না। আর সকাল-সন্ধ্যা সেখানে তাদের জন্য থাকবে জীবন ধারণের উপকরণ।

تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا مَنْ كَانَ تَقِيًّا (٦٣)

৬৩. এই হল সেই জান্নাত আমি যার উত্তরাধিকারী করব আমার বান্দাহ্দের মধ্যে মুত্তাকীদেরকে।

وَمَا نَتَنَزَّلُ إِلَّا بِأَمْرِ رَبِّكَ ج لَهٗ مَا بَيْنَ

৬৪. (ফেরেশতাগণ বলে) 'আমরা আপনার প্রতিপালকের হুকুম ছাড়া অবতরণ করি না, যা

أَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ ج وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ج (٦٤)

আমাদের সামনে আছে, আর যা আমাদের পেছনে আছে আর এ দু'য়ের মাঝে যা আছে তা তাঁরই, আপনার প্রতিপালক কক্ষনো ভুলে যান না।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ ط هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ع (٦٥)

৬৫. তিনি আকাশ, যমীন আর এ দু'য়ের মাঝে যা আছে তার প্রতিপালক, কাজেই তুমি তাঁর 'ইবাদাত কর, আর তাঁর 'ইবাদাতে নিয়মিত ও দৃঢ় থাক। তুমি কি তাঁর নামের গুণসম্পন্ন অন্য আর কেউ আছে বলে জান?

وَيَقُوْلُ الْإِنْسَانُ أَإِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ أُخْرَجُ حَيًّا (٦٦)

৬৬. মানুষ বলে, 'কী! আমি যখন মরে যাব, আমাকে তখন কি জীবিত করে উঠানো হবে?'

أَوَلَا يَذْكُرُ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ يَكُ شَيْئًا (٦٧)

৬৭. মানুষ কি স্মরণ করে না যে, আমি পূর্বে তাকে সৃষ্টি করেছি আর সে তখন কিছুই ছিল না।

فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ج (٦٨)

৬৮. কাজেই তোমার রব্বের কসম! আমি তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই একত্রিত করব আর শয়তানদেরকেও। অতঃপর তাদেরকে জাহান্নামের চতুষ্পার্শ্বে নতজানু অবস্থায় অবশ্য অবশ্যই হাজির করব।

ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ أَيُّهُمْ أَشَدُّ عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ج (٦٩)

৬৯. অতঃপর প্রত্যেক দল হতে দয়াময়ের প্রতি সবচেয়ে অবাধ্যকে অবশ্য অবশ্যই টেনে বের করব।

ثُمَّ لَنَحْنُ أَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ أَوْلٰى بِهَا صِلِيًّا (٧٠)

৭০. আর আমি অবশ্য অবশ্যই খুব ভাল করে জানি তাদের মধ্যে কারা জাহান্নামে দগ্ধ হওয়ার সর্বাধিক উপযুক্ত।

وَإِنْ مِّنْكُمْ إِلَّا وَارِدُهَا ج كَانَ عَلٰى رَبِّكَ

৭১. তোমাদের মধ্যে এমন কেউ নেই যাকে জাহান্নাম অতিক্রম করতে হবে না, এটা তোমার

৬৪। ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) একবার জিব্রীলকে বললেন, আপনি আমার সাথে যতবার সাক্ষাৎ করেন, তার চেয়ে অধিক সাক্ষাৎ করতে আপনাকে কিসে বাধা দেয়? তখন এ আয়াত অবতীর্ণ হল, "আমরা আপনার প্রতিপালকের আদেশ ছাড়া অবতরণ করি না, যা আমাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে আছে সবই তাঁরই।" –বুখারী ৪৭৩১ [৩২১৮; তিরমিযী ৩১৫৮, আহমাদ ২০৪৪, ২০৭৯, ৩৩৫৫]

حَتْمًا مَّقْضِيًّا ج (٧١)

প্রতিপালকের অনিবার্য ফয়সালা।

ثُمَّ نُنَجِّي الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ فِيْهَا جِثِيًّا (٧٢)

৭২. অতঃপর মুত্তাকীদেরকে আমি রক্ষা করব আর যালিমদেরকে তার মধ্যে নতজানু অবস্থায় রেখে দেব।

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا لا أَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّأَحْسَنُ نَدِيًّا (٧٣)

৭৩. আমার স্পষ্ট আয়াত যখন তাদের নিকট আবৃত্তি করা হয় তখন কাফিররা মু'মিনদেরকে বলে, 'দু'টি দলের মধ্যে মর্যাদায় কোন্‌টি শ্রেষ্ঠ আর মজলিস হিসেবে অধিক উত্তম?'

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَحْسَنُ أَثَاثًا وَّرِءْيًا (٧٤)

৭৪. আমি তাদের পূর্বে বহু মানব বংশকে ধ্বংস করেছি যারা উপায় উপকরণে আর বাইরের চাকচিক্যে তাদের অপেক্ষা শ্রেষ্ঠ ছিল।

قُلْ مَنْ كَانَ فِي الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ج حَتّٰٓى إِذَا رَأَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ إِمَّا الْعَذَابَ وَإِمَّا السَّاعَةَ ط فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضْعَفُ جُنْدًا (٧٥)

৭৫. বল, যারা গুমরাহীতে পড়ে আছে, দয়াময় তাদের জন্য (রশি) ঢিল দিয়ে দেন, যে পর্যন্ত না তারা দেখতে পাবে যার ওয়া'দা তাদেরকে দেয়া হচ্ছে- তা শাস্তিই হোক কিংবা ক্বিয়ামতই হোক।' তখন তারা জানতে পারবে মর্যাদায় কে নিকৃষ্ট আর জনবলে দুর্বল।

وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ط وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا (٧٦)

৭৬. যারা সৎপথ সন্ধান করে আল্লাহ তাদেরকে অধিক হিদায়াত দান করেন। আর স্থায়ী সৎকর্মসমূহ তোমার পালনকর্তার নিকট সাওয়াবের দিক দিয়ে শ্রেষ্ঠ আর প্রতিদান হিসেবেও শ্রেষ্ঠ।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِيْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَأُوْتَيَنَّ مَالًا وَّوَلَدًا ط (٧٧)

৭৭. তুমি কি লক্ষ্য করেছ সে ব্যক্তিকে যে আমার নিদর্শনসমূহকে প্রত্যাখ্যান করেছে আর সে বলে, 'আমাকে অবশ্য অবশ্যই সম্পদ আর সন্তানাদি দেয়া হবে।'

৭৭-৮০। খাব্বাব (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি একজন কর্মকার ছিলাম এবং আস ইবনু ওয়ায়েলের নিকট আমার কিছু পাওনা ছিল। আমি তাকে তাগিদ দিতে তার কাছে আসলাম। সে বলল, আমি পাওনা পরিশোধ করব না, যতক্ষণ না তুমি মুহাম্মাদকে অস্বীকার করবে। তিনি (খাব্বাব) বললেন, আমি কখনও তাঁকে অস্বীকার করব না, এমনকি তোমার মৃত্যুর পরে জীবিত হওয়া পর্যন্তও না। আস্ বলল, আমি মৃত্যুর পরে আবার জীবিত হব তখন অবিলম্বে আমি সম্পদ ও সন্তানের দিকে ফিরে আসব এবং তোমাকে পরিশোধ করে দেব। এ সময় আল্লাহ্ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করেন। "তুমি কি তাকে লক্ষ্য করেছ, যে আমার আয়াতসমূহ অস্বীকার করে এবং বলে, আমাকে ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্ততি দেয়া হবেই। সে কি অদৃশ্য সম্বন্ধে অবহিত হয়েছে, অথবা দয়াময়ের নিকট থেকে প্রতিশ্রুতি লাভ করেছে? কখনই না; সে যা বলে অবিলম্বে আমি তা লিখে রাখব এবং তার শাস্তি বৃদ্ধি করতে থাকব।

৭৮. সে কি অদৃশ্য বিষয় জেনে ফেলেছে, নাকি দয়াময়ের নিকট থেকে প্রতিশ্রুতি লাভ করেছে?

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۙ (٧٨)

৭৯. কক্ষনো না, তারা যা বলে আমি তা লিখে রাখব আর আমি তার শাস্তি বাড়াতেই থাকব, বাড়াতেই থাকব।

كَلَّا ۭ سَنَكْتُبُ مَا يَقُوْلُ وَنَمُدُّ لَهٗ مِنَ الْعَذَابِ مَدًّا ۙ (٧٩)

৮০. সে যে বিষয়ের কথা বলে (তার সম্পদ-সরঞ্জাম ও জনবলের গর্ব করে) তা থাকবে আমার অধিকারে আর সে আমার কাছে আসবে নিঃসঙ্গ, একাকী।

وَّنَرِثُهٗ مَا يَقُوْلُ وَيَأْتِيْنَا فَرْدًا (٨٠)

৮১. তারা আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে অন্যান্য ইলাহ গ্রহণ করেছে যাতে তারা (অর্থাৎ ঐ কল্পিত মা'বুদগুলো) তাদের জন্য পৃষ্ঠপোষক হয়।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ اٰلِهَةً لِّيَكُوْنُوْا لَهُمْ عِزًّا ۙ (٨١)

৮২. কক্ষনো না, তারা তাদের 'ইবাদাত অস্বীকার করবে আর তাদের বিরোধী হয়ে যাবে।

كَلَّا ۭ سَيَكْفُرُوْنَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِمْ ضِدًّا ع (٨٢)

৮৩. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আমি কাফিরদের জন্য শয়ত্বানকে ছেড়ে রেখেছি তাদেরকে মন্দ কর্ম করতে প্ররোচিত করার জন্য।

أَلَمْ تَرَ أَنَّآ أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ۙ (٨٣)

৮৪. কাজেই তাদের ব্যাপারে তাড়াহুড়ো করো না, আমি গুণে রাখছি তাদের জন্য নির্দিষ্ট (দিবসের) সংখ্যা।

فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ ۭ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ع (٨٤)

৮৫. যেদিন মুত্তাকীদেরকে দয়াময়ের নিকট একত্রিত করব সম্মানিত অতিথি হিসেবে।

يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِيْنَ إِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ۙ (٨٥)

৮৬. আর আমি অপরাধীদেরকে জাহান্নামের দিকে তাড়িয়ে নিয়ে যাব (যেভাবে পিপাসার্ত গরু বাছুরকে পানির দিকে তাড়িয়ে নেয়া হয়)।

وَّنَسُوْقُ الْمُجْرِمِيْنَ إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ۘ (٨٦)

৮৭. দয়াময়ের নিকট যে প্রতিশ্রুতি লাভ করেছে সে ছাড়া অন্য কারো সুপারিশ করার অধিকার

لَا يَمْلِكُوْنَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ عِنْدَ

সে যে বিষয়ের কথা বলে তা থাকবে আমার অধিকারে এবং সে আমার নিকট আসবে একা।" –বুখারী ৪৭৩৫ [২০৯১, মুসলিম ২৭৯৫, তিরমিযী ৩১৬২, আহমাদ ২০৫৬৩, ২০৫৭০]

الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ۘ(٨٧)

থাকবে না।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ط (٨٨)

৮৮. তারা বলে, 'দয়াময় সন্তান গ্রহণ করেছেন।'

لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ۙ (٨٩)

৮৯. (এমন কথা ব'লে) তোমরা তো এক ভয়ানক বিষয়ের অবতারণা করেছ।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ۙ (٩٠)

৯০. যাতে আকাশ বিদীর্ণ হওয়ার, পৃথিবী খণ্ড খণ্ড হওয়ার আর পর্বতমালা চূর্ণ বিচূর্ণ হয়ে পতিত হওয়ার, উপক্রম হয়েছে।

أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ج (٩١)

৯১. কারণ তারা দয়াময়ের প্রতি সন্তান আরোপ করে।

وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ أَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا ط (٩٢)

৯২. অথচ দয়াময়ের মহান মর্যাদার জন্য এটা শোভনীয় নয় যে, তিনি সন্তান গ্রহণ করবেন।

إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ إِلَّآ اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ط (٩٣)

৯৩. আকাশ আর যমীনে এমন কেউ নেই যে, দয়াময়ের নিকট বান্দাহ হয়ে হাযির হবে না।

لَقَدْ أَحْصَاهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ط (٩٤)

৯৪. তিনি তাদেরকে পরিবেষ্টন করে রেখেছেন আর তাদেরকে বিশেষভাবে গুণে গুণে রেখেছেন।

وَكُلُّهُمْ اٰتِيهِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فَرْدًا (٩٥)

৯৫. কিয়ামাতের দিন তাদের সবাই তাঁর কাছে আসবে একাকী অবস্থায়।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا (٩٦)

৯৬. যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে, দয়াময় তাদের প্রতি ভালবাসা দান করবেন।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا (٩٧)

৯৭. আমি তোমার ভাষায় কুরআনকে সহজ করেছি যাতে তুমি তার সাহায্যে মুত্তাকীদেরকে সুসংবাদ দিতে পার আর ঝগড়াটে লোকেদেরকে সতর্ক করতে পার।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ ط هَلْ تُحِسُّ مِنْهُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا ع (٩٨)

৯৮. তাদের পূর্বে আমি কত মানব বংশকে ধ্বংস করে দিয়েছি, তুমি তাদের একজনকেও কি (এখন) দেখতে পাও অথবা তাদের ক্ষীণতম আওয়াজও কি শুনতে পাও?

Contents

২০. সূরাহ ত্ব-হা-

سُوْرَةُ طٰهٰ

আয়াতঃ ১৩৫, রুকূ‘ঃ ৮, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. ত্ব-হা- ।

طٰهٰ (١)

২. তোমাকে ক্লেশ দেয়ার জন্য আমি তোমার প্রতি কুরআন নাযিল করিনি।

مَآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لِتَشْقٰٓى لا (٢)

৩. বরং তা (নাযিল করেছি) কেবল সতর্কবাণী হিসেবে যে (আল্লাহ্‌কে) ভয় করে তার জন্য।

إِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى لا (٣)

৪. যিনি পৃথিবী ও সুউচ্চ আকাশ সৃষ্টি করেছেন তাঁর নিকট হতে তা নাযিল হয়েছে।

تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْأَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ الْعُلٰى ط (٤)

৫. ‘আরশে দয়াময় সমুন্নত আছেন।

اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى (٥)

৬. যা আকাশসমূহে আছে, যা যমীনে আছে, যা এ দু’য়ের মাঝে আছে আর যা ভূগর্ভে আছে সব তাঁরই।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى (٦)

৭. যদি তুমি উচ্চকণ্ঠে কথা বল (তাহলে জেনে রেখ) তিনি গুপ্ত ও তদপেক্ষাও গুপ্ত বিষয় জানেন।

وَإِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَإِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ وَأَخْفٰى (٧)

৮. আল্লাহ, তিনি ব্যতীত সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, সুন্দর নামসমূহ তাঁরই।

اَللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ط لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى (٨)

৯. মূসার কাহিনী তোমার কাছে পৌঁছেছে কি?

وَهَلْ أَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى م (٩)

১০. যখন সে আগুন দেখল (মাদ্‌ইয়ান থেকে মিসর যাবার পথে), তখন সে তার পরিবারবর্গকে বলল, ‘তোমরা এখানে অবস্থান কর, আমি আগুন দেখেছি, সম্ভবতঃ আমি তাথেকে তোমাদের জন্য কিছু জ্বলন্ত আগুন আনতে পারব কিংবা আগুনের নিকট পথের সন্ধান পাব।

إِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوْٓا إِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ أَوْ أَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى (١٠)

১১. তারপর যখন সে আগুনের কাছে আসল, তাকে ডাক দেয়া হল, ‘হে মূসা!

فَلَمَّآ أَتٰىهَا نُوْدِيَ يٰمُوْسٰى ط (١١)

إِنِّيٓ أَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ ۚ إِنَّكَ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى (١٢)

১২. বাস্তবিকই আমি তোমার প্রতিপালক, কাজেই তোমার জুতা খুলে ফেল, তুমি পবিত্র তুওয়া উপত্যকায় আছ্।

وَأَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوحٰى (١٣)

১৩. আমি তোমাকে বেছে নিয়েছি, কাজেই তুমি মনোযোগ দিয়ে শুন যা তোমার প্রতি ওয়াহী করা হচ্ছে।

إِنَّنِيٓ أَنَا اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدْنِي ۙ وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِي (١٤)

১৪. প্রকৃতই আমি আল্লাহ, আমি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, কাজেই আমার 'ইবাদাত কর, আর আমাকে স্মরণ করার উদ্দেশে নামায কায়িম কর।'

إِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيهَا لِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ ۢبِمَا تَسْعٰى (١٥)

১৫. ক্বিয়ামাত আসবেই, আমি তা গোপন রাখতে চাই, যাতে প্রত্যেক ব্যক্তি স্বীয় চেষ্টা-সাধনা অনুপাতে ফল লাভ করতে পারে।

فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا وَاتَّبَعَ هَوٰهُ فَتَرْدٰى (١٦)

১৬. কাজেই ক্বিয়ামতে যে বিশ্বাস করে না এবং স্বীয় প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, সে যেন তোমাকে তাথেকে কোনক্রমেই বিচ্যুত করতে না পারে, তাহলে তুমি ধ্বংস হয়ে যাবে।

وَمَا تِلْكَ بِيَمِينِكَ يٰمُوسٰى (١٧)

১৭. 'হে মূসা! তোমার ডান হাতে ওটা কী?'

قَالَ هِيَ عَصَايَ ۚ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ بِهَا عَلٰى غَنَمِي وَلِيَ فِيهَا مَاٰرِبُ أُخْرٰى (١٨)

১৮. সে বলল, 'এটা আমার লাঠি, আমি ওতে ভর দেই, এর সাহায্যে আমি আমার মেষপালের জন্য গাছের পাতা ঝেড়ে দেই আর এতে আমার আরো অনেক কাজ হয়।'

قَالَ أَلْقِهَا يٰمُوسٰى (١٩)

১৯. আল্লাহ বললেন, 'হে মূসা! ওটা নিক্ষেপ কর।'

فَأَلْقٰهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى (٢٠)

২০. তখন সে তা নিক্ষেপ করল, অমনি তা সাপ হয়ে ছুটোছুটি করতে লাগল।

قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ ٓ سَنُعِيدُهَا سِيرَتَهَا الْأُولٰى (٢١)

২১. আল্লাহ বললেন, 'ওটাকে ধর, ভয় পেও না, আমি সেটাকে এক্ষুনি তার আগের রূপে ফিরিয়ে দেব।

وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوٓءٍ اٰيَةً أُخْرٰى ۙ (٢٢)

২২. আর তোমার হাত বগলে দিয়ে টান, তা ক্ষতিকর নয় এমন শুভ্রোজ্জ্বল হয়ে বের হয়ে আসবে– অন্য আরেকটি নিদর্শন হিসেবে।

لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ج (٢٣)

২৩. যাতে আমি তোমাকে আমার বড় বড় নিদর্শনগুলোর কিছু দেখাতে পারি।

اِذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهٗ طَغٰى ع (٢٤)

২৪. ফেরাউনের কাছে যাও, বাস্তবিকই সে সীমালঙ্ঘন করেছে।'

قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ لا (٢٥)

২৫. মূসা বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমার জন্য আমার বক্ষকে প্রশস্ত করে দাও

وَيَسِّرْ لِيْٓ أَمْرِيْ لا (٢٦)

২৬. আর আমার জন্য আমার কাজকে সহজ করে দাও।

وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ لا (٢٧)

২৭. আমার জিহ্বার জড়তা দূর করে দাও।

يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ص (٢٨)

২৮. যাতে তারা আমার কথা বুঝতে পারে।

وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ أَهْلِيْ لا (٢٩)

২৯. আর আমার পরিবার হতে আমার জন্য একজন সাহায্যকারী বানিয়ে দাও।

هَارُوْنَ أَخِيْ لا (٣٠)

৩০. আমার ভাই হারূনকে।

اشْدُدْ بِهٖٓ أَزْرِيْ لا (٣١)

৩১. তার দ্বারা আমার শক্তি বৃদ্ধি কর।

وَأَشْرِكْهُ فِيْٓ أَمْرِيْ لا (٣٢)

৩২. আমার কাজে তাকে অংশীদার কর।

كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا لا (٣٣)

৩৩. যাতে আমরা বেশি বেশি করে তোমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করতে পারি।

وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ط (٣٤)

৩৪. আর তোমাকে অধিক স্মরণ করতে পারি।

إِنَّكَ كُنْتَ بِنَا بَصِيْرًا (٣٥)

৩৫. তুমি তো আমাদের অবস্থা সবই দেখছ।'

قَالَ قَدْ أُوْتِيْتَ سُؤْلَكَ يٰمُوْسٰى (٣٦)

৩৬. তিনি (আল্লাহ) বললেন, 'হে মূসা! তোমার প্রার্থনা গৃহীত হল।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرٰٓى لا (٣٧)

৩৭. আমি তো তোমার উপর আরো একবার অনুগ্রহ করেছিলাম।

إِذْ أَوْحَيْنَآ إِلٰٓى أُمِّكَ مَا يُوْحٰٓى لا (٣٨)

৩৮. যখন আমি তোমার মায়ের প্রতি ইঙ্গিত করেছিলাম যা ওয়াহীযোগে জানানো হয়েছিল–

أَنِ اقْذِفِيْهِ فِي التَّابُوْتِ فَاقْذِفِيْهِ فِي الْيَمِّ

৩৯. যে তুমি মূসাকে সিন্দুকের মধ্যে রাখ। তারপর তা দরিয়ায় ভাসিয়ে দাও। অতঃপর দরিয়া তাকে পাড়ে ঠেলে দেবে। তাকে আমার শত্রু ও

فَلْيُلْقِهِ الْيَمُّ بِالسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ عَدُوٌّ لِّيْ وَعَدُوٌّ لَّهٗ ؕ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً مِّنِّيْ ۚ۬ وَلِتُصْنَعَ عَلٰى عَيْنِيْ ۘ(٣٩)

তার শত্রু উঠিয়ে নেবে। আমি আমার নিকট হতে তোমার প্রতি ভালবাসা ঢেলে দিয়েছিলাম, যাতে তুমি আমার দৃষ্টির সম্মুখে প্রতিপালিত হও।'

إِذْ تَمْشِيْٓ أُخْتُكَ فَتَقُوْلُ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلٰى مَنْ يَّكْفُلُهٗ ؕ فَرَجَعْنٰكَ إِلٰٓى أُمِّكَ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ؕ۬ وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنٰكَ مِنَ الْغَمِّ وَفَتَنّٰكَ فُتُوْنًا ۵ فَلَبِثْتَ سِنِيْنَ فِيْٓ أَهْلِ مَدْيَنَ ۙ۬ ثُمَّ جِئْتَ عَلٰى قَدَرٍ يّٰمُوْسٰى (٤٠)

৪০. যখন তোমার বোন গিয়ে বলল, 'তোমাদেরকে কি বলে দেব কে এই শিশুর তত্ত্বাবধান ও প্রতিপালনের ভার নেবে?' এভাবে আমি তোমাকে তোমার মায়ের কাছে ফিরিয়ে আনলাম যাতে তার চোখ জুড়ায় আর সে দুঃখ না পায়। আর তুমি এক লোককে হত্যা করেছিলে, অতঃপর আমি তোমাকে মনোবেদনা থেকে মুক্তি দিয়েছি। আমি তোমাকে অনেক পরীক্ষা করেছি। অতঃপর তুমি কয়েক বছর মাদ্ইয়ানবাসীদের মধ্যে অবস্থান করলে, এরপর হে মূসা! তুমি নির্ধারিত সময়ে এসে হাযির হয়েছ।

وَاصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِيْ ۚ(٤١)

৪১. আমি তোমাকে আমার নিজের জন্য তৈরি করেছি।

اِذْهَبْ أَنْتَ وَأَخُوْكَ بِاٰيٰتِيْ وَلَا تَنِيَا فِيْ ذِكْرِيْ ۚ(٤٢)

৪২. তুমি আর তোমার ভাই আমার নিদর্শন নিয়ে যাও আর তোমরা আমাকে স্মরণ করার বিষয়ে শৈথিল্য করো না।

اِذْهَبَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهٗ طَغٰى ۚ صلے (٤٣)

৪৩. তোমরা দু'জন ফেরাউনের নিকট যাও, বস্তুতঃ সে সীমালঙ্ঘন করেছে।

فَقُوْلَا لَهٗ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهٗ يَتَذَكَّرُ أَوْ يَخْشٰى (٤٤)

৪৪. তার সঙ্গে তোমরা নম্রভাবে কথা বলবে, হয়তো সে উপদেশ গ্রহণ করবে কিংবা (আল্লাহ্‌র) ভয় করবে।'

৪১। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, আদাম (ﷺ) ও মূসা (ﷺ)-এর সাক্ষাৎ ঘটল। মূসা (ﷺ) আদাম (ﷺ)-কে বললেন, আপনি তো সে ব্যক্তি, মানব জাতিকে কষ্টের মধ্যে ফেলেছেন এবং তাদের জান্নাত থেকে বের করিয়েছেন? আদাম (ﷺ) তাঁকে বললেন, আপনি তো সে ব্যক্তি, আপনাকে আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর রিসালাতের জন্য নির্বাচিত করেছেন, এবং বাছাই করেছেন আপনাকে নিজের জন্য এবং আপনার ওপর তাওরাত অবতীর্ণ করেছেন? মূসা (ﷺ) বললেন, হ্যাঁ। আদাম (ﷺ) বললেন, আপনি তাতে অবশ্যই পেয়েছেন যে, আমার সৃষ্টির আগেই আল্লাহ্ তা'আলা তা আমার জন্য লিখে রেখেছেন। মূসা (ﷺ) বললেন, হ্যাঁ। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেন, এভাবে আদাম (ﷺ) মূসা (ﷺ)-এর উপর জয়ী হলেন। –বুখারী ৪৭৩৬ [৩৪০৯, মুসলিম ২৬৫২, তিরমিযী ২১৩৪, আবূ দাউদ ৪৭০১, ইবনু মাজাহ ৮০, আহমাদ ৭৩৪০, ৭৫৩৪; মুওয়াত্তা ১৬৬০]

قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَنْ يَّفْرُطَ عَلَيْنَآ أَوْ أَنْ يَّطْغٰى (٤٥)

৪৫. তারা বলল, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের ভয় হচ্ছে সে আমাদের প্রতি হঠাৎ উত্তেজিত হয়ে উঠবে কিংবা আমাদের প্রতি আচরণে বাড়াবাড়ি করবে।'

قَالَ لَا تَخَافَآ إِنَّنِيْ مَعَكُمَآ أَسْمَعُ وَأَرٰى (٤٦)

৪৬. তিনি বললেন, 'তোমরা ভয় করো না, আমি তোমাদের সাথেই আছি, আমি (সব কিছু) শুনি আর দেখি।

فَأْتِيَاهُ فَقُوْلَآ إِنَّا رَسُوْلَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ۙ۬ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ؕ قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى (٤٧)

৪৭. কাজেই তোমরা দু'জন তার কাছে এসো আর বল- আমরা তোমার প্রতিপালকের রসূল, কাজেই বানী ইসরাঈলকে আমাদের সঙ্গে পাঠিয়ে দাও, তাদের প্রতি উৎপীড়ন করো না। তোমার প্রতিপালকের নিদর্শনসহই আমরা তোমার কাছে এসেছি, আর শান্তি বর্ষিত হোক তাদের প্রতি যারা সৎ পথ অনুসরণ করে।

إِنَّا قَدْ أُوْحِيَ إِلَيْنَآ أَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى (٤٨)

৪৮. আমাদের কাছে ওয়াহী করা হয়েছে যে শাস্তি (অপেক্ষা করছে) তার জন্য যে (সত্য) প্রত্যাখ্যান করে আর মুখ ফিরিয়ে নেয়।'

قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى (٤٩)

৪৯. ফেরাউন বলল, 'হে মূসা! কে তোমাদের প্রতিপালক?'

قَالَ رَبُّنَا الَّذِيْٓ أَعْطٰى كُلَّ شَيْءٍ خَلْقَهٗ ثُمَّ هَدٰى (٥٠)

৫০. মূসা বলল, 'আমাদের প্রতিপালক তিনি যিনি সকল (সৃষ্ট) বস্তুকে আকৃতি দান করেছেন, অতঃপর পথ প্রদর্শন করেছেন।'

قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْأُوْلٰى (٥١)

৫১. ফেরাউন বলল, 'তাহলে আগের যুগের লোকেদের অবস্থা কী?'

قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّيْ فِيْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ رَبِّيْ وَلَا يَنْسَى ۫ (٥٢)

৫২. মূসা বলল, 'তার জ্ঞান আমার প্রতিপালকের কাছে (রক্ষিত) কিতাবে আছে, আমার প্রতিপালক ভুল করেন না, ভুলেও যান না।'

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّأَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ فَأَخْرَجْنَا بِهٖٓ أَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى (٥٣)

৫৩. যিনি তোমাদের জন্য যমীনকে করেছেন বিছানা, আর তাতে তোমাদের জন্য ক'রে দিয়েছেন চলার পথ। আর আকাশ থেকে তিনি পানি বর্ষণ করেন আর তা দিয়ে আমি বিভিন্ন লতা-যুগল উদ্গত করি যার প্রত্যেকটি অন্যটি থেকে আলাদা।

كُلُوْا وَارْعَوْا أَنْعَامَكُمْ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي النُّهٰى ع (٥٤)

৫৪. তোমরা খাও আর তোমাদের গবাদি পশু চরাও, এতে বিবেকবানদের জন্য বহু নিদর্শন আছে।

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً أُخْرٰى (٥٥)

৫৫. মাটি থেকে আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, তাতেই আমি তোমাদেরকে ফিরিয়ে নেব, আর তাথেকে তোমাদেরকে আবার বের করব।

وَلَقَدْ أَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَأَبٰى (٥٦)

৫৬. আমি তাকে (অর্থাৎ ফেরাউনকে) আমার যাবতীয় নিদর্শন দেখিয়েছিলাম কিন্তু সে মিথ্যে মনে ক'রে প্রত্যাখ্যান করেছে ও অমান্য করেছে।

قَالَ أَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ أَرْضِنَا بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى (٥٧)

৫৭. সে বলল, 'হে মূসা! তুমি কি তোমার যাদুর বলে আমাদেরকে আমাদের দেশ থেকে বের করে দেয়ার জন্য এসেছ?

فَلَنَأْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهِ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهُ نَحْنُ وَلَا أَنْتَ مَكَانًا سُوًى (٥٨)

৫৮. তাহলে আমরাও অবশ্য অবশ্যই তোমার কাছে অনুরূপ যাদু হাযির করব, কাজেই একটা মধ্যবর্তী স্থানে আমাদের ও তোমাদের মিলিত হওয়ার জন্য একটা নির্দিষ্ট সময় নির্ধারণ কর যার খেলাফ আমরাও করব না, আর তুমিও করবে না।'

قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَأَنْ يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى (٥٩)

৫৯. মূসা বলল, 'তোমাদের (সঙ্গে) ওয়া'দার নির্ধারিত সময় হল উৎসবের দিন আর দুপুরের আগেই মানুষ যেন পৌঁছে যায়।'

فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهُ ثُمَّ أَتٰى (٦٠)

৬০. তখন ফেরাউন উঠে গেল, অতঃপর তার কলা-কৌশল একত্র করল, তারপর ফিরে এল।

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى اللهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ج وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى (٦١)

৬১. মূসা তাদেরকে বলল, 'হায় তোমাদের দুর্ভাগ্য! তোমরা আল্লাহ্‌র প্রতি মিথ্যে আরোপ করো না, করলে তিনি তোমাদেরকে ভয়ানক শাস্তি দ্বারা ধ্বংস করে দেবেন। যে মিথ্যে আরোপ করে সে-ই ব্যর্থ হয়।'

فَتَنَازَعُوْا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَأَسَرُّوا النَّجْوٰى (٦٢)

৬২. তখন তারা তাদের কাজ-কর্ম নিয়ে নিজেদের মধ্যে বাদানুবাদ করল আর তারা গোপনে পরামর্শ করল।

قَالُوْا إِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ أَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا

৬৩. তারা বলল, 'এ দু'জন নিশ্চিতই যাদুকর, তারা তাদের যাদুর বলে তোমাদেরকে তোমাদের দেশ থেকে বের করে দিতে চায় আর তোমাদের

وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى (٦٣)

উৎকৃষ্ট জীবন পদ্ধতি মুছে ফেলতে চায়।

فَأَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ج وَقَدْ أَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى (٦٤)

৬৪. কাজেই তোমরা তোমাদের কলা-কৌশল একত্রিত কর, অতঃপর সারিবদ্ধ হয়ে হাজির হয়ে যাও। আজ যে বিজয় লাভ করবে, সে-ই (বরাবর) সফল হবে।'

قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى إِمَّآ أَنْ تُلْقِيَ وَإِمَّآ أَنْ نَّكُوْنَ أَوَّلَ مَنْ أَلْقٰى (٦٥)

৬৫. তারা বলল, 'হে মূসা! তুমিই (প্রথমে) নিক্ষেপ করবে, না আমরাই প্রথমে নিক্ষেপ করব?'

قَالَ بَلْ أَلْقُوْا ج فَإِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ يُخَيَّلُ إِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ أَنَّهَا تَسْعٰى (٦٦)

৬৬. মূসা বলল, 'বরং তোমরাই নিক্ষেপ কর।' তখন তাদের যাদুর কারণে মূসার মনে হল যে, তাদের রশি আর লাঠিগুলো ছুটোছুটি করছে।

فَأَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى (٦٧)

৬৭. তখন মূসা তার মনে ভীতি অনুভব করল।

قُلْنَا لَا تَخَفْ إِنَّكَ أَنْتَ الْأَعْلٰى (٦٨)

৬৮. আমি বললাম, 'ভয় করো না, তুমিই বিজয়ী হবে।'

وَأَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ط إِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ط وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ أَتٰى (٦٩)

৬৯. তোমার ডান হাতে যা আছে তা নিক্ষেপ কর, তারা যা করেছে এটা তা সব গিলে ফেলবে, তারা যা করেছে তাতো কেবল যাদুকরের কলা-কৌশল। যাদুকর যে রূপ ধরেই আসুক না কেন, সফল হবে না।'

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى (٧٠)

৭০. (মূসার স্পষ্ট নিদর্শন যখন দেখল) তখন যাদুকরেরা (আল্লাহ্‌র প্রতি) সাজদায় লুটিয়ে পড়ল। তারা বলল, 'আমরা হারূন ও মূসার প্রতিপালকের উপর ঈমান আনলাম।'

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ أَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ط إِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ج فَلَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَأُصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ النَّخْلِ ز وَلَتَعْلَمُنَّ أَيُّنَآ أَشَدُّ عَذَابًا وَّأَبْقٰى (٧١)

৭১. ফেরাউন বলল, 'আমি তোমাদেরকে অনুমতি দেয়ার আগেই তোমরা তার প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করলে? নিশ্চয়ই সে তোমাদের প্রধান যে তোমাদেরকে যাদু শিখিয়েছে। কাজেই আমি অবশ্য অবশ্যই তোমাদের হাত আর পা বিপরীত দিক থেকে কেটে ফেলব আর খেজুর গাছের শাখায় তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই শূলে চড়াব আর তখন তোমরা অবশ্য অবশ্যই জানতে পারবে আমাদের মধ্যে কার 'আযাব বেশি শক্ত আর বেশি স্থায়ী।

قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ أَنْتَ قَاضٍ ط إِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ط (٧٢)

৭২. তারা বলল, 'আমাদের নিকট যে স্পষ্ট নিদর্শন এসেছে এবং যিনি আমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন তার উপর আমরা তোমাকে কক্ষনো প্রাধান্য দেব না। কাজেই তুমি যা করতে চাও তাই কর। কেননা তুমি কেবল এ পার্থিব জীবনেই কর্তৃত্ব খাটাতে পার।

إِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ أَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ط وَاللهُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى (٧٣)

৭৩. আমরা আমাদের প্রতিপালকের উপর ঈমান এনেছি যাতে তিনি আমাদের অপরাধ ক্ষমা করেন আর যে যাদু করতে তুমি আমাদেরকে বাধ্য করেছ তাও (ক্ষমা করেন), আল্লাহ্ই সর্বশ্রেষ্ঠ ও স্থায়ী।'

إِنَّهٗ مَنْ يَّأْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَإِنَّ لَهٗ جَهَنَّمَ ط لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى (٧٤)

৭৪. যে কেউ তার প্রতিপালকের নিকট অপরাধী অবস্থায় হাযির হবে তার জন্যে আছে জাহান্নাম, সেখানে সে না মরবে, আর না বাঁচবে।

وَمَنْ يَّأْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ فَأُولٰٓئِكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى لا (٧٥)

৭৫. যে কেউ সৎ 'আমাল ক'রে মু'মিন অবস্থায় তাঁর নিকট হাযির হবে, তাদের জন্য আছে সুউচ্চ মর্যাদা।

جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا مَنْ تَزَكّٰى ع (٧٦)

৭৬. স্থায়ী জান্নাত, যার পাদদেশে বয়ে চলছে নির্ঝরিণী, সেখানে তারা চিরকাল থাকবে। যারা নিজেদেরকে পবিত্র করে তাদের এটাই পুরস্কার।

وَلَقَدْ أَوْحَيْنَآ إِلٰى مُوْسٰى لا۠ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ يَبَسًا لا لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى (٧٧)

৭৭. আমি মূসাকে ওয়াহী করলাম যে, আমার বান্দাহ্দেরকে নিয়ে রাতের বেলা যাত্রা কর আর তাদের জন্য সমুদ্রের ভিতর একটা শুকনো পথ বানিয়ে নাও। আর পেছন থেকে (ফেরাউন) ধরে ফেলবে এ ভয় করো না, আর (অন্য কোন) আশঙ্কাও করো না।

فَأَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ط (٧٨)

৭৮. অতঃপর ফেরাউন তার সৈন্যসামন্ত নিয়ে তাদের পিছু নিল, অতঃপর সমুদ্র তাদের উপর চড়াও হল আর তাদেরকে ডুবিয়ে দিল।

وَأَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى (٧٩)

৭৯. ফেরাউন তার জাতিকে বিপথগামী করেছিল এবং তাদেরকে সঠিক পথ দেখায়নি।

يَٰبَنِيٓ إِسۡرَٰٓءِيلَ قَدۡ أَنجَيۡنَٰكُم مِّنۡ عَدُوِّكُمۡ وَوَٰعَدۡنَٰكُمۡ جَانِبَ ٱلطُّورِ ٱلۡأَيۡمَنَ وَنَزَّلۡنَا عَلَيۡكُمُ ٱلۡمَنَّ وَٱلسَّلۡوَىٰ (٨٠)

৮০. হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদেরকে তোমাদের শত্রুর কবল থেকে উদ্ধার করেছিলাম আর আমি তোমাদেরকে তূর পাহাড়ের ডানপাশে প্রতিশ্রুতি দিয়েছিলাম (তাওরাত দানের জন্য) আর তোমাদের কাছে পাঠিয়েছিলাম মান্না ও সালওয়া।

كُلُواْ مِن طَيِّبَٰتِ مَا رَزَقۡنَٰكُمۡ وَلَا تَطۡغَوۡاْ فِيهِ فَيَحِلَّ عَلَيۡكُمۡ غَضَبِيۖ وَمَن يَحۡلِلۡ عَلَيۡهِ غَضَبِي فَقَدۡ هَوَىٰ (٨١)

৮১. তোমাদেরকে যে রিয্ক দিয়েছি তাথেকে উত্তমগুলো আহার কর, আর এতে বাড়াবাড়ি করো না, করলে তোমাদের উপর আমার 'আযাব সাব্যস্ত হয়ে যাবে। আর আমার 'আযাব যার উপর সাব্যস্ত হয় সে তো ধ্বংসই হয়ে যায়।

وَإِنِّي لَغَفَّارٞ لِّمَن تَابَ وَءَامَنَ وَعَمِلَ صَٰلِحٗا ثُمَّ ٱهۡتَدَىٰ (٨٢)

৮২. আর যে তাওবাহ করে, ঈমান আনে ও সৎকাজ করে আর সৎপথে অটল থাকে, আমি তার জন্য অবশ্যই অতি ক্ষমাশীল।

وَمَآ أَعۡجَلَكَ عَن قَوۡمِكَ يَٰمُوسَىٰ (٨٣)

৮৩. 'হে মূসা! তোমার সম্প্রদায়কে পেছনে ফেলে (তূর পাহাড়ে আসতে) তুমি জলদি করলে কেন?'

قَالَ هُمۡ أُوْلَآءِ عَلَىٰٓ أَثَرِي وَعَجِلۡتُ إِلَيۡكَ رَبِّ لِتَرۡضَىٰ (٨٤)

৮৪. মূসা বলল, 'এই তো তারা আমার পদচিহ্ন ধরে আসছে, আমি আপনার কাছে জলদি এলাম, হে আমার প্রতিপালক! যাতে আপনি সন্তুষ্ট হন।'

قَالَ فَإِنَّا قَدۡ فَتَنَّا قَوۡمَكَ مِنۢ بَعۡدِكَ وَأَضَلَّهُمُ ٱلسَّامِرِيُّ (٨٥)

৮৫. তিনি বললেন, 'তোমার অনুপস্থিতিতে আমি তোমার সম্প্রদায়কে পরীক্ষা করেছি আর সামিরী তাদেরকে গুমরাহ্ করেছে।

فَرَجَعَ مُوسَىٰٓ إِلَىٰ قَوۡمِهِۦ غَضۡبَٰنَ أَسِفٗاۚ قَالَ يَٰقَوۡمِ أَلَمۡ يَعِدۡكُمۡ رَبُّكُمۡ وَعۡدًا حَسَنًاۚ أَفَطَالَ عَلَيۡكُمُ ٱلۡعَهۡدُ أَمۡ أَرَدتُّمۡ أَن يَحِلَّ عَلَيۡكُمۡ غَضَبٞ مِّن رَّبِّكُمۡ فَأَخۡلَفۡتُم مَّوۡعِدِي (٨٦)

৮৬. তখন মূসা রাগে-দুঃখে তার জাতির কাছে ফিরে গেল। সে বলল, 'হে আমার জাতি! তোমাদের প্রতিপালক কি তোমাদের সঙ্গে ও'য়াদা করেননি, এক উত্তম ওয়া'দা। ওয়া'দা (পূরণের সময় আসতে) কি তোমাদের নিকট সুদীর্ঘ মনে হয়েছে, নাকি তোমরা চেয়েছ যে, তোমাদের প্রতি তোমাদের প্রতিপালকের শাস্তি নেমে আসুক, যে কারণে তোমরা আমার কাছে দেয়া তোমাদের ওয়া'দা ভঙ্গ করলে?'

قَالُواْ مَآ أَخۡلَفۡنَا مَوۡعِدَكَ بِمَلۡكِنَا وَلَٰكِنَّا

৮৭. তারা বলল, 'আমাদের সাধ্য থাকা পর্যন্ত আমরা তোমার প্রতি দেয়া আমাদের ওয়া'দা ভঙ্গ

حُمِّلْنَآ أَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ أَلْقَى السَّامِرِيُّ ۙ (٨٧)

করিনি, কিন্তু আমাদের উপর লোকেদের অলঙ্কারের বোঝা চাপিয়ে দেয়া হয়েছিল, আর আমরা তা নিক্ষেপ করেছিলাম (আগুনে), এমনিভাবে সামিরীও নিক্ষেপ করেছিল।

فَأَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ فَقَالُوْا هٰذَآ إِلٰهُكُمْ وَإِلٰهُ مُوْسٰى ۙ ج فَنَسِيَ ط (٨٨)

৮৮. তখন সে (আগুন থেকে) গো-বৎসের প্রতিকৃতি বের করল, মনে হত সেটা যেন হাম্বা রব করছে। অতঃপর তারা বলল, 'এটাই তোমাদের ইলাহ্ আর মূসারও ইলাহ্, কিন্তু মূসা ভুলে গেছে।'

أَفَلَا يَرَوْنَ أَلَّا يَرْجِعُ إِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ع (٨٩)

৮৯. তারা কি ভেবে দেখে না যে, তা তাদের কথার জবাব দেয় না, আর তা তাদের কোন ক্ষতি বা উপকার করার সামর্থ্যও রাখে না?

وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ إِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ج وَإِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ فَاتَّبِعُوْنِيْ وَأَطِيْعُوْٓا أَمْرِيْ (٩٠)

৯০. হারূন তাদেরকে আগেই বলেছিল, 'হে আমার জাতির লোকেরা! এর (অর্থাৎ গো-বৎসের) দ্বারা তোমাদেরকে পরীক্ষায় ফেলা হয়েছে, তোমাদের প্রতিপালক হলেন দয়াময় (আল্লাহ), কাজেই তোমরা আমার অনুসরণ কর আর আমার কথা মান্য কর।

قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى يَرْجِعَ إِلَيْنَا مُوْسٰى (٩١)

৯১. তারা বলল, 'আমাদের কাছে মূসা ফিরে না আসা পর্যন্ত আমরা সদাসর্বদা এর সাথেই সংযুক্ত হয়ে থাকব।

قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ إِذْ رَأَيْتَهُمْ ضَلُّوْٓا ۙ (٩٢)

৯২. সে (মূসা) বলল, 'হে হারূন! তুমি যখন দেখলে যে, তারা গুমরাহ্ হয়ে গেছে তখন তোমাকে কে নিষেধ করল

أَلَّا تَتَّبِعَنِ ط أَفَعَصَيْتَ أَمْرِيْ (٩٣)

৯৩. আমাকে অনুসরণ করতে? তাহলে তুমি কি আমার আদেশ অমান্য করলে?

قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَأْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا بِرَأْسِيْ ج إِنِّيْ خَشِيْتُ أَنْ تَقُوْلَ فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ تَرْقُبْ قَوْلِيْ (٩٤)

৯৪. হারূন বলল, 'হে আমার মায়ের পুত্র! আমার দাড়ি ধরে টেন না, আর আমার (মাথার) চুল ধরেও টেন না, আমি ভয় করেছিলাম তুমি বলবে যে, বানী ইসরাঈলের মাঝে তুমি বিভেদ সৃষ্টি করেছ আর তুমি আমার কথা পালন করনি।'

৯৫. মূসা বলল, 'এখন তোমার ব্যাপারটা কী, হে সামিরী?'	قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ (٩٥)
৯৬. সে বলল, 'আমি দেখেছি যা ওরা দেখেনি, অতঃপর আমি প্রেরিত ব্যক্তির (অর্থাৎ জিবরীলের) পদচিহ্ন থেকে এক মুঠ মাটি নিলাম, অতঃপর আমি তা নিক্ষেপ করলাম (বাছুরের প্রতিকৃতিতে)। আমার মন আমাকে এ মন্ত্রণাই দিল।'	قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ قَبْضَةً مِّنْ أَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ (٩٦)
৯৭. মূসা বলল, 'তুই দূর হ! এ জীবনে তোর জন্য এ শাস্তিই থাকল যে, তুই বলবি- আমাকে স্পর্শ করো না, আর তোর জন্য একটা নির্দিষ্ট ওয়া'দা আছে যার খেলাফ হবে না। আর তোর ইলাহ্‌র পানে চেয়ে দেখ যাকে তুই ঘিরে থাকতি, আমি তাকে অবশ্য অবশ্যই জ্বলন্ত আগুনে জ্বালিয়ে দেব, আর তাকে ছড়িয়ে ছিটিয়ে অবশ্য অবশ্যই সাগরে নিক্ষেপ করব।'	قَالَ فَاذْهَبْ فَإِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ أَنْ تَقُوْلَ لَامِسَاسَ ص وَإِنَّ لَكَ مَوْعِدًا لَّنْ تُخْلَفَهٗ ج وَانْظُرْ إِلٰى إِلٰهِكَ الَّذِيْ ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ط لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا (٩٧)
৯৮. তোমাদের ইলাহ একমাত্র আল্লাহ, যিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই। যাবতীয় বিষয়ে তাঁর জ্ঞান পরিব্যাপ্ত।	إِنَّمَآ إِلٰهُكُمُ اللهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ط وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا (٩٨)
৯৯. এভাবে পূর্বে যা ঘটে গেছে তার কিছু সংবাদ আমি তোমার কাছে বর্ণনা করছি, আর আমি আমার নিকট থেকে তোমাকে দান করেছি উপদেশ (বা কুরআন)।	كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْـبَآءِ مَا قَدْ سَبَقَ ج وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا ج صلے (٩٩)
১০০. যে তা থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে, কিয়ামাতের দিন সে (পাপের) বোঝা বহন করবে।	مَّنْ أَعْرَضَ عَنْهُ فَإِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وِزْرًا لا (١٠٠)
১০১. তারা এ অবস্থাতেই স্থায়ীভাবে থাকবে, কিয়ামাতের দিন এ বোঝা তাদের জন্য কতই না মন্দ হবে!	خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ط وَسَآءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ حِمْلًا لا (١٠١)
১০২. যেদিন সিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে আর আমি অপরাধীদেরকে একত্রিত করব (ভয়ে ভীত-সন্ত্রস্ত) দৃষ্টিহীন অবস্থায়।	يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ زُرْقًا ج صلے لا (١٠٢)
১০৩. তারা চুপিসারে নিজেদের মধ্যে বলাবলি করবে যে, (দুনিয়াতে) দশ দিনের বেশি তোমরা	يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا عَشْرًا (١٠٣)

অবস্থান করনি।

নَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ إِذْ يَقُوْلُ أَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا يَوْمًا ع (١٠٤)

১০৪. আমি ভালভাবেই জানি তারা যা বলে। তাদের মধ্যে যে উত্তম পথের অনুসারী সে বলবে, 'তোমরা একদিনের বেশি অবস্থান করনি।'

وَيَسْأَلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا رَبِّيْ نَسْفًا لا (١٠٥)

১০৫. তারা তোমাকে পর্বতগুলো সম্পর্কে প্রশ্ন করে। বল, আমার প্রতিপালক সেগুলো সমূলে উৎপাটিত করবেন এবং ধূলির ন্যায় বিক্ষিপ্ত করবেন।

فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا لا (١٠٦)

১০৬. অতঃপর তিনি তাকে (অর্থাৎ ভূমিকে) মসৃণ সমতলভূমি করে ছাড়বেন।

لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ أَمْتًا ط (١٠٧)

১০৭. তাতে তুমি দেখবে না কোন বক্রতা ও উচ্চতা।

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهُ ج وَخَشَعَتِ الْأَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ إِلَّا هَمْسًا (١٠٨)

১০৮. সেদিন তারা (সোজাসুজি) আহ্বানকারীর অনুসরণ করবে যার কথা এদিক ওদিক হবে না। দয়াময়ের সম্মুখে সেদিন যাবতীয় আওয়াজ স্তব্ধ হয়ে যাবে (এমনভাবে) যে মৃদু গুঞ্জন ছাড়া তুমি কিছুই শুনবে না।

يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهُ قَوْلًا (١٠٩)

১০৯. সেদিন কারো সুপারিশ কোন কাজে আসবে না, দয়াময় যাকে অনুমতি দেবেন আর যার কথায় সন্তুষ্ট হবেন তার (সুপারিশ) ব্যতীত।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا (١١٠)

১১০. তাদের সম্মুখে ও পশ্চাতে যা আছে তা তিনি জানেন, তারা জ্ঞান দিয়ে তাঁকে আয়ত্ত করতে পারে না।

وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ط وَقَدْ خَابَ مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا (١١١)

১১১. চিরঞ্জীব চিরস্থায়ীর সম্মুখে সকলেই হবে অধোমুখী, আর সে ব্যর্থ হবে যে যুল্‌মের (পাপের) ভার বহন করবে।

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا (١١٢)

১১২. যে সৎ কাজ করবে মু'মিন হয়ে, তার অবিচার বা ক্ষতির কোন আশংকা নেই।

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا فِيْهِ مِنَ

১১৩. এভাবেই আমি কুরআনকে আরবী ভাষায় নাযিল করেছি আর তাতে সতর্কবাণী বিস্তারিতভাবে বিবৃত করেছি যাতে তারা আল্লাহ্‌কে ভয়

Contents

الْوَعِيدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُونَ أَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا (١١٣)

করে অথবা তা হয় তাদের জন্য উপদেশ।

فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ج وَلَا تَعْجَلْ بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يُقْضَى إِلَيْكَ وَحْيُهُ ز وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِي عِلْمًا (١١٤)

১১৪. আল্লাহ সর্বোচ্চ, প্রকৃত অধিপতি, তোমার প্রতি (আল্লাহ্র) ওয়াহী সম্পূর্ণ হওয়ার পূর্বে তুমি কুরআন বক্ষে ধারণের ব্যাপারে তাড়াহুড়ো করো না। আর বল, 'হে আমার প্রতিপালক! জ্ঞানে আমায় সমৃদ্ধি দান করুন।'

وَلَقَدْ عَهِدْنَآ إِلَى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ وَلَمْ نَجِدْ لَهُ عَزْمًا ع (١١٥)

১১৫. ইতোপূর্বে আমি আদামের নিকট থেকে অঙ্গীকার গ্রহণ করেছিলাম, কিন্তু সে ভুলে গিয়েছিল, আমি তাকে দৃঢ়-সংকল্প পাইনি।

وَإِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا إِلَّآ إِبْلِيسَ ط أَبٰى (١١٦)

১১৬. স্মরণ কর, যখন ফেরেশতাগণকে বলেছিলাম, 'তোমরা আদামকে সেজদা কর,' তখন ইবলিস ছাড়া সবাই সেজদা করল, সে অমান্য করল।

فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ إِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ فَتَشْقٰى (١١٧)

১১৭. তখন আমি বললাম, 'হে আদাম! এ হচ্ছে তোমার আর তোমার স্ত্রীর দুশমন। কাজেই সে যেন কিছুতেই তোমাদেরকে জান্নাত থেকে বের করে না দেয়, তাহলে তোমরা দুর্দশায় পতিত হবে।

إِنَّ لَكَ أَلَّا تَجُوْعَ فِيهَا وَلَا تَعْرٰى لا (١١٨)

১১৮. তোমার জন্য (এত অধিক পরিমাণ) দেয়া হল যে, তুমি সেখানে (অর্থাৎ জান্নাতে) ক্ষুধার্তও হবে না, নগ্নও হবে না।

وَأَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيهَا وَلَا تَضْحٰى (١١٩)

১১৯. সেখানে তুমি তৃষ্ণার্তও হবে না, রোদেও পুড়বে না।

فَوَسْوَسَ إِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ هَلْ أَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى (١٢٠)

১২০. কিন্তু শয়ত্বান তাকে কুমন্ত্রণা দিল। সে বলল, 'হে আদাম! আমি কি তোমাকে জানিয়ে দেব চিরস্থায়ী জীবনদায়ী গাছের কথা আর এমন রাজ্যের কথা যা কোনদিন ক্ষয় হবে না?'

فَأَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ز وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهُ فَغَوٰى ص صلے (١٢١)

১২১. অতঃপর তারা (স্বামী-স্ত্রী) দু'জনে তা (অর্থাৎ সেই গাছ) থেকে খেল তখন তাদের সামনে তাদের লজ্জাস্থান খুলে গেল আর তারা জান্নাতের গাছের পাতা দিয়ে নিজেদেরকে ঢাকতে লাগল। আদাম তার প্রতিপালকের অবাধ্যতা করল, ফলে সে পথভ্রান্ত হয়ে গেল।

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى (١٢٢)

১২২. এরপর তার পালনকর্তা তাকে বাছাই করলেন, তার তাওবাহ্ কবূল করলেন এবং তাকে সঠিক পথে পরিচালিত করলেন।

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا ۢبَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ج فَإِمَّا يَأْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى لا ۵ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى (١٢٣)

১২৩. তিনি বললেন, ‘তোমরা দু’জনে (আদাম ও ইবলীস) একই সঙ্গে নীচে নেমে যাও, তোমরা একে অপরের শত্রু। অতঃপর আমার নিকট থেকে তোমাদের কাছে সঠিক পথের নির্দেশ আসবে, তখন যে আমার পথ নির্দেশ অনুসরণ করবে সে পথভ্রষ্ট হবে না এবং কষ্টে পতিত হবে না।

وَمَنْ أَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَإِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيَامَةِ أَعْمٰى (١٢٤)

১২৪. আর যে আমার স্মরণ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেবে, তার জীবিকা হবে সংকীর্ণ আর তাকে কিয়ামাতের দিন উত্থিত করব অন্ধ অবস্থায়।’

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ أَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا (١٢٥)

১২৫. সে বলবে, ‘হে আমার প্রতিপালক! কেন আমাকে অন্ধ ক’রে উঠালে? আমি তো চক্ষুষ্মান ছিলাম।’

قَالَ كَذٰلِكَ أَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ج وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى (١٢٦)

১২৬. আল্লাহ বলবেন, ‘এভাবেই তো আমার নিদর্শনসমূহ যখন তোমার কাছে এসেছিল তখন তুমি তা ভুলে গিয়েছিলে। আজকের দিনে সেভাবেই তোমাকে ভুলে যাওয়া হচ্ছে।

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ أَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ ۢبِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ط وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَشَدُّ وَأَبْقٰى (١٢٧)

১২৭. আমি এভাবেই প্রতিফল দেই তাদেরকে যারা সীমালঙ্ঘন করে এবং তার প্রতিপালকের নিদর্শনে বিশ্বাস করে না। আর আখিরাতের ‘আযাব অবশ্যই সবচেয়ে বেশী কঠিন ও সবচেয়ে বেশী স্থায়ী।

أَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّأُولِي النُّهٰى ع (١٢٨)

১২৮. এটাও কি তাদেরকে সঠিক পথ প্রদর্শন করল না যে, আমি তাদের আগে কত মানব বংশকে ধ্বংস করে দিয়েছি যাদের বাসস্থানের ভিতর দিয়ে এরা চলাচল করে। বুদ্ধিমানদের জন্য অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে।

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّأَجَلٌ مُّسَمًّى ط (١٢٩)

১২৯. তোমার প্রতিপালকের নিকট থেকে পূর্ব সিদ্ধান্ত না থাকলে (তাদের শাস্তি) অবশ্যই এসে পড়ত, কিন্তু এর জন্য নির্দিষ্ট আছে একটি সময়।

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ غُرُوْبِهَا ج وَمِنْ اٰنَآئِ اللَّيْلِ فَسَبِّحْ وَأَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى (١٣٠)

১৩০. কাজেই তারা যা বলছে তাতে তুমি ধৈর্য ধারণ কর এবং তোমার প্রতিপালকের প্রশংসাগীতি (নিয়মিত) উচ্চারণ কর সূর্যোদয়ের পূর্বে ও তা অস্তমিত হওয়ার পূর্বে এবং তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর রাত্রিকালে ও দিনের প্রান্তগুলোয় যাতে তুমি সন্তুষ্ট হতে পার।

وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ إِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ أَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ط وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى (١٣١)

১৩১. তুমি কক্ষনো চোখ খুলে তাকিও না ঐ সব বস্তুর প্রতি যা আমি তাদের বিভিন্ন দলকে পার্থিব জীবনে উপভোগের জন্য সৌন্দর্য স্বরূপ দিয়েছি, এসব দিয়ে তাদেরকে পরীক্ষা করার জন্য। তোমার প্রতিপালকের দেয়া রিয্‌কই হল সবচেয়ে উত্তম ও সবচেয়ে বেশী স্থায়ী।

وَأْمُرْ أَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ط لَا نَسْأَلُكَ رِزْقًا ط نَحْنُ نَرْزُقُكَ ط وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى (١٣٢)

১৩২. আর তোমার পরিবার-পরিজনকে নামাযের নির্দেশ দাও আর তাতে অবিচল থাক। তোমার কাছে আমি রিয্‌ক চাই না, আমিই তোমাকে রিয্‌ক দিয়ে থাকি, উত্তম পরিণাম মুত্তাকীদের জন্য নির্দিষ্ট।

وَقَالُوْا لَوْلَا يَأْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ط أَوَلَمْ تَأْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْأُوْلٰى (١٣٣)

১৩৩. তারা বলে, 'সে তার প্রতিপালকের নিকট থেকে আমাদের কাছে কোন নিদর্শন নিয়ে আসে না কেন? তাদের কাছে কি আসেনি স্পষ্ট প্রমাণ যা ছিল পূর্ববর্তী (ওয়াহীকৃত) কিতাবগুলোতে।'

وَلَوْ أَنَّآ أَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ نَّذِلَّ وَنَخْزٰى (١٣٤)

১৩৪. এর (অর্থাৎ কোন নিদর্শন আসার) আগেই আমি যদি তাদেরকে 'আযাব দিয়ে ধ্বংস করে দিতাম তাহলে তারা বলত, 'হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি আমাদের কাছে কেন একজন রসূল পাঠালে না? তাহলে আমরা অবশ্যই তোমার নিদর্শন মেনে চলতাম আমরা অপমানিত ও হেয় হবার আগেই।

قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ج فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ أَصْحٰبُ الصِّرَاطِ السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى ع (١٣٥)

১৩৫. বল, (ইসলামের অনুসারীদের পরিণতি দেখার জন্য চারপাশের) সবাই অপেক্ষা করছে, কাজেই তোমরাও অপেক্ষা কর, তাহলেই তোমরা জানতে পারবে যে, কারা সরল পথের পথিক আর কারা সঠিক পথপ্রাপ্ত।

২১. সূরাহ আল-আম্বিয়া

سُوْرَةُ الْأَنْبِيَاءِ

আয়াতঃ ১১২, রুকূ'ঃ ৮, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ ج (١)

১. মানুষের হিসাব গ্রহণের কাল ক্রমশঃ ঘনিয়ে আসছে কিন্তু তারা গাফলতিতে মুখ ফিরিয়ে রেখেছে।

مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ إِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ لا (٢)

২. তাদের কাছে তাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে যখনই কোন নতুন উপদেশ আসে, তখন তারা তা হাসি-তামাশার বস্তু মনে করেই শোনে।

لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ط وَأَسَرُّوا النَّجْوَى ق صلے الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ق صلے هَلْ هٰذَآ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ج أَفَتَأْتُوْنَ السِّحْرَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ (٣)

৩. তাদের অন্তর থাকে খেলায় মগ্ন। যালিমরা গোপনে পরামর্শ করে- এটা তোমাদেরই মত মানুষ ছাড়া কি অন্য কিছু? তোমরা কি দেখে-শুনে যাদুর কবলে পড়বে?

قَالَ رَبِّيْ يَعْلَمُ الْقَوْلَ فِي السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ز وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٤)

৪. বল, 'আমার প্রতিপালক আসমান ও যমীনে (উচ্চারিত প্রতিটি) কথাই জানেন, আর তিনি সব কিছু শোনেন, সব কিছু জানেন।'

بَلْ قَالُوْآ أَضْغَاثُ أَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرَاهُ بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ج صلے فَلْيَأْتِنَا بِاٰيَةٍ كَمَآ أُرْسِلَ الْأَوَّلُوْنَ (٥)

৫. তারা এও বলে, 'এসব অলীক স্বপ্ন, না হয় সে মিথ্যে উদ্ভাবন করেছে, না হয় সে একজন কবি। কাজেই সে আমাদের কাছে এমন নিদর্শন নিয়ে আসুক যেমন পূর্ববর্তী (নবী)-গণের কাছে পাঠানো হয়েছিল।

مَا اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا ج أَفَهُمْ يُؤْمِنُوْنَ (٦)

৬. তাদের পূর্বে আমি যে সমস্ত জনপদ ধ্বংস করেছি তাদের একটিও ঈমান আনেনি, তাহলে এরা কি ঈমান আনবে?

وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ إِلَّا رِجَالًا نُّوْحِيْٓ إِلَيْهِمْ فَاسْأَلُوْٓا أَهْلَ الذِّكْرِ إِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (٧)

৭. তোমার পূর্বে যে সব রসূল পাঠিয়েছিলাম যাদের প্রতি আমি ওয়াহী করতাম তারা মানুষই ছিল, তোমরা যদি না জান তবে (অবতীর্ণ) কিতাবের জ্ঞান যাদের আছে তাদেরকে জিজ্ঞেস কর।

وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا يَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِيْنَ (٨)

৮. তাদেরকে এমন দেহবিশিষ্ট করিনি যে তারা খাদ্য খেত না আর তারা ছিল না চিরস্থায়ী।

ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَأَنْجَيْنٰهُمْ وَمَنْ نَّشَآءُ وَأَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِيْنَ (٩)

৯. অতঃপর আমি তাদেরকে দেয়া আমার ওয়া'দা সত্যে পরিণত করলাম। ফলতঃ আমি তাদেরকে এবং আরো যাদেরকে চাইলাম রক্ষা করলাম আর সীমালঙ্ঘনকারীদেরকে ধ্বংস করে দিলাম।

لَقَدْ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكُمْ كِتٰبًا فِيْهِ ذِكْرُكُمْ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ع (١٠)

১০. আমি তোমাদের প্রতি নাযিল করেছি এক কিতাব যাতে তোমাদের জন্য আছে উপদেশ, তোমরা কি তবুও বুঝবে না?

وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْيَةٍ كَانَتْ ظَالِمَةً وَّأَنْشَأْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ (١١)

১১. কত জনপদ ছিল যেগুলোকে আমি পুরোপুরি ধ্বংস করে দিয়েছি যার অধিবাসীরা ছিল যালিম। তাদের পরে আমি অন্য জাতি সৃষ্টি করেছি।

فَلَمَّآ أَحَسُّوْا بَأْسَنَآ إِذَا هُمْ مِّنْهَا يَرْكُضُوْنَ ط (١٢)

১২. তারা যখন আমার শাস্তি ('র আগমন) অনুভব করল, তখন তারা তাথেকে পালিয়ে যেতে (চেষ্টা) করল।

لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْآ إِلٰى مَآ أُتْرِفْتُمْ فِيْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْأَلُوْنَ (١٣)

১৩. (ফেরেশতারা তাদেরকে ঠাট্টা করে বলেছিল) পালিয়ে যেয়ো না, ফিরে এসো তোমরা যে ভোগ-বিলাসে মত্ত ছিলে তার দিকে আর তোমাদের আবাসগুলোতে, যাতে তোমাদেরকে জিজ্ঞাসাবাদ করা যায় ('আযাবের রূপটা কেমন দেখলে?)।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (١٤)

১৪. তারা বলল, 'হায় আমাদের দুর্ভাগ্য! আমরা সত্যিই অন্যায়কারী ছিলাম।'

فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰهُمْ حَتّٰى جَعَلْنٰهُمْ حَصِيْدًا خٰمِدِيْنَ (١٥)

১৫. তাদের এ আর্তনাদ বন্ধ হয়নি যতক্ষণ না আমি তাদেরকে করেছিলাম কাটা শস্য ও নিভানো আগুনের মত।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ (١٦)

১৬. আসমান, যমীন আর এ দু'য়ের মধ্যে যা কিছু আছে তা আমি খেলতে খেলতে বানাইনি।

لَوْ أَرَدْنَآ أَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّآ ق صلے ج إِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ (١٧)

১৭. আমি যদি খেলাধূলার বস্তু বানাতে চাইতাম তাহলে আমার কাছে যা আছে তা নিয়েই তা করতাম, যদি আমাকে করতে হত!

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهٗ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ط وَلَكُمُ الْوَيْلُ مِمَّا تَصِفُوْنَ (١٨)

১৮. বরং আমি সত্যকে মিথ্যের উপর নিক্ষেপ করি, অতঃপর তা মিথ্যের মস্তক চূর্ণ-বিচূর্ণ করে দেয়, তৎক্ষণাৎ মিথ্যে নিশ্চিহ্ন হয়ে যায়। তোমরা (আল্লাহ সম্পর্কে অযথা বহু মিথ্যে কথা বানিয়ে নিয়ে) যা বলছ এ কারণে তোমাদের জন্য দুর্ভোগ।

وَلَهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَمَنْ عِنْدَهُ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهِ وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ج (١٩)

১৯. আসমান ও যমীনে যারা আছে তারা তাঁরই মালিকানাধীন, আর যারা তাঁর সন্নিকটে আছে তারা গর্বভরে তাঁর 'ইবাদাত থেকে বিমুখ হয় না, আর তারা (কক্ষনো তাঁর 'ইবাদাত করার ব্যাপারে) ক্লান্তিবোধ করে না।

يُسَبِّحُوْنَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ (٢٠)

২০. তারা রাত-দিন তাঁর পবিত্রতা ঘোষণা করতে থাকে, তারা কক্ষনো শিথিলতা করে না বা আগ্রহ হারায় না।

أَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْأَرْضِ هُمْ يُنْشِرُوْنَ (٢١)

২১. তারা (অর্থাৎ মুশরিকরা) মাটি থেকে (তৈরী) যে সব দেবতা গ্রহণ করেছে তারা কি (মৃতদেরকে) জীবিত করতে সক্ষম?

لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ إِلَّا اللهُ لَفَسَدَتَا ج فَسُبْحَانَ اللهِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ (٢٢)

২২. আসমান ও যমীনে যদি আল্লাহ ছাড়া আরো অনেক ইলাহ থাকত তবে (আসমান ও যমীন) উভয়ই ধ্বংস হয়ে যেত। কাজেই আরশের অধিপতি আল্লাহ মহান ও পবিত্র সে সব থেকে যা তারা তাঁর প্রতি আরোপ করে।

لَا يُسْأَلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْأَلُوْنَ (٢٣)

২৩. তিনি যা করেন সে ব্যাপারে তিনি জিজ্ঞাসিত হবেন না, বরং তারা জিজ্ঞাসিত হবে (তাদের কাজের ব্যাপারে)।

أَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ط قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ ج هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ مَنْ قَبْلِيْ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ لا الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ (٢٤)

২৪. নাকি তারা তাঁকে বাদ দিয়ে অনেক ইলাহ গ্রহণ করেছে? বল, 'তোমরা তোমাদের প্রমাণ এনে হাযির কর। (আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ নেই) এটাই আমার সাথে যারা আছে তাদের কথা আর আমার পূর্বে যারা ছিল তাদেরও কথা, কিন্তু তাদের (অর্থাৎ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের) অধিকাংশই প্রকৃত সত্য জানে না, যার জন্য তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَمَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا نُوْحِيْٓ إِلَيْهِ أَنَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّآ أَنَا فَاعْبُدُوْنِ (٢٥)

২৫. আমি তোমার পূর্বে এমন কোন রসূলই পাঠাইনি যার প্রতি আমি ওয়াহী করিনি যে, আমি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই। কাজেই তোমরা আমারই 'ইবাদাত কর।

وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحَانَهُ ط بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ لا (٢٦)

২৬. তারা বলে, 'দয়াময় সন্তান গ্রহণ করেছেন', তিনি এসব থেকে মহা পবিত্র। তারা হল তাঁর বান্দাহ যাদেরকে সম্মানে উন্নীত করা হয়েছে।

২৭. তিনি কথা বলার আগেই তারা (অর্থাৎ সম্মানিত বান্দারা) কথা বলে না, তারা তাঁর নির্দেশেই কাজ করে।

لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِأَمْرِهٖ يَعْمَلُوْنَ (٢٧)

২৮. তাদের সামনে আর পেছনে যা আছে তা তিনি জানেন। তিনি যাদের প্রতি খুবই সন্তুষ্ট তাদের ব্যাপারে ছাড়া তারা কোন সুপারিশ করে না। তারা তাঁর ভয় ও সম্মানে ভীত-সন্ত্রস্ত।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يَشْفَعُوْنَ ۙ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضٰى وَهُمْ مِّنْ خَشْيَتِهٖ مُشْفِقُوْنَ (٢٨)

২৯. তাদের মধ্যে যে বলবে যে, 'তিনি ব্যতীত আমিই ইলাহ', তাহলে আমি তাকে তার প্রতিফল দেব জাহান্নাম। যালিমদেরকে আমি এভাবেই পুরস্কার দিয়ে থাকি।

وَمَنْ يَّقُلْ مِنْهُمْ إِنِّيْٓ إِلٰهٌ مِّنْ دُوْنِهٖ فَذٰلِكَ نَجْزِيْهِ جَهَنَّمَ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ع (٢٩)

৩০. অবিশ্বাসীরা কি দেখে না যে, আকাশ আর যমীন এক সঙ্গে সংযুক্ত ছিল, অতঃপর আমি উভয়কে আলাদা করে দিলাম, আর প্রাণসম্পন্ন সব কিছু পানি থেকে সৃষ্টি করলাম। তবুও কি তারা ঈমান আনবে না?

أَوَلَمْ يَرَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَنَّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنٰهُمَا ۭ وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَآءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۭ أَفَلَا يُؤْمِنُوْنَ (٣٠)

৩১. আর পৃথিবীতে আমি স্থাপন করেছি সুদৃঢ় পর্বত যাতে পৃথিবী তাদেরকে নিয়ে নড়াচড়া না করে। আর তাতে সৃষ্টি করেছি প্রশস্ত পথ যাতে তারা পথ পেতে পারে।

وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيْدَبِهِمْ وَجَعَلْنَا فِيْهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ (٣١)

৩২. আর আমি আকাশকে করেছি সুরক্ষিত ছাদ, কিন্তু এ সবের নিদর্শন থেকে তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَجَعَلْنَا السَّمَآءَ سَقْفًا مَّحْفُوْظًا ج صلے وَّهُمْ عَنْ اٰيٰتِهَا مُعْرِضُوْنَ (٣٢)

৩৩. তিনিই সৃষ্টি করেছেন রাত ও দিন, সূর্য আর চন্দ্র, প্রত্যেকেই তার চক্রাকার পথে সাঁতার কাটছে।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ (٣٣)

৩৪. তোমার পূর্বেও আমি কোন মানুষকে চিরস্থায়ী করিনি। তুমি যদি মারা যাও, তাহলে তারা কি চিরস্থায়ী হবে?

وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّنْ قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۭ أَفَإِئِنْ مِّتَّ فَهُمُ الْخٰلِدُوْنَ (٣٤)

৩৫. প্রত্যেক আত্মাকে মৃত্যু আস্বাদন করত হবে। আমি তোমাদেরকে ভাল ও মন্দ (উভয়টি দিয়ে

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَنَبْلُوْكُمْ

بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ؕ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ (٣٥)

এবং উভয় অবস্থায় ফেলে এর) দ্বারা পরীক্ষা করি। আমার কাছেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনা হবে।

وَإِذَا رَاٰكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ إِلَّا هُزُوًا ؕ أَهٰذَا الَّذِيْ يَذْكُرُ اٰلِهَتَكُمْ ج وَهُمْ بِذِكْرِ الرَّحْمٰنِ هُمْ كٰفِرُوْنَ (٣٦)

৩৬. কাফিররা যখন তোমাকে দেখে, তখন তারা তোমাকে একমাত্র উপহাসের পাত্র হিসেবেই গণ্য করে। (আর তারা বলে) 'এই কি সেই লোক যে তোমাদের দেবতাগুলোর ব্যাপারে কথা বলে? অথচ এই লোকগুলোই 'রহমান' (শব্দটির) উল্লেখকে অগ্রাহ্য করে।

خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ؕ سَأُرِيْكُمْ اٰيٰتِيْ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْنِ (٣٧)

৩৭. মানুষকে তাড়াহুড়াকারী করে সৃষ্টি করা হয়েছে। শীঘ্রই আমি তোমাদেরকে আমার নিদর্শনগুলো দেখাব (যে সব অলৌকিক ব্যাপার বদর ও অন্যান্য যুদ্ধে কাফিরদেরকে দেখানো হয়েছিল), কাজেই তোমরা আমাকে জলদি করতে বল না।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٣٨)

৩৮. আর তারা বলে 'তোমরা যদি সত্যবাদী হও তাহলে (বল) প্রতিশ্রুতি কখন বাস্তবে পরিণত হবে?'

لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ (٣٩)

৩৯. অবিশ্বাসীরা যদি (সে সময়ের কথা) জানত যখন তারা তাদের মুখ হতে অগ্নি প্রতিরোধ করতে পারবে না, আর তাদের পিঠ থেকেও না, আর তারা সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না।

بَلْ تَأْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ (٤٠)

৪০. বরং তা তাদের উপর হঠাৎ এসে যাবে আর তা তাদেরকে হতবুদ্ধি করে দেবে। অতঃপর তারা তা রোধ করতে পারবে না, আর তাদেরকে অবকাশও দেয়া হবে না।

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ع (٤١)

৪১. তোমার পূর্বেও রসূলদেরকে ঠাট্টা করা হয়েছে, অতঃপর যা দিয়ে তারা ঠাট্টা করত তা উল্টো ঠাট্টা-বিদ্রূপই তাদেরকে পরিবেষ্টন করে নিয়েছিল।

قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ (٤٢)

৪২. বল, 'কে তোমাদেরকে রাতে আর দিনে রহমান (এর গযব) থেকে নিরাপদ রাখতে পারে? তবুও তারা তাদের প্রতিপালকের স্মরণ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

أَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ لَا

৪৩. তবে কি তাদের এমন দেবদেবী আছে যা তাদেরকে রক্ষা করবে আমার (প্রতিরক্ষা) ছাড়াই?

তারা তো নিজেদেরকেই সাহায্য করতে পারে না, আর তারা আমার বিরুদ্ধে কোন প্রতিরক্ষাও পাবে না।

يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ أَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ (٤٣)

৪৪. বরং আমিই তাদেরকে আর তাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে পার্থিব ভোগ্যবস্তু দিয়েছিলাম আর তাদেরকে আয়ুও দেয়া হয়েছিল দীর্ঘ; তারা কি দেখছে না যে, আমি তাদের দেশকে চারপাশের (তাদের নিয়ন্ত্রিত) সীমান্ত হতে সংকুচিত করে আনছি? এরপরও কি তারা বিজয়ী হবে?'

بَلْ مَتَّعْنَا هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ط أَفَلَا يَرَوْنَ أَنَّا نَأْتِي الْأَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ أَطْرَافِهَا ط أَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ (٤٤)

৪৫. বল, আমি তোমাদেরকে একমাত্র (আল্লাহ্‌র) ওয়াহী দ্বারাই সতর্ক করি, কিন্তু বধিররা ডাক শুনবে না যখন তাদেরকে সতর্ক করা হয়।

قُلْ إِنَّمَآ أُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ز صلے وَلَا يَسْمَعُ الصُّمُّ الدُّعَآءَ إِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ (٤٥)

৪৬. তোমার প্রতিপালকের গযবের একটা নিঃশ্বাস যদি তাদের উপর পতিত হয় তবে তারা অবশ্য অবশ্যই বলে উঠবে, 'হায় আমাদের দুর্ভাগ্য! আমরাই তো ছিলাম অপরাধী।'

وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٤٦)

৪৭. আর কিয়ামাত দিবসে আমি সুবিচারের মানদণ্ড স্থাপন করব, অতঃপর কারো প্রতি এতটুকুও অন্যায় করা হবে না। (কর্ম) সরিষার দানা পরিমাণ হলেও তা আমি হাযির করব, হিসাব গ্রহণে আমিই যথেষ্ট।

وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا ط وَإِنْ كَانَ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ أَتَيْنَا بِهَا ط وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ (٤٧)

৪৮. আমি মূসা ও হারূনকে (সত্য-মিথ্যার) মানদণ্ড, আলো ও বাণী দিয়েছিলাম মুত্তাকীদের জন্য।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ لا (٤٨)

৪৯. যারা না দেখেই তাদের প্রতিপালককে ভয় করে আর তারা কিয়ামাত সম্পর্কে ভীত-শংকিত।

الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ (٤٩)

৫০. এ হচ্ছে কল্যাণময় উপদেশ বাণী, আমি তা নাযিল করেছিঃ তবুও কি তা তোমরা প্রত্যাখ্যান করবে?

وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ أَنْزَلْنٰهُ ط أَفَأَنْتُمْ لَهُ مُنْكِرُوْنَ ع (٥٠)

৫১. আমি ইতোপূর্বে ইব্‌রাহীমকে সঠিক পথে চলার জ্ঞান দান করেছিলাম আর তার সম্পর্কে

وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ إِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهُ مِنْ قَبْلُ وَكُنَّا

Contents

بِهٖ عٰلِمِيْنَ ج(٥١)

আমি খুব ভালভাবে জানতাম।

إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ الَّتِيْٓ أَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ (٥٢)

৫২. যখন সে তার পিতাকে ও তার জাতিকে বলল, 'এ মূর্তিগুলো কী যাদের সঙ্গে তোমরা নিজেদেরকে (ভক্তির বাঁধনে) বেঁধে রেখেছ?'

قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عَابِدِيْنَ (٥٣)

৫৩. তারা বলল, 'আমরা আমাদের পিতৃপুরুষদেরকে এদের পূজো করতে দেখেছি।

قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ فِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ (٥٤)

৫৪. সে বলল, 'তোমরা রয়েছ স্পষ্ট গুমরাহীতে, তোমরা আর তোমাদের পিতৃপুরুষরাও।'

قَالُوْٓا أَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ أَمْ أَنْتَ مِنَ اللّٰعِبِيْنَ (٥٥)

৫৫. তারা বলল, 'তুমি কি আমাদের কাছে প্রকৃত সত্য এনেছ, না তুমি আমাদের সঙ্গে তামাশা করছ?'

قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ز صلے وَأَنَا عَلٰى ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ (٥٦)

৫৬. সে বলল, 'বরং, তোমাদের প্রতিপালক হলেন আকাশ ও পৃথিবীর প্রতিপালক যিনি ওগুলোকে সৃষ্টি করেছেন, আর এ বিষয়ে আমি একজন সাক্ষ্যদাতা।

وَتَاللهِ لَأَكِيْدَنَّ أَصْنَامَكُمْ بَعْدَ أَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ (٥٧)

৫৭. কসম আল্লাহ্‌র! তোমরা পেছন ফিরে চলে গেলেই আমি তোমাদের মূর্তিগুলোর বিরুদ্ধে অবশ্য অবশ্যই একটা কৌশল গ্রহণ করব।

فَجَعَلَهُمْ جُذَاذًا إِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ إِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ (٥٨)

৫৮. তারপর সে মূর্তিগুলোকে টুকরো টুকরো করে দিল, ওগুলোর বড়টি ছাড়া, যাতে পূজারীরা ওটার প্রতিই মনোযোগী হয়।

قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ إِنَّهٗ لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (٥٩)

৫৯. তারা বলল, 'আমাদের মূর্তিগুলোর সাথে এমনটা কে করল? সে অবশ্যই যালিম।'

قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ إِبْرَاهِيْمُ (٦٠)

৬০. কেউ কেউ বলল, 'এক যুবককে এদের সম্পর্কে বলতে শুনেছি, তাকে ইব্‌রাহীম বলা হয়।'

قَالُوْا فَأْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى أَعْيُنِ النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ (٦١)

৬১. তারা বলল, 'তাকে নিয়ে এসো লোকজনের সামনে যাতে তারা সাক্ষী হতে পারে।'

قَالُوْٓا أَأَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا يٰٓإِبْرَاهِيْمُ (٦٢)

৬২. তারা বলল, 'ওহে ইব্‌রাহীম! আমাদের উপাস্যদের সাথে তুমিই কি এমনটি করেছ?'

قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَاسْأَلُوْهُمْ إِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ (٦٣)

৬৩. সে বলল, 'না, তাদের এই বড়টাই এ সব করেছে, তারা যদি কথা বলতে পারে তবে তাদেরকে জিজ্ঞেস কর।'

فَرَجَعُوْٓا إِلٰٓى أَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا إِنَّكُمْ أَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۙ (٦٤)

৬৪. তখন তারা বিষয়টি নিয়ে মনে মনে চিন্তা করল এবং পরস্পর বলাবলি করল– তোমরা নিজেরাই তো অন্যায়কারী।

ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ (٦٥)

৬৫. তাদের মাথা হেঁট হয়ে গেল। (তখন তারা বলল) 'তুমি তো জানই ওরা কথা বলতে পারে না।'

قَالَ أَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ مَا لَا يَنْفَعُكُمْ شَيْئًا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ۗ (٦٦)

৬৬. সে বলল, 'তাহলে তোমরা কি আল্লাহ্‌র পরিবর্তে এমন কিছুর 'ইবাদাত কর যা না পারে তোমাদের কোন উপকার করতে, আর না পারে তোমাদের ক্ষতি করতে?

أُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ ۗ أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٦٧)

৬৭. ধিক তোমাদের প্রতি আর আল্লাহ্‌র পরিবর্তে তোমরা যাদের 'ইবাদাত কর তাদেরও প্রতি। এরপরও কি তোমরা বুঝবে না।

قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ (٦٨)

৬৮. তারা বলল, 'তাকে পুড়িয়ে মার আর তোমাদের উপাস্যদের সাহায্য কর– যদি তোমরা কিছু করতেই চাও।

قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى إِبْرٰهِيْمَ ۙ (٦٩)

৬৯. আমি বললাম, 'হে অগ্নি! তুমি ইব্‌রাহীমের জন্য শীতল ও শান্তিময় হয়ে যাও।'

وَأَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْأَخْسَرِيْنَ ۚ (٧٠)

৭০. তারা তার বিরুদ্ধে চক্রান্ত করেছিল কিন্তু আমি তাদেরকেই সবচেয়ে ক্ষতিগ্রস্ত করে ছাড়লাম।

وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا إِلَى الْأَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ (٧١)

৭১. আর আমি তাকে ও (তার ভ্রাতুষ্পুত্র) লূতকে উদ্ধার করে তাদেরকে এমন দেশে (অর্থাৎ ফিলিস্তিনে) নিয়ে গেলাম যা আমি বিশ্ববাসীর জন্য কল্যাণময় করেছি।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ إِسْحٰقَ ۗ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۗ وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ (٧٢)

৭২. আমি ইব্‌রাহীমকে দান করেছিলাম ইসহাক, আর অতিরিক্ত হিসেবে (পৌত্র) ইয়া'কুব, (তাদের) প্রত্যেককেই আমি করেছিলাম সৎকর্মশীল।

Contents

وَجَعَلْنٰهُمْ أَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِأَمْرِنَا وَأَوْحَيْنَآ إِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرَاتِ وَإِقَامَ الصَّلٰوةِ وَإِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ج وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ لا (٧٣)

৭৩. আর তাদেরকে বানিয়েছিলাম নেতা, তারা আমার নির্দেশে মানুষকে সঠিক পথ দেখাত। তাদের প্রতি ওয়াহী করেছিলাম সৎ কাজ করার জন্য, নিয়মিত নামায প্রতিষ্ঠা করার ও যাকাত প্রদানের জন্য, তারা আমারই 'ইবাদাত করত।

وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبَآئِثَ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ لا (٧٤)

৭৪. আর আমি লূতকেও দিয়েছিলাম বিচারশক্তি ও জ্ঞান। আমি তাকে উদ্ধার করেছিলাম সেই জনবসতি থেকে যা অশ্লীল কাজে লিপ্ত ছিল, তারা ছিল এক খারাপ পাপাচারী জাতি।

وَأَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ط إِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ع (٧٥)

৭৫. আমি তাকে আমার রাহমাতের অন্তর্ভুক্ত করেছিলাম, সে ছিল সৎ কর্মশীলদের একজন।

وَنُوْحًا إِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ج (٧٦)

৭৬. স্মরণ কর নূহের কথা, ইতোপূর্বে যখন সে (আমাকে) ডেকেছিল, তখন আমি তার ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম আর তাকে ও তার পরিবারবর্গকে মহা বিপদ থেকে রক্ষা করেছিলাম।

وَنَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِيْنَ (٧٧)

৭৭. আর আমি তাকে সেই লোকেদের বিরুদ্ধে সাহায্য করেছিলাম যারা আমার আয়াতকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করেছিল, তারা ছিল এক খারাপ সম্প্রদায়, কাজেই তাদের সব্বাইকে (বানে) ডুবিয়ে দিয়েছিলাম।

وَدَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ إِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ إِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ج وَكُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ لا (٧٨)

৭৮. স্মরণ কর দাউদ ও সুলায়মানের কথা যখন তারা কৃষিক্ষেত সম্পর্কে বিচার করছিল যখন তাতে রাতের বেলা কোন ব্যক্তির মেষ ঢুকে পড়েছিল, আর আমি তাদের বিচারকার্য প্রত্যক্ষ করছিলাম।

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ج وَكُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّعِلْمًا ز وَّسَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَالطَّيْرَ ط وَكُنَّا فٰعِلِيْنَ (٧٩)

৭৯. আমি সুলায়মানকে এ বিষয়ের (সঠিক) বুঝ দিয়েছিলাম আর (তাদের) প্রত্যেককে আমি দিয়েছিলাম বিচারশক্তি ও জ্ঞান। আমি পর্বত ও পাখীদেরকে দাউদের অধীন ক'রে দিয়েছিলাম, তারা দাউদের সাথে আমার মাহাত্ম্য ও পবিত্রতা ঘোষণা করত। (এসব) আমিই করতাম।

وَعَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ

৮০. আমিই তাকে বর্ম নির্মাণ শিক্ষা দিয়েছিলাম তোমাদের উপকারে তোমাদের পারস্পরিক যুদ্ধে

Contents

مِّنۢ بَأۡسِكُمۡ ۚ فَهَلۡ أَنتُمۡ شَٰكِرُونَ (٨٠)

তোমাদেরকে রক্ষা করার জন্য, কাজেই তোমরা কি কৃতজ্ঞ হবে?

وَلِسُلَيۡمَٰنَ ٱلرِّيحَ عَاصِفَةً تَجۡرِي بِأَمۡرِهِۦٓ إِلَى ٱلۡأَرۡضِ ٱلَّتِي بَٰرَكۡنَا فِيهَا ۚ وَكُنَّا بِكُلِّ شَيۡءٍ عَٰلِمِينَ (٨١)

৮১. (আমার ক্ষমতা বলেই) আমি উদ্দাম বায়ুকে (স্বাভাবিক গতি সম্পন্ন) করেছিলাম সুলায়মানের জন্য। তার নির্দেশ মত তা প্রবাহিত হত সেই দেশের দিকে যাতে আমি কল্যাণ রেখেছি। আমি প্রত্যেক বিষয় সম্পর্কেই অবগত ছিলাম।

وَمِنَ ٱلشَّيَٰطِينِ مَن يَغُوصُونَ لَهُۥ وَيَعۡمَلُونَ عَمَلٗا دُونَ ذَٰلِكَ ۖ وَكُنَّا لَهُمۡ حَٰفِظِينَ ۙ (٨٢)

৮২. শয়ত্বানদের কতক তার জন্য ডুবুরির কাজ করত, এছাড়া অন্য কাজও করত, আমিই তাদেরকে রক্ষা করতাম।

وَأَيُّوبَ إِذۡ نَادَىٰ رَبَّهُۥٓ أَنِّي مَسَّنِيَ ٱلضُّرُّ وَأَنتَ أَرۡحَمُ ٱلرَّٰحِمِينَ ۚ صلے (٨٣)

৮৩. স্মরণ কর আইয়ূবের কথা, যখন সে তার প্রতিপালককে ডেকেছিলঃ (এই ব'লে যে) আমি দুঃখ কষ্টে নিপতিত হয়েছি, তুমি তো দয়ালুদের সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু।

فَٱسۡتَجَبۡنَا لَهُۥ فَكَشَفۡنَا مَا بِهِۦ مِن ضُرّٖ ۖ وَءَاتَيۡنَٰهُ أَهۡلَهُۥ وَمِثۡلَهُم مَّعَهُمۡ رَحۡمَةٗ مِّنۡ عِندِنَا وَذِكۡرَىٰ لِلۡعَٰبِدِينَ (٨٤)

৮৪. তখন আমি তার ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম আর তার দুঃখ ক্লেশ দূর করে দিয়েছিলাম। আর তার পরিবারবর্গকে তার কাছে ফিরিয়ে দিয়েছিলাম, আর তাদের সাথে তাদের মত আরো দিয়েছিলাম আমার পক্ষ হতে রহমত স্বরূপ আর আমার যারা 'ইবাদাত করে তাদের জন্য স্মারক হিসেবে।

وَإِسۡمَٰعِيلَ وَإِدۡرِيسَ وَذَا ٱلۡكِفۡلِ ۖ كُلّٞ مِّنَ ٱلصَّٰبِرِينَ ۙ ۚ صلے (٨٥)

৮৫. স্মরণ কর ইসমা'ঈল, ইদরীস ও জুল-কিফল এর কথা, তাদের প্রত্যেকেই ছিল ধৈর্যশীল।

وَأَدۡخَلۡنَٰهُمۡ فِي رَحۡمَتِنَآ ۖ إِنَّهُم مِّنَ ٱلصَّٰلِحِينَ (٨٦)

৮৬. আমি তাদেরকে আমার রাহমাতের অন্তর্ভুক্ত করেছিলাম, কারণ তারা ছিল সৎকর্মশীল।

وَذَا ٱلنُّونِ إِذ ذَّهَبَ مُغَٰضِبٗا فَظَنَّ أَن لَّن نَّقۡدِرَ عَلَيۡهِ فَنَادَىٰ فِي ٱلظُّلُمَٰتِ أَن لَّآ إِلَٰهَ إِلَّآ أَنتَ سُبۡحَٰنَكَ ق صلے إِنِّي كُنتُ مِنَ ٱلظَّٰلِمِينَ ۚ صلے (٨٧)

৮৭. স্মরণ কর যুন্-নুন এর কথা– যখন সে গোস্বাভরে চলে গিয়েছিল, আর ভেবেছিল যে তার উপর আমার কোন ক্ষমতা খাটবে না। অতঃপর সে (সমুদ্রের) গভীর অন্ধকার থেকে ডেকেছিল যে, তুমি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তোমারই পবিত্রতা, মহিমা ঘোষণা করছি; বাড়াবাড়ি আমিই করেছি।

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ لا وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ط وَكَذٰلِكَ نُنْجِي الْمُؤْمِنِيْنَ (٨٨)

৮৮. আমি তখন তার ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম, আর দুঃশ্চিন্তা থেকে তাকে মুক্ত করেছিলাম। মু'মিনদেরকে আমি এভাবেই উদ্ধার করি।

وَزَكَرِيَّآ إِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِي فَرْدًا وَّأَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ج صلے (٨٩)

৮৯. আর স্মরণ কর যাকারিয়ার কথা, যখন সে তার প্রতিপালককে ডেকেছিলঃ 'হে আমার প্রতিপালক! আমাকে সন্তানহীন করে রেখ না, যদিও তুমি উত্তরাধিকারীদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ।'

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ز وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى وَأَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا رَغَبًا وَّرَهَبًا ط وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ (٩٠)

৯০. তখন আমি তার ডাকে সাড়া দিয়েছিলাম আর তাকে দান করেছিলাম ইয়াহ্ইয়া, আমি তার নিমিত্তে তার স্ত্রীর বন্ধ্যাত্ব দূর করে দিয়েছিলাম। এরা সৎ কাজে ছিল ক্ষিপ্রগতি, তারা আমাকে ডাকত আশা নিয়ে ও ভীত হয়ে, আর তারা ছিল আমার প্রতি বিনয়ী।

وَالَّتِيْٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (٩١)

৯১. স্মরণ কর সেই নারীর (অর্থাৎ মারইয়ামের) কথা যে তার সতীত্বকে সংরক্ষণ করেছিল। অতঃপর আমি তার ভিতর আমার রূহ ফুঁকে দিয়েছিলাম আর তাকে ও তার পুত্রকে বিশ্বজগতের জন্য নিদর্শন করেছিলাম।

إِنَّ هٰذِهٖٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً ز صلے وَّأَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ (٩٢)

৯২. তোমাদের এ সব জাতিগুলো একই জাতি, আর আমি তোমাদের প্রতিপালক, কাজেই আমারই 'ইবাদাত কর।

وَتَقَطَّعُوْٓا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ط كُلٌّ إِلَيْنَا رٰجِعُوْنَ ع (٩٣)

৯৩. কিন্তু তারা (পরবর্তীতে) নিজেদের কাজ-কর্মে পরস্পর পার্থক্য সৃষ্টি করেছে, তা সত্ত্বেও তারা সবাই আমার কাছে ফিরে আসবে।

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ج وَإِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ (٩٤)

৯৪. কাজেই কেউ যদি মু'মিন হয়ে সৎ কাজ করে, তবে তার প্রচেষ্টা অস্বীকার করা হবে না, আমি তা তার জন্য লিখে রাখি।

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَآ أَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (٩٥)

৯৫. আমি যে সব জনবসতি ধ্বংস করেছি তাদের জন্য এটা নিষিদ্ধ করা হয়েছে যে তারা আর ফিরে আসবে না।

حَتّٰىٓ إِذَا فُتِحَتْ يَأْجُوْجُ وَمَأْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ (٩٦)

৯৬. এমনকি (তখনও তারা ফিরে আসবে না) যখন ইয়া'জূজ ও মা'জূজের জন্য (প্রাচীর) খুলে দেয়া হবে আর তারা প্রতিটি পাহাড় কেটে ছুটে

আসবে।

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَإِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ أَبْصَارُ الَّذِينَ كَفَرُوا ط يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِي غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٩٧)

৯৭. সত্য ওয়া'দার (পূর্ণতার) সময় ঘনিয়ে আসবে, তখন আতঙ্কে কাফিরদের চক্ষু স্থির হয়ে যাবে। (তখন তারা বলবে) হায়! আমরা তো এ ব্যাপারে উদাসীন ছিলাম, না, আমরা ছিলাম অন্যায়কারী।

إِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ ط أَنْتُمْ لَهَا وَارِدُوْنَ (٩٨)

৯৮. তোমরা (কাফিররা) আর আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে তোমরা যাদের 'ইবাদাত কর সেগুলো জাহান্নামের জ্বালানী। তাতে তোমরা প্রবেশ করবে।

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا ط وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٩٩)

৯৯. তারা যদি ইলাহ হত, তাহলে তারা তাতে প্রবেশ করত না, তাতে তারা সবাই স্থায়ী হয়ে থাকবে।

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ (١٠٠)

১০০. সেখানে তারা ফুঁপিয়ে ফুঁপিয়ে কাঁদবে, সেখানে কিছুই শুনবে না।

إِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰى لا أُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ لا (١٠١)

১০১. পূর্ব থেকেই আমার পক্ষ হতে যাদের জন্য কল্যাণ নির্ধারিত আছে তাদেরকে তাথেকে (অর্থাৎ জাহান্নাম থেকে) বহু দূরে রাখা হবে।

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا ج وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ أَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ج (١٠٢)

১০২. তারা জাহান্নামের ক্ষীণতম শব্দও শুনবে না, আর তারা তাদের মনের বাসনা অনুযায়ী চিরকাল বসবাস করবে।

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْأَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ط هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ (١٠٣)

১০৩. মহা ত্রাস তাদেরকে চিন্তাযুক্ত করবে না, আর ফেরেশতাগণ তাদেরকে অভ্যর্থনা জানাবে (এই কথা বলে যে), 'এটাই তোমাদের দিন যার ওয়া'দা তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল।

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ ط كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ ط وَعْدًا عَلَيْنَا ط إِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ (١٠٤)

১০৪. সেদিন আমি আকাশকে গুটিয়ে নেব যেমনভাবে (লিখিত) কাগজ-দলীল গুটিয়ে রাখা হয়। যেভাবে আমি প্রথমবার সৃষ্টি করেছিলাম, সেভাবে আবার সৃষ্টি করব। ওয়া'দা আমি করেছি, তা আমি পূর্ণ করবই।

১০৪। ইব্নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) এক ভাষণে বলেন, ক্বিয়ামাতের দিন তোমরা আল্লাহ্ তা'আলার সম্মুখে বস্ত্রহীন এবং খাতনাহীন অবস্থায় জমায়েত হবে। (এরপর তিনি এ আয়াত পাঠ করলেন) كَمَا بَدَأْنَآ أَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ وَعْدًا عَلَيْنَا إِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ "যেভাবে আমি প্রথম সৃষ্টির সূচনা করেছিলাম, সেভাবে পুনরায় সৃষ্টি

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْ بَعْدِ الذِّكْرِ أَنَّ الْأَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ (١٠٥)

১০৫. (এর আগে মূসাকে) বাণী দেয়ার পর আমি যুবূরে লিখে দিয়েছিলাম যে, আমার সৎকর্মপরায়ণ বান্দাহ্গণই পৃথিবীর উত্তরাধিকার লাভ করবে।

إِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ط (١٠٦)

১০৬. নিশ্চয়ই এতে (অর্থাৎ এই কুরআনে) উপদেশবাণী রয়েছে 'ইবাদাতকারী লোকেদের জন্য।

وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (١٠٧)

১০৭. আমি তোমাকে বিশ্ববাসীর জন্য পাঠিয়েছি কেবল রহমত হিসেবে।

قُلْ إِنَّمَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ ج فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ (١٠٨)

১০৮. বল– আমার প্রতি এ ওয়াহীই করা হয়েছে যে, তোমাদের ইলাহ একমাত্র ইলাহ, কাজেই তোমরা কি তাঁর নির্দেশের প্রতি মাথা নত করবে?

فَإِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى سَوَآءٍ ط وَإِنْ أَدْرِيْٓ أَقَرِيْبٌ أَمْ بَعِيْدٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ (١٠٩)

১০৯. তবে তারা মুখ ফিরিয়ে নিলে বলঃ আমি তোমাদের কাছে যথাযথভাবে বাণী পৌঁছে দিয়েছি। আর আমি জানি না তোমাদেরকে যার ওয়া'দা দেয়া হয়েছে তা নিকটবর্তী, নাকি দূরবর্তী।

إِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ مَا تَكْتُمُوْنَ (١١٠)

১১০. তিনি জানেন যে কথা প্রকাশ করা হয় আর তিনি জানেন যা তোমরা (তোমাদের অন্তরে) লুকিয়ে রাখ।

وَإِنْ أَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ وَمَتَاعٌ إِلٰى حِيْنٍ (١١١)

১১১. আমি জানি না সম্ভবতঃ বিলম্বের মধ্যে তোমাদের জন্য রয়েছে পরীক্ষা আর কিছু কালের জন্য সুখভোগের সুযোগ।

قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ط وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ع (١١٢)

১১২. রসূল বলেছিল– হে আমার প্রতিপালক! তুমি ন্যায্য মীমাংসা করে দাও, আর আমাদের প্রতিপালক তো দয়ার আধার। তোমরা (তাঁর বিরুদ্ধে) যে সব কথা বলছ সে বিষয়ে তিনিই একমাত্র আশ্রয়স্থল।

করব; আমার উপর এ ওয়াদা রইল; অবশ্যই আমি তা কার্যকর করব।" এরপর ক্বিয়ামাতের দিন সর্বপ্রথম পোশাক পরিধান করানো হবে ইব্‌রাহীম (ﷺ)-কে। জেনে রাখ, আমার উম্মাতের মধ্য হতে বহু লোককে হাজির করা হবে। এরপর তাদের ধরে বাম দিকে নিয়ে যাওয়া হবে। আমি বলব, হে রব! এরা তো আমার সঙ্গী-সাথী। এরপর বলা হবে, আপনি জানেন না, আপনার পরে ওরা (ইসলামে) নতুন কাজে লিপ্ত হয়েছে। তখন আমি সে কথা বলব, যেমন আল্লাহর নেক বান্দা [ঈসা (ﷺ)] বলেছিলেনঃ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ شَهِيْدٌ "যতদিন আমি তাদের মধ্যে ছিলাম, ততদিন আমি ছিলাম তাদের কার্যাবলীর প্রত্যক্ষদর্শী; কিন্তু যখন তুমি আমাকে তুলে নিলে, তখন তুমিই তো ছিলে তাদের কার্যকলাপ প্রত্যক্ষকারী এবং তুমিই সর্ববিষয়ে সাক্ষী।" এরপর বলা হবে, তুমি এদের নিকট হতে চলে আসার পর এরা ধারাবাহিকভাবে উল্টো পথে চলেছে। –বুখারী ৪৭৪০ [৩৩৪৯; মুসলিম ২৮৬০, তিরমিযী ২৪২৩, ৩১৬৭, ৩৩৩২; নাসায়ী ২০৮১, ২০৮২, ২০৮৭; আহমাদ ১৯১৬, ১৯৫১; দারিমী ২৮০২]

২২. সূরাহ আল-হাজ্জ

سُوْرَةُ الْحَجِّ

আয়াতঃ ৭৮, রুকূ'ঃ ১০, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হে মানুষ! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর, কিয়ামাতের কম্পন এক ভয়ানক জিনিস।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ج إِنَّ زَلْزَلَةَ السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ (١)

২. সেদিন তুমি দেখবে প্রতিটি দুগ্ধদায়িনী ভুলে যাবে তার দুগ্ধপোষ্য শিশুকে, আর প্রত্যেক গর্ভবতী গর্ভপাত করে ফেলবে, আর মানুষকে দেখবে মাতাল, যদিও তারা প্রকৃতপক্ষে মাতাল নয়, কিন্তু আল্লাহ্‌র শাস্তি বড়ই কঠিন (যার কারণে তাদের ঐ অবস্থা ঘটবে)।

يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ عَمَّآ أَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللهِ شَدِيْدٌ (٢)

৩. কতক মানুষ জ্ঞান ছাড়াই আল্লাহ সম্বন্ধে বাদানুবাদ করে, আর প্রত্যেক অবাধ্য শয়ত্বানের অনুসরণ করে।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ ۙ (٣)

৪. যার (অর্থাৎ শয়ত্বানের) সম্পর্কে বিধান করা হয়েছে যে, যে কেউ তার সঙ্গে বন্ধুত্ব গড়বে, সে তাকে বিপথগামী করবে, আর তাকে প্রজ্জ্বলিত অগ্নি শাস্তির দিকে পরিচালিত করবে।

كُتِبَ عَلَيْهِ أَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَأَنَّهٗ يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ إِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ (٤)

৫. হে মানুষ! পুনরুত্থানের ব্যাপারে যদি তোমরা সন্দিহান হও, তাহলে (চিন্তা করে দেখ) আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি মাটি থেকে, অতঃপর শুক্র হতে, অতঃপর জমাট রক্ত থেকে, অতঃপর মাংসপিণ্ড হতে পূর্ণ আকৃতিবিশিষ্ট বা অপূর্ণ আকৃতিবিশিষ্ট অবস্থায় (আমার শক্তি-ক্ষমতা)

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ الْبَعْثِ فَإِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ

২। আবূ সা'ঈদ খুদরী (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, ক্বিয়ামাতের দিন আল্লাহ্ তা'আলা বলবেন, হে আদম! তিনি বলবেন, হে রব! আমার সৌভাগ্য, আমি হাজির। তারপর তাকে উচ্চৈঃস্বরে ডেকে বলা হবে, নিশ্চয়ই আল্লাহ্ তা'আলা তোমাকে নির্দেশ দিতেছেন যে, তোমার বংশধর থেকে একদলকে বের করে জাহান্নামের দিকে নিয়ে আস। আদাম (আঃ) বলবে, হে রব! জাহান্নামী দলের পরিমাণ কী? বলবে, প্রতি হাজার থেকে আমার ধারণা যে, বললেন, নয়শত নিরানব্বই, এ সময় গর্ভবতী মহিলা গর্ভপাত করবে, শিশুরা বৃদ্ধ হয়ে যাবে এবং তুমি মানুষকে দেখবে মাতাল; অথচ তারা নেশাগ্রস্ত নয়। বস্তুত আল্লাহ্‌র শাস্তি কঠিন। [পরে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) এ আয়াতটি পাঠ করলেন]..... হাদীসের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৭৪১ [৩৩৪৮; মুসলিম ২২২, আহমাদ ১০৮৯২]

مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ؕ وَنُقِرُّ فِي الْأَرْحَامِ مَا نَشَآءُ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا أَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ إِلٰٓى أَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْئًا ؕ وَتَرَى الْأَرْضَ هَامِدَةً فَإِذَآ أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَأَنْۢبَتَتْ مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ (٥)

তোমাদের সামনে স্পষ্ট করে তুলে ধরার জন্য। আর আমি যাকে ইচ্ছে করি তাকে একটা নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত মাতৃগর্ভে রাখি, অতঃপর তোমাদেরকে বের করে আনি শিশুরূপে, অতঃপর (লালন পালন) করি যাতে তোমরা তোমাদের পূর্ণ শক্তির বয়সে পৌঁছতে পার। তোমাদের কারো কারো মৃত্যু ঘটাই, আর কতককে ফিরিয়ে দেয়া হয় নিষ্ক্রিয় বার্ধক্যে যাতে (অনেক) জ্ঞান লাভের পরেও তাদের আর কোন জ্ঞান থাকে না। অতঃপর (আরো) তোমরা ভূমিকে দেখ শুষ্ক, মৃত; অতঃপর আমি যখন তাতে পানি বর্ষণ করি তখন তাতে প্রাণ চাঞ্চল্য সৃষ্টি হয়, তা আন্দোলিত ও স্ফীত হয়, আর তা উগত করে সকল প্রকার নয়নজুড়ানো উদ্ভিদ (জোড়ায় জোড়ায়)।

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّهٗ يُحْيِ الْمَوْتٰى وَأَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ (٦)

৬. এ রকম হয় এজন্য যে, আল্লাহ হলেন সত্য সঠিক, আর তিনিই মৃতকে জীবিত করেন, আর তিনি সকল বিষয়ে ক্ষমতাবান।

وَّأَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَأَنَّ اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ (٧)

৭. আর কিয়ামাত অবশ্যই আসবে, এ ব্যাপারে কোন সন্দেহ নেই এবং যারা কবরে আছে আল্লাহ তাদেরকে অবশ্যই পুনরুত্থিত করবেন।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۙ (٨)

৮. তবুও মানুষের মধ্যে এমন আছে যারা জ্ঞান, পথের দিশা ও কোন আলোকপ্রদানকারী কিতাব ছাড়াই আল্লাহ সম্পর্কে বিতর্ক করে।

ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ (٩)

৯. (বিতর্ক করে অবজ্ঞাভরে) ঘাড় বাঁকিয়ে (লোকেদেরকে) আল্লাহ্‌র পথ থেকে বিচ্যুত করার উদ্দেশে। তার জন্য আছে লাঞ্ছনা এ দুনিয়াতে, আর কিয়ামাতের দিন তাকে আস্বাদন করাব (অগ্নির) দহন যন্ত্রণা।

৫। আনাস ইবনু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেনঃ আল্লাহ তা'আলা মাতৃগর্ভের জন্যে একজন ফেরেশতা নির্ধারণ করেছেন। তিনি (পর্যায়ক্রমে) বলতে থাকেন, হে রব! এখন বীর্য-আকৃতিতে আছে। হে রব! এখন জমাট রক্তে পরিণত হয়েছে। হে রব! এখন মাংসপিণ্ডে পরিণত হয়েছে। অতঃপর আল্লাহ তা'আলা যখন তার সৃষ্টি পূর্ণ করতে চান, তখন জিজ্ঞেস করেনঃ পুরুষ, না স্ত্রী? সৌভাগ্যবান, না দুর্ভাগা? রিয্‌ক ও বয়স কত? আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেনঃ তার মাতৃগর্ভে থাকতেই তা লিখে দেয়া হয়। –বুখারী ৩১৮ [৩৩৩৩, ৬৫৯৫, মুসলিম ২৬৪৬, আহমাদ ১১৭৪৭, ১২০৯০]

ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَأَنَّ اللهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ع (١٠)

১০. (বলা হবে) তোমার হাত দু'খানা আগেই যা পাঠিয়েছিল এটা তারই ফল, কারণ আল্লাহ্ তো তাঁর বান্দাহ্দের প্রতি যালিম নন।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللهَ عَلٰى حَرْفٍ ج فَإِنْ أَصَابَهُ خَيْرُ ۨ اطْمَأَنَّ بِهٖ ج وَإِنْ أَصَابَتْهُ فِتْنَةُ ۨ انْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ج قف خَسِرَ الدُّنْيَا وَالْأٰخِرَةَ ط ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ (١١)

১১. মানুষের মধ্যে এমন কতক আছে যারা শেষ সীমায় অবস্থান করে আল্লাহ্র 'ইবাদাত করে। অতঃপর তার কল্যাণ হলে, তা নিয়ে সে তৃপ্ত থাকে, আর কোন পরীক্ষার সম্মুখীন হলে সে তার পূর্বের অবস্থায় ফিরে যায়। ক্ষতিগ্রস্ত হয় সে দুনিয়াতেও আর আখিরাতেও– এটাই হল স্পষ্ট ক্ষতি।

يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا لَا يَنْفَعُهٗ ط ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ج (١٢)

১২. আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে সে এমন কিছুকে ডাকে যা না পারে তার কোন ক্ষতি করতে আর না পারে কোন উপকার করতে, এটাই হল চরম আকারের গুমরাহী।

يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ أَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ط لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ (١٣)

১৩. সে এমন কিছুকে ডাকে যার লাভের চেয়ে ক্ষতিই নিকটবর্তী, কত মন্দই না এই অভিভাবক, আর কত মন্দই না এই সঙ্গী!

إِنَّ اللهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ط إِنَّ اللهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ (١٤)

১৪. যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে আল্লাহ তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার নিম্নদেশ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, আল্লাহ্ যা করতে চান, তাই করেন।

مَنْ كَانَ يَظُنُّ أَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللهُ فِي الدُّنْيَا وَالْأٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ إِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ (١٥)

১৫. যে কেউ ধারণা করে যে আল্লাহ তাকে (অর্থাৎ তাঁর রসূলকে) কক্ষনো দুনিয়া ও আখিরাতে সাহায্য করবেন না, তাহলে সে আকাশ পর্যন্ত একটা দড়ি ঝুলিয়ে নিক, অতঃপর তা কেটে দিক, অতঃপর সে দেখুক তার কলা-কৌশল তার রাগের কারণ দূর করে কিনা। (রসূলের দুশমন নিজের ঝুলানো দড়িটাই কাটুক, কেননা সে তো রসূলের প্রতি আল্লাহ্র সাহায্যের দড়িটা কক্ষনো কাটতে পারবে না।)

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍ ۢبَيِّنٰتٍ لا وَّأَنَّ اللهَ

১৬. এভাবেই আমি স্পষ্ট নিদর্শনরূপে কুরআন অবতীর্ণ করেছি আর আল্লাহ যাকে চান সঠিক পথে

১১-১২। ইব্নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি وَمِنَ النَّاسِ مَن يَعْبُدُ اللهَ عَلَى حَرْفٍ সম্পর্কে বলেন, কোন ব্যক্তি মাদীনায় আগমন করতঃ যদি তার স্ত্রী পুত্র-সন্তান প্রসব করত এবং তার ঘোড়ায় বাচ্চা দিত, তখন বলত এ দীন ভাল। আর যদি তার স্ত্রীর গর্ভে পুত্র সন্তান না জন্মাত এবং তার ঘোড়াও বাচ্চা না দিত, তখন বলত, এটা মন্দ দ্বীন। –বুখারী ৪৭৪২

يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ (١٦)

পরিচালিত করেন।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا وَالصّٰبِئِيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ أَشْرَكُوْآ ۖ إِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (١٧)

১৭. যারা ঈমান এনেছে আর যারা ইয়াহূদী হয়েছে, আর যারা সাবিয়ী, নাসারা, অগ্নিপূজক ও মুশরিক, আল্লাহ কিয়ামাতের দিন এদের মধ্যে ফয়সালা করে দেবেন (যে কারা সঠিক পথে আছে), কারণ আল্লাহ সব কিছুর প্রত্যক্ষদর্শী।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ۗ وَكَثِيْرٌ حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ۗ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ۗ إِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يَشَآءُ السجدة (١٨)

১৮. তুমি কি দেখ না যে আল্লাহ্‌কে সেজদা করে যারা আকাশে আছে, আর যারা পৃথিবীতে আছে আর সূর্য, চন্দ্র, তারকারাজি, পর্বতসমূহ, বৃক্ষরাজি, জীবজন্তু এবং মানুষের মধ্যে অনেকে? আর অনেকের প্রতি শাস্তি সাব্যস্ত হয়ে গেছে। আল্লাহ যাকে লাঞ্ছিত করতে চান, তাকে সম্মানিত করার কেউ নেই। আল্লাহ যা ইচ্ছে করেন তাই করেন।[সেজদা]

هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ ز فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ۗ يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ج (١٩)

১৯. এরা বিবাদের দু'টি পক্ষ, (মু'মিনরা একটি পক্ষ, আর সমস্ত কাফিররা আরেকটি পক্ষ) এরা এদের প্রতিপালক সম্বন্ধে বাদানুবাদ করে, অতঃপর যারা (তাদের প্রতিপালককে) অস্বীকার করে, তাদের জন্য তৈরি করা হয়েছে আগুনের পোশাক, তাদের মাথার উপর ঢেলে দেয়া হবে ফুটন্ত পানি।

يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِيْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ (٢٠)

২০. যা দিয়ে তাদের পেটে যা আছে তা ও তাদের চামড়া গলিয়ে দেয়া হবে।

وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ (٢١)

২১. উপরন্তু তাদের (শাস্তির) জন্য থাকবে লোহার মুগুর।

كُلَّمَآ أَرَادُوْآ أَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ أُعِيْدُوْا فِيْهَا ۖ وَذُوْقُوْا عَذَابَ

২২. যখনই তারা যন্ত্রণার চোটে তাথেকে বেরিয়ে আসতে চাইবে (তখনই) তাদেরকে তার ভিতরে ফিরিয়ে দেয়া হবে, (আর বলা হবে, আগুনে)

১৯। আবূ যার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি এ আয়াত সম্পর্কে কসম খেয়ে বলেন, এ আয়াত: هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِيْ رَبِّهِمْ (এরা দু'টি বিবদমান পক্ষ। তারা তাদের প্রতিপালকের ব্যাপারে বিতর্ক করে)। হামযা এবং তাঁর দু'সঙ্গী এবং উত্‌বা ও তার দু'সঙ্গীর ব্যাপারে অবতীর্ণ হয়েছে, যেদিন তারা বাদ্‌রের যুদ্ধে বিপক্ষের সঙ্গে মুকাবিলা করেছিল। –বুখারী ৪৭৪৩ [৩৯৬৬, মুসলিম ৩০৩৩, ইবনু মাজাহ ২৮৩৫]

الْحَرِيْقِ ع (٢٢)

পুড়ার শাস্তি আস্বাদন কর।

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ط وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ (٢٣)

২৩. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে, আল্লাহ তাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। সেখানে তাদেরকে অলংকৃত করা হবে সোনার কাঁকন আর মুক্তা দিয়ে আর সেখানে তাদের পোশাক হবে রেশমের।

وَهُدُوْٓا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ ج ق صلے وَهُدُوْٓا إِلٰى صِرَاطِ الْحَمِيْدِ (٢٤)

২৪. তাদেরকে (দুনিয়ার জীবনে) পথ দেখানো হয়েছিল পবিত্র বাক্যের (অর্থাৎ কালিমা তাইয়্যেবা বা আল-কুরআনের) দিকে আর তারা পরিচালিত হয়েছিল তাঁর পথে যিনি সকল প্রশংসার দাবীদার।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِيْ جَعَلْنٰهُ لِلنَّاسِ سَوَآءَ ۨالْعَاكِفُ فِيْهِ وَالْبَادِ ط وَمَنْ يُّرِدْ فِيْهِ بِإِلْحَادٍ بِظُلْمٍ نُّذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ ع (٢٥)

২৫. যারা কুফুরী করে আর আল্লাহ্‌র পথে (মানুষের চলার ক্ষেত্রে) বাধা সৃষ্টি করে আর মাসজিদে হারামে যেতেও– যাকে আমি করেছি স্থানীয় বাসিন্দা ও অন্যদেশবাসী সকলের জন্য সমান। যে তাতে অন্যায়ভাবে কোন ধর্মদ্রোহী কাজ করার ইচ্ছে করে তাকে আমি আস্বাদন করাব ভয়াবহ শাস্তি।

وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيْمَ مَكَانَ الْبَيْتِ أَنْ لَّا تُشْرِكْ بِيْ شَيْئًا وَّطَهِّرْ بَيْتِيَ لِلطَّآئِفِيْنَ وَالْقَآئِمِيْنَ وَالرُّكَّعِ السُّجُوْدِ (٢٦)

২৬. স্মরণ কর যখন আমি ইব্‌রাহীমকে (পবিত্র) গৃহের স্থান চিহ্নিত করে দিয়েছিলাম, (তখন বলেছিলাম) আমার সাথে কোন কিছুকে অংশীদার গণ্য করবে না, আর আমার গৃহকে পবিত্র রাখবে তাওয়াফকারী, নামাযে কিয়ামকারী, রুকু'কারী ও সেজদাকারীদের জন্য।

وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوْكَ رِجَالًا وَّعَلٰى كُلِّ ضَامِرٍ يَّأْتِيْنَ مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيْقٍ لا (٢٧)

২৭. আর মানুষের মাঝে হাজ্জের ঘোষণা দাও, তারা তোমার কাছে আসবে পায়ে হেঁটে, আর সব (পথক্লান্ত) শীর্ণ উটের পিঠে, বহু দূরের গভীর পর্বত সংকুল পথ বেয়ে

২৭। ইব্‌নু 'উমার (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি দেখেছি, আল্লাহর রসূল (ﷺ) যুল-হুলাইফাহ নামক স্থানে তাঁর বাহনের উপর আরোহণ করেন, বাহনটি সোজা হয়ে দাঁড়াতেই তিনি তালবিয়াহ উচ্চারণ করতে থাকেন। –বুখারী ১৫১৪ [১৬৬, মুসলিম ১১৮৭, নাসায়ী ১১৭, ২৬৬০, ২৬৬১, ২৮৬২, ২৯৫২; আবূ দাউদ ১৭৭২, ৪০৬৪; আহমাদ ৪৪৪৮, ৪৬০৪; মুওয়াত্তা ৭৪২, ৯২৩; দারিমী ১৮৩৮, ১৯২৭, ১৯২৮]

لِّيَشْهَدُوْا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ اللهِ فِيْٓ أَيَّامٍ مَّعْلُوْمٰتٍ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْأَنْعَامِ ج فَكُلُوْا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْبَآئِسَ الْفَقِيْرَ ز (٢٨)

২৮. যাতে তারা তাদের জন্য (এখানে রাখা দুনিয়া ও আখিরাতের) কল্যাণগুলো প্রত্যক্ষ করতে পারে আর তিনি তাদেরকে চতুষ্পদ জন্তু হতে যে রিয্ক দান করেছেন, নির্দিষ্ট দিনগুলোতে তার উপর আল্লাহ্র নাম উচ্চারণ করতে পারে। কাজেই তোমরা (নিজেরা) তাথেকে খাও আর দুঃস্থ অভাবীদের খাওয়াও।

ثُمَّ لْيَقْضُوْا تَفَثَهُمْ وَلْيُوْفُوْا نُذُوْرَهُمْ وَلْيَطَّوَّفُوْا بِالْبَيْتِ الْعَتِيْقِ (٢٩)

২৯. অতঃপর তারা যেন তাদের দৈহিক অপরিচ্ছন্নতা দূর করে, তাদের মানৎ পূর্ণ করে আর প্রাচীন গৃহের তাওয়াফ করে।

ذٰلِكَ ق وَمَنْ يُّعَظِّمْ حُرُمٰتِ اللهِ فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ط وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ إِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ مِنَ الْأَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ لا (٣٠)

৩০. এটাই (হাজ্জ), যে কেউ আল্লাহ্র নির্ধারিত অনুষ্ঠানগুলোর সম্মান করবে, সেটা তার প্রতিপালকের নিকট তার জন্য উত্তম। চতুষ্পদ জন্তুগুলো তোমাদের জন্য হালাল করা হয়েছে সেগুলো ছাড়া যেগুলোর ব্যাপারে তোমাদেরকে পড়ে শুনানো হয়েছে। কাজেই তোমরা মূর্তিদের অপবিত্রতা বর্জন কর আর মিথ্যে কথা পরিহার কর

حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ط وَمَنْ يُّشْرِكْ بِاللهِ فَكَأَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ أَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ (٣١)

৩১. আল্লাহ্র প্রতি একনিষ্ঠ হয়ে তাঁর সাথে শরীক না করে। যে কেউ আল্লাহ্র সাথে শরীক করে সে যেন আকাশ থেকে পড়ে গেল, আর পাখী তাকে ছোঁ মেরে নিয়ে গেল কিংবা বাতাস তাকে উড়িয়ে নিয়ে দূরবর্তী স্থানে ছুঁড়ে ফেলে দিল।

ذٰلِكَ ق وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللهِ فَإِنَّهَا مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ (٣٢)

৩২. এই (তার অবস্থা), আর যে কেউ আল্লাহ্র নিদর্শনগুলোকে সম্মান করবে সে তো তার অন্ত রস্থিত আল্লাহ-ভীতি থেকেই তা করবে।

لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ثُمَّ مَحِلُّهَآ إِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ع (٣٣)

৩৩. এতে (অর্থাৎ কুরবানীর পশুতে) তোমাদের জন্য নানান উপকার রয়েছে এক নির্দিষ্ট কাল পর্যন্ত (কুরবানীর জায়গায় পৌছা পর্যন্ত তোমরা এই জন্তুগুলোর দ্বারা উপকৃত হতে পার), সর্বশেষে এগুলোর কুরবানীর স্থান হচ্ছে প্রাচীন ঘরের নিকট।

وَلِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ اللهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْأَنْعَامِ ط

৩৪. আমি প্রতিটি সম্প্রদায়ের জন্য (কুরবানীর) নিয়ম করে দিয়েছি। তাদেরকে চতুষ্পদ জন্তু হতে যে রিযক্ দেয়া হয়েছে সেগুলোর উপর তারা যেন আল্লাহ্র নাম উচ্চারণ করে, (এই বিভিন্ন নিয়ম-পদ্ধতির মূল লক্ষ্য কিন্তু এক– আল্লাহ্র নির্দেশ

فَإِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ أَسْلِمُوْا ط وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ لا (٣٤)

পালন), কারণ তোমাদের উপাস্য একমাত্র উপাস্য, কাজেই তাঁর কাছেই আত্মসমর্পণ কর আর সুসংবাদ দাও সেই বিনীতদেরকে−

الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِرَ اللهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ وَالصَّابِرِيْنَ عَلٰى مَآ أَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي الصَّلٰوةِ لا وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ (٣٥)

৩৫. 'আল্লাহ' নামের উল্লেখ হলেই যাদের অন্তরাত্মা কেঁপে উঠে, যারা তাদের বিপদাপদে ধৈর্যধারণ করে, নামায কায়িম করে, আর তাদেরকে আমি যে রিযক্ দিয়েছি তাথেকে তারা ব্যয় করে।

وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللهِ لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ق صلے فَاذْكُرُوا اسْمَ اللهِ عَلَيْهَا صَوَآفَّ ج فَإِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا فَكُلُوْا مِنْهَا وَأَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ط كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٣٦)

৩৬. আর (কুরবানীর) উটগুলোকে আমি করেছি আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহের অন্যতম। তাতে তোমাদের জন্য কল্যাণ আছে, কাজেই সারিবদ্ধভাবে দাঁড়ানো অবস্থায় ওগুলোর উপর তোমরা আল্লাহ্‌র নাম উচ্চারণ কর। যখন তা পার্শ্বভরে পড়ে যায়, তখন তাথেকে খাও আর যারা (ভিক্ষে না ক'রে) পরিতৃপ্ত থাকে তাদেরকে আর যারা কাকুতি মিনতি ক'রে যাচঞা করে তাদেরকেও খাওয়াও। এভাবে আমি ওগুলোকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছি যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

لَنْ يَّنَالَ اللهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ط كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ ط وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ (٣٧)

৩৭. আল্লাহ্‌র কাছে ওগুলোর না গোশত পৌঁছে, আর না রক্ত পৌঁছে বরং তাঁর কাছে পৌঁছে তোমাদের তাকওয়া। এভাবে তিনি ওগুলোকে তোমাদের অধীন করে দিয়েছেন যাতে তোমরা আল্লাহ্‌র শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা করতে পার এজন্য যে, তিনি তোমাদেরকে সঠিক পথ দেখিয়েছেন, কাজেই সৎকর্মশীলদেরকে তুমি সুসংবাদ দাও।

إِنَّ اللهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ط إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ع (٣٨)

৩৮. আল্লাহ মু'মিনদেরকে রক্ষা করেন (যাবতীয় মন্দ হতে)। আল্লাহ কোন খিয়ানাতকারী, অকৃতজ্ঞকে পছন্দ করেন না।

أُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِأَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ط وَإِنَّ اللهَ عَلٰى نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرٌ لا (٣٩)

৩৯. যাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করা হয় তাদেরকে যুদ্ধের অনুমতি দেয়া হল, কেননা তাদের প্রতি অত্যাচার করা হয়েছে। আল্লাহ তাদেরকে সাহায্য করতে অবশ্যই সক্ষম।

الَّذِيْنَ أُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ حَقٍّ إِلَّآ

৪০. তাদেরকে অন্যায়ভাবে গৃহ থেকে বহিষ্কার

أَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللهُ ؕ وَلَوْلَا دَفْعُ اللهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللهِ كَثِيْرًا ؕ وَلَيَنْصُرَنَّ اللهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ؕ إِنَّ اللهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ (٤٠)

করা হয়েছে শুধু তাদের এ কথা বলার কারণে যে, 'আল্লাহ আমাদের প্রতিপালক।' আল্লাহ যদি মানুষদের এক দলের দ্বারা অন্য দলকে প্রতিহত না করতেন, তাহলে বিধ্বস্ত হয়ে যেত খ্রীষ্টান সংসারত্যাগীদের উপাসনালয়, গির্জা ও ইয়াহূদীদের উপাসনার স্থান আর মাসজিদসমূহ যেখানে আল্লাহ্র নাম অধিকহারে স্মরণ করা হয়। আল্লাহ অবশ্যই তাকে সাহায্য করেন যে তাঁকে সাহায্য করে, আল্লাহ শক্তিমান, পরাক্রান্ত।

اَلَّذِيْنَ إِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْأَرْضِ أَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ وَأَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ؕ وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْأُمُوْرِ (٤١)

৪১. (এরা হল) যাদেরকে আমি যমীনে প্রতিষ্ঠিত করলে তারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত প্রদান করে, সৎ কাজের আদেশ দেয় ও মন্দ কাজে নিষেধ করে, সকল কাজের শেষ পরিণাম (ও সিদ্ধান্ত) আল্লাহ্র হাতে নিবদ্ধ।

وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۙ (٤٢)

৪২. লোকেরা যদি তোমাকে অস্বীকার করে তাহলে (জেনে রেখ এটা কোন নতুন ব্যাপার নয়) তাদের পূর্বে নূহ, 'আদ ও সামূদ সম্প্রদায়ও (তাদের রসূলদের) অস্বীকার করেছিল।

وَقَوْمُ إِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۙ (٤٣)

৪৩. আর ইব্রাহীমের সম্প্রদায় ও লূতের সম্প্রদায়ও (অস্বীকার করেছিল)।

وَّأَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَأَمْلَيْتُ لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ أَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ (٤٤)

৪৪. আর মাদ্ইয়ানবাসীরাও [অস্বীকার করেছিল যারা ছিল শু'আয়ব ('আ.)-এর সম্প্রদায়], আর মূসাকেও অস্বীকার করা হয়েছিল। আমি অস্বীকারকারীদেরকে সময়- সুযোগ দিয়েছিলাম, অতঃপর তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম। কত ভীষণ ছিল আমাকে অস্বীকার করার পরিণতি!

فَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ أَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰى عُرُوْشِهَا ز وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ (٤٥)

৪৫. আমি কত জনবসতিকে ধ্বংস করেছি যেগুলোর অধিবাসীরা ছিল যালিম, সেগুলো ছাদের ভরে পতিত হয়ে বিধ্বস্ত হয়েছিল, বিরাণ হয়েছিল কত কূপ আর সুউচ্চ সুদৃঢ় প্রাসাদরাজি।

أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَا أَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ بِهَا

৪৬. তারা কি যমীনে ভ্রমণ করে না? তাহলে তারা হৃদয় দিয়ে বুঝতে পারত, আর তাদের কান শুনতে পারত। প্রকৃতপক্ষে চোখ অন্ধ নয়, বরং বুকের

فَإِنَّهَا لَا تَعْمَى الْأَبْصَارُ وَلَٰكِنْ تَعْمَى الْقُلُوبُ الَّتِي فِي الصُّدُورِ (٤٦)

ভিতর যে হৃদয় আছে তা-ই অন্ধ।

وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ يُخْلِفَ اللَّهُ وَعْدَهُ ۚ وَإِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ (٤٧)

৪৭. তারা তোমাকে তাড়াতাড়ি শাস্তি নিয়ে আসতে বলে (কিন্তু শাস্তি তো আসবে আল্লাহ্‌র ও'য়াদা অনুযায়ী নির্দিষ্ট সময়ে), কেননা আল্লাহ কক্ষনো তাঁর ওয়া'দা খেলাফ করেন না, তোমার প্রতিপালকের একদিন হল তোমাদের গণনায় এক হাজার বছরের সমান।

وَكَأَيِّنْ مِنْ قَرْيَةٍ أَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ ظَالِمَةٌ ثُمَّ أَخَذْتُهَا ۚ وَإِلَيَّ الْمَصِيرُ (٤٨)

৪৮. আমি কত জনপদকে সময়-সুযোগ দিয়েছি যখন তারা ছিল অন্যায় কাজে লিপ্ত। অতঃপর সেগুলোকে পাকড়াও করেছিলাম, (পালিয়ে কেউ তো কোথাও যেতে পারবে না) কেননা (সকলের) প্রত্যাবর্তন আমারই কাছে।

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا أَنَا لَكُمْ نَذِيرٌ مُبِينٌ ۚ (٤٩)

৪৯. বল, 'হে মানুষ! আমি (প্রেরিত হয়েছি) তোমাদের জন্য এক সুস্পষ্ট সতর্ককারীরূপে।'

فَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَرِزْقٌ كَرِيمٌ (٥٠)

৫০. কাজেই যারা ঈমান আনবে আর সৎ কাজ করবে তাদের জন্য কেবল আছে ক্ষমা আর সম্মানজনক জীবিকা।

وَالَّذِينَ سَعَوْا فِي آيَاتِنَا مُعَاجِزِينَ أُولَٰئِكَ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (٥١)

৫১. আর যারা আমার নিদর্শনের বিরুদ্ধে চেষ্টা চালায়, সেগুলোর উদ্দেশ্যকে ব্যর্থ করার জন্য, তারাই হল জাহান্নামের বাসিন্দা।

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ وَلَا نَبِيٍّ إِلَّا إِذَا تَمَنَّىٰ أَلْقَى الشَّيْطَانُ فِي أُمْنِيَّتِهِ فَيَنْسَخُ اللَّهُ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللَّهُ آيَاتِهِ ۗ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ۙ (٥٢)

৫২. আমি তোমার পূর্বে যে সব রসূল কিংবা নবী পাঠিয়েছি তাদের কেউ যখনই কোন আকাঙ্ক্ষা করেছে তখনই শয়ত্বান তার আকাঙ্ক্ষায় (প্রতিবন্ধকতা, সন্দেহ-সংশয়) নিক্ষেপ করেছে, কিন্তু শয়ত্বান যা নিক্ষেপ করে আল্লাহ তা মুছে দেন, অতঃপর আল্লাহ তাঁর নিদর্শনসমূহকে সুপ্রতিষ্ঠিত করেন। কারণ আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্বশ্রেষ্ঠ হিকমতওয়ালা।

لِيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطَانُ فِتْنَةً لِلَّذِينَ فِي قُلُوبِهِمْ مَرَضٌ وَالْقَاسِيَةِ قُلُوبُهُمْ ۗ

৫৩. (তিনি এটা হতে দেন এজন্য) যাতে তিনি শয়ত্বান যা মিশিয়ে দিয়েছে তা দ্বারা পরীক্ষা করতে পারেন তাদেরকে যাদের অন্তরে (মুনাফিকীর)

وَإِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ ۙ (٥٣)

ব্যাধি আছে, যারা শক্ত হৃদয়ের। অন্যায়কারীরা চরম মতভেদে লিপ্ত আছে।

وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ أَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَإِنَّ اللهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٥٤)

৫৪. (আর অপরদিকে) যাতে, যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা জানতে পারে যে, এটা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে (প্রেরিত) সত্য, অতঃপর তারা যেন তাতে বিশ্বাসী হয় আর তাদের অন্তর নম্রতাভরে তার প্রতি খুলে দেয়া হয়, কারণ আল্লাহ ঈমানদারদেরকে অবশ্যই সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْهُ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً أَوْ يَأْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ (٥٥)

৫৫. অবিশ্বাসীরা তাতে (অর্থাৎ ওয়াহীতে) সন্দেহ পোষণ করা থেকে বিরত হবে না যতক্ষণ না কিয়ামাত আসবে হঠাৎ ক'রে অথবা তাদের উপর শাস্তি এসে যাবে এক বন্ধ্যা দিনে (যা কাফিরদেরকে কোন সুফল দিবে না)।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (٥٦)

৫৬. ক্ষমতা-আধিপত্য সেদিন হবে আল্লাহ্‌রই, তিনি তাদের মাঝে বিচার-ফয়সালা করবেন। অতঃপর যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে তারা থাকবে নি'মাতরাজিতে পরিপূর্ণ জান্নাতে।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ع (٥٧)

৫৭. আর যারা কুফুরী করে আর আমার আয়াতসমূহকে মিথ্যে জেনে প্রত্যাখ্যান করে তাদের জন্য আছে অপমানজনক শাস্তি।

وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ قُتِلُوْٓا أَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللهُ رِزْقًا حَسَنًا ؕ وَإِنَّ اللهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (٥٨)

৫৮. আর যারা আল্লাহ্‌র পথে হিজরাত করেছে, অতঃপর নিহত হয়েছে, কিংবা মারা গেছে, আল্লাহ তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই উৎকৃষ্ট রিযক্ দান করবেন, আর আল্লাহ– তিনি তো সর্বোত্তম রিযক্‌দাতা।

لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَإِنَّ اللهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ (٥٩)

৫৯. তিনি তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই দাখিল করবেন এমন জায়গায় যা পেয়ে তারা খুবই সন্তুষ্ট হবে, আর আল্লাহ নিশ্চিতই অবশ্যই সর্বজ্ঞ, পরম সহিষ্ণু।

ذٰلِكَ ج وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللهُ ؕ إِنَّ اللهَ

৬০. এতো হল তাদের অবস্থা, আর যে ব্যক্তি আঘাতপ্রাপ্ত হলে সমপরিমাণ প্রতিশোধ গ্রহণ করে, অতঃপর আবার সে নিপীড়িত হয়, আল্লাহ তাকে অবশ্য অবশ্যই সাহায্য করবেন, আল্লাহ অবশ্যই

لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ (٦٠)

মাফকারী ক্ষমাশীল।

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَأَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ (٦١)

৬১. এটা এজন্য যে, আল্লাহ রাতকে ঢুকিয়ে দেন দিনে, আর দিনকে ঢুকিয়ে দেন রাতে (দুঃখ বেদনার অন্ধকার দূর করে আনন্দের আলো এনে দেন আর আনন্দিত জনকে দুঃখের আঁধারে ডুবিয়ে দেন)। আর আল্লাহ তো সব কিছু শোনেন, সব কিছু দেখেন।

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ وَأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (٦٢)

৬২. এজন্য যে, আল্লাহ– তিনিই সত্য, আর তাঁকে বাদ দিয়ে তারা অন্য যাকে ডাকে তা অলীক, অসত্য, আর আল্লাহ, তিনি তো সর্বোচ্চ, সুমহান।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ز فَتُصْبِحُ الْأَرْضُ مُخْضَرَّةً ط إِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ج (٦٣)

৬৩. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, আল্লাহ আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করেন, যার ফলে পৃথিবী সবুজে আচ্ছাদিত হয়ে যায়, নিশ্চয় আল্লাহ সূক্ষ্মদর্শী, সর্ববিষয়ে ওয়াকিফহাল।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط وَإِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ع (٦٤)

৬৪. আকাশ ও পৃথিবীতে যা কিছু আছে সবই তাঁর, আর আল্লাহ, তিনি যাবতীয় অভাব থেকে মুক্ত, যাবতীয় প্রশংসার অধিকারী।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي الْأَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِأَمْرِهٖ ط وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ أَنْ تَقَعَ عَلَى الْأَرْضِ إِلَّا بِإِذْنِهٖ ط إِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَؤُوْفٌ رَّحِيْمٌ (٦٥)

৬৫. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, পৃথিবীতে যা কিছু আছে সব তিনি তোমাদের কল্যাণ-কাজে লাগিয়ে রেখেছেন। আর নৌযানগুলো সমুদ্রে চলাচল করে তাঁর হুকুমেই? তিনিই আকাশকে স্থির রাখেন যাতে তা পৃথিবীতে পতিত না হয় তাঁর অনুমতি ছাড়া। আল্লাহ মানুষের প্রতি নিশ্চিতই বড়ই করুণাশীল, বড়ই দয়াবান।

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَحْيَاكُمْ ز ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ط إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ (٦٦)

৬৬. তিনিই তোমাদেরকে জীবন দিয়েছেন, অতঃপর তিনিই তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন, অতঃপর আবার তোমাদেরকে জীবন দিবেন। মানুষ সত্যিই বড়ই অকৃতজ্ঞ।

لِكُلِّ أُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِي الْأَمْرِ وَادْعُ إِلٰى رَبِّكَ ط إِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ (٦٧)

৬৭. প্রত্যেক সম্প্রদায়ের জন্য আমি ('ইবাদাতের) নিয়ম-কানুন নির্ধারণ করে দিয়েছি যা তারা অনুসরণ করে। কাজেই তারা যেন এ বিষয়ে তোমার সঙ্গে তর্ক বিতর্ক না করে। তুমি (তাদেরকে) তোমার প্রতিপালকের দিকে ডাক, তুমি অবশ্যই সরল সঠিক পথে আছ।

৬৮. তারা যদি তোমার সঙ্গে বিতর্ক করে তাহলে বল– তোমরা যা কর আল্লাহ তা ভাল করেই জানেন।

وَإِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللهُ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (٦٨)

৬৯. আল্লাহ কিয়ামাতের দিন সে বিষয়ে তোমাদের মধ্যে মীমাংসা করে দিবেন যে বিষয়ে তোমরা মতভেদ করছ।

اَللهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ (٦٩)

৭০. তুমি কি জান না যে, আল্লাহ জানেন যা আছে আকাশে আর পৃথিবীতে, এ সবই লিপিতে (রেকর্ডে) আছে। এটা আল্লাহ্‌র পক্ষে সহজ।

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ط إِنَّ ذٰلِكَ فِيْ كِتٰبٍ ط إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرٌ (٧٠)

৭১. আর তারা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে এমন কিছুকে ডাকে যার সমর্থনে তিনি কোন দলীল পাঠাননি আর যে সম্পর্কে তাদের কোন জ্ঞান নেই। (এসব) যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ (٧١)

৭২. আর তাদের সম্মুখে যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াত তিলাওয়াত করা হয় তখন তুমি কাফিরদের চেহারায় একটা অনীহার ভাব দেখতে পাবে। তাদের কাছে যারা আমার আয়াত তিলাওয়াত করে তাদেরকে তারা আক্রমণ করতে উদ্যত হয়। বল, তাহলে আমি কি তোমাদেরকে এর চেয়েও খারাপ কিছুর সংবাদ দেব? তা হল আগুন। আল্লাহ কাফিরদেরকে এর ওয়া'দা দিয়েছেন। আর তা কতই না নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তনস্থল!

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا الْمُنْكَرَ ط يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ط قُلْ أَفَأُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ط اَلنَّارُ ط وَعَدَهَا اللهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ع (٧٢)

৭৩. হে মানুষ! একটা দৃষ্টান্ত পেশ করা হচ্ছে, সেটা মনোযোগ দিয়ে শোন। আল্লাহ্‌র পরিবর্তে তোমরা যাদেরকে ডাক তারা কক্ষনো একটা মাছিও সৃষ্টি করতে পারে না, এজন্য তারা সবাই একত্রিত হলেও। আর মাছি যদি তাদের কাছ থেকে কিছু ছিনিয়ে নিয়ে যায়, তারা তার থেকে তা উদ্ধারও করতে পারে না, প্রার্থনাকারী আর যার কাছে প্রার্থনা করা হয় উভয়েই দুর্বল।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ط إِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ط وَإِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ مِنْهُ ط ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ (٧٣)

مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ط إِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ (٧٤)

৭৪. তারা আল্লাহ্‌র যথাযোগ্য মর্যাদা দেয় না, আল্লাহ নিশ্চিতই ক্ষমতাশালী, মহা পরাক্রান্ত।

اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا وَّمِنَ النَّاسِ ط إِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ج (٧٥)

৭৫. আল্লাহ ফেরেশতাগণের মধ্য হতে বাণীবাহক মনোনীত করেন আর মানুষদের মধ্য হতেও; আল্লাহ সব কিছু শোনেন, সব কিছু দেখেন।

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ط وَإِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ (٧٦)

৭৬. তিনি জানেন তাদের সামনে যা আছে আর তাদের পেছনে যা আছে, আর সমস্ত ব্যাপার (চূড়ান্ত ফয়সালার জন্য) আল্লাহ্‌র কাছে ফিরে যায়।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ج السجدة (٧٧)

৭৭. হে মু'মিনগণ! তোমরা রুকূ' কর, সেজদা কর আর তোমাদের প্রতিপালকের 'ইবাদাত কর ও সৎকাজ কর যাতে তোমরা সাফল্য লাভ করতে পার। সিজদা

وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ ط هُوَ اجْتَبٰكُمْ وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ ط مِلَّةَ أَبِيْكُمْ إِبْرٰهِيْمَ ط هُوَ سَمّٰكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ ج صلے فَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ ط هُوَ مَوْلٰكُمْ ج فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ع (٧٨)

৭৮. আর আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ কর যেভাবে জিহাদ করা উচিত। তিনি তোমাদেরকে বেছে নিয়েছেন। দ্বীনের ভিতর তিনি তোমাদের উপর কোন কঠোরতা চাপিয়ে দেননি। এটাই তোমাদের পিতা ইব্‌রাহীমের দ্বীন, আল্লাহ তোমাদের নাম রেখেছেন 'মুসলিম' পূর্বেও, আর এ কিতাবেও (ঐ নামই দেয়া হয়েছে) যাতে রসূল তোমাদের জন্য সাক্ষী হয় আর তোমরা সাক্ষী হও মানব জাতির জন্য। কাজেই তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা কর, যাকাত দাও আর আল্লাহ্‌কে আঁকড়ে ধর। তিনিই তোমাদের অভিভাবক। কতই না উত্তম অভিভাবক আর কতই না উত্তম সাহায্যকারী!

২৩. সূরাহ আল-মু'মিনূন

আয়াতঃ ১১৮, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. মু'মিনরা সফলকাম হয়ে গেছে।

قَدْ أَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ لا (١)

২. যারা নিজেদের নামাযে বিনয় নম্রতা অবলম্বন করে।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ لا (٢)

৩. যারা অসার কথাবার্তা এড়িয়ে চলে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ لا (٣)

৪. যারা যাকাত দানে সক্রিয়।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ لا (٤)

৫. যারা নিজেদের যৌনাঙ্গকে সংরক্ষণ করে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ لا (٥)

৬. নিজেদের স্ত্রী ও মালিকানাভুক্ত দাসী ব্যতীত, কারণ এ ক্ষেত্রে তারা নিন্দা থেকে মুক্ত।

إِلَّا عَلٰٓى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ج (٦)

৭. এদের অতিরিক্ত যারা কামনা করে তারাই সীমালঙ্ঘনকারী।

فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْعٰدُوْنَ ج (٧)

৮. আর যারা নিজেদের আমানাত ও ওয়াদা পূর্ণ করে।

وَالَّذِيْنَ هُمْ لِأَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ لا (٨)

৯. আর যারা নিজেদের নামাযের ব্যাপারে যত্নবান।

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ م (٩)

১০. তারাই হল উত্তরাধিকারী।

أُولٰٓئِكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ لا (١٠)

১১. তারা ফিরদাউসের উত্তরাধিকার লাভ করবে, যাতে তারা চিরস্থায়ী হবে।

الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ط هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (١١)

১২. আমি মানুষকে মাটির সারাংশ থেকে সৃষ্টি করেছি।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ طِيْنٍ ج (١٢)

১৩. অতঃপর আমি তাকে শুক্রবিন্দু রূপে এক সংরক্ষিত আধারে স্থাপন করেছি।

ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ص (١٣)

১৪. পরে আমি শুক্রবিন্দুকে পরিণত করি জমাট বাঁধা রক্তে, অতঃপর মাংসপিণ্ডকে পরিণত করি

ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ

مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۚ ثُمَّ أَنْشَأْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ أَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ؕ (١٤)

হাড্ডিতে, অতঃপর হাড্ডিকে আবৃত করি মাংস দিয়ে, অতঃপর তাকে এক নতুন সৃষ্টিতে উন্নীত করি। কাজেই সর্বোত্তম স্রষ্টা আল্লাহ কতই না মহান!

ثُمَّ إِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ؕ (١٥)

১৫. এরপর তোমরা অবশ্যই মরবে।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ (١٦)

১৬. তারপর কিয়ামাতের দিন তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করা হবে।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَآئِقَ ۖ وَمَا كُنَّا عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ (١٧)

১৭. আমি তোমাদের উপরে সপ্ত স্তর সৃষ্টি করেছি, আমি (আমার) সৃষ্টির ব্যাপারে অমনোযোগী নই।

وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ فَأَسْكَنّٰهُ فِي الْأَرْضِ ۖ وَإِنَّا عَلٰى ذَهَابٍۢ بِهٖ لَقٰدِرُوْنَ ۚ (١٨)

১৮. আমি আকাশ থেকে পরিমিত বৃষ্টি বর্ষণ করি, অতঃপর আমি তা যমীনে সংরক্ষণ করি আর আমি পানিকে সরিয়ে দিতে অবশ্যই সক্ষম।

فَأَنْشَأْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّأَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ۙ (١٩)

১৯. অতঃপর আমি তা দিয়ে তোমাদের জন্য খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান সৃষ্টি করি, ওতে তোমাদের জন্য আছে পর্যাপ্ত ফল, যাথেকে তোমরা খাও (আর সুখভোগ কর)।

وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَآءَ تَنْۢبُتُ بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ (٢٠)

২০. আর (আমি সৃষ্টি করি) এক বৃক্ষ যা সিনাই পর্বতে জন্মে, যাথেকে তেল উৎপন্ন হয়, আর ভক্ষণকারীদের জন্য রসনা তৃপ্তিকর।

وَإِنَّ لَكُمْ فِي الْأَنْعَامِ لَعِبْرَةً ؕ نُسْقِيْكُمْ مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ (٢١)

২১. আর গবাদি পশুর ভিতরে তোমাদের জন্য আছে অবশ্যই শিক্ষণীয় দৃষ্টান্ত। তাদের পেটে যা আছে তাথেকে আমি তোমাদেরকে পান করাই (দুধ) আর ওতে তোমাদের জন্য আছে বহুবিধ উপকার। তোমরা তাথেকে খাও (গোশত)।

وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ع (٢٢)

২২. আর ওতে আর নৌযানে তোমরা আরোহণ কর।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ (٢٣)

২৩. আমি নূহকে তাঁর সম্প্রদায়ের কাছে পাঠিয়েছিলাম। সে বলেছিলঃ 'হে আমার জাতি! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন ইলাহ নেই, তোমরা কি (তাঁকে) ভয় করবে না?'

২৪. তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ যারা কুফুরী করেছিল– বলেছিলঃ 'এতো তোমাদের মত মানুষ ছাড়া কিছুই না, সে তোমাদের উপর প্রাধান্য লাভ করতে চায়, আল্লাহ (কাউকে নবীরূপে পাঠানোর) ইচ্ছে করলে তো তিনি ফেরেশতা পাঠাতেন, আমরা আমাদের পূর্ব পুরুষদের সময়ে এ সব কথা তো শুনিনি।'

فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ لا يُرِيْدُ اَنْ يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ط وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً ج صلے مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ج صلے (٢٤)

২৫. এতো এমন লোক যাকে পাগলামিতে পেয়েছে, কাজেই তার ব্যাপারে তোমরা কিছু কাল অপেক্ষা কর।

اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌ ۢبِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ حَتّٰى حِيْنٍ (٢٥)

২৬. নূহ বললঃ 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে সাহায্য কর, কারণ তারা আমাকে মিথ্যেবাদী বলছে।'

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ (٢٦)

২৭. তখন আমি তার কাছে ওয়াহী পাঠালাম– আমার দৃষ্টির সম্মুখে আমার নির্দেশ অনুযায়ী নৌযান তৈরি কর, অতঃপর যখন আমার নির্দেশ আসবে আর উনুন (পানিতে) উথলে উঠবে, তখন নৌকায় তুলে নাও প্রত্যেক জীবের এক এক জোড়া আর তোমার পরিবারবর্গকে, তাদের মধ্যে যাদের বিপক্ষে পূর্বে সিদ্ধান্ত হয়ে গেছে তাদেরকে বাদ দিয়ে। আর অন্যায়কারীদের পক্ষে আমার নিকট আবেদন করো না, তারা (বানে) ডুববেই।

فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ لا فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ مِنْهُمْ ج وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ج اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ (٢٧)

২৮. যখন তুমি নৌযানে উঠে যাবে, তুমি আর তোমার সঙ্গীরা- তখন বলবেঃ 'সকল প্রশংসা আল্লাহরই যিনি আমাদেরকে যালিম সম্প্রদায় থেকে উদ্ধার করেছেন।'

فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰنَا مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٢٨)

২৯. আর বলোঃ হে আমার প্রতিপালক! আমাকে কল্যাণকরভাবে নামিয়ে দাও, নামানোতে তুমিই সর্বোত্তম।

وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ (٢٩)

৩০. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে (মানুষের বুঝার জন্য), আমি (মানুষকে) পরীক্ষা করি।

اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ (٣٠)

৩১. অতঃপর তাদের পর আরেক মানব বংশ ('আদ সম্প্রদায়কে) সৃষ্টি করেছিলাম।

ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ج (٣١)

فَأَرْسَلْنَا فِيهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرُهٗ ط أَفَلَا تَتَّقُوْنَ ع (٣٢)

৩২. আর তাদের মাঝে তাদেরই একজনকে রসূল করে পাঠিয়েছিলাম এই ব'লে যে, তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তিনি ছাড়া তোমাদের কোন ইলাহ নেই, তবুও কি তোমরা (তাঁকে) ভয় করবে না?

وَقَالَ الْمَلَأُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَأَتْرَفْنٰهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا لا مَا هٰذَآ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ لا يَأْكُلُ مِمَّا تَأْكُلُوْنَ مِنْهُ وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ لا (٣٣)

৩৩. কিন্তু তার সম্প্রদায়ের প্রধানগণ– যারা কুফুরী করেছিল, আর আখিরাতের সাক্ষাৎকে মিথ্যা বলে প্রত্যাখ্যান করেছিল, যাদেরকে আমি পার্থিব জীবনে সুখ স্বাচ্ছন্দ্য দিয়েছিলাম– বলেছিলঃ 'সে তো তোমাদের মত মানুষ ছাড়া কিছু নয়। তোমরা যা খাও, সেও তাই খায়, তোমরা যা পান কর, সেও তাই পান করে।

وَلَئِنْ أَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ لا إِنَّكُمْ إِذًا لَّخٰسِرُوْنَ لا (٣٤)

৩৪. তোমরা যদি তোমাদের মতই একজন মানুষের আনুগত্য কর, তাহলে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হবে।

أَيَعِدُكُمْ أَنَّكُمْ إِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا وَّعِظَامًا أَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ لا (٣٥)

৩৫. সে কি তোমাদের সঙ্গে এই ওয়া'দা করে যে, যখন তোমরা মরে যাবে আর মাটি ও হাড্ডিতে পরিণত হবে তখন তোমাদেরকে আবার জীবিত করা হবে।

هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ص لا (٣٦)

৩৬. দূরে ওটা, বহু দূরে যার ওয়া'দা তোমাদেরকে দেয়া হচ্ছে।

إِنْ هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ص لا (٣٧)

৩৭. আমাদের এ দুনিয়ার জীবন ছাড়া কিছুই নেই, এখানেই আমরা মরি বাঁচি, আমাদেরকে কক্ষনো আবার উঠানো হবে না।

إِنْ هُوَ إِلَّا رَجُلُ ٱِفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ (٣٨)

৩৮. সে তো এমন এক ব্যক্তি যে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে বানিয়ে নিয়েছে। আমরা তাকে বিশ্বাস করি না।'

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ (٣٩)

৩৯. (নবী) বলল : 'হে আমার প্রতিপালক! তারা আমাকে মিথ্যেবাদী ব'লে দোষারোপ করছে– এ ব্যাপারে তুমি আমাকে সাহায্য কর।'

قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ج (٤٠)

৪০. আল্লাহ বললেন, 'অল্প সময়ের মধ্যেই তারা অনুতপ্ত হবে।'

فَأَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ

৪১. অতঃপর সত্যি সত্যিই এক ভয়ঙ্কর শব্দ তাদেরকে আঘাত করল আর তাদেরকে ভাগাড়ে

غُثَآءً ج فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٤١)

পরিণত করলাম, কাজেই ধ্বংস হোক পাপী সম্প্রদায়।

ثُمَّ أَنْشَأْنَا مِنْ ۢبَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ط (٤٢)

৪২. অতঃপর তাদের পরে আমি বহু জাতি সৃষ্টি করেছিলাম।

مَا تَسْبِقُ مِنْ أُمَّةٍ أَجَلَهَا وَمَا يَسْتَأْخِرُوْنَ ط (٤٣)

৪৩. কোন জাতিই তাদের নির্দিষ্ট কালকে অগ্র পশ্চাৎ করতে পারে না।

ثُمَّ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ط كُلَّمَا جَآءَ أُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَأَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ أَحَادِيْثَ ج فَبُعْدًا لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ (٤٤)

৪৪. এরপর একাদিক্রমে আমি আমার রসূলদেরকে পাঠিয়েছি। যখনই কোন জাতির কাছে তাদের রসূল এসেছে, তারা তাকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করেছে, অতঃপর শাস্তি প্রাপ্তির ব্যাপারে তারা একে অন্যের অনুসরণ করেছে, অতঃপর তাদেরকে কাহিনী বানিয়ে দিলাম। কাজেই যে জাতি ঈমান আনে না তারা ধ্বংস হোক!

ثُمَّ أَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَأَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ۬ بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۙ (٤٥)

৪৫. অতঃপর আমি মূসা ও তার ভাই হারূনকে পাঠিয়েছিলাম নিদর্শন আর সুস্পষ্ট প্রমাণ সহকারে।

إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا عَالِيْنَ ج (٤٦)

৪৬. ফেরাউন ও তার প্রধানগণের কাছে। কিন্তু তারা অহংকার করল, তারা ছিল এক উদ্ধত জাতি।

فَقَالُوْآ أَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا لَنَا عٰبِدُوْنَ ج (٤٧)

৪৭. তারা বলল, 'আমরা কি আমাদেরই মত দু'জন লোকের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করব, অথচ তাদের সম্প্রদায় আমাদের দাস?'

فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ (٤٨)

৪৮. তারা তাদের দু'জনকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করল, ফলে তারা ধ্বংসপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ (٤٩)

৪৯. আমি মূসাকে কিতাব দিয়েছিলাম যাতে তারা সঠিক পথ পেতে পারে।

وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَأُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ إِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ ع (٥٠)

৫০. আমি মার্ইয়াম-পুত্র আর তার মাকে নিদর্শন করেছিলাম আর তাদেরকে স্বস্তি নিরাপত্তা ও ঝর্ণা বিশিষ্ট উচ্চ স্থানে আশ্রয় দিয়েছিলাম।

يٰٓأَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ط إِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ط (٥١)

৫১. হে রসূলগণ! পবিত্র বস্তু আহার কর, আর সৎ কাজ কর, তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আমি পূর্ণরূপে অবগত।

وَإِنَّ هٰذِهٖٓ أُمَّتُكُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّأَنَا

৫২. তোমাদের এসব উম্মাত তো একই উম্মাত, আর আমিই তোমাদের প্রতিপালক, কাজেই

رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ (٥٢)

আমাকেই ভয় কর।

فَتَقَطَّعُوْٓا أَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ط كُلُّ حِزْبٍۭ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ (٥٣)

৫৩. কিন্তু মানুষ তাদের কর্তব্য কর্মকে বহুধা বিভক্ত করে ফেলেছে, আর প্রত্যেক দলই তাদের কাছে যা আছে তাই নিয়ে আনন্দিত।

فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ (٥٤)

৫৪. কাজেই তাদেরকে কিছুকাল তাদের অজ্ঞানতাপ্রসূত বিভ্রান্তিতে থাকতে দাও।

أَيَحْسَبُوْنَ أَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ وَّبَنِيْنَ لا (٥٥)

৫৫. তারা কি ভেবে নিয়েছে, আমি যে তাদেরকে ধনৈশ্বর্য ও সন্তানাদির প্রাচুর্য দিয়ে সাহায্য করেছি

نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرَاتِ ط بَلْ لَّا يَشْعُرُوْنَ (٥٦)

৫৬. এর দ্বারা কি তাদের কল্যাণ ত্বরান্বিত করছি? না, তারা বুঝে না।

إِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ لا (٥٧)

৫৭. নিশ্চয় যারা তাদের প্রতিপালকের ভয়ে ভীত-সন্ত্রস্ত হয়ে থাকে,

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ لا (٥٨)

৫৮. যারা তাদের প্রতিপালকের নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাস স্থাপন করে,

وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ لا (٥٩)

৫৯. যারা তাদের প্রতিপালকের সঙ্গে শরীক করে না,

وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ وَجِلَةٌ أَنَّهُمْ إِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ لا (٦٠)

৬০. যারা তাদের দানের বস্তু দান করে আর তাদের অন্তর ভীত শংকিত থাকে এ জন্যে যে, তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের কাছে ফিরে যেতে হবে।

أُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ لَهَا سٰبِقُوْنَ (٦١)

৬১. এরাই কল্যাণকাজে দ্রুতগতি, আর তাতে তারা অগ্রগামী।

وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (٦٢)

৬২. আমি কাউকে তার সাধ্যাতীত কষ্ট দেই না, আর আমার কাছে এমন এক কিতাব আছে যা সত্য বলে, আর তাদের প্রতি মোটেই যুল্ম করা হবে না।

بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ أَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ (٦٣)

৬৩. বরং তাদের অন্তর এ বিষয়ে অজ্ঞানতায় আচ্ছন্ন হয়ে আছে, এছাড়া তাদের আরো (মন্দ) কাজ আছে যা তারা করতে থাকবে।

حَتّٰٓى إِذَآ أَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ إِذَا

৬৪. অবশেষে আমি যখন তাদের (অর্থাৎ কাফিরদের) মধ্যে বিত্ত সম্পদশালীদেরকে শাস্তি

Contents

هُمْ يَجْأَرُوْنَ (٦٤)

দ্বারা পাকড়াও করব, তখন তারা চিৎকার জুড়ে দেবে।

لَا تَجْأَرُوا الْيَوْمَ قف إِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ (٦٥)

৬৫. (বলা হবে) 'আজ চিৎকার করো না, আমার কাছ থেকে তোমরা সাহায্য পাবে না।'

قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى أَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ لا (٦٦)

৬৬. আমার আয়াত তোমাদের কাছে পড়ে শোনানো হত, কিন্তু তোমরা গোড়ালির ভরে পিছনে ঘুরে দাঁড়াতে।

مُسْتَكْبِرِيْنَ قصلے ج بِهٖ سَامِرًا تَهْجُرُوْنَ (٦٧)

৬৭. অহংকারবশতঃ (কুরআন) সম্পর্কে অর্থহীন কথা বলতে যেমন কেউ রাতে গল্প বলে।

أَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ أَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَأْتِ اٰبَآءَهُمُ الْأَوَّلِيْنَ ز (٦٨)

৬৮. তাহলে তারা কি (আল্লাহ্‌র) এ বাণী সম্পর্কে চিন্তা-ভাবনা করে না? কিংবা তাদের কাছে এমন কিছু (নতুন বস্তু) এসেছে যা তাদের পূর্বপুরুষদের কাছে আসেনি?

أَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ ز (٦٩)

৬৯. কিংবা তারা কি তাদের রসূলকে চিনতে পারে না এজন্য তারা তাকে অস্বীকার করছে

أَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ط بَلْ جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ وَأَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ (٧٠)

৭০. অথবা তারা কি বলে যে, সে উন্মাদ? না, প্রকৃতপক্ষে সে তাদের কাছে সত্য নিয়ে এসেছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই সত্যকে অপছন্দ করে।

وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ أَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ط بَلْ أَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ط (٧١)

৭১. সত্য যদি তাদের ইচ্ছে-আকাঙ্ক্ষার অনুসারী হত তাহলে আকাশ পৃথিবী আর এ দু'য়ের মাঝে যা আছে সব লণ্ডভণ্ড হয়ে যেত। (তাদের কামনা-বাসনার) বিপরীতে আমি তাদেরকে দিয়েছি তাদের জন্য উপদেশবাণী কিন্তু তারা উপদেশবাণী থেকে মুখ ফিরিয়ে রাখে।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ قصلے وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (٧٢)

৭২. অথবা তুমি কি তাদের কাছ থেকে কোন প্রতিদান চাও? তোমার প্রতিপালকের প্রতিদানই সর্বোত্তম, আর তিনিই সর্বশ্রেষ্ঠ রিযক্‌দাতা।

وَإِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٧٣)

৭৩. তুমি তো নিশ্চিতই তাদেরকে সরল সুদৃঢ় পথের দিকে ডাকছ।

৬৪-৬৫। আবূ হুমায়দ (রহ.) বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেনঃ আমি অবশ্যই সে লোকদের চিনতে পারবো, যে হাশরের দিন হাম্বা হাম্বা চিৎকাররত গাভী নিয়ে আল্লাহ্‌র কাছে উপস্থিত হবে। বলা হয়, خُوَارٌ শব্দের স্থলে جُوَارٌ শব্দও ব্যবহৃত হয়েছে। এ হতে {يَجْأَرُوْنَ} মানে গরু যেমন চিৎকার করে, তোমরা তেমন চিৎকার করবে। –বুখারীঃ গরুর যাকাত অধ্যায়

৭৪. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারা সরল পথ থেকে বিচ্যুত হয়ে গেছে।

৭৫. আমি তাদের প্রতি দয়া করলেও আর তাদের দুঃখ দুর্দশা দূর করলেও তারা তাদের অবাধ্যতায় ঘুরপাক খেতে থাকবে।

৭৬. আমি তাদেরকে শাস্তি দ্বারা পাকড়াও করেছিলাম, কিন্তু তারা তাদের প্রতিপালকের নিকট নত হল না, আর তারা কাকুতি মিনতিও করল না।

৭৭. অবশেষে আমি তাদের জন্য কঠিন শাস্তির দরজা খুলে দেব, তখন তারা তাতে হতাশ হয়ে পড়বে।

৭৮. তিনিই তোমাদের জন্য সৃষ্টি করেছেন কান, চোখ ও অন্তর; তোমরা কৃতজ্ঞতা অল্পই করে থাক।

৭৯. তিনিই তোমাদেরকে পৃথিবীতে ছড়িয়ে দিয়েছেন আর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে একত্রিত করা হবে।

৮০. তিনিই জীবন দেন ও মৃত্যু ঘটান আর দিন-রাতের পরিবর্তন তাঁর দ্বারাই হয়, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

৮১. বরং তারা তাই বলেছিল যা বলেছিল আগের লোকেরা।

৮২. তারা বলে– 'আমরা যখন ম'রে মাটি ও হাড়-হাড্ডি হয়ে যাব (তারপরেও কি) আমাদেরকে আসলেই আবার উঠানো হবে?

৮৩. এ বিষয়ে আমাদেরকে ওয়া'দা দেয়া হয়েছে আর অতীতে আমাদের পূর্ব পুরুষদেরকেও। এসব তো পুরনো কালের কিস্‌সা কাহিনী ছাড়া কিছুই না।

৮৪. বলঃ এ পৃথিবী আর তার ভিতরে যা আছে তা কার? (বল) যদি তোমরা জান!

وَإِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ (٧٤)

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (٧٥)

وَلَقَدْ أَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ (٧٦)

حَتّٰٓى إِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ شَدِيْدٍ إِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ع (٧٧)

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَنْشَأَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ط قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ (٧٨)

وَهُوَ الَّذِيْ ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٧٩)

وَهُوَ الَّذِيْ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ (٨٠)

بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْأَوَّلُوْنَ (٨١)

قَالُوْٓا ءَأِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَأِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ (٨٢)

لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ إِنْ هٰذَآ إِلَّآ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ (٨٣)

قُلْ لِّمَنِ الْأَرْضُ وَمَنْ فِيْهَآ إِنْ كُنْتُمْ

تَعْلَمُوْنَ (٨٤)

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (٨٥)

৮৫. তারা বলবে– আল্লাহ্‌র। বলঃ তবুও কি তোমরা শিক্ষা গ্রহণ করবে না?

قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ (٨٦)

৮৬. বলঃ সাত আসমান আর মহান আরশের মালিক কে?

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ أَفَلَا تَتَّقُوْنَ (٨٧)

৮৭. তারা বলবেঃ (এগুলোর মালিকানা) আল্লাহ্‌র। বলঃ তবুও কি তোমরা (আল্লাহ্‌কে) ভয় করবে না?

قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٨٨)

৮৮. বলঃ সব কিছুর একচ্ছত্র কর্তৃত্ব কার হাতে? তিনি (সকলকে) আশ্রয় দেন, তাঁর উপর কোন আশ্রয় দাতা নেই, (বল) তোমরা যদি জান।

سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَأَنّٰى تُسْحَرُوْنَ (٨٩)

৮৯. তারা বলবে (সকল কিছুর কর্তৃত্ব) আল্লাহ্‌র। তাহলে কেমন করে তোমরা যাদুগ্রস্ত হয়ে পড়ছ?

بَلْ أَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (٩٠)

৯০. কিছুই না, আমি তাদের নিকট সত্য পাঠিয়েছি কিন্তু তারা বাস্তবিকই মিথ্যেবাদী।

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ إِلٰهٍ إِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ إِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ (٩١)

৯১. আল্লাহ কোন সন্তান গ্রহণ করেননি, আর তাঁর সাথে অন্য কোন ইলাহ নেই, (থাকলে) প্রত্যেক ইলাহ আপন সৃষ্টি নিয়ে অবশ্যই চলে যেত, আর অবশ্যই একে অপরের উপর চড়াও হত, তারা তাঁর প্রতি যা আরোপ করে তাথেকে তিনি কত মহান ও পবিত্র!

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ع (٩٢)

৯২. তিনি দৃশ্য ও অদৃশ্যের জ্ঞানের অধিকারী, তারা যা তাঁর শরীক বানায়, তাথেকে তিনি বহু উর্ধ্বে।

قُلْ رَّبِّ إِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ (٩٣)

৯৩. বল, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি যদি আমাকে দেখাও (আমার জীবদ্দশায়) যার প্রতিশ্রুতি তাদেরকে দেয়া হয়েছে,

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِي الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٩٤)

৯৪. তাহলে হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে যালিম সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত করো না'।

وَإِنَّا عَلٰى أَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ (٩٥)

৯৫. আমি তাদেরকে (শাস্তি প্রদানের) যে ওয়াদা করেছি তা আমি তোমাকে দেখাতে অবশ্যই সক্ষম।

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ السَّيِّئَةَ ؕ نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ (٩٦)

৯৬. মন্দের মুকাবিলা কর যা উত্তম তাই দিয়ে, তারা যা বলে সে সম্পর্কে আমি সবিশেষ অবগত।

وَقُلْ رَّبِّ أَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ ۙ (٩٧)

৯৭. আর বলঃ 'হে আমার প্রতিপালক! আমি শয়ত্বানের কুমন্ত্রণা হতে তোমার নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করছি।

وَأَعُوْذُ بِكَ رَبِّ أَنْ يَّحْضُرُوْنِ (٩٨)

৯৮. আর আমি তোমার নিকট আশ্রয় প্রার্থনা করছি, হে আমার প্রতিপালক! যাতে তারা আমার কাছে আসতে না পারে।'

حَتّٰۤى إِذَا جَآءَ أَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ ۙ (٩٩)

৯৯. এমনকি যখন তাদের কারো কাছে মৃত্যু এসে হাজির হয় তখন সে বলেঃ 'হে আমার প্রতিপালক! আমাকে আবার (দুনিয়াতে) পাঠিয়ে দাও।

لَعَلِّيْۤ أَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا ؕ إِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا ؕ وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (١٠٠)

১০০. যাতে আমি সৎ কাজ করতে পারি যা আমি করিনি। কক্ষনো না, এটা তো তার একটা কথার কথা মাত্র। তাদের সামনে পর্দা থাকবে পুনরুত্থানের দিন পর্যন্ত।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَلَآ أَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ (١٠١)

১০১. অতঃপর যখন শিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে সেদিন তাদের পরস্পরের মাঝে আত্মীয় বন্ধন থাকবে না। একে অপরের কাছে জিজ্ঞেসও করবে না।

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (١٠٢)

১০২. যাদের (সৎ কাজের) পাল্লা ভারী হবে তারাই হবে সফলকাম।

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَأُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا أَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ج (١٠٣)

১০৩. যাদের পাল্লা হালকা হবে তারাই ওরা যারা নিজেদের ক্ষতিসাধন করেছে, জাহান্নামে তারা চিরস্থায়ী হবে।

تَلْفَحُ وُجُوْهَهُمُ النَّارُ وَهُمْ فِيْهَا كٰلِحُوْنَ (١٠٤)

১০৪. আগুন তাদের মুখমণ্ডল দগ্ধ করবে আর তারা বীভৎস চেহারা নিয়ে তার ভিতরে দাঁত কটমট করতে থাকবে।

أَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ (١٠٥)

১০৫. (তাদেরকে বলা হবে) 'তোমাদের নিকট কি আমার আয়াতগুলো আবৃত্তি করা হত না? তোমরা সেগুলোকে মিথ্যে জেনে প্রত্যাখ্যান করেছিলে।

قَالُوْا رَبَّنَا غَلَبَتْ عَلَيْنَا شِقْوَتُنَا وَكُنَّا قَوْمًا ضَآلِّيْنَ (١٠٦)

১০৬. তারা বলবে– 'হে আমাদের প্রতিপালক! দুর্ভাগ্য আমাদেরকে পরাস্ত করেছিল, আর আমরা ছিলাম এক পথভ্রষ্ট জাতি।

رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا مِنْهَا فَإِنْ عُدْنَا فَإِنَّا ظٰلِمُوْنَ (١٠٧)

১০৭. হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এখেকে বের করে নাও, আমরা যদি আবার কুফুরী করি তাহলে আমরা তো যালিম হিসেবে পরিগণিত হব।

قَالَ اخْسَئُوْا فِيْهَا وَلَا تُكَلِّمُوْنِ (١٠٨)

১০৮. আল্লাহ বলবেন– 'তোমরা ধিকৃত অবস্থায় এখানেই পড়ে থাক, আমার সঙ্গে কোন কথা বল না।'

إِنَّهٗ كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْ عِبَادِيْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ج صلے (١٠٩)

১০৯. আমার বান্দাহ্দের একদল বলত– 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা ঈমান এনেছি, তুমি আমাদেরকে ক্ষমা কর, আমাদের প্রতি দয়া কর, তুমি তো সর্বশ্রেষ্ঠ দয়ালু।'

فَاتَّخَذْتُمُوْهُمْ سِخْرِيًّا حَتّٰٓى أَنْسَوْكُمْ ذِكْرِيْ وَكُنْتُمْ مِّنْهُمْ تَضْحَكُوْنَ (١١٠)

১১০. কিন্তু তাদেরকে নিয়ে তোমরা হাসি তামাশা করতে এমনকি তা তোমাদেরকে আমার কথা ভুলিয়ে দিয়েছিল, তোমরা তাদেরকে নিয়ে হাসি-ঠাট্টাই করতে।

إِنِّيْ جَزَيْتُهُمُ الْيَوْمَ بِمَا صَبَرُوْآ لا أَنَّهُمْ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (١١١)

১১১. আজ আমি তাদেরকে পুরস্কৃত করলাম তাদের ধৈর্য ধারণের কারণে, আজ তারাই তো সফলকাম।

قٰلَ كَمْ لَبِثْتُمْ فِي الْأَرْضِ عَدَدَ سِنِيْنَ (١١٢)

১১২. আল্লাহ বলবেনঃ 'পৃথিবীতে কয় বছর তোমরা অবস্থান করেছিলে?'

قَالُوْا لَبِثْنَا يَوْمًا أَوْ بَعْضَ يَوْمٍ فَسْئَلِ الْعَآدِّيْنَ (١١٣)

১১৩. তারা বলবেঃ 'আমরা একদিন বা এক দিনের কিছু অংশ অবস্থান করেছি। অতএব তুমি গণনাকারীদের জিজ্ঞেস কর।'

قٰلَ إِنْ لَّبِثْتُمْ إِلَّا قَلِيْلًا لَّوْ أَنَّكُمْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (١١٤)

১১৪. তিনি বলবেনঃ 'তোমরা অল্প সময়ই অবস্থান করেছিলে, তোমরা যদি জানতে!

أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنٰكُمْ عَبَثًا وَّأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُوْنَ (١١٥)

১১৫. তোমরা কি ভেবেছিলে যে, আমি তোমাদেরকে তামাশার বস্তু হিসেবে সৃষ্টি করেছি আর তোমাদেরকে আমার কাছে ফিরিয়ে আনা হবে না?

فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ج لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج

১১৬. সুউচ্চ মহান আল্লাহ যিনি প্রকৃত মালিক, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই,

رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ (١١٦)

সম্মানিত আরশের অধিপতি।

وَمَنْ يَّدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ لا لَا بُرْهَانَ لَهٗ بِهٖ لا فَإِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ط إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ (١١٧)

১১৭. যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্য ইলাহ্‌কেও ডাকে, এ ব্যাপারে তার কাছে কোন দলীল প্রমাণ নেই, একমাত্র তার প্রতিপালকের কাছেই তার হিসাব হবে, কাফিরগণ অবশ্যই সফলকাম হবে না।

وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ع (١١٨)

১১৮. কাজেই বলঃ ‘হে আমার প্রতিপালক! ক্ষমা কর ও রহম কর, তুমি রহমকারীদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ।’

سُوْرَةُ النُّوْرِ

২৪. সূরাহ আন্-নূর

আয়াতঃ ৬৪, রুকূ‘ঃ ৯, মাদানী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

سُوْرَةٌ أَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَأَنْزَلْنَا فِيْهَآ اٰيٰتٍ ۢبَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (١)

১. একটি সূরাহ যা আমি নাযিল করেছি আর তা ফরয করে দিয়েছি, আর তার ভেতরে আমি সুস্পষ্ট আয়াত নাযিল করেছি, যাতে তোমরা উপদেশ গ্রহণ কর।

اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ص وَّلَا تَأْخُذْكُمْ بِهِمَا رَأْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ج وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (٢)

২. ব্যভিচারিণী ও ব্যভিচারী তাদের প্রত্যেককে একশত করে বেত্রাঘাত কর। আল্লাহ্‌র আইন কার্যকর করার ব্যাপারে তাদের প্রতি দয়ামায়া তোমাদেরকে যেন প্রভাবিত না করে, যদি তোমরা আল্লাহ ও আখিরাত দিনের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে থাক। একদল মু'মিন যেন তাদের শাস্তি প্রত্যক্ষ করে।

اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ إِلَّا زَانِيَةً أَوْ مُشْرِكَةً ز وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ إِلَّا زَانٍ أَوْ مُشْرِكٌ ج وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ (٣)

৩. ব্যভিচারী বিয়ে করে না ব্যভিচারিণী বা মুশরিকা নারী ছাড়া। আর ব্যভিচারিণী– তাকে বিয়ে করে না ব্যভিচারী বা মুশরিক পুরুষ ছাড়া, মু'মিনদের জন্য এটা নিষিদ্ধ করা হয়েছে।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَأْتُوْا بِأَرْبَعَةِ

৪. যারা সতী সাধ্বী নারীর উপর অপবাদ দেয়, অতঃপর চারজন সাক্ষী উপস্থিত না করে,

شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً أَبَدًا ج وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۙ (٤)

তাদেরকে আশিটি বেত্রাঘাত কর, আর তাদের সাক্ষ্য কক্ষনো গ্রহণ কর না, এরাই না-ফরমান।

إِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَأَصْلَحُوْا ج فَإِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥)

৫. অবশ্য এরপর যদি তারা তাওবাহ্ করে ও সংশোধিত হয়, কেননা আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ أَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ شُهَدَآءُ إِلَّآ أَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ أَحَدِهِمْ أَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۭ بِاللهِ ۙ إِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٦)

৬. আর যারা নিজেদের স্ত্রীদের উপর অপবাদ দেয়, কিন্তু নিজেদের ছাড়া তাদের অন্য কোন সাক্ষী না থাকে, এ রকম প্রত্যেক লোকের সাক্ষ্য এভাবে হবে যে, সে চারবার আল্লাহ্‌র নামে শপথ করে বলবে যে, সে অবশ্যই সত্যবাদী।

وَالْخَامِسَةُ أَنَّ لَعْنَتَ اللهِ عَلَيْهِ إِنْ كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٧)

৭. আর পঞ্চমবারে বলবে যে, সে যদি মিথ্যেবাদী হয় তবে তার উপর আল্লাহ্‌র লা'নত পতিত হবে।

وَيَدْرَأُ عَنْهَا الْعَذَابَ أَنْ تَشْهَدَ أَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللهِ ۙ إِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۙ (٨)

৮. আর স্ত্রীর শাস্তি রহিত হবে যদি সে আল্লাহ্‌র নামে চারবার শপথ ক'রে বলে যে, সে (তার স্বামী) অবশ্যই মিথ্যেবাদী।

৬-৮। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। হিলাল ইব্‌নু 'উমাইয়াহ রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর কাছে শারীক ইব্‌নু সাহমার সঙ্গে তার স্ত্রীর ব্যভিচারের অভিযোগ করল। নাবী (ﷺ) বললেন, সাক্ষী (হাযির কর) নতুবা শাস্তি তোমার পিঠে পড়বে। হিলাল বলল, হে আল্লাহ্‌র রসূল! যখন আমাদের কেউ তার স্ত্রীর উপর অন্য কাউকে দেখে তখন সে কি সাক্ষী তালাশ করতে যাবে? তখন নাবী (ﷺ) বলতে লাগলেন, সাক্ষী, নতুবা শাস্তি তোমার পিঠে। হিলাল বললেন, শপথ সে সত্তার, যিনি আপনাকে সত্য নাবী (ﷺ) হিসাবে পাঠিয়েছেন, নিশ্চয়ই আমি সত্যবাদী। অবশ্যই আল্লাহ্ তা'আলা এমন বিধান অবতীর্ণ করবেন, যা আমার পিঠকে শাস্তি থেকে মুক্ত করে দিবে। তারপর জিবরীল ('আ.) এলেন এবং রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর উপর অবতীর্ণ করা হলঃ "যারা নিজেদের স্ত্রীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে" থেকে নাবী (ﷺ) পাঠ করলেন, "যদি সে সত্যবাদী হয়ে থাকে" পর্যন্ত। তারপর নাবী (ﷺ) ফিরলেন এবং তার স্ত্রীকে ডেকে আনার জন্য লোক পাঠালেন। হিলাল এসে সাক্ষ্য দিলেন। আর রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলছিলেন, আল্লাহ্ তা'আলা তো জানেন যে, তোমাদের দু'জনের মধ্যে অবশ্যই একজন মিথ্যাচারী। তবে কি তোমাদের মধ্যে কেউ তওবা করবে? স্ত্রীলোকটি দাঁড়িয়ে সাক্ষ্য দিল। সে যখন পঞ্চমবারের কাছে পৌছল, তখন লোকেরা তাকে বাধা দিল এবং বলল, নিশ্চয়ই এটি তোমার ওপর অবশ্যম্ভাবী। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) বলেন, এ কথা শুনে সে দ্বিধাগ্রস্ত হল এবং ইতস্তত করতে লাগল। এমনকি আমরা মনে করতে লাগলাম যে, সে নিশ্চয়ই প্রত্যাবর্তন করবে। পরে সে বলে উঠল, আমি চিরকালের জন্য আমার বংশকে কলুষিত করব না। সে তার সাক্ষ্য পূর্ণ করল। নাবী (ﷺ) বললেন, এর প্রতি দৃষ্টি রেখ, যদি সে কাল ডাগর চক্ষু, বড় পাছা ও মোটা নলা বিশিষ্ট সন্তান প্রসব করে তবে ও সন্তান শারীক ইব্‌নু সাহমার। পরে সে ঐরূপ সন্তান জন্ম দিল। তখন নাবী (ﷺ) বললেন, যদি এ বিষয়ে আল্লাহ্‌র কিতাব কার্যকর না হত, তা হলে অবশ্যই আমার ও তার মধ্যে কী ব্যাপার যে ঘটত। -বুখারী ৪৭৪৭ [২৬৭১; তিরমিযী ৩১৭৯, আবূ দাঊদ ২২৫৪-২২৫৬, ইবনু মাজাহ ২০৬৭, আহমাদ ২১৩২, ২২০০]

وَالْخَامِسَةَ أَنَّ غَضَبَ اللهِ عَلَيْهَآ إِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٩)

৯. এবং পঞ্চমবারে বলে যে, তার স্বামী সত্যবাদী হলে তার নিজের উপর আল্লাহ্‌র গযব পতিত হবে।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ وَأَنَّ اللهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ع (١٠)

১০. তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে (তোমরা ধ্বংস হয়ে যেতে), আল্লাহ তাওবাহ গ্রহণকারী, বড়ই হিকমতওয়ালা।

إِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ط لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ط بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ط لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ

১১. যারা এ অপবাদ উত্থাপন করেছে তারা তোমাদেরই একটি দল, এটাকে তোমাদের জন্য ক্ষতিকর মনে কর না, বরং তা তোমাদের জন্য কল্যাণকর। তাদের প্রত্যেকের জন্য আছে প্রতিফল যতটুকু পাপ সে করেছে। আর এ ব্যাপারে যে নেতৃত্ব দিয়েছে তার জন্য আছে মহা শাস্তি।

১১-২২। ইবনু শিহাব (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমাকে 'উরওয়াহ ইবনু যুবায়র, সা'ঈদ ইবনু মুসাইয়্যিব, 'আলক্বামাহ ইবনু ওয়াক্কাস, 'উবাইদুল্লাহ ইবনু 'আবদুল্লাহ ইবনু 'উত্‌বাহ ইবনু মাস'উদ (রহ.) নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (রাঃ)-এর ঘটনা সম্পর্কে বলেন, যখন অপবাদকারীরা তাঁর প্রতি অপবাদ এনেছিল এবং আল্লাহ তা'আলা তাঁকে তাদের অভিযোগ থেকে নির্দোষ হওয়ার বর্ণনা দেন। তাদের প্রত্যেকেই ঘটনার অংশ বিশেষ আমাকে জানান। অবশ্য তাদের পরস্পর পরস্পরের বর্ণনা সমর্থন করে, যদিও তাদের মধ্যে কেউ অন্যের তুলনায় এ ঘটনাটি অধিক সংরক্ষণ করেছে। তবে 'উরওয়াহ 'আয়িশাহ (রাঃ) থেকে আমাকে এরূপ বলেছিলেন যে, নাবী (ﷺ)-এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেছেন যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) যখন কোথাও সফরে বের হতেন, তখন তিনি তাঁর স্ত্রীগণের মধ্যে লটারী দিতেন। এতে যার নাম উঠত, তাঁকে সঙ্গে নিয়ে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বের হতেন। 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেন, অতএব, কোন এক যুদ্ধে যাওয়ার সময় আমাদের মধ্যে লটারী দিলেন, তাতে আমার নাম উঠল। আমি রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর সঙ্গে বের হলাম, পর্দার আয়াত অবতীর্ণ হওয়ার পরে। আমাকে হাওদায় করে উঠানো হতো এবং তাতে করে নামানো হতো। এভাবেই আমরা চললাম। যখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) যুদ্ধ শেষ করে ফিরলেন এবং ফেরার পথে আমরা মাদীনাহ্‌র নিকটবর্তী হলাম। একদা রওয়ানা দেয়ার জন্য রাত থাকতেই ঘোষণা দিলেন। এ ঘোষণা হলে আমি উটে চড়ে সৈন্যদের অবস্থান থেকে কিছু দূরে চলে গেলাম। আমার প্রাকৃতিক প্রয়োজন সেরে যখন সওয়ারীর কাছে এলাম, তখন দেখতে পেলাম যে, জাফারের দানা খচিত আমার হারটি ছিঁড়ে কোথাও পড়ে গেছে। আমি তা খোঁজ করতে লাগলাম। খোঁজ করতে আমার একটু দেরী হয়ে গেল। ইতোমধ্যে এ সকল লোক যারা আমাকে সওয়ার করাতো তারা, আমি আমার হাওদার ভেতরে আছি মনে করে, আমার হাওদা উটের পিঠে রেখে দিল। কেননা এ সময় শরীরের গোশত আমাকে ভারী করেনি। আমরা খুব অল্প খাদ্য খেতাম। আমি ছিলাম অল্পবয়স্কা এক বালিকা। সুতরাং হাওদা উঠাবার সময় তা যে খুব হালকা, তা তারা টের পায়নি এবং তারা উট হাঁকিয়ে রওয়ানা দিল। সেনাদল চলে যাওয়ার পর আমি আমার হার পেয়ে গেলাম এবং যেখানে তারা ছিল সেখানে ফিরে এলাম। তখন সেখানে এমন কেউ ছিল না, যে ডাকবে বা ডাকে সাড়া দিবে। আমি যেখানে ছিলাম সে স্থানেই থেকে গেলাম। এ ধারণায় বসে থাকলাম যে, যখন কিছুদূর গিয়ে আমাকে দেখতে পাবে না, তখন এ স্থানে অবশ্যই খুঁজতে আসবে। সেখানে বসা অবস্থায় আমার চোখে ঘুম এসে গেল, আমি ঘুমিয়ে পড়লাম। আর সৈন্যবাহিনীর পিছনে সাফওয়ান ইবনু মু'আত্তাল সুলামী যাওকয়ানী ছিলেন। তিনি শেষ রাতে রওয়ানা দিয়ে ভোর বেলা আমার এ স্থানে এসে পৌঁছলেন। তিনি একজন মানুষের আকৃতি নিদ্রিত দেখতে পেলেন। তিনি আমার কাছে এসে আমাকে দেখে চিনতে পারলেন। কেননা, পর্দার হুকুম অবতীর্ণ হবার আগে আমাকে দেখেছিলেন। কাজেই আমাকে চেনার পর উচ্চকণ্ঠে "ইন্না লিল্লাহি ওয়া ইন্না

ইলাইহি রাজিউন" পড়লেন। পড়ার শব্দে আমি উঠে গেলাম এবং আমি আমার চাদর পেচিয়ে চেহারা ঢেকে নিলাম। আল্লাহ্র কসম, তিনি আমার সঙ্গে কোন কথাই বলেননি এবং তাঁর মুখ হতে "ইন্না লিল্লাহি ওয়া ইন্না ইলাইহি রাজিউন" ব্যতীত আর কোন কথা আমি শুনিনি। এরপর তিনি তাঁর উষ্ট্রী বসালেন এবং সামনের দু' পা নিজ পায়ে দাবিয়ে রাখলেন। আর আমি তাতে উঠে গেলাম। তখন সাফওয়ান উষ্ট্রীর লাগাম ধরে চললেন। শেষ পর্যন্ত আমরা সৈন্যবাহিনীর নিকট এ সময় গিয়ে পৌঁছলাম, যখন তারা দুপুরের প্রচণ্ড উত্তাপের সময় অবতরণ করে। (এ ঘটনাকে কেন্দ্র করে) যারা ধ্বংস হওয়ার তারা ধ্বংস হল।
আর যে ব্যক্তি এ অপবাদের নেতৃত্ব দেয়, সে ছিল (মুনাফিক সরদার) 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু উবাই ইব্নু সুলূল। তারপর আমি মাদীনায় এসে পৌঁছলাম এবং পৌঁছার পর আমি দীর্ঘ একমাস পর্যন্ত অসুস্থ ছিলাম। আর অপবাদকারীদের কথা নিয়ে লোকেরা রটনা করছিল। আমি এসব কিছুই বুঝতে পারিনি। তবে এতে আমাকে সন্দেহে ফেলেছিল যে, আমার অসুস্থ অবস্থায় স্বাভাবিকভাবে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) যে রকম স্নেহ-ভালবাসা দেখাতেন, এবারে তেমনি ভালবাসা দেখাচ্ছেন না। শুধু এতটুকুই ছিল যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমার কাছে আসতেন এবং সালাম দিয়ে জিজ্ঞেস করতেন, তোমার অবস্থা কী? তারপর তিনি ফিরে যেতেন। এ আচরণই আমাকে সন্দেহে ফেলেছিল; অথচ আমি এই অপপ্রচার সম্বন্ধে জানতেই পারিনি। অবশেষে একটু সুস্থ হওয়ার পর মিসতাহের মায়ের সঙ্গে মানাসের (শহরের বাইরে খোলা ময়দানের) দিকে বের হলাম। সে জায়গাটিই ছিল আমাদের প্রাকৃতিক প্রয়োজন সারার স্থান আর আমরা কেবল রাতের পর রাতেই বাইরে যেতাম। এ ছিল এ সময়ের কথা যখন আমাদের ঘরের পাশে পায়খানা নির্মিত হয়নি। আমাদের অবস্থা ছিল, অনেকটা প্রাচীন আরবদের ন্যায় নিচু ময়দানের দিকে বের হয়ে প্রাকৃতিক প্রয়োজন সারা। কেননা, ঘর-সংলগ্ন পায়খানা নির্মাণ আমরা কষ্টকর মনে করতাম। কাজেই আমি ও মিসতাহের মা বাইরে গেলাম। তিনি ছিলেন আবূ রুহ্ম ইব্নু আব্দ মানাফের কন্যা এবং মিসতাহের মায়ের মা ছিলেন সাখর ইব্নু আমিরের কন্যা, যিনি আবূ বাক্র সিদ্দীক (رضي الله عنه)-এর খালা ছিলেন। আর তার পুত্র ছিলেন 'মিসতাহ্ ইব্নু উসাসাহ'। আমি ও উম্মু মিসতাহ্ আমাদের প্রয়োজন সেরে ঘরের দিকে ফিরলাম। তখন মিসতাহের মা তার চাদরে হোঁচট খেয়ে বললেন, 'মিসতাহ্' ধ্বংস হোক। আমি তাকে বললাম, তুমি খুব খারাপ কথা বলছ, তুমি কি এমন এক ব্যক্তিকে মন্দ বলছ, যে বাদ্রের যুদ্ধে হাজির ছিল? তিনি বললেন, হায়রে বেখেয়াল! তুমি কি শোননি সে কী বলেছে? আমি বললাম, সে কী বলেছে? তিনি বললেন, এমন এমন। এ বলে তিনি অপবাদকারীদের মিথ্যা অপবাদ সম্পর্কে আমাকে বিস্তারিত খবর দিলেন। এতে আমার অসুখের মাত্রা বৃদ্ধি পেল। যখন আমি ঘরে ফিরে আসলাম এবং রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমার ঘরে প্রবেশ করে বললেন, তুমি কেমন আছ? তখন আমি বললাম, আপনি কি আমাকে আমার আব্বা-আম্মার নিকট যেতে অনুমতি দিবেন? 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) বললেন, তখন আমার উদ্দেশ্য ছিল যে, আমি তাঁদের কাছে গিয়ে তাঁদের থেকে আমার এ ঘটনা সম্পর্কে নিশ্চিতভাবে জেনে নেই। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমাকে অনুমতি দিলেন। আমি আব্বা-আম্মার কাছে চলে গেলাম এবং আমার আম্মাকে বললাম, ও গো আম্মা! লোকেরা কী বলাবলি করছে? তিনি বললেন, বৎস! তুমি তোমার মন হালকা রাখ। আল্লাহ্র কসম! এমন কমই দেখা যায় যে, কোন পুরুষের কাছে এমন সুন্দরী রূপবতী স্ত্রী আছে, যাকে সে ভালবাসে এবং তার সতীনও আছে; অথচ তার ত্রুটি বের করা হয় না। রাবী বলেন, আমি বললাম, 'সুবহান আল্লাহ্'! সত্যি কি লোকেরা এ ব্যাপারে বলাবলি করছে? তিনি বলেন, আমি সে রাত কেঁদে কাটালাম, এমন কি ভোর হয়ে গেল, তথাপি আমার কান্না থামল না এবং আমি ঘুমাতেও পারলাম না। আমি কাঁদতে কাঁদতেই ভোর করলাম। যখন ওয়াহী আসতে দেরী হল, তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) 'আলী ইব্নু আবূ ত্বলিব (رضي الله عنه) ও উসামাহ ইব্নু যায়দ (رضي الله عنه)-কে তাঁর স্ত্রীর বিচ্ছেদের ব্যাপারে তাঁদের পরামর্শের জন্য ডাকলেন। তিনি বলেন, উসামাহ ইব্নু যায়দ তাঁর সহধর্মিণী ('আয়িশাহ (رضي الله عنها)-এর পবিত্রতা এবং তাঁর অন্তরে তাঁদের প্রতি তাঁর ভালবাসা সম্পর্কে যা জানেন তার আলোকে তাঁকে পরামর্শ দিতে গিয়ে বললেন, হে আল্লাহ্র রসূল! আপনার পরিবার সম্পর্কে আমরা ভাল ধারণাই পোষণ করি। আর 'আলী ইব্নু আবূ ত্বলিব (رضي الله عنه) বললেন, হে আল্লাহ্র রসূল! আল্লাহ্ আপনার উপর কোন পথ সংকীর্ণ করে দেননি এবং তিনি ব্যতীত বহু মহিলা রয়েছেন। আর আপনি যদি দাসীকে জিজ্ঞেস করেন, সে আপনার কাছে সত্য ঘটনা বলবে।

তিনি ['আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা)] বলেন, তারপর রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বারীরাহ্কে ডাকলেন এবং বললেন, হে বারীরাহ! তুমি কি তার নিকট হতে সন্দেহজনক কিছু দেখেছ? বারীরাহ বললেন, যিনি আপনাকে সত্যসহ প্রেরণ করেছেন, তাঁর কসম! আমি এমন কোন কিছু তাঁর মধ্যে দেখতে পাইনি, যা আমি গোপন করতে পারি। তবে তাঁর মধ্যে সবচাইতে অধিক যা দেখেছি, তা হল, তিনি একজন অল্পবয়স্কা বালিকা। তিনি কখনও তাঁর পরিবারের আটার খামির রেখে ঘুমিয়ে পড়তেন। আর ছাগলের বাচ্চা এসে তা খেয়ে ফেলত। এরপরে রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) (মিম্বরে) দাঁড়ালেন। 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু উবাই ইব্নু সলুলের বিরুদ্ধে তিনি সমর্থন চাইলেন। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মিম্বরের উপর থেকে বললেন, হে মুসলিম সম্প্রদায়! তোমাদের মধ্যে এমন কে আছে যে, ঐ ব্যক্তির মিথ্যা অপবাদ থেকে আমাকে সাহায্য করতে পারে, যে আমার স্ত্রীর ব্যাপারে আমাকে কষ্ট দিয়েছে। আল্লাহ্র কসম! আমি আমার স্ত্রী সম্পর্কে ভালই জানতে পেরেছি এবং তারা এমন এক পুরুষ সম্পর্কে অভিযোগ এনেছে, যার সম্পর্কে আমি ভাল ব্যতীত কিছুই জানি না। সে কখনও আমাকে ব্যতীত আমার ঘরে আসেনি। এ কথা শুনে সা'দ ইব্নু মু'আয আনসারী (রাযিয়াল্লাহু আনহু) দাঁড়িয়ে বললেন, হে আল্লাহ্র রসূল! তার বিরুদ্ধে আমি আপনাকে সাহায্য করব, যদি সে আউস গোত্রের হয়, তবে আমি তার গর্দান মেরে দিব। আর যদি আমাদের ভাই খাযরাজ গোত্রের লোক হয়, তবে আপনি নির্দেশ দিলে আমি আপনার নির্দেশ কার্যকর করব। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, এরপর সা'দ ইব্নু উবাদা দাঁড়ালেন; তিনি খাযরাজ গোত্রের সর্দার। তিনি পূর্বে একজন নেক্কার লোক ছিলেন। কিন্তু এ সময় স্ব-গোত্রের পক্ষপাতিত্ব তাকে উত্তেজিত করে তোলে। কাজেই তিনি সা'দকে বললেন, চিরঞ্জীব আল্লাহ্র কসম! তুমি মিথ্যা বলেছ, তুমি তাকে হত্যা করতে পারবে না এবং তাকে হত্যা করার ক্ষমতা তুমি রাখ না। তারপর উসায়দ ইব্নু হুদায়র দাঁড়ালেন, যিনি সা'দের চাচাতো ভাই। তিনি সা'দ ইব্নু উবাদাকে বললেন, চিরঞ্জীব আল্লাহ্র কসম! তুমি মিথ্যা বলছ। আমরা অবশ্যই তাকে হত্যা করব। তুমি নিজেও মুনাফিক এবং মুনাফিকের পক্ষে প্রতিবাদ করছ। এতে আউস এবং খাযরাজ উভয় গোত্রের লোকেরা উত্তেজিত হয়ে উঠল, এমনকি তারা পরস্পর যুদ্ধে লিপ্ত হওয়ার উপক্রম হল। তখন রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) মিম্বরে দাঁড়ানো ছিলেন। রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাদের থামাতে লাগলেন। অবশেষে তারা থামল। নাবী (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) ও নীরব হলেন। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, আমি সেদিন এমনভাবে কাটালাম যে, আমার চোখের অশ্রুও থামেনি এবং চোখে ঘুমও আসেনি। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, সকালবেলা আমার আব্বা-আম্মা আমার কাছে আসলেন, আর আমি দু'রাত এবং একদিন (একাধারে) কাঁদছিলাম। এর মধ্যে না আমার ঘুম হয় এবং না আমার চোখের পানি বন্ধ হয়। তাঁরা ধারণা করছিলেন যে, এ ক্রন্দনে আমার কলজে ফেটে যাবে।

'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, এর পূর্বে তারা যখন আমার কাছে বসা ছিলেন এবং আমি কাঁদছিলাম, ইত্যবসরে জনৈকা আনসারী মহিলা আমার কাছে আসার জন্য অনুমতি চাইলেন। আমি তাকে অনুমতি দিলাম। সে বসে আমার সঙ্গে কাঁদতে লাগল। আমাদের এ অবস্থার মধ্যেই রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমাদের কাছে প্রবেশ করলেন এবং সালাম দিয়ে বসলেন। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন এর পূর্বে যখন থেকে এ কথা রটনা চলেছে, তিনি আমার কাছে বসেননি। এ অবস্থায় তিনি একমাস অপেক্ষা করেছেন, আমার সম্পর্কে ওয়াহী আসেনি। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, এরপর রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাশাহ্হুদ পাঠ করলেন। তারপর বললেন, হে 'আয়িশাহ! তোমার সম্পর্কে এরূপ এরূপ কথা আমার কাছে পৌঁছেছে, তুমি যদি নির্দোষ হয়ে থাক, তবে অচিরেই আল্লাহ্ তা'আলা তোমার পবিত্রতা ব্যক্ত করে দিবেন। আর যদি তুমি কোন পাপে লিপ্ত হয়ে থাক, তবে আল্লাহ্র কাছে ক্ষমা চাও এবং তাঁর কাছে তাওবাহ কর। কেননা, বান্দা যখন তার পাপ স্বীকার করে নেয় এবং আল্লাহ্র কাছে তাওবাহ করে, তখন আল্লাহ্ তার তাওবাহ কবূল করেন। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, যখন রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁর কথা শেষ করলেন, তখন আমার চোখের পানি এমনভাবে শুকিয়ে গেল যে, এক ফোঁটা পানিও অনুভব করছিলাম না। আমি আমার পিতাকে বললাম, আপনি রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) -কে (তিনি যা কিছু বলেছেন তার) জবাব দিন। তিনি বললেন, আল্লাহ্র কসম! আমি রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) -কে কী জবাব দিব, তা আমার বুঝে আসছে না। তারপর আমার আম্মাকে বললাম, আপনি রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) -কে জবাব দিন।

তিনি ['আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা)-এর আম্মা) বললেনঃ আমি বুঝতে পারছি না, রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম)-কে কি জবাব দিব। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, তখন আমি নিজেই জবাব দিলাম, অথচ আমি একজন অল্প বয়স্কা বালিকা, কুরআন খুব অধিক পড়িনি। আল্লাহ্র কসম! আমি জানি, আপনারা এ ঘটনা শুনেছেন, এমনকি তা আপনাদের অন্তরে বসে গেছে এবং সত্য বলে

الْإِثْمِ ۚ وَالَّذِي تَوَلَّىٰ كِبْرَهُ مِنْهُمْ لَهُ عَذَابٌ عَظِيمٌ (١١)

لَوْلَا إِذْ سَمِعْتُمُوهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُونَ

১২. তোমরা যখন এটা শুনতে পেলে তখন কেন মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন স্ত্রীরা তাদের নিজেদের

বিশ্বাস করে নিয়েছেন। এখন যদি আমি বলি যে, আমি নির্দোষ এবং আল্লাহ্ ভালভাবেই জানেন যে, আমি নির্দোষ; তবে আপনারা তা বিশ্বাস করবেন না। আর আমি যদি আপনাদের কাছে এ বিষয় স্বীকার করে নেই, অথচ আল্লাহ্ জানেন, আমি তা থেকে নির্দোষ; তবে আপনারা আমার এই উক্তি বিশ্বাস করে নিবেন। আল্লাহ্র কসম! এ ক্ষেত্রে আমি আপনাদের জন্য ইউসুফ ('আ.)-এর পিতার উক্তি ব্যতীত আর কোন দৃষ্টান্ত পাচ্ছি না। তিনি বলেছিলেন, فَصَبْرٌ جَمِيلٌ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلَىٰ مَا تَصِفُونَ "পূর্ণ ধৈর্যই শ্রেয়, তোমরা যা বলছ সে বিষয়ে একমাত্র আল্লাহ্র কাছেই সাহায্য চাওয়া যায়। তিনি বলেন, এরপর আমি আমার চেহারা ঘুরিয়ে নিলাম এবং কাত হয়ে আমার বিছানায় শুয়ে পড়লাম। তিনি বলেন, এ সময় আমার বিশ্বাস ছিল যে আমি নির্দোষ এবং আল্লাহ্ তা'আলা আমার নির্দোষিতা প্রকাশ করে দিবেন। কিন্তু আল্লাহ্র কসম! আমি তখন এ ধারণা করতে পারিনি যে, আল্লাহ্ আমার সম্পর্কে এমন ওয়াহী অবতীর্ণ করবেন যা তিলাওয়াত করা হবে। আমার দৃষ্টিতে আমার মর্যাদা এর চাইতে অনেক নিচে ছিল। বরং আমি আশা করেছিলাম যে, হয়ত রসূলুল্লাহ্ ﷺ নিদ্রায় কোন স্বপ্ন দেখবেন, যাতে আল্লাহ্ তা'আলা আমার নির্দোষিতা জানিয়ে দেবেন। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু 'আনহা) বলেন, আল্লাহ্র কসম! রসূলুল্লাহ্ ﷺ দাঁড়াননি এবং ঘরের কেউ বের হননি। এমন সময় রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-এর প্রতি ওয়াহী অবতীর্ণ হতে লাগল এবং তাঁর শরীর ঘামতে লাগল। এমনকি যদিও শীতের দিন ছিল, তবুও তাঁর উপর যে ওয়াহী অবতীর্ণ হচ্ছিল এর বোঝার ফলে মুক্তার মত তাঁর ঘাম ঝরছিল। যখন ওয়াহী শেষ হল, তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) হাসছিলেন। তখন তিনি প্রথম যে বাক্যটি বলেছিলেন, তা হলেঃ হে 'আয়িশাহ! আল্লাহ্ তোমার নির্দোষিতা প্রকাশ করেছেন। এ সময় আমার মা আমাকে বললেন, তুমি উঠে তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। আমি বললাম, আল্লাহ্র কসম! আমি তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করব না, আল্লাহ্ ব্যতীত আর কারো প্রশংসা করব না। আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন পূর্ণ দশ আয়াত পর্যন্ত। إِنَّ الَّذِينَ جَاءُوا بِالْإِفْكِ عُصْبَةٌ যারা এ অপবাদ রচনা করেছে, তারা তোমাদেরই একটি দল। যখন আল্লাহ্ তা'আলা আমার নির্দোষিতার আয়াত অবতীর্ণ করলেন, তখন আবূ বক্র সিদ্দীক (রাযিয়াল্লাহু 'আনহু) যিনি মিস্তাহ্ ইব্নু উসাসাকে নিকটবর্তী আত্মীয়তা এবং দারিদ্র্যের কারণে আর্থিক সাহায্য করতেন, তিনি বললেন, আল্লাহ্র কসম! মিস্তাহ্ 'আয়িশাহ সম্পর্কে যা বলেছে, এরপর আমি তাকে কখনই কিছুই দান করব না। তারপর আল্লাহ্ তা'আলা আয়াত অবতীর্ণ করলেন, "তোমাদের মধ্যে যারা ঐশ্বর্য ও প্রাচুর্যের অধিকারী তারা যেন শপথ গ্রহণ না করে যে, তার আত্মীয়-স্বজন ও অভাবগ্রস্তকে এবং আল্লাহ্র রাস্তায় যারা গৃহত্যাগ করেছে তাদের কিছুই দেবে না। তারা যেন তাদের ক্ষমা করে এবং তাদের দোষত্রুটি উপেক্ষা করে। তোমরা কি চাও না যে, আল্লাহ্ তোমাদের ক্ষমা করেন? এবং আল্লাহ্ ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু। আবূ বক্র (রাযিয়াল্লাহু 'আনহু) এ সময় বললেন, আল্লাহ্র কসম! আমি অবশ্যই পছন্দ করি যে আল্লাহ্ আমাকে ক্ষমা করেন। তারপর তিনি মিস্তাহ্কে সাহায্য আগের মত দিতে লাগলেন এবং বললেন, আল্লাহ্র কসম! আমি এ সাহায্য কখনও বন্ধ করব না। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) জয়নব বিন্ত জাহ্শকেও আমার সম্পর্কে জিজ্ঞেস করেছিলেন। তিনি বলেছিলেন, হে জয়নব! ('আয়িশাহ সম্পর্কে) কী জান আর কী দেখেছ? তিনি বললেন, হে আল্লাহ্র রসূল! আমি আমার কান ও চোখকে বাঁচিয়ে রাখতে চাই। আমি তাঁর সম্পর্কে ভাল ব্যতীত অন্য কিছু জানি না। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু 'আনহা) বলেন, রসূলুল্লাহ্ ﷺ-এর সহধর্মিণীদের মধ্যে তিনি আমার প্রতিদ্বন্দ্বিতা করতেন। কিন্তু আল্লাহ্ তা'আলা তাঁকে পরহেযগারীর কারণে রক্ষা করেন। আর তাঁর বোন হাম্না তাঁর পক্ষ অবলম্বন করে দ্বন্দ্ব করে এবং অপবাদ দানকারী যারা ধ্বংস হয়েছিল তাদের মধ্যে সেও ধ্বংস হল। –বুখারী ৪৭৫০ [২৫৯৩; মুসলিম ২৪৪৫, ২৭৭০; আবূ দাউদ ২১৩৮, ইবনু মাজাহ ১৯৭০, ২৩৪৭; আহমাদ ২৪৩১৩, ২৪৩৩৮; দারিমী ২২০৮, ২৪২৩]

وَالْمُؤْمِنٰتُ بِأَنْفُسِهِمْ خَيْرًا لا وَّقَالُوْا هٰذَآ إِفْكٌ مُّبِيْنٌ (١٢)

লোক সম্পর্কে ভাল ধারণা করল না আর বলল না, 'এটা তো খোলাখুলি অপবাদ।'

لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِأَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ج فَإِذْ لَمْ يَأْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَأُولٰٓئِكَ عِنْدَ اللهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ (١٣)

১৩. তারা চারজন সাক্ষী হাযির করল না কেন? যেহেতু তারা সাক্ষী হাযির করেনি সেহেতু আল্লাহ্‌র নিকট তারাই মিথ্যেবাদী।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهُ فِي الدُّنْيَا وَالْأٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ أَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ج (١٤)

১৪. দুনিয়া ও আখিরাতে তোমাদের উপর যদি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও দয়া না থাকত, তবে তোমরা যাতে তড়িঘড়ি লিপ্ত হয়ে পড়েছিলে তার জন্য মহা শাস্তি তোমাদেরকে পাকড়াও করত।

إِذْ تَلَقَّوْنَهُ بِأَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِأَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهِ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهُ هَيِّنًا ق صلے وَّهُوَ عِنْدَ اللهِ عَظِيْمٌ (١٥)

১৫. যখন এটা তোমরা মুখে মুখে ছড়াচ্ছিলে আর তোমাদের মুখ দিয়ে এমন কথা বলছিলে যে বিষয়ে তোমাদের কোন জ্ঞান ছিল না, আর তোমরা এটাকে নগণ্য ব্যাপার মনে করেছিলে, কিন্তু আল্লাহ্‌র নিকট তা ছিল গুরুতর ব্যাপার।

وَلَوْلَآ إِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ أَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ق صلے سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ (١٦)

১৬. তোমরা যখন এটা শুনলে তখন তোমরা কেন বললে না যে, এ ব্যাপারে আমাদের কথা বলা ঠিক নয়। আল্লাহ পবিত্র ও মহান, এটা তো এক গুরুতর অপবাদ!

يَعِظُكُمُ اللهُ أَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ أَبَدًا إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ج (١٧)

১৭. আল্লাহ তোমাদেরকে উপদেশ দিচ্ছেন তোমরা আর কখনো এর (অর্থাৎ এ আচরণের) পুনরাবৃত্তি করো না যদি তোমরা মু'মিন হয়ে থাক।

وَيُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الْأٰيٰتِ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (١٨)

১৮. আল্লাহ তোমাদের জন্য স্পষ্টভাবে আয়াত বর্ণনা করছেন, কারণ তিনি হলেন সর্ববিষয়ে জ্ঞানের অধিকারী, বড়ই হিকমতওয়ালা।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ أَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِي الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ لا فِي الدُّنْيَا وَالْأٰخِرَةِ ط وَاللهُ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (١٩)

১৯. যারা পছন্দ করে যে, মু'মিনদের মধ্যে অশ্লীলতার বিস্তৃতি ঘটুক তাদের জন্য আছে ভয়াবহ শাস্তি দুনিয়া ও আখিরাতে। আল্লাহ জানেন আর তোমরা জান না।

وَلَوْلَا فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَأَنَّ اللهَ رَؤُوْفٌ رَّحِيْمٌ ع (٢٠)

২০. তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে (তোমরা ধ্বংস হয়ে যেতে), আল্লাহ দয়ার্দ্র, বড়ই দয়াবান।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ط وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَإِنَّهٗ يَأْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ط وَلَوْلَا فَضْلُ اللهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ أَبَدًا لا وَّلٰكِنَّ اللهَ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٢١)

২১. হে ঈমানদারগণ! তোমরা শয়ত্বানের পদাংক অনুসরণ করো না। কেউ শয়ত্বানের পদাংক অনুসরণ করলে সে তাকে নির্লজ্জতা ও অপকর্মের আদেশ দেবে, তোমাদের প্রতি আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও দয়া না থাকলে তোমাদের একজনও কক্ষনো পবিত্রতা লাভ করতে পারত না। অবশ্য যাকে ইচ্ছে আল্লাহ পবিত্র করে থাকেন, আল্লাহ সব কিছু শোনেন, সর্ববিষয়ে অবগত।

وَلَا يَأْتَلِ أُولُو الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ أَنْ يُّؤْتُوْٓا أُولِي الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ص صلے وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ط أَلَا تُحِبُّوْنَ أَنْ يَّغْفِرَ اللهُ لَكُمْ ط وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٢٢)

২২. তোমাদের মধ্যে যারা মর্যাদা ও প্রাচুর্যের অধিকারী তারা যেন শপথ না করে যে, তারা আত্মীয়-স্বজন, মিসকীন এবং আল্লাহ্‌র পথে হিজরাতকারীদেরকে সাহায্য করবে না। তারা যেন তাদেরকে ক্ষমা করে ও তাদের ত্রুটি-বিচ্যুতি উপেক্ষা করে। তোমরা কি পছন্দ কর না যে, আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিন? আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ص وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ لا (٢٣)

২৩. যারা সতী-সাধ্বী, সহজ-সরল ঈমানদার নারীর প্রতি অপবাদ আরোপ করে, তারা দুনিয়া ও আখিরাতে অভিশপ্ত আর তাদের জন্য আছে গুরুতর শাস্তি।

يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ أَلْسِنَتُهُمْ وَأَيْدِيْهِمْ وَأَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٢٤)

২৪. যেদিন তাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে তাদের জিহ্বা, তাদের হাত, তাদের পা– তাদের কৃতকর্মের ব্যাপারে।

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ أَنَّ اللهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ (٢٥)

২৫. আল্লাহ সেদিন তাদেরকে তাদের ন্যায্য পাওনা পুরোপুরিই দেবেন আর তারা জানতে পারবে যে, আল্লাহ্‌ই সত্য স্পষ্ট ব্যক্তকারী।

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ لِلْخَبِيْثٰتِ

২৬. চরিত্রহীনা নারী চরিত্রহীন পুরুষদের জন্য, আর চরিত্রহীন পুরুষ চরিত্রহীনা নারীদের জন্য,

وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِيْنَ وَالطَّيِّبُوْنَ لِلطَّيِّبٰتِ ج أُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُوْنَ مِمَّا يَقُوْلُوْنَ ط لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ع (٢٦)

চরিত্রবতী নারী চরিত্রবান পুরুষের জন্য, আর চরিত্রবান পুরুষ চরিত্রবতী নারীর জন্য। লোকেরা যা বলে তাথেকে তারা পবিত্র। তাদের জন্য আছে ক্ষমা ও সম্মানজনক জীবিকা।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ بُيُوْتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَأْنِسُوْا وَتُسَلِّمُوْا عَلٰٓى أَهْلِهَا ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (٢٧)

২৭. হে ঈমানদারগণ! তোমরা নিজেদের গৃহ ছাড়া অন্যের গৃহে প্রবেশ করো না, অনুমতি প্রার্থনা এবং গৃহবাসীদেরকে সালাম দেয়া ব্যতীত। এটাই তোমাদের জন্য কল্যাণকর যাতে তোমরা উপদেশ লাভ কর।

فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فِيْهَآ أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوْهَا حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ج وَإِنْ قِيْلَ لَكُمُ ارْجِعُوْا فَارْجِعُوْا هُوَ أَزْكٰى لَكُمْ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ (٢٨)

২৮. সেখানে যদি তোমরা কাউকে না পাও, তাহলে তাতে প্রবেশ করবে না, যতক্ষণ না তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া হয়। আর যদি তোমাদেরকে বলা হয়, 'ফিরে যাও, তাহলে ফিরে যাবে, এটাই তোমাদের জন্য বেশি পবিত্র'। তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আল্লাহ সবচেয়ে বেশি অবগত।

لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوْا بُيُوْتًا غَيْرَ مَسْكُوْنَةٍ فِيْهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ط وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ (٢٩)

২৯. সে ঘরে কেউ বাস করে না, তোমাদের মালমাত্তা থাকে, সেখানে প্রবেশ করলে তোমাদের কোন পাপ হবে না, আল্লাহ জানেন তোমরা যা প্রকাশ কর আর যা তোমরা গোপন কর।

২৭। আবূ মূসা আশ'আরী (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) একটি বাগানে প্রবেশ করলেন এবং আমাকে দরজায় পাহারাদারী করার জন্য নির্দেশ দিলেন। এক লোক এসে প্রবেশের অনুমতি চাইল। তিনি বললেনঃ তাকে অনুমতি দাও এবং তাকে জান্নাতের খোশখবরী দাও। তিনি ছিলেন আবূ বাক্র (رضي الله عنه)। তারপর 'উমার (رضي الله عنه) আসলেন। তিনি বললেনঃ তাকেও অনুমতি দাও এবং জান্নাতের খোশখবরী দাও। তারপর 'উসমান (رضي الله عنه) আসলেন। তিনি বললেনঃ তাকেও অনুমতি দাও এবং জান্নাতের খোশখবরী দাও। –বুখারী ৭২৬২ [৩৬৭৪; মুসলিম ২৪০৩, তিরমিযী ৩৭১০, আহমাদ ১৯০১৫, ১৯১৪৬, ১৯১৫৬]

সাহ্‌ল ইবনু সা'দ আস্-সায়িদী (رضي الله عنه) থেকে বর্ণিত, এক ব্যক্তি নাবী (ﷺ) -এর ঘরের দরজার একটি ছিদ্র দিয়ে উঁকি মারল এবং এ সময় রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর কাছে একটি মিদরী (একখণ্ড শক্ত লম্বা লোহা) ছিল যার সাহায্যে তিনি ঐ ব্যক্তির মাথায় খোঁচা দিচ্ছিলেন। যখন নাবী (ﷺ) তাকে দেখতে পেলেন, তিনি (তাকে) বললেন, আমি যদি নিশ্চিত হতাম যে, তুমি আমার দিকে (দরজার ছিদ্র দিয়ে) তাকাচ্ছ, তাহলে আমি তোমার চোখে এ (ধারালো লৌহ দণ্ড দিয়ে) খোঁচা দিতাম। রসূলুল্লাহ (ﷺ) - আরো বললেন, প্রবেশের অনুমতির বিধান এজন্য করা হয়েছে যাতে করে একজন (ঘরের মধ্যে কি আছে তা মালিকের অনুমতি ব্যতীত) দেখতে না পায়। –বুখারী ৬৯০১ [৫৯২৪, ৬২৪১; মুসলিম ২১৫৬, তিরমিযী ২৭০৯, নাসায়ী ৪৮৫৯, আহমাদ ২২২৯৬, ২২৩২৬; দারিমী ২৩৮৪, ২৩৮৫]

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ أَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ۭ ذٰلِكَ أَزْكٰى لَهُمْ ۭ إِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ (٣٠)

৩০. মু'মিনদের বল তাদের দৃষ্টি অবনমিত করতে আর তাদের লজ্জাস্থান সংরক্ষণ করতে, এটাই তাদের জন্য বেশি পবিত্র, তারা যা কিছু করে সে সম্পর্কে আল্লাহ খুব ভালভাবেই অবগত।

وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ ۨ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُوْلَتِهِنَّ أَوْ اٰبَآئِهِنَّ أَوْ اٰبَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَآئِهِنَّ أَوْ أَبْنَآءِ بُعُوْلَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِيْٓ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِيْٓ أَخَوٰتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمٰنُهُنَّ أَوِ التّٰبِعِيْنَ غَيْرِ أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ الَّذِيْنَ لَمْ يَظْهَرُوْا عَلٰى عَوْرٰتِ النِّسَآءِ ۨ وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِيْنَ مِنْ زِيْنَتِهِنَّ ۭ وَتُوْبُوْٓا إِلَى اللّٰهِ جَمِيْعًا أَيُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (٣١)

৩১. আর ঈমানদার নারীদেরকে বলে দাও তাদের দৃষ্টি অবনমিত করতে আর তাদের লজ্জাস্থান সংরক্ষণ করতে, আর তাদের শোভা সৌন্দর্য প্রকাশ না করতে যা এমনিতেই প্রকাশিত হয় তা ব্যতীত। তাদের ঘাড় ও বুক যেন মাথার কাপড় দিয়ে ঢেকে দেয়। তারা যেন তাদের স্বামী, পিতা, শ্বশুর, পুত্র, স্বামীর পুত্র, ভাই, ভাই-এর ছেলে, বোনের ছেলে, নিজেদের মহিলাগণ, স্বীয় মালিকানাধীন দাসী, পুরুষদের মধ্যে যৌন কামনামুক্ত পুরুষ আর নারীদের গোপন অঙ্গ সম্পর্কে অজ্ঞ বালক ছাড়া অন্যের কাছে নিজেদের শোভা সৌন্দর্য প্রকাশ না করে। আর তারা যেন নিজেদের গোপন শোভা সৌন্দর্য প্রকাশ করার জন্য সজোরে পদচারণা না করে। হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ্‌র নিকট তাওবাহ কর, যাতে তোমরা সফলকাম হতে পার।

وَأَنْكِحُوا الْأَيَامٰى مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِيْنَ مِنْ عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ ۭ إِنْ يَّكُوْنُوْا فُقَرَآءَ

৩২. তোমাদের মধ্যে যারা বিবাহহীন তাদের বিবাহ সম্পন্ন কর আর তোমাদের সৎ দাস-দাসীদেরও। তারা যদি নিঃস্ব হয় তাহলে আল্লাহ তাদেরকে নিজ অনুগ্রহে অভাবমুক্ত করে দেবেন,

---

৩১। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। আল্লাহ তা'আলা প্রাথমিক যুগের মুহাজির মহিলাদের উপর রহম করুন, যখন আল্লাহ্ তা'আলা এ আয়াত "তাদের গ্রীবা ও বক্ষদেশ যেন ওড়না দ্বারা আবৃত করে" অবতীর্ণ করলেন, তখন তারা নিজ চাদর ছিঁড়ে তা দিয়ে মুখমণ্ডল ঢাকল। –বুখারী ৪৭৫৮ [৪৭৫৯; মুসলিম ১৯০৪, তিরমিযী ১৬৪৬, নাসায়ী ৩১৩৬, আবূ দাঊদ ২৫১৭, ইবনু মাজাহ ২৭৮৩, আহমাদ ১৮৯৯৯, ১৯০৪৯]

يُغْنِهِمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (٣٢)

আল্লাহ প্রচুর দানকারী, সর্ববিষয়ে জ্ঞাত।

وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِيْنَ لَا يَجِدُوْنَ نِكَاحًا حَتّٰى يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ وَالَّذِيْنَ يَبْتَغُوْنَ الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوْهُمْ اِنْ عَلِمْتُمْ فِيْهِمْ خَيْرًا ق صلے وَّاٰتُوْهُمْ مِّنْ مَّالِ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اٰتٰىكُمْ ؕ وَلَا تُكْرِهُوْا فَتَيٰتِكُمْ عَلَى الْبِغَآءِ اِنْ اَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوْا عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَاِنَّ اللّٰهَ مِنْۢ بَعْدِ اِكْرَاهِهِنَّ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣٣)

৩৩. যাদের বিয়ের সম্বল নেই তারা যেন সংযম অবলম্বন করে যতক্ষণ না আল্লাহ নিজ অনুগ্রহে তাদেরকে অভাবমুক্ত করেন। আর তোমাদের দাসদাসীদের মধ্যে যারা মুক্তির জন্য লিখিত চুক্তি পেতে চায়, তাদের সঙ্গে চুক্তি কর যদি তাতে কোন কল্যাণ আছে ব'লে তোমরা জান। আল্লাহ তোমাদেরকে যে মাল দিয়েছেন তাথেকে তাদেরকে দান কর। তোমাদের দাসীরা নিজেদের পবিত্রতা রক্ষা করতে চাইলে তোমরা পার্থিব জীবনের সম্পদের লালসায় তাদেরকে ব্যভিচারে বাধ্য করো না। যদি কেউ তাদের উপর জবরদস্তি করে তবে তাদের উপর জবরদস্তির পর আল্লাহ (তাদের প্রতি) ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا مِّنَ الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ع (٣٤)

৩৪. আমি তোমাদের নিকট অবতীর্ণ করেছি সুস্পষ্ট আয়াত আর তোমাদের পূর্বে যারা অতীত হয়ে গেছে তাদের দৃষ্টান্ত ও মুত্তাকীদের জন্য দিয়েছি উপদেশ।

اَللّٰهُ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ مَثَلُ نُوْرِهٖ كَمِشْكٰوةٍ فِيْهَا مِصْبَاحٌ ؕ اَلْمِصْبَاحُ فِيْ

৩৫. আল্লাহ আসমান ও যমীনের আলো, তাঁর আলোর দৃষ্টান্ত হল যেন একটি তাক– যার ভিতরে আছে একটি প্রদীপ, প্রদীপটি হচ্ছে কাঁচের

৩৩। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) হতে বর্ণিত। তিনি বলেছেন, বারীরাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) একবার মুকাতাবাতের সাহায্য চাইতে তাঁর কাছে আসলেন। প্রতিবছর এক 'উকিয়া' করে পাঁচ বছরে পাঁচ 'উকিয়া' তাকে পরিশোধ করতে হবে। তার প্রতি 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) আগ্রহান্বিত হলেন। তাই তিনি বললেন, যদি আমি এককালীন মূল্য পরিশোধ করে দেই তবে কি তোমার মালিক তোমাকে বিক্রি করবে? তখন আমি তোমাকে মুক্ত করে দিব এবং তোমার ওয়ালার অধিকার আমার হবে। বারীরাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) তার মালিকের কাছে গিয়ে উক্ত প্রস্তাব পেশ করলেন। কিন্তু তারা বলল, না; তবে যদি ওয়ালার অধিকার আমাদের হয়। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, আমি রসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) -এর খিদমতে গেলাম এবং বিষয়টি তাঁকে বললাম। (রাবী বলেন) তখন রসূলুল্লাহ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) তাঁকে বললেন, তাকে খরিদ করে মুক্ত করে দাও। কেননা, ওয়ালা তারই হবে, যে মুক্ত করবে। তারপর তিনি দাঁড়িয়ে বললেন, মানুষের কী হল, তারা এমন সব শর্তারোপ করে, যা আল্লাহর কিতাবে নেই! আল্লাহর কিতাবে নেই এমন শর্ত কেউ আরোপ করলে তা বাতিল বলে গণ্য হবে। আল্লাহর দেয়া শর্তই সঠিক এবং নির্ভরযোগ্য। –বুখারী ২৫৬০ [৪৫৬; মুসলিম ২৬১২, আহমাদ ৭২৭৯, ৭৩৭২]

زُجَاجَةٍ ۭ اَلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ يُّوْقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُوْنَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيْٓءُ وَلَوْ لَمْ تَمْسَسْهُ نَارٌ ۭ نُوْرٌ عَلٰى نُوْرٍ ۭ يَهْدِي اللهُ لِنُوْرِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۭ وَيَضْرِبُ اللهُ الْأَمْثَالَ لِلنَّاسِ ۭ وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۙ (٣٥)

ভিতরে, কাঁচটি যেন একটি উজ্জ্বল নক্ষত্র, যা প্রজ্জ্বলিত করা হয় বরকতময় যায়তুন গাছের তেল দ্বারা যা পূর্বদেশীয়ও নয়, আর পশ্চিমদেশীয়ও নয়। আগুন তাকে স্পর্শ না করলেও তার তেল যেন উজ্জ্বলের বেশ নিকটবর্তী, আলোর উপরে আলো। আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন স্বীয় আলোর দিকে পথ দেখান। আল্লাহ মানুষের জন্য দৃষ্টান্ত পেশ করেন, আল্লাহ সর্ববিষয়ে অধিক জ্ঞাত।

فِيْ بُيُوْتٍ أَذِنَ اللهُ أَنْ تُرْفَعَ وَيُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۙ (٣٦)

৩৬. (এ রকম আলো জ্বালানো হয়) সে সব গৃহে (অর্থাৎ মাসজিদে ও উপাসনালয়ে) যেগুলোকে সমুন্নত রাখতে আর তাতে তাঁর নাম স্মরণ করতে আল্লাহ নির্দেশ দিয়েছেন, ওগুলোতে তাঁর মাহাত্ম্য ঘোষণা করা হয় সকাল ও সন্ধ্যায় (বার বার)

رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللهِ وَإِقَامِ الصَّلٰوةِ وَإِيْتَآءِ الزَّكٰوةِ ص ۙ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ الْقُلُوْبُ وَالْأَبْصَارُ ۙ (٣٧)

৩৭. ঐ সব লোকের দ্বারা ব্যবসায় ও ক্রয়-বিক্রয় যাদেরকে তাঁর স্মরণ হতে বিচ্যুত করতে পারে না, আর নামায প্রতিষ্ঠা ও যাকাত প্রদান থেকেও না। তাদের ভয় করে (কেবল) সেদিনের যেদিন অন্তর ও দৃষ্টিসমূহ উল্টে যাবে।

لِيَجْزِيَهُمُ اللهُ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ وَاللهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٣٨)

৩৮. (তারা এভাবে আল্লাহর ইবাদাত করে) যাতে আল্লাহ তাদেরকে পুরস্কৃত করেন তাদের উত্তম কার্যাবলী অনুসারে আর নিজ অনুগ্রহে আরো অধিক দেন, কারণ আল্লাহ যার জন্য ইচ্ছে করেন অপরিমিত রিযক্ দান করেন।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍ بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ۭ حَتّٰٓى إِذَا جَآءَهٗ لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّوَجَدَ اللهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰهُ حِسَابَهٗ ۭ وَاللهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ (٣٩)

৩৯. আর যারা কুফরী করে তাদের কাজকর্ম হল বালুকাময় মরুভূমির মরীচিকার মত। পিপাসার্ত ব্যক্তি সেটাকে পানি মনে করে অবশেষে সে যখন তার নিকটে আসে, সে দেখে ওটা কিছুই না, সে সেখানে পায় আল্লাহকে, অতঃপর আল্লাহ তার হিসাব চুকিয়ে দেন। আল্লাহ দ্রুত হিসাব গ্রহণ করে থাকেন।

৪০. অথবা (কাফিরদের অবস্থা) বিশাল গভীর সমুদ্রে গভীর অন্ধকারের ন্যায়, যাকে আচ্ছন্ন করে রেখেছে ঢেউয়ের উপরে ঢেউ, তার উপরে মেঘ, একের পর এক অন্ধকারের স্তর, কেউ হাত বের করলে সে তা একেবারেই দেখতে পায় না। আল্লাহ যাকে আলো দান করেন না, তার জন্য কোন আলো নেই।

أَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰهُ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ إِذَآ أَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَجْعَلِ اللهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ ع (٤٠)

৪১. তুমি কি দেখ না, তিনি হলেন আল্লাহ্, আসমান ও যমীনে যারা আছে সকলেই যাঁর প্রশংসা গীতি উচ্চারণ করে আর (উড়ন্ত) পাখীরাও তাদের ডানা বিস্তার ক'রে? তাদের প্রত্যেকেই তাদের 'ইবাদাত ও প্রশংসাগীতির পদ্ধতি জানে, তারা যা করে আল্লাহ্ সে সম্পর্কে খুবই অবগত।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ (٤١)

৪২. আসমান ও যমীনের রাজত্বের মালিকানা আল্লাহ্‌র জন্যই, আর ফিরে আসতে হবে আল্লাহ্‌র কাছেই।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج وَإِلَى اللهِ الْمَصِيْرُ (٤٢)

৪৩. তুমি কি দেখ না আল্লাহ্ মেঘমালাকে চালিত করেন, অতঃপর সেগুলোকে একত্রে জুড়ে দেন, অতঃপর সেগুলোকে স্তূপীকৃত করেন, অতঃপর তুমি তার মধ্য থেকে পানির ধারা বের হতে দেখতে পাও, অতঃপর তিনি আকাশে স্থিত মেঘমালার পাহাড় থেকে শিলা বর্ষণ করেন, অতঃপর তিনি যাকে ইচ্ছে তা দিয়ে আঘাত করেন আর যার কাছ থেকে ইচ্ছে তা সরিয়ে নেন। তার বিদ্যুতের চমক দৃষ্টিশক্তি প্রায় কেড়ে নেয়।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ج وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْأَبْصَارِ ؕ (٤٣)

৪৪. আল্লাহ্ রাত দিনের আবর্তন ঘটান, অন্তর্দৃষ্টি সম্পন্ন লোকেদের জন্য এতে শিক্ষণীয় বিষয় রয়েছে।

يُقَلِّبُ اللهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّأُولِي الْأَبْصَارِ (٤٤)

৪৫. আল্লাহ্ পানি হতে সমস্ত জীবন সৃষ্টি করেছেন। তাদের কতক পেটের ভরে চলে, কতক দু'পায়ের উপর চলে, আর কতক চার

وَاللهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ج فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ ج وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰى

رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِيْ عَلٰٓى أَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ إِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٤٥)

পায়ের উপর চলে। আল্লাহ যা চান তাই সৃষ্টি করেন। আল্লাহ সর্ববিষয়ের উপর সর্বোচ্চ ক্ষমতার অধিকারী।

لَقَدْ أَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٤٦)

৪৬. আমি সুস্পষ্ট নিদর্শন অবতীর্ণ করেছি, আল্লাহ যাকে চান সরল সঠিক পথ প্রদর্শন করেন।

وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَأَطَعْنَا ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ وَمَآ أُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ (٤٧)

৪৭. তারা বলে– আমরা আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান আনলাম আর রসূলের প্রতিও আর আমরা মেনে নিলাম। কিন্তু এরপরও তাদের মধ্যেকার একদল মুখ ফিরিয়ে নেয়, তারা (প্রকৃতপক্ষে) মু'মিন নয়।

وَإِذَا دُعُوْآ إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ (٤٨)

৪৮. তাদেরকে যখন তাদের মাঝে ফয়সালা করার উদ্দেশে আল্লাহ ও তাঁর রসূলের পানে আহ্বান করা হয়, তখন তাদের একদল মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَإِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَأْتُوْآ إِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ؕ (٤٩)

৪৯. কিন্তু 'হাক' (অর্থাৎ প্রাপ্য) যদি তাদের পক্ষে থাকে তাহলে পূর্ণ বিনয়ের সঙ্গে তারা রসূলের দিকে ছুটে আসে।

أَفِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ أَمِ ارْتَابُوْآ أَمْ يَخَافُوْنَ أَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ أُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۚ (٥٠)

৫০. তাদের অন্তরে কি রোগ আছে, না তারা সন্দেহ পোষণ করে? না তারা এই ভয়ের মধ্যে আছে যে আল্লাহ ও তাঁর রসূল তাদের প্রতি অন্যায় করবেন? তা নয়, আসলে তারা নিজেরাই অন্যায়কারী।

إِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذَا دُعُوْآ إِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ أَنْ يَّقُوْلُوْا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا ؕ وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٥١)

৫১. মু'মিনদেরকে যখন তাদের মাঝে ফয়সালা করার জন্য আল্লাহ ও তাঁর রসূলের দিকে ডাকা হয়, তখন মু'মিনদের জওয়াব তো এই হয় যে, তারা বলে, আমরা শুনলাম ও মেনে নিলাম, আর তারাই সফলকাম।

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ وَيَتَّقْهِ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (٥٢)

৫২. যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করে, আল্লাহ্‌কে ভয় করে ও তাঁর অবাধ্যতা পরিহার করে চলে তারাই কৃতকার্য।

وَأَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ أَمَرْتَهُمْ لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ

৫৩. (হে নবী!) তারা শক্ত করে কসম খেয়ে বলে যে, তুমি তাদেরকে আদেশ করলে তারা অবশ্য অবশ্যই বের হবে, বলঃ তোমরা কসম খেয়ো না,

স্বাভাবিক আনুগত্যই কাম্য, বস্তুতঃ তোমরা যা কর, আল্লাহ সে সম্পর্কে সম্পূর্ণ অবহিত।

مَّعْرُوْفَةٌ ط إِنَّ اللهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (٥٣)

৫৪. বলঃ আল্লাহ্‌র আনুগত্য ও রসূলের আনুগত্য কর, অতঃপর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে লও তাহলে তার (অর্থাৎ রসূলের) উপর অর্পিত দায়িত্বের জন্য সে দায়ী, আর তোমাদের উপর অর্পিত দায়িত্বের জন্য তোমরাই দায়ী, তোমরা যদি তার আনুগত্য কর তবে সঠিক পথ পাবে, রসূলের দায়িত্ব হচ্ছে স্পষ্টভাবে (বাণী) পৌঁছে দেয়া।

قُلْ أَطِيْعُوا اللهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ج فَإِنْ تَوَلَّوْا فَإِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ مَّا حُمِّلْتُمْ ط وَإِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ط وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (٥٤)

৫৫. তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে আল্লাহ তাদেরকে প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন যে তিনি তাদেরকে অবশ্যই পৃথিবীতে খিলাফাত দান করবেন যেমন তাদের পূর্ববর্তীদেরকে তিনি খিলাফাত দান করেছিলেন এবং তিনি তাদের দ্বীনকে অবশ্যই কর্তৃত্বে প্রতিষ্ঠিত করবেন যা তিনি তাদের জন্য পছন্দ করেছেন এবং তিনি তাদের ভয়-ভীতিপূর্ণ অবস্থাকে পরিবর্তিত করে তাদেরকে অবশ্যই নিরাপত্তা দান করবেন। তারা আমার 'ইবাদাত করবে, কোন কিছুকে আমার শরীক করবে না। এরপরও যারা সত্য প্রত্যাখ্যান করবে তারাই বিদ্রোহী, অন্যায়কারী।

وَعَدَ اللهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِي الْأَرْضِ كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ص وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِي ارْتَضٰى لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ أَمْنًا ط يَعْبُدُوْنَنِيْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِيْ شَيْئًا ط وَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (٥٥)

৫৬. তোমরা (নিয়মিত) নামায প্রতিষ্ঠা কর, যাকাত প্রদান কর ও রসূলের আনুগত্য কর যাতে তোমরা অনুগ্রহ প্রাপ্ত হও।

وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (٥٦)

৫৭. তুমি কাফিরদেরকে এমন মনে কর না যে, তারা পৃথিবীতে আল্লাহর ইচ্ছেকে পরাভূত করার ক্ষমতা রাখে, তাদের বাসস্থান হল আগুন; কতই না নিকৃষ্ট আশ্রয়স্থল!

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ ج وَمَأْوٰهُمُ النَّارُ ط وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ع (٥٧)

৫৮. হে ঈমানদারগণ! তোমাদের মালিকানাধীন দাসদাসীগণ আর তোমাদের যারা বয়োঃপ্রাপ্ত হয়নি তারা যেন (তোমাদের কাছে আসতে) তোমাদের অনুমতি গ্রহণ করে তিন সময়ে– ফাজ্‌র নামাযের পূর্বে, আর যখন দুপুরে রোদের

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَأْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ط مِّنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ

وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ط قف ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ لَّكُمْ ط لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَهُنَّ ط طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى بَعْضٍ ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٥٨)

প্রচণ্ডতায় তোমরা তোমাদের পোশাক খুলে রাখ আর 'ইশার নামাযের পর। এ তিনটি তোমাদের পোশাকহীন হওয়ার সময়। এ সময়গুলো ছাড়া অন্য সময়ে (প্রবেশ করলে) তোমাদের উপর আর তাদের উপর কোন দোষ নেই। তোমাদের এককে অন্যের কাছে ঘুরাফিরা করতেই হয়। এভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্য নির্দেশ খুবই স্পষ্টভাবে বর্ণনা করেন, আল্লাহ সর্বজ্ঞ, বড়ই হিকমতওয়ালা।

وَإِذَا بَلَغَ الْأَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ فَلْيَسْتَأْذِنُوْا كَمَا اسْتَأْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٥٩)

৫৯. তোমাদের শিশুরা যখন বয়োঃপ্রাপ্ত হবে তখন তারা যেন তোমাদের নিকট আসতে অনুমতি নেয়, যেমন তাদের বয়োজ্যেষ্ঠরা অনুমতি নেয়। এভাবে আল্লাহ তাঁর নির্দেশ খুবই স্পষ্টভাবে বর্ণনা করেন, কারণ আল্লাহ সর্বজ্ঞ, বড়ই হিকমতওয়ালা।

وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ أَنْ يَّضَعْنَ ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍۢ بِزِيْنَةٍ ط وَأَنْ يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ط وَاللهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٦٠)

৬০. বয়স্কা নারীরা যারা বিয়ের আশা রাখে না, তাদের প্রতি কোন দোষ বর্তাবে না যদি তারা তাদের সৌন্দর্য প্রদর্শন না ক'রে তাদের (উপ্রি) পোশাক খুলে রাখে, তবে এথেকে যদি তারা বিরত থাকে তবে সেটাই তাদের জন্য উত্তম। আল্লাহ সব কিছু শোনেন, সব কিছু সম্পর্কে পূর্ণ অবগত।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰى أَنْفُسِكُمْ أَنْ تَأْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ اٰبَآئِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أُمَّهٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ إِخْوَانِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أَخَوٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أَعْمَامِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ أَخْوَالِكُمْ أَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ أَوْ مَا مَلَكْتُمْ مَّفَاتِحَهٗٓ أَوْ صَدِيْقِكُمْ ط لَيْسَ عَلَيْكُمْ

৬১. অন্ধের জন্য দোষ নেই, খোঁড়ার জন্য দোষ নেই, পীড়িতের জন্য দোষ নেই আর তোমাদের জন্যও দোষ নেই খাদ্য গ্রহণ করতে তোমাদের গৃহে, কিংবা তোমাদের পিতৃগণের গৃহে, কিংবা তোমাদের মাতৃগণের গৃহে, কিংবা তোমাদের ভ্রাতাদের গৃহে, কিংবা তোমাদের বোনেদের গৃহে, কিংবা তোমাদের চাচাদের গৃহে, কিংবা তোমাদের ফুফুদের গৃহে, কিংবা তোমাদের মামাদের গৃহে, কিংবা তোমাদের খালাদের গৃহে, কিংবা ঐ সমস্ত গৃহে, যেগুলোর চাবি রয়েছে তোমাদের হাতে কিংবা তোমাদের বিশ্বস্ত বন্ধুদের গৃহে। তোমরা একত্রে আহার কর কিংবা আলাদা আলাদা তাতে

جُنَاحٌ أَنْ تَأْكُلُوْا جَمِيْعًا أَوْ أَشْتَاتًا ط فَإِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللهِ مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ط كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ع (٦١)

তোমাদের উপর কোন দোষ নেই। যখন তোমরা গৃহে, প্রবেশ করবে তখন তোমরা স্বজনদেরকে সালাম জানাবে যা আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে বরকতময় পবিত্র সম্ভাষণ। এভাবে আল্লাহ তোমাদের জন্য নির্দেশসমূহ বিশদভাবে বর্ণনা করেন যাতে তোমরা বুঝতে পার।

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَإِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى أَمْرٍ جَامِعٍ لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَأْذِنُوْهُ ط إِنَّ الَّذِيْنَ يَسْتَأْذِنُوْنَكَ أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ ج فَإِذَا اسْتَأْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَأْنِهِمْ فَأْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ اللهَ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٦٢)

৬২. ঈমানদার তো তারাই যারা ঈমান আনে আল্লাহ্‌র উপর ও তাঁর রসূলের উপর আর তারা যখন রসূলের সঙ্গে সমষ্টিগত কাজে মিলিত হয়, তখন তার অনুমতি না নিয়ে চলে যায় না। যারা তোমার কাছে অনুমতি প্রার্থনা করে তারাই আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি বিশ্বাসী। কাজেই তাদের কেউ তাদের কোন কাজে যাওয়ার জন্য তোমার কাছে অনুমতি চাইলে তুমি তাদের যাকে ইচ্ছে অনুমতি দিবে আর তাদের জন্য আল্লাহ্‌র নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করবে। আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَيْنَكُمْ كَدُعَآءِ بَعْضِكُمْ بَعْضًا ط قَدْ يَعْلَمُ اللهُ الَّذِيْنَ يَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ج فَلْيَحْذَرِ الَّذِيْنَ يُخَالِفُوْنَ عَنْ أَمْرِهٖٓ أَنْ تُصِيْبَهُمْ فِتْنَةٌ أَوْ يُصِيْبَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٦٣)

৬৩. রসূলের ডাককে তোমরা তোমাদের একের প্রতি অন্যের ডাকের মত গণ্য করো না। আল্লাহ তাদেরকে জানেন যারা তোমাদের মধ্যে চুপিসারে সরে পড়ে। কাজেই যারা তার আদেশের বিরুদ্ধাচরণ করে তারা সতর্ক হোক যে, তাদের উপর পরীক্ষা নেমে আসবে কিংবা তাদের উপর নেমে আসবে ভয়াবহ শাস্তি।

أَلَآ إِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط قَدْ يَعْلَمُ مَآ أَنْتُمْ عَلَيْهِ ط وَيَوْمَ يُرْجَعُوْنَ إِلَيْهِ فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ط وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ع (٦٤)

৬৪. নিশ্চিত জেনে রেখ, আসমান ও যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ্‌র। তোমরা যে অবস্থায় আছ তা তিনি জানেন। অতঃপর যেদিন তারা তাঁর কাছে ফিরে যাবে সেদিন তিনি তাদেরকে জানিয়ে দেবেন তারা যা করত, আল্লাহ সকল বিষয়ে সবচেয়ে বেশি অবগত।

২৫. সূরাহ আল-ফুরক্বান

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ

আয়াতঃ ৭৭, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. মহা কল্যাণময় তিনি যিনি তাঁর বান্দাহ্‌র উপর সত্য-মিথ্যার পার্থক্যকারী (কিতাব) নাযিল করেছেন যাতে সে বিশ্বজগতের জন্য সতর্ককারী হতে পারে।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰى عَبْدِهٖ لِيَكُوْنَ لِلْعٰلَمِيْنَ نَذِيْرَا ۙ (١)

২. যিনি যমীন ও আসমানের রাজত্বের মালিক, তিনি কোন সন্তান গ্রহণ করেননি, রাজত্বে তাঁর কোন অংশীদার নেই, তিনি সমস্ত কিছু সৃষ্টি করেছেন, আর সেগুলোকে যথাযথ করেছেন পরিমিত অনুপাতে।

الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ وَخَلَقَ كُلَّ شَيْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِيْرًا (٢)

৩. আর তারা তাঁকে বাদ দিয়ে ইলাহরূপে গ্রহণ করেছে অন্য কিছুকে যারা কিছুই সৃষ্টি করে না, বরং তারা নিজেরাই সৃষ্টি হয়েছে। তারা ক্ষমতা রাখে না নিজেদের ক্ষতি বা উপকার করার আর ক্ষমতা রাখে না মৃত্যু, জীবন ও পুনরুত্থানের উপর।

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً لَّا يَخْلُقُوْنَ شَيْئًا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ وَلَا يَمْلِكُوْنَ لِأَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا وَّلَا يَمْلِكُوْنَ مَوْتًا وَّلَا حَيٰوةً وَّلَا نُشُوْرًا (٣)

৪. কাফিররা বলে- 'এটা মিথ্যে ছাড়া আর কিছুই নয়, সে তা (অর্থাৎ কুরআন) উদ্ভাবণ করেছে এবং ভিন্ন জাতির লোক এ ব্যাপারে তাকে সাহায্য করেছে।' আসলে তারা অন্যায় ও মিথ্যের আশ্রয় নিয়েছে।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِنْ هٰذَآ إِلَّآ إِفْكُ ٱفْتَرٰىهُ وَأَعَانَهٗ عَلَيْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ج فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّزُوْرًا ج (٤)

৫. তারা বলে- 'এগুলো পূর্ব যুগের কাহিনী যা সে [অর্থাৎ মুহাম্মাদ (ﷺ)] লিখিয়ে নিয়েছে আর এগুলোই তার কাছে সকাল-সন্ধ্যা শোনানো হয়।'

وَقَالُوْٓا أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ اكْتَتَبَهَا فَهِيَ تُمْلٰى عَلَيْهِ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا (٥)

৬. বলঃ 'তা তিনিই নাযিল করেছেন যিনি আসমান-যমীনের যাবতীয় গোপন বিষয় অবগত আছেন। তিনি বড়ই ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

قُلْ أَنْزَلَهُ الَّذِيْ يَعْلَمُ السِّرَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط إِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (٦)

৭. তারা বলে– 'এ কেমন রসূল যে খাবার খায়, আর হাট-বাজারে চলাফেরা করে? তার কাছে ফেরেশতা অবতীর্ণ হয় না কেন যে তার সঙ্গে

وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ يَأْكُلُ الطَّعَامَ وَيَمْشِيْ فِي الْأَسْوَاقِ ط لَوْلَآ أُنْزِلَ إِلَيْهِ

مَلَكٌ فَيَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِيْرًا ۙ (٧)

থাকত সতর্ককারী হয়ে?

أَوْ يُلْقٰٓى إِلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ يَّأْكُلُ مِنْهَا ۭ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ إِنْ تَتَّبِعُوْنَ إِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا (٨)

৮. কিংবা তাকে ধন-ভাণ্ডার দেয়া হয় না কেন, অথবা তার জন্য একটা বাগান হয় না কেন যাথেকে সে আহার করত?' যালিমরা বলে- 'তোমরা তো এক যাদুগ্রস্ত লোকেরই অনুসরণ করছ।'

اُنْظُرْ كَيْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْأَمْثَالَ فَضَلُّوْا فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا ع (٩)

৯. দেখ, তারা তোমার ব্যাপারে কেমন সব উপমা পেশ করছে! যার ফলে তারা পথভ্রষ্ট হয়ে গেছে, অতএব তারা কোন ক্রমেই পথ পাবে না।

تَبٰرَكَ الَّذِيْٓ إِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ خَيْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ۙ وَيَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا (١٠)

১০. মহা কল্যাণময় তিনি যিনি ইচ্ছে করলে তোমাকে ওগুলোর চেয়েও উৎকৃষ্ট জিনিস দিতে পারেন- বাগ-বাগিচা, যার নিচ দিয়ে বয়ে চলেছে নির্ঝরিণী, দিতে পারেন তিনি তোমাকে প্রাসাদরাজি।

بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ وَأَعْتَدْنَا لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِيْرًا ج (١١)

১১. আসলে তারা কিয়ামাতকে অস্বীকার করে, আর যারা কিয়ামাতকে অস্বীকার করে, তাদের জন্য আমি প্রস্তুত করে রেখেছি জ্বলন্ত আগুন।

إِذَا رَأَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ سَمِعُوْا لَهَا تَغَيُّظًا وَّزَفِيْرًا (١٢)

১২. আগুন যখন তাদেরকে বহু দূরবর্তী স্থান থেকে দেখবে, তখন তারা শুনতে পারে তার ক্রুদ্ধ গর্জন ও হুঙ্কার।

وَإِذَآ أُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَيِّقًا مُّقَرَّنِيْنَ دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا (١٣)

১৩. যখন তাদেরকে এক সঙ্গে বেঁধে জাহান্নামের কোন সংকীর্ণ স্থানে নিক্ষেপ করা হবে, তখন সেখানে তারা মৃত্যুকে ডাকবে।

لَا تَدْعُوا الْيَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا ثُبُوْرًا كَثِيْرًا (١٤)

১৪. (বলা হবে) 'তোমরা আজ এক মৃত্যুকে ডেক না, অনেক মৃত্যুকে ডাক।'

قُلْ أَذٰلِكَ خَيْرٌ أَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۭ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً وَّمَصِيْرًا (١٥)

১৫. তাদেরকে জিজ্ঞেস কর– এটাই উত্তম না চিরস্থায়ী জান্নাত, মুত্তাকীদেরকে যার ওয়াদা দেয়া হয়েছে? তাদের জন্য এটা হবে প্রতিদান ও শেষ আবাসস্থল।

لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ خٰلِدِيْنَ ۭ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْئُوْلًا (١٦)

১৬. সেখানে তাদের জন্য তা-ই থাকবে যা তারা ইচ্ছে করবে। সেখানে তারা চিরকাল থাকবে। এটা একটা ওয়াদা যা পূরণ করা তোমার প্রতিপালকের দায়িত্ব।

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ فَيَقُوْلُ أَأَنْتُمْ أَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ هٰٓؤُلَآءِ أَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ط (١٧)

১৭. যেদিন তিনি তাদেরকে আর আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে তারা যেগুলোর 'ইবাদাত করত সেগুলোকে একত্র করবেন, সেদিন তিনি জিজ্ঞেস করবেন- 'তোমরাই কি আমার এ সব বান্দাহ্‌দেরকে পথভ্রষ্ট করেছিলে? না তারা নিজেরাই পথ থেকে বিচ্যুত হয়েছিল?'

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْـۢبَغِيْ لَنَآ أَنْ نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ أَوْلِيَآءَ وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى نَسُوا الذِّكْرَ ج وَكَانُوْا قَوْمًا ۢبُوْرًا (١٨)

১৮. তারা বলবেঃ 'পবিত্র ও মহান তুমি। আমাদের জন্য শোভনীয় ছিল না যে তোমাকে বাদ দিয়ে অন্যান্য ইলাহ্ গ্রহণ করব, বরং তুমি ওদেরকে আর ওদের পিতৃপুরুষদেরকে দিয়েছিলে পার্থিব ভোগ সম্ভার, পরিণামে তারা ভুলে গিয়েছিল (তোমার প্রেরিত) বাণী, যার ফলে তারা পরিণত হল এক ধ্বংসপ্রাপ্ত জাতিতে।

فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ لا فَمَا تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ج وَمَنْ يَّظْلِمْ مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا (١٩)

১৯. (আল্লাহ মুশরিকদেরকে বলবেন) 'তোমরা যা বলতে সে ব্যাপারে তারা তোমাদেরকে মিথ্যে প্রমাণিত করেছে। কাজেই তোমরা না পারবে (তোমাদের শাস্তি) প্রতিরোধ করতে আর না পাবে সাহায্য। তোমাদের মধ্যে যে অন্যায়কারী আমি তাকে গুরুতর শাস্তি আস্বাদন করাব।

وَمَآ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ إِلَّآ إِنَّهُمْ لَيَأْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ فِي الْأَسْوَاقِ ط وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ فِتْنَةً ط أَتَصْبِرُوْنَ ج وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ع (٢٠)

২০. আমি তোমার পূর্বে যে সব রসূল পাঠিয়েছিলাম তারা সবাই খাদ্য গ্রহণ করত, আর হাট-বাজারে চলাফেরা করত। আমি তোমাদের এককে অপরের জন্য করেছি পরীক্ষাস্বরূপ (কাউকে করেছি ধনী, কাউকে গরীব, কাউকে সবল, কাউকে দুর্বল, কাউকে রুগ্ন, কাউকে সুস্থ), দেখি, তোমরা (নিজ নিজ অবস্থার উপর) ধৈর্য ধারণ কর কিনা। তোমার প্রতিপালক সব কিছু দেখেন।

وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ
لِقَآءَنَا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ
أَوْ نَرٰى رَبَّنَا ط لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ
أَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ عُتُوًّا كَبِيْرًا (٢١)

২১. যারা আমার সাক্ষাৎ আশা করে না তারা বলে, আমাদের কাছে ফেরেশতা নাযিল করা হয় না কেন? অথবা আমরা আমাদের প্রতিপালককে দেখতে পাই না কেন? তারা নিজেদের অন্তরে অহংকার পোষণ করে আর তারা মেতে উঠেছে গুরুতর অবাধ্যতায়।

يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا (٢٢)

২২. যেদিন তারা ফেরেশতাদেরকে দেখতে পাবে, অপরাধীদের জন্য সেদিন কোন সুখবর থাকবে না, আর (ফেরেশতাগণ বলবে তোমাদের সুখ-শান্তির পথে আছে) দুর্লঙ্ঘ বাধা।

وَقَدِمْنَآ إِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ
هَبَآءً مَّنْثُوْرًا (٢٣)

২৩. তারা (দুনিয়ায়) যে 'আমাল করেছিল আমি সেদিকে অগ্রসর হব, অতঃপর তাকে বানিয়ে দেব ছড়ানো ছিটানো ধূলিকণা (সদৃশ)।

أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا
وَّأَحْسَنُ مَقِيْلًا (٢٤)

২৪. সেদিন জান্নাতবাসীরা স্থায়ী বাসস্থান হিসেবে উত্তম আর বিশ্রামস্থল হিসেবে উৎকৃষ্ট অবস্থায় থাকবে।

وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ
الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا (٢٥)

২৫. সেদিন মেঘমালা সহ আকাশ বিদীর্ণ হবে আর ফেরেশতাদেরকে ধীরে ধীরে নীচে নামিয়ে দেয়া হবে।

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ۣالْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ط وَكَانَ
يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا (٢٦)

২৬. সেদিন সত্যিকারের কর্তৃত্ব হবে দয়াময় (আল্লাহ)'র এবং কাফিরদের জন্য দিনটি হবে কঠিন।

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا (٢٧)

২৭. অপরাধী সেদিন স্বীয় হস্তদ্বয় দংশন করতে করতে বলবে, 'হায় আফসোস! আমি যদি রসূলের সাথে পথ অবলম্বন করতাম।

يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا خَلِيْلًا (٢٨)

২৮. হায় আমার দুর্ভাগ্য! আমি যদি ওমুককে বন্ধুরূপে গ্রহণ না করতাম!

لَقَدْ أَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَآءَنِيْ ط
وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْإِنْسَانِ خَذُوْلًا (٢٩)

২৯. সে তো আমাকে উপদেশ বাণী থেকে বিভ্রান্ত করেছিল আমার কাছে তা আসার পর, শয়ত্বান মানুষের প্রতি বিশ্বাসঘাতক।

وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا هٰذَا

৩০. রসূল বলবে- 'হে আমার প্রতিপালক! আমার জাতির লোকেরা এ কুরআনকে পরিত্যক্ত

الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا (٣٠)

গণ্য করেছিল।'

وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ الْمُجْرِمِيْنَ ط وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا (٣١)

৩১. এভাবেই আমি প্রত্যেক নবীর জন্য অপরাধীদের মধ্য হতে শত্রু বানিয়ে দিয়েছি, পথ প্রদর্শক ও সাহায্যকারী হিসেবে তোমার প্রতিপালকই যথেষ্ট।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ج ۛ كَذٰلِكَ ج ۛ لِنُثَبِّتَ بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا (٣٢)

৩২. কাফিররা বলে- তার কাছে পুরো কুরআন এক সাথে অবতীর্ণ করা হল না কেন? আমি এভাবেই অবতীর্ণ করেছি। তোমার হৃদয়কে তা দ্বারা সুদৃঢ় করার জন্য আমি তোমার কাছে তা ধীরে ধীরে পরিকল্পিত স্তরে ক্রমশঃ আবৃত্তি করিয়েছি।

وَلَا يَأْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ط (٣٣)

৩৩. তোমার কাছে তারা এমন কোন সমস্যাই নিয়ে আসে না যার সঠিক সমাধান ও সুন্দর ব্যাখ্যা আমি তোমাকে দান করিনি।

اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ إِلٰى جَهَنَّمَ لا أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ سَبِيْلًا ع (٣٤)

৩৪. যাদেরকে মুখের ভরে জাহান্নামের পানে একত্রিত করা হবে, তারা মর্যাদার ক্ষেত্রে সবচেয়ে নিকৃষ্ট আর পথের দিক থেকে সবচেয়ে গুমরাহ্।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا مَعَهٗٓ أَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ج صلے (٣٥)

৩৫. আমি মূসাকে কিতাব দিয়েছিলাম আর তার সাথে তার ভাই হারূনকে আমি সাহায্যকারী বানিয়েছিলাম।

فَقُلْنَا اذْهَبَآ إِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ط فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ط (٣٦)

৩৬. অতঃপর তাদেরকে বলেছিলাম, 'তোমরা সেই জাতির নিকট যাও যারা আমার নিদর্শনকে প্রত্যাখ্যান করেছে।' অতঃপর আমি তাদেরকে পূর্ণ বিধ্বস্তিতে বিধ্বস্ত করে দিয়েছিলাম।

وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنٰهُمْ وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ط وَأَعْتَدْنَا

৩৭. আর নূহের জাতি যখন রসূলদেরকে মিথ্যারোপ করল, আমি তাদেরকে ডুবিয়ে দিলাম, আর মানুষের জন্য তাদেরকে নিদর্শন বানিয়ে দিলাম। আমি যালিমদের জন্য ভয়াবহ

৩৪। আনাস ইব্‌নু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। এক ব্যক্তি বলল, হে আল্লাহ্‌র নাবী (ﷺ)! ক্বিয়ামাতের দিন কাফেরদের মুখে ভর করে চলা অবস্থায় একত্রিত করা হবে? তিনি বললেন, যিনি এ দুনিয়ায় তাকে দু'পায়ের উপর চালাতে পারছেন, তিনি কি ক্বিয়ামাতের দিন মুখে ভর করে তাকে চালাতে পারবেন না? ক্বাতাদাহ (রহ.) বলেন, নিশ্চয়ই, আমার রবের ইজ্জতের কসম! –বুখারী ৪৭৬০ [৬৫২৩; মুসলিম ২৮০৬, আহমাদ ১২২৯৭, ১২৯৭৯]

لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا أَلِيْمًا ج لا (٣٧)

শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছি।

وَّعَادًا وَّثَمُوْدَاْ وَأَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا (٣٨)

৩৮. সে রকমই আমি ধ্বংস করেছি 'আদ, সামূদ, কূপবাসী আর তাদের মধ্যবর্তী বহু বহু বংশধরকে।

وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ز وَكُلًّا تَبَّرْنَا تَتْبِيْرًا (٣٩)

৩৯. আমি তাদের প্রত্যেকের জন্য দৃষ্টান্ত বর্ণনা করেছিলাম (যাতে তারা সঠিক পথের সন্ধান পেতে পারে) আর তাদের প্রত্যেককেই সম্পূর্ণরূপে ধ্বংস করে দিয়েছিলাম (তাদের পাপের কারণে)।

وَلَقَدْ أَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ أُمْطِرَتْ مَطَرَ السَّوْءِ ط أَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ج بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا (٤٠)

৪০. তারা (অর্থাৎ কাফিররা) তো সে জনপদ দিয়েই অতিক্রম করে যার উপর বর্ষিত হয়েছিল অকল্যাণের বৃষ্টি, তারা কি তা দেখে না? আসলে তারা পুনরুত্থানের কথা চিন্তা করে না।

وَإِذَا رَأَوْكَ إِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ إِلَّا هُزُوًا ط أَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللهُ رَسُوْلًا (٤١)

৪১. তারা যখন তোমাকে দেখে, তারা তোমাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপের পাত্র ছাড়া অন্য কিছু গণ্য করে না, আর বলেঃ এটা কি সেই লোক আল্লাহ যাকে রসূল করে পাঠিয়েছেন?

إِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ أَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ط وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ أَضَلُّ سَبِيْلًا (٤٢)

৪২. সে তো আমাদেরকে আমাদের ইলাহ্‌দের থেকে অবশ্যই সরিয়ে দিত যদি আমরা তাদের প্রতি দৃঢ়চিত্ত না থাকতাম। যখন তারা শাস্তি দেখবে তখন জানবে যে পথের ক্ষেত্রে কারা অধিক ভ্রষ্ট ছিল।

أَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ط أَفَأَنْتَ تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا لا (٤٣)

৪৩. তুমি কি তাকে দেখ না যে তার খেয়াল খুশিকে ইলাহ্‌রূপে গ্রহণ করেছে? এর পরেও কি তুমি তার কাজের জিম্মাদার হতে চাও?

أَمْ تَحْسَبُ أَنَّ أَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ أَوْ يَعْقِلُوْنَ ط إِنْ هُمْ إِلَّا كَالْأَنْعَامِ بَلْ هُمْ أَضَلُّ سَبِيْلًا ع (٤٤)

৪৪. তুমি কি এটা মনে কর যে, তাদের অধিকাংশ লোক শুনে বা বুঝে? তারা পশু বৈ তো নয়, বরং তারা সঠিক পথ থেকে আরো বেশি ভ্রষ্ট।

أَلَمْ تَرَ إِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ج وَلَوْ شَآءَ لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ج ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ

৪৫. তুমি কি তোমার প্রতিপালককে দেখ না কীভাবে তিনি ছায়াকে দীর্ঘ করেন (সূর্য উদয়ের সময়ে, অতঃপর তা ক্রমেই ছোট হতে হতে দুপুর বেলা ছায়া ক্ষুদ্র আকৃতি ধারণ করে,

عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۙ (٤٥)

দুপুরের পর আবার ছায়া দীর্ঘ হতে থাকে), তিনি চাইলে ছায়াকে অবশ্যই স্থির রাখতে পারতেন। সূর্যকেই আমি করেছি তার (অর্থাৎ ছায়ার) নির্ণায়ক (সূর্যের অবস্থানের কারণেই ছায়া ছোট ও দীর্ঘ হয়)।

ثُمَّ قَبَضْنٰهُ إِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا (٤٦)

৪৬. অতঃপর আমি তাকে নিজের দিকে গুটিয়ে নেই, ধীরে ধীরে ক্রমাগতভাবে (কারো মৃত্যু হলে, কিছু বিনাশ হলে, কিছু গুটানো হলে- সব কিছুই আল্লাহ্র দিকে চলে যায়)।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِبَاسًا وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا (٤٧)

৪৭. তিনিই তোমাদের জন্য রাতকে করেছেন আবরণ, নিদ্রাকে করেছেন আরামপ্রদ আর দিনকে করেছেন (নিদ্রারূপী সাময়িক মৃত্যুর পর) আবার জীবন্ত হয়ে উঠার সময়।

وَهُوَ الَّذِيْٓ أَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۙ (٤٨)

৪৮. তিনিই তার (বৃষ্টিরূপী) অনুগ্রহের পূর্বে সুসংবাদ হিসেবে বায়ু পাঠিয়ে দেন আর আমি আকাশ থেকে বিশুদ্ধ পানি বর্ষণ করি।

لِّنُحْيِيَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ أَنْعَامًا وَّأَنَاسِيَّ كَثِيْرًا (٤٩)

৪৯. যা দিয়ে আমি মৃত যমীনকে জীবিত করে তুলি এবং তৃষ্ণা নিবারণ করি আমার সৃষ্টির অন্তর্গত অনেক জীবজন্তুর ও মানুষের।

وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَأَبٰىٓ أَكْثَرُ النَّاسِ إِلَّا كُفُوْرًا (٥٠)

৫০. আমি পানিকে (সকলের প্রয়োজন মেটানোর জন্য) তাদের মাঝে বণ্টন করি যাতে তারা (আল্লাহ্র অনুগ্রহের কথা) স্মরণ করে, কিন্তু মানুষদের অধিকাংশই ঈমান গ্রহণ করতে অস্বীকার ক'রে কেবল কুফরিই করল।

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۖ (٥١)

৫১. আমি ইচ্ছে করলে প্রত্যেক জনবসতিতে সতর্ককারী পাঠাতাম। (কিন্তু সারা বিশ্বের জন্য একজন নবী পাঠিয়ে সকলকে একই উম্মাত হওয়ার অনুগ্রহ লাভে ধন্য করেছি)।

فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا كَبِيْرًا (٥٢)

৫২. কাজেই তুমি কাফিরদের আনুগত্য করো না: আর কুরআনের সাহায্যে তাদের বিরুদ্ধে সংগ্রাম কর- কঠোর সংগ্রাম।

وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ بَيْنَهُمَا

৫৩. তিনিই সমুদ্রকে দু' ধারায় প্রবাহিত করেছেন- একটি সুপেয় সুস্বাদু আরেকটি লবণাক্ত কটু, উভয়ের মাঝে টেনে দিয়েছেন এক

بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا (٥٣)

আবরণ– এক অনতিক্রম্য বিভক্তি-প্রাচীর।

وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ نَسَبًا وَّصِهْرًا ط وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا (٥٤)

৫৪. তিনিই পানি থেকে সৃষ্টি করেছেন মানুষ, অতঃপর মানুষকে করেছেন বংশ সম্পর্কীয় ও বিবাহ সম্পর্কীয়, তোমার প্রতিপালক সব কিছু করতে সক্ষম।

وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَضُرُّهُمْ ط وَكَانَ الْكٰفِرُ عَلٰى رَبِّهٖ ظَهِيْرًا (٥٥)

৫৫. তারা আল্লাহ্কে বাদ দিয়ে এমন কিছুর ‘ইবাদাত করে যা না পারে তাদের কোন উপকার করতে, আর না পারে কোন ক্ষতি করতে, আর কাফির হচ্ছে তার প্রতিপালকের বিরুদ্ধে সাহায্যকারী।

وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا (٥٦)

৫৬. আমি তোমাকে পাঠিয়েছি কেবল সুসংবাদদাতা ও ভয় প্রদর্শনকারী হিসেবে।

قُلْ مَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِلَّا مَنْ شَآءَ أَنْ يَّتَّخِذَ إِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا (٥٧)

৫৭. বল– এজন্য আমি তোমাদের কাছে এছাড়া কোন প্রতিদান চাই না যে, যার ইচ্ছে সে তার প্রতিপালকের দিকে পথ অবলম্বন করুক।

وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ط وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ خَبِيْرًا ج لا (٥٨)

৫৮. আর তুমি নির্ভর কর সেই চিরঞ্জীবের উপর যিনি মরবেন না। আর তাঁর প্রশংসা ও পবিত্রতা ঘোষণা কর। তিনি তাঁর বান্দাহ্দের গুনাহ্র খবর রাখার ব্যাপারে যথেষ্ট।

الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ج اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا (٥٩)

৫৯. তিনি আসমান, যমীন আর এ দু’য়ের ভিতরে যা আছে তা ছ’দিনে (ছ’টি সময় স্তরে) সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর আরশে সমুন্নত হয়েছেন। তিনিই রাহমান, কাজেই তাঁর সম্পর্কে তাকে জিজ্ঞেস কর যে এ সম্পর্কিত জ্ঞান রাখে।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ ج قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ق أَنَسْجُدُ لِمَا تَأْمُرُنَا وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ع السجدة (٦٠)

৬০. তাদেরকে যখন বলা হয় ‘রহমান’-এর উদ্দেশে সাজদায় অবনত হও, তারা বলে– ‘রহমান আবার কী? আমাদেরকে তুমি যাকেই সেজদা করতে বলবে আমরা তাকেই সেজদা করব নাকি?’ এতে তাদের অবাধ্যতাই বেড়ে যায়।[সিজদা]

تَبَارَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرَاجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا (٦١)

৬১. কতই না কল্যাণময় তিনি যিনি আসমানে নক্ষত্ররাজির সমাবেশ ঘটিয়েছেন আর তাতে স্থাপন করেছেন প্রদীপ আর আলো বিকিরণকারী চন্দ্র।

وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ خِلْفَةً لِّمَنْ أَرَادَ أَنْ يَّذَّكَّرَ أَوْ أَرَادَ شُكُوْرًا (٦٢)

৬২. আর তিনিই রাত আর দিনকে করেছেন পরস্পরের অনুগামী তাদের জন্য যারা উপদেশ গ্রহণ করতে চায়, অথবা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করতে চায়।

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى الْأَرْضِ هَوْنًا وَّإِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ قَالُوْا سَلَامًا (٦٣)

৬৩. আর রহমানের বান্দা তারাই যারা যমীনে নম্রভাবে চলাফেরা করে আর অজ্ঞ লোকেরা তাদেরকে সম্বোধন করলে তারা বলে– 'শান্তি', (আমরা বিতর্কে লিপ্ত হতে চায় না)।

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا وَّقِيَامًا (٦٤)

৬৪. আর তারা রাত কাটায় তাদের প্রতিপালকের উদ্দেশে সাজদায় অবনত ও দণ্ডায়মান অবস্থায়।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ ق صلے إِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ق صلے (٦٥)

৬৫. আর তারা বলেঃ 'হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি আমাদের থেকে জাহান্নামের শাস্তি দূর কর, তার শাস্তি তো ভয়াবহ বিপদ।'

إِنَّهَا سَاءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا (٦٦)

৬৬. তা আবাসস্থল আর অবস্থান নেয়ার জায়গা হিসেবে কতই না নিকৃষ্ট!

وَالَّذِيْنَ إِذَآ أَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا (٦٧)

৬৭. আর যখন তারা ব্যয় করে তখন অপব্যয় করে না, আর কৃপণতাও করে না; এ দু'য়ের মধ্যবর্তী পন্থা গ্রহণ করে।

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللهِ إِلٰهًا اٰخَرَ وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللهُ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ط ج وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ يَلْقَ أَثَامًا ۙ (٦٨)

৬৮. তারা আল্লাহ্‌র সাথে অন্য কোন ইলাহ্‌কে ডাকে না। আর যথার্থতা ব্যতীত কোন প্রাণ হত্যা করে না যা আল্লাহ নিষিদ্ধ করেছেন আর তারা ব্যভিচার করে না। আর যে এগুলো করে সে শাস্তির সাক্ষাৎ লাভ করবে।

৬৮। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর কাছে জিজ্ঞেস করলাম, অথবা অন্য কেউ জিজ্ঞেস করলো, আল্লাহ্‌র নিকট সবচেয়ে বড় গুনাহ্ কোন্‌টি? তিনি বললেন, কাউকে আল্লাহ্‌র সমকক্ষ স্থির করা, অথচ তিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন। আমি জিজ্ঞেস করলাম, এরপর কোন্‌টি? তিনি জবাব দিলেন, তোমার সন্তানকে এ আশংকায় হত্যা করা যে, তারা তোমার খাদ্যে ভাগ বসাবে। আমি বললাম, এরপর কোন্‌টি? তিনি বললেন,এরপর হচ্ছে তোমার প্রতিবেশীর স্ত্রীর সঙ্গে ব্যভিচার করা। বর্ণনাকারী বলেন, তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর এ কথার সমর্থনে এ আয়াত অবতীর্ণ হয়– "এবং তারা আল্লাহ্‌র সঙ্গে কোন ইলাহ্‌কে আহ্বান করে না। আল্লাহ্ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন, যথার্থ কারণ ছাড়া তাকে হত্যা করে না।" –বুখারী ৪৭৬১ [৪৪৭৭; মুসলিম ৮৬, তিরমিযী ৩১৮২, ৩১৮৩; নাসায়ী ৪০১৩-৪০১৫, আবূ দাউদ ২৩১০, আহমাদ ৩৬০১, ৪০৯১]

يُّضَاعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ق صلے (٦٩)

৬৯. ক্বিয়ামতের দিন তার শাস্তি দ্বিগুণ করা হবে আর সে সেখানে লাঞ্ছিত হয়ে চিরবাস করবে।

إِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَأُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ط وَكَانَ اللهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (٧٠)

৭০. তবে তারা নয় যারা তাওবাহ করবে, ঈমান আনবে, আর সৎ কাজ করবে। আল্লাহ এদের পাপগুলোকে পুণ্যে পরিবর্তিত করে দেবেন; আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَإِنَّهٗ يَتُوْبُ إِلَى اللهِ مَتَابًا (٧١)

৭১. আর যে ব্যক্তি তাওবাহ করে আর সৎকাজ করে, সে আল্লাহ্‌র দিকে প্রত্যাবর্তন করে- পূর্ণ প্রত্যাবর্তন।

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ لا وَإِذَا مَرُّوْا بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا (٧٢)

৭২. আর যারা মিথ্যে সাক্ষ্য দেয় না, আর বেহুদা কর্মকাণ্ডের পাশ দিয়ে অতিক্রম করলে সসম্মানে পাশ কাটিয়ে চলে যায়।

وَالَّذِيْنَ إِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا (٧٣)

৭৩. আর তাদেরকে তাদের প্রতিপালকের আয়াত স্মরণ করিয়ে দেয়া হলে যারা তার প্রতি বধির ও অন্ধের ন্যায় আচরণ করে না (শুনেও শুনে না, দেখেও দেখে না- এমন করে না)।

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ

৭৪. আর যারা প্রার্থনা করেঃ হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে এমন স্ত্রী ও সন্তানাদি

৬৯-৭০। সা'ঈদ ইব্‌নু যুবায়র (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, ইব্‌নু আবযা (রাঃ) বলেন, ইব্‌নু 'আব্বাসকে জিজ্ঞেস করা হল, আল্লাহ্ তা'আলার বাণীঃ "কেউ ইচ্ছাকৃতভাবে কোন মু'মিনকে হত্যা করলে তার শাস্তি জাহান্নাম" এবং আল্লাহ্‌র এ বাণীঃ "এবং আল্লাহ যার হত্যা নিষেধ করেছেন যথার্থ কারণ ব্যতীত, তারা তাকে হত্যা করে না" এবং "কিন্তু যারা তাওবাহ করে" পর্যন্ত সম্পর্কে। আমিও তাঁকে জিজ্ঞেস করলাম। তখন তিনি উত্তরে বললেন, যখন এ আয়াত নাযিল হল তখন মক্কাবাসী বলল, আমরা আল্লাহ্‌র সাথে শারীক করেছি, আল্লাহ্ যার হত্যা নিষিদ্ধ করেছেন যথার্থ কারণ ব্যতীত তাকে হত্যা করেছি এবং আমরা অশ্লীল কার্যে লিপ্ত হয়েছি। তারপর আল্লাহ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করলেন, "যারা তওবাহ করে, ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে।" إِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا থেকে غَفُوْرًا رَّحِيْمًا পর্যন্ত। -বুখারী ৪৭৬৫ [৩৮৫৫; মুসলিম ৩০২৩, নাসায়ী ৪০০২, আবূ দাঊদ ৪২৭৩, ৪২৭৫]

৭২। আবূ বাক্‌র (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) একদা তিনবার বললেন, আমি কি তোমাদেরকে সবচেয়ে বড় কবীরা গুনাহগুলো সম্পর্কে অবহিত করব না? সকলে বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! অবশ্য বলুন। তিনি বললেন, আল্লাহর সঙ্গে শির্ক করা এবং পিতা-মাতার অবাধ্য হওয়া। তিনি হেলান দিয়ে বসেছিলেন; এবার সোজা হয়ে বসলেন এবং বললেন, শুনে রাখ, মিথ্যা সাক্ষ্য দেয়া, এ কথাটি তিনি বার বার বলতে থাকলেন। এমনকি আমরা বলতে লাগলাম, আর যদি তিনি না বলতেন। -বুখারী ২৬৫৪ [৫৯৭৬, ৬২৭৩, ৬২৭৪, ৬৯১৯; মুসলিম ৮৭, তিরমিযী ১৯০১, ২৩০১, ৩০১৯; আহমাদ ১৯৮৭২, ১৯৮৮১]

Contents

أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا (٧٤)

দান কর যারা আমাদের চোখ জুড়িয়ে দেয় আর আমাদেরকে মুত্তাকীদের নেতা বানিয়ে দাও।

أُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۙ (٧٥)

৭৫. এদেরকেই তাদের ধৈর্যধারণের কারণে জান্নাতের সুউচ্চ স্থান দান ক'রে পুরস্কৃত করা হবে। সেখানে তাদেরকে অভ্যর্থনা জানানো হবে সংবর্ধনা ও সালাম জানিয়ে।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا (٧٦)

৭৬. সেখানে তারা চিরকাল থাকবে, আবাসস্থল ও অবস্থানস্থল হিসেবে তা কতই না উৎকৃষ্ট!

قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ع (٧٧)

৭৭. (কাফিরদেরকে) বলঃ 'তোমাদের ব্যাপারে আমার প্রতিপালকের কী প্রয়োজন পড়েছে তোমরা যদি তাঁকে না ডাকো? তোমরা তো তাঁকে অস্বীকার করেছ, কাজেই শীঘ্রই তোমাদের উপর এসে পড়বে অপ্রতিরোধ্য (শাস্তি)।

২৬. সূরাহ আশ্-শু'আরা

سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ

আয়াতঃ ২২৭, রুকূ'ঃ ১১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

طٰسٓمّٓ (١)

১. ত্ব-সীন-মীম।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ (٢)

২. এগুলো সুস্পষ্ট (বা সুস্পষ্টকারী) কিতাবের আয়াত।

لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ (٣)

৩. তুমি হয়ত এ দুঃখে তোমার প্রাণনাশ করবে যে, তারা মু'মিন হচ্ছে না।

إِنْ نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ (٤)

৪. আমি ইচ্ছে করলে তাদের কাছে আসমান থেকে এমন নিদর্শন পাঠাতাম যে তার সামনে তাদের মাথা নত হয়ে যেত (অর্থাৎ তারা ঈমান আনতে বাধ্য হত)।

৭৭। 'আবদুল্লাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, পাঁচটি ঘটনা ঘটে গেছে ধূম্রাচ্ছন্ন, চন্দ্র খণ্ডিত হওয়া, রোমানদের পরাজিত হওয়া, প্রবলভাবে পাকড়াও এবং ধ্বংস হওয়া। لِزَامًا ধ্বংস। -বুখারী ৪৭৬৭ [১০০৭; মুসলিম ২৭৯৮, তিরমিযী ৩২৫৪, আহমাদ ৩৬০২, ৪০৯৩, ৪১৯৪]

وَمَا يَأْتِيهِم مِّن ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمَٰنِ مُحْدَثٍ إِلَّا كَانُوا عَنْهُ مُعْرِضِينَ (٥)

৫. তাদের কাছে যখনই দয়াময় আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে নতুন কোন নসীহত আসে তখনই তারা তাথেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

فَقَدْ كَذَّبُوا فَسَيَأْتِيهِمْ أَنبَاءُ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (٦)

৬. তারা (আল্লাহ্‌র বাণীকে) অস্বীকারই করেছে, শীঘ্রই তাদের কাছে তার সত্য উদ্‌ঘাটিত হবে যা নিয়ে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত।

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنبَتْنَا فِيهَا مِن كُلِّ زَوْجٍ كَرِيمٍ (٧)

৭. তারা কি যমীনের দিকে চেয়ে দেখে না, আমি তাতে সব ধরনের উৎকৃষ্ট উদ্ভিদ পয়দা করেছি।

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم مُّؤْمِنِينَ (٨)

৮. অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে (আল্লাহ সম্পর্কে চিন্তা ক'রে ঈমান আনার জন্য), কিন্তু তাদের অধিকাংশই ঈমান আনে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ع (٩)

৯. নিশ্চয় তোমার প্রতিপালক মহা পরাক্রমশালী, অতি দয়ালু।

وَإِذْ نَادَىٰ رَبُّكَ مُوسَىٰ أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ۙ (١٠)

১০. স্মরণ কর, যখন তোমার প্রতিপালক মূসাকে ডাক দিয়ে বললেন, 'তুমি যালিম সম্প্রদায়ের কাছে যাও,

قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُونَ (١١)

১১. ফেরাউনের সম্প্রদায়ের কাছে। তারা কি ভয় করে না?

قَالَ رَبِّ إِنِّي أَخَافُ أَن يُكَذِّبُونِ ۖ (١٢)

১২. সে বলেছিল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমার ভয় হচ্ছে তারা আমাকে মিথ্যে মনে ক'রে প্রত্যাখ্যান করবে।

وَيَضِيقُ صَدْرِي وَلَا يَنطَلِقُ لِسَانِي فَأَرْسِلْ إِلَىٰ هَارُونَ (١٣)

১৩. আর আমার অন্তর সংকুচিত হয়ে যাচ্ছে, আমার জিহ্বা সাবলীলভাবে কথা বলতে পারে না। কাজেই আপনি হারূনের প্রতি রিসালাত দিন।

وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنبٌ فَأَخَافُ أَن يَقْتُلُونِ ج صلے (١٤)

১৪. তদুপরি আমার বিরুদ্ধে অপরাধের অভিযোগও তাদের আছে, কাজেই আমার ভয় হচ্ছে তারা আমাকে হত্যা করবে।'

قَالَ كَلَّا ۖ فَاذْهَبَا بِآيَاتِنَا ۖ إِنَّا مَعَكُم مُّسْتَمِعُونَ (١٥)

১৫. আল্লাহ বললেন, 'কক্ষনো না, তোমরা দু'জনে আমার (দেয়া) নিদর্শন নিয়ে যাও, আমি তোমাদের সঙ্গে থেকে সব কিছু শুনতে থাকব।

فَأْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ إِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لا (١٦)

১৬. কাজেই তোমরা দু'জনে ফেরাউনের কাছে যাও আর গিয়ে বল যে, আমরা বিশ্বজগতের প্রতিপালকের প্রেরিত রসূল।

أَنْ أَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ط (١٧)

১৭. বানী ইসরাঈলকে আমাদের সঙ্গে পাঠিয়ে দাও।'

قَالَ أَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ لا (١٨)

১৮. ফেরাউন বলল, 'আমরা কি তোমাকে শিশুকালে আমাদের মধ্যে লালন পালন করিনি? আর তুমি কি তোমার জীবনের কতকগুলো বছর আমাদের মাঝে কাটাওনি?

وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَأَنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ (١٩)

১৯. তুমি তোমার কর্ম যা করার করেছ (আমাদের একজন লোককে হত্যা ক'রে), তুমি বড় অকৃতজ্ঞ।'

قَالَ فَعَلْتُهَآ إِذًا وَّأَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ط (٢٠)

২০. মূসা বললঃ 'আমি তো তা করেছিলাম সে সময় যখন আমি ছিলাম (সঠিক পথ সম্পর্কে) অজ্ঞ।

فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (٢١)

২১. অতঃপর তোমাদের ভয়ে ভীত হয়ে আমি তোমাদের থেকে পালিয়ে গেলাম। অতঃপর আমার রব্ব আমাকে প্রজ্ঞা দান করলেন, আর আমাকে করলেন রসূলদের একজন।

وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ أَنْ عَبَّدْتَّ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ط (٢٢)

২২. তুমি আমার প্রতি তোমার যে অনুগ্রহের খোঁটা দিচ্ছ তাতো এই যে, তুমি বানী ইসরাঈলকে দাসে পরিণত করেছ।'

قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (٢٣)

২৩. ফেরাউন বললঃ 'বিশ্বজগতের প্রতিপালক আবার কী?'

قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ط إِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ (٢٤)

২৪. মূসা বললঃ '(যিনি) আসমান ও যমীন ও এ দু'য়ের মাঝে যা কিছু আছে সব কিছুর প্রতিপালক– যদি তোমরা নিঃসন্দেহে বিশ্বাসী হও।

قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ أَلَا تَسْتَمِعُوْنَ (٢٥)

২৫. ফেরাউন তার চারপাশের লোকেদেরকে বলল– 'তোমরা শুনছ তো?'

قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْأَوَّلِيْنَ (٢٦)

২৬. মূসা বললঃ '(তিনি) তোমাদের প্রতিপালক ও শুরু থেকে পূর্ববর্তী তোমাদের বাপ-দাদাদেরও প্রতিপালক।'

قَالَ إِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ أُرْسِلَ إِلَيْكُمْ لَمَجْنُوْنٌ (٢٧)

২৭. (ফেরাউন) বললঃ 'তোমাদের রসূল যে তোমাদের নিকট প্রেরিত হয়েছে সে নিশ্চিতই পাগল।'

قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ط إِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ (٢٨)

২৮. (মূসা) বললঃ '(তিনিই) পূর্ব ও পশ্চিমের প্রতিপালক, আর এ উভয় দিকের মাঝে যা আছে তারও– যদি তোমাদের বুদ্ধিসুদ্ধি থাকে।'

قَالَ لَئِنِ اتَّخَذْتَ إِلٰهًا غَيْرِيْ لَأَجْعَلَنَّكَ مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ (٢٩)

২৯. (ফেরাউন) বললঃ 'যদি তুমি আমাকে বাদ দিয়ে (অন্য কিছুকে) ইলাহ হিসেবে গ্রহণ কর, তাহলে আমি তোমাকে অবশ্য অবশ্যই কারারুদ্ধ করব।'

قَالَ أَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ج (٣٠)

৩০. (মূসা) বললঃ 'আমি যদি তোমার কাছে কোন স্পষ্ট জিনিস নিয়ে আমি তবুও?

قَالَ فَأْتِ بِهٖٓ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٣١)

৩১. (ফেরাউন) বললঃ 'তাহলে তা আনো, যদি তুমি সত্যবাদী হও।'

فَأَلْقٰى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ج صلے (٣٢)

৩২. তখন মূসা তার লাঠি ছুঁড়ে দিল আর সহসাই তা স্পষ্ট এক অজগর হয়ে গেল।

وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَإِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ع (٣٣)

৩৩. আর মূসা (বগলের নীচ দিয়ে) নিজের হাত টেনে বের করল, আর তা দর্শকদের সামনে ঝকমক করতে লাগল।

قَالَ لِلْمَلَإِ حَوْلَهٗٓ إِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ لا (٣٤)

৩৪. ফেরাউন তার চারপাশের প্রধানদের বললঃ 'সে অবশ্যই এক দক্ষ যাদুকর।

يُرِيْدُ أَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ أَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ق صلے فَمَاذَا تَأْمُرُوْنَ (٣٥)

৩৫. যাদুর বলে সে তোমাদেরকে তোমাদের দেশ থেকে বের করে দিতে চায়। এখন বল তোমাদের নির্দেশ কী?'

قَالُوْٓا أَرْجِهْ وَأَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ لا (٣٦)

৩৬. তারা বললঃ 'তাকে ও তার ভাইকে (কিছু সময়) অপেক্ষায় ফেলে রাখুন আর জড়ো করার জন্য ঘোষকদেরকে নগরে নগরে পাঠিয়ে দিন।

يَأْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ (٣٧)

৩৭. তারা আপনার কাছে প্রত্যেকটি অভিজ্ঞ যাদুকরকে নিয়ে আসবে।'

فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ لا (٣٨)

৩৮. কাজেই যাদুকরদেরকে একত্রিত করা হল একটি নির্দিষ্ট দিন ক্ষণের জন্য যা ছিল সুবিদিত।

وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ أَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ لا (٣٩)

৩৯. আর জনগণকে বলা হল- 'তোমরা কি সম্মিলিত হবে?

لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ إِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ (٤٠)

৪০. যাতে আমরা যাদুকরদের (এবং তাদের প্রধান পৃষ্ঠপোষক ফেরাউনের) দীন অনুসরণ

করতে পারি যদি তারা বিজয়ী হয়।

فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ أَئِنَّ لَنَا لَأَجْرًا إِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ (٤١)

৪১. যাদুকররা যখন আসলো, তারা ফেরাউনকে বললঃ 'আমরা জয়ী হলে আমাদেরকে পুরস্কার দেয়া হবে তো?'

قَالَ نَعَمْ وَإِنَّكُمْ إِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ (٤٢)

৪২. ফেরাউন বলল- 'হাঁ, তখন তোমরা অবশ্যই আমার নৈকট্যলাভকারীদের অন্তর্ভুক্ত হবে।'

قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى أَلْقُوْا مَآ أَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ (٤٣)

৪৩. মূসা তাদেরকে বলল- 'নিক্ষেপ কর যা তোমরা নিক্ষেপ করবে।'

فَأَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ فِرْعَوْنَ إِنَّا لَنَحْنُ الْغَالِبُوْنَ (٤٤)

৪৪. তখন তারা তাদের রশিগুলো ও লাঠিগুলো নিক্ষেপ করল আর তারা বলল- 'ফেরাউনের ইয্যতের শপথ! আমরা অবশ্যই জয়ী হব।'

فَأَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَإِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَأْفِكُوْنَ ج صلے (٤٥)

৪৫. অতঃপর মূসা তার লাঠি নিক্ষেপ করল। হঠাৎ তা তাদের অলীক কীর্তিগুলোকে গিলতে লাগল।

فَأُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ لا (٤٦)

৪৬. তখন যাদুকররা সিজদায় লুটিয়ে পড়ল।

قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ لا (٤٧)

৪৭. তারা বলল- 'আমরা বিশ্বাস স্থাপন করলাম রাব্বুল 'আলামীনের প্রতি,

رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (٤٨)

৪৮. যিনি মূসা ও হারুনের প্রতিপালক।'

قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ أَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ج إِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ج فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ط لَأُقَطِّعَنَّ أَيْدِيَكُمْ وَأَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَأُصَلِّبَنَّكُمْ أَجْمَعِيْنَ ج (٤٩)

৪৯. ফেরাউন বলল- 'আমি তোমাদেরকে অনুমতি দেয়ার আগেই তোমরা তাতে বিশ্বাস আনলে? নিশ্চয়ই সে তোমাদের ওস্তাদ যে তোমাদেরকে যাদু শিখিয়েছে। শীঘ্রই তোমরা (এর পরিণাম) জানতে পারবে। আমি অবশ্য অবশ্যই তোমাদের হাত-পাগুলোকে বিপরীত দিক থেকে কেটে ফেলব আর তোমাদের সব্বাইকে অবশ্য অবশ্যই 'শূলে চড়াব।

قَالُوْا لَا ضَيْرَ ز إِنَّآ إِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ج (٥٠)

৫০. তারা বলল- কোনই ক্ষতি নেই, আমরা আমাদের প্রতিপালকের পানে প্রত্যাবর্তন করব।

إِنَّا نَطْمَعُ أَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ أَنْ كُنَّآ أَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ط ع (٥١)

৫১. আমাদের একমাত্র আশা এই যে, আমাদের প্রতিপালক আমাদের ত্রুটি-বিচ্যুতি ক্ষমা করবেন, কারণ আমরা বিশ্বাস স্থাপনকারীদের মধ্যে প্রথম।'

وَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوْسَىٰٓ أَنْ أَسْرِ بِعِبَادِيْٓ إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ (٥٢)

৫২. আমি মূসাকে ওহীযোগে নির্দেশ দিলাম আমার বান্দাদেরকে নিয়ে রাত্রিকালে বের হয়ে যাও, নিশ্চয়ই তোমাদের পশ্চাদ্ধাবন করা হবে।

فَأَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِي الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ج (٥٣)

৫৩. অতঃপর ফেরাউন শহরে নগরে সংগ্রাহক পাঠিয়ে দিল।

إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ لا (٥٤)

৫৪. (এই ব'লে যে) এরা (বানী ইসরাঈলরা) ক্ষুদ্র একটি দল।

وَإِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ لا (٥٥)

৫৫. তারা আমাদেরকে অবশ্যই ক্রোধান্বিত করেছে।

وَإِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ط (٥٦)

৫৬. আর আমরা অবশ্যই সদা সতর্ক একটি দল।

فَأَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ لا (٥٧)

৫৭. এভাবে আমি ফেরাউন গোষ্ঠীকে (তাদের নিজেদেরই) উদ্যানরাজি আর ঝর্ণাসমূহ থেকে বহিস্কার করলাম।

وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ لا (٥٨)

৫৮. আর ধনভণ্ডারসমূহ ও সম্মানজনক অবস্থান থেকে।

كَذٰلِكَ ط وَأَوْرَثْنٰهَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ط (٥٩)

৫৯. এভাবেই ঘটেছিল, আমি বানী ইসরাঈলকে এসব কিছুর উত্তরাধিকারী করে দিয়েছিলাম।

فَأَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ (٦٠)

৬০. কাজেই তারা (অর্থাৎ ফেরাউন গোষ্ঠী) সূর্যোদয়কালে তাদের পশ্চাদ্ধাবন করল।

فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ أَصْحٰبُ مُوْسٰٓى إِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ج (٦١)

৬১. যখন দু'দল পরস্পরকে দেখল তখন মূসার সঙ্গীরা বলল– 'আমরা তো ধরা পড়েই গেলাম।'

قَالَ كَلَّا ج إِنَّ مَعِيَ رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ (٦٢)

৬২. মূসা বলল– 'কক্ষনো না, আমার রব আমার সঙ্গে আছেন, শীঘ্রই তিনি আমাকে পথ নির্দেশ করবেন।

فَأَوْحَيْنَآ إِلَىٰ مُوْسَىٰٓ أَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْبَحْرَ ط فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ الْعَظِيْمِ ج (٦٣)

৬৩. তখন আমি মূসার প্রতি ওয়াহী করলাম– 'তোমার লাঠি দিয়ে সমুদ্রে আঘাত কর।' ফলে তা বিভক্ত হয়ে প্রত্যেক ভাগ সুবিশাল পর্বতের ন্যায় হয়ে গেল।

وَأَزْلَفْنَا ثَمَّ الْأٰخَرِيْنَ ج (٦٤)

৬৪. আমি সেখানে অপর দলটিকে পৌঁছে দিলাম।

وَأَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ أَجْمَعِيْنَ ج (٦٥)

৬৫. আর মূসা ও তার সঙ্গী সবাইকে উদ্ধার করলাম।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ط (٦٦)

৬৬. অতঃপর অপর দলটিকে ডুবিয়ে মারলাম।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٦٧)

৬৭. এতে অবশ্যই নিদর্শন আছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (٦٨)

৬৮. তোমার পালনকর্তা অবশ্যই পরাক্রমশালী, বড়ই দয়ালু।

وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ إِبْرٰهِيْمَ م (٦٩)

৬৯. ওদেরকে ইবরাহীমের বৃত্তান্ত শুনিয়ে দাও।

إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ (٧٠)

৭০. যখন সে তার পিতা ও তার সম্প্রদায়কে বলেছিল– 'তোমরা কিসের ইবাদত কর?'

قَالُوْا نَعْبُدُ أَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ (٧١)

৭১. তারা বলেছিল– 'আমরা মূর্তির পূজা করি, আর আমরা সদা সর্বদা তাদেরকে আঁকড়ে থাকি।'

قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ إِذْ تَدْعُوْنَ لا (٧٢)

৭২. ইব্রাহীম বলল– 'তোমরা যখন (তাদেরকে) ডাক তখন কি তারা তোমাদের কথা শোনে?

أَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ أَوْ يَضُرُّوْنَ (٧٣)

৭৩. কিংবা তোমাদের উপকার করে অথবা অপকার?'

قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَا اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ (٧٤)

৭৪. তারা বলল– 'না তবে আমরা আমাদের পিতৃদেরকে এরকম করতে দেখেছি।'

قَالَ أَفَرَأَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ لا (٧٥)

৭৫. সে বলল-তোমরা কি ভেবে দেখেছ তোমরা কিসের পূজা করে যাচ্ছ?

أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْأَقْدَمُوْنَ ز (٧٦)

৭৬. তোমরা আর তোমাদের আগের পিতৃপুরুষরা?

فَإِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ إِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ لا (٧٧)

৭৭. তারা সবাই আমার শত্রু, বিশ্বজগতের পালনকর্তা ছাড়া।

الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ لا (٧٨)

৭৮. তিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন অতঃপর তিনিই আমাকে পথ দেখান।

وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ لا (٧٩)

৭৯. আর তিনিই আমাকে খাওয়ান ও পান করান।

وَإِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ص لا (٨٠)

৮০. আর আমি যখন পীড়িত হই তখন তিনিই আমাকে আরোগ্য করেন।

وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ لا (٨١)

৮১. যিনি আমার মৃত্যু ঘটাবেন, পুনরায় আমাকে জীবিত করবেন।

وَالَّذِيْٓ أَطْمَعُ أَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓئَتِيْ يَوْمَ الدِّيْنِ ط (٨٢)

৮২. আর যিনি, আমি আশা করি– কিয়ামাতের দিন আমার দোষ-ত্রুটি ক্ষমা করে দেবেন।

৮৩. হে আমার পালনকর্তা! আমাকে প্রজ্ঞা দান কর এবং আমাকে সৎকর্মশীলদের অর্ন্তভুক্ত কর।

رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّأَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ لا (٨٣)

৮৪. এবং আমাকে পরবর্তীদের মধ্যে সত্যভাষী কর।

وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ لا (٨٤)

৮৫. এবং আমাকে নি'য়ামাতপূর্ণ জান্নাতের উত্তরাধিকারীদের অন্তর্ভুক্ত কর।

وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ لا (٨٥)

৮৬. আর তুমি আমার পিতাকে ক্ষমা কর, তিনি তো গুমরাহ্দের অর্ন্তভুক্ত।

وَاغْفِرْ لِأَبِيْٓ إِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ لا (٨٦)

৮৭. এবং পুনরুত্থান দিবসে আমাকে অপমানিত করো না।

وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ لا (٨٧)

৮৮. যেদিন ধন-সম্পদ ও সন্তান-সন্তুতি কোন কাজে আসবে না।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ لا (٨٨)

৮৯. কেবল (সাফল্য লাভ করবে) সে ব্যক্তি যে বিশুদ্ধ অন্তর নিয়ে আল্লাহর নিকট আসবে।

إِلَّا مَنْ أَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ط (٨٩)

৯০. আর জান্নাতকে মুত্তাকীদের নিকটবর্তী করা হবে।

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ لا (٩٠)

৯১. এবং পথভ্রষ্টদের সম্মুখে জাহান্নামকে উন্মোচিত করা হবে।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ لا (٩١)

৯২. আর তাদেরকে বলা হবে, তোমরা যার 'ইবাদাত করতে তারা কোথায়

وَقِيْلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ لا (٩٢)

৯৩. আল্লাহকে বাদ দিয়ে? তারা কি তোমাদের সাহায্য করতে পারে কিংবা তাদের নিজেদেরকে সাহায্য করতে পারে?

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ أَوْ يَنْتَصِرُوْنَ ط (٩٣)

৯৪. অতঃপর তাদেরকে ও পথভ্রষ্টদেরকে জাহান্নামে মুখের ভরে নিক্ষেপ করা হবে।

فَكُبْكِبُوْا فِيْهَا هُمْ وَالْغَاوٗنَ لا (٩٤)

৯৫. আর ইবলীসের দলবল সবাইকে।

وَجُنُوْدُ إِبْلِيْسَ أَجْمَعُوْنَ ط (٩٥)

৯৬. সেখানে তারা বিতর্কে লিপ্ত হয়ে বলবে,

قَالُوْا وَهُمْ فِيْهَا يَخْتَصِمُوْنَ لا (٩٦)

৯৭. 'আল্লাহর কসম! আমরা অবশ্য স্পষ্ট গুমরাহীতে ছিলাম।

تَاللّٰهِ إِنْ كُنَّا لَفِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ لا (٩٧)

৮৭। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেন, হাশরের ময়দানে ইব্রাহীম ('আ.) তাঁর পিতার সাক্ষাৎ পেয়ে বলবেন, ইয়া রব! আপনি আমার সঙ্গে ওয়া'দা করেছেন যে, ক্বিয়ামাতের দিন আমাকে লাঞ্ছিত করবেন না। আল্লাহ তা'আলা বলবেন, আমি কাফিরদের উপর জান্নাত হারাম করে দিয়েছি। –বুখারী ৪৭৬৯ [৩৩৫০]

إِذْ نُسَوِّيْكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٩٨)

৯৮. যখন আমরা তোমাদেরকে সর্বজগতের পালনকর্তার সমকক্ষ স্থির করতাম।

وَمَآ أَضَلَّنَآ إِلَّا الْمُجْرِمُوْنَ (٩٩)

৯৯. অপরাধীরাই আমাদেরকে গোমরাহ্ করেছিল।

فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِيْنَ لا (١٠٠)

১০০. কাজেই আমাদের কোন সুপারিশকারী নেই।

وَلَا صَدِيْقٍ حَمِيْمٍ (١٠١)

১০১. একজন অন্তরঙ্গ বন্ধুও নেই।

فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (١٠٢)

১০২. আমাদের যদি একটিবার পৃথিবীতে ফিরে যাওয়ার সুযোগ হত, তাহলে আমরা মু'মিনদের অর্ন্তভুক্ত হয়ে যেতাম।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٠٣)

১০৩. এতে অবশ্যই নিদর্শন আছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই ঈমান আনে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (١٠٤)

১০৪. তোমার প্রতিপালক, তিনি অবশ্যই মহা পরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوْحِ نِالْمُرْسَلِيْنَ ج صلے (١٠٥)

১০৫. নূহের কওম রসুলগণকে মিথ্যে ব'লে প্রত্যাখান করেছিল।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوْهُمْ نُوْحٌ أَلَا تَتَّقُوْنَ ج (١٠٦)

১০৬. যখন তাদের ভ্রাতা নূহ তাদেরকে বলেছিল– 'তোমরা কি ভয় করবে না (আল্লাহ্‌কে)?

إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ لا (١٠٧)

১০৭. আমি তোমাদের জন্য (প্রেরিত) বিশ্বস্ত রাসুল।

فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ ج (١٠٨)

১০৮. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমার অনুসরণ কর।

وَمَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ج إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ج (١٠٩)

১০৯. আমি তার জন্য তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চাই না। আমার প্রতিদান একমাত্র বিশ্বজগতের প্রতিপালকের কাছেই আছে।'

فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ ط (١١٠)

১১০. কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌কে ভয় কর এবং আমার অনুসরণ কর।

قَالُوْٓا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُوْنَ ط (١١١)

১১১. তারা বলল– 'আমরা কি তোমার প্রতি বিশ্বাস করব যখন তোমার অনুসরণ করছে একেবারে নিম্নশ্রেণীর লোকেরা।'

قَالَ وَمَا عِلْمِيْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ج (١١٢)

১১২. নূহ বলল– 'তারা কী করত সেটা আমার জানা নেই।

১১৩. তাদের হিসাব নেয়া তো আমার প্রতিপালকের কাজ, যদি তোমরা বুঝতে!

إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّيْ لَوْ تَشْعُرُوْنَ ج (١١٣)

১১৪. মু'মিনদেরকে তাড়িয়ে দেয়া আমার কাজ নয়।

وَمَآ أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِيْنَ ج (١١٤)

১১৫. আমি তো শুধু একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী।'

إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ط (١١٥)

১১৬. তারা বলল– 'হে নূহ! তুমি যদি বিরত না হও, তাহলে তুমি নিশ্চিতই প্রস্তরাঘাতে নিহত হবে।'

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰنُوْحُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمَرْجُوْمِيْنَ ط (١١٦)

১১৭. নূহ বলল– 'হে আমার প্রতিপালক! আমার সম্প্রদায় আমাকে প্রত্যাখান করছে।

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِيْ كَذَّبُوْنِ ج صلے (١١٧)

১১৮. কাজেই তুমি আমার ও তাদের মধ্যে ফয়সালা ক'রে দাও, আর আমাকে ও আমার সঙ্গী মু'মিনদেরকে ক্ষমা কর।'

فَافْتَحْ بَيْنِيْ وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَّنَجِّنِيْ وَمَنْ مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (١١٨)

১১৯. অতঃপর আমি তাকে ও তার সঙ্গে যারা ছিল তাদেরকে বোঝাই নৌযানে রক্ষা করলাম।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ج (١١٩)

১২০. তারপর অবশিষ্ট সবাইকে ডুবিয়ে দিলাম।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبٰقِيْنَ ط (١٢٠)

১২১. অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাসী নয়।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٢١)

১২২. তোমার প্রতিপালক, অবশ্যই তিনি প্রবল পরাক্রান্ত, পরম দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (١٢٢)

১২৩. 'আদ সম্প্রদায় রসূলগণকে মিথ্যে সাব্যস্ত করেছিল।

كَذَّبَتْ عَادُ نِالْمُرْسَلِيْنَ ج صلے (١٢٣)

১২৪. যখন তাদের ভাই হূদ তাদেরকে বলল– 'তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوْهُمْ هُوْدٌ أَلَا تَتَّقُوْنَ ج (١٢٤)

১২৫. আমি তোমাদের জন্য (প্রেরিত) এক বিশ্বস্ত রসূল।

إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ لا (١٢٥)

১২৬. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমাকে মান্য কর।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوْنِ ج (١٢٦)

১২৭. আর এ জন্য আমি তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চাই না, আমার প্রতিদান আছে কেবল বিশ্বজগতের প্রতিপালকের নিকট।

وَمَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ج إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط (١٢٧)

أَتَبْنُوْنَ بِكُلِّ رِيْعٍ اٰيَةً تَعْبَثُوْنَ ۙ (١٢٨)

১২৮. তোমরা কি প্রতিটি উচ্চস্থানে অনর্থক স্মৃতিস্তম্ভ নির্মাণ করছ?

وَتَتَّخِذُوْنَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُوْنَ ج (١٢٩)

১২৯. আর বড় বড় প্রাসাদ নির্মাণ করছ. যেন তোমরা চিরদিন থাকবে?

وَإِذَا بَطَشْتُمْ بَطَشْتُمْ جَبَّارِيْنَ ج (١٣٠)

১৩০. আর যখন তোমরা (দুর্বল শ্রেণীর লোকদের উপর) আঘাত হান, তখন আঘাত হান নিষ্ঠুর মালিকের মত।

فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ ج (١٣١)

১৩১. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমাকে মান্য কর।

وَاتَّقُوا الَّذِيْٓ أَمَدَّكُمْ بِمَا تَعْلَمُوْنَ ج (١٣٢)

১৩২. ভয় কর তাঁকে যিনি তোমাদেরকে যাবতীয় বস্তু দান করেছেন যা তোমাদের জানা আছে।

أَمَدَّكُمْ بِأَنْعَامٍ وَّبَنِيْنَ ج ۙ (١٣٣)

১৩৩. যিনি তোমাদেরকে দান করেছেন গবাদি পশু ও সন্তান-সন্তুতি।

وَجَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ج (١٣٤)

১৩৪. আর উদ্যানরাজি ও ঝর্ণাসমূহ।

إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ط (١٣٥)

১৩৫. আমি তোমাদের জন্য মহা দিবসের শাস্তি র ভয় করছি।'

قَالُوْا سَوَآءٌ عَلَيْنَآ أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُنْ مِّنَ الْوٰعِظِيْنَ ۙ (١٣٦)

১৩৬. তারা বলল– 'তুমি নসীহত কর আর না কর, আমাদের জন্য দু'ই সমান।

إِنْ هٰذَآ إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِيْنَ ۙ (١٣٧)

১৩৭. এসব (কথাবার্তা বলা) পূর্ববর্তী লোকেদের অভ্যাস ছাড়া আর অন্য কিছুই না।

وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ج (١٣٨)

১৩৮. আমাদেরকে শাস্তি দেয়া হবে না।'

فَكَذَّبُوْهُ فَأَهْلَكْنٰهُمْ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٣٩)

১৩৯. অতঃপর তারা তাকে মিথ্যে ব'লে প্রত্যাখ্যান করল। তখন আমি তাদেরকে ধ্বংস করে দিলাম। অবশ্যই এতে নিদর্শন রয়েছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (١٤٠)

১৪০. এবং তোমার প্রতিপালক, তিনি মহা প্রতাপশালী, বড়ই দয়ালু।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ الْمُرْسَلِيْنَ ج صلے (١٤١)

১৪১. সামূদ জাতি রসূলগণকে প্রত্যাখ্যান করেছিল।

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوْهُمْ صٰلِحٌ أَلَا تَتَّقُوْنَ ج (١٤٢)

১৪২. যখন তাদের ভাই সালিহ তাদেরকে বলেছিল- তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ ﴿١٤٣﴾

১৪৩. আমি তোমাদের জন্য (প্রেরিত) বিশ্বস্ত রসূল।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوْنِ ﴿١٤٤﴾

১৪৪. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমাকে মান্য কর।

وَمَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٤٥﴾

১৪৫. আর এজন্য আমি তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চাই না, আমার প্রতিদান তো আছে একমাত্র বিশ্বজগতের প্রতিপালকের নিকট।

أَتُتْرَكُوْنَ فِيْ مَا هٰهُنَآ اٰمِنِيْنَ ﴿١٤٦﴾

১৪৬. তোমাদেরকে কি এখানে যে সব (ভোগ বিলাস) আছে তাতেই নিরাপদে রেখে দেয়া হবে?

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ﴿١٤٧﴾

১৪৭. উদ্যানরাজি আর ঝর্ণাসমূহে।

وَّزُرُوْعٍ وَّنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيْمٌ ﴿١٤٨﴾

১৪৮. আর শষ্যক্ষেতে ও ফুলে আচ্ছাদিত (ফলে ভারাক্রান্ত) খেজুর বাগানে?

وَتَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا فٰرِهِيْنَ ﴿١٤٩﴾

১৪৯. এবং তোমরা দক্ষতার সাথে পাহাড় কেটে গৃহ নির্মাণ করছ।

فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَأَطِيْعُوْنِ ﴿١٥٠﴾

১৫০. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমাকে মান্য কর।

وَلَا تُطِيْعُوْٓا أَمْرَ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿١٥١﴾

১৫১. এবং সীমালঙ্ঘনকারীদের নির্দেশ মান্য কর না।

الَّذِيْنَ يُفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ ﴿١٥٢﴾

১৫২. যারা পৃথিবীতে বিশৃঙ্খলা সৃষ্টি করে, সংস্কার করে না।'

قَالُوْٓا إِنَّمَآ أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ ﴿١٥٣﴾

১৫৩. তারা বলল– 'তুমি তো কেবল যাদুগ্রস্ত দের একজন।

مَآ أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۚ صلے فَأْتِ بِاٰيَةٍ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١٥٤﴾

১৫৪. তুমি আমাদের মত মানুষ ছাড়া আর কিছুই না। কাজেই তুমি সত্যবাদী হলে একটা নিদর্শন হাজির কর।

قَالَ هٰذِهٖ نَاقَةٌ لَّهَا شِرْبٌ وَّلَكُمْ شِرْبُ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿١٥٥﴾

১৫৫. সালিহ্ বলল- 'এই একটি উটনি, এর জন্য আছে পানি পানের পালা আর তোমাদের জন্য আছে পানি পানের পালা নির্ধারিত দিনে।

وَلَا تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ﴿١٥٦﴾

১৫৬. অনিষ্ট সাধনের নিমিত্তে তাকে স্পর্শ কর না, তাহলে তোমাদেরকে মহা দিবসের আযাব পাকড়াও করবে।

১৫৭. কিন্তু তারা তাকে বধ করল, ফলে তারা অনুতপ্ত হল।

فَعَقَرُوْهَا فَأَصْبَحُوْا نٰدِمِيْنَ ﴿١٥٧﴾

১৫৮. অতঃপর আযাব তাদেরকে পাকড়াও করল। এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٥٨﴾

১৫৯. আর তোমার প্রতিপালক তিনি তো মহা পরাক্রমশালী, বড়ই দয়ালু।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع ﴿١٥٩﴾

১৬০. লূতের সম্প্রদায় রসুলদেরকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করেছিল।

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطِ نِ الْمُرْسَلِيْنَ ج صلے ﴿١٦٠﴾

১৬১. যখন তাদের ভাই লূত তাদেরকে বলেছিল- 'তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوْهُمْ لُوْطٌ أَلَا تَتَّقُوْنَ ج ﴿١٦١﴾

১৬২. আমি তো তোমাদের জন্য (প্রেরিত) একজন বিশ্বস্ত রসূল।

إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ ﴿١٦٢﴾

১৬৩. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর ও আমাকে মান্য কর।

فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ ج ﴿١٦٣﴾

১৬৪. আমি এজন্য তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চাই না, আমার প্রতিদান একমাত্র জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট রয়েছে।

وَمَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ج إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط ﴿١٦٤﴾

১৬৫. জগতের সকল প্রাণীর মধ্যে তোমরাই কি পুরুষদের সঙ্গে উপগত হও,

أَتَأْتُوْنَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٥﴾

১৬৬. এবং তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের জন্য যে স্ত্রীগণকে সৃষ্টি করেছেন তাদেরকে ত্যাগ কর? রবং তোমরা এক সীমালঙ্ঘনকারী সম্প্রদায়।'

وَتَذَرُوْنَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ ط بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عٰدُوْنَ ﴿١٦٦﴾

১৬৭. তারা বলল- 'হে লূত! তুমি যদি বিরত না হও তবে তুমি অবশ্য অবশ্যই বহিস্কৃত হবে।'

قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهِ يٰلُوْطُ لَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُخْرَجِيْنَ ﴿١٦٧﴾

১৬৮. লূত বলল- 'আমি তোমাদের এ কাজকে ঘৃণা করি।

قَالَ إِنِّيْ لِعَمَلِكُمْ مِّنَ الْقَالِيْنَ ط ﴿١٦٨﴾

১৬৯. হে আমার প্রতিপালক! তারা যা করে তা থেকে তুমি আমাকে ও আমার পরিবারবর্গকে রক্ষা কর।'

رَبِّ نَجِّنِيْ وَأَهْلِيْ مِمَّا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٩﴾

১৭০. অতঃপর আমি তাকে ও তার পরিবারবর্গের সকলকে রক্ষা করলাম

فَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهٗٓ أَجْمَعِيْنَ ﴿١٧٠﴾

إِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ ج (١٧١)

১৭১. এক বৃদ্ধা ছাড়া। সে ছিল পেছনে অবস্থানকারীদের অন্তর্ভুক্ত।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ج (١٧٢)

১৭২. অতঃপর অন্যদের সকলকে পুরোপুরি ধ্বংস করে দিলাম।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ج فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ (١٧٣)

১৭৩. তাদের উপর বর্ষণ করলাম (শাস্তির) বৃষ্টি, ভয় প্রদর্শিতদের জন্য এ বৃষ্টি ছিল কতই না মন্দ!

إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٧٤)

১৭৪. নিশ্চয়ই এতে নিদর্শন রয়েছে, কিন্তু অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (١٧٥)

১৭৫. তোমার প্রতিপালক, তিনি মহা প্রতাপশালী, বড়ই দয়ালু।

كَذَّبَ أَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِيْنَ ج صلے (١٧٦)

১৭৬. বনের অধিবাসীরা রসূলদেরকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করেছিল।

إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُوْنَ ج (١٧٧)

১৭৭. যখন শু'আয়ব তাদেরকে বলেছিল– 'তোমরা কি (আল্লাহকে) ভয় করবে না?

إِنِّي لَكُمْ رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ لا (١٧٨)

১৭৮. আমি তোমাদের জন্য (প্রেরিত) বিশ্বস্ত রাসুল।

فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ ج (١٧٩)

১৭৯. কাজেই তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং আমাকে মান্য কর।

وَمَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ج إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط (١٨٠)

১৮০. এ জন্য আমি তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চাই না, আমার প্রতিদান তো রয়েছে একমাত্র জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট।

أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُخْسِرِيْنَ ج (١٨١)

১৮১. মাপে পূর্ণ মাত্রায় দাও আর যারা মাপে কম দেয় তাদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَزِنُوْا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ج (١٨٢)

১৮২. সঠিক দাঁড়িপাল্লায় ওজন করবে।

وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَآءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ج (١٨٣)

১৮৩. মানুষকে তাদের প্রাপ্যবস্তু কম দিবে না। আর পৃথিবীতে বিশৃঙ্খলা সৃষ্টি করো না।

وَاتَّقُوا الَّذِيْ خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِيْنَ ط (١٨٤)

১৮৪. এবং ভয় কর তাঁকে যিনি তোমাদেরকে এবং তোমাদের পূর্ববর্তী বংশাবলীকে সৃষ্টি করেছেন।'

Contents

قَالُوْٓا إِنَّمَآ أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِيْنَ لا (١٨٥)

১৮৫. তারা বলল– 'তুমি তো কেবল যাদুগ্রস্ত দের একজন।

وَمَآ أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا وَإِنْ نَّظُنُّكَ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ج (١٨٦)

১৮৬. তুমি আমাদের মতই মানুষ বৈ নও, আমরা মনে করি তুমি অবশ্য মিথ্যাবাদীদের অন্তর্ভুক্ত।

فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ط (١٨٧)

১৮৭. তুমি সত্যবাদী হলে আকাশের এক টুকরো আমাদের উপর ফেলে দাও।'

قَالَ رَبِّيْٓ أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (١٨٨)

১৮৮. শু'আয়ব বলল– 'তোমরা যা কর, আমার প্রতিপালক সে সম্পর্কে বেশি অবগত।'

فَكَذَّبُوْهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ ط إِنَّهٗ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (١٨٩)

১৮৯. কিন্তু তারা তাকে প্রত্যাখ্যান করল। ফলে তাদেরকে এক মেঘাচ্ছন্ন দিবসের শাস্তি পাকড়াও করল। তা ছিল এক মহা দিবসের 'আযাব।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ط وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (١٩٠)

১৯০. এতে অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে। কিন্তু তাদের অধিকাংশই বিশ্বাস করে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (١٩١)

১৯১. আর তোমার প্রতিপালক, তিনি অবশ্যই মহা প্রতাপশালী, বড়ই দয়ালু।

وَإِنَّهٗ لَتَنْزِيْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط (١٩٢)

১৯২. অবশ্যই এ কুরআন জগতসমূহের প্রতিপালকের নিকট হতে অবতীর্ণ।

نَزَلَ بِهِ الرُّوْحُ الْأَمِيْنُ لا (١٩٣)

১৯৩. বিশ্বস্ত আত্মা (জিবরাঈল) একে নিয়ে অবতরণ করেছে

عَلٰى قَلْبِكَ لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ لا (١٩٤)

১৯৪. তোমার অন্তরে যাতে তুমি সতর্ককারীদের অন্তর্ভুক্ত হও।

بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُّبِيْنٍ ط (١٩٥)

১৯৫. সুস্পষ্ট আরবী ভাষায়।

وَإِنَّهٗ لَفِيْ زُبُرِ الْأَوَّلِيْنَ (١٩٦)

১৯৬. পূর্ববর্তী কিতাবসমূহেও নিশ্চয় এর উল্লেখ আছে।

أَوَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ اٰيَةً أَنْ يَّعْلَمَهٗ عُلَمٰٓؤُا بَنِيْٓ إِسْرَآءِيْلَ ط (١٩٧)

১৯৭. এটা কি তাদের জন্য নিদর্শন নয় যে, বানী ইসরাঈলের পণ্ডিতগণ তা জানত (যে তা সত্য)।

وَلَوْ نَزَّلْنٰهُ عَلٰى بَعْضِ الْأَعْجَمِيْنَ لا (١٩٨)

১৯৮. আমি যদি তা কোন অনারবের প্রতি অবতীর্ণ করতাম,

فَقَرَأَهٗ عَلَيْهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ط (١٩٩)

১৯৯. অতঃপর সে তা তাদের নিকট পাঠ করত, তাহলে তারা তাতে বিশ্বাস আনত না।

كَذٰلِكَ سَلَكْنٰهُ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ط (٢٠٠)

২০০. এভাবে আমি অপরাধীদের অন্তরে অবিশ্বাস সঞ্চার করেছি।

لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيْمَ لا (٢٠١)

২০১. তারা এর প্রতি ঈমান আনবে না যতক্ষণ না তারা ভয়াবহ শাস্তি প্রত্যক্ষ করে।

فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ لا (٢٠٢)

২০২. কাজেই তা তাদের কাছে হঠাৎ এসে পড়বে, তারা কিছুই বুঝতে পারবে না।

فَيَقُوْلُوْا هَلْ نَحْنُ مُنْظَرُوْنَ ط (٢٠٣)

২০৩. তারা তখন বলবে– 'আমাদেরকে কি অবকাশ দেয়া হবে?'

أَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ (٢٠٤)

২০৪. তারা কি আমার শাস্তি দ্রুত কামনা করে?

أَفَرَأَيْتَ إِنْ مَّتَّعْنٰهُمْ سِنِيْنَ لا (٢٠٥)

২০৫. তুমি কি ভেবে দেখেছ আমি যদি তাদেরকে কতক বছর ভোগ বিলাস করতে দেই,

ثُمَّ جَآءَهُمْ مَّا كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ لا (٢٠٦)

২০৬. অতঃপর তাদেরকে যে বিষয়ের ও'য়াদা দেয়া হত তা তাদের কাছে এসে পড়ে।

مَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يُمَتَّعُوْنَ ط (٢٠٧)

২০৭. তখন তাদের বিলাসের সামগ্রী তাদের কোন উপকারে আসবে না।

وَمَآ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ إِلَّا لَهَا مُنْذِرُوْنَ ق صلے (٢٠٨)

২০৮. আমি এমন কোন জনপদ ধ্বংস করিনি যার জন্য কোন ভয় প্রদর্শনকারী ছিল না

ذِكْرٰى قف وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٢٠٩)

২০৯. স্মরণ করানোর জন্য। আমি কখনো অন্যায়কারী নই।

وَمَا تَنَزَّلَتْ بِهِ الشَّيٰطِيْنُ ج (٢١٠)

২১০. শয়ত্বানরা তা (অর্থাৎ কুরআন) নিয়ে অবতরণ করেনি।

وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهُمْ وَمَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ط (٢١١)

২১১. তারা এ কাজের যোগ্য নয় আর তারা এর সামর্থ্যও রাখে না।

إِنَّهُمْ عَنِ السَّمْعِ لَمَعْزُوْلُوْنَ ط (٢١٢)

২১২. তাদেরকে এটা শোনা থেকে অবশ্যই দূরে রাখা হয়েছে।

فَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوْنَ مِنَ الْمُعَذَّبِيْنَ ج (٢١٣)

২১৩. কাজেই তুমি অন্য কোন ইলাহ্‌কে আল্লাহ্‌র সঙ্গে ডেক না। ডাকলে তুমি শাস্তি প্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে যাবে।

২১৪. আর তুমি সতর্ক কর তোমার নিকটাত্মীয় স্বজনদের	وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْأَقْرَبِيْنَ ۙ (٢١٤)
২১৫. যে সকল বিশ্বাসীরা তোমার আনুগত্য করে তাদের জন্য তুমি তোমার অনুকম্পার বাহু প্রসারিত কর।	وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ (٢١٥)
২১৬. তারা যদি তোমার অবাধ্যতা করে তাহলে তুমি বলে দাও– তোমরা যা কর তার সঙ্গে আমি সম্পর্কহীন।	فَإِنْ عَصَوْكَ فَقُلْ إِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ۚ (٢١٦)
২১৭. আর তুমি প্রবল পরাক্রান্ত পরম দয়ালুর উপর নির্ভর কর;	وَتَوَكَّلْ عَلَى الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ (٢١٧)
২১৮. যিনি তোমাকে দেখেন যখন তুমি (নামাযের জন্য) দণ্ডায়মান হও।	الَّذِيْ يَرٰكَ حِيْنَ تَقُوْمُ ۙ (٢١٨)
২১৯. আর (তিনি দেখেন) সাজদাকারীদের সঙ্গে তোমার চলাফিরা।	وَتَقَلُّبَكَ فِي السّٰجِدِيْنَ (٢١٩)
২২০. তিনি সব কিছু শোনেন, সব কিছু জানেন।	إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٢٢٠)
২২১. আমি কি তোমাদেরকে জানাব কাদের নিকট শয়ত্বানরা অবতীর্ণ হয়।	هَلْ أُنَبِّئُكُمْ عَلٰى مَنْ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيْنُ ؕ (٢٢١)
২২২. তারা অবতীর্ণ হয় প্রত্যেকটি চরম মিথ্যুক ও পাপীর নিকট।	تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيْمٍ ۙ (٢٢٢)
২২৩. ওরা কান পেতে থাকে আর তাদের অধিকাংশই মিথ্যাবাদী।	يُّلْقُوْنَ السَّمْعَ وَأَكْثَرُهُمْ كٰذِبُوْنَ ؕ (٢٢٣)
২২৪. বিভ্রান্তরাই কবিদের অনুসরণ করে,	وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ ؕ (٢٢٤)

২১৪-২১৫। ইব্নু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যখন وَأَنْذِرْ عَشِيْرَتَكَ الْأَقْرَبِيْنَ এ আয়াত অবতীর্ণ হল, তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) সাফা (পর্বতে) আরোহণ করলেন এবং আহ্বান জানালেন, হে বানী ফিহ্র! হে বানী আদী! কুরাইশদের বিভিন্ন গোত্রকে। অবশেষে তারা জমায়েত হল। যে নিজে আসতে পারল না, সে তার প্রতিনিধি পাঠাল, যাতে দেখতে পায়, ব্যাপার কী? সেখানে আবূ লাহাব ও কুরাইশগণও আসল। তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, বল তো, আমি যদি তোমাদের বলি যে, শত্রুসৈন্য উপত্যকায় চলে এসেছে, তারা তোমাদের উপর হঠাৎ আক্রমণ করতে প্রস্তুত, তোমরা কি আমাকে বিশ্বাস করবে? তারা বলল, হাঁ আমরা আপনাকে সর্বদা সত্য পেয়েছি। তখন তিনি বললেন, "আমি তোমাদেরকে কঠিন শাস্তির ভয় প্রদর্শন করছি।" আবূ লাহাব [রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-কে] বলল, সারাদিন তোমার উপর ধ্বংস নামুক! এজন্যই কি তুমি আমাদের জমায়েত করেছ? তখন অবতীর্ণ হল, "ধ্বংস হোক আবূ লাহাবের হস্ত দু'টি এবং ধ্বংস হোক সে নিজেও। তার ধন-সম্পদ ও তার অর্জন তার কোন উপকারে লাগেনি।" –বুখারী ৪৭৭০ [১৩৯৪; মুসলিম ২০৮, তিরমিযী ৩৩৬৩, আহমাদ ২৫৪০, ২৭৯৮]

أَلَمْ تَرَ أَنَّهُمْ فِيْ كُلِّ وَادٍ يَّهِيْمُوْنَ ۙ (٢٢٥)

২২৫. তুমি কি দেখ না যে, তারা প্রতি ময়দানেই উদ্‌ভ্রান্ত হয়ে ফিরে?

وَأَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ مَا لَا يَفْعَلُوْنَ ۙ (٢٢٦)

২২৬. আর তারা যা বলে তা তারা নিজেরা করে না।

إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَذَكَرُوا اللهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْ ۢبَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا أَيَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ع (٢٢٧)

২২৭. কিন্তু ওরা ব্যতীত যারা ঈমান আনে ও সৎকাজ করে আর আল্লাহ্‌কে খুব বেশি স্মরণ করে আর নির্যাতিত হওয়ার পর নিজেদের প্রতিরক্ষার ব্যবস্থা করে। যালিমরা শীঘ্রই জানতে পারবে কোন্ (মহা সংকটময়) জায়গায় তারা ফিরে যাচ্ছে।

২৭. সূরাহ আন্-নাম্‌ল

سُوْرَةُ النَّمْلِ

আয়াতঃ ৯৩, রুকূ'ঃ ৭, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে ।

طٰسٓ قف تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۙ (١)

১. ত্ব-সীন, এগুলো কুরআনের আয়াত ও সুস্পষ্ট কিতাবের;

هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ (٢)

২. মু'মিনদের জন্য পথের দিশা ও সুসংবাদ

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ (٣)

৩. যারা নামায কায়েম করে, যাকাত আদায় করে আর তারা আখিরাতে বিশ্বাসী।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا لَهُمْ أَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ؕ (٤)

৪. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না, তাদের (চোখে) তাদের কর্মকাণ্ডকে আমি সুশোভিত করেছি, কাজেই তারা উদ্‌ভ্রান্ত হয়ে ঘুরে বেড়ায়,

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْأَخْسَرُوْنَ (٥)

৫. এরাই হল যাদের জন্য রয়েছে কঠিন শাস্তি আর এরাই আখিরাতে সবচেয়ে ক্ষতিগ্রস্ত।

وَإِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ عَلِيْمٍ (٦)

৬. নিশ্চয় তোমাকে কুরআন দেয়া হয়েছে মহাবিজ্ঞ সর্বজ্ঞের নিকট হতে।

إِذْ قَالَ مُوْسٰى لِأَهْلِهٖٓ إِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ

৭. স্মরণ কর যখন মূসা তার পরিবারবর্গকে বলেছিল– 'আমি আগুন দেখেছি, কাজেই আমি

سَاٰتِيۡكُمۡ مِّنۡهَا بِخَبَرٍ اَوۡ اٰتِيۡكُمۡ بِشِهَابٍ قَبَسٍ لَّعَلَّكُمۡ تَصۡطَلُوۡنَ (٧)

শীঘ্রই সেখান থেকে তোমাদের জন্য খবর নিয়ে আসব কিংবা তোমাদের কাছে জ্বলন্ত আগুন নিয়ে আসব যাতে তোমরা আগুন পোহাতে পার।'

فَلَمَّا جَآءَهَا نُوۡدِيَ اَنۡۢ بُوۡرِكَ مَنۡ فِي النَّارِ وَمَنۡ حَوۡلَهَا ؕ وَسُبۡحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡنَ (٨)

৮. অতঃপর সে যখন আগুনের কাছে আসল তখন আওয়াজ হল- 'ধন্য, যারা আছে এই আলোর মধ্যে আর তার আশেপাশে, বিশ্বজাহানের প্রতিপালক পবিত্র, মহিমান্বিত।

يٰمُوۡسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الۡعَزِيۡزُ الۡحَكِيۡمُ ۙ (٩)

৯. হে মূসা! আমি মহা পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময় আল্লাহ।

وَاَلۡقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهۡتَزُّ كَاَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدۡبِرًا وَّلَمۡ يُعَقِّبۡ ؕ يٰمُوۡسٰى لَا تَخَفۡ ۚ اِنِّيۡ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الۡمُرۡسَلُوۡنَ ۖ (١٠)

১০. তুমি তোমার লাঠি নিক্ষেপ কর; অতঃপর যখন সে ওটাকে ছুটাছুটি করতে দেখল যেন ওটা একটা সাপ, তখন সে পেছনের দিকে ছুটতে লাগল এবং ফিরেও দেখল না। (তখন বলা হল) হে মূসা! তুমি ভয় করো না, নিশ্চয়ই আমার কাছে রসূলগণ ভয় পায় না।

اِلَّا مَنۡ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسۡنًاۢ بَعۡدَ سُوۡٓءٍ فَاِنِّيۡ غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ (١١)

১১. তবে যে অত্যাচার করে অতঃপর মন্দ কাজের পরিবর্তে সৎ কাজ করে, তাহলে নিশ্চয় আমি ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

وَاَدۡخِلۡ يَدَكَ فِيۡ جَيۡبِكَ تَخۡرُجۡ بَيۡضَآءَ مِنۡ غَيۡرِ سُوۡٓءٍ ۚ فِيۡ تِسۡعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرۡعَوۡنَ وَقَوۡمِهٖ ؕ اِنَّهُمۡ كَانُوۡا قَوۡمًا فٰسِقِيۡنَ (١٢)

১২. আর তুমি তোমার হাত বগলে ঢুকাও, তা শুভ্র হয়ে বের হয়ে আসবে দোষমুক্ত অবস্থায়, তা হল ফেরাউন ও তার সম্প্রদায়ের নিকট নিয়ে আসা নয়টি নিদর্শনের অন্তর্ভুক্ত। নিশ্চয় তারা ছিল পাপাচারী সম্প্রদায়।

فَلَمَّا جَآءَتۡهُمۡ اٰيٰتُنَا مُبۡصِرَةً قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ مُّبِيۡنٌ ۚ (١٣)

১৩. অতঃপর যখন তাদের কাছে আমার দৃশ্যমান নিদর্শন আসল, তারা বলল- 'এটা স্পষ্ট যাদু।

وَجَحَدُوۡا بِهَا وَاسۡتَيۡقَنَتۡهَاۤ اَنۡفُسُهُمۡ ظُلۡمًا وَّعُلُوًّا ؕ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ عَاقِبَةُ الۡمُفۡسِدِيۡنَ ع (١٤)

১৪. তারা অন্যায় ঔদ্ধত্যভরে নিদর্শনগুলোকে প্রত্যাখ্যান করল যদিও তাদের অন্তর এগুলোকে সত্য বলে বিশ্বাস করেছিল। অতএব দেখ, ফাসাদ সৃষ্টিকারীদের পরিণতি কেমন হয়েছিল!

Contents

১৫. আমি দাঊদ ও সুলাইমানকে জ্ঞান দান করেছিলাম। তারা উভয়ে বলেছিল, 'সকল প্রশংসা আল্লাহ্‌র যিনি তাঁর বহু মু'মিন বান্দাদের উপর আমাদেরকে মর্যাদা দান করেছেন।'

১৬. সুলাইমান দাঊদের উত্তরাধিকারী হয়েছিল। সে বলেছিল– 'হে মানুষেরা! আমাকে পক্ষীকুলের ভাষা শিক্ষা দেয়া হয়েছে আর আমাদেরকে সব কিছু দেয়া হয়েছে, এটা (আল্লাহ্‌র পক্ষ হতে) অবশ্যই সুস্পষ্ট অনুগ্রহ।'

১৭. সুলাইমানের সামনে তার সেনাবাহিনীকে সমবেত করা হল, জিন্ন, মানুষ ও পক্ষীকুলকে; অতঃপর তাদেরকে বিভিন্ন ব্যূহে বিন্যস্ত করা হল।

১৮. যখন তারা পিপীলিকার উপত্যকায় আসল তখন একটি পিপীলিকা বলল– 'ওহে পিঁপড়ার দল! তোমাদের বাসস্থানে ঢুকে পড়, যাতে সুলাইমান ও তার সৈন্যবাহিনী তাদের অগোচরে তোমাদেরকে পদপিষ্ট ক'রে না ফেলে।

১৯. সুলাইমান তার কথায় খুশিতে মুচকি হাসল আর বলল– 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমার প্রতি ও আমার পিতামাতার প্রতি যে অনুগ্রহ দান করেছ তার জন্য কৃতজ্ঞতা প্রকাশের আমাকে শক্তি দান কর আর যাতে এমন সৎকাজ করতে পারি যাতে তুমি সন্তুষ্ট হও আর তোমার দয়ায় আমাকে তোমার সৎকর্মশীল বান্দাদের অন্তর্ভুক্ত কর।'

২০. অতঃপর সুলাইমান পাখীদের খোঁজ খবর নিল। সে বলল, কী ব্যাপার, হুদহুদকে তো দেখছি না, নাকি সে অনুপস্থিত?

২১. আমি তাকে অবশ্য অবশ্যই শাস্তি দেব কঠিন শাস্তি কিংবা তাকে অবশ্য অবশ্যই হত্যা করব অথবা সে অবশ্য অবশ্যই আমাকে তার

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ (١٥)

وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ ؕ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ (١٦)

وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ (١٧)

حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ نَمْلَةٌ يّٰۤاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (١٨)

فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْۤ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْۤ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ (١٩)

وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَاۤ اَرَى الْهُدْهُدَ ۖ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَآئِبِيْنَ (٢٠)

لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗۤ اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ (٢١)

(অনুপস্থিতির) উপযুক্ত কারণ দর্শাবে।'

فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ أَحَطْتُّ بِمَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَإٍۭ بِنَبَإٍ يَّقِيْنٍ (٢٢)

২২. অতঃপর হুদহুদ অবিলম্বে এসে বলল– 'আমি যা অবগত হয়েছি আপনি তা অবগত নন, আমি সাবা থেকে নিশ্চিত খবর নিয়ে আপনার কাছে এসেছি।

إِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَأَةً تَمْلِكُهُمْ وَأُوْتِيَتْ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ (٢٣)

২৩. আমি দেখলাম এক নারী তাদের উপর রাজত্ব করছে আর তাকে সব কিছুই দেয়া হয়েছে আর তার আছে এক বিরাট সিংহাসন।

وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ دُوْنِ اللهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ۙ (٢٤)

২৪. এবং আমি তাকে আর তার সম্প্রদায়কে দেখলাম আল্লাহ্‌র পরিবর্তে সূর্যকে সেজদা করতে। শয়ত্বান তাদের কাজকে তাদের জন্য শোভন করে দিয়েছে এবং তাদেরকে সৎপথ থেকে বাধা দিয়ে রেখেছে কাজেই তারা সৎপথ পায় না।

أَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ (٢٥)

২৫. (শয়ত্বান বাধা দিয়ে রেখেছে) যাতে তারা আল্লাহ্‌কে সেজদা না করে যিনি আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর লুক্কায়িত বস্তুকে প্রকাশ করেন, যিনি জানেন তোমরা যা গোপন কর আর তোমরা যা প্রকাশ কর।

اَللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۩ (٢٦) السجدة

২৬. আল্লাহ, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ্ নেই, (তিনি) মহান 'আরশের অধিপতি।'[সেজদা]

قَالَ سَنَنْظُرُ أَصَدَقْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٢٧)

২৭. সুলাইমান বলল– 'এখন আমি দেখব, তুমি সত্য বলেছ, না তুমি মিথ্যেবাদী।

اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَأَلْقِهْ إِلَيْهِمْ ثُمَّ تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ (٢٨)

২৮. আমার এই পত্র নিয়ে যাও আর এটা তাদের কাছে অর্পণ কর। অতঃপর তাদের কাছ থেকে সরে পড় তারপর দেখ, তারা কী জবাব দেয়।'

قَالَتْ يٰٓأَيُّهَا الْمَلَؤُا إِنِّيْٓ أُلْقِيَ إِلَيَّ كِتٰبٌ كَرِيْمٌ (٢٩)

২৯. সেই নারী বলল– 'ওহে সভাসদগণ! এই যে আমাকে এক সম্মানযোগ্য পত্র দেয়া হয়েছে।

إِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَإِنَّهٗ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۙ (٣٠)

৩০. এটা সুলাইমানের পক্ষ হতে আর তা এইঃ অসীম দাতা, অতীব দয়ালু আল্লাহ্‌র নামে শুরু,

৩১. আমার প্রতি উদ্ধত হয়ো না, অনুগত হয়ে আমার কাছে হাজির হও।

أَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَأْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ع (٣١)

৩২. সে বলল, ওহে সভাষদরা! তোমরা আমার কর্তব্য সম্পর্কে আমাকে সিদ্ধান্ত দাও। তোমাদের উপস্থিতি ব্যতীত আমি কোন ব্যাপারে সিদ্ধান্ত গ্রহণ করিনি।'

قَالَتْ يَآأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَفْتُوْنِيْ فِيْٓ أَمْرِيْ ج مَا كُنْتُ قَاطِعَةً أَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ (٣٢)

৩৩. তারা বলল– 'আমরা শক্তির অধিকারী ও কঠোর যোদ্ধা, কিন্তু সিদ্ধান্ত গ্রহণের অধিকারী আপনিই, কাজেই চিন্তা করে দেখুন, আপনি কী আদেশ করবেন।'

قَالُوْا نَحْنُ أُولُوْا قُوَّةٍ وَّأُولُوْا بَأْسٍ شَدِيْدٍ ۙ۬ وَّالْأَمْرُ إِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَأْمُرِيْنَ (٣٣)

৩৪. সে বলল– 'রাজারা যখন কোন জনপদে ঢুকে তখন বিপর্যয় ডেকে আনে এবং তথাকার সম্মানিত ব্যক্তিদেরকে অপমানিত করে ছাড়ে আর এরাও তাই করবে।

قَالَتْ إِنَّ الْمُلُوْكَ إِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً أَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْٓا أَعِزَّةَ أَهْلِهَآ أَذِلَّةً ج وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ (٣٤)

৩৫. আমি তাঁর কাছে উপঢৌকন পাঠাচ্ছি, তারপর দেখি, দূতেরা কী (জবাব) নিয়ে আসে।'

وَإِنِّيْ مُرْسِلَةٌ إِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌ بِمَ يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ (٣٥)

৩৬. অতঃপর দূতরা যখন সুলাইমানের কাছে আসল, সুলাইমান বলল– 'তোমরা কি আমাকে সম্পদ দিয়ে সাহায্য করছ, কিন্তু আল্লাহ আমাকে যা দিয়েছেন তা তোমাদেরকে যা দিয়েছেন তার চেয়ে উত্তম, বরং তোমরাই তোমাদের উপঢৌকন নিয়ে আনন্দ কর।

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ أَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ز فَمَآ اٰتٰنِۦَ اللهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰكُمْ ج بَلْ أَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ (٣٦)

৩৭. তাদের কাছে ফিরে যাও, আমি অবশ্য অবশ্যই তাদের বিরুদ্ধে এক সেনাবাহিনী নিয়ে আসব যার মুকাবালা করার শক্তি তাদের নেই, আমি অবশ্য অবশ্যই তাদেরকে অপমানিত করে সেখানে থেকে বের করে দেব আর তারা হবে অপদস্থ।'

اِرْجِعْ إِلَيْهِمْ فَلَنَأْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ أَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ (٣٧)

৩৮. সুলাইমান বলল– 'হে সভাসদবর্গ! তারা আমার কাছে আত্মসমর্পণ করে আসার আগে তোমাদের মধ্যে কে তার সিংহাসন আমার নিকট নিয়ে আসবে?'

قَالَ يَآأَيُّهَا الْمَلَؤُا أَيُّكُمْ يَأْتِيْنِيْ بِعَرْشِهَا قَبْلَ أَنْ يَّأْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ (٣٨)

৩৯. এক শক্তিধর জিন্ন বলল– 'আপনি আপনার

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ أَنَا اٰتِيْكَ

بِهٖ قَبْلَ أَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ج وَإِنِّيْ عَلَيْهِ لَقَوِيٌّ أَمِيْنٌ (٣٩)

জায়গা থেকে উঠবার আগে আমি তা আপনার কাছে এনে দেব, এ কাজে আমি অবশ্যই ক্ষমতার অধিকারী ও আস্থাভাজন।

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ أَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ أَنْ يَّرْتَدَّ إِلَيْكَ طَرْفُكَ ط فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ فَضْلِ رَبِّيْ قف لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَأَشْكُرُ أَمْ أَكْفُرُ ط وَمَنْ شَكَرَ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ (٤٠)

৪০. যার কাছে কিতাবের (তাওরাতের) জ্ঞান ছিল সে বলল– 'আপনার দৃষ্টি আপনার দিকে ফিরে আসার পূর্বেই আমি তা আপনার কাছে এনে দেব।' সুলাইমান যখন তা তার সামনে রক্ষিত দেখতে পেল তখন সে বলল– 'এটা আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ, আমাকে পরীক্ষা করার জন্য- আমি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করি, না অকৃতজ্ঞ হই। যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে সে নিজের কল্যাণেই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে। আর যে অকৃতজ্ঞ হয় (সে জেনে রাখুক), নিশ্চয়ই আমার প্রতিপালক অভাবমুক্ত, মর্যাদায় সর্বশ্রেষ্ঠ।'

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ أَتَهْتَدِيْٓ أَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ (٤١)

৪১. সুলাইমান বলল– 'তার সিংহাসনের আকৃতি বদলে দাও, অতঃপর আমরা দেখি, সে (তার নিজের পৌঁছার পূর্বেই আলৌকিকভাবে তার সিংহাসন সুলায়মানের দরবারে রক্ষিত দেখে সত্য) পথের দিশা পায়, না যারা পথের দিশা পায় না সে তাদের অন্তর্ভুক্ত।

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ أَهٰكَذَا عَرْشُكِ ط قَالَتْ كَأَنَّهٗ هُوَ ج وَأُوْتِيْنَا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ (٤٢)

৪২. যখন সে নারী আসল তখন তাকে বলা হল– 'এটা কি তোমার সিংহাসন?' সে বলল, 'এটা যেন সেটাই, আমাদেরকে এর আগেই (আপনার সম্পর্কে) জ্ঞান দান করা হয়েছে আর আমরা আত্মসমর্পণ করেছি।

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط إِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ (٤٣)

৪৩. আল্লাহ্‌র পরিবর্তে সে যার পূজা করত তাই তাকে সত্য পথে চলা থেকে বাধা দিয়ে রেখেছিল, সে নারী ছিল কাফির সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত।

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ج فَلَمَّا رَأَتْهُ حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ط قَالَ إِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ط۰ قَالَتْ رَبِّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ وَأَسْلَمْتُ مَعَ

৪৪. তাকে বলা হল- 'প্রাসাদে প্রবেশ কর।' যখন সে তা দেখল, সে ওটাকে পানির হ্রদ মনে করল এবং সে তার পায়ের গোছা খুলে ফেলল। সুলাইমান বলল– 'এটা তো স্বচ্ছ কাঁচমণ্ডিত প্রাসাদ। সে নারী বলল- হে আমার প্রতিপালক! আমি অবশ্যই নিজের প্রতি যুল্‌ম করেছি আর আমি সুলাইমানের সঙ্গে বিশ্বজগতের প্রতিপালক

سُلَيْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ع (٤٤)

আল্লাহ্‌র নিকট আত্মসমর্পণ করছি।'

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَآ إِلٰى ثَمُوْدَ أَخَاهُمْ صٰلِحًا أَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَإِذَا هُمْ فَرِيْقٰنِ يَخْتَصِمُوْنَ (٤٥)

৪৫. আমি সামূদ সম্প্রদায়ের নিকট তাদের ভাই সালিহ্‌কে পাঠিয়েছিলাম (এই আদেশ দিয়ে যে) তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর। অতঃপর তারা দু'ভাগ হয়ে গিয়ে বিতর্কে জড়িয়ে পড়ল।

قَالَ يٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ ج لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (٤٦)

৪৬. সালিহ্ বলল– 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা কল্যাণের পূর্বে দ্রুত অকল্যাণ কামনা করছ কেন? তোমরা কেন আল্লাহ্‌র নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর না যাতে তোমরা রহমতপ্রাপ্ত হও?'

قَالُوا اطَّيَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ط قَالَ طٰٓئِرُكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ (٤٧)

৪৭. তারা বলল- আমরা তোমাকে আর তোমার সঙ্গে যারা আছে তাদেরকে অকল্যাণের কারণ ব'লে মনে করি।' সে বলল– 'তোমাদের অকল্যাণ আল্লাহ্‌র নিকট, বরং তোমরা এমন এক সম্প্রদায় যাদেরকে পরীক্ষা করা হচ্ছে।'

وَكَانَ فِي الْمَدِيْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ يُّفْسِدُوْنَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُوْنَ (٤٨)

৪৮. আর সেই শহরে ছিল নয় ব্যক্তি যারা দেশে ফাসাদ সৃষ্টি করত আর তারা সংশোধন করত না।

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَيِّتَنَّهٗ وَأَهْلَهٗ ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِيِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ أَهْلِهٖ وَإِنَّا لَصٰدِقُوْنَ (٤٩)

৪৯. তারা বলল– 'তোমরা আল্লাহ্‌র নামে শপথ কর যে, তোমরা রাত্রিযোগে তাকে আর তার পরিবারবর্গকে অবশ্য অবশ্যই আক্রমণ করবে, অতঃপর আমরা তার অভিভাবককে অবশ্য অবশ্যই বলব, আমরা তার পরিবারবর্গের হত্যাকাণ্ড প্রত্যক্ষ করিনি। আমরা অবশ্যই সত্যবাদী।'

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٥٠)

৫০. তারা এক চক্রান্ত করেছিল আর আমিও এক কৌশল অবলম্বন করেছিলাম, কিন্তু তারা বুঝতে পারেনি।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ لا أَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ أَجْمَعِيْنَ (٥١)

৫১. অতঃপর দেখ তাদের চক্রান্তের পরিণতি কেমন হয়েছিল? আমিই তাদেরকে ও তাদের সম্প্রদায়কে, সকলকে ধ্বংস করে দিয়েছিলাম।

فَتِلْكَ بُيُوْتُهُمْ خَاوِيَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ط إِنَّ

৫২. এই তো তাদের ঘরদোর সম্পূর্ণ উজাড়, কারণ তারা বাড়াবাড়ি করেছিল। এতে জ্ঞানী

فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ (٥٢)

সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই নিদর্শন আছে।

وَأَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (٥٣)

৫৩. আর যারা ঈমান এনেছিল ও (আল্লাহ্‌কে) ভয় করত তাদেরকে রক্ষা করেছিলাম।

وَلُوْطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَتَأْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ وَأَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ (٥٤)

৫৪. স্মরণ কর লূতের কথা, সে তার সম্প্রদায়কে বলেছিল- তোমরা দেখে-শুনে কেন অশ্লীল কাজ করছ,

أَإِنَّكُمْ لَتَأْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ النِّسَآءِ ط بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ (٥٥)

৫৫. তোমরা কি কাম আসক্তি মিটানোর জন্য নারীদের বাদ দিয়ে পুরুষদের নিকট গমন কর? তোমরা এমন এক জাতি যারা মূর্খের আচরণ করছ।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ إِلَّآ أَنْ قَالُوْآ أَخْرِجُوْآ اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ج إِنَّهُمْ أُنَاسٌ يَّتَطَهَّرُوْنَ (٥٦)

৫৬. তখন তার সম্প্রদায়ের এ কথা বলা ছাড়া আর কোন জওয়াব ছিল না যে, তোমাদের জনপদ থেকে লূতের পরিবারবর্গকে বের করে দাও, এরা এমন লোক যারা পবিত্র সাজতে চায়।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ ز قَدَّرْنٰهَا مِنَ الْغٰبِرِيْنَ (٥٧)

৫৭. অতঃপর আমি তাকে ও তার পরিবারবর্গকে রক্ষা করলাম, তার স্ত্রী ব্যতীত। আমি তার ভাগ্য ধ্বংসপ্রাপ্তদের মধ্যে নির্ধারণ করেছিলাম।

وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ج فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ع (٥٨)

৫৮. আর আমি তাদের উপর বর্ষিয়ে ছিলাম এক ভয়ংকর বৃষ্টি। ভীতি প্রদর্শিতদের উপর এ বৃষ্টি ছিল কতই না মন্দ!

قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى ط آللّٰهُ خَيْرٌ أَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٥٩)

৫৯. বল, যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্‌রই জন্য এবং শান্তি তাঁর মনোনীত বান্দাগণের প্রতি। আল্লাহ শ্রেষ্ঠ, না তা যার শরীক করে তারা?

أَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ج فَأَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ ذَاتَ بَهْجَةٍ ج مَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ط أَإِلٰهٌ مَّعَ اللهِ ط بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ط (٦٠)

৬০. নাকি তিনিই (শ্রেষ্ঠ) যিনি সৃষ্টি করেছেন আসমানসমূহ ও পৃথিবী এবং তোমাদের জন্য আকাশ থেকে বৃষ্টি বর্ষণ করেন, অতঃপর তা দ্বারা আমি মনোরম উদ্যানরাজি উদ্গত করি, তার বৃক্ষাদি উদ্গত করার ক্ষমতা তোমাদের নেই। আল্লাহ্‌র সাথে অন্য কোন ইলাহ আছে কি? বরং তারা হচ্ছে এক ন্যায়-বিচ্যুত সম্প্রদায়।

أَمَّنْ جَعَلَ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ أَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ط أَإِلٰهٌ مَّعَ اللهِ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ط (٦١)

৬১. নাকি তিনিই (শ্রেষ্ঠ) যিনি এই পৃথিবীকে বাসযোগ্য করেছেন আর তার ফাঁকে ফাঁকে নদীনালা প্রবাহিত করেছেন, তাতে সুদৃঢ় পর্বত সংস্থাপিত করেছেন এবং দু' দরিয়ার মাঝে পার্থক্যকারী আড়াল সৃষ্টি করেছেন; আল্লাহ্‌র সাথে অন্য কোন ইলাহ আছে কি? বরং তাদের অধিকাংশই জানে না।

أَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ السُّوْٓءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَآءَ الْأَرْضِ ط أَإِلٰهٌ مَّعَ اللهِ ط قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ط (٦٢)

৬২. নাকি তিনিই (শ্রেষ্ঠ) যিনি আর্তের আহ্বানে সাড়া দেন যখন সে তাঁকে ডাকে এবং দুঃখ-কষ্ট দূর করেন আর তোমাদেরকে পৃথিবীর উত্তরাধিকারী করেন? আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্য কোন ইলাহ্ আছে কি? অতি সামান্য উপদেশই তোমরা গ্রহণ কর।

أَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ط أَإِلٰهٌ مَّعَ اللهِ ط تَعٰلَى اللهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ط (٦٣)

৬৩. নাকি তিনিই (শ্রেষ্ঠ) যিনি জল স্থলের গভীর অন্ধকারে পথ দেখান এবং যিনি তাঁর (বৃষ্টিরূপী) অনুগ্রহের পূর্বক্ষণে শুভবার্তাবাহী বাতাস প্রেরণ করেন? আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্য কোন ইলাহ্ আছে কি? তারা যাকে (আল্লাহ্‌র) শরীক করে, আল্লাহ তা থেকে অনেক উর্ধ্বে।

أَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ط أَإِلٰهٌ مَّعَ اللهِ ط قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٦٤)

৬৪. নাকি তিনিই (শ্রেষ্ঠ) যিনি সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর তার পুনরাবৃত্তি করেন এবং যিনি তোমাদেরকে আসমান ও যমীন থেকে রিয্ক দান করেন? আল্লাহ্‌র সাথে অন্য কোন ইলাহ্ আছে কি? বল, তোমরা সত্যবাদী হলে তোমাদের প্রমাণপঞ্জি পেশ কর।

قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ الْغَيْبَ إِلَّا اللهُ ط وَمَا يَشْعُرُوْنَ أَيَّانَ

৬৫. বল, আকাশ ও পৃথিবীতে যারা আছে তারা কেউই অদৃশ্য বিষয়ের জ্ঞান রাখে না আল্লাহ ছাড়া, আর তারা জানে না কখন তাদেরকে

يُبْعَثُوْنَ (٦٥)

জীবিত ক'রে উঠানো হবে।

بَلِ ادّٰرَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ قف بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْهَا قف بَلْ هُمْ مِّنْهَا عَمُوْنَ ع (٦٦)

৬৬. বরং আখিরাত সম্পর্কিত তাদের জ্ঞানের সীমা শেষ, বরং এ ব্যাপারে তারা সন্দেহে আচ্ছন্ন বরং এ বিষয়ে তারা অন্ধ।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا وَّاٰبَآؤُنَآ أَإِنَّا لَمُخْرَجُوْنَ (٦٧)

৬৭. অবিশ্বাসীরা বলে- আমরা আর আমাদের পিতৃপুরুষরা যখন মাটি হয়ে যাব তারপরও কি আমাদেরকে নিশ্চিতই বের করে উঠানো হবে?

لَقَدْ وُعِدْنَا هٰذَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ لا إِنْ هٰذَآ إِلَّآ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ (٦٨)

৬৮. এ ওয়া'দা আমাদেরকে দেয়া হয়েছে, আমাদেরকে এবং পূর্বে আমাদের পিতৃপুরুষদেরকেও; এ সব পূর্বকালের কাহিনী ছাড়া কিছুই নয়।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ (٦٩)

৬৯. বল, পৃথিবীতে ভ্রমণ কর, অতঃপর দেখ অপরাধীদের পরিণাম কেমন হয়েছিল।

وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُنْ فِيْ ضَيْقٍ مِّمَّا يَمْكُرُوْنَ (٧٠)

৭০. তাদের জন্য দুঃখ কর না, আর তাদের চক্রান্তের কারণে মনে কষ্ট নিও না।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٧١)

৭১. তারা বলে- 'তোমরা যদি সত্যবাদী হয়ে থাক তাহলে, এ 'ওয়াদা কখন বাস্তবায়িত হবে?

قُلْ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ رَدِفَ لَكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ تَسْتَعْجِلُوْنَ (٧٢)

৭২. বল, তোমরা যা পাওয়ার জন্য তাড়াহুড়া করছ সম্ভবতঃ তার কিছু তোমাদের পিঠের পেছনে এসে গেছে।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ (٧٣)

৭৩. তোমার প্রতিপালক নিশ্চয়ই মানুষের প্রতি অনুগ্রহশীল, কিন্তু তাদের অধিকাংশই কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে না।

وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ (٧٤)

৭৪. তোমার প্রতিপালক অবশ্যই জানেন তাদের অন্তর যা গোপন করে আর যা প্রকাশ করে।

وَمَا مِنْ غَآئِبَةٍ فِي السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ (٧٥)

৭৫. আকাশে আর যমীনে এমন কোন অদৃশ্য বিষয় নেই যা সুস্পষ্ট কিতাবে নেই।

إِنَّ هٰذَا الْقُرْاٰنَ يَقُصُّ عَلٰى بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ

৭৬. নিশ্চয় এ কুরআন সেগুলোর অধিকাংশ

أَكْثَرَ الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (٧٦)

বিবৃত করে যে বিষয়ে বানী ইসরাঈল মতভেদ করেছিল।

وَإِنَّهٗ لَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ (٧٧)

৭৭. আর তা নিশ্চিতই মু'মিনদের জন্য সঠিক পথের দিশারী ও রহমত।

إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ بِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ (٧٨)

৭৮. তোমার প্রতিপালক তাঁর বিধান অনুযায়ী তাদের মধ্যে ফয়সালা করে দেবেন আর তিনি প্রবল পরাক্রান্ত, সর্বজ্ঞানের অধিকারী।

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ۭ إِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ (٧٩)

৭৯. কাজেই তুমি আল্লাহ্‌র উপর নির্ভর কর, তুমি তো সুস্পষ্ট সত্যের উপর আছ।

إِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ (٨٠)

৮০. তুমি মৃতদেরকে শুনাতে পারবে না, আর বধিরকেও আহ্বান শুনাতে পারবে না (বিশেষতঃ) যখন তারা পিঠ ফিরিয়ে চলে যায়।

وَمَآ أَنْتَ بِهَادِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ (٨١)

৮১. আর তুমি অন্ধকেও তাদের গুমরাহী থেকে ফিরিয়ে আনার জন্য সৎপথ দেখাতে পারবে না। তুমি কেবল তাদেরকেই শুনাতে পারবে যারা আমার নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাস করে, কাজেই তারা আত্মসমর্পণ করে।

وَإِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ أَخْرَجْنَا لَهُمْ دَآبَّةً مِّنَ الْأَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ أَنَّ النَّاسَ كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۚ (٨٢)

৮২. তাদেরকে দেয়া প্রতিশ্রুতি যখন বাস্তবে পরিণত হবে, আমি তখন (কিয়ামাত আগমণের নির্দশন হিসেবে) ভূমি থেকে তাদের জন্য একটি জন্তু বের করব যা তাদের সঙ্গে এ কথা বলবে যে, মানুষ আমার নিদর্শনসমূহে বিশ্বাস করত না।

وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ (٨٣)

৮৩. যেদিন আমি প্রত্যেকটি সম্প্রদায় হতে একটি দলকে সমবেত করব যারা আমার নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করেছিল, অতঃপর তাদেরকে সারিবদ্ধ করা হবে।

حَتّٰىٓ إِذَا جَآءُوْ قَالَ أَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا أَمَّاذَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٨٤)

৮৪. যখন তারা এসে যাবে তখন আল্লাহ বলবেন- তোমরা কি আমার নিদর্শনকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করেছিলে যদিও তা তোমরা জ্ঞানায়ত্ত করতে পারনি; নাকি তোমরা অন্য কিছু করছিলে?

وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ لَا يَنْطِقُوْنَ (٨٥)

৮৫. তাদেরকে দেয়া প্রতিশ্রুতি বাস্তবে ঘটে যাবে তাদের অন্যায় কার্যকলাপের কারণে আর তারা (তাদের পক্ষে) কোন কথা বলতে পারবে না।

أَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا اللَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٨٦)

৮৬. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আমি রাত বানিয়েছি যাতে তারা তাতে আরাম করতে পারে আর দিনকে করেছি আলো দানকারী? বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই এতে নিদর্শন আছে।

وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَآءَ اللهُ ؕ وَكُلٌّ أَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ (٨٧)

৮৭. আর যে দিন শিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে সেদিন যারা আকাশে আছে আর যারা যমীনে আছে তারা ভীত-সন্ত্রস্ত হয়ে পড়বে, তবে আল্লাহ যাদের জন্য ইচ্ছে করবেন তারা বাদে। সবাই তাঁর কাছে আসবে বিনয়ে অবনত হয়ে।

وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِيَ تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ؕ صُنْعَ اللهِ الَّذِيْٓ أَتْقَنَ كُلَّ شَيْءٍ ؕ إِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ (٨٨)

৮৮. তুমি পর্বতগুলোকে দেখ আর মনে কর তা অচল, কিন্তু সেগুলো চলমান হবে যেমন মেঘমালা চলে। এটা আল্লাহ্‌র সৃষ্টি নৈপুণ্য, যিনি সব কিছুকে করেছেন যথাযথ। তোমরা যা কিছু কর সে সম্পর্কে তিনি সম্পূর্ণরূপে অবগত।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ج وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَئِذٍ اٰمِنُوْنَ (٨٩)

৮৯. যারা সৎকাজ নিয়ে উপস্থিত হবে, তাদের জন্য আছে উৎকৃষ্টতর প্রতিদান, সেদিন তারা ভীতি শঙ্কা থেকে নিরাপদ থাকবে।

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ ؕ هَلْ تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٩٠)

৯০. যারা অসৎকর্ম নিয়ে হাজির হবে, তাদেরকে মুখের ভরে আগুনে নিক্ষেপ করা হবে, (আর তাদেরকে বলা হবে) তোমরা যা করতে কেবল তারই প্রতিদান তোমাদেরকে দেয়া হচ্ছে।

إِنَّمَآ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ ز وَّأُمِرْتُ أَنْ أَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۙ (٩١)

৯১. আমি নির্দেশিত হয়েছি এই (মক্কা) নগরীর প্রতিপালকের 'ইবাদাত করার জন্য যিনি তাকে (অর্থাৎ এই নগরীকে) সম্মানিত করেছেন। সকল বস্তু তাঁরই, আর আমি আদিষ্ট হয়েছি আমি যেন (আল্লাহ্‌র নিকট) আত্মসমর্পণকারীদের অন্তর্ভুক্ত হই।

৯১। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, মক্কা বিজয়ের দিন আল্লাহর রসূল (ﷺ) বললেনঃ এ (মক্কা) শহরকে আল্লাহ সম্মানিত করেছেন, এর একটি কাঁটাও কর্তন করা যাবে না, এতে বিচরণকারী শিকারকে তাড়া করা যাবে না, এখানে প্রচারের উদ্দেশ্য ব্যতীত পড়ে থাকা কোন বস্তু কেউ তুলে নিবে না। –বুখারী ১৫৮৭ [১৩৪৯; মুসলিম ১৩৫৩, তিরমিযী ১৫৯০, নাসায়ী ২৮৭৫, ২৮৯২, ৪১৭০; আবূ দাউদ ২০১৭, ২৪৮০; ইবনু মাজাহ ২৭৭৩, আহমাদ ১৯৯২, ২২৭৯; দারিমী ২৫১২]

وَأَنْ أَتْلُوَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَإِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ إِنَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ (٩٢)

৯২. আর আমি যেন কুরআন তিলাওয়াত করি। অতঃপর যে সঠিক পথে চলবে, সে নিজের কল্যাণেই সঠিক পথে চলবে। আর কেউ গুমরাহ্ হলে তুমি বল, আমি তো সতর্ককারীদের একজন।

وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ع (٩٣)

৯৩. আর বল, যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্রই। তিনি শীঘ্রই তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনগুলো দেখাবেন আর তা তোমরা চিনতে পারবে। তোমরা যা কর সে সম্পর্কে তোমার পালনকর্তা অমনোযোগী নন।

সُوْرَةُ الْقَصَصِ

২৮. সূরাহ আল-ক্বাসাস

আয়াতঃ ৮৮, রুকূ'ঃ ৯, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে ।

طٰسٓمٓ (١)

১. তা-সীন-মীম,

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ (٢)

২. এগুলো সুস্পষ্ট কিতাবের আয়াত।

نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَإِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٣)

৩. আমি মূসা ও ফেরাউনের কাহিনী হতে কিছু তোমার কাছে সত্যিকারভাবে বিবৃত করছি বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের উদ্দেশে।

إِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْأَرْضِ وَجَعَلَ أَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ يُذَبِّحُ أَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيِ نِسَآءَهُمْ ۗ إِنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ (٤)

৪. বস্তুতঃ ফেরাউন দেশে উদ্ধত হয়ে গিয়েছিল আর সেখানকার অধিবাসীদেরকে বিভিন্ন শ্রেণীতে বিভক্ত করে তাদের একটি শ্রেণীকে দুর্বল করে রেখেছিল, তাদের পুত্রদেরকে সে হত্যা করত আর তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখত; সে ছিল ফাসাদ সৃষ্টিকারী।

وَنُرِيْدُ أَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا فِي الْأَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ أَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ الْوٰرِثِيْنَ ۙ (٥)

৫. দেশে যাদেরকে দুর্বল করে রাখা হয়েছিল আমি তাদের প্রতি অনুগ্রহ করার ইচ্ছে করলাম, আর তাদেরকে নেতা ও উত্তরাধিকারী করার (ইচ্ছে করলাম)।

Contents

وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْأَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ (٦)

৬. আর (ইচ্ছে করলাম) তাদেরকে দেশে প্রতিষ্ঠিত করতে, আর ফেরাউন, হামান ও তাদের সৈন্য বাহিনীকে দেখিয়ে দিতে যা তারা তাদের (অর্থাৎ মূসার সম্প্রদায়ের) থেকে আশঙ্কা করত।

وَأَوْحَيْنَآ إِلٰٓى أُمِّ مُوْسٰٓى أَنْ أَرْضِعِيْهِ ج فَإِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَأَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْ ج إِنَّا رَآدُّوْهُ إِلَيْكِ وَجَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (٧)

৭. আমি মূসার মায়ের প্রতি ওয়াহী করলাম যে, তাকে স্তন্য পান করাতে থাক। যখন তুমি তার সম্পর্কে আশঙ্কা করবে, তখন তুমি তাকে দরিয়ায় নিক্ষেপ করবে, আর তুমি ভয় করবে না, দুঃখও করবে না, আমি তাকে অবশ্যই তোমার কাছে ফিরিয়ে দেব আর তাকে রসূলদের একজন করব।

فَالْتَقَطَهٗٓ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا وَّحَزَنًا ط إِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا كَانُوْا خٰطِئِيْنَ (٨)

৮. অতঃপর ফেরাউনের লোকজন তাকে উঠিয়ে নিল যাতে সে তাদের জন্য শত্রু হতে ও দুঃখের কারণ হতে পারে। ফেরাউন, হামান ও তাদের বাহিনীর লোকেরা তো ছিল অপরাধী।

وَقَالَتِ امْرَأَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ وَلَكَ ط لَا تَقْتُلُوْهُ ق صلے عَسٰٓى أَنْ يَّنْفَعَنَآ أَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٩)

৯. ফেরাউনের স্ত্রী বলল– 'এ শিশু আমার ও তোমার চক্ষু শীতলকারী, তাকে হত্যা কর না, সে আমাদের উপকারে লাগতে পারে অথবা তাকে আমরা পুত্র হিসেবেও গ্রহণ করতে পারি আর তারা কিছুই বুঝতে পারল না (তাদের এ কাজের পরিণাম কী)।

وَأَصْبَحَ فُؤَادُ أُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ط إِنْ كَادَتْ لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ أَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (١٠)

১০. মূসার মায়ের অন্তর বিচলিত হয়ে উঠল। সে তো তার পরিচয় প্রকাশ করেই ফেলত যদি না আমি তার চিত্তকে দৃঢ় করতাম যাতে সে আস্থাশীল হয়।

وَقَالَتْ لِأُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ز فَبَصُرَتْ بِهٖ عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ لا (١١)

১১. মূসার মা মূসার বোনকে বলল– 'তার পিছনে পিছনে যাও।' সে দূর থেকে তাকে দেখছিল কিন্তু তারা টের পায়নি।

وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلٰٓى أَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ (١٢)

১২. আগে থেকে আমি তাকে ধাত্রী-স্তন্য পান থেকে বিরত রেখেছিলাম। মূসার বোন বলল– 'আমি কি তোমাদেরকে এমন একটা পরিবারের খোঁজ দেব যারা তাকে তোমাদের পক্ষে লালন পালন করবে আর তারা হবে তার হিতাকাঙ্ক্ষী।'

فَرَدَدْنٰهُ إِلٰٓى أُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ أَنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ع (١٣)

১৩. এভাবে আমি তাকে তার মায়ের কাছে ফিরিয়ে আনলাম যাতে তার চোখ জুড়ায়, সে দুঃখ না করে আর জানতে পারে যে, আল্লাহ্‌র ও'য়াদা সত্য; কিন্তু অধিকাংশ মানুষ তা জানে না।

وَلَمَّا بَلَغَ أَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ط وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (١٤)

১৪. মূসা যখন যৌবনে পদার্পণ করল আর পূর্ণ পরিণত হল, তখন আমি তাকে হিকমত ও জ্ঞান দান করলাম; আমি সৎকর্মশীলদেরকে এভাবেই পুরস্কৃত করে থাকি।

وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ أَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ز هٰذَا مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ج فَاسْتَغَاثَهُ الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ لا فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ز قَالَ هٰذَا مِنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ط إِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ (١٥)

১৫. সে শহরে প্রবেশ করল যখন সেখানের লোকেরা অসতর্ক অবস্থায় ছিল। তখন সে দু'জন লোককে সংঘর্ষরত অবস্থায় পেল। একজন তার দলের, অপরজন তার শত্রুদলের। তখন তার দলের লোকটি তার শত্রুদলের লোকটির বিরুদ্ধে তার কাছে সাহায্যের আবেদন জানালো। তখন মূসা তাকে ঘুসি মারল এবং হত্যা করে ফেলল। মূসা বলল– 'এটা শয়ত্বানের কাজ। সে নিশ্চয় প্রকাশ্য শত্রু, গুমরাহ্‌কারী।'

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ فَغَفَرَ لَهٗ ط إِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (١٦)

১৬. সে বলল– 'হে আমার প্রতিপালক! আমি নিজের আত্মার উপর যুল্‌ম করেছি, অতএব আমাকে ক্ষমা কর।' অতঃপর আল্লাহ তাকে ক্ষমা করলেন, অবশ্যই তিনি ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

قَالَ رَبِّ بِمَآ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ فَلَنْ أَكُوْنَ ظَهِيْرًا لِّلْمُجْرِمِيْنَ (١٧)

১৭. মূসা বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি যেহেতু আমার উপর অনুগ্রহ করেছ, কাজেই আমি কক্ষনো পাপীদের সাহায্যকারী হব না।'

فَأَصْبَحَ فِي الْمَدِيْنَةِ خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ فَإِذَا الَّذِي اسْتَنْصَرَهٗ بِالْأَمْسِ يَسْتَصْرِخُهٗ ط قَالَ لَهٗ مُوْسٰٓى إِنَّكَ لَغَوِيٌّ مُّبِيْنٌ (١٨)

১৮. শহরে তার সকাল হল ভীত-সন্ত্রস্ত অবস্থায়। হঠাৎ সে শুনল যে লোকটি গতকাল তার কাছে সাহায্য চেয়েছিল (আবার) সে সাহায্যের জন্য চীৎকার করছে। মূসা তাকে বলল– 'তুমি প্রকাশ্যই একজন বেওকুফ লোক।

فَلَمَّآ أَنْ أَرَادَ أَنْ يَّبْطِشَ بِالَّذِيْ هُوَ عَدُوٌّ لَّهُمَا لا قَالَ يٰمُوْسٰٓى أَتُرِيْدُ أَنْ تَقْتُلَنِيْ كَمَا

১৯. অতঃপর মূসা যখন উভয়ের শত্রুকে ধরতে উদ্যত হল, তখন সে বলল– 'ওহে মূসা! তুমি কি আমাকে হত্যা করতে চাও যেভাবে গতকাল একটা লোককে হত্যা করেছ, তুমি তো

قَتَلْتَ نَفْسًا بِالْأَمْسِ ق إِنْ تُرِيْدُ إِلَّآ أَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِي الْأَرْضِ وَمَا تُرِيْدُ أَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِيْنَ (١٩)

পৃথিবীতে স্বেচ্ছাচারী হতে চাচ্ছ, সংশোধনকারীদের মধ্যে গণ্য হতে চাচ্ছ না।'

وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ أَقْصَى الْمَدِيْنَةِ يَسْعٰى ز قَالَ يٰمُوْسٰٓى إِنَّ الْمَلَأَ يَأْتَمِرُوْنَ بِكَ لِيَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ إِنِّيْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِيْنَ (٢٠)

২০. নগরের প্রান্ত হতে এক লোক ছুটে আসল। সে বলল– 'হে মূসা! পারিষদগণ তোমাকে হত্যার পরামর্শ করছে, কাজেই তুমি বাইরে চলে যাও, আমি তোমার হিতাকাঙ্ক্ষী।

فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا يَّتَرَقَّبُ ز قَالَ رَبِّ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ع (٢١)

২১. তখন মূসা ভীত-সন্ত্রস্ত অবস্থায় সেখান থেকে বেরিয়ে পড়ল সতর্কতার সঙ্গে। সে বলল, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে যালিম গোষ্ঠী হতে রক্ষা কর।'

وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْيَنَ قَالَ عَسٰى رَبِّيْٓ أَنْ يَّهْدِيَنِيْ سَوَآءَ السَّبِيْلِ (٢٢)

২২. যখন সে মাদইয়ান অভিমুখী হল, সে বলল– 'আশা করি আমার পালনকর্তা আমাকে সরল সোজা পথ দেখাবেন।'

وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْيَنَ وَجَدَ عَلَيْهِ أُمَّةً مِّنَ النَّاسِ يَسْقُوْنَ ز٥ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ امْرَأَتَيْنِ تَذُوْدٰنِ ج قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ط قَالَتَا لَا نَسْقِيْ حَتّٰى يُصْدِرَ الرِّعَآءُ سكتة وَأَبُوْنَا شَيْخٌ كَبِيْرٌ (٢٣)

২৩. যখন সে মাদইয়ানের কূপের কাছে পৌঁছল, সে একদল লোককে দেখল (তাদের জন্তুগুলোকে) পানি পান করাতে, তাদের ছাড়া আরো দু'জন স্ত্রীলোককে দেখল (নিজেদের পশুগুলোকে) আগলে রাখতে। মূসা জিজ্ঞেস করল– 'তোমাদের দু'জনের ব্যাপার কী?' তারা বলল– 'আমরা আমাদের জন্তুগুলোকে পান করাতে পারি না যতক্ষণ না রাখালেরা (তাদের পশুগুলোকে) সরিয়ে না নেয় (পানি পান করানোর পর), আর আমাদের পিতা খুবই বয়োবৃদ্ধ।

فَسَقٰى لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰٓى إِلَى الظِّلِّ فَقَالَ رَبِّ إِنِّيْ لِمَآ أَنْزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ (٢٤)

২৪. তখন মূসা তাদের জন্য পশুগুলোকে পানি পান করিয়ে দিল, অতঃপর পেছন ফিরে ছায়ায় গিয়ে বসল, অতঃপর বলল– 'হে আমার পালনকর্তা! তুমি আমার প্রতি যে অনুগ্রহই করবে আমি তো তারই ভিখারী।'

فَجَآءَتْهُ إِحْدٰىهُمَا تَمْشِيْ عَلَى اسْتِحْيَآءٍ ز قَالَتْ إِنَّ أَبِيْ يَدْعُوْكَ لِيَجْزِيَكَ أَجْرَ مَا

২৫. তখন নারীদ্বয়ের একজন তার কাছে সলজ্জ পদে আসল। সে বলল– 'আমার পিতা তোমাকে ডাকছে তুমি আমাদের জন্য (জন্তুগুলোকে) পানি পান করিয়েছ তোমাকে

سَقَيْتَ لَنَا ۗ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَقَصَّ عَلَيْهِ الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ۫ نَجَوْتَ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٢٥)

তার প্রতিদান দেয়ার জন্য। যখন মূসা তার কাছে গেল আর তার কাছে সকল ঘটনা বিবৃত করল, সে বলল- তুমি ভয় করো না, 'তুমি যালিম গোষ্ঠীর থেকে রেহাই পেয়ে গেছ।'

قَالَتْ إِحْدٰىهُمَا يٰٓأَبَتِ اسْتَأْجِرْهُ ز إِنَّ خَيْرَ مَنِ اسْتَأْجَرْتَ الْقَوِيُّ الْأَمِيْنُ (٢٦)

২৬. স্ত্রীলোক দু'টির একজন বলল– 'হে পিতঃ! পারিশ্রমিকের বিনিময়ে তাকে নিযুক্ত করুন, আপনি যাদেরকে মজুর নিযুক্ত করবেন তাদের মধ্যে উত্তম যে শক্তিশালী, বিশ্বস্ত।'

قَالَ إِنِّيْٓ أُرِيْدُ أَنْ أُنْكِحَكَ إِحْدَى ابْنَتَيَّ هٰتَيْنِ عَلٰٓى أَنْ تَأْجُرَنِيْ ثَمٰنِيَ حِجَجٍ ۚ فَإِنْ أَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ وَمَآ أُرِيْدُ أَنْ أَشُقَّ عَلَيْكَ ۗ سَتَجِدُنِيْٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (٢٧)

২৭. সে বলল– 'আমার এই কন্যাদ্বয়ের একজনের সঙ্গে তোমার বিয়ে দেয়ার আমি ইচ্ছে করেছি এই শর্তে যে, তুমি আট বছর আমার কাজ করে দেবে, আর যদি দশ বছর পূর্ণ কর সেটা তোমার ইচ্ছেধীন, আমি তোমাকে কষ্টে ফেলতে চাই না, আল্লাহ ইচ্ছে করলে তুমি আমাকে সৎকর্মপরায়ণ পাবে।'

قَالَ ذٰلِكَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ ۗ أَيَّمَا الْأَجَلَيْنِ قَضَيْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَيَّ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۧ (٢٨)

২৮. মূসা বলল- আমার ও আপনার মধ্যে এই চুক্তি রইল, আমি দু'টি মেয়াদের যেটিই পূর্ণ করি না কেন, আমার বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ করা হবে না, আমরা যে কথা বলছি, আল্লাহ তার সাক্ষী।

فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْأَجَلَ وَسَارَ بِأَهْلِهٖٓ اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ لِأَهْلِهِ امْكُثُوْٓا إِنِّيْٓ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّيْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ أَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ (٢٩)

২৯. অতঃপর মূসা যখন মেয়াদ পূর্ণ ক'রে তার পরিবার নিয়ে যাত্রা করল, তখন সে তূর পর্বতের দিকে আগুন দেখতে পেল। সে তার পরিবারবর্গকে বলল– 'তোমরা অপেক্ষা কর, আমি আগুন দেখেছি, আমি তোমাদের জন্য সেখান থেকে খবর আনতে পারি কিংবা জ্বলন্ত কাষ্ঠখণ্ড আনতে পারি যাতে তোমরা আগুন পোহাতে পার।'

২৬। আবূ মূসা আশ'আরী (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, বিশ্বস্ত খাজাঞ্চি, যাকে কোন কিছু নির্দেশ করলে সন্তুষ্টচিত্তে তা আদায় করে, সে হলো দাতাদের একজন। –বুখারী ২২৬০ [১৪৩৮, মুসলিম ১০২৩, ১৬৯৯, নাসায়ী ২৫৬০, আবূ দাউদ ১৬৮৪, আহমাদ ১৯০১৮, ১৯১২৭]

فَلَمَّآ أَتٰهَا نُوْدِيَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْأَيْمَنِ فِي الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ أَنْ يّٰمُوْسٰٓى إِنِّيْٓ أَنَا اللهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ لا (٣٠)

৩০. মূসা যখন আগুনের কাছে পৌঁছল তখন পবিত্র ভূমিতে অবস্থিত উপত্যকার ডান দিকে বৃক্ষ থেকে তাকে আহ্বান দিয়ে বলা হল– 'হে মূসা! আমিই আল্লাহ, জগতসমূহের পালনকর্তা।'

وَأَنْ أَلْقِ عَصَاكَ ط فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَأَنَّهَا جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ط يٰمُوْسٰٓى أَقْبِلْ وَلَا تَخَفْ قف إِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِيْنَ (٣١)

৩১. আর (বলা হল) 'তোমার লাঠি নিক্ষেপ কর।' অতঃপর যখন সে সেটাকে দেখল ছুটাছুটি করতে যেন ওটা একটা সাপ, তখন পেছনের দিকে দৌড় দিল, ফিরেও তাকাল না। (তখন তাকে বলা হল) 'ওহে মূসা! সামনে এসো, ভয় করো না, তুমি নিরাপদ।'

أُسْلُكْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ز وَّاضْمُمْ إِلَيْكَ جَنَاحَكَ مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَإِيْهِ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ (٣٢)

৩২. তোমার হাত তোমার বগলে রাখ, তা দোষমুক্ত জ্যোতির্ময় হয়ে বেরিয়ে আসবে, ভয় থেকে রক্ষার্থে তোমার হাত তোমার উপর চেপে ধর। এ দু'টি হল ফেরাউন ও তার পারিষদবর্গের জন্য তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রমাণ, নিশ্চয় তারা পাপাচারী সম্প্রদায়।'

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَأَخَافُ أَنْ يَّقْتُلُوْنِ (٣٣)

৩৩. মূসা বলল– 'হে আমার প্রতিপালক! আমি তাদের একজনকে হত্যা করেছি, কাজেই আমি আশঙ্কা করছি তারা আমাকে হত্যা করবে।'

وَأَخِيْ هٰرُوْنُ هُوَ أَفْصَحُ مِنِّيْ لِسَانًا فَأَرْسِلْهُ مَعِيَ رِدْءًا يُّصَدِّقُنِيْٓ ز إِنِّيْٓ أَخَافُ أَنْ يُّكَذِّبُوْنِ (٣٤)

৩৪. আর আমার ভাই হারূন আমার চেয়ে প্রাঞ্জলভাষী, কাজেই তাকে তুমি সাহায্যকারীরূপে আমার সঙ্গে প্রেরণ কর, সে আমাকে সমর্থন জানাবে। আমি আশঙ্কা করছি তারা আমাকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করবে।'

قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِأَخِيْكَ وَنَجْعَلُ لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ إِلَيْكُمَا ج ۛ بِاٰيٰتِنَا ج ۛ أَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ (٣٥)

৩৫. আল্লাহ বললেন– 'আমি তোমার ভ্রাতার মাধ্যমে তোমার হাতকে শক্তিশালী করব এবং তোমাদেরকে প্রমাণপঞ্জি দান করব, যার ফলে তারা তোমাদের কাছে পৌঁছতেই পারবে না। আমার নিদর্শন বলে তোমরা এবং তোমাদের অনুসারীরাই বিজয়ী থাকবে।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ

৩৬. মূসা যখন তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে আসল, তারা বলল- এতো অলীক যাদু মাত্র, আমাদের পূর্বপুরুষদের যামানায় এ সবের

أٰبَآئِنَا الْأَوَّلِيْنَ (٣٦)

কথা তো শুনিনি।

وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّيْٓ أَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ۗ إِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ (٣٧)

৩৭. মূসা বলল– 'আমার প্রতিপালক বেশ ভাল ক'রেই জানেন কে তাঁর নিকট থেকে পথ নির্দেশ নিয়ে এসেছে এবং কার পরিণাম আখিরাতে শুভ হবে। যালিমরা কক্ষনো সাফল্য লাভ করবে না।'

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓأَيُّهَا الْمَلَأُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ مِّنْ إِلٰهٍ غَيْرِيْ ۚ فَأَوْقِدْ لِيْ يٰهَامٰنُ عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ أَطَّلِعُ إِلٰٓى إِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَإِنِّيْ لَأَظُنُّهٗ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ (٣٨)

৩৮. ফেরাউন বলল– 'হে পারিষদবর্গ! আমি ছাড়া তোমাদের কোন ইলাহ্ আছে বলে আমি জানি না। কাজেই ওহে হামান! তুমি আমার জন্য ইট পোড়াও, অতঃপর আমার জন্য একটি প্রাসাদ নির্মাণ কর যাতে আমি মূসার ইলাহ্কে দেখতে পারি, আমার নিশ্চিত ধারণা যে, সে একজন মিথ্যেবাদী।'

وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا أَنَّهُمْ إِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ (٣٩)

৩৯. ফেরাউন ও তার বাহিনী অকারণে পৃথিবীতে অহংকার করেছিল আর তারা ভেবেছিল যে, তাদেরকে আমার কাছে ফিরিয়ে আনা হবে না।

فَأَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ (٤٠)

৪০. কাজেই আমি তাকে ও তার বাহিনীকে পাকড়াও করলাম, অতঃপর তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম। এখন দেখ, যালিমদের পরিণতি কী হয়েছিল।

وَجَعَلْنٰهُمْ أَئِمَّةً يَّدْعُوْنَ إِلَى النَّارِ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ (٤١)

৪১. আমি তাদেরকে নেতা করেছিলাম। তারা জাহান্নামের দিকে আহ্বান করত, ক্বিয়ামতের দিন তারা সাহায্যপ্রাপ্ত হবে না।

وَأَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ع (٤٢)

৪২. এ পৃথিবীতে তাদের পেছনে আমি লাগিয়ে দিয়েছি অভিসম্পাত আর ক্বিয়ামতের দিন তারা হবে দুর্দশাগ্রস্ত

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِ مَآ أَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْأُوْلٰى بَصَآئِرَ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (٤٣)

৪৩. আমি পূর্ববর্তী অনেক মানব গোষ্ঠীকে ধ্বংস করার পর মূসাকে কিতাব দিয়েছিলাম– মানুষের জন্য আলোকবর্তিকা, সত্যপথের নির্দেশ ও রহমতস্বরূপ যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ إِذْ قَضَيْنَآ إِلٰى مُوْسَى

৪৪. মূসাকে যখন আমি নির্দেশনামা দিয়েছিলাম তখন তুমি (তূওয়া উপত্যকার) পশ্চিম প্রান্তে

Contents

الْأَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۙ (٤٤)

ছিলে না, আর ছিলে না তুমি প্রত্যক্ষদর্শী।

وَلٰكِنَّآ أَنْشَأْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْٓ أَهْلِ مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ (٤٥)

৪৫. কিন্তু আমি অনেক মানবগোষ্ঠী সৃষ্টি করেছিলাম, অতঃপর তাদের অনেক যুগ গত হয়ে গেছে। তুমি মাদইয়ানবাসীদের মধ্যে বিদ্যমান ছিলে না তাদের কাছে আমার আয়াত আবৃত্তি করার জন্য, কিন্তু (তাদের মাঝে) রসূল প্রেরণকারী আমিই ছিলাম।

وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ إِذْ نَادَيْنَا وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ أَتٰهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (٤٦)

৪৬. আমি যখন (মূসাকে) ডাক দিয়েছিলাম তখন তুমি তূর পর্বতের পাশে ছিলে না। কিন্তু (তোমাকে পাঠানো হয়েছে) তোমার প্রতিপালকের রহমতস্বরূপ যাতে তুমি এমন একটি সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার যাদের কাছে তোমার পূর্বে সতর্ককারী পাঠানো হয়নি, যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَلَوْلَآ أَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ أَرْسَلْتَ إِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (٤٧)

৪৭. রসূল না পাঠালে তাদের কৃতকর্মের কারণে কোন বিপদ হলে তারা বলত– 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের কাছে রসূল পাঠালে না কেন, পাঠালে তোমার আয়াতসমূহের অনুসরণ করতাম আর আমরা মু'মিন হয়ে যেতাম।'

فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَآ أُوْتِيَ مِثْلَ مَآ أُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ أَوَلَمْ يَكْفُرُوْا بِمَآ أُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ تَظٰهَرَا قف وَقَالُوْٓا إِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ (٤٨)

৪৮. অতঃপর আমার নিকট থেকে তাদের কাছে যখন সত্য আসল তখন তারা বলল– 'মূসাকে যা দেয়া হয়েছিল তাকে কেন সেরূপ দেয়া হল না? ইতোপূর্বে মূসাকে যা দেয়া হয়েছিল তারা কি তা অস্বীকার করেনি?' তারা বলেছিল– 'দু'টোই যাদু, একটা আরেকটার সহায়তাকারী। আর তারা বলেছিল আমরা (তাওরাত ও কুরআন) সবই প্রত্যাখ্যান করি।'

قُلْ فَأْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللهِ هُوَ أَهْدٰى مِنْهُمَآ أَتَّبِعْهُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٤٩)

৪৯. বল, তোমরা যদি সত্যবাদী হও তবে আল্লাহ্‌র নিকট হতে এমন কিতাব নিয়ে এসো যা সত্যপথ নির্দেশ করার ব্যাপারে এ দু' (কিতাব) হতে অধিক উৎকৃষ্ট, আমি সে কিতাবের অনুসরণ করব।

৫০. অতঃপর তারা যদি তোমার কথায় সাড়া না দেয় তাহলে জেনে রেখ, তারা শুধু তাদের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে। আল্লাহ্র পথ নির্দেশ ছাড়াই যে নিজের প্রবৃত্তির অনুসরণ করে, তার চেয়ে অধিক পথভ্রষ্ট আর কে আছে? আল্লাহ যালিম সম্প্রদায়কে সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

فَإِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ أَنَّمَا يَتَّبِعُوْنَ أَهْوَآءَهُمْ ط وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ اللهِ ط إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ع (٥٠)

৫১. আমি তাদের কাছে ক্রমাগত বাণী পৌঁছে দিয়েছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ط (٥١)

৫২. এর পূর্বে আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছিলাম তারা (অর্থাৎ তাদের কতক লোক) তাতে বিশ্বাস করে।

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ (٥٢)

৫৩. তাদের নিকট যখন তা আবৃত্তি করা হয় তখন তারা বলে- আমরা এতে বিশ্বাস করি, এ সত্য আমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে (আগত), এর পূর্বেই আমরা আত্মসমর্পণকারী ছিলাম।

وَإِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ مُسْلِمِيْنَ (٥٣)

৫৪. তাদেরকে তাদের পারিশ্রমিক দু'বার দেয়া হবে যেহেতু তারা ধৈর্য ধারণ করেছে এবং তারা ভাল দিয়ে মন্দের প্রতিহত করে আর আমি তাদেরকে যে রিয্ক দিয়েছি তাথেকে তারা ব্যয় করে।

أُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ أَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ (٥٤)

৫৫. তারা যখন নিরর্থক কথাবার্তা শুনে তখন তাথেকে ফিরে থাকে আর বলে- আমাদের কাজের ফল আমরা পাব, তোমাদের কাজের ফল তোমরা পাবে, তোমাদের প্রতি সালাম, অজ্ঞদের সাথে আমাদের কোন প্রয়োজন নেই।

وَإِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ أَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا لَنَآ أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ز سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ز لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ (٥٥)

৫৬. তুমি যাকে ভালবাস তাকে সৎপথ দেখাতে পারবে না, বরং আল্লাহ্ই যাকে চান সৎ পথে পরিচালিত করেন, সৎপথপ্রাপ্তদের তিনি ভাল করেই জানেন।

إِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ أَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ اللهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ج وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ (٥٦)

৫৬। মুসাইয়্যাব (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যখন আবূ ত্বলিবের মৃত্যু নিকটবর্তী হল, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তাঁর কাছে আসলেন। তিনি সেখানে আবূ জাহ্ল এবং 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু আবূ 'উমাইয়াহ ইব্নু মুগীরাহ্কে পেলেন। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, হে চাচা! আপনি বলুন "লা- ইলা-হা ইল্লাল্লা-হ।" এ 'কালেমা' দ্বারা আমি আপনার জন্য

وَقَالُوْٓا إِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ نُتَخَطَّفْ مِنْ أَرْضِنَا ط أَوَلَمْ نُمَكِّنْ لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى إِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٥٧)

৫৭. তারা বলে– 'আমরা যদি তোমার সাথে সৎপথের অনুসরণ করি তাহলে আমরা আমাদের দেশ থেকে উৎখাত হব।' আমি কি তাদের জন্য এক নিরাপদ 'হারাম' প্রতিষ্ঠিত করিনি যেখানে সর্বপ্রকার ফলমূলের নজরানা আসে আমার পক্ষ থেকে রিয্ক স্বরূপ? কিন্তু তাদের অধিকাংশই তা জানে না।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا ج فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۭ بَعْدِهِمْ إِلَّا قَلِيْلًا ط وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ (٥٨)

৫৮. আমি কত জনপদকে ধ্বংস করেছি যারা তাদের (ভোগবিলাসপূর্ণ) জীবনে চরম উৎকর্ষ সাধন করেছিল। এই তো তাদের বাসস্থান, তাদের পর এগুলোতে খুব অল্প লোকই বসবাস করেছে, অবশেষে আমিই মালিক রয়েছি।

وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى يَبْعَثَ فِيْٓ أُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ج وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى إِلَّا وَأَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ (٥٩)

৫৯. তোমার প্রতিপালক কোন জনপদ ধ্বংস করেন না, যতক্ষণ না তিনি তার কেন্দ্রে রসূল প্রেরণ না করেন যে তাদের কাছে আমার আয়াতসমূহ আবৃত্তি করে; আমি কোন জনপদকে ধ্বংস করি না যতক্ষণ না তার বাসিন্দারা অত্যাচারী হয়।

وَمَآ أُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ج وَمَا عِنْدَ اللهِ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ع (٦٠)

৬০. তোমাদেরকে যে সব বস্তু দেয়া হয়েছে তা পার্থিব জীবনের ভোগ্যবস্তু ও তার শোভা মাত্র। আর আল্লাহ্‌র নিকট যা কিছু আছে তা সর্বশ্রেষ্ঠ ও চিরস্থায়ী, তবুও কি তোমরা বুঝবে না?

أَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ لَاقِيْهِ

৬১. আমি যাকে ও'য়াদা দিয়েছি, কল্যাণের ও'য়াদা আর সেটা সে পাবেও, সে কি ঐ

(ক্বিয়ামাতে) আল্লাহ্‌র কাছে ওযর পেশ করতে পারব। আবূ জাহ্‌ল এবং 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু আবূ 'উমাইয়াহ বলল, তুমি কি 'আবদুল মুত্তালিবের ধর্ম ত্যাগ করবে? রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বারবার তার কাছে এ 'কালিমা' পেশ করতেই থাকলেন। আর তারা তাদের কথা বারবার বলেই চলল। অবশেষে আবূ ত্বলিব তাঁদের সঙ্গে সর্বশেষ এ কথা বললেন, আমি 'আবদুল মুত্তালিবের মিল্লাতের উপর আছি, এবং কালিমা "লা- ইলা-হা ইল্লাল্লা-হ" পাঠ করতে অস্বীকৃতি জানালেন। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! আমাকে নিষেধ না করা অবধি আপনার জন্য ক্ষমা চাইতেই থাকব। তারপর আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন, নাবী (ﷺ) ও মু'মিনদের জন্য এটা শোভনীয় নয় যে, তারা মুশরিকদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করবে। আর আল্লাহ্ তা'আলা আবূ ত্বলিব সম্পর্কে অবতীর্ণ করেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -কে সম্বোধন করে আল্লাহ্ তা'আলা বললেন, "তুমি যাকে ভালবাস তাকেই সৎপথে আনতে পারবে না। তবে আল্লাহ্ যাকে ইচ্ছা হিদায়াত দান করেন।"..........হাদীসের শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৭৭২ [১৩৬০; মুসলিম ২৪, নাসায়ী ২০৩৫, আহমাদ ২৩১৬২]

كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ (٦١)

ব্যক্তির সমান যাকে আমি পার্থিব জীবনের ভোগ-সম্ভার দিয়েছি, অতঃপর ক্বিয়ামতের দিন তাকে হাজির করা হবে (অপরাধীরূপে)?

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ أَيْنَ شُرَكَآئِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ (٦٢)

৬২. সেদিন তাদেরকে ডাক দিয়ে তিনি বলবেন– 'যাদেরকে তোমরা আমার শরীক গণ্য করতে তারা কোথায়?'

قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ أَغْوَيْنَا ج أَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا غَوَيْنَا ج تَبَرَّأْنَآ إِلَيْكَ ز مَا كَانُوْٓا إِيَّانَا يَعْبُدُوْنَ (٦٣)

৬৩. যাদের বিরুদ্ধে অভিযোগ প্রমাণিত হবে তারা বলবে– 'হে আমাদের পালনকর্তা! ওদেরকে আমরা বিভ্রান্ত করেছিলাম, ওদেরকে বিভ্রান্ত করেছিলাম, যেমন আমরা নিজেরা বিভ্রান্ত হয়েছিলাম, আমরা তোমার কাছে দায়মুক্ত হচ্ছি (যে আমরা জোর ক'রে তাদেরকে বিভ্রান্ত করিনি)। এরা তো আমাদের 'ইবাদাত করত না।

وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَأَوُا الْعَذَابَ ج لَوْ أَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ (٦٤)

৬৪. তাদেরকে বলা হবে, 'তোমাদের দেবতাগুলোকে ডাক, তখন তারা তাদেরকে ডাকবে'। কিন্তু তারা তাদের ডাকে সাড়া দিবে না। তারা শাস্তি দেখতে পাবে (তাদের সামনে)। তারা যদি সৎপথপ্রাপ্ত হত!

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ أَجَبْتُمُ الْمُرْسَلِيْنَ (٦٥)

৬৫. আর সেদিন আল্লাহ তাদেরকে ডাক দিবেন এবং বলবেন– 'তোমরা রসূলদেরকে কী জওয়াব দিয়েছিলে?'

فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْأَنْبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ لَا يَتَسَآءَلُوْنَ (٦٦)

৬৬. সে দিন তাদের কথা বন্ধ হয়ে যাবে, অতঃপর পরস্পরকে জিজ্ঞাসাবাদও করতে পারবে না।

فَأَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَعَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ (٦٧)

৬৭. কিন্তু যে ব্যক্তি (তার জীবনে) তাওবাহ করেছিল আর ঈমান এনেছিল আর সৎকাজ করেছিল, আশা করা যায় সে সাফল্যমণ্ডিতদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ط مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ط سُبْحٰنَ اللهِ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٦٨)

৬৮. তোমার প্রতিপালক যা ইচ্ছে সৃষ্টি করেন আর যাকে ইচ্ছে মনোনীত করেন। এতে তাদের কোন এখতিয়ার নেই, আল্লাহ পবিত্র, মহান। তারা যাকে শরীক করে তাথেকে তিনি বহু ঊর্ধ্বে।

وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ وَمَا يُعْلِنُوْنَ (٦٩)

৬৯. তোমার প্রতিপালক জানেন তাদের অন্তর যা গোপন করে আর যা প্রকাশ করে।

وَهُوَ اللّٰهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ط لَهُ الْحَمْدُ فِي الْأُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ز وَلَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٧٠)

৭০. আর তিনিই আল্লাহ, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ্ নেই, সমস্ত প্রশংসা তাঁরই– প্রথমেও আর শেষেও, বিধান তাঁরই, আর তোমাদেরকে তাঁর দিকেই ফিরিয়ে নেয়া হবে।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ اللَّيْلَ سَرْمَدًا إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ط أَفَلَا تَسْمَعُوْنَ (٧١)

৭১. তোমরা কি ভেবে দেখেছ আল্লাহ যদি তোমাদের উপর রাতকে ক্বিয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করতেন তাহলে আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ্ আছে কি যে তোমাদেরকে আলো এনে দিত? তবুও কি তোমরা কর্ণপাত করবে না?

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ النَّهَارَ سَرْمَدًا إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ مَنْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَأْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ط أَفَلَا تُبْصِرُوْنَ (٧٢)

৭২. তোমরা কি ভেবে দেখেছ আল্লাহ যদি তোমাদের উপর দিনকে ক্বিয়ামতের দিন পর্যন্ত স্থায়ী করতেন তাহলে আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ্ আছে কি যে তোমাদের জন্য রাত্রি এনে দিত যাতে তোমরা আরাম করতে? তোমরা কি চিন্তা করে দেখবে না?

وَمِنْ رَّحْمَتِهِ جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٧٣)

৭৩. তিনিই স্বীয় রহমতে তোমাদের জন্য রাত ও দিন করেছেন যাতে তোমরা তাতে আরাম করতে পার আর তাঁর অনুগ্রহ সন্ধান করতে পার এবং যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ أَيْنَ شُرَكَآئِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ (٧٤)

৭৪. সেদিন তিনি তাদেরকে ডাক দিবেন এবং বলবেন– 'তোমরা যাদেরকে আমার শরীক মনে করতে তারা কোথায়?'

وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْآ أَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ع (٧٥)

৭৫. আমি প্রত্যেক সম্প্রদায় থেকে একজন সাক্ষী বের করে আনব, অতঃপর বলব– 'তোমাদের (নির্দোষিতার পক্ষে) প্রমাণ হাজির কর। তখন তারা জানতে পারবে যে, ইলাহ হওয়ার অধিকার আল্লাহ্রই আর তারা যা উদ্ভাবন করত তা তাদের কাছ থেকে উধাও হয়ে যাবে।

إِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى عَلَيْهِمْ ص وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ إِنَّ مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓءُ بِالْعُصْبَةِ أُولِى الْقُوَّةِ ق إِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ (٧٦)

৭৬. কারূন ছিল মূসার সম্প্রদায়ভুক্ত, কিন্তু সে তাদের প্রতি উদ্ধত আচরণ করেছিল। তাকে আমি এমন ধনভাণ্ডার দিয়েছিলাম যে, তার চাবিগুলো বহন করা মাত্র একদল বলবান লোকের পক্ষে কষ্টকর ছিল। স্মরণ কর যখন তার সম্প্রদায় তাকে বলেছিল (ধনের) গর্ব করো না, আল্লাহ্ গর্বিতদেরকে ভালবাসেন না।

وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰكَ اللهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَأَحْسِنْ كَمَآ أَحْسَنَ اللهُ إِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ فِي الْأَرْضِ ط إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ (٧٧)

৭৭. আল্লাহ তোমাকে যা দিয়েছেন তা দিয়ে তুমি আখিরাতে (স্থায়ী সুখভোগের) আবাস অনুসন্ধান কর, আর দুনিয়ায় তোমার অংশের কথা ভুলে যেও না, (মানুষের) কল্যাণ সাধন কর, যেমন আল্লাহ তোমার কল্যাণ করেছেন, দেশে বিপর্যয় সৃষ্টির কামনা কর না, নিশ্চয় আল্লাহ বিপর্যয় সৃষ্টিকারীদের ভালবাসেন না।

قَالَ إِنَّمَآ أُوْتِيْتُهٗ عَلٰى عِلْمٍ عِنْدِيْ ط أَوَلَمْ يَعْلَمْ أَنَّ اللهَ قَدْ أَهْلَكَ مِنْ قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُ قُوَّةً وَّأَكْثَرُ جَمْعًا ط وَلَا يُسْأَلُ عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ (٧٨)

৭৮. সে বলল- 'এ সম্পদ তো আমাকে দেয়া হয়েছে যেহেতু আমার কাছে জ্ঞান আছে।' সে কি জানে না যে, আল্লাহ তার পূর্বে অনেক মানব গোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছেন যারা শক্তিতে তার চেয়ে ছিল প্রবল আর জনসংখ্যায় ছিল অধিক? অপরাধীদেরকে (তাদের অপরাধ সম্পর্কে মুখে) কিছুই জিজ্ঞেস করা হবে না।

فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ط قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ أُوْتِيَ قَارُوْنُ لا إِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ (٧٩)

৭৯. কারূন শান-শওকাতের সাথে তার সম্প্রদায়ের সামনে হাজির হল। যারা পার্থিব জীবন কামনা করে তারা বলে উঠল- 'হায়! কারূনকে যা দেয়া হয়েছে আমাদের জন্যও যদি তা হত! সত্যই সে মহা ভাগ্যবান ব্যক্তি।'

وَقَالَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ج وَلَا يُلَقّٰهَآ إِلَّا الصّٰبِرُوْنَ (٨٠)

৮০. যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছিল তারা বলল- 'ধিক তোমাদের প্রতি, আল্লাহ্র পুরস্কারই শ্রেষ্ঠতর তাদের জন্য যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে, আর সত্যপথে অবিচল ধৈর্যশীল ছাড়া অন্য কেউ তা প্রাপ্ত হয় না।

فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْأَرْضَ قف فَمَا كَانَ لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللهِ ق ز وَمَا

৮১. অতঃপর আমি ভূগর্ভে প্রোথিত করলাম কারূনকে ও তার প্রাসাদকে। আল্লাহ্র ব্যতীত তাকে সাহায্য করার কোন দল ছিল না, আর সে

كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ (٨١)

নিজেও নিজেকে রক্ষা করতে পারল না।

وَأَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهُ بِالْأَمْسِ يَقُوْلُوْنَ وَيْكَأَنَّ اللهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ أَنْ مَّنَّ اللهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ؕ وَيْكَأَنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ع (٨٢)

৮২. গতকাল যারা তার মর্যাদার ন্যায় কামনা করেছিল তারা সকলে বলতে লাগল, 'হায়, আল্লাহ তাঁর বান্দাদের যার জন্য ইচ্ছে রিয্ক বর্ধিত করেন আর যার জন্য ইচ্ছে হ্রাস করেন। আল্লাহ যদি আমাদের প্রতি অনুগ্রহ না করতেন তবে তিনি আমাদেরকেও ভূগর্ভে প্রোথিত করে দিতেন। হায়! অবিশ্বাসীরা সাফল্যমণ্ডিত হয় না।

تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْأَرْضِ وَلَا فَسَادًا ؕ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ (٨٣)

৮৩. সেই আখিরাতের ঘর আমি তাদের জন্য করেছি যারা পৃথিবীর বুকে ঔদ্ধত্য প্রকাশ ও বিপর্যয় সৃষ্টি করতে চায় না। শুভ পরিণাম আল্লাহভীরুদের জন্য।

مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ إِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٨٤)

৮৪. যে কেউ সৎকর্ম নিয়ে হাজির হবে তার জন্য আছে আরো উত্তম প্রতিদান। আর যে মন্দ কাজ নিয়ে হাজির হবে তাহলে যারা মন্দকর্ম করে তাদেরকে তাদের কাজ অনুপাতেই শাস্তি দেয়া হবে।

إِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ إِلٰى مَعَادٍ ؕ قُلْ رَّبِّيْٓ أَعْلَمُ مَنْ جَآءَ بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٨٥)

৮৫. যিনি তোমার প্রতি কুরআন বিধিবদ্ধ করেছেন তিনি অবশ্যই তোমাকে মূলভূমিতে (মাক্কায়) ফিরিয়ে আনবেন। বল, আমার প্রতিপালক ভাল করেই জানেন কে সৎপথের নির্দেশ নিয়ে এসেছে আর কে আছে সুস্পষ্ট গুমরাহীতে।

وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا أَنْ يُّلْقٰٓى إِلَيْكَ الْكِتٰبُ إِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ز (٨٦)

৮৬. তুমি তো প্রত্যাশা করনি যে, তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ করা হবে। এটা তোমার প্রতিপালকের রহমত বিশেষ। কাজেই তুমি কক্ষনো কাফিরদের সমর্থনকারী হয়ো না।

৮৫। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, لَرَآدُّكَ إِلٰى مَعَادٍ এর অর্থ মক্কার পানে। –বুখারী ৪৭৭৩

وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ إِذْ أُنْزِلَتْ إِلَيْكَ وَادْعُ إِلٰى رَبِّكَ وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ج (٨٧)

৮৭. তোমার প্রতি আল্লাহ্‌র আয়াত নাযিল হওয়ার পর তারা যেন তোমাকে তাথেকে কক্ষনো বিমুখ না করতে পারে। তুমি তোমার প্রতিপালকের দিকে আহ্বান জানাও, আর কিছুতেই মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ قف كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ إِلَّا وَجْهَهٗ ط لَهُ الْحُكْمُ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ع (٨٨)

৮৮. আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্য কোন ইলাহ্‌কে ডেকো না, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ্ নেই, তাঁর (সত্তা) ছাড়া সকল কিছুই ধ্বংসশীল। বিধান তাঁরই, আর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনা হবে।

২৯. সূরাহ আল-‘আনকাবূত

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ

আয়াতঃ ৬৯, রুকূ‘ঃ ৬৭, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

الٓمّٓ ج (١)

১. আলিফ-লাম-মীম

أَحَسِبَ النَّاسُ أَنْ يُّتْرَكُوْٓا أَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ (٢)

২. লোকেরা কি মনে করে যে ‘আমরা ঈমান এনেছি’ বললেই তাদেরকে অব্যাহতি দিয়ে দেয়া হবে, আর তাদেরকে পরীক্ষা করা হবে না?

وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ (٣)

৩. তাদের পূর্বে যারা ছিল আমি তাদেরকে পরীক্ষা করেছিলাম; অতঃপর আল্লাহ অবশ্য অবশ্যই জেনে নেবেন কারা সত্যবাদী আর কারা মিথ্যেবাদী।

أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ أَنْ يَّسْبِقُوْنَا ط سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (٤)

৪. যারা মন্দ কাজ করে তারা কি ভেবে নিয়েছে যে, তারা আমার আগে বেড়ে যাবে? তাদের ফয়সালা বড়ই খারাপ!

مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَإِنَّ أَجَلَ اللّٰهِ لَاٰتٍ ط وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٥)

৫. যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র সাক্ষাতের আকাঙ্ক্ষা করে (সে জেনে রাখুক যে) আল্লাহ্‌র নির্ধারিত কাল অবশ্যই আসবে, তিনি সব কিছু শোনেন, সব কিছু জানেন।

وَمَنْ جَاهَدَ فَإِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ط إِنَّ اللّٰهَ

৬. যে লোক (আল্লাহ্‌র পথে) সর্বাত্মক প্রচেষ্টা চালায়, সে তার নিজের কল্যাণেই প্রচেষ্টা চালায়,

لَغَنِيٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (٦)

আল্লাহ সৃষ্টিজগত থেকে অবশ্যই বে-পরওয়া।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ سَيِّئٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَحْسَنَ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٧)

৭. আর যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে, আমি অবশ্য অবশ্যই তাদের মন্দ কাজগুলোকে মুছে দেব, আর তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই প্রতিদান দেব তাদের উৎকৃষ্ট কাজগুলোর অনুপাতে যা তারা করত।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ط وَإِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ط إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٨)

৮. পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার করার জন্য আমি মানুষের প্রতি ফরমান জারি করেছি। তারা যদি তোমার উপর বলপ্রয়োগ করে আমার সঙ্গে শরীক করার জন্য এমন কিছুকে যে সম্পর্কে তোমার কোন জ্ঞান নেই, তাহলে তুমি তাদেরকে মান্য কর না। আমার কাছেই তোমাদের প্রত্যাবর্তন, অতঃপর আমি তোমাদেরকে জানিয়ে দেব যা তোমরা করছিলে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِي الصّٰلِحِيْنَ (٩)

৯. যারা ঈমান আনে ও সৎকাজ করে আমি অবশ্য অবশ্যই তাদেরকে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত করব।

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَإِذَآ أُوْذِيَ فِي اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ كَعَذَابِ اللّٰهِ ط وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ إِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ط أَوَلَيْسَ اللّٰهُ بِأَعْلَمَ بِمَا فِيْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ (١٠)

১০. মানুষের মধ্যে কতক আছে যারা বলে 'আমরা আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান এনেছি।' অতঃপর তাদেরকে যখন আল্লাহ্‌র পথে কষ্ট দেয়া হয়, তখন তারা মানুষের উৎপীড়নকে আল্লাহ্‌র 'আযাবের মত মনে করে। আর যদি (তোমার কাছে) তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে সাহায্য আসে তখন তারা অবশ্য অবশ্যই বলে যে, 'আমরা তো (সব সময়) তোমাদের সাথেই ছিলাম। সকল সৃষ্টির অন্তরে কী আছে সে সম্পর্কে আল্লাহ্ কি সর্বাধিক অবগত নন?

وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ (١١)

১১. আল্লাহ অবশ্য অবশ্যই জেনে নেবেন কারা ঈমান এনেছে আর অবশ্য অবশ্যই জেনে নেবেন কারা মুনাফিক।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ط وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ

১২. কাফিররা মু'মিনদেরকে বলে, 'আমাদের পথ অনুসরণ কর, আমরা তোমাদের পাপের বোঝা বহন করব, মূলতঃ তারা তাদের পাপের কিছুই বহন করবে না, অবশ্যই তারা

مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١٢)

মিথ্যেবাদী।

وَلَيَحْمِلُنَّ أَثْقَالَهُمْ وَأَثْقَالًا مَّعَ أَثْقَالِهِمْ ز وَلَيُسْأَلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ع (١٣)

১৩. তারা অবশ্য অবশ্যই তাদের নিজেদের পাপের বোঝা বহন করবে, নিজেদের বোঝার সাথে আরো বোঝা, আর তারা যে সব মিথ্যে উদ্ভাবন করত সে সম্পর্কে ক্বিয়ামত দিবসে তারা অবশ্য অবশ্যই জিজ্ঞাসিত হবে।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ فِيْهِمْ أَلْفَ سَنَةٍ إِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ فَأَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ (١٤)

১৪. আমি নূহ্‌কে তার সম্প্রদায়ের কাছে পাঠিয়েছিলাম, অতঃপর সে পঞ্চাশ বছর কম হাজার বছর তাদের মাঝে অবস্থান করেছিল। অতঃপর মহাপ্লাবন তাদেরকে গ্রাস করল কারণ তারা ছিল সীমালঙ্ঘনকারী।

فَأَنْجَيْنٰهُ وَأَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَآ اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ (١٥)

১৫. অতঃপর আমি তাকে ও নৌকারোহীদেরকে রক্ষে করলাম আর এটাকে করলাম বিশ্বজগতের জন্য নিদর্শন।

وَإِبْرٰهِيْمَ إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (١٦)

১৬. স্মরণ কর যখন ইব্‌রাহীম তার সম্প্রদায়কে বলেছিল– 'তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর আর তাঁকে ভয় কর। এটাই তোমাদের জন্য কল্যাণকর, তোমরা যদি জানতে!

إِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ أَوْثَانًا وَّتَخْلُقُوْنَ إِفْكًا ؕ إِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ إِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (١٧)

১৭. তোমরা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে প্রতিমার পূজা করছ আর তোমরা মিথ্যে উদ্ভাবন করছ। আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে তোমরা যে সবগুলোর পূজা করছ তারা তোমাদেরকে রিয্‌ক দানের কোন ক্ষমতা রাখে না, কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌র নিকট রিয্‌ক তালাশ কর, আর তাঁরই 'ইবাদাত কর, আর তাঁরই প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর, তোমাদেরকে তাঁরই দিকে ফিরিয়ে নেয়া হবে।

وَإِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ أُمَمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (١٨)

১৮. তোমরা যদি (রাসূলকে) মিথ্যে বলে অস্বীকার কর তবে তোমাদের পূর্বের বংশাবলীও অস্বীকার করেছিল, সুস্পষ্টভাবে প্রচার করা ব্যতীত রসূলের উপর কোন দায়িত্ব নেই।

أَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللهُ الْخَلْقَ ثُمَّ

১৯. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আল্লাহ কীভাবে সৃষ্টির সূচনা করেন অতঃপর তার পুনরাবর্তন

يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ (١٩)

ঘটান, নিশ্চয় এটা আল্লাহ্‌র জন্য সহজ।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ج (٢٠)

২০. বল– 'তোমরা পৃথিবীতে ভ্রমণ কর, অতঃপর লক্ষ্য কর কীভাবে আল্লাহ সৃষ্টির সূচনা করেছেন, অতঃপর আল্লাহ সৃষ্টি করবেন পরবর্তী সৃষ্টি, আল্লাহ সকল বিষয়ের উপর ক্ষমতাবান।

يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ج وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ (٢١)

২১. যাকে ইচ্ছে তিনি শাস্তি দেন আর যার প্রতি ইচ্ছে তিনি রহমত বর্ষণ করেন আর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে নেয়া হবে।

وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ز وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ع (٢٢)

২২. তোমরা (আল্লাহ্‌কে) না পৃথিবীতে ব্যর্থ করতে পারবে আর না আকাশে, আল্লাহ ছাড়া তোমাদের জন্য নেই কোন অভিভাবক, নেই কোন সাহায্যকারী।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖٓ اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٢٣)

২৩. যারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনাবলীকে আর তাঁর সাক্ষাৎকে অস্বীকার করে, তারা আমার রহমত থেকে নিরাশ হবে আর তাদের জন্য আছে ভয়াবহ শাস্তি।

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٢٤)

২৪. অতঃপর ইবরাহীমের সম্প্রদায়ের এ কথা বলা ছাড়া কোন জওয়াব ছিল না যে, তাকে হত্যা কর অথবা তাকে অগ্নিদগ্ধ কর।' অতঃপর আল্লাহ তাকে অগ্নি থেকে রক্ষা করলেন। এতে বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

وَقَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا لا مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ز وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ق صلے (٢٥)

২৫. ইব্‌রাহীম বলল- তোমরা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে প্রতিমাগুলোকে (উপাস্যরূপে) গ্রহণ করেছ পার্থিব জীবনে তোমাদের পারস্পরিক ভালবাসা রক্ষার উদ্দেশে। অতঃপর ক্বিয়ামতের দিন তোমাদের একে অপরকে অস্বীকার করবে আর একে অপরকে অভিশাপ দিবে, তোমাদের ঠিকানা হবে জাহান্নাম আর তোমাদের থাকবে না কোন সাহায্যকারী।

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ اِلٰى رَبِّيْ ؕ

২৬. অতঃপর লূত তার (অর্থাৎ ইবরাহীমের) প্রতি ঈমান এনেছিল। ইবরাহীম বলল- আমি

إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ (٢٦)

আমার পালনকর্তার উদ্দেশে দেশ ত্যাগ করছি, তিনি মহাপরাক্রান্ত, বড়ই হিকমতওয়ালা।

وَوَهَبْنَا لَهُ إِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ وَجَعَلْنَا فِي ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ أَجْرَهُ فِي الدُّنْيَا ج وَإِنَّهُ فِي الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِينَ (٢٧)

২৭. আমি তাকে দান করেছিলাম ইসহাক্ব ও ইয়া'কুব, তার বংশধরদের জন্য স্থির করেছিলাম নবূওয়াত ও কিতাব, আর তাকে প্রতিদান দিয়েছিলাম দুনিয়াতে, এবং আখিরাতেও অবশ্যই সে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত।

وَلُوطًا إِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ إِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الْفَاحِشَةَ ز مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ أَحَدٍ مِّنَ الْعٰلَمِينَ (٢٨)

২৮. স্মরণ কর লূতের কথা, যখন সে তার সম্প্রদায়কে বলেছিল– অবশ্যই তোমরা এমন এক অশ্লীল কাজ করছ যা তোমাদের পূর্বে বিশ্বজগতে কেউ করেনি।

أَئِنَّكُمْ لَتَأْتُونَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُونَ السَّبِيلَ لا وَتَأْتُونَ فِي نَادِيكُمُ الْمُنْكَرَ ط فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهِ إِلَّا أَنْ قَالُوا ائْتِنَا بِعَذَابِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِينَ (٢٩)

২৯. তোমরা (কাম-তাড়িত হয়ে) পুরুষদের কাছে যাও, রাহাজানি কর এবং নিজেদের মজলিসে ঘৃণ্য কর্ম কর। তার সম্প্রদায়ের এ কথা বলা ছাড়া কোন জওয়াব ছিল না যে, তুমি সত্যবাদী হলে আমাদের উপর আল্লাহ্‌র 'আযাব নিয়ে এসো।

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِي عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِينَ ع (٣٠)

৩০. সে বলল- হে আমার প্রতিপালক! ফাসাদ সৃষ্টিকারী সম্প্রদায়ের বিরুদ্ধে আমাকে সাহায্য কর।

وَلَمَّا جَاءَتْ رُسُلُنَا إِبْرٰهِيمَ بِالْبُشْرٰى لا قَالُوا إِنَّا مُهْلِكُوا أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ج إِنَّ أَهْلَهَا كَانُوا ظٰلِمِينَ ج صلے (٣١)

৩১. যখন আমার দূতগণ (অর্থাৎ ফেরেশতারা) ইবরাহীমের কাছে সুসংবাদ নিয়ে আসল, তারা বলল- আমরা এ জনপদের বাসিন্দাদের ধ্বংস করব, এর অধিবাসীরা তো যালিম।

قَالَ إِنَّ فِيهَا لُوطًا ط قَالُوا نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَنْ فِيهَا ز لَنُنَجِّيَنَّهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ ز كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ (٣٢)

৩২. ইব্রাহীম বলল- ওখানে তো লূত আছে। তারা বলল- ওখানে কারা আছে আমরা তা ভাল করেই জানি, আমরা তাকে আর তার পরিবারবর্গকে অবশ্য অবশ্যই রক্ষা করব তার স্ত্রীকে ছাড়া, সে ধ্বংসপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত।

وَلَمَّا أَنْ جَاءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيءَ بِهِمْ وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَقَالُوا لَا تَخَفْ وَلَا تَحْزَنْ قف إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا امْرَأَتَكَ كَانَتْ

৩৩. আমার দূতরা যখন লূতের কাছে আসল তখন সে তাদের জন্য বিষণ্ন হয়ে পড়ল এবং (তাদের রক্ষার ব্যাপারে) নিজেকে অসহায় মনে করল। তখন তারা বলল- তোমরা ভয় কর না, দুঃখ কর না, আমরা তোমাকে আর তোমার

Contents

مِنَ الْغٰبِرِيْنَ (٣٣)

পরিবারবর্গকে রক্ষা করব তোমার স্ত্রীকে ছাড়া, সে ধ্বংসপ্রাপ্তদের অন্তর্ভুক্ত।

إِنَّا مُنْزِلُوْنَ عَلٰٓى أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ (٣٤)

৩৪. আমরা এ জনপদের বাসিন্দাদের উপর আসমানী শাস্তি নাযিল করব, কারণ তারা ছিল পাপাচারে লিপ্ত।

وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٣٥)

৩৫. এতে আমি জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য এক সুস্পষ্ট নিদর্শন রেখে দিয়েছি।

وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا لا فَقَالَ يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِيْنَ (٣٦)

৩৬. মাদইয়ানের বাসিন্দাদের কাছে আমি তাদের ভাই শু'আয়বকে পাঠিয়েছিলাম। সে বলল- হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, শেষ দিবসকে ভয় কর, পৃথিবীতে ফাসাদ সৃষ্টি কর না।

فَكَذَّبُوْهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ز (٣٧)

৩৭. কিন্তু তারা তাকে মিথ্যে ব'লে অস্বীকার করল, অতঃপর মহা কম্পন তাদেরকে পাকড়াও করল আর তারা নিজেদের গৃহে উপুড় হয়ে শেষ হয়ে গেল।

وَعَادًا وَّثَمُوْدَاْ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وقفة وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَكَانُوْا مُسْتَبْصِرِيْنَ لا (٣٨)

৩৮. (স্মরণ কর) 'আদ ও সামূদ (জাতির) কথা, তাদের বাড়ীঘর হতেই তাদের (করুণ পরিণতি) সম্পর্কে সুস্পষ্টরূপে তোমাদের জানা হয়ে গেছে। তাদের কাজগুলোকে শয়ত্বান তাদের দৃষ্টিতে মনোমুগ্ধকর করেছিল। যার ফলে সৎপথে চলতে তাদেরকে বাধা দিয়েছিল, যদিও তারা ছিল তীক্ষ্ম দৃষ্টির অধিকারী।

وَقَارُوْنَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ قف وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوْا سٰبِقِيْنَ ج (٣٩)

৩৯. (স্মরণ কর) কারূন, ফেরাউন ও হামানের কথা। মূসা তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিল, অতঃপর তারা পৃথিবীতে অহংকার করল, কিন্তু তারা (আমাকে পেছনে ফেলে) আগে বেড়ে যেতে পারেনি।

فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ ج فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِ حَاصِبًا ج وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ الصَّيْحَةُ ج وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ ج وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا ج وَمَا كَانَ اللهُ لِيَظْلِمَهُمْ

৪০. ওদের প্রত্যেককেই আমি তার পাপের কারণে পাকড়াও করেছিলাম। তাদের কারো প্রতি আমি পাঠিয়েছিলাম পাথরসহ ঝটিকা, কারো প্রতি আঘাত হেনেছিল বজ্রের প্রচণ্ড আওয়াজ, কাউকে আমি প্রোথিত করেছি ভূগর্ভে আর কাউকে দিয়েছিলাম ডুবিয়ে। তাদের প্রতি আল্লাহ কোন যুল্‌ম করেননি, তারা নিজেরাই

وَلٰكِنْ كَانُوْٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (٤٠)

নিজেদের প্রতি যুল্‌ম করেছিল।

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ أَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ج اِتَّخَذَتْ بَيْتًا ط وَإِنَّ أَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ الْعَنْكَبُوْتِ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (٤١)

৪১. যারা আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে অন্যদেরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করেছে তাদের দৃষ্টান্ত হল মাকড়সার মত। সে ঘর বানায়, আর ঘরের মধ্যে মাকড়সার ঘরই সবচেয়ে দুর্বল; যদি তারা জানত!

إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٤٢)

৪২. তারা আল্লাহ্‌র পরিবর্তে যা কিছুকে ডাকে আল্লাহ তা জানেন, তিনি মহাপরাক্রান্ত, মহাপ্রজ্ঞাময়।

وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ج وَمَا يَعْقِلُهَآ إِلَّا الْعٰلِمُوْنَ (٤٣)

৪৩. এ সব দৃষ্টান্ত আমি মানুষদের জন্য বর্ণনা করছি, কেবল জ্ঞানীরাই তা বুঝে।

خَلَقَ اللهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ع (٤٤)

৪৪. আসমানসমূহ আর পৃথিবীকে আল্লাহ উদ্দেশ্য সাধনের উপযোগী ক'রে সৃষ্টি করেছেন, এতে বিশ্বাসীদের জন্য অবশ্যই নিদর্শন আছে।

أُتْلُ مَآ أُوْحِيَ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ إِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللهِ أَكْبَرُ ؕ وَاللهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ (٤٥)

৪৫. তোমার প্রতি যা ওয়াহী করা হয়েছে কিতাব থেকে তা পাঠ কর আর নামায প্রতিষ্ঠা কর; নামায অশ্লীল ও মন্দ কাজ হতে বিরত রাখে। নিশ্চয়ই আল্লাহ্‌র স্মরণই সর্বশ্রেষ্ঠ (বিষয়)। তোমরা যা কর আল্লাহ তা জানেন।

وَلَا تُجَادِلُوْآ أَهْلَ الْكِتٰبِ إِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ ز إِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْآ اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ أُنْزِلَ إِلَيْنَا وَأُنْزِلَ إِلَيْكُمْ وَإِلٰهُنَا وَإِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ (٤٦)

৪৬. উত্তম পন্থা ছাড়া কিতাবধারীদের সাথে তর্ক-বিতর্ক কর না; তবে তাদের মধ্যে যারা বাড়াবাড়ি করে তারা বাদে। আর বল, আমরা ঈমান এনেছি আমাদের প্রতি যা নাযিল হয়েছে আর তোমাদের প্রতি যা নাযিল হয়েছে তার উপর; আমাদের ইলাহ ও তোমাদের ইলাহ একই, আর তাঁর কাছেই আমরা আত্মসমর্পণ করেছি।

وَكَذٰلِكَ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ج وَمِنْ هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ إِلَّا الْكٰفِرُوْنَ (٤٧)

৪৭. (পূর্বে যেভাবে নাযিল করেছিলাম) এভাবেই আমি তোমার প্রতি কিতাব (কুরআন) নাযিল করেছি। কাজেই আমি যাদেরকে কিতাব দিয়েছিলাম তারা তাতে বিশ্বাস করে, আর তাদেরও (অর্থাৎ মক্কার মুশরিকদেরও) কতক তাতে বিশ্বাস স্থাপন করে, অবিশ্বাসীরা ছাড়া আমার নিদর্শনাবলীকে কেউ অস্বীকার করে না।

وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ إِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ (٤٨)

৪৮. তুমি তো এর পূর্বে কোন কিতাব পাঠ করনি, আর তুমি নিজ হাতে কোন কিতাব লেখনি, এমন হলে মিথ্যাবাদীরা সন্দেহ পোষণ করত।

بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ إِلَّا الظّٰلِمُوْنَ (٤٩)

৪৯. বরং যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তাদের অন্তরে তা (কুরআন) এক সুস্পষ্ট নিদর্শন। অন্যায়কারীরা ছাড়া আমার নিদর্শনাবলীকে কেউ অস্বীকার করে না

وَقَالُوْا لَوْلَآ أُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ إِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللهِ ؕ وَإِنَّمَآ أَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (٥٠)

৫০. তারা বলে- তার কাছে তার প্রতিপালকের নিকট হতে কোন নিদর্শন অবতীর্ণ হয় না কেন? বল, নিদর্শন তো আছে আল্লাহ্‌র কাছে, আমি কেবল একজন সুস্পষ্ট সতর্ককারী।

أَوَلَمْ يَكْفِهِمْ أَنَّآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ

৫১. এটা কি তাদের জন্য যথেষ্ট (নিদর্শন) নয় যে, আমি তোমার প্রতি কিতাব নাযিল করেছি যা

Contents

يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ع (٥١)

তাদের সম্মুখে পাঠ করা হয়, বিশ্বাসী সম্প্রদায়ের জন্য অবশ্যই এতে অনুগ্রহ ও উপদেশ রয়েছে।

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ج يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ لا أُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (٥٢)

৫২. বল, আমার আর তোমাদের মাঝে সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট, আসমানসমূহ আর যমীনে যা আছে তা তিনি জানেন। আর যারা মিথ্যায় বিশ্বাস করে এবং আল্লাহ্‌কে অস্বীকার করে তারাই হল ক্ষতিগ্রস্ত।

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ أَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ وَلَيَأْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٥٣)

৫৩. তারা তোমাকে তাড়াতাড়ি শাস্তি আনতে বলে। ('আযাবের) সময়কাল যদি না নির্ধারিত থাকত তবে তাদের উপর শাস্তি অবশ্যই এসে পড়ত। তা তাদের উপর অবশ্য অবশ্যই আসবে আকস্মিকভাবে, তারা (আগেভাগে) টেরও পাবে না।

يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ لا (٥٤)

৫৪. তারা তোমাকে তাড়াতাড়ি শাস্তি আনতে বলে। জাহান্নাম কাফিরদেরকে ঠিকই ঘেরাও করে ফেলবে।

يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ أَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٥٥)

৫৫. সেদিন 'আযাব তাদেরকে ঢেকে নেবে তাদের উপর থেকে আর তাদের পায়ের নীচে হতে। আল্লাহ বলবেন- তোমরা যা করতে তার স্বাদ ভোগ কর।

يَا عِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنَّ أَرْضِيْ وَاسِعَةٌ فَإِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ (٥٦)

৫৬. হে আমার বান্দারা! যারা ঈমান এনেছ, আমার যমীন প্রশস্ত, কাজেই তোমরা একমাত্র আমারই 'ইবাদাত কর।

كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ قف ثُمَّ إِلَيْنَا تُرْجَعُوْنَ (٥٧)

৫৭. প্রতিটি প্রাণ মৃত্যুর স্বাদ গ্রহণ করবে, অতঃপর আমার কাছেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনা হবে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ ق صلے (٥٨)

৫৮. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে, আমি তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই জান্নাতে সুউচ্চ প্রাসাদে বাসস্থান দেব যার তলদেশে নদীসমূহ প্রবাহিত, তার ভেতরে তারা চিরকাল থাকবে। সৎকর্মশীলদের প্রতিদান কতই না উত্তম!

الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ (٥٩)

৫৯. যারা ধৈর্যধারণ করে আর তাদের প্রতিপালকের উপর ভরসা রাখে।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ز ق صلے اَللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَإِيَّاكُمْ زصلے وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٦٠)

৬০. এমন অনেক জীবজন্তু আছে যারা নিজেদের খাদ্য মজুদ রাখে না, আল্লাহই তাদেরকে রিয্ক দান করেন আর তোমাদেরকেও। তিনি সব কিছু শোনেন, সব কিছু জানেন।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ج فَأَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ (٦١)

৬১. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর- কে আসমানসমূহ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন, আর সূর্য ও চন্দ্রকে নিয়ন্ত্রণ করেছেন? তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে- আল্লাহ। তাহলে তারা কোথায় ঘুরে বেড়াচ্ছে?

اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ط إِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٦٢)

৬২. আল্লাহ্ই তাঁর বান্দাদের মধ্যে যার জন্য ইচ্ছে রিয্ক প্রশস্ত করেন আর যার জন্য ইচ্ছে সীমাবদ্ধ করেন। আল্লাহ সর্ব বিষয়ে সর্বাধিক অবগত।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ مِنْ بَعْدِ مَوْتِهَا لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ط قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ع (٦٣)

৬৩. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর- আকাশ হতে কে পানি বর্ষণ ক'রে যমীনকে তার মৃত্যুর পর আবার সঞ্জীবিত করেন? তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে- আল্লাহ। বল, সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ্র জন্য। কিন্তু তাদের অধিকাংশই বুঝে না।

وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ط وَإِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (٦٤)

৬৪. পার্থিব এ জীবন ক্রীড়া-কৌতুক ছাড়া কিছু নয়, আখিরাতের জীবনই প্রকৃত জীবন- তারা যদি জানত!

فَإِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۵ ج فَلَمَّا نَجّٰهُمْ إِلَى الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ لا (٦٥)

৬৫. তারা যখন নৌযানে আরোহণ করে তখন বিশুদ্ধ অন্তঃকরণে একনিষ্ঠ হয়ে তারা আল্লাহ্কে ডাকে। অতঃপর তিনি যখন তাদেরকে নিরাপদে স্থলে পৌঁছে দেন, তখন তারা (অন্যকে আল্লাহ্র) শরীক ক'রে বসে।

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ج لا وَلِيَتَمَتَّعُوْا رقفه فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (٦٦)

৬৬. যার ফলে তাদের প্রতি আমার দানকে তারা অস্বীকার করে আর ভোগ বিলাসে ডুবে থাকে। শীঘ্রই তারা জানতে পারবে!

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ

৬৭. তারা কি দেখে না যে, আমি 'হারাম' (মক্কা)-কে করেছি নিরাপদ স্থান অথচ তাদের চতুষ্পার্শ্ব

৬৪। আনাস (ﷺ) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেন, নাবী (ﷺ) বলেন যে, হে আল্লাহ! আখিরাতের জীবনই প্রকৃত জীবন, অতএব আনসার ও মুহাজিরদেরকে শুধরে দিন। -বুখারী ৬৪১৩ [মুসলিম ১৮০৫, তিরমিযী ৩৮৫৭, ইবনু মাজাহ ৭৪২, আহমাদ ১১৭৬৮, ১২৩১১]

النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ؕ أَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللهِ يَكْفُرُوْنَ (٦٧)

থেকে মানুষকে ছিনিয়ে নেয়া হয়। তবে তারা কি মিথ্যাতেই বিশ্বাস করবে আর আল্লাহ্‌র অনুগ্রহকে অস্বীকার করবে?

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللهِ كَذِبًا أَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهٗ ؕ أَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ (٦٨)

৬৮. তার চেয়ে বড় যালিম আর কে আছে যে আল্লাহ্‌র সম্বন্ধে মিথ্যে রচনা করে আর প্রকৃত সত্যকে অস্বীকার করে যখন তা তাঁর নিকট থেকে আসে? কাফিরদের আবাস স্থল কি জাহান্নামের ভিতরে নয়?

وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ سُبُلَنَا ؕ وَإِنَّ اللهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ (٦٩)ع

৬৯. আর যারা আমার পথে সর্বাত্মক প্রচেষ্টা চালায় তাদেরকে আমি অবশ্য অবশ্যই আমার পথে পরিচালিত করব। অবশ্যই আল্লাহ সৎকর্মপরায়ণদের সঙ্গে আছেন।

سُوْرَةُ الرُّوْمِ

৩০. সূরাহ আর্-রূম

আয়াতঃ ৬০, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

الٓمّٓ ج (١)

১. আলিফ-লাম-মীম।

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۙ (٢)

২. রোমানরা পরাজিত হয়েছে।

فِيْۤ أَدْنَى الْأَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ ۙ (٣)

৩. নিকটস্থ ভূমিতে, কিন্তু তারা তাদের পরাজয়ের পর শীঘ্রই জয়লাভ করবে।

فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ؕ۬ لِلّٰهِ الْأَمْرُ مِنْ قَبْلُ وَمِنْۢ بَعْدُ ؕ وَيَوْمَئِذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۙ (٤)

৪. কয়েক (তিন থেকে নয়) বছরের মধ্যেই; (কোন্ কাজ হবে) আগে ও (কোন্ কাজ হবে) পরে সে ফয়সালা আল্লাহ্‌রই। সেদিন মু'মিনরা আনন্দ করবে।

৬৯। আনাস (রাঃ) থেকে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) তাঁর রবের কাছ থেকে বর্ণনা করেন, আল্লাহ বলেন, বান্দাহ যখন আমার দিকে এক বিঘত পরিমাণ অগ্রসর হয়, আমি তখন তার দিকে এক গজ পরিমাণ অগ্রসর হই। সে যখন আমার দিকে এক গজ পরিমাণ অগ্রসর হয় আমি তখন তার দিকে দু'গজ পরিমাণ অগ্রসর হই। বান্দাহ যদি আমার কাছে হেঁটে আসে, আমি তার দিকে দৌড়ে যাই। –বুখারী ৭৫৩৬ [মুসলিম ২৬৭৫, তিরমিযী ২৩৮৮, ৩৬০৩; ইবনু মাজাহ ৩৮২২, আহমাদ ৭৩৭৪, ৮৪৩৬]

بِنَصْرِ اللّٰهِ ؕ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۙ (٥)

৫. (সে বিজয় অর্জিত হবে) আল্লাহ্‌র সাহায্যে। যাকে ইচ্ছে তিনি সাহায্য করেন, তিনি মহাপরাক্রমশালী, বড়ই দয়ালু।

وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (٦)

৬. এটা আল্লাহ্‌র ও'য়াদা, আল্লাহ তাঁর ও'য়াদার ব্যতিক্রম করেন না, কিন্তু অধিকাংশ লোকেই জানে না।

يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج صلے وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غَافِلُوْنَ (٧)

৭. তারা পার্থিব জীবনের বাহ্যিক দিক জানে, আর তারা পরকালের খবর রাখে না।

أَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ قف مَا خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ بِلِقَآئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ (٨)

৮. তারা কি তাদের মনে ভেবে দেখে না যে, আল্লাহ আকাশমণ্ডলী, পৃথিবী ও এ দু'এর মধ্যবর্তী সবকিছু সৃষ্টি করেছেন যথাযথভাবে ও নির্দিষ্ট কালের জন্য, কিন্তু অনেক মানুষ তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাতে নিশ্চিতই অবিশ্বাসী।

أَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْٓا أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّأَثَارُوا الْأَرْضَ وَعَمَرُوْهَآ أَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ؕ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ؕ (٩)

৯. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? তাহলে তারা দেখত যে, তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কী হয়েছিল। তারা শক্তিতে ছিল এদের চেয়ে অধিক প্রবল। তারা যমীন চাষ করত আর তা আবাদ করত এদের আবাদ করার চেয়ে বেশি। তাদের কাছে তাদের রসূলগণ স্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে এসেছিল। অতঃপর আল্লাহ তাদের উপর যুল্‌ম করেননি, তারা নিজেরাই নিজেদের উপর যুল্‌ম করেছিল।

ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ أَسَآءُوا السُّوْٓأٰى أَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِئُوْنَ ع (١٠)

১০. অতঃপর যারা মন্দ কাজ করত, তাদের পরিণাম হয়েছিল মন্দ; কারণ তারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনাবলীকে অস্বীকার করেছিল আর সেগুলো নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত।

اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (١١)

১১. আল্লাহ সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর তিনি তার পুনরাবৃত্তি করবেন, অতঃপর তাঁর দিকেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনা হবে।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ (١٢)

১২. যেদিন ক্বিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন অপরাধীরা হতাশ হয়ে পড়বে।

১৩. তারা যাদেরকে শরীক গণ্য করত তাদের মধ্যে কেউ তাদের জন্য সুপারিশকারী সাজবে না এবং তারা তাদের শরীকদেরকে অস্বীকার করবে।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ (١٣)

১৪. যেদিন ক্বিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন মানুষরা পৃথক হয়ে যাবে।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ (١٤)

১৫. অতঃপর যারা ঈমান এনেছে ও সৎ কাজ করেছে তাদেরকে জান্নাত দিয়ে পরিতুষ্ট করা হবে।

فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ (١٥)

১৬. আর যারা কুফুরী করেছে এবং আমার নিদর্শনাবলী ও আখিরাতের সাক্ষাৎকে অস্বীকার করেছে, তাদেরকে 'আযাবের মধ্যে উপস্থিত করা হবে।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ الْاٰخِرَةِ فَأُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ (١٦)

১৭. অতএব তোমরা আল্লাহ্‌র পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর যখন তোমরা সন্ধ্যায় উপনীত হও আর সকালে,

فَسُبْحَانَ اللهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ (١٧)

১৮. এবং অপরাহ্নে ও যুহরের সময়ে; আর আসমানসমূহে ও যমীনে প্রশংসা তো একমাত্র তাঁরই।

وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ (١٨)

১৯. তিনিই জীবন্তকে বের করেন মৃত থেকে আর মৃতকে বের করেন জীবন্ত থেকে। যমীনকে তিনিই পুনরায় জীবিত করেন তার মৃত্যুর পর, এভাবেই তোমাদেরকে বের করা হবে।

يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ع (١٩)

২০. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল এই যে, তিনি তোমাদেরকে মাটি থেকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমরা এখন মানুষ, সবখানে ছড়িয়ে রয়েছ।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ أَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ إِذَآ أَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ (٢٠)

২১. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল এই যে, তিনি তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্য হতেই তোমাদের সঙ্গিণী সৃষ্টি করেছেন যাতে তোমরা তার কাছে শান্তি লাভ করতে পার আর তিনি তোমাদের মধ্যে পারস্পরিক ভালবাসা ও দয়া সৃষ্টি করেছেন। এর মাঝে অবশ্যই বহু নিদর্শন আছে সেই সম্প্রদায়ের জন্য যারা চিন্তা করে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ أَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا إِلَيْهَا وَجَعَلَ بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (٢١)

২২. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল, আসমানসমূহ ও যমীনের সৃষ্টি এবং তোমাদের ভাষা ও বর্ণের

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ

Contents

وَاخْتِلَافُ أَلْسِنَتِكُمْ وَأَلْوَانِكُمْ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ (٢٢)

বিভিন্নতা। জ্ঞানীদের জন্য অবশ্যই এতে আছে বহু নিদর্শন।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ (٢٣)

২৩. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল রাতে ও দিনে তোমাদের ঘুম এবং তোমাদের (দ্বারা) তাঁর অনুগ্রহ তালাশ করা। মনোযোগী লোকেদের জন্য অবশ্যই এতে আছে অনেক নিদর্শন।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٢٤)

২৪. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল এই যে, তিনি তোমাদেরকে দেখান বিদ্যুৎ ভীতি ও ভরসা সঞ্চারীরূপে, আর তিনি আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন যা দিয়ে যমীনকে তার মৃত্যুর পর আবার জীবিত করেন, জ্ঞানবুদ্ধিসম্পন্ন মানুষদের জন্য অবশ্যই এতে বহু নিদর্শন আছে।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ أَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْأَرْضُ بِأَمْرِهٖ ط ثُمَّ إِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ق صلے مِّنَ الْأَرْضِ إِذَآ أَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ (٢٥)

২৫. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল এই যে, আকাশ ও পৃথিবী তাঁর হুকুমেই দাঁড়িয়ে আছে। অতঃপর তিনি যখন তোমাদেরকে মাটি থেকে উঠার জন্য ডাক দেবেন একটি ডাক, তখন তোমরা উঠে আসবে।

وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ (٢٦)

২৬. আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীতে যা আছে সব তাঁরই, সকলই তাঁর প্রতি অনুগত।

وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَهُوَ أَهْوَنُ عَلَيْهِ ط وَلَهُ الْمَثَلُ الْأَعْلٰى فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ع (٢٧)

২৭. তিনিই সৃষ্টির সূচনা করেন, অতঃপর তার পুনরাবৃত্তি করবেন আর তা তার জন্য খুবই সহজ। আকাশ ও পৃথিবীতে সর্বোচ্চ দৃষ্টান্ত তাঁর জন্যই, তিনিই মহাপরাক্রমশালী, বড়ই হিকমতওয়ালা।

ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ أَنْفُسِكُمْ ط هَلْ لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَأَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ ط

২৮. আল্লাহ তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্য হতেই একটা দৃষ্টান্ত পেশ করছেনঃ আমি তোমাদেরকে যে রিয্ক দিয়েছি তাতে তোমাদের অধিকারভুক্ত দাসদাসীরা কি অংশীদার যার ফলে তাতে তোমরা সমান? তোমরা কি তাদেরকে তেমনভাবে ভয় কর যেমন ভয় কর তোমাদের নিজেদের পরস্পরকে? এভাবে বোধশক্তিসম্পন্ন

كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٢٨)

মানুষদের জন্য আমি নিদর্শনাবলী বিস্তারিতভাবে ব্যাখ্যা করি।

بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ أَضَلَّ اللّٰهُ ؕ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (٢٩)

২৯. বরং সীমালঙ্ঘনকারীরা কোন জ্ঞান ছাড়াই তাদের খেয়াল-খুশির অনুসরণ করে; কাজেই আল্লাহই যাকে পথভ্রষ্ট করেন তাকে সৎপথ দেখাবে কে? তাদের কোন সাহায্যকারী নেই।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ؕ فِطْرَتَ اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِخَلْقِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ۙ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ (٣٠)

৩০. কাজেই দ্বীনের প্রতি তোমার মুখমণ্ডল নিবদ্ধ কর একনিষ্ঠভাবে। এটাই আল্লাহ্‌র প্রকৃতি, যে প্রকৃতি তিনি মানুষকে দিয়েছেন, আল্লাহ্‌র সৃষ্টি কার্যে কোন পরিবর্তন নেই, এটাই সুপ্রতিষ্ঠিত দ্বীন, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ জানে না।

مُنِيْبِيْنَ إِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۙ (٣١)

৩১. তাঁর অভিমুখী হও, আর তাঁকে ভয় কর, নামায প্রতিষ্ঠা কর, আর মুশরিকদের অন্তর্ভুক্ত হয়ো না।

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ كُلُّ حِزْبٍ ۢبِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ (٣٢)

৩২. যারা নিজেদের দ্বীনকে বিভক্ত করে ফেলেছে এবং বিভিন্ন দলে ভাগ হয়ে গেছে। প্রত্যেক দল নিজেদের কাছে যা আছে তাই নিয়ে উল্লসিত।

وَإِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَآ أَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً إِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۙ (٣٣)

৩৩. মানুষকে যখন দুঃখ-বিপদ স্পর্শ করে তখন তারা তাদের প্রতিপালককে ডাকে তাঁর অভিমুখী হয়ে। অতঃপর তিনি যখন তাদেরকে নিজ অনুগ্রহ আস্বাদন করান তখন তাদের একদল তাদের প্রতিপালকের অংশীদার সাব্যস্ত করে বসে

لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۥ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (٣٤)

৩৪. আমি তাদের প্রতি যে অনুগ্রহ করেছি তা অস্বীকার করার জন্য। তাহলে ভোগ করে নাও, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে!

أَمْ أَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ (٣٥)

৩৫. আমি কি তাদের কাছে এমন কোন দলীল অবতীর্ণ করেছি যা তাদেরকে সেগুলোর কথা বলে তারা যেগুলোর শরীক করে?

وَإِذَآ أَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ وَإِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ ۢبِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْهِمْ إِذَا هُمْ

৩৬. আমি যখন মানুষকে অনুগ্রহ আস্বাদন করাই তখন তারা তাতে উল্লসিত হয়, তারপর তাদের হাত যা আগে পাঠিয়েছে তার ফলে দুর্দশা যখন তাদেরকে

يَقْنَطُوْنَ (٣٦)

পেয়ে বসে, তখন তারা হতাশ হয়ে পড়ে।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٣٧)

৩৭. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আল্লাহ যার জন্যে ইচ্ছে করেন রিয্‌ক প্রশস্ত করেন আর (যার জন্য ইচ্ছে) সীমাবদ্ধ করেন? বিশ্বাসী লোকেদের জন্য অবশ্যই এতে বহু নিদর্শন আছে।

فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ز وَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٣٨)

৩৮. কাজেই আত্মীয়দেরকে তাদের ন্যায্য প্রাপ্য দিয়ে দাও আর অভাবগ্রস্ত এবং মুসাফিরদেরকেও। যারা আল্লাহ্‌র চেহারা (দর্শন) কামনা করে, এটা তাদের জন্য উত্তম, আর তারাই সফলকাম।

وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا فِيْٓ أَمْوَالِ النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ج وَمَآ اٰتَيْتُمْ مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ (٣٩)

৩৯. মানুষের ধন বৃদ্ধির উদ্দেশে তোমরা যে সুদ দিয়ে থাক, আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে তা ধন বৃদ্ধি করে না। কিন্তু তোমরা আল্লাহ্‌র চেহারা (সন্তুষ্টি) লাভের উদ্দেশে যে যাকাত দাও (তা বৃদ্ধি পায়), তারাই দ্বিগুণ প্রতিদান লাভ করে।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ع (٤٠)

৪০. আল্লাহ্‌ই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদেরকে রিয্‌ক দিয়েছেন, অতঃপর তিনি তোমাদের মৃত্যু ঘটাবেন, অতঃপর তোমাদেরকে জীবিত করবেন। তোমরা যাদেরকে (আল্লাহ্‌র) অংশীদার মান্য কর তাদের মধ্যে কেউ আছে কি এ সবের কোন কিছু করতে পারে? তারা যাদেরকে অংশীদার গণ্য করে আল্লাহ তাদের থেকে পবিত্র, বহু উর্ধ্বে।

ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ أَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (٤١)

৪১. মানুষের কৃতকর্মের কারণে জলে স্থলে বিপর্যয় দেখা দিয়েছে যাতে তিনি তাদেরকে তাদের কোন কোন কাজের শাস্তি আস্বাদন করান, যাতে তারা (অসৎ পথ হতে) ফিরে আসে।

قُلْ سِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ (٤٢)

৪২. বল, পৃথিবীতে পরিভ্রমণ কর, অতঃপর দেখ আগে যারা ছিল তাদের পরিণাম কী হয়েছে। তাদের অধিকাংশই ছিল মুশরিক।

فَأَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ

৪৩. কাজেই তুমি নিজেকে সত্য দ্বীনে প্রতিষ্ঠিত রাখ, আল্লাহ্‌র পক্ষ থেকে এমন দিন (ক্বিয়ামত দিবস) আসার পূর্বে যা কক্ষনো প্রত্যাহার করা

يَّصَّدَّعُوْنَ (٤٣)

হবে না। সেদিন মানুষ বিভক্ত হয়ে যাবে (দু'ভাগে)।

مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِأَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ (٤٤)

৪৪. যে কুফুরী করে সেই তার কুফুরীর শাস্তি ভোগ করবে, আর যারা সৎকর্ম করে তারা নিজেদেরই সুখ সরঞ্জাম সংগ্রহ করছে।

لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ (٤٥)

৪৫. যাতে তিনি স্বীয় অনুগ্রহভাণ্ডার থেকে তাদেরকে পুরস্কৃত করতে পারেন যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে। তিনি কাফিরদেরকে ভালবাসেন না।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٤٦)

৪৬. তাঁর নিদর্শনের মধ্যে হল এই যে, তিনি বায়ু প্রেরণ করেন সুসংবাদ দানের জন্য ও তোমাদেরকে তাঁর অনুগ্রহ আস্বাদন করানোর জন্য। তাঁর নির্দেশে নৌযান চলে যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ অনুসন্ধান করতে পার আর তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করতে পার।

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ (٤٧)

৪৭. তোমার পূর্বে আমি রসূলগণকে পাঠিয়েছিলাম তাদের নিজ নিজ জাতির নিকট। তারা তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিল। অতঃপর যারা অন্যায় করেছিল আমি তাদেরকে শাস্তি দিয়েছিলাম। মু'মিনদের সাহায্য করা আমার দায়িত্ব।

اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ (٤٨)

৪৮. আল্লাহ যিনি বায়ু প্রেরণ করেন, অতঃপর তা মেঘমালার সঞ্চার করে, অতঃপর তিনি তা আকাশে ছড়িয়ে দেন যেভাবে ইচ্ছে করেন, অতঃপর তাকে খণ্ড বিখণ্ড করে দেন, তারপর তুমি দেখতে পাও তার মাঝ থেকে বৃষ্টি-ফোঁটা নির্গত হচ্ছে, অতঃপর তিনি তাঁর বান্দাহদের মধ্যে যাদের নিকট তিনি ইচ্ছে করেন তাদের কাছে যখন তা পৌঁছে দেন তখন তারা হয় আনন্দিত।

وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ (٤٩)

৪৯. যদিও ইতোপূর্বে তাদের প্রতি বৃষ্টি বর্ষণের পূর্বে তারা ছিল চরমভাবে হতাশ।

فَانْظُرْ اِلٰۤى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ

৫০. অতএব আল্লাহ্র রহমাতের ফল দেখে নাও, কীভাবে তিনি ভূমিকে তার মৃত্যুর পর জীবিত করেন। এভাবেই নিশ্চয় তিনি মৃতককে জীবিত

الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٥٠)

করবেন, কেননা সব কিছুর উপর তিনি সর্বশক্তিমান।

وَلَئِنْ أَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَأَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ (٥١)

৫১. আমি যদি এমন বায়ু প্রেরণ করি যার ফলে তারা দেখে শস্য হলদে হয়ে গেছে, তখন তারা অবশ্যই অকৃতজ্ঞ হয়ে যায়।

فَإِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ الدُّعَآءَ إِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ (٥٢)

৫২. তুমি তো মৃতকে শুনাতে পারবে না, বধিরকেও শুনাতে পারবে না আহ্বান, যখন তারা পেছন ফিরে চলে যায়।

وَمَآ أَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۖ إِنْ تُسْمِعُ إِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ع (٥٣)

৫৩. তুমি অন্ধদেরকেও তাদের পথভ্রষ্টতা থেকে ফিরিয়ে পথে আনতে পারবে না। যারা আমার নিদর্শনাবলীতে বিশ্বাস করে তুমি কেবল তাদেরকেই শুনাতে পারবে, কারণ তারা (আল্লাহ্‌র প্রতি) আত্মসমর্পণকারী।

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضَعْفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضَعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضَعْفًا وَّشَيْبَةً ۖ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ (٥٤)

৫৪. তিনি আল্লাহ যিনি তোমাদেরকে (অসহায়) দুর্বল অবস্থায় সৃষ্টি করেছেন, দুর্বলতার পর দিয়েছেন শক্তি, শক্তির পর আবার দিয়েছেন দুর্বলতা ও বার্ধক্য। তিনি যা ইচ্ছে করেন সৃষ্টি করেন। তিনি সর্বশ্রেষ্ঠ জ্ঞানী, সবচেয়ে শক্তিধর।

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ۖ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ (٥٥)

৫৫. যেদিন ক্বিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন অন্যায়কারীরা কসম করে বলবে যে, তারা মুহূর্তকালের বেশি অবস্থান করেনি। এভাবেই তারা সত্য পথ থেকে বিচ্যুত হত।

وَقَالَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْإِيْمَانَ لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ إِلٰى يَوْمِ الْبَعْثِ ز فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ (٥٦)

৫৬. আর যাদেরকে ঈমান ও জ্ঞান দেয়া হয়েছিল তারা বলবে– তোমরা আল্লাহ্‌র কিতাব মতে পুনরুত্থান দিবস পর্যন্ত অবস্থান করেছ। এটাই হল পুনরুত্থান দিবস কিন্তু তোমরা জানতে না।

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ (٥٧)

৫৭. অন্যায়কারীদের ওযর আপত্তি সেদিন কোন কাজে আসবে না এবং তাদেরকে সংশোধনেরও সুযোগ দেয়া হবে না।

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ

৫৮. আমি মানুষদের জন্য এ কুরআনে যাবতীয় দৃষ্টান্ত বর্ণনা করেছি। তুমি যদি তাদের কাছে

كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ (٥٨)

কোন নিদর্শন নিয়ে আস তাহলে কাফিররা অবশ্য অবশ্যই বলবে- তোমরা মিথ্যে বলা ছাড়া আর কিছুই করছ না।

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ (٥٩)

৫৯. যাদের জ্ঞান নেই এভাবেই আল্লাহ তাদের হৃদয় মোহরাঙ্কিত করে দেন।

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ع (٦٠)

৬০. কাজেই তুমি ধৈর্য ধর, আল্লাহ্‌র ও'য়াদা সত্য। যারা দৃঢ় বিশ্বাস রাখে না, তারা যেন তোমাকে উত্তেজিত না করতে পারে।

৩১. সূরাহ লুক্বমা-ন

سُوْرَةُ لُقْمَانَ

আয়াতঃ ৩৪, রুকূ'ঃ ৪, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

الٓمّٓ ج (١)

১. আলিফ-লাম-মীম।

تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ لا (٢)

২. এগুলো হিকমাতে ভরপুর কিতাবের আয়াত।

هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ لا (٣)

৩. সৎকর্মশীলদের জন্য পথ নির্দেশ ও রহমত।

الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ط (٤)

৪. যারা নামায প্রতিষ্ঠা করে, যাকাত দেয় আর তারা আখেরাতের প্রতি দৃঢ় বিশ্বাস রাখে।

اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٥)

৫. তারাই তাদের পালনকর্তার সঠিক পথে আছে আর তারাই সফলকাম। (দুনিয়া ও আখেরাতে)

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِغَيْرِ عِلْمٍ ق صلے وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ط اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (٦)

৬. কতক মানুষ আল্লাহ্‌র পথ থেকে বিচ্যুত করার উদ্দেশে অজ্ঞতাবশতঃ অবান্তর কথাবার্তা (গান-বাজনা) ক্রয় করে আর আল্লাহ্‌র পথকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করে। ওদের জন্যই আছে অবমাননাকর শাস্তি।

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا كَاَنْ

৭. যখন তার কাছে আমার আয়াত আবৃত্তি করা হয়, তখন সে অহংকারবশতঃ এমনভাবে মুখ

لَّمْ يَسْمَعْهَا كَأَنَّ فِيْٓ أُذُنَيْهِ وَقْرًا ج فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ (٧)

ফিরিয়ে নেয় যেন সে তা শুনতেই পায়নি, যেন তার দুই কানে বধিরতা আছে, কজেই তাকে ভয়াবহ শাস্তির সুসংবাদ দাও।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ لا (٨)

৮. যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তাদের জন্য আছে নি'য়ামাতে ভরা জান্নাত।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَعْدَ اللهِ حَقًّا ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٩)

৯. তাতে তারা চিরকাল থাকবে। আল্লাহ্‌র ও'য়াদা সত্য আর তিনি মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَأَلْقٰى فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ط وَأَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَأَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ (١٠)

১০. তিনি আকাশমণ্ডলী নির্মাণ করেছেন স্তম্ভ ছাড়া যা তোমরা দেখছ। তিনি পৃথিবীতে স্থাপন করেছেন দৃঢ়ভাবে দণ্ডায়মান পর্বতমালা যাতে পৃথিবী তোমাদেরকে নিয়ে নড়াচড়া না করে আর তাতে ছড়িয়ে দিয়েছেন সকল প্রকার জীবজন্তু, আর আমিই আকাশ থেকে পানি বর্ষণ করি, অতঃপর তাতে উদ্গত করি যাবতীয় কল্যাণকর উদ্ভিদ।

هٰذَا خَلْقُ اللهِ فَأَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ط بَلِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ ع (١١)

১১. এগুলো আল্লাহ্‌র সৃষ্টি। কাজেই আমাকে দেখাও তিনি ছাড়া অন্যেরা কী সৃষ্টি করেছে। বরং যালিমরা সুস্পষ্ট গুমরাহীতে ডুবে আছে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ أَنِ اشْكُرْ لِلّٰهِ ط وَمَنْ يَّشْكُرْ فَإِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ كَفَرَ فَإِنَّ اللهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ (١٢)

১২. আমি লুকমানকে প্রজ্ঞা দান করেছিলাম। (তাকে বলেছিলাম) যে, তুমি আল্লাহ্‌র কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। যে কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে, সে তা নিজের কল্যাণেই করে। আর কেউ অকৃতজ্ঞ হলে (সে জেনে রাখুক যে) আল্লাহ অমুখাপেক্ষী, প্রশংসিত।

وَإِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللهِ ط ل إِنَّ الشِّرْكَ

১৩. স্মরণ কর, যখন লুকমান তার ছেলেকে নসীহত ক'রে বলেছিল- হে বৎস! আল্লাহ্‌র সাথে কোন কিছুকে শির্ক কর না, শির্ক হচ্ছে অবশ্যই বিরাট যুল্‌ম।

১৩। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যখন এ আয়াতটি অবতীর্ণ হল (আল্লাহ্‌র বাণী)ঃ যারা ঈমান এনেছে এবং তাদের ঈমানকে যুল্‌ম দ্বারা কলুষিত করেনি। এটি রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-এর সহাবীদের উপর খুবই কঠিন মনে হল। তখন তাঁরা বললেন, আমাদের মধ্যে এমন কে আছে যে, তারা তাদের ঈমানকে যুল্‌ম দ্বারা কলুষিত করেনি? রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, এ আয়াত দ্বারা এ অর্থ বুঝানো হয়নি। তোমরা কি লুকমানের কথা শুনি যা তিনি তাঁর পুত্রকে বলেছিলেন? إِنَّ الشِّرْكَ لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ নিশ্চয় শিরক হচ্ছে বড় যুল্‌ম। –বুখারী ৪৭৭৬ [৩২; মুসলিম ১২৪, তিরমিযী ৩০৬৭, আমাদ ৩৫৭৮, ৪০২১, ৪২২৮]

لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ (١٣)

১৪. আমি মানুষকে তার পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহারের নির্দেশ দিয়েছি। তার মা তাকে কষ্টের পর কষ্ট সহ্য করে গর্ভে ধারণ করে। তার দুধ ছাড়ানো হয় দু'বছরে, (নির্দেশ দিচ্ছি) যে, আমার প্রতি ও তোমার পিতামাতার প্রতি কৃতজ্ঞ হও। (তোমাদের সকলের) প্রত্যাবর্তন তো আমারই কাছে।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ج حَمَلَتْهُ أُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصَالُهٗ فِيْ عَامَيْنِ أَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ط إِلَيَّ الْمَصِيْرُ (١٤)

১৫. তোমার পিতামাতা যদি তোমাকে পীড়াপীড়ি করে আমার অংশীদার স্থির করার জন্য যার জ্ঞান তোমার নেই, তবে তুমি তাদের কথা মানবে না। কিন্তু পৃথিবীতে তাদের সাথে সদ্‌ভাবে বসবাস করবে। যে আমার অভিমুখী হয় তার পথ অনুসরণ করবে। অতঃপর আমারই নিকট তোমাদের প্রত্যাবর্তন। তখন আমি তোমাদেরকে জানিয়ে দেব তোমরা যা করছিলে।

وَإِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰى أَنْ تُشْرِكَ بِيْ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ز وَّاتَّبِعْ سَبِيْلَ مَنْ أَنَابَ إِلَيَّ ج ثُمَّ إِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ فَأُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (١٥)

১৬. হে বৎস! কোন বস্তু যদি সরিষার দানা পরিমাণও হয় আর তা থাকে পাথরের ভিতরে অথবা আকাশে অথবা যমীনের নীচে, আল্লাহ তাকে এনে হাজির করবেন। আল্লাহ সূক্ষ্মদর্শী, সব কিছুর খবর রাখেন।

يٰبُنَيَّ إِنَّهَآ إِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ أَوْ فِي السَّمٰوٰتِ أَوْ فِي الْأَرْضِ يَأْتِ بِهَا اللهُ ط إِنَّ اللهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ (١٦)

১৭. হে বৎস! তুমি নামায কায়িম কর, সৎ কাজের নির্দেশ দাও আর মন্দ কাজ হতে নিষেধ কর এবং বিপদাপদে ধৈর্যধারণ কর। নিশ্চয় এটা দৃঢ় সংকল্পের কাজ।

يٰبُنَيَّ أَقِمِ الصَّلٰوةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَآ أَصَابَكَ ط إِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْأُمُوْرِ ج (١٧)

১৮. অহংকারের বশবর্তী হয়ে তুমি মানুষকে অবজ্ঞা কর না, আর পৃথিবীতে গর্বভরে চলাফেরা কর না, নিশ্চয়ই আল্লাহ কোন দাম্ভিক অহংকারীকে পছন্দ করেন না।

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي الْأَرْضِ مَرَحًا ط إِنَّ اللهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ

১৮। হারিস ইবনু ওয়াহাব খুযা'য়ী হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেছেন, আমি কি তোমাদেরকে জান্নাতবাসীদের পরিচয় বলে দেব? তারা কোমল স্বভাবের লোক, মানুষের কাছেও কোমল বলে পরিগণিত। যদি তারা কোন বিষয়ে আল্লাহর কসম খায়, আল্লাহ তা অবশ্যই পূরণ করে দেন। আর আমি কি তোমাদেরকে জাহান্নামীদের পরিচয় বলে দেব? তারা কঠোর স্বভাবের লোক, দাম্ভিক, অহংকারী। অপর এক সনদে আনাস ইবনু মালিক (রাঃ) বর্ণনা করেছেন, মদীনাবাসীদের ক্রীতদাসীদের মধ্যে একজন ক্রীতদাসী ছিল। সে তার গরজে নাবী (ﷺ) -এর হাত ধরে যেখানে

مُخۡتَالٍ فَخُوۡرٍ ۚ(١٨)

وَاقۡصِدۡ فِیۡ مَشۡیِكَ وَاغۡضُضۡ مِنۡ صَوۡتِكَ ؕ اِنَّ اَنۡكَرَ الۡاَصۡوَاتِ لَصَوۡتُ الۡحَمِیۡرِ ۚ(١٩)

১৯. চলাফেরায় সংযত ভাব অবলম্বন কর এবং কণ্ঠস্বর নীচু কর। স্বরের মধ্যে নিশ্চয়ই গাধার স্বর সর্বাপেক্ষা শ্রুতিকটু।

اَلَمۡ تَرَوۡا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمۡ مَّا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الۡاَرۡضِ وَاَسۡبَغَ عَلَیۡكُمۡ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ؕ وَمِنَ النَّاسِ مَنۡ یُّجَادِلُ فِی اللّٰهِ بِغَیۡرِ عِلۡمٍ وَّلَا هُدًی وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِیۡرٍ (٢٠)

২০. তোমরা কি লক্ষ্য কর না যে, যা কিছু আসমানসমূহে আর যমীনে আছে, আল্লাহ সমস্তই তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন এবং তোমাদের প্রতি তাঁর প্রকাশ্য ও অপ্রকাশ্য নি'য়ামাতসমূহ পরিপূর্ণ করে দিয়েছেন? কতক মানুষ জ্ঞান ছাড়াই আল্লাহ সম্বন্ধে বাক-বিতণ্ডা করে, তাদের না আছে সঠিক পথের দিশা, আর না আছে কোন আলোপ্রদ কিতাব।

وَاِذَا قِیۡلَ لَهُمُ اتَّبِعُوۡا مَاۤ اَنۡزَلَ اللّٰهُ قَالُوۡا بَلۡ نَتَّبِعُ مَا وَجَدۡنَا عَلَیۡهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوۡ كَانَ الشَّیۡطٰنُ یَدۡعُوۡهُمۡ اِلٰی عَذَابِ السَّعِیۡرِ (٢١)

২১. তাদেরকে যখন বলা হয়- আল্লাহ যা নাযিল করেছেন তা অনুসরণ কর, তখন তারা বলে- বরং আমরা তারই অনুসরণ করব আমাদের পিতৃ-পুরুষদেরকে যে পথ অনুসরণ করতে দেখেছি। শয়ত্বান যদি তাদেরকে জ্বলন্ত আগুনের শাস্তির দিকে ডাকে, তবুও কি (তারা তারই অনুসরণ করবে)?

وَمَنۡ یُّسۡلِمۡ وَجۡهَهٗۤ اِلَی اللّٰهِ وَهُوَ مُحۡسِنٌ فَقَدِ اسۡتَمۡسَكَ بِالۡعُرۡوَةِ الۡوُثۡقٰی ؕ وَاِلَی اللّٰهِ عَاقِبَةُ الۡاُمُوۡرِ (٢٢)

২২. যে কেউ আল্লাহ্‌র প্রতি আত্মসমর্পণ করে আর সে সৎকর্মশীল, সে দৃঢ়ভাবে ধারণ করে এক মজবুত হাতল। যাবতীয় কর্ম পরিণাম ফলের জন্য আল্লাহ্‌র দিকে ফিরে যায়।

وَمَنۡ كَفَرَ فَلَا یَحۡزُنۡكَ كُفۡرُهٗ ؕ اِلَیۡنَا مَرۡجِعُهُمۡ فَنُنَبِّئُهُمۡ بِمَا عَمِلُوۡا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِیۡمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوۡرِ (٢٣)

২৩. কেউ কুফরী করলে তার কুফরী তোমাকে যেন মনোকষ্ট না দেয়, তাদের প্রত্যাবর্তন আমার কাছেই; অতঃপর আমি তাদেরকে জানিয়ে দেব তারা কী করত। (মানুষের) অন্তরসমূহে কী আছে সে সম্পর্কে আল্লাহ্‌ই সবচেয়ে বেশি জানেন।

نُمَتِّعُهُمۡ قَلِیۡلًا ثُمَّ نَضۡطَرُّهُمۡ اِلٰی عَذَابٍ غَلِیۡظٍ (٢٤)

২৪. অল্প সময়ের জন্য তাদেরকে ভোগ করতে দেব, অবশেষে তাদেরকে গুরুতর শাস্তিতে (প্রবেশ করতে) বাধ্য করব।

চাইতো, নিয়ে যেত। (অর্থাৎ তার উদ্দেশ্য স্থানে হাত ধরে নিয়ে যেত। আর নাবী (ﷺ) ও তার সাথে সাথে চলে যেতেন এবং তার প্রয়োজনীয় কাজ করে দিতেন। এমনই কোমল স্বভাব ছিল তাঁর। অথচ তখন তিনি রাষ্ট্রপ্রধানও ছিলেন।) –বুখারী ৬০৭২ [মুসলিম ২৮৫৩, তিরমিযী ২৬০৫, ইবনু মাজাহ ৪১১৬, আহমাদ ১৮২৫৩]

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ط قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٢٥)

২৫. যদি তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর- আকাশমণ্ডলী ও যমীন কে সৃষ্টি করেছে, তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে- আল্লাহ। বল, যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্‌র, কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (٢٦)

২৬. আকাশমণ্ডলী আর যমীনে যা আছে সব আল্লাহ্‌রই, নিশ্চয়ই আল্লাহ, তিনি সকল অভাব-মুক্ত, সকল প্রশংসার অধিকারী।

وَلَوْ أَنَّ مَا فِي الْأَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ أَقْلَامٌ وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْ ۢبَعْدِهٖ سَبْعَةُ أَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ط إِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٢٧)

২৭. দুনিয়ার সব গাছ যদি কলম হয় আর সমুদ্র (কালি হয়) আর তার সাথে আরো সাত সমুদ্র যুক্ত হয়, তবুও আল্লাহ্‌র (প্রশংসার) কথা (লেখা) শেষ হবে না। আল্লাহ মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞার অধিকারী।

مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ إِلَّا كَنَفْسٍ وَّاحِدَةٍ ط إِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ ۢبَصِيْرٌ (٢٨)

২৮. তোমাদের সকলের সৃষ্টি ও পুনরুত্থান একজন মানুষের (সৃষ্টি ও পুনরুত্থানের) মতই। আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ز كُلٌّ يَّجْرِيْٓ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى وَّأَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (٢٩)

২৯. তুমি কি দেখ না যে, আল্লাহ রাত্রিকে দিনে এবং দিনকে রাত্রিতে প্রবিষ্ট করেন এবং সূর্য ও চন্দ্রকে নিয়ন্ত্রণ করেন, প্রত্যেকেই বিচরণ করছে নির্দিষ্টকৃত সময় অনুযায়ী, তোমরা যা কিছু কর আল্লাহ সে সম্পর্কে পূর্ণরূপে অবহিত।

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَأَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ لا وَأَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ع (٣٠)

৩০. এসব প্রমাণ করে যে, আল্লাহ্‌ই সত্য এবং তাঁর পরিবর্তে তারা যাকে ডাকে তা মিথ্যে। আল্লাহ, তিনি তো হলেন সর্বোচ্চ, সুমহান।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ (٣١)

৩১. তুমি কি লক্ষ্য কর না যে, নৌযানগুলো আল্লাহ্‌র অনুগ্রহে সমুদ্রে চলাচল করে যাতে তিনি তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শনের কিছু দেখাতে পারেন। এতে অবশ্যই প্রত্যেক ধৈর্যশীল কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্য নিদর্শন রয়েছে।

وَإِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۵ ج فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ إِلَى الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ط وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ إِلَّا

৩২. ঢেউ যখন তাদেরকে (মেঘের) ছায়ার মত ঢেকে নেয়, তখন তারা আল্লাহকে ডাকতে থাকে তাঁর প্রতি একনিষ্ঠ আনুগত্যে। অতঃপর আমি যখন তাদেরকে উদ্ধার ক'রে স্থলে এনে দেই, তখন তাদের কতক ন্যায়পূর্ণ আচরণ করে।

كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ (٣٢)

কেবল মিথ্যাচারী অকৃতজ্ঞ ব্যক্তিই আমার নিদর্শনাবলী অস্বীকার করে।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ز وَلَا مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْئًا ط إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا قف وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللهِ الْغَرُوْرُ (٣٣)

৩৩. হে মানুষ! তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর আর ভয় কর সে দিনের, যেদিন পিতা তার সন্তানের কোন উপকার করতে পারবে না। সন্তানও পিতার কোনই উপকার করতে পারবে না। আল্লাহ্‌র ও'য়াদা সত্য, কাজেই পার্থিব জীবন যেন কিছুতেই তোমাদেরকে ধোঁকায় ফেলতে না পারে আর প্রধান প্রতারক (শয়ত্বান) যেন কিছুতেই তোমাদেরকে আল্লাহ্ সম্পর্কে প্রতারিত না করে।

إِنَّ اللهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ج وَيُنَزِّلُ الْغَيْثَ ج وَيَعْلَمُ مَا فِي الْأَرْحَامِ ط وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ط وَمَا تَدْرِيْ نَفْسٌ بِأَيِّ أَرْضٍ تَمُوْتُ ط إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ ع (٣٤)

৩৪. কিয়ামতের জ্ঞান কেবল আল্লাহ্‌র নিকটই আছে, তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন, জরায়ুতে কী আছে তা তিনিই জানেন। কেউ জানে না আগামীকাল সে কী অর্জন করবে, কেউ জানে না কোন্ জায়গায় সে মরবে। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সর্বাধিক অবহিত।

৩৪। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, একদিন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) লোকদের সঙ্গে উপবিষ্ট ছিলেন। এক ব্যক্তি তাঁর নিকট এসে জিজ্ঞেস করল, ঈমান কী? তিনি বললেন, "আল্লাহ্‌তে ঈমান আনবে এবং তাঁর মালায়িকাহ, তাঁর নাবী-রসূলগণের প্রতি ঈমান আনবে এবং আল্লাহ্‌র দর্শন ও পুনরুত্থানের ওপর ঈমান আনবে।" লোকটি জিজ্ঞেস করল, ইসলাম কী? তিনি বললেন, ইসলাম (হল) আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করবে ও তাঁর সঙ্গে অন্য কাউকে শরীক করবে না এবং নামায কায়িম করবে, ফারয্ যাকাত দিবে ও রমাযানের রোযা পালন করবে। লোকটি জিজ্ঞেস করল, ইহ্‌সান কী? তিনি বললেন, ইহ্‌সান হচ্ছে আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত এমন নিষ্ঠার সঙ্গে করবে, যেন তুমি তাঁকে দেখছ। আর যদি তুমি তাঁকে দেখতে না পাও, তবে (জানবে) আল্লাহ্ তোমাকে দেখছেন। লোকটি আরও জিজ্ঞেস করল, হে আল্লাহ্‌র রসূল! কখন ক্বিয়ামাত ঘটবে? রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, এ ব্যাপারে প্রশ্নকারীর চেয়ে যাকে প্রশ্ন করা হয়েছে, সে অধিক জানে না। তবে আমি তোমার কাছে এর কতগুলো নিদর্শন বলছি। তা হল, যখন দাসী তার মনিবকে জন্ম দিবে, এটা তার একটি নিদর্শন। আর যখন দেখবে, নগ্নপদ ও নগ্নদেহ বিশিষ্ট লোকেরা মানুষের নেতা হবে, এও তার একটি নিদর্শন। এটি ঐ পাঁচটি বিষয়ের অন্তর্ভুক্ত, যা আল্লাহ্ ব্যতীত আর কেউ জানেন নাঃ (১) ক্বিয়ামাত সম্পর্কিত জ্ঞান কেবল আল্লাহ্‌র নিকটই রয়েছে। (২) তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন, (৩) তিনিই জানেন, মাতৃগর্ভে কী আছে। এরপরে সে লোকটি চলে গেল। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, তাঁকে আমার নিকট ফিরিয়ে আন। সহাবীগণ তাঁকে ফিরিয়ে আনতে গেলেন, কিন্তু কিছুই দেখতে পেলেন না। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, তিনি হলেন জিব্‌রীল, লোকেদেরকে শিক্ষা দেয়ার জন্য এসেছিলেন। –বুখারী ৪৭৭৭ [৫০; মুসলিম ৯, ১০; নাসায়ী ৪৯৯১, ইবনু মাজাহ ৬৪, ৪০৪৪; আহমাদ ৮৮৮৩, ৯২১৭, ১০৪৭৭]

৩২. সূরাহ আস্-সাজ্দা

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ

আয়াতঃ ৩০, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আলিফ-লাম-মীম,

الٓمّٓ ج (١)

২. এ কিতাব বিশ্বজগতের পালনকর্তার নিকট হতে অবতীর্ণ, এতে কোন সন্দেহ নেই।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ط (٢)

৩. তবে তারা কি বলে যে, সে নিজেই তা রচনা করেছে (এবং আল্লাহ্‌র নিকট থেকে আগত কিতাব ব'লে মিথ্যে দাবী করছে, না তা নয়), বরং তা তোমাদের প্রতিপালকের নিকট থেকে (আগত) সত্য যাতে তুমি এমন এক সম্প্রদায়কে সতর্ক করতে পার যাদের কাছে তোমার পূর্বে কোন সতর্ককারী আসেনি, সম্ভবতঃ তারা সঠিকপথ প্রাপ্ত হবে।

أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ج بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ أَتٰهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ (٣)

৪. আল্লাহ যিনি আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবী এবং এ দু'এর মাঝে যা কিছু আছে ছ' দিনে সৃষ্টি করেছেন- অতঃপর তিনি 'আরশে সমুন্নত হন। তিনি ব্যতীত তোমাদের জন্য কোন অভিভাবক নেই, সুপারিশকারীও নেই। তবুও কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

اَللهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ط مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا شَفِيْعٍ ط أَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ (٤)

৫. তিনি আকাশ হতে পৃথিবী পর্যন্ত কার্য পরিচালনা করেন, অতঃপর সকল বিষয়াদি তাঁরই কাছে একদিন উত্থিত হবে যার পরিমাপ তোমাদের গণনা অনুযায়ী হাজার বছর।

يُدَبِّرُ الْأَمْرَ مِنَ السَّمَآءِ إِلَى الْأَرْضِ ثُمَّ يَعْرُجُ إِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ أَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ (٥)

৬. এমনই তিনি, অদৃশ্য ও দৃশ্যমান সম্পর্কে জ্ঞাত, মহাপরাক্রমশালী, পরম দয়ালু।

ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ لا (٦)

৭. যিনি সব কিছুকে উত্তমরূপে সৃষ্টি করেছেন, আর মানুষ সৃষ্টির সূচনা করেছেন মাটি থেকে।

الَّذِيْٓ أَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَأَ خَلْقَ الْإِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ ج (٧)

৮. অতঃপর তিনি তার বংশধর সৃষ্টি করেন তুচ্ছ তরল পদার্থের নির্যাস থেকে।

ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ج (٨)

ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ (٩)

৯. অতঃপর তিনি তাকে সামঞ্জস্যপূর্ণ করেছেন আর তার ভিতরে স্বীয় রূহ হতে ফুঁক দিয়েছেন, আর তোমাদেরকে দিয়েছেন শ্রবণেন্দ্রীয়, দর্শনেন্দ্রিয় ও অন্তঃকরণ; কৃতজ্ঞতা তোমরা সামান্যই প্রকাশ কর।

وَقَالُوْٓا أَإِذَا ضَلَلْنَا فِي الْأَرْضِ أَإِنَّا لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۬ؕ بَلْ هُمْ بِلِقَآءِ رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ (١٠)

১০. তারা বলে, কী! আমরা মাটিতে মিশিয়ে গেলেও কি আমাদেরকে আবার নতুন ক'রে সৃষ্টি করা হবে? বরং তারা তাদের প্রতিপালকের সাক্ষাৎকে অস্বীকার করে।

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ بِكُمْ ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ع (١١)

১১. বল, তোমাদের প্রাণ হরণের দায়িত্বে নিয়োজিত ফেরেশতা তোমাদের প্রাণ হরণ করবে, অতঃপর তোমাদের প্রতিপালকের নিকট তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনা হবে।

وَلَوْ تَرٰٓى إِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ رَبَّنَآ أَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا إِنَّا مُوْقِنُوْنَ (١٢)

১২. তুমি যদি দেখতে যখন অপরাধীরা তাদের প্রতিপালকের সামনে মাথা নীচু করে দাঁড়িয়ে থাকবে (আর বলবে), হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা দেখলাম ও শুনলাম; কাজেই আমাদেরকে আবার পাঠিয়ে দিন, আমরা ভাল কাজ করব, আমরা (এখন) দৃঢ় বিশ্বাসী।

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰهَا وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَأَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ (١٣)

১৩. আমি যদি ইচ্ছে করতাম তাহলে প্রত্যেক ব্যক্তিকে সৎ পথে পরিচালিত করতাম। কিন্তু আমার (এ) কথা অবশ্যই সত্য প্রতিপন্ন হবেঃ আমি নিশ্চয়ই জাহান্নামকে জিন্ন ও মানুষ মিলিয়ে পূর্ণ করব।

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ج إِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (١٤)

১৪. কাজেই (শাস্তির) স্বাদ গ্রহণ কর, কেননা এ দিনের সাক্ষাৎকে তোমরা ভুলে গিয়েছিলে, আমিও তোমাদেরকে ভুলে গেছি। তোমরা চিরস্থায়ী শাস্তি আস্বাদন করতে থাক, তোমরা যা করছিলে তার কারণে।

إِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ إِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ السجدة ج (١٥)

১৫. আমার নিদর্শনাবলীতে কেবল তারাই বিশ্বাস করে যাদেরকে এর দ্বারা উপদেশ দেয়া হলে সিজদায় লুটিয়ে পড়ে আর তাদের প্রতিপালকের প্রশংসা সহকারে তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করে আর তারা অহংকার করে না।[সেজদা]

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ز وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ (١٦)

১৬. তারা তাদের (দেহের) পার্শ্বগুলো বিছানা থেকে আলাদা ক'রে (জাহান্নামের) ভীতি ও (জান্নাতের) আশা নিয়ে তাদের প্রতিপালককে ডাকে, আর আমি তাদেরকে যে রিয্‌ক দিয়েছি তাথেকে (আল্লাহ্‌র পথে) ব্যয় করে।

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ أُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ أَعْيُنٍ ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٧)

১৭. কোন ব্যক্তিই (এখন) জানে না চোখ জুড়ানো কী (জিনিস) তাদের জন্য লুকিয়ে রাখা হয়েছে তাদের কাজের পুরস্কার হিসেবে।

أَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ط لَا يَسْتَوٗنَ صلے (١٨)

১৮. তবে কি, মু'মিন ব্যক্তি পাপাচারীর ন্যায় (হতে পারে)? তারা সমান নয়।

أَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ جَنّٰتُ الْمَأْوٰى ز نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٩)

১৯. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে তাদের বাসস্থান হবে জান্নাত, তারা যে কাজ করত তার আপ্যায়ন স্বরূপ।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَأْوٰهُمُ النَّارُ ط كُلَّمَآ أَرَادُوْآ أَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ أُعِيْدُوْا فِيْهَا وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ (٢٠)

২০. আর যারা পাপাচার করে তাদের বাসস্থান হবে জাহান্নাম। যখনই তারা তাথেকে বেরিয়ে আসতে চাইবে, তাদেরকে তাতেই ফিরিয়ে দেয়া হবে, আর তাদেরকে বলা হবে- তোমরা অগ্নির শাস্তি আস্বাদন কর যা তোমরা মিথ্যে ব'লে অস্বীকার করতে।

وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْأَدْنٰى دُوْنَ الْعَذَابِ الْأَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (٢١)

২১. গুরুতর শাস্তির আগে আমি তাদেরকে অবশ্য অবশ্যই লঘু শাস্তি আস্বাদন করাব যাতে তারা (অনুশোচনা নিয়ে) ফিরে আসে।

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ثُمَّ أَعْرَضَ عَنْهَا ط إِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ مُنْتَقِمُوْنَ ع (٢٢)

২২. তার চেয়ে বড় যালিম আর কে আছে যাকে তার প্রতিপালকের আয়াতসমূহ দিয়ে উপদেশ দান করা হলে সে তাথেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়? আমি অপরাধীদেরকে শাস্তি দেব।

১৭। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ্ তা'আলা বলেন, আমি আমার নেক বান্দাদের জন্য এমন সব বস্তু বানিয়ে রেখেছি, যা কোন চোখ দেখেনি, কোন কান শোনেনি এবং কোন অন্তঃকরণ চিন্তা করেনি। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) বলেছেন, তোমরা চাইলে এ আয়াত তিলাওয়াত করঃ "কেউ জানে না তাদের জন্য চোখ জুড়ানো কোন্ বিষয় লুকিয়ে রাখা হয়েছে।" –বুখারী ৪৭৭৯ [মুসলিম ২৮২৪, তিরমিযী ৩১৯৭, ইবনু মাজাহ ৪৩২৮, আহমাদ ৮৬০৯, ৯০২৬; দারিমী ২৮২৮]

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى لِّبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ج (٢٣)

২৩. আমি মূসাকে কিতাব দিয়েছিলাম, কাজেই তুমি তার (অর্থাৎ আল কুরআনের) প্রাপ্তিতে সন্দেহে পতিত হয়ো না। আমি ওটাকে বানী ইসরাঈলের জন্য পথপ্রদর্শক করেছিলাম।

وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ أَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِأَمْرِنَا لَمَّا صَبَرُوْا قف ط وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يُوْقِنُوْنَ (٢٤)

২৪. আর আমি তাদের মধ্য হতে নেতা মনোনীত করেছিলাম যারা আমার নির্দেশ মুতাবেক সৎপথপ্রদর্শন করত যতদিন তারা ধৈর্য অবলম্বন করেছিল আর আমার আয়াতসমূহের উপর দৃঢ় বিশ্বাসী ছিল।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (٢٥)

২৫. তোমার প্রতিপালক, তিনি ক্বিয়ামতের দিন তাদের মধ্যে ফয়সালা করবেন তারা যে বিষয়ে মতভেদ করত।

أَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ط أَفَلَا يَسْمَعُوْنَ (٢٦)

২৬. এটাও কি তাদেরকে সত্য পথ দেখায় না যে, আমি তাদের পূর্বে কত মানব বংশ ধ্বংস করেছি যাদের বাসভূমির উপর দিয়ে তারা (এখন) চলাফেরা করে? এতে অবশ্যই (আল্লাহ্‌র) নিদর্শন আছে, তবুও কি তারা শুনবে না?

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ إِلَى الْأَرْضِ الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَأْكُلُ مِنْهُ أَنْعَامُهُمْ وَأَنْفُسُهُمْ ط أَفَلَا يُبْصِرُوْنَ (٢٧)

২৭. তারা কি লক্ষ্য করে না যে, আমি উষর ভূমিতে পানি প্রবাহিত ক'রে তা দিয়ে শষ্য উদ্গত করি যাথেকে তাদের গবাদি পশু ও তারা নিজেরা খাদ্য গ্রহণ করে, তবুও কি তারা লক্ষ্য করবে না?

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٢٨)

২৮. আর তারা বলেঃ তোমরা যদি সত্যবাদী হও তাহলে বল, এ ফয়সালা কখন হবে?

قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ (٢٩)

২৯. বল, ফয়সালার দিনে (সব কিছু দেখার পর) কাফিরদের ঈমান আনয়ন তাদের কোন উপকার দিবে না, আর তাদেরকে কোন সময়ও দেয়া হবে না।

فَأَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ إِنَّهُمْ مُّنْتَظِرُوْنَ ع (٣٠)

৩০. কাজেই তুমি তাদেরকে এড়িয়ে চল আর (আল্লাহর ফয়সালার জন্য) অপেক্ষা কর, তারাও (সেই ফয়সালার জন্য আছে) অপেক্ষমান।

Contents

سُوْرَةُ الْأَحْزَابِ

৩৩. সূরাহ আল-আহ্যাব

আয়াতঃ ৭৩, রুকূ'ঃ ৯, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا لا (١)

১. হে নবী (ﷺ)! আল্লাহ্‌কে ভয় কর, আর কাফির ও মুনাফিকদের আনুগত্য কর না, নিশ্চয় আল্লাহ সর্বজ্ঞাতা, মহাপ্রজ্ঞাময়।

وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰٓى إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ط إِنَّ اللهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا لا (٢)

২. তোমার প্রতি তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে যা ওয়াহী করা হয় তুমি তার অনুসরণ কর। তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আল্লাহ পূর্ণরূপে অবহিত।

وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ط وَكَفٰى بِاللهِ وَكِيْلًا (٣)

৩. আর তুমি নির্ভর কর আল্লাহ্‌র উপর, কর্ম সম্পাদনে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট।

مَا جَعَلَ اللهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ج وَمَا جَعَلَ أَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـئِيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ أُمَّهٰتِكُمْ ج وَمَا جَعَلَ أَدْعِيَآءَكُمْ أَبْنَآءَكُمْ ط ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِأَفْوَاهِكُمْ ط وَاللهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِي السَّبِيْلَ (٤)

৪. আল্লাহ কোন মানুষের বুকে দু'টি অন্তর সৃষ্টি করেননি। তোমাদের স্ত্রীদের মধ্যে যাদের সঙ্গে তোমরা জিহার কর, তিনি তাদেরকে তোমাদের জননী করেননি, আর তিনি তোমাদের পোষ্য পুত্রদেরকে তোমাদের পুত্র করেননি, এগুলো তোমাদের মুখের বুলি, আল্লাহ্‌ই বলেন সত্য কথা, আর তিনিই দেখান (সঠিক) পথ।

أُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ أَقْسَطُ عِنْدَ اللهِ ج فَإِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْٓا اٰبَآءَهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ط وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَآ أَخْطَأْتُمْ بِهٖ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ط وَكَانَ اللهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (٥)

৫. তাদেরকে তাদের পিতৃ-পরিচয়ে ডাক, আল্লাহ্‌র কাছে এটাই অধিক ইনসাফপূর্ণ। আর যদি তোমরা তাদের পিতৃ-পরিচয় না জান, তাহলে তারা তোমাদের দ্বীনী ভাই এবং তোমাদের বন্ধু। এ ব্যাপারে তোমাদের ত্রুটি-বিচ্যুতি হলে তোমাদের কোন গুনাহ্ নেই, কিন্তু (ধর্তব্য হল) তোমাদের অন্তরের সংকল্প। আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৫। 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু 'উমার (رضي الله عنهما) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর আযাদকৃত গোলাম যায়দ ইব্‌নু হারিসাহ্কে আমরা "যায়দ ইব্‌নু মুহাম্মদ-ই" ডাকতাম, যে পর্যন্ত না এ আয়াত নাযিল হয়ঃ তোমরা তাদের পিতৃপরিচয়ে ডাক, আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে এটিই অধিক ন্যায়সঙ্গত। -বুখারী ৪৭৮২ [মুসলিম ৪২২৫, তিরমিযী ৩২০৯, ৩৮১৪; আহমাদ ৫৪৫৫]

اَلنَّبِيُّ أَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ أَنْفُسِهِمْ وَأَزْوَاجُهٗٓ أُمَّهٰتُهُمْ ط وَأُولُوا الْأَرْحَامِ بَعْضُهُمْ أَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهَاجِرِيْنَ إِلَّآ أَنْ تَفْعَلُوْٓا إِلٰٓى أَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ط كَانَ ذٰلِكَ فِي الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا (٦)

৬. নবী (ﷺ) মু'মিনদের নিকট তাদের নিজেদের চেয়ে ঘনিষ্ঠ, আর তার স্ত্রীগণ তাদের মাতা। আল্লাহ্র বিধানে মু'মিন ও মুহাজিরদের (দ্বীনী সম্পর্ক) অপেক্ষা আত্মীয়-স্বজনগণ পরস্পর পরস্পরের নিকট ঘনিষ্ঠতর। তবে তোমরা তোমাদের বন্ধু বান্ধবদের প্রতি দয়া-দাক্ষিণ্য প্রদর্শন করতে চাইলে, করতে পার। (আল্লাহ্র) কিতাবে এটাই লিখিত।

وَإِذْ أَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّإِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ص وَأَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ (٧)

৭. স্মরণ কর, আমি যখন নবীদের কাছ থেকে অঙ্গীকার নিয়েছিলাম আর তোমার কাছ থেকেও; আর নূহ্, ইব্রাহীম, মূসা আর মারইয়াম পুত্র 'ঈসা থেকেও। আমি তাদের কাছ থেকে নিয়েছিলাম দৃঢ় অঙ্গীকার

لِّيَسْأَلَ الصّٰدِقِيْنَ عَنْ صِدْقِهِمْ ج وَأَعَدَّ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا أَلِيْمًا ع (٨)

৮. সত্যবাদীদেরকে (অর্থাৎ নবীদেরকে) তাদের সত্যবাদিতা (অর্থাৎ আল্লাহ্র বাণী পৌঁছে দেয়ার কাজ) সম্পর্কে জিজ্ঞেস করার জন্য। তিনি কাফিরদের জন্য প্রস্তুত করে রেখেছেন ভয়াবহ শাস্তি।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللهِ عَلَيْكُمْ إِذْ جَآءَتْكُمْ جُنُوْدٌ فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا وَّجُنُوْدًا لَّمْ تَرَوْهَا ط وَكَانَ اللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ج (٩)

৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহ্র অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর যখন সৈন্যবাহিনী তোমাদের বিরুদ্ধে নিকটবর্তী হয়েছিল, অতঃপর আমি তাদের বিরুদ্ধে পাঠিয়েছিলাম ঝড়ো হাওয়া এবং এক (ফেরেশতারূপী) সৈন্যবাহিনী যা তোমরা দেখনি। তোমরা যা কর আল্লাহ তা প্রত্যক্ষকারী।

إِذْ جَآءُوْكُمْ مِّنْ فَوْقِكُمْ وَمِنْ أَسْفَلَ مِنْكُمْ وَإِذْ زَاغَتِ الْأَبْصَارُ وَبَلَغَتِ الْقُلُوْبُ الْحَنَاجِرَ وَتَظُنُّوْنَ

১০. তারা যখন তোমাদের কাছে এসেছিল তোমাদের উপর থেকে আর তোমাদের নীচের দিক থেকে, তখন তোমাদের চক্ষু হয়েছিল বিস্ফারিত আর প্রাণ হয়েছিল কণ্ঠাগত; আর তোমরা আল্লাহ সম্পর্কে নানা রকম (খারাপ)

৬। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, দুনিয়া ও আখিরাতে সকল মানুষের চেয়ে মু'মিনের জন্য আমিই ঘনিষ্ঠতম। তোমরা ইচ্ছা করলে এ আয়াত পাঠ করতে পার– "নাবী মু'মিনদের নিকট তাদের নিজেদের চেয়ে অধিক ঘনিষ্ঠ।" সুতরাং কোন মু'মিন কোন ধন-সম্পদ রেখে গেলে তার নিকটাত্মীয় সে যে-ই হোক, তার উত্তরাধিকারী হবে, আর যদি ঋণ অথবা অসহায় সন্তানাদি রেখে যায় সে যেন আমার কাছে আসে, আমি তার অভিভাবক। –বুখারী ৪৭৮১ [২২৯৮; মুসলিম ১৬১৯, তিরমিযী ১০৭০, ২০৯০; নাসায়ী ১৯৬৩, আবূ দাঊদ ২৯৫৫, ইবনু মাজাহ ২৪১৫, আহমাদ ৭৮০১, ৭৮৩৯; দারিমী ২৫৯৪]

بِاللّٰهِ الظُّنُوْنَا ؕ (١٠)

ধারণা পোষণ করতে শুরু করেছিলে।

هُنَالِكَ ابْتُلِيَ الْمُؤْمِنُوْنَ وَزُلْزِلُوْا زِلْزَالًا شَدِيْدًا (١١)

১১. সে সময় মু'মিনগণকে পরীক্ষা করা হয়েছিল আর তাদেরকে ভীষণ কম্পনে প্রকম্পিত করা হয়েছিল।

وَإِذْ يَقُوْلُ الْمُنَافِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ إِلَّا غُرُوْرًا (١٢)

১২. আর স্মরণ কর, যখন মুনাফিকরা এবং যাদের অন্তরে রোগ আছে তারা বলছিল– আল্লাহ ও তাঁর রসূল আমাদেরকে যে ওয়া'দা দিয়েছেন তা ধোঁকা ছাড়া আর কিছুই নয়।

وَإِذْ قَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْهُمْ يَآَهْلَ يَثْرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمْ فَارْجِعُوْا ج وَيَسْتَأْذِنُ فَرِيْقٌ مِّنْهُمُ النَّبِيَّ يَقُوْلُوْنَ إِنَّ بُيُوْتَنَا عَوْرَةٌ ؕ وَمَا هِيَ بِعَوْرَةٍ ج إِنْ يُّرِيْدُوْنَ إِلَّا فِرَارًا (١٣)

১৩. স্মরণ কর, যখন তাদের একদল বলেছিল- হে ইয়াসরিববাসী! তোমরা (শত্রুর আক্রমণের বিরুদ্ধে) দাঁড়াতে পারবে না, কাজেই তোমরা ফিরে যাও। আর তাদের একদল এই বলে নবী (ﷺ)র কাছে অব্যাহতি চাচ্ছিল যে, আমাদের বাড়ীঘর অরক্ষিত অথচ ওগুলো অরক্ষিত ছিল না, আসলে পালিয়ে যাওয়াই তাদের ছিল একমাত্র উদ্দেশ্য।

وَلَوْ دُخِلَتْ عَلَيْهِمْ مِّنْ أَقْطَارِهَا ثُمَّ سُئِلُوا الْفِتْنَةَ لَاٰتَوْهَا وَمَا تَلَبَّثُوْا بِهَآ إِلَّا يَسِيْرًا (١٤)

১৪. যদি শত্রুপক্ষ (মদীনা নগরীর) চারদিক থেকে তাদের উপর আক্রমণ করতো, অতঃপর তাদেরকে কুফুরীর আহ্বান করা হত, তবে তারা তাই করে বসত। তাতে তারা মোটেও বিলম্ব করত না।

وَلَقَدْ كَانُوْا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنْ قَبْلُ لَا يُوَلُّوْنَ الْأَدْبَارَ ؕ وَكَانَ عَهْدُ اللّٰهِ مَسْئُوْلًا (١٥)

১৫. অথচ তারা ইতোপূর্বে আল্লাহ্‌র সাথে অঙ্গীকার করেছিল যে, তারা পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে না। আল্লাহ্‌র সঙ্গে কৃত ওয়া'দা সম্পর্কে অবশ্যই জিজ্ঞেস করা হবে।

قُلْ لَّنْ يَّنْفَعَكُمُ الْفِرَارُ إِنْ فَرَرْتُمْ مِّنَ الْمَوْتِ أَوِ الْقَتْلِ وَإِذًا لَّا تُمَتَّعُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا (١٦)

১৬. বল, পলায়নে তোমাদের কোনই লাভ হবে না, যদি তোমরা মৃত্যু অথবা হত্যা থেকে পলায়ন কর তাহলে তোমাদেরকে সামান্যই ভোগ করতে দেয়া হবে।

قُلْ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَعْصِمُكُمْ مِّنَ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا يَجِدُوْنَ

১৭. বল, তোমাদেরকে আল্লাহ ('র শাস্তি) হতে কে রক্ষে করবে. তিনি যদি তোমাদের অকল্যাণ করতে চান অথবা তোমাদেরকে অনুগ্রহ করতে

১০। 'আয়িশাহ হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, "যখন তারা তোমাদের বিরুদ্ধে সমাগত হয়েছিল উঁচু স্থান ও নীচু স্থান হতে এবং তোমাদের চক্ষু বিস্ফারিত হয়েছিল ...."– (সূরাহ আল-আহযাব ৩৩/১০)। তিনি বলেন, এ আয়াতখানা খন্দকের যুদ্ধে অবতীর্ণ হয়েছে। –বুখারী ৪১০৩ [মুসলিম ৩০২০]

لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (١٧)

চান? তারা আল্লাহকে ছাড়া তাদের জন্য না পাবে কোন অভিভাবক, আর না কোন সাহায্যকারী।

قَدْ يَعْلَمُ اللهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ لِإِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ إِلَيْنَا ج وَلَا يَأْتُوْنَ الْبَأْسَ إِلَّا قَلِيْلًا لا (١٨)

১৮. আল্লাহ তোমাদের মধ্যে তাদেরকে নিশ্চিতই জানেন কারা (যুদ্ধে অংশগ্রহণে) বাধা সৃষ্টিকারী আর কারা নিজেদের ভাইদেরকে বলে- আমাদের কাছে এসো। যুদ্ধ তারা সামান্যই করে

أَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ج صلے فَإِذَا جَآءَ الْخَوْفُ رَأَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ تَدُوْرُ أَعْيُنُهُمْ كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ج فَإِذَا ذَهَبَ الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِأَلْسِنَةٍ حِدَادٍ أَشِحَّةً عَلَى الْخَيْرِ ط أُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَأَحْبَطَ اللهُ أَعْمَالَهُمْ ط وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرًا (١٩)

১৯. তোমাদের প্রতি কৃপণতার বশবর্তী হয়ে। যখন বিপদ আসে তখন তুমি তাদেরকে দেখবে মৃত্যু ভয়ে অচেতন ব্যক্তির ন্যায় চোখ উল্টিয়ে তারা তোমার দিকে তাকাচ্ছে। অতঃপর বিপদ যখন কেটে যায় তখন ধনের লালসায় তারা তোমাদেরকে তীক্ষ্ণ বাক্য-বাণে বিদ্ধ করে। এরা ঈমান আনেনি। এজন্য আল্লাহ তাদের কার্যাবলী নিস্ফল করে দিয়েছেন, আর তা আল্লাহ্র জন্য সহজ।

يَحْسَبُوْنَ الْأَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ج وَإِنْ يَّأْتِ الْأَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ أَنَّهُمْ بَادُوْنَ فِي الْأَعْرَابِ يَسْأَلُوْنَ عَنْ أَنْبَآئِكُمْ ط وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا إِلَّا قَلِيْلًا ع (٢٠)

২০. তারা মনে করে সম্মিলিত বাহিনী চলে যায়নি। সম্মিলিত বাহিনী যদি আবার এসে যায়, তাহলে তারা কামনা করবে যে, যদি মরুচারীদের মধ্যে থেকে তারা তোমাদের সংবাদ নিতে পারত! তারা তোমাদের মধ্যে অবস্থান করলেও তারা যুদ্ধ সামান্যই করত।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللهِ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ

২১. তোমাদের জন্য আল্লাহ্র রসূলের মধ্যে উত্তম আদর্শ রয়েছে যারা আল্লাহ ও শেষ দিনের আশা রাখে আর আল্লাহ্কে অধিক স্মরণ করে।

২১। নাফি' (রহ.) হতে বর্ণিত যে, ইব্নু 'উমার (রাঃ) তাঁর ছেলে 'আবদুল্লাহ ইব্নু 'আবদুল্লাহ-এর নিকট গেলেন, যখন তাঁর (হাজ্জ যাত্রার) বাহন প্রস্তুত, তখন তাঁর ছেলে বললেন, আমার আশঙ্কা হয়। এ বছর মানুষের মধ্যে লড়াই হবে, তারা আপনাকে কা'বায় যেতে বাধা দিবে। কাজেই এবার নিবৃত্ত হওয়াটাই উত্তম। তখন ইব্নু 'উমার (রাঃ) বললেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) একদা রওনা হয়েছিলেন, কুরায়শ কাফিররা তাঁকে বাইতুল্লাহ যেতে বাধা দিয়েছিল। আমাকেও যদি বাইতুল্লাহ বাধা দেয়া হয়, তবে আল্লাহর রসূল (ﷺ) যা করেছিলেন, আমিও তাই করব। "কেননা, নিশ্চয়ই তোমাদের জন্য আল্লাহর রসূলের মধ্যে রয়েছে উত্তম আদর্শ"– (সূরা আল-আহযাব ২১)। এরপর তিনি বললেন, তোমরা সাক্ষী থেকো, আমি 'উমরাহ'র সাথে হাজ্জ-এর সংকল্প করছি। (রাবী) নাফি' (রহ.) বলেন, তিনি মক্কায় উপনীত হয়ে উভয়টির জন্য মাত্র একটি তাওয়াফ করলেন।
–বুখারী ১৬৩৯ [১৬৪০, ১৬৯৩, ১৭০৮, ১৭২৯, ১৮০৬, ১৮০৭, ১৮০৮, ১৮১০, ১৮১২, ১৮১৩, ৪১৮৩, ৪১৮৪, ৪১৮৫; নাসায়ী ২৮৫৯, আহমাদ ৪৪৬৬, ৪৫৮২; দারিমী ১৮৯৩]

وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ط (٢١)

وَلَمَّا رَأَى الْمُؤْمِنُوْنَ الْأَحْزَابَ لا قَالُوْا هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ز وَمَا زَادَهُمْ إِلَّآ إِيْمَانًا وَّتَسْلِيْمًا ط (٢٢)

২২. মু'মিনরা যখন সম্মিলিত বাহিনীকে দেখল তখন তারা বলে উঠল– আল্লাহ ও তাঁর রসূল এরই ওয়া'দা আমাদেরকে দিয়েছিলেন এবং আল্লাহ ও তাঁর রসূল সত্য বলেছেন। এতে তাদের ঈমান ও আনুগত্যের আগ্রহই বৃদ্ধি পেল।

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ج فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ زصلے وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا لا (٢٣)

২৩. মু'মিনদের মধ্যে কতক লোক আল্লাহ্‌র সঙ্গে কৃত তাদের অঙ্গীকার সত্যে পরিণত করেছে। তাদের কতক উদ্দেশ্য বাস্তবায়নে (শাহাদাত বরণ) করেছে আর তাদের কতক অপেক্ষায় আছে। তারা (তাদের সংকল্প) কখনো তিল পরিমাণ পরিবর্তন করেনি।

لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ إِنْ شَآءَ أَوْ يَتُوْبَ عَلَيْهِمْ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ج (٢٤)

২৪. যাতে আল্লাহ (ওয়া'দার প্রতি) সত্যবাদীদেরকে তাদের সত্যবাদিতার পুরস্কার দেন আর মুনাফিকদেরকে ইচ্ছে করলে শাস্তি দেন অথবা তাদেরকে ক্ষমা করেন। আল্লাহ পরম ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا خَيْرًا ط وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ط وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ج (٢٥)

২৫. আর আল্লাহ কাফিরদেরকে তাদের রাগের অবস্থাতেই ফিরিয়ে দিলেন, তারা কোন কল্যাণ লাভ করতে পারেনি। যুদ্ধে মু'মিনদের জন্য আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট। আল্লাহ সর্বশক্তিমান, মহাপরাক্রমশালী।

২৩। আনাস ইব্‌নু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা মনে করি, এ আয়াত আনাস ইব্‌নু নায্‌র সম্পর্কে নাযিল হয়েছেঃ "মু'মিনদের মধ্যে কতক আল্লাহ্‌র সঙ্গে তাদের কৃত ওয়াদা পূর্ণ করেছে।" –বুখারী ৪৭৮৩ [২৮০৫; মুসলিম ১৯০৩, নাসায়ী ৪৭৫৫-৪৫৫৭, আবূ দাউদ ৪৫৯৫, ইবনু মাজাহ ২৬৪৯, আহমাদ ১১৮৯২, ১২২৯৩, ১২৬০৩]

(উহূদের যুদ্ধে কাফিরদের সাড়াঁশি আক্রমণের মুখে মুসলিমরা যখন একটা ঘোষণা শুনতে পেল যে মুহাম্মাদ (ﷺ) -কে হত্যা করা হয়েছে তখন তাদের কেউ কেউ অস্ত্র ফেলে বসে পড়ল। এই লোকদের নিকট দিয়ে কিছুক্ষণ পর আনাস ইবনে নযর (রাযি) যাচ্ছিলেন। তিনি লক্ষ্য করলেন বেশ কয়েকজন সাহাবী চুপচাপ বসে আছেন। তিনি জিজ্ঞেস করলেন– তোমরা কার প্রতীক্ষায় রয়েছ? তারা জবাব দিলেন রসূলুল্লাহ (ﷺ) !-কে হত্যা করা হয়েছে। আনাস ইবনে নযর (রাঃ) বললেন– তা হলে তোমরা বেঁচে থেকে কী করবে? ওঠো, যে কারণে রসূলুল্লাহ (ﷺ) জীবন দিয়েছেন সেই একই কারণে তোমরাও জীবন দাও। এরপর বললেন– হে রব্বুল 'আলামীন, ওরা অর্থাৎ মুসলিমরা যা কিছু করেছে তা থেকে আমি তোমার দরবারে পানাহ চাই। এ কথা বলে তিনি সামনের দিকে অগ্রসর হলেন। সামনে যাওয়ার পর সা'দ ইবনে মা'য (রাঃ) এর সাথে দেখা হল। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, হে আবূ 'উমার! কোথায় যাচ্ছেন? আনাস (রাঃ) বললেন, জান্নাতের সুবাসের কথা কী আর বলব! হে সাদ! উহূদ পাহাড়ের ওপার থেকে জান্নাতের সুবাস অনুভব করছি। একথা বলার পর আনাস ইবনে নযর (রাঃ) আরো সামনে এগিয়ে গেলেন। এবং কাফেরদের সাথে লড়াই করতে করতে শহীদ হয়ে গেলেন।)

وَأَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَأْسِرُوْنَ فَرِيْقًا ج (٢٦)

২৬. আর গ্রন্থধারীদের মধ্য হতে যারা তাদেরকে (অর্থাৎ সম্মিলিত কাফির বাহিনীকে) সাহায্য করেছিল তাদেরকে তিনি তাদের দূর্গ হতে নামিয়ে দিলেন এবং তাদের অন্তরে ভীতি নিক্ষেপ করলেন। তাদের কতককে তোমরা হত্যা করলে, আর কতককে করলে বন্দী।

وَأَوْرَثَكُمْ أَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَأَمْوَالَهُمْ وَأَرْضًا لَّمْ تَطَئُوْهَا ط وَكَانَ اللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا ع (٢٧)

২৭. আর তিনি তোমাদেরকে উত্তরাধিকারী করে দিলেন তাদের ভূমির, তাদের ঘরবাড়ির আর তাদের ধন-সম্পদের; আর এমন এক ভূখণ্ডের যেখানে তোমরা (এখনও) অভিযানই পরিচালনা করনি। আল্লাহ সর্ববিষয়ে ক্ষমতাবান।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ إِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا فَتَعَالَيْنَ أُمَتِّعْكُنَّ وَأُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا (٢٨)

২৮. হে নবী (ﷺ)! তুমি তোমার স্ত্রীদের বলে দাও– তোমরা যদি পার্থিব জীবন আর তার শোভাসৌন্দর্য কামনা কর, তাহলে এসো, তোমাদেরকে ভোগসামগ্রী দিয়ে দেই এবং উত্তম পন্থায় তোমাদেরকে বিদায় দেই।

وَإِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالدَّارَ الْأٰخِرَةَ فَإِنَّ اللهَ أَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ مِنْكُنَّ أَجْرًا عَظِيْمًا (٢٩)

২৯. আর তোমরা যদি আল্লাহ, তাঁর রসূল ও পরকালের গৃহ কামনা কর, তবে তোমাদের মধ্যে যারা সৎকর্মশীল তাদের জন্য আল্লাহ মহা পুরস্কার প্রস্তুত করে রেখেছেন।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ مَنْ يَّأْتِ مِنْكُنَّ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ ضِعْفَيْنِ ط وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرًا (٣٠)

৩০. হে নবী পত্নীগণ! তোমাদের মধ্যে কেউ প্রকাশ্যে অশ্লীল কাজ করলে তাকে দ্বিগুণ শাস্তি দেয়া হবে। আল্লাহ্র জন্য এটা সহজ।

২৮। নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেন যে, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তাঁর কাছে এলেন, যখন আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর সহধর্মিণীগণকে দু'টি পন্থার মধ্যে একটি পন্থা বেছে নেয়ার নির্দেশ দিলেন, তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) সর্বপ্রথম আমা হতে শুরু করলেন এবং বললেন, আমি তোমার কাছে একটি কথা উল্লেখ করছি। তাড়াহুড়ো না করে তোমার পিতা-মাতার সঙ্গে পরামর্শ করে উত্তর দেবে। তিনি এ কথা ভালভাবেই জানতেন যে, আমার আব্বা-আম্মা তাঁর (ﷺ) থেকে আমাকে বিচ্ছিন্ন হওয়ার পরামর্শ কখনও দিবেন না। 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেন, তিনি [রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)] বললেন, আল্লাহ্ বলছেন, "হে নাবী! আপনি আপনার স্ত্রীদের বলুন, তোমরা যদি পার্থিব জীবন ও তার ভূষণ কামনা কর.....। তখন আমি তাঁকে বললাম, এ ব্যাপারে আমার আব্বা-আম্মা থেকে পরামর্শ নেবার কী আছে? আমি তো আল্লাহ, তাঁর রসূল এবং আখিরাতের জীবনই কামনা করি। –বুখারী ৪৭৮৫ [৪৭৮৬; মুসলিম ১৪৭৫, তিরমিযী ১১৭৯, ৩২০৪; নাসায়ী ৩২০২, ৩২০৩, ৩৪৩৯-৩৪৪৫; আবূ দাউদ ২২০৩, ইবনু মাজাহ ২০৫২, ২০৫৩; আহমাদ ২৩৬৬১, ২৩৬৮৮; দারিমী ২২৬৯]

وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَآ أَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ وَأَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا (٣١)

৩১. তোমাদের মধ্যে যে কেউ আল্লাহ্ ও তাঁর রসূলের অনুগত হবে আর সৎ কাজ করবে, আমি তাকে দু'বার পুরস্কার দেব আর তার জন্য আমি সম্মানজনক রিয্ক প্রস্তুত রেখেছি।

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَأَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ إِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ج (٣٢)

৩২. হে নবী পত্নীগণ! তোমরা অন্য নারীদের মত নও। তোমরা যদি আল্লাহকে ভয় কর, তাহলে পর পুরুষের সঙ্গে আকর্ষণীয় ভঙ্গিতে কথা বলো না, যাতে যার অন্তরে ব্যাধি আছে সে প্রলুব্ধ হয়। তোমরা সঙ্গত কথা বলবে।

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُوْلٰى وَأَقِمْنَ الصَّلٰوةَ وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَأَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ط إِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ أَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ج (٣٣)

৩৩. আর তোমরা নিজেদের গৃহে অবস্থান কর, প্রাচীন অজ্ঞতার যুগের মত চোখ ঝলসানো প্রদর্শনী করে বেড়িও না। আর তোমরা নামায প্রতিষ্ঠা কর, যাকাত প্রদান কর এবং আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য কর। হে নবীর পরিবার! আল্লাহ্ কেবল চান তোমাদের থেকে অপবিত্রতা দূর করতে এবং তোমাদেরকে পবিত্র ও নিষ্কলংক করতে।

وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ع (٣٤)

৩৪. তোমাদের গৃহে আল্লাহ্র আয়াত ও হিকমত থেকে যা পাঠ করা হয় তার চর্চা কর। আল্লাহ অতি সূক্ষ্মদর্শী, সর্ববিষয়ে খবর রাখেন।

إِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقَانِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ أَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّأَجْرًا عَظِيْمًا (٣٥)

৩৫. মুসলিম পুরুষ ও মুসলিম নারী, মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারী, অনুগত পুরুষ ও অনুগত নারী, সত্যনিষ্ঠ পুরুষ ও সত্যনিষ্ঠ নারী, ধৈর্যশীল পুরুষ ও ধৈর্যশীল নারী, বিনয়ী পুরুষ ও বিনয়ী নারী, দানশীল পুরুষ ও দানশীল নারী, রোযাপালনকারী পুরুষ ও রোযাপালনকারী নারী, যৌনাঙ্গের সুরক্ষাকারী পুরুষ ও যৌনাঙ্গের সুরক্ষাকারী নারী, আল্লাহ্কে অধিক স্মরণকারী পুরুষ ও আল্লাহ্কে অধিক স্মরণকারী নারী- আল্লাহ তাদের জন্য প্রস্তুত রেখেছেন ক্ষমা ও মহাপ্রতিদান।

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ إِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ أَمْرًا أَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ مِنْ

৩৬. আল্লাহ ও তাঁর রসূল কোন নির্দেশ দিলে কোন মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারী উক্ত নির্দেশের ভিন্নতা করার কোন অধিকার রাখে না। যে আল্লাহ

أَمْرِهِمْ ط وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا (٣٦)

ও তাঁর রসূলকে অমান্য করে সে স্পষ্টতই সত্য পথ হতে দূরে সরে পড়ল।

وَإِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ أَنْعَمَ اللهُ عَلَيْهِ وَأَنْعَمْتَ عَلَيْهِ أَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ اللهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللهُ مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ج وَاللهُ أَحَقُّ أَنْ تَخْشٰهُ ط فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ط وَكَانَ أَمْرُ اللهِ مَفْعُوْلًا (٣٧)

৩৭. স্মরণ কর, আল্লাহ যাকে অনুগ্রহ করেছেন আর তুমিও যাকে অনুগ্রহ করেছ তাকে তুমি যখন বলছিলে- তুমি তোমার স্ত্রীকে (বিবাহবন্ধনে) রেখে দাও এবং আল্লাহ্কে ভয় কর। তুমি তোমার অন্তরে লুকিয়ে রাখছিলে যা আল্লাহ প্রকাশ করতে চান, তুমি লোকদেরকে ভয় করছিলে, অথচ আল্লাহ্ই সবচেয়ে বেশি এ অধিকার রাখেন যে, তুমি তাঁকে ভয় করবে। অতঃপর যায়দ যখন তার (যায়নাবের) সঙ্গে সম্পর্ক ছিন্ন করল তখন আমি তাকে তোমার সঙ্গে বিবাহবন্ধনে আবদ্ধ করে দিলাম যাতে মু'মিনদের পোষ্যপুত্ররা তাদের স্ত্রীদের সঙ্গে সম্পর্ক ছিন্ন করলে সেসব নারীকে বিবাহ করার ব্যাপারে মু'মিনদের কোন বিঘ্ন না হয়। আল্লাহ্র আদেশ কার্যকরী হবেই।

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللهُ لَهٗ ط سُنَّةَ اللهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ط وَكَانَ أَمْرُ اللهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا زلا (٣٨)

৩৮. আল্লাহ নবীর জন্য যা বিধিবদ্ধ করেছেন তার জন্য তা করতে কোন বাধা নেই। পূর্বে যারা অতীত হয়ে গেছে তাদের ক্ষেত্রেও এটাই ছিল আল্লাহ্র বিধান। আল্লাহ্র বিধান সুনির্ধারণে নির্ধারিত।

نِالَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللهَ ط وَكَفٰى بِاللهِ حَسِيْبًا (٣٩)

৩৯. তারা (নবীগণ) আল্লাহ্র বাণী প্রচার করত আর তাঁকে ভয় করত। আল্লাহ ছাড়া কাউকে তারা ভয় করত না। (মানুষদের) হিসাব গ্রহণে আল্লাহই যথেষ্ট।

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ط وَكَانَ اللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ع (٤٠)

৪০. মুহাম্মাদ (ﷺ) তোমাদের মধ্যেকার কোন পুরুষের পিতা নয়, কিন্তু (সে) আল্লাহ্র রসূল এবং শেষ নবী। আল্লাহ সর্ববিষয়ে সর্বজ্ঞাতা।

৩৭। আনাস ইব্নু মালিক (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এ আয়াতটি, "(তুমি তোমার অন্তরে যা গোপন করছ, আল্লাহ্ তা প্রকাশ করে দিচ্ছেন।)" যায়নাব বিনতে জাহ্শ এবং যায়দ ইব্নু হারিসাহ্ সম্পর্কে অবতীর্ণ হয়েছে। -বুখারী ৪৭৮৭ [৭৪২০; মুসলিম ৮৬, ১৪২৮; তিরমিযী ৩২১২, ৩২১৭-৩২১৯]

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۙ (٤١)

৪১. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আল্লাহ্‌কে বেশি বেশি স্মরণ কর।

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا (٤٢)

৪২. আর সকাল-সন্ধ্যায় তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۗ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا (٤٣)

৪৩. তিনি তোমাদের প্রতি তাঁর অনুগ্রহ বর্ষণ করেন, আর তাঁর ফেরেশতারাও (তোমাদের জন্য) তাঁর অনুগ্রহ প্রার্থনা করে তোমাদেরকে অন্ধকার থেকে বের করে আলোতে আনার জন্যে। মু'মিনদের প্রতি তিনি পরম দয়ালু।

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ صلے وَّأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيْمًا (٤٤)

৪৪. যেদিন তারা আল্লাহ্‌র সাথে সাক্ষাৎ করবে সেদিন তাদের অভিবাদন হবে 'সালাম'। তিনি তাদের জন্য প্রস্তুত রেখেছেন সম্মানজনক প্রতিদান।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ (٤٥)

৪৫. হে নবী (ﷺ)! আমি তোমাকে পাঠিয়েছি (যুগে যুগে প্রেরিত নবী রসূলগণ যে তাঁদের উম্মাতের কাছে আল্লাহর বাণী পৌঁছে দিয়েছেন– এ কথার) সাক্ষীস্বরূপ এবং সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে,

وَّدَاعِيًا إِلَى اللهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا (٤٦)

৪৬. আর আল্লাহ্‌র অনুমতিক্রমে তাঁর পথে আহ্বানকারী ও আলোকপ্রদ প্রদীপরূপে।

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللهِ فَضْلًا كَبِيْرًا (٤٧)

৪৭. তুমি মু'মিনদেরকে সুসংবাদ দাও যে, তাদের জন্য আল্লাহ্‌র নিকট আছে বিশাল অনুগ্রহ।

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ أَذٰىهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ ۗ وَكَفٰى بِاللهِ وَكِيْلًا (٤٨)

৪৮. তুমি কাফির ও মুনাফিকদের কথা মান্য করো না। তাদের যন্ত্রণাকে মনে স্থান দিও না, আর নির্ভর কর আল্লাহ্‌র উপর, কার্যনির্বাহীরূপে আল্লাহ্‌ই যথেষ্ট।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ أَنْ تَمَسُّوْهُنَّ فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا (٤٩)

৪৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন কোন মু'মিন নারীকে বিবাহ কর, অতঃপর তাদেরকে স্পর্শ করার পূর্বেই তাদেরকে তালাক দাও, তখন তাদের জন্য তোমাদেরকে কোন ইদ্দত পালন করতে হবে না যা তোমরা (অন্যক্ষেত্রের তালাকে) গণনা করে থাক। কাজেই কিছু সামগ্রী তাদেরকে দাও আর তাদেরকে বিদায় দাও উত্তম বিদায়ে।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِيُّ إِنَّآ أَحْلَلْنَا لَكَ أَزْوَٰجَكَ ٱلَّٰتِيٓ ءَاتَيْتَ أُجُورَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ مِمَّآ أَفَآءَ ٱللَّهُ عَلَيْكَ وَبَنَاتِ عَمِّكَ وَبَنَاتِ عَمَّٰتِكَ وَبَنَاتِ خَالِكَ وَبَنَاتِ خَٰلَٰتِكَ ٱلَّٰتِي هَاجَرْنَ مَعَكَ وَٱمْرَأَةً مُّؤْمِنَةً إِن وَهَبَتْ نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ إِنْ أَرَادَ ٱلنَّبِيُّ أَن يَسْتَنكِحَهَا خَالِصَةً لَّكَ مِن دُونِ ٱلْمُؤْمِنِينَ ۗ قَدْ عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيٓ أَزْوَٰجِهِمْ وَمَا مَلَكَتْ أَيْمَٰنُهُمْ لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَيْكَ حَرَجٌ ۗ وَكَانَ ٱللَّهُ غَفُورًا رَّحِيمًا (٥٠)

৫০. হে নবী (ﷺ)! আমি তোমার জন্য বৈধ করেছি তোমার স্ত্রীগণকে যাদের মোহরানা তুমি প্রদান করেছ; আর বৈধ করেছি আল্লাহ ফায় (বিনা যুদ্ধে লব্ধ) হিসেবে তোমাকে যা দান করেছেন তার মধ্য হতে যারা তোমার মালিকানাধীন হয়েছে তাদেরকে, আর তোমার চাচার কন্যা ও ফুফুর কন্যাকে, তোমার মামার কন্যা ও তোমার খালার কন্যাকে যারা তোমার সঙ্গে হিজরাত করেছে। আর কোন মু'মিন নারী যদি নবীর নিকট নিজেকে নিবেদন করে আর নবী যদি তাকে বিয়ে করতে চায় সেও বৈধ, এটা মু'মিনদের বাদ দিয়ে বিশেষভাবে তোমার জন্য যাতে তোমার কোন অসুবিধে না হয়। মু'মিনগণের জন্য তাদের স্ত্রী ও দাসীদের ব্যাপারে যা নির্ধারিত করেছি আমার তা জানা আছে। আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

تُرْجِي مَن تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيٓ إِلَيْكَ مَن تَشَآءُ ۖ وَمَنِ ٱبْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ۚ ذَٰلِكَ أَدْنَىٰٓ أَن تَقَرَّ أَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَآ ءَاتَيْتَهُنَّ كُلُّهُنَّ ۚ وَٱللَّهُ يَعْلَمُ مَا فِي قُلُوبِكُمْ ۚ وَكَانَ ٱللَّهُ عَلِيمًا حَلِيمًا (٥١)

৫১. তুমি তাদের যাকে ইচ্ছে সরিয়ে রাখতে পার, আর যাকে ইচ্ছে তোমার কাছে আশ্রয় দিতে পার। আর তুমি যাকে আলাদা ক'রে রেখেছ তাকে কামনা করলে তোমার কোন অপরাধ নেই। এতে অধিক সম্ভাবনা আছে যে, তাদের চক্ষু শীতল থাকবে, তারা দুঃখ পাবে না, আর তুমি তাদের সকলকে যা দাও তাতে তারা সন্তুষ্ট থাকবে। তোমাদের অন্তরে যা আছে আল্লাহ তা জানেন। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সহনশীল।

৫১। 'আয়িশাহ হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যেসব মহিলা নিজেকে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর কাছে হেবাস্বরূপ ন্যস্ত করে দেন, তাদের আমি ঘৃণা করতাম। আমি (মনে মনে) বলতাম, মহিলারা কি নিজেকে ন্যস্ত করতে পারে? এরপর যখন আল্লাহ্ তা'আলা এ আয়াত অবতীর্ণ করেনঃ "আপনি তাদের মধ্য থেকে যাকে ইচ্ছা আপনার নিকট হতে দূরে রাখতে পারেন এবং যাকে ইচ্ছা আপনার নিকট স্থান দিতে পারেন। আর আপনি যাকে দূরে রেখেছেন, তাকে কামনা করলে আপনার কোন অপরাধ নেই।" তখন আমি বললাম, আমি দেখছি যে, আপনি যা ইচ্ছা করেন আপনার রব, তা-ই শীঘ্র পূর্ণ করে দেন। -বুখারী ৪৭৮৮ [৫১১৩; মুসলিম ১৪৬৪, ১৬৭৬; নাসায়ী ৩১৯৯, আবূ দাউদ ২১৩৬, ইবনু মাজাহ ২০০০, আহমাদ ২৩৯৫৫, ২৪৫০৫, ২৫৭১৯]

لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَآ أَنْ تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ أَزْوَاجٍ وَّلَوْ أَعْجَبَكَ حُسْنُهُنَّ إِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِينُكَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيبًا ع (٥٢)

৫২. অতঃপর আর কোন নারী তোমার জন্য বৈধ নয়। আর তাদের পরিবর্তে অন্য স্ত্রী গ্রহণ করাও হালাল নয় যদিও তাদের সৌন্দর্য তোমাকে চমৎকৃত করে। তবে তোমার অধিকারভুক্ত দাসীদের ব্যাপারে এই নিয়ম প্রযোজ্য নয়। আল্লাহ সব বিষয়ের উপর দৃষ্টি রাখেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ إِلَّآ أَنْ يُّؤْذَنَ لَكُمْ إِلٰى طَعَامٍ غَيْرَ نٰظِرِيْنَ إِنٰهُ وَلٰكِنْ إِذَا دُعِيْتُمْ فَادْخُلُوْا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا وَلَا مُسْتَأْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ؕ إِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيِيْ مِنْكُمْ ز وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيِيْ مِنَ الْحَقِّ ؕ وَإِذَا سَأَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوْهُنَّ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ؕ ذٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ وَقُلُوْبِهِنَّ ؕ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَلَآ أَنْ تَنْكِحُوْٓا أَزْوَاجَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖٓ أَبَدًا ؕ إِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا (٥٣)

৫৩. তোমরা যারা ঈমান এনেছ শোন! নবীগৃহে প্রবেশ কর না যতক্ষণ না তোমাদেরকে অনুমতি দেয়া হয় খাদ্য গ্রহণের জন্য, (আগেভাগেই এসে পড় না) খাদ্য প্রস্তুতির জন্য অপেক্ষা করে যেন বসে থাকতে না হয়। তবে তোমাদেরকে ডাকা হলে তোমরা প্রবেশ কর। অতঃপর তোমাদের খাওয়া হলে তোমরা চলে যাও। কথাবার্তায় মশগুল হয়ে যেয়ো না। তোমাদের এ কাজ নবীকে কষ্ট দেয়। সে তোমাদেরকে (উঠে যাওয়ার জন্য বলতে) লজ্জাবোধ করে, আল্লাহ সত্য কথা বলতে লজ্জাবোধ করেন না। তোমরা যখন তার স্ত্রীগণের নিকট কোন কিছু চাও, তখন পর্দার আড়াল হতে তাদের কাছে চাও। এটাই তোমাদের ও তাদের অন্তরের জন্য পবিত্রতর। তোমাদের জন্য আল্লাহ্‌র রসূলকে কষ্ট দেয়া সঙ্গত নয়। আর তার মৃত্যুর পর তার স্ত্রীগণকে বিয়ে করাও তোমাদের জন্য কক্ষনো বৈধ নয়। আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে এটা মহা অপরাধ।

৫৩। আনাস ইব্‌নু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যয়নাব বিন্‌ত জাহ্‌শ্‌কে যখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বিয়ে করেন, তখন তিনি লোকদের দাওয়াত করলেন। লোকেরা আহারের পর বসে কথাবার্তা বলতে লাগল। তিনি উঠে যেতে চাচ্ছিলেন, কিন্তু লোকেরা উঠছিল না। এ অবস্থা দেখে তিনি উঠে দাঁড়ালেন। তিনি উঠে যাওয়ার পর যারা উঠবার তারা উঠল। কিন্তু তিন ব্যক্তি বসেই থাকল। নাবী (ﷺ) ঘরে প্রবেশের জন্য ফিরে এসে দেখেন, তারা তখনও বসে রয়েছে। অতঃপর তারাও উঠে গেল। আমি গিয়ে নাবী (ﷺ)-কে তাদের চলে যাওয়ার সংবাদ দিলাম। তারপর তিনি এসে প্রবেশ করলেন। এরপরও আমি প্রবেশ করতে চাইলে তিনি আমার ও তার মাঝে পর্দা ঝুলিয়ে দিলেন। তখন আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করেনঃ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ النَّبِيِّ "হে মু'মিনগণ! তোমরা নাবীর গৃহে প্রবেশ করো না.....শেষ পর্যন্ত। –বুখারী ৪৭৯১ [৪৭৯২, ৪৭৯৩, ৪৭৯৪, ৫১৫৪, ৫১৬৩, ৫১৬৬, ৫১৬৮, ৫১৭০, ৫১৭১, ৫৪৬৬, ৬২৩৮, ৬২৩৯, ৬২৭১, ৭৪২১; মুসলিম ৮৬, ১৪২৮; তিরমিযী ৩২১২, ৩২১৭-৩২১৯]

إِنْ تُبْدُوْا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوْهُ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا (٥٤)

৫৪. তোমরা কোন বিষয় প্রকাশ কর অথবা তা গোপন কর- আল্লাহ তো সব বিষয়ে সর্বজ্ঞ।

لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآئِهِنَّ وَلَآ إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ أَخَوَاتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ ج وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ط إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا (٥٥)

৫৫. কোন অপরাধ নেই (যদি নবীর স্ত্রীগণ সামনে যায়) তাদের পিতৃদের, তাদের পুত্রদের, তাদের ভ্রাতৃদের, তাদের ভ্রাতুষ্পুত্রদের, তাদের ভগ্নীপুত্রদের, তাদের নারীদের ও তাদের অধিকারভুক্ত দাস-দাসীদের। আর (হে নবীর স্ত্রীগণ!) তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, আল্লাহ সকল জিনিসেরই প্রত্যক্ষদর্শী।

إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهُ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ط يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا (٥٦)

৫৬. আল্লাহ নবীর প্রতি অনুগ্রহ করেন, তাঁর ফেরেশতাগণ নবীর জন্য অনুগ্রহ প্রার্থনা করে। হে মু'মিনগণ! তোমরাও নবীর জন্য অনুগ্রহ প্রার্থনা কর এবং যথাযথ শ্রদ্ধাভরে সালাম জানাও।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ وَأَعَدَّ لَهُمْ

৫৭. যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলকে কষ্ট দেয়, আল্লাহ তাদেরকে দুনিয়া ও আখিরাতে অভিশপ্ত করেছেন আর তাদের জন্য প্রস্তুত রেখেছেন

---

৪ ৫৪-৫৫। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, পর্দার আয়াত অবতীর্ণ হওয়ার পর, আবুল কুর'আয়স এর ভাই-আফ্‌লাহ আমার কাছে প্রবেশ করার অনুমতি চায়। আমি বললাম, এ ব্যাপারে যতক্ষণ রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) অনুমতি না দিবেন, ততক্ষণ আমি অনুমতি দিতে পারি না। কেননা তার ভাই আবূ কু'আয়স নিজে আমাকে দুধ পান করান নি। কিন্তু আবুল কু'আয়সের স্ত্রী আমাকে দুধ পান করিয়েছেন। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমাদের কাছে আসলেন। আমি তাঁকে বললাম, হে আল্লাহর রসূল! আবুল কু'আয়সের ভাই-আফলাহ আমার সঙ্গে দেখা করার অনুমতি চাইছিল। আমি এ বলে অস্বীকার করেছি যে, যতক্ষণ আপনি এ ব্যাপারে অনুমতি না দিবেন, ততক্ষণ আমি অনুমতি দিব না। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, তোমার চাচাকে (দেখাকরার) অনুমতি দিতে কিসে বাধা দিয়েছে? আমি বললাম, সে ব্যক্তি তো আমাকে দুধ পান করান নি; কিন্তু আবুল কু'আয়সের স্ত্রী আমাকে দুধ পান করিয়েছেন। এরপর তিনি [রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)] বললেন. তোমার হাত ধুলায় ধূসরিত হোক, তাকে অনুমতি দাও, কেননা, সে তোমার চাচা। 'উরওয়াহ বলেন, এ কারণে 'আয়িশা (রাঃ) বলতেন বংশ সম্বন্ধের কারণে যাকে তোমরা হারাম জান, দুগ্ধ-পানের কারণেও তাকে হারাম জানবে। -বুখারী ৪৭৯৬ [২৬৪৪; মুসলিম ১৪৪৫, তিরমিযী ১১৩৮, নাসায়ী ৩৩০১, ৩৩১৪; আবূ দাউদ ২০৫৭, মুওয়াত্তা ১২৭৮]

৫৬। কা'ব ইব্‌নু উজরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। বলা হল, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আপনার উপর সালাম (সম্পর্কে) আমরা অবগত হয়েছি; কিন্তু নামায কীভাবে? তিনি বললেন, তোমরা বলবে, "হে আল্লাহ্! তুমি মুহাম্মাদ এবং মুহাম্মাদের পরিবারবর্গের উপর রহমাত নাযিল কর, যেমনিভাবে ইব্‌রাহীম-এর পরিবারবর্গের উপর তুমি রহমাত নাযিল করেছ। নিশ্চয়ই তুমি প্রশংসিত, মর্যাদাবান। হে আল্লাহ্! তুমি মুহাম্মদ-এর উপর এবং মুহাম্মাদ-এর পরিবারবর্গের প্রতি বরকত নাযিল কর। যেমনিভাবে তুমি বরকত নাযিল করেছ ইব্‌রাহীমের পরিবারবর্গের প্রতি। নিশ্চয়ই তুমি প্রশংসিত, মর্যাদাবান। -বুখারী ৪৭৯৭ [৩৩৭০; মুসলিম ৪০৬, তিরমিযী ৪৮৩, নাসায়ী ১২৮৭-১২৮৯, আবূ দাউদ ৯৭৬, ইবনু মাজাহ ৯০৪, আহমাদ ১৭৬৩৮, ১৭৬৬১, ১৭৬৬৭; দারিমী ১৩৪২]

عَذَابًا مُّهِيْنًا ع (٥٧)

অপমানজনক শাস্তি।

وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا (٥٨)

৫৮. আর যারা মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারীদেরকে কষ্ট দেয় তাদের কোন অপরাধ ছাড়াই, তারা অপবাদের ও সুস্পষ্ট পাপের বোঝা বহন করে।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ وَبَنَاتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ط ذٰلِكَ أَدْنٰىٓ أَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ط وَكَانَ اللهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (٥٩)

৫৯. হে নবী! তুমি তোমার স্ত্রীদেরকে, তোমার কন্যাদেরকে আর মু'মিনদের নারীদেরকে বলে দাও– তারা যেন তাদের চাদরের কিছু অংশ নিজেদের উপর টেনে দেয় (যখন তারা বাড়ীর বাইরে যায়), এতে তাদেরকে চেনা সহজতর হবে এবং তাদেরকে উত্যক্ত করা হবে না। আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنَافِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ فِيْهَآ إِلَّا قَلِيْلًا ج (٦٠)

৬০. মুনাফিকরা আর যাদের অন্তরে রোগ আছে তারা আর শহরে গুজব রটনাকারীরা যদি বিরত না হয়, তবে আমি অবশ্য অবশ্যই তাদের বিরুদ্ধে তোমাকে তেজোদীপ্ত করব, অতঃপর তারা তোমার প্রতিবেশী হিসেবে এ শহরে থাকতে পারবে না। তবে অল্পদিনের জন্য থাকবে

مَّلْعُوْنِيْنَ ج ۚ أَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا أُخِذُوْا وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا (٦١)

৬১. অভিশপ্ত অবস্থায়; তাদেরকে যেখানেই পাওয়া যাবে ধরা হবে এবং হত্যা করার মতই হত্যা করা হবে।

سُنَّةَ اللهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ج وَلَنْ

৬২. যারা অতীত হয়ে গেছে তাদের ক্ষেত্রে এটাই ছিল আল্লাহ্‌র বিধান, তুমি আল্লাহ্‌র বিধানে

৬৫৯। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, পর্দার বিধান নাযিল হওয়ার পর সাওদাহ প্রাকৃতিক প্রয়োজনে বাইরে গেলেন। সাওদাহ এমন স্থূল শরীরের অধিকারিণী ছিলেন যে, পরিচিত লোকদের থেকে তিনি নিজেকে গোপন রাখতে পারতেন না। 'উমার ইব্‌নু খাত্তাব (রাযিয়াল্লাহু আনহু) তাঁকে দেখে বললেন, হে সাওদাহ! জেনে রাখ, আল্লাহ্‌র কসম! আমাদের নযর থেকে গোপন থাকতে পারবে না। এখন দেখ তো, কীভাবে বাইরে যাবে? 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, সাওদাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) ফিরে আসলেন। আর এ সময় রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) আমার ঘরে রাতের খানা খাচ্ছিলেন। তাঁর হাতে ছিল টুকরা হাড়। সাওদাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) ঘরে প্রবেশ করে বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমি প্রাকৃতিক প্রয়োজনে বাইরে গিয়েছিলাম। তখন 'উমার (রাযিয়াল্লাহু আনহু) আমাকে এমন এমন কথা বলেছে। 'আয়িশাহ (রাযিয়াল্লাহু আনহা) বলেন, এ সময় আল্লাহ্ তা'আলা তাঁর নিকট ওয়াহী অবতীর্ণ করেন। ওয়াহী অবতীর্ণ হওয়া শেষ হল, হাড় টুকরা তখনও তাঁর হাতেই ছিল, তিনি তা রেখে দেননি। রসূলুল্লাহ্ (সাল্লাল্লাহু আলাইহি ওয়াসাল্লাম) বললেন, অবশ্য দরকার হলে তোমাদেরকে বাইরে যাওয়ার অনুমতি দেয়া হয়েছে। –বুখারী ৪৭৯৫ [১৪৬; মুসলিম ২১৭০, আহমাদ ২৩৭৬৯, ২৫৩৩৮, ২৫৭৯৯]

تَجِدَ لِسُنَّةِ اللهِ تَبْدِيْلًا (٦٢)

কক্ষনো হেরফের পাবে না।

يَسْأَلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ط قُلْ إِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ اللهِ ط وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا (٦٣)

৬৩. লোকে তোমাকে ক্বিয়ামত সম্পর্কে প্রশ্ন করে। বল, তার জ্ঞান কেবল আল্লাহ্‌র নিকটই আছে। কিসে তোমাকে জানাবে- সম্ভবতঃ ক্বিয়ামত নিকটেই।

إِنَّ اللهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَأَعَدَّ لَهُمْ سَعِيْرًا لا (٦٤)

৬৪. আল্লাহ কাফিরদেরকে অভিশাপ দিয়েছেন আর তাদের জন্য জ্বলন্ত অগ্নি প্রস্তুত রেখেছেন।

خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ج لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ج (٦٥)

৬৫. তাতে তারা চিরকাল থাকবে, তারা না পাবে কোন অভিভাবক, আর না পাবে কোন সাহায্যকারী।

يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ يٰلَيْتَنَآ أَطَعْنَا اللهَ وَأَطَعْنَا الرَّسُوْلَا (٦٦)

৬৬. আগুনে যেদিন তাদের মুখ উপুড় করে দেয়া হবে সেদিন তারা বলবে- হায়! আমরা যদি আল্লাহকে মানতাম ও রসূলকে মানতাম।

وَقَالُوْا رَبَّنَآ إِنَّآ أَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا فَأَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا (٦٧)

৬৭. আর তারা বলবে- হে আমাদের পালনকর্তা! আমরা আমাদের নেতাদেরকে ও আমাদের প্রধানদেরকে মান্য করতাম। তারাই আমাদেরকে গুমরাহ করেছিল।

رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ع (٦٨)

৬৮. হে আমাদের পালনকর্তা! তাদেরকে দ্বিগুণ শাস্তি দাও আর তাদেরকে মহা অভিশাপে অভিশাপ দাও।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّأَهُ اللهُ مِمَّا قَالُوْا ط وَكَانَ عِنْدَ اللهِ وَجِيْهًا (٦٩)

৬৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা তাদের মত হয়ো না যারা মূসাকে কষ্ট দিয়েছিল। অতঃপর তারা যা বলেছিল আল্লাহ তাথেকে তাকে নির্দোষ প্রমাণিত করেন। সে ছিল আল্লাহ্‌র নিকট সম্মানিত।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا

৭০. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর এবং সরল সঠিক কথা বল।

৬৯। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, "মূসা ('আ.) ছিলেন খুব লজ্জাশীল"। আর এ প্রেক্ষিতে আল্লাহ্‌র এ বাণী, হে মু'মিনগণ! তোমরা তাদের মত হয়ো না, যারা মূসা ('আ.)-কে কষ্ট দিয়েছে। তারপর আল্লাহ্ তা'আলা তাঁকে ওদের অভিযোগ থেকে পবিত্র করেছেন। আর তিনি ছিলেন আল্লাহ্‌র কাছে অতি সম্মানিত। -বুখারী ৪৭৯৯ [২৭৮; মুসলিম ৩৩৯, ৫১২; তিরমিযী ৩২২১, আহমাদ ৮৮৪৭, ১০৩০০, ১০৫৩১]

سَدِيْدًا ﻻ (٧٠)

يُّصْلِحْ لَكُمْ أَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط وَمَنْ يُّطِعِ اللهَ وَرَسُوْلَهُ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا (٧١)

৭১. আল্লাহ তোমাদের জন্য তোমাদের আমলগুলোকে ত্রুটিমুক্ত করবেন আর তোমাদের পাপগুলোকে ক্ষমা করে দিবেন। যে ব্যক্তি আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করে সে সাফল্য লাভ করে– মহাসাফল্য।

إِنَّا عَرَضْنَا الْأَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَالْجِبَالِ فَأَبَيْنَ أَنْ يَّحْمِلْنَهَا وَأَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْإِنْسَانُ ط إِنَّهُ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﻻ (٧٢)

৭২. আমি আসমান, যমীন ও পর্বতের প্রতি (ইসলামের বোঝা বহন করার) আমানাত পেশ করেছিলাম। কিন্তু তারা তা বহন করতে অস্বীকৃতি জানাল, তারা তাতে আশংকিত হল, কিন্তু মানুষ সে দায়িত্ব নিল। সে বড়ই অন্যায়কারী, বড়ই অজ্ঞ।

لِّيُعَذِّبَ اللهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط وَكَانَ اللهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ع (٧٣)

৭৩. পরিণামে আল্লাহ মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিক নারী এবং মুশরিক পুরুষ ও মুশরিক নারীকে শাস্তি দিবেন এবং মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারীকে ক্ষমা প্রদর্শন করবেন। আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

৩৪. সূরাহ সাবা

سُوْرَةُ سَبَا

আয়াতঃ ৫৪, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ط وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ (١)

১. যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্‌র যিনি আকাশ ও পৃথিবীতে যা আছে সব কিছুর মালিক। আখিরাতেও প্রশংসা তাঁরই; তিনি মহা প্রজ্ঞাশীল, সকল বিষয়ে অবহিত।

يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ط وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ (٢)

২. ভূমিতে যা প্রবেশ করে আর তাথেকে যা বের হয়, আর আকাশ হতে যা অবতীর্ণ হয় আর তাতে যা উত্থিত হয় তা তিনি জানেন। তিনি পরম দয়ালু, পরম ক্ষমাশীল।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَأْتِيْنَا السَّاعَةُ ط

৩. কাফিরগণ বলে– ক্বিয়ামত আমাদের নিকট

قُلْ بَلٰى وَ رَبِّيْ لَتَأْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَلَآ أَصْغَرُ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ أَكْبَرُ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۙ (٣)

আসবে না। বল, না, আমার প্রতিপালকের শপথ! তোমাদের নিকট তা অবশ্য অবশ্যই আসবে। তিনি যাবতীয় অদৃশ্যের জ্ঞানী। তাঁর থেকে লুক্কায়িত নেই আকাশ ও পৃথিবীতে ক্ষুদ্রাতিক্ষুদ্র অনুকণা, না তার থেকে ছোট আর না তার থেকে বড় (কোনটাই নেই লুক্কায়িত)। সবই আছে (লাওহে মাহফুয নামক) এক সুস্পষ্ট কিতাবে।

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۭ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ (٤)

৪. যাতে তিনি প্রতিদান দিতে পারেন তাদেরকে যারা ঈমান আনে ও সৎকাজ করে, এদেরই জন্য আছে ক্ষমা ও সম্মানজনক রিয্ক।

وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ أَلِيْمٌ (٥)

৫. যারা আমার আয়াতকে ব্যর্থ করার চেষ্টা চালায় তাদেরই জন্য রয়েছে যন্ত্রণাদায়ক ভয়াবহ শাস্তি।

وَيَرَى الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ إِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ وَيَهْدِيْٓ إِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ (٦)

৬. যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তারা তোমার কাছে তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে যা অবতীর্ণ হয়েছে তাকে সত্য বলে জানে এবং (তারা আরো জানে যে) তা মহাপরাক্রমশালী ও প্রশংসিত (আল্লাহ)'র পথে পরিচালিত করে।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ إِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ۙ إِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۚ (٧)

৭. কাফিরগণ বলে– তোমাদেরকে কি আমরা এমন একজন লোকের সন্ধান দেব যে তোমাদেরকে খবর দেয় যে, তোমরা ছিন্ন ভিন্ন হয়ে গেলেও তোমাদেরকে নতুনভাবে সৃষ্টি করা হবে?

أَفْتَرٰى عَلَى اللهِ كَذِبًا أَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ (٨)

৮. সে আল্লাহ সম্পর্কে মিথ্যে বলে, না হয় সে পাগল। বস্তুতঃ যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারাই শাস্তি এবং সুদূর গুমরাহীতে পড়ে আছে।

أَفَلَمْ يَرَوْا إِلٰى مَا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ۭ إِنْ نَّشَأْ نَخْسِفْ بِهِمُ الْأَرْضَ أَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا مِّنَ السَّمَآءِ ۭ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۚ (٩)

৯. তারা কি আকাশ ও পৃথিবীতে তাদের সামনে ও পেছনে লক্ষ্য করে না? আমি ইচ্ছে করলে তাদেরকেসহ ভূমি ধ্বসিয়ে দেব অথবা আকাশের এক টুকরো তাদের উপর ফেলে দেব। প্রতিটি আল্লাহ অভিমুখী বান্দাহ্র জন্য এতে নিদর্শন রয়েছে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ؕ يٰجِبَالُ أَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَأَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۙ (١٠)

১০. আমি আমার পক্ষ থেকে দাউদের প্রতি অনুগ্রহ করেছিলাম। (আমি আদেশ করেছিলাম) হে পর্বতমালা! তোমরা দাউদের সঙ্গে আমার পবিত্রতা ঘোষণা কর আর পাখীদেরকেও (এ আদেশ করেছিলাম)। আমি লোহাকে তার জন্য নরম করেছিলাম।

أَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ؕ إِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (١١)

১১. যাতে তুমি পূর্ণ মাপের বর্ম তৈরি করতে পার, কড়াসমূহ সঠিকভাবে সংযুক্ত কর আর তোমরা সৎকর্ম কর। তোমরা যা কর আমি তার প্রত্যক্ষদর্শী।

وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَأَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ الْقِطْرِ ؕ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ بِإِذْنِ رَبِّهٖ ؕ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ أَمْرِنَا نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ (١٢)

১২. আর সুলাইমানের জন্য (আমি তার অধীন করে দিয়েছিলাম) বাতাসকে। তার সকালের অতিক্রমণ ছিল এক মাসের পথ আর সন্ধ্যার অতিক্রমণ ছিল এক মাসের পথ। আমি তার জন্য গলিত তামার ঝরণা প্রবাহিত করেছিলাম। কতক জ্বিন তার সম্মুখে কাজ করত তার পালনকর্তার অনুমতিক্রমে। তাদের যে কেউ আমার নির্দেশ অমান্য করে, তাকে আমি জ্বলন্ত আগুনের শাস্তি আস্বাদন করাব।

يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَآءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ رّٰسِيٰتٍ ؕ إِعْمَلُوْآ اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ؕ وَقَلِيْلٌ مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ (١٣)

১৩. তারা সুলাইমানের ইচ্ছে অনুযায়ী তার জন্য প্রাসাদ, ভাস্কর্য, হাউযের ন্যায় বৃহদাকার পাত্র এবং চুল্লির উপর স্থাপিত বিশালাকায় ডেগ নির্মাণ করত। (আমি বলেছিলাম) হে দাউদের সন্তানগণ! তোমরা কৃতজ্ঞচিত্তে কাজ করে যাও। আমার বান্দাদের অল্পই কৃতজ্ঞ।

فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ عَلٰى مَوْتِهٖٓ إِلَّا دَآبَّةُ الْأَرْضِ تَأْكُلُ مِنْسَأَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ أَنْ لَّوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ؕ (١٤)

১৪. অতঃপর আমি যখন সুলাইমানের মৃত্যু ঘটালাম, তখন ঘুণে পোকাই জিন্নদেরকে তার মৃত্যু সম্পর্কে অবহিত করল, তারা (ধীরে ধীরে) সুলাইমানের লাঠি খেয়ে যাচ্ছিল। যখন সে পড়ে গেল তখন জ্বিন্নেরা বুঝতে পারল যে, তারা (নিজেরা) যদি অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে অবগত থাকত তাহলে তাদেরকে লাঞ্ছনাদায়ক শাস্তির মধ্যে পড়ে থাকতে হত না।

لَقَدْ كَانَ لِسَبَإٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ۬ؕ كُلُوْا مِنْ رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ (١٥)

১৫. সাবার অধিবাসীদের জন্য তাদের বাসভূমিতে একটা নিদর্শন ছিল– দু'টো বাগান; একটা ডানে, একটা বামে। (তাদেরকে বলেছিলাম) তোমাদের প্রতিপালক প্রদত্ত রিয্ক ভোগ কর আর তাঁর প্রতি কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর। সুখ-শান্তির শহর আর ক্ষমাশীল পালনকর্তা।

فَأَعْرَضُوْا فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ أُكُلٍ خَمْطٍ وَّأَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ (١٦)

১৬. কিন্তু তারা (আল্লাহ হতে) মুখ ফিরিয়ে নিল। কাজেই আমি তাদের বিরুদ্ধে পাঠালাম বাঁধ-ভাঙ্গা বন্যা, আর আমি তাদের বাগান দু'টিকে পরিবর্তিত করে দিলাম এমন দু'টি বাগানে যাতে জন্মিত বিস্বাদ ফল, ঝাউগাছ আর কিছু কুল গাছ।

ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ؕ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ إِلَّا الْكَفُوْرَ (١٧)

১৭. অকৃতজ্ঞতাভরে তাদের সত্য প্রত্যাখ্যান করার জন্য আমি তাদেরকে এ শাস্তি দিয়েছিলাম। আমি অকৃতজ্ঞদের ছাড়া এমন শাস্তি কাউকে দেই না।

وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا السَّيْرَ ؕ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَأَيَّامًا اٰمِنِيْنَ (١٨)

১৮. তাদের এবং যে সব জনপদের প্রতি আমি অনুগ্রহ বর্ষণ করেছিলাম সেগুলোর মাঝে অনেক দৃশ্যমান জনপদ স্থাপন করে দিয়েছিলাম এবং ওগুলোর মাঝে সমান সমান দূরত্বে সফর মনযিল করে দিয়েছিলাম। (আর তাদেরকে বলেছিলাম) তোমরা এ সব জনপদে রাতে আর দিনে নিরাপদে ভ্রমণ কর।

فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ أَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا أَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ أَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ كُلَّ مُمَزَّقٍ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ (١٩)

১৯. কিন্তু তারা বলল– হে আমাদের পালনকর্তা! আমাদের সফর-মঞ্জিলগুলোর মাঝে ব্যবধান বাড়িয়ে দাও। তারা নিজেদের প্রতি যুল্ম করেছিল। কাজেই আমি তাদেরকে কাহিনী বানিয়ে ছাড়লাম (যে কাহিনী শোনানো হয়) আর তাদেরকে ছিন্ন ভিন্ন করে দিলাম। এতে প্রত্যেক ধৈর্যশীল কৃতজ্ঞ ব্যক্তির জন্য নিদর্শন রয়েছে।

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيْسُ ظَنَّهٗ فَاتَّبَعُوْهُ إِلَّا فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ (٢٠)

২০. তাদের ব্যাপারে ইবলীস তার ধারণা সত্য প্রমাণিত করল (যে ধারণা ইবলীস আল্লাহর নিকট ব্যক্ত করেছিল যে, অল্প সংখ্যক ব্যতীত সে মানুষদেরকে নিজের বশীভূত করে ছাড়বে)। ফলে মু'মিনদের একটি দল ছাড়া তারা সবাই তার অনুসরণ করল।

وَمَا كَانَ لَهٗ عَلَيْهِمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ

২১. তাদের উপর শয়ত্বানের কোন ক্ষমতা ছিল না, তবে কে আখিরাতে বিশ্বাস করে আর কে

مَنْ يُّؤْمِنُ بِالْاٰخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِيْ شَكٍّ ؕ وَرَبُّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ حَفِيْظٌ ع (٢١)

তাতে সন্দেহ করে, তা প্রকাশ করাই ছিল আমার উদ্দেশ্য। তোমার প্রতিপালক সকল বিষয়ে হিফাযাতকারী।

قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ج لَا يَمْلِكُوْنَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيْهِمَا مِنْ شِرْكٍ وَّمَا لَهٗ مِنْهُمْ مِّنْ ظَهِيْرٍ (٢٢)

২২. বল, আল্লাহ্‌র পরিবর্তে তোমরা যাদেরকে (ইলাহ) মনে করতে তাদেরকে ডাক। তারা আসমান ও যমীনে অণু পরিমাণও কোন কিছুর মালিক নয়। এ দু'য়ে তাদের এতটুকু অংশ নেই, আর তাদের কেউ আল্লাহ্‌র সাহায্যকারীও নয়।

وَلَا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ عِنْدَهٗٓ إِلَّا لِمَنْ أَذِنَ لَهٗ ؕ حَتّٰٓى إِذَا فُزِّعَ عَنْ قُلُوْبِهِمْ قَالُوْا مَاذَا لا قَالَ رَبُّكُمْ ؕ قَالُوا الْحَقَّ ج وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ (٢٣)

২৩. তাঁর কাছে সুপারিশ কোন কাজে আসবে না, তবে তাদের ব্যতীত যাদেরকে তিনি অনুমতি দেবেন। অতঃপর তাদের (অর্থাৎ আল্লাহ্‌র নৈকট্যলাভকারী ফেরেশতার কিংবা অন্যের জন্য সুপারিশ করার অনুমতিপ্রাপ্তদের) অন্তর থেকে যখন ভয় দূর হবে তখন তারা পরস্পর জিজ্ঞেস করবে– তোমাদের পালনকর্তা কী নির্দেশ দিলেন? তারা বলবে- যা সত্য ও ন্যায় (তার নির্দেশই তিনি দিয়েছেন), তিনি সর্বোচ্চ, সর্বশ্রেষ্ঠ।

قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ قُلِ اللّٰهُ لا وَإِنَّآ أَوْ إِيَّاكُمْ لَعَلٰى هُدًى أَوْ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٢٤)

২৪. বল– আসমান ও যমীন হতে কে তোমাদেরকে রিয্‌ক দান করেন? বল– আল্লাহ্। হয় আমরা, না হয় তোমরা অবশ্যই সৎপথে পরিচালিত অথবা স্পষ্ট গুমরাহিতে পতিত।

২৩। 'ইকরিমাহ (রহঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আবূ হুরাইরাহ (রাঃ)-কে বলতে শুনেছি, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা যখন আকাশে কোন ফায়সালা করেন তখন মালায়িকাহ আল্লাহ্‌র নির্দেশের প্রতি অতি নম্রভাবে তাদের ডানা ঝাড়তে থাকে; যেন মসৃণ পাথরের উপর শিকলের আওয়াজ। যখন তাদের মনের ভয়-ভীতি দূর হয় তারা (একে অপরকে) জিজ্ঞেস করে, তোমাদের প্রতিপালক কী বলেছেন? তারা বলেন, তিনি যা বলেছেন, সত্যই বলেছেন। তিনি মহান উচ্চ। যে সময়ে লুকোচুরিকারী (শয়ত্বান) তা শোনে, আর লুকোচুরিকারী এরূপ একের ওপর এক। সুফ্ইয়ান তাঁর হাত উপরে উঠিয়ে আঙ্গুলগুলো ফাঁক করে দেখান। তারপর শয়ত্বান কথাগুলো শুনে নেয় এবং প্রথমজন তার নিচের জনকে এবং সে তার নিচের জনকে জানিয়ে দেয়। এমনিভাবে এ খবর দুনিয়ার জাদুকর ও জ্যোতিষের কাছে পৌঁছে দেয়। কোন কোন সময় কথা পৌঁছানোর আগে তার উপর অগ্নিশিখা নিক্ষিপ্ত হয় আবার অগ্নিশিখা নিক্ষিপ্ত হওয়ার আগে সে কথা পৌঁছিয়ে দেয় এবং এর সাথে শত মিথ্যা মিশিয়ে বলে। এরপর লোকেরা বলাবলি করে সে কি অমুক দিন অমুক অমুক কথা আমাদের বলেনি? এবং সেই কথা যা আসমান থেকে শুনে এসেছে তার জন্য সব কথা সত্য বলে মনে করে। –বুখারী ৪৮০০ [৪৭০১; তিরমিযী ৩২২৩, আবূ দাঊদ ২৯৮৯, ইবনু মাজাহ ১৯৪]

قُلْ لَّا تُسْأَلُوْنَ عَمَّآ أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (٢٥)

২৫. বল- আমাদের অপরাধের জন্য তোমরা জিজ্ঞাসিত হবে না, আর তোমরা যা কর তার জন্য আমাদেরকে জবাবদিহি করতে হবে না।

قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ ط وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيْمُ (٢٦)

২৬. বল- আমাদের পালনকর্তা আমাদেরকে একত্রিত করবেন অবশেষে তিনি আমাদের মাঝে সত্য ও ন্যায়সঙ্গতভাবে ফয়সালা করবেন। তিনি সর্বশ্রেষ্ঠ ফয়সালাকারী, সর্বজ্ঞাতা।

قُلْ أَرُوْنِيَ الَّذِيْنَ أَلْحَقْتُمْ بِهٖ شُرَكَآءَ كَلَّا ط بَلْ هُوَ اللهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٢٧)

২৭. বল- তোমরা আমাকে (তাদেরকে) দেখাও যাদেরকে তোমরা তাঁর অংশীদার জুড়ে দিয়েছ। কক্ষনো (দেখাতে পারবে) না, বরং তিনি আল্লাহ, মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

وَمَآ أَرْسَلْنٰكَ إِلَّا كَآفَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (٢٨)

২৮. আমি তোমাকে সমগ্র মানবমণ্ডলীর জন্য সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে প্রেরণ করেছি, কিন্তু অধিকাংশ মানুষ জানে না।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٢٩)

২৯. তারা বলে- তুমি যদি সত্যবাদী হও তাহলে বল, (তোমার শুনানো) ও'য়াদা কখন বাস্তবায়িত হবে?

قُلْ لَّكُمْ مِّيْعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُوْنَ عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ع (٣٠)

৩০. বল- তোমাদের জন্য আছে এক নির্ধারিত দিন যা তোমরা এক মুহূর্তকালের জন্য বিলম্বিত করতে পারবে না, আর ত্বরান্বিত করতেও পারবে না।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ط وَلَوْ تَرٰٓى إِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ج صلے يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ إِلٰى بَعْضِ نِالْقَوْلَ ج يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ أَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ (٣١)

৩১. কাফিরগণ বলে- আমরা এ কুরআনে কক্ষনো বিশ্বাস করব না, আর তার আগের কিতাবগুলোতেও না। তুমি যদি দেখতে! যখন যালিমদেরকে তাদের প্রতিপালকের সম্মুখে দাঁড় করানো হবে, তখন তারা পরস্পর বাদানুবাদ করবে। যাদেরকে দুর্বল ক'রে রাখা হয়েছিল তারা দাম্ভিকদেরকে বলবে- তোমরা না থাকলে আমরা অবশ্যই মু'মিন হতাম।

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا أَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ إِذْ جَآءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ (٣٢)

৩২. যাদেরকে দুর্বল ক'রে রাখা হয়েছিল দাম্ভিকরা তাদেরকে বলবে- তোমাদের কাছে সত্য পথের দিশা আসার পর আমরা কি তোমাদেরকে তাথেকে বাধা দিয়েছিলাম? বরং তোমরা নিজেরাই ছিলে অপরাধী।

وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ إِذْ تَأْمُرُوْنَنَآ أَنْ نَّكْفُرَ بِاللهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ أَنْدَادًا ط وَأَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَأَوُا الْعَذَابَ ط وَجَعَلْنَا الْأَغْلٰلَ فِيْٓ أَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ط هَلْ يُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٣٣)

৩৩. যাদেরকে দুর্বল ক'রে রাখা হয়েছিল তারা দাম্ভিকদের বলবে– তোমরাই তো বরং দিন-রাত চক্রান্ত করতে। তোমরা আমাদেরকে নির্দেশ দিতে যাতে আমরা আল্লাহ্‌কে অস্বীকার করি আর তাঁর সমকক্ষ স্থির করি। যখন তারা শাস্তি দেখবে তখন মনের অনুতাপ মনেই লুকিয়ে রাখবে, আর আমি কাফিরদের গলায় শৃঙ্খল পরিয়ে দেব। তারা যা (দুনিয়াতে) করত তার প্রতিফলই তাদেরকে দেয়া হবে।

وَمَآ أَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ (٣٤)

৩৪. যখনই কোন জনপদে আমি সতর্ককারী পাঠিয়েছি, সেখানকার বিত্তবানরা বলেছে তোমাদেরকে যা দিয়ে পাঠানো হয়েছে আমরা তা অস্বীকার করছি।

وَقَالُوْا نَحْنُ أَكْثَرُ أَمْوَالًا وَّأَوْلَادًا لا وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ (٣٥)

৩৫. তারা বলত– ধন-মাল আর বাল-বাচ্চায় আমরা বেশি, আমরা শাস্তিপ্রাপ্ত হতে পারি না।

قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ع (٣٦)

৩৬. বল– আমার প্রতিপালক যার জন্য চান রিয্‌ক প্রশস্ত করেন বা সীমিত করেন, কিন্তু (এর তাৎপর্য) অধিকাংশ লোকই জানে না।

وَمَآ أَمْوَالُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى إِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا ز فَأُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَزَآءُ الضِّعْفِ بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ (٣٧)

৩৭. ওটা না তোমাদের মাল-ধন, আর না তোমাদের সন্তান-সন্ততি যা তোমাদেরকে আমার নিকটবর্তী করবে। তবে যে কেউ ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তাদেরই জন্য আছে বহুগুণ প্রতিদান তাদের কাজের জন্য। তারা সুউচ্চ প্রাসাদে নিরাপদে থাকবে।

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ أُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ (٣٨)

৩৮. যারা আমার আয়াতসমূহকে ব্যর্থ করার জন্য চেষ্টা চালায়, তাদেরকে 'আযাবে উপস্থিত করা হবে।

قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ط وَمَآ أَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ج وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (٣٩)

৩৯. বল– আমার প্রতিপালকই তাঁর বান্দাহদের মধ্যে যার জন্য ইচ্ছে রিয্‌ক প্রশস্ত করেন, আর যার জন্য ইচ্ছে সীমিত করেন। তোমরা যা কিছু (সৎ কাজে) ব্যয় কর, তিনি তার বিনিময় দেবেন। তিনিই সর্বশ্রেষ্ঠ রিয্‌কদাতা।

৪০. যেদিন তিনি তাদের সব্বাইকে একত্রিত করবেন, অতঃপর ফেরেশতাদেরকে বলবে–ওরা কি একমাত্র তোমাদেরই পূজা করত?

৪১. ফেরেশতারা বলবে– পবিত্র মহান তুমি, তুমিই আমাদের অভিভাবক, তারা নয়। বরং তারা জিন্নদের পূজা করত; ওদের অধিকাংশই ওদের প্রতি বিশ্বাসী ছিল।

৪২. আজ তোমাদের একে অন্যের কোন লাভ বা ক্ষতি করতে পারবে না। যারা যুল্ম করেছিল তাদেরকে আমি বলব– তোমরা জাহান্নামের শাস্তি আস্বাদন কর যা তোমরা মিথ্যে বলে অস্বীকার করতে।

৪৩. তাদের সম্মুখে যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতসমূহ তিলাওয়াত করা হয় তখন তারা বলে– এটা তো এমন একজন মানুষ, যে তোমাদেরকে তোমাদের পূর্বপুরুষ যার 'ইবাদাত করত তাথেকে বাধা দিতে চায়। তারা আরো বলে যে, এটা মনগড়া মিথ্যে ছাড়া আর কিছুই নয়। সত্য যখন কাফিরদের নিকট আসে তখন তারা বলে– এটা তো সুস্পষ্ট যাদু।

৪৪. আমি তাদেরকে (অর্থাৎ মক্কার কুরায়শদের) কোন কিতাব দেইনি যা তারা পাঠ করত আর আমি তোমার পূর্বে তাদের কাছে কোন সতর্ককারীও পাঠাইনি।

৪৫. তাদের পূর্ববর্তীরাও (সত্যকে) মিথ্যে বলে অস্বীকার করেছিল। আমি তাদেরকে যা দিয়েছিলাম, এরা তার এক দশমাংশও পায়নি। তবুও ওরা যখন আমার রসূলগণকে অস্বীকার করেছিল তখন কত ভয়ংকর হয়েছিল আমার শাস্তি।

৪৬. বল– আমি তোমাদেরকে একটি বিষয়ে নসীহত করছিঃ তোমরা আল্লাহ্‌র উদ্দেশে দু', দু'জন বা এক একজন করে দাঁড়াও, অতঃপর চিন্তা করে দেখ, তোমাদের সঙ্গী উন্মাদ নয়। সে তো সামনের কঠিন শাস্তি সম্পর্কে একজন

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلَآئِكَةِ أَهٰٓؤُلَآءِ إِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ (٤٠)

قَالُوْا سُبْحَانَكَ أَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ج بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ج أَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ (٤١)

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ط وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ (٤٢)

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ إِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ أَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ج وَقَالُوْا مَا هٰذَآ إِلَّآ إِفْكٌ مُّفْتَرًى ط وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ لا إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٤٣)

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ ط (٤٤)

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ لا وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ قف فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ع (٤٥)

قُلْ إِنَّمَآ أَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ج أَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا قف مَا بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ط إِنْ هُوَ إِلَّا نَذِيْرٌ

لَّكُمْ بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ (٤٦)

সতর্ককারী মাত্র।

قُلْ مَا سَأَلْتُكُمْ مِّنْ أَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ؕ إِنْ أَجْرِيَ إِلَّا عَلَى اللهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (٤٧)

৪৭. বল– আমি তোমাদের নিকট হতে কোন পারিশ্রমিক চাই না, বরং তা তোমাদেরই জন্য। আমার পুরস্কার আছে কেবল আল্লাহ্র কাছে। তিনি সকল বিষয়ে প্রত্যক্ষদর্শী।

قُلْ إِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ (٤٨)

৪৮. বল– আমার প্রতিপালক সত্য ছুঁড়ে দেন (অসত্যকে আঘাত করার জন্যে)। (যাবতীয়) অদৃশ্য সম্পর্কে তিনি পূর্ণরূপে অবগত।

قُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ وَمَا يُعِيْدُ (٤٩)

৪৯. বল– সত্য এসে গেছে, আর মিথ্যের নতুন করে আবির্ভাবও ঘটবে না, আর তার পুনরাবৃত্তিও হবে না।

قُلْ إِنْ ضَلَلْتُ فَإِنَّمَآ أَضِلُّ عَلٰى نَفْسِيْ ۚ وَإِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ إِلَيَّ رَبِّيْ ؕ إِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ (٥٠)

৫০. বল– আমি যদি গুমরাহ হই, তবে নিজের ক্ষতি করতেই গুমরাহ হব। আর আমি যদি সৎ পথে চলি, তবে আমার প্রতিপালক যে আমার প্রতি ওয়াহী করেন তার বদৌলতেই। তিনি সর্বশ্রোতা, (সদা) সন্নিকটবর্তী। (আহ্বানকারীর ডাকে সাড়া দেন।)

وَلَوْ تَرٰى إِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَأُخِذُوْا مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ ۙ (٥١)

৫১. তুমি যদি দেখতে! যখন তারা ভয়ে কম্পমান হয়ে পড়বে, কিন্তু তারা কোন অব্যাহতি পাবে না। একেবারে কাছের জায়গা থেকেই তাদেরকে ধরে ফেলা হবে।

وَقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَأَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ مِنْ مَّكَانٍ ۢ بَعِيْدٍ ۚ (٥٢)

৫২. আর তারা বলবে– (এখন) আমরা ঈমান আনলাম। কিন্তু (ঈমান যেখানে আনতে হত সে স্থান থেকে তারা তো বহু দূরে এসে পড়েছে) এত দূরের জায়গা থেকে তারা ঈমানের নাগাল পাবে কীভাবে?

৪৬ ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) একদিন সাফা পাহাড়ে আরোহণ করে 'ইয়া সাবাহাহ' বলে সবাইকে ডাক দিলেন। কুরাইশগণ তাঁর কাছে জমায়েত হয়ে বলল, তোমার ব্যাপার কী? তিনি বললেন, তোমরা বল তো, আমি যদি তোমাদের বলি যে, শত্রুবাহিনী সকাল বা সন্ধ্যায় তোমাদের উপর আক্রমণ করতে প্রস্তুত, তবে কি তোমরা আমার এ কথা বিশ্বাস করবে? তারা বলল, নিশ্চয়ই। তিনি বললেন, আমি তোমাদের জন্য এক আসন্ন কঠিন শাস্তি সম্পর্কে ভয় প্রদর্শন করছি। এ কথা শুনে আবূ লাহাব বলল, তোমার ধ্বংস হোক। এই জন্যই কি আমাদেরকে জমায়েত করেছিলে? তখন আল্লাহ্ নাযিল করেনঃ تَبَّتْ يَدَآ أَبِيْ لَهَبٍ "আবূ লাহাবের হাত দু'টো ধ্বংস হোক।" –বুখারী ৪৮০১ [১৩৯৪; মুসলিম ২০৮, তিরমিযী ৩৩৬৩, আহমাদ ২৫৪০, ২৭৯৮]

وَقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ج وَيَقْذِفُوْنَ بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ (٥٣)

৫৩. তারা তো আগেই তা প্রত্যাখ্যান করেছিল। তারা অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে বহু দূর থেকে (আন্দাজ অনুমানে) কথা ছুঁড়ে দিত।

وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا فُعِلَ بِأَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ ع (٥٤)

৫৪. তাদের এবং তাদের কামনা-বাসনার মাঝে রেখে দেয়া হয়েছে এক প্রাচীর। তাদের মতের ও পথের লোকেদের ক্ষেত্রে পূর্বেও এমনটিই করা হয়েছিল। তারা ছিল সংশয়পূর্ণ সন্দেহে পতিত।

سُوْرَةُ فَاطِرٍ

৩৫. সূরাহ ফাত্বির

আয়াতঃ ৪৫, রুকূ'ঃ ৫, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ جَاعِلِ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا أُولِيْٓ أَجْنِحَةٍ مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ط يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ مَا يَشَآءُ ط إِنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١)

১. যাবতীয় প্রশংসা আকাশমণ্ডলী ও পৃথিবীর সৃষ্টিকর্তা আল্লাহ্র জন্য। তিনি দূত মনোনীত করেন ফেরেশতামন্ডলীকে, যারা দুই দুই বা তিন তিন বা চার চার ডানা বিশিষ্ট। তিনি সৃষ্টিতে যা ইচ্ছে বৃদ্ধি করেন। আল্লাহ সকল বিষয়ের উপর সর্বশক্তিমান।

مَا يَفْتَحِ اللهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا مُمْسِكَ لَهَا ج وَمَا يُمْسِكْ لا فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٢)

২. আল্লাহ মানুষের জন্য তাঁর অনুগ্রহ থেকে যা খুলে দেন তা নিবারণ করার কেউ নেই। আর তিনি যা বারিত করেন অতঃপর কেউ তা প্রেরণ করতে পারে না। তিনি মহাপরাক্রমশালী, মহাপ্রজ্ঞাময়।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللهِ عَلَيْكُمْ ط هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ ط لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ز فَأَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ (٣)

৩. হে মানুষ! তোমরা তোমাদের প্রতি আল্লাহ্র অনুগ্রহের কথা স্মরণ কর। তিনি ছাড়া কোন সৃষ্টিকর্তা আছে কি যে তোমাদেরকে আকাশ ও যমীন থেকে রিয্ক দান করে? তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তাহলে কীভাবে তোমরা বিপথগামী হচ্ছ?

وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ

৪. তারা যদি তোমাকে মিথ্যে ব'লে অস্বীকার করে, তাহলে (তাদের এ আচরণ তো কোন নতুন

قَبْلِكَ ط وَإِلَى اللهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ (٤)

বিষয় নয়) তোমার পূর্বেও রসূলদেরকে মিথ্যে ব'লে অস্বীকার করা হয়েছে। (যে যা-ই কিছু করুক না কেন) সমস্ত কার্যকলাপ (হিসাব নিকাশের জন্য) আল্লাহ্‌র কাছে ফিরে যাবে।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا قف وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللهِ الْغَرُوْرُ (٥)

৫. হে মানুষ! আল্লাহ্‌র ওয়া'দা সত্য, কাজেই পার্থিব জীবন কিছুতেই যেন তোমাদেরকে প্রতারিত না করে; আর সেই প্রধান প্রতারক (শয়ত্বান) যেন কিছুতেই তোমাদেরকে আল্লাহ সম্পর্কে প্রতারিত না করে।

إِنَّ الشَّيْطَانَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ط إِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ أَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ط (٦)

৬. শয়ত্বান তোমাদের শত্রু, কাজেই তাকে শত্রু হিসেবে গ্রহণ কর। সে কেবল তার দলবলকে ডাকে, যাতে তারা জ্বলন্ত অগ্নির সঙ্গী হয়।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ط ٥ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ ع (٧)

৭. যারা কুফুরী করে তাদের জন্য রয়েছে কঠিন শাস্তি। আর যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তাদের জন্য রয়েছে ক্ষমা ও মহা প্রতিফল।

أَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ط فَإِنَّ اللهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ز صلے فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ حَسَرٰتٍ ط إِنَّ اللهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ (٨)

৮. যাকে তার মন্দ কর্ম শোভনীয় ক'রে দেখানো হয়, অতঃপর সে সেটাকে উত্তম মনে করে (সে কি তার সমান, যে সৎ পথে পরিচালিত?) আল্লাহ য়াকে ইচ্ছে বিপথগামী করেন, আর যাকে ইচ্ছে সঠিক পথে পরিচালিত করেন। কাজেই তাদের জন্য আক্ষেপ ক'রে, তুমি তোমার জীবনকে ধ্বংস হতে দিও না। তারা যা করে আল্লাহ তা খুব ভালভাবেই জানেন।

وَاللهُ الَّذِيْٓ أَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا فَسُقْنٰهُ إِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَأَحْيَيْنَا بِهِ الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ط كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ (٩)

৯. আল্লাহ, যিনি বায়ু প্রেরণ করেন, অতঃপর তা মেঘ সঞ্চার করে, অতঃপর আমি তা নির্জীব ভূখণ্ডের দিকে পরিচালিত করি। অতঃপর আমি তা দিয়ে মৃত্তিকাকে তার মৃত্যুর পর আবার সঞ্জীবিত করি। এভাবেই (ঘটবে) পুনরুত্থান।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ط إِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ

১০. কেউ সম্মান-সুখ্যাতি চাইলে (আল্লাহ্‌কে উপেক্ষা করে তা লাভ করা যাবে না), সে জেনে নিক যাবতীয় সম্মান-সুখ্যাতির অধিকারী হলেন

الصَّالِحُ يَرْفَعُهُ ط وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ط وَمَكْرُ أُولٰٓئِكَ هُوَ يَبُوْرُ (١٠)

আল্লাহ। তাঁরই দিকে উত্থিত হয় পবিত্র কথাগুলো আর সৎকাজ সেগুলোকে উচ্চে তুলে ধরে। যারা মন্দ কাজের চক্রান্ত করে তাদের জন্য আছে কঠিন শাস্তি। তাদের চক্রান্ত নিষ্ফল হবে।

وَاللهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ جَعَلَكُمْ أَزْوَاجًا ط وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثٰى وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهٖ ط وَمَا يُعَمَّرُ مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ط إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرٌ (١١)

১১. আল্লাহ তোমাদেরকে মাটি থেকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর শুক্র-বিন্দু হতে, অতঃপর তিনি তোমাদেরকে করেছেন (স্বামী-স্ত্রীর) জোড়া। তাঁর অবগতি ব্যতীত কোন নারী গর্ভ ধারণ করে না বা (তার বোঝা) হালকা করে না। কোন দীর্ঘায়ুর আয়ু দীর্ঘ করা হয় না, আর তার আয়ু কমানো হয় না কিতাবের লিখন ছাড়া। এটা (অর্থাৎ এ সবের হিসাব রাখা ও তত্ত্বাবধান করা) আল্লাহ্‌র জন্য সহজ।

وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ق صلے هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ سَآئِغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ أُجَاجٌ ط وَمِنْ كُلٍّ تَأْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ج وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (١٢)

১২. দু'টি দরিয়াও এক রকম নয়। একটি সুমিষ্ট, সুস্বাদু, সুপেয়; অন্যটি লবণাক্ত, বিস্বাদ। তথাপি তোমরা সকল (প্রকার পানি) থেকে তাজা গোশত আহার কর আর বের কর অলংকার– পরিধান করার জন্যে। তোমরা দেখতে পাও নৌযানগুলো ঢেউয়ের বুক চিরে চলাচল করে যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ খোঁজ করতে পার, আর যাতে তোমরা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ কর।

يُوْلِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ لا وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ز صلے كُلٌّ يَّجْرِيْ لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ط ذٰلِكُمُ اللهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ط وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ط (١٣)

১৩. তিনি রাতকে দিনে ঢুকিয়ে দেন, আর দিনকে রাতে ঢুকিয়ে দেন। তিনি সূর্য ও চন্দ্রকে তাঁর নিয়ন্ত্রণের অধীনে (কাজে নিয়োজিত) রেখেছেন। প্রত্যেকেই নির্ধারিত সময় অনুসারে গতিশীল আছে। এই হলেন আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক। রাজত্ব তাঁরই। তোমরা তাঁর পরিবর্তে যাদেরকে ডাক তারা তো খেজুরের আঁটি সংলগ্ন (অত্যন্ত পাতলা ও দুর্বল) আবরণেরও মালিক নয়।

إِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَآءَكُمْ ج وَلَوْ سَمِعُوْا مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ط وَيَوْمَ

১৪. তোমরা তাদেরকে ডাকলে তারা তোমাদের ডাক শুনবে না আর যদি শুনেও, তবুও তোমাদের (ডাকে) সাড়া দিতে পারবে না। আর তোমরা যে তাদেরকে (আল্লাহ্‌র) অংশীদার গণ্য করতে,

الْقِيَامَةِ يَكْفُرُوْنَ بِشِرْكِكُمْ ؕ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ع (١٤)

ক্বিয়ামতের দিন তা তারা অস্বীকার করবে। কেউই তোমাদেরকে সর্বজ্ঞ আল্লাহর মত খবর জানাতে পারবে না।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ أَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ إِلَى اللّٰهِ ج وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (١٥)

১৫. হে মানুষ! তোমরাই আল্লাহর মুখাপেক্ষী, আর আল্লাহ তিনি তো অভাবহীন, প্রশংসিত।

إِنْ يَّشَأْ يُذْهِبْكُمْ وَيَأْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ج (١٦)

১৬. তিনি ইচ্ছে করলে তোমাদেরকে বিলুপ্ত করতে পারেন, আর এক নতুন সৃষ্টি আনতে পারেন।

وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ (١٧)

১৭. এটা আল্লাহর পক্ষে কঠিন নয়।

وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ط وَإِنْ تَدْعُ مُثْقَلَةٌ إِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ط إِنَّمَا تُنْذِرُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ ط وَمَنْ تَزَكّٰى فَإِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ ط وَإِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ (١٨)

১৮. কোন বহনকারী অন্যের (পাপের) বোঝা বইবে না। কেউ যদি তার গুরুভার বয়ে দেয়ার জন্য অন্যকে ডাকে তবে তার কিছুই বয়ে দেয়া হবে না– নিকটাত্মীয় হলেও। তুমি কেবল তাদেরকেই সতর্ক করতে পার, যারা না দেখেই তাদের প্রতিপালককে ভয় করে আর নামায প্রতিষ্ঠা করে। যে কেউ নিজেকে পরিশুদ্ধ করে সে তো পরিশুদ্ধ করে নিজের কল্যাণেই। আল্লাহর দিকেই (সকলের) প্রত্যাবর্তন।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ لا (١٩)

১৯. অন্ধ আর চোখওয়ালা সমান নয়।

وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ لا (٢٠)

২০. আর অন্ধকার ও আলোও (সমান নয়)।

وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ج (٢١)

২১. আর ছায়া ও রোদও (সমান নয়)।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَحْيَآءُ وَلَا الْأَمْوَاتُ ط إِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ج وَمَآ أَنْتَ بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِي الْقُبُوْرِ (٢٢)

২২. আর জীবিত ও মৃতও সমান নয়। আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন শোনান; যারা ক্ববরে আছে তুমি তাদেরকে শোনাতে পার না।

إِنْ أَنْتَ إِلَّا نَذِيْرٌ (٢٣)

২৩. তুমি তো কেবল একজন সতর্ককারী।

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ط وَإِنْ مِّنْ أُمَّةٍ إِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ (٢٤)

২৪. আমি তোমাকে সত্যসহ পাঠিয়েছি সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে। এমন কোন সম্প্রদায় নেই যাতে সতর্ককারী আসেনি।

وَإِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ج جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ (٢٥)

২৫. তারা যদি তোমাকে মিথ্যে ব'লে অস্বীকার করে, (তাহলে জেনে রেখ, এটা কোন নতুন ব্যাপার নয়, কারণ) তাদের পূর্ববর্তীরাও (নবী-রসূলদেরকে) মিথ্যে ব'লে অস্বীকার করেছিল। তাদের কাছে তাদের রসূলগণ সুস্পষ্ট নিদর্শন, লিখিত দলীল ও আলোকপ্রদ কিতাব নিয়ে এসেছিল।

ثُمَّ أَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ع (٢٦)

২৬. যারা কুফরী করেছিল, অতঃপর আমি তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম। কী (ভয়ংকর) ছিল আমার শাস্তি!

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ج فَأَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهَا ط وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ مُّخْتَلِفٌ أَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ (٢٧)

২৭. তুমি কি দেখ না যে, আল্লাহ আকাশ হতে পানি বর্ষণ করেন, অতঃপর আমি তা দিয়ে রং বেরংয়ের ফলমূল উদ্গত করি। পাহাড়ের মধ্যে আছে বিভিন্ন বর্ণের গিরিপথ- সাদা, লাল আর নিকষ কালো।

وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْأَنْعَامِ مُخْتَلِفٌ أَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ط إِنَّمَا يَخْشَى اللهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ط إِنَّ اللهَ عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ (٢٨)

২৮. তেমনিভাবে মানুষ, জীব-জন্তু আর গৃহপালিত পশুদের মধ্যেও রয়েছে তাদের বিভিন্ন রং। আল্লাহ্‌র বান্দাহ্‌দের মধ্যে তারাই তাঁকে ভয় করে যারা জ্ঞানী। আল্লাহ মহা ক্ষমতাশালী, পরম দয়ালু।

إِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللهِ وَأَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَأَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ لا (٢٩)

২৯. যারা আল্লাহ্‌র কিতাব তিলাওয়াত করে, নামায প্রতিষ্ঠা করে আর আল্লাহ তাদেরকে যে রিয্‌ক দিয়েছেন তাথেকে গোপনে ও প্রকাশ্যে ব্যয় করে, তারা এমন এক ব্যবসায়ের আশা করে যাতে কক্ষনো লোকসান হবে না।

لِيُوَفِّيَهُمْ أُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ط إِنَّهٗ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ (٣٠)

৩০. কারণ, তিনি তাদেরকে তাদের প্রতিফল পূর্ণমাত্রায় দান করবেন এবং নিজ অনুগ্রহে আরো বেশি দিবেন। তিনি অতি ক্ষমাশীল, (ভাল কাজের) বড়ই মর্যাদাদানকারী।

وَالَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ط إِنَّ اللهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيْرٌ بَصِيْرٌ (٣١)

৩১. আমি যে কিতাবটি হতে তোমার প্রতি ওয়াহী করেছি তা সত্য, পূর্ববর্তী কিতাবের সত্যায়নকারী। আল্লাহ তাঁর বান্দাহদের সম্পর্কে অবশ্যই সব খবর রাখেন এবং সব দেখেন।

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِيْنَ اصْطَفَيْنَا مِنْ عِبَادِنَا ج فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ج وَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ج وَمِنْهُمْ سَابِقٌ بِالْخَيْرٰتِ بِإِذْنِ اللهِ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ط (٣٢)

৩২. অতঃপর সেই কিতাবটির উত্তরাধিকারী করেছি আমি আমার বান্দাহদের মধ্যে হতে যাদেরকে বেছে নিয়েছি। অতঃপর তাদের কতক নিজেদের প্রতি অত্যাচার করেছে, আর কতক মধ্যপন্থী। তাদের কতক আল্লাহ্‌র নির্দেশে সৎ কাজে অগ্রণী। এটাই (মানুষের প্রতি আল্লাহ্‌র) খুবই বড় দয়া।

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا يُحَلَّوْنَ فِيْهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ج وَلِبَاسُهُمْ فِيْهَا حَرِيْرٌ (٣٣)

৩৩. স্থায়ী জান্নাতে তারা প্রবেশ করবে। যেখানে তাদেরকে স্বর্ণ ও মুক্তার কঙ্কণে অলঙ্কৃত করা হবে। যেখানে তাদের পোশাক হবে রেশমের।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ أَذْهَبَ عَنَّا الْحَزَنَ ط إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُوْرٌ شَكُوْرٌ لا (٣٤)

৩৪. আর তারা বলবে– যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্‌র যিনি আমাদের দুঃখ কষ্ট দূর করে দিয়েছেন। আমাদের প্রতিপালক অবশ্যই পরম ক্ষমাশীল, (ভাল কাজের) বড়ই মর্যাদাদানকারী।

الَّذِيْٓ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِنْ فَضْلِهٖ ج لَا يَمَسُّنَا فِيْهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيْهَا لُغُوْبٌ (٣٥)

৩৫. যিনি স্বীয় অনুগ্রহে আমাদেরকে স্থায়ী আবাস দান করেছেন। সেখানে ক্লেশ আমাদেরকে স্পর্শ করে না, ক্লান্তিও আমাদেরকে স্পর্শ করে না।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ج لَا يُقْضٰى عَلَيْهِمْ فَيَمُوْتُوْا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمْ مِّنْ عَذَابِهَا ط كَذٰلِكَ نَجْزِيْ كُلَّ كَفُوْرٍ ج (٣٦)

৩৬. আর যারা কুফ্‌রী করে, তাদের জন্য আছে জাহান্নামের আগুন। তাদের জন্য কোন সময় নির্ধারণ করা হবে না যে, তারা (নির্ধারিত সময় আসলে) মরে যাবে, আর তাদের থেকে শাস্তিও কমানো হবে না। প্রত্যেক অকৃতজ্ঞকে আমি এভাবেই প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَهُمْ يَصْطَرِخُوْنَ فِيْهَا ج رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ط أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُمْ مَّا يَتَذَكَّرُ فِيْهِ مَنْ تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيْرُ ط فَذُوْقُوْا فَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ع (٣٧)

৩৭. সেখানে তারা চিৎকার করে বলবে– হে আমাদের পালনকর্তা! বের করুন আমাদেরকে, আমরা সৎকাজ করব, আমরা যে কাজ করতাম তা করব না। আমি কি তোমাদেরকে এতটা বয়স দেইনি যে, তখন কেউ নসীহত গ্রহণ করতে চাইলে নসীহত গ্রহণ করতে পারতে? আর তোমাদের কাছে সতর্ককারীও এসেছিল। কাজেই শাস্তি ভোগ কর, যালিমদের কোন সাহায্যকারী নেই।

إِنَّ اللهَ عَالِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٣٨)

৩৮. আল্লাহ আসমান যমীনের অদৃশ্য বিষয় সম্পর্কে অবগত। অন্তরে যা আছে সে সম্পর্কে তিনি বিশেষভাবে জ্ঞাত।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ ط فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ط وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ إِلَّا مَقْتًا ج وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ إِلَّا خَسَارًا (٣٩)

৩৯. তিনি তোমাদেরকে পৃথিবীতে (নিজের) প্রতিনিধি করেছেন। অতএব যে কুফুরী করবে তার কুফুরীর জন্য সে নিজেই দায়ী হবে। কাফিরদের কুফর তাদের প্রতিপালকের ঘৃণাই বৃদ্ধি করে। কাফিরদের কুফর তাদের ক্ষতিই বৃদ্ধি করে।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ ط أَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ج أَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰى بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ج بَلْ إِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا إِلَّا غُرُوْرًا (٤٠)

৪০. বল– তোমরা কি তোমাদের শরীকদেরকে দেখেছ আল্লাহ্র পরিবর্তে তোমরা যাদেরকে ডেকে থাক? তারা পৃথিবীতে কী সৃষ্টি করেছে তা আমাকে দেখাও; কিংবা আকাশমণ্ডলীতে তাদের কোন শরীকানা আছে কি? কিংবা আমি কি তাদেরকে কোন কিতাব দিয়েছি যাথেকে কোন সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর তারা আছে? বরং সীমালঙ্ঘনকারীরা একে অপরকে প্রতারণামূলক ওয়া'দা দিয়ে থাকে।

إِنَّ اللهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ أَنْ تَزُوْلَا ج وَلَئِنْ زَالَتَآ إِنْ أَمْسَكَهُمَا مِنْ أَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ط إِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا (٤١)

৪১. আল্লাহই আসমান ও যমীনকে স্থির রাখেন যাতে ও দু'টো টলে না যায়। ও দু'টো যদি টলে যায় তাহলে তিনি ছাড়া কে ও দু'টোকে স্থির রাখবে? তিনি পরম সহিষ্ণু, পরম ক্ষমাশীল।

وَأَقْسَمُوْا بِاللهِ جَهْدَ أَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ أَهْدٰى مِنْ إِحْدَى الْأُمَمِ ج فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ إِلَّا نُفُوْرًا لا (٤٢)

৪২. আর তারা (অর্থাৎ মক্কার মুশরিকরা) শক্তভাবে কসম খেয়ে বলত যে, তাদের কাছে সতর্ককারী আসলে তারা অন্য যে কোন সম্প্রদায়ের চেয়ে অবশ্য অবশ্যই সৎ পথের অধিক অনুসারী হয়ে যাবে। কিন্তু তাদের কাছে যখন সতর্ককারী আসল, তা বাড়িয়েই তুলল তাদের ঘৃণা,

اِسْتِكْبَارًا فِي الْأَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ط وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ إِلَّا بِأَهْلِهٖ ط فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّا سُنَّتَ الْأَوَّلِيْنَ ج فَلَنْ تَجِدَ

৪৩. যমীনে উদ্ধত আচরণ আর কু-চক্রান্ত। কু-চক্রান্ত তাকেই ঘিরে ধরবে যে তা করবে। তাহলে তারা কি তাদের পূর্ববর্তীদের উপর (আল্লাহ্র পক্ষ হতে) যে বিধান প্রয়োগ করা হয়েছে তারই অপেক্ষা করছে? তুমি আল্লাহ্র বিধানে কক্ষনো

Contents

لِسُنَّتِ اللهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللهِ تَحْوِيْلًا (٤٣)

কোন পরিবর্তন পাবে না। তুমি আল্লাহ্র বিধানে কক্ষনো কোন ব্যতিক্রম পাবে না।

أَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْآ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَمَا كَانَ اللهُ لِيُعْجِزَهُ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۗ إِنَّهُ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا (٤٤)

৪৪. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? তাহলে দেখত, তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণাম কী হয়েছিল। তারা তো শক্তিতে ছিল এদের চেয়েও শক্তিশালী। আসমান ও যমীনের কোন কিছুই আল্লাহকে অপারগ করতে পারে না। তিনি সর্বজ্ঞাতা, সকল শক্তির অধিকারী।

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ يُّؤَخِّرُهُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَإِذَا جَآءَ أَجَلُهُمْ فَإِنَّ اللهَ كَانَ بِعِبَادِهِ بَصِيْرًا ع (٤٥)

৪৫. আল্লাহ মানুষকে তার কৃতকর্মের জন্য পাকড়াও করতে চাইলে ভূপৃষ্ঠের একটি প্রাণীকেও রেহাই দিতেন না। কিন্তু তিনি তাদের জন্য একটা নির্ধারিত কাল পর্যন্ত সময় বিলম্বিত করেন। অতঃপর তাদের সে নির্ধারিত সময় যখন এসে যায়, (তখন আল্লাহ্র ফয়সালা কার্যকরী হতে এক মুহূর্তও বিলম্ব ঘটে না), কারণ আল্লাহ (প্রতিটি মুহূর্তে) তাঁর বান্দাহদের পর্যবেক্ষণকারী।

سُوْرَةُ يٰسٓ

৩৬. সূরাহ ইয়াসীন

আয়াতঃ ৮৩, রুকূ'ঃ ৫, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

يٰسٓ ج (١)

১. ইয়াসীন।

وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ ۙ (٢)

২. শপথ হিকমতপূর্ণ কুরআনের।

إِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۙ (٣)

৩. তুমি অবশ্যই রসূলগণের অন্তর্ভুক্ত।

عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۗ (٤)

৪. তুমি সরল সঠিক পথে প্রতিষ্ঠিত।

تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ ۙ (٥)

৫. (এ কুরআন) মহাপরাক্রমশালী পরম করুণাময় (আল্লাহ) হতে অবতীর্ণ।

لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ أُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ غَافِلُوْنَ (٦)

৬. যাতে তুমি সতর্ক করতে পার এমন এক সম্প্রদায়কে যাদের পিতৃপুরুষদেরকে সতর্ক করা হয়নি, কাজেই তারা (আল্লাহ্‌র নিদর্শন সম্পর্কে) উদাসীন।

لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى أَكْثَرِهِمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (٧)

৭. (জেনে বুঝে আল্লাহ্‌র অবাধ্য হওয়ার কারণে) তাদের অধিকাংশের উপর (তাদের অন্তঃকরণে সীল লাগিয়ে দেয়ার) বাণী অবধারিত হয়ে গেছে, কাজেই তারা ঈমান আনবে না।

إِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ أَغْلٰلًا فَهِيَ إِلَى الْأَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ (٨)

৮. আমি তাদের গলদেশে (তাদের জিদ ও অহমিকার) বেড়ি পরিয়ে দিয়েছি আর তা থুতনি পর্যন্ত (গিয়ে ঠেকেছে), কাজেই তারা মাথা খাড়া করে রেখেছে।

وَجَعَلْنَا مِنْ ۢبَيْنِ أَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ خَلْفِهِمْ سَدًّا فَأَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ (٩)

৯. তাদের সামনে আমি একটা (বাধার) প্রাচীর দাঁড় করিয়ে দিয়েছি, আর পেছনে একটা প্রাচীর, উপরন্তু তাদেরকে ঢেকে দিয়েছি; কাজেই তারা দেখতে পায় না।

وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَأَنْذَرْتَهُمْ أَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٠)

১০. তুমি তাদেরকে সতর্ক কর আর না কর, তাদের কাছে দু'টোই সমান, তারা ঈমান আনবে না।

إِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ ۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّأَجْرٍ كَرِيْمٍ (١١)

১১. তুমি তো সতর্ক কেবল তাকেই করতে পার যে লোক উপদেশ মেনে চলে আর দয়াময় (আল্লাহ)-কে না দেখেও ভয় করে। অতঃপর এদেরকে তুমি ক্ষমা ও সম্মানজনক পুরস্কারের সুসংবাদ দাও।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَاٰثَارَهُمْ ۖ وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ إِمَامٍ مُّبِيْنٍ ع (١٢)

১২. আমিই মৃতকে জীবিত করি, আর লিখে রাখি যা তারা আগে পাঠিয়ে দেয় আর যা পেছনে ছেড়ে যায়। সব কিছুই আমি স্পষ্ট কিতাবে সংরক্ষিত করে রেখেছি।

وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا أَصْحٰبَ الْقَرْيَةِ ۘ إِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ ج (١٣)

১৩. তাদের কাছে দৃষ্টান্ত স্বরূপ এক জনপদবাসীদের কথা শুনিয়ে দাও যখন তাদের কাছে এসেছিল রসূলগণ।

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوْهُمَا

১৪. যখন তাদের কাছে দু'জন রসূল পাঠিয়েছিলাম তখন তারা সে দু'জনকে মিথ্যে

فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوْٓا إِنَّآ إِلَيْكُمْ مُّرْسَلُوْنَ (١٤)

ব'লে প্রত্যাখ্যান করল। অতঃপর আমি তৃতীয় আরেকজন দ্বারা তাদের শক্তি বৃদ্ধি করলাম। তারা বলল– আমরা তোমাদের প্রতি প্রেরিত হয়েছি।

قَالُوْا مَآ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا لا وَمَآ أَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ لا إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا تَكْذِبُوْنَ (١٥)

১৫. জনপদবাসীরা বলল– তোমরা তো আমাদেরই মত মানুষ বতীত অন্য কিছু নও। আর দয়াময় (আল্লাহ) কোন কিছুই নাযিল করেননি। তোমরা শুধু মিথ্যেই বলছ।

قَالُوْا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُوْنَ (١٦)

১৬. রসূলগণ বলল– আমাদের পালনকর্তা জানেন আমরা অবশ্যই তোমাদের প্রতি প্রেরিত হয়েছি।

وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (١٧)

১৭. স্পষ্টভাবে (আল্লাহ্‌র বাণী) পৌঁছে দেয়াই আমাদের একমাত্র দায়িত্ব।

قَالُوْٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ج لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوْا لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١٨)

১৮. জনপদের লোকেরা বলল- আমরা তোমাদেরকেই অমঙ্গলের কারণ মনে করি। তোমরা যদি (প্রচারকার্য থেকে) নিবৃত্ত না হও, তাহলে আমরা অবশ্য অবশ্যই তোমাদেরকে পাথর মেরে হত্যা করব এবং আমাদের পক্ষ থেকে বড়ই মর্মান্তিক শাস্তি তোমাদের উপর অবশ্য অবশ্যই নেমে আসবে।

قَالُوْا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ط أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ط بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ (١٩)

১৯. রসূলগণ বলল– তোমাদের অমঙ্গলের কারণ তোমাদের সাথেই আছে (আর তা হল তোমাদের অপকর্ম)। তোমাদেরকে নসীহত করা হলেই কি (সেটাকে তোমরা তোমাদের অমঙ্গলের কারণ মনে কর)? আসলে তোমরা হচ্ছ এক সীমালঙ্ঘনকারী জাতি।

وَجَآءَ مِنْ أَقْصَى الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى ز قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ لا (٢٠)

২০. নগর প্রান্ত থেকে এক লোক ছুটে আসলো। সে বলল– হে আমার জাতির লোকেরা! তোমরা রসূলদের মান্য কর।

اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْأَلُكُمْ أَجْرًا وَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ (٢١)

২১. তোমরা মান্য কর এদেরকে– যারা তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চায় না। উপরন্তু তারা সঠিক পথে পরিচালিত।

وَمَا لِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٢٢)

২২. কেন আমি তাঁর ‘ইবাদাত করব না যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন, আর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে ফিরে যেতে হবে?

أَأَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً إِنْ يُّرِدْنِ الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ج (٢٣)

২৩. আমি কি তাঁর পরিবর্তে (অন্য) সব ইলাহ্ গ্রহণ করব? করুণাময় আল্লাহ যদি আমার কোন ক্ষতি করতে চান তবে আমার জন্য তাদের সুপারিশ কোনই কাজে আসবে না, আর তারা আমাকে উদ্ধার করতেও পারবে না।

إِنِّيْٓ إِذًا لَّفِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ (٢٤)

২৪. তা যদি করি, তাহলে আমি স্পষ্ট পথভ্রষ্টতেই পতিত হব।

إِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ط (٢٥)

২৫. আমি তো তোমাদের পালনকর্তার উপর ঈমান এনেছি, কাজেই তোমরা আমার কথা শুন।

قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ط قَالَ يَا لَيْتَ قَوْمِيْ يَعْلَمُوْنَ لا (٢٦)

২৬. (লোকেরা তাকে হত্যা করে ফেললে আল্লাহ্র পক্ষ থেকে) তাকে বলা হল– জান্নাতে প্রবেশ কর। (তখন) সে বলল– হায়! আমার জাতির লোকেরা যদি জানত,

بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ (٢٧)

২৭. আমার পালনকর্তা কোন্ জিনিসের বদৌলতে আমাকে ক্ষমা করেছেন আর আমাকে সম্মানিতদের অন্তর্ভুক্ত করেছেন।

وَمَآ أَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ (٢٨)

২৮. আমি তার মৃত্যুর পর তার জাতির বিরুদ্ধে আসমান থেকে কোন সৈন্যবাহিনী পাঠাইনি, আর তা পাঠানোর আমার কোন দরকারও ছিল না।

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ خٰمِدُوْنَ (٢٩)

২৯. ওটা ছিল মাত্র একটা প্রচণ্ড শব্দ, ফলে তারা সহসাই নিস্তব্ধ হয়ে গেল।

يَا حَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ج مَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِئُوْنَ (٣٠)

৩০. বান্দাহদের জন্য পরিতাপ! তাদের কাছে এমন কোন রসূলই আসেনি যাকে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেনি।

أَلَمْ يَرَوْا كَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ أَنَّهُمْ إِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ (٣١)

৩১. তারা কি দেখে না যে, তাদের পূর্বে আমি কত মানবগোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছি? তারা তাদের কাছে ফিরে আসবে না।

وَإِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ع (٣٢)

৩২. তাদের সব্বাইকে একত্রে আমার কাছে হাজির করা হবে।

৩৩. মৃত যমীন তাদের জন্য একটা নিদর্শন। তাকে আমি জীবিত করি আর তাথেকে আমি উৎপন্ন করি শস্য যাথেকে তারা খায়।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْأَرْضُ الْمَيْتَةُ ج صلے أَحْيَيْنٰهَا وَأَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَأْكُلُوْنَ (٣٣)

৩৪. আর আমি তাতে খেজুর ও আঙ্গুরের বাগান তৈরি করি, আর তাতে প্রবাহিত করি ঝর্ণাধারা।

وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّأَعْنَابٍ وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ لا (٣٤)

৩৫. যাতে তারা তার ফল খেতে পারে– যা তারা তাদের হাত দিয়ে বানায়নি। তাহলে কেন তারা কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করে না?

لِيَأْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ لا وَمَا عَمِلَتْهُ أَيْدِيْهِمْ ط أَفَلَا يَشْكُرُوْنَ (٣٥)

৩৬. পূত পবিত্র সেই সত্তা যিনি জোড়া সৃষ্টি করেছেন প্রত্যেকটির যা উৎপন্ন করে যমীন, আর তাদের নিজেদের ভিতরেও আর সে সবেও যা তারা জানে না।

سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا مِمَّا تُنْـبِتُ الْأَرْضُ وَمِنْ أَنْفُسِهِمْ وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ (٣٦)

৩৭. তাদের জন্য একটি নিদর্শন হচ্ছে রাত, তাথেকে আমি দিনকে সরিয়ে নেই, ফলে তখনই তারা অন্ধকারে ডুবে যায়।

وَاٰيَةٌ لَّهُمُ اللَّيْلُ ج صلے نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ فَإِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ لا (٣٧)

৩৮. আর সূর্য তার জন্যে নির্দিষ্ট ক'রে দেয়া জায়গায় গতিশীল, এটা মহা পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞের সুনিরূপিত নির্ধারণ।

وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ط ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ط (٣٨)

৩৯. আর চাঁদ–তার জন্য আমি নির্দিষ্ট করেছি বিভিন্ন মান্‌যিল (যা সে অতিক্রম করে), এমনকি শেষ পর্যন্ত সেটি খেজুরের কাঁদির পুরানো শুকনো দণ্ডের মত হয়ে ফিরে আসে।

وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ الْقَدِيْمِ (٣٩)

৪০. সূর্যের পক্ষে সম্ভব নয় চাঁদকে ধরে ফেলা, আর রাতের পক্ষে সম্ভব নয় দিনকে ছাড়িয়ে আগে বেড়ে যাওয়া, প্রত্যেকেই নিজ নিজ কক্ষ পথে সাঁতার কাটছে।

لَا الشَّمْسُ يَنْـبَغِيْ لَهَآ أَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ وَلَا اللَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ط وَكُلٌّ فِيْ فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ (٤٠)

৩৮। আবূ যার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা সূর্য অস্ত যাওয়ার সময় আমি নাবী (ﷺ)-এর সঙ্গে মাসজিদে ছিলাম। তিনি বললেন, হে আবূ যার! তুমি কি জান সূর্য কোথায় ডুবে? আমি বললাম, আল্লাহ্ এবং তাঁর রসূল সবচেয়ে ভাল জানেন। তিনি বললেন, সূর্য চলে, অবশেষে আরশের নিচে গিয়ে সাজদাহ করে। নিম্নবর্ণিত وَالشَّمْسُ تَجْرِي لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ذٰلِكَ تَقْدِيرُ الْعَزِيزِ الْعَلِيمِ এ আয়াতের কথাই বর্ণনা করা হয়েছে, অর্থাৎ সূর্য ভ্রমণ করে তার নির্দিষ্ট গন্তব্যের পানে, এ হল পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞের নিয়ন্ত্রণ। –বুখারী ৪৮০২ [৩১৯৯; মুসলিম ১৫৯, তিরমিযী ২১৮৬, ৩২২৭; আবূ দাউদ ৪০০২]

وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ۙ (٤١)

৪১. তাদের জন্য (আমার কুদরাতের) আরো একটি নিদর্শন এই যে, আমি তাদের বংশধরদেরকে (মহা প্লাবণের সময়) ভরা নৌকায় আরোহণ করিয়েছি।

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ (٤٢)

৪২. আর তাদের জন্য ঐ ধরনের আরো যানবাহন তৈরি করেছি যাতে তারা আরোহণ করে থাকে।

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۙ (٤٣)

৪৩. আমি ইচ্ছে করলে তাদেরকে ডুবিয়ে দিতে পারি, তখন (তাদের ফরিয়াদ শুনার জন্য) কোন সাহায্যকারী থাকবে না, আর তারা পরিত্রাণও পাবে না

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ (٤٤)

৪৪. আমার রহমত না হলে, আর কিছু কালের জন্য তাদেরকে জীবন উপভোগ করতে না দিলে।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ (٤٥)

৪৫. তাদেরকে যখন বলা হয় "তোমাদের সামনে যে পরিণাম আসছে তাথেকে আর তোমাদের পেছনের (অতীত জাতিগুলোর উপর ঘটে গেছে সে রকম) 'আযাব থেকে নিজেদেরকে রক্ষা কর যাতে তোমাদের উপর রহম করা হয় (তখন তারা মুখ ফিরিয়ে নেয়)।"

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ (٤٦)

৪৬. তাদের কাছে তাদের প্রতিপালকের নিদর্শন থেকে যখনই কোন নিদর্শন আসে তখনই তারা তাথেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٤٧)

৪৭. তাদেরকে যখন বলা হয় 'আল্লাহ তোমাদেরকে যে রিয্‌ক দিয়েছেন তাথেকে তোমরা (আল্লাহর পথে) ব্যয় কর; তখন কাফিররা মু'মিনদেরকে বলে, "আমরা কি এমন লোককে খাওয়াবো আল্লাহ ইচ্ছে করলে যাকে খাওয়াতে পারতেন? তোমরা তো স্পষ্ট পথভ্রষ্টতে পড়ে আছ।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٤٨)

৪৮. আর তারা বলে, "তোমরা যদি সত্যবাদী হও তাহলে বল, (ক্বিয়ামতের) এ ও'য়াদা কখন পূর্ণ হবে?"

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ (٤٩)

৪৯. তারা যে জন্য অপেক্ষা করছে সেটাতো একটা প্রচণ্ড শব্দ যা তাদেরকে পাকড়াও করবে যখন তারা নিজেদের মধ্যে বাক-বিতণ্ডায় লিপ্ত থাকবে।

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ إِلٰٓى أَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ع (٥٠)

৫০. (ক্বিয়ামত এমনই হঠাৎ আক্রমণ করবে যে) তারা না পারবে ওসীয়াত করতে আর না পারবে তাদের পরিবার পরিজনের কাছে ফিরে যেতে।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَإِذَا هُمْ مِّنَ الْأَجْدَاثِ إِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ (٥١)

৫১. আর যখন শিঙ্গায় ফুঁক দেয়া হবে, তখনই তারা ক্ববর থেকে তাদের পালনকর্তার দিকে ছুটে আসবে।

قَالُوْا يَا وَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ـــ سكتة هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ (٥٢)

৫২. তারা বলবে, 'হায় আমাদের দুর্ভোগ! আমাদেরকে আমাদের ঘুমের জায়গা থেকে কে উঠালো? (তাদেরকে জবাব দেয়া হবে) "এটা হল তাই– দয়াময়'আল্লাহ যার ও'য়াদা দিয়েছিলেন, আর রসূলগণও সত্য কথাই বলেছিলেন।'

إِنْ كَانَتْ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَإِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ (٥٣)

৫৩. মাত্র একটা প্রচণ্ড শব্দ হবে, তক্ষুণি তাদের সব্বাইকে আমার সামনে হাজির করা হবে।

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْئًا وَّلَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٥٤)

৫৪. আজ কারো প্রতি কোন যুল্‌ম করা হবে না, তোমরা যে 'আমাল করছিলে তোমাদেরকে কেবল তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِيْ شُغُلٍ فٰكِهُوْنَ ج (٥٥)

৫৫. সে দিন জান্নাতীরা আনন্দে মশগুল হয়ে থাকবে।

هُمْ وَأَزْوَاجُهُمْ فِيْ ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ مُتَّكِـُٔوْنَ ج (٥٦)

৫৬. তারা আর তাদের স্ত্রীরা সুশীতল ছায়ায়, উঁচু উঁচু আসনে হেলান দিয়ে বসবে।

لَهُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّلَهُمْ مَّا يَدَّعُوْنَ ج (٥٧)

৫৭. তাদের জন্য সেখানে থাকবে ফলমূল আর তাদের জন্য থাকবে তারা যা কিছু পেতে চাইবে।

سَلٰمٌ قف قَوْلًا مِّنْ رَّبٍّ رَّحِيْمٍ (٥٨)

৫৮. দয়াময় প্রতিপালকের পক্ষ থেকে তাদেরকে 'সালাম' বলে সম্ভাষণ করা হবে।

وَامْتَازُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُوْنَ (٥٩)

৫৯. (সে দিন বলা হবে) 'হে অপরাধীরা! আজ তোমরা আলাদা হয়ে যাও।'

أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ أَنْ لَّا تَعْبُدُوا الشَّيْطٰنَ ج إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ لا (٦٠)

৬০. 'হে আদাম সন্তান! আমি কি তোমাদেরকে নির্দেশ দেইনি যে, তোমরা শয়ত্বানের 'ইবাদাত করো না, কারণ সে তোমাদের প্রকাশ্য দুশমন?

وَأَنِ اعْبُدُوْنِيْ ط ـــ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (٦١)

৬১. আর আমারই 'ইবাদাত কর, এটাই সরল সঠিক পথ।

وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيْرًا ط أَفَلَمْ تَكُوْنُوْا تَعْقِلُوْنَ (٦٢)

৬২. (কিন্তু তোমাদেরকে সতর্ক করে দেয়া সত্ত্বেও) শয়ত্বান তোমাদের বহু দলকে বিভ্রান্ত করে দিয়েছে, তবুও কি তোমরা বুঝ না?

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ (٦٣)

৬৩. এটা সেই জাহান্নাম যে বিষয়ে তোমাদেরকে ভয় দেখানো হয়েছিল।

إِصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ (٦٤)

৬৪. আজ তাতে প্রবেশ কর, কেননা তোমরা এটাকে অবিশ্বাস করেছিলে।'

اَلْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰٓى أَفْوَاهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَآ أَيْدِيْهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٦٥)

৬৫. আজ আমি তাদের মুখে সীল মোহর লাগিয়ে দেব, তাদের হাত আমার সঙ্গে কথা বলবে, আর তারা যা করত সে সম্পর্কে তাদের পাগুলো সাক্ষ্য দেবে।

وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰٓى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا الصِّرَاطَ فَأَنّٰى يُبْصِرُوْنَ (٦٦)

৬৬. আমি ইচ্ছে করলে তাদের দৃষ্টিশক্তি বিলুপ্ত করে দিতাম। তখন তারা পথের দিকে দৌড়ে দেখতে চাইলে কীভাবে তারা দেখতে পেত?

وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ فَمَا اسْتَطَاعُوْا مُضِيًّا وَّلَا يَرْجِعُوْنَ ع (٦٧)

৬৭. আমি ইচ্ছে করলে তাদের নিজ নিজ জায়গাতেই তাদের আকৃতি পরিবর্তন করে দিতাম, তখন তারা না সামনের দিকে চলতে পারত, আর না পারত পেছনে ফিরে যেতে।

وَمَنْ نُّعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ ط أَفَلَا يَعْقِلُوْنَ (٦٨)

৬৮. আমি যাকে দীর্ঘ জীবন দেই, তাকে সৃষ্টির ক্ষেত্রে পূর্বের অবস্থায় ফিরিয়ে আনি। তবুও কি তারা বুঝে না?

وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْۢبَغِيْ لَهٗ ط إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَّقُرْاٰنٌ مُّبِيْنٌ لا (٦٩)

৬৯. (কাফিররা রসূল ﷺ-কে উদ্দেশ্য করে বলে, লোকটা একটা কবি। কিন্তু) আমি রসূলকে কবিতা শিখাইনি, আর তা তার জন্য শোভনীয়ও নয়। তাতো এক উপদেশ ও স্পষ্ট কুরআন ব্যতীত অন্য কিছু নয়।

لِّيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَّيَحِقَّ الْقَوْلُ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (٧٠)

৭০. যাতে সে (আত্মিকভাবে) জীবিতকে সতর্ক করতে পারে আর কাফিরদের বিরুদ্ধে অকাট্য দলীল হতে পারে।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُمْ مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِيْنَآ أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مٰلِكُوْنَ (٧١)

৭১. তারা কি দেখে না যে আমার হাতে তৈরি জিনিসগুলোর মধ্যে আমি তাদের জন্য সৃষ্টি করেছি গৃহপালিত পশু আর এখন তারা এগুলোর মালিক!

وَذَلَّلْنٰهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوْبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُوْنَ (٧٢)

৭২. আমি এগুলোকে তাদের বশীভূত করে দিয়েছি, ফলে এগুলোর কতক তাদের বাহন, আর এদের কতকগুলো তারা খায়।

وَلَهُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ؕ أَفَلَا يَشْكُرُوْنَ (٧٣)

৭৩. তাদের জন্য এগুলোতে আছে বহু উপকার আর পানীয় দ্রব্য। তবুও তারা কেন শুকরিয়া আদায় করে না?

وَاتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ اٰلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنْصَرُوْنَ ؕ (٧٤)

৭৪. তারা আল্লাহ্‌র পরিবর্তে অনেক ইলাহ গ্রহণ করেছে এই আশায় যে, তারা (ঐ সব ইলাহ দ্বারা) সাহায্যপ্রাপ্ত হবে।

لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُنْدٌ مُّحْضَرُوْنَ (٧٥)

৭৫. ঐ সব ইলাহ তাদেরকে সাহায্য করতে সক্ষম নয়, বরং (উল্টো) এ লোকেরাই (ঐ সব ইলাহ্‌কে সাহায্য করার জন্য) সদা প্রস্তুত সেনাবাহিনীর মত হাযির হয়ে আছে।

فَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ (٧٦)

৭৬. কাজেই তাদের কথাবার্তা তোমাকে যেন দুঃখ না দেয়; আমি জানি তারা যা গোপন করে, আর যা প্রকাশ করে।

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنْسَانُ أَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ (٧٧)

৭৭. মানুষ কি দেখে না যে আমি তাকে সৃষ্টি করেছি শুক্রবিন্দু হতে? অতঃপর সে হয়ে গেল সুস্পষ্ট ঝগড়াটে।

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَّنَسِيَ خَلْقَهٗ ؕ قَالَ مَنْ يُّحْيِ الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيْمٌ (٧٨)

৭৮. সে (আমার সৃষ্টির সাথে) আমার তুলনা করে, অথচ সে তার নিজের সৃষ্টির ব্যাপারটি ভুলে যায় (যে তাকে আমিই সৃষ্টি করেছি)। সে বলে, 'হাড়গুলোকে কে আবার জীবন্ত করবে যখন তা পচে গলে যাবে?"

قُلْ يُحْيِيْهَا الَّذِيْٓ أَنْشَأَهَآ أَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيْمٌ ۙ (٧٩)

৭৯. বল, "তাকে তিনিই জীবন্ত করবেন যিনি ওগুলোকে প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন, আর তিনি প্রতিটি সৃষ্টি সম্পর্কে সবচেয়ে বেশি অবগত।

ۨالَّذِيْ جَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَآ أَنْتُمْ مِّنْهُ تُوْقِدُوْنَ (٨٠)

৮০. যিনি তোমাদের জন্য সবুজ গাছ হতে আগুন তৈরি করেছেন, অতঃপর তোমরা তাথেকে আগুন জ্বালাও।

أَوَلَيْسَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ ؕصلے بَلٰى ۚ وَهُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ (٨١)

৮১. যিনি আসমান যমীন সৃষ্টি করেছেন তিনি কি সেই লোকদের অনুরূপ (আবার) সৃষ্টি করতে সক্ষম নন? হাঁ, অবশ্যই। তিনি মহা স্রষ্টা, সর্বজ্ঞ।

إِنَّمَآ أَمْرُهٗٓ إِذَآ أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَّقُوْلَ لَهٗ

৮২. তাঁর কাজকর্ম কেবল এ রকম যে, যখন তিনি কোন কিছুর ইচ্ছে করেন তখন তাকে হুকুম

كُنْ فَيَكُوْنُ (٨٢)

করেন যে হয়ে যাও, আর অমনি তা হয়ে যায়।

فَسُبْحٰنَ الَّذِي بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَيْءٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ع (٨٣)

৮৩. কাজেই পবিত্র ও মহান তিনি যাঁর হাতে সব কিছুর সর্বময় কতৃর্ত্ব, আর তাঁর কাছেই তোমাদের (সকলকে) ফিরিয়ে আনা হবে।

৩৭. সূরাহ আস্ সা-ফ্ফা-ত

سُوْرَةُ الصّٰٓفّٰتِ

আয়াতঃ ১৮২, রুকূ'ঃ ৫, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا لا (١)

১. শপথ তাদের যারা সারিবদ্ধভাবে দাঁড়ানো,

فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا لا (٢)

২. অতঃপর যারা ধমক দিয়ে তিরস্কার করে তাদের শপথ,

فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا لا (٣)

৩. আর যারা (আল্লাহ্‌র) যিক্‌র আবৃত্তিতে লিপ্ত,

إِنَّ إِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ط (٤)

৪. তোমাদের প্রকৃত ইলাহ অবশ্য একজন।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ط (٥)

৫. যিনি আসমান, যমীন আর এ দু'য়ের মাঝে যা আছে এবং সকল উদয় স্থলের মালিক।

إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ الْكَوَاكِبِ لا (٦)

৬. আমি নিকটবর্তী আসমানকে তারকারাজির সৌন্দর্য দ্বারা সুশোভিত করেছি,

وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّارِدٍ ج (٧)

৭. আর (এটা করেছি) প্রত্যেক বিদ্রোহী শয়ত্বান থেকে সুরক্ষার ব্যবস্থা হিসেবে।

لَا يَسَّمَّعُوْنَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ق لا صلے (٨)

৮. যার ফলে তারা উচ্চতর জগতের কিছু শুনতে পারে না, চতুর্দিক থেকে তাদের প্রতি নিক্ষেপ করা হয় (উল্কাপিণ্ড)

دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ لا (٩)

৯. (তাদেরকে) তাড়ানোর জন্য। তাদের জন্য আছে বিরামহীন শাস্তি।

إِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهٗ شِهَابٌ ثَاقِبٌ (١٠)

১০. তবে কেউ ছোঁ মেরে কিছু শুনে ফেললে জ্বলন্ত উল্কাপিণ্ড তার পিছু নেয়।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَّنْ خَلَقْنَا ۗ إِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ (١١)

১১. তাদেরকে জিজ্ঞেস কর– সৃষ্টির ক্ষেত্রে কি তারাই বেশি প্রবল, না আমি অন্য যা কিছু সৃষ্টি করেছি তা (বেশি প্রবল)? আমি তো তাদেরকে সৃষ্টি করেছি (অতি নগণ্য) মাটি থেকে।

بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ص (١٢)

১২. (আল্লাহর শক্তি-ক্ষমতা-মহিমা দেখে) তুমি কর বিস্ময়বোধ, আর তারা করে বিদ্রূপ।

وَإِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ص (١٣)

১৩. তাদেরকে উপদেশ দেয়া হলে তারা উপদেশ নেয় না।

وَإِذَا رَأَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ص (١٤)

১৪. তারা আল্লাহর কোন নিদর্শন দেখলে ঠাট্টা করে।

وَقَالُوْٓا إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ج صلے (١٥)

১৫. আর তারা বলে- 'এটা স্পষ্ট যাদু ছাড়া আর কিছুই না।'

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ لا (١٦)

১৬. আমরা যখন মরব এবং মাটি ও হাড়ে পরিণত হব, তখনো কি আমাদেরকে আবার জীবিত করে উঠানো হবে?

أَوَاٰبَآؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ ط (١٧)

১৭. এবং আমাদের পূর্বপুরুষদেরকেও (উঠানো হবে)?'

قُلْ نَعَمْ وَأَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ج (١٨)

১৮. তাদেরকে বল, 'হাঁ, এবং তোমরা হবে লাঞ্ছিত।'

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَإِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ (١٩)

১৯. ওটা (হবে) মাত্র একটা প্রচণ্ড শব্দ, আর তখনই তারা স্বচক্ষে (সব কিছু) দেখতে পাবে।

وَقَالُوْا يَا وَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ (٢٠)

২০. তারা আরো বলবে– "হায় আমাদের দুর্ভাগ্য! এটাই তো কর্মফলের দিন।'

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ع (٢١)

২১. এটাই ফয়সালার দিন যাকে তোমরা মিথ্যে বলে অস্বীকার করতে।

أُحْشُرُوا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا وَأَزْوَاجَهُمْ وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ لا (٢٢)

২২. (হুকুম দেয়া হবে) 'একত্র কর যালিমদেরকে আর তাদের সঙ্গীদেরকে এবং তাদেরকেও, যাদের তারা 'ইবাদাত করত

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ إِلٰى صِرَاطِ الْجَحِيْمِ (٢٣)

২৩. আল্লাহর ('ইবাদাতের) পরিবর্তে, আর তাদেরকে জাহান্নামের পথ দেখাও।

وَقِفُوْهُمْ إِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ لا (٢٤)

২৪. অতঃপর ওদেরকে থামাও ওদেরকে তো প্রশ্ন করা হবে-

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ (٢٥)

২৫. 'তোমাদের হয়েছে কী, তোমরা পরস্পরকে সাহায্য করছ না কেন?'

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ (٢٦)

২৬. বরং আজ তারা (বিচারের সামনে) আত্মসমর্পণ করবে।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ (٢٧)

২৭. তারা একে অপরের দিকে মুখ করে পরস্পর জিজ্ঞাসাবাদ করবে।

قَالُوْٓا إِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَأْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ (٢٨)

২৮. তারা (তাদের ক্ষমতাশালীদেরকে) বলবে, "তোমরা তো তোমাদের ক্ষমতা নিয়ে আমাদের কাছে আসতে।'

قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ج (٢٩)

২৯. তারা (অর্থাৎ ক্ষমতার অধিকারীরা) উত্তর দিবে– "তোমরা তো (বিচার দিবসের প্রতি) বিশ্বাসীই ছিলে না।

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ج بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ (٣٠)

৩০. আর তোমাদের উপর আমাদের কোন কর্তৃত্বও ছিল না, বরং তোমরা ছিলে সীমালঙ্ঘনকারী জাতি।

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ق صلے إِنَّا لَذَآئِقُوْنَ (٣١)

৩১. আমাদের বিপক্ষে আমাদের পালনকর্তার উক্তিই সত্য হয়েছে, আমাদেরকে অবশ্যই শাস্তির স্বাদ নিতে হবে।

فَأَغْوَيْنٰكُمْ إِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ (٣٢)

৩২. আসলে আমরাই তোমাদেরকে গোমরাহ করেছিলাম, কারণ আমরা নিজেরাও গোমরাহ ছিলাম।'

فَإِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ (٣٣)

৩৩. সেদিন (দুর্বল আর সবল) সবাই 'আযাবে শরীক হবে।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ (٣٤)

৩৪. অপরাধীদের প্রতি আমি এ রকমই (আচরণ) করে থাকি।

إِنَّهُمْ كَانُوْٓا إِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ يَسْتَكْبِرُوْنَ لا (٣٥)

৩৫. তাদেরকে যখন 'আল্লাহ ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই' বলা হত, তখন তারা অহংকার করত।

وَيَقُوْلُوْنَ أَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ مَّجْنُوْنٍ ط (٣٦)

৩৬. আর তারা বলত, "আমরা কি এক পাগলা কবির কথা মেনে আমাদের ইলাহগুলোকে ত্যাগ করব?

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ (٣٧)

৩৭. বরং সে [অর্থাৎ মুহাম্মাদ (ﷺ)] সত্য নিয়ে এসেছে এবং (পূর্বে আগমনকারী) রসূলদেরকে সত্যায়িত করেছে।

إِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْأَلِيْمِ ج (٣٨)

৩৮. (এখন তাদেরকে বলা হবে) 'তোমরা অবশ্যই মর্মান্তিক শাস্তির স্বাদ ভোগ করবে,

وَمَا تُجْزَوْنَ إِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ لا (٣٩)

৩৯. তোমাদেরকে কেবল তারই প্রতিফল দেয়া হবে যা তোমরা করতে।'

إِلَّا عِبَادَ اللهِ الْمُخْلَصِيْنَ (٤٠)

৪০. কিন্তু আল্লাহর একনিষ্ঠ বান্দারা নয় (তারা এ সব 'আযাব থেকে রক্ষা পাবে)।

أُولَٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ لا (٤١)

৪১. তাদের জন্য আছে নির্ধারিত রিয্ক–

فَوَاكِهُ ج وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ لا (٤٢)

৪২. ফলমূল; আর তারা হবে সম্মানিত।

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ لا (٤٣)

৪৩. (তারা থাকবে) নি'য়ামাতের ভরা জান্নাতে

عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ (٤٤)

৪৪. উচ্চাসনে মুখোমুখী হয়ে

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ لا (٤٥)

৪৫. তাদের কাছে চক্রাকারে পরিবেশন করা হবে স্বচ্ছ প্রবাহিত ঝর্ণার সুরাপূর্ণ পাত্র।

بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ج (٤٦)

৪৬. নির্মল পানীয়, পানকারীদের জন্য সুপেয়, সুস্বাদু।

لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ (٤٧)

৪৭. নেই তাতে দেহের জন্য ক্ষতিকর কোন কিছু, আর তারা তাতে মাতালও হবে না।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ لا (٤٨)

৪৮. তাদের কাছে থাকবে সংযত নয়না, সতী সাধ্বী, ডাগর ডাগর সুন্দর চক্ষু বিশিষ্টা সুন্দরীরা (হুরগণ)।

كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ (٤٩)

৪৯. তারা যেন সযত্নে ঢেকে রাখা ডিম।

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ (٥٠)

৫০. অতঃপর তারা পরস্পরের মুখোমুখী হয়ে একে 'অপরের খবর জিজ্ঞেস করবে।

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ إِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ لا (٥١)

৫১. তাদের একজন বলবে– "(দুনিয়ায়) আমার ছিল একজন সাথী।

يَّقُوْلُ أَإِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ (٥٢)

৫২. সে বলত– "তুমি কি বিশ্বাস কর যে,

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا أَإِنَّا لَمَدِيْنُوْنَ (٥٣)

৫৩. আমরা যখন মরে যাব আর মাটি ও হাড্ডিতে পরিণত হব তখনো সত্যিই কি আমাদেরকে পুরস্কার ও শাস্তি দেয়া হবে?

قَالَ هَلْ أَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ (٥٤)

৫৪. আল্লাহ বলবেন– ' তোমরা কি তাকে উঁকি দিয়ে দেখতে চাও?'

فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ (٥٥)

৫৫. তারপর সে উঁকি দিয়ে দেখবে এবং তাকে জাহান্নামের মাঝখানে দেখতে পাবে।

قَالَ تَاللهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ لا (٥٦)

৫৬. সে বলবে, 'আল্লাহর কসম! তুমি তো আমাকে প্রায় ধ্বংসই করে দিয়েছিলে,

وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ (٥٧)

৫৭. আমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ না হলে আমিও তো (জাহান্নামের ভিতর) হাজির করা লোকেদের মধ্যে শামিল থাকতাম।

أَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ لا (٥٨)

৫৮. এখন আমাদের আর মৃত্যু হবে না

إِلَّا مَوْتَتَنَا الْأُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ (٥٩)

৫৯. আমাদের প্রথম মৃত্যুর পর, আর আমাদেরকে শাস্তিও দেয়া হবে না।

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (٦٠)

৬০. এটাই তো মহাসাফল্য।

لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ (٦١)

৬১. এ রকম সাফল্যের জন্যই 'আমলকারীদের 'আমল করা উচিত।

أَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا أَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ (٦٢)

৬২. আপ্যায়ন হিসেবে এটা উত্তম, না, (জাহান্নামের) জাক্কুম গাছ?

إِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ (٦٣)

৬৩. এ গাছটাকে আমি যালিমদের পরীক্ষা করার জন্য (একটা উপকরণ) বানিয়েছি (কেননা, যালিমরা বলে যে, জাহান্নামের ভিতর আবার গাছ হয় কী করে?)

إِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْٓ أَصْلِ الْجَحِيْمِ لا (٦٤)

৬৪. এটা এমন একটা গাছ যা জাহান্নামের তলদেশ থেকে বের হয়।

طَلْعُهَا كَأَنَّهٗ رُؤُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ (٦٥)

৬৫. এর চূড়াগুলো যেন শয়ত্বানের মাথা (অর্থাৎ দেখতে খুবই খারাপ।)

فَإِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِئُوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ط (٦٦)

৬৬. জাহান্নামের অধিবাসীরা তাথেকে খাবে আর তা দিয়ে পেট পূর্ণ করবে।

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيْمٍ ج (٦٧)

৬৭. এর উপর তাদেরকে দেয়া হবে ফুটন্ত পানির (পূজঁ সম্বলিত) মিশ্রণ।

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَاِلَى الْجَحِيْمِ (٦٨)

৬৮. অতঃপর তাদের প্রত্যাবর্তন হবে জ্বলন্ত আগুনের দিকে।

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا اٰبَآءَهُمْ ضَآلِّيْنَ لا (٦٩)

৬৯. তারা তাদের পিতৃপুরুষদেরকে বিপথগামী পেয়েছিল।

فَهُمْ عَلَىٰٓ اٰثٰرِهِمْ يُهْرَعُوْنَ (٧٠)

৭০. অতঃপর তাদেরই পদাংক অনুসরণ করে ছুটে চলেছিল।

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِيْنَ ۙ (٧١)

৭১. এদের আগের লোকেদের অধিকাংশই পথভ্রষ্ট হয়ে গিয়েছিল।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيْهِمْ مُّنْذِرِيْنَ (٧٢)

৭২. আমি তাদের মাঝে সতর্ককারী (রসূল) পাঠিয়েছিলাম।

فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنْذَرِيْنَ ۙ (٧٣)

৭৩. এখন দেখ, এই সতর্ক করে দেয়া লোকেদের পরিণাম কী হয়েছিল!

إِلَّا عِبَادَ اللهِ الْمُخْلَصِيْنَ ع (٧٤)

৭৪. কিন্তু আল্লাহ্‌র একনিষ্ঠ বান্দাদের কথা ভিন্ন (এ সব খারাপ পরিণতি থেকে সম্পূর্ণ মুক্ত ছিল।)

وَلَقَدْ نَادٰىنَا نُوْحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيْبُوْنَ زصلے (٧٥)

৭৫. (ইতোপূর্বে) নূহ আমাকে ডেকেছিল, অতঃপর (দেখ) আমি কতই না উত্তম সাড়াদাতা ছিলাম!

وَنَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ زصلے (٧٦)

৭৬. তাকে আর তার পরিবারবর্গকে আমি মহা বিপদ থেকে উদ্ধার করেছিলাম।

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهٗ هُمُ الْبٰقِيْنَ زصلے (٧٧)

৭৭. আর তার বংশধরদেরকেই আমি বংশানুক্রমে বিদ্যমান রাখলাম।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ زصلے (٧٨)

৭৮. আর আমি তাকে পরবর্তীদের মাঝে স্মরণীয় করে রাখলাম।

سَلٰمٌ عَلٰى نُوْحٍ فِي الْعٰلَمِيْنَ (٧٩)

৭৯. বিশ্বজগতে নূহের প্রতি সালাম/শান্তি বর্ষিত হোক।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (٨٠)

৮০. সৎকর্মশীলদেরকে আমি এভাবেই প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (٨١)

৮১. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাহ্‌দের একজন।

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ (٨٢)

৮২. অতঃপর অন্যদের আমি ডুবিয়ে দিয়েছিলাম।

وَإِنَّ مِنْ شِيْعَتِهٖ لَإِبْرٰهِيْمَ ۘ (٨٣)

৮৩. অবশ্যই ইব্‌রাহীম ছিল তারই দলের লোক।

إِذْ جَآءَ رَبَّهٗ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ (٨٤)

৮৪. সে যখন তার প্রতিপালকের কাছে বিশুদ্ধ অন্তর নিয়ে হাজির হল,

إِذْ قَالَ لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَاذَا تَعْبُدُوْنَ ج (٨٥)

৮৫. সে তখন তার পিতাকে ও তার জাতিকে বলল, 'তোমরা কিসের 'ইবাদাত কর?

أَئِفْكًا اٰلِهَةً دُوْنَ اللهِ تُرِيْدُوْنَ ط (٨٦)

৮৬. তোমরা কি আল্লাহকে বাদ দিয়ে মিথ্যে মা'বুদ পেতে চাও?

فَمَا ظَنُّكُمْ بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٨٧)

৮৭. বিশ্ব জগতের প্রতিপালক সম্পর্কে তোমরা কী ধারণা পোষণ কর?

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُوْمِ ۙ (٨٨)

৮৮. অতঃপর তারকারাজির দিকে সে একবার তাকাল (অর্থাৎ চিন্তে ভাবনা করল)

فَقَالَ إِنِّيْ سَقِيْمٌ (٨٩)

৮৯. তারপর বলল, "আমি অসুস্থ।"

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِيْنَ (٩٠)

৯০. অতঃপর তারা তাকে পেছনে রেখে চলে গেল।

فَرَاغَ إِلٰى اٰلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُوْنَ ج (٩١)

৯১. তারপর সে চুপে চুপে তাদের উপাস্যদের কাছে ঢুকে পড়ল আর বলল, (আপনাদের সম্মুখে রাখা এত উপাদেয় খাবার) আপনারা খাচ্ছেন না কেন?

مَا لَكُمْ لَا تَنْطِقُوْنَ (٩٢)

৯২. কী হয়েছে আপনাদের, কথা বলছেন না কেন?

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا ۢبِالْيَمِيْنِ (٩٣)

৯৩. অতঃপর সে তাদের উপর ঝাঁপিয়ে পড়ে সজোরে আঘাত করল।

فَأَقْبَلُوْآ إِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ (٩٤)

৯৪. তখন লোকেরা (ফিরে এসে) তার দিকে ছুটে আসল।

قَالَ أَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ ۙ (٩٥)

৯৫. সে বলল, "তোমরা (পাথর) খোদাই করে সেগুলো নিজেরা বানাও, সেগুলোরই আবার 'ইবাদাত কর?

وَاللهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ (٩٦)

৯৬. আল্লাহ্ই সৃষ্টি করেছেন তোমাদেরকে আর তোমরা যা তৈরি কর সেগুলোকেও।"

قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَأَلْقُوْهُ فِي الْجَحِيْمِ (٩٧)

৯৭. তারা বলল, 'তার জন্য একটা অগ্নিকুণ্ড তৈরি কর, অতঃপর তাকে আগুনে নিক্ষেপ কর।'

فَأَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْأَسْفَلِيْنَ (٩٨)

৯৮. তারা তার বিরুদ্ধে একটা ষড়যন্ত্র করতে চেয়েছিল। কিন্তু আমি তাদেরকে একেবারে হীন করে ছাড়লাম।

وَقَالَ إِنِّيْ ذَاهِبٌ إِلٰى رَبِّيْ سَيَهْدِيْنِ (٩٩)

৯৯. সে বলল, 'আমি আমার প্রতিপালকের দিকে চললাম, তিনি আমাকে অবশ্যই সঠিক পথ দেখাবেন।

رَبِّ هَبْ لِيْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (١٠٠)

১০০. হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে এক সৎকর্মশীল পুত্র সন্তান দান কর।

فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ (١٠١)

১০১. অতঃপর আমি তাকে এক অতি ধৈর্যশীল পুত্রের সুসংবাদ দিলাম।

فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْيَ قَالَ يٰبُنَيَّ إِنِّيْٓ أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيْٓ أَذْبَحُكَ فَانْظُرْ مَاذَا تَرٰى ط قَالَ يٰٓأَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ز سَتَجِدُنِيْٓ إِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ (١٠٢)

১০২. অতঃপর সে যখন তার পিতার সাথে চলাফিরা করার বয়সে পৌঁছল, তখন ইব্রাহীম (ﷺ) বলল, 'বৎস! আমি স্বপ্নে দেখেছি যে, আমি তোমাকে যব্হ করছি, এখন বল, তোমার অভিমত কী? সে বলল, 'হে পিতঃ! আপনাকে যা আদেশ করা হয়েছে আপনি তাই করুন, আল্লাহ চাইলে আপনি আমাকে ধৈর্যশীলই পাবেন।

فَلَمَّآ أَسْلَمَا وَتَلَّهُ لِلْجَبِيْنِ ج (١٠٣)

১০৩. দু'জনেই যখন আনুগত্যে মাথা নুইয়ে দিল। আর ইব্রাহীম তাকে উপুড় ক'রে শুইয়ে দিল।

وَنَادَيْنٰهُ أَنْ يّٰٓإِبْرٰهِيْمُ لا (١٠٤)

১০৪. তখন আমি তাকে ডাক দিলাম, 'হে ইব্রাহীম!

قَدْ صَدَّقْتَ الرُّؤْيَا ج إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (١٠٥)

১০৫. স্বপ্নে দেয়া আদেশ তুমি সত্যে পরিণত করেই ছাড়লে। এভাবেই আমি সৎকর্মশীলদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

১০২। ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنهما) হতে বর্ণিত যে, একদা নাবী (ﷺ) ঘুমিয়েছিলেন, এমনকি তাঁর নিঃশ্বাসের শব্দ হতে লাগল। অতঃপর তিনি নামায আদায় করলেন। সুফ্ইয়ান (রহ.) আবার কখনো বলেছেন, তিনি শুয়ে পড়লেন, এমনকি নাক ডাকার আওয়ায হতে লাগল। অতঃপর দাঁড়িয়ে নামায আদায় করলেন। অন্য সূত্রে সুফইয়ান (রহ.) ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنهما) হতে বর্ণনা করেন, তিনি বলেনঃ আমি এক রাতে আমার খালা মাইমূনাহ (রহ.)-এর নিকট রাত কাটালাম। রাতে নাবী (ﷺ) ঘুম থেকে উঠলেন এবং রাতের কিছু অংশ চলে যাবার পর আল্লাহর রসূল (ﷺ) একটি ঝুলন্ত মশক হতে হালকা ধরনের উযূ করলেন। রাবী 'আম্র (রহ.) বলেন যে, হালকাভাবে ধুলেন, পানি কম ব্যবহার করলেন এবং সলাতে দাঁড়িয়ে গেলেন। ইব্নু 'আব্বাস (رضي الله عنهما) বলেন, তখন তিনি যেভাবে উযূ করেছেন আমিও সেভাবে উযূ করলাম এবং এসে তাঁর বাঁয়ে দাঁড়িয়ে গেলাম। সুফইয়ান (রহ.) কখনো কখনো يسار (বাম) শব্দের স্থলে شمال বলতেন। তারপর আল্লাহর রসূল (ﷺ) আমাকে ধরে তাঁর ডান দিকে দাঁড় করালেন। অতঃপর আল্লাহ্র যতক্ষণ ইচ্ছা ততক্ষণ পর্যন্ত তিনি নামায আদায় করলেন। অতঃপর কাত হলেন আর ঘুমিয়ে পড়লেন, এমনকি তাঁর নাক ডাকালেন। অতঃপর মুয়াযযিন এসে তাঁকে সলাতের কথা জানিয়ে দিলেন। তিনি তার সঙ্গে সলাতের জন্য চললেন এবং নামায আদায় করলেন, কিন্তু উযূ করলেন না। আমরা 'আমর (রহ.)-কে বললামঃ লোকে বলে যে, আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর চোখ ঘুমায় কিন্তু তাঁর অন্তর ঘুমায় না। তখন 'আমর (রহ.) বললেন, 'আমি 'উবায়দ ইব্নু 'উমায়র (রহ.)-কে বলতে শুনেছি, নাবীগণের স্বপ্ন ওয়াহী। অতঃপর তিনি তিলাওয়াত করলেন। يٰبُنَيَّ إِنِّيْٓ أَرٰى فِي الْمَنَامِ أَنِّيْٓ أَذْبَحُكَ "আমি স্বপ্নে দেখেছি যে, তোমাকে কুরবানী করছি।" –বুখারী ১৩৮ [মুসলিম ৭৬৩, তিরমিযী ২৩২, ৪৪২; নাসায়ী ৪৪২, ৮০৬, ১১২১, ১৬২০; আবূ দাউদ ৫৮, ৬১০, ১৩৫৩, ১৩৫৫-১৩৫৭, ১৩৬৪-১৩৬৭, ৫০৪৩; আহমাদ ১৮৮৪, ১৯১৪; মুওয়াত্ত্বা ২৬৭, ১২৬২; দারিমী ১২৫৫]

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ (١٠٦)

১০৬. অবশ্যই এটা ছিল এক সুস্পষ্ট পরীক্ষা।

وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ (١٠٧)

১০৭. আমি এক মহান কুরবাণীর বিনিময়ে পুত্রটিকে ছাড়িয়ে নিলাম।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ ز (١٠٨)

১০৮. আর আমি তাকে পরবর্তীদের মাঝে স্মরণীয় করে রাখলাম।

سَلٰمٌ عَلٰٓى إِبْرَاهِيْمَ (١٠٩)

১০৯. ইব্রাহীমের উপর শান্তি বর্ষিত হোক!

كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (١١٠)

১১০. সৎকর্মশীলদেরকে আমি এভাবেই প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (١١١)

১১১. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাহদের অন্তর্ভুক্ত।

وَبَشَّرْنٰهُ بِإِسْحَاقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (١١٢)

১১২. আর তাকে সুসংবাদ দিয়েছিলাম ইসহাকের– যে ছিল সৎকর্মশীল বান্দাহদের অন্তর্ভুক্ত একজন নবী।

وَبَارَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى إِسْحٰقَ ط وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ ع (١١٣)

১১৩. আর আমি বরকত দিলাম তাকে আর ইসহাককে; (তাদের দু'জনের) বংশধরদের কতক সৎকর্মশীল, আর কতক নিজেদের প্রতি সুস্পষ্ট যুলুমকারী।

وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ج (١١٤)

১১৪. আমি মূসা ও হারূনের প্রতি অনুগ্রহ করেছিলাম।

وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ج (١١٥)

১১৫. আর তাদের দু'জনকে এবং তাদের জাতিকে মহা বিপদ থেকে রক্ষা করেছিলাম।

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ج (١١٦)

১১৬. আর আমি তাদেরকে সাহায্য করেছিলাম, যার ফলে তারাই বিজয়ী হয়েছিল।

وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ج (١١٧)

১১৭. আমি উভয়কে দিয়েছিলাম সুস্পষ্ট কিতাব।

وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ (١١٨)

১১৮. আর তাদের উভয়কে সরল সঠিক পথে পরিচালিত করেছিলাম।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِي الْاٰخِرِيْنَ لا صلے (١١٩)

১১৯. আমি তাদের উভয়কে পরবর্তীদের জন্য স্মরণীয় করে রাখলাম।

سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (١٢٠)

১২০. মূসা ও হারূনের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (١٢١)

১২১. এভাবেই আমি সৎকর্মশীলদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (١٢٢)

১২২. তারা দু'জন ছিল আমার মু'মিন বান্দাহ্দের অন্তর্ভুক্ত।

وَإِنَّ إِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ط (١٢٣)

১২৩. ইলিয়াসও ছিল অবশ্যই রসূলদের একজন।

إِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ أَلَا تَتَّقُوْنَ (١٢٤)

১২৪. স্মরণ কর, যখন সে তার জাতিকে বলেছিল, 'তোমরা কি (আল্লাহ্‌কে) ভয় করবে না?

أَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ أَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ لا (١٢٥)

১২৫. 'তোমরা কি বা'য়াল্‌কে ডাক, আর পরিত্যাগ কর সর্বোত্তম সৃষ্টিকারী

اللهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْأَوَّلِيْنَ (١٢٦)

১২৬. আল্লাহকে, যিনি তোমাদের প্রতিপালক আর তোমাদের পূর্ববর্তী পিতৃপুরুষদেরও প্রতিপালক।

فَكَذَّبُوْهُ فَإِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ لا (١٢٧)

১২৭. কিন্তু তারা তাকে মিথ্যে বলে প্রত্যাখ্যান করল, কাজেই তাদেরকে অবশ্যই (শাস্তির জন্য) হাজির করা হবে।

إِلَّا عِبَادَ اللهِ الْمُخْلَصِيْنَ (١٢٨)

১২৮. কিন্তু আল্লাহ্‌র একনিষ্ঠ বান্দাহদেরকে নয়।

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْاٰخِرِيْنَ لا (١٢٩)

১২৯. আমি তাকে পরবর্তীদের মাঝে স্মরণীয় করে রাখলাম।

سَلٰمٌ عَلٰٓى إِلْ يَاسِيْنَ (١٣٠)

১৩০. ইলয়্যাসীনের প্রতি শান্তি বর্ষিত হোক।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (١٣١)

১৩১. এভাবেই আমি সৎকর্মশীলদেরকে প্রতিদান দিয়ে থাকি।

إِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (١٣٢)

১৩২. সে ছিল আমার মু'মিন বান্দাহ্দের অন্তর্ভুক্ত।

وَإِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ط (١٣٣)

১৩৩. লূতও ছিল অবশ্যই রসূলদের একজন।

إِذْ نَجَّيْنٰهُ وَأَهْلَهٗٓ أَجْمَعِيْنَ لا (١٣٤)

১৩৪. স্মরণ কর যখন আমি তাকে আর তার পরিবারের সকলকে উদ্ধার করেছিলাম

إِلَّا عَجُوْزًا فِي الْغٰبِرِيْنَ (١٣٥)

১৩৫. এক বৃদ্ধা ছাড়া– সে ছিল পিছ-পড়াদের একজন।

ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ (١٣٦)

১৩৬. অতঃপর অন্য সব্বাইকে আমি পুরোপুরি ধ্বংস করে ছিয়েছিলাম।

وَإِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ لا (١٣٧)

১৩৭. তোমরা তো তাদের ধ্বংসপ্রাপ্ত বসতিগুলোর

উপর দিয়ে অবশ্যই চলাচল কর সকালে

وَبِالَّيْلِ ط أَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ع (١٣٨)

১৩৮. ও সন্ধ্যায়, তোমরা কি বুঝবে না?

وَإِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ط (١٣٩)

১৩৯. ইউনুসও ছিল রসূলদের একজন।

إِذْ أَبَقَ إِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ لا (١٤٠)

১৪০. স্মরণ কর, যখন সে পালিয়ে বোঝাই নৌকায় পৌঁছেছিল।

فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ج (١٤١)

১৪১. অতঃপর (দোষী খুঁজার জন্য যে লটারী করা হল সেই) লটারীতে সে অংশ নিল আর তাতে হেরে গেল।

فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ (١٤٢)

১৪২. পরে একটা বড় মাছে তাকে গিলে ফেলল, সে কাজ করেছিল ধিক্কারযোগ্য।

فَلَوْلَا أَنَّهُ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ لا (١٤٣)

১৪৩. সে যদি (অনুতপ্ত হয়ে) আল্লাহ্র তাস্বীহকারী না হত,

لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهِ إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ج (١٤٤)

১৪৪. তাহলে নিশ্চিতই তাকে পুনরুত্থানের দিন পর্যন্ত মাছের পেটে থাকতে হত।

فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ج (١٤٥)

১৪৫. অতঃপর আমি তাকে তৃণলতাহীন প্রান্তরে নিক্ষেপ করলাম, আর সে ছিল রুগ্ন।

وَأَنْبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ج (١٤٦)

১৪৬. অতঃপর আমি তার উপর লাউ-কুমড়া জাতীয় লতা-পাতাযুক্ত একটা গাছ বের করে দিলাম।

وَأَرْسَلْنٰهُ إِلَى مِائَةِ أَلْفٍ أَوْ يَزِيْدُوْنَ ج (١٤٧)

১৪৭. অতঃপর তাকে এক লাখ বা তার চেয়ে বেশি লোকের কাছে পাঠালাম।

فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ إِلَى حِيْنٍ ط (١٤٨)

১৪৮. তারা ঈমান আনল, কাজেই আমি তাদেরকে কিছুকাল পর্যন্ত জীবন উপভোগ করতে দিলাম।

فَاسْتَفْتِهِمْ أَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ الْبَنُوْنَ لا (١٤٩)

১৪৯. এখন তুমি তাদেরকে (অর্থাৎ মক্কার কাফিরদেরকে) জিজ্ঞেস কর 'কন্যাগুলোই কি তোমাদের প্রতিপালকের জন্য, আর তাদের নিজেদের জন্য পুত্রগণ?

১৩৯। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেনঃ (ইউনুস) ইব্নু মাত্তার চেয়ে উত্তম বলে মনে করা কারো জন্য শোভনীয় নয়। –বুখারী ৪৮০৪ [৩৪১২; আহমাদ ৩৬৯৫, ৪১৮৫, ৪২১৫]

أَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ إِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ (١٥٠)

১৫০. নাকি আমি ফেরেশতাদেরকে মেয়ে হিসেবে সৃষ্টি করেছিলাম আর তারা (অর্থাৎ মক্কার কাফিররা সেখানে) হাজির ছিল?

أَلَآ إِنَّهُمْ مِّنْ إِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۙ (١٥١)

১৫১. দেখ, তারা অবশ্যই তাদের মন-গড়া কথা বলে যে,

وَلَدَ اللهُ ۙ وَإِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١٥٢)

১৫২. আল্লাহ সন্তানের জন্ম দিয়েছেন। তারা অবশ্যই মিথ্যেবাদী।

أَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ؕ (١٥٣)

১৫৩. তিনি কি পুত্রদের চেয়ে কন্যাদেরকেই বেশি পছন্দ করেছেন?

مَا لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ (١٥٤)

১৫৪. তোমাদের কী হয়েছে, তোমরা কেমন ফয়সালা করছ?

أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ج (١٥٥)

১৫৫. তাহলে কি তোমরা উপদেশ গ্রহণ করবে না?

أَمْ لَكُمْ سُلْطَانٌ مُّبِيْنٌ ۙ (١٥٦)

১৫৬. (তোমরা যা বলছ তার স্বপক্ষে) তোমাদের কি সুস্পষ্ট দলীল-প্রমাণ আছে?

فَأْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١٥٧)

১৫৭. তোমরা সত্যবাদী হলে নিয়ে এসো তোমাদের কিতাব।

وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ؕ وَلَقَدْ عَلِمَتِ الْجِنَّةُ إِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۙ (١٥٨)

১৫৮. তারা আল্লাহ ও জ্বিন জাতির মাঝে একটা বংশ সম্পর্ক সাব্যস্ত করেছে, অথচ জ্বিনেরা ভালভাবে জানে যে, তাদেরকেও শাস্তির জন্য অবশ্যই হাজির করা হবে।

سُبْحَانَ اللهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۙ (١٥٩)

১৫৯. তারা যা বলে আল্লাহ সে সব (দোষ-ত্রুটি) থেকে পবিত্র।

إِلَّا عِبَادَ اللهِ الْمُخْلَصِيْنَ (١٦٠)

১৬০. কিন্তু আল্লাহ্‌র একনিষ্ঠ বান্দারা এসব কথা বলে না।

فَإِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۙ (١٦١)

১৬১. তোমরা আর তোমরা যাদের ‘ইবাদাত কর তারা

مَآ أَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۙ (١٦٢)

১৬২. আল্লাহ্‌র সঙ্গে সম্পর্ক স্থাপনের ব্যাপারে তোমরা কাউকেও ফিতনায় ফেলতে পারবে না।

إِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ (١٦٣)

১৬৩. পারবে কেবল তাকে, যে জ্বলন্ত আগুনে প্রবেশকারী।

وَمَا مِنَّآ إِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۙ (١٦٤)

১৬৪. আমাদের (ফেরেশতাদের) প্রত্যেকের জন্য একটা নির্দিষ্ট স্থান আছে।

১৬৫. আমরা সারিবদ্ধভাবে দণ্ডায়মান (খেদমত দেয়ার জন্য)।	وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّآفُّوْنَ ج (١٦٥)
১৬৬. আমরা অবশ্যই তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণাকারী।	وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ (١٦٦)
১৬৭. এ লোকেরা তো বলত	وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۙ (١٦٧)
১৬৮. আগের লোকেদের মত আমাদের কাছে যদি কোন কিতাব থাকত	لَوْ اَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۙ (١٦٨)
১৬৯. তাহলে আমরা অবশ্যই আল্লাহ্‌র একনিষ্ঠ বান্দাহ হতাম।	لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ (١٦٩)
১৭০. কিন্তু (এখন কুরআন আসার পর) তারা সেটা অমান্য ও অস্বীকার করল। তারা শীঘ্রই জানতে পারবে (এর পরিণাম)।	فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (١٧٠)
১৭১. আমার প্রেরিত বান্দাহ্‌দের সম্পর্কে আমার এ কথা আগেই বলা আছে যে,	وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا الْمُرْسَلِيْنَ ج صلے (١٧١)
১৭২. তাদেরকে অবশ্যই সাহায্য করা হবে।	اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ص (١٧٢)
১৭৩. আর আমার সৈন্যরাই বিজয়ী হবে	وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ (١٧٣)
১৭৪. কাজেই কিছু সময়ের জন্য তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর।	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۙ (١٧٤)
১৭৫. আর তাদেরকে দেখতে থাক, তারা শীঘ্রই দেখতে পাবে (ঈমান ও কুফুরীর পরিণাম)।	وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ (١٧٥)
১৭৬. তারা কি আমার শাস্তি তরান্বিত করতে চায়?	اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ (١٧٦)
১৭৭. শাস্তি যখন তাদের উঠানে নেমে আসবে, তখন কতই না মন্দ হবে ঐ লোকেদের সকালটি	فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ

১৭১। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেনঃ আল্লাহ্ তা'আলা যখন (সৃষ্টির) কাজ সম্পূর্ণ করলেন, তখন তাঁর নিকটে তাঁর আরশের ওপর লিপিবদ্ধ করে দিলেন, "আমার রহমত আমার ক্রোধের উপর প্রবল হয়েছে।" –বুখারী ৭৪৫৩ [৩১৯৪; মুসলিম ২৭৫১, তিরমিযী ৩৫৪৩, ইবনু মাজাহ ১৮৯, ৪২৯৫; আহমাদ ৭২৫৭, ৭৪৪৮]

ٱلْمُنْذَرِيْنَ (١٧٧)

যাদেরকে সতর্ক করা হয়েছিল!

وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ لا (١٧٨)

১৭৮. কাজেই কিছু সময়ের জন্য তুমি তাদেরকে উপেক্ষা কর।

وَّأَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ (١٧٩)

১৭৯. আর দেখতে থাক, শীঘ্রই তারা দেখতে পাবে (ঈমান ও কুফুরীর পরিণাম)।

سُبْحَانَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ج (١٨٠)

১৮০. সকল সম্মান ও ক্ষমতার রব্ব, তোমার প্রতিপালক পবিত্র ও মহান সে সকল কথাবার্তা হতে যা তারা আরোপ করে।

وَسَلَامٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ج (١٨١)

১৮১. শান্তি বর্ষিত হোক রসূলদের প্রতি।

وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ع (١٨٢)

১৮২. আর যাবতীয় প্রশংসা বিশ্বজগতের প্রতিপালক আল্লাহ্‌র জন্যই।

৩৮. সূরাহ স্ব-দ

سُوْرَةُ صٓ

আয়াতঃ ৮৮, রুকূ‘ঃ ৫, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِي الذِّكْرِ ط (١)

১. স্ব-দ, উপদেশপূর্ণ কুরআনের শপথ- (এটা সত্য)।

بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ (٢)

২. কিন্তু কাফিররা আত্মম্ভরিতা আর বিরোধিতায় নিমজ্জিত।

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ (٣)

৩. তাদের পূর্বে আমি কত মানবগোষ্ঠীকে ধ্বংস করে দিয়েছি, অবশেষে তারা (ক্ষমা লাভের জন্য) আর্তচিৎকার করেছিল, কিন্তু তখন পরিত্রাণ লাভের আর কোন অবকাশই ছিল না।

وَعَجِبُوْا أَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ ز وَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ صلے ج (٤)

৪. আর তারা (এ ব্যাপারে) বিস্ময়বোধ করল যে, তাদের কাছে তাদেরই মধ্য হতে একজন সতর্ককারী এসেছে। কাফিরগণ বলল- 'এটা একটা যাদুকর, মিথ্যুক।

أَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ إِلٰهًا وَّاحِدًا ج صلے إِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ (٥)

৫. সে কি সব ইলাহকে এক ইলাহ বানিয়ে ফেলেছে? এটা বড়ই আশ্চর্য ব্যাপার তো!'

وَانْطَلَقَ الْمَلَأُ مِنْهُمْ أَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا عَلٰٓى اٰلِهَتِكُمْ ج صلے إِنَّ هٰذَا لَشَيْءٌ يُّرَادُ ج (٦)

৬. তাদের প্রধানরা প্রস্থান করে এই ব'লে যে, 'তোমরা চলে যাও আর অবিচলিত চিত্তে তোমাদের ইলাহ্দের পূজায় লেগে থাক। অবশ্যই এ ব্যাপারটির পিছনে অন্য উদ্দেশ্য আছে।

مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِي الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ج صلے إِنْ هٰذَآ إِلَّا اخْتِلَاقٌ ج صلے (٧)

৭. এমন কথা তো আমাদের নিকট অতীতের মিল্লাতগুলো থেকে শুনিনি। এটা শুধু একটা মন-গড়া কথা।

أَأُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا ط بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِيْ ج بَلْ لَّمَّا يَذُوْقُوْا عَذَابِ ط (٨)

৮. আমাদের মধ্যে তার কাছেই কি বাণী পাঠানো হয়েছে?' আসলে তারা আমার বাণীতে সন্দিহান, (তার কারণ) তারা এখনও আমার শাস্তির স্বাদ পায়নি।

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيْزِ الْوَهَّابِ ج (٩)

৯. (রহমতের ভাণ্ডার আছে আমার কাছে, তাথেকে যাকে যতখানি ইচ্ছে আমি দেই) তাদের কাছে কি তোমার প্রতিপালকের রহমতের ভাণ্ডার আছে যিনি মহা প্রতাপশালী, অসীম দাতা?

أَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا قف فَلْيَرْتَقُوْا فِي الْأَسْبَابِ (١٠)

১০. কিংবা আকাশ ও পৃথিবী– এ দু' এর মাঝে যা আছে তার সর্বময় ক্ষমতা কি তাদের আছে? তাহলে তারা বিশ্ব পরিচালনার উচ্চস্থানে উঠে পড়ুক।

جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْأَحْزَابِ (١١)

১১. (আরবের কাফিরদের) সম্মিলিত বাহিনীর এই দলটি এখানেই (অর্থাৎ এই মক্কা নগরীতেই একদিন) পরাজিত হবে।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ ذُو الْأَوْتَادِ لا (١٢)

১২. তাদের পূর্বে নূহের জাতি, 'আদ ও বহু সেনা শিবিরের অধিপতি ফেরাউনও রসূলদেরকে মিথ্যে বলে অস্বীকার করেছিল।

وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّأَصْحٰبُ لْئَيْكَةِ ط أُولٰٓئِكَ الْأَحْزَابُ (١٣)

১৩. আর সামূদ, লূতের জাতি ও আইকাবাসী– এরা ছিল বিরাট বিরাট দল।

إِنْ كُلٌّ إِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ع (١٤)

১৪. এদের কেউই এমন নয় যারা রসূলদেরকে অস্বীকার করেনি। ফলে (তাদের উপর) আমার শাস্তি হয়েছিল অবধারিত।

وَمَا يَنْظُرُ هٰٓؤُلَآءِ إِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ (١٥)

১৫. (আজ) এই লোকেরা তো প্রচণ্ড একটা বিস্ফোরণের অপেক্ষায় আছে, (তা যখন ঘটবে) তাতে কোন বিরাম থাকবে না।

وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ يَوْمِ الْحِسَابِ (١٦)

১৬. এরা বলে, হে আমাদের প্রতিপালক! হিসাবের দিনের আগেই আমাদের প্রাপ্য (শাস্তি) আমাদেরকে তাড়াতাড়ি দিয়ে দিন।

اِصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا دَاوٗدَ ذَا الْأَيْدِ ج إِنَّهٗٓ أَوَّابٌ (١٧)

১৭. এরা যা বলে তাতে তুমি ধৈর্য ধারণ কর, আর আমার বান্দাহ দাঊদের কথা স্মরণ কর, সে ছিল শক্তি-সামর্থ্যের অধিকারী আর বড়ই আল্লাহ্র দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

إِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ يُسَبِّحْنَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِشْرَاقِ لا (١٨)

১৮. আমি পর্বতমালাকে কাজে নিয়োজিত করেছিলাম, তারা তার সঙ্গে সকাল-সন্ধ্যা আমার পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করত।

وَالطَّيْرَ مَحْشُوْرَةً ط كُلٌّ لَّهٗٓ أَوَّابٌ (١٩)

১৯. আর পাখীরা সমবেত হত, সকলেই তার সঙ্গে আল্লাহ অভিমুখী হত (তাসবীহ করার মাধ্যমে)।

وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَيْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ الْخِطَابِ (٢٠)

২০. আমি তার রাজত্বকে সুদৃঢ় করেছিলাম, আর তাকে দিয়েছিলাম জ্ঞান-বুদ্ধি-বিচক্ষণতা আর বিচারকার্য ও কথাবার্তায় উত্তম সিদ্ধান্ত দানের যোগ্যতা।

وَهَلْ أَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ م إِذْ تَسَوَّرُوا الْمِحْرَابَ لا (٢١)

২১. বিবদমান লোকেদের কথা তোমার কাছে পৌঁছেছে কি? যখন তারা প্রাচীর ডিঙ্গিয়ে 'ইবাদাতখানায় আসলো,

إِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا لَا تَخَفْ ج خَصْمَانِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ إِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ (٢٢)

২২. যখন তারা দাঊদের কাছে প্রবেশ করল, তাদেরকে দেখে সে ভয় পেয়ে গেল। তারা বলল– ভয় করবেন না, আমরা বিবাদের দু'পক্ষ, আমাদের একে অপরের উপর যুল্ম করেছে, কাজেই আমাদের মাঝে ন্যায্য বিচার করে দিন, অবিচার করবেন না, আর আমাদেরকে সোজা পথের নির্দেশ দিন।

إِنَّ هٰذَآ أَخِيْ قف لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً

২৩. এ হচ্ছে আমার ভাই, এর আছে নিরানব্বইটা দুম্বী, আর আমার আছে মাত্র একটা দুম্বী; তবুও

১৭-২০। 'আবদুল্লাহ ইব্নু 'আম্র (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) আমাকে বলেছেন, আল্লাহ্র নিকট অধিক পছন্দনীয় সওম হলো দাঊদ ('আ.)-এর নিয়মে সওম পালন করা। তিনি একদিন সওম পালন করতেন আর একদিন বিরত থাকতেন। আল্লাহ্র নিকট সবচেয়ে পছন্দনীয় নামায হলো দাঊদ ('আ.)-এর নিয়মে নামায আদায় করা। তিনি রাতের অর্ধাংশ ঘুমাতেন, রাতের এক তৃতীয়াংশ সলাতে দাঁড়াতেন আর বাকী ষষ্ঠাংশ আবার ঘুমাতেন। –বুখারী ৩৪২০ [১১৩১; মুসলিম ১১৫৯, তিরমিযী ৭৭০, নাসায়ী ১৬৩০, ২৩৪৪, ২৩৮৮-২৩৯৪, ২৩৯৬, ২৩৯৭, ২৩৯৯, ২৪০০-২৪০৩; আবূ দাঊদ ১৩৮৮-১৩৯১, ২৪২৭, ২৪৪৮; ইবনু মাজাহ ১৩৪৬, ১৭১২; আহমাদ ৬৪৪১, ৬৪৫৫; দারিমী ১৭৫২, ৩৪৮৬]

وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ قف فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ (٢٣)

সে বলে– এটি আমার তত্ত্বাবধানে দিয়ে দাও, আর সে যুক্তি-তর্কে আমাকে পরাস্ত করেছে।

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ إِلٰى نِعَاجِهٖ ط وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ط وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا وَّأَنَابَ السجدة (٢٤)

২৪. দাঊদ বলল– তোমার (মাত্র) একটি দুম্বীকে তার দুম্বীর পালে যুক্ত করার দাবী করে (সে) তোমার প্রতি যুল্ম করেছে। শরীকদের অধিকাংশই সত্যিই পরস্পরের প্রতি বাড়াবাড়ি করে, কিন্তু যারা ঈমান আনে আর সৎ 'আমাল করে তারা ব্যতীত, এদের সংখ্যা খুবই কম। দাঊদ বুঝতে পারল আমি তাকে পরীক্ষা করেছি। তখন সে তার প্রতিপালকের কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করল, সাজদায় লুটিয়ে পড়ল ও তাঁর পানে ফিরে আসল।(সেজদা)

فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ط وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ (٢٥)

২৫. তখন আমি তার সে অপরাধ ক্ষমা করে দিলাম। তার জন্য আমার কাছে অবশ্যই আছে নৈকট্য আর উত্তম প্রত্যাবর্তনস্থল।

يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ ط إِنَّ الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ع (٢٦)

২৬. হে দাঊদ! আমি তোমাকে পৃথিবীতে (আমার) প্রতিনিধি করেছি, কাজেই তুমি মানুষের মধ্যে ন্যায়পরায়ণতার সঙ্গে শাসন-বিচার পরিচালনা কর, এবং প্রবৃত্তির অনুসরণ করো না। কেননা, তা তোমাকে আল্লাহ্‌র পথ হতে বিচ্যুত করে ফেলবে। যারা আল্লাহ্‌র পথ থেকে বিচ্যুত হয়, তাদের জন্য আছে কঠিন 'আযাব, কারণ তারা হিসাব-নিকাশের দিনকে ভুলে গেছে।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا بَاطِلًا ط ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ج فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ط (٢٧)

২৭. আমি আকাশ, পৃথিবী ও এ দু' এর মাঝে যা আছে তা অনর্থক সৃষ্টি করিনি। এ রকম ধারণা তো কাফিররা করে, কাজেই কাফিরদের জন্য আছে আগুনের দুর্ভোগ।

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْأَرْضِ ز أَمْ نَجْعَلُ الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ (٢٨)

২৮. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে তাদেরকে কি আমি ওদের মত করব যারা দুনিয়াতে বিপর্যয় সৃষ্টি করে? আমি মুত্তাক্বীদের কি অপরাধীদের মত গণ্য করব?

كِتٰبٌ أَنْزَلْنٰهُ إِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُوا الْأَلْبَابِ (٢٩)

২৯. এটি একটি কল্যাণময় কিতাব তোমার কাছে অবতীর্ণ করেছি যাতে তারা এর আয়াতগুলোর প্রতি চিন্তা-ভাবনা করে, আর জ্ঞান-বুদ্ধিসম্পন্ন লোকেরা উপদেশ গ্রহণ করে থাকে।

وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ط نِعْمَ الْعَبْدُ ط إِنَّهٗٓ أَوَّابٌ ط (٣٠)

৩০. আমি দাউদের জন্য দান করেছিলাম সুলাইমান। কতই না উত্তম বান্দাহ! বার বার (অনুশোচনাভরে) আল্লাহ্‌র দিকে প্রত্যাবর্তনকারী।

إِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ لا (٣١)

৩১. যখন তার সামনে সন্ধ্যাকালে উৎকৃষ্ট জাতের দ্রুতগামী অশ্ব উপস্থিত করা হল,

فَقَالَ إِنِّيْٓ أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّيْ ج حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ قف (٣٢)

৩২. তখন সে বলল– আমি আমার প্রতিপালকের স্মরণ হতে ধন-সম্পদকে বেশি ভালবেসে ফেলেছি, এমনকি সূর্য (রাতের) পর্দায় লুকিয়ে গেছে।

رُدُّوْهَا عَلَيَّ ط فَطَفِقَ مَسْحًاۢ بِالسُّوْقِ وَالْأَعْنَاقِ (٣٣)

৩৩. (সে তার সন্ধ্যাকালীন 'ইবাদাত সম্পন্ন করে (বলল) ওগুলোকে আমার কাছে আবার এনে হাজির কর। তখন সে তাদের পায়ে ও গলায় হাত বুলাতে লাগল।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَأَلْقَيْنَا عَلٰى كُرْسِيِّهٖ جَسَدًا ثُمَّ أَنَابَ (٣٤)

৩৪. আমি সুলাইমানকে পরীক্ষা করলাম (তার রাজত্ব কেড়ে নিয়ে) আর তার সিংহাসনের উপর রাখলাম একটি দেহ (শয়তানকে, কাজেই সুলাইমান কিছু সময়ের জন্য তার রাজত্ব হারাল) অতঃপর সে (আনুগত্য নিয়ে অনুশোচনা করে আল্লাহর পানে) প্রত্যাবর্তন করল (আর আল্লাহ্‌র অনুগ্রহে ফিরে পেল তার রাজত্ব ও সিংহাসন)।

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِأَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ج إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ (٣٥)

৩৫. সে বলল– হে আমার প্রতিপালক! আমাকে ক্ষমা কর, আর আমাকে এমন রাজ্য দান কর যা আমার পরে আর কারো জন্য শোভনীয় হবে না। তুমি হলে পরম দাতা।

৩৫। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেছেন, গতরাতে অবাধ্য জিনের একটি দৈত্য আমার কাছে এসেছিল অথবা এ ধরনের কিছু কথা তিনি বললেন, আমার নামায নষ্ট করার উদ্দেশে। তখন আল্লাহ আমাকে তার উপর আধিপত্য দিলেন। আমি ইচ্ছা করলাম, মসজিদের খুঁটিগুলোর একটির সঙ্গে ওকে বেঁধে রাখতে, যাতে ভোরে তোমরা সকলে ওটা দেখতে পাও। তখন আমার ভাই সুলায়মান ('আ.)-এর দু'আ স্মরণ হল, رَبِّ اغْفِرْ لِيْ

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِأَمْرِهٖ رُخَآءً حَيْثُ أَصَابَ ۙ (٣٦)

৩৬. অতঃপর বাতাসকে তার অধীন করে দিলাম, তার আদেশে তা মৃদুমন্দ গতিতে প্রবাহিত হত, যেখানে সে ইচ্ছে করত।

وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّآءٍ وَّغَوَّاصٍ ۙ (٣٧)

৩৭. আর শয়ত্বানদেরকেও (তার বশীভূত করে দিলাম), সব ছিল নির্মাতা ও ডুবুরী।

وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْأَصْفَادِ (٣٨)

৩৮. আর অন্যদেরকেও যারা ছিল শৃঙ্খলে আবদ্ধ।

هٰذَا عَطَآؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ (٣٩)

৩৯. (আমি তাকে বললাম) এ সব আমারই দান। এথেকে তুমি যাকে ইচ্ছে দাও, কিংবা (না দিয়ে) নিজের কাছে রেখে দাও, তোমাকে কোন হিসেব দিতে হবে না।

وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ مَاٰبٍ ع (٤٠)

৪০. তার জন্য আমার কাছে অবশ্যই আছে নৈকট্য আর উত্তম প্রত্যাবর্তনস্থল।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ أَيُّوْبَ ۘ إِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ أَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ط (٤١)

৪১. স্মরণ কর আমার বান্দা আইয়ূবের কথা, যখন সে তার প্রতিপালককে ডেকে বলেছিল– শয়ত্বান আমাকে কষ্ট আর 'আযাবে ফেলেছে (অর্থাৎ আমার ধৈর্যচ্যুতি ঘটিয়ে আমাকে আল্লাহ্‌র অকৃতজ্ঞ বান্দাহ বানানোর জন্য কুমন্ত্রণা দিয়ে চলেছে)।

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ج هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ وَّشَرَابٌ (٤٢)

৪২. (আমি তাকে নির্দেশ দিলাম) তুমি তোমার পা দিয়ে যমীনে আঘাত কর, এই তো ঠাণ্ডা পানি, গোসলের জন্য আর পানের জন্য।

وَوَهَبْنَا لَهٗٓ أَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِّنَّا وَذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبَابِ (٤٣)

৪৩. আমি তাকে দান করলাম তার পরিবার-পরিজন আর তাদের সাথে তাদের মত আরো, আমার রহমত স্বরূপ আর জ্ঞান-বুদ্ধিসম্পন্ন লোকেদের জন্য উপদেশ স্বরূপ।

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ط إِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ط نِعْمَ الْعَبْدُ ط إِنَّهٗٓ أَوَّابٌ (٤٤)

৪৪. (আমি তাকে বললাম) কিছু ঘাস লও আর তা দিয়ে আঘাত কর, (আর তোমার স্ত্রীকে একশত বেত্রাঘাত করার শপথ) ভঙ্গ করো না। আমি তাকে পেয়েছিলাম পূর্ণ ধৈর্যশীল, কতই না উত্তম বান্দাহ, প্রকৃতই (আল্লাহ) অভিমুখী।

وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا يَنْۢبَغِيْ لِأَحَدٍ مِّنْ بَعْدِيْ "হে আমার প্রতিপালক! আমাকে ক্ষমা কর এবং আমাকে দান কর এমন এক রাজ্য যার অধিকারী আমি ব্যতীত আর কেউ না হয়।" রাবী রাওহ্ বলেন, এরপর নাবী (ﷺ) তাকে অপমান করে তাড়িয়ে দেন। –বুখারী ৪৮০৮ [৪৬১; মুসলিম ৫৪১, আহমাদ ৭৯০৯]

وَاذْكُرْ عِبٰدَنَآ إِبْرٰهِيمَ وَإِسْحٰقَ وَيَعْقُوبَ أُولِي الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ (٤٥)

৪৫. স্মরণ কর আমার বান্দাহ ইব্‌রাহীম, ইসহাক্ব ও ইয়া'কূব-এর কথা– তারা ছিল শক্তি ও সূক্ষ্মদর্শিতার অধিকারী।

إِنَّآ أَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ ج (٤٦)

৪৬. বস্তুত আমি তাদেরকে বৈশিষ্ট্যমণ্ডিত করেছিলাম এক বিশেষ বৈশিষ্ট্যে– তা হল পরলোকের স্মরণ।

وَإِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ط (٤٧)

৪৭. আমার দৃষ্টিতে তারা ছিল আমার বাছাইকৃত উত্তম বান্দাহদের অন্তর্ভুক্ত।

وَاذْكُرْ إِسْمٰعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ط وَكُلٌّ مِنَ الْأَخْيَارِ ط (٤٨)

৪৮. স্মরণ কর ইসমাঈল, ইয়াসা'আ ও যুলকিফলের কথা– এরা সবাই ছিল উত্তমদের মধ্যে গণ্য।

هٰذَا ذِكْرٌ ط وَإِنَّ لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ لا (٤٩)

৪৯. এ হচ্ছে স্মৃতিচারণ, মুত্তাক্বীদের জন্য অবশ্যই আছে উত্তম প্রত্যাবর্তন স্থল।

جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْأَبْوَابُ ج (٥٠)

৫০. চিরস্থায়ী জান্নাত, তাদের জন্য উন্মুক্ত দ্বার।

مُتَّكِـِٔينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ وَّشَرَابٍ (٥١)

৫১. সেখানে তারা হেলান দিয়ে বসবে, চাইবে প্রচুর ফলমূল আর পানীয়।

وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ أَتْرَابٌ (٥٢)

৫২. আর তাদের পাশে থাকবে সতীসাধ্বী সংযতনয়না সমবয়স্কা রুমণীগণ।

هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ (٥٣)

৫৩. এসব হল যা তোমাদেরকে হিসাবের দিনে দেয়ার ওয়া'দা দেয়া হচ্ছে।

إِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهُ مِنْ نَّفَادٍ ج صلے (٥٤)

৫৪. এ হল আমার দেয়া রিয্‌ক– যা কক্ষনো ফুরাবে না।

هٰذَا ط وَإِنَّ لِلطّٰغِينَ لَشَرَّ مَاٰبٍ لا (٥٥)

৫৫. সত্য বটে, এ সব (মুত্তাক্বীদের জন্য); আর আল্লাহদ্রোহীদের জন্য অবশ্যই আছে নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তনস্থল।

جَهَنَّمَ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ الْمِهَادُ (٥٦)

৫৬. জাহান্নাম, সেখানে তারা জ্বলবে, কতই না নিকৃষ্ট বিশ্রামস্থল!

هٰذَا لا فَلْيَذُوقُوهُ حَمِيمٌ وَّغَسَّاقٌ لا (٥٧)

৫৭. সত্য বটে, এসব (আল্লাহদ্রোহীদের জন্য), কাজেই সেখানে তারা পান করুক ফুটন্ত পানি ও রক্ত পুঁজ।

وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ط (٥٨)

৫৮. এ ধরনের আরো অন্যান্য (শাস্তি) যা তাদের জন্য যথোপযুক্ত।

هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ج لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ط إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ (٥٩)

৫৯. (নিজেদের একদল অনুসারীকে জাহান্নামের দিকে আসতে দেখে জাহান্নামীরা বলাবলি করবে) এই তো এক বাহিনী তোমাদের সঙ্গে এসে প্রবেশ করছে। তাদের জন্য নেই কোন সংবর্ধনা, তারা আগুনে জ্বলবে।

قَالُوْا بَلْ أَنْتُمْ قف لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ط أَنْتُمْ قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ج فَبِئْسَ الْقَرَارُ (٦٠)

৬০. অনুসারীরা বলবে– না, বরং তোমরাই (জ্বলে মর), তোমাদের জন্যও নেই কোন অভিনন্দন। আমাদের জন্য এ ব্যবস্থা আগে তোমরাই করে দিয়েছ। কতই না নিকৃষ্ট এই আবাসস্থল!

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ (٦١)

৬১. তারা বলবে– হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের জন্য যে এ ব্যবস্থা এনে দিয়েছে তাকে জাহান্নামে দ্বিগুণ শাস্তি দাও।

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْأَشْرَارِ ط (٦٢)

৬২. তারা বলবে– ব্যাপার কী! আমরা যে লোকগুলোকে (দুনিয়ায়) খুব খারাপ বলে গণ্য করতাম তাদেরকে তো দেখছি না।

أَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْأَبْصَارُ (٦٣)

৬৩. আমরা কি তাদের সঙ্গে অযথাই ঠাট্টা-বিদ্রূপ করতাম, না তাদের ব্যাপারে আমাদের দৃষ্টিভ্রম ঘটেছে? (অর্থাৎ তারা হয়ত জাহান্নামেই আছে কিন্তু আমাদের চোখ তাদেরকে দেখতে পাচ্ছে না)

إِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ع (٦٤)

৬৪. এটা নিশ্চিত সত্য, জাহান্নামের বাসিন্দাদের এই বাগবিতণ্ডা।

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا مُنْذِرٌ ق صلے وَّمَا مِنْ إِلٰهٍ إِلَّا اللهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ج (٦٥)

৬৫. বল- আমি তো কেবল একজন সতর্ককারী, সার্বভৌম অপ্রতিরোধ্য এক ও একক আল্লাহ ছাড়া সত্য কোন ইলাহ নেই।

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ (٦٦)

৬৬. যিনি আকাশ ও পৃথিবী এবং এ দু'এর মাঝে যা আছে সব কিছুর প্রতিপালক– যিনি মহা পরাক্রমশালী, বড়ই ক্ষমাশীল।

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ لا (٦٧)

৬৭. বল, এটা এক ভয়ানক সংবাদ।

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ (٦٨)

৬৮. যাথেকে তোমরা মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছ।

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍۢ بِالْمَلَإِ الْأَعْلٰى إِذْ يَخْتَصِمُوْنَ (٦٩)

৬৯. (বল) আমি ঊর্ধ্ব জগতের কোন জ্ঞান রাখি না যখন তারা (অর্থাৎ ফেরেশতারা) বাদানুবাদ করছিল।

৭০. আমার কাছে ওয়াহী করা হয়েছে যে, আমি কেবল একজন স্পষ্ট সতর্ককারী।

إِنْ يُّوْحٰٓى إِلَيَّ إِلَّآ أَنَّمَآ أَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (٧٠)

৭১. স্মরণ কর, যখন তোমার প্রতিপালক ফেরেশতাদেরকে বললেন- আমি কাদা থেকে মানুষ সৃষ্টি করতে যাচ্ছি।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّيْ خَالِقٌۢ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ (٧١)

৭২. আমি যখন তাকে সঠিকভাবে বানিয়ে ফেলব আর তার ভিতরে আমার রূহ ফুঁকে দেব, তখন তোমরা তার সামনে সেজদায় পড়ে যাবে।

فَإِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ (٧٢)

৭৩. তখন ফেরেশতারা সবাই সেজদা করল।

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُوْنَ ۙ (٧٣)

৭৪. ইবলীস ছাড়া। সে অহঙ্কার করল আর কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেল।

إِلَّآ إِبْلِيْسَ ط اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ (٧٤)

৭৫. আল্লাহ বললেন- হে ইবলীস! আমি যাকে নিজ হাতে সৃষ্টি করলাম তাকে সেজদা করতে কিসে তোমাকে নিষেধ করল? তুমি কি দম্ভ দেখালে, না তুমি খুব উচ্চ মানের অধিকারী হয়েছ?

قَالَ يٰٓإِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ط أَسْتَكْبَرْتَ أَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ (٧٥)

৭৬. সে বলল- আমি তার চেয়ে উত্তম, আপনি আমাকে আগুন থেকে সৃষ্টি করেছেন আর তাকে সৃষ্টি করেছেন মাটি থেকে।

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ط خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ (٧٦)

৭৭. তিনি বললেন- তাহলে তুমি এখান থেকে বেরিয়ে যাও, তুমি হলে লাঞ্ছিত, বিতাড়িত।

قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيْمٌ صلے ۙ (٧٧)

৭৮. বিচার দিবস পর্যন্ত তোমার উপর থাকল আমার অভিশাপ।

وَّإِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ إِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ (٧٨)

৭৯. সে বলল- হে আমার প্রতিপালক! তাহলে আমাকে পুনরুত্থানের দিন পর্যন্ত সময় দিন।

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِيْٓ إِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (٧٩)

৮০. তিনি বললেন- তোমাকে সময় দেয়া হল,

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ۙ (٨٠)

৮১. সেদিন পর্যন্ত যার (আগমন) কাল সুনির্ধারিত।

إِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ (٨١)

৮২. সে বলল- আপনার ক্ষমতার কসম! আমি ওদের সব্বাইকে অবশ্যই পথভ্রষ্ট করব।

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۙ (٨٢)

৮৩. তাদের মধ্যে আপনার একনিষ্ঠ বান্দাদের বাদে।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ (٨٣)

قَالَ فَالْحَقُّ ز وَالْحَقَّ أَقُوْلُ ج (٨٤)

৮৪. তিনি বললেন– এটাই সত্য, আমি সত্যই বলি যে,

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ أَجْمَعِيْنَ (٨٥)

৮৫. আমি তোমাকে আর তাদের (অর্থাৎ মানুষদের) মধ্যে যারা তোমাকে অনুসরণ করবে তাদের সব্বাইকে দিয়ে অবশ্যই জাহান্নাম পূর্ণ করব।

قُلْ مَآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَّمَآ أَنَا مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ (٨٦)

৮৬. বল– আমি এর (অর্থাৎ সত্য-সঠিক পথের দিকে ডাকার) জন্য তোমাদের কাছে পারিশ্রমিক চাই না, আর আমি কোন ধোঁকাবাজ নই।

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ (٨٧)

৮৭. এটা তো বিশ্বজগতের জন্য কেবল উপদেশ বাণী।

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِيْنٍ ع (٨٨)

৮৮. কিছুকাল পরেই এর সংবাদ তোমরা অবশ্য অবশ্যই জানতে পারবে।

৩৯. সূরাহ আয্-যুমার

سُوْرَةُ الزُّمَرِ

আয়াতঃ ৭৫, রুকূ'ঃ ৮, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ (١)

১. এ কিতাব নাযিল হয়েছে মহাপরাক্রমশালী মহাবিজ্ঞানী আল্লাহ্‌র নিকট হতে।

إِنَّآ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ اللهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ط (٢)

২. আমি তোমার প্রতি এ কিতাব অবতীর্ণ করেছি সত্যতা সহকারে, (এতে নেই কোন প্রকার মিথ্যে) কাজেই আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর দ্বীনকে (অর্থাৎ আনুগত্য, হুকুম পালন, দাসত্ব ও গোলামীকে) একমাত্র তাঁরই জন্য নির্দিষ্ট করে।

৮৬। মাসরূক (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু মাস'উদ (রাঃ)-এর কাছে গেলাম। তিনি বললেন, হে লোকসকল! যে ব্যক্তি কোন বিষয়ে অবগত সে তা বর্ণনা করবে। আর যে না জানে, তার বলা উচিত, আল্লাহ্ই ভাল জানেন। কেননা অজানা বিষয় সম্বন্ধে আল্লাহ্ই ভাল জানেন, এ কথা বলাও জ্ঞানের নিদর্শন। আল্লাহ তাঁর নাবী (ﷺ) -কে বলেছেন, 'বল, এর (কুরআন বা তাওহীদ প্রচারের) জন্য আমি তোমাদের কাছে কোন প্রতিদান চাই না এবং আমি বানোয়াটকারীদের অন্তর্ভুক্ত নই।" –বুখারী ৪৮০৯ [১০০৭; মুসলিম ২৭৯৮, তিরমিযী ৩২৫৪, আহমাদ ৩৬০২, ৪০৯৩, ৪১৯৪]

أَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ط وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ م مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ إِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ط إِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ط ه إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ كَفَّارٌ (٣)

৩. জেনে রেখ, খালেস দ্বীন কেবল আল্লাহ্রই জন্য। যারা তাঁকে বাদ দিয়ে অন্যদেরকে অভিভাবক বানিয়ে নিয়েছে তারা বলে– আমরা তাদের 'ইবাদাত একমাত্র এ উদ্দেশ্যেই করি যে, তারা আমাদেরকে আল্লাহ্র নৈকট্যে পৌঁছে দেবে। (সত্য পথ থেকে সরে গিয়ে মিথ্যে পথ ও মতের জন্ম দিয়ে) তারা যে মতভেদ করছে, আল্লাহ্ তার চূড়ান্ত ফয়সালা করে দেবেন। যে মিথ্যেবাদী ও কাফির আল্লাহ তাকে সঠিক পথ দেখান না।

لَوْ أَرَادَ اللّٰهُ أَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ لا سُبْحٰنَهٗ ط هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ (٤)

৪. আল্লাহ সন্তান গ্রহণ করার ইচ্ছে করলে তিনি তার সৃষ্টিকুল থেকে নিজ পছন্দ মত বেছে নিতেন। এসব থেকে তিনি পবিত্র। অপ্রতিরোধ্য ক্ষমতার অধিকারী তিনি এক ও একক আল্লাহ্।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ ج يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ط كُلٌّ يَّجْرِيْ لِأَجَلٍ مُّسَمًّى ط أَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ (٥)

৫. তিনি আকাশ ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছেন যথাযথভাবে। রাত দিনকে ঢেকে নেয়, আর দিন ঢেকে নেয় রাতকে। তিনিই নিয়ন্ত্রণ করেন সুরুজ আর চাঁদকে, প্রত্যেকেই চলছে নির্দিষ্ট সময় অনুসারে। জেনে রেখ, তিনি মহাপরাক্রমশালী, পরম ক্ষমাশীল (মহাশক্তিধর হওয়া সত্ত্বেও বার বার ক্ষমা করেন)।

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَأَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْأَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ أَزْوَاجٍ ط يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ أُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ط لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج فَأَنّٰى تُصْرَفُوْنَ (٦)

৬. তিনি তোমাদেরকে একই ব্যক্তি থেকে সৃষ্টি করেছেন। অতঃপর তার থেকে তিনি তার জুড়ি সৃষ্টি করেছেন। তিনি তোমাদের জন্য বানিয়েছেন আট গৃহপালিত পশু (চার) জোড়ায় জোড়ায়। তিনি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন তোমাদের মায়েদের গর্ভে, এক এক পর্যায়ে এক এক আকৃতি দিয়ে, তিন তিনটি অন্ধকার আবরণের মধ্যে। এই হল তোমাদের প্রতিপালক, সর্বময় কর্তৃত্ব তাঁরই, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, কাজেই (ভুয়ো ক্ষমতার অধিকারী, দাম্ভিক ও স্বার্থান্বেষী মহল কর্তৃক) তোমাদেরকে কোন্ দিকে ফিরিয়ে নেয়া হচ্ছে?

إِنْ تَكْفُرُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ قف وَلَا

৭. তোমরা যদি কুফ্রী কর তবে (জেনে রেখ), আল্লাহ্ তোমাদের মুখাপেক্ষী নন। তিনি তাঁর

يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَإِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ۗ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ۗ ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۗ إِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٧)

বান্দাহদের জন্য কুফরী আচরণ পছন্দ করেন না, তোমরা যদি কৃতজ্ঞ হও, তবে তোমাদের জন্য তা তিনি পছন্দ করেন। একের (পাপের) বোঝা অন্যে বহন করবে না। শেষমেষ তোমাদেরকে তোমাদের পালনকর্তার কাছেই ফিরে যেতে হবে, তখন তিনি তোমাদেরকে জানিয়ে দেবেন তোমরা যা করছিলে। তিনি তো অন্তরের খবর পর্যন্ত জানেন।

وَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا إِلَيْهِ ثُمَّ إِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْٓا إِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ أَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۗ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ إِنَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ النَّارِ (٨)

৮. দুঃখ-মুসিবত যখন মানুষকে স্পর্শ করে তখন সে তার প্রতিপালককে ডাকতে থাকে তাঁর প্রতি বড়ই একনিষ্ঠ হয়ে। অতঃপর তিনি যখন নিজ পক্ষ থেকে অনুগ্রহ দিয়ে তাকে ধন্য করেন, তখন পূর্বে সে যেজন্য তাঁকে ডেকেছিল তা ভুলে যায় এবং অন্যদেরকে আল্লাহ্‌র সমকক্ষ দাঁড় করায় তাঁর পথ থেকে পথভ্রষ্ট করার জন্য। বলে দাও, কুফুরীর জীবন কিছুকাল ভোগ করে নাও, (অতঃপর) তুমি তো হবে জাহান্নামের অধিবাসী। (এ ব্যক্তি ভাল, না ঐ ব্যক্তি)

أَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ اللَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۗ إِنَّمَا يَتَذَكَّرُ أُولُوا الْأَلْبَابِ ع (٩)

৯. যে রাত্রির বিভিন্ন প্রহরে সেজদা ও দণ্ডায়মান অবস্থায় বিনয় ও শ্রদ্ধা-ভক্তি প্রকাশ করে, আখিরাতকে ভয় করে, আর তার প্রতিপালকের অনুগ্রহ প্রত্যাশা করে? বল– যারা জানে আর যারা জানে না, তারা কি সমান? বিবেক-বুদ্ধিসম্পন্ন লোকেরাই কেবল উপদেশ গ্রহণ করে থাকে।

قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۗ لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ۗ وَأَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ۗ إِنَّمَا يُوَفَّى الصّٰبِرُوْنَ أَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ (١٠)

১০. বল, হে ঈমানদারগণ! তোমরা তোমাদের প্রতিপালককে ভয় কর। এ দুনিয়ায় যারা ভাল কাজ করবে, তাদের জন্য আছে কল্যাণ। আল্লাহ্‌র যমীন প্রশস্ত (এক এলাকায় 'ইবাদাত-বন্দেগী করা কঠিন হলে অন্যত্র চলে যাও)। আমি ধৈর্যশীলদেরকে তাদের পুরস্কার অপরিমিতভাবে দিয়ে থাকি।

قُلْ إِنِّيْٓ أُمِرْتُ أَنْ أَعْبُدَ اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۙ (١١)

১১. বল– আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করতে তাঁর আনুগত্যে একনিষ্ঠ হয়ে।

وَأُمِرْتُ لِأَنْ أَكُوْنَ أَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ (١٢)

১২. আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে আমি যেন

সর্বাগ্রে মুসলিম হই।

قُلْ إِنِّيْٓ أَخَافُ إِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ (١٣)

১৩. বল– আমি যদি আমার প্রতিপালকের অবাধ্য হই, তবে আমি ভয়ঙ্কর দিনের শাস্তির ভয় করি।

قُلِ اللّٰهَ أَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ج لا (١٤)

১৪. বল– আমি 'ইবাদাত করি আল্লাহ্‌র বিশুদ্ধভাবে তাঁর প্রতি আমার আনুগত্যের মাধ্যমে।

فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ط قُلْ إِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا أَنْفُسَهُمْ وَأَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط أَلَا ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ (١٥)

১৫. অতএব, তাঁকে বাদ দিয়ে তোমরা যার ইচ্ছে 'ইবাদাত কর (এতে আল্লাহ্‌র কোন ক্ষতি হবে না, ক্ষতি তোমাদেরই হবে)। বল– যারা নিজেদেরকে আর নিজেদের পরিবার-পরিজনকে ক্বিয়ামতের দিনে ক্ষতিগ্রস্ত করে, তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত। জেনে রেখ, এটাই হল স্পষ্ট ক্ষতি।

لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ط ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ عِبَادَهٗ ط يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ (١٦)

১৬. তাদের উপরেও থাকবে আগুনের স্তর, আর নীচেও থাকবে (আগুনের) স্তর। এ রকম পরিণতির ব্যাপারে আল্লাহ তাঁর বান্দাহদেরকে সাবধান করছেন। কাজেই হে আমার বান্দাহ্‌রা! আমাকে ভয় কর।

وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ أَنْ يَّعْبُدُوْهَا وَأَنَابُوْٓا إِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ج فَبَشِّرْ عِبَادِ لا (١٧)

১৭. যারা তাগূতের দাসত্ব থেকে দূরে থাকে, আর আল্লাহ্‌র অভিমুখী হয়, সুসংবাদ তাদেরই জন্য। কাজেই সুসংবাদ দাও আমার বান্দাদেরকে

الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ أَحْسَنَهٗ ط أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ وَأُولٰٓئِكَ هُمْ أُولُوا الْأَلْبَابِ (١٨)

১৮. যারা মনোযোগ দিয়ে কথা শুনে আর এর উত্তমগুলো মেনে চলে। ওরাই হল তারা আল্লাহ যাদেরকে সৎপথে পরিচালিত করেন আর ওরাই হল জ্ঞান-বুদ্ধিসম্পন্ন।

أَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ط أَفَأَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ج (١٩)

১৯. শাস্তির ফয়সালা যার উপর অবধারিত হয়ে গেছে, যে আছে জাহান্নামের আগুনে তুমি কি তাকে রক্ষা করতে পার?

لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ لا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ط وَعْدَ اللّٰهِ ط لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ (٢٠)

২০. কিন্তু যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে, তাদের জন্য রয়েছে প্রাসাদের পর প্রাসাদ, যেগুলোর উপর নির্মাণ করা হয়েছে প্রাসাদ আর প্রাসাদ, যার নিচ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। এটা আল্লাহ্‌র ও'য়াদা, আল্লাহ ওয়াদা ভঙ্গ করেন না।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ أَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَلَكَهٗ يَنَابِيعَ فِي الْأَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا أَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرَاهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبَابِ ع(٢١)

২১. তুমি কি দেখ না আল্লাহ আকাশ হতে বৃষ্টি বর্ষণ করেন আর তা ঝর্ণা ধারায় যমীনে প্রবাহিত করেন, অতঃপর তা দিয়ে বিচিত্র রঙের ফসল উৎপন্ন করেন, অতঃপর তা শুকিয়ে যায়, তখন তোমরা তা হলুদ বর্ণ দেখ, শেষ পর্যন্ত তিনি ওগুলোকে খড়-ভুষিতে পরিণত করেন। এতে জ্ঞান-বুদ্ধিসম্পন্ন লোকেদের জন্য অবশ্যই নসীহত আছে।

أَفَمَنْ شَرَحَ اللهُ صَدْرَهٗ لِلْإِسْلَامِ فَهُوَ عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ط فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللهِ ط أُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ (٢٢)

২২. ইসলামের জন্য আল্লাহ যার বক্ষ উন্মোচিত করে দিয়েছেন, যার ফলে সে তার প্রতিপালকের দেয়া আলোর উপর রয়েছে (সে কি তার সমান যে কঠোর হৃদয়ের)? ধ্বংস তাদের জন্য যাদের অন্তর আল্লাহ স্মরণের ব্যাপারে আরো শক্ত হয়ে গেছে। তারা আছে স্পষ্ট বিভ্রান্তিতে।

اَللهُ نَزَّلَ أَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا مَّثَانِيَ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ج ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ وَقُلُوْبُهُمْ إِلٰى ذِكْرِ اللهِ ط ذٰلِكَ هُدَى اللهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ (٢٣)

২৩. আল্লাহ সর্বোত্তম বাণী অবতীর্ণ করেছেন– এমন কিতাব যা সামঞ্জস্যপূর্ণ, যার বিষয়াবলী পুনরাবৃত্তি করা হয়েছে। যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করে তাদের গা এতে শিউরে উঠে। তখন তাদের দেহ-মন আল্লাহ্‌র স্মরণের প্রতি বিনম্র হয়ে যায়। এ হল আল্লাহ্‌র হিদায়াত, যাকে ইচ্ছে তদ্দ্বারা হিদায়াত করেন। আর আল্লাহ যাকে পথহারা করেন, তার কোন পথপ্রদর্শক নেই।

أَفَمَنْ يَّتَّقِيْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ (٢٤)

২৪. ক্বিয়ামতের দিন যে ব্যক্তি তার (হাত পা বাঁধা থাকার কারণে) মুখমণ্ডলের সাহায্যে ভয়ানক 'আযাবের আঘাত ঠেকাতে চাইবে (সে কি তার মত যে এসব থেকে নিরাপদ)? যালিমদেরকে বলা হবে– তোমরা যা অর্জন করেছ তার স্বাদ গ্রহণ কর।

كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَأَتٰىهُمُ الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ (٢٥)

২৫. তাদের পূর্ববর্তীরাও (নুবুওয়াতকে) অস্বীকার করেছিল। অতঃপর তাদের কাছে এমন দিক থেকে 'আযাব এসেছিল যা তারা একটু টেরও পায়নি।

فَأَذَاقَهُمُ اللهُ الْخِزْيَ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَلَعَذَابُ الْأٰخِرَةِ أَكْبَرُ م لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (٢٦)

২৬. কাজেই আল্লাহ তাদেরকে দুনিয়ার জিন্দেগিতেই লাঞ্ছনার স্বাদ ভোগ করালেন। আর অবশ্যই আখিরাতের শাস্তি সবচেয়ে কঠিন। তারা যদি জানত!

وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ج (٢٧)

২৭. আমি এ কুরআনে মানুষের জন্য সব রকমের দৃষ্টান্ত ও উপমা উপস্থিত করেছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِيْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (٢٨)

২৮. আরবী ভাষায় (অবতীর্ণ) কুরআন, এতে নেই কোন বক্রতা (পেচানো কথা), যাতে তারা (অন্যায় অপকর্ম হতে) বেঁচে চলতে পারে।

ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ مُتَشَاكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ط هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ط بَلْ أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٢٩)

২৯. আল্লাহ একটা দৃষ্টান্ত দিচ্ছেনঃ এক ব্যক্তি যার মুনিব অনেক– যারা পরস্পরের বিরোধী। আরেক ব্যক্তি যার সম্পূর্ণ মালিকানা একজনের (উপর ন্যস্ত), তুলনায় এ দু'জন কি সমান? যাবতীয় প্রশংসা আল্লাহ্‌রই (যে তিনি আমাদেরকে নানান দেবদেবীর কবল থেকে রক্ষা ক'রে একমাত্র তাঁরই সঙ্গে সরাসরি যোগাযোগ স্থাপন করার জন্য আমাদেরকে নির্দেশ দিয়েছেন), কিন্তু মানুষদের অধিকাংশ (এ আসল সত্যটা) জানে না।

إِنَّكَ مَيِّتٌ وَّإِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ز (٣٠)

৩০. তুমিও মরবে আর তারাও মরবে।

ثُمَّ إِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ تَخْتَصِمُوْنَ ع (٣١)

৩১. অতঃপর ক্বিয়ামত দিবসে তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের সম্মুখে বাদানুবাদ করবে।

فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَآءَهٗ ط أَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ (٣٢)

৩২. যে ব্যক্তি আল্লাহ্‌র প্রতি মিথ্যারোপ করে আর সত্য সমাগত হওয়ার পর তা অস্বীকার করে তার চেয়ে বড় যালিম আর কে আছে? (এমন) কাফিরদের আবাসস্থল কি জাহান্নামে নয়?

وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ (٣٣)

৩৩. যারা সত্য নিয়ে আগমণ করেছে এবং সত্যকে সত্য হিসেবে মেনে নিয়েছে, তারাই তো মুত্তাকী।

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ صلے ج (٣٤)

৩৪. তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট আছে যা তারা ইচ্ছে করবে। তা-ই হল সৎকর্মশীলদের প্রতিদান।

لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِيْ عَمِلُوْا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُمْ بِأَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٣٥)

৩৫. যাতে তারা যে সব মন্দ কাজ করেছে আল্লাহ্ তা মুছে দিতে পারেন, আর তারা যে সব সৎ কাজ করেছে তজ্জন্য তাদেরকে পুরস্কৃত করেন।

أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ط وَيُخَوِّفُوْنَكَ بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ج (٣٦)

৩৬. আল্লাহ কি তাঁর বান্দাহ্‌র জন্য যথেষ্ট নন? অথচ তোমাকে তারা আল্লাহ্‌র পরিবর্তে অন্যদের ভয় দেখায়। আল্লাহ যাকে পথহারা করেন তার জন্য কেউ পথ দেখাবার নেই।

وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ط أَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ (٣٧)

৩৭. আর আল্লাহ যাকে পথ দেখান, তাকে পথভ্রষ্ট করার কেউ নেই। আল্লাহ কি মহাশক্তিধর প্রতিশোধ গ্রহণকারী নন?

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ط قُلْ أَفَرَأَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كَاشِفَاتُ ضُرِّهٖٓ أَوْ أَرَادَنِيْ بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكَاتُ رَحْمَتِهٖ ط قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ط عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ (٣٨)

৩৮. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর– আকাশ ও পৃথিবী সৃষ্টি করেছে কে? তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে, আল্লাহ। তোমরা কি চিন্তা করে দেখেছ যে, আল্লাহ আমার ক্ষতি করতে চাইলে আল্লাহ্‌র পরিবর্তে তোমরা যাদেরকে ডাক, তারা কি সে ক্ষতি দূর করতে পারবে? অথবা তিনি আমার প্রতি অনুগ্রহ করতে চাইলে, তারা কি তাঁর অনুগ্রহ ঠেকাতে পারবে? বল, আমার জন্য আল্লাহ্ই যথেষ্ট, নির্ভরকারীরা তাঁর উপরই নির্ভর করে।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّيْ عَامِلٌ ج فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ لا (٣٩)

৩৯. বল, হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা তোমাদের পথ ও মত অনুযায়ী কাজ করে যাও, আমিও কাজ করে যাচ্ছি, অচিরেই তোমরা জানতে পারবে

مَنْ يَّأْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (٤٠)

৪০. কার উপর আসে অপমানজনক শাস্তি, আর কার উপর পতিত হয় স্থায়ী 'আযাব।

إِنَّآ أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ج فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ج وَمَآ أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ع (٤١)

৪১. আমি তোমার প্রতি কিতাব অবতীর্ণ করেছি মানুষের (শিক্ষা গ্রহণের) জন্য সত্য (দ্বীন) সহকারে। অতঃপর যে সঠিক পথে চলবে, নিজের কল্যাণের জন্যই চলবে। আর যে বিভ্রান্ত হবে, বিভ্রান্ত হবে কেবল নিজের ক্ষতি করার জন্য; তুমি তাদের (কাজের) জন্য যিম্মাদার নও।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ج فَيُمْسِكُ الَّتِيْ قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرٰى إِلٰى أَجَلٍ مُّسَمًّى ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (٤٢)

৪২. আল্লাহ প্রাণ গ্রহণ করেন সেগুলোর মৃত্যুর সময়, আর যারা মরেনি তাদের নিদ্রাকালে। অতঃপর যার মৃত্যুর সিদ্ধান্ত হয়ে গেছে তার (প্রাণ) রেখে দেন, আর অন্যগুলো একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্য ফিরিয়ে দেন। যারা চিন্তা গবেষণা করে তাদের জন্য এতে বহু নিদর্শন আছে।

أَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَآءَ ط قُلْ أَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْئًا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ (٤٣)

৪৩. তারা কি আল্লাহ্‌কে ছাড়া (অন্যদেরকে নিজেদের মুক্তির জন্য) সুপারিশকারী বানিয়ে নিয়েছে? বল– তারা কোন কিছুর মালিক না হওয়া সত্ত্বেও, আর তারা না বুঝলেও?

قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ط لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٤٤)

৪৪. বল– শাফা'আত সম্পূর্ণ আল্লাহ্‌র ইখতিয়ারভুক্ত। আকাশ ও পৃথিবীর রাজত্ব তাঁরই, অতঃপর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনা হবে।

وَإِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوْبُ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ج وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ (٤٥)

৪৫. এক আল্লাহ্‌র উল্লেখ করা হলেই যারা ক্বিয়ামতে বিশ্বাস করে না, তাদের অন্তর বিতৃষ্ণায় ভরে যায়। আর আল্লাহ ছাড়া অন্যান্য উপাস্যের উল্লেখ করা হলেই তারা আনন্দে উৎফুল্ল হয়।

قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ

৪৬. বল– হে আল্লাহ! আকাশ ও পৃথিবীর স্রষ্টা, দৃশ্য ও অদৃশ্যের জ্ঞানের অধিকারী, তুমি তোমার

الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (٤٦)

বান্দাহ্দের মাঝে মীমাংসা করে দেবে যে বিষয়ে তারা মতভেদ করছে.

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوْٓءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ط وَبَدَا لَهُمْ مِّنَ اللهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ (٤٧)

৪৭. যারা অন্যায়কারী দুনিয়াতে যা কিছু আছে সমস্ত কিছু যদি তাদেরই হয়, আর তার সাথে আরো অত পরিমাণ হয়, তারা ক্বিয়ামতের কঠিন 'আযাব থেকে বাঁচার জন্য মুক্তিপণ স্বরূপ দিতে চাইবে। সেখানে আল্লাহ্র নিকট থেকে তারা এমন কিছুর সম্মুখীন হবে যা তারা কক্ষনো অনুমানও করেনি।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهِ يَسْتَهْزِئُوْنَ (٤٨)

৪৮. তাদের কৃতকর্মের মন্দ রূপ সেদিন প্রকাশ হয়ে পড়বে, আর তারা যা নিয়ে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত তাই তাদেরকে ঘিরে ফেলবে।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ز ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا لا قَالَ إِنَّمَآ أُوْتِيْتُهُ عَلٰى عِلْمٍ ط بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٤٩)

৪৯. মানুষকে বিপদাপদ স্পর্শ করলে আমাকে ডাকে। অতঃপর আমি যখন তাকে আমার পক্ষ থেকে নি'মাত দিয়ে ধন্য করি তখন সে বলে– আমার জ্ঞান গরিমার বদৌলতেই আমাকে তা দেয়া হয়েছে। না, তা নয়। এটা একটা পরীক্ষা (অনুগ্রহ লাভ করে কে আল্লাহ্র কৃতজ্ঞ হয় আর কে নিজের বড়াই প্রকাশ করে তা দেখার জন্য)। কিন্তু (এর গুঢ়তত্ত্ব) তাদের অধিকাংশই বুঝে না।

قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٥٠)

৫০. তাদের আগে যারা ছিল তারাও এ কথাই বলত। কিন্তু তারা যা করত তা তাদের কোনই কাজে আসেনি।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ط وَالَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا لا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (٥١)

৫১. তাদের কর্মের খারাপ পরিণাম তাদের উপর পতিত হয়েছিল। আর এদের মধ্যেও যারা যুল্ম করেছে তাদের কর্মের মন্দ পরিণাম এদেরই উপর পতিত হবে। এরা তা ব্যর্থ করতে পারবে না।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ط إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ع (٥٢)

৫২. এরা কি জানে না যে, আল্লাহ যার জন্য ইচ্ছে রিয্ক প্রশস্ত করেন আর (যার জন্য ইচ্ছে) সংকুচিত করেন? মু'মিন লোকদের জন্য অবশ্যই এতে বহু নিদর্শন আছে।

قُلْ يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ أَسْرَفُوْا عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللهِ ط إِنَّ اللهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ط إِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (٥٣)

৫৩. বল– হে আমার বান্দাগণ! যারা নিজেদের উপর বাড়াবাড়ি করেছ, তোমরা আল্লাহ্‌র রহমত থেকে নিরাশ হয়ো না। আল্লাহ্ সমস্ত গুনাহ ক্ষমা করে দেবেন। তিনি অতি ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

وَأَنِيْبُوْٓا إِلٰى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ (٥٤)

৫৪. তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের অভিমুখী হও আর তাঁর অনুগত হও তোমাদের কাছে 'আযাব আসার পূর্বে। ('আযাব এসে গেলে) তোমাদেরকে সাহায্য করা হবে না।

وَاتَّبِعُوْٓا أَحْسَنَ مَآ أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۙ (٥٥)

৫৫. তোমাদের প্রতিপালকের নিকট হতে তোমাদের প্রতি যা অবতীর্ণ করা হয়েছে তাতে যাকে উত্তম আখ্যায়িত করা হয়েছে তোমরা সেগুলোর অনুসরণ কর তোমাদের কাছে অকস্মাৎ 'আযাব এসে যাওয়ার পূর্বে যে বিষয়ে তোমরা টেরও পাবে না।

أَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِيْ جَنْۢبِ اللهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ۙ (٥٦)

৫৬. যাতে কাউকে বলতে না হয়– হায় আফসোস! আমি আল্লাহর প্রতি (আমার কর্তব্যে) অবহেলা করেছিলাম, আর আমি তো ঠাট্টা বিদ্রূপকারীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলাম।

أَوْ تَقُوْلَ لَوْ أَنَّ اللهَ هَدٰىنِيْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۙ (٥٧)

৫৭. অথবা এ কথা যেন বলতে না হয় যে, আল্লাহ যদি আমাকে সঠিক পথ দেখাতেন, তাহলে আমি অবশ্যই মুত্তাক্বীদের অন্তর্ভুক্ত হতাম।

أَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِيْ كَرَّةً فَأَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ (٥٨)

৫৮. অথবা শাস্তি দেখার পর কাউকে যেন বলতে না হয়, আমাকে যদি একবার (পৃথিবীতে) ফিরে যাবার সুযোগ দেয়া হত, তাহলে আমি সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত হতাম।

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا

৫৯. (তাকে উত্তর দেয়া হবে) না, বরং তোমার কাছে আমার নিদর্শন এসেছিল, তখন তুমি

৫৩। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, মুশরিকদের কিছু লোক বহু হত্যা করে এবং বেশি বেশি ব্যভিচারে লিপ্ত হয়। তারপর তারা মুহাম্মদ (ﷺ) -এর কাছে এল এবং বলল, আপনি যা বলেন এবং আপনি যেদিকে আহ্বান করেন, তা অতি উত্তম। আমাদের যদি অবগত করতেন, আমরা যা করেছি, তার কাফ্‌ফারা কী? এর প্রেক্ষাপটে অবতীর্ণ হয় 'এবং যারা আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্য কোন ইলাহ্‌কে ডাকে না, আল্লাহ্ যাকে হত্যা করা নিষেধ করেছেন, তাকে না-হক হত্যা করে না এবং ব্যভিচার করে না। আরো অবতীর্ণ হলঃ "হে আমার বান্দাগণ! তোমরা যারা নিজেদের প্রতি অন্যায় করে ফেলেছ, আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ থেকে নিরাশ হয়ো না।" –বুখারী ৪৮১০ [মুসলিম ১২২; নাসায়ী ৪০০৩, ৪০০৪]

وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ (٥٩)

সেগুলোকে মিথ্যে বলে অস্বীকার করেছিলে, অহংকার করেছিলে আর কাফিরদের অন্তর্ভুক্ত ছিলে।

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللهِ وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ط أَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ (٦٠)

৬০. যারা আল্লাহ্‌র প্রতি মিথ্যারোপ করে ক্বিয়ামতের দিনে তুমি তাদের মুখগুলো কালো দেখতে পাবে. অহংকারীদের আবাসস্থল কি জাহান্নামে নয়?

وَيُنَجِّي اللهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ز لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ (٦١)

৬১. আর আল্লাহ মুত্তাক্বীদেরকে রক্ষা করবেন তাদের সফলতার কারণে। কোন খারাবী তাদেরকে স্পর্শ করবে না, আর তারা দুঃখিতও হবে না।

اَللهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ز وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ وَّكِيْلٌ (٦٢)

৬২. আল্লাহ সব কিছুর স্রষ্টা আর তিনি সব কিছুর অভিভাবক এবং কর্ম সম্পাদনকারী।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللهِ أُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ع (٦٣)

৬৩. আসমান আর যমীনের কুঞ্জি তাঁরই হাতে, আর যারা আল্লাহ্‌র নিদর্শনগুলোকে অস্বীকার করে, তারাই তো ক্ষতিগ্রস্ত।

قُلْ أَفَغَيْرَ اللهِ تَأْمُرُوْنِّيْٓ أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجٰهِلُوْنَ (٦٤)

৬৪. বল, ওহে অজ্ঞরা! তোমরা কি আমাকে আল্লাহ ছাড়া অন্যের 'ইবাদাত করার আদেশ করছ?

وَلَقَدْ أُوْحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ ج لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ (٦٥)

৬৫. কিন্তু তোমার কাছে আর তোমাদের পূর্ববর্তীদের কাছে ওয়াহী করা হয়েছে যে, তুমি যদি (আল্লাহ্‌র) শরীক স্থির কর, তাহলে তোমার কর্ম অবশ্য অবশ্যই নিস্ফল হয়ে যাবে, আর তুমি অবশ্য অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্তদের অন্তর্ভুক্ত হবে।

بَلِ اللهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ (٦٦)

৬৬. না, বরং আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, আর শুক্‌রগুজারদের অন্তর্ভুক্ত হও।

وَمَا قَدَرُوا اللهَ حَقَّ قَدْرِهٖ قصلے وَالْأَرْضُ جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ مَطْوِيّٰتٌۢ بِيَمِيْنِهٖ ط سُبْحٰنَهٗ

৬৭. তারা আল্লাহ্‌র যথাযোগ্য মর্যাদা দেয় না। ক্বিয়ামতের দিন সমগ্র পৃথিবী তাঁর হাতের মুষ্ঠিতে থাকবে, আর আকাশমণ্ডলী থাকবে ভাঁজ করা অবস্থায় তাঁর ডান হাতে। মাহাত্ম্য তাঁরই, তারা যাদেরকে তাঁর শরীক করে তিনি তাদের

وَتَعَالٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٦٧)

বহু ঊর্ধ্বে।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ط ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ أُخْرٰى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَّنْظُرُوْنَ (٦٨)

৬৮. আর যখন শিঙ্গায় ফুঁৎকার দেয়া হবে তখন মূর্ছিত হয়ে পড়বে যারা আছে আকাশে আর যারা আছে যমীনে, তবে আল্লাহ্র ইচ্ছেয় এথেকে যে রেহাই পাবে তার কথা ভিন্ন। অতঃপর শিঙ্গায় আবার ফুঁ দেয়া হবে, তখন তারা উঠে দাঁড়িয়ে তাকাতে থাকবে।

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتٰبُ وَجِآْيْءَ بِالنَّبِيّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (٦٩)

৬৯. পৃথিবী তার প্রতিপালকের জ্যোতিতে ঝলমল করে উঠবে, আর 'আমালনামা সামনে আনা হবে। নবীগণ ও সাক্ষীগণকে উপস্থিত করা হবে। সকলের মাঝে ন্যায়পরায়ণতার সাথে বিচার করা হবে, তাদের প্রতি যুল্ম করা হবে না।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ع (٧٠)

৭০. প্রত্যেকের কাজের পূর্ণ প্রতিফল দেয়া হবে। লোকেরা যা করে তা তিনি খুব ভালভাবেই জানেন।

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا إِلٰى جَهَنَّمَ زُمَرًا ط حَتّٰٓى إِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَتْلُوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ط قَالُوْا

৭১. কাফিরদেরকে দলে দলে জাহান্নামের দিকে হাঁকিয়ে নিয়ে যাওয়া হবে। শেষে যখন তারা সেখানে পোঁছবে, তখন তার দরজাগুলো খুলে দেয়া হবে। তখন জাহান্নামের রক্ষীরা তাদেরকে বলবে– তোমাদের কাছে তোমাদেরই ভিতর থেকে কি রসূলগণ আসেননি যারা তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের আয়াত পড়ে শোনাতেন আর তোমাদেরকে যে এ দিনের সাক্ষাৎ করতে হবে এ সম্পর্কে তোমাদেরকে

৬৭। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, ইয়াহূদী আলিমদের থেকে এক আলিম রসূল (ﷺ) -এর কাছে এসে বলল, হে মুহাম্মাদ! আমরা (তাওরাতে দেখতে) পাই যে, আল্লাহ্ তা'আলা আকাশসমূহকে এক আঙ্গুলের উপর স্থাপন করবেন। যমীনকে এক আঙ্গুলের উপর, বৃক্ষসমূহকে এক আঙ্গুলের উপর, পানি এক আঙ্গুলের উপর, মাটি এক আঙ্গুলের উপর এবং অন্যান্য সৃষ্টি জগত এক আঙ্গুলের উপর স্থাপন করবেন। তারপর বলবেন, আমিই বাদশাহ। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তা সমর্থনে হেসে ফেললেন; এমনকি তাঁর সামনের দাঁত প্রকাশ হয়ে পড়ে। এরপর রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) পাঠ করলেনঃ তারা আল্লাহ্কে যথোচিত মর্যাদা দান করে না। –বুখারী ৪৮১১ [৭৪১৪, ৭৪১৫, ৭৪৫১, ৭৫১৩; মুসলিম ২৭৮৬, তিরমিযী ৩২৩৮, আহমাদ ৩৫৭৯, ৪০৭৬, ৪৩৫৫]

৬৮। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, শেষবার শিঙ্গায় ফুঁক দেয়ার পর যে সবার আগে মাথা উঠাবে, সে আমি। তখন আমি মূসা ('আ.)-কে দেখব আরশের সঙ্গে ঝুলন্ত অবস্থায়। আমি জানি না, তিনি আগে থেকেই এভাবে ছিলেন, না শিঙ্গায় ফুঁক দেয়ার পর। –বুখারী ৪৮১৩ [২৪১১; মুসলিম ২৩৭৩, ২৩৭৬; তিরমিযী ৩২৪৫, আবূ দাউদ ৪৬৭১, আহমাদ ৭৫৩২, ২৭২২৯]

بَلٰى وَلٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (٧١)

সতর্ক করতেন? তারা বলবে- হাঁ, এসেছিল। কিন্তু (এ স্বীকারোক্তি সত্ত্বেও) কাফিরদের প্রতি শাস্তির ফয়সালা অবধারিত হয়ে গেছে।

قِيْلَ ادْخُلُوْٓا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ج فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ (٧٢)

৭২. তাদেরকে বলা হবে- জাহান্নামের দরজা দিয়ে প্রবেশ কর, তোমাদেরকে চিরকাল এখানে থাকতে হবে। অহংকারীদের আবাসস্থল কতই না নিকৃষ্ট!

وَسِيْقَ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ط حَتّٰٓى إِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِيْنَ (٧٣)

৭৩. যারা তাদের প্রতিপালককে ভয় করত তাদেরকে দলে দলে জান্নাতের দিকে নিয়ে যাওয়া হবে। যখন তারা সেখানে এসে পৌঁছবে, জান্নাতের দরজাগুলো (পূর্ব থেকেই) উন্মুক্ত (দেখতে পাবে)। জান্নাতের দ্বার রক্ষীরা বলবে– তোমাদের উপর শান্তি (বর্ষিত হোক), চমৎকার কাজ করেছ তোমরা, কাজেই চিরকালের জন্য এতে প্রবেশ কর।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ صَدَقَنَا وَعْدَهٗ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَآءُ ج فَنِعْمَ أَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ (٧٤)

৭৪. (জান্নাতে প্রবেশ করে) তারা বলবে- সমস্ত প্রশংসা আল্লাহ্‌র যিনি তাঁর ও'য়াদাকে সত্যিকারভাবে পূর্ণ করেছেন, আর আমাদেরকে (জান্নাতের) যমীনের অধিকারী বানিয়ে দিয়েছেন। আমরা জান্নাতের যেথায় ইচ্ছে বসবাসের জায়গা ক'রে নিতে পারি। সৎকর্মশীলদের প্রতিফল কতই না উত্তম!

وَتَرَى الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّيْنَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ج وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيْلَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ع (٧٥)

৭৫. তুমি ফেরেশতাদেরকে 'আরশের চারপাশ ঘিরে তাদের প্রতিপালকের মাহাত্ম্য ঘোষণা ও প্রশংসা করতে দেখতে পাবে। মানুষের মাঝে ন্যায়নিষ্ঠার সঙ্গে বিচার-ফয়সালা করা হবে। আর ঘোষণা দেয়া হবে যে, যাবতীয় প্রশংসা বিশ্বজগতের প্রতিপালকের জন্য।

৪০. সূরাহ আল-মু'মিন

سُوْرَةُ الْغَافِرِ

আয়াতঃ ৮৫, রুকূ'ঃ ৯, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

حٰمٓ ج (١)

১. হা-মীম।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (٢)

২. এ কিতাব নাযিল হয়েছে মহা প্রতাপের অধিকারী সর্বজ্ঞ আল্লাহ্‌র নিকট হতে।

غَافِرِ الذَّنْـبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِي الطَّوْلِ ط لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ط إِلَيْهِ الْمَصِيْرُ (٣)

৩. যিনি পাপ ক্ষমাকারী, তাওবাহ কবূলকারী, কঠোর শাস্তিদাতা, বড়ই অনুগ্রহশীল, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, প্রত্যাবর্তন তাঁরই কাছে।

مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللهِ إِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِي الْبِلَادِ (٤)

৪. কাফিররা ছাড়া অন্য কেউ আল্লাহ্‌র আয়াত নিয়ে ঝগড়া করে না। কাজেই দেশে দেশে তাদের অবাধ বিচরণ তোমাকে যেন ধোঁকায় না ফেলে।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْأَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ص وَهَمَّتْ كُلُّ أُمَّةٍۢ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَأْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَأَخَذْتُهُمْ قف فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ (٥)

৫. এদের পূর্বে নূহের জাতি আর তাদের পরে বহু দল-গোষ্ঠী (রসূলদেরকে) অস্বীকার করেছিল। প্রত্যেক জাতি তাদের রসূলের বিরুদ্ধে চক্রান্ত করেছিল তাকে পাকড়াও করার জন্য, আর অসার অস্ত্রের সাহায্যে বিরোধিতায় লিপ্ত হয়েছিল তা দিয়ে সত্যকে খণ্ডণ করার জন্য। ফলে আমি তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম। অতঃপর দেখ, কেমন কঠোর ছিল আমার শাস্তি।

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَنَّهُمْ أَصْحٰبُ النَّارِ (٦)

৬. এভাবে কাফিরদের ব্যাপারে তোমার প্রতিপালকের বাণী সত্য প্রমাণিত হল যে, তারা জাহান্নামের অধিবাসী।

اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ج رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ (٧)

৭. যারা 'আরশ বহন করে আছে, আর যারা আছে তার চারপাশে, তারা তাঁর প্রশংসার সাথে তাঁর মাহাত্ম্য ঘোষণা করে আর তাঁর প্রতি ঈমান পোষণ করে আর মু'মিনদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা ক'রে বলে– হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি তোমার রহমত ও জ্ঞান দিয়ে সব কিছুকে বেষ্টন করে রেখেছ, কাজেই যারা তাওবাহ করে ও তোমার পথ অনুসরণ করে তাদেরকে ক্ষমা কর, আর জাহান্নামের 'আযাব থেকে তাদেরকে রক্ষা কর।

رَبَّنَا وَأَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَأَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ط إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٨)

৮. হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি তাদেরকে আর তাদের পিতৃপুরুষ, স্বামী-স্ত্রী ও সন্তানাদির মধ্যে যারা সৎকাজ করেছে তাদেরকেও চিরস্থায়ী জান্নাতে প্রবেশ করান যার ওয়া'দা তুমি তাদেরকে দিয়েছ; তুমি মহা পরাক্রমশালী, মহা বিজ্ঞ।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ؕ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ع (٩)

৯. সমস্ত খারাবী থেকে তাদেরকে রক্ষা কর। সেদিন তুমি যাকে সমস্ত খারাবী থেকে রক্ষা করলে, তার উপর তো দয়াই করলে। ওটাই হল বিরাট সাফল্য।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللهِ أَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ أَنْفُسَكُمْ إِذْ تُدْعَوْنَ إِلَى الْإِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ (١٠)

১০. যারা কুফুরী করেছিল তাদেরকে ডাক দিয়ে বলা হবে– তোমাদের নিজেদের প্রতি তোমাদের ক্ষোভের চেয়ে (তোমাদের প্রতি) আল্লাহ্‌র ক্ষোভ অধিক, (কেননা) তোমাদেরকে যখন ঈমানের দিকে আহ্বান করা হয়েছিল, তখন তোমরা অস্বীকার করেছিলে।

قَالُوْا رَبَّنَآ أَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَأَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ إِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ (١١)

১১. তারা বলবে, হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি দু'বার আমাদের মৃত্যু দিয়েছ (জন্মের আগের মৃত অবস্থা আর জীবন শেষের মৃত্যু) আর আমাদেরকে দু'বার জীবন দিয়েছ। আমরা আমাদের পাপ স্বীকার করছি, (এখান থেকে) বের হওয়ার কোন পথ আছে কি?

ذٰلِكُمْ بِأَنَّهٗٓ إِذَا دُعِيَ اللهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ج وَإِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ج فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ (١٢)

১২. (তখন তাদেরকে উত্তর দেয়া হবে) তোমাদের এ শাস্তির কারণ এই যে, যখন এক আল্লাহকে ডাকা হত, তখন তোমরা তা মেনে নিতে অস্বীকার করতে। আর যখন অন্যদেরকে তাঁর অংশীদার গণ্য করা হত, তখন তোমরা তাতে বিশ্বাস স্থাপন করতে। হুকুম দেয়ার মালিক আল্লাহ– যিনি সর্বোচ্চ, সর্বশ্রেষ্ঠ।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ؕ وَمَا يَتَذَكَّرُ إِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ (١٣)

১৩. তিনি তাঁর নিদর্শনাবলী তোমাদেরকে দেখান আর আকাশ থেকে তোমাদের জন্য রিয্‌ক অবতীর্ণ করেন. আল্লাহ্-অভিমুখীরা ছাড়া কেউ উপদেশ গ্রহণ করে না।

فَادْعُوا اللهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ (١٤)

১৪. কাজেই আল্লাহকে ডাক আনুগত্যকে একমাত্র তাঁরই জন্য নির্দিষ্ট করো, যদিও কাফিরগণ তা অপছন্দ করে।

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ج يُلْقِي الرُّوْحَ

১৫. তিনি সর্বোচ্চ মর্যাদার অধিকারী, 'আরশের অধিপতি। তিনি তাঁর নির্দেশে তাঁর বান্দাদের যার

مِنْ أَمْرِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۙ (١٥)

প্রতি ইচ্ছে ওয়াহী প্রেরণ করেন যাতে সে সাক্ষাতের দিন সম্পর্কে সতর্ক করে।

يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ۚ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ؕ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ؕ لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ (١٦)

১৬. মানুষ যেদিন (ক্ববর থেকে) বের হয়ে আসবে, আল্লাহ্‌র কাছে তাদের কোন কিছুই গোপন থাকবে না। (সেদিন ঘোষণা দেয়া হবে) আজ একচ্ছত্র কর্তৃত্ব কার? (উত্তর আসবে) এক ও একক মহাপরাক্রমশালী আল্লাহ্‌র।

اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ ؕ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ؕ إِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (١٧)

১৭. প্রত্যেক ব্যক্তি যে কর্ম করেছে আজ তার প্রতিফল দেয়া হবে। আজ নেই কোন যুল্ম। আল্লাহ অতি দ্রুত হিসাব গ্রহণকারী।

وَأَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ إِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ۬ؕ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ؕ (١٨)

১৮. তাদেরকে সতর্ক কর সেই ঘনিয়ে আসা দিন সম্পর্কে যখন ওষ্ঠাগত প্রাণ নিয়ে তারা দুঃখ-কষ্ট সংবরণ করবে। যালিমদের জন্য কোন অন্তরঙ্গ বন্ধু থাকবে না, এমন কোন সুপারিশকারীও থাকবে না যার কথা গ্রহণ করা হবে।

يَعْلَمُ خَآئِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُوْرُ (١٩)

১৯. আল্লাহ চক্ষুর অন্যায় কর্ম সম্পর্কেও অবগত, আর অন্তর যা গোপন করে সে সম্পর্কেও।

وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ؕ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَيْءٍ ؕ إِنَّ اللّٰهَ هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ع (٢٠)

২০. আল্লাহ হক্ব বিচার করেন। তারা আল্লাহ্‌র পরিবর্তে যাদেরকে ডাকে তারা মোটেই বিচার করতে পারে না। আল্লাহ সব কিছু শোনেন, সব কিছু দেখেন।

أَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَانُوْا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ (٢١)

২১. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না, তাহলে দেখতে পেত তাদের পূর্বে যারা ছিল তাদের পরিণাম কী হয়েছিল। তারা শক্তিতে আর স্মৃতি চিহ্নে ছিল এদের চেয়ে প্রবল। অতঃপর তাদের পাপের কারণে আল্লাহ তাদেরকে পাকড়াও করেছিলেন, আল্লাহ্‌র শাস্তি থেকে তাদেরকে বাঁচানোর কেউ ছিল না।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَتْ تَّأْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَأَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ إِنَّهٗ

২২. এটা এজন্য যে, রসূলগণ তাদের কাছে স্পষ্ট (নিদর্শন) নিয়ে এসেছিল। কিন্তু তারা তাদেরকে প্রত্যাখ্যান করেছিল। তখন আল্লাহ তাদেরকে

قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (٢٢)

পাকড়াও করেছিলেন। তিনি প্রবল শক্তিধর, শাস্তি দানে কঠোর।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِيْنٍ لا (٢٣)

২৩. আমি মূসাকে আমার নিদর্শন ও সুস্পষ্ট ফরমান দিয়ে পাঠিয়েছিলাম

إِلٰى فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا سٰحِرٌ كَذَّابٌ (٢٤)

২৪. ফেরাউন, হামান ও কারূনের কাছে। কিন্তু তারা বলল (এ লোকটা) এক যাদুকর, ঘোর মিথ্যুক।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا اقْتُلُوْٓا أَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ط وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ إِلَّا فِيْ ضَلَالٍ (٢٥)

২৫. তারপর যখন মূসা তাদের কাছে আমার সত্যসহ আসল তখন তারা বলল- এর সঙ্গে যারা ঈমান এনেছে তাদের পুত্র সন্তানদের হত্যা কর, আর তাদের নারীদেরকে জীবিত রাখ। কাফিরদের ষড়যন্ত্র অকার্যকর ছাড়া আর কিছুই না।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ أَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ط ج إِنِّيْٓ أَخَافُ أَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ أَوْ أَنْ يُّظْهِرَ فِي الْأَرْضِ الْفَسَادَ (٢٦)

২৬. ফেরাউন বলল- ছেড়ে দাও আমাকে, আমি মূসাকে হত্যা করব, ডাকুক সে তার রব্বকে। আমি আশঙ্কা করছি, সে তোমাদের জীবন পদ্ধতিকে বদলে দেবে কিংবা দেশে বিপর্যয় বিশৃঙ্খলা সৃষ্টি করবে।

وَقَالَ مُوْسٰٓى إِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ (٢٧)

২৭. মূসা বলল- আমি আমার ও তোমাদের প্রতিপালকের আশ্রয় গ্রহণ করছি সকল দাম্ভিক অহংকারীদের হতে, যারা বিচার দিবসে বিশ্বাস করে না।

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ صلے مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ

২৮. ফেরাউনের দলের এক মু'মিন ব্যক্তি- যে তার ঈমানকে গোপন রেখেছিল- বলল, তোমরা

২২। ইবনু মাস'উদ (ﷺ) থেকে বর্ণিত। তিনি আল্লাহর বাণীঃ "তোমাদের কর্ণ তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে- এ থেকে তোমরা কখনো নিজেদের লুকাতে পারবে না।" আয়াত সম্পর্কে বলেন, কুরাইশ গোত্রের দু' ব্যক্তি ছিল, যাদের জামাতা ছিল বানী সাকীফ গোত্রের অথবা (বর্ণনাকারীর সন্দেহ) দু' ব্যক্তি ছিল বানী সাকীফ গোত্রের আর তাদের জামাতা ছিল কুরাইশ গোত্রের। তারা সকলেই একটি ঘরে ছিল। তারা পরস্পর বলল, তোমার কী ধারণা, আল্লাহ্ কি আমাদের কথা শুনতে পাচ্ছেন? একজন বলল, তিনি আমাদের কিছু কথা শুনছেন। এরপর দ্বিতীয় ব্যক্তি বলল, তিনি যদি আমাদের কিছু কথা শুনতে পান, তাহলে সব কথাও শুনতে পাবেন। তখন নাযিল হলঃ "তোমাদের কান ও তোমাদের চোখ তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে, এ থেকে তোমরা কখনো নিজেদের লুকাতে পারবে না।.....আয়াতের শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৮১৬ [৪৮১৭, ৭৫২১; মুসলিম ২৭৭৫, তিরমিযী ৩২৪৮, আহমাদ ৩৬০৩, ৩৮৬৫]

يَكْتُمُ إِيْمَانَهٗٓ أَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا أَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ط وَإِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ج وَإِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ط إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ (٢٨)

একজন লোককে শুধু কি এজন্য মেরে ফেলবে যে, সে বলে, আল্লাহ আমার প্রতিপালক। অথচ সে তোমাদের কাছে তোমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে সুস্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে এসেছে। সে যদি মিথ্যাবাদী হয় তাহলে তার মিথ্যা বলার পরিণাম সে নিজেই ভুগবে। আর সে যদি সত্যবাদী হয়, তাহলে সে তোমাদেরকে যে শাস্তির ভয় দেখাচ্ছে তার কিছু না কিছু তোমাদের উপর পড়বেই। যে সীমালঙ্ঘন করে আর মিথ্যে বলে আল্লাহ তাকে সঠিক পথ দেখান না।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظَاهِرِيْنَ فِي الْأَرْضِ ز فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَأْسِ اللهِ إِنْ جَآءَنَا ط قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ أُرِيْكُمْ إِلَّا مَآ أَرٰى وَمَآ أَهْدِيْكُمْ إِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ (٢٩)

২৯. হে আমার জাতির লোকেরা! আজ তোমাদেরই কর্তৃত্ব চলছে, দেশে আজ তোমরাই বিজয়ী শক্তি। কিন্তু আল্লাহ্‌র শাস্তি যদি এসেই পড়ে, তাহলে তা থেকে আমাদেরকে কে রক্ষে করবে? ফেরাউন বলল– আমি তোমাদেরকে শুধু তা-ই বলছি, আমি নিজে যা বুঝেছি; আমি তোমাদেরকে সত্যপথই দেখাচ্ছি।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْأَحْزَابِ لا (٣٠)

৩০. যে লোকটি ঈমান এনেছিল সে বলল– হে আমার জাতির লোকেরা! আগের জাতিগুলোর উপর যেমন (শাস্তির) দিন এসেছিল, আমি তোমাদের উপরও সে রকম (বিপর্যয়ের) আশঙ্কা করছি

مِثْلَ دَأْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ط وَمَا اللهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ (٣١)

৩১. যা এসেছিল নূহ, 'আদ, সামূদ জাতি আর তাদের পরবর্তীদের উপর। আল্লাহ তো বান্দাহদের উপর যুল্‌ম করতে চান না (বরং তাদের নিজেদের অন্যায় অপকর্মের কারণেই আল্লাহ তাদেরকে শাস্তি দেন)।

وَيٰقَوْمِ إِنِّيْٓ أَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ لا (٣٢)

৩২. হে আমার জাতি! আমি আশঙ্কা করছি তোমাদের আর্ত চিৎকার আর কান্নাকাটি করার একটি দিনের।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ج مَا لَكُمْ مِّنَ اللهِ مِنْ عَاصِمٍ ج وَمَنْ يُّضْلِلِ اللهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ (٣٣)

৩৩. যেদিন তোমরা পিছন ফিরে পালিয়ে যাবে। কিন্তু আল্লাহ ('র কব্জা) থেকে তোমাদের রক্ষাকারী কেউ হবে না, আর আল্লাহ যাকে বিপথগামী করেন, তার জন্য কোন পথপ্রদর্শনকারী নেই।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ط حَتّٰىٓ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللهُ مِنْ ۢبَعْدِهٖ رَسُوْلًا ط كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ج صلے (٣٤)

৩৪. ইতোপূর্বে ইউসুফ তোমাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিল। কিন্তু সে তোমাদের কাছে যা নিয়ে এসেছিল, সে ব্যাপারে তোমরা সন্দেহ পোষণ করেই চললে। শেষ পর্যন্ত যখন তার মৃত্যু হল তখন তোমরা বললে- ওর পরে আল্লাহ আর কক্ষনো কোন রসূল পাঠাবেন না। সীমালঙ্ঘনকারী ও সন্দেহবাদীদেরকে আল্লাহ এভাবেই পথভ্রষ্ট করেন।

الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ أَتٰهُمْ ط كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللهِ وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ط كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللهُ عَلٰى كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ (٣٥)

৩৫. যারা নিজেদের কাছে কোন যুক্তি-প্রমাণ না আসলেও আল্লাহ্‌র নিদর্শনাবলীর ব্যাপারে বাক-বিতণ্ডা করে। আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে আর মু'মিনদের দৃষ্টিতে (এ আচরণ) খুবই ঘৃণিত। আল্লাহ এভাবে প্রত্যেক দাম্ভিক স্বৈরাচারীর অন্তরের উপর মোহর মেরে দেন।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِيْ صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ أَبْلُغُ الْأَسْبَابَ لا (٣٦)

৩৬. ফেরাউন বলল– হে হামান! তুমি আমার জন্য এক সুউচ্চ ইমারত তৈরি কর যাতে আমি উপায় পেয়ে যাই

أَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَأَطَّلِعَ إِلٰىٓ إِلٰهِ مُوْسٰى وَإِنِّيْ لَأَظُنُّهٗ كَاذِبًا ط وَكَذٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ السَّبِيْلِ ط وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِيْ تَبَابٍ ع (٣٧)

৩৭. আকাশে উঠার উপায়, যাতে আমি মূসার ইলাহকে দেখতে পাই; আমি মূসাকে অবশ্যই মিথ্যাবাদী মনে করি। এভাবে ফেরাউনের জন্য তার মন্দ কাজকে সুশোভিত করা হয়েছিল আর সঠিক পথ থেকে তাকে বিরত রাখা হয়েছিল। ফেরাউনের অপকৌশল কেবল তার ধ্বংসই ডেকে এনেছিল।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ أَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ج (٣٨)

৩৮. যে লোকটি ঈমান এনেছিল সে আরো বলল– হে আমার জাতির লোকেরা! তোমরা আমার অনুসরণ কর, আমি তোমাদেরকে সঠিক পথ দেখাচ্ছি।

يٰقَوْمِ إِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ز وَّإِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ (٣٩)

৩৯. হে আমার সম্প্রদায়! পার্থিব এ জীবন (অস্থায়ী) ভোগ্য বস্তু মাত্র, আর আখিরাতই হল চিরকালীন আবাসস্থল।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰىٓ إِلَّا مِثْلَهَا ج

৪০. যে খারাপ কাজ করবে তাকে কাজের অনুপাতেই প্রতিফল দেয়া হবে। পুরুষ হোক আর

وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ أَوْ أُنْثَىٰ وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَأُولَٰئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ (٤٠)

নারী হোক যে ব্যক্তিই সৎ কাজ করবে (উপরন্তু) সে মু'মিনও, তাহলে তারাই জান্নাতে প্রবেশ করবে, তার মধ্যে তারা বে-হিসাব রিয্ক প্রাপ্ত হবে।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ أَدْعُوْكُمْ إِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْٓ إِلَى النَّارِ ط (٤١)

৪১. হে আমার সম্প্রদায়! বড়ই আশ্চর্য! আমি তোমাদেরকে ডাকছি মুক্তির দিকে, আর তোমরা আমাকে ডাকছ আগুনের দিকে।

تَدْعُوْنَنِيْ لِأَكْفُرَ بِاللهِ وَأُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ز وَّأَنَا۠ أَدْعُوْكُمْ إِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ (٤٢)

৪২. তোমরা আমাকে ডাকছ যেন আমি আল্লাহ্‌র সাথে কুফ্‌রী করি এবং তাঁর অংশী স্থাপন করি যে সম্পর্কে আমার কোন জ্ঞান নেই। অপরপক্ষে আমি তোমাদেরকে ডাকছি মহাপরাক্রান্ত ক্ষমাশীল (আল্লাহ্‌র) দিকে।

لَا جَرَمَ أَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ إِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَأَنَّ مَرَدَّنَآ إِلَى اللهِ وَأَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ أَصْحٰبُ النَّارِ (٤٣)

৪৩. কোন সন্দেহ নেই তোমরা আমাকে ডাকছ শুধু তার দিকে যে আহ্বান পাওয়ার যোগ্য নয়– না দুনিয়াতে, না আখিরাতে। আমাদের প্রত্যাবর্তন তো হল আল্লাহ্‌র দিকে আর সীমালঙ্ঘনকারীরা হল জাহান্নামের বাসিন্দা।

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ أَقُوْلُ لَكُمْ ط وَأُفَوِّضُ أَمْرِيْٓ إِلَى اللهِ ط إِنَّ اللهَ بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ (٤٤)

৪৪. শীঘ্রই তোমরা স্মরণ করবে আমি তোমাদেরকে যা বলছি। আমি আমার নিজের ব্যাপারটা আল্লাহ্‌র উপর সোপর্দ করছি (আমার বাঁচা-মরার জন্য আমি মোটেও ভাবি না)। আল্লাহ তাঁর বান্দাহদের উপর (সদাসর্বদা) দৃষ্টি রাখেন।

فَوَقٰهُ اللهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ج (٤٥)

৪৫. অতঃপর আল্লাহ তাকে তাদের ষড়যন্ত্রের খারাবী থেকে রক্ষা করলেন, আর কঠিন শাস্তি ফেরাউনের লোকজনকে চতুর্দিক থেকে ঘিরে ফেলল।

اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ج وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ قف أَدْخِلُوْٓا اٰلَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ الْعَذَابِ (٤٦)

৪৬. (ক্ববরে) তাদেরকে সকাল-সন্ধ্যায় জাহান্নামের সামনে উপস্থিত করা য় আর যেদিন ক্বিয়ামত সংঘটিত হবে সেদিন (বলা হবে) ফেরাউনের জাতি গোষ্ঠীকে কঠিন 'আযাবে প্রবিষ্ট কর।

وَإِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِي النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا إِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ

৪৭. জাহান্নামে তারা যখন বাক-বিতণ্ডা করবে, তখন দুর্বলেরা দাপটওয়ালাদের বলবে– আমরা তো তোমাদেরই অনুসারী ছিলাম, কাজেই তোমরা

أَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ (٤٧)

কি (এখন) আমাদের আগুনের শাস্তির কিছুটা শেয়ার নেবে?

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا إِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ إِنَّ اللهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ (٤٨)

৪৮. দাপটওয়ালারা বলবে– আগুনে আমরা সবাই তো আছি, আল্লাহ বান্দাহ্‌দের বিচার তো করেই ফেলেছেন।

وَقَالَ الَّذِيْنَ فِي النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ (٤٩)

৪৯. আগুনের বাসিন্দারা জাহান্নামের রক্ষীদের বলবে- তোমাদের প্রতিপালকের নিকট দু'আ কর, তিনি যেন আমাদের থেকে একদিনের শাস্তি কমিয়ে দেন।

قَالُوْٓا أَوَلَمْ تَكُ تَأْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ج قَالُوْا بَلٰى ط قَالُوْا فَادْعُوْا ج وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ع (٥٠)

৫০. রক্ষীগণ বলবে– রসূলগণ কি স্পষ্ট প্রমাণ নিয়ে তোমাদের কাছে আসেনি? তারা (উত্তরে) বলবে, হাঁ (এসেছিল)। জাহান্নামের রক্ষীরা বলবে- তাহলে তোমরাই দু'আ কর, কাফিরদের দু'আ নিস্ফলই হয়।

إِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْأَشْهَادُ لا (٥١)

৫১. আমি আমার রসূলদেরকে আর মু'মিনদেরকে অবশ্যই সাহায্য করব দুনিয়ার জীবনে আর (ক্বিয়ামতে) যে দিন সাক্ষীরা দাঁড়াবে।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ (٥٢)

৫২. যেদিন যালিমদের ওজর-আপত্তি কোন উপকারে আসবে না। তাদের জন্য আছে লা'নত, তাদের জন্য আছে নিকৃষ্ট বাসস্থান।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَأَوْرَثْنَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ الْكِتٰبَ لا (٥٣)

৫৩. ইতোপূর্বে আমি মূসাকে দিয়েছিলাম- পথ নির্দেশ আর বানী ইসরাঈলকে করেছিলাম (মূসার নিকট প্রদত্ত) কিতাবের উত্তরাধিকারী।

هُدًى وَّذِكْرٰى لِأُولِي الْأَلْبَابِ (٥٤)

৫৪. (সে কিতাব ছিল) জ্ঞানবুদ্ধিসম্পন্ন লোকেদের জন্য সঠিক পথের দিশারী ও উপদেশ।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ (٥٥)

৫৫. কাজেই তুমি ধৈর্য ধারণ কর, (তুমি দেখতে পাবে) আল্লাহ্‌র ও'য়াদা সত্য। তুমি তোমার ভুল-ভ্রান্তির জন্য ক্ষমা প্রার্থনা কর আর সকাল-সন্ধ্যা তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা সহকারে পবিত্রতা বর্ণনা কর।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللهِ بِغَيْرِ سُلْطٰنٍ أَتٰهُمْ لا إِنْ فِيْ صُدُوْرِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ

৫৬. কোন সুস্পষ্ট প্রমাণ না পেয়েই যারা আল্লাহ্‌র আয়াত সম্পর্কে তর্ক করে, তাদের বুকের ভিতর আছে কেবল অহংকার, কিন্তু তারা তা (অর্থাৎ

مَّا هُم بِبَالِغِيهِ ج فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ط إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ (٥٦)

প্রকৃত বড়ত্ব ও শ্রেষ্ঠত্ব আল্লাহ্‌র দয়া ছাড়া) কক্ষনো অর্জন করতে পারে না। কাজেই আল্লাহ্‌র কাছে আশ্রয় চাও, (কারণ) তিনি সব কিছু শোনেন, সব কিছু দেখেন।

لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ (٥٧)

৫৭. অবশ্যই আসমান ও যমীনের সৃষ্টি মানুষ সৃষ্টির চেয়ে বড় (ব্যাপার)। কিন্তু অধিকাংশ মানুষ (অজ্ঞতা ও চিন্তা না করার কারণে) তা জানে না।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمٰى وَالْبَصِيرُ لا وَالَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِيٓءُ ط قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ (٥٨)

৫৮. অন্ধ আর চক্ষুষ্মান সমান নয়, (সমান নয়) যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে আর যারা অন্যায়কারী। উপদেশ থেকে শিক্ষা তোমরা সামান্যই গ্রহণ কর।

إِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا ز وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ (٥٩)

৫৯. ক্বিয়ামত অবশ্যই আসবে, এতে কোন সন্দেহ নেই, কিন্তু অধিকাংশ লোক (তা) বিশ্বাস করে না।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ط إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دٰخِرِينَ ع (٦٠)

৬০. তোমার প্রতিপালক বলেন– তোমরা আমাকে ডাকো, আমি (তোমাদের ডাকে) সাড়া দেব। যারা অহংকারবশতঃ আমার 'ইবাদাত করে না, নিশ্চিতই তারা লাঞ্ছিত অবস্থায় জাহান্নামে প্রবেশ করবে।

اَللّٰهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ط إِنَّ اللّٰهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ (٦١)

৬১. আল্লাহ যিনি তোমাদের জন্য রাত্রি বানিয়েছেন যাতে তোমরা তাতে প্রশান্তি লাভ করতে পার, আর দিনকে করেছেন আলোকময়। আল্লাহ মানুষদের প্রতি বড়ই অনুগ্রহশীল, কিন্তু অধিকাংশ মানুষই (আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ লাভের পরও) কৃতজ্ঞতা স্বীকার করে না।

ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ م لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ز فَأَنّٰى تُؤْفَكُونَ (٦٢)

৬২. এ হলেন আল্লাহ, তোমাদের প্রতিপালক, সব কিছুর সৃষ্টিকর্তা। তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই; এমতাবস্থায় তোমাদেরকে সত্য থেকে কীভাবে বিভ্রান্ত করা হচ্ছে?

كَذٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُونَ (٦٣)

৬৩. বিভ্রান্ত এভাবেই করা হয় তাদেরকে যারা আল্লাহ্‌র আয়াতকে অস্বীকার করে।

৬৪. আল্লাহ যিনি তোমাদের জন্য যমীনকে করেছেন মেঝে, আর আকাশকে করেছেন ছাদ। তিনি তোমাদেরকে আকৃতি দিয়েছেন, অতঃপর তোমাদের আকৃতিকে সুন্দর করেছেন। তিনি পবিত্র বস্তু থেকে তোমাদেরকে রিয্‌ক দান করেন। এ হলেন আল্লাহ তোমাদের প্রতিপালক। কাজেই মহিমা গৌরব আল্লাহ্‌র যিনি বিশ্ব জগতের প্রতিপালক।

اَللهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ط ذٰلِكُمُ اللهُ رَبُّكُمْ ج صلے فَتَبَارَكَ اللهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ (٦٤)

৬৫. চিরঞ্জীব তিনি, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই। কাজেই তাঁকে ডাক আনুগত্যকে একমাত্র তাঁরই জন্য বিশুদ্ধ করে। যাবতীয় প্রশংসা বিশ্বজগতের প্রতিপালক আল্লাহ্‌রই জন্য।

هُوَ الْحَيُّ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ط اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٦٥)

৬৬. বল, আমার প্রতিপালকের কাছ থেকে আমার কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ এসেছে, এমতাবস্থায় আমাকে তাদের 'ইবাদাত করতে নিষেধ করা হয়েছে আল্লাহকে বাদ দিয়ে যাদেরকে তোমরা আহ্বান কর। আর আমাকে আদেশ দেয়া হয়েছে বিশ্বজগতের প্রতিপালকের নিকট আত্মসমপণ করার জন্য।

قُلْ إِنِّيْ نُهِيْتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ لَمَّا جَآءَنِيَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّيْ ز وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٦٦)

৬৭. তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন মাটি থেকে, অতঃপর শুক্রবিন্দু থেকে, অতঃপর জমাট বাঁধা রক্ত থেকে, অতঃপর তোমাদেরকে বের করে এনেছেন শিশুরূপে, অতঃপর তিনি তোমাদের বৃদ্ধি দান করেন যাতে তোমরা তোমাদের পূর্ণ শক্তির বয়সে পৌঁছতে পার, অতঃপর আরো বৃদ্ধি দেন যাতে তোমরা বৃদ্ধ হও। তোমাদের মধ্যে কারো কারো আগেই মৃত্যু ঘটান যাতে তোমরা তোমাদের জন্য নির্দিষ্ট সময়ে পৌঁছে যাও আর যাতে তোমরা (আল্লাহ্‌র সৃষ্টি কুশলতা) অনুধাবন কর।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ج وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا أَجَلًا مُّسَمًّى وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (٦٧)

৬৮. তিনিই জীবন দেন ও মৃত্যু ঘটান। যখন কোন কিছু করার সিদ্ধান্ত করেন, তার জন্য তিনি বলেন– হও, তখন তা হয়ে যায়।

هُوَ الَّذِيْ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ ج فَإِذَا قَضٰٓى أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُوْلُ لَهُ كُنْ فَيَكُوْنُ ع (٦٨)

৬৯. তুমি কি তাদের প্রতি লক্ষ্য কর না যারা আল্লাহ্‌র নির্দশনগুলো সম্পর্কে বাক-বিতণ্ডা করে? (সত্য থেকে) তাদেরকে কীভাবে ফিরিয়ে নেয়া হচ্ছে?

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِ اللهِ ط أَنّٰى يُصْرَفُوْنَ لا (٦٩)

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ أَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (٧٠)

৭০. যারা কিতাবকে আর আমি আমার রসূলদেরকে যা দিয়ে পাঠিয়েছি তাকে অস্বীকার করে, তারা শীঘ্রই জানতে পারবে।

إِذِ الْأَغْلٰلُ فِيْٓ أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ط يُسْحَبُوْنَ (٧١)

৭১. যখন তাদের গলায় থাকবে বেড়ি আর শিকল; তাদের টেনে নিয়ে যাওয়া হবে

فِي الْحَمِيْمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ج (٧٢)

৭২. ফুটন্ত পানিতে, অতঃপর তাদেরকে আগুনে দগ্ধ করা হবে।

ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ (٧٣)

৭৩. অতঃপর তাদেরকে বলা হবে– তারা কোথায় তোমরা যাদেরকে (আল্লাহ্‌র) শরীক গণ্য করতে

مِنْ دُوْنِ اللهِ ط قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ط كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللهُ الْكٰفِرِيْنَ (٧٤)

৭৪. আল্লাহকে বাদ দিয়ে? (উত্তরে) তারা বলবে- তারা আমাদের কাছ থেকে উধাও হয়ে গেছে। না, আমরা আগে (যার অস্তিত্ব আছে এমন) কোন কিছুকেই ডাকিনি। এভাবে আল্লাহ কাফিরদেরকে পথভ্রষ্ট হওয়ার সুযোগ দেন।

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ج (٧٥)

৭৫. এর কারণ এই যে, তোমরা অসত্য নিয়ে উল্লাস করতে, আর এজন্য যে, তোমরা গর্ব অহংকার করতে।

أُدْخُلُوْٓا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ج فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ (٧٦)

৭৬. তোমরা জাহান্নামের দরজাগুলো দিয়ে প্রবেশ কর, চিরকাল তার ভিতরে থাকার জন্য। দাম্ভিকদের বাসস্থান কতই না নিকৃষ্ট!

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ ج فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ (٧٧)

৭৭. অতএব তুমি ধৈর্য ধারণ কর, (কেননা) আল্লাহ্‌র ওয়া'দা সত্য। অতঃপর আমি তাদেরকে (শাস্তির) যে ওয়া'দা দিয়েছি তার কিছু যদি তোমাকে (এ পৃথিবীতেই) দেখিয়ে দেই অথবা (তাদেরকে শাস্তি দেয়ার পূর্বেই) তোমার মৃত্যু ঘটাই, (উভয় অবস্থাতেই) তাদেরকে আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে। (আমার শাস্তি থেকে তারা রেহাই পাবে না)।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ نَقْصُصْ

৭৮. আমি তোমার পূর্বে অনেক রসূল পাঠিয়েছিলাম। তাদের মধ্যে কারো কারো কাহিনী আমি তোমার কাছে বর্ণনা করেছি, তাদের মধ্যে কারো কারো কথা আমি তোমার কাছে বর্ণনা

عَلَيْكَ ط وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ أَنْ يَّأْتِيَ بِاٰيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ج فَإِذَا جَآءَ أَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ع (٧٨)

করিনি। আল্লাহ্র অনুমতি ছাড়া কোন নিদর্শন নিয়ে আসা কোন রসূলের পক্ষে সম্ভব নয়। আল্লাহ্র নির্দেশ যখন জারী হয়ে যায়, তখন ন্যায়সঙ্গতভাবে (বিষয়টির) ফয়সালা করা হয়। আর যারা মিথ্যার উপর দাঁড়িয়েছিল তারা তখনকার তখনই ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে পড়ে।

اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ز (٧٩)

৭৯. আল্লাহ– যিনি তোমাদের জন্য গবাদি পশু সৃষ্টি করেছেন, যাতে তোমরা তাদের কতকগুলোর উপর আরোহণ করতে পার, আর কতকগুলো থেকে আহার করতে পার।

وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ط (٨٠)

৮০. ওগুলোতে তোমাদের জন্য আছে বহু উপকার। তোমরা তোমাদের অন্তরে যে প্রয়োজনবোধ কর, যাতে ওগুলোর দ্বারা তা মিটাতে পার। ওগুলোর উপর আর নৌযানে তোমাদেরকে বহন করা হয়।

وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ قصلے فَأَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُنْكِرُوْنَ (٨١)

৮১. তিনি তোমাদেরকে তাঁর নিদর্শন দেখান। কাজেই আল্লাহ্র কোন্ নিদর্শনকে তোমরা অস্বীকার কর।

أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط كَانُوْٓا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَآ أَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٨٢)

৮২. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করে না? করলে তারা দেখত, তাদের পূর্ববর্তীদের পরিণতি কী হয়েছিল। দুনিয়ায় এদের চেয়ে তারা সংখ্যায় অধিক ছিল, আর শক্তি সামর্থ্য ও কীর্তি চিহ্নে বেশি প্রবল ছিল। কিন্তু তারা যা অর্জন করেছিল তা তাদের কোন উপকারে আসেনি।

فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِئُوْنَ (٨٣)

৮৩. তাদের কাছে যখন তাদের রসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে আসল, তখন তারা তাদের নিজেদের কাছে যে জ্ঞান ও বিদ্যা ছিল তাতেই উৎফুল্ল হয়ে উঠল। অতঃপর যা নিয়ে তারা ঠাট্টা বিদ্রুপ করত তা-ই তাদেরকে ঘিরে ফেলল।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ (٨٤)

৮৪. আমার শাস্তি তারা যখন দেখল তখন তারা বলল– আমরা এক আল্লাহ্র প্রতি ঈমান আনলাম আর যাদেরকে আমরা (আল্লাহ্র) শরীক গণ্য করতাম তাদেরকে প্রত্যাখ্যান করলাম।

৮৫. তারা যখন আমার শাস্তি দেখল তখন তাদের ঈমান (গ্রহণ) তাদের কোন উপকারে আসল না। আল্লাহ্‌র (এ) বিধান তাঁর বান্দাহদের উপর (বহু) পূর্ব হতেই (কার্যকর হয়ে) চলে আসছে। আর এ ক্ষেত্রে কাফিররাই ক্ষতিগ্রস্ত হয়।

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ط سُنَّتَ اللهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ عِبَادِهِ ج وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ع (٨٥)

৪১. সূরাহ ফুস্‌সিলাত

سُوْرَةُ فُصِّلَتْ

আয়াতঃ ৫৪, রুকূ'ঃ ৬, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হা-মীম।

حٰمٓ ج (١)

২. পরম দয়াময়, পরম দয়ালুর নিকট হতে অবতীর্ণ।

تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ج (٢)

৩. এক কিতাব, যার আয়াতগুলো বিস্তারিতভাবে ব্যাখ্যাকৃত, আরবী ভাষার কুরআন, জ্ঞানসম্পন্ন মানুষদের জন্য।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ لا (٣)

৪. সুসংবাদবাহী ও সাবধানকারী। কিন্তু ওদের অধিকাংশই (এ কুরআন থেকে) মুখ ফিরিয়ে নিয়েছে, কাজেই ওরা শুনবে না।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ج فَأَعْرَضَ أَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ (٤)

৫. তারা বলে, তুমি আমাদেরকে যার দিকে ডাক দিচ্ছ তাথেকে আমাদের দিল আবরণে ঢাকা আছে, আর আমাদের কানে আছে বধিরতা, আমাদের আর তোমাদের মাঝে আছে এক পর্দা (অর্থাৎ তোমার দীন প্রচারের কারণে আমাদের ও তোমাদের মাঝে বিচ্ছেদ ঘটে গেছে), কাজেই তুমি তোমার কাজ কর, আমরা আমাদের কাজ করি।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ أَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ إِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْ ۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ إِنَّنَا عَامِلُوْنَ (٥)

৬. বল, আমি তোমাদের মতই একজন মানুষ। (পার্থক্য শুধু এই যে) আমার কাছে ওয়াহী করা হয় যে, তোমাদের ইলাহ কেবল এক ইলাহ; কাজেই তোমরা তাঁরই সরল সঠিক পথে চল, তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা কর। ধ্বংস তাদের জন্য যারা

قُلْ إِنَّمَآ أَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى إِلَيَّ أَنَّمَآ إِلٰهُكُمْ إِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا إِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ط وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ لا (٦)

আল্লাহ্‌র সাথে অন্যদেরকে শরীক গণ্য করে।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ (٧)

৭. যারা যাকাত দেয় না, আর তারা আখিরাত অমান্য করে।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ع (٨)

৮. যারা ঈমান আনে আর নেক কাজ করে, তাদের জন্য আছে এমন পুরস্কার যা কোন দিনও বন্ধ হবে না।

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ الْأَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ أَنْدَادًا ط ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ج (٩)

৯. বল- তোমরা কি তাঁকে অস্বীকারই করছ যিনি যমীনকে সৃষ্টি করেছেন দু'দিনে আর তাঁর সমকক্ষ বানাচ্ছ? তিনিই তো বিশ্বজগতের রব্ব।

وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ أَقْوَاتَهَا فِيْٓ أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ ط سَوَآءً لِّلسَّآئِلِيْنَ (١٠)

১০. (যমীন সৃষ্টির পর) তার বুকে তিনি সুদৃঢ় পর্বতমালা স্থাপন করেছেন, যমীনকে বরকতমণ্ডিত করেছেন আর তাতে প্রার্থীদের প্রয়োজন মুতাবেক নির্দিষ্ট পরিমাণ খাদ্য সঞ্চিত করেছেন চার দিনে।

ثُمَّ اسْتَوٰٓى إِلَى السَّمَآءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا ط قَالَتَآ أَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ (١١)

১১. তারপর নজর দিয়েছেন আকাশের দিকে যখন তা ছিল ধোঁয়া ('র মত)। তখন তিনি আকাশ আর পৃথিবীকে বললেন- আমার অনুগত হও, ইচ্ছায় অথবা অনিচ্ছায়। উভয়ে বলল- আমরা স্বেচ্ছায় অনুগত হলাম।

فَقَضٰهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَأَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ أَمْرَهَا وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ صلے وَحِفْظًا ط ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (١٢)

১২. অতঃপর তিনি আকাশমণ্ডলীকে সাত আকাশে বিন্যস্ত করলেন দু'দিনে আর প্রত্যেক আকাশকে তার বিধি-ব্যবস্থা ওয়াহীর মাধ্যমে প্রদান করলেন। আমি আলোকমালার সাহায্যে দুনিয়ার আকাশের শোভাবর্ধন করলাম আর সুরক্ষার (ও ব্যবস্থা করলাম)। এ হল মহা পরাক্রমশালী সর্বজ্ঞ আল্লাহ্‌র সুনির্ধারিত (ব্যবস্থাপনা)।

فَإِنْ أَعْرَضُوْا فَقُلْ أَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ط (١٣)

১৩. এরপরও তারা যদি মুখ ফিরিয়ে নেয় তাহলে বল– আমি তোমাদেরকে অকস্মাৎ শাস্তির ভয় দেখাচ্ছি- 'আদ ও সামূদের (উপর নেমে আসা) অকস্মাৎ-শাস্তির মত।

إِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْ بَيْنِ أَيْدِيْهِمْ وَمِنْ

১৪. তাদের কাছে যখন তাদের অগ্রে ও পশ্চাতে

خَلْفِهِمْ أَلَّا تَعْبُدُوْٓا إِلَّا اللهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَأَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَإِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ (١٤)

(একের পর এক) রসূলগণ এসেছিল (আর বলেছিল)– তোমরা আল্লাহ ছাড়া কারো 'ইবাদাত করো না। (জবাবে) তারা বলেছিল- আমাদের প্রতিপালক ইচ্ছে করলে তো অবশ্যই ফেরেশতা নাযিল করতেন। কাজেই তোমাদেরকে যা দিয়ে পাঠানো হয়েছে আমরা তা অমান্য করছি।

فَأَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ أَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ أَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ (١٥)

১৫. আর 'আদ-এর অবস্থা ছিল এই যে, দুনিয়াতে তারা না-হক অহংকার করেছিল, আর বলেছিল- আমাদের চেয়ে বেশি শক্তিশালী আর কে আছে? তারা কি চিন্তা করে দেখেনি যে, আল্লাহ– যিনি তাদেরকে সৃষ্টি করেছেন– শক্তিতে তাদের চেয়ে প্রবল? কিন্তু তারা আমার আয়াতগুলো অস্বীকার করতেই থাকল।

فَأَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ أَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ (١٦)

১৬. অতঃপর আমি অশুভ দিনগুলোতে তাদের বিরুদ্ধে ঝাঞ্ঝা বায়ু পাঠালাম যাতে তারা দুনিয়ার জীবনে অপমানজনক শাস্তি আস্বাদন করে। আখিরাতের শাস্তি অবশ্যই অধিক লাঞ্ছনাদায়ক আর তারা সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না।

وَأَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَأَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ج (١٧)

১৭. আর সামূদের অবস্থা এই যে, আমি তাদেরকে সঠিক পথে চলার নির্দেশ দিয়েছিলাম। কিন্তু তারা সঠিক পথে চলার পরিবর্তে অন্ধ হয়ে থাকাকেই পছন্দ করে ছিল। তখন তাদের কৃতকর্মের কারণে অপমানজনক শাস্তির বজ্রাঘাত তাদেরকে পাকড়াও করল।

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ع (١٨)

১৮. আর আমি তাদেরকে বাঁচিয়ে দিলাম যারা ঈমান এনেছিল আর (আল্লাহ্‌কে) ভয় করে চলত।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ أَعْدَآءُ اللهِ إِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ (١٩)

১৯. যে দিন আল্লাহ্‌র দুশমনদেরকে জাহান্নামের দিকে সমবেত করা হবে, তাদেরকে বিভিন্ন দলে বিন্যস্ত করা হবে।

حَتّٰٓى إِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا

২০. শেষ পর্যন্ত যখন তারা জাহান্নামের নিকটে পৌঁছবে, তখন তারা যা করত সে সম্পর্কে তাদের কান, তাদের চোখ আর তাদের চামড়া তাদের বিরুদ্ধ সাক্ষ্য দেবে।

يَعْمَلُوْنَ (٢٠)

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ط قَالُوْٓا أَنْطَقَنَا اللهُ الَّذِيْٓ أَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٢١)

২১. তারা তাদের চামড়াকে বলবে– আমাদের বিরুদ্ধে কেন সাক্ষ্য দিচ্ছ? তারা উত্তর দিবে– আল্লাহ আমাদেরকে কথা বলার শক্তি দিয়েছেন, যিনি সব কিছুকেই (আজ) কথা বলার শক্তি দিয়েছেন। তিনিই প্রথমবার তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, আর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে নেয়া হবে।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ أَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَآ أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ (٢٢)

২২. (দুনিয়ায় নিজেদের শরীরের অংশগুলোকে তোমরা) এই ভেবে গোপন করতে না যে, না তোমাদের কান, না তোমাদের চোখ আর না তোমাদের চামড়া তোমাদের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দেবে। বরং তোমরা মনে করতে যে, তোমরা যা কর তার অধিকাংশই আল্লাহ জানেন না।

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِيْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ أَرْدٰكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ (٢٣)

২৩. তোমাদের এই (ভুল) ধারণাই– যা তোমরা তোমাদের প্রতিপালক সম্পর্কে পোষণ করতে– তোমাদেরকে ধ্বংস করেছে, ফলে তোমরা ক্ষতিগ্রস্তদের দলে শামিল হয়ে গেছ।

فَإِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ط وَإِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ (٢٤)

২৪. এখন যদি তারা ধৈর্য ধারণ করে তবুও জাহান্নামই হবে তাদের আবাস, আর যদি তারা ক্ষমা প্রার্থনা করে তবুও তারা ক্ষমাপ্রাপ্ত হবে না।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ج إِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ع (٢٥)

২৫. আমি তাদেরকে প্রাণের বন্ধু জুটিয়ে দিয়েছিলাম, যারা তাদেরকে তাদের সামনের আর পিছনের প্রত্যেকটি জিনিসকে চাকচিক্যময় করে দেখাচ্ছিল। শেষ পর্যন্ত তাদের উপরও তেমনি 'আযাবের ফয়সালা কার্যকর হল, যা তাদের পূর্ববর্তী জিন্ন ও মানব দলের উপর কার্যকর হয়েছিল। বাস্তবিকই তারা ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে গেল।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ (٢٦)

২৬. কাফিররা বলে– এ কুরআন শুনো না, আর তা পড়ার কালে শোরগোল কর যাতে তোমরা বিজয়ী হতে পার।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا

২৭. ফলতঃ আমি কাফিরদেরকে অবশ্য অবশ্যই কঠিন শাস্তি আস্বাদন করাব, আর আমি অবশ্য অবশ্যই তাদেরকে তাদের নিকৃষ্টতম কাজের

وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٢٧)

অনুসারে প্রতিফল দিব।

ذٰلِكَ جَزَآءُ أَعْدَآءِ اللهِ النَّارُ ج لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ط جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ (٢٨)

২৮. আল্লাহ্‌র দুশমনদের জন্য প্রতিফল হল এ জাহান্নাম। তাতে আছে তাদের জন্য চিরস্থায়ী আবাস। (এ হল তাদের) প্রতিফল, কারণ তারা আমার আয়াতগুলোকে অস্বীকার করত।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا رَبَّنَآ أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُوْنَا مِنَ الْأَسْفَلِيْنَ (٢٩)

২৯. কাফিররা বলবে– হে আমাদের প্রতিপালক! জিন ও মানুষদের মধ্যেকার যারা আমাদেরকে পথভ্রষ্ট করেছিল তাদের উভয়কে দেখিয়ে দিন, তাদের উভয়কে পায়ের তলায় পিষ্ট করব, যাতে তারা নিকৃষ্ট অধমদের মধ্যে গণ্য হয়।

إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ أَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَأَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ (٣٠)

৩০. যারা বলে– আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ, অতঃপর (সে কথার উপর) সুদৃঢ় থাকে, ফেরেশতারা তাদের নিকট অবতীর্ণ হয় আর বলে, তোমরা ভয় করো না, চিন্তা করো না, আর জান্নাতের সুসংবাদ গ্রহণ কর যার ওয়া'দা তোমাদেরকে দেয়া হয়েছে।

نَحْنُ أَوْلِيٰٓؤُكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ج وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَشْتَهِيْٓ أَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ط (٣١)

৩১. পার্থিব জীবনে আর আখিরাতে আমরাই তোমাদের সঙ্গী-সাথী। আর সেখানে (অর্থাৎ জান্নাতে) তোমাদের জন্য তোমাদের মন যা চায় তা-ই আছে; তোমরা যে জিনিসের আকাঙ্ক্ষা কর, তোমাদের জন্য সেখানে তা-ই আছে

نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِيْمٍ ع (٣٢)

৩২. পরম ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু (আল্লাহ)'র পক্ষ থেকে আপ্যায়ন হিসেবে।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَآ إِلَى اللهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ إِنَّنِيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (٣٣)

৩৩. কথায় ঐ ব্যক্তি থেকে কে বেশি উত্তম যে (মানুষকে) আল্লাহ্‌র দিকে আহ্বান করে, আর সৎ কাজ করে এবং বলে, 'আমি (আল্লাহ্‌র প্রতি) অনুগতদের অন্তর্ভুক্ত'।

وَلَا تَسْتَوِي الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ط اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ أَحْسَنُ فَإِذَا الَّذِيْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَأَنَّهٗ وَلِيٌّ حَمِيْمٌ (٣٤)

৩৪. ভাল আর মন্দ সমান নয়। উৎকৃষ্ট দিয়ে মন্দকে দূর কর। তখন দেখবে, তোমার আর যার মধ্যে শত্রুতা আছে সে যেন অন্তরঙ্গ বন্ধু।

وَمَا يُلَقّٰهَآ إِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ج وَمَا يُلَقّٰهَآ إِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ (٣٥)

৩৫. এ গুণ কেবল তারাই লাভ করে যারা ধৈর্যশীল, এ গুণ কেবল তারাই লাভ করে যারা মহা ভাগ্যবান।

وَإِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ط إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٣٦)

৩৬. শয়ত্বানের পক্ষ থেকে যদি তুমি কুমন্ত্রণা অনুভব কর, তাহলে আল্লাহ্‌র আশ্রয় প্রার্থনা কর। তিনি সর্বশ্রোতা সর্বজ্ঞ।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ اللَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ط لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَهُنَّ إِنْ كُنْتُمْ إِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ (٣٧)

৩৭. তাঁর নিদর্শনগুলোর মধ্যে হল রাত, দিন, সূর্য আর চন্দ্র। সূর্যকে সেজদা করো না, চন্দ্রকেও না। সেজদা কর আল্লাহকে যিনি ওগুলোকে সৃষ্টি করেছেন যদি সত্যিকারভাবে একমাত্র তাঁরই তোমরা ইবাদাত করতে চাও।

فَإِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِاللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْأَمُوْنَ (٣٨) السجدة

৩৮. অতঃপর তারা যদি অহংকার করে তবে (তারা জেনে নিক যে), তোমার প্রতিপালকের নিকটে যারা রয়েছে তারা দিন-রাত তাঁর মাহাত্ম্য বর্ণনায় লিপ্ত আছে, আর তারা কখনও ক্লান্তিবোধ করে না। [সেজদা]

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ أَنَّكَ تَرَى الْأَرْضَ خَاشِعَةً فَإِذَآ أَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ط إِنَّ الَّذِيْٓ أَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ط إِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٣٩)

৩৯. তাঁর নিদর্শনগুলোর মধ্যে হল এই যে, তুমি যমীনকে দেখ শুষ্ক অনুর্বর পড়ে আছে। অতঃপর আমি যখন তার উপর বৃষ্টি বর্ষণ করি তখন তা সতেজ হয় ও বেড়ে যায়। যিনি এ মৃত যমীনকে জীবিত করেন, তিনি অবশ্যই মৃতদেরকে জীবিত করবেন। তিনি সকল বিষয়ের উপর ক্ষমতাবান।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ط أَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ أَمَّنْ يَّأْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ط اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ لا إِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٤٠)

৪০. যারা আমার আয়াতসমূহের অর্থকে ভিন্নপথে পরিচালিত করে, তারা আমার থেকে লুক্কায়িত নয়। যাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে সেই উত্তম না ঐ ব্যক্তি যে ক্বিয়ামতের দিন সম্পূর্ণ নিরাপদ হয়ে হাজির হবে? তোমাদের যা ইচ্ছে হয় করতে থাক। তোমরা যা কর তা তিনি (খুব ভালভাবেই) দেখেন।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ج

৪১. যারা তাদের কাছে উপদেশ বাণী আসার পর তা প্রত্যাখ্যান করে (তারা আমার থেকে লুক্কায়িত নয়)। এটা হল অবশ্যই এক মহা শক্তিশালী গ্রন্থ।

وَإِنَّهُ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ۙ (٤١)

لَّا يَأْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ (٤٢)

৪২. মিথ্যা এর কাছে না এর সামনে দিয়ে আসতে পারে, না এর পিছন দিয়ে। এটা অবতীর্ণ হয়েছে মহাজ্ঞানী, সকল প্রশংসার যোগ্য (আল্লাহ)'র পক্ষ হতে।

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيْلَ لِلرُّسُلِ مِنْ قَبْلِكَ ؕ إِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ وَّذُوْ عِقَابٍ أَلِيْمٍ (٤٣)

৪৩. তোমাকে তা-ই বলা হচ্ছে যা বলা হত তোমার পূর্ববর্তী রসূলদেরকে। তোমার প্রতিপালক অবশ্যই ক্ষমার অধিকারী, আর যন্ত্রণাদায়ক শাস্তিদাতা।

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوْا لَوْلَا فُصِّلَتْ اٰيَاتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِيٌّ وَّعَرَبِيٌّ ؕ قُلْ هُوَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هُدًى وَّشِفَآءٌ ؕ وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ وَّهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ؕ أُولٰٓئِكَ يُنَادَوْنَ مِنْ مَّكَانٍ بَعِيْدٍ ع (٤٤)

৪৪. আমি যদি একে অনারব ভাষায় (অবতীর্ণ) কুরআন করতাম তাহলে তারা অবশ্যই বলত– এর আয়াতগুলো সুস্পষ্টভাবে বর্ণনা করা হল না কেন? আশ্চর্য ব্যাপার! কিতাব হল অনারব দেশীয় আর শ্রোতারা হল আরবীভাষী। বল– যারা ঈমান আনে তাদের জন্য এ কুরআন সঠিক পথের দিশারী ও আরোগ্য (লাভের উপায়)। যারা ঈমান আনে না তাদের কানে আছে বধিরতা, আর এ কুরআন তাদের জন্য অন্ধত্ব। (যেন) বহু দূর থেকে তাদেরকে ডাকা হচ্ছে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ؕ وَإِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ (٤٥)

৪৫. (ইতোপূর্বে) মূসাকে আমি কিতাব দিয়েছিলাম, কিন্তু তাতে মতভেদ করা হয়েছিল। তোমার প্রতিপালক যদি পূর্বেই একটি কথা ঘোষণা করে না দিতেন, তাহলে তাদের মধ্যে (মতভেদের ব্যাপারে) ফয়সালা করেই দিতেন। তারা এ ব্যাপারে এক অস্থিরতাপূর্ণ সন্দেহে লিপ্ত।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ج وَمَنْ أَسَآءَ فَعَلَيْهَا ؕ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ (٤٦)

৪৬. যে সৎকাজ করবে নিজের কল্যাণেই করবে. যে অসৎ কাজ করবে তার পরিণতি তাকেই ভোগ করতে হবে। তোমার প্রতিপালক বান্দাদের প্রতি যালিম নন।

إِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَمَا تَخْرُجُ مِنْ ثَمَرَاتٍ مِّنْ أَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ مِنْ أُنْثَىٰ وَلَا تَضَعُ إِلَّا بِعِلْمِهِ ۚ وَيَوْمَ يُنَادِيهِمْ أَيْنَ شُرَكَآئِي ۙ قَالُوٓا آذَنَّاكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيدٍ ج (٤٧)

৪৭. ক্বিয়ামত কখন সংঘটিত হবে সে সম্পর্কিত জ্ঞান একমাত্র তাঁর কাছেই আছে। কোন ফলই তার আবরণ থেকে বেরিয়ে আসে না, এবং কোন নারী গর্ভধারণ করে না আর সন্তান প্রসব করে না তাঁর অজ্ঞাতে। যে দিন তিনি তাদেরকে ডেকে বলবেন– আমার শরীকরা কোথায় (তোমরা যেগুলো বানিয়ে নিয়েছিলে)? তারা বলবে– আপনাকে নিশ্চয়তা দিচ্ছি যে, (আজ) আমাদের কেউ (আপনার শরীক থাকার ব্যাপারে) সাক্ষ্য দাতা হবে না।

وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَدْعُونَ مِنْ قَبْلُ وَظَنُّوا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيصٍ (٤٨)

৪৮. পূর্বে তারা যাদেরকে ডাকত তারা তাদের থেকে উধাও হয়ে যাবে, আর তারা বুঝতে পারবে যে, তাদের পালানোর কোন জায়গা নেই।

لَا يَسْأَمُ الْإِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ز وَإِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَئُوسٌ قَنُوطٌ (٤٩)

৪৯. মানুষ নিজের কল্যাণ কামনায় দু'আ প্রার্থনা করতে ক্লান্ত হয় না, আর মন্দ যখন তাকে স্পর্শ করে, তখন সে নৈরাশ্যে ডুবে যায়।

وَلَئِنْ أَذَقْنَاهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْ بَعْدِ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ لَيَقُولَنَّ هَٰذَا لِي ۙ وَمَآ أَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ إِلَىٰ رَبِّيٓ إِنَّ لِي عِنْدَهُ لَلْحُسْنَىٰ ج فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا بِمَا عَمِلُوا ز وَلَنُذِيقَنَّهُمْ مِّنْ عَذَابٍ غَلِيظٍ (٥٠)

৫০. দুঃখ-বিপদ মানুষকে স্পর্শ করার পর আমি যখন তাকে আমার অনুগ্রহ আস্বাদন করাই তখন সে অবশ্য অবশ্যই বলে– এটা আমার ন্যায্য পাওনা। ক্বিয়ামত যে সংঘটিত হবে আমি মোটেই তা মনে করি না। আর যদি আমাকে আমার প্রতিপালকের নিকট ফিরিয়ে নেয়া হয়ই, তবে তাঁর কাছে আমার জন্য অবশ্যই কল্যাণ আছে। অতঃপর আমি কাফিরদেরকে অবশ্য অবশ্যই জানিয়ে দেব তারা (দুনিয়াতে) কী কাজ করেছিল। আর অবশ্য অবশ্যই তাদেরকে আমি কঠিন শাস্তি আস্বাদন করাব।

وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ وَنَا بِجَانِبِهِ ج وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُو دُعَآءٍ عَرِيضٍ (٥١)

৫১. আমি যখন মানুষকে নি'মাত দেই তখন সে মুখ ফিরিয়ে নেয়, আর পাশ কেটে (আমার থেকে দূরে) সরে যায়। আর যখন মন্দ তাকে স্পর্শ করে, তখন সে লম্বা-চওড়া দু'আ করতে থাকে।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللهِ ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهِ مَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ فِي

৫২. বল– তোমরা কি ভেবে দেখেছ এ (কুরআন) যদি আল্লাহ্‌র পক্ষ থেকেই এসে থাকে, আর তোমরা সেটাকে অস্বীকার করতেই থাক, তাহলে

شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ (٥٢)

সে ব্যক্তি ছাড়া অধিক পথভ্রষ্ট আর কে আছে, যে বিরোধিতায় বহু দূরে চলে গেছে?

سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ أَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُ الْحَقُّ ؕ أَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ أَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (٥٣)

৫৩. আমি তাদেরকে আমার নিদর্শনাবলী দেখাব দূর দিগন্তে (অর্থাৎ দূর পর্যন্ত ইসলামের আলো বিচ্ছুরিত হবে) আর তাদের নিজেদের মধ্যেও (অর্থাৎ কাফিররা নতজানু হয়ে ইসলাম কবূল করবে) যখন তাদের কাছে স্পষ্ট হয়ে যাবে যে, এ কুরআন সত্য। এটা কি যথেষ্ট নয় যে, তোমার প্রতিপালক সব কিছুরই সাক্ষী।

أَلَآ إِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ أَلَآ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ ع (٥٤)

৫৪. শুনে রাখ, এরা তাদের প্রতিপালকের সঙ্গে সাক্ষাতের ব্যাপারে সন্দেহে পড়ে আছে। শুনে রাখ, তিনি সব কিছুকেই বেষ্টন করে আছেন।

৪২. সূরাহ আশ্-শূরা

سُوْرَةُ الشُّوْرٰى

আয়াতঃ ৫৩, রুকূ'ঃ ৫, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

حٰمٓ ج (١)

১. হা-মীম।

عٓسٓقٓ (٢)

২. 'আইন-সীন-ক্বাফ।

كَذٰلِكَ يُوْحِيْٓ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكَ لا اللهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٣)

৩. এভাবেই মহাপরাক্রমশালী মহাজ্ঞানী আল্লাহ তোমার প্রতি এবং তোমার পূর্বে যারা ছিল তাদের প্রতি ওয়াহী নাযিল করেন।

لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ؕ وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ (٤)

৪. আকাশ ও যমীনে যা কিছু আছে সবই তাঁর, তিনি সর্বোচ্চ, মহান।

تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِي الْأَرْضِ ؕ أَلَآ إِنَّ

৫. আকাশ উপর থেকে ফেটে পড়ার উপক্রম হয় (সুমহান আল্লাহ্‌র প্রতি শ্রদ্ধাপূর্ণ ভয়ভীতিতে) আর ফেরেশতারা তাদের প্রতিপালকের প্রশংসা ও মহিমা ঘোষণা করে এবং যারা পৃথিবীতে আছে তাদের জন্য (আল্লাহ্‌র নিকট) ক্ষমা প্রার্থনা করে। জেনে রেখ, আল্লাহ, তিনি বড়ই ক্ষমাশীল,

اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (٥)

অতি দয়ালু।

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ اللّٰهُ حَفِيْظٌ عَلَيْهِمْ زصلے وَمَآ أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ (٦)

৬. যারা আল্লাহর পরিবর্তে অন্যদেরকে অভিভাবকরূপে গ্রহণ করে, আল্লাহ তাদের প্রতি নযর রাখছেন, তাদের (কাজের) দায়-দায়িত্ব তোমার উপর নেই।

وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّتُنْذِرَ أُمَّ الْقُرٰى وَمَنْ حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ يَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ط فَرِيْقٌ فِي الْجَنَّةِ وَفَرِيْقٌ فِي السَّعِيْرِ (٧)

৭. এভাবে আমি তোমার প্রতি কুরআন আরবী ভাষায় নাযিল করেছি যাতে তুমি উম্মুল কুরা (মক্কা শহর) ও তার চার পাশে যারা আছে তাদেরকে সতর্ক করতে পার, আর সতর্ক কর একত্রিত হওয়ার দিন সম্পর্কে যে বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই। (একত্রিত হওয়ার পর) এক দল যাবে জান্নাতে, আরেক দল যাবে জাহান্নামে।

وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ أُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ط وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (٨)

৮. আল্লাহ ইচ্ছে করলে তাদেরকে একই উম্মত করতেন, কিন্তু তিনি যাকে ইচ্ছে তাঁর রহমাতের মধ্যে দাখিল করেন, আর যালিমদের জন্য নেই কোন অভিভাবক, নেই কোন সাহায্যকারী।

أَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءَ ج فَاللّٰهُ هُوَ الْوَلِيُّ وَهُوَ يُحْيِ الْمَوْتٰى ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ع (٩)

৯. কী! তারা কি আল্লাহর পরিবর্তে অন্যদেরকে অভিভাবক গ্রহণ করে নিয়েছে? আল্লাহই তো একমাত্র অভিভাবক, তিনিই মৃতকে জীবিত করেন আর তিনি সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান।

وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِيْهِ مِنْ شَيْءٍ فَحُكْمُهٗٓ إِلَى اللّٰهِ ط ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبِّيْ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ قصلے وَإِلَيْهِ أُنِيْبُ (١٠)

১০. তোমরা যে সব বিষয়ে মতভেদ কর তার মীমাংসা আল্লাহর উপর সোপর্দ. সেই আল্লাহই আমার প্রতিপালক, আমি তাঁর উপরই নির্ভর করি, আর তাঁরই অভিমুখী হই।

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ أَنْفُسِكُمْ أَزْوَاجًا وَّمِنَ الْأَنْعَامِ أَزْوَاجًا ج يَذْرَؤُكُمْ فِيْهِ ط لَيْسَ كَمِثْلِهٖ شَيْءٌ ج وَهُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ (١١)

১১. আকাশসমূহ ও যমীনের স্রষ্টা। তিনি তোমাদের জন্য তোমাদের মধ্য হতে যুগল সৃষ্টি করেছেন, চতুষ্পদ জন্তুদের মধ্যেও সৃষ্টি করেছেন জোড়া, এভাবেই তিনি তোমাদের বংশধারা বিস্তৃত করেন, কোন কিছুই তাঁর সদৃশ নয়, তিনি সব শোনেন, সব দেখেন।

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۗ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (١٢)

১২. আসমান ও যমীনের চাবিকাঠি তাঁরই হাতে নিবদ্ধ। যার জন্য ইচ্ছে তিনি রিয্ক প্রশস্ত করেন ও (যার জন্য ইচ্ছে) সীমিত করেন। সব বিষয়েই তিনি সবচেয়ে জ্ঞানী।

شَرَعَ لَكُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا وَصّٰى بِهٖ نُوْحًا وَّالَّذِيْٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَمَا وَصَّيْنَا بِهٖٓ إِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسٰٓى أَنْ أَقِيْمُوا الدِّيْنَ وَلَا تَتَفَرَّقُوْا فِيْهِ ۗ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِيْنَ مَا تَدْعُوْهُمْ إِلَيْهِ ۗ اَللّٰهُ يَجْتَبِيْٓ إِلَيْهِ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْٓ إِلَيْهِ مَنْ يُّنِيْبُ ۗ (١٣)

১৩. তিনি তোমাদের জন্য দ্বীনের সেই বিধি-ব্যবস্থাই দিয়েছেন যার হুকুম তিনি দিয়েছিলেন নূহকে। আর সেই (বিধি ব্যবস্থাই) তোমাকে ওয়াহীর মাধ্যমে দিলাম যার হুকুম দিয়েছিলাম ইব্রাহীম, মূসা ও 'ঈসাকে– তা এই যে, তোমরা দ্বীন প্রতিষ্ঠিত কর, আর তাতে বিভক্তি সৃষ্টি করো না, ব্যাপারটি মুশরিকদের জন্য কঠিন হয়ে দাঁড়িয়েছে যার দিকে তুমি তাদেরকে আহ্বান জানাচ্ছ। আল্লাহ যাকে ইচ্ছে করেন তাঁর পথে বেছে নেন, আর তিনি তাঁর পথে পরিচালিত করেন তাকে, যে তাঁর অভিমুখী হয়।

وَمَا تَفَرَّقُوْٓا إِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًاۢ بَيْنَهُمْ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۗ وَإِنَّ الَّذِيْنَ أُوْرِثُوا الْكِتٰبَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ (١٤)

১৪. মানুষের কাছে ইল্‌ম আসার পর (বিভিন্ন অংশে) বিভক্ত হয়ে গেল নিজেদের মধ্যে বাড়াবাড়ি করার কারণে। পূর্বেই যদি তোমার প্রতিপালকের পক্ষ হতে একটা নির্দিষ্ট মেয়াদ পর্যন্ত ফয়সালা মুলতবী রাখার কথা ঘোষিত না হত, তাহলে তাদের মধ্যে (পূর্বেই) ফয়সালা করে দেয়া হত। আগেকার লোকেদের পরে যারা (তাওরাত ও ইঞ্জিল এ দু') কিতাব উত্তরাধিকার সূত্রে প্রাপ্ত হয়েছে, তারা অস্বস্তিকর সন্দেহে পতিত হয়েছে।

فَلِذٰلِكَ فَادْعُ ۚ وَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ ۚ وَقُلْ اٰمَنْتُ بِمَآ أَنْزَلَ اللّٰهُ مِنْ كِتٰبٍ ۚ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ بَيْنَكُمْ ۗ اَللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۗ لَنَآ أَعْمَالُنَا وَلَكُمْ أَعْمَالُكُمْ ۗ لَا حُجَّةَ

১৫. অবস্থার এই প্রেক্ষাপটে (হে নবী!) তাদেরকে আহ্বান কর (দ্বীনের প্রতি), আর তোমাকে যে হুকুম দেয়া হয়েছে তুমি তার প্রতি সুদৃঢ় থাক, আর তাদের খেয়াল খুশির অনুসরণ করো না। আর বল, আল্লাহ যে কিতাবই অবতীর্ণ করেছেন আমি তার প্রতি ঈমান এনেছি। তোমাদের মাঝে ইনসাফ করার জন্য আমাকে নির্দেশ দেয়া হয়েছে। আল্লাহ আমাদেরও প্রতিপালক, তোমাদেরও প্রতিপালক। আমাদের কাজের প্রতিফল আমরা ভোগ করব। আর তোমাদের

بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ ۖ اَللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا ۚ وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۖ (١٥)

কাজের প্রতিফল তোমরা ভোগ করবে। আমাদের আর তোমাদের মাঝে কোন ঝগড়া নেই। আল্লাহ আমাদের সবাইকে (একদিন) একত্রিত করবেন, আর তাঁর কাছেই (সকলকে) ফিরে যেতে হবে।

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِي اللّٰهِ مِنْ ۢبَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ (١٦)

১৬. আল্লাহ্‌র আহ্বানে সাড়া দেয়ার পর সে সম্পর্কে যারা বিতর্কে লিপ্ত হয়, তাদের দলীল প্রমাণ তাদের রব্ব-এর কাছে বাতিল। তাদের প্রতি (আল্লাহ্‌র) গযব আর তাদের জন্য আছে কঠিন শাস্তি।

اَللّٰهُ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ۖ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ (١٧)

১৭. তিনিই আল্লাহ যিনি সত্য ও ইনসাফের মানদণ্ড সহকারে কিতাব অবতীর্ণ করেছেন। তুমি কি জান, সম্ভবতঃ চূড়ান্ত ফয়সালার সময় নিকটবর্তী হয়ে গেছে।

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ أَنَّهَا الْحَقُّ ۖ أَلَآ إِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِي السَّاعَةِ لَفِيْ ضَلٰلٍ ۢبَعِيْدٍ (١٨)

১৮. যে সব লোক তাতে বিশ্বাস করে না, তারাই তার (অর্থাৎ ক্বিয়ামতের) আগমনকে তরান্বিত করতে চায়। কিন্তু যারা বিশ্বাসী তারা তাকে ভয় করে আর তারা জানে যে, তা সত্য। জেনে রেখ, যারা ক্বিয়ামত সম্পর্কে বিতর্ক করে, তারা স্পষ্টতই সত্য পথ হতে বহু দূরে চলে গেছে।

اَللّٰهُ لَطِيْفٌ ۢبِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ ۝ع (١٩)

১৯. আল্লাহ তাঁর বান্দাহদের প্রতি মেহেরবান, তিনি যাকে যা ইচ্ছে রিয্‌ক দেন। তিনি প্রবল, মহাপরাক্রমশালী।

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِيْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِي الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ (٢٠)

২০. যে লোক পরকালের ক্ষেত করতে চায়, আমি তার জন্য তার ক্ষেতে বৃদ্ধি দান করি। আর যে লোক দুনিয়ার ক্ষেত চায়, আমি তাকে তাথেকে দেই, কিন্তু পরকালে তার অংশে (বা ভাগ্যে) কিছুই নেই।

أَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَأْذَنْ ۢبِهِ اللّٰهُ ۖ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۖ وَإِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٢١)

২১. কী! তাদের কি এমন শরীক আছে যারা তাদের জন্য দ্বীনের বিধি-বিধান দিয়েছে যার অনুমতি আল্লাহ দেননি? ফয়সালা সম্পর্কিত (পূর্ব) ঘোষণা দেয়া না হলে তাদের মধ্যে (তৎক্ষণাৎ) ফয়সালা করে দেয়া হত। যালিমদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

২২. যালিমদেরকে তুমি তাদের কৃতকর্মের কারণে ভীত-সন্ত্রস্ত দেখতে পাবে। তাদের কর্মের শাস্তি অবশ্যই তাদের উপর পতিত হবে। আর যারা ঈমান এনেছে আর সৎকর্ম করেছে তারা জান্নাতের বাগিচায় অবস্থান করবে। তারা যা ইচ্ছে করবে, তাদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট তা-ই আছে। ওটাই অতি বড় অনুগ্রহ।

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ط وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِيْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ج لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ (٢٢)

২৩. এটা হল তাই আল্লাহ যার সুসংবাদ দিয়েছেন তাঁর সে সব বান্দাহদের জন্য যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে। বল, এ কাজের জন্য আত্মীয়তার ভালবাসা ছাড়া তোমাদের কাছে কিছুই চাই না। যে কেউ উত্তম কাজ করে, আমি তার জন্য তাতে পুণ্য বাড়িয়ে দেই। আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, ভাল কাজের বড়ই মর্যাদাদানকারী।

ذٰلِكَ الَّذِيْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ط قُلْ لَّآ أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ أَجْرًا إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى ط وَمَنْ يَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِيْهَا حُسْنًا ط إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ (٢٣)

২৪. তারা কি বলে যে, এ লোক আল্লাহ্‌র নামে মিথ্যা রচনা করেছে? আল্লাহ চাইলে তোমার হৃদয়ে মোহর মেরে দিতেন। বস্তুতঃ তিনি মিথ্যাকে মিটিয়ে দেন এবং নিজ বাক্য দ্বারা সত্যকে প্রতিষ্ঠিত করেন। তিনি (সকলের) অন্তরে নিহিত বিষয় সম্পর্কে খুবই অবগত।

أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ج فَإِنْ يَّشَإِ اللّٰهُ يَخْتِمْ عَلٰى قَلْبِكَ ط وَيَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَيُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ط إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٢٤)

২৫. তিনি তাঁর বান্দাহদের তাওবাহ ক্ববূল করেন, পাপ ক্ষমা করেন আর তিনি জানেন তোমরা যা কর।

وَهُوَ الَّذِيْ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَيَعْفُوْا عَنِ السَّيِّاٰتِ وَيَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ لا (٢٥)

২৬. যারা ঈমান আনে আর সৎকার্য করে তিনি তাদের আহ্বান শুনেন, আর তিনি তাদের প্রতি নিজ অনুগ্রহ বাড়িয়ে দেন আর কাফিরদের জন্য

وَيَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَيَزِيْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ط

২৩। ইব্‌নু 'আব্বাস (رضي الله عنهما) থেকে বর্ণনা করেন যে, একদা তাকে إِلَّا الْمَوَدَّةَ فِي الْقُرْبٰى সম্পর্কে জিজ্ঞেস করার পর (কাছে উপস্থিত) সা'ঈদ ইব্‌নু যুবায়র (رحمه الله) বললেন, এর অর্থ নাবী পরিবারের আত্মীয়তার বন্ধন। (এ কথা শুনে) ইব্‌নু 'আব্বাস (رضي الله عنهما) বললেন, তুমি তাড়াহুড়া করে ফেললে। কেননা কুরাইশের এমন কোন শাখা ছিল না যেখানে নাবী (ﷺ)-এর আত্মীয়তা ছিল না। রসূল (ﷺ) তাদের বলেছেন, আমার এবং তোমাদের মাঝে যে আত্মীয়তার বন্ধন রয়েছে তার ভিত্তিতে তোমরা আমার সঙ্গে আত্মীয়সুলভ আচরণ কর। এই আমি তোমাদের থেকে কামনা করি। –বুখারী ৪৮১৮ [৩৪৯৭; তিরমিযী ৩২৫১, আহমাদ ২০২৫, ২৫৯৪]

وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ (٢٦)

আছে কঠিন শাস্তি।

وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِي الْأَرْضِ وَلٰكِنْ يُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا يَشَآءُ ؕ إِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرٌۢ بَصِيْرٌ (٢٧)

২৭. আল্লাহ যদি তাঁর সকল বান্দাহদের জন্য রিয্ক পর্যাপ্ত করে দিতেন, তাহলে তারা অবশ্যই যমীনে বিদ্রোহ সৃষ্টি করত; কিন্তু তিনি একটা নির্দিষ্ট পরিমাণে যতটুকু ইচ্ছে নাযিল করেন। তিনি তাঁর বান্দাহ্দের সম্পর্কে পূর্ণ ওয়াকিফহাল, তিনি তাদের প্রতি সর্বদা দৃষ্টি রাখেন।

وَهُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ الْغَيْثَ مِنْۢ بَعْدِ مَا قَنَطُوْا وَيَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِيُّ الْحَمِيْدُ (٢٨)

২৮. মানুষ নিরাশ হয়ে যাওয়ার পর তিনিই বৃষ্টি বর্ষণ করেন, আর স্বীয় রহমত ছড়িয়ে দেন, তিনি-ই সকল গুণে প্রশংসিত প্রকৃত অভিভাবক।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَثَّ فِيْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰى جَمْعِهِمْ إِذَا يَشَآءُ قَدِيْرٌ ع (٢٩)

২৯. তাঁর নিদর্শনসমূহের অন্তর্গত হল আসমান ও যমীনের সৃষ্টি, আর এ দু'য়ের ভিতর যে প্রাণীকুল ছড়িয়ে দিয়েছেন তিনি। আর যখন ইচ্ছে তিনি তাদেরকে একত্রিত করতে সক্ষম।

وَمَآ أَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِيْبَةٍ فَبِمَا كَسَبَتْ أَيْدِيْكُمْ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ (٣٠)

৩০. তোমাদের উপর যে বিপদই উপনীত হয় তা তোমাদের হাতের উপার্জনের কারণেই, তিনি অনেক অপরাধই ক্ষমা করে দেন।

وَمَآ أَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِي الْأَرْضِ ج صلے وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ (٣١)

৩১. তোমরা যমীনে (আল্লাহ্র কর্ম ও পরিকল্পনাকে) ভণ্ডুল (অক্ষম) করতে পারবে না। আল্লাহ ছাড়া তোমাদের না আছে কোন অভিভাবক, আর না আছে সাহায্যকারী।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الْجَوَارِ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ؕ (٣٢)

৩২. তাঁর নিদর্শনসমূহের মধ্যে হল সমুদ্রে নির্বিঘ্নে চলমান জাহাজ– পাহাড়ের মত।

إِنْ يَّشَأْ يُسْكِنِ الرِّيْحَ فَيَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ لا (٣٣)

৩৩. তিনি যদি ইচ্ছে করেন বাতাসকে থামিয়ে দিতে পারেন, তখন জাহাজগুলো সমুদ্র পৃষ্ঠে গতিহীন হয়ে পড়বে। এতে প্রত্যেক অতি ধৈর্যশীল শুক্র আদায়কারীর জন্য অবশ্যই নিদর্শন রয়েছে।

أَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ عَنْ كَثِيْرٍ لا (٣٤)

৩৪. কিংবা তিনি ওগুলোকে ধ্বংস করে দিতে পারেন তাদের উপার্জিত পাপের কারণে, আর প্রকৃতপক্ষে তিনি তো (তাদের) অনেক দোষ-ত্রুটিই ক্ষমা করে দেন।

وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا ؕ مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ (٣٥)

৩৫. (আর ওগুলোকে ধ্বংস করা হয়) এজন্যও যে, আমার আয়াত নিয়ে যারা বিতর্ক করে তারা যেন জেনে নেয় যে, তাদের (আল্লাহ্র কাছ থেকে পালিয়ে অন্যত্র আশ্রয় নেয়ার জন্য) কোন আশ্রয়স্থল নেই।

فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ج وَمَا عِنْدَ اللهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ج (٣٦)

৩৬. (এখানে) তোমাদেরকে যা কিছু দেয়া হয়েছে তা অস্থায়ী দুনিয়ার জীবনের (সামান্য) ভোগ্যবস্তু মাত্র। আল্লাহ্র নিকট যা আছে তা উৎকৃষ্ট এবং স্থায়ী (আর তা হল) তাদের জন্য যারা ঈমান আনে এবং তাদের প্রতিপালকের উপর নির্ভর করে।

وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ج (٣٧)

৩৭. যারা বড় বড় পাপ এবং অশ্লীল কার্যকলাপ হতে বেঁচে চলে এবং রাগান্বিত হয়েও ক্ষমা করে।

وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ص وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ص وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ج (٣٨)

৩৮. যারা তাদের প্রতিপালকের (নির্দেশ পালনের মাধ্যমে তাঁর) প্রতি সাড়া দেয়, নিয়মিত নামায প্রতিষ্ঠা করে, পারস্পরিক পরামর্শের ভিত্তিতে নিজেদের কার্যাদি পরিচালনা করে। আর আমি তাদেরকে যে রিয্ক দিয়েছি তাথেকে ব্যয় করে।

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْيُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ (٣٩)

৩৯. আর তাদের উপর অতিরিক্ত বাড়াবাড়ি করা হলে নিজেদের প্রতিরক্ষার ব্যবস্থা করে।

وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ج فَمَنْ عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللهِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ (٤٠)

৪০. অন্যায়ের প্রতিবিধান হল অনুরূপ অন্যায়। অতঃপর যে ক্ষমা করে এবং সমঝোতা করে, তার প্রতিদান দেয়া আল্লাহর যিম্মায়। সীমালঙ্ঘনকারীদেরকে আল্লাহ পছন্দ করেন না।

وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ؕ (٤١)

৪১. কেউ অত্যাচারিত হয়ে নিজের প্রতিরক্ষার ব্যবস্থা নিলে, তার বিরুদ্ধে কোন অভিযোগ নেই।

اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٤٢)

৪২. অভিযোগ তো তাদের বিরুদ্ধে যারা মানুষের প্রতি অত্যাচার করে, আর অন্যায়ভাবে যমীনে বিদ্রোহ সৃষ্টি করে; তাদের জন্য আছে যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ عَزْمِ

৪৩. আর যে ব্যক্তি (অত্যাচারিত হওয়ার পরও) ধৈর্য ধারণ করে, আর (অত্যাচারীকে) ক্ষমা করে

الْأُمُوْرِ ع (٤٣)

দেয়, তাহলে তা অবশ্যই দৃঢ় চিত্ততার কাজ।

وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِيٍّ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ط وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ مِّنْ سَبِيْلٍ ج (٤٤)

৪৪. আল্লাহ্ই যাকে পথভ্রষ্ট করেন, তার জন্য তিনি ছাড়া কোন অভিভাবক নেই। তুমি দেখবে, যখন যালিমরা 'আযাব প্রত্যক্ষ করবে তখন বলবে– ফিরে যাওয়ার কোন পথ আছে কি?

وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ خَفِيٍّ ط وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط اَلَآ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ عَذَابٍ مُّقِيْمٍ (٤٥)

৪৫. তুমি (আরো) দেখবে, তাদেরকে জাহান্নামের সম্মুখে উপস্থিত করা হবে, তারা থাকবে অপমানে অবনত, তারা লুকিয়ে তাকাবে। আর যারা ঈমান এনেছে তারা বলবে, সত্যিকার ক্ষতিগ্রস্ত তো তারাই যারা ক্বিয়ামতের দিনে নিজেদেরকে এবং নিজেদের পরিবার-পরিজনকে ক্ষতিগ্রস্ত করেছে। সাবধান! যালিমরা থাকবে স্থায়ী 'আযাবে।

وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ط وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ سَبِيْلٍ ط (٤٦)

৪৬. তাদের কোন অভিভাবক থাকবে না আল্লাহ্ ব্যতীত যারা তাদেরকে সাহায্য করতে পারে। আল্লাহ যাকে পথভ্রষ্ট করেন তার (শাস্তি থেকে বাঁচার) কোন রাস্তা নেই।

اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ط مَا لَكُمْ مِّنْ مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ (٤٧)

৪৭. তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কথায় সাড়া দাও সেই দিন আসার পূর্বে আল্লাহ ('র হুকুমে যা সংঘটিত হওয়া) থেকে ফিরিয়ে রাখার কেউ নেই। সেদিন তোমাদের জন্য আশ্রয়স্থল থাকবে না, থাকবে না তোমাদের জন্য কোন প্রতিরোধকারী।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ط اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ط وَاِنَّآ اِذَآ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ج وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ (٤٨)

৪৮. এতদসত্ত্বেও তারা যদি মুখ ফিরিয়েই নেয় (তাহলে ফিরিয়ে নিক, কারণ) আমি তোমাকে তাদের হিফাযাতকারী বানিয়ে পাঠাইনি। কথা পৌঁছে দেয়াই তোমার দায়িত্ব। আমি যখন মানুষকে আমার রহমত আস্বাদন করাই, তখন সে উৎফুল্ল হয়। আর যখন তাদের কৃতকর্মের কারণে তাদের কোন অনিষ্ট হয়, তখন মানুষ অকৃতজ্ঞ হয়ে যায়।

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ إِنَاثًا وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۙ (٤٩)

৪৯. আসমান ও যমীনের রাজত্ব আল্লাহ্রই, যা চান তিনি সৃষ্টি করেন। যাকে চান কন্যা-সন্তান দেন, যাকে চান পুত্র সন্তান দেন।

أَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّإِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ۚ إِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ (٥٠)

৫০. অথবা তাদেরকে দেন পুত্র ও কন্যা উভয়ই। আর যাকে ইচ্ছে বন্ধ্যা করেন। তিনি সর্ব বিষয়ে সর্বাধিক অবহিত ও ক্ষমতাবান।

وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ أَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ إِلَّا وَحْيًا أَوْ مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ أَوْ يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِإِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ۚ إِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ (٥١)

৫১. কোন মানুষের এ মর্যাদা নেই যে, আল্লাহ তার সাথে (সরাসরি) কথা বলবেন ওয়াহীর মাধ্যম বা পর্দার আড়াল বা কোন দূত প্রেরণ ছাড়া। অতঃপর আল্লাহ্র অনুমতিক্রমে সে (মনোনীত মানুষের কাছে) ওয়াহী করে যা তিনি (আল্লাহ) চান। তিনি সুমহান ও মহাবিজ্ঞানী।

وَكَذٰلِكَ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ أَمْرِنَا ۚ مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْإِيْمَانُ وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ نَّشَآءُ مِنْ عِبَادِنَا ۚ وَإِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۙ (٥٢)

৫২. এভাবে (উপরোক্ত ৩টি উপায়েই) আমার নির্দেশের মূল শিক্ষাকে তোমার কাছে আমি ওয়াহী যোগে প্রেরণ করেছি। তুমি জানতে না কিতাব কী, ঈমান কী, কিন্তু আমি একে (অর্থাৎ ওয়াহী যোগে প্রেরিত কুরআনকে) করেছি আলো, যার সাহায্যে আমার বান্দাহদের মধ্য হতে যাকে ইচ্ছে আমি সঠিক পথে পরিচালিত করি। তুমি নিশ্চিতই (মানুষদেরকে) সঠিক পথের দিকে নির্দেশ করছ।

صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ أَلَآ إِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ الْأُمُوْرُ ۧ (٥٣)

৫৩. যা কিছু আকাশে আছে আর যমীনে আছে এসবের মালিক যিনি সেই আল্লাহ্র পথে। শুনে রাখ! আল্লাহ্র কাছেই সব বিষয় ফিরে যায়।

৪৩. সূরাহ আয্-যুখরুফ

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ

আয়াতঃ ৮৯, রুকূ'ঃ ৭, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

حٰمٓ ۚ (١)

১. হা-মীম।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ (٢)

২. শপথ সুস্পষ্ট কিতাবের।

إِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ج (٣)

৩. আমি ওটাকে করেছি আরবী ভাষার কুরআন যাতে তোমরা বুঝতে পারো।

وَإِنَّهٗ فِيْٓ أُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ط (٤)

৪. আমার কাছে তা উম্মুল কিতাবে (লাওহে মাহফুজে) সংরক্ষিত আছে, আর তা হল অতি উচ্চ মর্যাদাসম্পন্ন জ্ঞান-বিজ্ঞানে পূর্ণ।

أَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا أَنْ كُنْتُمْ قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ (٥)

৫. তোমরা এক সীমালঙ্ঘনকারী জাতি– এ কারণে কি আমি তোমাদের কাছ থেকে কুরআন প্রত্যাহার করে নেব?

وَكَمْ أَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْأَوَّلِيْنَ (٦)

৬. পূর্বেকার জাতিগুলোর মধ্যে আমি বহু রসূল পাঠিয়েছিলাম।

وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ إِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِئُوْنَ (٧)

৭. তাদের কাছে এমন কোন নবী আসেনি যাকে তারা ঠাট্টা-বিদ্রূপ করেনি।

فَأَهْلَكْنَآ أَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى مَثَلُ الْأَوَّلِيْنَ (٨)

৮. আমি তাদেরকে ধ্বংস করেছি– যারা ছিল এদের চেয়ে অনেক বেশি শক্তিশালী। পূর্বের জাতিগুলোর উদাহরণ অতীত হয়ে গেছে।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ لا (٩)

৯. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর– আকাশ ও যমীন কে সৃষ্টি করেছে? তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে- ওগুলো প্রবল পরাক্রমশালী মহাজ্ঞানী আল্লাহ্ সৃষ্টি করেছেন,

الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ج (١٠)

১০. যিনি তোমাদের জন্য যমীনকে করেছেন বিস্তৃত, আর তাতে তোমাদের জন্য বানিয়েছেন চলার পথ– যাতে তোমরা সঠিক পথ পেতে পার।

وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءًۢ بِقَدَرٍ ج فَأَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ج كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ (١١)

১১. যিনি আকাশ থেকে পরিমিত পানি বর্ষণ করেন যা দিয়ে তিনি মৃত ভূ-ভাগকে সঞ্জীবিত করেন। এভাবেই তোমাদেরকে বের করা হবে।

وَالَّذِيْ خَلَقَ الْأَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْأَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ لا (١٢)

১২. তিনি সব কিছুকে জোড়া জোড়া সৃষ্টি করেছেন, আর তোমাদের জন্য নৌযান ও গবাদি পশু সৃষ্টি করেছেন যাতে তোমরা আরোহণ কর,

لِتَسْتَوُوْا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا نِعْمَةَ

১৩. যাতে তোমরা যখন তাদের পিঠে স্থির হয়ে বস, তখন যেন তোমাদের প্রতিপালকের অনুগ্রহের

رَبِّكُمْ إِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ وَتَقُولُوا سُبْحَانَ الَّذِي سَخَّرَ لَنَا هَٰذَا وَمَا كُنَّا لَهُ مُقْرِنِينَ لا (١٣)

কথা স্মরণ কর আর বল- মহান ও পবিত্র তিনি যিনি, এগুলোকে আমাদের (ব্যবহারের জন্য) বশীভূত করে দিয়েছেন, আমরা এগুলোকে বশীভূত করতে সক্ষম ছিলাম না।

وَإِنَّا إِلَىٰ رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُونَ (١٤)

১৪. আর আমাদেরকে অবশ্যই আমাদের প্রতিপালকের দিকে ফিরে যেতে হবে।

وَجَعَلُوا لَهُ مِنْ عِبَادِهِ جُزْءًا ط إِنَّ الْإِنْسَانَ لَكَفُورٌ مُبِينٌ ط ع (١٥)

১৫. আর তারা আল্লাহ্‌র বান্দাদের মধ্য হতে কতককে আল্লাহ্‌র অংশ মনে করে নিয়েছে (যেমন 'ঈসা ('আ.)-কে তারা আল্লাহ্‌র পুত্র মনে করে)। মানুষ অবশ্যই স্পষ্টতঃ অকৃতজ্ঞ।

أَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنَاتٍ وَأَصْفَاكُمْ بِالْبَنِينَ (١٦)

১৬. কি! তিনি তাঁরই সৃষ্টি হতে কন্যা সন্তান গ্রহণ করেছেন আর তোমাদের জন্য মনোনীত করেছেন পুত্র সন্তান?

وَإِذَا بُشِّرَ أَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمَٰنِ مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهُ مُسْوَدًّا وَهُوَ كَظِيمٌ (١٧)

১৭. তাদের কাউকে যখন সংবাদ দেয়া হয় সেই সন্তানের যা তারা দয়াময় আল্লাহ্‌র প্রতি আরোপ করে, তখন তার মুখ মণ্ডলে কালিমা ছেয়ে যায়, আর মন দুঃখ বেদনায় ভরে যায়।

أَوَمَنْ يُنَشَّأُ فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِينٍ (١٨)

১৮. তারা কি আল্লাহ্‌র জন্য নির্ধারিত করে এমন সন্তান যে অলংকারে লালিত পালিত হয়, আর বিতর্ককালে বক্তব্যকে স্পষ্ট করতে অসমর্থ?

وَجَعَلُوا الْمَلَائِكَةَ الَّذِينَ هُمْ عِبَادُ الرَّحْمَٰنِ إِنَاثًا ط أَشَهِدُوا خَلْقَهُمْ سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْأَلُونَ (١٩)

১৯. তারা দয়াময়ের বান্দাহ্‌ ফেরেশতাদেরকে নারী গণ্য করে। তারা কি ফেরেশতাদেরকে সৃষ্টি সরাসরি দেখেছে? তাদের সাক্ষ্য লিখে রাখা হবে এবং তারা জিজ্ঞাসিত হবে।

وَقَالُوا لَوْ شَاءَ الرَّحْمَٰنُ مَا عَبَدْنَاهُمْ ط مَا لَهُمْ بِذَٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ق إِنْ هُمْ إِلَّا يَخْرُصُونَ ط (٢٠)

২০. তারা আরো বলে– দয়াময় আল্লাহ ইচ্ছে করলে আমরা ওদের পূঁজা করতাম না। এ বিষয়ে তাদের কোন জ্ঞানই নেই। তারা শুধু আন্দাজ অনুমানে কথা বলে।

أَمْ آتَيْنَاهُمْ كِتَابًا مِنْ قَبْلِهِ فَهُمْ بِهِ مُسْتَمْسِكُونَ (٢١)

২১. আমি কি তাদেরকে এর (অর্থাৎ কুরআনের) আগে কোন কিতাব দিয়েছি অতঃপর তারা তা আঁকড়ে ধরে আছে?

بَلْ قَالُوْآ إِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ (٢٢)

২২. বরং তারা বলে– আমরা আমাদের পূর্ব পুরুষদেরকে এক ধর্মমত পালনরত পেয়েছি আর আমরা তাদের পদাঙ্ক অনুসরণ করে পথপ্রাপ্ত হয়েছি।

وَكَذٰلِكَ مَآ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ إِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَآ لا إِنَّا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا عَلٰٓى أُمَّةٍ وَّإِنَّا عَلٰٓى اٰثٰرِهِمْ مُّقْتَدُوْنَ (٢٣)

২৩. এভাবে তোমার পূর্বে যখনই আমি কোন জনপদে সতর্ককারী (নবী-রসূল) পাঠিয়েছি, তখনই তাদের সম্পদশালী লোকেরা বলেছে– আমরা আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে এক ধর্মমত পালনরত পেয়েছি আর আমরা তাদেরই পদাঙ্ক অনুসরণ করছি।

قٰلَ أَوَلَوْ جِئْتُكُمْ بِأَهْدٰى مِمَّا وَجَدْتُّمْ عَلَيْهِ اٰبَآءَكُمْ ط قَالُوْآ إِنَّا بِمَآ أُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ (٢٤)

২৪. তখন সেই সতর্ককারী বলত- তোমরা তোমাদের পিতৃপুরুষকে যে ধর্মমতের উপর পেয়েছ, আমি যদি তোমাদের কাছে তার চেয়ে উৎকৃষ্ট ধর্মমত নিয়ে আসি (তবুও কি তোমরা তাদেরই অনুসরণ করবে)? তারা বলতঃ তোমাদেরকে যা দিয়ে পাঠানো হয়েছে আমরা তা প্রত্যাখ্যান করি।

فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ع (٢٥)

২৫. অতঃপর আমি তাদের উপর প্রতিশোধ গ্রহণ করলাম, এখন দেখ, মিথ্যুকদের পরিণতি কী হয়েছিল।

وَإِذْ قَالَ إِبْرَاهِيْمُ لِأَبِيْهِ وَقَوْمِهٖٓ إِنَّنِيْ بَرَآءٌ مِّمَّا تَعْبُدُوْنَ لا (٢٦)

২৬. স্মরণ কর, ইবরাহীম (ﷺ) যখন তার পিতাকে ও তার জাতিকে বলেছিল- তোমরা যেগুলোর পূজা কর, সেগুলো থেকে আমি সম্পর্কহীন।

إِلَّا الَّذِيْ فَطَرَنِيْ فَإِنَّهٗ سَيَهْدِيْنِ (٢٧)

২৭. আমার সম্পর্ক আছে শুধু তাঁর সাথে যিনি আমাকে সৃষ্টি করেছেন, তিনিই আমাকে সঠিক পথ দেখাবেন।

وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِيْ عَقِبِهٖ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (٢٨)

২৮. এ কথাটিকে সে স্থায়ী বাণীরূপে তার পরবর্তীদের মধ্যে রেখে গেছে, যাতে তারা (আল্লাহ্‌র পথে) ফিরে আসে।

بَلْ مَتَّعْتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى جَآءَهُمُ الْحَقُّ وَرَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ (٢٩)

২৯. হ্যাঁ, আমিই তাদেরকে আর তাদের পূর্বপুরুষকে ভোগের সামগ্রী দিয়েছিলাম। অবশেষে তাদের কাছে আসলো সত্য এবং সবকিছু স্পষ্টকারী রসূল।

وَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ وَّإِنَّا بِهٖ كٰفِرُوْنَ (٣٠)

৩০. সত্য যখন তাদের কাছে আসল তখন তারা বলল- এটা যাদু, আমরা এটা মানি না।

وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الْقَرْيَتَيْنِ عَظِيْمٍ (٣١)

৩১. তারা বলল- এ কুরআন (মক্কা ও তায়েফ এ) দু' জনপদের কোন গণ্যমান্য ব্যক্তির উপর কেন অবতীর্ণ হল না?

أَهُمْ يَقْسِمُوْنَ رَحْمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحْنُ قَسَمْنَا بَيْنَهُمْ مَّعِيْشَتَهُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَرَفَعْنَا بَعْضَهُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ لِّيَتَّخِذَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا سُخْرِيًّا ؕ وَرَحْمَتُ رَبِّكَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ (٣٢)

৩২. তোমার প্রতিপালকের রহমত কি তারা বণ্টন করে (যে তাদের মর্জিমত কুরআন নাযিল করতে হবে)? তাদের মাঝে তাদের জীবিকা আমিই বণ্টন করেছি পার্থিব জীবনে এবং মর্যাদায় এককে অন্যের উপর উন্নত করি যাতে একে অপরের সহায়তায় গ্রহণ করতে পারে। তারা যা সঞ্চয় করে, তোমার প্রতিপালকের রহমত তাথেকে উত্তম

وَلَوْلَآ أَنْ يَّكُوْنَ النَّاسُ أُمَّةً وَّاحِدَةً لَّجَعَلْنَا لِمَنْ يَّكْفُرُ بِالرَّحْمٰنِ لِبُيُوْتِهِمْ سُقُفًا مِّنْ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيْهَا يَظْهَرُوْنَ ۙ (٣٣)

৩৩. (সত্যকে অস্বীকার ক'রে) সব এক জাতিতে পরিণত হবে এ আশঙ্কা না থাকলে যারা দয়াময় আল্লাহ্কে অস্বীকার করে তাদেরকে অবশ্যই দিতাম তাদের গৃহের জন্য রৌপ্য নির্মিত ছাদ আর সিঁড়ি যাতে তারা আরোহণ করত।

وَلِبُيُوْتِهِمْ أَبْوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيْهَا يَتَّكِئُوْنَ ۙ (٣٤)

৩৪. আর তাদের গৃহের জন্য দিতাম দরজা ও পালঙ্ক যাতে তারা হেলান দিয়ে বসত।

وَزُخْرُفًا ؕ وَإِنْ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُتَّقِيْنَ ع (٣٥)

৩৫. আর স্বর্ণ নির্মিতও দিতাম। এগুলো সবই তো পার্থিব জীবনের ভোগ্য সামগ্রী মাত্র। আর আখিরাত তোমার প্রতিপালকের কাছে তাদেরই জন্য যারা (আল্লাহ্কে) ভয় করে।

وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ لَهٗ شَيْطَانًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ (٣٦)

৩৬. যে ব্যক্তি দয়াময় আল্লাহ্র স্মরণ থেকে নিজেকে ফিরিয়ে নেয়, আমি তার জন্য শয়ত্বানকে নিয়োজিত করি, অতঃপর সে হয় তার ঘনিষ্ঠ সহচর।

وَإِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ وَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ (٣٧)

৩৭. তারাই মানুষকে সৎপথে চলতে অবশ্যই বাধা দেয়, আর মানুষ মনে করে যে, তারা সঠিক পথে রয়েছে।

حَتّٰٓى إِذَا جَآءَنَا قَالَ يَا لَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ

৩৮. অবশেষে সে যখন আমার কাছে আসবে, তখন শয়ত্বানকে বলবে, হায়! আমার ও তোমার

بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ (٣٨)

মাঝে যদি পূর্ব ও পশ্চিমের ব্যবধান থাকত! কতই না নিকৃষ্ট সহচর সে!

وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ إِذْ ظَّلَمْتُمْ أَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ (٣٩)

৩৯. তোমাদের হা-হুতাশ আজ তোমাদের কোন কাজে আসবে না যেহেতু তোমরা সীমালঙ্ঘন করেছিলে। তোমরা হবে শাস্তির অংশীদার।

أَفَأَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ أَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ (٤٠)

৪০. তুমি কি বধিরকে শুনাতে পারবে অথবা যে অন্ধ আর যে আছে সুস্পষ্ট পথভ্রষ্টের মধ্যে তাকে সৎপথ দেখাতে পারবে?

فَإِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَإِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۙ (٤١)

৪১. আমি যদি তোমাকে (দুনিয়া থেকে) নিয়েও যাই, তবু আমি তাদের কাছ থেকে প্রতিশোধ গ্রহণ করব।

أَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَإِنَّا عَلَيْهِمْ مُّقْتَدِرُوْنَ (٤٢)

৪২. অথবা আমি তাদেরকে যে 'আযাবের ও'য়াদা দিয়েছি তা যদি তোমাকে দেখিয়ে দেই (আমার পক্ষে সবই সম্ভব), কারণ তাদের উপর আমার পূর্ণ ক্ষমতা আছে।

فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْٓ أُوْحِيَ إِلَيْكَ ج إِنَّكَ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٤٣)

৪৩. কাজেই তোমার প্রতি যা ওয়াহী করা হয় তুমি তা দৃঢ়ভাবে আঁকড়ে ধর, কেননা তুমি তো আছ সরল সঠিক পথে।

وَإِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ج وَسَوْفَ تُسْأَلُوْنَ (٤٤)

৪৪. কুরআন হল অবশ্যই তোমার জন্য আর তোমার জাতির জন্য উপদেশ বাণী। আর এ সম্পর্কে অচিরেই তোমাদেরকে জওয়াবদিহি করতে হবে।

وَسْئَلْ مَنْ أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رُّسُلِنَآ ق أَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً يُّعْبَدُوْنَ ع (٤٥)

৪৫. আমি তোমার পূর্বে যে সব রসূল পাঠিয়েছিলাম তাদেরকে জিজ্ঞেস কর (অর্থাৎ তাদের কিতাব দেখ ও তাদের সত্যিকার অনুসারীদের নিকট যাচাই কর) আমি কি দয়াময় আল্লাহ ছাড়া কোন ইলাহ স্থির করেছিলাম যাদের 'ইবাদাত করতে হবে?

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَائِهٖ فَقَالَ إِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٤٦)

৪৬. আমি মূসাকে আমার নিদর্শনসহ ফেরাউন ও তার প্রধানদের নিকট পাঠিয়েছিলাম। মূসা (عليه السلام) বলেছিল- আমি বিশ্বজগতের প্রতিপালকের রসূল।

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَآ إِذَا هُمْ مِّنْهَا

৪৭. যখন সে আমার আয়াতসমূহ নিয়ে তাদের কাছে আসলো, তখন তারা তা নিয়ে হাসি-ঠাট্টা

يَضْحَكُوْنَ (٤٧)

করতে লাগল।

وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ إِلَّا هِيَ أَكْبَرُ مِنْ أُخْتِهَا وَأَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (٤٨)

৪৮. আমি তাদেরকে যে নিদর্শনই দেখাতাম তা হত পূর্ববর্তী নিদর্শন থেকে বড়। আমি তাদেরকে শাস্তি দ্বারা পাকড়াও করলাম যাতে তারা (আমার পথে) ফিরে আসে।

وَقَالُوْا يٰٓأَيُّهَا السَّاحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ج إِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ (٤٩)

৪৯. (শাস্তিতে আক্রান্ত হয়ে) তারা বলেছিল- ওহে যাদুকর! তুমি আমাদের জন্য তোমার প্রতিপালকের কাছে তা চাও যার ও'য়াদা তিনি তোমার কাছে করেছেন। আমরা অবশ্যই সৎপথে চলব।

فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ إِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ (٥٠)

৫০. কিন্তু যখনই আমি তাদের থেকে শাস্তি সরিয়ে দিলাম, তখনই তারা অঙ্গীকার ভঙ্গ করে বসল।

وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ أَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْأَنْهٰرُ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ج أَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ط (٥١)

৫১. ফেরাউন তার সম্প্রদায়ের মাঝে ঘোষণা দিল। বলল- হে আমার সম্প্রদায়! মিসরের রাজত্ব কি আমার নয়? আর এ সব নদনদী আমার নীচ দিয়ে বয়ে যাচ্ছে, তোমরা কি তা দেখ না?

أَمْ أَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ٥لا وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ (٥٢)

৫২. আমি কি এ লোক থেকে শ্রেষ্ঠ নই যে নীচ, যে নিজের কথাটিও স্পষ্ট করে বলতে অক্ষম!

فَلَوْلَآ أُلْقِيَ عَلَيْهِ أَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ أَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ (٥٣)

৫৩. (সে যদি আল্লাহ্র রসূলই হয়ে থাকে) তাহলে তাঁকে কেন স্বর্ণ কঙ্কন দেয়া হল না? অথবা সারিবদ্ধভাবে ফেরেশতারা কেন তার সাথে আসল না?

فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَأَطَاعُوْهُ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ (٥٤)

৫৪. এভাবে সে তার জাতির লোকেদের বোকা বানিয়ে দিল। ফলে তারা তার কথা মেনে নিল। তারা ছিল এক পাপাচারী সম্প্রদায়।

فَلَمَّآ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَأَغْرَقْنٰهُمْ أَجْمَعِيْنَ لا (٥٥)

৫৫. তারা যখন আমাকে রাগান্বিত করল, তখন আমি তাদের উপর প্রতিশোধ নিলাম, অতঃপর সব্বাইকে ডুবিয়ে মারলাম।

فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ع (٥٦)

৫৬. এভাবে আমি তাদেরকে করলাম অতীতের মানুষ আর পরবর্তীদের জন্য দৃষ্টান্ত।

وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا إِذَا قَوْمُكَ مِنْهُ يَصِدُّوْنَ (٥٧)

৫৭. যখন মারইয়াম-পুত্র ‘ঈসার দৃষ্টান্ত তুলে ধরা হয়, তখন তোমার জাতির লোকেরা হট্টগোল শুরু করে দেয়,

وَقَالُوْٓا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ أَمْ هُوَ ط مَا ضَرَبُوْهُ لَكَ إِلَّا جَدَلًا ط بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ (٥٨)

৫৮. এবং বলে আমাদের উপাস্যরা উত্তম না ‘ঈসা? (কারণ খৃস্টানরা ‘ঈসাকে উপাস্য বানিয়েছে আর আমরা মক্কাবাসীরা উপাস্য বানিয়েছি অন্যদেরকে)। তারা শুধু বিতর্ক সৃষ্টির উদ্দেশেই তোমার সামনে এ দৃষ্টান্ত পেশ করে। আসলে তারা হল এক ঝগড়াটে জাতি।

إِنْ هُوَ إِلَّا عَبْدٌ أَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ مَثَلًا لِّبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ ط (٥٩)

৫৯. মারইয়াম-পুত্র তো শুধু একজন বান্দাহ যার প্রতি আমি অনুগ্রহ করেছিলাম আর বানী ইসরাঈলের জন্য আমি তাকে করেছিলাম (আমার কুদরাতের বিশেষ এক) নমুনা।

وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي الْأَرْضِ يَخْلُفُوْنَ (٦٠)

৬০. আমি ইচ্ছে করলে তোমাদের মধ্য হতে ফেরেশতা পয়দা করতে পারি যারা পর পর উত্তরাধিকারী হবে।

وَإِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا وَاتَّبِعُوْنِ ط هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (٦١)

৬১. ‘ঈসা (’র দুনিয়াতে পুনরায় আগমন) ক্বিয়ামতের একটি নিশ্চিত নিদর্শন। অতএব তোমরা ক্বিয়ামতে সন্দেহ পোষণ করো না আর আমার অনুসরণ কর, এটাই সরল সঠিক পথ।

وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ج إِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ (٦٢)

৬২. শয়ত্বান তোমাদেরকে (সৎ পথে চলতে) কিছুতেই যেন বাধাগ্রস্ত করতে না পারে, সে তোমাদের খোলাখুলি দুশমন।

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِأُبَيِّنَ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِيْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ج فَاتَّقُوا اللهَ وَأَطِيْعُوْنِ (٦٣)

৬৩. ‘ঈসা যখন স্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে এসেছিল তখন সে বলেছিল- আমি তোমাদের কাছে হিকমত নিয়ে এসেছি আর এসেছি কতকগুলো বিষয় স্পষ্ট করার জন্য যাতে তোমরা মতভেদ করছ। কাজেই তোমরা আল্লাহ্কে ভয় কর, আর আমার কথা মান্য কর।

إِنَّ اللهَ هُوَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ط هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (٦٤)

৬৪. আল্লাহ তিনি তো আমারও রব্ব আর তোমাদেরও রব্ব, কাজেই তোমরা তাঁরই ‘ইবাদাত কর, এটাই সরল সঠিক পথ।

فَاخْتَلَفَ الْأَحْزَابُ مِنْ بَيْنِهِمْ ج فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ يَوْمٍ أَلِيْمٍ (٦٥)

৬৫. অতঃপর তাদের বিভিন্ন দল নিজেদের মধ্যে মতানৈক্য করল। কাজেই যালিমদের জন্য যন্ত্রণাদায়ক দিনের 'আযাবের দুর্ভোগ।

هَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٦٦)

৬৬. তারা কি তাদের উপর ক্বিয়ামত অকস্মাৎ এসে পড়ার অপেক্ষা করছে যা তারা টেরও পাবে না।

اَلْأَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ إِلَّا الْمُتَّقِيْنَ ط ع (٦٧)

৬৭. বন্ধুরা সেদিন হয়ে যাবে একজন আরেকজনের দুশমন, তবে মুত্তাকীরা ছাড়া।

يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ أَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ج (٦٨)

৬৮. (মুত্তাকীদেরকে বলা হবে) হে আমার বান্দাগণ! আজ তোমাদের কোন ভয় নেই আর তোমরা দুঃখিতও হবে না-

اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ ج (٦٩)

৬৯. তোমরা যারা আমার আয়াতসমূহে বিশ্বাস করেছিলে এবং অনুগত ছিলে।

أُدْخُلُوا الْجَنَّةَ أَنْتُمْ وَأَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ (٧٠)

৭০. সানন্দে জান্নাতে প্রবেশ কর তোমরা আর তোমাদের স্ত্রীরা।

يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ وَّأَكْوَابٍ ج وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْأَنْفُسُ وَتَلَذُّ الْأَعْيُنُ ج وَأَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ج (٧١)

৭১. তাদের কাছে চক্রাকারে পরিবেশন করা হবে স্বর্ণের থালা ও পান পাত্র। সেখানে তা-ই আছে মন যা চাইবে, আর চোখ যাতে তৃপ্ত হবে। তোমরা তাতে চিরকাল থাকবে।

وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْٓ أُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٧٢)

৭২. এই হল জান্নাত তোমাদেরকে যার উত্তরাধিকারী করা হয়েছে, কারণ তোমরা (সৎ) 'আমাল করেছিলে।

لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَأْكُلُوْنَ (٧٣)

৭৩. তোমাদের জন্য সেখানে আছে প্রচুর ফল যাথেকে তোমরা খাবে।

إِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ عَذَابِ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ ج (٧٤)

৭৪. (আর অন্যদিকে) অপরাধীরা জাহান্নামের 'আযাবে চিরকাল থাকবে।

لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ج (٧٥)

৭৫. তাদের শাস্তি কমানো হবে না, আর তাতে তারা হতাশ হয়ে পড়বে।

وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ (٧٦)

৭৬. আমি তাদের উপর যুল্ম করিনি, বরং তারা নিজেরাই যালিম ছিল।

وَنَادَوْا يَا مَالِكُ لِيَقْضِ عَلَيْنَا رَبُّكَ ط قَالَ إِنَّكُمْ مَّاكِثُوْنَ (٧٧)

৭৭. তারা চীৎকার ক'রে বলবে– হে 'মালেক (জাহান্নামের দাড়োয়ান)! তোমার প্রতিপালক যেন আমাদের দফারফা ক'রে দেন। সে জওয়াব দিবে- 'তোমরা (এ অবস্থাতেই পড়ে) থাকবে'।

لَقَدْ جِئْنٰكُمْ بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَكُمْ لِلْحَقِّ كَارِهُوْنَ (٧٨)

৭৮. আমি তো তোমাদের কাছে সত্য নিয়ে গিয়েছিলাম, কিন্তু তোমাদের অধিকাংশই ছিলে সত্যকে অপছন্দকারী।

أَمْ أَبْرَمُوْا أَمْرًا فَإِنَّا مُبْرِمُوْنَ ج (٧٩)

৭৯. তারা কি (নিজেদের মধ্যে সলা-পরামর্শ করে কোন) চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত নিয়েছে? চূড়ান্ত সিদ্ধান্ত তো আমিই নিয়ে থাকি (যাবতীয় ব্যাপারে আল্লাহ যা চান তাই শেষে ঘটে)।

أَمْ يَحْسَبُوْنَ أَنَّا لَا نَسْمَعُ سِرَّهُمْ وَنَجْوٰهُمْ ط بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيْهِمْ يَكْتُبُوْنَ (٨٠)

৮০. তারা কি মনে করে যে, আমি তাদের গোপন কথা, গোপন পরামর্শ শুনি না? নিশ্চয়ই শুনি, আর আমার ফেরেশতারাহ্ তাদের কাছে থেকে লিখে নেয়।

قُلْ إِنْ كَانَ لِلرَّحْمٰنِ وَلَدٌ قصلے فَأَنَا أَوَّلُ الْعٰبِدِيْنَ (٨١)

৮১. বল– দয়াময়ের কোন সন্তান থাকলে আমিই তার সর্বপ্রথম 'ইবাদাতকারী হতাম।

سُبْحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ رَبِّ الْعَرْشِ عَمَّا يَصِفُوْنَ (٨٢)

৮২. তারা যা (তাঁর প্রতি) আরোপ করে তা হতে আকাশ ও পৃথিবীর প্রতিপালক 'আরশের পালনকর্তা মহান, পবিত্র।

فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ (٨٣)

৮৩. কাজেই তাদেরকে বাক-চতুরতা ও ক্রীড়া-কৌতুক করতে দাও সে দিনের সাক্ষাৎ পর্যন্ত যে দিনের ও'য়াদা তাদেরকে দেয়া হয়েছে।

وَهُوَ الَّذِيْ فِي السَّمَآءِ إِلٰهٌ وَّفِي الْأَرْضِ إِلٰهٌ ط وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ (٨٤)

৮৪. আকাশমণ্ডলে তিনিই ইলাহ, যমীনে তিনিই ইলাহ, তিনি মহাবিজ্ঞ, সর্বজ্ঞ।

وَتَبٰرَكَ الَّذِيْ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ج وَعِنْدَهُ عِلْمُ السَّاعَةِ ج وَإِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٨٥)

৮৫. অতি মহান ও পবিত্র তিনি, আকাশ, পৃথিবী ও এ দু'য়ের মাঝে যা আছে তার একচ্ছত্র কর্তৃত্ব যাঁর হাতে, ক্বিয়ামতের জ্ঞান তাঁর কাছেই আছে (যে তা কখন ঘটবে), আর তোমাদেরকে তাঁর কাছেই ফিরে যেতে হবে।

وَلَا يَمْلِكُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ

৮৬. আল্লাহ্‌র পরিবর্তে যাদেরকে তারা ডাকে তারা সুপারিশের অধিকারী নয়, তবে যে জ্ঞানের

الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنْ شَهِدَ بِالْحَقِّ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (٨٦)

ভিত্তিতে সত্যের সাক্ষ্য দেয় সে ছাড়া।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ فَأَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۙ (٨٧)

৮৭. তুমি যদি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর– তাদেরকে কে সৃষ্টি করেছে, তাহলে তারা অবশ্য অবশ্যই বলবে, আল্লাহ। অত:পর তারা কোথায় ফিরে যাচ্ছে?

وَقِيْلِهٖ يٰرَبِّ إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۘ (٨٨)

৮৮. রসূলের এ উক্তির শপথঃ 'হে আমার প্রতিপালক! এ জাতির লোকেরা ঈমান আনবে না।'

فَاصْفَحْ عَنْهُمْ وَقُلْ سَلٰمٌ ۭ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ع (٨٩)

৮৯. কাজেই তুমি তাদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নাও আর বল– (তোমাদের প্রতি) সালাম। শীঘ্রই তারা জানতে পারবে (তাদের আচরণের পরিণতি কী)।

৪৪. সূরাহ আদ্-দুখান

سُوْرَةُ الدُّخَانِ

আয়াতঃ ৫৯, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

حٰمٓ ج ۚ (١)

১. হা-মীম।

وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۙ (٢)

২. সুস্পষ্ট কিতাবের কসম!

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ إِنَّا كُنَّا مُنْذِرِيْنَ (٣)

৩. আমি একে অবতীর্ণ করেছি এক বরকতময় রাতে, (কেননা) আমি (মানুষকে) সতর্ককারী।

فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ أَمْرٍ حَكِيْمٍ ۙ (٤)

৪. এ রাতে প্রতিটি প্রজ্ঞাপূর্ণ বিষয় স্থির করা হয়

أَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ إِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ج (٥)

৫. আমার আদেশক্রমে, আমিই প্রেরণকারী,

رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ إِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۙ (٦)

৬. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ স্বরূপ তিনি সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ إِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ (٧)

৭. আকাশ ও পৃথিবী এবং এ দু'য়ের মাঝে যা কিছু আছে সব কিছুর যিনি প্রতিপালক, (তাঁর মর্যাদা যে কত মহান এ কথা উপলব্ধি করে নাও)

যদি তোমরা সত্যিকারই বিশ্বাসী হয়ে থাক।

لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۖ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآئِكُمُ الْأَوَّلِيْنَ (٨)

৮. তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তিনিই জীবিত করেন ও মৃত্যু ঘটান। তিনিই তোমাদের প্রতিপালক এবং তোমাদের পূর্ববর্তী তোমাদের পিতৃপুরুষদেরও প্রতিপালক।

بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ (٩)

৯. কিন্তু তারা সংশয়ের মাঝে খেলায় মত্ত।

فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَأْتِي السَّمَآءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ ۙ (١٠)

১০. অতএব তুমি অপেক্ষা কর সে দিনের যেদিন আকাশ ধোঁয়ায় আচ্ছন্ন হবে যা সুস্পষ্ট (ভাবে দেখা যাবে)।

يَّغْشَى النَّاسَ ۖ هٰذَا عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١١)

১১. (যা) মানুষকে ঢেকে নেবে, তা হবে ভয়াবহ শাস্তি।

رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ إِنَّا مُؤْمِنُوْنَ (١٢)

১২. (তখন তারা আরয করবে)– হে আমাদের পালনকর্তা! আমাদের থেকে শাস্তি সরিয়ে দিন, আমরা ঈমান আনলাম।

أَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مُّبِيْنٌ ۙ (١٣)

১৩. তারা কীভাবে উপদেশ গ্রহণ করবে? তাদের কাছে তো এসেছে সুস্পষ্ট বর্ণনাকারী এক রসূল।

ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ ۘ (١٤)

১৪. এখন তারা তার থেকে মুখ ফিরিয়ে নিচ্ছে আর তারা বলছে (সে হল এক) পাগল– যাকে শিখিয়ে দেয়া হয়েছে।

إِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا إِنَّكُمْ

১৫. আমি কিছুকালের জন্য 'আযাব সরিয়ে নেব,

১০-১৬। মাসরূক (রহ.) হতে বর্ণিত যে, 'আবদুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, এ অবস্থা এ জন্য যে, কুরাইশরা যখন রসূল (ﷺ) -এর নাফরমানী করল, তখন তিনি তাদের বিরুদ্ধে এমন দুর্ভিক্ষের দু'আ করলেন, যেমন দুর্ভিক্ষ হয়েছিল ইউসুফ ('আ.)-এর সময়ে। তারপর তাদের উপর দুর্ভিক্ষ ও ক্ষুধার কষ্ট এমনভাবে আপতিত হ'ল যে, তারা হাড্ডি খেতে আরম্ভ করল। তখন মানুষ আকাশের দিকে তাকালে ক্ষুধার তাড়নায় তারা আকাশ ও তাদের মাঝে শুধু ধোঁয়ার মত দেখতে পেত। এ সম্পর্কেই আল্লাহ্ অবতীর্ণ করলেন, "অতএব তুমি অপেক্ষা কর সেদিনের, যেদিন স্পষ্ট ধূম্রাচ্ছন্ন হবে আকাশ এবং তা ছেয়ে ফেলবে মানব জাতিকে। এ হবে মর্মন্তুদ শাস্তি।" বর্ণনাকারী বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর নিকট (কাফিরদের পক্ষ থেকে) এক ব্যক্তি এসে বলল, হে আল্লাহ্‌র রসূল! মুদার গোত্রের জন্য বৃষ্টির দু'আ করুন। তারা তো ধ্বংস হয়ে গেল। তিনি [রসূল (ﷺ)] বললেন, মুদার গোত্রের জন্য দু'আ করতে বলছ। তুমি তো খুব সাহসী। তারপর তিনি বৃষ্টির জন্য দু'আ করলেন এবং বৃষ্টি হল। তখন অবতীর্ণ হল, তোমরা তো তোমাদের আগের অবস্থায় ফিরে যাবে। যখন তাদের সচ্ছলতা ফিরে এলো, তখন আবার নিজেদের আগের অবস্থায় ফিরে গেল। তারপর আল্লাহ্ নাযিল করলেন, "যেদিন আমি তোমাদের প্রবলভাবে পাকড়াও করব, সেদিন আমি তোমাদের প্রতিশোধ নেই। বর্ণনাকারী বলেন, অর্থাৎ বাদর যুদ্ধের দিন। –বুখারী ৪৮২১ [১০০৭; মুসলিম ২৭৯৮, তিরমিযী ৩২৫৪, আহমাদ ৩৬০২, ৪০৯৩, ৪১৯৪]

عَآئِدُوْنَ ـ (١٥)

তখন তোমরা আগে যা করছিলে তাই আবার করবে।

يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ج إِنَّا مُنْتَقِمُوْنَ (١٦)

১৬. যেদিন আমি তোমাদেরকে ভীষণভাবে পাকড়াও করব, সেদিন আমি আবশ্যই প্রতিশোধ নেব।

وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَآءَهُمْ رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ لا (١٧)

১৭. তাদের পূর্বে আমি ফেরাউন জাতিকে পরীক্ষা করেছিলাম। তাদের কাছে এসেছিল এক সম্মানিত রসূল।

أَنْ أَدُّوْآ إِلَيَّ عِبَادَ اللهِ ط إِنِّيْ لَكُمْ رَسُوْلٌ أَمِيْنٌ لا (١٨)

১৮. সে বলেছিল– আল্লাহ্র বান্দাদেরকে আমার কাছে অর্পণ কর। আমি তোমাদের জন্য প্রেরিত বিশ্বস্ত রসূল।

وَّأَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللهِ ط إِنِّيْٓ اٰتِيْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ج (١٩)

১৯. আর আল্লাহ্র বিরুদ্ধে ঔদ্ধত্য দেখাইও না, আমি তোমাদের কাছে (আমার রসূল হওয়ার) সুস্পষ্ট প্রমাণ পেশ করছি।

وَإِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ أَنْ تَرْجُمُوْنِ ز (٢٠)

২০. আমি আমার ও তোমাদের প্রতিপালকের নিকট আশ্রয় গ্রহণ করছি যাতে তোমরা আমাকে পাথরের আঘাতে হত্যা না কর।

وَإِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِيْ فَاعْتَزِلُوْنِ (٢١)

২১. তোমরা যদি আমার প্রতি বিশ্বাস না আনো, কমপক্ষে আমার কাছ থেকে দূরে থাক।

فَدَعَا رَبَّهٗٓ أَنَّ هٰٓؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ (٢٢)

২২. (কিন্তু তারা ছিল আক্রমণমুখী) তখন সে তার পালনকর্তার নিকট দু'আ করল- এরা অপরাধী জাতি।

فَأَسْرِ بِعِبَادِيْ لَيْلًا إِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ لا (٢٣)

২৩. (তখন আমি বললাম) তুমি আমার বান্দাহদেরকে নিয়ে রাতের বেলায় বের হয়ে পড়, তোমাদের পিছু ধাওয়া করা হবে।

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ط إِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ (٢٤)

২৪. (মূসা বানী ইসরাঈলকে নিয়ে সমুদ্র পার হয়ে গিয়ে সমুদ্রকে আবার প্রবহমান করার জন্য স্বীয় লাঠি নিক্ষেপ করলে আল্লাহ বললেন) সমুদ্রকে স্থির থাকতে দাও, তারা (অর্থাৎ ফেরাউনী দল) এমন এক বাহিনী যারা নিমজ্জিত হবে।

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ لا (٢٥)

২৫. তারা ছেড়ে গিয়েছিল কত উদ্যান আর ঝর্ণা,

وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ لا (٢٦)

২৬. শস্য ক্ষেত, আর অভিজাত স্থান,

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِيْهَا فٰكِهِيْنَ ۙ (٢٧)	২৭. আর বিলাস সামগ্রী- যা নিয়ে তারা আনন্দ করত।
كَذٰلِكَ قف وَأَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِيْنَ (٢٨)	২৮. এমনটাই হয়েছিল, অতঃপর আমি অন্য জাতির লোকদেরকে সে সবের উত্তরাধিকারী করে দিয়েছিলাম।
فَمَا بَكَتْ عَلَيْهِمُ السَّمَآءُ وَالْأَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِيْنَ ع (٢٩)	২৯. আসমান আর যমীন তাদের জন্য কাঁদেনি, আর তাদেরকে একটু অবসরও দেয়া হয়নি।
وَلَقَدْ نَجَّيْنَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ (٣٠)	৩০. আমি বানী ইসরাঈলকে রক্ষা করেছিলাম অপমানজনক শাস্তি হতে
مِنْ فِرْعَوْنَ ط إِنَّهٗ كَانَ عَالِيًا مِّنَ الْمُسْرِفِيْنَ (٣١)	৩১. ফেরাউনের। সে ছিল সীমালঙ্ঘনকারীদের শীর্ষে।
وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ع (٣٢)	৩২. আমি জেনে বুঝেই বিশ্বজগতের উপর তাদেরকে (অর্থাৎ বানী ইসরাঈলকে) বেছে নিয়েছিলাম।
وَاٰتَيْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰيٰتِ مَا فِيْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِيْنٌ (٣٣)	৩৩. এবং তাদেরকে আমি এমন নিদর্শনাবলী দিয়েছিলাম যাতে সুস্পষ্ট পরীক্ষা নিহিত ছিল।
إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَيَقُوْلُوْنَ ۙ (٣٤)	৩৪. এই কাফিররা বলে,
إِنْ هِيَ إِلَّا مَوْتَتُنَا الْأُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِيْنَ (٣٥)	৩৫. আমাদের প্রথম মৃত্যুর পর আর কিছু নাই আর আমরা পুনরুত্থিত হব না।
فَأْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٣٦)	৩৬. (মৃত্যুর পর মানুষকে পুনরুত্থিত করা হবে- তোমাদের এ কথায়) তোমরা যদি সত্য হও, তাহলে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে হাজির কর।
أَهُمْ خَيْرٌ أَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط أَهْلَكْنٰهُمْ ز إِنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ (٣٧)	৩৭. এরাই শ্রেষ্ঠ, না তুব্বা সম্প্রদায় আর তাদের আগে যারা ছিল তারা? আমিতো ওদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছি। তারা ছিল অপরাধী।
وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا لٰعِبِيْنَ (٣٨)	৩৮. আমি আকাশ, যমীন আর এদের মাঝে যা আছে সে সব খেল-তামাশার ফলে সৃষ্টি করিনি।
مَا خَلَقْنٰهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ	৩৯. আমি ওদু'টিকে সত্যিকার উদ্দেশ্যে সৃষ্টি

لَا يَعْلَمُوْنَ (٣٩)

করেছি। কিন্তু তাদের অধিকাংশই (তা) জানে না।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ مِيْقَاتُهُمْ أَجْمَعِيْنَ ۙ (٤٠)

৪০. ফয়সালার দিনটি তাদের সবারই নির্ধারিত সময়।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ مَوْلًى عَنْ مَّوْلًى شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۙ (٤١)

৪১. যেদিন বন্ধু বন্ধুর কোন উপকারে আসবে না, আর তাদেরকে সাহায্যও করা হবে না।

إِلَّا مَنْ رَّحِمَ اللهُ ۗ إِنَّهُ هُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ع (٤٢)

৪২. তবে আল্লাহ যার প্রতি রহমত করবেন তার কথা আলাদা। তিনি মহাপরাক্রান্ত, বড়ই দয়ালু।

إِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوْمِ ۙ (٤٣)

৪৩. নিশ্চয়ই যাক্কুম গাছ (হবে)

طَعَامُ الْأَثِيْمِ ج صلے (٤٤)

৪৪. পাপীর খাদ্য

كَالْمُهْلِ ج يَغْلِيْ فِي الْبُطُوْنِ ۙ (٤٥)

৪৫. গলিত তামার মত পেটে ফুটতে থাকবে।

كَغَلْيِ الْحَمِيْمِ (٤٦)

৪৬. ফুটন্ত পানির মত,

خُذُوْهُ فَاعْتِلُوْهُ إِلٰى سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ۙ (٤٧)

৪৭. (বলা হবে) ওকে ধর, আর ওকে টেনে নিয়ে যাও জাহান্নামের আগুনের মাঝখানে।

ثُمَّ صُبُّوْا فَوْقَ رَأْسِهِ مِنْ عَذَابِ الْحَمِيْمِ ط (٤٨)

৪৮. অতঃপর তার মাথার উপর ফুটন্ত পানি ঢেলে 'আযাব দাও।

ذُقْ ج صلے إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْكَرِيْمُ (٤٩)

৪৯. (বলা হবে) গ্রহণ কর স্বাদ-তুমি তো ছিলে ক্ষমতাশালী, সম্মানী।

إِنَّ هٰذَا مَا كُنْتُمْ بِهِ تَمْتَرُوْنَ (٥٠)

৫০. এ হল তাই যাতে তোমরা সন্দেহ করতে।

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ مَقَامٍ أَمِيْنٍ ۙ (٥١)

৫১. নিশ্চয়ই মুত্তাকীরা থাকবে নিরাপদ স্থানে,

فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ج ۙ (٥٢)

৫২. বাগান আর ঝরণার মাঝে

يَّلْبَسُوْنَ مِنْ سُنْدُسٍ وَّإِسْتَبْرَقٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ج ۙ (٥٣)

৫৩. তারা পরিধান করবে পাতলা ও পুরু রেশমী কাপড়, আর বসবে মুখোমুখী হয়ে।

كَذٰلِكَ قف وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ ط (٥٤)

৫৪. এ রকমই হবে, আর তাদের বিয়ে দিয়ে দেব ডাগর ডাগর সুন্দর উজ্জ্বল চোখওয়ালা কুমারীদের (হুরদের) সাথে।

يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيْنَ ۙ (٥٥)

৫৫. সেখানে তারা পূর্ণ শান্তি ও নিরাপত্তার সাথে নানান ফলমূল আনতে বলবে।

لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا الْمَوْتَ إِلَّا الْمَوْتَةَ الْأُوْلٰى ۚ وَوَقٰهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۙ (٥٦)

৫৬. সেখানে তারা মৃত্যু আস্বাদন করবে না (সেই) প্রথম মৃত্যুর পর, আর তিনি তাদেরকে আগুনের শাস্তি থেকে রক্ষা করবেন

فَضْلًا مِّنْ رَّبِّكَ ۗ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (٥٧)

৫৭. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহ স্বরূপ, এটাই হল মহা সাফল্য।

فَإِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ (٥٨)

৫৮. আমি তোমার ভাষায় কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি যাতে তারা উপদেশ গ্রহণ করে।

فَارْتَقِبْ إِنَّهُمْ مُّرْتَقِبُوْنَ ۚ (٥٩)

৫৯. কাজেই তুমি অপেক্ষা কর (তাদের পরিণতি দেখার জন্য) তারাও অপেক্ষা করছে (তোমাদের পরিণতি দেখার জন্য)।

৪৫. সূরাহ আল-জাসিয়াহ

سُوْرَةُ الْجَاثِيَةِ

আয়াতঃ ৩৭, রুকু'ঃ ৪, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

حٰمٓ ۚ (١)

১. হা-মীম।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ (٢)

২. এ কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে মহা পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময় আল্লাহ্‌র নিকট হতে।

إِنَّ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۗ (٣)

৩. আকাশে এবং যমীনে মু'মিনদের (শিক্ষার) জন্য অবশ্যই নিদর্শন আছে।

وَفِيْ خَلْقِكُمْ وَمَا يَبُثُّ مِنْ دَآبَّةٍ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۙ (٤)

৪. তোমাদের সৃষ্টিতে, আর প্রাণীকুল ছড়িয়ে দেয়ার মাঝে নিদর্শন আছে নিশ্চিত বিশ্বাসীদের জন্য।

وَاخْتِلَافِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ أَنْزَلَ اللهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنْ رِّزْقٍ فَأَحْيَا بِهِ الْأَرْضَ

৫. রাত ও দিনের আবর্তনে, আর আল্লাহ আকাশ থেকে যে বৃষ্টি বর্ষণ করেন তা দিয়ে যমীনকে তার মৃত্যুর পর আবার জীবিত করেন আর বায়ুর

بَعْدَ مَوْتِهَا وَتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٥)

পরিবর্তনে জ্ঞানী সম্প্রদায়ের জন্য নিদর্শন রয়েছে।

تِلْكَ اٰيَاتُ اللهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ۚ فَبِأَيِّ حَدِيْثٍۢ بَعْدَ اللهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤْمِنُوْنَ (٦)

৬. এগুলো হল আল্লাহ্‌র আয়াত যা সত্যতা সহকারে তোমার কাছে তিলাওয়াত করা হচ্ছে। কাজেই তারা আল্লাহ এবং তাঁর আয়াতের (উপর বিশ্বাস না করলে এর) পর আর কোন্ কথায় বিশ্বাস করবে?

وَيْلٌ لِّكُلِّ أَفَّاكٍ أَثِيْمٍ ۙ (٧)

৭. ধ্বংস প্রত্যেক মিথ্যাবাদী পাপাচারীর জন্য

يَّسْمَعُ اٰيٰتِ اللهِ تُتْلٰى عَلَيْهِ ثُمَّ يُصِرُّ مُسْتَكْبِرًا كَأَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا ۚ فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ أَلِيْمٍ (٨)

৮. যে আল্লাহ্‌র আয়াত শোনে যা তার সামনে পাঠ করা হয়, অতঃপর অহমিকার সাথে (কুফ্‌রীর উপর) থাকে যেন সে তা শোনেইনি; কাজেই তাকে ভয়াবহ শাস্তির সংবাদ দাও।

وَإِذَا عَلِمَ مِنْ اٰيَاتِنَا شَيْئًا ۨ اتَّخَذَهَا هُزُوًا ۚ أُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۚ (٩)

৯. আমার আয়াতগুলোর কোন কথা যখন সে অবগত হয় তখন তাকে ঠাট্টা বিদ্রূপের বিষয় বানিয়ে নেয়, তাদের জন্য আছে অপমানজনক শাস্তি।

مِنْ وَّرَآئِهِمْ جَهَنَّمُ ۚ وَلَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ مَّا كَسَبُوْا شَيْئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ أَوْلِيَآءَ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۚ (١٠)

১০. তাদের আড়ালে আছে জাহান্নাম, তাদের কৃতকর্ম তাদের কোন কাজে আসবে না। আর আল্লাহ্‌র পরিবর্তে তারা যেগুলোকে অভিভাবক হিসেবে গ্রহণ করেছে সেগুলোও (কাজে আসবে) না। তাদের জন্য আছে মহা শাস্তি।

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ أَلِيْمٌ ۚ (١١)

১১. এ (কুরআন) সঠিক পথের দিশারী। যারা তাদের পালনকর্তার নিদর্শনগুলোকে প্রত্যাখ্যান করে, তাদের জন্য আছে কঠোর যন্ত্রণাদায়ক শাস্তি।

اَللهُ الَّذِيْ سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ الْفُلْكُ فِيْهِ بِأَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۚ (١٢)

১২. আল্লাহ– যিনি সমুদ্রকে তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত করেছেন যাতে তাঁর হুকুমে তোমাদের নৌযানসমূহ তাতে চলাচল করতে পারে, আর যাতে তোমরা তাঁর অনুগ্রহ তালাশ কর এবং তোমরা (তাঁর) শোকর আদায় কর।

وَسَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ

১৩. আর তিনি তোমাদের কল্যাণে নিয়োজিত রেখেছেন যা আছে আকাশে আর যা আছে যমীনে সেগুলোর সব কিছুকে। এতে চিন্তাশীল মানুষদের

لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ (١٣)

জন্য অবশ্যই অনেক নিদর্শন আছে।

قُلْ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَغْفِرُوْا لِلَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ أَيَّامَ اللهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا ۢبِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (١٤)

১৪. মু'মিনদেরকে বল ঐ লোকদেরকে ক্ষমা করতে যারা আল্লাহ্‌র 'আযাবের দিন আসার ব্যাপারে কোন আশংকাবোধ করে না। কেননা আল্লাহই (ভাল বা মন্দ) প্রত্যেক সম্প্রদায়কে তাদের কৃতকর্ম অনুসারে প্রতিফল দিবেন।

مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ أَسَآءَ فَعَلَيْهَا ز ثُمَّ إِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ (١٥)

১৫. যে লোক ভাল কাজ করবে, সে তার নিজের কল্যাণেই তা করবে আর যে মন্দ কাজ করবে তার কুফল সে-ই ভোগ করবে। অতঃপর তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিপালকের নিকট ফিরিয়ে নেয়া হবে।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۚ (١٦)

১৬. আমি বানী ইসরাঈলকে কিতাব, রাজত্ব ও নুবুওয়াত দিয়েছিলাম আর তাদেরকে দিয়েছিলাম উত্তম রিযক, আর তাদেরকে বিশ্ববাসীর উপর শ্রেষ্ঠত্ব দিয়েছিলাম।

وَاٰتَيْنٰهُمْ بَيِّنٰتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْٓا إِلَّا مِنْ ۢبَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ لا بَغْيًا ۢبَيْنَهُمْ ط إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ (١٧)

১৭. আর দ্বীনের ব্যাপারে তাদেরকে দিয়েছিলাম সুস্পষ্ট নিদর্শন। কিন্তু তাদের কাছে (সত্য মিথ্যা সম্পর্কিত নির্ভুল) জ্ঞান আসার পরও শুধু নিজেদের মধ্যে বাড়াবাড়ির কারণে তারা মতভেদ করেছিল। তারা যে বিষয়ে মতভেদ করত, তোমার প্রতিপালক কিয়ামাতের দিন সে বিষয়ে তাদের মধ্যে ফয়সালা করে দেবেন।

ثُمَّ جَعَلْنٰكَ عَلٰى شَرِيْعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ (١٨)

১৮. অতঃপর (হে নবী ﷺ!) আমি তোমাকে দ্বীনের (সঠিক) পথের উপর প্রতিষ্ঠিত করেছি, কাজেই তুমি তারই অনুসরণ কর, আর যারা (দ্বীনের বিধি-বিধান) জানেনা তাদের খেয়ালখুশির অনুসরণ করো না।

إِنَّهُمْ لَنْ يُّغْنُوْا عَنْكَ مِنَ اللهِ شَيْئًا ط وَإِنَّ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَاللهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِيْنَ (١٩)

১৯. আল্লাহ হতে তারা তোমার কোনই উপকার করতে পারবে না। যালিমরা একে অপরের বন্ধু, আর আল্লাহ মুত্তাকীদের বন্ধু।

هٰذَا بَصَآئِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ

২০. এ (কুরআন) মানুষের জন্য জ্ঞানের আলো,

Contents

يُوْقِنُوْنَ (٢٠)

আর নিশ্চিত বিশ্বাসীদের জন্য পথের দিশারী এবং রহমত স্বরূপ।

أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ أَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لا سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ط سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ع (٢١)

২১. যারা অন্যায় কাজ করে তারা কি এ কথা ভেবে নিয়েছে যে, আমি তাদেরকে আর ঈমান গ্রহণকারী সৎকর্মশীলদেরকে সমান গণ্য করব যার ফলে তাদের উভয় দলের জীবন ও মৃত্যু সমান হয়ে যাবে? কতই না মন্দ তাদের ফয়সালা!

وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (٢٢)

২২. আল্লাহ্ আকাশ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন এক সত্যিকার লক্ষ্যে যাতে প্রত্যেক ব্যক্তিকে তার কৃতকর্ম অনুযায়ী প্রতিফল দেয়া যেতে পারে, আর তাদের প্রতি কোন যুল্‌ম করা হবে না।

أَفَرَأَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ إِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَأَضَلَّهُ اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ط فَمَنْ يَّهْدِيْهِ مِنْ بَعْدِ اللّٰهِ ط أَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ (٢٣)

২৩. তুমি কি লক্ষ্য করেছ তার প্রতি যে তার খেয়াল-খুশিকে ইলাহ বানিয়ে নিয়েছে? আল্লাহ জেনে শুনেই তাকে পথভ্রষ্ট করেছেন আর তার কানে ও দিলে মোহর মেরে দিয়েছেন আর তার চোখের উপর টেনে দিয়েছেন পর্দা। অতঃপর আল্লাহ্‌র পর আর কে (আছে যে) তাকে সঠিক পথ দেখাবে? এরপরও কি তোমরা শিক্ষাগ্রহণ করবে না?

وَقَالُوْا مَا هِيَ إِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ إِلَّا الدَّهْرُ ج وَمَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ج إِنْ هُمْ إِلَّا يَظُنُّوْنَ (٢٤)

২৪. তারা বলে- জীবন বলতে তো শুধু আমাদের এ দুনিয়ারই জীবন, আমরা মরি আর বেঁচে থাকি (এখানেই)। কালের প্রবাহ ছাড়া অন্য কিছুই আমাদেরকে ধ্বংস করে না। আসলে এ ব্যাপারে তাদের কোন জ্ঞানই নেই। তারা শুধু ধারণা করে।

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ حُجَّتَهُمْ إِلَّآ أَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَا إِنْ

২৫. তাদের সামনে যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াতগুলো পাঠ করা হয়, তখন তাদের কাছে এ কথা বলা ছাড়া আর কোন যুক্তি থাকে না যে,

২৪। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ্ বলেন, আদাম সন্তানরা আমাকে কষ্ট দেয়। তারা যামানাকে গালি দেয়; অথচ আমিই যামানা। আমার হাতেই সকল ক্ষমতা; রাত ও দিন আমিই পরিবর্তন করি। -বুখারী ৪৮২৬ [৬১৮১,৭৪৯১; মুসলিম ২২৪৬, ২২৪৭; আবূ দাঊদ ৫২৭৪, ৫২৭৪; আহমাদ ৭২০৪, ৭২১৬; মুওয়াত্তা ১৮৭৬, দারিমী ২৭০০]

Contents

كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٢٥)

তোমরা যদি সত্যবাদীই হয়ে থাক, তাহলে আমাদের পূর্বপুরুষদেরকে হাজির কর।

قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يَجْمَعُكُمْ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ع (٢٦)

২৬. বল– আল্লাহই তোমাদেরকে জীবন দান করেন অতঃপর তোমাদের মৃত্যু ঘটান। অতঃপর তিনি তোমাদেরকে ক্বিয়ামতের দিন একত্রিত করবেন যাতে কোন সন্দেহ নেই। কিন্তু অধিকাংশ মানুষ তা জানে না।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ (٢٧)

২৭. আকাশ ও যমীনের রাজত্ব আল্লাহ্‌রই, যে দিন ক্বিয়ামত সংঘটিত হবে, সেদিন মিথ্যার অনুসারীরা ধ্বংস হয়ে যাবে।

وَتَرٰى كُلَّ أُمَّةٍ جَاثِيَةً ط قف كُلُّ أُمَّةٍ تُدْعٰى إِلٰى كِتٰبِهَا ط اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٢٨)

২৮. আর প্রত্যেক সম্প্রদায়কে দেখবে নতজানু হয়ে আছে। প্রত্যেক সম্প্রদায়কে তার 'আমালনামার পানে আহ্বান করা হবে। (আর বলা হবে) তোমরা যা করতে আজ তার প্রতিফল দেয়া হবে।

هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ط إِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٢٩)

২৯. আমার এ কিতাব তোমাদের ব্যাপারে সত্য কথাই বলবে, তোমরা যা করতে আমি তাই-ই লিখে রাখতাম।

فَأَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ط ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ (٣٠)

৩০. যারা ঈমান আনে আর সৎকর্ম করে তাদের প্রতিপালক তাদেরকে তাঁর রহমাতের মধ্যে দাখিল করবেন। ওটাই সুস্পষ্ট সাফল্য।

وَأَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قف أَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ (٣١)

৩১. আর যারা কুফরী করেছিল তাদেরকে বলা হবে- আমার আয়াতগুলো কি তোমাদের কাছে পাঠ করা হয়নি? তখন তোমরা অহঙ্কার করেছিলে আর তোমরা ছিলে এক অপরাধী জাতি।

وَإِذَا قِيْلَ إِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ لا إِنْ نَّظُنُّ إِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ (٣٢)

৩২. যখন বলা হয়– আল্লাহ্‌র প্রতিশ্রুতি সত্য আর ক্বিয়ামতের আগমনে কোনই সন্দেহ নেই, তখন তোমরা বলতে– 'আমরা জানি না ক্বিয়ামত কী? আমরা মনে করি তা শুধু ধারণা মাত্র, আর (তাতে) আমরা নিশ্চিত বিশ্বাসী নই'।

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ بِهِمْ مَّا

৩৩. তারা যে সব মন্দ কাজ করত সেগুলো তাদের

كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ (٣٣)

কাছে প্রকাশ হয়ে পড়বে আর তারা যা নিয়ে ঠাট্টা বিদ্রূপ করত তা তাদেরকে ঘিরে ফেলবে।

وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا وَمَأْوٰكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ (٣٤)

৩৪. আর বলা হবে- ‘আজ আমি তোমাদেরকে ভুলে যাব যেমন করে তোমরা এ দিনের সাক্ষাৎকে ভুলে গিয়েছিলে। তোমাদের বাসস্থান হবে জাহান্নাম আর তোমাদের কোন সাহায্যকারী থাকবে না।

ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ج فَالْيَوْمَ لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ (٣٥)

৩৫. এটা এজন্য যে, তোমরা আল্লাহ্‌র আয়াতগুলোকে ঠাট্টা বিদ্রূপের বিষয় বানিয়ে নিয়েছিলে, আর দুনিয়ার জীবন তোমাদেরকে ধোঁকায় ফেলে রেখেছিল। কাজেই আজ তাদেরকে জাহান্নাম থেকে বের করা হবে না আর তাওবাহ করার সুযোগ দেয়া হবে না।

فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٣٦)

৩৬. অতএব প্রশংসা আল্লাহ্‌রই জন্য যিনি আসমানের প্রতিপালনকারী, যমীনের প্রতিপালনকারী, বিশ্বজগতের প্রতিপালনকারী ।

وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ع (٣٧)

৩৭. আকাশ ও যমীনে তাঁরই শ্রেষ্ঠত্ব ও প্রাধান্য, আর তিনি মহাপরাক্রমশালী, প্রজ্ঞাময়।

৪৬. সূরাহ আল-আহ্‌ক্বাফ

سُوْرَةُ الْأَحْقَافِ

আয়াতঃ ৩৫, রুকূ'ঃ ৪, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হা-মীম।

حٰمٓ ج (١)

২. কিতাব অবতীর্ণ হয়েছে মহা পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময় আল্লাহ্‌র নিকট হতে।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ (٢)

৩. আমি আকাশ, যমীন ও এ দু'য়ের মাঝে যা আছে তা প্রকৃত উদ্দেশে একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্য সৃষ্টি করেছি। কিন্তু কাফিরগণ, যে বিষয়ে তাদেরকে সতর্ক করা হয় তাথেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়।

مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ إِلَّا بِالْحَقِّ وَأَجَلٍ مُّسَمًّى ط وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَمَّآ أُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ (٣)

৪. বল- তোমরা আল্লাহ্‌র পরিবর্তে যাদেরকে ডাক, তাদের বিষয়ে চিন্তা করে দেখেছ কি? দেখাও আমাকে তারা যমীনে কী সৃষ্টি করেছে অথবা আকাশমণ্ডলে তাদের কোন অংশীদারিত্ব আছে কি? এর আগের কোন কিতাব অথবা পরম্পরাগত কোন জ্ঞান আমার কাছে উপস্থিত কর যদি তোমরা সত্যবাদী হও।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللهِ أَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْأَرْضِ أَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ط اِيْتُوْنِيْ بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ أَوْ أَثٰرَةٍ مِّنْ عِلْمٍ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٤)

৫. তার চেয়ে অধিক গুমরাহ কে, যে আল্লাহ্‌র পরিবর্তে এমন কিছুকে ডাকে যা ক্বিয়ামত পর্যন্ত তাকে সাড়া দেবে না, আর তাদের ডাকাডাকি সম্পর্কেও তারা (একদম) বেখবর?

وَمَنْ أَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللهِ مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ إِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ وَهُمْ عَنْ دُعَآئِهِمْ غٰفِلُوْنَ (٥)

৬. ক্বিয়ামতের দিন মানুষকে যখন একত্রিত করা হবে, তখন ঐগুলো (অর্থাৎ উপাস্যরা) হবে মানুষের শত্রু আর মানুষ যে তাদের 'ইবাদাত করেছিল তা তারা অস্বীকার করবে।

وَإِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ أَعْدَآءً وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ (٦)

৭. তাদের কাছে যখন আমার সুস্পষ্ট আয়াত আবৃত্তি করা হয় আর সত্য যখন তাদের কাছে উপস্থিত হয়, তখন কাফিররা বলে- এটাতো প্রকাশ্য যাদু।

وَإِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ لا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ط (٧)

أَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرَاهُ ط قُلْ إِنِ افْتَرَيْتُهُ فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللهِ شَيْئًا ط هُوَ أَعْلَمُ بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ط كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًا بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ط وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (٨)

৮. তারা কি বলতে চায় যে, রসূল নিজেই তা রচনা করেছে? বল, তা যদি আমি রচনা করে থাকি তাহলে তোমরা আল্লাহ্‌র শাস্তি হতে আমাকে কিছুতেই বাঁচাতে পারবে না। আল্লাহ ভাল করেই জানেন যে বিষয়ে তোমরা মত্ত আছ। আমার আর তোমাদের মধ্যে সাক্ষী হিসেবে তিনিই যথেষ্ট, আর তিনি বড়ই ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ أَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ط إِنْ أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوْحٰٓى إِلَيَّ وَمَآ أَنَا إِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ط (٩)

৯. বল, আমি রসূলদের মধ্যে নতুন নই, আর আমি এও জানি না যে, আমার সঙ্গে কী ব্যবহার করা হবে আর তোমাদের সঙ্গেইবা কেমন (ব্যবহার করা হবে), আমি কেবল তাই মেনে চলি যা আমার প্রতি ওয়াহী করা হয়। আমি তো স্পষ্ট সতর্ককারী মাত্র।

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللهِ وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ عَلٰى مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ط إِنَّ اللهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ع (١٠)

১০. বল– তোমরা কি ভেবে দেখেছ যদি এ (কুরআন) আল্লাহ্‌র পক্ষ থেকে এসে থাকে আর তা তোমরা প্রত্যাখ্যান কর অথচ এ ধরনের কালাম সম্পর্কে বানী ইসরাঈলের একজন ['আবদুল্লাহ বিন সালাম (রাযি.)] সাক্ষ্যও দিয়েছে। সে ঈমান আনল আর তোমরা অহঙ্কার করলে? আল্লাহ যালিম লোকদেরকে সঠিক পথ দেখান না।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ إِلَيْهِ ط وَإِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ إِفْكٌ قَدِيْمٌ (١١)

১১. কাফিররা মু'মিনদের সম্পর্কে বলে, তা (অর্থাৎ কুরআন) যদি ভাল হত তাহলে তারা আমাদেরকে পেছনে ফেলে ওটার দিকে এগিয়ে যেতে পারত না (আমরাই কুরআনকে আগে গ্রহণ করে নিতাম) আর যেহেতু তারা এর দ্বারা (অর্থাৎ কাফিররা এ কুরআন দ্বারা) সঠিক পথ পায়নি, সে কারণে তারা অবশ্যই বলবে– এটা এক পুরনো মিথ্যে।

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ط وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قصلے وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ (١٢)

১২. অথচ ইতোপূর্বে মূসার কিতাব এসেছিল পথপ্রদর্শক ও রহমত স্বরূপ। আর (এখন অবতীর্ণ) এ কিতাব তার সমর্থক, আরবী ভাষায়, যালিমদেরকে সতর্ক করার জন্য আর সৎকর্মশীলদেরকে সুসংবাদ দেয়ার জন্য।

إِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ج (١٣)

১৩. যারা বলে, 'আমাদের প্রতিপালক আল্লাহ', অতঃপর (তাদের কথার উপর) সুদৃঢ় থাকে, তাহলে তাদের কোন ভয় নেই, আর তারা দুঃখিত হবে না।

أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ج جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٤)

১৪. তারাই জান্নাতের অধিবাসী, তাতে তারা চিরকাল থাকবে, তারা যে কাজ করত তার পুরস্কার স্বরূপ।

وَوَصَّيْنَا الْإِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ إِحْسٰنًا ط حَمَلَتْهُ أُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ط وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ط حَتّٰٓى إِذَا بَلَغَ أَشُدَّهٗ وَبَلَغَ أَرْبَعِيْنَ سَنَةً لا قَالَ رَبِّ أَوْزِعْنِيْٓ أَنْ أَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ أَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَأَنْ أَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَأَصْلِحْ لِيْ فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ج ط إِنِّيْ تُبْتُ إِلَيْكَ وَإِنِّيْ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ (١٥)

১৫. আমি মানুষকে নির্দেশ দিয়েছি তার পিতামাতার প্রতি সদয় আচরণের। তার মা তাকে বহন করেছে কষ্টের সাথে, আর তাকে প্রসব করেছে কষ্টের সাথে। তাকে গর্ভে ধারণ ও দুধপান ছাড়ানোয় সময় লাগে ত্রিশ মাস। অবশেষে সে যখন পূর্ণ শক্তি লাভ করে এবং চল্লিশ বছরে পৌঁছে যায়, তখন সে বলে, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে আর আমার পিতা-মাতাকে যে নি'মাত দান করেছ তজ্জন্য কৃতজ্ঞতা প্রকাশ করার শক্তি আমাকে দান কর, আর আমাকে এমন সৎকর্ম করার সামর্থ দাও যাতে তুমি সন্তুষ্ট হও, আমার সন্তানদেরকে সৎকর্মপরায়ণ ক'রে আমার প্রতি অনুগ্রহ কর, আমি অনুশোচনাভরে তোমার দিকে ফিরে আসছি, আর আমি অনুগত বান্দাহদের অন্তর্ভুক্ত।

أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ أَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ أَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ط وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ (١٦)

১৬. এই লোকদের হতে আমি তাদের সর্বোত্তম 'আমালগুলো গ্রহণ করি আর তাদের মন্দ কাজগুলো ক্ষমা করে দেই, তারা জান্নাতবাসীদের অন্তর্ভুক্ত। তাদেরকে যে ও'য়াদা দেয়া হয়েছে তা সত্য ও'য়াদা।

وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ أُفٍّ لَّكُمَآ أَتَعِدَانِنِيْٓ أَنْ أُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ قَبْلِيْ ج وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ قصلے إِنَّ وَعْدَ اللهِ حَقٌّ ج فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ إِلَّآ أَسٰطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ (١٧)

১৭. আর যে নিজ পিতামাতাকে বলে, 'তোমাদের জন্য আফসোস! তোমরা কি আমাকে ভয় দেখাও যে, (মৃতুর পর) আমাকে উঠানো হবে অথচ আমার পূর্বে বহু মানব গোষ্ঠী অতীত হয়ে গেছে (কই, কেউ তো উঠে আসল না)। বাপ-মা আল্লাহ্র কাছে প্রার্থনা জানিয়ে (সন্তানকে তিরস্কার করে) বলে– দুর্ভোগ তোমার জন্য, তুমি ঈমান আন, আল্লাহ্র ও'য়াদা সত্য।' তখন সে বলে- 'এ সব পুরান কালের কাহিনী ছাড়া আর কিছুই না।'

১৭। ইউসুফ ইব্নু মাহাক হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, মারওয়ান ছিলেন হিজাযের গভর্নর। তাকে নিয়োগ করেছিলেন মু'আবিয়াহ (রাঃ)। তিনি একদা খুতবা দিলেন এবং তাতে ইয়াযীদ ইব্নু মু'আবিয়ার কথা বারবার বলতে লাগলেন, যেন তাঁর পিতার মৃত্যুর পর তার বায়'আত গ্রহণ করা হয়। এ সময় তাকে 'আবদুর রহমান ইব্নু আবূ বাক্র কিছু কথা বললেন। মারওয়ান বললেন, তাঁকে পাকড়াও কর। তৎক্ষণাৎ তিনি 'আয়িশাহ (রাঃ)-এর ঘরে চলে গেলেন।

أُولَٰئِكَ الَّذِينَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِي أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا خَاسِرِينَ (١٨)

১৮. এরা হল তারাই যাদের প্রতি আল্লাহ্‌র 'আযাবের সিদ্ধান্ত হয়ে গেছে, তাদের মত জিন্ন ও মানুষের মধ্যে হতে যারা তাদের পূর্বে গত হয়ে গেছে। এরা চরমভাবে ক্ষতিগ্রস্ত।

وَلِكُلٍّ دَرَجَاتٌ مِمَّا عَمِلُوا ۖ وَلِيُوَفِّيَهُمْ أَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ (١٩)

১৯. প্রত্যেকের জন্য মর্যাদা আছে তার কৃতকর্ম অনুসারে, যেন আল্লাহ তাদের কর্মের পুরোপুরি প্রতিফল দেন। তাদের উপর কক্ষনো যুল্ম করা হবে না।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِينَ كَفَرُوا عَلَى النَّارِ أَذْهَبْتُمْ طَيِّبَاتِكُمْ فِي حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُونِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُونَ (٢٠)

২০. যেদিন কাফিরদেরকে জাহান্নামের সামনে হাজির করা হবে, (তাদেরকে বলা হবে)- 'তোমরা তোমাদের পার্থিব জীবনেই তোমাদের অংশের নি'মাতগুলো নিঃশেষ করেছ আর তা ভোগ করেছ। কাজেই আজ তোমাদেরকে অপমানজনক শাস্তি দ্বারা প্রতিফল দেয়া হবে, কেননা তোমরা দুনিয়াতে অন্যায়ভাবে অহঙ্কার করেছিলে আর না-ফরমানী করেছিলে।

وَاذْكُرْ أَخَا عَادٍ إِذْ أَنْذَرَ قَوْمَهُ بِالْأَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهِ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ (٢١)

২১. স্মরণ কর 'আদ জাতির ভ্রাতার (হূদ) কথা। সে তার আহকাফবাসী সম্প্রদায়কে সতর্ক করেছিল। (এ ধরনের) সতর্ককারীরা তার পূর্বেও এসেছিল আর তার পরেও এসেছিল (যারা বলেছিল) যে, 'তোমরা আল্লাহ ছাড়া কারো 'ইবাদাত করো না। আমি তোমাদের উপর এক ভয়াবহ দিনের 'আযাবের আশঙ্কা করছি।'

قَالُوا أَجِئْتَنَا لِتَأْفِكَنَا عَنْ آلِهَتِنَا فَأْتِنَا بِمَا تَعِدُنَا إِنْ كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ (٢٢)

২২. লোকেরা বলেছিল– 'তুমি কি আমাদেরকে আমাদের উপাস্যগুলো হতে সরিয়ে নেয়ার জন্য আমাদের কাছে এসেছ। কাজেই তুমি আমাদেরকে যে শাস্তির ভয় দেখাচ্ছ তা নিয়ে এসো আমাদের কাছে যদি তুমি সত্যবাদী হও।'

قَالَ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللَّهِ وَأُبَلِّغُكُمْ مَا

২৩. সে বলল ('আযাব কখন আসবে না আসবে) 'সে বিষয়ের জ্ঞান তো আল্লাহ্‌র নিকট আছে।

তারা তাঁকে ধরতে পারল না। তারপর মারওয়ান বললেন, এ তো সেই লোক যার সম্বন্ধে আল্লাহ্ অবতীর্ণ করেছেন, "আর এমন লোক আছে যে মাতাপিতাকে বলে, তোমাদের জন্য আফসোস! তোমরা কি আমাকে এ ভয় দেখাতে চাও যে, আমি পুনরুত্থিত হব যদিও আমার পূর্বে বহু পুরুষ গত হয়েছে, তখন তার মাতাপিতা আল্লাহ্‌র নিকট ফরিয়াদ করে বলে, দুর্ভোগ তোমার জন্য! বিশ্বাস স্থাপন কর, আল্লাহ্‌র প্রতিশ্রুতি অবশ্যই সত্য। কিন্তু সে বলে এ তো অতীতকালের উপকথা ব্যতীত কিছুই নয়।" –বুখারী ৪৮২৭

أُرۡسِلۡتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيۡۤ أَرٰىكُمۡ قَوۡمًا تَجۡهَلُوۡنَ (٢٣)

আমি যা নিয়ে প্রেরিত হয়েছি তাই শুধু তোমাদের কাছে পৌঁছে দিচ্ছি। কিন্তু আমি দেখছি তোমরা এমন এক জাতি যারা মূর্খের আচরণ করছে।

فَلَمَّا رَأَوۡهُ عَارِضًا مُّسۡتَقۡبِلَ أَوۡدِيَتِهِمۡ ۙ قَالُوۡا هٰذَا عَارِضٌ مُّمۡطِرُنَا ؕ بَلۡ هُوَ مَا اسۡتَعۡجَلۡتُمۡ بِهٖ ؕ رِيۡحٌ فِيۡهَا عَذَابٌ أَلِيۡمٌ ۙ (٢٤)

২৪. অতঃপর তারা যখন তাদের উপত্যকার দিকে মেঘ আসতে দেখল তখন তারা বলল- 'এ তো মেঘ, আমাদেরকে বৃষ্টি দিবে।' না, তা হল সেই জিনিস তোমরা যা তাড়াতাড়ি নিয়ে আসতে চেয়েছিলে। এ হল ঝড়, যাতে আছে ভয়াবহ 'আযাব।

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيۡءٍۭ بِأَمۡرِ رَبِّهَا فَأَصۡبَحُوۡا لَا يُرٰىۤ إِلَّا مَسٰكِنُهُمۡ ؕ كَذٰلِكَ نَجۡزِي الۡقَوۡمَ الۡمُجۡرِمِيۡنَ (٢٥)

২৫. ওটা তার প্রতিপালকের নির্দেশে সবকিছু ধ্বংস করে দেবে। অবস্থা এই দাঁড়াল যে, তাদের (ধ্বংসপ্রাপ্ত) বসতিগুলো ছাড়া আর কিছু দেখা যাচ্ছিল না। অপরাধী জাতিকে আমি এভাবেই প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَلَقَدۡ مَكَّنّٰهُمۡ فِيۡمَاۤ إِنۡ مَّكَّنّٰكُمۡ فِيۡهِ وَجَعَلۡنَا لَهُمۡ سَمۡعًا وَّأَبۡصَارًا وَّأَفۡئِدَةً ۖز فَمَاۤ أَغۡنٰى عَنۡهُمۡ سَمۡعُهُمۡ وَلَاۤ أَبۡصَارُهُمۡ وَلَاۤ أَفۡئِدَتُهُمۡ مِّنۡ شَيۡءٍ إِذۡ كَانُوۡا يَجۡحَدُوۡنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمۡ مَّا كَانُوۡا بِهٖ يَسۡتَهۡزِءُوۡنَ ع (٢٦)

২৬. তাদেরকে আমি যতটা সুদৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত করেছিলাম, তোমাদেরকে (হে কুরায়শ!) তেমন সুদৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত করিনি আর তাদেরকে দিয়েছিলাম কান, চোখ ও হৃদয়। কিন্তু তাদের কান, তাদের চোখ আর তাদের হৃদয় তাদের কোন উপকারে আসেনি যেহেতু তারা আল্লাহ্র আয়াতসমূহকে অস্বীকার করত। তারা যা নিয়ে ঠাট্টা বিদ্রূপ করত তা-ই তাদেরকে ঘিরে ফেলল।

وَلَقَدۡ أَهۡلَكۡنَا مَا حَوۡلَكُمۡ مِّنَ الۡقُرٰى وَصَرَّفۡنَا الۡاٰيٰتِ لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ (٢٧)

২৭. আমি ধ্বংস করেছিলাম তোমাদের চারপাশের জনপদ। আমি নানাভাবে নিদর্শন দেখিয়েছিলাম যাতে তারা (সঠিক পথে) ফিরে আসে।

২৪। তিনি ['আয়িশাহ (রাঃ)] বলেন, যখনই তিনি মেঘ অথবা ঝড়ো হাওয়া দেখতেন, তখনই তাঁর চেহারায় তা পরিলক্ষিত হত। তিনি বললেন, মানুষ যখন মেঘ দেখে তখন বৃষ্টির আশায় আনন্দিত হয়। কিন্তু আপনি যখন মেঘ দেখেন, তখন আমি আপনার চেহারায় আতংকের ছাপ পাই। তিনি বললেন, হে 'আয়িশাহ! এতে 'আযাব না থাকার ব্যাপারে আমি নিশ্চিত নই। বাতাস দিয়েই তো এক কওমকে 'আযাব দেয়া হয়েছে। সে কওম 'আযাব দেখে বলেছিল, এ তো মেঘ, আমাদেরকে বৃষ্টি দিবে। -বুখারী ৪৮২৯ [৩২০৬]

فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً ؕ بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ ۚ وَذٰلِكَ إِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ (٢٨)

২৮. আল্লাহ্‌র নৈকট্য লাভের উদ্দেশে আল্লাহ ব্যতিরেকে যাদেরকে তারা ইলাহরূপে গ্রহণ করেছে তারা তাদেরকে সাহায্য করল না কেন? বরং তারা (অর্থাৎ কল্পিত ইলাহ) তাদের থেকে হারিয়ে গেল। আসলে তা ছিল তাদের মিথ্যাচার আর মনগড়া উদ্ভাবণ।

وَإِذْ صَرَفْنَآ إِلَيْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ يَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۚ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ قَالُوْآ أَنْصِتُوْا ۚ فَلَمَّا قُضِيَ وَلَّوْا إِلٰى قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِيْنَ (٢٩)

২৯. স্মরণ কর, যখন জিন্নদের একটি দলকে তোমার প্রতি ফিরিয়ে দিয়েছিলাম যারা কুরআন শুনছিল। তারা যখন সে স্থানে উপস্থিত হল, তখন তারা পরস্পরে বলল- চুপ করে শুন। পড়া যখন শেষ হল তখন তারা তাদের সম্প্রদায়ের কাছে ফিরে গেল সতর্ককারীরূপে।

قَالُوْا يٰقَوْمَنَآ إِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا أُنْزِلَ مِنْ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ يَهْدِيْٓ إِلَى الْحَقِّ وَإِلٰى طَرِيْقٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٣٠)

৩০. (ফিরে গিয়ে) তারা বলল– হে আমাদের সম্প্রদায়! আমরা একটি কিতাব (এর পাঠ) শুনেছি যা মূসার পরে অবতীর্ণ হয়েছে, তা পূর্বেকার কিতাবগুলোর সত্যতা প্রতিপন্ন করে, সত্যের দিকে আর সঠিক পথের দিকে পরিচালিত করে।

يٰقَوْمَنَآ أَجِيْبُوْا دَاعِيَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُجِرْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ (٣١)

৩১. হে আমাদের সম্প্রদায়! আল্লাহ্‌র দিকে আহ্বানকারীর প্রতি সাড়া দাও এবং তার প্রতি ঈমান আন, আল্লাহ তোমাদের গুনাহ মাফ করে দেবেন আর তোমাদেরকে যন্ত্রণাদায়ক 'আযাব থেকে রক্ষা করবেন।

وَمَنْ لَّا يُجِبْ دَاعِيَ اللّٰهِ فَلَيْسَ بِمُعْجِزٍ فِي الْأَرْضِ وَلَيْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ أَوْلِيَآءُ ؕ أُولٰٓئِكَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (٣٢)

৩২. আর যে আল্লাহ্‌র দিকে আহ্বানকারীর প্রতি সাড়া দিবে না, দুনিয়াতে সে আল্লাহ্‌কে ব্যর্থ করতে পারবে না, আর আল্লাহ্‌কে বাদ দিয়ে নেই তার কোন সাহায্যকারী, পৃষ্ঠপোষক। তারা আছে সুস্পষ্ট গুমরাহীতে।

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَلَمْ يَعْيَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى أَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ؕ بَلٰٓى إِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٣٣)

৩৩. তারা কি দেখে না যে, আল্লাহ, যিনি আকাশ ও যমীন সৃষ্টি করেছেন আর ওগুলোর সৃষ্টিতে তিনি ক্লান্ত হননি, তিনি মৃতদেরকে জীবন দিতে সক্ষম? নিঃসন্দেহে তিনি সকল বিষয়ের উপর ক্ষমতাবান।

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ؕ

৩৪. কাফিরদেরকে যেদিন জাহান্নামের সামনে হাজির করা হবে (তখন তাদেরকে বলা হবে) এটা

أَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ (٣٤)

কি সত্য নয়? তারা বলবে, 'কসম আমাদের প্রতিপালকের! এটা সত্য।' তাদেরকে বলা হবে, 'তাহলে 'আযাব আস্বাদন কর, যেহেতু তোমরা সত্যকে অমান্য করেছিলে।

فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ أُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ؕ كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا إِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ؕ بَلَاغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ إِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ع (٣٥)

৩৫. কাজেই তুমি ধৈর্য ধর যেমনভাবে ধৈর্য ধারণ করেছিল দৃঢ় সংকল্পের অধিকারী রসূলগণ। আর এই লোকেদের ব্যাপারে তাড়াহুড়া করো না। কারণ যে বিষয়ে তাদেরকে সাবধান করা হয়েছে যেদিন তারা তা দেখবে, সেদিন তারা মনে করবে যে, একদিনের কিছু অংশের অধিক তারা দুনিয়াতে অবস্থান করেনি। (তোমার দায়িত্ব) পৌঁছানো, অতঃপর পাপাচারী সম্প্রদায় ছাড়া আর কে ধ্বংস হবে?

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ

৪৭. সূরাহ মুহাম্মাদ

আয়াতঃ ৩৮, রুকূ'ঃ ৪, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ أَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ (١)

১. যারা কুফরী করে এবং আল্লাহ্‌র পথে বাধা সৃষ্টি করে, আল্লাহ তাদের সকল কর্ম ব্যর্থ করে দেন।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَأَصْلَحَ بَالَهُمْ (٢)

২. আর যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে আর মুহাম্মাদের প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে তাতে বিশ্বাস স্থাপন করে– কারণ তা তাদের প্রতিপালকের প্রেরিত সত্য– তিনি তাদের মন্দ কাজগুলো মুছে দেবেন, আর তাদের অবস্থার উন্নতি ঘটাবেন।

ذٰلِكَ بِأَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ وَأَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللهُ لِلنَّاسِ أَمْثَالَهُمْ (٣)

৩. এর কারণ এই যে, যারা কুফরী করে তারা মিথ্যার অনুসরণ করে, আর যারা ঈমান আনে তারা তাদের প্রতিপালকের প্রেরিত সত্যের অনুসরণ করে। এমনিভাবে আল্লাহ মানুষের জন্য তাদের (মধ্যেকার পাপী এবং পুণ্যবানের) দৃষ্টান্ত বর্ণনা করেন।

فَإِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ

৪. অতঃপর যখন তোমরা কাফিরদের সঙ্গে যুদ্ধে

الرِّقَابِ ط حَتّٰٓى إِذَآ أَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ لا فَإِمَّا مَنًّا بَعْدُ وَإِمَّا فِدَآءً حَتّٰى تَضَعَ الْحَرْبُ أَوْزَارَهَا ۚ ج ذٰلِكَ ط وَلَوْ يَشَآءُ اللهُ لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ لا وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا بَعْضَكُمْ بِبَعْضٍ ط وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ فَلَنْ يُّضِلَّ أَعْمَالَهُمْ (٤)

অবতীর্ণ হও, তখন তাদের ঘাড়ে আঘাত হানো, অবশেষে যখন তাদেরকে পূর্ণরূপে পরাস্ত কর, তখন তাদেরকে শক্তভাবে বেঁধে ফেল। অতঃপর হয় তাদের প্রতি অনুগ্রহ কর, না হয় তাদের থেকে মুক্তিপণ গ্রহণ কর। তোমরা যুদ্ধ চালিয়ে যাবে, যে পর্যন্ত না শত্রুপক্ষ অস্ত্র সমর্পণ করে। এ নির্দেশই তোমাদেরকে দেয়া হল। আল্লাহ ইচ্ছে করলে (নিজেই) তাদের থেকে প্রতিশোধ নিতে পারতেন। কিন্তু তিনি তোমাদের একজনকে অন্যের দ্বারা পরীক্ষা করতে চান (এজন্য তোমাদেরকে যুদ্ধ করার সুযোগ দেন)। যারা আল্লাহ্‌র পথে শহীদ হয় তিনি তাদের কর্মফল কক্ষনো বিনষ্ট করবেন না।

سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ج (٥)

৫. তিনি তাদেরকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন আর তাদের অবস্থা ভাল করে দেন।

وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ (٦)

৬. অতঃপর তিনি তাদেরকে জান্নাতে প্রবিষ্ট করবেন যা তাদেরকে তিনি জানিয়ে দিয়েছেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ تَنْصُرُوا اللهَ يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ أَقْدَامَكُمْ (٧)

৭. হে ঈমানদারগণ! তোমরা যদি আল্লাহকে সাহায্য কর, তিনি তোমাদেরকে সাহায্য করবেন আর তোমাদের পাগুলোকে দৃঢ়প্রতিষ্ঠ করবেন।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَأَضَلَّ أَعْمَالَهُمْ (٨)

৮. যারা কুফরী করে তাদের জন্য দুর্ভোগ আর তিনি তাদের কর্মকে বিনষ্ট করে দেবেন।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ أَنْزَلَ اللهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ (٩)

৯. তা এজন্য যে, আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তারা তা অপছন্দ করে, কাজেই আল্লাহ তাদের কর্ম ব্যর্থ করেন।

أَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْأَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ط دَمَّرَ اللهُ عَلَيْهِمْ ز وَلِلْكٰفِرِيْنَ أَمْثَالُهَا (١٠)

১০. তারা কি পৃথিবীতে ভ্রমণ করেনি অতঃপর দেখেনি তাদের আগে যারা ছিল তাদের পরিণাম কী হয়েছে? আল্লাহ তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছেন, কাফিরদের জন্য আছে অনুরূপ শাস্তি।

ذٰلِكَ بِأَنَّ اللهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَأَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ع (١١)

১১. এর কারণ এই যে, যারা ঈমান আনে আল্লাহ তাদের অভিভাবক আর কাফিরদের কোন অভিভাবক নেই।

إِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ط وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَأْكُلُوْنَ كَمَا تَأْكُلُ الْأَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ (١٢)

১২. যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে আল্লাহ তাদেরকে প্রবিষ্ট করবেন জান্নাতে যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। আর যারা কুফুরী করে তারা ভোগ বিলাসে মত্ত থাকে আর আহার করে যেভাবে আহার করে জন্তু জানোয়াররা। জাহান্নামই তাদের বাসস্থান।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ أَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ أَخْرَجَتْكَ ج أَهْلَكْنٰهُمْ فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ (١٣)

১৩. তোমার যে জনপদ থেকে তারা তোমাকে বের করে দিয়েছে তার অপেক্ষা শক্তিশালী কত জনপদকে আমি ধ্বংস করে দিয়েছি, অতঃপর কেউ ছিল না তাদের সাহায্যকারী।

أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ (١٤)

১৪. যে ব্যক্তি তার প্রতিপালক থেকে আগত সুস্পষ্ট প্রমাণের উপর প্রতিষ্ঠিত সে কি তার মত যার কাছে তার মন্দ কর্ম সুশোভিত করা হয়েছে আর তারা নিজেদের খেয়ালখুশির অনুসরণ করে।

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ط فِيْهَآ أَنْهَارٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ج وَأَنْهَارٌ مِّنْ لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ج وَأَنْهٰرٌ مِّنْ خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۥ ج وَأَنْهٰرٌ مِّنْ عَسَلٍ مُّصَفًّى ط وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ط كَمَنْ هُوَ خٰلِدٌ فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ أَمْعَآءَهُمْ (١٥)

১৫. মুত্তাক্বীদেরকে যে জান্নাতের ও'য়াদা দেয়া হয়েছে তার উপমা হলঃ তাতে আছে নির্মল পানির ঝর্ণা, আর আছে দুধের নদী যার স্বাদ অপরিবর্তণীয়, আছে পানকারীদের জন্য সুস্বাদু মদের নদী আর পরিশোধিত মধুর নদী। তাদের জন্য সেখানে আছে সব রকম ফলমূল আর তাদের প্রতিপালকের নিকট হতে ক্ষমা। (এরা কি) তাদের মত যারা চিরকাল থাকবে জাহান্নামে যাদেরকে পান করতে দেয়া হবে গরম পানীয় যা তাদের নাড়িভুঁড়ি ছিন্ন ভিন্ন করে ফেলবে?

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ إِلَيْكَ ج حَتّٰٓى إِذَا خَرَجُوْا مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ مَاذَا قَالَ اٰنِفًا قف أُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا أَهْوَآءَهُمْ (١٦)

১৬. তাদের মধ্যে কতক লোক তোমার কথা শুনে, অতঃপর যখন তারা তোমার কাছ থেকে বেরিয়ে যায়, তখন যাদেরকে জ্ঞান দেয়া হয়েছে তাদেরকে বলে- এই মাত্র সে কী বলল? এদের অন্তরে আল্লাহ মোহর মেরে দিয়েছেন আর তারা নিজেদের খেয়ালখুশির অনুসরণ করে।

وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰهُمْ

১৭. যারা সঠিক পথে চলে আল্লাহ তাদের সৎপথ

تَقْوَاهُمْ (١٧)

প্রাপ্তি বৃদ্ধি করে দেন আর তাদেরকে তাক্বওয়া দান করেন।

فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ إِلَّا السَّاعَةَ أَنْ تَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً ج فَقَدْ جَآءَ أَشْرَاطُهَا ج فَأَنّٰى لَهُمْ إِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرَاهُمْ (١٨)

১৮. তারা কি শুধু এ অপেক্ষায় আছে যে, ক্বিয়ামত তাদের কাছে অকস্মাৎ এসে পড়ুক? ক্বিয়ামতের লক্ষণগুলো তো এসেই গেছে। কাজেই তা এসে পড়লে তারা উপদেশ গ্রহণ করবে কেমন করে?

فَاعْلَمْ أَنَّهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْـبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط وَاللهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰكُمْ ع (١٩)

১৯. কাজেই জেনে রেখ, আল্লাহ ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, ক্ষমা প্রার্থনা কর তোমার ভুলত্রুটির জন্য আর মু'মিন ও মু'মিনাদের জন্য, আল্লাহ তোমাদের গতিবিধি ও অবস্থান সম্পর্কে অবগত।

وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ج فَإِذَآ أُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ فِيْهَا الْقِتَالُ لا رَأَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ إِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ط فَأَوْلٰى لَهُمْ ج (٢٠)

২০. মু'মিনরা বলে– একটি সূরাহ নাযিল হয় না কেন? অতঃপর যখন কোন সুস্পষ্ট অর্থবোধক সূরাহ অবতীর্ণ হয় আর তাতে যুদ্ধের কথা উল্লেখ থাকে, তখন যাদের অন্তরে রোগ আছে তুমি তাদেরকে দেখবে মৃত্যুর ভয়ে জ্ঞানহারা লোকের মত তোমার দিকে তাকাচ্ছে। কাজেই ধ্বংস তাদের জন্য।

طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ قف فَإِذَا عَزَمَ الْأَمْرُ قف فَلَوْ صَدَقُوا اللهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ج (٢١)

২১. (আল্লাহ্র) আনুগত্য করা ও ন্যায়সঙ্গত কথা বলা। অতঃপর যুদ্ধের সিদ্ধান্ত হলে তারা যদি আল্লাহ্র নিকট দেয়া অঙ্গীকার পূর্ণ করত, তবে তা তাদের জন্য কল্যাণকর হত।

فَهَلْ عَسَيْتُمْ إِنْ تَوَلَّيْتُمْ أَنْ تُفْسِدُوْا فِي الْأَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا أَرْحَامَكُمْ (٢٢)

২২. ক্ষমতা পেলে সম্ভবতঃ তোমরা পৃথিবীতে বিপর্যয় সৃষ্টি করবে আর আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্ন করবে।

২২। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা সৃষ্টিকুলকে সৃষ্টি করেন। এ থেকে তিনি নিষ্ক্রান্ত হলে 'রাহিম' (রক্ত সম্পর্ক) দাঁড়িয়ে পরম করুণাময়ের কমর টেনে ধরল। তিনি তাকে বললেন, থামো। সে বলল, আত্মীয়তার বন্ধন ছিন্নকারী লোক থেকে আশ্রয় চাওয়ার জন্যই আমি এখানে দাঁড়িয়েছি। আল্লাহ্ বললেন, যে তোমাকে সম্পর্কযুক্ত রাখে, আমিও তাকে সম্পর্কযুক্ত রাখব; আর যে তোমার হতে সম্পর্ক ছিন্ন করে, আমিও তার থেকে সম্পর্ক ছিন্ন করব এতে কি তুমি খুশী নও? সে বলল, নিশ্চয়ই, হে আমার প্রভু। তিনি বললেন, যাও, তোমার জন্য তাই করা হল। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) বলেন, ইচ্ছে হলে তোমরা পড়, "ক্ষমতায় অধিষ্ঠিত হলে সম্ভবত তোমরা পৃথিবীতে ফাসাদ সৃষ্টি করবে এবং আত্মীয়তার বাঁধন ছিন্ন করবে।" –বুখারী ৪৮৩০ [৪৮৩১, ৪৮৩২, ৫৯৮৭, ৭৫০২; মুসলিম ৮৯৯, তিরমিযী ৩২৫৭, আবূ দাউদ ৫০৯৮, ইবনু মাজাহ ৩৮৯১, আহমাদ ২৩৮৪৮, ২৪৮১৪, ২৫৫০৬]

أُولَٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللهُ فَأَصَمَّهُمْ وَأَعْمٰٓى أَبْصَارَهُمْ (٢٣)

২৩. এদের প্রতিই আল্লাহ অভিসম্পাত করেন, অতঃপর তাদেরকে বধির করেন আর তাদের দৃষ্টিশক্তিকে করেন অন্ধ।

أَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ أَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ أَقْفَالُهَا (٢٤)

২৪. তারা কি কুরআন সম্বন্ধে গভীরভাবে চিন্তা করে না, না তাদের অন্তরে তালা দেয়া আছে?

إِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى أَدْبَارِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى لا الشَّيْطَانُ سَوَّلَ لَهُمْ ط وَأَمْلٰى لَهُمْ (٢٥)

২৫. যাদের কাছে সঠিক পথ সুস্পষ্ট হওয়ার পর তারা পিছনে ফিরে যায়, শয়ত্বন তাদের জন্য তাদের কাজকে সুন্দর করে দেখায়, আর তাদেরকে দেয় মিথ্যা আশা।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ اللهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْأَمْرِ ج وَاللهُ يَعْلَمُ إِسْرَارَهُمْ (٢٦)

২৬. এ কারণেই আল্লাহ যা অবতীর্ণ করেছেন তাকে যারা অপছন্দ করে তাদেরকে তারা বলে দিয়েছে যে, কোন কোন ব্যাপারে আমরা তোমাদেরকে মানবো। আল্লাহ তাদের গোপন কথাবার্তাকে খুব ভাল করেই জানেন।

فَكَيْفَ إِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَأَدْبَارَهُمْ (٢٧)

২৭. তখন কেমন দশা হবে যখন ফেরেশতারা তাদের মুখে আর পিঠে মারতে মারতে তাদের জান বের করবে।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ أَسْخَطَ اللهَ وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهُ فَأَحْبَطَ أَعْمَالَهُمْ ع (٢٨)

২৮. এর কারণ এই যে, তারা তারই অনুসরণ করে যা আল্লাহকে অসন্তুষ্ট করে, আর তারা তাঁর সন্তোষকে অপছন্দ করে, ফলে তিনি তাদের সমস্ত 'আমাল নষ্ট করে দিয়েছেন।

أَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ أَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللهُ أَضْغَانَهُمْ (٢٩)

২৯. যাদের অন্তরে রোগ আছে তারা কি মনে করে যে, আল্লাহ কক্ষনো তাদের লুকানো বিদ্বেষভাব প্রকাশ করে দিবেন না?

وَلَوْ نَشَآءُ لَأَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ بِسِيْمٰهُمْ ط وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ الْقَوْلِ ط وَاللهُ يَعْلَمُ أَعْمَالَكُمْ (٣٠)

৩০. আমি যদি ইচ্ছে করতাম তাহলে আমি তোমায় ওদেরকে দেখিয়ে দিতাম। তুমি তাদের মুখ দেখে অবশ্যই চিনতে পারবে আর তাদের কথাবার্তার ধরন দেখে তুমি তাদেরকে অবশ্যই অবশ্যই চিনতে পারবে। আল্লাহ তোমাদের 'আমাল সম্পর্কে ভালভাবেই জানেন।

وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجَاهِدِيْنَ

৩১. আমি তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই পরীক্ষা করব যতক্ষণ না আমি জেনে নিতে পারি

مِنْكُمْ وَالصّٰبِرِيْنَ لا وَنَبْلُوَاْ أَخْبَارَكُمْ (٣١)

তোমাদের মধ্যে মুজাহিদ আর ধৈর্যশীলদেরকে, আর তোমাদের অবস্থা যাচাই করতে পারি।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدٰى لا لَنْ يَّضُرُّوا اللهَ شَيْئًا ط وَسَيُحْبِطُ أَعْمَالَهُمْ (٣٢)

৩২. যারা কুফুরী করে আর আল্লাহ্‌র পথে চলতে বাধা সৃষ্টি করে, আর তাদের নিকট সত্য পথ স্পষ্ট হয়ে যাওয়ার পরও রসূলের বিরোধিতা করে, তারা আল্লাহ্‌র কোনই ক্ষতি করতে পারবে না। আল্লাহ তাদের যাবতীয় 'আমাল নষ্ট করে দিবেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَطِيْعُوا اللهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا أَعْمَالَكُمْ (٣٣)

৩৩. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আল্লাহ্‌র আনুগত্য কর আর রসূলের আনুগত্য কর আর তোমাদের 'আমালগুলোকে নষ্ট করে দিও না।

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ اللهُ لَهُمْ (٣٤)

৩৪. যারা কুফরী করে আর (মানুষকে) আল্লাহ্‌র পথে চলতে বাধা দেয় আর এভাবে কাফির অবস্থাতেই মৃত্যুবরণ করে, আল্লাহ তাদেরকে কক্ষনো ক্ষমা করবেন না।

فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا إِلَى السَّلْمِ قصلے وَأَنْتُمُ الْأَعْلَوْنَ قصلے وَاللهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ أَعْمَالَكُمْ (٣٥)

৩৫. কাজেই তোমরা সাহস-হারা হয়ে যেও না আর সন্ধির আবেদন করে বসো না, প্রবল তো তোমরাই। আল্লাহ তোমাদের সঙ্গে আছেন, তিনি তোমাদের 'আমাল কক্ষনো বিনষ্ট করবেন না।

إِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ط وَإِنْ تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ أُجُوْرَكُمْ وَلَا يَسْأَلْكُمْ أَمْوَالَكُمْ (٣٦)

৩৬. দুনিয়ার এ জীবন তো খেলা আর তামাশা মাত্র। তোমরা যদি ঈমান আন, আর আল্লাহকে ভয় করে চল, তিনি তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিফল দিবেন (আর এর বিপরীতে) তিনি তোমাদের কাছে তোমাদের মাল ধন চাইবেন না।

إِنْ يَّسْأَلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا وَيُخْرِجْ أَضْغَانَكُمْ (٣٧)

৩৭. তিনি যদি তোমাদের কাছে তা চাইতেন আর সেজন্য চাপ দিতেন তাহলে তোমরা কৃপণতা করতে আর তাতে তিনি তোমাদের বিদ্বেষভাব প্রকাশ করে দিতেন।

هٰٓأَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ج فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ج وَمَنْ

৩৮. দেখ, তোমরা তো তারাই, তোমাদেরকে আল্লাহ্‌র পথে ব্যয় করার জন্য ডাক দেয়া হচ্ছে, তখন তোমাদের কিছু লোক কৃপণতা করছে। যে

يَّبْخَلْ فَإِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ وَأَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَإِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا أَمْثَالَكُمْ ع (٣٨)

কৃপণতা করে, সে কৃপণতা করে কেবল নিজের আত্মার সাথে। আল্লাহ তো অভাবহীন আর তোমরাই অভাবী। তোমরা যদি মুখ ফিরিয়ে নাও তাহলে তিনি তোমাদের পরিবর্তে অন্য জাতিকে নিয়ে আসবেন, তখন তারা তোমাদের মত হবে না।

سُوْرَةُ الْفَتْحِ

৪৮. সূরাহ আল-ফাত্‌হ

আয়াতঃ ২৯, রুকূ'ঃ ৪, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ۙ (١)

১. আমি তোমাকে দিয়েছি স্পষ্ট বিজয়।

لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ وَمَا تَأَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۙ (٢)

২. যাতে আল্লাহ তোমার আগের ও পিছের যাবতীয় ভুলভ্রান্তি ক্ষমা করেন, তোমার উপর তাঁর নি'মাত পূর্ণ করেন এবং তোমাকে সরল সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا (٣)

৩. আর আল্লাহ তোমাকে প্রবল পরাক্রান্ত সাহায্য দান করেন।

هُوَ الَّذِيْٓ أَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ

৪. তিনিই মু'মিনদের দিলে প্রশান্তি নাযিল করেন

২। হাবীব ইব্‌নু আবূ সাবিত (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আবূ ওয়ায়িল (ﷺ)-এর কাছে কিছু জিজ্ঞেস করার জন্য এলে, তিনি বললেন, আমরা সিফ্‌ফীনের ময়দানে ছিলাম। এমন সময় এক ব্যক্তি বললেন, তোমরা কি সে লোকদেরকে দেখতে পাচ্ছ না, যাদের আল্লাহ্‌র কিতাবের দিকে আহ্বান করা হচ্ছে? 'আলী (ﷺ) বললেন, হাঁ। তখন সাহ্‌ল ইব্‌নু হুনায়ফ (ﷺ) বললেন, প্রথমে তোমরা নিজেদের খবর নাও। হুদায়বিয়াহ্‌র দিন অর্থাৎ নাবী (ﷺ) এবং মক্কার মুশরিকদের মধ্যে যে সন্ধি হয়েছিল, আমরা সেটা দেখেছি। যদি আমরা একে যুদ্ধ মনে করতাম, তাহলে অবশ্যই আমরা যুদ্ধ করতাম। সেদিন 'উমার (ﷺ) রসূল (ﷺ) -এর কাছে) এসে বলেছিলেন, আমরা কি হকের উপর নই, আর তারা কি বাতিলের উপর নয়? আমাদের নিহত ব্যক্তিরা জান্নাতে, আর তাদের নিহত ব্যক্তিরা কি জাহান্নামে যাবে না? তিনি বললেন, হাঁ। তখন 'উমার (ﷺ) বললেন, তাহলে কেন আমাদের দ্বীনের ব্যাপারে অপমানজনক শর্তারোপ করা হবে এবং আমরা ফিরে যাব? অথচ আল্লাহ্ আমাদেরকে এ সন্ধির ব্যাপারে হুকুম করেননি। তখন নাবী (ﷺ) বললেন, হে খাত্তাবের পুত্র! আমি আল্লাহ্‌র রসূল। আল্লাহ্ কখনো আমাকে ধ্বংস করবেন না। 'উমার রাগে মনে দুঃখ নিয়ে ফিরে গেলেন। তিনি ধৈর্য ধরতে পারলেন না। তারপর তিনি আবূ বাক্‌র সিদ্দীক (ﷺ)-এর কাছে গেলেন এবং বললেন, হে আবূ বাক্‌র! আমরা কি হকের উপর নই এবং তারা কি বাতিলের উপর নয়? তিনি বললেন, হে খাত্তাবের পুত্র! নিশ্চয়ই তিনি আল্লাহ্‌র রসূল। আল্লাহ্ কক্ষনো তাঁকে ধ্বংস করবেন না। এ সময় সূরাহ ফাতহ্ অবতীর্ণ হয়। –বুখারী ৪৮৪৪ [৩১৮১; মুসলিম ১৭৮৫, আহমাদ ১৫৫৪৪]

ٱلْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا إِيْمَانًا مَّعَ إِيْمَانِهِمْ ۗ وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ (٤)

যাতে তারা তাদের ঈমানের সাথে আরো ঈমান বাড়িয়ে নেয়। আসমান ও যমীনের যাবতীয় বাহিনী আল্লাহ্‌র কর্তৃত্বের অধীন। আল্লাহ সর্বজ্ঞ ও প্রজ্ঞাময়।

لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۗ وَكَانَ ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ۙ (٥)

৫. (তিনি এ কাজ করেন এজন্য) যাতে তিনি মু'মিন পুরুষ ও মু'মিনা নারীকে জান্নাতে প্রবিষ্ট করেন যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। তাতে তারা চিরকাল থাকবে। তিনি তাদের পাপ মোচন করে দিবেন। আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে এটাই বিরাট সাফল্য।

وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّآنِّيْنَ بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۗ عَلَيْهِمْ دَآئِرَةُ السَّوْءِ ۚ وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَأَعَدَّ لَهُمْ جَهَنَّمَ ۗ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا (٦)

৬. আর তিনি মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিকা নারী, মুশরিক পুরুষ ও মুশরিকা নারীকে শাস্তি দিবেন যারা আল্লাহ সম্পর্কে খারাপ ধারণা পোষণ করে। তাদের জন্য আছে অশুভ চক্র। আল্লাহ তাদের উপর রাগান্বিত হয়েছেন আর তাদেরকে লা'নাত করেছেন। তাদের জন্য প্রস্তুত করে রেখেছেন জাহান্নাম। তা কতই না নিকৃষ্ট আবাসস্থল!

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (٧)

৭. আসমান ও যমীনের যাবতীয় বাহিনী আল্লাহ্‌র কর্তৃত্বের অধীন। আল্লাহ মহা পরাক্রমশালী, মহা প্রজ্ঞাময়।

إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۙ (٨)

৮. (হে রাসূল) আমি তোমাকে (সত্যের) সাক্ষ্যদাতা, (বিশ্বাসীদের জন্য) সুসংবাদদাতা ও (অবিশ্বাসীদের জন্য) সতর্ককারী হিসেবে পাঠিয়েছি।

৪। বারা (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) -এর জনৈক সহাবী কিরাত করছিলেন। তাঁর একটি ঘোড়া ঘরে বাঁধা ছিল। হঠাৎ তা পালাতে লাগলো। সে ব্যক্তি বেরিয়ে এসে দৃষ্টিপাত করলেন; কিন্তু কিছুই দেখতে পেলেন না। ঘোড়াটি পালিয়েই যাচ্ছিল [কুরআন তিলাওয়াতের কারণে মালাইকাহ নাযিল হয়েছিল যাঁদের দেখে ঘোড়া পালাচ্ছিল]। যখন ভোর হলো তখন তিনি ঘটনাটি নাবী (ﷺ) -এর কাছে ব্যক্ত করলে তিনি বললেন, এ হলো সেই প্রশান্তি, যা কুরআন তিলাওয়াত করার সময় অবতীর্ণ হয়ে থাকে। −বুখারী ৪৮৩৯ [৩৬১৪, মুসলিম ৭৯৫, তিরমিযী ২৮৮৫, আহমাদ ১৮০০৬, ১৮০৩৮]

৮। 'আম্‌র ইব্‌নু 'আস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত যে, কুরআনের এ আয়াত, "আমি তোমাকে পাঠিয়েছি সাক্ষীরূপে, সুসংবাদদাতা ও সতর্ককারীরূপে" তাওরাতে আল্লাহ্ এভাবে বলেছেন, হে নাবী, আমি তোমাকে প্রেরণ করেছি সাক্ষীরূপে, সুসংবাদদাতা ও উম্মী লোকদের মুক্তি দাতারূপে। তুমি আমার বান্দা ও রসূল। আমি তোমার নাম রেখেছি নির্ভরকারী− যে রূঢ় ও কঠোরচিত্ত নয়, বাজারে শোরগোলকারী নয় এবং মন্দকে মন্দ দ্বারা প্রতিহতকারীও

لِّتُؤْمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ وَتُوَقِّرُوْهُ ؕ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا (٩)

৯. যেন (ওহে মানুষেরা), তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি ঈমান আন, রসূলকে শক্তি যোগাও আর তাকে সম্মান কর, আর সকাল-সন্ধ্যায় আল্লাহ্‌র মহিমা ঘোষণা কর।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ إِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ اللهَ ؕ يَدُ اللهِ فَوْقَ أَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ نَّكَثَ فَإِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰى نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ أَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللهَ فَسَيُؤْتِيْهِ أَجْرًا عَظِيْمًا ع (١٠)

১০. যারা তোমার কাছে বাই'আত (অর্থাৎ আনুগত্য করার শপথ) করে আসলে তারা আল্লাহ্‌র কাছে বাই'আত করে। তাদের হাতের উপর আছে আল্লাহ্‌র হাত। এক্ষণে যে এ ও'য়াদা ভঙ্গ করে, এ ও'য়াদা ভঙ্গের কুফল তার নিজেরই উপর পড়বে। আর যে ও'য়াদা পূর্ণ করবে– যা সে আল্লাহ্‌র সঙ্গে করেছে– তিনি অচিরেই তাকে মহা পুরস্কার দান করবেন।

سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْأَعْرَابِ شَغَلَتْنَآ أَمْوَالُنَا وَأَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ يَقُوْلُوْنَ بِأَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللهِ شَيْئًا إِنْ أَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا أَوْ أَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ؕ بَلْ كَانَ اللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (١١)

১১. (যুদ্ধ থেকে) পিছ-পড়া বেদুঈনরা তোমাকে বলবে– আমাদের মালধন আর আমাদের পরিবার-পরিজন আমাদেরকে ব্যস্ত রেখেছিল, কাজেই (হে নবী) আপনি আমাদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করুন। তারা মুখে এমন কথা বলে যা তাদের অন্তরে নেই। (তাদেরকে) বল, আল্লাহ তোমাদের কোন ক্ষতি বা কোন কল্যাণ করার ইচ্ছে করলে তাঁর বিপক্ষে তোমাদের জন্য কিছু করার ক্ষমতা কার আছে? (কারো কোন ওকালতির দরকার নেই) বরং তোমরা যা কর সে বিষয়ে আল্লাহ্‌ই খবর রাখেন।

بَلْ ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ وَالْمُؤْمِنُوْنَ إِلٰٓى أَهْلِيْهِمْ أَبَدًا وَّزُيِّنَ ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ السَّوْءِ ۚ صلے وَكُنْتُمْ قَوْمًا ۢبُوْرًا (١٢)

১২. বরং তোমরা ধারণা করেছিলে যে, রসূল ও মু'মিনগণ কক্ষনো তাদের পরিবার পরিজনের কাছে ফিরে আসতে পারবে না, আর এ খেয়ালটা তোমাদের মনে খুবই চমৎকার ক'রে দেয়া হয়েছিল। তোমরা ধারণা করেছিলে বড়ই কু-ধারণা, আসলে তোমরা হলে ধ্বংসের যোগ্য একটা সম্প্রদায়।

وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْ ۢبِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ فَإِنَّآ

১৩. যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি বিশ্বাস স্থাপন করে না, আমি (সে সব) কাফিরদের জন্য

নয়; বরং তিনি ক্ষমা করবেন এবং উপেক্ষা করবেন। বক্র জাতিকে সোজা না করা পর্যন্ত আল্লাহ্‌ তাঁর জান কবয করবেন না। তা এভাবে যে, তারা বলবে, আল্লাহ্‌ ব্যতীত ইলাহ নেই। ফলে খুলে যাবে অন্ধ চোখ, বধির কান এবং পর্দায় ঢাকা অন্তরসমূহ। –বুখারী ৪৮৩৮ [২১২৫; আহমাদ ৬৫৮৫]

أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا (١٣)

প্রস্তুত করে রেখেছি জ্বলন্ত আগুন।

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ط وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (١٤)

১৪. আসমান যমীনের রাজত্ব আল্লাহ্‌র; যাকে চান তিনি ক্ষমা করেন, যাকে ইচ্ছে 'আযাব দেন। আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ إِذَا انْطَلَقْتُمْ إِلٰى مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ج يُرِيْدُوْنَ أَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ط قُلْ لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ج فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ط بَلْ كَانُوْا لَا يَفْقَهُوْنَ إِلَّا قَلِيْلًا (١٥)

১৫. তোমরা যখন গানীমাতের মাল সংগ্রহ করার জন্য যেতে থাকবে তখন পিছনে থেকে যাওয়া লোকগুলো বলবে- 'আমাদেরকেও তোমাদের সঙ্গে যেতে দাও। তারা আল্লাহ্‌র ফরমানকে বদলে দিতে চায়। বল 'তোমরা কিছুতেই আমাদের সঙ্গে যেতে পারবে না, (খাইবার অভিযানে অংশগ্রহণ এবং সেখানে পাওয়া গানীমাত কেবল তাদের জন্য যারা ইতোপূর্বে হুদাইবিয়ার সফর ও বাই'আতে রিয্ওয়ানে অংশ নিয়েছে) এমন কথা আল্লাহ পূর্বেই বলে দিয়েছেন। তখন তারা বলবে- 'তোমরা বরং আমাদের প্রতি হিংসা পোষণ করছ।' (এটা যে আল্লাহ্‌র হুকুম তা তারা বুঝছে না) বরং তারা খুব কমই বুঝে।

قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْأَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ إِلٰى قَوْمٍ أُولِيْ بَأْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ أَوْ يُسْلِمُوْنَ ج فَإِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ اللّٰهُ أَجْرًا حَسَنًا ج وَإِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا (١٦)

১৬. বেদুঈনদের যারা পেছনে রয়ে গিয়েছিল তাদেরকে বল- 'তোমাদেরকে যুদ্ধ করতে ডাকা হবে খুবই শক্তিশালী এক জাতির বিরুদ্ধে, তোমরা তাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করবে অথবা তারা আত্মসমর্পণ করবে। তোমরা যদি তখন তা মান্য কর, আল্লাহ তোমাদেরকে উত্তম পুরস্কার দিবেন। আর যদি পিঠ ফিরিয়ে নাও যেমন তোমরা আগে পিঠ ফিরিয়ে নিয়েছিলে, তাহলে আল্লাহ তোমাদেরকে কষ্টদায়ক শাস্তি দিবেন।

لَيْسَ عَلَى الْأَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْأَعْرَجِ حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ط وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهُ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ج وَمَنْ يَّتَوَلَّ

১৭. অন্ধের উপর কোন দোষ নেই, খোঁড়ার উপর কোন দোষ নেই, রোগীর উপর কোন দোষ নেই। আর যে কেউই আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য করবে, আল্লাহ তাকে জান্নাতে প্রবিষ্ট করবেন, যার নীচ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। আর যে ব্যক্তি পিঠ ফিরিয়ে নিবে,

يُعَذِّبْهُ عَذَابًا أَلِيْمًا ع (١٧)

তিনি তাকে কষ্টদায়ক শাস্তি দিবেন।

لَقَدْ رَضِيَ اللهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ إِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ مَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ فَأَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ عَلَيْهِمْ وَأَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا لا (١٨)

১৮. মু'মিনদের প্রতি আল্লাহ সন্তুষ্ট হলেন যখন তারা (হুদাইবিয়ায়) গাছের তলে তোমার কাছে বায়'আত নিল। আল্লাহ জানতেন তাদের অন্তরে কী আছে, এজন্য তিনি তাদের উপর প্রশান্তি অবতীর্ণ করলেন আর পুরস্কার হিসেবে তাদেরকে দিলেন নিকট আসন্ন বিজয়।

وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّأْخُذُوْنَهَا ط وَكَانَ اللهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (١٩)

১৯. আর বিপুল পরিমাণ গানীমাত যা তারা লাভ করবে। আল্লাহ মহা পরাক্রান্ত প্রজ্ঞাময়।

وَعَدَكُمُ اللهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَأْخُذُوْنَهَا فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ أَيْدِيَ النَّاسِ عَنْكُمْ ج وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا لا (٢٠)

২০. আল্লাহ তোমাদেরকে বিপুল পরিমাণ গানীমাতের ও'য়াদা দিয়েছেন যা তোমরা লাভ করবে। এটা তিনি তোমাদেরকে আগেই দিলেন আর মানুষদের (অর্থাৎ মাক্কার কুরায়শদের) হাতকে তোমাদের (উপর পতিত হওয়া) থেকে সংযত করে রাখলেন যাতে তা মু'মিনদের জন্য একটা নিদর্শন হয় (যে প্রকৃত মু'মিনদেরকে আল্লাহ অতি সংকটময় মুহূর্তেও রক্ষা করতে পারেন), আর তিনি তোমাদেরকে সরল সঠিক পথে পরিচালিত করেন।

وَّأُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ أَحَاطَ اللهُ بِهَا ط وَكَانَ اللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرًا (٢١)

২১. এবং আরো অন্য (সাহায্য, সম্পদ ও বিজয়) যা এখনও তোমাদের অধিকারে আসেনি, আল্লাহ তা স্বীয় আয়ত্তে রেখেছেন, আল্লাহ সকল বিষয়ে ক্ষমতাবান।

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْأَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (٢٢)

২২. কাফিরগণ যদি তোমাদের সাথে যুদ্ধ বাধাত, তাহলে তারা অবশ্যই পিঠ ফিরিয়ে নিত, সে অবস্থায় তারা কোন পৃষ্ঠপোষক ও সাহায্যকারী পেত না।

سُنَّةَ اللهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ج صلے

২৩. (এটাই) আল্লাহ্‌র বিধান, অতীতেও তাই হয়েছে, তুমি আল্লাহ্‌র বিধানে কক্ষনো কোন

১৮। সাবিত ইবনু দাহ্হাক (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনিও বৃক্ষতলে বায়আতকারী সহাবীদের অন্তর্ভুক্ত ছিলেন। -বুখারী ৪৮৪৩ [১৩৬৩; মুসলিম ১১০, তিরমিযী ১৫৪৩, নাসায়ী ৩৭৭০, ৩৭৭১, ৩৮১৩; আবূ দাউদ ৩২৫৭, ইবনু মাজাহ ২০৯৮, আহমাদ ১৫৯৫০, ১৫৯৫৬]

وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللهِ تَبْدِيْلًا (٢٣)

পরিবর্তন পাবে না।

وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ أَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَأَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ أَنْ أَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ط وَكَانَ اللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا (٢٤)

২৪. মক্কা উপত্যকায় তিনিই তাদের হাত তোমাদের থেকে আর তোমাদের হাত তাদের থেকে বিরত রেখেছিলেন তোমাদেরকে তাদের উপর বিজয়ী করার পর। তোমরা যা কিছু কর আল্লাহ তা দেখেন।

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا أَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ط وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنَاتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ أَنْ تَطَأُوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ج لِيُدْخِلَ اللهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ج لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا (٢٥)

২৫. কুফুরী তো তারাই করেছিল আর তোমাদেরকে মাসজিদুল হারাম থেকে বাধা দিয়েছিল। বাধা দিয়েছিল কুরবানীর পশুগুলোকে কুরবানীর স্থানে পৌঁছতে। মু'মিন পুরুষ আর মু'মিন নারীরা যদি (মাক্কায় কাফিরদের মাঝে) না থাকত যাদের সম্পর্কে তোমরা জান না আর অজ্ঞতাবশতই তোমরা তাদেরকে পর্যুদস্ত করে দিবে যার ফলে তোমাদের উপর কলঙ্ক লেপন হবে-এমন সম্ভাবনা না থাকত, তাহলে তোমাদেরকে যুদ্ধের আদেশ দেয়া হত। যুদ্ধের আদেশ দেয়া হয়নি যাতে আল্লাহ যাকে ইচ্ছে তাঁর রহমাতের মধ্যে শামিল করে নিতে পারেন। (মাক্কায় অনেক মু'মিন আর কাফিররা একত্রিত না থেকে) যদি তারা পৃথক হয়ে থাকত, তাহলে আমি তাদের মধ্যে কাফিরদেরকে ভয়াবহ শাস্তি দিতাম।

إِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَأَنْزَلَ اللهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَأَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا أَحَقَّ بِهَا وَأَهْلَهَا ط وَكَانَ اللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ع (٢٦)

২৬. কাফিররা যখন তাদের অন্তরে জিদ ও হঠকারিতা জাগিয়ে তুলল- অজ্ঞতার যুগের জিদ ও হঠকারিতা- তখন আল্লাহ তাঁর রসূল ও মু'মিনদের উপর স্বীয় প্রশান্তি অবতীর্ণ করলেন আর তাদের জন্য তাকওয়া অবলম্বনের নির্দেশ-বাণী অপরিহার্য (রূপে পালনীয়) ক'রে দিলেন; আর তারাই ছিল এর সবচেয়ে বেশি হকদার ও যোগ্য অধিকারী। আল্লাহ সকল বিষয়ে সর্বাধিক জ্ঞানের অধিকারী।

لَقَدْ صَدَقَ اللهُ رَسُوْلَهُ الرُّؤْيَا بِالْحَقِّ ج لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ إِنْ شَآءَ اللهُ

২৭. আল্লাহ তাঁর রসূলকে প্রকৃত সত্য স্বপ্নই দেখিয়েছিলেন। আল্লাহর ইচ্ছায় তোমরা অবশ্য অবশ্যই মাসজিদে হারামে প্রবেশ করবে নিরাপদে, মস্তক মুণ্ডিত অবস্থায় ও চুল কেটে, ভয়ভীতিহীন

اٰمِنِيْنَ لا مُحَلِّقِيْنَ رُؤُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ لا لَا تَخَافُوْنَ ط فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا (٢٧)

হয়ে। আল্লাহ্ জানেন, যা তোমরা জান না। (সেই স্বপ্ন তো পূর্ণ হবেই) তদুপরি তিনি দিলেন (হুদাইবিয়ার চুক্তি সম্পাদনের মাধ্যমে) নিকটাসন্ন বিজয়।

هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ط وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ط (٢٨)

২৮. তিনিই তাঁর রসূলকে পাঠিয়েছেন হিদায়াত ও সত্য দ্বীন সহকারে সকল দ্বীনের উপর সেটিকে বিজয়ী করার জন্য। (এ ব্যাপারে) সাক্ষী হিসেবে আল্লাহ্ই যথেষ্ট।

مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ط وَالَّذِيْنَ مَعَهٗٓ اَشِدَّآءُ عَلَى الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَيْنَهُمْ تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا يَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا ز سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ ط ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِي التَّوْرٰىةِ ج صلے وَمَثَلُهُمْ فِي الْاِنْجِيْلِ ج قف كَزَرْعٍ اَخْرَجَ شَطْاَهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰى عَلٰى سُوْقِهٖ يُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِيَغِيْظَ بِهِمُ الْكُفَّارَ ط وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ع (٢٩)

২৯. মুহাম্মাদ আল্লাহ্‌র রসুল। আর যে সব লোক তাঁর সঙ্গে আছে তারা কাফিরদের প্রতি অত্যন্ত কঠোর, নিজেদের পরস্পরের প্রতি দয়াশীল। তাদেরকে তুমি দেখবে রুকূ‘ ও সাজদায় অবনত অবস্থায়, তারা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি অনুসন্ধানে নিয়োজিত। তাদের চিহ্ন হল, তাদের মুখমণ্ডলে সেজদা্র প্রভাব পরিস্ফুট হয়ে আছে। তাদের এমন দৃষ্টান্তের কথা তাওরাতে আছে, তাদের দৃষ্টান্ত ইঞ্জিলেও আছে। (তারা) যেন একটা চারাগাছ তার কচিপাতা বের করে, তারপর তা শক্ত হয়, অতঃপর তা কাণ্ডের উপর মজবুত হয়ে দাঁড়িয়ে যায়– যা চাষীকে আনন্দ দেয়। (এভাবে আল্লাহ মু'মিনদেরকে দুর্বল অবস্থা থেকে দৃঢ় ভিত্তির উপর দাঁড় ক'রে দেন) যাতে কাফিরদের অন্তর গোস্বায় জ্বলে যায়। তাদের মধ্য থেকে যারা ঈমান আনে আর সৎকর্ম করে, আল্লাহ তাদের জন্য ক্ষমা ও মহা পুরস্কারের প্রতিশ্রুতি দিয়েছেন।

سُوْرَةُ الْحُجُرَاتِ

৪৯. সূরাহ আল-হুজুরাত

আয়াতঃ ১৮, রুকূ‘ঃ ২, মাদানী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيِ اللّٰهِ

১. ওহে মু'মিনগণ! তোমরা (কোন বিষয়েই) আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আগে বেড়ে যেয়ো না,

وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (١)

আল্লাহকে ভয় কর, আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বজ্ঞ।

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ فَوْقَ صَوْتِ النَّبِيِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ (٢)

২. হে মু'মিনগণ! তোমরা নবীর আওয়াজের উপর তোমাদের আওয়াজ উচ্চ করো না। তোমরা নিজেরা পরস্পরে যেমন উচ্চ আওয়াজে কথা বল, তাঁর সঙ্গে সে রকম উচ্চ আওয়াজে কথা বলো না। তা করলে তোমাদের (যাবতীয়) কাজকর্ম নিস্ফল হয়ে যাবে, আর তোমরা একটু টেরও পাবে না।

اِنَّ الَّذِيْنَ يَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ امْتَحَنَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰى ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ (٣)

৩. যারা আল্লাহ্‌র রসূলের সামনে তাদের আওয়াজ নীচু করে, আল্লাহ তাদের অন্তরগুলোকে তাকওয়ার জন্য যাচাই-বাছাই করে নিয়েছেন। তাদের জন্য আছে ক্ষমা আর বিরাট পুরস্কার।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ (٤)

৪. যারা তোমাকে হুজরার বাইরে থেকে (উচ্চঃস্বরে) ডাকে, তাদের অধিকাংশেরই কোন জ্ঞান নেই।

وَلَوْ اَنَّهُمْ صَبَرُوْا حَتّٰى تَخْرُجَ اِلَيْهِمْ لَكَانَ

৫. তারা যদি ধৈর্য ধরত যে পর্যন্ত না তুমি তাদের কাছে বেরিয়ে আস, সেটাই তাদের জন্য উত্তম

২। ইব্‌নু আবূ মুলায়কাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, উত্তম দু' ব্যক্তি- আবূ বাক্‌র ও 'উমার (রাঃ) নাবী (ﷺ) -এর কাছে কণ্ঠস্বর উঁচু করে ধ্বংস হওয়ার দ্বার প্রান্তে উপনীত হয়েছিলেন। যখন বানী তামীম গোত্রের একদল লোক নাবী (ﷺ) -এর কাছে এসেছিল। তাদের একজন বানী মাজাশে গোত্রের আকরা ইব্‌নু হাবিসকে নির্বাচন করার জন্য প্রস্তাব করল এবং অপরজন অন্য জনের নাম প্রস্তাব করল। নাফি বলেন, এ লোকটির নাম আমার মনে নেই। তখন আবূ বাক্‌র সিদ্দীক (রাঃ) 'উমার (রাঃ)-কে বললেন, আপনার ইচ্ছে হলো কেবল আমার বিরোধিতা করা। তিনি বললেন, না, আপনার বিরোধিতা করার ইচ্ছে আমার নেই। এ ব্যাপারটি নিয়ে তাঁদের আওয়াজ উঁচু হয়ে গেল। তখন আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন, "হে মু'মিনগণ! তোমরা নাবীর আওয়াজের উপর নিজেদের আওয়াজ উঁচু করবে না".....শেষ পর্যন্ত।

ইব্‌নু যুবায়র (রাঃ) বলেন, এ আয়াত অবতীর্ণ হওয়ার পর 'উমার (রাঃ) এ তো আস্তে কথা বলতেন যে, দ্বিতীয়বার জিজ্ঞেস না করা পর্যন্ত রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তা শুনতে পেতেন না। তিনি আবূ বাক্‌র (রাঃ) সম্পর্কে এমন কথা বর্ণনা করেননি। –বুখারী ৪৮৪৫ [৪৩৬৭; তিরমিযী ৩২৬৬, নাসায়ী ৫৩৮৬, আহমাদ ১৫৬৭৪, ১৫৭০০]

আনাস ইব্‌নু মালিক (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা নাবী (ﷺ) সাবিত ইব্‌নু কায়স (রাঃ)-কে খুঁজে পেলেন না। একজন সহাবী বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আমি আপনার কাছে তাঁর সংবাদ নিয়ে আসছি। তারপর লোকটি তাঁর কাছে গিয়ে দেখলেন যে, তিনি তাঁর ঘরে মাথা নীচু করে বসে আছেন। তিনি জিজ্ঞেস করলেন, আপনার কী অবস্থা? তিনি বললেন, খারাপ। কারণ এই (অধম) তার আওয়াজ নাবী (ﷺ) -এর আওয়াজের চেয়ে উঁচু করে কথা বলত। ফলে, তার 'আমাল বরবাদ হয়ে গেছে এবং সে জাহান্নামীদের অন্তর্ভুক্ত হয়ে গেছে। তারপর লোকটি নাবী (ﷺ) -এর কাছে ফিরে এসে খবর দিলেন যে, তিনি এমন এমন কথা বলছেন। মূসা বলেন, এরপর লোকটি এক মহাসুসংবাদ নিয়ে তাঁর কাছে ফিরে গেলেন (এবং বললেন) নাবী (ﷺ) আমাকে বলেছেন, তুমি যাও এবং তাকে বল, তুমি জাহান্নামী নও, বরং তুমি জান্নাতীদের অন্তর্ভুক্ত। –বুখারী ৪৮৪৬ [৩৬১৩; মুসলিম ১১৯]

خَيْرًا لَّهُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥)

হত। আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوْٓا أَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًاۢ بِجَهَالَةٍ فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ (٦)

৬. হে মু'মিনগণ! কোন পাপাচারী যদি তোমাদের কাছে কোন খবর নিয়ে আসে, তাহলে তার সত্যতা যাচাই করে লও, তা না হলে তোমরা অজ্ঞতাবশতঃ কোন সম্প্রদায়ের ক্ষতি করে বসবে, অতঃপর তোমরা যা করেছ সেজন্য তোমাদেরকে অনুতপ্ত হতে হবে।

وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ؕ لَوْ يُطِيْعُكُمْ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ وَالْعِصْيَانَ ؕ أُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ۙ (٧)

৭. তোমরা জেনে রেখ যে, তোমাদের মধ্যে আল্লাহ্‌র রসূল বর্তমান আছে। সে যদি অধিকাংশ বিষয়ে তোমাদের কথা মেনে নিত, তাহলে তোমরা অবশ্যই ক্ষতিগ্রস্ত হতে। কিন্তু আল্লাহ তোমাদের কাছে ঈমানকে প্রিয় করে দিয়েছেন। তোমাদের অন্তরে সেটিকে সুশোভিত করেছেন আর তোমাদের কাছে কুফুরী, পাপাচার ও অবাধ্যতাকে ঘৃণিত করেছেন। তারাই সত্য পথপ্রাপ্ত।

فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٨)

৮. (যা) আল্লাহ্‌র করুণা ও অনুগ্রহ। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, প্রজ্ঞাময়।

وَإِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ اقْتَتَلُوْا فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْۢ بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا عَلَى الْأُخْرٰى فَقَاتِلُوا الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ إِلٰٓى أَمْرِ اللّٰهِ ۚ فَإِنْ فَآءَتْ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ وَأَقْسِطُوْا ؕ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ (٩)

৯. মু'মিনদের দু'দল লড়াইয়ে জড়িয়ে পড়লে তাদের মধ্যে মীমাংসা করে দাও। অতঃপর একটি দল অপরটির উপর বাড়াবাড়ি করলে যে দলটি বাড়াবাড়ি করে, তার বিরুদ্ধে তোমরা লড়াই কর যতক্ষণ না সে দলটি আল্লাহ্‌র নির্দেশের দিকে ফিরে আসে। অতঃপর যদি দলটি ফিরে আসে, তাহলে তাদের মধ্যে ইনসাফের সঙ্গে ফয়সালা কর আর সুবিচার কর; আল্লাহ সুবিচারকারীদেরকে ভালবাসেন।

৯। হাসান (বাসরী) (রহ.) বলেন, আল্লাহ্‌র কসম, হাসান ইব্‌নু 'আলী পর্বত প্রমাণ সেনাদল নিয়ে মু'আবিয়াহ -এর মুখোমুখী হলেন। 'আম্‌র ইব্‌নু 'আস বললেন, আমি এমন সেনাদল দেখতে পাচ্ছি যারা প্রতিপক্ষকে হত্যা না করে ফিরে যাবে না। মু'আবিয়াহ তখন বললেন, আল্লাহ্‌র কসম! আর (মু'আবিয়াহ ও 'আম্‌র ইব্‌নুল 'আস উভয়ের মধ্যে মু'আবিয়াহ ছিলেন উত্তম ব্যক্তি। 'হে 'আম্‌র! এরা ওদের এবং ওরা এদের হত্যা করলে, আমি কাকে দিয়ে লোকের সমস্যার সমাধান করব? তাদের নারীদের কে তত্ত্বাবধান করবে? তাদের দুর্বল ও শিশুদের কে রক্ষণাবেক্ষণ করবে? অতঃপর তিনি কুরায়শের বানূ আবদে শাম্‌স্ শাখার দু' ব্যক্তি 'আবদুর রহমান ইব্‌নু

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَ أَخَوَيْكُمْ ج وَاتَّقُوا اللهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ع (١٠)

১০. মু'মিনরা পরস্পর ভাই ভাই, কাজেই তোমাদের ভাইদের মধ্যে শান্তি-সমঝোতা স্থাপন কর, আর আল্লাহকে ভয় কর, যাতে তোমরা দয়া প্রাপ্ত হও।

يَاۤأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ج وَلَا تَلْمِزُوْٓا أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ ط بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ الْإِيْمَانِ ج وَمَنْ لَّمْ يَتُبْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (١١)

১১. হে মু'মিনগণ! কোন সম্প্রদায় যেন অন্য সম্প্রদায়কে ঠাট্টা-বিদ্রূপ না করে, হতে পারে তারা বিদ্রূপকারীদের চেয়ে উত্তম। আর নারীরা যেন অন্য নারীদেরক ঠাট্টা-বিদ্রূপ না করে, হতে পারে তারা বিদ্রূপকারিণীদের চেয়ে উত্তম। তোমরা একে অন্যের নিন্দা করো না, একে অপরকে মন্দ নামে ডেকো না। ঈমান গ্রহণের পর (ঈমানের আগে কৃত অপরাধকে যা মনে করিয়ে দেয় সেই) মন্দ নাম কতই না মন্দ! (এ সব হতে) যারা তাওবাহ না করে তারাই যালিম।

يَاۤأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اجْتَنِبُوْا كَثِيْرًا مِّنَ الظَّنِّ ز إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ وَّلَا تَجَسَّسُوْا وَلَا يَغْتَبْ بَّعْضُكُمْ بَعْضًا ط أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ أَنْ يَّأْكُلَ لَحْمَ أَخِيْهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوْهُ ط

১২. হে মু'মিনগণ! তোমরা অধিক ধারণা হতে বিরত থাক। কতক ধারণা পাপের অন্তর্ভুক্ত। তোমরা অন্যের দোষ খোঁজাখুঁজি করো না, একে অন্যের অনুপস্থিতিতে দোষ-ত্রুটি বর্ণনা করো না। তোমাদের কেউ কি তার মৃত ভাইয়ের গোশত খেতে পছন্দ করবে? তোমরা তো সেটাকে ঘৃণাই করে থাক। আল্লাহকে ভয় কর, আল্লাহ খুব বেশি

সামুরাহ ও 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু 'আম্র (রাঃ)-কে হাসান (রাঃ)-এর নিকট পাঠালেন। তিনি তাদের বললেন, 'তোমরা উভয়ে এ ব্যক্তিটির নিকট যাও এবং তাঁর নিকট (সন্ধির) প্রস্তাব পেশ করো, তাঁর সঙ্গে আলোচনা কর ও তাঁর বক্তব্য জানতে চেষ্টা কর।' তাঁরা তাঁর নিকট রয়ে গেলেন এবং তাঁর সঙ্গে কথা বললেন, আলাপ-আলোচনা করলেন এবং তাঁর বক্তব্য জানলেন। হাসান ইব্নু 'আলী (রাঃ) তাদের বললেন, 'আমরা 'আবদুল মুত্তালিবের সন্তান, এই সম্পদ (বায়তুল মালের) আমরা পেয়েছি। আর এরা রক্তপাতে লিপ্ত হয়েছে।' তারা উভয়ে বললেন, [মু'আবিয়াহ (রাঃ)] আপনার নিকট এরূপ বক্তব্য পেশ করেছেন। আর আপনার বক্তব্যও জানতে চেয়েছেন ও সন্ধি কামনা করেছেন। তিনি বললেন, 'এ দায়িত্ব কে নিবে?' তারা (তার জওয়াবে) বললেন, 'আমরা এ দায়িত্ব নিচ্ছি।' অতঃপর তিনি তাঁর সঙ্গে সন্ধি করলেন। হাসান (বাসরী) (রহ.) বলেন, আমি আবূ বাকরাহ (রাঃ)-কে বলতে শুনেছিঃ "রসূলুল্লাহ (ﷺ)-কে আমি মিম্বরের উপর দেখেছি, হাসান বিন 'আলী (রাঃ) তাঁর পাশে ছিলেন। তিনি একবার লোকদের দিকে আরেকবার তাঁর দিকে তাকাচ্ছিলেন আর বলছিলেন, আমার এ সন্তান একজন নেতা। সম্ভবত তার মাধ্যমে আল্লাহ্ তা'আলা মুসলমানদের দু'টি বড় দলের মধ্যে মীমাংসা করাবেন।" আবূ 'আবদুল্লাহ্ (রহ.) বলেন, 'আলী ইব্নু 'আবদুল্লাহ্ আমাকে বলেছেন যে, এ হাদীসের মাধ্যমেই আবূ বাকরাহ (রাঃ) হতে হাসানের শোনা কথা আমাদের নিকট প্রমাণিত হয়েছে। -বুখারী ২৭০৪ [৩৬২৯, ৩৭৪৬, ৭১০৯; তিরমিযী ৩৭৭৩, নাসায়ী ১৪১০, আবূ দাউদ ৪৬৬২, আহমাদ ১৯৮৭৯, ১৯৯৩৫]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۗ إِنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ (١٢)

তাওবাহ কবূলকারী, অতি দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ وَّأُنْثٰى وَجَعَلْنٰكُمْ شُعُوْبًا وَّقَبَآئِلَ لِتَعَارَفُوْا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِنْدَ اللّٰهِ أَتْقٰكُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (١٣)

১৩. হে মানুষ! তোমাদেরকে এক পুরুষ ও এক নারী থেকে সৃষ্টি করেছি এবং তোমাদেরকে বিভিন্ন জাতি ও গোষ্ঠীতে বিভক্ত করেছি যাতে তোমরা পরস্পরকে চিনতে পার। তোমাদের মধ্যে আল্লাহ্‌র নিকট সেই লোকেই অধিক সম্মানীয় যে লোক অধিক মুত্তাক্বী। আল্লাহ সর্বজ্ঞ, সব খবর রাখেন।

قَالَتِ الْأَعْرَابُ اٰمَنَّا ۚ قُلْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا وَلٰكِنْ قُوْلُوْٓا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ الْإِيْمَانُ فِيْ قُلُوْبِكُمْ ۚ وَإِنْ تُطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ لَا يَلِتْكُمْ مِّنْ أَعْمَالِكُمْ شَيْئًا ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٤)

১৪. বেদুঈনরা বলে, 'আমরা ঈমান এনেছি'। বল- 'তোমরা ঈমান আননি, বরং তোমরা বল, 'আমরা (মৌখিক) আনুগত্য স্বীকার করেছি', এখন পর্যন্ত তোমাদের অন্তরে ঈমান প্রবেশ করেনি। তোমরা যদি আল্লাহ ও তাঁর রসূলকে মান্য কর তাহলে তোমাদের কৃতকর্মের কিছুই কমতি করা হবে না। আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।

১২। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেন, আনুমানিক ধারণা পোষণ থেকে তোমরা দূরে সরে দাঁড়াও, কেননা আনুমানিক (বস্তুটিই) হচ্ছে চরম মিথ্যালাপ। অন্যের প্রতি কু-ধারণা পোষণ করো না এবং অন্যের দোষ-ক্রটির খোঁজে লিপ্ত হয়ো না। তোমরা পরস্পর হিংসা- বিদ্বেষ করো না এবং পরস্পর সম্পর্ক ছিন্ন করো না। বরং হে আল্লাহর বান্দাগণ পরস্পর ভ্রাতৃত্ববন্ধনে আবদ্ধ হয়ে জীবনযাপন করো। -বুখারী ৬৭২৪ [৫১৪৪, ৬০৬৪, ৬০৬৬; মুসলিম ১৪১৩, ২৫৬৩; তিরমিযী ১৯৮৮, নাসায়ী ৩২৩৯-৩২৪২, আবূ দাউদ ২০৮০, ইবনু মাজাহ ১৮৬৭, ২১৭৪; আহমাদ ৭২৯২, ৭৬৪৩; মুওয়াত্তা ১১১, ১৬৮৪; দারিমী ২১৭৫]

১৪। সা'দ (রাঃ) হতে বর্ণিত। আল্লাহর রসূল (ﷺ) একদল লোককে কিছু দান করলেন। সা'দ (রাঃ) সেখানে বসেছিলেন। সা'দ (রাঃ) বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) তাদের এক ব্যক্তিকে কিছু দিলেন না। সে ব্যক্তি আমার নিকট তাদের চেয়ে অধিক পছন্দের ছিল। তাই আমি আরয করলাম, হে আল্লাহর রসূল! অমুক ব্যক্তিকে আপনি বাদ দিলেন কেন? আল্লাহ্‌র শপথ! আমি তো তাকে মু'মিন বলেই জানি। তিনি বললেনঃ না, মুসলিম। তখন আমি কিছুক্ষণ নীরব থাকলাম। অতঃপর আমি তার সম্পর্কে যা জানি, তা (ব্যক্ত করার) প্রবল ইচ্ছা হলো। তাই আমি আমার বক্তব্য আবার বললাম, আপনি অমুককে দান থেকে বাদ রাখলেন? আল্লাহ্‌র শপথ! আমি তো তাকে মু'মিন বলেই জানি। তিনি বললেনঃ 'না, মুসলিম।' তখন আমি কিছুক্ষণ নীরব থাকলাম। তারপর আমি তার সম্পর্কে যা জানি তা (ব্যক্ত করার) প্রবল ইচ্ছা হলো। তাই আমি আবার বললাম, আপনি অমুককে দান হতে বাদ রাখলেন? আল্লাহ্‌র শপথ! আমি তো তাকে মু'মিন বলেই জানি। তিনি বললেনঃ 'না, মুসলিম?' তখন আমি কিছুক্ষণ চুপ থাকলাম। তারপর আমি তার সম্পর্কে যা জানি তা (ব্যক্ত করার) প্রবল ইচ্ছা হলো। তাই আমি আমার বক্তব্য আবার বললাম। আল্লাহর রসূল (ﷺ) পুনরায় সেই একই জবাব দিলেন। তারপর বললেনঃ 'সা'দ! আমি কখনো ব্যক্তি বিশেষকে দান করি, অথচ অন্য লোক আমার নিকট তার চেয়ে অধিক প্রিয়। তা এ আশঙ্কায় যে (সে ঈমান থেকে ফিরে যেতে পারে পরিণামে), আল্লাহ্ তা'আলা তাকে অধোমুখে জাহান্নামে নিক্ষিপ্ত করবেন। -বুখারী ২৭ [১৪৭৮; মুসলিম ১৫০, নাসায়ী ৪৯৯২, ৪৯৯৩; আবূ দাউদ ৪৬৮৩, ৪৬৮৫; আহমাদ ১৫২৫, ১৫৮৩]

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوْا وَجَاهَدُوْا بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ؕ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ (١٥)

১৫. মু'মিন তারাই যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের উপর ঈমান আনে, অতঃপর কোনরূপ সন্দেহ করে না, আর তাদের মাল দিয়ে ও জান দিয়ে আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ করে; তারাই সত্যবাদী।

قُلْ أَتُعَلِّمُوْنَ اللهَ بِدِيْنِكُمْ ؕ وَاللهُ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ؕ وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (١٦)

১৬. বল, 'তোমরা কি তোমাদের দ্বীন সম্পর্কে আল্লাহকে অবগত করতে চাও'? আল্লাহ তো জানেন যা আছে আসমানে আর যা আছে যমীনে। আল্লাহ প্রতিটি বিষয় সম্পর্কে সবিশেষ অবগত।

يَمُنُّوْنَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوْا ؕ قُلْ لَّا تَمُنُّوْا عَلَيَّ إِسْلَامَكُمْ ۚ بَلِ اللهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ أَنْ هَدٰىكُمْ لِلْإِيْمَانِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (١٧)

১৭. এই লোকেরা মনে করে যে, তারা ইসলাম কবূল ক'রে তোমার প্রতি অনুগ্রহ করেছে। তাদেরকে বলে দাও, 'তোমরা তোমাদের ইসলাম কবূলের দ্বারা আমার প্রতি কোন অনুগ্রহ করনি বরং আল্লাহ্‌ই তোমাদেরকে ঈমানের পথে পরিচালিত ক'রে তোমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন, তোমরা যদি (তোমাদের ঈমান আনার দাবীতে) সত্যবাদী হয়েই থাক।

إِنَّ اللهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ؕ وَاللهُ بَصِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ع (١٨)

১৮. আসমান ও যমীনের গোপন বিষয়ের খবর আল্লাহ্‌ই জানেন। তোমরা যা কর আল্লাহ তা দেখেন।

৫০. সূরাহ ক্বাফ

سُوْرَةُ قٓ

আয়াতঃ ৪৫, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ج (١)

১. ক্বাফ, শপথ মাহাত্ম্যপূর্ণ কুরআনের (যে তুমি আল্লাহ্‌র রসূল।)

بَلْ عَجِبُوْٓا أَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ج (٢)

২. বরং এ লোকেরা বিস্মিত হচ্ছে যে, তাদের কাছে তাদেরই মধ্য হতে একজন সতর্ককারী এসেছে। যার কারণে কাফিররা বলে- 'এতো বড়ই আশ্চর্যজনক ব্যাপার!

أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذَٰلِكَ رَجْعٌ بَعِيدٌ (٣)

৩. আমরা যখন মরে যাব আর মাটি হয়ে যাব (তখন আমাদেরকে আবার আল্লাহ্‌র কাছে ফিরে যেতে হবে)? এ ফিরে যাওয়াটা তো বহু দূরের ব্যাপার।

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيظٌ (٤)

৪. আমি জানি মাটি তাদের কতটুকু ক্ষয় করে আর আমার কাছে আছে এক কিতাব যা (সব কিছুর পূর্ণ বিবরণ) সংরক্ষণ করে।

بَلْ كَذَّبُوا بِالْحَقِّ لَمَّا جَاءَهُمْ فَهُمْ فِي أَمْرٍ مَّرِيجٍ (٥)

৫. তাদের কাছে সত্য আসার পর তারা তা অস্বীকার করেছে, কাজেই এখন তারা সংশয়ের মধ্যে পড়ে আছে।

أَفَلَمْ يَنْظُرُوا إِلَى السَّمَاءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوجٍ (٦)

৬. তারা কি তাদের উপরে অবস্থিত আকাশের দিকে তাকায় না, কীভাবে আমি তাকে বানিয়েছি, তাকে সুশোভিত করেছি আর তাতে নেই কোন ফাটল?

وَالْأَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَأَلْقَيْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ وَأَنْۢبَتْنَا فِيهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ بَهِيجٍ ۙ (٧)

৭. আর পৃথিবী– তাকে করেছি বিস্তৃত আর তাতে সংস্থাপিত করেছি পর্বতরাজি আর তাতে উদ্গত করেছি যাবতীয় সুদৃশ্য উদ্ভিদরাজি।

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيبٍ (٨)

৮. প্রতিটি (আল্লাহ) অভিমুখী বান্দাহর জন্য চক্ষু উন্মোচনকারী ও উপদেশ হিসেবে।

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَاءِ مَاءً مُّبٰرَكًا فَأَنْۢبَتْنَا بِهِ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيدِ ۙ (٩)

৯. আমি আকাশ থেকে বর্ষণ করি কল্যাণকর বৃষ্টি আর তা দিয়ে সৃষ্টি করি বাগান আর মাড়াইযোগ্য শস্যদানা,

وَالنَّخْلَ بَاسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيدٌ ۙ (١٠)

১০. আর উঁচু খেজুর গাছ যাতে আছে খেজুর গুচ্ছ স্তরে স্তরে সাজানো।

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَأَحْيَيْنَا بِهِ بَلْدَةً مَّيْتًا ۗ كَذٰلِكَ الْخُرُوجُ (١١)

১১. বান্দাহদের রিয্ক হিসেবে। আর আমি পানি দিয়ে জীবন্ত করে তুলি মৃত যমীনকে। এভাবেই বের করা হবে (ক্বরর থেকে মানুষদের)।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَّأَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُودُ ۙ (١٢)

১২. এদের আগে সত্যকে মেনে নিতে অস্বীকার করেছিল নূহের জাতি, রাস্‌স ও সামুদ জাতি,

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَإِخْوَانُ لُوطٍ ۙ (١٣)

১৩. 'আদ, ফেরাউন ও লূত জাতি,

وَّأَصْحٰبُ الْأَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۗ كُلٌّ

১৪. আইকাবাসী ও তুব্বার জাতি। তারা সকলেই রসূলদেরকে মিথ্যা বলে অস্বীকার করেছিল, ফলে

كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ (١٤)

তাদের উপর আমার শাস্তি অবধারিত হয়েছিল।

أَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ط بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ع (١٥)

১৫. আমরা কি প্রথমবার সৃষ্টি করে ক্লান্ত হয়ে পড়েছি? বস্তুতঃ তারা নতুন সৃষ্টি বিষয়ে সন্দেহে পড়ে আছে।

وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ بِهٖ نَفْسُهٗ ج صلے وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ حَبْلِ الْوَرِيْدِ (١٦)

১৬. আমিই মানুষকে সৃষ্টি করেছি, আর তার প্রবৃত্তি তাকে (নিত্য নতুন) কী কুমন্ত্রণা দেয় তাও আমি জানি। আমি তার গলার শিরা থেকেও নিকটবর্তী।

إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ (١٧)

১৭. (তদুপরি) দু'জন লেখক ডানে ও বামে বসে (মানুষের 'আমাল) লিখছে।

مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ (١٨)

১৮. যে কথাই মানুষ উচ্চারণ করে (তা সংরক্ষণের জন্য) তার নিকটে একজন সদা তৎপর প্রহরী আছে।

وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ (١٩)

১৯. মৃত্যুর যন্ত্রণা প্রকৃতই আসবে যাথেকে অব্যাহতি পাওয়ার জন্য তুমি চেষ্টা করতে।

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ط ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ (٢٠)

২০. অতঃপর সিঙ্গায় ফুঁক দেয়া হবে। সেটাই হল শাস্তি র দিন (যে সম্পর্কে মানুষকে সতর্ক করা হয়েছিল)।

وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ (٢١)

২১. (সেদিন) প্রত্যেক ব্যক্তি আসবে এমন অবস্থায় যে একজন (ফেরেশতা) তাকে হাঁকিয়ে নিয়ে আসবে আর একজন (ফেরেশতা) থাকবে সাক্ষ্যদাতা হিসেবে।

لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ (٢٢)

২২. (বলা হবে) 'এ দিন সম্পর্কে তুমি ছিলে উদাসীন। তোমার সামনে যে পর্দা ছিল তা আমি সরিয়ে দিয়েছি। (সে কারণে) তোমার দৃষ্টি আজ খুব তীক্ষ্ম।

وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ط (٢٣)

২৩. তার সঙ্গী (ফেরেশতা) বলবে 'এই যে আমার কাছে ('আমালনামা) প্রস্তুত।'

أَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ لا (٢٤)

২৪. (নির্দেশ দেয়া হবে) তোমরা উভয়ে প্রত্যেক অবাধ্য কাফিরকে নিক্ষেপ কর জাহান্নামে।

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ لا (٢٥)

২৫. (যারা ছিল) কল্যাণের প্রতিবন্ধক, সীমালঙ্ঘনকারী ও সন্দিগ্ধ চিত্ত।

الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَأَلْقِيَاهُ فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ (٢٦)

২৬. যে আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্যকে ইলাহ্ বানিয়ে নিয়েছিল। কাজেই তোমরা উভয়ে তাকে কঠিন 'আযাবে নিক্ষেপ কর।

قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ أَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ كَانَ فِيْ ضَلَالٍ بَعِيْدٍ (٢٧)

২৭. তার সঙ্গী বলবে, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমি তাকে বিদ্রোহী বানাইনি বরং সে নিজেই ছিল সুদূর গুমরাহীর মধ্যে।'

قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ (٢٨)

২৮. আল্লাহ বলবেন, 'আমার সামনে বাদানুবাদ করো না, আমি আগেই তোমাদেরকে সতর্ক করে দিয়েছিলাম।

مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ أَنَا بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ع (٢٩)

২৯. আমার কথা কক্ষনো বদলে না, আর আমি আমার বান্দাহদের প্রতি যুল্‌মকারীও নই।

يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُوْلُ هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ (٣٠)

৩০. সে দিন আমি জাহান্নামকে জিজ্ঞেস করব, 'তুমি কি পরিপূর্ণ হয়েছ'? সে বলবে, 'আরো বেশি আছে কি?'

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ غَيْرَ بَعِيْدٍ (٣١)

৩১. মুত্তাক্বীদের জন্য জান্নাতকে নিকটে আনা হবে– তা মোটেই দূরে থাকবে না।

هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيْظٍ ج (٣٢)

৩২. (বলা হবে) 'এ হল তাই যার ও'য়াদা তোমাদেরকে দেয়া হয়েছিল– প্রত্যেক আল্লাহ অভিমুখী ও (গুনাহ থেকে) খুব বেশি হিফাযাতকারীর জন্য।

مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ مُّنِيْبٍ لا (٣٣)

৩৩. যে না দেখেই দয়াময় (আল্লাহকে) ভয় করত, আর আল্লাহ্‌র নির্দেশ পালনের জন্য বিনয়ে অবনত অন্তর নিয়ে উপস্থিত হত।

ادْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ ط ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُوْدِ (٣٤)

৩৪. (তাদেরকে বলা হবে) 'শান্তির সঙ্গে এতে প্রবেশ কর, এটা চিরস্থায়ী জীবনের দিন।'

لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ فِيْهَا وَلَدَيْنَا مَزِيْدٌ (٣٥)

৩৫. সেখানে তাদের জন্য তা-ই আছে যা তারা ইচ্ছে করবে, আর আমার কাছে (তাছাড়াও) আরো বেশি আছে।

وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ أَشَدُّ

৩৬. তাদের পূর্বে আমি কত জাতিকে ধ্বংস করে

৩০। আনাস (রাঃ) হতে বর্ণিত যে, নাবী (ﷺ) বলেছেন, জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হলে জাহান্নাম বলবে, আরো আছে কি? শেষে আল্লাহ্ তাঁর পা সেখানে রাখবেন, তখন সে বলবে, আর না, আর না। –বুখারী ৪৮৪৮ [৬৬৬১, ৭৩৮৪; মুসলিম ২৮৪৮, তিরমিযী ৩২৭২, আহমাদ ১১৯৭২, ১২০৩২]

দিয়েছি যারা শক্তিতে ছিল তাদের চেয়ে প্রবল, যার ফলে তারা দুনিয়া চষে বেড়াত; তারা পালানোর কোন জায়গা পেয়েছিল কি?	مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوْا فِي الْبِلَادِ ط هَلْ مِنْ مَّحِيْصٍ (٣٦)
৩৭. এতে অবশ্যই উপদেশ রয়েছে তার জন্য যার আছে (বোধশক্তিসম্পন্ন) অন্তর কিংবা যে খুব মন দিয়ে কথা শুনে।	إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهٗ قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيْدٌ (٣٧)
৩৮. আকাশ, যমীন আর এ দু'য়ের মাঝে যা আছে তা আমি ছ' দিনে সৃষ্টি করেছি; ক্লান্তি আমাকে স্পর্শ করেনি। (আমি সকল মানুষকে বিচারের জন্য হাজির করবই)।	وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ صلے وَّمَا مَسَّنَا مِنْ لُّغُوْبٍ (٣٨)
৩৯. কাজেই তারা (মিথ্যা, উপহাসপূর্ণ ও অপমানজনক কথা) যা বলে তাতে তুমি ধৈর্য ধারণ কর আর সূর্যোদয়ের পূর্বে আর সূর্যাস্তের পূর্বে তোমার প্রতিপালকের মহিমা ও প্রশংসা ঘোষণা কর।	فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوْبِ ج (٣٩)
৪০. আর তাঁর প্রশংসা ঘোষণা কর রাত্রির একাংশে আর নামাযের পরে।	وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُوْدِ (٤٠)
৪১. আর শোন, যেদিন এক ঘোষণাকারী (প্রত্যেক ব্যক্তির) নিকটবর্তী স্থান থেকে ডাক দিবে,	وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ لا (٤١)
৪২. যেদিন সমস্ত মানুষ প্রকৃতই শুনতে পাবে এক (ভয়ংকর) ধ্বনি। সেদিনটি হবে (ভূগর্ভ থেকে	يَّوْمَ يَسْمَعُوْنَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ط ذٰلِكَ يَوْمُ

৩৯। জারীর ইবনু 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একরাতে আমরা নাবী (ﷺ) এর সঙ্গে উপবিষ্ট ছিলাম। তখন তিনি চৌদ্দ তারিখের রাতের চাঁদের দিকে তাকিয়ে বললেন, তোমরা যেমন এ চাঁদটি দেখতে পাচ্ছ, তেমনিভাবে তোমরা তোমাদের রবকে দেখতে পাবে এবং তাঁকে দেখার ব্যাপারে বাধা বিঘ্ন হবে না। তাই তোমাদের সামর্থ্য থাকলে সূর্যোদয়ের আগে এবং সূর্যাস্তের আগের সলাতের ব্যাপারে পরাজিত হবে না। তারপর তিনি পাঠ করলেন, "আপনার রবের প্রশংসা, পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করুন সূর্যোদয় এবং সূর্যাস্তের পূর্বে।" –বুখারী ৪৮৫১ [৫৫৪; মুসলিম ৬৩৩, তিরমিযী ২৫৫১, আবূ দাউদ ৩৭৩৯, ইবনু মাজাহ ১৭৭, আহমাদ ১৮৭০৮, ১৮৭২৩, ১৮৭৬৬]

৪০। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহ্ তা'আলা নাবী (ﷺ) -কে প্রত্যেক সলাতের পর তাঁর পবিত্রতা ঘোষণার আদেশ করেছেন। আল্লাহ্‌র বাণীঃ وَأَدْبَارَ السُّجُوْدِ "এর দ্বারা তিনি এ অর্থ করেছেন।" –বুখারী ৪৮৫২

الْخُرُوْجِ (٤٢)

সকল আত্মার) বের হওয়ার দিন।

إِنَّا نَحْنُ نُحْيِيْ وَنُمِيْتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيْرُ ﻻ (٤٣)

৪৩. আমিই জীবন দেই, আমিই মৃত্যু দেই, আর আমার কাছেই (সব্বাইকে) ফিরে আসতে হবে।

يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا ط ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيْرٌ (٤٤)

৪৪. যেদিন পৃথিবী দীর্ণ বিদীর্ণ হবে, আর মানুষ ছুটে যাবে (হাশরের পানে)। এই একত্রীকরণ আমার জন্য খুবই সহজ।

نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ وَمَآ أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ قف فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ يَّخَافُ وَعِيْدِ ع (٤٥)

৪৫. তারা (তোমার বিরুদ্ধে) যা বলে তা আমি ভাল করেই জানি, তুমি তাদের উপর জবরদস্তি কারী নও। কাজেই যে আমার শাস্তির ভয়প্রদর্শনকে ভয় করে, তাকে তুমি কুরআনের সাহায্যে উপদেশ দাও।

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ

৫১. সূরাহ আয্‌-যা-রিয়া-ত

আয়াতঃ ৬০, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ﻻ (١)

১. শপথ সেই বাতাসের যা ধূলাবালি উড়ায়,

فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ﻻ (٢)

২. আর যা উঠিয়ে নেয় আর বহন করে ভারী বোঝা,

فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ﻻ (٣)

৩. আর যা ধীর ও শান্ত গতিতে বয়ে চলে

فَالْمُقَسِّمٰتِ أَمْرًا ﻻ (٤)

৪. আর যারা কর্ম বণ্টন করে,

إِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ﻻ (٥)

৫. তোমাদেরকে যার ও'য়াদা দেয়া হয়েছে তা অবশ্যই সত্য।

وَّإِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ط (٦)

৬. কর্মফল দিবস অবশ্যই আসবে।

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ﻻ (٧)

৭.। বহু পথ বিশিষ্ট আকাশের শপথ।

إِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ﻻ (٨)

৮. (পরকাল সম্পর্কে) তোমরা অবশ্যই রয়েছ মতভেদের মধ্যে।

৯. যারা সেই (সত্য) মানতে ভুল করে তারাই গুমরাহ।	يُؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ أُفِكَ ط (٩)
১০. অনুমানকারীরা ধ্বংস হোক,	قُتِلَ الْخَرَّصُوْنَ لا (١٠)
১১. যারা অজ্ঞতা ও উদাসীনতার মধ্যে রয়েছে।	الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ لا (١١)
১২. তারা জিজ্ঞেস করে- 'প্রতিফল দিবস কবে হবে?'	يَسْأَلُوْنَ أَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ط (١٢)
১৩. (তা হবে সেদিন) যেদিন তাদেরকে আগুনে শাস্তি দেয়া হবে।	يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ (١٣)
১৪. (তাদেরকে বলা হবে) তোমরা তোমাদের (কৃতকর্মের) শাস্তি ভোগ কর, এটা হচ্ছে তাই যার জন্য তোমরা তাড়াহুড়া করছিলে।	ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ط هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ (١٤)
১৫. মুত্তাকীরা থাকবে জান্নাত আর ঝর্ণাধারার মাঝে।	إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ لا (١٥)
১৬. তাদের প্রতিপালক যা তাদেরকে দিবেন তা তারা ভোগ করবে, কারণ তারা পূর্বে (দুনিয়ার জীবনে) ছিল সৎকর্মশীল,	اٰخِذِيْنَ مَا اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ط (١٦)
১৭. তারা রাত্রিকালে খুব কমই শয়ন করত।	كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ اللَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ (١٧)
১৮. আর তারা রাত্রির শেষ প্রহরে ক্ষমা প্রার্থনা করত।	وَبِالْأَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ (١٨)
১৯. এবং তাদের ধন-মালে আছে যাঞ্চাকারী ও বঞ্চিতদের অধিকার (যা তারা আদায় করত)।	وَفِيْٓ أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ (١٩)
২০. নিশ্চিত বিশ্বাসীদের জন্য পৃথিবীতে আছে নিদর্শন,	وَفِي الْأَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ لا (٢٠)

১৮। আবূ হুরাইরাহ্ (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেনঃ মহামহিম আল্লাহ্ তা'আলা প্রতি রাতে রাতের শেষ তৃতীয়াংশ অবশিষ্ট থাকাকালে পৃথিবীর নিকটবর্তী আসমানে অবতরণ করে ঘোষণা করতে থাকেনঃ কে আছে এমন, যে আমাকে ডাকবে? আমি তার ডাকে সাড়া দিব। কে আছে এমন যে, আমার নিকট চাইবে? আমি তাকে তা দিব। কে আছে এমন আমার নিকট ক্ষমা চাইবে? আমি তাকে ক্ষমা করব। −বুখারী ১১৪৫ [৬৩২১, ৭৪৯৪, মুসলিম ৭৫৮, তিরমিযী ৭৪৬, ৩৪৯৮; আবূ দাউদ ৩১৫, ৪৭৩৩; ইবনু মাজাহ ১৩৬৬, আহমাদ ৭৪৫৭, ৭৫৩৮; মুওয়াত্তা ৪৯৬, দারিমী ১৪৭৮, ১৪৭৯]

وَفِيْٓ أَنْفُسِكُمْ ؕ أَفَلَا تُبْصِرُوْنَ (٢١)

২১. আর (নিদর্শন আছে) তোমাদের মাঝেও, তোমরা কি দেখ না?

وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ (٢٢)

২২. এবং আকাশে আছে তোমাদের রিয্ক আর আছে যার ও'য়াদা তোমাদেরকে দেয়া হয়েছে।

فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ إِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ مَآ أَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ع (٢٣)

২৩. আকাশ ও যমীনের প্রতিপালকের শপথ! এ সব অবশ্যই সত্য, এমনই দৃঢ় সত্য যেমন তোমরা (যে কথাবার্তা) বলে থাক (সেই কথাবার্তা বলার ব্যাপারটা যেমন নিঃসন্দেহে সত্য)।

هَلْ أَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ إِبْرٰهِيْمَ الْمُكْرَمِيْنَ ۘ (٢٤)

২৪. তোমার কাছে ইব্রাহীমের সম্মানিত মেহমানদের খবর পৌঁছেছে কি?

إِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ج قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ (٢٥)

২৫. যখন তারা তার সামনে উপস্থিত হল তখন বলল, 'সালাম'। সে উত্তর দিল- 'সালাম'। (ইব্রাহীম মনে মনে ভাবল এদেরকে তো দেখছি) অপরিচিত লোক।

فَرَاغَ إِلٰٓى أَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۙ (٢٦)

২৬. তখন সে তাড়াতাড়ি তার ঘরের লোকেদের নিকট চলে গেল এবং একটি মোটাতাজা (ভাজা) বাছুর নিয়ে আসল।

فَقَرَّبَهٗٓ إِلَيْهِمْ قَالَ أَلَا تَأْكُلُوْنَ ز (٢٧)

২৭. অতঃপর সেটিকে তাদের সামনে রেখে দিল এবং বলল- 'তোমরা খাচ্ছ না কেন?'

فَأَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ (٢٨)

২৮. (যখন তারা খেল না) তখন সে তাদের ব্যাপারে মনে ভয় পেয়ে গেল। তারা বলল- 'তুমি ভয় পেও না', অতঃপর তারা তাকে এক জ্ঞানবান পুত্রের সুসংবাদ দিল।

فَأَقْبَلَتِ امْرَأَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ (٢٩)

২৯. তখন তার স্ত্রী চিৎকার করতে করতে এগিয়ে আসল। সে নিজের কপালে আঘাত করে বলল '(আমি) এক বৃদ্ধা, বন্ধ্যা' (আমার কীভাবে সন্তান হবে?)

قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ إِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ الْعَلِيْمُ (٣٠)

৩০. তারা বলল- "তোমার প্রতিপালক এ রকমই বলেছেন, তিনি মহা প্রজ্ঞাময়, সর্বজ্ঞ।

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ أَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ (٣١)

৩১. ইব্‌রাহীম বলল- 'ওহে আল্লাহ্‌র দূতগণ (ফেরেশতারা)! তোমাদের কাজ কী (এখন)?'

قَالُوْآ إِنَّآ أُرْسِلْنَآ إِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۙ (٣٢)

৩২. তারা বলল- 'আমাদেরকে এক অপরাধী জাতির কাছে পাঠানো হয়েছে।

لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ۙ (٣٣)

৩৩. যেন তাদের উপর মাটির পাথর বর্ষণ করি

مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ (٣٤)

৩৪. যা তোমার প্রতিপালকের নিকট চিহ্নিত হয়ে আছে সীমালঙ্ঘনকারীদের জন্য।

فَأَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ (٣٥)

৩৫. সেখানে যারা মু'মিন ছিল আমি তাদেরকে বের করে এনেছিলাম,

فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۚ (٣٦)

৩৬. আমি সেখানে মুসলিমদের একটি পরিবার ছাড়া আর পাইনি।

وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ الْعَذَابَ الْأَلِيْمَ ؕ (٣٧)

৩৭. আর তাদের জন্য সেখানে একটা নিদর্শন রেখে দিলাম যারা অত্যন্ত পীড়াদায়ক 'আযাবের ভয় করে।

وَفِيْ مُوْسٰى إِذْ أَرْسَلْنٰهُ إِلٰى فِرْعَوْنَ بِسُلْطَانٍ مُّبِيْنٍ (٣٨)

৩৮. আর মূসার ঘটনাতেও (নিদর্শন আছে) যখন আমি তাকে স্পষ্ট প্রমাণসহ ফেরাউনের কাছে পাঠিয়েছিলাম,

فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُوْنٌ (٣٩)

৩৯. তখন সে তার ক্ষমতার দাপটে মুখ ফিরিয়ে নিল আর বলল- 'এ লোক একটা যাদুকর না হয় পাগল।'

فَأَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ وَهُوَ مُلِيْمٌ ؕ (٤٠)

৪০. শেষে আমি তাকে আর তার সৈন্য সামন্তকে পাকড়াও করলাম আর তাদেরকে সমুদ্রে নিক্ষেপ করলাম। সে ছিল ধিকৃত নিন্দিত।

وَفِيْ عَادٍ إِذْ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الرِّيْحَ الْعَقِيْمَ ۚ (٤١)

৪১. আর 'আদ-এর ঘটনাতেও (নিদর্শন আছে)। আমি তাদের কাছে পাঠিয়েছিলাম অকল্যাণের বাতাস।

مَا تَذَرُ مِنْ شَيْءٍ أَتَتْ عَلَيْهِ إِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِيْمِ ؕ (٤٢)

৪২. তা যা কিছুর উপর দিয়ে বয়ে গিয়েছিল তাকে চূর্ণ-বিচূর্ণ ও ধ্বংসস্তুপে পরিণত না করে ছাড়েনি।

وَفِيْ ثَمُوْدَ إِذْ قِيْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰى حِيْنٍ (٤٣)

৪৩. আর সামূদের ঘটনাতেও (নিদর্শন আছে) যখন তাদেরকে বলা হয়েছিল, 'একটা নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত ভোগ করে নও।'

Contents

فَعَتَوْا عَنْ أَمْرِ رَبِّهِمْ فَأَخَذَتْهُمُ الصَّاعِقَةُ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ (٤٤)

৪৪. কিন্তু তারা ধৃষ্টতার সঙ্গে তাদের প্রতিপালকের আদেশ অমান্য করল। ফলে বজ্রাঘাত তাদেরকে পাকড়াও করল যা তারা চেয়ে চেয়ে দেখছিল।

فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِيَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِيْنَ لا (٤٥)

৪৫. তারা (পায়ের ভরে) উঠে দাঁড়াতেও পারল না আর আত্মরক্ষা করতেও পারল না।

وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ط إِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ع (٤٦)

৪৬. ইতোপূর্বে আমি নূহের জাতিকে ধ্বংস করেছিলাম, তারা ছিল এক পাপাচারী জাতি।

وَالسَّمَآءَ بَنَيْنٰهَا بِأَيْدٍ وَّإِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ (٤٧)

৪৭. আমি নিজ হাত দ্বারা আসমান সৃষ্টি করেছি আর আমি অবশ্যই মহা প্রশস্তকারী।

وَالْأَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ (٤٨)

৪৮. আর যমীন– তাকে আমিই বিছিয়েছি, আমি কতই না সুন্দর (সমতল) প্রসারণকারী!

وَمِنْ كُلِّ شَيْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَيْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ (٤٩)

৪৯. আমি প্রত্যেকটি বস্তু সৃষ্টি করেছি জোড়ায় জোড়ায়, যাতে তোমরা শিক্ষা গ্রহণ কর।

فَفِرُّوْٓا إِلَى اللهِ ط إِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ج (٥٠)

৫০. অতএব দৌড়াও আল্লাহর দিকে, আমি তোমাদের জন্য তাঁর পক্ষ হতে স্পষ্ট সতর্ককারী।

وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللهِ إِلٰهًا اٰخَرَ ط إِنِّيْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (٥١)

৫১. তোমরা আল্লাহ্র সঙ্গে কোন ইলাহ্ স্থির করো না, আমি তাঁর পক্ষ থেকে তোমাদের জন্য স্পষ্ট সতর্ককারী।

كَذٰلِكَ مَآ أَتَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ إِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ أَوْ مَجْنُوْنٌ قف (٥٢)

৫২. এভাবে যখনই তাদের আগের লোকেদের মধ্যে কোন রসূল এসেছে, তখনই তারা বলেছে- 'সে যাদুকর না হয় উন্মাদ।'

أَتَوَاصَوْا بِهٖ ج بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ج (٥٣)

৫৩. তারা কি বংশ পরম্পরায় এরই অসিয়ত (অর্থাৎ অন্তিম সবক) দিয়ে আসছে, বরং তারা সীমালঙ্ঘনকারী জাতি।

فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ أَنْتَ بِمَلُوْمٍ ز (٥٤)

৫৪. কাজেই তুমি তাদের দিক থেকে মুখ ফিরিয়ে লও, তার জন্য তুমি তিরস্কৃত হবে না।

وَّذَكِّرْ فَإِنَّ الذِّكْرٰى تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِيْنَ (٥٥)

৫৫. আর তুমি উপদেশ দিতে থাক, কেননা উপদেশ মু'মিনদের উপকার করবে।

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ (٥٦)

৫৬. আমি জিন্ন ও মানবকে সৃষ্টি করেছি একমাত্র এ কারণে যে, তারা আমারই 'ইবাদাত করবে।।

مَآ أُرِيْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ أُرِيْدُ أَنْ يُّطْعِمُوْنِ (٥٧)

৫৭. আমি তাদের থেকে রিয্‌ক চাই না, আর আমি এও চাই না যে, তারা আমাকে খাওয়াবে।

إِنَّ اللهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ (٥٨)

৫৮. আল্লাহ্‌ই তো রিয্‌কদাতা, মহা শক্তিধর, প্রবল পরাক্রান্ত।

فَإِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ أَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ (٥٩)

৫৯. কাজেই যারা যুল্‌ম করেছে তাদের প্রাপ্য তাই যে প্রাপ্য পূর্বে ছিল তাদের মত লোকেদের; কাজেই (নিজেদের প্রাপ্য পাওয়ার জন্য) তারা যেন তাড়াহুড়া না করে।

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ع (٦٠)

৬০. কাফিরদের জন্য ধ্বংস (নেবে আসবে) তাদের সেদিনের যেদিনের ভয় তাদেরকে দেখানো হয়েছে।

سُوْرَةُ الطُّوْرِ

৫২. সূরাহ আত্‌-তূর

আয়াতঃ ৪৯, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالطُّوْرِ ۙ (١)

১. শপথ তূর (পর্বত) এর,

وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۙ (٢)

২. শপথ কিতাবের যা লিখিত

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۙ (٣)

৩. খোলা পৃষ্ঠায়,

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۙ (٤)

৪. শপথ বেশি বেশি আবাদকৃত ঘরের,

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۙ (٥)

৫. শপথ সুউচ্চ ছাদের,

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۙ (٦)

৬. শপথ তরঙ্গায়িত সমুদ্রের,

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۙ (٧)

৭. তোমার প্রতিপালকের 'আযাব অবশ্যই সংঘটিত হবে।

مَّا لَهُ مِنْ دَافِعٍ ۙ (٨)

৮. তার প্রতিরোধকারী কেউ নেই।

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۙ (٩)

৯. যেদিন আকাশ প্রচণ্ডভাবে কাঁপবে,

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ط (١٠)

১০. আর পর্বত হবে দ্রুত চলমান,

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ (١١)

১১. ধ্বংস সেদিন সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۘ (١٢)

১২. যারা নিরর্থক কথার খেলায় মগ্ন আছে।

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ إِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ط (١٣)

১৩. যেদিন তাদেরকে জাহান্নামের আগুনের দিকে তাড়িয়ে নেয়া হবে ধাক্কাতে ধাক্কাতে,

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ (١٤)

১৪. (বলা হবে) এটা হল জাহান্নামের সেই আগুন তোমরা যাকে মিথ্যে জানতে।

أَفَسِحْرٌ هٰذَآ أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ (١٥)

১৫. এটা কি যাদু, নাকি তোমরা দেখতে পাচ্ছ না?

إِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْٓا أَوْ لَا تَصْبِرُوْا ج سَوَآءٌ عَلَيْكُمْ ط إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (١٦)

১৬. এখন এর ভিতর জ্বলতে থাক, অতঃপর ধৈর্য ধর কিংবা ধৈর্য না ধর, তোমাদের জন্য দুই-ই সমান। তোমাদেরকে সেই প্রতিফলই দেয়া হবে যা তোমরা 'আমাল করতে।

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۙ (١٧)

১৭. মুত্তাক্বীরা থাকবে জান্নাতে আর নি'মাত সম্ভারের মাঝে,

فَاكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ج وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ (١٨)

১৮. তারা ভোগ করবে তাদের প্রতিপালক যা তাদেরকে দিবেন, আর তাদের প্রতিপালক তাদেরকে জাহান্নামের 'আযাব থেকে রক্ষা করবেন।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢبِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۙ (١٩)

১৯. (তাদেরকে বলা হবে) খাও আর পান কর খুব মজা করে– তোমরা যে 'আমাল করতে তার প্রতিফল হিসেবে।

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ج وَزَوَّجْنٰهُمْ بِحُوْرٍ عِيْنٍ (٢٠)

২০. তারা সারিবদ্ধভাবে সাজানো আসনে হেলান দিয়ে বসবে, আর আমি তাদের বিয়ে দিয়ে দেব সুন্দর বড় বড় উজ্জ্বল চক্ষু বিশিষ্টা কুমারীদের সঙ্গে।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ بِإِيْمَانٍ

২১. যারা ঈমান আনে আর তাদের সন্তান সন্ততিরা ঈমানের সাথে পিতামাতাকে অনুসরণ করে, আমি

أَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ أَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ ؕ كُلُّ امْرِئٍۭ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ (٢١)

তাদের সাথে তাদের সন্তান সন্ততিকে মিলিত করব। তাদের 'আমালের কোন কিছু থেকেই আমি তাদেরকে বঞ্চিত করব না। প্রত্যেক ব্যক্তিই নিজ কৃতকর্মের জন্য দায়বদ্ধ।

وَأَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ (٢٢)

২২. আমি তাদেরকে দিব ফলমূল আর গোশত যা তারা পছন্দ করবে।

يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَأْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا وَلَا تَأْثِيْمٌ (٢٣)

২৩. তারা সেখানে পরস্পরের মধ্যে বিনিময় করবে পানপাত্র, থাকবে না সেখানে কোন বেহুদা বকবকানি, থাকবে না কোন পাপের কাজ।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَأَنَّهُمْ لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ (٢٤)

২৪. তাদের চতুর্দিকে ঘুর ঘুর ক'রে তাদের সেবায় নিয়োজিত থাকবে কিশোরেরা (যারা এতই সুন্দর) যেন সযত্নে লুকিয়ে রাখা মণিমুক্তা।

وَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ (٢٥)

২৫. তারা পরস্পরের নিকট এগিয়ে গিয়ে একে অপরকে জিজ্ঞেস করবে,

قَالُوْٓا إِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِيْٓ أَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ (٢٦)

২৬. তারা বলবে, 'পূর্বে আমরা আমাদের পরিবারে (দুনিয়াবী নানা কারণে ও আখিরাতের 'আযাবের আশংকায়) ভয় ভীতির মধ্যে ছিলাম।

فَمَنَّ اللهُ عَلَيْنَا وَوَقٰنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ (٢٧)

২৭. অবশেষে আল্লাহ আমাদের প্রতি অনুগ্রহ করেছেন আর আমাদেরকে ঝলসে দেয়া বাতাসের 'আযাব থেকে রক্ষা করেছেন।

إِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ إِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ الرَّحِيْمُ ع (٢٨)

২৮. পূর্বে আমরা তাঁর কাছেই দু'আ করতাম, তিনি অতি অনুগ্রহকারী, পরম দয়াবান।

فَذَكِّرْ فَمَآ أَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ وَّلَا مَجْنُوْنٍ ؕ (٢٩)

২৯. কাজেই তুমি উপদেশ দিতে থাক, তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহে তুমি গণকও নও, আর পাগলও নও।

أَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ الْمَنُوْنِ (٣٠)

৩০. তারা কি বলে সে একজন কবি, যার জন্য আমরা কালচক্রের (বিপদাপদের) অপেক্ষা করছি।

قُلْ تَرَبَّصُوْا فَإِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ

৩১. ওদেরকে বল- তোমরা অপেক্ষা কর, আমিও তোমাদের সঙ্গে অপেক্ষা করছি। (অতঃপর উভয়

الْمُتَرَبِّصِيْنَ ط (٣١)

পক্ষই দেখতে পাবে কার কী পরিণতি হয়)।

أَمْ تَأْمُرُهُمْ أَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ أَمْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ج (٣٢)

৩২. তাদের বুদ্ধি বিবেক কি তাদেরকে এ নির্দেশ দেয়, নাকি তারা মূলতঃই এক সীমালঙ্ঘনকারী জাতি?

أَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ج بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ج (٣٣)

৩৩. তারা কি বলে- 'সে নিজেই (কুরআন) রচনা করে নিয়েছে? আসলে তারা ঈমানই আনেনি।

فَلْيَأْتُوْا بِحَدِيْثٍ مِّثْلِهٖٓ إِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ ط (٣٤)

৩৪. তারা সত্যবাদী হলে এ রকম একটা কালাম তারা নিয়ে আসুক না কেন।

أَمْ خُلِقُوْا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخٰلِقُوْنَ ط (٣٥)

৩৫. তারা কি সৃষ্টি হয়েছে, নাকি তারা নিজেরাই সৃষ্টিকর্তা?

أَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ ج بَلْ لَّا يُوْقِنُوْنَ ط (٣٦)

৩৬. নাকি তারা আসমান ও যমীন সৃষ্টি করেছে? আসলে তারা নিশ্চিত বিশ্বাসী নয়।

أَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ الْمُصَيْطِرُوْنَ ط (٣٧)

৩৭. নাকি তোমার প্রতিপালকের ধনভাণ্ডারগুলো তাদের হাতে, না তারা এর নিয়ন্ত্রক?

أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَّسْتَمِعُوْنَ فِيْهِ ج فَلْيَأْتِ مُسْتَمِعُهُمْ بِسُلْطَانٍ مُّبِيْنٍ ط (٣٨)

৩৮. নাকি তাদের কাছে, সিঁড়ি আছে যাতে তারা (আকাশে উঠে যায় আর গোপন কথা) শুনে থাকে? থাকলে তাদের (সেই) শ্রোতা স্পষ্ট প্রমাণ হাজির করুক।

أَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُوْنَ ط (٣٩)

৩৯. নাকি আল্লাহ্র জন্য কন্যা সন্তান, আর তোমাদের জন্য পুত্র সন্তান?

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ط (٤٠)

৪০. নাকি তুমি তাদের কাছে পারিশ্রমিক চাচ্ছ, যার ফলে তারা ঋণে ভারাক্রান্ত হয়ে পড়ছে?

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ط (٤١)

৪১. নাকি তাদের কাছে অদৃশ্যের জ্ঞান আছে, আর তারা তা লিখছে?

أَمْ يُرِيْدُوْنَ كَيْدًا ط فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا هُمُ الْمَكِيْدُوْنَ ط (٤٢)

৪২. নাকি তারা (তোমার বিরুদ্ধে) চক্রান্ত করতে চায়? তাহলে কিন্তু কাফিররাই চক্রান্তের ফাঁদে আটকা পড়বে।

أَمْ لَهُمْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللهِ ط سُبْحَانَ اللهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٤٣)

৪৩. নাকি আল্লাহ ছাড়া তাদের জন্য ইলাহ্ আছে? তারা যাকে শরীক গণ্য করে আল্লাহ্ তা থেকে পবিত্র।

وَإِنْ يَّرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا يَّقُوْلُوْا سَحَابٌ مَّرْكُوْمٌ (٤٤)

৪৪. আকাশের কোন খণ্ড ভেঙ্গে পড়তে দেখলে তারা বলত- 'এটা তো পুঞ্জীভূত মেঘ। (তাদেরকে আল্লাহ্র যতই বিস্ময়কর নিদর্শন দেখানো হোক না কেন, তারা ঈমান আনবে না।)

فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ فِيْهِ يُصْعَقُوْنَ لا (٤٥)

৪৫. কাজেই তাদেরকে উপেক্ষা কর যতক্ষণ না তারা সাক্ষাৎ করে তাদের সেদিনের যেদিন তারা হবে বজ্রাহত।

يَوْمَ لَا يُغْنِيْ عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا وَّلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ط (٤٦)

৪৬. সেদিন তাদের ষড়যন্ত্র তাদের কোন কাজে আসবে না, আর তারা সাহায্যপ্রাপ্তও হবে না।

وَإِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا عَذَابًا دُوْنَ ذٰلِكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (٤٧)

৪৭. যালিমদের জন্য এছাড়া আরো 'আযাব রয়েছে, কিন্তু তাদের অধিকাংশই জানে না।

وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ حِيْنَ تَقُوْمُ لا (٤٨)

৪৮. তুমি ধৈর্য ধরে তোমার প্রতিপালকের হুকুমের অপেক্ষায় থাক, কারণ তুমি আমার চোখের সামনেই আছ। আর তুমি তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা ঘোষণা কর যখন তুমি উঠ (মাজলিস শেষে, অথবা বিছানা ছেড়ে কিংবা নামাযের জন্য)।

وَمِنَ اللَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُوْمِ ع (٤٩)

৪৯. আর রাত্রিকালে তাঁর প্রশংসা ও মহিমা ঘোষণা কর আর (রাতের শেষভাগে যখন) তারকারাজি অস্তমিত হয়ে যায়।

৫৩. সূরাহ আন্-নাজ্ম*

سُوْرَةُ النَّجْمِ

আয়াতঃ ৬২, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. শপথ তারকার যখন তা অস্ত যায়,

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى لا (١)

২. তোমাদের (মাঝে ছোট থেকে বড় হয়েছে সেই) সঙ্গী গুমরাহ্ও নয় আর ভুলপথে পরিচালিতও নয়,

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ج (٢)

৩. আর সে মনগড়া কথাও বলে না।

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ط ج (٣)

৪. তাতো ওয়াহী যা তার প্রতি প্রত্যাদেশ করা হয়,

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى لا (٤)

৫. তাকে শিক্ষা দেয় শক্তিশালী,

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى لا (٥)

৬. প্রজ্ঞার অধিকারী (জিবরাঈল) সে নিজ আকৃতিতে স্থির হয়ে ছিল,

ذُوْ مِرَّةٍ ط فَاسْتَوٰى لا (٦)

৭. আর সে ছিল ঊর্ধ্ব দিগন্তে,

وَهُوَ بِالْأُفُقِ الْأَعْلٰى ط (٧)

৮. অতঃপর সে (নবীর) নিকটবর্তী হল, অতঃপর আসলো আরো নিকটে,

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى لا (٨)

৯. ফলে [নবী (ﷺ) ও জিবরাঈলের মাঝে] দুই ধনুকের ব্যবধান রইল অথবা আরো কম।

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى ج (٩)

---

* মাসরূক (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি 'আয়িশাহ (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করলাম, আম্মা! মুহাম্মাদ (ﷺ) কি তাঁর রবকে দেখেছিলেন। তিনি বললেন, তোমার কথায় আমার গায়ের পশম কাঁটা দিয়ে খাড়া হয়ে গেছে। তিনটি কথা সম্পর্কে তুমি কি জান না যে তোমাকে এ তিনটি কথা বলবে সে মিথ্যা বলবে। যদি কেউ তোমাকে বলে যে, মুহাম্মাদ (ﷺ) তাঁর প্রতিপালককে দেখেছেন, তাহলে সে মিথ্যাচারী। তারপর তিনি পাঠ করলেন, তিনি দৃষ্টিশক্তির অধিগম্য নন কিন্তু দৃষ্টিশক্তি তাঁর অধিগত; এবং তিনিই সূক্ষ্মদর্শী, সম্যক পরিজ্ঞাত" "মানুষের এমন মর্যাদা নেই যে, আল্লাহ্ তাঁর সঙ্গে কথা বলবেন, ওয়াহীর মাধ্যম ব্যতীত অথবা পর্দার আড়াল ছাড়া"। আর যে ব্যক্তি তোমাকে বলবে যে, আগামীকাল কী হবে সে তা জানে, তাহলে সে মিথ্যাচারী। তারপর তিনি তিলাওয়াত করলেন, "কেউ জানে না আগামীকাল সে কী অর্জন করবে।" এবং তোমাকে যে বলবে, মুহাম্মাদ (ﷺ) কোন কথা গোপন রেখেছেন, তাহলেও সে মিথ্যাচারী। এরপর তিনি পাঠ করলেন, "হে রসূল! তোমার প্রতিপালকের নিকট হতে তোমার প্রতি যা অবতীর্ণ হয়েছে, তা প্রচার কর। হ্যাঁ, তবে রসূল জিব্রীল ('আ.)-কে তাঁর নিজস্ব আকৃতিতে দু'বার দেখেছেন। –বুখারী ৪৮৫৫ [৩২৩৪; মুসলিম ১৭৭, তিরমিযী ৩০৬৮, ৩২৭৮]

৯-১০। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ أَوْ أَدْنٰى فَأَوْحٰى إِلٰى عَبْدِهٖ مَا أَوْحٰى আয়াত দু'টোর ব্যাখ্যা সম্পর্কে ইব্নু মাস'উদ (রাঃ) বলেন, রসূল (ﷺ) জিব্রীল ('আ.)-কে দেখেছেন। তাঁর ছয়'শ ডানা ছিল। –বুখারী ৪৮৫৬ [৩২৩২; মুসলিম ১৭৪, তিরমিযী ৩২৭৭, আহমাদ ২৭৩২, ২৭৪০]

فَأَوْحَىٰٓ إِلَىٰ عَبْدِهِۦ مَآ أَوْحَىٰ ط (١٠)

১০. তখন (আল্লাহ) তাঁর বান্দাহ্‌র প্রতি ওয়াহী করলেন যা ওয়াহী করার ছিল।

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَأَىٰ (١١)

১১. (নবীর) অন্তঃকরণ মিথ্যে মনে করেনি যা সে দেখে ছিল।

أَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى (١٢)

১২. সে যা দেখেছে সে বিষয়ে তোমরা কি তার সঙ্গে বিতর্ক করবে?

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى لا (١٣)

১৩. অবশ্যই সে (অর্থাৎ নবী ﷺ) তাকে [অর্থাৎ জিবরাঈল ('আ.)-কে] আরেকবার দেখেছিল

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى (١٤)

১৪. শেষসীমার বরই গাছের কাছে,

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ط (١٥)

১৫. যার কাছে অবস্থিত বসবাসের জান্নাত।

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى لا (١٦)

১৬. যখন গাছটি যা দিয়ে ঢেকে থাকার তা দিয়ে ঢাকা ছিল, (যার বর্ণনা মানুষের বোধগম্য নয়)

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى (١٧)

১৭. (নবীর) দৃষ্টি ভ্রমও ঘটেনি, সীমা ছাড়িয়েও যায়নি।

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى (١٨)

১৮. সে তার প্রতিপালকের বড় বড় নিদর্শন দেখেছিল।

أَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى لا (١٩)

১৯. তোমরা কি লাত ও উয্‌যা সম্পর্কে ভেবে দেখেছ?

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى (٢٠)

২০. আর তৃতীয় আরেকটি মানাৎ সম্পর্কে? (এ সব অক্ষম, বাকশক্তিহীন, নড়া-চড়ার শক্তিহীন মূর্তিগুলোর পূজা করা কতটা যুক্তিযুক্ত)

أَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى (٢١)

২১. কী! তোমাদের জন্য পুত্র সন্তান আর আল্লাহ্‌র জন্য কন্যা সন্তান?

১৮। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। لَقَدْ رَأٰى مِنْ آيَاتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى' আয়াতের ব্যাখ্যায় বলেন, রসূল (ﷺ) সবুজ একটি 'রফরফ' দেখেছিলেন যা পুরো আকাশ জুড়ে রেখেছিল। –বুখারী ৪৮৫৮ [৩২৩৩; মুসলিম ১৭৪, আহমাদ ৩৭৩২, ৩৭৪০]

১৯। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি আল্লাহ্‌র বাণী اَللّٰتَ وَالْعُزّٰى এর ব্যাখ্যায় বলেন, এখানে 'লাত' বলে এ ব্যক্তিকে বোঝানো হয়েছে, যে হাজীদের জন্য ছাতু গুলত। –বুখারী ৪৮৫৯

২০। 'উরওয়াহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি 'আয়িশাহ (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, মুশাল্লাল নামক স্থানে অবস্থিত মানাত দেবীর নামে যারা ইহ্‌রাম বাঁধতো, তারা সাফা ও মারওয়ার মাঝে তাওয়াফ করতো না। তারপর আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন, "সাফা ও মারওয়া আল্লাহ্‌র নিদর্শনসমূহের অন্যতম।" এরপর রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) ও মুসলিমগণ তাওয়াফ করলেন। সুফ্‌য়ান (রহ.) বলেন, 'মানাত' কুদায়দ-এর মুশাল্লাল-এ অবস্থিত ছিল। –বুখারী ৪৮৬১ [১৬৪৩; মুসলিম ১২৭৭, তিরমিযী ২৯৬৫, নাসায়ী ২৯৬৭, ২৯৬৮; আবূ দাউদ ১৯০১, আহমাদ ২৪৫৮৮, ২৪৭৭০, ২৫৩৭৭; মুওয়াত্তা ৮৩৮]

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى (٢٢)

২২. তাহলে এটাতো খুবই অসঙ্গত ভাগ-বাঁটোয়ারা।

إِنْ هِيَ إِلَّآ أَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ أَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ أَنْزَلَ اللهُ بِهَا مِنْ سُلْطَانٍ ط إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ وَمَا تَهْوَى الْأَنْفُسُ ج وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنْ رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ط (٢٣)

২৩: এগুলো তো কেবল কতকগুলো নাম যে নাম তোমরা আর তোমাদের পিতৃ পুরুষরা রেখেছ, এর পক্ষে আল্লাহ কোন প্রমাণ অবতীর্ণ করেননি। তারা তো শুধু অনুমান আর প্রবৃত্তিরই অনুসরণ করে, যদিও তাদের কাছে তাদের প্রতিপালকের পক্ষ থেকে পথ নির্দেশ এসেছে।

أَمْ لِلْإِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى زصلے (٢٤)

২৪. মানুষ কি তাই পায় যা সে চায়? (আল্লাহ যাকে যেভাবে ইচ্ছে সেভাবে দেন ইহকালে আর পরকালে),

فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْأُوْلٰى ع (٢٥)

২৫. কেননা আল্লাহই পরকাল আর ইহকালের মালিক।

وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ شَفَاعَتُهُمْ شَيْئًا إِلَّا مِنْۢ بَعْدِ أَنْ يَّأْذَنَ اللهُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَرْضٰى (٢٦)

২৬. আকাশে কতই না ফেরেশতা আছে তাদের সুপারিশ কোনই কাজে আসবে না, তবে (কাজে আসবে) যদি তিনি অনুমতি দেন যার জন্য আল্লাহ ইচ্ছে করবেন এবং যার প্রতি তিনি সন্তুষ্ট।

إِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ تَسْمِيَةَ الْأُنْثٰى (٢٧)

২৭. যারা আখিরাতে বিশ্বাস করে না তারাই ফেরেশতাদের স্ত্রীবাচক নামে নামকরণ করে থাকে।

وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ط إِنْ يَّتَّبِعُوْنَ إِلَّا الظَّنَّ ج وَإِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْئًا ج (٢٨)

২৮. অথচ এ বিষয়ে তাদের কোনই জ্ঞান নেই, তারা কেবল অনুমানেরই অনুসরণ করছে, আর প্রকৃত সত্যের মুকাবালায় অনুমান কোনই কাজে আসে না।

فَأَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ۥ لا عَنْ ذِكْرِنَا وَلَمْ يُرِدْ إِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا (٢٩)

২৯. কাজেই যে আমার স্মরণ হতে মুখ ফিরিয়ে নেয় আর পার্থিব জীবন ছাড়া (অন্য কিছুই) কামনা করে না, তুমি তাকে এড়িয়ে চল।

ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ط إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى (٣٠)

৩০. তাদের জ্ঞানের দৌড় ঐ পর্যন্তই। তোমার প্রতিপালক খুব ভাল করেই জানেন কে তার পথ থেকে গুমরাহ হয়ে গেছে, আর তিনি ভালই জানেন কে সঠিক পথে আছে।

وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۙ لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ أَسَآءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ الَّذِيْنَ أَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ۚ (٣١)

৩১. যা আছে আকাশে আর যা আছে যমীনে সব আল্লাহ্‌রই- যাতে তিনি যারা মন্দ কাজ করে তাদেরকে তাদের কাজের প্রতিফল দেন আর যারা সৎকর্ম করে তাদেরকে দেন শুভ প্রতিফল।

اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْإِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ إِلَّا اللَّمَمَ ۭ إِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ أَعْلَمُ بِكُمْ إِذْ أَنْشَأَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ وَإِذْ أَنْتُمْ أَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ أُمَّهٰتِكُمْ ۚ فَلَا تُزَكُّوْا أَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ۚ (٣٢)

৩২. যারা বিরত থাকে বড় বড় পাপ আর অশ্লীল কার্যকলাপ থেকে ছোট খাট দোষ-ত্রুটি ছাড়া; বস্ততঃ তোমার প্রতিপালক ক্ষমা করার ব্যাপারে অতি প্রশস্ত। তিনি তোমাদের সম্পর্কে খুব ভালভাবেই জানেন যখন তিনি তোমাদেরকে মাটি থেকে সৃষ্টি করেছেন আর যখন তোমরা তোমাদের মায়েদের পেটে ভ্রূণ অবস্থায় ছিলে। কাজেই নিজেদেরকে খুব পবিত্র মনে করো না। কে তাক্বওয়া অবলম্বন করে তা তিনি ভালভাবেই জানেন।

أَفَرَأَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ۙ (٣٣)

৩৩. তুমি কি তাকে দেখেছ যে (আল্লাহ হতে) মুখ ফিরিয়ে নেয়?

وَأَعْطٰى قَلِيْلًا وَّأَكْدٰى (٣٤)

৩৪. এবং সামান্য দান করে অতঃপর (হৃদয়) শক্ত করে ফেলে?

أَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى (٣٥)

৩৫. তার কি অদৃশ্যের জ্ঞান আছে যার কারণে সে দেখতে পায়?

أَمْ لَمْ يُنَبَّأْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ۙ (٣٦)

৩৬. নাকি মূসার কিতাবের তথ্য তার কাছে পৌঁছানো হয়নি,

وَإِبْرَاهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰى ۙ (٣٧)

৩৭. আর ইব্‌রাহীমের (কিতাবের খবর) যে (ইব্‌রাহীম) ছিল পুরোপুরি দায়িত্ব পালনকারী।

أَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ أُخْرٰى ۙ (٣٨)

৩৮. (সে খবর এই) যে, কোন বোঝা বহনকারী বইবে না অপরের বোঝা।

وَأَنْ لَّيْسَ لِلْإِنْسَانِ إِلَّا مَا سَعٰى ۙ (٣٩)

৩৯. আর এই যে, মানুষ যা পাওয়ার জন্য চেষ্টা করে তাছাড়া কিছুই পায় না,

وَأَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى (٤٠)

৪০. আর এই যে, তার চেষ্টা সাধনার ফল শীঘ্রই তাকে দেখানো হবে,

ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْأَوْفٰى ۙ (٤١)

৪১. অতঃপর তাকে দেয়া হবে পূর্ণ প্রতিফল

وَأَنَّ إِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۙ (٤٢)

৪২. আর এই যে, শেষ গন্তব্য হল তোমার প্রতিপালক পর্যন্ত,

وَأَنَّهُ هُوَ أَضْحَكَ وَأَبْكَىٰ ۙ (٤٣)

৪৩. আর এই যে, তিনিই হাসান, তিনিই কাঁদান।

وَأَنَّهُ هُوَ أَمَاتَ وَأَحْيَا ۙ (٤٤)

৪৪. আর এই যে, তিনিই মারেন, তিনিই বাঁচান।

وَأَنَّهُ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنْثَىٰ ۙ (٤٥)

৪৫. আর এই যে, তিনিই সৃষ্টি করেন জোড়া-পুরুষ আর নারী,

مِنْ نُطْفَةٍ إِذَا تُمْنَىٰ ص (٤٦)

৪৬. এক ফোঁটা শুক্র হতে যখন তা নিক্ষিপ্ত হয়

وَأَنَّ عَلَيْهِ النَّشْأَةَ الْأُخْرَىٰ ۙ (٤٧)

৪৭. আর এই যে, পুনরায় সৃষ্টির দায়িত্বভার তাঁরই উপর,

وَأَنَّهُ هُوَ أَغْنَىٰ وَأَقْنَىٰ ۙ (٤٨)

৪৮. আর এই যে, তিনিই অভাবমুক্ত করেন আর সম্পদ দেন,

وَأَنَّهُ هُوَ رَبُّ الشِّعْرَىٰ ۙ (٤٩)

৪৯. আর এই যে, শি'রা (অর্থাৎ লুব্ধক নক্ষত্র)'র তিনিই প্রতিপালক,

وَأَنَّهُ أَهْلَكَ عَادًا الْأُولَىٰ ۙ (٥٠)

৫০. আর এই যে, তিনিই প্রাচীন 'আদ জাতিকে ধ্বংস করেছিলেন,

وَثَمُودَا فَمَا أَبْقَىٰ ۙ (٥١)

৫১. আর সামূদ জাতিকেও, তাদের একজনকেও বাকী রাখেননি।

وَقَوْمَ نُوحٍ مِنْ قَبْلُ ۖ إِنَّهُمْ كَانُوا هُمْ أَظْلَمَ وَأَطْغَىٰ ۖ (٥٢)

৫২. আর তার পূর্বে নূহের জাতিকেও, তারা ছিল অত্যধিক যালিম ও সীমালঙ্ঘনকারী।

وَالْمُؤْتَفِكَةَ أَهْوَىٰ ۙ (٥٣)

৫৩. তিনি (লূত জাতির) উল্টানো আবাস ভূমিকে উঠিয়ে নিক্ষেপ করেছিলেন,

فَغَشَّاهَا مَا غَشَّىٰ ج (٥٤)

৫৪. অতঃপর তাকে আচ্ছন্ন করল যা তাকে আচ্ছন্ন করেছে।

فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكَ تَتَمَارَىٰ (٥٥)

৫৫। অতএব তুমি তোমার প্রতিপালকের কোন নি'মাতে সন্দেহ পোষণ করবে?

هَٰذَا نَذِيرٌ مِنَ النُّذُرِ الْأُولَىٰ (٥٦)

৫৬. অতীতের সতর্ককারীদের মত এ (নবীও) একজন সতর্ককারী।

أَزِفَتِ الْآزِفَةُ ج (٥٧)

৫৭. আগমনকারী মুহূর্ত (ক্বিয়ামত) নিকটবর্তী।

لَيْسَ لَهَا مِنْ دُونِ اللَّهِ كَاشِفَةٌ ۖ (٥٨)

৫৮. আল্লাহ ছাড়া কেউ তা সরাতে পারে না (বা প্রকাশ করতে পারে না)।

أَفَمِنْ هَٰذَا الْحَدِيثِ تَعْجَبُونَ ۙ (٥٩)

৫৯. তোমরা কি এ কথায় বিস্মিত হচ্ছ?

وَتَضۡحَكُوۡنَ وَلَا تَبۡكُوۡنَ ﴿٦٠﴾

৬০. আর হাসছ, কাঁদছ না?

وَأَنۡتُمۡ سٰمِدُوۡنَ ﴿٦١﴾

৬১. বৃথা খেল-তামাশায় সময় ক্ষেপন করছ,

فَاسۡجُدُوۡا لِلّٰهِ وَاعۡبُدُوۡا ﴿٦٢﴾ السجدة

৬২. তাই, আল্লাহ্‌র উদ্দেশে সাজদায় পতিত হও আর তাঁর বন্দেগী কর।[সেজদা]

৫৪. সূরাহ আল-ক্বামার

سُوۡرَةُ الۡقَمَرِ

আয়াতঃ ৫৫, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

اِقۡتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانۡشَقَّ الۡقَمَرُ ﴿١﴾

১. ক্বিয়ামত নিকটবর্তী হয়েছে এবং চন্দ্র খণ্ডিত হয়েছে,

وَاِنۡ يَّرَوۡا اٰيَةً يُّعۡرِضُوۡا وَيَقُوۡلُوۡا سِحۡرٌ مُّسۡتَمِرٌّ ﴿٢﴾

২. কিন্তু তারা যখন কোন নিদর্শন দেখে তখন মুখ ফিরিয়ে নেয় আর বলে- 'এটা তো সেই আগের থেকে চলে আসা যাদু।'

وَكَذَّبُوۡا وَاتَّبَعُوۡۤا اَهۡوَآءَهُمۡ وَكُلُّ اَمۡرٍ مُّسۡتَقِرٌّ ﴿٣﴾

৩. তারা সত্যকে অস্বীকার করে, আর নিজেদের কামনা বাসনার অনুসরণ করে। প্রতিটি বিষয়েরই একটা নির্দিষ্ট সময় আছে (সময় আসলেই বর্তমান অবস্থার পরিবর্তন ঘটবে)।

وَلَقَدۡ جَآءَهُمۡ مِّنَ الۡاَنۡۢبَآءِ مَا فِيۡهِ مُزۡدَجَرٌ ﴿٤﴾

৪. এই লোকেদের কাছে তো (অতীতের জাতিগুলোর) সংবাদ এসেছে যাতে আছে সাবধান বাণী।

حِكۡمَةٌ ۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغۡنِ النُّذُرُ ﴿٥﴾

৫. তা (হল) সুদূর প্রসারী জ্ঞান, কিন্তু সেই সতর্কবাণী কোন কাজে আসেনি।

৬২। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, সাজদাহ্‌র আয়াত সম্বলিত অবতীর্ণ হওয়া সর্বপ্রথম সূরাহ হলো আন-নাজম। এ সূরার মধ্যে রসূল (সাঃ) সাজদাহ্ করলেন এবং সাজদাহ্ করল তাঁর পেছনের সকল লোক। তবে এক ব্যক্তিকে আমি দেখলাম, এক মুঠ মাটি হাতে তুলে তাতে সাজদাহ্ করছে। এরপর আমি তাকে কাফের অবস্থায় নিহত হতে দেখেছি। সে হল 'উমাইয়াহ ইব্‌নু খাল্‌ফ। -বুখারী ৪৮৬৩ [১০৬৭; মুসলিম ৫৭৬, নাসায়ী ৯৫৯, আবূ দাউদ ১৪০৬, আহমাদ ৩৬৭৩, ৩৭৯৫; দারিমী ১৪৬৫]

১-২। 'আবদুল্লাহ ইব্‌নু মাসউদ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূল (সাঃ) -এর সময় চাঁদ খণ্ডিত হয়েছে। এর এক খণ্ড পর্বতের উপর এবং অপর খণ্ড পর্বতের নিচে পড়েছিল। তখন রসূল (সাঃ) বলেছেন, তোমরা সাক্ষী থাক। -বুখারী ৪৮৬৪ [৩৬৩৬; মুসলিম ২৮০০, তিরমিযী ৩২৮৫, ৩২৮৭; আহমাদ ৩৫৭৩, ৩৯১৪]

৬. কাজেই (হে নবী) তুমি তাদের থেকে মুখ ফিরিয়ে নাও (আর অপেক্ষা কর সে দিনের) যেদিন এক আহ্বানকারী (তাদেরকে) আহ্বান করবে এক ভয়াবহ বিষয়ের দিকে।	فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ إِلٰى شَيْءٍ نُّكُرٍ ۙ (٦)
৭. ভীত-শংকিত চোখে তারা তাদের কবর থেকে বের হয়ে আসবে- যেন তারা বিক্ষিপ্ত পঙ্গপাল।	خُشَّعًا أَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْأَجْدَاثِ كَأَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۙ (٧)
৮. ভীত-সন্ত্রস্ত হয়ে তারা আহ্বানকারীর দিকে ছুটে আসবে। কাফিররা বলবে- "কঠিন এ দিন"।	مُّهْطِعِيْنَ إِلَى الدَّاعِ ۖ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ (٨)
৯. তাদের আগে নূহের জাতিও সত্য প্রত্যাখ্যান করেছিল। তারা আমার বান্দাহকে অস্বীকার করেছিল আর বলেছিল- "একটা পাগল"; আর তাকে ভয় দেখানো হয়েছিল।	كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ (٩)
১০. তখন সে তার প্রতিপালককে ডেকেছিল- "আমি পরাস্ত হয়েছি, কাজেই তুমি এর প্রতিবিধান কর।"	فَدَعَا رَبَّهٗ أَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ (١٠)
১১. তখন আমি আকাশের দরজাগুলো খুলে দিয়ে মুষলধারায় বৃষ্টি বর্ষিয়েছিলাম।	فَفَتَحْنَا أَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۖ (١١)
১২. আর যমীন থেকে উৎসারিত করেছিলাম ঝর্ণাধারা, অতঃপর (সব) পানি মিলিত হল যে পরিমাণ (পূর্বেই) নির্ধারিত করা হয়েছিল।	وَّفَجَّرْنَا الْأَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ عَلٰٓى أَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۚ (١٢)
১৩. আর আমি নূহকে বহন করলাম কাষ্ঠ আর কীলক যুক্ত (নৌযানে)।	وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ أَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۙ (١٣)
১৪. যা আমার চোখের সামনে (ও আমার তত্ত্বাবধানে) ভেসে চলল সেই ব্যক্তির পক্ষে প্রতিশোধ হিসেবে যাকে অমান্য ও অস্বীকার করা হয়েছিল।	تَجْرِيْ بِأَعْيُنِنَا جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ (١٤)
১৫. এ (ঘটনা) টিকে আমি (চিরকালের জন্য) নিদর্শন হিসেবে রেখে দিলাম, অতএব উপদেশ গ্রহণ করার কেউ আছে কি?	وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ (١٥)
১৬. কত ভয়ংকর ছিল আমার 'আযাব ও ভীতি প্রদর্শন।	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ (١٦)
১৭. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্য, উপদেশ গ্রহণ করার কেউ আছে কি?	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ (١٧)

১৮. 'আদ জাতি সত্য প্রত্যাখ্যান করেছিল, ফলে কত ভয়ংকর ছিল আমার 'আযাব ও ভীতি প্রদর্শন।	كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ (١٨)
১৯. আমি তাদের উপর পাঠিয়েছিলাম ঝঞ্ঝাবায়ু এক অবিরাম অশুভ দিনে,	إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيحًا صَرْصَرًا فِي يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ (١٩)
২০. মানুষকে তা উৎপাটিত করেছিল যেন তারা উৎপাটিত খেজুর গাছের কাণ্ড।	تَنزِعُ النَّاسَ كَأَنَّهُمْ أَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنقَعِرٍ (٢٠)
২১. ফলে কত ভয়ংকর ছিল আমার 'আযাব ও ভীতি প্রদর্শন।	فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِي وَنُذُرِ (٢١)
২২. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্য, উপদেশ গ্রহণের কেউ আছে কি?	وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْآنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ (٢٢)
২৩. সামূদ জাতিও ভয়প্রদর্শনকারীদেরকে অস্বীকার করেছিল,	كَذَّبَتْ ثَمُودُ بِالنُّذُرِ (٢٣)
২৪. তারা বলেছিল, 'আমরা কি আমাদেরই মধ্যেকার মাত্র একটা লোকের অনুসরণ করব? তাহলে তো আমরা গুমরাহী আর পাগলামিতে পড়ে যাব।	فَقَالُوا أَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهُ إِنَّا إِذًا لَّفِي ضَلَالٍ وَسُعُرٍ (٢٤)
২৫. আমাদের (এত মানুষের) মধ্যে শুধু কি তার উপরই বাণী পাঠানো হয়েছে? না, বরং সে বড়ই মিথ্যুক, দাম্ভিক।	أَأُلْقِيَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِن بَيْنِنَا بَلْ هُوَ كَذَّابٌ أَشِرٌ (٢٥)
২৬. আগামীকালই তারা জানতে পারবে কে বড়ই মিথ্যুক, দাম্ভিক	سَيَعْلَمُونَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْأَشِرُ (٢٦)
২৭. আমি একটা উষ্ট্রী পাঠাচ্ছি, তাদেরকে পরীক্ষা করার জন্য, কাজেই (হে সালিহ!) তুমি তাদের আচরণ লক্ষ্য কর আর ধৈর্য ধর।	إِنَّا مُرْسِلُو النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ وَاصْطَبِرْ (٢٧)
২৮. আর তাদেরকে জানিয়ে দাও যে, তাদের	وَنَبِّئْهُمْ أَنَّ الْمَاءَ قِسْمَةٌ بَيْنَهُمْ ۖ كُلُّ

২২। আবূ ইসহাক (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি এক ব্যক্তিকে আসওয়াদ (রহ.)-এর নিকট জিজ্ঞেস করতে শুনেছেন যে, আয়াতের মধ্যে فَهَلْ مِن مُّذَّكِرٍ না مُّدَّكِرٍ । তিনি বললেন, আমি 'আবদুল্লাহ্কে আয়াতখানা فَهَلْ مِن مُّدَّكِرٍ পড়তে শুনেছি। তিনি বলেছেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে আয়াতখানা 'দাল' দিয়ে পড়তে শুনেছি। -বুখারী ৪৮৭১ [৩৩৪১; মুসলিম ৮২৩, তিরমিযী ২৯৩৭, আবূ দাউদ ২৯৯৪, আহমাদ ৩৭৪৬, ৩৮৪৩]

شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ (٢٨)

মধ্যে (ও উষ্ট্রীর মধ্যে) পানি বণ্টিত হবে, প্রত্যেকের পানি পানের পালা আসবে।

فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطَى فَعَقَرَ (٢٩)

২৯. শেষে তারা তাদের এক সঙ্গীকে ডাকল আর সে তাকে (অর্থাৎ উষ্ট্রীটিকে) ধরে হত্যা করল।

فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِيْ وَنُذُرِ (٣٠)

৩০. ফলে কত ভয়ংকর হয়েছিল আমার 'আযাব ও ভীতি প্রদর্শন।

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ (٣١)

৩১. আমি তাদের উপর পাঠিয়েছিলাম একটি মাত্র প্রচণ্ড ধ্বনি। ফলে তারা খোঁয়াড়ওয়ালাদের (নির্মিত) ভেঙ্গে চুরে যাওয়া শুকনা ডালপালার মত গুঁড়িয়ে গেল।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ (٣٢)

৩২. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্য, উপদেশ গ্রহণের কেউ আছে কি?

كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍ بِالنُّذُرِ (٣٣)

৩৩. লূতের জাতি সতর্কবাণী প্রত্যাখ্যান করেছিল,

إِنَّا أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّا اٰلَ لُوْطٍ ؕ نَجَّيْنٰهُمْ بِسَحَرٍ ۙ (٣٤)

৩৪. আমি তাদের উপর পাঠিয়েছিলাম প্রস্তরবর্ষী প্রচণ্ড বাতাস, (যা তাদেরকে ধ্বংস করে দিয়েছিল) লূতের পরিবারকে বাদ দিয়ে। আমি তাদেরকে রাতের শেষ প্রহরে উদ্ধার করে নিয়েছিলাম।

نِّعْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ شَكَرَ (٣٥)

৩৫. আমার পক্ষ হতে অনুগ্রহস্বরূপ; এভাবেই আমি তাকে প্রতিফল দেই যে কৃতজ্ঞ হয়।

وَلَقَدْ أَنْذَرَهُمْ بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا بِالنُّذُرِ (٣٦)

৩৬. লূত আমার কঠোর পাকড়াও সম্পর্কে তাদেরকে সতর্ক করে দিয়েছিল, কিন্তু তারা সতর্কবাণীর বিষয়ে বাক বিতণ্ডা করেছিল।

وَلَقَدْ رَاوَدُوْهُ عَنْ ضَيْفِهٖ فَطَمَسْنَآ أَعْيُنَهُمْ فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ (٣٧)

৩৭. তারা লূতকে তার মেহমানদের রক্ষণাবেক্ষণ থেকে বিরত রাখতে চেষ্টা করল তখন আমি তাদের চোখগুলোকে অন্ধ করে দিলাম আর বললাম 'আমার 'আযাব ও সতর্কবাণীর স্বাদ গ্রহণ কর।'

وَلَقَدْ صَبَّحَهُمْ بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ج (٣٨)

৩৮. অতি সকালে নির্ধারিত শাস্তি তাদেরকে গ্রাস করল।

فَذُوْقُوْا عَذَابِيْ وَنُذُرِ (٣٩)

৩৯. তখন আমি বললাম- 'আমার শাস্তি ও সতর্কবাণীর স্বাদ গ্রহণ কর।

وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ع (٤٠)

৪০. আমি কুরআনকে সহজ করে দিয়েছি উপদেশ গ্রহণের জন্য। উপদেশ গ্রহণের কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ جَآءَ اٰلَ فِرْعَوْنَ النُّذُرُ ج (٤١)

৪১. ফেরাউন গোষ্ঠীর কাছেও (আমার) সতর্কবাণী এসেছিল।

كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنٰهُمْ أَخْذَ عَزِيْزٍ مُّقْتَدِرٍ (٤٢)

৪২. তারা আমার সকল নিদর্শনকে অস্বীকার করেছিল, তখন আমি তাদেরকে পাকড়াও করেছিলাম মহাপরাক্রমশালী ও ক্ষমতাবানের পাকড়াওয়ে।

أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُولٰٓئِكُمْ أَمْ لَكُمْ بَرَآءَةٌ فِي الزُّبُرِ ج (٤٣)

৪৩. তোমাদের (মক্কাবাসী) কাফিররা কি এ লোকেদের চেয়ে ভাল? নাকি (আসমানী) গ্রন্থাদিতে তোমাদেরকে ক্ষমা করে দেয়ার কথা লেখা আছে?

أَمْ يَقُوْلُوْنَ نَحْنُ جَمِيْعٌ مُّنْتَصِرٌ (٤٤)

৪৪. নাকি তারা বলে- 'আমরা সংঘবদ্ধ দল, নিজেদের প্রতিরক্ষায় সক্ষম।

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَيُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ (٤٥)

৪৫. এ সংঘবদ্ধ দল শীঘ্রই পরাজিত হবে আর পিছন ফিরে পালাবে।

بَلِ السَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَالسَّاعَةُ أَدْهٰى وَأَمَرُّ (٤٦)

৪৬. বরং ক্বিয়ামত হল (তাদের দুষ্কর্মের প্রতিশোধ নেয়ার জন্য) তাদেরকে দেয়া নির্ধারিত সময়, ক্বিয়ামত অতি কঠিন, অতিশয় তিক্ত।

إِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِيْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ـ (٤٧)

৪৭. পাপীরা আছে গুমরাহী আর পাগলামির মধ্যে।

৪৫। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত যে, রসূল (ﷺ) বাদর যুদ্ধের দিন একটি ছোট্ট তাঁবুতে অবস্থান করে এ দু'আ করেছিলেন- হে আল্লাহ্! আমি তোমার নিকট তোমার ওয়াদা ও অঙ্গীকার বাস্তবায়ন কামনা করছি! হে আল্লাহ্! তুমি যদি চাও, আজকের দিনের পর তোমার 'ইবাদাত না করা হোক....ঠিক এ সময়ই আবূ বাক্‌র সিদ্দীক (ﷺ) তাঁর হস্ত ধারণ পূর্বক বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! যথেষ্ট হয়েছে। আপনি আপনার প্রতিপালকের নিকট অনুনয়-বিনয়ের সঙ্গে বহু দু'আ করেছেন। এ সময় রসূল (ﷺ) বর্ম পরিহিত অবস্থায় উঠে দাঁড়ালেন। তাই তিনি আয়াত দু'টো পড়তে পড়তে তাঁবু থেকে বেরিয়ে এলেন, "এ দল তো শীঘ্রই পরাজিত হবে এবং পৃষ্ঠ প্রদর্শন করবে।"-বুখারী ৪৮৭৫ [২৯১৫; আহমাদ ৩০৩৪]

৪৬। ইবনু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, বাদর যুদ্ধের দিন নাবী (ﷺ) ছোট্ট একটি তাঁবুতে অবস্থান করে এ দু'আ করছিলেন, হে আল্লাহ্! আমি তোমার কাছে তোমার ওয়াদা ও অঙ্গীকার পূরণ কামনা করছি। হে আল্লাহ্! যদি তুমি চাও, আজকের পর আর কখনো তোমার 'ইবাদাত না করা হোক.....। ঠিক এ সময় আবূ বাক্‌র (ﷺ) রসূল (ﷺ) -এর হাত ধরে বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! যথেষ্ট হয়েছে। আপনি আপনার প্রতিপালকের কাছে অনুনয়-বিনয়ের সঙ্গে বহু দু'আ করেছেন। এ সময় তিনি লৌহবর্ম পরে ছিলেন। এরপর তিনি এ আয়াত পড়তে

৪৮. যেদিন তাদেরকে মুখের ভরে আগুনের মধ্যে হিঁচড়ে টেনে আনা হবে (তখন বলা হবে) 'জাহান্নামের স্পর্শ আস্বাদন কর।'

يَوْمَ يُسْحَبُوْنَ فِي النَّارِ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ ط ذُوْقُوْا مَسَّ سَقَرَ (٤٨)

৪৯. আমি সব কিছু সৃষ্টি করেছি নির্ধারিত পরিমাপে।

إِنَّا كُلَّ شَيْءٍ خَلَقْنٰهُ بِقَدَرٍ (٤٩)

৫০. আমার আদেশ তো মাত্র একটি কথা- চোখের পলকের মত।

وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَاحِدَةٌ كَلَمْحٍ بِالْبَصَرِ (٥٠)

৫১. আমি তোমাদের মত দলগুলোকে ইতোপূর্বে ধ্বংস করেছি, কাজেই উপদেশ গ্রহণ করার কেউ আছে কি?

وَلَقَدْ أَهْلَكْنَآ أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ (٥١)

৫২. তারা যা কিছু করেছে তা আছে 'আমালনামায়,

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوْهُ فِي الزُّبُرِ (٥٢)

৫৩. ছোট আর বড় সবই আছে লিপিবদ্ধ।

وَكُلُّ صَغِيْرٍ وَّكَبِيْرٍ مُّسْتَطَرٌ (٥٣)

৫৪. মুত্তাক্বীরা থাকবে বাগান আর ঝর্ণাধারার মাঝে,

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ لا (٥٤)

৫৫. প্রকৃত সম্মান ও মর্যাদার স্থানে, সর্বময় কর্তৃত্বের অধিকারী (আল্লাহ)'র নিকটে।

فِيْ مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيْكٍ مُّقْتَدِرٍ ع (٥٥)

৫৫. সূরাহ আর্-রহমান

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ

আয়াতঃ ৭৮, রুকূ'ঃ ৩, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. পরম দয়ালু (আল্লাহ),

اَلرَّحْمٰنُ لا (١)

২. তিনিই শিক্ষা দিয়েছেন কুরআন,

عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ط (٢)

৩. তিনিই মানুষ সৃষ্টি করেছেন,

خَلَقَ الْإِنْسَانَ لا (٣)

৪. তিনিই শিখিয়েছেন মনের কথা প্রকাশ করতে,

عَلَّمَهُ الْبَيَانَ (٤)

পড়তে তাঁবু থেকে বের হয়ে এলেনঃ একদল তো শীঘ্রই পরাজিত হবে এবং পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে। অধিকন্তু ক্বিয়ামাত তাদের শাস্তির নির্ধারিত কাল এবং ক্বিয়ামাত হবে কঠিনতর ও তিক্ততর" –বুখারী ৪৮৭৭। [২৯১৫; আহমাদ ৩০০৪]

৫. সূর্য ও চন্দ্র আবর্তন করে সুনির্দিষ্ট হিসাব অনুযায়ী।	اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ۙ (٥)
৬. তৃণলতা গাছপালা (তাঁরই জন্য) সাজদায় অবনত,	وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ (٦)
৭. তিনি আকাশকে করেছেন সমুন্নত, আর স্থাপন করেছেন (ন্যায়ের) মানদণ্ড,	وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ۙ (٧)
৮. যাতে তোমরা মানদণ্ডে সীমালঙ্ঘন না কর,	أَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ (٨)
৯. সুবিচারের সঙ্গে ওজন প্রতিষ্ঠা কর আর ওজনে কম দিও না,	وَأَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ (٩)
১০. আর যমীন– তিনি (তাঁর) প্রাণীকুলের জন্য তাকে করেছেন বিস্তৃত,	وَالْأَرْضَ وَضَعَهَا لِلْأَنَامِ ۙ (١٠)
১১. এতে আছে নানান ফলমূল, আর খেজুর গাছ যার ফল আবরণে ঢাকা,	فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْأَكْمَامِ صلے (١١)
১২. আর খোসা ও ডাটা বিশিষ্ট দানা আর সুগন্ধী গাছ।	وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ج (١٢)
১৩. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নিয়ামতকে অস্বীকার করবে?	فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۙ (١٣)
১৪. তিনি মানুষকে সৃষ্টি করেছেন পোড়া মাটির মত শুকনা পচা কাদা হতে,	خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ۙ (١٤)
১৫. আর জ্বিনকে সৃষ্টি করেছেন ধোঁয়াবিহীন আগুন হতে।	وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ج (١٥)
১৬. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?	فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (١٦)
১৭. তিনিই দু'টি উদয় স্থান ও দু'টি অস্তাচলের নিয়ন্ত্রক,	رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ج (١٧)
১৮. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?	فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (١٨)

مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ۙ (١٩)

১৯. দু'টি সমুদ্রকে তিনিই প্রবাহিত করেন যারা পরস্পর মিলিত হয়,

بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ج (٢٠)

২০. (কিন্তু তা সত্ত্বেও) উভয়ের মাঝে আছে এক আড়াল যা তারা অতিক্রম করতে পারে না।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٢١)

২১. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ج (٢٢)

২২. এ সব দরিয়া হতে বের হয় মুক্তা ও প্রবাল,

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٢٣)

২৩. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَاٰتُ فِي الْبَحْرِ كَالْأَعْلَامِ ج (٢٤)

২৪. পর্বত সম জাহাজসমূহ তাঁরই, যা দরিয়ার বুকে শান্তভাবে চলাচল করে।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ع (٢٥)

২৫. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ جصلے (٢٦)

২৬. পৃথিবী পৃষ্ঠে যা আছে সবই ধ্বংসশীল,

وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْإِكْرَامِ ج (٢٧)

২৭. কিন্তু চিরস্থায়ী তোমার প্রতিপালকের চেহারা (সত্তা)- যিনি মহীয়ান, গরীয়ান,

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٢٨)

২৮. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

يَسْأَلُهُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِي شَأْنٍ ج (٢٩)

২৯. আকাশ আর পৃথিবীতে যারা আছে তারা (নিজেদের প্রয়োজন মেটানোর জন্য যা কিছু দরকার) তাঁর কাছেই চায়, প্রতি মুহূর্ত তিনি নতুন নতুন গুরুত্বপূর্ণ কাজে নিয়োজিত (কাউকেও বাঁচাচ্ছেন, কাউকেও মারছেন, কাউকেও সম্মানিত ক'রে উর্ধ্বে উঠাচ্ছেন, কাউকেও অপমানিত ক'রে নামিয়ে দিচ্ছেন ইত্যাদি)।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٣٠)

৩০. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

سَنَفْرُغُ لَكُمْ أَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ج (٣١)

৩১. (দায়িত্বের) ভারে ভারাক্রান্ত ওহে (জ্বিন ও মানুষ) দু' (জাতি)! অতি শীঘ্র (কর্মমুক্ত হয়ে তোমাদেরকে জিজ্ঞাসাবাদের জন্য) আমি তোমাদের প্রতি মনোনিবেশ করব,

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٣٢)

৩২. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ إِنِ اسْتَطَعْتُمْ أَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ أَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ فَانْفُذُوْا ط لَا تَنْفُذُوْنَ إِلَّا بِسُلْطَانٍ ج (٣٣)

৩৩. হে জ্বিন ও মানুষ জাতি! তোমরা যদি আকাশ ও পৃথিবীর সীমানা অতিক্রম করতে পার তাহলে অতিক্রম কর, কিন্তু (আল্লাহ্‌র) প্রমাণপত্র ছাড়া তোমরা তা অতিক্রম করতে পারবে না।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٣٤)

৩৪. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرَانِ ج (٣٥)

৩৫. (অতিক্রম করতে চাইলে) তোমাদের দিকে আগুনের শিখা ও ধোঁয়া ছেড়ে দেয়া হবে, তখন তোমরা তা প্রতিরোধ করতে পারবে না।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٣٦)

৩৬. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فَإِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً كَالدِّهَانِ ج (٣٧)

৩৭. যখন আকাশ দীর্ণ বিদীর্ণ হবে আর লাল চামড়ার মত রক্তবর্ণ ধারণ করবে

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٣٨)

৩৮. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْأَلُ عَنْ ذَنْبِهٖ إِنْسٌ وَّلَا جَآنٌّ ج (٣٩)

৩৯. সে দিন না মানুষকে, না জ্বিনকে তার গুনাহ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করা হবে।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٤٠)

৪০. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمَاهُمْ فَيُؤْخَذُ بِالنَّوَاصِيْ وَالْأَقْدَامِ ج (٤١)

৪১ অপরাধীদেরকে চিনতে পারা যাবে তাদের চেহারা থেকেই, আর মাথার ঝুঁটি ও পা ধরে তাদেরকে পাকড়াও করা হবে।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٤٢)

৪২. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ـ (٤٣)

৪৩. এটা সেই জাহান্নাম যাকে অপরাধীরা মিথ্যে মনে করেছিল।

يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ج (٤٤)

৪৪. সেই জাহান্নাম আর ফুটন্ত পানিতে তারা ঘুরপাক খেতে থাকবে।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ع (٤٥)

৪৫. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ج (٤٦)

৪৬. আর যে তার প্রতিপালকের সামনে হাজির হওয়ার ভয় রাখে তার জন্য আছে দু'টো বাগান।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ لا (٤٧)

৪৭. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

ذَوَاتَآ أَفْنَانٍ ج (٤٨)

৪৮. দু'টোই শাখা পল্লবে ভরপুর।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٤٩)

৪৯. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ج (٥٠)

৫০. দু'বাগানেই আছে দু'টো করে প্রবহমান ঝর্ণা।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٥١)

৫১. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ج (٥٢)

৫২. উভয় বাগানে আছে প্রত্যেকটি ফলের দু'টি প্রকার।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٥٣)

৫৩. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

Contents

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ إِسْتَبْرَقٍ ط وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ج (٥٤)

৫৪. তারা হেলান দিয়ে বসবে শয্যার উপর যার আস্তর হবে পুরু রেশমের। দু'বাগানের ফল হবে নিকটবর্তী (জান্নাতীদের নাগালের মধ্যে)।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٥٥)

৫৫. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ لا لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ج (٥٦)

৫৬. তার মধ্যে থাকবে সতীসাধ্বী সংযত-নয়না (কুমারী)রা, পূর্বে যাদেরকে স্পর্শ করেনি কোন মানুষ আর কোন জ্বিন।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٥٧)

৫৭. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

كَأَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ج (٥٨)

৫৮. তারা যেন পদ্মরাগ ও প্রবাল।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٥٩)

৫৯. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

هَلْ جَزَآءُ الْإِحْسَانِ إِلَّا الْإِحْسَانُ ج (٦٠)

৬০. উত্তম কাজের প্রতিফল উত্তম পুরস্কার ছাড়া কী হতে পারে?

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٦١)

৬১. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ج (٦٢)

৬২. এ দু'টো বাগান ছাড়াও আরো বাগান আছে।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٦٣)

৬৩. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

مُدْهَآمَّتٰنِ ج (٦٤)

৬৪. ঘন সবুজ এ বাগান দু'টো।

৬২। 'আবদুল্লাহ ইবনু কায়স (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূল (ﷺ) বলেছেন, (জান্নাতের মধ্যে) দু'টি বাগান থাকবে। এ দু'টির সকল পাত্র এবং এর ভিতরে সকল বস্তু রৌপ্য নির্মিত হবে এবং (জান্নাতে) আরো দু'টি বাগান থাকবে। এ দু'টির সকল পাত্র এবং ভিতরের সকল বস্তু সোনার তৈরী হবে। জান্নাতে আদনের মধ্যে জান্নাতী লোকেরা তাদের প্রতিপালকের দর্শন লাভ করবে। এ জান্নাতবাসী এবং তাদের প্রতিপালকের এ দর্শনের মাঝে আল্লাহ্‌র সত্তার ওপর জড়ানো তাঁর বিরাটত্বের চাদর ছাড়া আর কোন জিনিস থাকবে না। -বুখারী ৪৮৭৮ [৪৮৮০, ৭৪৪৪; মুসলিম ১৮০, ২৮৩৮; আহমাদ ১৯০৭৯, ১৯১৮২; দারিমী ২৮২২, ২৮৩৩]

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾

৬৫. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فِيْهِمَا عَيْنَانِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾

৬৬. দু'টো বাগানেই আছে অবিরাম ও প্রচুর পরিমাণে উৎক্ষিপ্তমান দু'টো ঝর্ণাধারা।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾

৬৭. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فِيْهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ﴿٦٨﴾

৬৮. তাতে আছে ফলমূল, আর খেজুর আর ডালিম,

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٩﴾

৬৯. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

فِيْهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ﴿٧٠﴾

৭০. তাতে আছে উত্তম স্বভাব চরিত্রের সুন্দরী (কুমারী)রা।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧١﴾

৭১. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ﴿٧٢﴾

৭২. (সুসজ্জিত) প্যাভিলিয়নে সুরক্ষিত থাকবে সুলোচনা সুন্দরীরা।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٣﴾

৭৩. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٧٤﴾

৭৪. পূর্বে যাদেরকে স্পর্শ কোন মানুষেও করেনি, কোন জ্বিনেও করেনি।

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٧٥﴾

৭৫. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

৭২। 'আবদুল্লাহ ইবনু ক্বায়স (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূল (ﷺ) বলেছেন, জান্নাতের মধ্যে ফাঁপা মোতির একটি তাঁবু থাকবে। এর প্রশস্ততা হবে ষাট মাইল। এর প্রতি কোণে থাকবে হুর-বালা। এদের এক কোণের জন অপর কোণের জনকে দেখতে পাবে না। ঈমানদার লোকেরা তাদের কাছে যাবে। এতে থাকবে দু'টি বাগান, যার সকল পাত্র এবং ভেতরের সকল বস্তু হবে রূপার তৈরী। -বুখারী ৪৮৭৯ [৩২৪৩; মুসলিম ১৮০, ২৮৩৮; আহমাদ ১৯০৭৯, ১৯১৮২; দারিমী ২৮২২, ২৮৩৩]

Contents

مُتَّكِئِيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ج (٧٦)

৭৬. তারা হেলান দিবে সবুজ তাকীয়াহ্ আর সুন্দর সুসজ্জিত গালিচার উপরে,

فَبِأَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ (٧٧)

৭৭. অতএব (হে জ্বিন ও মানুষ!) তোমরা তোমাদের প্রতিপালকের কোন্ কোন্ নি'মাতকে অস্বীকার করবে?

تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْإِكْرَامِ ع (٧٨)

৭৮. মাহাত্ম্য ও সম্মানের অধিকারী তোমার প্রতিপালকের নাম বড়ই কল্যাণময়।

৫৬. সূরাহ আল-ওয়াক্বি'আহ

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ

আয়াতঃ ৯৬, রুকূ'ঃ ৩, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ لا (١)

১. যখন সেই অবশ্যম্ভাবী ঘটনাটি ঘটবে,

لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ م (٢)

২. তখন তার সংঘটন অস্বীকার করার কেউ থাকবে না,

خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ لا (٣)

৩. (অনেককে করা হবে) নীচু, (অনেককে করা হবে) উঁচু,

إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا لا (٤)

৪. যখন পৃথিবী প্রবল কম্পনে হবে প্রকম্পিত,

وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا لا (٥)

৫. আর পাহাড়গুলো হবে চূর্ণ বিচূর্ণ,

فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا لا (٦)

৬. তখন তা বিক্ষিপ্ত ধূলিকণায় পরিণত হবে।

وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ط (٧)

৭. আর তোমরা হবে তিন অংশে বিভক্ত,

فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ لا۵ مَآ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ط (٨)

৮. তখন (হবে) ডান দিকের একটি দল; কত ভাগ্যবান ডান দিকের দল।

وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ لا۵ مَآ أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ط (٩)

৯. আর বাম দিকের একটি দল; কত দুর্ভাগা বাম দিকের দলটি।

وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ لا (١٠)

১০. আর (ঈমানে) অগ্রবর্তীরা তো (পরকালেও) অগ্রবর্তী,

১১. তারাই (আল্লাহ্‌র) নৈকট্যপ্রাপ্ত	أُولَٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ج (١١)
১২. (তারা থাকবে) নি'মাতে পরিপূর্ণ জান্নাতে।	فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (١٢)
১৩. পূর্ববর্তীদের মধ্য হতে বহু সংখ্যক।	ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ لا (١٣)
১৪. আর পরবর্তীদের মধ্য হতে কম সংখ্যক।	وَقَلِيْلٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ط (١٤)
১৫. (তারা থাকবে) মণিমুক্তা খচিত আসনে,	عَلٰى سُرُرٍ مَّوْضُوْنَةٍ لا (١٥)
১৬. তাতে তারা হেলান দিয়ে বসবে পরস্পর মুখোমুখী হয়ে।	مُّتَّكِـِٕيْنَ عَلَيْهَا مُتَقٰبِلِيْنَ (١٦)
১৭. তাদের চারপাশে ঘুর ঘুর করবে (সেবায় নিয়োজিত) চির কিশোররা।	يَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ لا (١٧)
১৮. পানপাত্র, কেটলি আর ঝর্ণার প্রবাহিত স্বচ্ছ সুরায় ভরা পেয়ালা নিয়ে,	بِأَكْوَابٍ وَّأَبَارِيْقَ ۙلا وَكَأْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ لا (١٨)
১৯. তা পান করলে মাথা ঘুরবে না, জ্ঞানও লোপ পাবে না	لَّا يُصَدَّعُوْنَ عَنْهَا وَلَا يُنْزِفُوْنَ لا (١٩)
২০. আর নানান ফলমূল, ইচ্ছেমত যেটা তারা বেছে নেবে,	وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُوْنَ لا (٢٠)
২১. আর পাখীর গোশত যেটা তাদের মনে চাইবে,	وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُوْنَ ط (٢١)
২২. আর (সেখানে থাকবে) ডাগর ডাগর উজ্জ্বল সুন্দর চোখওয়ালা সুন্দরীরা,	وَحُوْرٌ عِيْنٌ لا (٢٢)
২৩. সযত্নে লুকিয়ে রাখা মুক্তোর মত,	كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُوْنِ ج (٢٣)
২৪. তাদের কর্মের প্রতিদান হিসেবে!	جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٢٤)
২৫. সেখানে তারা শুনবে না কোন অনর্থক কথাবার্তা, আর পাপের বুলি,	لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا تَأْثِيْمًا لا (٢٥)
২৬. এমন কথা ছাড়া যা হবে শান্তিময়, নিরাপদ,	إِلَّا قِيْلًا سَلٰمًا سَلٰمًا (٢٦)
২৭. আর ডানদিকের দল, কত ভাগ্যবান ডান দিকের দল!	وَأَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ۙلا مَآ أَصْحٰبُ الْيَمِيْنِ ط (٢٧)

فِيْ سِدْرٍ مَّخْضُوْدٍ ۙ (٢٨)

২৮. তারা থাকবে কাঁটা বিহীন বরই গাছগুলোর মাঝে,

وَّطَلْحٍ مَّنْضُوْدٍ ۙ (٢٩)

২৯. কলা গাছের মাঝে যাতে আছে থরে থরে সাজানো কলা,

وَّظِلٍّ مَّمْدُوْدٍ ۙ (٣٠)

৩০. বিস্তীর্ণ অঞ্চল-জুড়া ছায়ায়,

وَّمَآءٍ مَّسْكُوْبٍ ۙ (٣١)

৩১. অবিরাম প্রবহমান পানির ধারে,

وَّفَاكِهَةٍ كَثِيْرَةٍ ۙ (٣٢)

৩২. আর পর্যাপ্ত ফলমূল পরিবেষ্টিত হয়ে,

لَّا مَقْطُوْعَةٍ وَّلَا مَمْنُوْعَةٍ ۙ (٣٣)

৩৩. যা কখনও শেষ হবে না, কক্ষনো নিষিদ্ধও হবে না।

وَّفُرُشٍ مَّرْفُوْعَةٍ ؕ (٣٤)

৩৪, আর উঁচু উঁচু বিছানায়।

إِنَّآ أَنْشَأْنٰهُنَّ إِنْشَآءً ۙ (٣٥)

৩৫. তাদেরকে (অর্থাৎ ঐ হুরদেরকে) আমি সৃষ্টি করেছি এক অভিনব সৃষ্টিতে,

فَجَعَلْنٰهُنَّ أَبْكَارًا ۙ (٣٦)

৩৬. আর তাদেরকে করেছি কুমারী,

عُرُبًا أَتْرَابًا ۙ (٣٧)

৩৭. স্বামী ভক্তা, অনুরক্তা আর সমবয়স্কা,

لِّأَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕع (٣٨)

৩৮. (এ সব হল) ডান দিকের লোকদের জন্য,

ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ۙ (٣٩)

৩৯. (যারা হবে) পূর্ববর্তীদের মধ্য হতে বহু সংখ্যক

وَثُلَّةٌ مِّنَ الْاٰخِرِيْنَ ؕ (٤٠)

৪০. আর পরবর্তীদের মধ্য থেকে বহুসংখ্যক

وَأَصْحٰبُ الشِّمَالِ ۵ ۙ مَآ أَصْحٰبُ الشِّمَالِ ؕ (٤١)

৪১. আর বাম দিকের দল, কত হতভাগ্য বামদিকের দল!

فِيْ سَمُوْمٍ وَّحَمِيْمٍ ۙ (٤٢)

৪২. (তারা থাকবে) অত্যধিক গরম হাওয়া, ফুটন্ত পানি

وَّظِلٍّ مِّنْ يَّحْمُوْمٍ ۙ (٤٣)

৪৩. আর কালো ধোঁয়ার ছায়ায়,

৩০। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেছেন, জান্নাতের মধ্যে এমন একটি বৃক্ষ আছে, যার ছায়ায় একজন সওয়ারী একশত বছর চলতে থাকবে, তবুও সে এ ছায়া অতিক্রম করতে পারবে না। তোমার ইচ্ছে হলে তুমি (সম্প্রসারিত ছায়া) পাঠ কর। -বুখারী ৪৮৮১ [৩২৫২; মুসলিম ১৮৮২, ২৮২৬; তিরমিযী ১৬৪৯, ২৫২৩, ৩২৯২; ইবনু মাজাহ ৪৩৩৫, আহমাদ ৯৩৬৫, ৯৫২২, ৯৫৬০; দারিমী ২৮৩৮, ২৮৩৯]

لَّا بَارِدٍ وَّلَا كَرِيْمٍ (٤٤)

৪৪. যা শীতলও নয়, তৃপ্তিদায়কও নয়।

إِنَّهُمْ كَانُوْا قَبْلَ ذٰلِكَ مُتْرَفِيْنَ ج صلے (٤٥)

৪৫. ইতোপূর্বে তারা ভোগ বিলাসে মত্ত ছিল,

وَكَانُوْا يُصِرُّوْنَ عَلَى الْحِنْثِ الْعَظِيْمِ ج (٤٦)

৪৬. আর অবিরাম ক'রে যেত বড় বড় পাপের কাজ,

وَكَانُوْا يَقُوْلُوْنَ ۵ لا أَإِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا أَإِنَّا لَمَبْعُوْثُوْنَ لا (٤٧)

৪৭. আর তারা বলত- 'আমরা যখন মরে যাব আর মাটি ও হাড়ে পরিণত হব, তখন কি আমাদেরকে (নতুন জীবন দিয়ে) আবার উঠানো হবে?

أَوَ اٰبَآؤُنَا الْأَوَّلُوْنَ (٤٨)

৪৮. আর আমাদের বাপদাদাদেরকেও?

قُلْ إِنَّ الْأَوَّلِيْنَ وَالْاٰخِرِيْنَ لا (٤٩)

৪৯. বল- 'পূর্ববর্তী আর পরবর্তী

لَمَجْمُوْعُوْنَ ۵ لا إِلٰى مِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ (٥٠)

৫০. অবশ্যই সকলকে একত্রিত করা হবে একটা নির্ধারিত দিনে যা (আল্লাহ্‌র) জানা আছে।

ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا الضَّآلُّوْنَ الْمُكَذِّبُوْنَ لا (٥١)

৫১. তখন হে গুমরাহ (সত্য) প্রত্যাখ্যানকারীরা!

لَاٰكِلُوْنَ مِنْ شَجَرٍ مِّنْ زَقُّوْمٍ لا (٥٢)

৫২. তোমরা অবশ্যই জাক্কুম গাছ থেকে আহার করবে,

فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا الْبُطُوْنَ ج (٥٣)

৫৩. তা দিয়ে তোমরা তোমাদের পেট ভর্তি করবে,

فَشٰرِبُوْنَ عَلَيْهِ مِنَ الْحَمِيْمِ ج (٥٤)

৫৪. আর তার উপর পান করবে ফুটন্ত পানি,

فَشٰرِبُوْنَ شُرْبَ الْهِيْمِ ط (٥٥)

৫৫. আর তা পান করবে পিপাসা-কাতর উটের মত

هٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ الدِّيْنِ ط (٥٦)

৫৬. প্রতিফল দেয়ার দিনে এই হবে তাদের আপ্যায়ন

نَحْنُ خَلَقْنٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُوْنَ (٥٧)

৫৭. আমিই তো তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি, তাহলে তোমরা সত্যকে বিশ্বাস করবে না কেন?

أَفَرَأَيْتُمْ مَّا تُمْنُوْنَ ط (٥٨)

৫৮. তোমরা কি ভেবে দেখেছ- তোমরা যে বীর্য নিক্ষেপ কর,

أَأَنْتُمْ تَخْلُقُوْنَهٗٓ أَمْ نَحْنُ الْخٰلِقُوْنَ (٥٩)

৫৯. তা কি তোমরা সৃষ্টি কর, না তার সৃষ্টিকর্তা আমিই।

نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ الْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ لا (٦٠)

৬০. তোমাদের মধ্যে মৃত্যু আমিই নির্ধারণ করি, আর আমি কিছুমাত্র অক্ষম নই

عَلَىٰٓ أَنْ نُّبَدِّلَ أَمْثَالَكُمْ وَنُنْشِئَكُمْ فِيْ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٦١)

৬১. তোমাদের আকার আকৃতি পরিবর্তন করতে আর তোমাদেরকে (নতুনভাবে) এমন এক আকৃতিতে সৃষ্টি করতে যা তোমরা জান না।

وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ النَّشْأَةَ الْأُوْلَىٰ فَلَوْلَا تَذَكَّرُوْنَ (٦٢)

৬২. তোমরা তোমাদের প্রথম সৃষ্টি সম্বন্ধে অবশ্যই জান তাহলে (আল্লাহ যে তোমাদেরকে পুনরায় সৃষ্টি করতে সক্ষম এ কথা) তোমরা অনুধাবন কর না কেন?

أَفَرَأَيْتُمْ مَّا تَحْرُثُوْنَ ط (٦٣)

৬৩. তোমরা কি ভেবে দেখেছ তোমরা যে বীজ বপন কর সে সম্পর্কে?

أَأَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗٓ أَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ (٦٤)

৬৪. তোমরাই কি তা উৎপন্ন কর, না আমিই উৎপন্নকারী?

لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ (٦٥)

৬৫. আমি ইচ্ছে করলে তাকে অবশ্যই খড়কুটা করে দিতে পারি, তখন তোমরা হয়ে যাবে বিস্ময়ে হতবাক।

إِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ لا (٦٦)

৬৬. (আর বলবে যে) 'আমরা তো দায়গ্রস্ত হয়ে পড়লাম,

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ (٦٧)

৬৭. বরং আমরা বঞ্চিত হয়ে গেলাম।

أَفَرَأَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ط (٦٨)

৬৮. তোমরা কি পানি সম্পর্কে চিন্তা করে দেখেছ যা তোমরা পান কর?

أَأَنْتُمْ أَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ أَمْ نَحْنُ الْمُنْزِلُوْنَ (٦٩)

৬৯. তা কি তোমরাই মেঘ থেকে বর্ষণ কর, নাকি তার বর্ষণকারী আমিই?

لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ أُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ (٧٠)

৭০. আমি ইচ্ছে করলে তাকে লবণাক্ত করে দিতে পারি, তাহলে কেন তোমরা শোকর আদায় কর না?

أَفَرَأَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ط (٧١)

৭১. তোমরা যে আগুন জ্বালাও সে সম্পর্কে কি তোমরা চিন্তা করে দেখেছ?

أَأَنْتُمْ أَنْشَأْتُمْ شَجَرَتَهَآ أَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ (٧٢)

৭২. তার (জ্বালানোর) গাছ (অর্থাৎ কাঠ) কি তোমরাই বানিয়েছ, নাকি আমিই বানিয়েছি?

৬৩-৬৫। আনাস ইবনে মালিক (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, যে কোন মুসলমান ফলবান গাছ রোপণ করে কিংবা কোন ফসল ফলায় আর তা হতে পাখী কিংবা মানুষ বা চতুষ্পদ জন্তু খায় তবে তা তার পক্ষ হতে সদাকাহ্ বলে গণ্য হবে। মুসলিম (রহ.) ..... আনাস (رضي الله عنه) সূত্রে নাবী (ﷺ) হতে হাদীসটি বর্ণিত হয়েছে। -বুখারী ২৩২০ [৬০১২, মুসলিম ২২/২, হাঃ ১৫৫৩, আহমাদ ১২৪৯৭]

نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ج (٧٣)

৭৩. আমি তাকে (অর্থাৎ আগুনকে) করেছি স্মারক (যা জাহান্নামের আগুনের কথা স্মরণ করিয়ে দেয়) আর মরুর অধিবাসীদের জন্য দরকারী ও আরামের বস্তু।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ع ع (٧٤)

৭৪. কাজেই (হে নবী!) তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের মহিমা ও গৌরব ঘোষণা কর।

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ لا (٧٥)

৭৫. উপরন্তু আমি শপথ করছি তারকারাজির অস্তাচলের।

وَإِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ لا (٧٦)

৭৬. তা অবশ্যই অতি বড় শপথ যদি তোমরা জানতে!

إِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ لا (٧٧)

৭৭. অবশ্যই তা সম্মানিত কুরআন,

فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ لا (٧٨)

৭৮. (যা লিখিত আছে) সুরক্ষিত কিতাবে,

لَّا يَمَسُّهٗٓ إِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ط (٧٩)

৭৯. পূত-পবিত্র (ফেরেশতা) ছাড়া (শয়ত্বানেরা) তা স্পর্শ করতে পারে না,

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٨٠)

৮০. জগৎ সমূহের প্রতিপালকের নিকট থেকে অবতীর্ণ,

أَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ أَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ لا (٨١)

৮১. তবুও কি তোমরা এ বাণীকে তুচ্ছ মনে করছ?

وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ أَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ (٨٢)

৮২. আর তাকে মিথ্যে বলাকেই তোমরা তোমাদের জীবিকা বানিয়ে নিয়েছ।

فَلَوْلَآ إِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ لا (٨٣)

৮৩. তাহলে কেন (তোমরা বাধা দাও না) যখন প্রাণ এসে যায় কণ্ঠনালীতে?

وَأَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ لا (٨٤)

৮৪. আর তোমরা তাকিয়ে তাকিয়ে দেখ,

وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ لَّا تُبْصِرُوْنَ (٨٥)

৮৫. আর আমি তোমাদের চেয়ে তার (অর্থাৎ প্রাণের) নিকটবর্তী, কিন্তু তোমরা দেখতে পাওনা।

فَلَوْلَآ إِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ لا (٨٦)

৮৬. তোমরা যদি (আমার) কর্তৃত্বের অধীন না হও

تَرْجِعُوْنَهَآ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٨٧)

৮৭. তাহলে তোমরা তাকে (অর্থাৎ তোমাদের প্রাণকে মৃত্যুর সময়) ফিরিয়ে নাও না কেন যদি তোমরা (তোমাদের দাবীতে) সত্যবাদী হয়েই থাক?

فَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ لا (٨٨)

৮৮. অতএব সে যদি (আল্লাহ্‌র) নৈকট্য প্রাপ্তদের একজন হয়

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ۬ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ (٨٩)

৮৯. তাহলে (তার জন্য আছে) আরাম-শান্তি, উত্তম রিয্ক আর নি'মাতে-ভরা জান্নাত।

وَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۙ (٩٠)

৯০. আর যদি সে ডান দিকের একজন হয়

فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ أَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ (٩١)

৯১. তাহলে হে ডানের বাসিন্দা! তোমার জন্য আছে শান্তি ও নিরাপত্তা।

وَأَمَّآ إِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ (٩٢)

৯৩. আর সে যদি সত্য অস্বীকারকারী গুমরাহ্দের অন্তর্গত হয়,

فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ۙ (٩٣)

৯৩. তবে তার আপ্যায়ন হবে ফুটন্ত পানি দিয়ে।

وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ (٩٤)

৯৪. আর (তার জন্য আছে) জাহান্নামের আগুনের দহন,

إِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ج (٩٥)

৯৫. এটা সুনিশ্চিত সত্য।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ع (٩٦)

৯৬. কাজেই তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের গৌরব ও মহিমা ঘোষণা কর।

---

৫৭. সূরাহ আল-হাদীদ

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ

আয়াতঃ ২৯, রুকূ'ঃ ৪, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (١)

১. আসমান ও যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ্র গৌরব ও মহিমা ঘোষণা করে, তিনি প্রবল পরাক্রান্ত, মহা প্রজ্ঞাবান।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج يُحْيِي وَيُمِيْتُ ج وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٢)

২. আসমান ও যমীনের রাজত্ব তাঁরই, তিনিই জীবন দেন, আর তিনিই মৃত্যু দেন, তিনি সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান।

هُوَ الْأَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ج وَهُوَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٣)

৩. তিনিই প্রথম, তিনিই শেষ, তিনি প্রকাশিত আবার গুপ্ত, তিনি সকল বিষয় পূর্ণরূপে জ্ঞাত।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ فِيْ سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ ط يَعْلَمُ مَا يَلِجُ

৪. তিনি আসমান ও যমীনকে ছয় দিনে সৃষ্টি করেছেন অতঃপর আরশে সমুন্নত হয়েছেন। তিনি জানেন যা যমীনে প্রবেশ করে, আর যা তাথেকে

فِي الْأَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ط وَهُوَ مَعَكُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٤)

বের হয়, আর যা আকাশ থেকে অবতীর্ণ হয়, আর যা তাতে উঠে যায়, তোমরা যেখানেই থাক তিনি তোমাদের সঙ্গে আছেন, তোমরা যে কাজই কর না কেন, আল্লাহ তা দেখেন।

لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَإِلَى اللهِ تُرْجَعُ الْأُمُوْرُ (٥)

৫. আসমান ও যমীনের রাজত্ব তাঁরই, যাবতীয় বিষয় তাঁরই দিকে ফিরে যায় (চূড়ান্ত ফয়সালার জন্য)।

يُوْلِجُ اللَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي اللَّيْلِ ط وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٦)

৬. তিনিই রাতকে প্রবেশ করান দিনের ভিতর, আর দিনকে ঢুকিয়ে দেন রাতের ভিতর, অন্তরের গোপনতত্ত্ব সম্পর্কে তিনি পূর্ণরূপে অবগত।

اٰمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَأَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ مُّسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ط فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَأَنْفَقُوْا لَهُمْ أَجْرٌ كَبِيْرٌ (٧)

৭. তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি ঈমান আনো, আর তিনি তোমাদেরকে যার উত্তরাধিকারী করেছেন তাথেকে (আল্লাহ্র পথে) ব্যয় কর। কারণ তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান আনে আর ব্যয় করে, তাদের জন্য আছে বিরাট প্রতিফল।

وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ ج وَالرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ أَخَذَ مِيْثَاقَكُمْ إِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ (٨)

৮. তোমাদের কী হল যে, তোমরা আল্লাহ্র প্রতি ঈমান আনবে না যখন রসূল তোমাদেরকে তোমাদের প্রতিপালকের উপর ঈমান আনার জন্য ডাকছে আর তিনি তোমাদের কাছ থেকে প্রতিশ্রুতি গ্রহণ করেছেন, যদি তোমরা বিশ্বাসী হয়েই থাক।

هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمَاتِ إِلَى النُّوْرِ ط وَإِنَّ اللهَ بِكُمْ لَرَؤُوْفٌ رَّحِيْمٌ (٩)

৯. তিনিই তাঁর বান্দাহ্র উপর সুস্পষ্ট আয়াত অবতীর্ণ করেন তোমাদেরকে ঘোর অন্ধকার থেকে আলোতে আনার জন্য, আল্লাহ অবশ্যই তোমাদের প্রতি বড়ই করুণাশীল, অতি দয়ালু।

وَمَا لَكُمْ أَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللهِ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط لَا يَسْتَوِيْ مِنْكُمْ مَّنْ أَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقَاتَلَ ط أُولٰٓئِكَ أَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ أَنْفَقُوْا مِنْۢ بَعْدُ وَقَاتَلُوْا ط وَكُلًّا

১০. তোমাদের হল কী যে তোমরা আল্লাহ্র পথে ব্যয় করবে না! আকাশ ও পৃথিবীর উত্তরাধিকার তো আল্লাহ্রই জন্য (কাজেই তাঁর পথে ব্যয় করলে তোমরা গরীব হয়ে যাবে এ আশঙ্কার কোন কারণ নেই)। তোমাদের মধ্যে যারা (মক্কা) বিজয়ের পূর্বে ব্যয় করেছে আর যুদ্ধ করেছে তারা সমান নয় (তাদের, যারা তা বিজয়ের পরে করেছে); তাদের মর্যাদা অনেক বড় তাদের তুলনায় যারা পরে ব্যয় করেছে ও যুদ্ধ করেছে।

وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ع (١٠)

উভয়ের জন্যই আল্লাহ কল্যাণের ও'য়াদা দিয়েছেন। তোমরা যা কিছু কর সে সম্পর্কে আল্লাহ পূর্ণভাবে অবগত।

مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضَاعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ أَجْرٌ كَرِيْمٌ (١١)

১১. এমন কে আছে যে, আল্লাহকে উত্তম ঋণ দিবে? তাহলে তিনি তা তার জন্য কয়েকগুণ বাড়িয়ে দিবেন আর তার জন্য আছে সম্মানজনক প্রতিফল।

يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ يَسْعٰى نُوْرُهُمْ بَيْنَ أَيْدِيْهِمْ وَبِأَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ج (١٢)

১২. সে দিন তুমি মু'মিন ও মু'মিনাদের দেখবে, তাদের সামনে আর তাদের ডানে তাদের জ্যোতি ছুটতে থাকবে। (তাদেরকে বলা হবে) 'আজ তোমাদের জন্য জান্নাতের সুসংবাদ যার নীচ দিয়ে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত, তাতে (তোমরা) চিরকাল থাকবে। এটাই হল বিরাট সফলতা।

يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ نُّوْرِكُمْ ج قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَآءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا نُوْرًا ؕ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ؕ بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ قِبَلِهِ الْعَذَابُ ؕ (١٣)

১৩. সেদিন মুনাফিক পুরুষ ও মুনাফিক নারীরা মু'মিনদেরকে বলবে- 'তোমরা আমাদের জন্য অপেক্ষা কর, তোমাদের জ্যোতি থেকে আমরা কিছুটা নিয়ে নেই।' তাদেরকে বলা হবে- 'তোমরা তোমাদের পেছনে ফিরে যাও, 'আর আলোর খোঁজ কর।' তখন তাদের মাঝে একটি আড়াল খাড়া করে দেয়া হবে যার থাকবে একটি দরজা। তার ভিতর ভাগে থাকবে রহমত আর বহির্ভাগের সর্বত্র থাকবে 'আযাব।

يُنَادُوْنَهُمْ أَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ أَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْأَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ أَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ (١٤)

১৪. তারা মু'মিনদেরকে ডেকে বলবে- 'আমরা কি তোমাদের সঙ্গে ছিলাম না?' তারা উত্তর দিবে, 'হাঁ, কিন্তু তোমরা নিজেরাই নিজেদেরকে বিপদে ফেলে দিয়েছ, তোমরা অপেক্ষা করেছিলে (আমাদের ধ্বংসের জন্য), তোমরা সন্দেহে পতিত ছিলে, আর মিথ্যে আশা আকাঙ্ক্ষা তোমাদেরকে প্রতারিত করেছিল। শেষ পর্যন্ত আল্লাহ্‌র হুকুম এসে গেল, আর বড় প্রতারক (শাইত্বন) তোমাদেরকে আল্লাহ্‌র ব্যাপারে প্রতারিত করল।

فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ مَأْوٰىكُمُ النَّارُ ؕ هِيَ

১৫. আজ তোমাদের কাছ থেকে কোন মুক্তিপণ গ্রহণ করা হবে না, আর যারা কুফরী করেছিল তাদের কাছ থেকেও না। তোমাদের বসবাসের

مَوْلٰـكُمْ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (١٥)

জায়গা জাহান্নাম, সেটাই তোমাদের যথাযোগ্য স্থান। কতই না নিকৃষ্ট সেই আশ্রয়স্থল!

أَلَمْ يَأْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا أَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ لِذِكْرِ اللهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْأَمَدُ فَقَسَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ (١٦)

১৬. যারা ঈমান এনেছে তাদের জন্য সে সময় কি এখনও আসেনি যে আল্লাহ্‌র স্মরণে আর যে প্রকৃত সত্য অবতীর্ণ হয়েছে তাতে তাদের অন্তর বিগলিত হয়ে যাবে? আর তারা যেন সেই লোকদের মত না হয়ে যায় যাদেরকে পূর্বে কিতাব দেয়া হয়েছিল, অতঃপর তাদের উপর অতিবাহিত হয়ে গেল বহু বহু যুগ আর তাদের অন্তর কঠিন হয়ে পড়ল। তাদের অধিকাংশই পাপাচারী।

اِعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ يُحْيِي الْأَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ (١٧)

১৭. জেনে রেখ, আল্লাহই যমীনকে তার মৃত্যুর পর আবার জীবিত করেন। আমি তোমাদের কাছে সুস্পষ্টভাবে নিদর্শন বর্ণনা করেছি যাতে তোমরা বুঝতে পার।

إِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقَاتِ وَأَقْرَضُوا اللهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ أَجْرٌ كَرِيْمٌ (١٨)

১৮. দানশীল পুরুষরা আর দানশীলা নারীরা আর যারা আল্লাহকে ঋণ দেয়– উত্তম ঋণ, তাদের জন্য বহুগুণ বাড়িয়ে দেয়া হবে, আর তাদের জন্য আছে মর্যাদাপূর্ণ প্রতিদান।

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللهِ وَرُسُلِهٖٓ أُولٰٓئِكَ هُمُ الصِّدِّيْقُوْنَ ۖۗ وَالشُّهَدَآءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ لَهُمْ أَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ؕ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ع (١٩)

১৯. আর যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি ঈমান আনে তারাই তাদের প্রতিপালকের নিকট সিদ্দীক ও শহীদ। তাদের জন্য আছে তাদের প্রতিদান ও তাদের নূর। আর যারা কুফরী করে আর আমার নিদর্শনকে অস্বীকার করে, তারাই জাহান্নামের বাসিন্দা।

اِعْلَمُوْٓا أَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌ ۢبَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ فِي الْأَمْوَالِ وَالْأَوْلَادِ ؕ كَمَثَلِ غَيْثٍ أَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطَامًا ؕ وَفِي الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ

২০. তোমরা জেনে রেখ, দুনিয়ার জীবন ক্রীড়া-কৌতুক, শোভা-সৌন্দর্য, পারস্পরিক গর্ব-অহঙ্কার আর ধন-মাল ও সন্তানাদিতে আধিক্যের প্রতিযোগিতা মাত্র। তার উদাহরণ হল বৃষ্টি, আর তা হতে উৎপন্ন শষ্যাদি কৃষকের মনকে আনন্দে ভরে দেয়, তারপর তা পেকে যায়, তখন তুমি তাকে হলুদ বর্ণ দেখতে পাও, পরে তা খড় ভুষি হয়ে যায়। (আর আখেরাতের চিত্র অন্যরকম, পাপাচারীদের জন্য), আখেরাতে আছে কঠিন শাস্তি

شَدِيْدٌ لا وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللهِ وَرِضْوَانٌ ط وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ إِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ (٢٠)

, (আর নেক্‌কারদের জন্য আছে) আল্লাহ্‌র ক্ষমা ও সন্তুষ্টি। আর দুনিয়ার জীবনটা তো ধোঁকার বস্তু ছাড়া আর কিছুই না।

سَابِقُوْٓا إِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ وَالْأَرْضِ لا أُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللهِ وَرُسُلِهٖ ط ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (٢١)

২১. তোমরা এগিয়ে যাও তোমাদের প্রতিপালকের ক্ষমা ও জান্নাত লাভের জন্য, যার প্রশস্ততা আসমান ও যমীনের প্রশস্ততার মত। তা প্রস্তুত রাখা হয়েছে তাদের জন্য যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলদের প্রতি ঈমান এনেছে। এটা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ, তিনি তা দেন যাকে ইচ্ছে করেন, আল্লাহ বড়ই অনুগ্রহশীল।

مَآ أَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْأَرْضِ وَلَا فِيْٓ أَنْفُسِكُمْ إِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ نَّبْرَأَهَا ط إِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرٌ لا (٢٢)

২২। পৃথিবীতে অথবা তোমাদের নিজেদের উপর এমন কোন মুসীবত আসে না যা আমি সংঘটিত করার পূর্বে কিতাবে লিপিবদ্ধ রাখি না। এটা (করা) আল্লাহ্‌র জন্য খুবই সহজ।

لِّكَيْلَا تَأْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰكُمْ ط وَاللهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ لا (٢٣)

২৩. এটা এজন্য যে, তোমাদের যে ক্ষতি হয়েছে তার জন্য তোমরা যেন হতাশাগ্রস্ত না হও, আর তোমাদেরকে যা দান করা হয়েছে তার জন্য তোমরা যেন উৎফুল্ল না হও, কেননা আল্লাহ অহংকারী ও অধিক গর্বকারীকে পছন্দ করেন না-

نِالَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبُخْلِ ط وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَإِنَّ اللهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ (٢٤)

২৪. যারা কৃপণতা করে আর মানুষকে কৃপণতা করার আদেশ দেয় এবং যে ব্যক্তি (আল্লাহ্‌র পথ হতে) মুখ ফিরিয়ে নেয় (সে জেনে রাখুক) আল্লাহ অভাব মুক্ত, প্রশংসিত।

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ج وَأَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَأْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ بِالْغَيْبِ ط إِنَّ اللهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ع (٢٥)

২৫. আমি আমার রসূলদেরকে সুস্পষ্ট প্রমাণসহ পাঠিয়েছি আর তাদের সঙ্গে অবতীর্ণ করেছি কিতাব ও (সত্য মিথ্যার) মানদণ্ড যাতে মানুষ ইনসাফ ও সুবিচারের উপর প্রতিষ্ঠিত হতে পারে। আমি অবতীর্ণ করেছি লোহা যাতে আছে প্রচণ্ড শক্তি আর মানুষের জন্য নানাবিধ উপকার যাতে আল্লাহ পরীক্ষা করতে পারেন আল্লাহকে না দেখেই তাঁকে আর তাঁর রসূলদেরকে কারা (এই লোহার শক্তি দিয়ে ও যাবতীয় উপায়ে) সাহায্য করে। আল্লাহ বড়ই শক্তিমান, মহাপরিক্রমশালী।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا نُوحًا وَّإِبْرَاهِيمَ وَجَعَلْنَا فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ مُّهْتَدٍ ج وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ (٢٦)

২৬. আমি নূহ (আলাইহিস সালাম) আর ইব্‌রাহীম (আলাইহিস সালাম)-কে পাঠিয়েছিলাম আর তাদের বংশধরদের মধ্যে নুবুওয়াত ও কিতাবের ব্যবস্থা প্রতিষ্ঠা করেছিলাম। তাদের মধ্যে কেউ কেউ সঠিক পথ অবলম্বন করেছিল আর তাদের অধিকাংশই ছিল পাপাচারী।

ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْإِنْجِيْلَ ۵ لا وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَأْفَةً وَّرَحْمَةً ط وَرَهْبَانِيَّةَ نِ ابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا عَلَيْهِمْ إِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللهِ فَمَا رَعَوْهَا حَقَّ رِعَايَتِهَا ج فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ أَجْرَهُمْ ج وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ (٢٧)

২৭. অতঃপর তাদের পথ ধরে আমি আমার রসূলদেরকে পাঠিয়েছিলাম, অতঃপর তাদের পেছনে আমি মারইয়াম-পুত্র 'ঈসা (আলাইহিস সালাম)-কে পাঠিয়েছিলাম আর তাকে দিয়েছিলাম ইঞ্জীল। আর যারা তাকে অনুসরণ করেছিল তাদের অন্তরে দিয়েছিলাম করুণা ও দয়ামায়া। আর বৈরাগ্যবাদ- তা তারা নিজেরাই নতুনভাবে চালু করেছে আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টি লাভের আশায়। আমি তাদের উপর এ বিধান অপরিহার্য করিনি। আর সেটাও তারা লালন করতে পারেনি যেভাবে তা লালন করা প্রয়োজন ছিল। তাদের মধ্যে যারা ঈমান গ্রহণ করেছিল তাদেরকে আমি তাদের প্রাপ্য পুরস্কার দিয়েছিলাম। কিন্তু তাদের অধিকাংশই ছিল পাপাচারী।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَاٰمِنُوْا بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ لا (٢٨)

২৮. ওহে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর আর তাঁর রসূলের প্রতি ঈমান আন, তিনি তাঁর অনুগ্রহে তোমাদেরকে দ্বিগুণ পুরস্কার দিবেন আর তিনি তোমাদের জন্য আলোর ব্যবস্থা করবেন যা দিয়ে তোমরা পথ চলবে, আর তিনি তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিবেন। আল্লাহ বড়ই ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

لِئَلَّا يَعْلَمَ أَهْلُ الْكِتٰبِ أَلَّا يَقْدِرُوْنَ عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللهِ وَأَنَّ الْفَضْلَ بِيَدِ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ع (٢٩)

২৯. (আমি আহলে কিতাব ছাড়া অন্যত্র নুবুওয়াত দিলাম) এ জন্য যে, আহলে কিতাবগণ যেন জেনে নিতে পারে যে, আল্লাহ্‌র অনুগ্রহের কোন কিছুকেই তাদের নিয়ন্ত্রণ করার কোন ক্ষমতা নেই, আর (তারা যেন আরো জেনে নিতে পারে যে) অনুগ্রহ একমাত্র আল্লাহ্‌র হাতেই, যাকে ইচ্ছে তিনিই তা দেন। আল্লাহ বিশাল অনুগ্রহের অধিকারী।

৫৮. সূরাহ আল-মুজাদালাহ

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ

আয়াতঃ ২২, রুকূ'ঃ ৩, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আল্লাহ তার কথা শুনেছেন যে নারী (খাওলাহ বিনত সা'লাবাহ) তার স্বামীর বিষয়ে তোমার সাথে বাদানুবাদ করছে আর আল্লাহ্‌র কাছে ফরিয়াদ জানাচ্ছে, আল্লাহ তোমাদের দু'জনের কথা শুনছেন, আল্লাহ সর্বশ্রোতা, সর্বদ্রষ্টা।

قَدْ سَمِعَ اللهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْٓ إِلَى اللهِ ق صلے وَاللهُ يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ط إِنَّ اللهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ (١)

২. তোমাদের মধ্যে যারা তাদের স্ত্রীদের সাথে জিহার করে (অর্থাৎ স্ত্রীকে বলে যে, তুমি আমার জন্য আমার মায়ের পিঠের মত) তাদের স্ত্রীরা তাদের মা নয়। তাদের মা তো কেবল তারাই যারা তাদের জন্ম দিয়েছে। তারা অবশ্যই ঘৃণ্য ও মিথ্যে কথা বলে, নিশ্চয়ই আল্লাহ পাপ মোচনকারী, বড়ই ক্ষমাশীল।

اَلَّذِيْنَ يُظَاهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ مَّا هُنَّ أُمَّهٰتِهِمْ ط إِنْ أُمَّهٰتُهُمْ إِلَّا الّٰٓـئِيْ وَلَدْنَهُمْ ط وَإِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ الْقَوْلِ وَزُوْرًا ط وَإِنَّ اللهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ (٢)

৩. যারা নিজেদের স্ত্রীদের সাথে জিহার করে, অতঃপর তারা যে কথা বলেছে তা প্রত্যাহার করে নেয় তবে পরস্পরকে স্পর্শ করার পূর্বে তাদেরকে একটি দাস মুক্ত করতে হবে, এর দ্বারা তোমাদেরকে উপদেশ দেয়া হচ্ছে। তোমরা যা কর, আল্লাহ তার খবর রাখেন।

وَالَّذِيْنَ يُظَاهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّتَمَآسَّا ط ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (٣)

৪. কিন্তু যার (দাস সংগ্রহ করার) সামর্থ্য নেই, সে এক নাগাড়ে দু'মাস রোযা রাখবে পরস্পরকে স্পর্শ করার পূর্বে। আর যে তা করতে পারবে না, সে ষাট জন মিসকীনকে খাবার খাওয়াবে। এ নির্দেশ দেয়া হচ্ছে এ জন্য যাতে তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি ঈমান আনো। এগুলো আল্লাহ্‌র নির্ধারিত সীমা। (যারা এটা অস্বীকার করবে সেই) কাফিরদের জন্য আছে মর্মান্তিক শাস্তি।

فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّتَمَآسَّا ط فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ فَإِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ط ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ ط وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ ط وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٤)

৫. যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের বিরোধিতা করে তাদেরকে লাঞ্ছিত করা হবে যেমন লাঞ্ছিত করা

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا كَمَا

كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ أَنْزَلْنَآ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ط وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ج (٥)

হয়েছিল তাদের পূর্ববর্তীদেরকে। আমি সুস্পষ্ট আয়াত অবতীর্ণ করেছি আর (অস্বীকারকারী) কাফিরদের জন্য আছে অপমানজনক শাস্তি,

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ط أَحْصَاهُ اللهُ وَنَسُوْهُ ط وَاللهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ع (٦)

৬. সেদিন, যেদিন আল্লাহ তাদের সকলকে আবার জীবিত করে উঠাবেন এবং তাদের কৃতকর্মের সংবাদ তাদেরকে জানিয়ে দিবেন, আল্লাহ তা হিসেব করে রেখেছেন যদিও তারা (নিজেরা) ভুলে গেছে। আল্লাহ প্রতিটি বিষয়ের প্রত্যক্ষদর্শী।

أَلَمْ تَرَ أَنَّ اللهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ط مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ إِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ إِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ وَلَآ أَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ أَكْثَرَ إِلَّا هُوَ مَعَهُمْ أَيْنَ مَا كَانُوْا ج ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ط إِنَّ اللهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٧)

৭. তুমি কি জান না যে, যা আকাশে আছে আর যা যমীনে আছে আল্লাহ সব জানেন। তিনজনের মধ্যে এমন কোন গোপন পরামর্শ হয় না যাতে চতুর্থজন আল্লাহ হন না, আর পাঁচজনেও হয় না, ষষ্ঠজন তিনি ছাড়া, এর কম সংখ্যকেও হয় না, আর বেশি সংখ্যরেও হয় না, তিনি তাদের সঙ্গে থাকা ব্যতীত, তারা যেখানেই থাকুক না কেন। অতঃপর ক্বিয়ামত দিবসে তিনি জানিয়ে দেবেন যা তারা 'আমাল করেছিল। আল্লাহ সকল বিষয়ে পূর্ণভাবে অবগত।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ز وَإِذَا جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللهُ لا وَيَقُوْلُوْنَ فِيْٓ أَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللهُ بِمَا نَقُوْلُ ط حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ج يَصْلَوْنَهَا ج فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (٨)

৮. তুমি কি তাদেরকে দেখনি যাদেরকে গোপন পরামর্শ করতে নিষেধ করা হয়েছিল, অতঃপর তারা আবার তাই করল যা করতে তাদেরকে নিষেধ করা হয়েছিল, তারা গোপনে পরামর্শ করল পাপাচার, সীমালঙ্ঘন আর রসূলকে অমান্য করা নিয়ে। তারা যখন তোমার কাছে আসে তখন তারা তোমাকে এমনভাবে সম্ভাষণ করে যেমনভাবে আল্লাহ তোমাকে সম্ভাষণ করেননি। তারা মনে মনে বলে- 'আমরা যা বলি তার জন্য আল্লাহ আমাদেরকে 'আযাব দেন না কেন? জাহান্নামই তাদের জন্য যথেষ্ট, তাতে তারা জ্বলবে, কতই না নিকৃষ্ট সেই গন্তব্যস্থল!

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا تَتَنَاجَوْا بِالْإِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ

৯. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন গোপন পরামর্শ কর, তখন পাপাচার, সীমালঙ্ঘন আর রসূলকে অমান্য করার পরামর্শ কর না। তোমরা সৎকর্ম ও তাকওয়া অবলম্বনের ব্যাপারে পরামর্শ করো। আর

الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ط وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْٓ إِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٩)

তোমরা আল্লাহকে ভয় কর যাঁর কাছে তোমাদেরকে সমবেত করা হবে।

إِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْئًا إِلَّا بِإِذْنِ اللّٰهِ ط وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (١٠)

১০. গোপন পরামর্শ হল মু'মিনদেরকে দুঃখ দেয়ার জন্য শয়ত্বান প্ররোচিত কাজ। তবে আল্লাহ্‌র অনুমতি ছাড়া তা তাদের কোন ক্ষতি করতে পারে না। মু'মিনদের কর্তব্য হল একমাত্র আল্লাহ্‌রই উপর ভরসা করা।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ج وَإِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ لا وَالَّذِيْنَ أُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ط وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (١١)

১১. হে মু'মিনগণ! তোমাদেরকে যখন বলা হয়- 'বৈঠক প্রশস্ত করে দাও', তখন তোমরা তা প্রশস্ত করে দিবে, আল্লাহ তোমাদেরকে প্রশস্ততা দান করবেন। আর যখন বলা হয়- 'তোমরা উঠে যাও', তখন তোমরা উঠে যাবে। তোমাদের মধ্যে যারা ঈমান এনেছে আর যাদেরকে জ্ঞান দান করা হয়েছে, আল্লাহ তাদেরকে মর্যাদায় উচ্চ করবেন। তোমরা যা কর আল্লাহ তার খবর রাখেন।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا نٰجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ط ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَأَطْهَرُ ط فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوْا فَإِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٢)

১২. হে মু'মিনগণ! তোমরা যখন রসূলের সঙ্গে গোপনে কথা বল, তখন গোপনে কথা বলার আগে সদাক্বাহ দাও, এটাই তোমাদের জন্য উত্তম ও অতি পবিত্র পন্থা। আর যদি সদাক্বাহ জোগাড় করতে না পার, তাহলে আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, অতি দয়ালু।

ءَأَشْفَقْتُمْ أَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ط فَإِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَأَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ط وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ع (١٣)

১৩. তোমরা কি ভয় পেয়ে গেলে যে, তোমাদেরকে (নবীর সঙ্গে) গোপনে কথাবার্তা বলার আগে সদাক্বাহ দিতে হবে? তোমরা যদি তা না কর, তাহলে আল্লাহ তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিলেন, কাজেই তোমরা নামায কায়িম কর, যাকাত দাও এবং আল্লাহ ও তাঁর রসূলের আনুগত্য কর। তোমরা যা কর সে বিষয়ে আল্লাহ পুরোপুরি অবগত।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ط مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ لا وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ج (١٤)

১৪. তুমি কি তাদেরকে দেখনি যারা সেই সম্প্রদায়ের সঙ্গে বন্ধুত্ব করে যেই সম্প্রদায়ের প্রতি আল্লাহ রাগান্বিত? তারা না তোমাদের লোক, আর না তাদের লোক আর তারা জেনে শুনে মিথ্যে শপথ করে।

أَعَدَّ اللهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ط إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (١٥)

১৫. আল্লাহ তাদের জন্য প্রস্তুত করে রেখেছেন কঠিন শাস্তি, তারা যা করে তা কতই না মন্দ!

اِتَّخَذُوْآ أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ (١٦)

১৬. তারা তাদের শপথগুলোকে ঢাল বানিয়ে নিয়েছে, এর সাহায্যে তারা মানুষকে আল্লাহ্‌র পথ থেকে ফিরিয়ে রাখে, এ কারণে তাদের জন্য আছে অপমানজনক শাস্তি।

لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ أَمْوَالُهُمْ وَلَآ أَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللهِ شَيْئًا ط أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ ط هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (١٧)

১৭. তাদের ধন-সম্পদ আর সন্তানাদি আল্লাহ্‌র শাস্তি থেকে তাদেরকে বাঁচানোর ব্যাপারে কোন কাজে আসবে না, তারা জাহান্নামের অধিবাসী, সেখানে তারা চিরকাল থাকবে।

يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ أَنَّهُمْ عَلٰى شَيْءٍ ط أَلَآ إِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ (١٨)

১৮. আল্লাহ যেদিন তাদের সবাইকে আবার জীবিত করে উঠাবেন, তখন তারা আল্লাহ্‌র কাছে ঠিক সে রকম শপথই করবে, যেমন শপথ তারা তোমাদের নিকট করে, আর তারা মনে করে যে, তাদের কিছু (কোন ভিত্তি) আছে। জেনে রেখ, তারা খুবই মিথ্যেবাদী।

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطَانُ فَأَنْسٰهُمْ ذِكْرَ اللهِ ط أُولٰٓئِكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ط أَلَآ إِنَّ حِزْبَ الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (١٩)

১৯. শয়ত্বান তাদের উপর প্রভাব খাটিয়ে বসেছে, আর তাদেরকে আল্লাহ্‌র স্মরণ ভুলিয়ে দিয়েছে। তারা শয়ত্বানের দল। জেনে রেখ, শয়ত্বানের দলই ক্ষতিগ্রস্ত।

إِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللهَ وَرَسُوْلَهٗٓ أُولٰٓئِكَ فِي الْأَذَلِّيْنَ (٢٠)

২০. যারা আল্লাহ্‌র ও তাঁর রসূলের বিরোধিতা করে, তারাই সবচেয়ে বেশী লাঞ্ছিতদের অন্তর্ভুক্ত।

كَتَبَ اللهُ لَأَغْلِبَنَّ أَنَا وَرُسُلِيْ ط إِنَّ اللهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ (٢١)

২১. আল্লাহ লিখে দিয়েছেন যে, অবশ্য অবশ্যই আমি ও আমার রসূলগণ বিজয়ী থাকব। আল্লাহ মহা শক্তিমান ও পরাক্রমশালী।

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْأٰخِرِ يُوَآدُّوْنَ مَنْ حَآدَّ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْآ اٰبَآءَهُمْ أَوْ أَبْنَآءَهُمْ أَوْ إِخْوَانَهُمْ أَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ط أُولٰٓئِكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ

২২. আল্লাহ ও পরকালে বিশ্বাসী এমন কোন সম্প্রদায় তুমি পাবে না যারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের বিরোধিতাকারীদেরকে ভালবাসে- হোক না এই বিরোধীরা তাদের পিতা অথবা পুত্র অথবা তাদের ভাই অথবা তাদের জ্ঞাতি গোষ্ঠী। আল্লাহ এদের অন্তরে ঈমান বদ্ধমূল করে দিয়েছেন, আর

الْإِيْمَانَ وَأَيَّدَهُمْ بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۖ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۖ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۖ أُولٰٓئِكَ حِزْبُ اللهِ ۖ أَلَآ إِنَّ حِزْبَ اللهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ع (٢٢)

নিজের পক্ষ থেকে রূহ দিয়ে তাদেরকে শক্তিশালী করেছেন। তাদেরকে তিনি দাখিল করবেন জান্নাতে যার তলদেশ দিয়ে বয়ে চলেছে নদী-নালা, তাতে তারা চিরকাল থাকবে। আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট আর তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট। এরাই আল্লাহ্‌র দল; জেনে রেখ, আল্লাহ্‌র দলই সাফল্যমণ্ডিত।

سُوْرَةُ الْحَشْرِ

৫৯. সূরাহ আল-হাশ্‌র*

আয়াতঃ ২৪, রুকূ'ঃ ৩, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (١)

১. আসমান ও যমীনে যা কিছু আছে সবই আল্লাহ্‌র গৌরব ও মহিমা ঘোষণা করে। আর তিনি (আল্লাহ) পরাক্রমশালী প্রজ্ঞাময়।

هُوَ الَّذِيْٓ أَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِأَوَّلِ الْحَشْرِ ۖ مَا ظَنَنْتُمْ أَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْآ أَنَّهُمْ مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللهِ فَأَتٰهُمُ اللهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا وَقَذَفَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ بُيُوْتَهُمْ بِأَيْدِيْهِمْ وَأَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۖ فَاعْتَبِرُوْا يٰٓأُولِي الْأَبْصَارِ (٢)

২. কিতাবধারীদের অন্তর্ভুক্ত কাফিরদেরকে আক্রমণের প্রথম ধাপেই তিনিই তাদের বাড়ী থেকে বের ক'রে দিলেন। তোমরা ধারণাও করনি যে, তারা বের হবে। আর তারা মনে করেছিল যে, তাদের দূর্গগুলো তাদেরকে আল্লাহ ('র কবল) থেকে রক্ষা করবে। কিন্তু আল্লাহ তাদেরকে এমন দিক থেকে পাকড়াও করলেন যা তারা ভাবতেও পারেনি। তিনি তাদের অন্তরে ভীতির সঞ্চার করলেন। তারা তাদের নিজেদের হাত দিয়েই নিজেদের ঘরবাড়ী ধ্বংস করল, আর মু'মিনদের হাতেও (ধ্বংস করাল)। অতএব হে দৃষ্টিসম্পন্ন মানুষেরা! তোমরা শিক্ষা গ্রহণ কর।

---

* সা'ঈদ ইব্‌নু যুবায়র (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ)-কে সূরাহ তাওবাহ সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, এ তো লাঞ্ছনাকারী সূরা। وَمِنْهُمْ وَمِنْهُمْ অর্থাৎ তাদের একদল এই করেছে, আরেক দল ওই করেছে, এ বলে একাধারে এ সূরাহ অবতীর্ণ হতে থাকলে লোকেরা ধারণা করতে লাগলো যে, এ সূরায় উল্লেখ করা হবে না, এমন কেউ আর তাদের মধ্যে বাকী থাকবে না। বর্ণনাকারী বলেন, আমি তাঁকে সূরাহ আনফাল সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, এ সূরাটি বাদ্‌র যুদ্ধের সময় অবতীর্ণ হয়েছে। আমি তাকে সূরাহ হাশর সম্পর্কে জিজ্ঞেস করলাম। তিনি বললেন, এটি বানু নযীর সম্পর্কে অবতীর্ণ হয়েছে। –বুখারী ৪৮৮২ [৪০২৯; মুসলিম ৩০৩১]

وَلَوْلَآ أَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِي الدُّنْيَا ط وَلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ (٣)

৩. আল্লাহ যদি তাদের জন্য নির্বাসন না লিখে দিতেন, তাহলে তিনি তাদেরকে দুনিয়াতেই অবশ্য অবশ্যই (অন্য) শাস্তি দিতেন, পরকালে তো তাদের জন্য জাহান্নামের শাস্তি আছেই।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ج وَمَنْ يُّشَاقِّ اللّٰهَ فَإِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (٤)

৪. এর কারণ এই যে, তারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রবল বিরোধিতা করেছে; আর যে-ই আল্লাহ্‌র বিরোধিতা করবে, আল্লাহ তাকে শাস্তি দানে বড়ই কঠোর।

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ أَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰٓى أُصُوْلِهَا فَبِإِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِيَ الْفٰسِقِيْنَ (٥)

৫. তোমরা খেজুরের যে গাছগুলো কেটেছ আর যেগুলোকে তাদের মূলকাণ্ডের উপর দাঁড়িয়ে থাকতে দিয়েছ, তা আল্লাহ্‌র অনুমতিক্রমেই (করেছ)। আর (এ অনুমতি আল্লাহ এজন্য দিয়েছেন) যেন তিনি পাপাচারীদেরকে অপমানিত করেন।

وَمَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَآ أَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٦)

৬. আল্লাহ তাঁর রসূলকে তাদের কাছ থেকে যে ফায় (বিনা যুদ্ধে পাওয়া সম্পদ) দিয়েছেন তার জন্য তোমরা ঘোড়াও দৌড়াওনি, আর উটেও চড়নি, বরং আল্লাহ তাঁর রসূলগণকে যার উপর ইচ্ছে আধিপত্য দান করেন; আল্লাহ সর্ববিষয়ে ক্ষমতাবান।

مَآ أَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ أَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ لا كَيْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةً م بَيْنَ الْأَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ط وَمَآ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ج وَمَا نَهٰكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا

৭. যে ধন-সম্পদ আল্লাহ জনপদবাসীদের কাছ থেকে নিয়ে তাঁর রসূলকে দিলেন তা আল্লাহ্‌র জন্য তাঁর রসূলের জন্য আর রসূলের আত্মীয়-স্বজন, ইয়াতীম, মিসকীন ও পথিকদের জন্য যাতে তা তোমাদের মধ্যকার সম্পদশালীদের মধ্যেই আবর্তিত না হয়। রসূল তোমাদেরকে যা দেয় তা গ্রহণ কর, আর তোমাদেরকে যাত্থেকে নিষেধ করে তাত্থেকে বিরত থাক, আল্লাহকে ভয় কর, আল্লাহ

৫। ইব্‌নু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূল (ﷺ) বানী নযীর গোত্রের খেজুর গাছ জ্বালিয়ে দিয়েছিলেন এবং কেটে ফেলেছিলেন। এ গাছগুলো ছিল 'বুয়াইরা' নামক জায়গায়। এরপর আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করেছেনঃ তোমরা যে খর্জুর বৃক্ষগুলো কর্তন করেছ বা যেগুলোকে কাণ্ডের উপর স্থির রেখে দিয়েছ তা তো আল্লাহ্‌রই অনুমতিক্রমে; এ এজন্য যে, আল্লাহ্ পাপাচারীদেরকে লাঞ্ছিত করবেন। –বুখারী ৪৮৮৪ [২৩২৬; মুসলিম ১৭৪৬, তিরমিযী ১৫৫২, ৩৩০২; আবূ দাউদ ২৬১৫, ইবনু মাজাহ ২৮৪৪, ২৮৪৫; আহমাদ ৪৫১৮, ৫১১৫; দারিমী ২৪৬০]

وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۘ(٧)

কঠিন শাস্তিদাতা।

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۚ(٨)

৮. (আর এ সম্পদ) সে সব দরিদ্র মুহাজিরদের জন্য যাদেরকে তাদের বাড়ীঘর ও সম্পত্তি-সম্পদ থেকে উৎখাত করা হয়েছে। যারা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ ও সন্তুষ্টি কামনা করে, আর তারা আল্লাহ ও তাঁর রসূলকে সাহায্য করে। এরাই সত্যবাদী।

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِيْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّآ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ؕ قف وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۚ(٩)

৯. (আর এ সম্পদ তাদের জন্যও) যারা মুহাজিরদের আসার আগে থেকেই (মাদীনাহ) নগরীর বাসিন্দা ছিল আর ঈমান গ্রহণ করেছে। তারা তাদেরকে ভালবাসে যারা তাদের কাছে হিজরাত করে এসেছে। মুহাজিরদেরকে যা দেয়া হয়েছে তা পাওয়ার জন্য তারা নিজেদের অন্তরে কোন কামনা রাখে না, আর তাদেরকে (অর্থাৎ মুহাজিরদেরকে) নিজেদের উপর অগ্রাধিকার দেয়– নিজেরা যতই অভাবগ্রস্ত হোক না কেন। বস্তুত: যাদেরকে হৃদয়ের সংকীর্ণতা থেকে রক্ষা করা হয়েছে তারাই সফলকাম।

৭। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহ্ লা'নাত করেছেন ঐ সমস্ত নারীর প্রতি যারা অন্যের শরীরে উল্কি অংকণ করে, নিজ শরীরে উল্কি অংকণ করায়, যারা সৌন্দর্যের জন্য ভ্রূ-চুল উপড়িয়ে ফেলে ও দাঁতের মাঝে ফাঁক সৃষ্টি করে। সে সব নারী আল্লাহ্‌র সৃষ্টিতে বিকৃতি আনয়ন করে। এরপর বানী আসাদ গোত্রের উম্মু ইয়াকূব নামের এক মহিলার কাছে এ সংবাদ পৌঁছলে সে এসে বলল, আমি জানতে পারলাম, আপনি এ ধরনের মহিলাদের প্রতি লা'নত করেছেন। তিনি বললেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) যার প্রতি লা'নাত করেছেন, আল্লাহর কিতাবে যার প্রতি লা'নাত করা হয়েছে, আমি তার প্রতি লা'নাত করব না কেন? তখন মহিলা বলল, আমি দুই ফলকের মাঝে যা আছে তা (পূর্ণ কুরআন) পড়েছি। কিন্তু আপনি যা বলেছেন, তা তো এতে পাইনি। 'আবদুল্লাহ্ বললেন, যদি তুমি কুরআন পড়তে তাহলে অবশ্যই তা পেতে, তুমি কি পড়নি রসূল (ﷺ) তোমাদেরকে যা দেন তা তোমরা গ্রহণ কর এবং যা থেকে তোমাদেরকে নিষেধ করেন তা হতে বিরত থাক। মহিলাটি বলল, হ্যাঁ নিশ্চয়ই পড়েছি। 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) বললেন, রসূল (ﷺ) এ কাজ করতে নিষেধ করেছেন। তখন মহিলা বলল, আমার মনে হয় আপনার পরিবারও এ কাজ করে। তিনি বললেন, তুমি যাও এবং ভালমত দেখে এসো। এরপর মহিলা গেল এবং ভালভাবে দেখে এলো। কিন্তু তার দেখার কিছুই দেখতে পেলো না। তখন 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) বললেন, যদি আমার স্ত্রী এমন করত, তবে সে আমার সঙ্গে একত্র থাকতে পারত না। –বুখারী ৪৮৮৬ [৪৮৮৭, ৫৯৩১, ৫৯৩৯, ৫৯৪৩, ৫৯৪৮; মুসলিম ২১২৫, তিরমিযী ২৭৮২, নাসায়ী ৫০৯৯, ৫১০৭-৫১০৯, ৫২৫২-৫২৫৪; আবূ দাউদ ৪১৬৯, ইবনু মাজাহ ১৯৮৯, আহমাদ ৩৮৭১, ৩৯৩৫, ৩৯৪৫; দারিমী ২৬৪৭]

৯। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক ব্যক্তি রসূল (ﷺ) -এর কাছে এসে বলল, আমি খুব ক্ষুধার্ত। তখন তিনি তাঁর সহধর্মিণীদের নিকট পাঠালেন; কিন্তু তিনি তাদের কাছে কিছুই পেলেন না। এরপর রসূল (ﷺ) বললেন, এমন কেউ আছে কি, যে আজ রাতে এ লোকটিকে মেহমানদারী করতে পারে? আল্লাহ্ তাঁর প্রতি

وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِإِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا بِالْإِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ إِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ع (١٠)

১০. (এ সম্পদ তাদের জন্যও) যারা অগ্রবর্তীদের পরে (ইসলামের ছায়াতলে) এসেছে। তারা বলে– ‘হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে আর আমাদের ভাইদেরকে ক্ষমা কর যারা ঈমানের ক্ষেত্রে আমাদের অগ্রবর্তী হয়েছে, আর যারা ঈমান এনেছে তাদের ব্যাপারে আমাদের অন্তরে কোন হিংসা বিদ্বেষ রেখো না। হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি বড়ই করুণাময়, অতি দয়ালু।’

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ لِإِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ لَئِنْ أُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ فِيْكُمْ أَحَدًا أَبَدًا لا وَّإِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ط وَاللهُ يَشْهَدُ إِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١١)

১১. তুমি কি তাদেরকে দেখনি যারা মুনাফিকী করেছিল? আহলে কিতাবের মধ্যে যারা কুফুরী করেছিল তাদের সেই ভাইদেরকে তারা (অর্থাৎ মুনাফিকরা) বলেছিল- ‘তোমরা যদি বহিস্কৃত হও, তাহলে অবশ্য অবশ্যই আমরাও তোমাদের সাথে বেরিয়ে যাব, আর তোমাদের ব্যাপারে আমরা কক্ষনো কারো কথা মেনে নেব না। আর যদি তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করা হয়, তাহলে আমরা অবশ্য অবশ্যই তোমাদেরকে সাহায্য করব। আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন, তারা অবশ্যই মিথ্যেবাদী।

لَئِنْ أُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ج وَلَئِنْ قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ج وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ لَيُوَلُّنَّ الْأَدْبَارَ قف ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ (١٢)

১২. তারা বহিস্কৃত হলেও এরা তাদের সাথে বেরিয়ে যাবে না। তাদের উপর আক্রমণ করা হলেও এরা তাদেরকে কক্ষনো সাহায্য করবে না। আর এরা সাহায্য করলেও তারা (অর্থাৎ মুনাফিকরা) অবশ্য অবশ্যই পৃষ্ঠপ্রদর্শন করবে, অতঃপর তারা (অর্থাৎ কাফিররা) আর কোন সাহায্যই পাবে না।

لَأَنْتُمْ أَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ اللهِ ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ (١٣)

১৩. তাদের অন্তরে আল্লাহ্র চেয়ে তোমাদের ভয়ই বেশি প্রবল। এর কারণ এই যে, তারা এক বিবেক-বুদ্ধিহীন সম্প্রদায়।

রহমাত করবেন। তখন আনসারদের এক ব্যক্তি দাঁড়িয়ে বললেন, আমি আছি, হে আল্লাহ্র রসূল! এরপর তিনি তাঁকে সঙ্গে নিয়ে বাড়িতে গেলেন এবং নিজ স্ত্রীকে বললেন, ইনি রসূল (ﷺ) -এর মেহমান। কোন জিনিস জমা করে রাখবে না। মহিলা বলল, আল্লাহ্র কসম! আমার কাছে ছেলে-মেয়েদের খাবার ছাড়া আর কিছুই নেই। তিনি বললেন, ছেলেমেয়েরা রাতের খাবার চাইলে তুমি তাদেরকে ঘুম পাড়িয়ে দিও, (খাবার নিয়ে) আমার কাছে আসিও, অতঃপর বাতিটি নিভিয়ে দিও। আজ রাতে আমরা ভুখা থাকব। সুতরাং মহিলা তা-ই করল। পরদিন সকালে আনসারী সাহাবী রসূল (ﷺ) -এর খিদমাতে আসলেন। তিনি বললেন, অমুক ব্যক্তি ও তার স্ত্রীর প্রতি আল্লাহ্ সন্তুষ্ট হয়েছেন অথবা অমুক অমুকের কাজে আল্লাহ্ হেসেছেন। এরপর আল্লাহ্ অবতীর্ণ করলেনঃ “এবং তাঁরা তাদের নিজেদের উপর অন্যদের প্রাধান্য দেয় নিজেরা অভাবগ্রস্ত হওয়া সত্ত্বেও।” –বুখারী ৪৮৮৯ [৩৭৯৮; মুসলিম ২০৫৪, তিরমিযী ৩৩০৪]

لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا إِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ أَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ط بَأْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ط تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ط ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ج (١٤)

১৪. তারা ঐক্যবদ্ধ হয়ে তোমাদের বিরুদ্ধে যুদ্ধ করতে সমর্থ নয়, সুরক্ষিত জনপদে বা দেয়ালের আড়ালে অবস্থান ছাড়া। তাদের নিজেদের মধ্যেই আছে ভীষণ শত্রুতা। তুমি তাদেরকে ঐক্যবদ্ধ মনে কর কিন্তু তাদের অন্তরগুলো ভিন্ন ভিন্ন। এর কারণ এই যে, তারা এক নির্বোধ সম্প্রদায়।

كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا وَبَالَ أَمْرِهِمْ ج وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ج (١٥)

১৫. এরা তাদের (অর্থাৎ ইয়াহূদী বানু কাইনুকার) মত যারা এদের পূর্বে নিকটবর্তী সময়েই তাদের কৃতকর্মের কুফল আস্বাদন করেছে। তাদের জন্য আছে মর্মান্তিক শাস্তি।

كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ إِذْ قَالَ لِلْإِنْسَانِ اكْفُرْ ج فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ إِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ إِنِّيْٓ أَخَافُ اللهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ (١٦)

১৬. (তাদের মিত্ররা তাদেরকে প্রতারিত করেছে) শয়ত্বানের মত। যখন মানুষকে সে বলে- 'কুফুরী কর'। অতঃপর মানুষ যখন কুফুরী করে তখন শয়ত্বান বলে- 'তোমার সাথে আমার কোন সম্পর্ক নেই, আমি বিশ্বজগতের প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় করি।'

فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ أَنَّهُمَا فِي النَّارِ خٰلِدَيْنِ فِيْهَا ط وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ ع (١٧)

১৭. কাজেই তাদের উভয়ের পরিণাম হবে এই যে, তারা চিরকাল জাহান্নামে থাকবে, আর যালিমদের এটাই প্রতিফল।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللهَ وَلْتَنْظُرْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ج وَاتَّقُوا اللهَ ط إِنَّ اللهَ خَبِيْرٌ بِمَا تَعْمَلُوْنَ (١٨)

১৮. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহকে ভয় কর। প্রত্যেকেই চিন্তা করে দেখুক, আগামীকালের জন্য সে কী (পুণ্য কাজ) অগ্রিম পাঠিয়েছে। আর তোমরা আল্লাহকে ভয় কর, তোমরা যা কর আল্লাহ সে সম্পর্কে পুরোপুরি খবর রাখেন।

وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللهَ فَأَنْسٰهُمْ أَنْفُسَهُمْ ط أُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ (١٩)

১৯. তোমরা তাদের মত হয়ো না যারা আল্লাহকে ভুলে গেছে, ফলে আল্লাহও তাদেরকে করেছেন আত্মভোলা। এরা পাপাচারী লোক।

لَا يَسْتَوِيْٓ أَصْحٰبُ النَّارِ وَأَصْحٰبُ

২০. জাহান্নামের অধিবাসী আর জান্নাতের অধিবাসী সমান হতে পারে না, জান্নাতের

১৮। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেনঃ সাত ব্যক্তিকে আল্লাহ তা'আলা রাহমাতের ছায়া দ্বারা আচ্ছাদিত করেন। তাদের মধ্যে এক ব্যক্তি যে আল্লাহর কথা (এমনভাবে) স্মরণ করে যে, তার চোখ দু'টি অশ্রু বর্ষণ করে। –বুখারী ৬৪৭৯ [৬৬০, ১৪২৩, ৬৮০৬; মুসলিম ১০৩১, তিরমিযী ২৩৯১, নাসায়ী ৫৩৮০, আহমাদ ৯৩৭৩, মালিক ১৭৭৭]

الْجَنَّةِ ؕ أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ (٢٠)

অধিবাসীরাই সফল।

لَوْ أَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰى جَبَلٍ لَّرَأَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللهِ ؕ وَتِلْكَ الْأَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ (٢١)

২১. আমি যদি এ কুরআনকে পাহাড়ের উপর অবতীর্ণ করতাম, তাহলে তুমি আল্লাহ্র ভয়ে তাকে বিনীত ও বিদীর্ণ দেখতে। এ সব উদাহরণ আমি মানুষের জন্য বর্ণনা করি যাতে তারা (নিজেদের ব্যাপারে) চিন্তা-ভাবনা করে।

هُوَ اللهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ج هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ (٢٢)

২২. তিনিই আল্লাহ্, যিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, অদৃশ্য ও দৃশ্যের জ্ঞানের অধিকারী, পরম দয়াময়, পরম দয়ালু।

هُوَ اللهُ الَّذِيْ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ج اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٢٣)

২৩. তিনিই আল্লাহ্ যিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, তিনিই বাদশাহ, অতি পবিত্র, পূর্ণ শান্তিময়, নিরাপত্তা দানকারী, প্রতাপশালী, পর্যবেক্ষক, মহা পরাক্রমশালী, অপ্রতিরোধ্য, প্রকৃত গর্বের অধিকারী। তারা যাকে (তাঁর) শরীক করে তাথেকে তিনি পবিত্র, মহান।

هُوَ اللهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْأَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ج وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ع (٢٤)

২৪. তিনিই আল্লাহ সৃষ্টিকারী, উদ্ভাবনকারী, আকার আকৃতি প্রদানকারী। সমস্ত উত্তম নামের অধিকারী। আসমান ও যমীনে যা আছে সবই তাঁর গৌরব ও মহিমা ঘোষণা করে। তিনি প্রবল পরাক্রান্ত মহা প্রজ্ঞাবান।

৬০. সূরাহ আল-মুমতাহিনাহ

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ

আয়াতঃ ১৩, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

يٰۤأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ وَعَدُوَّكُمْ أَوْلِيَآءَ تُلْقُوْنَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَآءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ج يُخْرِجُوْنَ

১. হে ঈমানদারগণ! তোমরা আমার ও তোমাদের শত্রুদেরকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না, তোমরা তাদের কাছে বন্ধুত্বের খবর পাঠাও, অথচ যে সত্য তোমাদের কাছে এসেছে তারা তা প্রত্যাখ্যান করেছে। তারা রসূলকে আর তোমাদেরকে শুধু এ কারণে বের করে দিয়েছে যে, তোমরা তোমাদের

الرَّسُوْلَ وَإِيَّاكُمْ أَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللهِ رَبِّكُمْ ط إِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِيْ تُسِرُّوْنَ إِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ صلے وَأَنَا أَعْلَمُ بِمَآ أَخْفَيْتُمْ وَمَآ أَعْلَنْتُمْ ط وَمَنْ يَّفْعَلْهُ مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ (١)

প্রতিপালক আল্লাহ্য় বিশ্বাস কর। তোমরা যদি আমার সন্তুষ্টি কামনায় আমার পথে জিহাদে বের হয়ে থাক, তাহলে তোমরা কেন গোপনে তাদের সাথে বন্ধুত্ব করছ? তোমরা যা গোপন কর আর তোমরা যা প্রকাশ কর, তা আমি খুব ভাল করেই জানি। তোমাদের মধ্যে যে তা করে সে সরল পথ থেকে ভ্রষ্ট হয়ে গেছে।

إِنْ يَّثْقَفُوْكُمْ يَكُوْنُوْا لَكُمْ أَعْدَآءً وَّيَبْسُطُوْآ إِلَيْكُمْ أَيْدِيَهُمْ وَأَلْسِنَتَهُمْ بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ط (٢)

২. তারা তোমাদেরকে জব্দ করতে পারলেই শত্রুর আচরণ করবে, আর তোমাদের অনিষ্ট করার জন্য তারা তাদের হাত ও মুখের ভাষা সম্প্রসারিত করবে আর তারা চাইবে যে, তোমরাও যেন কুফ্রী কর।

لَنْ تَنْفَعَكُمْ أَرْحَامُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ ج يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ج يَفْصِلُ

৩. ক্বিয়ামতের দিন তোমাদের আত্মীয়-স্বজন ও সন্তানাদি তোমাদের কোনই উপকারে আসবে না। (নিজ নিজ 'আমালের ভিত্তিতে) আল্লাহ তোমাদের মধ্যে ফয়সালা করে দিবেন; তোমরা যা কর

১। 'আলী (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূল (ﷺ) যুবায়র (রাঃ), মিকদাদ (রাঃ) ও আমাকে পাঠালেন এবং বললেন, তোমরা 'রওযা খাখ' নামক স্থানে যাও। সেখানে এক উষ্ট্রারোহিণী মহিলা পাবে। তার সঙ্গে একখানা পত্র আছে, তোমরা তার থেকে সে পত্রখানা নিয়ে নিবে। এরপর আমরা রওয়ানা হলাম। আমাদের ঘোড়া আমাদেরকে নিয়ে ছুটে চলল। যেতে যেতে আমরা রওযায় গিয়ে পৌছলাম। সেখানে পৌছেই আমরা উষ্ট্রারোহিণীকে পেয়ে গেলাম। আমরা বললাম, পত্রখানা বের কর সে বলল, আমার সঙ্গে কোন পত্র নেই। আমরা বললাম, অবশ্যই তুমি পত্রখানা বের করবে, অন্যথায় তোমাকে বিবস্ত্র করে ফেলা হবে। এরপর সে তার চুলের বেনী থেকে পত্রখানা বের করল। আমরা পত্রখানা নিয়ে নাবী (ﷺ) -এর কাছে এলাম। দেখা গেল, পত্রখানা হাতিব ইব্নু আবূ বাল্তাআহ্ (রাঃ)-এর পক্ষ হতে মাক্কার কতিপয় মুশরিকের কাছে লেখা যাতে তিনি নাবী (ﷺ) -এর বিষয় তাদের কাছে ব্যক্ত করে দিয়েছেন। নাবী (ﷺ) জিজ্ঞেস করলেন, হাতিব কী ব্যাপার? তিনি বললেন, হে আল্লাহ্র রসূল! আমার ব্যাপারে ত্বড়িৎ কোন সিদ্ধান্ত নেবেন না। আমি কুরাইশ বংশীয় লোকদের সঙ্গে বসবাসকারী এক ব্যক্তি; কিন্তু তাদের সঙ্গে আমার কোন বংশগত সম্পর্ক নেই। আপনার সঙ্গে যত মুহাজির আছেন, তাদের সবারই সেখানে আত্মীয়-স্বজন আছে। এসব আত্মীয়-স্বজনের কারণে মাক্কায় তাদের পরিবার-পরিজন এবং ধন-সম্পদ রক্ষা পাচ্ছে। আমি চেয়েছিলাম, যেহেতু তাদের সঙ্গে আমার বংশীয় কোন সম্পর্ক নেই,তাই এবার যদি আমি তাদের প্রতি অনুগ্রহ করি, তাহলে হয়তো তারাও আমার আত্মীয়-স্বজনের প্রতি সহযোগিতার হাত বাড়াবে। কুফ্র ও স্বীয় ধর্ম ত্যাগ করার মনোভাব নিয়ে আমি এ কাজ করিনি। তখন নাবী (ﷺ) বললেন, সে তোমাদের কাছে সত্য কথাই বলেছে। তখন 'উমার (রাঃ) বললেন, হে আল্লাহ্র রসূল! আমাকে অনুমতি দিন এক্ষুণি আমি তাঁর গর্দান উড়িয়ে দেই। নাবী (ﷺ) বললেন, সে বাদ্র যুদ্ধে অংশগ্রহণ করেছে। তুমি কি জান না, আল্লাহ্ অবশ্যই বাদ্রে অংশগ্রহণকারীদের প্রতি লক্ষ্য করে বলেছেনঃ "তোমরা যা চাও কর, আমি তোমাদেরকে ক্ষমা করে দিয়েছি।" আমর বলেন, এ ঘটনার প্রেক্ষিতে অবতীর্ণ হয়েছেঃ "হে ঈমানদারগণ! আমার শত্রু ও তোমাদের শত্রুকে বন্ধুরূপে গ্রহণ করো না।" সুফ্ইয়ান (রহ.) বলেন, আয়াতটি হাদীসের অংশ না আম্র (রাঃ)-এর কথা, তা আমি জানি না। -বুখারী ৪৮৯০ [৩০০৭; মুসলিম ২৪৯৪, তিরমিযী ৩৩০৫, আবূ দাউদ ২৬৫০, আহমাদ ৬০১, ৮২৯, ১০৮৬]

بَيْنَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٣)

আল্লাহ তা দেখেন।

قَدْ كَانَتْ لَكُمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِيْٓ إِبْرَاهِيْمَ وَالَّذِيْنَ مَعَهُ ۚ إِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ إِنَّا بُرَآءُ مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۖ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ أَبَدًا حَتّٰى تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَحْدَهُ ٓ إِلَّا قَوْلَ إِبْرَاهِيْمَ لِأَبِيْهِ لَأَسْتَغْفِرَنَّ لَكَ وَمَآ أَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ۚ رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَإِلَيْكَ أَنَبْنَا وَإِلَيْكَ الْمَصِيْرُ (٤)

৪. ইব্‌রাহীম ও তার সঙ্গী-সাথীদের মধ্যে তোমাদের জন্য আছে উত্তম আদর্শ। যখন তারা তাদের সম্প্রদায়কে বলেছিল– ‘তোমাদের সঙ্গে আর আল্লাহকে বাদ দিয়ে তোমরা যাদের ‘ইবাদাত কর তাদের সঙ্গে আমাদের কোন সম্পর্ক নেই। আমরা তোমাদেরকে প্রত্যাখ্যান করছি। আমাদের আর তোমাদের মাঝে চিরকালের জন্য শত্রুতা ও বিদ্বেষ শুরু হয়ে গেছে যতক্ষণ তোমরা এক আল্লাহ্‌র প্রতি ঈমান না আনবে। তবে ইব্‌রাহীম যে তার পিতাকে বলেছিল– ‘আমি অবশ্য অবশ্যই তোমার জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করব আর আমি তোমার জন্য আল্লাহ্‌র কাছ থেকে কোন কিছু করারই অধিকার রাখি না”– এটা একটা ব্যতিক্রম। (আর ইব্‌রাহীম ও তার সঙ্গী সাথীরা প্রার্থনা করেছিল) ‘হে আমাদের প্রতিপালক! আমরা তোমারই উপর নির্ভর করছি, তোমারই অভিমুখী হচ্ছি, আর (সব কিছুর) প্রত্যাবর্তন তো তোমারই পানে।

رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ إِنَّكَ أَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٥)

৫. হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদেরকে কাফিরদের উৎপীড়নের পাত্র করো না, হে আমাদের প্রতিপালক! তুমি আমাদেরকে ক্ষমা কর, তুমি মহা পরাক্রান্ত, মহা বিজ্ঞানী।

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْهِمْ أُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ الْاٰخِرَ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَإِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ع (٦)

৬. তোমরা যারা আল্লাহ (’র রহমত) ও শেষ দিবসের (সাফল্যের) প্রত্যাশী তাদের জন্য উত্তম আদর্শ রয়েছে তাদের [অর্থাৎ ইব্‌রাহীম (‘আ.) তাঁর অনুসারীদের] মধ্যে। আর কেউ মুখ ফিরিয়ে নিলে (সে জেনে রাখুক) আল্লাহ অমুখাপেক্ষী, প্রশংসিত।

عَسَى اللّٰهُ أَنْ يَّجْعَلَ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَ الَّذِيْنَ عَادَيْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ۚ وَاللّٰهُ قَدِيْرٌ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٧)

৭. সম্ভবতঃ আল্লাহ তোমাদের মধ্যে আর তাদের মধ্যেকার যাদেরকে তোমরা শত্রু বানিয়ে নিয়েছ তাদের মধ্যে বন্ধুত্ব সৃষ্টি করে দিবেন (তাদের মুসলিম হয়ে যাওয়ার মাধ্যমে)। আল্লাহ বড়ই শক্তিমান, আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, অতীব দয়ালু।

لَا يَنْهَاكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ لَمْ

৮. দীনের ব্যাপারে যারা তোমাদের সাথে যুদ্ধ করেনি, আর তোমাদেরকে তোমাদের ঘর-বাড়ী

يُقَاتِلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ أَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا إِلَيْهِمْ ۚ إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ (٨)

থেকে বের ক'রে দেয়নি তাদের সঙ্গে সদয় ব্যবহার করতে আর ন্যায়নিষ্ঠ আচরণ করতে আল্লাহ নিষেধ করেননি। আল্লাহ ন্যায়পরায়ণদেরকে ভালবাসেন।

إِنَّمَا يَنْهٰكُمُ اللهُ عَنِ الَّذِيْنَ قَاتَلُوْكُمْ فِي الدِّيْنِ وَأَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى إِخْرَاجِكُمْ أَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ (٩)

৯. আল্লাহ্ তোমাদেরকে কেবল তাদের সঙ্গে বন্ধুত্ব করতে নিষেধ করেছেন যারা তোমাদের সঙ্গে দীনের ব্যাপারে যুদ্ধ করেছে, তোমাদেরকে তোমাদের ঘর-বাড়ী থেকে বের করে দিয়েছে আর তোমাদেরকে বের করে দেয়ার ব্যাপারে সাহায্য করেছে। যারা তাদের সঙ্গে বন্ধুত্ব করে তারাই যালিম।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا جَآءَكُمُ الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۚ اللهُ أَعْلَمُ بِإِيْمَانِهِنَّ ۚ فَإِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ إِلَى الْكُفَّارِ ۚ لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۚ وَاٰتُوْهُمْ مَّآ أَنْفَقُوْا ۚ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ أَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ إِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ ۚ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ وَاسْأَلُوْا مَآ أَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْأَلُوْا مَآ أَنْفَقُوْا ۚ ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللهِ ۚ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۚ وَاللهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (١٠)

১০. হে মু'মিনগণ! ঈমানদার নারীরা যখন তোমাদের কাছে হিজরাত করে আসে তখন তাদেরকে পরখ করে দেখ (তারা সত্যিই ঈমান এনেছে কি না)। তাদের ঈমান সম্বন্ধে আল্লাহ খুব ভালভাবেই জানেন। অতঃপর তোমরা যদি জানতে পার যে, তারা মু'মিনা, তাহলে তাদেরকে কাফিরদের কাছে ফেরত পাঠিও না। মু'মিনা নারীরা কাফিরদের জন্য হালাল নয়, আর কাফিররাও মু'মিনা নারীদের জন্য হালাল নয়। কাফির স্বামীরা (মাহর স্বরূপ) যা তাদের জন্য খরচ করেছিল তা কাফিরদেরকে ফেরত দিয়ে দাও। অতঃপর তোমরা তাদেরকে মাহ্র প্রদান করতঃ বিয়ে করলে তাতে তোমাদের কোন অপরাধ হবে না। তোমরা কাফির নারীদেরকে (বিবাহের) বন্ধনে আটকে রেখ না। তোমরা (তাদের মাহর স্বরূপ) যা ব্যয় করেছ তা ফেরত চেয়ে নাও, আর কাফিররাও ফেরত চেয়ে নিবে যা তারা ব্যয় করেছে (তাদের মু'মিনা স্ত্রীদের মাহর স্বরূপ)। এটা আল্লাহ্‌র নির্দেশ। তিনি তোমাদের মাঝে ফয়সালা করে দেন। আল্লাহ সর্ব জ্ঞানের অধিকারী , মহা বিজ্ঞানী।

১০। 'উরওয়াহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (রাঃ) তাকে বলেছেন, কোন মু'মিন মহিলা রসূল-এর কাছে হিজরাত করে এলে, তিনি তাকে আল্লাহ্‌র এ আয়াতের ভিত্তিতে পরীক্ষা করতেন- অর্থঃ "হে নাবী! মু'মিন নারীগণ যখন তোমার কাছে এ মর্মে বায়'আত করতে আসে যে, তারা আল্লাহ্‌র সঙ্গে কোন শরীক করবে না, চুরি করবে না, ব্যভিচার করবে না, নিজেদের সন্তানদেরকে হত্যা করবে না, তারা

وَإِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ أَزْوَاجِكُمْ إِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَآتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ أَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ أَنْفَقُوْا ط وَاتَّقُوا اللهَ الَّذِيْٓ أَنْتُمْ بِهِ مُؤْمِنُوْنَ (١١)

১১. তোমাদের স্ত্রীদের মধ্যে কেউ যদি (কাফির হওয়ার কারণে তোমাদের) হাতছাড়া হয়ে কাফিরদের নিকট থেকে যায় এবং (তাদের কোন স্ত্রীলোক তোমাদের কাছে চলে আসার ফলে) তোমাদের যদি সুযোগ আসে, তখন (তোমাদের মধ্যে) যাদের স্ত্রীগণ হাতছাড়া হয়ে গেছে তাদেরকে তারা (তাদের স্ত্রীদের মাহর স্বরূপ) যা ব্যয় করেছে তার সমপরিমাণ অর্থ প্রদান করবে। তোমরা আল্লাহকে ভয় কর যার প্রতি তোমরা ঈমান এনেছ।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا جَآءَكَ الْمُؤْمِنَاتُ يُبَايِعْنَكَ عَلٰٓى أَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللهِ شَيْئًا وَّلَا يَسْرِقْنَ وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ أَوْلَادَهُنَّ وَلَا يَأْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهُ بَيْنَ أَيْدِيْهِنَّ وَأَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللهَ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٢)

১২. হে নবী! যখন মু'মিনা নারীরা তোমার কাছে এসে বাই'আত করে যে, তারা আল্লাহ্র সঙ্গে কোন কিছুকে শরীক করবে না, চুরি করবে না, যিনা করবে না, নিজেদের সন্তান হত্যা করবে না, জেনে শুনে কোন অপবাদ রচনা ক'রে রটাবে না এবং কোন ভাল কাজে তোমার অবাধ্যতা করবে না- তাহলে তুমি তাদের বাই'আত (অর্থাৎ তোমার প্রতি আনুগত্যের শপথ) গ্রহণ কর এবং তাদের জন্য আল্লাহ্র নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর; আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ

১৩. হে মু'মিনগণ! তোমরা এমন সম্প্রদায়ের সঙ্গে বন্ধুত্ব করো না আল্লাহ যাদের প্রতি রাগান্বিত। তারা পরকাল সম্পর্কে তেমনি নিরাশ যেমন

সজ্ঞানে কোন অপবাদ রচনা করে রটাবে না, এবং সৎকার্যে তোমাকে অমান্য করবে না, তখন তাদের বায়'আত গ্রহণ করবে এবং তাদের জন্য আল্লাহ্র কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করবে।) আল্লাহ্ তো ক্ষমাশীল, পরম দয়ালু।" 'উরওয়াহ (রহ.) বলেন, 'আয়িশাহ (রাঃ) বলেছেন, যে মু'মিনা মহিলা এসব শর্ত মেনে নিত, রসূল (ﷺ) তাকে বলতেন, আমি কথার মাধ্যমে তোমাকে বায়'আত করে নিলাম। আল্লাহ্র কসম! বায়'আত কালে কোন নারীর হাত নাবী (ﷺ) -এর হাতকে স্পর্শ করেনি। নারীদেরকে তিনি শুধু এ কথার দ্বারাই বায়'আত করতেন قَدْ بَايَعْتُكِ عَلٰى ذٰلِكِ অর্থাৎ আমি তোমাকে এ কথার ওপর বায়'আত করলাম। -বুখারী ৪৮৯১ [২৭১৩; মুসলিম ১৮৬৬, তিরমিযী ৩৩০৬, ইবনু মাজাহ ২৮৭৫, আহমাদ ২৪৩০৮, ২৪৬৪৯]

১২। উম্মি 'আতিয়্যাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা রসূল (ﷺ) -এর কাছে বায়'আত গ্রহণ করেছি। এরপর তিনি আমাদের সামনে পাঠ করলেন, "তারা আল্লাহ্র সঙ্গে কোন কিছুকে শরীক স্থির করবে না।" এরপর তিনি আমাদেরকে মৃত ব্যক্তির জন্য বিলাপ করে কাঁদতে নিষেধ করলেন। এ সময় এক মহিলা তার হাত টেনে নিয়ে বলল, অমুক মহিলা আমাকে বিলাপে সহযোগিতা করেছে, আমি তাকে এর বিনিময় দিতে ইচ্ছা করেছি। নাবী (ﷺ) তাকে কিছুই বলেননি। এরপর মহিলাটি উঠে চলে গেল এবং আবার ফিরে আসলো, তখন রসূল (ﷺ) তাকে বায়'আত করলেন। -বুখারী ৪৮৯২ [১৩০৬; মুসলিম ৯৩৬, নাসায়ী ৪১৭৯, ৪১৮০; আবূ দাউদ ৩১২৭, আহমাদ ২০২৬৭, ২৬৭৫৩, ২৬৭৬০]

الْاٰخِرَةِ كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ أَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ع (١٣)

কবরবাসী কাফিররা নিরাশ (কারণ তারা পরকালকে অবিশ্বাস করার কারণে তার জন্য কোন প্রস্তুতি গ্রহণ করেনি।)

৬১. সূরাহ আস্-সাফ্

سُوْرَةُ الصَّفِّ

আয়াতঃ ১৪, রুকু'ঃ ২, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ج وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (١)

১. আসমানে যা কিছু আছে আর যমীনে যা কিছু আছে (সবই) আল্লাহ্‌র প্রশংসা ও মহিমা ঘোষণা করে; তিনি মহাপরাক্রান্ত মহাবিজ্ঞানী।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (٢)

২. হে মু'মিনগণ! তোমরা এমন কথা কেন বল যা তোমরা কর না।

كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللهِ أَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ (٣)

৩. আল্লাহ্‌র দৃষ্টিতে এটা অত্যন্ত নিন্দনীয় ব্যাপার যে, তোমরা বলবে এমন কথা যা তোমরা কর না।

إِنَّ اللهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِهٖ صَفًّا كَأَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ (٤)

৪. আল্লাহ তাদেরকে ভালবাসেন যারা তাঁর পথে সারিবদ্ধ হয়ে যুদ্ধ করে– যেন তারা সীসা-গলানো প্রাচীর।

وَإِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِيْ وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ أَنِّيْ رَسُوْلُ اللهِ إِلَيْكُمْ ط

৫. স্মরণ কর, যখন মূসা তার সম্প্রদায়কে বলেছিল, 'হে আমার সম্প্রদায়! তোমরা আমাকে কেন কষ্ট দিচ্ছ, তোমরা তো জানই যে, আমি

২-৩। আবূ ওয়ায়িল থেকে বর্ণিত। তিনি বলেন, উসামাকে বলা হল, আপনি কেন এ ব্যক্তি সম্পর্কে কিছু বলতেছেন না? তিনি বললেন, আমি ব্যক্তিগতভাবে বলেছি তবে এতটুকু বলিনি যাতে ফিতনা সৃষ্টির প্রথম উদ্যোক্তা আমি হব। কোন ব্যক্তি দুই বা ততোধিক ব্যক্তির আমীর নির্বাচিত হয়েছে এমন ব্যক্তিকেও আমি 'আপনি ভাল' এ কথা বলতে রাজী নই। কেননা আমি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি যে, ক্বিয়ামাতের দিন এক ব্যক্তিকে আনা হবে অতঃপর তাকে জাহান্নামে নিক্ষেপ করা হবে এবং গাধা চক্রাকারে ঘুরে যেমন গম পিষে তেমনিভাবে তাকে জাহান্নামে পিষ্ট করা হবে। (শাস্তি দেয়া হবে) অতঃপর (তার ভীষণ ও অন্যান্য শাস্তি দেখে) দোযখবাসীরা তার চতুষ্পার্শ্বে জড়ো হয়ে জিজ্ঞেস করবে, হে অমুক, তুমি কি আমাদেরকে ভাল কাজের আদেশ ও মন্দ কাজের নিষেধ করতে না? (তারপর ও তোমার এ অবস্থা কেন?) সে বলবে, আমি তো ভাল কাজের আদেশ করেছিলাম কিন্তু নিজে তা করতাম না। আর মন্দ কাজের নিষেধ করতাম কিন্তু আমি নিজেই মন্দকাজ করতাম। –বুখারী ৭০৯৮ [৩২৬৭; মুসলিম ২৯৮৯, আহমাদ ২১২৭৭, ২১২৭৮]

فَلَمَّا زَاغُوْٓا أَزَاغَ اللهُ قُلُوْبَهُمْ ؕ وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَاسِقِيْنَ (٥)

তোমাদের নিকট আল্লাহ্র রসূল!' অতঃপর তারা যখন বাঁকা পথ ধরল, আল্লাহ তাদের হৃদয়কে বাঁকা করে দিলেন। আল্লাহ পাপাচারীদেরকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

وَإِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ إِنِّيْ رَسُوْلُ اللهِ إِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًا ۢبِرَسُوْلٍ يَّأْتِيْ مِنْ ۢ بَعْدِي اسْمُهٗٓ أَحْمَدُ ؕ فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٦)

৬. স্মরণ কর, যখন মারইয়ামের পুত্র 'ঈসা বলেছিল, 'হে বানী ইসরাঈল! আমি তোমাদের প্রতি আল্লাহ্র রসূল, আমার পূর্ববর্তী তাওরাতের আমি সত্যায়নকারী এবং আমি একজন রসূলের সুসংবাদদাতা যিনি আমার পরে আসবেন, যার নাম আহমাদ।' অতঃপর সে [অর্থাৎ 'ঈসা ('আ.) যাঁর সম্পর্কে সুসংবাদ দিয়ে ছিলেন সেই নবী] যখন তাদের কাছে সুস্পষ্ট নিদর্শন নিয়ে আসল, তখন তারা বলল, 'এটা তো স্পষ্ট যাদু।'

وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللهِ الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰٓى إِلَى الْإِسْلَامِ ؕ وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ج (٧)

৭. তার চেয়ে অধিক যালিম আর কে যে আল্লাহ সম্বন্ধে মিথ্যে রচনা করে– অথচ তাকে ইসলামের পথ অবলম্বন করার জন্য আহ্বান জানানো হয়। (এ রকম) যালিম সম্প্রদায়কে আল্লাহ সঠিক পথে চালিত করেন না।

يُرِيْدُوْنَ لِيُطْفِئُوْا نُوْرَ اللهِ بِأَفْوَاهِهِمْ ؕ وَاللهُ مُتِمُّ نُوْرِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ (٨)

৮. তারা তাদের মুখের ফুঁৎকারে আল্লাহ্র নূরকে নিভিয়ে দিতে চায়, কিন্তু আল্লাহ তাঁর নূরকে পরিপূর্ণ করবেনই যদিও কাফিররা (তা) অপছন্দ করে।

هُوَ الَّذِيْٓ أَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ع (٩)

৯. তিনিই তাঁর রসূলকে হিদায়াত ও সত্য দীনসহ পাঠিয়েছেন তাকে সকল দীনের উপর বিজয়ী করার জন্য– যদিও মুশরিকরা (তা) অপছন্দ করে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلٰى

১০. হে মু'মিনগণ! আমি কি তোমাদেরকে এমন এক ব্যবসায়ের সন্ধান দেব যা তোমাদেরকে

৬। যুবায়র ইবনু মুত'ইম (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি যে, আমার অনেকগুলো নাম আছে। আমি মুহাম্মাদ, আমি আহ্মাদ এবং আমি মাহী। আমার দ্বারা আল্লাহ্ তা'আলা সমস্ত কুফরী দূর করবেন। আমি হাশির, আমার পেছনে সমস্ত মানুষকে একত্রিত করা হবে এবং আমি 'আকিব, সকলের শেষে আগমনকারী। –বুখারী ৪৮৯৬ [৩৫৩২; মুসলিম ১২৬, আবূ দাউদ ১৬৮৭, আহমাদ ২৭৪০৫]

تِجَارَةٍ تُنْجِيْكُمْ مِّنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ (١٠)

মর্মান্তিক 'আযাব থেকে রক্ষা করবে?

تُؤْمِنُوْنَ بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُجَاهِدُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ بِأَمْوٰلِكُمْ وَأَنْفُسِكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۙ(١١)

১১. (তা এই যে) তোমরা আল্লাহ ও তাঁর রসূলের প্রতি ঈমান আনো আর তোমরা তোমাদের মাল ও জান দিয়ে আল্লাহ্‌র পথে জিহাদ কর; এটাই তোমাদের জন্য অতি উত্তম, যদি তোমরা জানতে!

يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ وَمَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۙ(١٢)

১২. (তোমরা যদি আল্লাহ্‌র সন্ধান দেয়া ব্যবসা কর তাহলে) তিনি তোমাদের পাপ ক্ষমা করে দেবেন আর তোমাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার তলদেশে ঝর্ণাধারা প্রবাহিত। আর চিরস্থায়ী আবাসস্থল জান্নাতে অতি উত্তম ঘর তোমাদেরকে দান করবেন। এটাই বিরাট সাফল্য।

وَأُخْرٰى تُحِبُّوْنَهَا ؕ نَصْرٌ مِّنَ اللهِ وَفَتْحٌ قَرِيْبٌ ؕ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ (١٣)

১৩. আর অন্য আরেকটিও (তিনি তোমাদেরকে দিবেন) যা তোমরা পছন্দ কর (আর তা হল) আল্লাহ্‌র সাহায্য ও আসন্ন বিজয়। (হে নবী!) ঈমানদার লোকেদেরকে তুমি সুসংবাদ দাও।

يٰأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا أَنْصَارَ اللهِ كَمَا قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ لِلْحَوَارِيّٖنَ مَنْ أَنْصَارِيْٓ إِلَى اللهِ ؕ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ أَنْصَارُ اللهِ فَاٰمَنَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ بَنِيْٓ إِسْرَآئِيْلَ وَكَفَرَتْ طَّآئِفَةٌ ۚ فَأَيَّدْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلٰى عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوْا ظٰهِرِيْنَ ع(١٤)

১৪. হে মু'মিনগণ! তোমরা আল্লাহ্‌র সাহায্যকারী হও, যেমন মারইয়ামের পুত্র 'ঈসা হাওয়ারীদেরকে বলেছিল- 'আল্লাহ্‌র পথে কে আমার সাহায্যকারী হবে?' হাওয়ারীরা উত্তরে বলেছিল- 'আমরাই আল্লাহ্‌র সাহায্যকারী (হব)।' অতঃপর বানী ইসরাঈলের একদল ঈমান আনল, আরেক দল প্রত্যাখ্যান করল। তখন যারা ঈমান আনল তাদেরকে আমি তাদের শত্রুদের উপর শক্তিশালী করলাম। ফলে তারা বিজয়ী হল।

১১-১২। আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) থেকে বর্ণিত। এক ব্যক্তি রসূলুল্লাহ (ﷺ) -এর নিকট এসে বলল, আমাকে এমন কোন কাজ বলে দিন যা জিহাদের সমকক্ষ। তিনি জবাব দিলেন, না, এমন কোন কাজ নেই যা জিহাদের সমকক্ষ হতে পারে। তবে হ্যাঁ, মুজাহিদ দল যখন রওয়ানা হয়ে যাবে, তখন তুমি মাসজিদে প্রবেশ করে সলাতে দাঁড়িয়ে যাও; অবিরামভাবে নামায আদায় করতে থাকো, ক্লান্তি বোধ করো না এবং ক্রমাগত রোযা পালন কর, বিরতি দিও না। (এ কথা শুনে) লোকটি বললো, কে তা করতে সক্ষম? আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) বলেন, মুজাহিদের ঘোড়া যখন রশিতে বাঁধা অবস্থায় ঘাস খেতে এদিক ওদিক ঘোরাফেরা করে, তখনও তাঁর জন্য নেকী বা কল্যাণ লিপিবদ্ধ হয়। –বুখারী ২৭৮৫ [মুসলিম ১৮৭৮, তিরমিযী ১৬১৯, নাসায়ী ৩১২৮, আহমাদ ৮৩৩৫, ৯১৯২]

৬২. সূরাহ আল-জুমু'আহ

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ

আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ (١)

১. যা কিছু আসমানে আছে আর যা কিছু যমীনে আছে সব কিছুই প্রশংসা ও মহিমা ঘোষণা করে আল্লাহ্‌র যিনি সর্বময় ক্ষমতার অধিকারী, অতি পবিত্র, মহাপরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْأُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ق وَإِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ لا (٢)

২. তিনিই নিরক্ষরদের মাঝে পাঠিয়েছেন তাঁর রসূলকে তাদেরই মধ্য হতে, যে তাদের কাছে আল্লাহ্‌র আয়াত পাঠ করে, তাদেরকে পবিত্র করে, আর তাদেরকে কিতাব ও হিকমত শিক্ষা দেয় অথচ ইতোপূর্বে তারা ছিল স্পষ্ট গুমরাহীতে নিমজ্জিত।

وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (٣)

৩. আর (এই রসূলকে পাঠানো হয়েছে) তাদের অন্যান্যদের জন্যও যারা এখনও তাদের সাথে মিলিত হয়নি (কিন্তু তারা ভবিষ্যতে আসবে)। আল্লাহ মহাপরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

ذٰلِكَ فَضْلُ اللهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ط وَاللهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ (٤)

৪. ওটা আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ যা তিনি যাকে ইচ্ছে দান করেন; আল্লাহ মহা অনুগ্রহের অধিকারী।

مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ لَمْ

৫. যাদের উপর তাওরাতের দায়িত্বভার দেয়া

৩। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমরা নাবী (ﷺ) -এর কাছে বসেছিলাম। এমন সময় তাঁর উপর অবতীর্ণ হলো সূরাহ জুমু'আহ, যার একটি আয়াত হলোঃ "এবং তাদের অন্যান্যের জন্যও যারা এখনও তাদের সঙ্গে মিলিত হয়নি।" তিনি বলেন, আমি জিজ্ঞেস করলাম, তারা কারা? তিনবার এ কথা জিজ্ঞেস করা সত্ত্বেও তিনি কোন উত্তর দিলেন না। আমাদের মাঝে সালমান ফারসী (রাঃ)-ও উপস্থিত ছিলেন। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) সালমান (রাঃ)-এর উপর হাত রেখে বললেন, ঈমান সুরাইয়া নক্ষত্রের নিকট থাকলেও আমাদের কতক লোক অথবা তাদের এক ব্যক্তি তা অবশ্যই পেয়ে যাবে। -বুখারী ৪৮৯৭ [৪৮৯৮; মুসলিম ১৪৩৬, আবূ দাউদ ২১৪১, আহমাদ ৭৪২২]

আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেনঃ সূর্য উদিত হওয়ার দিনগুলোর মধ্যে জুমু'আর দিন সর্বোত্তম। এই দিন আদম (আঃ)-কে সৃষ্টি করা হয়েছে, এই দিন তাকে জান্নাতে প্রবেশ করানো হয়েছে এবং এই দিন তা থেকে তাকে বের করে দেয়া হয়েছে, জুমু'আর দিনই ক্বিয়ামাত সংঘটিত হবে। -মুসলিম ৮৫৪ [তিরমিযী ৪৮৮, ৪৯১; নাসায়ী ১৩৭৩, ১৪৩০; আহমাদ ৭৬৩০, ৮১৪১]

يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ أَسْفَارًا ط بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللهِ ط وَاللهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (٥)

হয়েছিল, অতঃপর তা তারা বহন করেনি (অর্থাৎ তারা তাদের উপর ন্যস্ত দায়িত্ব পালন করেনি) তাদের দৃষ্টান্ত হল গাধার মত, যে বহু কিতাবের বোঝা বহন করে (কিন্তু তা বুঝে না)। যে সম্প্রদায় আল্লাহ্‌র আয়াতগুলোকে অস্বীকার করে, তাদের দৃষ্টান্ত কতইনা নিকৃষ্ট! যালিম সম্প্রদায়কে আল্লাহ সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

قُلْ يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا إِنْ زَعَمْتُمْ أَنَّكُمْ أَوْلِيَآءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٦)

৬. বল– 'হে ইয়াহুদী হয়ে যাওয়া লোকেরা! তোমরা যদি মনে কর যে, অন্য সব লোককে বাদ দিয়ে কেবল তোমরাই আল্লাহ্‌র বন্ধু, তাহলে তোমরা মৃত্যু কামনা কর, যদি তোমরা সত্যবাদী হয়ে থাকো।

وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ أَبَدًا ۢبِمَا قَدَّمَتْ أَيْدِيْهِمْ ط وَاللهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ (٧)

৭. কিন্তু তাদের হাত যে সব (কৃতকর্ম) আগে পাঠিয়েছে, সে কারণে তারা কক্ষনো মৃত্যুর কামনা করবে না। আর আল্লাহ যালিমদেরকে খুব ভাল করেই জানেন।

قُلْ إِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ فَإِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ إِلٰى عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ع (٨)

৮. বল- 'তোমরা যে মৃত্যু থেকে পালাচ্ছ তা অবশ্যই তোমাদের সাথে সাক্ষাৎ করবে। অতঃপর তোমাদেরকে দৃশ্য ও অদৃশ্যের জ্ঞানের অধিকারী (আল্লাহ)'র নিকট ফিরিয়ে নেয়া হবে; অতঃপর তোমাদেরকে জানিয়ে দেয়া হবে যা তোমরা করতে।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا إِلٰى ذِكْرِ اللهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ط ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٩)

৯. হে মু'মিনগণ! জুমু'আহ্‌র দিনে যখন নামাযের জন্য ডাকা হয়, তখন আল্লাহ্‌র স্মরণের দিকে শীঘ্র ধাবিত হও, ক্রয়-বিক্রয় পরিত্যাগ কর, এটাই তোমাদের জন্য অতি উত্তম, যদি তোমরা জানতে!

فَإِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِي الْأَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللهِ وَاذْكُرُوا اللهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (١٠)

১০. অতঃপর যখন নামায সমাপ্ত হয়, তখন যমীনে ছড়িয়ে পড়, আর আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ সন্ধান কর এবং আল্লাহকে বেশি বেশি স্মরণ করতে থাক– যাতে তোমরা সাফল্য লাভ করতে পার।

وَإِذَا رَأَوْا تِجَارَةً أَوْ لَهْوَا ۨانْفَضُّوْٓا إِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ط قُلْ مَا عِنْدَ اللهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ

১১. তারা যখন ব্যবসায় অথবা ক্রীড়া কৌতুক দেখে তখন তারা সেদিকে ছুটে যায় আর তোমাকে রেখে যায় দাঁড়ানো অবস্থায়। বল- 'আল্লাহ্‌র কাছে যা

আছে তা ক্রীড়া-কৌতুক ও ব্যবসার চেয়ে উত্তম।' আর আল্লাহ সর্বাপেক্ষা উত্তম রিয্কদাতা।

التِّجَارَةِ ط وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ع (١١)

৬৩. সূরাহ আল মুনা-ফিকূন

سُوْرَةُ الْمُنَافِقُوْنَ

আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. মুনাফিকরা যখন তোমার কাছে আসে তখন তারা বলে- 'আমরা সাক্ষ্য দিচ্ছি যে, আপনি অবশ্যই আল্লাহ্র রসূল।' আল্লাহ জানেন, অবশ্যই তুমি তাঁর রসূল আর আল্লাহ সাক্ষ্য দিচ্ছেন যে, মুনাফিকরা অবশ্যই মিথ্যেবাদী।

إِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُ اللهِ ـ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ إِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ط وَاللّٰهُ يَشْهَدُ إِنَّ الْمُنَافِقِيْنَ لَكَاذِبُوْنَ ج (١)

২. তারা তাদের শপথগুলোকে ঢাল হিসেবে ব্যবহার করে আর এ উপায়ে তারা মানুষকে আল্লাহ্র পথ থেকে নিবৃত্ত করে। তারা যা করে তা কতই না মন্দ!

اِتَّخَذُوْٓا أَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللهِ ط إِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٢)

৩. তার কারণ এই যে, তারা ঈমান আনে, অতঃপর কুফুরী করে। এজন্য তাদের অন্তরে মোহর লাগিয়ে দেয়া হয়েছে। যার ফলে তারা

ذٰلِكَ بِأَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ (٣)

১১। আবায়া ইবনু রিফা'আহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি জুমু'আহ্র সলাতে যাবার কালে আবূ আব্স (ﷺ)-এর সঙ্গে সাক্ষাৎ হলে তিনি বললেন, আমি আল্লাহর রসূল (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি যে, যার দু'পা আল্লাহ্র পথে ধূলি ধূসরিত হয়, আল্লাহ্ তার জন্য জাহান্নাম হারাম করে দেন। -বুখারী ৯০৭ [২৮১১; তিরমিযী ১৬৩২, নাসায়ী ৩১১৬, আহমাদ ১৫৫০৫]

১। যায়দ ইবনু আরকাম (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক যুদ্ধে আমি শারীক হয়েছিলাম। তখন 'আবদুল্লাহ্ ইবনু উবাইকে বলতে শুনলাম, আল্লাহ্র রসূলের সঙ্গীদের জন্য তোমরা ব্যয় করবে না, যতক্ষণ না তারা তাঁর থেকে সরে পড়ে এবং সে এও বলল, আমরা মাদীনাহ্য় ফিরলে প্রবল লোকেরা দুর্বল লোকদেরকে অবশ্যই বের করে দিবে। এ কথা আমি আমার চাচা কিংবা 'উমার (ﷺ)-এর কাছে বলে দিলাম। তিনি তা নাবী (ﷺ) -এর কাছে জানালেন। ফলে তিনি আমাকে ডাকলেন। আমি তাঁকে বিস্তারিত এ সব কথা বলে দিলাম। তখন রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) 'আবদুল্লাহ্ ইবনু উবাই এবং তার সাথী-সঙ্গীদের কাছে খবর পাঠালেন, তারা সকলেই কসম করে বলল, এমন কথা তারা বলেনি। ফলে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমার কথাকে মিথ্যা ও তার কথাকে সত্য বলে মেনে নিলেন। এতে আমি এমন মনে পেলাম, যেরূপ কষ্ট আর কখনও পাইনি। আমি (মনের দুঃখে) ঘরে বসে গেলাম। আমার চাচা আমাকে বললেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তোমাকে মিথ্যাচারী মনে করেছেন এবং তোমার প্রতি অসন্তুষ্ট হয়েছেন বলে তুমি কী করে মনে করলে। এ প্রসঙ্গে আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন, "যখন মুনাফিকগণ তোমার কাছে আসে।" নাবী (ﷺ) আমার কাছে লোক পাঠালেন এবং এ সূরাহ পাঠ করলেন। এরপর বললেন, হে যায়দ! আল্লাহ্ তা'আলা তোমাকে সত্যবাদী বলে ঘোষণা দিয়েছেন। -বুখারী ৪৯০০ [৪৯০১, ৪৯০২, ৪৯০৩, ৪৯০৪; মুসলিম ২৭৭২, তিরমিযী ৩৩১২-৩৩১৪, আহমাদ ১৮৭৯৯, ১৮৮০৯, ১৮৮৪৬]

কিছুই বুঝে না

৪. তুমি যখন তাদের দিকে তাকাও তখন তাদের শারীরিক গঠন তোমাকে চমৎকৃত করে। আর যখন তারা কথা বলে তখন তুমি তাদের কথা আগ্রহ ভরে শুন, অথচ তারা দেয়ালে ঠেস দেয়া কাঠের মত (দেখন- সুরত, কিন্তু কার্যক্ষেত্রে কিছুই না)। কোন শোরগোল হলেই তারা সেটাকে নিজেদের বিরুদ্ধে মনে করে (কারণ তাদের অপরাধী মন সব সময়ে শঙ্কিত থাকে- এই বুঝি তাদের কুকীর্তি ফাঁস হয়ে গেল)। এরাই শত্রু, কাজেই তাদের ব্যাপারে সতর্ক থাক। এদের উপর আছে আল্লাহ্‌র গযব, তাদেরকে কীভাবে (সত্য পথ থেকে) ফিরিয়ে নেয়া হচ্ছে!

وَإِذَا رَأَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ أَجْسَامُهُمْ ۖ وَإِنْ يَقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ۖ كَأَنَّهُمْ خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ۖ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ عَلَيْهِمْ ۚ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ۚ قَاتَلَهُمُ اللّٰهُ ۖ أَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ (٤)

৫. তাদেরকে যখন বলা হয়, 'এসো, আল্লাহ্‌র রসূল তোমাদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা করবেন, তখন তারা মাথা নেড়ে অস্বীকৃতি জানায়, তখন তুমি দেখতে পাও তারা সদম্ভে তাদের মুখ ফিরিয়ে নেয়।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَأَيْتَهُمْ يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ (٥)

৬. তুমি তাদের জন্য ক্ষমা প্রার্থনা কর আর না কর, উভয়ই তাদের জন্য সমান। আল্লাহ তাদেরকে কক্ষনো ক্ষমা করবেন না। আল্লাহ পাপাচারী জাতিকে কক্ষনো সঠিক পথে পরিচালিত করেন না।

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ أَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ أَمْ لَمْ تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ۚ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ۚ إِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ (٦)

৭. তারা বলে- 'রসূলের সঙ্গী সাথীদের জন্য অর্থ ব্যয় করো না, শেষে তারা এমনিতেই সরে পড়বে।' আসমান ও যমীনের ধন ভাণ্ডার তো আল্লাহ্‌রই, কিন্তু মুনাফিকরা তা বুঝে না।

هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ۚ وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ (٧)

৮. তারা বলে- 'আমরা যদি মাদীনায় প্রত্যাবর্তন করি, তাহলে সম্মানীরা অবশ্য অবশ্যই হীনদেরকে সেখানে থেকে বহিষ্কার করবে।' কিন্তু সমস্ত মান মর্যাদা তো আল্লাহ্‌র, তাঁর রসূলের এবং

يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَآ إِلَى الْمَدِيْنَةِ لَيُخْرِجَنَّ الْأَعَزُّ مِنْهَا الْأَذَلَّ ۚ وَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ

لَا يَعْلَمُوْنَ ع (٨)

মু'মিনদের; কিন্তু মুনাফিকরা তা জানে না।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ أَمْوَالُكُمْ وَلَآ أَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللهِ ج وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (٩)

৯. হে মু'মিনগণ! তোমাদের ধন-সম্পদ আর তোমাদের সন্তানাদি তোমাদেরকে যেন আল্লাহ্‌র স্মরণ হতে গাফিল করে না দেয়। যারা এমন করবে তারাই ক্ষতিগ্রস্ত।

وَأَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَ أَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ رَبِّ لَوْلَآ أَخَّرْتَنِيْٓ إِلٰٓى أَجَلٍ قَرِيْبٍ لا فَأَصَّدَّقَ وَأَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (١٠)

১০. যে রিয্‌ক আমি তোমাদেরকে দিয়েছি তাথেকে (আল্লাহ্‌র পথে) ব্যয় কর তোমাদের কারো মৃত্যু আসার পূর্বে। নচেৎ (মৃত্যু এসে গেলে) সে বলবে, 'হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমাকে আরো কিছুকালের অবকাশ দিলে না কেন? তাহলে আমি সদাক্বাহ করতাম আর সৎকর্মশীলদের মধ্যে শামিল হয়ে যেতাম।'

وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللهُ نَفْسًا إِذَا جَآءَ أَجَلُهَا ط وَاللهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ع (١١)

১১. আল্লাহ কাউকে কক্ষনো অবকাশ দেন না যখন তার নির্ধারিত সময় এসে যায়। তোমরা যা কর সে সম্পর্কে আল্লাহ পুরোপুরি খবর রাখেন।

৮। জাবির 'আবদুল্লাহ্ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক যুদ্ধে আমরা যোগদান করেছিলাম। জনৈক মুহাজির আনসারদের এক ব্যক্তিকে নিতম্বে আঘাত করলেন। তখন আনসারী সহাবী "আনসারী ভাইগণ!" বলে এবং মুহাজির সহাবী "হে মুহাজির ভাইগণ!" বলে ডাক দিলেন। আল্লাহ্ তাঁর রাসূলের কানে এ কথা পৌঁছিয়ে দিলেন। তিনি বললেন, এটা কেমন ডাকাডাকি? উপস্থিত লোকেরা বললেন, জনৈক মুহাজির ব্যক্তি এক আনসারী ব্যক্তির নিতম্বে আঘাত করেছে। আনসারী ব্যক্তি "হে আনসারী ভাইগণ!" বলে এবং মুহাজির ব্যক্তি "হে মুহাজির ভাইগণ!" বলে নিজ নিজ গোত্রকে ডাক দিলেন। এ কথা শুনে নাবী (ﷺ) বললেন, এ রকম ডাকাডাকি ত্যাগ কর। এগুলো অত্যন্ত দুর্গন্ধযুক্ত কথা। জাবির (ﷺ) বলেন, নাবী (ﷺ) যখন মাদীনাহ্য় হিজরাত করে আসেন তখন আনসার সহাবীগণ ছিলেন সংখ্যায় বেশি। পরে মুহাজিরগণ সংখ্যায় বেশি হয়ে যান। এ সব কথা শুনার পর 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু উবাই বলল, সত্যিই তারা কি এমন করেছে? আল্লাহ্‌র কসম! আমরা মাদীনাহ্য় ফিরলে সেখান হতে প্রবল লোকেরা দুর্বল লোকদেরকে বের করে দিবেই। তখন ইব্‌নু খাত্তাব (ﷺ) বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! আপনি আমাকে অনুমতি দিন। আমি এ মুনাফিকের গর্দান উড়িয়ে দেই। নাবী (ﷺ) বললেন, 'উমার! তাকে ছেড়ে দাও, যাতে লোকেরা এমন কথা বলতে না পারে যে, মুহাম্মাদ (ﷺ) তাঁর সাথীদের হত্যা করছেন। –বুখারী ৪৯০৭ [৩৫১৮; মুসলিম ২৫৮৪, তিরমিযী ৩৩১৫, আহমাদ ১৪০৫৮, ১৪২২১, ১৪৭০৯]

১০। আবূ হুরাইরাহ্ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক সাহাবী আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর কাছে এসে বললেন, হে আল্লাহর রসূল! কোন্ সদাকাহর সওয়াব বেশি পাওয়া যায়? তিনি (ﷺ) বললেনঃ সুস্থ ও কৃপণ অবস্থায় তোমার সদাকাহ্ করা যখন তুমি দারিদ্র্যের আশঙ্কা করবে ও ধনী হওয়ার আশা রাখবে। সদাকাহ্ করতে এ পর্যন্ত দেরী করবে না যখন প্রাণবায়ু কণ্ঠাগত হবে, আর তুমি বলতে থাকবে, অমুকের জন্য এতটুকু, অমুকের জন্য এতটুকু, অথচ তা অমুকের জন্য হয়ে গেছে। –বুখারী ১৪১৯ [২৭৪৮, মুসলিম ১০৩২, নাসায়ী ২৫৪২, ৩৬১১; আবূ দাউদ ২৮৬৫, আহমাদ ৭১১৯, ৭৩৫৯]

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ

৬৪. সূরাহ আত্-তাগাবুন

আয়াতঃ ১৮, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ج لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١)

১. যা কিছু আসমানে আছে আর যা কিছু যমীনে আছে সবই আল্লাহ্‌র প্রশংসা ও মহিমা ঘোষণা করছে। রাজত্ব তাঁরই, প্রশংসা তাঁরই, আর তিনি সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান।

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ مُّؤْمِنٌ ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٢)

২. তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাদের মধ্যে কেউ কাফির, কেউ মু'মিন; তোমরা যা কর আল্লাহ্ তা দেখেন।

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ج وَإِلَيْهِ الْمَصِيْرُ (٣)

৩. তিনি (বিশেষ উদ্দেশে) সত্যিকারভাবে আসমান ও যমীন সৃষ্টি করেছেন, তিনি তোমাদেরকে আকৃতি দিয়েছেন, অতঃপর তোমাদের আকৃতি সুন্দর করেছেন আর (সব্বাইকে) ফিরে যেতে হবে তাঁরই দিকে।

يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ط وَاللهُ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٤)

৪. তিনি জানেন যা কিছু আসমান ও যমীনে আছে, আর তিনি জানেন যা তোমরা গোপন কর আর প্রকাশ কর। অন্তরের বিষয়াদি সম্পর্কে তিনি পূর্ণরূপে অবগত।

أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ز فَذَاقُوْا وَبَالَ أَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (٥)

৫. ইতোপূর্বে যারা কুফরী করেছিল তাদের খবর কি তোমার কাছে পৌঁছেছে? তারা তাদের মন্দ কর্মের ফল আস্বাদন করেছে, আর তাদের জন্য আছে মর্মান্তিক 'আযাব।

ذٰلِكَ بِأَنَّهُ كَانَتْ تَّأْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْآ أَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ز فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللهُ ط وَاللهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ (٦)

৬. এর কারণ এই যে, তাদের কাছে তাদের রসূলগণ স্পষ্ট নিদর্শনসহ এসেছিল, তখন তারা বলেছিল, '(আমাদের মতই) মানুষ কি আমাদেরকে সঠিক পথ দেখাবে?' কাজেই তারা অস্বীকার করল আর মুখ ফিরিয়ে নিল। তখন আল্লাহ্ও তাদের ব্যাপারে বেপরোয়া হয়ে গেলেন, আল্লাহ্ অমুখাপেক্ষী, প্রশংসিত।

زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا أَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ط قُلْ بَلٰى وَ رَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ بِمَا عَمِلْتُمْ ط وَذٰلِكَ عَلَى اللهِ يَسِيْرٌ (٧)

৭. কাফিররা ধারণা করে যে, তাদেরকে কক্ষনো আবার জীবিত করে উঠানো হবে না। বল, নিশ্চয়ই (উঠানো) হবে, আমার প্রতিপালকের শপথ! তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই আবার জীবিত করে উঠানো হবে, অতঃপর তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই জানিয়ে দেয়া হবে তোমরা (দুনিয়ায়) কী কাজ করেছ। এ কাজ (করা) আল্লাহ্র জন্য খুবই সহজ।

فَاٰمِنُوْا بِاللهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ أَنْزَلْنَا ط وَاللهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ (٨)

৮. কাজেই (এ অবস্থার কথা চিন্তা ক'রে) তোমরা ঈমান আনো আল্লাহ্র প্রতি ও তাঁর রসূলের প্রতি আর সেই নূর (কুরআন)-এর প্রতি যা আমি অবতীর্ণ করেছি। তোমরা যা কর সে ব্যাপারে আল্লাহ পুরোপুরি অবগত।

يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ التَّغَابُنِ ط وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللهِ وَيَعْمَلْ صٰلِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ط ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (٩)

৯. যখন একত্র করার দিন তিনি তোমাদেরকে একত্রিত করবেন, সে দিনটি হবে তোমাদের হার জিতের দিন। যারা আল্লাহ্র প্রতি ঈমান আনবে আর সৎ কাজ করবে, আল্লাহ তার পাপ মোচন করে দিবেন, আর তাকে জান্নাতে দাখিল করবেন যার নীচ দিয়ে নির্ঝরিণী প্রবাহিত। সেখানে তারা থাকবে চিরকাল সর্বকাল। এটাই মহা সাফল্য।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ع (١٠)

১০. আর যারা কুফুরী করে আর আমার নিদর্শনগুলোকে অস্বীকার করে, তারাই জাহান্নামের অধিবাসী, তাতে তারা চিরকাল থাকবে। কতই না নিকৃষ্ট প্রত্যাবর্তনস্থল!

مَآ أَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللهِ ط وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ط وَاللهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ (١١)

১১. আল্লাহ্র অনুমতি ছাড়া কোন বিপদ আসে না। যে ব্যক্তি আল্লাহ্র প্রতি ঈমান আনে, আল্লাহ তার অন্তরকে সঠিক পথে পরিচালিত করেন। আল্লাহ সকল বিষয়ের সর্বশ্রেষ্ঠ জ্ঞানী।

১১। 'আলক্বামাহ (রহ.) 'আবদুল্লাহ্ ইবনু মাস'উদ (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেন যে, আল্লাহ্র বাণীঃ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ "আর যে ব্যক্তি আল্লাহ্র প্রতি ঈমান রাখে, তিনি তার অন্তরকে সৎপথ প্রদর্শন করেন।" (সূরাহ আত্-তাগাবুন ৬৪/১১)-এর ব্যাখ্যায় বলেন যে, এর দ্বারা এমন লোককে বোঝানো হয়েছে, যখন বিপদগ্রস্ত হয় তখন আল্লাহ্র প্রতি সন্তুষ্ট থাকে এবং এ কথা বুঝতে পারে যে, এ বিপদ আল্লাহ্র পক্ষ হতেই এসেছে। [সহীহুল বুখারী ৪র্থ খণ্ড পৃ. ৫৮৯]

১২. তোমরা আল্লাহ্‌র আনুগত্য কর ও রসূলের আনুগত্য কর। অতঃপর যদি তোমরা মুখ ফিরিয়ে লও (তাহলে তোমাদেরকে সঠিক পথে ফিরিয়ে আনার জন্য জোর জবরদস্তি করা হবে না) কেননা, আমার রসূলের দায়িত্ব কেবল (আমার বাণী) স্পষ্টভাবে পৌঁছে দেয়া।

وَأَطِيْعُوا اللهَ وَأَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ج فَإِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَإِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (١٢)

১৩. আল্লাহ তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই। কাজেই মু'মিনরা আল্লাহ্‌রই উপর নির্ভর করুক।

اَللهُ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ ط وَعَلَى اللهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ (١٣)

১৪. হে মু'মিনগণ! তোমাদের স্ত্রী আর সন্তানদের মধ্যে কতক তোমাদের শত্রু। কাজেই তোমরা তাদের হতে সতর্ক হও। তোমরা যদি তাদের প্রতি ক্ষমাসুলভ আচরণ কর, তাদের দোষ-ত্রুটি উপেক্ষা কর, আর তাদেরকে ক্ষমা কর, তাহলে (তোমাদের সে কাজ হবে আল্লাহ্‌র নিকট পছন্দীয় কারণ) আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنَّ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ وَأَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ج وَإِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَإِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٤)

১৫. তোমাদের ধন-সম্পদ আর সন্তানাদি পরীক্ষা ('র বস্তু) মাত্র (যারা এ দু'টিকে সঠিকভাবে ব্যবহার ক'রে আল্লাহ্‌র পথে অটল থাকবে তারা কৃতকার্য হবে, আর যারা এ দু'টিকে আল্লাহ্‌র চেয়ে অধিক ভালবাসবে তারা ব্যর্থ হয়ে যাবে)। আর আল্লাহ এমন যাঁর কাছে আছে মহা পুরস্কার।

إِنَّمَآ أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ط وَاللهُ عِنْدَهٗٓ أَجْرٌ عَظِيْمٌ (١٥)

১৬. কাজেই তোমরা আল্লাহকে তোমাদের সাধ্যমত ভয় কর, তোমরা (তাঁর বাণী) শুন, তোমরা (তাঁর) আনুগত্য কর এবং (তাঁর পথে) ব্যয় কর, এটা তোমাদের নিজেদেরই জন্য কল্যাণকর। যারা অন্তরের সংকীর্ণতা থেকে রক্ষা পেল, তারাই সফলকাম।

فَاتَّقُوا اللهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا وَأَطِيْعُوْا وَأَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّأَنْفُسِكُمْ ط وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَأُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (١٦)

১৭. তোমরা যদি আল্লাহকে উত্তম ঋণ দাও, তবে তিনি তা তোমাদের জন্য দ্বিগুণ করে দেবেন, আর তোমাদেরকে ক্ষমা করবেন, আল্লাহ (কারো কাজের) অতি মর্যাদাদানকারী, সহনশীল।

إِنْ تُقْرِضُوا اللهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ط وَاللهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ لا (١٧)

১৮. তিনি অদৃশ্য ও দৃশ্যের জ্ঞানের অধিকারী, মহাপরাক্রান্ত, মহাবিজ্ঞানী।

عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهٰدَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ع (١٨)

৬৫. সূরাহ আত্-ত্বলাক্ব

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ

আয়াতঃ ১২, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. হে নবী! তোমরা যখন স্ত্রীদেরকে তালাক দিতে চাও তখন তাদেরকে তালাক দাও তাদের 'ইদ্দাতের প্রতি লক্ষ্য রেখে, আর 'ইদ্দাতের হিসাব সঠিকভাবে গণনা করবে, (তালাক দেয়া ও 'ইদ্দাত পালন সংক্রান্ত শারী'আতের বিধি-বিধান পালনে) তোমরা তোমাদের প্রতিপালক আল্লাহকে ভয় কর। তাদেরকে তাদের বাসগৃহ থেকে বের করে দিও না, আর তারা নিজেরাও যেন বের হয়ে না যায়, যদি না তারা স্পষ্ট অশ্লীলতায় লিপ্ত হয়। এগুলো আল্লাহ্‌র সীমারেখা। যে কেউ আল্লাহ্‌র সীমারেখা লঙ্ঘন করে, সে নিজের উপরই যুল্‌ম করে। তোমরা জান না, আল্লাহ হয়তো এরপরও (স্বামী-স্ত্রীর মধ্যে সমঝোতার) কোন উপায় বের করে দিবেন।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ لِعِدَّتِهِنَّ وَأَحْصُوا الْعِدَّةَ ج وَاتَّقُوا اللهَ رَبَّكُمْ ج لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْۢ بُيُوْتِهِنَّ وَلَا يَخْرُجْنَ إِلَّآ أَنْ يَّأْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ط وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ ط وَمَنْ يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ط لَا تَدْرِيْ لَعَلَّ اللهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ أَمْرًا (١)

২. অতঃপর যখন তাদের ('ইদ্দাতের) সময়কাল এসে যায়, তখন তাদেরকে ভালভাবে (স্ত্রী হিসেবে) রেখে দাও, অথবা ভালভাবে তাদেরকে বিচ্ছিন্ন করে দাও। আর তোমাদের মধ্যেকার দু'জন ন্যায়পরায়ণ লোককে সাক্ষী রাখ। তোমরা আল্লাহ্‌র জন্য সঠিকভাবে সাক্ষ্য দাও। এর দ্বারা তোমাদেরকে উপদেশ দেয়া হচ্ছে যারা আল্লাহ ও আখিরাত দিবসের প্রতি ঈমান রাখে। যে কেউ আল্লাহকে ভয় করে, আল্লাহ তার জন্য (সমস্যা

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ أَوْ فَارِقُوْهُنَّ بِمَعْرُوْفٍ وَّأَشْهِدُوْا ذَوَيْ عَدْلٍ مِّنْكُمْ وَأَقِيْمُوا الشَّهَادَةَ لِلّٰهِ ط ذٰلِكُمْ يُوْعَظُ بِهٖ مَنْ كَانَ يُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ط۵ وَمَنْ يَّتَّقِ

১। 'আবদুল্লাহ ইব্‌ন 'উমার (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত যে, তিনি রসূল এর যুগে তাঁর স্ত্রীকে হায়েয অবস্থায় ত্বলাক্ব দেন। 'উমার ইব্‌ন খাত্তাব (رضي الله عنه) এ ব্যাপারে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -কে জিজ্ঞেস করলেন। তখন রসূলুল্লাহ্ বললেনঃ তাকে নির্দেশ দাও , সে যেন তার স্ত্রীকে ফিরিয়ে আনে এবং নিজের কাছে রেখে দেয় যতক্ষণ না সে মহিলা পবিত্র হয়ে আবার ঋতুবতী হয় এবং আবার পবিত্র হয়। অতঃপর সে যদি ইচ্ছে করে, তাকে রেখে দিবে আর যদি ইচ্ছে করে তবে সহবাসের পূর্বে তাকে ত্বালাক্ব দেবে। আর এটাই ত্বলাক্বের নিয়ম, যে নিয়মে আল্লাহ তা'আলা স্ত্রীদেও ত্বলাক্ব দেয়ার বিধান দিয়েছেন। -বুখারী ৫২৫১ [৪৯০৮; মুসলিম ১০১৫, ১৪৭১; তিরমিযী ১১৭৫,১১৭৬; নাসায়ী ৩৩৮৯, ৩৩৯২,৩৩৯৬-৩৩৯৮,৩৫৫৬,৩৫৫৭,৩৫৫৯; আবূ দাউদ ২১৭৯,২১৮১-২১৮৫; ইবনু মাজাহ ২০১৯,২০২২,২০২৩; আহমাদ ৩০৬,৪৪৮৬,৪৭৭৪; মুওয়াত্তা ১২২০, দারিমী ২২৬২,২২৬৩]

اللهُ يَجْعَلْ لَّهُ مَخْرَجًا ﻻ (٢)

থেকে উদ্ধার পাওয়ার) কোন না কোন পথ বের করে দিবেন।

وَّيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ط وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ عَلَى اللهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ط إِنَّ اللهَ بَالِغُ أَمْرِهِ ط قَدْ جَعَلَ اللهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا (٣)

৩. আর তাকে রিয্ক দিবেন (এমন উৎস) থেকে যা সে ধারণাও করতে পারে না। যে কেউ আল্লাহ্‌র উপর ভরসা করে, তবে তার জন্য তিনিই যথেষ্ট। আল্লাহ নিজের কাজ সম্পূর্ণ করবেনই। আল্লাহ প্রতিটি জিনিসের জন্য করেছেন একটা সুনির্দিষ্ট মাত্রা।

وَالّٰٓـِٔيْ يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيْضِ مِنْ نِّسَآئِكُمْ إِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَّالّٰٓـِٔيْ لَمْ يَحِضْنَ ط وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ أَنْ يَّضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ط وَمَنْ يَّتَّقِ اللهَ يَجْعَلْ لَّهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا (٤)

৪. তোমাদের যে সব স্ত্রীগণ মাসিক ঋতু আসার বয়স অতিক্রম করেছে তাদের ('ইদ্দাতের) ব্যাপারে যদি তোমাদের সন্দেহ সৃষ্টি হয়, সেক্ষেত্রে তাদের 'ইদ্দাতকাল তিন মাস, আর যারা (অল্প বয়স্কা হওয়ার কারণে) এখনও ঋতুবতী হয়নি (এ নিয়ম) তাদের জন্যও। আর গর্ভবতী স্ত্রীদের 'ইদ্দাতকাল তাদের সন্তান প্রসব পর্যন্ত। যে আল্লাহকে ভয় করে, আল্লাহ তার কাজ সহজ করে দেন।

ذٰلِكَ أَمْرُ اللهِ أَنْزَلَهُٓ إِلَيْكُمْ ط وَمَنْ يَّتَّقِ اللهَ يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُٓ أَجْرًا (٥)

৫. এটা আল্লাহ্‌র হুকুম যা তিনি তোমাদের উপর অবতীর্ণ করেছেন। যে কেউ আল্লাহকে ভয় করে, আল্লাহ তার পাপ মোচন করে দিবেন, আর তার প্রতিফলকে বিশাল বিস্তৃত করে দিবেন।

أَسْكِنُوْهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنْتُمْ مِّنْ

৬. ('ইদ্দাতকালে) নারীদেরকে সেভাবেই বসবাস করতে দাও যেভাবে তোমরা বসবাস কর

৪। আবূ সালামাহ (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আবূ হুরাইরাহ ইব্‌নু 'আব্বাস-এর কাছে ছিলেন, এমন সময় এক ব্যক্তি ইব্‌নু 'আব্বাস-এর কাছে এলেন এবং বললেন, এক মহিলা তাঁর স্বামীর মৃত্যুর চল্লিশ দিন পর বাচ্চা প্রসব করেছে। সে এখন কীভাবে ইদ্দত পালন করবে, এ বিষয়ে আমাকে ফতোয়া দিন। ইব্‌নু 'আব্বাস বললেন, ইদ্দত সম্পর্কিত হুকুম্ দু'টির যেটি দীর্ঘ, তাকে সেটি পালন করতে হবে। আবূ সালামাহ (রহ.) বলেন, আমি বললাম, আল্লাহ্‌র হুকুম তো হলঃ গর্ভবতী নারীদের ইদ্দতকাল সন্তান প্রসব পর্যন্ত। আবূ হুরাইরাহ বলেন, আমি আমার ভ্রাতুষ্পুত্র অর্থাৎ আবূ সালামাহ্‌র সঙ্গে আছি। তখন ইব্‌নু 'আব্বাস তাঁর ক্রীতদাস কুরায়বকে বিষয়টি জিজ্ঞেস করার জন্য উম্মু সালামাহ-এর কাছে পাঠালেন। তিনি বললেন, সুবায়'আ আসলামিয়া-এর স্বামীকে হত্যা করা হল, তিনি তখন গর্ভবতী ছিলেন। স্বামীর মৃত্যুর চল্লিশ দিন পর তিনি সন্তান প্রসব করলেন। এরপরই তার কাছে বিয়ের প্রস্তাব পাঠানো হল। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তাকে বিয়ে করিয়ে দিলেন। যারা তাকে বিয়ে করার প্রস্তাব দিয়েছিলেন আবুস্ সানাবিল তাদের মধ্যে একজন। –বুখারী ৪৯০৯ [৫৩১৮; মুসলিম ১৪৮৫, তিরমিযী ১১৯৪, নাসায়ী ৩৫০৯-৩৫১৭, ৩৫২১, ৩৫২২; আবূ দাউদ ২৩০৭, আহমাদ ২৫৯৩২, ২৬১১৮; মুওয়াত্তা ১২৫৩, দারিমী ২২৭৯, ২২৮০]

وُّجْدِكُمْ وَلَا تُضَآرُّوْهُنَّ لِتُضَيِّقُوْا
عَلَيْهِنَّ وَإِنْ كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنْفِقُوْا
عَلَيْهِنَّ حَتّٰى يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ج فَإِنْ
أَرْضَعْنَ لَكُمْ فَاٰتُوْهُنَّ أُجُوْرَهُنَّ ج
وَأْتَمِرُوْا بَيْنَكُمْ بِمَعْرُوْفٍ ج وَإِنْ
تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهٗٓ أُخْرٰى (٦)

তোমাদের সামর্থ্য অনুযায়ী, তাদেরকে সংকটে ফেলার জন্য তাদেরকে জ্বালাতন করো না। তারা যদি গর্ভবতী হয়ে থাকে, তবে তারা সন্তান প্রসব না করা পর্যন্ত তাদের ব্যয়ভার বহন কর। অতঃপর তারা যদি তোমাদের সন্তানকে দুধ পান করায়, তবে তাদেরকে তাদের পারিশ্রমিক দাও। (দুধ পান করানোর ব্যাপারে) ন্যায়সঙ্গতভাবে নিজেদের মধ্যে পরামর্শ করে লও। আর (দুধ পান করানোর ব্যাপার নিয়ে) তোমরা যদি একে অপরের প্রতি কড়াকড়ি করতেই থাক, তাহলে (এ অবস্থা থেকে রেহাই পাওয়ার জন্য) অপর কোন স্ত্রীলোক সন্তানকে দুধ পান করাবে।

لِيُنْفِقْ ذُوْ سَعَةٍ مِّنْ سَعَتِهٖ ط وَمَنْ قُدِرَ
عَلَيْهِ رِزْقُهٗ فَلْيُنْفِقْ مِمَّآ اٰتٰهُ اللهُ ط لَا
يُكَلِّفُ اللهُ نَفْسًا إِلَّا مَآ اٰتٰهَا ط
سَيَجْعَلُ اللهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُّسْرًا ع (٧)

৭. সচ্ছল ব্যক্তি তার সচ্ছলতা অনুসারে ব্যয় করবে। আর যার রিযক সীমিত করা হয়েছে, সে ব্যয় করবে আল্লাহ তাকে যা দিয়েছেন তাথেকে। আল্লাহ যাকে যতটা দিয়েছেন তার অতিরিক্ত বোঝা তার উপর চাপান না। আল্লাহ কষ্টের পর আরাম দিবেন।

وَكَأَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ رَبِّهَا
وَرُسُلِهٖ فَحَاسَبْنٰهَا حِسَابًا شَدِيْدًا لا
وَّعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا (٨)

৮. কত জনপদ তাদের প্রতিপালকের আর তাঁর রসূলদের হুকুম অমান্য করেছে। ফলে আমরা তাদের থেকে কঠিনভাবে প্রতিশোধ নিয়েছি আর তাদেরকে 'আযাব দিয়েছি কঠিন 'আযাব।

فَذَاقَتْ وَبَالَ أَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ أَمْرِهَا
خُسْرًا (٩)

৯. তারা তাদের কৃতকর্মের খারাপ প্রতিফল আস্বাদন করল, ধ্বংসই হল তাদের কাজের পরিণতি।

أَعَدَّ اللهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا لا فَاتَّقُوا اللهَ
يٰٓأُولِي الْأَلْبَابِ ۚ صلے الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ج ۚ
قَدْ أَنْزَلَ اللهُ إِلَيْكُمْ ذِكْرًا لا (١٠)

১০. আল্লাহ তাদের জন্য কঠিন শাস্তি প্রস্তুত করে রেখেছেন। অতএব হে জ্ঞানবুদ্ধিসম্পন্ন মানুষেরা! যারা ঈমান এনেছ তোমরা আল্লাহকে ভয় কর। আল্লাহ তোমাদের প্রতি অবতীর্ণ করেছেন উপদেশ।

رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللهِ
مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا

১১. (তদুপরি তিনি পাঠিয়েছেন) একজন রসূল যে তোমাদের কাছে আল্লাহর স্পষ্ট আয়াত পাঠ করে, যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে তাদেরকে গাঢ় অন্ধকার থেকে আলোতে আনার জন্য। আর

الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۖ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ۖ قَدْ أَحْسَنَ اللهُ لَهٗ رِزْقًا (١١)

যে ব্যক্তি আল্লাহ্র প্রতি ঈমান আনবে আর সৎ কাজ করবে, তিনি তাকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার নীচ দিয়ে বয়ে চলেছে নির্ঝরিণী। তাতে তারা চিরকাল সর্বকাল থাকবে। আল্লাহ তার জন্য অতি উত্তম রিয্কের ব্যবস্থা করে রেখেছেন।

اَللهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْأَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۖ يَتَنَزَّلُ الْأَمْرُ بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْٓا أَنَّ اللهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ وَّأَنَّ اللهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ع (١٢)

১২. আল্লাহ্ই সাত আসমান বানিয়েছেন আর ওগুলোর মত পৃথিবীও, সবগুলোর মাঝে (অর্থাৎ সকল আসমানে আর সকল যমীনে) নেমে আসে আল্লাহ্র নির্দেশ যাতে তোমরা জানতে পার যে, আল্লাহ সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান আর আল্লাহ (স্বীয়) জ্ঞানে সব কিছুকে ঘিরে রেখেছেন।

৬৬. সূরাহ আত্-তাহ্রীম

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ

আয়াতঃ ১২, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَآ أَحَلَّ اللهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ أَزْوَاجِكَ ۖ وَاللهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١)

১. হে নবী! আল্লাহ যা তোমার জন্য হালাল করেছেন তা তুমি কেন হারাম করছ? (এর দ্বারা) তুমি তোমার স্ত্রীদের সন্তুষ্টি পেতে চাও, (আল্লাহ তোমার এ ত্রুটি ক্ষমা করে দিলেন কেননা) আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

قَدْ فَرَضَ اللهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ أَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (٢)

২. আল্লাহ তোমাদের জন্য নিজেদের কসমের বাধ্যবাধকতা থেকে নিস্কৃতি পাওয়ার ব্যবস্থা করেছেন, আল্লাহ তোমাদের মালিক-মনিব-রক্ষক,

---

১। 'আয়িশাহ [রাঃ] হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) যায়নাব বিন্ত জাহ্শ [রাঃ]-এর কাছে মধু পান করতেন এবং সেখানে কিছুক্ষণ অবস্থান করতেন। তাই আমি এবং হাফ্সাহ স্থির করলাম যে, আমাদের যার ঘরেই রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আসবেন, সে তাঁকে বলবে, আপনি কি মাগাফীর খেয়েছেন? আপনার মুখ থেকে মাগাফীরের গন্ধ পাচ্ছি। তিনি বললেন, না, বরং আমি যয়নব বিন্ত জাহ্শ [রাঃ]-এর নিকট মধু পান করেছি। আমি কসম করলাম, আর কখনও মধু পান করব না। তুমি এ ব্যাপারে অন্য কাউকে জানাবে না। –বুখারী ৪৯১২ [৫২১৬, ৫২৬৭, ৫২৬৮, ৫৪৩১, ৫৫৯৯, ৫৬১৪, ৫৬৮২, ৬৬৯১, ৬৯৭২; মুসলিম ১৪৭৪, তিরমিযী ১৮৩১, নাসায়ী ৩৪২১, ৩৭৯৫, ৩৯৫৮; আবূ দাউদ ৩৭১৪, ইবনু মাজাহ ৩৩২৩, আহমাদ ২৫৩২৪, দারিমী ২০৭৫]

আর তিনি সর্বজ্ঞাতা, মহা প্রজ্ঞার অধিকারী।

وَإِذْ أَسَرَّ النَّبِيُّ إِلَىٰ بَعْضِ أَزْوَاجِهِ حَدِيثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّأَتْ بِهِ وَأَظْهَرَهُ اللَّهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهُ وَأَعْرَضَ عَنْ بَعْضٍ ۖ فَلَمَّا نَبَّأَهَا بِهِ قَالَتْ مَنْ أَنْبَأَكَ هَٰذَا ۖ قَالَ نَبَّأَنِيَ الْعَلِيمُ الْخَبِيرُ (٣)

৩. স্মরণ কর- যখন নবী তার স্ত্রীদের কোন একজনকে গোপনে একটি কথা বলেছিল। অতঃপর সে স্ত্রী যখন তা (অন্য একজনকে) জানিয়ে দিল, তখন আল্লাহ এ ব্যাপারটি নবীকে জানিয়ে দিলেন। তখন নবী (তার স্ত্রীর কাছে) কিছু কথার উল্লেখ করল আর কিছু কথা ছেড়ে দিল। নবী যখন তা তার স্ত্রীকে জানাল তখন সে বলল, 'আপনাকে এটা কে জানিয়ে দিল?" নবী বলল, "আমাকে জানিয়ে দিলেন যিনি সর্বজ্ঞাতা, ওয়াকিফহাল।"

إِنْ تَتُوبَا إِلَى اللَّهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوبُكُمَا ۖ وَإِنْ تَظَاهَرَا عَلَيْهِ فَإِنَّ اللَّهَ هُوَ مَوْلَاهُ وَجِبْرِيلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِينَ ۖ وَالْمَلَائِكَةُ بَعْدَ ذَٰلِكَ ظَهِيرٌ (٤)

৪. তোমরা দু'জন যদি অনুশোচনাভরে আল্লাহ্‌র দিকে ফিরে আস (তবে তা তোমাদের জন্য উত্তম), তোমাদের অন্তর (অন্যায়ের দিকে) ঝুঁকে পড়েছে, তোমরা যদি নবীর বিরুদ্ধে একে অপরকে সহযোগিতা কর, তবে (জেনে রেখ) আল্লাহ তার মালিক-মনিব-রক্ষক। আর এ ছাড়াও জিবরীল, নেক্‌কার মু'মিনগণ আর ফেরেশতাগণও তার সাহায্যকারী।

عَسَىٰ رَبُّهُ إِنْ طَلَّقَكُنَّ أَنْ يُبْدِلَهُ أَزْوَاجًا خَيْرًا مِنْكُنَّ مُسْلِمَاتٍ مُؤْمِنَاتٍ قَانِتَاتٍ تَائِبَاتٍ عَابِدَاتٍ سَائِحَاتٍ ثَيِّبَاتٍ وَأَبْكَارًا (٥)

৫. নবী যদি তোমাদের সবাইকে তালাক দিয়ে দেয় তবে সম্ভবতঃ তার প্রতিপালক তোমাদের পরিবর্তে তাকে দিবেন তোমাদের চেয়ে উত্তম স্ত্রী- যারা হবে আত্মসমর্পণকারিণী মু'মিনা অনুগতা, তাওবাহকারিণী, 'ইবাদাতকারিণী, রোযা পালনকারিণী, অকুমারী ও কুমারী।

---

[২১] ৩। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি 'উমার (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করতে চাইলাম। আমি বললাম, হে আমীরুল মু'মিনীন! নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণীদের কোন্ দু'জন তাঁর ব্যাপারে একমত হয়ে পরস্পর একে অন্যকে সহযোগিতা করেছিলেন? আমি আমার কথা শেষ করার আগেই তিনি বললেন, 'আয়িশাহ এবং হাফসাহ (রাঃ)। -বুখারী ৪৯১৪ [মুসলিম ১৪৭৯, তিরমিযী ৩৩১৮, নাসায়ী ২১৩২, আহমাদ ২২২]

৫। আনাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'উমার (রাঃ) বলেছেন, নাবী (ﷺ) -কে সতর্কতা দানের জন্য তাঁর সহধর্মিণীগণ একত্রিত হয়েছিলেন। আমি তাঁদেরকে বললাম, যদি নাবী (ﷺ) তোমাদের সকলকে পরিত্যাগ করেন তবে তাঁর প্রতিপালক সম্ভবত তাঁকে দেবেন তোমাদের অপেক্ষা উৎকৃষ্টতর স্ত্রী। তখন এ আয়াতটি অবতীর্ণ হয়েছিল। -বুখারী ৪৯১৬ [৪০২; মুসলিম ২৩৯৯, তিরমিযী ২৯৫৯, ২৯৬০; ইবনু মাজাহ ১০০৯, আহমাদ ১৫৮, দারিমী ১৮৪৯]

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ قُوٓا۟ أَنفُسَكُمْ وَأَهْلِيكُمْ نَارًا وَقُودُهَا ٱلنَّاسُ وَٱلْحِجَارَةُ عَلَيْهَا مَلَٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُونَ ٱللَّهَ مَآ أَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُونَ مَا يُؤْمَرُونَ (٦)

৬. হে মু'মিনগণ! তোমরা তোমাদের নিজেদেরকে আর তোমাদের পরিবার-পরিজনকে জাহান্নামের আগুন থেকে রক্ষা কর যার ইন্ধন হবে মানুষ ও পাথর, যাতে মোতায়েন আছে পাষাণ হৃদয় কঠোর স্বভাব ফেরেশতা। আল্লাহ যা আদেশ করেন, তা তারা অমান্য করে না, আর তারা তাই করে, তাদেরকে যা করার জন্য আদেশ দেয়া হয়।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ لَا تَعْتَذِرُوا۟ ٱلْيَوْمَ ؕ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ع (٧)

৭. (সেখানে বলা হবে) ওহে যারা কুফুরী করেছ! আজ ওযর পেশ করো না, তোমরা যা করতে তোমাদেরকে তারই প্রতিফল দেয়া হবে।

يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ تُوبُوٓا۟ إِلَى ٱللَّهِ تَوْبَةً نَّصُوحًا ؕ عَسَىٰ رَبُّكُمْ أَن يُكَفِّرَ عَنكُمْ سَيِّـَٔاتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنَّٰتٍ تَجْرِى مِن تَحْتِهَا ٱلْأَنْهَٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِى ٱللَّهُ ٱلنَّبِىَّ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مَعَهُۥ ج نُورُهُمْ يَسْعَىٰ بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَبِأَيْمَٰنِهِمْ يَقُولُونَ رَبَّنَآ أَتْمِمْ لَنَا نُورَنَا وَٱغْفِرْ لَنَا ج إِنَّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَىْءٍ قَدِيرٌ (٨)

৮. ওহে যারা ঈমান এনেছ! তোমরা আল্লাহ্র কাছে তাওবাহ কর- আন্তরিক তাওবাহ। সম্ভবতঃ তোমাদের প্রতিপালক তোমাদের মন্দ কাজগুলোকে তোমাদের থেকে মুছে দিবেন, আর তোমাদেরকে দাখিল করবেন জান্নাতে যার তলদেশ দিয়ে বয়ে চলেছে ঝর্ণাধারা। সে দিন আল্লাহ নবীকে আর তার সঙ্গে যারা ঈমান এনেছিল তাদেরকে লজ্জিত করবেন না। (সেদিনের ভয়াবহ অন্ধকার থেকে মু'মিনদের রক্ষার ব্যবস্থা হিসেবে) তাদের নূর দৌড়াতে থাকবে তাদের সামনে আর তাদের ডান পাশে। তারা বলবে, 'হে আমাদের প্রতিপালক! আমাদের নূরকে আমাদের জন্য পরিপূর্ণ করে দাও আর আমাদেরকে ক্ষমা কর; তুমি সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান।'

يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ جَٰهِدِ ٱلْكُفَّارَ وَٱلْمُنَٰفِقِينَ وَٱغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَأْوَىٰهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ ٱلْمَصِيرُ (٩)

৯. হে নবী! কাফির ও মুনাফিকদের বিরুদ্ধে জিহাদ কর, তাদের প্রতি কঠোর হও। তাদের ঠিকানা জাহান্নাম, কতই না নিকৃষ্ট সেই প্রত্যাবর্তনস্থল!

ضَرَبَ ٱللَّهُ مَثَلًا لِّلَّذِينَ كَفَرُوا۟ ٱمْرَأَتَ نُوحٍ وَٱمْرَأَتَ لُوطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ

১০. যারা কুফুরীর নীতি অবলম্বন করে তাদের ব্যাপারে আল্লাহ নূহের স্ত্রী আর লূতের স্ত্রীর দৃষ্টান্ত পেশ করছেন। এরা ছিল আমার দু'নেক্কার বান্দার অধীনে। কিন্তু তারা দু'জনেই তাদের স্বামীদ্বয়ের প্রতি বিশ্বাসঘাতকতা করেছিল। ফলে

مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللهِ شَيْئًا وَّقِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ (١٠)

নূহ ও লূত তাদেরকে আল্লাহ্র শাস্তি থেকে রক্ষা করতে পারল না। তাদেরকে বলা হল, "তোমরা দু'জন জাহান্নামে প্রবেশ কর (অন্যান্য) প্রবেশকারীদের সঙ্গে।"

وَضَرَبَ اللهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَأَتَ فِرْعَوْنَ ۘ إِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ (١١)

১১. আর যারা ঈমান আনে তাদের ব্যাপারে আল্লাহ্ ফেরাউনের স্ত্রীর দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন। সে প্রার্থনা করেছিল, "হে আমার প্রতিপালক! তুমি আমার জন্য তোমার নিকট জান্নাতে একটি ঘর বানিয়ে দাও আর আমাকে তুমি ফেরাউন ও তার (অন্যায়) কার্যকলাপ থেকে রক্ষা কর, উদ্ধার কর আমাকে যালিম সম্প্রদায় থেকে।"

وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرَانَ الَّتِيْٓ أَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ع (١٢)

১২. আর (দৃষ্টান্ত দিচ্ছেন) 'ইমরান-কন্যা মারইয়ামের যে তার লজ্জাস্থান সংরক্ষণ করেছিল, ফলে আমি তার মধ্যে আমার রূহ ফুঁকে দিয়েছিলাম। সে তার প্রতিপালকের বাণী ও তাঁর কিতাবসমূহে (তাওরাত, যবূর ও ইঞ্জীলে) বিশ্বাস স্থাপন করেছিল। সে ছিল অনুগত ও বিনতদের অন্তর্ভুক্ত।

১১-১২। আবূ মূসা (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) বলেছেন, পুরুষের মধ্যে অনেকেই পূর্ণতা অর্জন করেছেন। কিন্তু মহিলাদের মধ্যে ফিরআউনের স্ত্রী আসিয়া এবং 'ইমরানের কন্যা মারইয়াম ব্যতীত আর কেউ পূর্ণতা অর্জনে সক্ষম হয়নি। তবে 'আয়িশাহ্র মর্যাদা সব মহিলার উপর এমন, যেমন সারীদের (গোশতের সুরুয়ায় ভিজা রুটির) মর্যাদা সকল প্রকার খাদ্যের উপর। –বুখারী ৩৪১১ [৩৪৩৩, ৩৭৬৯, ৫৪১৮; মুসলিম ২৪৩১, তিরমিযী ১৮৩৪, নাসায়ী ৩৯৪৭, ইবনু মাজাহ ৩২৮০, আহমাদ ১৯০২৯, ১৯১৬৯]

৬৭. সূরাহ আল-মুল্‌ক

سُوْرَةُ الْمُلْكِ

আয়াতঃ ৩০, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ز وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۙ (١)

১. অতি মহান ও শ্রেষ্ঠ তিনি, সর্বময় কর্তৃত্ব ও রাজত্ব যাঁর হাতে; তিনি সব কিছুর উপর ক্ষমতাবান।

الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ أَيُّكُمْ أَحْسَنُ عَمَلًا ط وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۙ (٢)

২. যিনি সৃষ্টি করেছেন মরণ ও জীবন যাতে তোমাদেরকে পরীক্ষা করেন- 'আমালের দিক দিয়ে তোমাদের মধ্যে কোন্ ব্যক্তি সর্বোত্তম? তিনি (একদিকে যেমন) মহা শক্তিধর, (আবার অন্যদিকে) অতি ক্ষমাশীল।

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ط مَا تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ط فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ (٣)

৩. যিনি সৃষ্টি করেছেন সাত আসমান- একটির উপর আরেকটি। তোমরা মহা দয়াময়ের সৃষ্টিকার্যে কোনরূপ অসামঞ্জস্য দেখতে পাবে না। তোমরা আবার দৃষ্টি ফিরিয়ে দেখ, কোন দোষ-ত্রুটি দেখতে পাও কি?

ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ إِلَيْكَ الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ (٤)

৪. অতঃপর তোমরা বারবার দৃষ্টি ফিরিয়ে দেখ; ক্লান্ত, শ্রান্ত ও ব্যর্থ হয়ে দৃষ্টি তোমার দিকে ফিরে আসবে।

وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَأَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابَ السَّعِيْرِ (٥)

৫. আমি নিকটবর্তী আকাশকে প্রদীপমালা দিয়ে সুসজ্জিত করেছি আর শয়ত্বানকে তাড়িয়ে দেয়ার জন্য, এবং প্রস্তুত করে রেখেছি জ্বলন্ত আগুনের শাস্তি।

وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ط

৬. যারা তাদের প্রতিপালককে অস্বীকার করে

৫। কাতাদাহ (রহ.) বলেন, (আল্লাহ তা'আলার বাণীঃ) আর আমি তো নিকটবর্তী আসমানকে প্রদীপ মালা দিয়ে শুশোভিত করেছি (৬৭ঃ ৫) (এ সম্পর্কে ক্বাতাদাহ (রহ.) বলেন) এ সব নক্ষত্ররাজি তিনটি উদ্দেশে সৃস্টি করা হয়েছে। (১) এদেরকে আসমানের সৌন্দর্য করেছেন (২) শয়তানদের প্রতি নিক্ষেপের জন্য (৩) এবং পথ ও দিক নির্ণয়ের আলামত হিসেবে। অতএব যে ব্যক্তি এদের সম্পর্কে এছাড়া অন্য কোন ব্যাখ্যা দেয় সে ভুল করে, নিজ প্রাপ্য হারায় এবং সে এমন বিষয়ে কষ্ট করে যে বিষয়ে তার কোন জ্ঞান নেই। -সহীহুল বুখারীঃ ৫৯/৩-অধ্যায়-নক্ষত্ররাজি সম্পর্কে

وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ (٦)

তাদের জন্য আছে জাহান্নামের শাস্তি; কতই না নিকৃষ্ট সে প্রত্যাবর্তনস্থল!

إِذَآ أُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ تَفُوْرُ ۙ (٧)

৭. তাদেরকে যখন তাতে নিক্ষেপ করা হবে তখন তারা জাহান্নামের শ্বাস গ্রহণের (ভয়াবহ) গর্জন শুনতে পাবে আর তা হবে উদ্বেলিত।

تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ؕ كُلَّمَآ أُلْقِيَ فِيْهَا فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيْرٌ (٨)

৮. ক্রোধে আক্রোশে জাহান্নাম ফেটে পড়ার উপক্রম হবে। যখনই কোন দলকে তাতে ফেলা হবে তখন তার রক্ষীরা তাদেরকে জিজ্ঞেস করবে, ‘তোমাদের কাছে কি কোন সতর্ককারী আসেনি?’

قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ۬ فَكَذَّبْنَا وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۚۖ إِنْ أَنْتُمْ إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ (٩)

৯. তারা জবাব দিবে, ‘হাঁ অবশ্যই আমাদের কাছে সতর্ককারী এসেছিল, কিন্তু আমরা তাদেরকে অস্বীকার করেছিলাম আর আমরা বলেছিলাম, ‘আল্লাহ কোন কিছুই অবতীর্ণ করেননি, তোমরা তো ঘোর বিভ্রান্তিতে পড়ে আছ।’

وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا فِيْٓ أَصْحٰبِ السَّعِيْرِ (١٠)

১০. তারা আরো বলবে, ‘আমরা যদি শুনতাম অথবা বুঝতাম তাহলে আমরা জ্বলন্ত আগুনের বাসিন্দাদের মধ্যে শামিল হতাম না।

فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّأَصْحٰبِ السَّعِيْرِ (١١)

১১. তারা তাদের অপরাধ স্বীকার করবে, অতএব দূর হোক জাহান্নামের অধিবাসীরা!

إِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ (١٢)

১২. যারা তাদের প্রতিপালককে না দেখেই ভয় করে তাদের জন্য আছে ক্ষমা আর মহা পুরস্কার।

وَأَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ؕ إِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (١٣)

১৩. তোমরা তোমাদের কথা চুপেচাপেই বল আর উচ্চৈঃস্বরেই বল, তিনি (মানুষের) অন্তরের গোপন কথা সম্পর্কে পুরোপুরি অবগত।

أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ؕ وَهُوَ اللَّطِيْفُ الْخَبِيْرُ ع (١٤)

১৪. যিনি সৃষ্টি করেছেন তিনিই কি জানেন না? তিনি অতি সূক্ষ্মদর্শী, ওয়াকিফহাল।

هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُوْلًا فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ؕ وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ (١٥)

১৫. তিনি তোমাদের জন্য যমীনকে (তোমাদের ইচ্ছার) অধীন করে দিয়েছেন, কাজেই তোমরা তার বুকের উপর দিয়ে চলাচল কর, আর আল্লাহর দেয়া রিযক হতে আহার কর, পুনরায় জীবিত হয়ে তাঁর কাছেই যেতে হবে।

أَأَمِنتُم مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يَّخْسِفَ بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُوْرُ ۙ (١٦)

১৬. তোমরা কি তোমাদেরকে নিরাপদ মনে করে নিয়েছ যে, যিনি আকাশে আছেন তিনি তোমাদেরকে যমীনে বিধ্বস্ত করে দিবেন না যখন তা হঠাৎ থর থর করে কাঁপতে থাকবে?

أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يُّرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ؕ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ (١٧)

১৭. কিংবা তোমরা কি নিরাপদ হয়ে গেছ যে, যিনি আকাশে আছেন তিনি তোমাদের উপর পাথর বর্ষণকারী ঝড়ো হাওয়া পাঠাবেন না? যাতে তোমরা জানতে পারবে যে, কেমন (ভয়ানক) ছিল আমার সতর্কবাণী।

وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ (١٨)

১৮. তাদের আগের লোকেরাও (আমার সতর্কবাণী) প্রত্যাখ্যান করেছিল, ফলে কেমন (কঠোর) হয়েছিল আমার শাস্তি!

أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ وَّيَقْبِضْنَ ؕ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمٰنُ ؕ إِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍۭ بَصِيْرٌ (١٩)

১৯. তারা কি তাদের উপর দিকে পাখীগুলোর প্রতি লক্ষ্য করে না যারা ডানা মেলে দেয় আবার গুটিয়ে নেয়? দয়াময় ছাড়া অন্য কেউই তাদেরকে (উপরে) ধরে রাখে না। তিনি সবকিছুর সম্যক দ্রষ্টা।

أَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ يَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ إِنِ الْكٰفِرُوْنَ إِلَّا فِيْ غُرُوْرٍ ۚ (٢٠)

২০. দয়াময় ছাড়া কে তোমাদেরকে সাহায্য করবে তোমাদের সেনাবাহিনী হয়ে? কাফিররা তো কেবল ধোঁকার মধ্যে পড়ে আছে।

أَمَّنْ هٰذَا الَّذِيْ يَرْزُقُكُمْ إِنْ أَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِيْ عُتُوٍّ وَّنُفُوْرٍ (٢١)

২১. অথবা এমন কে আছে যে তোমাদেরকে রিয্‌ক দিবে যদি তিনি তাঁর রিয্‌ক বন্ধ করে দেন? আসলে তারা অহমিকা ও অনীহায় ডুবে আছে।

أَفَمَنْ يَّمْشِيْ مُكِبًّا عَلٰى وَجْهِهٖٓ أَهْدٰٓى أَمَّنْ يَّمْشِيْ سَوِيًّا عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٢٢)

২২. যে লোক উপুড় হয়ে মুখের ভরে চলে সেই কি অধিক সৎপথপ্রাপ্ত, না সেই লোক যে সোজা হয়ে সরল সঠিক পথে চলে?

قُلْ هُوَ الَّذِيْٓ أَنْشَأَكُمْ وَجَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْأَبْصَارَ وَالْأَفْئِدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ (٢٣)

২৩. বলে দাও, 'তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন আর তোমাদেরকে দিয়েছেন শোনার ও দেখার শক্তি আর অন্তঃকরণ; তোমরা শোকর আদায় খুব অল্পই করে থাক।'

قُلْ هُوَ الَّذِيْ ذَرَأَكُمْ فِي الْأَرْضِ وَإِلَيْهِ

২৪. বলে দাও, 'তিনিই তোমাদেরকে যমীনে ছড়িয়ে দিয়েছেন আর তাঁর কাছেই তোমাদেরকে

تُحْشَرُوْنَ (٢٤)

সমবেত করা হবে।

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٢٥)

২৫. তারা বলে, 'তোমরা যদি সত্যবাদী হয়েই থাক তাহলে বল (ক্বিয়ামত সংঘটিত হওয়ার) ও'য়াদা কখন (বাস্তবায়িত হবে)?

قُلْ إِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللهِ ص وَإِنَّمَآ أَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (٢٦)

২৬. বল, 'সে জ্ঞান তো কেবল আল্লাহ্‌র কাছেই আছে, আমি শুধু একজন স্পষ্ট সতর্ককারী।

فَلَمَّا رَأَوْهُ زُلْفَةً سِيْـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقِيْلَ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ (٢٧)

২৭. অতঃপর যখন তারা তাকে (অর্থাৎ ক্বিয়ামতকে) নিকটে উপস্থিত দেখতে পাবে, তখন কাফিরদের মুখ মলিন হয়ে যাবে, আর (তাদেরকে) বলা হবে, 'এই তো (ও'য়াদা বাস্তবায়িত হয়েছে) যা তোমরা চাচ্ছিলে।'

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَهْلَكَنِيَ اللهُ وَمَنْ مَّعِيَ أَوْ رَحِمَنَا لا فَمَنْ يُّجِيْرُ الْكٰفِرِيْنَ مِنْ عَذَابٍ أَلِيْمٍ (٢٨)

২৮. বল, "তোমরা ভেবে দেখেছ কি আল্লাহ যদি আমাকে আর আমার সঙ্গী সাথীদেরকে ধ্বংস করে দেন অথবা আমাদের উপর দয়া করেন (তাতে তোমাদের লাভটা কী?) মর্মান্তিক শাস্তি থেকে কাফিদেরকে বাঁচাবে কে?

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَعَلَيْهِ تَوَكَّلْنَا ج فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِيْ ضَلَالٍ مُّبِيْنٍ (٢٩)

২৯. বল, 'তিনিই দয়াময়, আমরা তাঁর উপরেই ঈমান রাখি, আর তাঁর উপরেই নির্ভর করি। তোমরা শীঘ্রই জানতে পারবে কে সুস্পষ্ট গুমরাহীতে আছে (আমরা না তোমরা)।'

قُلْ أَرَأَيْتُمْ إِنْ أَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ يَّأْتِيْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِيْنٍ ع (٣٠)

৩০. বল, "তোমরা ভেবে দেখেছ কি যদি তোমাদের পানি ভূগর্ভের তলদেশে চলে যায়, তাহলে তোমাদেরকে কে এনে দেবে প্রবহমান পানি?"

৬৮. সূরাহ আল-ক্বালাম

سُوْرَةُ الْقَلَمِ

আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ لا (١)

১. নূন, কলমের শপথ আর লেখকেরা যা লেখে তার শপথ।

مَآ أَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ج (٢)

২. তোমার প্রতিপালকের অনুগ্রহে তুমি পাগল নও।

وَإِنَّ لَكَ لَأَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ج (٣)

৩. তোমার জন্য অবশ্যই আছে অফুরন্ত পুরস্কার,

وَإِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ (٤)

৪. নিশ্চয়ই তুমি মহান চরিত্রের উচ্চমার্গে উন্নীত।

فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ لا (٥)

৫. শীঘ্রই তুমি দেখতে পাবে আর তারাও দেখবে,

بِأَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ (٦)

৬. তোমাদের মধ্যে কে পাগলামিতে আক্রান্ত।

إِنَّ رَبَّكَ هُوَ أَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهِ ص وَهُوَ أَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ (٧)

৭. তোমার প্রতিপালক বেশি জানেন কে তাঁর পথ থেকে গুমরাহ হয়ে গেছে, আর সঠিক পথপ্রাপ্তদেরকেও তিনি ভাল করে জানেন।

فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ (٨)

৮. কাজেই তুমি মিথ্যাবাদীদের কথা মান্য কর না।

وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ (٩)

৯. তারা চায় যে, তুমি যদি নমনীয় হও, তবে তারাও নমনীয় হবে,

وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ لا (١٠)

১০. তুমি তার অনুসরণ কর না, যে বেশি বেশি কসম খায় আর যে (বার বার মিথ্যা কসম খাওয়ার কারণে মানুষের কাছে) লাঞ্ছিত।

هَمَّازٍ مَّشَّآءٍ بِنَمِيْمٍ لا (١١)

১১. যে পশ্চাতে নিন্দা করে একের কথা অপরের কাছে লাগিয়ে ফিরে,

مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ أَثِيْمٍ لا (١٢)

১২. যে ভাল কাজে বাধা দেয়, সীমালঙ্ঘনকারী, পাপিষ্ঠ,

عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ لا (١٣)

১৩. কঠোর স্বভাব, তার উপরে আবার কুখ্যাত।

أَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ط (١٤)

১৪. কারণ সে সম্পদ আর (অনেক) সন্তানাদির অধিকারী।

إِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ (١٥)

১৫. তার কাছে যখন আমার আয়াত পাঠ করা হয় তখন সে বলে, "এতো আগে কালের লোকেদের কিস্‌সা কাহিনী মাত্র।

سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ (١٦)

১৬. আমি তার শুঁড়ের উপর দাগ দিয়ে দিব (অর্থাৎ তাকে লাঞ্ছিত করব)।

১৩। ইব্‌নু 'আব্বাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি عُتُلٍّ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ (রূঢ় স্বভাব এবং তদুপরি কুখ্যাত) আয়াতের ব্যাখ্যায় বলেন, এ লোকটি হলো কুরায়শ গোত্রের এমন এক লোক, যার স্কন্ধে ছাগলের চিহ্নের মত একটি বিশেষ চিহ্ন ছিল। –বুখারী ৪৯১৭

إِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ إِذْ أَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ۙ (١٧)

১৭. আমি এদেরকে (অর্থাৎ মক্কাবাসীদেরকে) পরীক্ষা করেছি যেমন আমি বাগানের মালিকদেরকে পরীক্ষা করেছিলাম। যখন তারা কসম করে বলেছিল যে, তারা সকাল বেলায় অবশ্যই বাগানের ফল সংগ্রহ করে নেবে।

وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ (١٨)

১৮. তারা 'ইনশাআল্লাহ' বলেনি।

فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ وَهُمْ نَآئِمُوْنَ (١٩)

১৯. অতঃপর তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে বাগানে এক বিপদ এসে পড়ল যখন তারা ছিল নিদ্রিত।

فَأَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ۙ (٢٠)

২০. যার ফলে তা হয়ে গেল বিবর্ণ কাটা ফসলের মত।

فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ۙ (٢١)

২১. সকালে একে অপরকে ডেকে বলল,

أَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ صٰرِمِيْنَ (٢٢)

২২. 'তোমরা যদি ফল সংগ্রহ করতে চাও তবে সকাল সকাল ক্ষেতে চল।

فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ ۙ (٢٣)

২৩. তারা চুপি চুপি কথা বলতে বলতে চলল।

أَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ مِّسْكِيْنٌ ۙ (٢٤)

২৪. 'আজ যেন সেখানে তোমাদের কাছে মিসকীনরা অবশ্যই ঢুকতে না পারে।'

وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ (٢٥)

২৫. তারা এক (অন্যায়) সিদ্ধান্তে সঙ্কল্পবদ্ধ হয়ে সকাল করল।

فَلَمَّا رَأَوْهَا قَالُوْآ إِنَّا لَضَآلُّوْنَ ۙ (٢٦)

২৬. অতঃপর তারা যখন বাগানটি দেখল তখন তারা বলল, "আমরা অবশ্যই পথ হারিয়ে ফেলেছি,

بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ (٢٧)

২৭. (অতঃপর ব্যাপারটি বুঝতে পারার পর তারা বলে উঠল) বরং আমরা তো কপাল পোড়া।"

قَالَ أَوْسَطُهُمْ أَلَمْ أَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا تُسَبِّحُوْنَ (٢٨)

২৮. তাদের মধ্যেকার সবচেয়ে ভাল লোকটি বলল, 'আমি কি তোমাদেরকে বলিনি যে, তোমরা আল্লাহ্‌র পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করছ না কেন?'

قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٢٩)

২৯. তারা বলল, 'আমরা আমাদের প্রতিপালকের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করছি, আমরা সীমালঙ্ঘনকারীই ছিলাম।'

فَأَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلَىٰ بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ (٣٠)

৩০. অতঃপর তারা একে অপরের দিকে এগিয়ে গিয়ে পরস্পরের প্রতি দোষারোপ করতে লাগল।

قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ (٣١)

৩১, তারা বলল, 'দুর্ভোগ আমাদের, আমরা ছিলাম সীমালঙ্ঘনকারী,

عَسٰى رَبُّنَآ أَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ إِنَّآ إِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ (٣٢)

৩২. সম্ভবতঃ আমাদের প্রতিপালক এর পরিবর্তে আমাদেরকে উত্তম (বাগান) দিবেন, আমরা আমাদের প্রতিপালকের অভিমুখী হলাম।'

كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ط وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ أَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ع (٣٣)

৩৩. 'আযাব এ রকমই হয়ে থাকে। আর আখিরাতের 'আযাব তো সবচেয়ে কঠিন। যদি তারা জানত!

إِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (٣٤)

৩৪. মুত্তাক্বীদের জন্য তাদের প্রতিপালকের নিকট আছে নি'মাতে পরিপূর্ণ জান্নাত।

أَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ ط (٣٥)

৩৫. আমি কি আত্মসমর্পণকারীদেরকে অপরাধীদের মত গণ্য করব?

مَا لَكُمْ قف كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ج (٣٦)

৩৬. তোমাদের কী হয়েছে, তোমরা কেমনভাবে বিচার করে সিদ্ধান্ত দিচ্ছ?

أَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ لا (٣٧)

৩৭. তোমাদের কাছে কি (আল্লাহ্‌র নাযিলকৃত) কোন কিতাব আছে যা পড়ে তোমরা জানতে পার যে,

إِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ ج (٣٨)

৩৮. তোমাদের জন্য সেখানে তাই আছে যা তোমরা পছন্দ কর?

أَمْ لَكُمْ أَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لا إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ ج (٣٩)

৩৯. অথবা তোমাদের জন্য আমার উপর কি ক্বিয়ামত পর্যন্ত বলবৎ কোন দায়বদ্ধতা আছে যে, তোমরা যা দাবী করবে তাই পাবে?

سَلْهُمْ أَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ ج (٤٠)

৪০. তুমি তাদেরকে জিজ্ঞেস কর (আল্লাহ যে তাদের সঙ্গে প্রতিশ্রুতিতে দায়বদ্ধ) এ ব্যাপারে তাদের মধ্যে কোন্ ব্যক্তি জামিনদার (গ্যারান্টর)?

أَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ج فَلْيَأْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ إِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ (٤١)

৪১. অথবা তাদের কি শরীক উপাস্য আছে, থাকলে তাদের শরীক উপাস্যদেরকে হাজির করুক- তারা যদি সত্যবাদী হয়ে থাকে।

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ لا (٤٢)

৪২. যেদিন (ক্বিয়ামতে) পায়ের গোছা (হাঁটুর নিম্নভাগ) উন্মোচিত হবে আর তাদেরকে ডাকা হবে সেজদা করার জন্য, কিন্তু তারা সেজদা

করতে সক্ষম হবে না।

خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ وَقَدْ كَانُوا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُودِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ (٤٣)

৪৩. তাদের দৃষ্টি হবে অবনত, অপমান লাঞ্ছনা তাদের উপর চেপে বসবে। (দুনিয়াতে) তারা যখন সুস্থ ও নিরাপদ ছিল তখনও তাদেরকে সেজদা করার জন্য ডাকা হত (কিন্তু তারা সেজদা করত না)

فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ۖ سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ (٤٤)

৪৪. কাজেই ছেড়ে দাও আমাকে আর তাদেরকে যারা এ বাণীকে অস্বীকার করেছে। আমি তাদেরকে ক্রমে ক্রমে আস্তে আস্তে এমনভাবে ধরে টান দিব যে, তারা একটু টেরও পাবে না।

وَأُمْلِيْ لَهُمْ ۖ إِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ (٤٥)

৪৫. আমি তাদেরকে (লম্বা) সময় দেই, আমার কৌশল বড়ই মজবুত।

أَمْ تَسْأَلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ ۚ (٤٦)

৪৬. তুমি কি তাদের কাছে কোন পারিশ্রমিক চাচ্ছ যে, দেনার দায়ভার বহন করা তাদের জন্য কঠিন হয়ে পড়েছে?

أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ ۚ (٤٧)

৪৭. নাকি তাদের কাছে গায়বের খবর আছে যা তা তারা লিখে রাখে।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ الْحُوْتِ ۘ إِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ ۖ (٤٨)

৪৮. কাজেই তুমি তোমার প্রতিপালকের হুকুমের জন্য ধৈর্য ধরে অপেক্ষা কর, আর মাছওয়ালা [ইউনুস (ﷺ)] এর মত (অধৈর্য) হয়ো না। স্মরণ কর যখন সে (তার প্রতিপালককে ডাক দিয়েছিল চিন্তায় দুঃখে আচ্ছন্ন হয়ে।

لَوْلَا أَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ (٤٩)

৪৯. তার প্রতিপালকের অনুগ্রহ যদি তার কাছে না পৌঁছত, তাহলে সে লাঞ্ছিত অবস্থায় ধুঁধুঁ বালুকাময় তীরে নিক্ষিপ্ত হত।

৪২। আবূ সা'ঈদ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি, আমাদের প্রতিপালক যখন তাঁর পায়ের গোড়ালি খুলবেন, তখন ঈমানদার নারী ও পুরুষ সবাই তাকে সাজ্‌দাহ করবে। কিন্তু যারা দুনিয়াতে লোক দেখানো ও প্রচারের জন্য সাজ্‌দাহ করত, তারা কেবল বাকী থাকবে। তারা সাজদাহ করতে ইচ্ছে করলে তাদের পিঠ একখণ্ড কাঠের ন্যায় শক্ত হয়ে যাবে। –বুখারী ৪৯১৯ [২২; মুসলিম ১৮২, ১৮৪, ১৮৫, ১৯৪; তিরমিযী ২৪৩৪, ৩১৪৮; নাসায়ী ১১৪০, ইবনু মাজাহ ৪২৮০, ৪৩০৯; আহ. ৭৬৬০, ১০৬৩৩; দারিমী ২৮০১, ২৮০৩, ২৮১৭]

فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (٥٠)

৫০. এভাবে তার প্রতিপালক তাকে বেছে নিলেন আর তাকে সৎকর্মশীলদের অন্তর্ভুক্ত করলেন।

وَاِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ بِاَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ اِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ ۘ (٥١)

৫১. কাফিররা যখন কুরআন শুনে তখন তারা যেন তাদের দৃষ্টি দিয়ে তোমাকে আছড়ে ফেলবে। আর তারা বলে, "সে তো অবশ্যই পাগল।"

وَمَا هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ع (٥٢)

৫২. অথচ এ কুরআন বিশ্বজগতের জন্য উপদেশ ছাড়া অন্য কিছুই নয়।

سُوْرَةُ الْحَاۤقَّةِ

৬৯. সূরাহ আল হা-কক্বাহ

আয়াতঃ ৫২, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

اَلْحَاۤقَّةُ ۙ (١)

১. নিশ্চিত সংঘটিতব্য বিষয়,

مَا الْحَاۤقَّةُ ج (٢)

২. কী সেই নিশ্চিত সংঘটিতব্য বিষয়?

وَمَاۤ اَدْرٰكَ مَا الْحَاۤقَّةُ ط (٣)

৩. আর তুমি কি জান কী সেই নিশ্চিত সংঘটিতব্য বিষয়?

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ ۢبِالْقَارِعَةِ (٤)

৪. 'আদ ও সামূদ জাতি সেই আকস্মিকভাবে সংঘটিতব্য মহাবিপদকে মিথ্যে বলেছিল।

فَاَمَّا ثَمُوْدُ فَاُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ (٥)

৫. অতঃপর সামূদ জাতিকে ধ্বংস করা হয়েছিল এক প্রলয়ংকর বিপর্যয় দিয়ে।

وَاَمَّا عَادٌ فَاُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ ۙ (٦)

৬. আর 'আদকে ধ্বংস করা হয়েছিল এক প্রচণ্ড ঝড়ো হাওয়া দিয়ে।

سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ اَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ج (٧)

৭. যা তাদের উপর প্রবাহিত হয়েছিল সাত রাত আট দিন বিরামহীনভাবে, তুমি দেখতে তারা পড়ে আছে ইতস্তত বিক্ষিপ্ত, যেন তারা পুরাতন শুকনো খেজুর গাছের কাণ্ড।

فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْ ۢ بَاقِيَةٍ (٨)

৮. তুমি তাদের কাউকে রক্ষা পেয়ে বেঁচে থাকতে দেখছ কি?

وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ بِالْخَاطِئَةِ ج (٩)

৯. ফেরাউন আর তার পূর্ববর্তীরা আর উল্টে দেয়া জনপদবাসীরা গুরুতর পাপে লিপ্ত ছিল।

فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَأَخَذَهُمْ أَخْذَةً رَّابِيَةً (١٠)

১০. তারা তাদের প্রতিপালকের রসূলকে অমান্য করেছিল, তখন তিনি তাদেরকে পাকড়াও করলেন- অত্যন্ত কঠিন পাকড়াও।

إِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ لا (١١)

১১. (নূহের বানের) পানি যখন কূল ছাপিয়ে সীমা ছাড়িয়ে গেল, তখন আমি তোমাদেরকে চলন্ত নৌযানে আরোহণ করালাম।

لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ أُذُنٌ وَّاعِيَةٌ (١٢)

১২. যেন এ ঘটনাটিকে আমি তোমাদের জন্য শিক্ষাপ্রদ-স্মারক করে রাখি আর সংরক্ষণকারী কান তা সংরক্ষণ করে।

فَإِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ لا (١٣)

১৩. অতঃপর যখন সিঙ্গায় ফুঁৎকার দেয়া হবে- মাত্র একটি ফুঁৎকার।

وَّحُمِلَتِ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا دَكَّةً وَّاحِدَةً لا (١٤)

১৪. পৃথিবী আর পর্বতমালা উৎক্ষিপ্ত হবে আর একই আঘাতে তাদেরকে চূর্ণ বিচূর্ণ করা হবে।

فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ لا (١٥)

১৫. সেদিন ঘটবে সেই সংঘটিতব্য (মহা) ঘটনা।

وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ لا (١٦)

১৬. আকাশ হয়ে যাবে দীর্ণ বিদীর্ণ আর সেদিন তা হবে বাঁধন-হারা–বিক্ষিপ্ত।

وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى أَرْجَآئِهَا ط وَيَحْمِلُ عَرْشَ رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ط (١٧)

১৭. ফেরেশতারা থাকবে আকাশের আশে পাশে। আটজন ফেরেশতা সেদিন তোমার প্রতিপালকের 'আরশ নিজেদের ঊর্ধ্বে বহন করবে।

يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ خَافِيَةٌ (١٨)

১৮. সেদিন তোমাদেরকে (বিচারের জন্য) হাজির করা হবে আর তোমাদের কোন কাজই- যা তোমরা গোপন কর- গোপন থাকবে না।

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ لا فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ج (١٩)

১৯. তখন যাকে তার 'আমালনামা তার ডান হাতে দেয়া হবে সে বলবে, 'এই যে আমার 'আমালানামা পড়ে দেখ,

إِنِّيْ ظَنَنْتُ أَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ج (٢٠)

২০. আমি জানতাম যে, আমাকে আমার হিসাবের সম্মুখীন হতে হবে।'

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۙ (٢١)

২১. অতঃপর সে আনন্দময় জীবন যাপন করবে,

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ (٢٢)

২২. উচ্চতম মর্যাদার জান্নাতে,

قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ (٢٣)

২৩. তার ফলসমূহ (ঝুলে থাকবে) নীচে-নাগালের মধ্যে।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢبِمَآ أَسْلَفْتُمْ فِي الْأَيَّامِ الْخَالِيَةِ (٢٤)

২৪. (তাদেরকে বলা হবে) পরিপূর্ণ তৃপ্তির সঙ্গে খাও এবং পান কর বিগত দিনে তোমরা যা (নেক 'আমাল) করেছিলে তার প্রতিদান স্বরূপ।

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ أُوْتَ كِتٰبِيَهْ ج (٢٥)

২৫. কিন্তু যার 'আমালনামা বাম হাতে দেয়া হবে সে বলবে, 'হায়! আমাকে যদি আমার 'আমালনামা না দেয়া হত,

وَلَمْ أَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ ج (٢٦)

২৬. আর আমার হিসাব কী তা যদি আমি না-ই জানতাম,

يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ ج (٢٧)

২৭. 'হায়! (দুনিয়ার) মৃত্যুই যদি আমার শেষ (অবস্থা) হত!

مَآ أَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ ج (٢٨)

২৮. আমার ধন-সম্পদ আমার কোন কাজে আসল না,

هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ ج (٢٩)

২৯. আমার (সব) ক্ষমতা আধিপত্য নিঃশেষ হয়ে গেছে,

خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ ۙ (٣٠)

৩০. (তখন নির্দেশ আসবে) ধর ওকে, ওর গলায় ফাঁস লাগিয়ে দাও,

ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ ۙ (٣١)

৩১. তারপর ছুড়ে ফেল ওকে জাহান্নামে,

ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ ط (٣٢)

৩২. তারপর ওকে শিকল দিয়ে বাঁধ– সত্তর হাত দীর্ঘ এক শিকলে,

إِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ ۙ (٣٣)

৩৩. সে মহান আল্লাহ্‌র উপর ঈমান আনেনি,

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ط (٣٤)

৩৪. আর না সে মিসকীনকে খাবার খাওয়াতে উৎসাহ দিত,

فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ ۙ (٣٥)

৩৫. কাজেই আজ এখানে তার কোন বন্ধু নেই,

وَّلَا طَعَامٌ إِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ ۙ (٣٦)

৩৫. ক্ষত হতে পড়া পুঁজ ছাড়া কোন খাদ্য নেই,

لَّا يَأْكُلُهٗٓ إِلَّا الْخَاطِئُوْنَ ع (٣٧)

৩৭. যা অপরাধীরা ছাড়া অন্য কেউ খায় না।

৩৮. আমি কসম করছি সে সব জিনিসের যা তোমরা দেখতে পাও,

فَلَآ أُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ ۙ (٣٨)

৩৯. আর (সে সব জিনিসেরও) যা তোমরা দেখতে পাও না

وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ ۙ (٣٩)

৪০. যে, অবশ্যই এ কুরআন এক মহা সম্মানিত রসূল [জিবরীল ('আ.)]-এর (বহন করে আনা) বাণী।

إِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ۙ (٤٠)

৪১. তা কোন কবির কথা নয়, (কবির কথা তো) তোমরা বিশ্বাস করো না,

وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ ۙ (٤١)

৪২. এটা কোন গণকের কথাও নয়, (গণকের কথায় তো) তোমরা নসীহত লাভ করো না।

وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ؕ (٤٢)

৪৩. এটা বিশ্ব জগতের প্রতিপালকের নিকট থেকে অবতীর্ণ,

تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٤٣)

৪৪. নবী যদি কোন কথা নিজে রচনা করে আমার নামে চালিয়ে দিত,

وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْأَقَاوِيْلِ ۙ (٤٤)

৪৫. আমি অবশ্যই তার ডান হাত ধরে তাকে পাকড়াও করতাম,

لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ ۙ (٤٥)

৪৬. তারপর অবশ্যই কেটে দিতাম তার হৃৎপিণ্ডের শিরা,

ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ ؗ (٤٦)

৪৭. অতঃপর তোমাদের মধ্যে এমন কেউ নেই যে, (আমার গোস্বা থেকে তাকে রক্ষা করার জন্য) বাধা সৃষ্টি করতে পারে।

فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ أَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ (٤٧)

৪৮. মুত্তাক্বীদের জন্য এ কুরআন অবশ্যই এক উপদেশ,

وَإِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ (٤٨)

৪৯. আমি অবশ্যই জানি যে, তোমাদের মধ্যে কতক লোক (কুরআনকে) অস্বীকার করবে।

وَإِنَّا لَنَعْلَمُ أَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ (٤٩)

৫০. আর এ কুরআন কাফিরদের জন্য অবশ্যই দুঃখ ও হতাশার কারণ হবে (যখন কুরআনে বর্ণিত শাস্তি তাদেরকে ঘিরে ধরবে)।

وَإِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (٥٠)

৫১. এটা একেবারে নিশ্চিত সত্য।

وَإِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ (٥١)

৫২. অতএব তুমি তোমার মহান প্রতিপালকের নামের পবিত্রতা ও মহিমা বর্ণনা কর।

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ع (٥٢)

৭০. সূরাহ আল-মা'আরিজ

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ

আয়াতঃ ৪৪, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

سَأَلَ سَآئِلٌ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ لا (١)

১. এক ব্যক্তি চাইল সে 'আযাব যা অবশ্যই সংঘটিত হবে।

لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ لا (٢)

২. কাফিরদের জন্য তা প্রতিরোধ করার কেউ নেই

مِّنَ اللهِ ذِي الْمَعَارِجِ ط (٣)

৩. (যে শাস্তি আসবে) আল্লাহ্র নিকট হতে যিনি আসমানে উঠার সিঁড়িগুলোর মালিক,

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ إِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ أَلْفَ سَنَةٍ ج (٤)

৪. ফেরেশতা এবং রূহ (অর্থাৎ জিবরীল) আল্লাহ্র দিকে আরোহণ করে এমন এক দিনে, যার পরিমাণ পঞ্চাশ হাজার বছর।

فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا (٥)

৫. সুতরাং (হে নবী!) ধৈর্য ধর– সুন্দর সৌজন্যমূলক ধৈর্য।

إِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا لا (٦)

৬. তারা ঐ দিনটিকে সুদূর মনে করছে,

وَّنَرٰىهُ قَرِيْبًا ط (٧)

৭. কিন্তু আমি তা নিকটে দেখতে পাচ্ছি।

يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ لا (٨)

৮. সেদিন আকাশ হবে গলিত রূপার মত,

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ لا (٩)

৯. আর পাহাড়গুলো হবে রঙ্গীণ পশমের মত,

وَلَا يَسْأَلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ج لا (١٠)

১০. বন্ধু বন্ধুর খবর নিবে না,

يُّبَصَّرُوْنَهُمْ ط يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِيْ مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍ بِبَنِيْهِ لا (١١)

১১. যদিও তাদেরকে রাখা হবে পরস্পরের দৃষ্টির সামনে, অপরাধী সেদিনের 'আযাব থেকে বাঁচার জন্য বিনিময়ে দিতে চাইবে তার সন্তানাদিকে,

وَصَاحِبَتِهٖ وَأَخِيْهِ لا (١٢)

১২. তার স্ত্রী ও ভাইকে,

وَفَصِيْلَتِهِ الَّتِيْ تُؤْوِيْهِ لا (١٣)

১৩. আর তার আত্মীয় গোষ্ঠীকে যারা তাকে আশ্রয় দিত,

وَمَنْ فِي الْأَرْضِ جَمِيْعًا لا ثُمَّ يُنْجِيْهِ لا (١٤)

১৪. আর দুনিয়ার সব্বাইকে, যাতে তা তাকে রক্ষা করতে পারে।

كَلَّا ۖ إِنَّهَا لَظَى ﴿١٥﴾

১৫. না, কক্ষনো নয়, ওটা জ্বলন্ত অগ্নিশিখা,

نَزَّاعَةً لِّلشَّوَى ﴿١٦﴾

১৬. যা চামড়া তুলে দিবে,

تَدْعُوا مَنْ أَدْبَرَ وَتَوَلَّى ﴿١٧﴾

১৭. জাহান্নাম সেই ব্যক্তিকে ডাকবে যে পেছনে ফিরে গিয়েছিল এবং সত্য থেকে মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিল।

وَجَمَعَ فَأَوْعَى ﴿١٨﴾

১৮. সে মালধন জমা করত, অতঃপর তা আগলে রাখত,

إِنَّ الْإِنسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا ﴿١٩﴾

১৯. মানুষকে সৃষ্টি করা হয়েছে খুবই অস্থির-মনা করে,

إِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوعًا ﴿٢٠﴾

২০. বিপদ তাকে স্পর্শ করলে সে হয় উৎকণ্ঠিত,

وَإِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوعًا ﴿٢١﴾

২১. কল্যাণ তাকে স্পর্শ করলে সে হয়ে পড়ে অতি কৃপণ,

إِلَّا الْمُصَلِّينَ ﴿٢٢﴾

২২. তবে নামায আদায়কারীরা এ রকম নয়,

الَّذِينَ هُمْ عَلَى صَلَاتِهِمْ دَائِمُونَ ﴿٢٣﴾

২৩. যারা তাদের নামাযে স্থির সংকল্প

وَالَّذِينَ فِي أَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُومٌ ﴿٢٤﴾

২৪. যাদের ধন-সম্পদে একটা সুবিদিত অধিকার আছে,

لِّلسَّائِلِ وَالْمَحْرُومِ ﴿٢٥﴾

২৫. প্রার্থী এবং বঞ্চিতদের,

وَالَّذِينَ يُصَدِّقُونَ بِيَوْمِ الدِّينِ ﴿٢٦﴾

২৬. যারা বিচার দিবসকে সত্য মানে।

وَالَّذِينَ هُم مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِم مُّشْفِقُونَ ﴿٢٧﴾

২৭. যারা তাদের প্রতিপালকের শাস্তি সম্পর্কে ভীত কম্পিত,

إِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَأْمُونٍ ﴿٢٨﴾

২৮. তাদের প্রতিপালকের শাস্তি এমন যে তাথেকে নিজেকে নিরাপদ ভাবা যায় না,

وَالَّذِينَ هُمْ لِفُرُوجِهِمْ حَافِظُونَ ﴿٢٩﴾

২৯. যারা নিজেদের লজ্জাস্থান সংরক্ষণ করে

إِلَّا عَلَى أَزْوَاجِهِمْ أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُمْ فَإِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُومِينَ ﴿٣٠﴾

৩০. তাদের স্ত্রী অথবা অধিকারভুক্ত দাসী ছাড়া, কেননা তাতে তারা তিরস্কৃত হবে না,

فَمَنِ ابْتَغَى وَرَاءَ ذَلِكَ فَأُولَئِكَ هُمُ الْعَادُونَ ﴿٣١﴾

৩১. তবে এর বাইরে যারা অন্য কাউকে কামনা করবে, তারাই সীমালঙ্ঘনকারী।

وَالَّذِينَ هُمْ لِأَمَانَاتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رَاعُونَ ﴿٣٢﴾

৩২. যারা তাদের আমানাত ও ও'য়াদা রক্ষা করে,

৩৩. যারা তাদের সাক্ষ্যদানে (সত্যতার উপর) সুপ্রতিষ্ঠিত,	وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهَادٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ (٣٣)
৩৪. যারা তাদের নামাযে যত্নবান,	وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلٰوتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ (٣٤)
৩৫. তারাই হবে জান্নাতে সম্মানিত।	أُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ (٣٥)
৩৬. কাফিরদের কী হল যে, তারা তোমার দিকে ছুটে আসছে (তোমার কুরআন পাঠ শুনে তোমাকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করার জন্য),	فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ (٣٦)
৩৭. ডান দিক আর বাম দিক থেকে দলে দলে,	عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ (٣٧)
৩৮. তাদের প্রত্যেকেই কি এই লোভ করে যে, তাকে নি'মাত-ভরা জান্নাতে দাখিলা করা হবে?	أَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُّدْخَلَ جَنَّةَ نَعِيْمٍ (٣٨)
৩৯. কক্ষনো না, আমি তাদেরকে কী থেকে সৃষ্টি করেছি তা তারা জানে (এমন নগণ্য বস্তু থেকে সৃষ্ট মানুষ কেবল মানুষ হয়ে জন্ম নেয়ার কারণেই জান্নাতে চলে যাবে এ রকম লোভ করা বড়ই অবিবেচনাপ্রসূত ব্যাপার)।	كَلَّا ۖ إِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ (٣٩)
৪০. আমি শপথ করছি উদয়স্থানসমূহের ও অস্তাচলসমূহের রব্বের-আমি অবশ্যই সক্ষম,	فَلَآ أُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ إِنَّا لَقٰدِرُوْنَ (٤٠)
৪১. তাদের পরিবর্তে তাদের চেয়ে উৎকৃষ্ট মানুষ বানাতে, আমাকে পরাস্ত করবে এমন কেউ নেই।	عَلٰٓى أَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ بِمَسْبُوْقِيْنَ (٤١)
৪২. কাজেই তাদেরকে অনর্থক কথাবার্তা ও খেল তামাশায় মত্ত থাকতে দাও যতক্ষণ না তারা তাদের সেদিনের সাক্ষাৎ লাভ করে যে দিনের ও'য়াদা তাদেরকে দেয়া হয়েছিল।	فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ (٤٢)
৪৩. যেদিন তারা কবর থেকে বের হবে দ্রুততার সাথে- যেন তারা কোন লক্ষ্যস্থলের দিকে ছুটে চলেছে।	يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْأَجْدَاثِ سِرَاعًا كَأَنَّهُمْ إِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ (٤٣)
৪৪. তাদের দৃষ্টি হবে অবনমিত, লাঞ্ছনা তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে। এটাই হল সেই দিন যার ও'য়াদা তাদেরকে দেয়া হচ্ছিল।	خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۖ ذٰلِكَ الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ (٤٤)

৭১. সূরাহ নূহ

سُوْرَةُ نُوْحٍ

আয়াতঃ ২৮, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِنَّآ أَرْسَلْنَا نُوْحًا إِلٰى قَوْمِهٖٓ أَنْ أَنْذِرْ قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ (١)

১. আমি নূহকে তার জাতির কাছে পাঠিয়েছিলাম (এই নির্দেশ দিয়ে) যে, তুমি তোমার জাতিকে সতর্ক কর তাদের কাছে মর্মান্তিক 'আযাব আসার পূর্বে।

قَالَ يٰقَوْمِ إِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۙ (٢)

২. সে বলেছিল, " হে আমার জাতির লোকেরা! আমি তোমাদের জন্য এক সুস্পষ্ট সতর্ককারী,

أَنِ اعْبُدُوا اللهَ وَاتَّقُوْهُ وَأَطِيْعُوْنِ ۙ (٣)

৩. এ বিষয়ে যে, তোমরা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত কর, তাঁকেই ভয় কর, আর আমার কথা মান্য কর।

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ إِلٰٓى أَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ إِنَّ أَجَلَ اللهِ إِذَا جَآءَ لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٤)

৪. তাহলে তিনি তোমাদের পাপ ক্ষমা করে দেবেন এবং একটা নির্দিষ্ট সময় পর্যন্ত তোমাদেরকে অবকাশ দেবেন। আল্লাহ কর্তৃক নির্দিষ্ট সময় যখন আসবে তখন আর তা বিলম্বিত হবে না। তোমরা যদি জানতে!'

قَالَ رَبِّ إِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۙ (٥)

৫. সে বলেছিল, 'হে আমার প্রতিপালক! আমি আমার জাতিকে রাত-দিন ডেকেছি,

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآئِيْٓ إِلَّا فِرَارًا (٦)

৬. কিন্তু আমার ডাক কেবল তাদের পলায়নী মনোবৃত্তিকেই বাড়িয়ে দিয়েছে,

وَإِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْٓا أَصَابِعَهُمْ فِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ وَأَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۚ (٧)

৭. আমি যখনই তাদেরকে ডাকি যেন তুমি তাদেরকে ক্ষমা করে দাও, তখনই তারা তাদের কানে আঙ্গুল ঢুকিয়ে দিয়েছে, কাপড়ে মুখ ঢেকে নিয়েছে, জিদ করেছে আর খুব বেশি অহঙ্কার করেছে।

ثُمَّ إِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۙ (٨)

৮. অতঃপর তাদেরকে আমি উচ্চৈঃস্বরে ডেকেছি,

ثُمَّ إِنِّيْٓ أَعْلَنْتُ لَهُمْ وَأَسْرَرْتُ لَهُمْ إِسْرَارًا ۙ (٩)

৯. এর পর আমি প্রকাশ্যভাবেও তাদের কাছে প্রচার করেছি, আর গোপনে গোপনেও তাদেরকে বুঝিয়েছি।

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ۖ إِنَّهٗ كَانَ

১০. আমি বলেছি– 'তোমরা তোমাদের রব্বের কাছে ক্ষমা চাও, তিনি বড়ই ক্ষমাশীল।

غَفَّارًا ۙ (١٠)

يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۙ (١١)

১১. (তোমরা তা করলে) তিনি অজস্র ধারায় তোমাদের উপর বৃষ্টি বর্ষণ করবেন,

وَّيُمْدِدْكُمْ بِأَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ أَنْهٰرًا ۗ (١٢)

১২. তোমাদের ধন সম্পদ ও সন্তানাদি বাড়িয়ে দেবেন, তোমাদের জন্য বাগান সৃষ্টি করবেন এবং তোমাদের জন্য নদীনালা প্রবাহিত করবেন।

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۚ (١٣)

১৩. 'তোমাদের হল কী যে, তোমরা আল্লাহ্র শ্রেষ্ঠত্ব মেনে নিতে অস্বীকার করছ?

وَقَدْ خَلَقَكُمْ أَطْوَارًا (١٤)

১৪. অথচ তিনিই তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছেন নানান স্তর অতিক্রম করিয়ে।

أَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۙ (١٥)

১৫. তোমরা কি দেখ না, কীভাবে আল্লাহ সাত আসমান সৃষ্টি করেছেন একের উপরে আরেকটিকে (স্থাপন করে)?

وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ سِرَاجًا (١٦)

১৬ আর তাদের মাঝে চাঁদকে বানিয়েছেন আলো এবং সূর্যকে করেছেন প্রদীপ।

وَاللهُ أَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْأَرْضِ نَبَاتًا ۙ (١٧)

১৭. আল্লাহ তোমাদেরকে মাটি থেকে উদ্গত করেন (এবং ক্রমশঃ বাড়িয়ে তোলেন যেমন বাড়িয়ে তোলেন বৃক্ষকে)

ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ إِخْرَاجًا (١٨)

১৮. অতঃপর এই মাটিতেই তোমাদেরকে ফিরিয়ে আনবেন এবং তোমাদেরকে পুনরুত্থিত করবেন।

وَاللهُ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ بِسَاطًا ۙ (١٩)

১৯. আল্লাহ তোমাদের জন্য যমীনকে করেছেন সম্প্রসারিত,

لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ع (٢٠)

২০. যাতে তোমরা তার প্রশস্ত পথ-ঘাট দিয়ে চলাচল করতে পার।'

قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ إِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗ إِلَّا خَسَارًا ۚ (٢١)

২১. নূহ বলেছিল, 'হে আমার প্রতিপালক! তারা আমার কথা প্রত্যাখ্যান করেছে আর আনুগত্য করছে তাদের (অর্থাৎ এমন সব লোকদের) যাদের মালধন আর সন্তানাদি তাদের ক্ষতি ছাড়া অন্য কিছুই বৃদ্ধি করেনি,

وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ۚ (٢٢)

২২. আর তারা ষড়যন্ত্র করেছিল সাংঘাতিক ষড়যন্ত্র।

وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ۬ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ وَنَسْرًا ج (٢٣)

২৩. আর তারা বলেছিল, তোমাদের দেবদেবীদের কক্ষনো পরিত্যাগ করো না, আর অবশ্যই পরিত্যাগ করো না ওয়াদ সুআ'আকে, আর না 'ইয়াগুস, ইয়া'উক ও নাস্‌রকে।

وَقَدْ أَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ ج وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ إِلَّا ضَلٰلًا (٢٤)

২৪. তারা গুমরাহ করেছে অনেককে, তুমি যালিমদের গুমরাহী ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করো না।

مِمَّا خَطِيْٓئٰتِهِمْ أُغْرِقُوْا فَأُدْخِلُوْا نَارًا ۙ ج فَلَمْ يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ أَنْصَارًا (٢٥)

২৫. পাপের কারণে তাদেরকে ডুবিয়ে দেয়া হয়েছে, পরে তাদেরকে দাখিল করা হয়েছে আগুনে, অতঃপর তারা আল্লাহকে ছাড়া কাউকে সাহায্যকারী পায়নি।

وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْأَرْضِ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا (٢٦)

২৬. নূহ বলল, 'হে আমার রব্ব! ভূপৃষ্ঠে বসবাসকারী কাফিরদের একজনকেও তুমি রেহাই দিও না।

إِنَّكَ إِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا يَلِدُوْٓا إِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا (٢٧)

২৭. তুমি যদি তাদেরকে রেহাই দাও, তাহলে তারা তোমার বান্দাহদেরকে গুমরাহ করে দেবে আর কেবল পাপাচারী কাফির জন্ম দিতে থাকবে।

رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ إِلَّا تَبَارًا ع (٢٨)

২৮. হে আমার রব্ব! তুমি ক্ষমা কর আমাকে, আমার পিতামাতাকে যারা আমার গৃহে মু'মিন হয়ে প্রবেশ করে তাদেরকে আর মু'মিন পুরুষ ও মু'মিন নারীদেরকে; আর যালিমদের জন্য ধ্বংস ছাড়া আর কিছুই বৃদ্ধি করো না।'

২৩। ইব্‌নু 'আব্বাস (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যে প্রতিমার পূজা নূহ্ ('আ.)-এর কওমের মাঝে চালু ছিল, পরবর্তী সময়ে আরবদের মাঝেও তার পূজা প্রচলিত হয়েছিল। ওয়াদ "দুমাতুল জান্দাল" নামক জায়গার কাল্‌ব গোত্রের একটি দেবমূর্তি, সুওয়া'আ হল হুযায়ল গোত্রের একটি দেবমূর্তি এবং ইয়াগুছ ছিল মুরাদ গোত্রের, অবশ্য পরবর্তীতে তা গাতীফ গোত্রের হয়ে যায়। এর আস্তানা ছিল কওমে সাবার নিকটবর্তী 'জাওফ' নামক স্থান। ইয়া'উক ছিল হামাদান গোত্রের দেবমূর্তি, নাস্‌র ছিল যুলকালা' গোত্রের হিময়ার শাখার মূর্তি। নূহ ('আ.)-এর সম্প্রদায়ের কতিপয় নেক লোকের নাম নাস্‌র ছিল। তারা মারা গেলে শয়ত্বান তাদের কওমের লোকদের অন্তরে এ কথা ঢেলে দিল যে, তারা যেখানে বসে মাজলিস করত, সেখানে তোমরা কতিপয় মূর্তি স্থাপন কর এবং ঐ সমস্ত পুণ্যবান লোকের নামেই এগুলোর নামকরণ কর। কাজেই তারা তাই করল, কিন্তু তখনও ঐ সব মূর্তির পূজা করা হত না। তবে মূর্তি স্থাপনকারী লোকগুলো মারা গেলে এবং মূর্তিগুলোর ব্যাপারে সত্যিকারের জ্ঞান বিলুপ্ত হলে লোকজন তাদের পূজা আরম্ভ করে দেয়। –বুখারী ৪৯২০

৭২. সূরাহ আল-জিন্ন*

سُوْرَةُ الْجِنِّ

আয়াতঃ ২৮, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. বল, "আমার কাছে ওয়াহী করা হয়েছে যে, জিন্নদের একটি দল মনোযোগ দিয়ে (কুরআন) শুনেছে অতঃপর তারা বলেছে 'আমরা এক অতি আশ্চর্যজনক কুরআন শুনেছি

قُلْ أُوْحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوْآ إِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ۙ (١)

২. যা সত্য-সঠিক পথ প্রদর্শন করে, যার কারণে আমরা তাতে ঈমান এনেছি, আমরা কক্ষনো কাউকে আমাদের প্রতিপালকের অংশীদার গণ্য করব না।

يَّهْدِيْٓ إِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ط وَلَنْ نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ أَحَدًا ۙ (٢)

৩. আর আমাদের প্রতিপালকের মর্যাদা অতি উচ্চ, তিনি গ্রহণ করেননি কোন স্ত্রী আর কোন সন্তান।

وَّأَنَّهُ تَعَالٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا ۙ (٣)

---

* ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূল (ﷺ) একদল সহাবীকে নিয়ে উকায বাজারের দিকে রওয়ানা হলেন। এ সময়ই জিনদের আসমানী খবরাদি শোনার ব্যাপারে বাধা সৃষ্টি করে দেয়া হয়েছে এবং ছুঁড়ে মারা হয়েছে তাদের বিরুদ্ধে লেলিহান অগ্নিশিখা। ফলে জিন শয়ত্বানরা ফিরে আসলে অন্য জিনরা তাদেরকে বলল, তোমাদের কী হয়েছে? তারা বলল, আসমানী খবরাদি সংগ্রহ করার ক্ষেত্রে আমাদের উপর বাধা সৃষ্টি করা হয়েছে এবং আমাদের প্রতি লেলিহান অগ্নিশিখা ছুঁড়ে মারা হয়েছে। তখন শয়ত্বান বলল, আসমানী খবরাদি সংগ্রহের ব্যাপারে তোমাদের প্রতি যে বাধা সৃষ্টি করা হয়েছে, অবশ্যই তা কোন নতুন ঘটনা ঘটার কারণেই হয়েছে। সুতরাং তোমরা পৃথিবীর পূর্ব ও পশ্চিম দিগন্ত পর্যন্ত সফর কর এবং দেখ ব্যাপারটা কী ঘটেছে? তাই আসমানী খবরাদি সংগ্রহের ক্ষেত্রে যে প্রতিবন্ধকতার সৃষ্টি হয়েছে, এর কারণ খুঁজে বের করার জন্য তারা সকলেই পৃথিবীর পূর্ব এবং পশ্চিমে অনুসন্ধানে বেরিয়ে পড়ল। 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) বলেন, যারা তিহামার উদ্দেশে বেরিয়েছিল, তারা 'নাখলা' নামক স্থানে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)-এর কাছে এসে উপস্থিত হল। রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) এখান থেকে উকায বাজারের দিকে যাওয়ার মনস্থ করেছিলেন। এ সময় রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) সহাবীদেরকে নিয়ে ফাজ্‌রের নামায আদায় করছিলেন। জিনদের ঐ দলটি কুরআন মাজীদ শুনতে পেয়ে আরো বেশি মনোযোগ দিয়ে তা শুনতে লাগল এবং বলল, আসমানী খবর আর তোমাদের মাঝে এটাই সত্যিকারে বাধা সৃষ্টি করেছে। এরপর তারা তাদের কওমের কাছে ফিরে এসে বলল, হে আমাদের কওম! আমরা এক আশ্চর্যজনক কুরআন শ্রবণ করেছি, যা সঠিক পথ নির্দেশ করে। এতে আমরা বিশ্বাস স্থাপন করেছি। আমরা কখনও আমাদের প্রতিপালকের কোন শরীক স্থির করব না। এরপর আল্লাহ্ তাঁর নাবীর প্রতি অবতীর্ণ করলেনঃ বল, আমার প্রতি ওয়াহী প্রেরিত হয়েছে যে জিনদের একটি দল মনোযোগ দিয়ে শুনেছে। জিনদের উপরোক্ত কথা নাবী (ﷺ) -কে ওয়াহীর মারফত জানিয়ে দেয়া হয়েছিল। –বুখারী ৪৯২১ [৭৭৩; মুসলিম ৪৪৯, তিরমিযী ৩৩২৩, আহমাদ ২২৭১]

১। 'আবদুর রহমান (রহ.) বলেন, আমি মাসরূক (রহ.)-কে জিজ্ঞেস করলাম যে, রাতে জ্বিনরা মনোযোগের সঙ্গে কুরআন শ্রবণ করেছিল ঐ রাতে নাবী (ﷺ)-কে তাদের উপস্থিতির খবর দিয়েছিল? তিনি বললেন, তোমার পিতা 'আবদুল্লাহ [ইব্‌নু মাস'উদ (রাঃ)] আমাকে বলেছেন যে, একটি গাছ তাদের উপস্থিতির খবর দিয়েছিল। –বুখারী ৩৮৫৯ [মুসলিম ৪৫০, তিরমিযী ১৮, ৩২৫৮; আবূ দাউদ ৮৪, ৮৫; ইব্‌নু মাজাহ ৩৮৪, ৩৮৫; আহমাদ ৩৭৭৩, ৩৮০০]

وَّأَنَّهُ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللهِ شَطَطًا ۙ (٤)

৪. আর আমাদের মধ্যেকার নির্বোধেরা তাঁর সম্পর্কে সীমাতিরিক্ত কথাবার্তা বলত।

وَّأَنَّا ظَنَنَّآ أَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْإِنْسُ وَالْجِنُّ عَلَى اللهِ كَذِبًا ۙ (٥)

৫. আর আমরা ধারণা করতাম যে, মানুষ ও জ্বিন আল্লাহ সম্পর্কে কক্ষনো মিথ্যে কথা বলবে না।

وَّأَنَّهُ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْإِنْسِ يَعُوْذُوْنَ بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ۙ (٦)

৬. আরো এই যে, কতক মানুষ কতক জ্বিনের আশ্রয় নিত, এর দ্বারা তারা জ্বিনদের গর্ব অহঙ্কার বাড়িয়ে দিয়েছে।

وَّأَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ أَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ اللهُ أَحَدًا ۙ (٧)

৭. আরো এই যে (জ্বিনেরা বলেছিল) তোমরা (জ্বিনেরা) যেমন ধারণা করতে তেমনি মানুষেরা ধারণা করত যে, (মৃত্যুর পর) আল্লাহ কাউকে পুনরুত্থিত করবে না।

وَّأَنَّا لَمَسْنَا السَّمَآءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ۙ (٨)

৮. আর আমরা আকাশের খবর নিতে চেয়েছিলাম কিন্তু আমরা সেটাকে পেলাম কঠোর প্রহরী বেষ্টিত ও জ্বলন্ত উল্কাপিণ্ডে পরিপূর্ণ।

وَّأَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ؕ فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهُ شِهَابًا رَّصَدًا ۙ (٩)

৯. আমরা (আগে) সংবাদ শুনার জন্য আকাশের বিভিন্ন ঘাঁটিতে বসতাম, কিন্তু এখন কেউ সংবাদ শুনতে চাইলে তার উপর নিক্ষেপের জন্য সে জ্বলন্ত অগ্নিকুণ্ডকে লুকিয়ে থাকতে দেখে।

وَّأَنَّا لَا نَدْرِيْٓ أَشَرٌّ أُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْأَرْضِ أَمْ أَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ۙ (١٠)

১০. আমরা জানি না (এই পরিবর্তিত অবস্থার মাধ্যমে) পৃথিবীবাসীর অকল্যাণই চাওয়া হচ্ছে, না তাদের প্রতিপালক তাদেরকে সরল সঠিক পথ দেখাতে চান।

وَّأَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ؕ كُنَّا طَرَآئِقَ قِدَدًا ۙ (١١)

১১. আর আমাদের কিছু সংখ্যক সৎকর্মশীল, আর কতক এমন নয়, আমরা ছিলাম বিভিন্ন মত ও পথে বিভক্ত।

وَّأَنَّا ظَنَنَّآ أَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللهَ فِي الْأَرْضِ وَلَنْ نُّعْجِزَهُ هَرَبًا ۙ (١٢)

১২. আমরা বুঝতে পেরেছি যে, আমরা পৃথিবীতে আল্লাহ্‌কে পরাস্ত করতে পারব না, আর পালিয়েও তাঁকে অপারগ করতে পারব না।

وَّأَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهِ ؕ فَمَنْ يُّؤْمِنْ بِرَبِّهِ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا رَهَقًا ۙ (١٣)

১৩. আরো এই যে, আমরা যখন হিদায়াতের বাণী শুনতে পেলাম, তখন তার উপর ঈমান আনলাম। যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের উপর ঈমান আনে তার কোন ক্ষতি বা যুল্‌মের ভয় থাকবে না।

وَّأَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ؕ فَمَنْ أَسْلَمَ فَأُولٰٓئِكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا (١٤)

১৪. আমাদের মধ্যে কিছু সংখ্যক (আল্লাহ্‌র প্রতি) আত্মসমর্পণকারী আর কিছু সংখ্যক অন্যায়কারী। যারা আত্মসমর্পণ করে তারা সঠিক পথ বেছে নিয়েছে।

وَأَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ۙ (١٥)

১৫. আর যারা অন্যায়কারী তারা জাহান্নামের ইন্ধন।

وَّأَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَأَسْقَيْنٰهُمْ مَّآءً غَدَقًا ۙ (١٦)

১৬. আরো (আমার কাছে ওয়াহী করা হয়েছে এই) যে, তারা যদি সত্য-সঠিক পথে প্রতিষ্ঠিত থাকত, তাহলে আমি তাদেরকে প্রচুর পানি পান করাতাম।

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ؕ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ۙ (١٧)

১৭. যেন আমি তা দিয়ে তাদেরকে পরীক্ষা করতে পারি (যে নি'মাত পাওয়ার পর তারা শুকর-গুজার হয়, না না-ফরমান হয়)। যে ব্যক্তি তার প্রতিপালকের স্মরণ থেকে মুখ ফিরিয়ে নেয়, তিনি তাকে কঠিন 'আযাবে প্রবেশ করাবেন।

وَّأَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ أَحَدًا ۙ (١٨)

১৮. আরো এই যে, মাসজিদগুলো কেবলমাত্র আল্লাহ্‌রই জন্য, কাজেই তোমরা আল্লাহ্‌র সঙ্গে অন্য আর কাউকে ডেকো না।

وَّأَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ؕع (١٩)

১৯. আরো এই যে, যখন আল্লাহ্‌র বান্দা [রসূলুল্লাহ ﷺ] যখন তাঁকে আহ্বান করার জন্য দাঁড়াল তখন তারা (অর্থাৎ কাফিররা) তার চারপাশে ভিড় জমাল।

قُلْ إِنَّمَآ أَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ أُشْرِكُ بِهٖٓ أَحَدًا (٢٠)

২০. বলঃ আমি শুধু আমার প্রতিপালককেই ডাকি, আর অন্য কাউকে তাঁর অংশীদার গণ্য করি না।

قُلْ إِنِّيْ لَآ أَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا (٢١)

২১. বল– 'আমি তোমাদের কোন ক্ষতি বা কল্যাণ করার ক্ষমতা রাখি না।

قُلْ إِنِّيْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ أَحَدٌ ۙ۬ وَّلَنْ أَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ۙ (٢٢)

২২. বল– আল্লাহ্‌র (শাস্তি) থেকে কেউ আমাকে রক্ষা করতে পারবে না (যদি আমি তাঁর অবাধ্য হই) এবং তাঁর আশ্রয় ছাড়া আমি কোন আশ্রয়ও পাব না।

১৮। আবূ হুরাইরাহ্‌র আযাদকৃত ক্রীতদাস 'আবদুর রহমান ইবনু মাহরান আবু হুরাইরাহ থেকে বর্ণনা করেছেন যে, রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেনঃ আল্লাহ তা'আলার কাছে সব চাইতে প্রিয় জায়গা হলো মাসজিদসমূহ আর সবচাইতে খারাপ জায়গা হলো বাজারসমূহ। –মুসলিম ৬৭১

إِلَّا بَلَاغًا مِّنَ اللهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللهَ وَرَسُوْلَهٗ فَإِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ؕ (٢٣)

২৩. আল্লাহ্‌র বাণী পৌঁছানো ও তাঁর পায়গাম প্রচার করাই আমার কাজ। যে কেউ আল্লাহ ও তাঁর রসূলকে অমান্য করে, তার জন্য আছে জাহান্নামের আগুন; তাতে তারা চিরকাল থাকবে।

حَتّٰٓى إِذَا رَأَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ أَضْعَفُ نَاصِرًا وَّأَقَلُّ عَدَدًا (٢٤)

২৪. অবশেষে তারা যখন প্রতিশ্রুত শাস্তি দেখতে পাবে, তখন তারা জানতে পারবে যে, সাহায্যকারী হিসেবে কে সবচেয়ে দুর্বল, আর সংখ্যায় কারা সবচেয়ে কম।

قُلْ إِنْ أَدْرِيْٓ أَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ أَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ أَمَدًا (٢٥)

২৫. বল- 'আমি জানি না তোমাদেরকে যার প্রতিশ্রুতি দেয়া হয়েছে তা কি নিকটবর্তী, না তার জন্য আমার প্রতিপালক কোন দীর্ঘ মেয়াদ নির্দিষ্ট করবেন।'

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖٓ أَحَدًا ۙ (٢٦)

২৬. একমাত্র তিনিই অদৃশ্যের জ্ঞানী, তিনি তাঁর অদৃশ্যের জ্ঞান কারো কাছে প্রকাশ করেন না।

إِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَإِنَّهٗ يَسْلُكُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ۙ (٢٧)

২৭. তাঁর মনোনীত রসূল ব্যতীত। কেননা তিনি তখন তাঁর রসূলের আগে-পিছে পাহারাদার নিযুক্ত করেন।

لِّيَعْلَمَ أَنْ قَدْ أَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ وَأَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَأَحْصٰى كُلَّ شَيْءٍ عَدَدًا ع (٢٨)

২৮. এটা জানার জন্য যে, রসূলগণ তাদের প্রতিপালকের বাণী সত্যিই পৌঁছে দিয়েছে কিনা। রসূলদের কাছে যা আছে তা তিনি (স্বীয় জ্ঞান দ্বারা) পরিবেষ্টন করে রেখেছেন আর প্রত্যেকটি জিনিসকে গুণে গুণে রেখেছেন।

৭৩. সূরাহ আল-মুয্যাম্মিল

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ

আয়াতঃ ২০, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

يٰٓأَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ۙ (١)

১. ওহে চাদরে আবৃত (ব্যক্তি)!

قُمِ اللَّيْلَ إِلَّا قَلِيْلًا ۙ (٢)

২. রাতে নামাযে দাঁড়াও তবে (রাতের) কিছু অংশ বাদে,

نِّصْفَهٗٓ أَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا لا (٣)

৩. রাতের অর্ধেক (সময় দাঁড়াও) কিংবা তার থেকে কিছুটা কম কর,

أَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ط (٤)

৪. অথবা তার চেয়ে বাড়াও, আর ধীরে ধীরে সুস্পষ্টভাবে কুরআন পাঠ কর।

إِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا (٥)

৫. আমি তোমার উপর গুরুভার কালাম নাযিল করব (বিশ্বের বুকে যার প্রচার ও প্রতিষ্ঠা করার দায়িত্বভার অতি বড় কঠিন কাজ)।

إِنَّ نَاشِئَةَ اللَّيْلِ هِيَ أَشَدُّ وَطْئًا وَّأَقْوَمُ قِيْلًا ط (٦)

৬. বাস্তবিকই রাতে বিছানা ছেড়ে উঠা আত্মসংযমের জন্য বেশি কার্যকর এবং (কুরআন) স্পষ্ট উচ্চারণের অনুকূল।

إِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ط (٧)

৭. দিনের বেলায় তোমার জন্য আছে দীর্ঘ কর্মব্যস্ততা।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ إِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ط (٨)

৮. কাজেই তুমি তোমার প্রতিপালকের নাম স্মরণ কর এবং একাগ্রচিত্তে তাঁর প্রতি মগ্ন হও।

رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَآ إِلٰهَ إِلَّا هُوَ فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا (٩)

৯. (তিনি) পূর্ব ও পশ্চিমের সর্বময় কর্তা, তিনি ছাড়া সত্যিকারের কোন ইলাহ নেই, অতএব তাঁকেই তুমি তোমার কার্য সম্পাদনকারী বানিয়ে লও।

وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ هَجْرًا جَمِيْلًا (١٠)

১০. তারা যা বলে সে ব্যাপারে ধৈর্য ধারণ কর আর ভদ্রতার সঙ্গে তাদেরকে পরিহার ক'রে চল।

وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ أُولِي النَّعْمَةِ وَمَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا (١١)

১১. আর ছেড়ে দাও আমাকে আর নানান বিলাস সামগ্রীর মালিক ঐ মিথ্যুকদেরকে এবং তাদেরকে কিছুটা সময় অবকাশ দাও।

إِنَّ لَدَيْنَآ أَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا لا (١٢)

১২. আমার কাছে আছে শেকল আর দাউ দাউ করে জ্বলা আগুন,

وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا أَلِيْمًا ق (١٣)

১৩. আর গলায় আটকে যায় এমন খাবার আর মর্মান্তিক শাস্তি।

৪। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেন। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) কে বলেছেনঃ নবীর উত্তম ও মিষ্টি স্বরে কুরআন তিলাওয়াত আল্লাহ তা'আলা যেভাবে শুনে থাকেন অন্য কোন জিনিস সেভাবে শুনেন না। –মুসলিম ৭৯২ [বুখারী ৫০২৩, ৫০২৪, ৭৪৮২, ৭৫২৭, ৭৫৪৪; নাসায়ী ১০১৭, ১০১৮; আবূ দাউদ ১৪৭৩, আহমাদ ৭৬১৪, ৭৭৭৩; দারিমী ১৪৮৮, ১৪৯১, ৩৪৯০, ৩৪৯১, ৩৪৯৭]

يَوْمَ تَرْجُفُ الْأَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا (١٤)

১৪. (এসব শাস্তি দেয়া হবে) যেদিন যমীন আর পাহাড়গুলো কেঁপে উঠবে, আর পাহাড়গুলো হবে চলমান বালুকারাশি।

إِنَّآ أَرْسَلْنَآ إِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ۬ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَآ أَرْسَلْنَآ إِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ط (١٥)

১৫. আমি তোমাদের কাছে তেমনিভাবে একজন রসূলকে তোমাদের প্রতি সাক্ষ্যদাতা হিসেবে পাঠিয়েছি (যিনি ক্বিয়ামতে সাক্ষ্য দিবেন যে, দ্বীনের দাওয়াত তিনি যথাযথভাবে মানুষের কাছে পৌঁছে দিয়েছেন) যেমনভাবে আমি ফেরাউনের কাছে পাঠিয়েছিলাম একজন রসূলকে।

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَأَخَذْنٰهُ أَخْذًا وَّبِيْلًا (١٦)

১৬. তখন ফেরাউন সেই রসূলকে অমান্য করল। ফলে আমি তাকে শক্ত ধরায় ধরলাম।

فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ إِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا لاوقصلے (١٧)

১৭. অতএব তোমরা যদি (এই রসূলকে) অস্বীকার কর, তাহলে তোমরা কীভাবে সেদিন আত্মরক্ষা করবে যেদিনটি (তার ভীষণতা ও ভয়াবহতায়) বালককে ক'রে দেবে বুড়ো।

السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ ط كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا (١٨)

১৮. যার কারণে আকাশ ফেটে যাবে, আল্লাহ্‌র ওয়া'দা পূর্ণ হয়ে যাবে।

إِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ج فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ع (١٩)

১৯. এটা উপদেশ। কাজেই যার মন চায় সে তার প্রতিপালকের দিকে পথ ধরুক।

إِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ أَنَّكَ تَقُوْمُ أَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ اللَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ الَّذِيْنَ مَعَكَ ط وَاللهُ يُقَدِّرُ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ ط عَلِمَ أَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ط عَلِمَ أَنْ سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ فِي الْأَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللهِ ۙ وَاٰخَرُوْنَ

২০. তোমার প্রতিপালক জানেন যে, তুমি কখনও রাতের দু'তৃতীয়াংশ 'ইবাদাতের জন্য দাঁড়াও, কখনও অর্ধেক, কখনও রাতের এক তৃতীয়াংশ, তোমার সঙ্গী-সাথীদের একটি দলও (তাই করে)। আল্লাহ্‌ই রাত আর দিনের পরিমাণ নির্ধারণ করেন। তিনি জানেন, তোমরা তা যথাযথ হিসাব রেখে পালন করতে পারবে না। কাজেই তিনি তোমাদের প্রতি ক্ষমাপরবশ হয়েছেন। কাজেই কুরআনের যতটুকু পড়া তোমার জন্য সহজ হয়, তুমি ততটুকু পড়। তিনি জানেন, তোমাদের মধ্যে কেউ কেউ অসুস্থ হবে, আর কতক আল্লাহ্‌র অনুগ্রহ সন্ধানে যমীনে ভ্রমণ করবে, আর কতক আল্লাহ্‌র পথে যুদ্ধ করবে। কাজেই তোমাদের

Contents

يُقٰتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللهِ ز صلے فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ لا وَأَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَأَقْرِضُوا اللهَ قَرْضًا حَسَنًا ط وَمَا تُقَدِّمُوْا لِأَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللهِ هُوَ خَيْرًا وَّأَعْظَمَ أَجْرًا ط وَاسْتَغْفِرُوا اللهَ ط إِنَّ اللهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ع (٢٠)

জন্য যতটুকু সহজসাধ্য হয় তাই তাথেকে পাঠ কর, আর নামায প্রতিষ্ঠা কর, যাকাত দাও আর আল্লাহকে ঋণ দাও উত্তম ঋণ। তোমরা যা কিছু কল্যাণ নিজেদের জন্য আগে পাঠাবে, তা আল্লাহ্র নিকট (সঞ্চিত) পাবে, তাই উত্তম এবং পুরস্কার হিসেবে খুব বড়। তোমরা আল্লাহ্র নিকট ক্ষমা প্রার্থনা কর, আল্লাহ অতি ক্ষমাশীল, বড়ই দয়ালু।

৭৪. সূরাহ আল-মুদ্দাস্সির

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ

আয়াতঃ ৫৬, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

يٰٓأَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ لا (١)

১. ওহে বস্ত্র আবৃত (ব্যক্তি)!

قُمْ فَأَنْذِرْ لا (٢)

২. ওঠ, সতর্ক কর।

২০। মিসওয়ার ইব্নু মাখরামাহ (রহ.) ও 'আবদুর রহমান ইব্নু 'আবদুল ক্বারী (রহ.) হতে বর্ণিত। তাঁরা উভয়ে 'উমার ইব্নু খাত্তাব (রাঃ)-কে বলতে শুনেছেন। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর জীবদ্দশায় আমি হিশাম ইব্নু হাকীম (রাঃ)-কে (সলাতে) সূরায়ে ফুরকান তিলাওয়াত করতে শুনেছি। আমি একাগ্রচিত্তে তাঁর তিলাওয়াত শুনছিলাম। তিনি এমন অনেকগুলো শব্দ তিলাওয়াত করছিলেন, যেগুলো রসূলুল্লাহ (ﷺ) আমাকে তিলাওয়াত করাননি। এতে আমি তাঁকে নামায আদায়রত অবস্থায় ধরে ফেলতে চেয়েছিলাম। কিন্তু সালাম ফেরানো পর্যন্ত আমি ধৈর্য ধরলাম। তারপর আমি তাঁর চাদর দিয়ে তাঁকে জড়িয়ে ধরলাম। আর বললাম, আমি তোমাকে যে সূরা পাঠ করতে শুনলাম, তা তোমাকে কে শিখিয়েছে? তিনি বললেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ)। আমি বললাম, তুমি মিথ্যে বলেছ, তিনি আমাকে শিখিয়েছেন, তবে তোমার কিরাআতের মত নয়। তারপর আমি তাঁকে টেনে টেনে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর কাছে নিয়ে চললাম। এরপর আমি বললাম, আমি শুনলাম একে ভিন্ন শব্দ দ্বারা সূরাহ ফুরকান পাঠ করতে, যা আপনি আমাকে শিখাননি। তিনি (নবী (ﷺ) বললেনঃ আচ্ছা, তাকে ছেড়ে দাও। তুমি পড়, হে হিশাম! এরপর আমি যেরূপ কিরাআত শুনেছিলাম তিনি সেরূপ কিরাআত পড়লেন। নাবী (ﷺ) বললেনঃ কুরআন অনুরূপই অবতীর্ণ হয়েছে। নাবী (ﷺ) বললেনঃ হে 'উমার! তুমি পাঠ কর। আমি সেভাবে পড়লাম যেভাবে আমাকে শিখানো হয়েছিল। নাবী (ﷺ) বললেনঃ এরূপই অবতীর্ণ হয়েছে। এ কুরআন সাত হরফে (পাঠ) অবতীর্ণ করা হয়েছে। অতএব যেভাবে সহজ হয়, তা সেভাবে তোমরা পাঠ কর। -বুখারী ৭৫৫০ [২৪১৯; মুসলিম ৮১৮, তিরমিযী ২৯৪৩, নাসায়ী ৯৩৬-৯৩৮, আবূ দাউদ ১৪৭৫, আহমাদ ১৫৯, ২৭৯, ২৯৮; মালিক ৪৭৩]

وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ۙ (٣)

৩. আর তোমার প্রতিপালকের শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর।

وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ۙ (٤)

৪. তোমার পোশাক পরিচ্ছদ পবিত্র রাখ।

وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ۙ (٥)

৫. (যাবতীয়) অপবিত্রতা থেকে দূরে থাক।

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۙ (٦)

৬. (কারো প্রতি) অনুগ্রহ করো না অধিক পাওয়ার উদ্দেশে।

وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ط (٧)

৭. তোমার প্রতিপালকের (সন্তুষ্টির) জন্য ধৈর্য ধর।

فَإِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۙ (٨)

৮. যেদিন শিঙ্গায় ফুঁ দেয়া হবে,

فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۙ (٩)

৯. সেদিনটি হবে বড়ই কঠিন দিন,

عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ (١٠)

১০. (যা) কাফিরদের জন্য মোটেই সহজ নয়।

ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۙ (١١)

১১. ছেড়ে দাও আমাকে (তার সঙ্গে বুঝাপড়া করার জন্য) যাকে আমি এককভাবে সৃষ্টি করেছি।

وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۙ (١٢)

১২. আর তাকে (ওয়ালীদ বিন মুগীরাহ্‌কে) দিয়েছি অঢেল ধন-সম্পদ,

وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۙ (١٣)

১৩. আর অনেক ছেলে যারা সব সময় তার কাছেই থাকে।

وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۙ (١٤)

১৪. এবং তার জীবনকে করেছি সচ্ছল ও সুগম।

১-২। ইয়াহ্‌ইয়াহ ইব্‌নু কাসীর (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি আবূ সালামাহ ইব্‌নু 'আবদুর রহ্‌মান (রহ.)-কে কুরআন মাজীদের কোন্ আয়াতটি সর্বপ্রথম অবতীর্ণ হয়েছে জিজ্ঞেস করলে তিনি বললেন, يَا أَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ প্রথম অবতীর্ণ হয়েছে। আমি বললাম, লোকেরা তো বলে: اقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِي خَلَقَ প্রথম অবতীর্ণ হয়েছে। তখন আবূ সালামাহ বললেন, আমি এ বিষয়ে জাবির ইব্‌নু 'আবদুল্লাহ্ (রাঃ)-কে জিজ্ঞেস করেছিলাম এবং তুমি যা বললে আমিও তাকে হুবহু তাই বলেছিলাম। জবাবে জাবির (রাঃ) বলেছিলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) আমাদেরকে যা বলেছিলেন, আমিও হুবহু তাই বলব। তিনি বলেছেন, আমি হেরা গুহায় ই'তিকাফ করতে লাগলাম। আমার ই'তিকাফ শেষ হলে আমি সেখান থেকে নামলাম। তখন আমাকে আওয়াজ দেয়া হল। আমি ডানে তাকালাম; কিন্তু কিছু দেখতে পেলাম না। বামে তাকালাম, কিন্তু এদিকেও কিছু দেখলাম না। এরপর সামনে তাকালাম, এদিকেও কিছু দেখলাম না। এরপর পেছনে তাকালাম, কিন্তু এদিকেও আমি কিছু দেখলাম না। শেষে আমি উপরের দিকে তাকালাম, এবার একটা বস্তু দেখতে পেলাম। এরপর আমি খাদীজাহ (রাঃ)-এর কাছে এলাম এবং তাকে বললাম, আমাকে বস্ত্রাচ্ছাদিত কর এবং আমার শরীরে ঠাণ্ডা পানি ঢাল। তিনি বলেন, তারপর তারা আমাকে বস্ত্রাচ্ছাদিত করে এবং ঠাণ্ডা পানি ঢালে। নাবী (ﷺ) বলেন, এরপর অবতীর্ণ হলঃ 'হে বস্ত্রাচ্ছাদিত! উঠ, সতর্কবাণী প্রচার কর এবং তোমার প্রতিপালকের শ্রেষ্ঠত্ব ঘোষণা কর। –বুখারী ৪৯২২ [৪; মুসলিম ১৬০, ১৬১; তিরমিযী ৩৬৩২, আহমাদ ১৪৬১৫, ২৪৬৭৬]

ثُمَّ يَطْمَعُ أَنْ أَزِيْدَ ﻻ (١٥)

১৫. এর পরও সে লোভ করে যে, আমি তাকে আরো দেই।

كَلَّا ط إِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ط (١٦)

১৬. কক্ষনো না, সে ছিল আমার নিদর্শনের বিরুদ্ধাচারী।

سَأُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ط (١٧)

১৭. শীঘ্রই আমি তাকে উঠাব শাস্তির পাহাড়ে (অর্থাৎ তাকে দিব বিপদের উপর বিপদ)।

إِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ﻻ (١٨)

১৮. সে চিন্তা ভাবনা করল এবং সিদ্ধান্ত নিল,

فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﻻ (١٩)

১৯. ধ্বংস হোক সে, কীভাবে সে (কুরআনের অলৌকিকতা স্বীকার করার পরও কেবল অহমিকার বশবর্তী হয়ে নবুওয়াতকে অস্বীকার করার) সিদ্ধান্ত নিল!

ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ﻻ (٢٠)

২০. আবারো ধ্বংস হোক সে, সে সিদ্ধান্ত নিল কীভাবে!

ثُمَّ نَظَرَ ﻻ (٢١)

২১. তারপর সে তাকালো।

ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ﻻ (٢٢)

২২. তারপর ভ্রূ কুঁচকালো আর মুখ বাঁকালো।

ثُمَّ أَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ﻻ (٢٣)

২৩. তারপর সে পিছনে ফিরল আর অহংকার করল।

فَقَالَ إِنْ هٰذَآ إِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ﻻ (٢٤)

২৪. তারপর বলল- 'এ তো যাদু ছাড়া আর কিছু নয়, এতো পূর্বে থেকেই চলে আসছে।

إِنْ هٰذَآ إِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ط (٢٥)

২৫. এটা তো মানুষের কথা মাত্র।'

سَأُصْلِيْهِ سَقَرَ (٢٦)

২৬. শীঘ্রই আমি তাকে জাহান্নামের আগুনে নিক্ষেপ করব।

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا سَقَرُ ط (٢٧)

২৭. তুমি কি জান জাহান্নামের আগুন কী?

لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ج (٢٨)

২৮. তা কাউকে জীবিতও রাখবে না, আর মৃত অবস্থায়ও ছেড়ে দেবে না।

لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ج (٢٩)

২৯. চামড়া ঝলসে দেবে।

عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ط (٣٠)

৩০. সেখানে নিয়োজিত আছে উনিশ জন ফেরেশতা।

وَمَا جَعَلْنَآ أَصْحٰبَ النَّارِ إِلَّا مَلٰٓئِكَةً ص

৩১. আমিই কেবল ফেরেশতাদেরকে জাহান্নামের তত্ত্বাবধায়ক করেছি। আর তাদের (এই) সংখ্যাকে

Contents

وَمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ إِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْآ إِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ لا وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَآ أَرَادَ اللهُ بِهٰذَا مَثَلًا ط كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللهُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ط وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ إِلَّا هُوَ ط وَمَا هِيَ إِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ع (٣١)

কাফিরদের জন্য একটা পরীক্ষা বানিয়ে দিয়েছি (কেননা তারা এ কথা বিশ্বাসই করতে পারবে না যে মাত্র উনিশ জন ফেরেশতা বিশাল জাহান্নামের যাবতীয় দায়িত্ব পালন করবে) আর যেন কিতাবধারীগণ তা দৃঢ়ভাবে বিশ্বাস করে আর ঈমানদারদের ঈমান আরো বৃদ্ধি পায় এবং কিতাবধারীগণ ও ঈমানদারগণ যেন কোন রকম সন্দেহের মধ্যে না থাকে। যাদের অন্তরে রোগ আছে তারা আর কাফিররা যাতে বলে উঠে, " এ ধরণের কথা দিয়ে আল্লাহ কী বোঝাতে চেয়েছেন?" এভাবে আল্লাহ যাকে চান গুমরাহ করেন আর যাকে চান সঠিক পথে পরিচালিত করেন। তোমার প্রতিপালকের বাহিনী (কারা এবং এর স্যখ্যা কত সে) সম্পর্কে তিনি ছাড়া কেউ জানে না। (জাহান্নামের) এ (বর্ণনা দেয়া হল) কেবল মানুষের নসীহত লাভের জন্য।

كَلَّا وَالْقَمَرِ لا (٣٢)

৩২. (এটা) কক্ষনো (ভিত্তিহীন) না, চাঁদের কসম,

وَاللَّيْلِ إِذْ أَدْبَرَ لا (٣٣)

৩৩. রাতের কসম যখন তার অবসান হয়,

وَالصُّبْحِ إِذَآ أَسْفَرَ لا (٣٤)

৩৪. প্রভাতের কসম– যখন তা উজ্জ্বল হয়ে ওঠে,

إِنَّهَا لَإِحْدَى الْكُبَرِ لا (٣٥)

৩৫. এই জাহান্নাম বড় বড় বিপদগুলোর একটি,

نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ لا (٣٦)

৩৬. মানুষের জন্য সতর্ককারী,

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ أَنْ يَّتَقَدَّمَ أَوْ يَتَأَخَّرَ ط (٣٧)

৩৭. তোমাদের মধ্যে যে (কল্যাণের পথে) এগিয়ে যেতে চায় অথবা পেছনে পড়ে থাকতে চায় তার জন্য

كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ لا (٣٨)

৩৮. প্রত্যেক ব্যক্তি নিজ কৃতকর্মের দায়ে আবদ্ধ।

إِلَّآ أَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ طه (٣٩)

৩৯. কিন্তু ডান পাশের লোকেরা নয়।

فِيْ جَنّٰتٍ قف يَتَسَآءَلُوْنَ لا (٤٠)

৪০. তারা থাকবে জান্নাতে। তারা পরস্পরকে জিজ্ঞেস করবে

عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ لا (٤١)

৪১. অপরাধীদের সম্পর্কে

مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ (٤٢)

৪২. 'কিসে তোমাদেরকে জাহান্নামে নিয়ে গেছে?

قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۙ (٤٣)

৪৩. তারা বলবে, 'আমরা নামায আদায়কারী লোকেদের মধ্যে শামিল ছিলাম না,

وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۙ (٤٤)

৪৪. আর মিসকীনদেরকে খাবার খাওয়াতাম না,

وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۙ (٤٥)

৪৫. আর আমরা (সত্য পথের পথিকদের) সমালোচনা করতাম সমালোচনাকারীদের সঙ্গে (থেকে)।

وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۙ (٤٦)

৪৬. আমরা প্রতিফল দিবসকে অস্বীকার করতাম।

حَتّٰۤى أَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ؕ (٤٧)

৪৭. আমাদের নিকট নিশ্চিত বিশ্বাস (অর্থাৎ মৃত্যু) না আসা পর্যন্ত।'

فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ؕ (٤٨)

৪৮. তখন সুপারিশকারীদের সুপারিশ তাদের কোন কাজে আসবে না।

فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۙ (٤٩)

৪৯. তাদের হয়েছে কী যে তারা উপদেশ থেকে মুখ ফিরিয়ে নিয়েছে?

كَأَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۙ (٥٠)

৫০. তারা যেন ভয়ে সন্ত্রস্ত গাধা,

فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ؕ (٥١)

৫১. সিংহের সামনে থেকে পালাচ্ছে।

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ أَنْ يُّؤْتٰى صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۙ (٥٢)

৫২. বস্তুতঃ তাদের প্রত্যেকেই চায়, তাকে (আল্লাহ্‌র পক্ষ থেকে) খোলা চিঠি দেয়া হোক (এই মর্মে যে, তোমরা এই নবীকে মেনে নাও)।

كَلَّا ؕ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ؕ (٥٣)

৫৩. না, তা কক্ষনো হতে পারে না, বরং (কথা এই যে) তারা আখিরাতকে ভয় করে না।

كَلَّآ إِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ج (٥٤)

৫৪. না, তা হতে পারে না, এটা (অর্থাৎ কুরআন সকলের জন্য) উপদেশবাণী।

فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ؕ (٥٥)

৫৫. এক্ষনে যার ইচ্ছে তাথেকে শিক্ষা গ্রহণ করুক।

وَمَا يَذْكُرُوْنَ إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ هُوَ أَهْلُ التَّقْوٰى وَأَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ع (٥٦)

৫৬. আল্লাহ্‌র ইচ্ছে ব্যতীত কেউ উপদেশ গ্রহণ করবে না, তিনিই ভয়ের যোগ্য, তিনিই ক্ষমা করার অধিকারী।

৭৫. সূরাহ আল-ক্বিয়া-মাহ

سُوْرَةُ الْقِيَامَةِ

আয়াতঃ ৫৬, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. আমি কসম করছি ক্বিয়ামতের দিনের,

لَآ أُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۙ (١)

২. আমি আরো কসম করছি সেই মনের যে (অন্যায় কাজ ক'রে বসলে) নিজেকে ধিক্কার দেয় (যে তোমাদেরকে অবশ্যই আবার জীবিত করে উঠানো হবে)।

وَلَآ أُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ (٢)

৩. মানুষ কি মনে করে যে, আমি তার হাড়গুলোকে একত্রিত করতে পারব না।

أَيَحْسَبُ الْإِنْسَانُ أَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ط (٣)

৪. কেন নয়, আমি তার আঙ্গুলের ডগা পর্যন্ত সঠিকভাবে বানিয়ে দিতে সক্ষম

بَلٰى قَادِرِيْنَ عَلٰٓى أَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ (٤)

৫. কিন্তু মানুষ তার আগামী দিনগুলোতেও পাপাচার করতে চায়।

بَلْ يُرِيْدُ الْإِنْسَانُ لِيَفْجُرَ أَمَامَهٗ ج (٥)

৬. সে জিজ্ঞেস করে, 'ক্বিয়ামত দিবস কবে?'

يَسْأَلُ أَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ط (٦)

৭. যখন চোখ ধাঁধিয়ে যাবে,

فَإِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۙ (٧)

৮. চাঁদ হয়ে যাবে আলোকহীন

وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۙ (٨)

৯. সুরুজ আর চাঁদকে একত্রে জুড়ে দেয়া হবে,

وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۙ (٩)

১০. সেদিন মানুষ বলবে– 'আজ পালানোর জায়গা কোথায়?'

يَقُوْلُ الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍ أَيْنَ الْمَفَرُّ ج (١٠)

১১. মোটেই না, আশ্রয়ের কোন জায়গা নেই।

كَلَّا لَا وَزَرَ ط (١١)

১২. সেদিন ঠাঁই হবে (একমাত্র) তোমার প্রতিপালকেরই নিকট।

إِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِنِ الْمُسْتَقَرُّ ط (١٢)

১৩. সেদিন মানুষকে জানিয়ে দেয়া হবে সে কী ('আমাল) আগে পাঠিয়েছে আর কী পেছনে ছেড়ে এসেছে।

يُنَبَّؤُا الْإِنْسَانُ يَوْمَئِذٍۭ بِمَا قَدَّمَ وَأَخَّرَ ط (١٣)

১৪. আসলে মানুষ নিজেই নিজের সম্পর্কে চাক্ষুসভাবে অবগত।	بَلِ الْإِنْسَانُ عَلٰى نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۙ (١٤)
১৫. যদিও সে নানান ওজুহাত পেশ করে।	وَّلَوْ أَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۭ (١٥)
১৬. (এ সূরাহ অবতীর্ণ হওয়ার সময় আল্লাহ্‌র রসূল তা মুখস্থ করার জন্য ব্যস্ত হয়ে পড়লে আল্লাহ অভয় দিয়ে বললেন) তুমি তাড়াতাড়ি ওয়াহী আয়ত্ত করার জন্য তোমার জিভ নাড়াবে না।	لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۭ (١٦)
১৭. এর সংরক্ষণ ও পড়ানোর দায়িত্ব আমারই।	إِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ج صلے (١٧)
১৮. কাজেই আমি যখন তা পাঠ করি, তখন তুমি সে পাঠের অনুসরণ কর।	فَإِذَا قَرَأْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ج (١٨)
১৯. অতঃপর তা (ওয়াহীয়ে খফী বা প্রচ্ছন্ন ওয়াহীর মাধ্যমে) বিশদভাবে ব্যাখ্যা করা আমারই দায়িত্ব।	ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ ۭ (١٩)
২০. (আবার পূর্বের প্রসঙ্গে ফিরে গিয়ে আল্লাহ বলছেন) না, প্রকৃতপক্ষে তোমরা ইহজীবনকেই ভালবাস,	كَلَّا بَلْ تُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ ۙ (٢٠)
২১. আর আখিরাতকে উপেক্ষা কর।	وَتَذَرُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۭ (٢١)
২২. কতক মুখ সেদিন উজ্জ্বল হবে।	وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ۙ (٢٢)
২৩. তারা তাদের প্রতিপালকের দিকে তাকিয়ে থাকবে।	إِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ج (٢٣)
২৪. কতক মুখ সেদিন বিবর্ণ হবে।	وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍۭ بَاسِرَةٌ ۙ (٢٤)
২৫. তারা ধারণা করবে যে, তাদের সঙ্গে কোমর-ভাঙ্গা আচরণ করা হবে।	تَظُنُّ أَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ۭ (٢٥)

১৬-১৮। ইব্‌নু 'আব্বাস (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি আল্লাহ্‌র বাণীঃ لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ এ আয়াতের ব্যাখ্যায় বলেন যে, জিবরীল ('আ.) যখন ওয়াহী নিয়ে আসতেন তখন রসূল তাঁর জিহ্‌বা ও ঠোঁট দু'টো দ্রুত নাড়তেন। এটা তাঁর জন্য কষ্টসাধ্য হত এবং তাঁর চেহারা দেখেই বোঝা যেত। তাই আল্লাহ্‌ তা'আলাঃ "তাড়াতাড়ি ওয়াহী আয়ত্ত করার জন্য তোমার জিহ্বা সঞ্চালন করবে না; এ কুরআন সংরক্ষণ ও পাঠ করিয়ে দেয়ার দায়িত্ব আমারই" অবতীর্ণ করলেন। এতে আল্লাহ ইরশাদ করেছেনঃ এ কুরআনকে তোমার বক্ষে সংরক্ষিত করা ও পড়িয়ে দেয়ার ভার আমার উপর। সুতরাং আমি যখন তা পাঠ করি, তুমি সে পাঠের অনুসরণ কর, অর্থাৎ আমি যখন ওয়াহী অবতীর্ণ করি তখন তুমি মনোযোগ দিয়ে শুন। তারপর এর বিস্তারিত ব্যাখ্যার দায়িত্ব আমারই। অর্থাৎ তোমার মুখে তা বর্ণনা করার দায়িত্ব আমারই। রাবী বলেন, এরপর জিব্‌রীল ('আ.) চলে গেলে আল্লাহ্‌র ওয়াদা ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهٗ মুতাবিক তিনি তা পাঠ করতেন। أَوْلٰى لَكَ فَأَوْلٰى ' দুর্ভোগ তোমার জন্য, দুর্ভোগ! تَوَعُّدٌ এ আয়াতে ভীতি প্রদর্শন করা হয়েছে। –বুখারী ৪৯২৯ [৫; মুসলিম ৪৪৮, তিরমিযী ৩৩২৯, নাসায়ী ৯৩৫, আহমাদ ১৯১৩, ৩১৮১]

২৬. (তোমরা যে ভাবছ ক্বিয়ামত হবে না সেটা) কক্ষনো নয়, প্রাণ যখন কণ্ঠে এসে পৌঁছবে,	كَلَّآ إِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ۙ (٢٦)
২৭. তখন বলা হবে, (তাকে বাঁচানোর জন্য) ঝাড়ফুঁক দেয়ার কেউ আছে কি?	وَقِيلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ۙ (٢٧)
২৮. সে (অর্থাৎ মুমূর্ষু ব্যক্তি) মনে করবে যে, (দুনিয়া হতে) বিদায়ের ক্ষণ এসে গেছে।	وَّظَنَّ أَنَّهُ الْفِرَاقُ ۙ (٢٨)
২৯. আর জড়িয়ে যাবে এক পায়ের নলা আরেক পায়ের নলার সাথে।	وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ۙ (٢٩)
৩০. সেদিন (সব কিছুর) যাত্রা হবে তোমার প্রতিপালকের পানে।	إِلَىٰ رَبِّكَ يَوْمَئِذٍ الْمَسَاقُ ؕ ع (٣٠)
৩১. কিন্তু না, সে বিশ্বাসও করেনি, নামাযও আদায় করেনি।	فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلَّىٰ ۙ (٣١)
৩২. বরং সে প্রত্যাখ্যান করেছিল আর মুখ ফিরিয়ে নিয়েছিল।	وَلَٰكِن كَذَّبَ وَتَوَلَّىٰ ۙ (٣٢)
৩৩. অতঃপর সে অতি দম্ভভরে তার পরিবারবর্গের কাছে ফিরে গিয়েছিল।	ثُمَّ ذَهَبَ إِلَىٰ أَهْلِهِ يَتَمَطَّىٰ ؕ (٣٣)
৩৪. দুর্ভোগ তোমার জন্য, দুর্ভোগ,	أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ۙ (٣٤)
৩৫. অতঃপর তোমার জন্য দুর্ভোগের উপর দুর্ভোগ।	ثُمَّ أَوْلَىٰ لَكَ فَأَوْلَىٰ ؕ (٣٥)
৩৬. মানুষ কি মনে করে নিয়েছে যে তাকে এমনি ছেড়ে দেয়া হবে। (তাকে পুনর্জীবিত করাও হবে না, আর বিচারের জন্য হাজির করাও হবে না)?	أَيَحْسَبُ الْإِنسَانُ أَن يُتْرَكَ سُدًى ؕ (٣٦)
৩৭. (তার মৃত্যুর পর আল্লাহ পুনরায় তাকে জীবিত করতে পারবেন না সে এটা কী ভাবে ধারণা করছে?) সে কি (মায়ের গর্ভে) নিক্ষিপ্ত শুক্রবিন্দু ছিল না?	أَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّن مَّنِيٍّ يُمْنَىٰ ۙ (٣٧)
৩৮. তারপর সে হল রক্তপিণ্ড, অতঃপর আল্লাহ তাকে সৃষ্টি করলেন ও সুবিন্যস্ত করলেন।	ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوَّىٰ ۙ (٣٨)
৩৯. অতঃপর তাথেকে তিনি সৃষ্টি করলেন জুড়ি-পুরুষ ও নারী।	فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْأُنثَىٰ ؕ (٣٩)
৪০ এহেন স্রষ্টা কি মৃতকে আবার জীবিত করতে সক্ষম নন?	أَلَيْسَ ذَٰلِكَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يُحْيِيَ الْمَوْتَىٰ ع (٤٠)

৭৬. সূরাহ আদ্-দাহ্‌র

আয়াতঃ ৩১, রুকূ'ঃ ২, মাদানী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

১. মহাকালের মধ্য হতে মানুষের উপর কি এমন একটা সময় অতিবাহিত হয়নি যখন সে উল্লেখ করার যোগ্য কোন বস্তুই ছিল না?

২. আমি মানুষকে সৃষ্টি করেছি সংমিশ্রিত শুক্রবিন্দু থেকে তাকে পরীক্ষা করার জন্য, এজন্য তাকে করেছি শ্রবণশক্তি ও দৃষ্টিশক্তির অধিকারী।

৩. আমি তাকে পথ দেখিয়ে দিয়েছি, হয় সে কৃতজ্ঞ হবে, না হয় সে অকৃতজ্ঞ হবে।

৪. আমি (অকৃতজ্ঞ) কাফিরদের জন্য প্রস্তুত করে রেখেছি শেকল, বেড়ি আর জ্বলন্ত আগুন।

৫. (অপরদিকে) নেক্‌কার লোকেরা এমন পানপাত্র থেকে পান করবে যাতে কর্পুরের সংমিশ্রণ থাকবে।

৬. আল্লাহ্‌র বান্দারা একটি ঝর্ণা থেকে পান করবে। তারা এই ঝর্ণাকে (তাদের) ইচ্ছেমত প্রবাহিত করবে।

৭. যারা মানৎ পূরণ করে আর সেই দিনকে ভয় করে যার অনিষ্ট হবে সুদূর প্রসারী।

৮. আর তারা আল্লাহ্‌র প্রতি তাদের ভালবাসার কারণে মিসকীন, ইয়াতীম ও কয়েদীকে খাবার খাওয়ায়।

৯. তারা বলে– 'আমরা তোমাদেরকে খাবার খাওয়াচ্ছি কেবল আল্লাহ্‌র চেহারা (সন্তুষ্টি) লাভের জন্য, আমরা তোমাদের থেকে কোন প্রতিদান চাই না, চাই না কোন কৃতজ্ঞতা (জ্ঞাপন ও ধন্যবাদ)।

سُوْرَةُ الدَّهْرِ

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ أَتٰى عَلَى الْإِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا (١)

إِنَّا خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ أَمْشَاجٍ نَّبْتَلِيْهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيْعًا بَصِيْرًا (٢)

إِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيْلَ إِمَّا شَاكِرًا وَّإِمَّا كَفُوْرًا (٣)

إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَلٰسِلَاْ وَأَغْلٰلًا وَّسَعِيْرًا (٤)

إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُوْنَ مِنْ كَأْسٍ كَانَ مِزَاجُهَا كَافُوْرًا (٥)

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللهِ يُفَجِّرُوْنَهَا تَفْجِيْرًا (٦)

يُوْفُوْنَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُوْنَ يَوْمًا كَانَ شَرُّهٗ مُسْتَطِيْرًا (٧)

وَيُطْعِمُوْنَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهٖ مِسْكِيْنًا وَّيَتِيْمًا وَّأَسِيْرًا (٨)

إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللهِ لَا نُرِيْدُ مِنْكُمْ جَزَآءً وَّلَا شُكُوْرًا (٩)

إِنَّا نَخَافُ مِنْ رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوْسًا قَمْطَرِيْرًا (١٠)

১০ আমরা কেবল ভয় করি আমাদের প্রতিপালকের পক্ষ হতে এক ভীতিপ্রদ ভয়ানক দিনের।

فَوَقٰهُمُ اللهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰهُمْ نَضْرَةً وَّسُرُوْرًا ج (١١)

১১. যার ফলে আল্লাহ তাদেরকে সে দিনের অনিষ্ট হতে রক্ষা করবেন আর তাদেরকে দিবেন সজীবতা ও আনন্দ।

وَجَزٰىهُمْ بِمَا صَبَرُوْا جَنَّةً وَّحَرِيْرًا لا (١٢)

১২. আর তাদের ধৈর্য সহিষ্ণুতার বিনিময়ে তাদেরকে দিবেন জান্নাত ও রেশমী পোশাক।

مُتَّكِئِيْنَ فِيْهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ ج لَا يَرَوْنَ فِيْهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيْرًا ج (١٣)

১৩. সেখানে তারা উচ্চ আসনগুলোতে হেলান দিয়ে বসবে, সেখানে তারা দেখবে না অতি গরম, আর অতি শীত।

وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلَالُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوْفُهَا تَذْلِيْلًا (١٤)

১৪. জান্নাতের বৃক্ষরাজির ছায়া তাদের উপর থাকবে, আর ফলের গুচ্ছ একেবারে তাদের নাগালের মধ্যে রাখা হবে।

وَيُطَافُ عَلَيْهِمْ بِاٰنِيَةٍ مِّنْ فِضَّةٍ وَّأَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيْرَا۠ لا (١٥)

১৫. তাদের সামনে ঘুরে ঘুরে রুপার পাত্র পরিবেশন করা হবে আর সাদা পাথরের পানপাত্র।

قَوَارِيْرَا۠ مِنْ فِضَّةٍ قَدَّرُوْهَا تَقْدِيْرًا (١٦)

১৬. সেই সাদা পাথরও হবে রুপার তৈরী। তারা এগুলোকে যথাযথ পরিমাণে ভর্তি করবে।

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَأْسًا كَانَ مِزَاجُهَا زَنْجَبِيْلًا ج (١٧)

১৭. তাদেরকে পান করানোর জন্য এমন পাত্র পরিবেশন করা হবে যাতে আদার মিশ্রণ থাকবে।

عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا (١٨)

১৮. সেখানে আছে একটা ঝর্ণা, যার নাম সালসাবীল।

وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ ج إِذَا رَأَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا (١٩)

১৯. ঘুরে ঘুরে তাদের সেবাদান কার্যে নিয়োজিত থাকবে চিরকিশোরগণ। তুমি যখন তাদেরকে দেখবে, তুমি মনে করবে, তারা যেন ছড়ানো মুক্তা।

وَإِذَا رَأَيْتَ ثَمَّ رَأَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا كَبِيْرًا (٢٠)

২০. তুমি যখন দেখবে তখন দেখতে পাবে ভোগ বিলাসের নানান সামগ্রী আর এক বিশাল রাজ্য।

عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّإِسْتَبْرَقٌ ز وَّحُلُّوْآ أَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ج وَسَقٰهُمْ رَبُّهُمْ

২১. তাদের আবরণ হবে চিকন সবুজ রেশম ও মোটা রেশম, আর তাদেরকে অলংকারে সজ্জিত করা হবে রুপার কঙ্কণ দ্বারা, আর তাদের রব্ব

شَرَابًا طَهُوْرًا (٢١)

তাদেরকে পান করাবেন পবিত্র পরিচ্ছন্ন পানীয়।

إِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ع (٢٢)

২২. 'এটাই তোমাদের প্রতিদান, তোমাদের চেষ্টা–সাধনা সাদরে গৃহীত হয়েছে।'

إِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ج (٢٣)

২৩. (হে নবী!) আমি তোমার কাছে কুরআন অবতীর্ণ করেছি ক্রমে ক্রমে (অল্প অল্প করে)।

فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ اٰثِمًا أَوْ كَفُوْرًا ج (٢٤)

২৪. কাজেই তুমি ধৈর্য ধ'রে, তোমার প্রতিপালকের নির্দেশের অপেক্ষা কর আর তাদের মধ্যেকার পাপাচারী অথবা কাফিরের আনুগত্য কর না।

وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا صلے ج (٢٥)

২৫. আর সকাল-সন্ধ্যায় তোমার রব্ব এর নাম স্মরণ কর।

وَّمِنَ اللَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا طَوِيْلًا (٢٦)

২৬. আর রাতের কিছু অংশে তাঁর জন্য সেজদায় অবনত হও আর রাতের দীর্ঘ সময় ধরে তাঁর মহিমা বর্ণনা কর।

إِنَّ هٰؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا (٢٧)

২৭. এ লোকেরা তো পার্থিব জীবনকে ভালবাসে আর তাদের আড়ালে যে (কিয়ামাতের) কঠিন দিন (আসছে) তাকে উপেক্ষা করে।

نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ أَسْرَهُمْ ج وَإِذَا شِئْنَا بَدَّلْنَآ أَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا (٢٨)

২৮. আমিই তাদেরকে সৃষ্টি করেছি আর তাদের গঠন মজবুত করেছি। আমি যখন চাইব তখন তাদের স্থলে তাদের মত অন্য লোক আনব।

إِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ج فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا (٢٩)

২৯. এটা এক উপদেশ, কাজেই যার ইচ্ছে সে (এ উপদেশ মান্য ক'রে) তার প্রতিপালকের পথ ধরুক।

وَمَا تَشَآءُوْنَ إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللهُ ط إِنَّ اللهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا قصلے لا (٣٠)

৩০. তোমরা ইচ্ছে কর না আল্লাহ্‌র ইচ্ছে ব্যতীত। (অর্থাৎ আল্লাহ কোন কিছু কার্যকর করতে চাইলে তোমাদের মাঝে ইচ্ছে ও শক্তি সঞ্চার করতঃ তোমাদের মাধ্যমে তা কার্যকর করেন)। আল্লাহ সর্বজ্ঞাতা মহাবিজ্ঞানী।

يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ط وَالظَّالِمِيْنَ أَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا أَلِيْمًا (٣١)

৩১. তিনি যাকে ইচ্ছে তাঁর রাহমাতে দাখিল করেন। আর যালিমরা– তাদের জন্য তিনি প্রস্তুত করে রেখেছেন বড়ই পীড়াদায়ক শাস্তি।

৭৭. সূরাহ্ আল-মুরসালাত*

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ

আয়াতঃ ৫০, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. পর পর পাঠানো বাতাসের শপথ যা উপকার সাধন করে,

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ۙ (١)

২. অতঃপর তা প্রচণ্ড ঝড়ের বেগে বইতে থাকে,

فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ۙ (٢)

৩. শপথ সেই বায়ুর যা (মেঘমালাকে) ছড়িয়ে দেয় দূর দূরান্তে,

وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ۙ (٣)

৪. আর বিচ্ছিন্নকারী বাতাসের শপথ যা (মেঘমালাকে) বিচ্ছিন্ন করে,

فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ۙ (٤)

৫. অতঃপর (মানুষের অন্তরে) পৌঁছে দেয় (আল্লাহ্র) স্মরণ,

فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ۙ (٥)

৬. (বিশ্বাসী লোকদেরকে) ক্ষমা চাওয়ার সুযোগ দেয়ার জন্য আর (কাফিরদেরকে) সতর্ক করার জন্য।

عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ۙ (٦)

৭. তোমাদেরকে যার ও'য়াদা দেয়া হয়েছে তা অবশ্যই সংঘটিত হবে।

اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ؕ (٧)

৮. যখন নক্ষত্ররাজির আলো বিলুপ্ত হবে,

فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ۙ (٨)

৯. যখন আকাশ বিদীর্ণ হবে,

وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ۙ (٩)

১০. যখন পর্বতমালা ধুনিত হবে।

وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ۙ (١٠)

১১. যখন (হাশরের মাঠে) রসূলগণের একত্রিত হওয়ার সময় এসে পড়বে।

وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ؕ (١١)

---

*'আবদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, এক গুহায় আমরা নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে ছিলাম। এমন সময় তাঁর প্রতি অবতীর্ণ হল 'সূরাহ ওয়াল মুরসালাত'। তিনি তা তিলাওয়াত করছিলেন, আর আমি তাঁর মুখ থেকে তা শিখছিলাম। তিলাওয়াতে তখনো তাঁর মুখ সিক্ত ছিল। হঠাৎ আমাদের সামনে একটি সাপ বেরিয়ে এলো। নাবী (ﷺ) বললেন, ওটাকে মেরে ফেল। আমরা ওদিকে দৌড়িয়ে গেলাম। কিন্তু সাপটি চলে গেল। তখন নাবী (ﷺ) বললেন, ওটা তোমাদের অনিষ্ট থেকে বেঁচে গেল তোমরা যেমন তার অনিষ্ট থেকে রক্ষা পেলে। 'উমার ইব্নু হাফস্ বলেন, এ হাদীসটি আমি আমার পিতার নিকট হতে শুনে মুখস্থ করেছি। গুহাটি মিনায় অবস্থিত বলে উল্লেখ আছে। -বুখারী ৪৯৩৪ [১৮৩০; মুসলিম ২২৩৪, ২২৩৫; নাসায়ী ২৮৮৩, ২৮৮৪; আহমাদ ৩৫৮৪, ৩৬৪১]

لِأَيِّ يَوْمٍ أُجِّلَتْ ﻁ (١٢)

১২. (এ সব বিষয়) কোন্ দিনের জন্য স্থগিত রাখা হয়েছে?

لِيَوْمِ الْفَصْلِ ج (١٣)

১৩. চূড়ান্ত ফয়সালার দিনের জন্য।

وَمَآ أَدْرٰكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﻁ (١٤)

১৪. সেই চূড়ান্ত ফয়সালার দিনটি কী তা তোমাকে কিসে জানাবে?

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (١٥)

১৫. সে দিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

أَلَمْ نُهْلِكِ الْأَوَّلِيْنَ ﻁ (١٦)

১৬. আমি কি আগেকার লোকেদেরকে ধ্বংস করে দেইনি?

ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ (١٧)

১৭. অতঃপর পরবর্তী লোকেদেরকেও আমি তাদের অনুগামী করব।

كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ (١٨)

১৮. অপরাধীদের প্রতি আমি এরকমই করে থাকি।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (١٩)

১৯. সে দিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

أَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ لا (٢٠)

২০. আমি কি নগণ্য পানি থেকে তোমাদেরকে সৃষ্টি করিনি?

فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ لا (٢١)

২১. অতঃপর আমি তা রেখেছি এক সুসংরক্ষিত স্থানে।

إِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ لا (٢٢)

২২. একটা নির্ধারিত সময় পর্যন্ত,

فَقَدَرْنَا ق صلے فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ (٢٣)

২৩. অতঃপর আমি তাকে গঠন করেছি সুসামঞ্জস্যপূর্ণরূপে, আমি কতই না উত্তম ক্ষমতার অধিকারী!

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٢٤)

২৪. সে দিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا لا (٢٥)

২৫. আমি কি পৃথিবীকে (সব কিছুকে টেনে গুটিয়ে) ধারণকারীরূপে সৃষ্টি করিনি?

أَحْيَآءً وَّأَمْوَاتًا لا (٢٦)

২৬. জীবিত ও মৃতদেরকে (ভাল আর মন্দকে নেক্কার আর পাপাচারীকে)।

وَّجَعَلْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَّأَسْقَيْنٰكُمْ مَّآءً فُرَاتًا ﻁ (٢٧)

২৭. আর আমি তাতে স্থাপন করেছি অনড় সুউচ্চ পর্বতমালা আর তোমাদেরকে পান করিয়েছি সুমিষ্ট সুপেয় পানি।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٢٨)

২৮. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ج (٢٩)

২৯. (তাদেরকে বলা হবে) ‘চলো তার দিকে তোমরা যাকে মিথ্যে ব’লে প্রত্যাখ্যান করতে।

اِنْطَلِقُوْٓا اِلٰى ظِلٍّ ذِيْ ثَلٰثِ شُعَبٍ لا (٣٠)

৩০. ‘চলো সেই (ধোঁয়ার) ছায়ার দিকে যার আছে তিনটি শাখা (অর্থাৎ ডানে, বামে, উপরে সব দিক থেকেই ঘিরে ধরবে),

لَّا ظَلِيْلٍ وَّلَا يُغْنِيْ مِنَ اللَّهَبِ ط (٣١)

৩১. যা শীতল নয়, আর তা লেলিহান অগ্নিশিখা থেকে বাঁচাতেও পারবে না।

اِنَّهَا تَرْمِيْ بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ج (٣٢)

৩২. সে আগুন প্রাসাদের ন্যায় (বিশাল) স্ফুলিঙ্গ উৎক্ষেপ করবে,

كَاَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ط (٣٣)

৩৩. যেন হলুদ রঙের উটের সারি,

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٣٤)

৩৪. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُوْنَ لا (٣٥)

৩৫. এদিন এমন যে, কেউ কথা বলতে পারবে না,

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُوْنَ (٣٦)

৩৬. তাদেরকে কোন ওজর পেশ করারও সুযোগ দেয়া হবে না।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٣٧)

৩৭. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ ج جَمَعْنٰكُمْ وَالْاَوَّلِيْنَ (٣٨)

৩৮. এটা চূড়ান্ত ফয়সালার দিন, আমি একত্রিত করেছি তোমাদেরকে আর আগের লোকেদেরকে।

فَاِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيْدُوْنِ (٣٩)

৩৯. এক্ষণে তোমাদের কাছে যদি কোন কৌশল থাকে তাহলে তা আমার বিরুদ্ধে প্রয়োগ কর।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ع (٤٠)

৪০. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ ظِلٰلٍ وَّعُيُوْنٍ لا (٤١)

৪১. মুত্তাকীরা থাকবে ছায়া আর ঝর্ণাধারার মাঝে,

৩২। ‘আবদুর রহমান ইব্‌নু আবিস (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি ঐ আয়াতের ব্যাখ্যায় ইব্‌নু ‘আব্বাস (রাঃ)-কে বলতে শুনেছি যে, আমরা তিন গজ বা এর চেয়ে ছোট কাঠের খণ্ড জোগাড় করে শীতকালের জন্য উঠিয়ে রাখতাম। এটাকেই আমরা বলতাম القَصْر। –বুখারী ৪৯৩২ [৪৯৩৩]

৩৩। ‘আবদুর রহমান ইব্‌নু আবিস (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি এ আয়াত সম্পর্কে ইব্‌নু ‘আব্বাস (রাঃ)-কে বলতে শুনেছি, তিনি বলেছেন, আমরা তিন গজ বা তার চেয়ে অধিক লম্বা কাষ্ঠ জড়ো করে শীতকালের জন্য উঠিয়ে রাখতাম। এটাকেই আমরা বলতাম القَصْر। جِمَالَتٌ صُفْرٌ জাহাজের রশি, যা জমা করে রাখা হত। এমনকি তা মাঝারি গড়নের মানুষের সমান উঁচু হয়ে যেত। –বুখারী ৪৯৩৩ [৪৯৩২]

وَّفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُوْنَ ط (٤٢)

৪২. আর তাদের জন্য থাকবে ফলমূল– যেটি তাদের মন চাইবে।

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـئًا ۢبِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٤٣)

৪৩. (তাদেরকে বলা হবে) 'তোমরা তৃপ্তির সঙ্গে খাও আর পান কর, তোমরা যে 'আমাল করেছিলে তার পুরস্কারস্বরূপ।

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ (٤٤)

৪৪. সৎকর্মশীলদেরকে আমি এভাবেই প্রতিফল দিয়ে থাকি।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٤٥)

৪৫. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

كُلُوْا وَتَمَتَّعُوْا قَلِيْلًا إِنَّكُمْ مُّجْرِمُوْنَ (٤٦)

৪৬. (ওহে সত্য প্রত্যাখ্যানকারীরা!) তোমরা অল্প কিছুকাল খেয়ে নাও আর ভোগ করে নাও, তোমরা তো অপরাধী।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٤٧)

৪৭. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

وَإِذَا قِيْلَ لَهُمُ ارْكَعُوْا لَا يَرْكَعُوْنَ (٤٨)

৪৮. তাদেরকে যখন বলা হয় (আল্লাহ্‌র সম্মুখে) নত হও, (তাঁর আদেশসমূহ পালনের মাধ্যমে) তখন তারা নত হয় না।

وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (٤٩)

৪৯. সেদিন দুর্ভোগ সত্য প্রত্যাখ্যানকারীদের জন্য।

فَبِأَيِّ حَدِيْثٍ ۢبَعْدَهٗ يُؤْمِنُوْنَ ع (٥٠)

৫০. তাহলে কুরআনের পর (তার চেয়ে উত্তম) আর কোন্ কিতাব আছে যার উপর তারা ঈমান আনবে?

৭৮. সূরাহ আন্‌-নাবা

سُوْرَةُ النَّبَإِ

আয়াতঃ ৪০, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. লোকেরা কোন্‌ বিষয়ে একে অন্যের কাছে জিজ্ঞাসাবাদ করছে?

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ج (١)

২. (ক্বিয়ামত সংঘটিত হওয়ার) সেই মহা সংবাদের বিষয়ে,

عَنِ النَّبَإِ الْعَظِيْمِ لا (٢)

৩. যে বিষয়ে তাদের মাঝে মতপার্থক্য আছে।

الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ط (٣)

৪. কক্ষনো না, (তারা যা ধারণা করে তা একেবারে, অলীক ও অবাস্তব), তারা শীঘ্রই জানতে পারবে।

كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ لا (٤)

৫. আবার বলছি, কক্ষনো না (তাদের ধারণা একেবারে অলীক ও অবাস্তব), তারা শীঘ্রই জানতে পারবে।

ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ (٥)

৬. (আমি যে সব কিছুকে দ্বিতীয়বার সৃষ্টি করতে সক্ষম তা তোমরা অস্বীকার করছ কীভাবে) আমি কি যমীনকে (তোমাদের জন্য) শয্যা বানাইনি?

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ مِهَادًا لا (٦)

৭. আর পর্বতগুলোকে কীলক (বানাইনি)?

وَّالْجِبَالَ أَوْتَادًا لا (٧)

৮. আর আমি তোমাদেরকে সৃষ্টি করেছি জোড়ায় জোড়ায়।

وَّخَلَقْنٰكُمْ أَزْوَاجًا لا (٨)

৯. আর তোমাদের নিদ্রাকে করেছি বিশ্রামদায়ী।

وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا لا (٩)

১০. রাতকে করেছি আবরণ,

وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا لا (١٠)

১১. আর দিনকে করেছি জীবিকা সংগ্রহের মাধ্যম।

وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ج (١١)

১২. আর তোমাদের উর্ধ্বদেশে বানিয়েছি সাতটি সুদৃঢ় আকাশ।

وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا لا (١٢)

১৩. এবং সৃষ্টি করেছি উজ্জ্বল প্রদীপ।

وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا لا (١٣)

১৪. আর আমি বর্ষণ করি বৃষ্টিবাহী মেঘমালা থেকে প্রচুর পানি,

وَّأَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا لا (١٤)

১৫. যাতে আমি তা দিয়ে উৎপন্ন করি শস্য ও উদ্ভিদ,

لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا لا (١٥)

وَّجَنّٰتٍ أَلْفَافًا ط (١٦)

১৬. আর ঘন উদ্যান।

إِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا لا (١٧)

১৭. নিশ্চয়ই নির্ধারিত আছে মীমাংসার দিন,

يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَأْتُوْنَ أَفْوَاجًا لا (١٨)

১৮. সেদিন শিঙ্গায় ফুঁক দেয়া হবে, আর তোমরা দলে দলে আসবে,

وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ أَبْوَابًا لا (١٩)

১৯. আকাশ খুলে দেয়া হবে আর তাতে হবে অনেক দরজা।

وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا لا (٢٠)

২০. আর পর্বতগুলোকে করা হবে চলমান, ফলে তা নিছক মরীচিকায় পরিণত হবে।

إِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا لا (٢١)

২১. জাহান্নাম তো ওৎ পেতে আছে,

لِّلطَّاغِيْنَ مَاٰبًا لا (٢٢)

২২. (আর তা হল) সীমালঙ্ঘনকারীদের আশ্রয়স্থল।

لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ أَحْقَابًا ج (٢٣)

২৩. সেখানে তারা যুগ যুগ ধরে থাকবে,

لَّا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا لا (٢٤)

২৪. সেখানে তারা কোন শীতল ও পানীয় আস্বাদন করবে না

إِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا لا (٢٥)

২৫. ফুটন্ত পানি ও পুঁজ ছাড়া;

جَزَآءً وِّفَاقًا ط (٢٦)

২৬. উপযুক্ত প্রতিফল।

إِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا لا (٢٧)

২৭. তারা (তাদের কৃতকর্মের) কোন হিসাব-নিকাশ আশা করত না,

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ط (٢٨)

২৮. তারা আমার নিদর্শনগুলোকে অস্বীকার করেছিল- পুরোপুরি অস্বীকার।

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا لا (٢٩)

২৯. সবকিছুই আমি সংরক্ষণ করে রেখেছি লিখিতভাবে।

فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ إِلَّا عَذَابًا ع (٣٠)

৩০. অতএব এখন স্বাদ গ্রহণ কর, আমি তোমাদের জন্য কেবল শাস্তিই বৃদ্ধি করব (অন্য আর কিছু নয়)।

إِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا لا (٣١)

৩১. (অন্য দিকে) মুত্তাকীদের জন্য আছে সাফল্য।

حَدَآئِقَ وَأَعْنَابًا لا (٣٢)

৩২. বাগান, আঙ্গুর,

وَّكَوَاعِبَ أَتْرَابًا لا (٣٣)

৩৩. আর সমবয়স্কা নব্য যুবতী

وَّكَأْسًا دِهَاقًا ط (٣٤)

৩৪. এবং পরিপূর্ণ পানপাত্র।

Contents

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ج صلے (٣٥)

৩৫. সেখানে তারা শুনবে না অসার অর্থহীন আর মিথ্যে কথা,

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا لا (٣٦)

৩৬. এটা তোমার প্রতিপালকের পক্ষ থেকে প্রতিফল, যথোচিত দান।

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ج (٣٧)

৩৭. যিনি আকাশ, পৃথিবী আর এগুলোর মাঝে যা কিছু আছে সব কিছুর প্রতিপালক, তিনি অতি দয়াময়, তাঁর সম্মুখে কথা বলার সাহস কারো হবে না।

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا لا ق ط لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ إِلَّا مَنْ أَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَقَالَ صَوَابًا (٣٨)

৩৮. সেদিন রূহ (জিবরাঈল) আর ফেরেশতারা সারিবদ্ধ হয়ে দাঁড়াবে, কেউ কোন কথা বলতে পারবে না, সে ব্যতীত যাকে পরম করুণাময় অনুমতি দিবেন, আর সে যথার্থ কথাই বলবে।

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ إِلٰى رَبِّهِ مَاٰبًا (٣٩)

৩৯. এ দিনটি সত্য, সুনিশ্চিত, অতএব যার ইচ্ছে সে তার প্রতিপালকের দিকে আশ্রয় গ্রহণ করুক।

إِنَّآ أَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ج صلے يَّوْمَ يَنْظُرُ الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدَاهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ع (٤٠)

৪০. আমি তোমাদেরকে নিকটবর্তী শাস্তি সম্পর্কে সতর্ক করছি, যেদিন মানুষ দেখতে পাবে তার হাতগুলো আগেই কী ('আমাল) পাঠিয়েছে আর কাফির বলবে– 'হায়! আমি যদি মাটি হতাম (তাহলে আমাকে আজকের এ 'আযাবের সম্মুখীন হতে হত না)।

৭৯. সূরাহ আন্-নাযি'আত*

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ

আয়াতঃ ৪৬, রুকূ'ঃ ২, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا لا (١)

১. শপথ সেই ফেরেশতাদের যারা (পাপীদের আত্মা) নির্মমভাবে টেনে বের করে,

---

সাহল ইব্‌নু সা'দ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি দেখেছি, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) তাঁর মধ্যমা ও বুড়ো আঙ্গুলের নিকটবর্তী অঙ্গুলিদ্বয় এভাবে একত্র করে বললেন, ক্বিয়ামাত ও আমাকে এমনিভাবে পাঠানো হয়েছে। –বুখারী ৪৯৩৬ [৫৩০১, ৬৫০৩; মুসলিম ২৯৫০, আহমাদ ২২২৯০, ২২৭৪১]

وَّالنَّاشِطٰتِ نَشْطًا ۙ(٢)

২. আর যারা (নেক্‌কারদের আত্মা) খুবই সহজভাবে বের করে,

وَّالسَّابِحٰتِ سَبْحًا ۙ(٣)

৩. শপথ সেই ফেরেশতাদের যারা দ্রুতগতিতে সাঁতার কাটে,

فَالسَّابِقٰتِ سَبْقًا ۙ(٤)

৪. আর (আল্লাহ্‌র নির্দেশ পালনের জন্য) ক্ষিপ্র গতিতে এগিয়ে যায়,

فَالْمُدَبِّرٰتِ أَمْرًا ۘ(٥)

৫. অতঃপর সব কাজের ব্যবস্থা করে।

يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۙ(٦)

৬. সেদিন ভূকম্পন প্রকম্পিত করবে,

تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ؕ(٧)

৭. তারপর আসবে আরেকটি ভূকম্পন।

قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۙ(٨)

৮. কত হৃদয় সে দিন ভয়ে ভীত হয়ে পড়বে,

أَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۘ(٩)

৯. তাদের দৃষ্টি নত হবে,

يَقُوْلُوْنَ أَإِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِي الْحَافِرَةِ ؕ(١٠)

১০. তারা বলে, 'আমাদেরকে কি আগের অবস্থায় ফিরিয়ে আনা হবে?

أَإِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ؕ(١١)

১১. আমরা যখন পচা-গলা হাড় হয়ে যাব (তখনও)?'

قَالُوْا تِلْكَ إِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۘ(١٢)

১২. তারা বলে, 'অবস্থা যদি তাই হয় তাহলে এই ফিরিয়ে আনাটাতো সর্বনাশের ব্যাপার হবে।'

فَإِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۙ(١٣)

১৩. ওটা তো কেবল একটা বিকট আওয়াজ,

فَإِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ؕ(١٤)

১৪. সহসাই তারা খোলা ময়দানে আবির্ভূত হবে।

هَلْ أَتَاكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۘ(١٥)

১৫. মূসার বৃত্তান্ত তোমার কাছে পৌঁছেছে কি?

إِذْ نَادَاهُ رَبُّهُ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ج(١٦)

১৬. যখন তার প্রতিপালক তাকে পবিত্র তুয়া প্রান্তরে ডাক দিয়ে বলেছিলেন

إِذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهُ طَغٰى صلے ز(١٧)

১৭. 'ফেরাউনের কাছে যাও, সে সীমালঙ্ঘন করেছে,

فَقُلْ هَلْ لَّكَ إِلٰى أَنْ تَزَكّٰى ۙ(١٨)

১৮. তাকে জিজ্ঞেস কর, 'তুমি কি পবিত্রতা অবলম্বন করতে ইচ্ছুক?

وَأَهْدِيَكَ إِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ج(١٩)

১৯. আর আমি তোমাকে তোমার প্রতিপালকের দিকে পথ দেখাই যাতে তুমি তাঁকে ভয় কর?'

فَأَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى صلے ز (٢٠)

২০. অতঃপর মূসা তাকে বিরাট নিদর্শন দেখাল।

فَكَذَّبَ وَعَصٰى صلے ز (٢١)

২১. কিন্তু সে অস্বীকার করল ও অমান্য করল।

ثُمَّ أَدْبَرَ يَسْعٰى صلے ز (٢٢)

২২. অতঃপর সে (আল্লাহ্‌র বিরুদ্ধে) জোর প্রচেষ্টা চালানোর জন্য (সত্যের) উল্টোপথে ফিরে গেল।

فَحَشَرَ قف فَنَادٰى صلے ز (٢٣)

২৩. সে লোকদেরকে একত্রিত করল আর ঘোষণা দিল।

فَقَالَ أَنَا رَبُّكُمُ الْأَعْلٰى صلے ز (٢٤)

২৪. সে বলল, 'আমিই তোমাদের সর্বশ্রেষ্ঠ রব'।

فَأَخَذَهُ اللهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْأُوْلٰى ط (٢٥)

২৫. পরিশেষে আল্লাহ তাকে আখেরাত ও দুনিয়ার 'আযাবে পাকড়াও করলেন।

إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ط ع (٢٦)

২৬. যে ভয় করে এমন প্রতিটি লোকের জন্য এতে অবশ্যই শিক্ষা আছে।

أَأَنْتُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمِ السَّمَآءُ ط بَنٰهَا قف (٢٧)

২৭. তোমাদের সৃষ্টি বেশি কঠিন না আকাশের? তিনি তো সেটা সৃষ্টি করেছেন।

رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰهَا لا (٢٨)

২৮. তার ছাদ অনেক উচ্চে তুলেছেন, অতঃপর তাকে ভারসাম্যপূর্ণ করেছেন।

وَأَغْطَشَ لَيْلَهَا وَأَخْرَجَ ضُحٰهَا ص (٢٩)

২৯. তিনি তার রাতকে আঁধারে ঢেকে দিয়েছেন, আর তার দিবালোক প্রকাশ করেছেন।

وَالْأَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰهَا ط (٣٠)

৩০. অতঃপর তিনি যমীনকে বিস্তীর্ণ করেছেন।

أَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰهَا ص (٣١)

৩১. তিনি তার ভিতর থেকে বের করেছেন তার পানি ও তার তৃণভূমি।

وَالْجِبَالَ أَرْسٰهَا لا (٣٢)

৩২. পর্বতকে তিনি দৃঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত করেছেন,

مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ط (٣٣)

৩৩. এ সমস্ত তোমাদের আর তোমাদের গৃহপালিত পশুগুলোর জীবিকার সামগ্রী।

فَإِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى صلے ز (٣٤)

৩৪. অতঃপর যখন মহাসংকট এসে যাবে।

يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ مَا سَعٰى لا (٣٥)

৩৫. সেদিন মানুষ স্মরণ করবে যা কিছু করার জন্য সে জোর প্রচেষ্টা চালিয়েছে।

وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى (٣٦)

৩৬. এবং জাহান্নামকে দেখানো হবে এমন ব্যক্তিকে যে দেখতে পায়।

فَأَمَّا مَنْ طَغٰى لا (٣٧)

৩৭. অতঃপর (দুনিয়ায়) যে লোক সীমালঙ্ঘন করেছিল,

৩৮. আর পার্থিব জীবনকে (পরকালের উপর) প্রাধান্য দিয়েছিল

وَاٰثَرَ الْـحَيٰوةَ الدُّنْيَا ۙ(٣٨)

৩৯. জাহান্নামই হবে তার আবাসস্থল।

فَإِنَّ الْـجَحِيْمَ هِيَ الْمَأْوٰى ۗ(٣٩)

৪০. আর যে লোক তার প্রতিপালকের সামনে দাঁড়ানোকে ভয় করেছিল এবং নিজেকে কামনা বাসনা থেকে নিবৃত্ত রেখেছিল,

وَأَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ۙ(٤٠)

৪১. জান্নাতই হবে তার বাসস্থান।

فَإِنَّ الْـجَنَّةَ هِيَ الْمَأْوٰى ۗ(٤١)

৪২. এরা তোমাকে জিজ্ঞেস করে ক্বিয়ামত সম্পর্কে– 'কখন তা ঘটবে?'

يَسْئَلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ أَيَّانَ مُرْسَاهَا ۗ(٤٢)

৪৩. এর আলোচনার সাথে তোমার কী সম্পর্ক?

فِيْمَ أَنْتَ مِنْ ذِكْرَاهَا ۗ(٤٣)

৪৪. এ সংক্রান্ত জ্ঞান তোমার প্রতিপালক পর্যন্তই শেষ।

إِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهَاهَا ۗ(٤٤)

৪৫. যারা একে ভয় করে তুমি কেবল তাদের সতর্ককারী।

إِنَّمَآ أَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشَاهَا ۗ(٤٥)

৪৬. যেদিন তারা তা দেখবে সেদিন তাদের মনে হবে, যেন তারা (পৃথিবীতে) এক সন্ধ্যা বা এক সকালের বেশি অবস্থান করেনি।

كَأَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا إِلَّا عَشِيَّةً أَوْ ضُحَاهَا ع(٤٦)

৮০. সূরাহ 'আবাসা

سُوْرَةُ عَبَسَ

আয়াতঃ ৪২, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. (নবী) মুখ ভার করল আর মুখ ঘুরিয়ে নিল।

عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ۙ(١)

২. (কারণ সে যখন কুরায়শ সরদারদের সাথে আলোচনায় রত ছিল তখন) তার কাছে এক অন্ধ ব্যক্তি আসল।

أَنْ جَآءَهُ الْأَعْمٰى ۗ(٢)

৩. (হে নবী!) তুমি কি জান, সে হয়ত পরিশুদ্ধ হত।

وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ۙ(٣)

৪. কিংবা উপদেশ গ্রহণ করত, ফলে উপদেশ তার উপকারে লাগত।

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ۗ(٤)

أَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى لا (٥)	৫. পক্ষান্তরে যে পরোয়া করে না,
فَأَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ط (٦)	৬. তার প্রতি তুমি মনোযোগ দিচ্ছ।
وَمَا عَلَيْكَ أَلَّا يَزَّكّٰى ط (٧)	৭. সে পরিশুদ্ধ না হলে তোমার উপর কোন দোষ নেই।
وَأَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى لا (٨)	৮. পক্ষান্তরে যে লোক তোমার কাছে ছুটে আসল।
وَهُوَ يَخْشٰى لا (٩)	৯. আর সে ভয়ও করে,
فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ج (١٠)	১০. তুমি তার প্রতি অমনোযোগী হলে।
كَلَّآ إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ج (١١)	১১. না, এটা মোটেই ঠিক নয়, এটা তো উপদেশ বাণী,
فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ م (١٢)	১২. কাজেই যার ইচ্ছে তা স্মরণে রাখবে,
فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ لا (١٣)	১৩. (এটা লিপিবদ্ধ আছে) মর্যাদাসম্পন্ন কিতাবসমূহে
مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍ لا (١٤)	১৪. সমুন্নত, পবিত্র।
بِأَيْدِيْ سَفَرَةٍ لا (١٥)	১৫. (এমন) লেখকদের হাতে
كِرَامٍ بَرَرَةٍ ط (١٦)	১৬. (যারা) মহা সম্মানিত পূত-পবিত্র।
قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَآ أَكْفَرَهٗ ط (١٧)	১৭. মানুষ ধ্বংস হোক! কোন্ জিনিস তাকে সত্য প্রত্যাখ্যানে উদ্বুদ্ধ করল?
مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ط (١٨)	১৮. আল্লাহ তাকে কোন্ বস্তু হতে সৃষ্টি করেছেন?
مِنْ نُّطْفَةٍ ط خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ لا (١٩)	১৯. শুক্রবিন্দু হতে। তিনি তাকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তাকে পরিমিতভাবে গড়ে তুলেছেন।
ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ لا (٢٠)	২০. অতঃপর তিনি (উপায়-উপকরণ ও প্রয়োজনীয় দ্রব্যসামগ্রী দিয়ে জীবনে চলার জন্য) তার পথ সহজ করে দিয়েছেন।

১১-১৫। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি নাবী (ﷺ) থেকে বর্ণনা করেছেন, কুরআনের হাফিয পাঠক লিপিকর সম্মানিত ফেরেশতার মত। খুব কষ্টদায়ক হওয়া সত্ত্বেও যে বারবার কুরআন মাজীদ পাঠ করে, সে দ্বিগুণ পুরস্কার পাবে। -বুখারী ৪৯৩৭ [মুসলিম ৭৯৮, তিরমিযী ২৯০৪, আবূ দাউদ ১৪৫৪, ইবনু মাজাহ ৩৭৭৯, আহমাদ ২৩৬৯১, ২৪১১৩; দারিমী ৩৩৬৮]

ثُمَّ أَمَاتَهٗ فَأَقْبَرَهٗ ۙ (٢١)

২১. অতঃপর তার মৃত্যু ঘটান এবং তাকে কবরস্থ করেন।

ثُمَّ إِذَا شَآءَ أَنْشَرَهٗ ط (٢٢)

২২. অতঃপর যখন তিনি চাইবেন তাকে আবার জীবিত করবেন।

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ أَمَرَهٗ ط (٢٣)

২৩. না, মোটেই না, আল্লাহ তাকে যে নির্দেশ দিয়ে ছিলেন তা সে এখনও পূর্ণ করেনি।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلٰى طَعَامِهٖٓ ۙ (٢٤)

২৪. মানুষ তার খাদ্যের ব্যাপারটাই ভেবে দেখুক না কেন।

أَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۙ (٢٥)

২৫. আমি প্রচুর পানি ঢালি,

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّا ۙ (٢٦)

২৬. তারপর যমীনকে বিদীর্ণ করে দেই,

فَأَنْبَتْنَا فِيهَا حَبًّا ۙ (٢٧)

২৭. অতঃপর তাতে আমি উৎপন্ন করি-শস্য,

وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۙ (٢٨)

২৮. আঙ্গুর, তাজা শাক-শব্জী,

وَّزَيْتُونًا وَّنَخْلًا ۙ (٢٩)

২৯. যয়তূন, খেজুর,

وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۙ (٣٠)

৩০. আর ঘন বৃক্ষপরিপূর্ণ বাগবাগিচা,

وَّفَاكِهَةً وَّأَبًّا ۙ (٣١)

৩১. আর নানান জাতের ফল আর ঘাস-লতাপাতা।

مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَامِكُمْ ط (٣٢)

৩২. তোমাদের আর তোমাদের গৃহপালিত পশুগুলোর ভোগের জন্য।

فَإِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ز (٣٣)

৩৩. অবশেষে যখন কান-ফাটানো শব্দ আসবে;

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ ۙ (٣٤)

৩৪. সেদিন মানুষ পালিয়ে যাবে তার ভাই থেকে,

وَأُمِّهٖ وَأَبِيهِ ۙ (٣٥)

৩৫. তার মা, তার বাপ,

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيهِ ط (٣٦)

৩৬. তার স্ত্রী ও তার সন্তান থেকে,

لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُّغْنِيهِ ط (٣٧)

৩৭. সেদিন তাদের প্রত্যেকেই নিজেকে নিয়ে ব্যতিব্যস্ত থাকবে।

وُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۙ (٣٨)

৩৮. সেদিন কতক মুখ উজ্জ্বল হবে,

ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ج (٣٩)

৩৯. সহাস্য, উৎফুল্ল।

وَوُجُوهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ لا (٤٠)

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ط (٤١)

أُولَٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ع (٤٢)

৪০. সেদিন কতক মুখ হবে ধূলিমলিন।

৪১. কালিমা ওগুলোকে আচ্ছন্ন করবে।

৪২. তারাই আল্লাহকে প্রত্যাখ্যানকারী, পাপাচারী।

---

৮১. সূরাহ আত্-তাকভীর

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ

আয়াতঃ ২৯, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ص لا (١)

وَإِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ص لا (٢)

وَإِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ص لا (٣)

وَإِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ص لا (٤)

وَإِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ص لا (٥)

وَإِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ص لا (٦)

وَإِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ص لا (٧)

وَإِذَا الْمَوْءُدَةُ سُئِلَتْ ص لا (٨)

بِأَيِّ ذَنْبٍ قُتِلَتْ ج (٩)

وَإِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ص لا (١٠)

وَإِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ص لا (١١)

وَإِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ص لا (١٢)

১. যখন সূর্যকে গুটিয়ে নেয়া হবে

২. আর তারকাগুলো যখন তাদের উজ্জ্বলতা হারিয়ে খসে পড়বে।

৩. পর্বতগুলোকে যখন চলমান করা হবে,

৪. যখন দশ মাসের গর্ভবতী উটনিগুলোকে অযত্নে পরিত্যাগ করা হবে,

৫. যখন বনের জন্তু জানোয়ারকে (বন থেকে গুটিয়ে এনে লোকালয়ে) একত্রিত করা হবে,

৬. যখন সমুদ্রগুলোকে প্রজ্বলিত করে উত্তাল করা হবে।

৭. যখন দেহের সঙ্গে আত্মাগুলোকে আবার জুড়ে দেয়া হবে,

৮. যখন জীবন্ত পুঁতে-ফেলা কন্যা-শিশুকে জিজ্ঞেস করা হবে,

৯. কোন্ অপরাধে তাকে হত্যা করা হয়েছে?

১০. যখন 'আমালনামাগুলো খুলে ধরা হবে,

১১. যখন আসমানের পর্দা সরিয়ে ফেলা হবে।

১২. যখন জাহান্নামকে উস্‌কে দেয়া হবে,

وَإِذَا الْـجَنَّةُ أُزْلِفَتْ ص ٧ (١٣)

১৩. আর জান্নাতকে নিকটে আনা হবে,

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ أَحْضَرَتْ ط (١٤)

১৪. তখন প্রত্যেক ব্যক্তি জানতে পারবে সে কী (সঙ্গে) নিয়ে এসেছে।

فَلَآ أُقْسِمُ بِالْـخُنَّسِ ٧ (١٥)

১৫. আমি শপথ করছি (গ্রহের) যা পেছনে সরে যায়,

الْـجَوَارِ الْكُنَّسِ ٧ (١٦)

১৬. চলে ও লুকিয়ে যায়,

وَالَّيْلِ إِذَا عَسْعَسَ ٧ (١٧)

১৭. শপথ রাতের যখন তা বিদায় নেয়

وَالصُّبْحِ إِذَا تَنَفَّسَ ٧ (١٨)

১৮. আর ঊষার যখন তা নিঃশ্বাস ফেলে অন্ধকারকে বের করে দেয়,

إِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ٧ (١٩)

১৯. এ কুরআন নিশ্চয়ই সম্মানিত রসূলের (অর্থাৎ জিবরাঈলের) আনীত বাণী।

ذِيْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ٧ (٢٠)

২০. যে শক্তিশালী, 'আরশের মালিক (আল্লাহ)'র নিকট মর্যাদাশীল।

مُّطَاعٍ ثَمَّ أَمِيْنٍ ط (٢١)

২১. সেখানে মান্য ও বিশ্বস্ত।

وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ج (٢٢)

২২. (ওহে মাক্কাবাসী!) তোমাদের সঙ্গী (মুহাম্মাদ) পাগল নয়।

وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْأُفُقِ الْمُبِيْنِ ج (٢٣)

২৩. সে সেই বাণী বাহককে সুস্পষ্ট দিগন্তে দেখেছে,

وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ج (٢٤)

২৪. সে গায়বের (জ্ঞান মানুষের কাছে পৌঁছে দেয়ার) ব্যাপারে কৃপণতা করে না।

وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطَانٍ رَّجِيْمٍ ٧ (٢٥)

২৫. আর তা কোন অভিশপ্ত শয়ত্বানের বাণী নয়।

فَأَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ط (٢٦)

২৬. কাজেই তোমরা (সত্যকে প্রত্যাখ্যান করে) কোথায় চলেছ?

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ٧ (٢٧)

২৭. এটা তো কেবল বিশ্ববাসীদের জন্য উপদেশ।

لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ أَنْ يَّسْتَقِيْمَ ط (٢٨)

২৮. তার জন্য– যে তোমাদের মধ্যে সরল সঠিক পথে চলতে চায়।

وَمَا تَشَآءُوْنَ إِلَّآ أَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ع (٢٩)

২৯. তোমরা ইচ্ছে কর না যদি বিশ্বজগতের প্রতিপালক আল্লাহ ইচ্ছে না করেন।

৮২. সূরাহ আল-ইনফিত্বার

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ

আয়াতঃ ১৯, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. যখন আসমান ফেটে যাবে,

إِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ۙ (١)

২. যখন তারকাগুলো বিক্ষিপ্ত হয়ে (ঝরে) পড়বে,

وَإِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ۙ (٢)

৩. সমুদ্রকে যখন উত্তাল করে তোলা হবে,

وَإِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ۙ (٣)

৪. যখন কবরস্থ মানুষদেরকে উঠানো হবে,

وَإِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ۙ (٤)

৫. তখন প্রত্যেকে জেনে নিবে সে কী আগে পাঠিয়েছিল, আর কী পেছনে ছেড়ে এসেছিল।

عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَأَخَّرَتْ ط (٥)

৬. হে মানুষ! কিসে তোমাকে তোমার মহান প্রতিপালক সম্পর্কে ধোঁকায় ফেলে দিয়েছে?

يٰٓأَيُّهَا الْإِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ۙ (٦)

৭. যিনি তোমাকে সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর তোমাকে সুঠাম করেছেন, অতঃপর তোমাকে করেছেন ভারসাম্যপূর্ণ।

الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ۙ (٧)

৮. তিনি তোমাকে তাঁর ইচ্ছেমত আকৃতিতে গঠন করেছেন।

فِيْٓ أَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ط (٨)

৯. না (তোমাদের এই বিভ্রান্তি মোটেই সঠিক নয়), তোমরা তো (আখেরাতের) শাস্তি ও পুরস্কারকে অস্বীকার করে থাক;

كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ۙ (٩)

১০. অবশ্যই তোমাদের উপর নিযুক্ত আছে তত্ত্বাবধায়কগণ;

وَإِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ۙ (١٠)

১১. সম্মানিত লেখকগণ (যারা লিপিবদ্ধ করছে তোমাদের কার্যকলাপ),

كِرَامًا كٰتِبِيْنَ ۙ (١١)

১২. তারা জানে তোমরা যা কর।

يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ (١٢)

১৩. নেক্‌কারগণ থাকবে নানান নি'মাতের মাঝে

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ۙ (١٣)

Contents

১৪. আর পাপীরা থাকবে জাহান্নামে,

وَّإِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ ۙ (١٤)

১৫. কর্মফলের দিন তারা তাতে প্রবেশ করবে।

يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ (١٥)

১৬. তারা সেখান থেকে কক্ষনো উধাও হয়ে যেতে পারবে না।

وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ ط (١٦)

১৭. তুমি কি জান কর্মফলের দিনটি কী?

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۙ (١٧)

১৮. আবার বলি, তুমি কি জান কর্মফলের দিনটি কী

ثُمَّ مَآ أَدْرٰكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ ط (١٨)

১৯. সেদিন কোন মানুষ অপরের জন্য কিছু করার সামর্থ্য রাখবে না, সেদিন সকল কর্তৃত্ব থাকবে একমাত্র আল্লাহ্‌রই (ইখতিয়ারে)।

يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْئًا ط وَالْأَمْرُ يَوْمَئِذٍ لِّـلّٰهِ ع (١٩)

৮৩. সূরাহ আল-মুতাফ্‌ফিফীন

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ

আয়াতঃ ৩৬, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. দুর্ভোগ ঠকবাজদের জন্য (যারা মাপে বা ওজনে কম দেয়),

وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ ۙ (١)

২. যারা লোকের কাছ থেকে মেপে নেয়ার সময় পুরামাত্রায় নেয়,

الَّذِيْنَ إِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ صلے ز (٢)

৩. আর যখন তাদেরকে মেপে দেয় বা ওজন ক'রে দেয় তখন কম দেয়।

وَإِذَا كَالُوْهُمْ أَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ ط (٣)

৪. তারা কি চিন্তা করে না যে (তাদের মৃত্যুর পর) তাদেরকে আবার উঠানো হবে,

أَلَا يَظُنُّ أُولٰٓئِكَ أَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ ۙ (٤)

৫. এক মহা দিবসে।

لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ ۙ (٥)

৬. যেদিন মানুষ বিশ্বজগতের প্রতিপালকের সামনে দাঁড়াবে।	يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ؕ (٦)
৭. (তারা যে সব ধারণা করছে তা) কক্ষনো না, নিশ্চয়ই পাপীদের 'আমালনামা সিজ্জীনে (সংরক্ষিত) আছে।	كَـلَّآ إِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ ؕ (٧)
৮. তুমি কি জান সিজ্জীন কী	وَمَآ أَدْرٰكَ مَا سِجِّيْنٌ ؕ (٨)
৯. সীলমোহরকৃত কিতাব।	كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ؕ (٩)
১০. সেদিন দুর্ভোগ হবে অস্বীকারকারীদের,	وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۙ (١٠)
১১. যারা কর্মফল দিবসকে অস্বীকার করে।	الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ؕ (١١)
১২. কেবল সীমালঙ্ঘনকারী, পাপাচারী ছাড়া কেউই তা অস্বীকার করে না।	وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ إِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ أَثِيْمٍ ۙ (١٢)
১৩. তার সামনে যখন আমার আয়াত পড়ে শোনানো হয়, তখন সে বলে, 'এ তো প্রাচীন কালের লোকেদের কাহিনী"।	إِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ أَسَاطِيْرُ الْأَوَّلِيْنَ ؕ (١٣)
১৪. কক্ষনো না, বরং তাদের কৃতকর্মই তাদের অন্তরে জং ধরিয়ে দিয়েছে।	كَـلَّا بَلْ سكتة رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ؕ (١٤)
১৫. কক্ষনো না, তারা সেদিন তাদের প্রতিপালক থেকে পর্দার আড়ালে থাকবে।	كَلَّآ إِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ ؕ (١٥)
১৬. অতঃপর তারা অবশ্যই জাহান্নামে প্রবেশ করবে।	ثُمَّ إِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ ؕ (١٦)
১৭. অতঃপর বলা হবে 'এটাই তা যা তোমরা অস্বীকার করতে।'	ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ؕ (١٧)

৬। 'আবদুল্লাহ্ ইবনু 'উমার (রাঃ) হতে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) "যেদিন সব মানুষ জগতসমূহের প্রতিপালকের সামনে দাঁড়াবে"-এর ব্যাখ্যায় বলেছেন, সেদিন প্রত্যেক ব্যক্তির কানের লতা পর্যন্ত ঘামে ডুবে যাবে। ~বুখারী ৪৯৩৮ [৬৫৩১; মুসলিম ২৮৬২, তিরমিযী ২৪২২, ৩৩৩৫; ইবনু মাজাহ ৪২৭৮, আহমাদ ৪৫৯৯, ৪৬৮৩]

كَلَّآ إِنَّ كِتٰبَ الْأَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ط (١٨)

১৮. (ভাল-মন্দের বিচার হবে না, শাস্তি-পুরস্কার কিছুই হবে না তা) কক্ষনো না, নিশ্চয়ই সৎলোকদের 'আমালনামা 'ইল্লিয়ীনে (সংরক্ষিত) আছে।

وَمَآ أَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ط (١٩)

১৯. তুমি কি জান ইল্লিয়ীন কী?

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ لا (٢٠)

২০. সীলমোহরকৃত কিতাব।

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ط (٢١)

২১. আল্লাহ্‌র নৈকট্যপ্রাপ্ত (ফেরেশতারা) তার তত্ত্বাবধান করে।

إِنَّ الْأَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ لا (٢٢)

২২. পুণ্যবান লোকেরা থাকবে অফুরন্ত নি'মাতের মাঝে।

عَلَى الْأَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ لا (٢٣)

২৩. উচ্চ আসনে বসে তারা (চারদিকের সবকিছু) দেখতে থাকবে।

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ج (٢٤)

২৪. তুমি তাদের মুখে আরাম আয়েশের উজ্জ্বলতা দেখতে পাবে।

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ لا (٢٥)

২৫. তাদেরকে পান করানো হবে সীল-আঁটা উৎকৃষ্ট পানীয়।

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ط وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ الْمُتَنٰفِسُوْنَ ط (٢٦)

২৬. তার সীল হবে মিশ্‌কের, প্রতিযোগীরা এ বিষয়েই প্রতিযোগিতা করুক।

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ لا (٢٧)

২৭. তাতে মেশানো থাকবে 'তাসনীম,

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ط (٢٨)

২৮. ওটা একটা ঝর্ণা, যাথেকে (আল্লাহ্‌র) নৈকট্যপ্রাপ্তরা পান করবে।

إِنَّ الَّذِيْنَ أَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ صلے ز (٢٩)

২৯. পাপাচারী লোকেরা (দুনিয়ায়) মু'মিনদেরকে ঠাট্টা-বিদ্রূপ করত।

وَإِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ صلے ز (٣٠)

৩০. আর তারা যখন তাদের পাশ দিয়ে অতিক্রম করত তখন পরস্পরে চোখ টিপে ইশারা করত।

وَإِذَا انْقَلَبُوْآ إِلٰٓى أَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ صلے ز (٣١)

৩১. আর তারা যখন তাদের আপন জনদের কাছে ফিরে আসত, তখন (মু'মিনদেরকে ঠাট্টা ক'রে আসার কারণে) ফিরত উৎফুল্ল হয়ে।

وَإِذَا رَأَوْهُمْ قَالُوٓا إِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ۙ (٣٢)

৩২. আর তারা যখন মু'মিনদেরকে দেখত তখন বলত, 'এরা তো অবশ্যই গুমরাহ্।'

وَمَآ أُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ؕ (٣٣)

৩৩. তাদেরকে তো মু'মিনদের হিফাযাতকারী হিসেবে পাঠানো হয়নি (মু'মিনদের কৃতকর্মের হিসাব মু'মিনরাই দিবে)।

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ۙ (٣٤)

৩৪. আজ (জান্নাত হতে) মু'মিনরা কাফিরদের (পরিণতির) উপর হাসছে,

عَلَى الْأَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ؕ (٣٥)

৩৫. উচ্চ আসনে বসে তাদের অবস্থা দেখছে।

هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ع (٣٦)

৩৬. কাফিররা যা করত তার 'সওয়াব' পেল তো?

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ

৮৪. সূরাহ আল-ইনশিক্বাক্ব

আয়াতঃ ২৫, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ۙ (١)

১. যখন আসমান ফেটে যাবে,

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۙ (٢)

২. এবং স্বীয় রব-এর নির্দেশ পালন করবে, আর তাই তার করণীয়।

وَإِذَا الْأَرْضُ مُدَّتْ ؕ (٣)

৩. এবং যমীনকে যখন প্রসারিত করা হবে,

وَأَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۙ (٤)

৪. আর তা তার ভেতরে যা আছে তা বাইরে নিক্ষেপ করবে ও খালি হয়ে যাবে।

وَأَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ؕ (٥)

৫. এবং স্বীয় রব-এর নির্দেশ পালন করবে আর তাই তার করণীয়।

يٰٓأَيُّهَا الْإِنْسَانُ إِنَّكَ كَادِحٌ إِلٰى رَبِّكَ كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ج (٦)

৬. হে মানুষ! তোমাকে তোমার রব পর্যন্ত পৌঁছতে বহু কষ্ট স্বীকার করতে হবে, অতঃপর তুমি তার সাক্ষাৎ লাভ করবে।

فَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ (٧)

৭. অতঃপর যার 'আমালনামা তার ডান হাতে দেয়া হবে

فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۙ(٨)

৮. তার হিসাব সহজভাবেই নেয়া হবে।

وَّيَنْقَلِبُ إِلَىٰٓ أَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ط(٩)

৯. সে তার স্বজনদের কাছে সানন্দে ফিরে যাবে।

وَأَمَّا مَنْ أُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۙ(١٠)

১০. আর যাকে তার 'আমালনামা তার পিঠের পিছন দিক থেকে দেয়া হবে,

فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۙ(١١)

১১. সে মৃত্যুকে ডাকবে,

وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ط(١٢)

১২. এবং জ্বলন্ত আগুনে প্রবেশ করবে।

إِنَّهٗ كَانَ فِيْٓ أَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ط(١٣)

১৩. সে তার পরিবার-পরিজনের মাঝে আনন্দে মগ্ন ছিল,

إِنَّهٗ ظَنَّ أَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ج(١٤)

১৪. সে ভাবত যে, সে কক্ষনো (আল্লাহ্‌র কাছে) ফিরে যাবে না।

بَلٰٓى ج إِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ط(١٥)

১৫. অবশ্যই ফিরে যাবে, তার প্রতিপালক তার প্রতি দৃষ্টি রাখছেন।

فَلَآ أُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۙ(١٦)

১৬. আমি শপথ করি সন্ধ্যাকালীন লালিমার,

وَاللَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۙ(١٧)

১৭. আর রাতের এবং তা যা কিছুর সমাবেশ ঘটায় তার,

وَالْقَمَرِ إِذَا اتَّسَقَ ۙ(١٨)

১৮. আর চাঁদের যখন তা পূর্ণ চাঁদে পরিণত হয়,

لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ط(١٩)

১৯. অবশ্যই তোমরা (আধ্যাত্মিক ও জাগতিক সর্বক্ষেত্রে) স্তরে স্তরে উন্নতির সিঁড়ি বেয়ে উর্ধ্বে উঠবে।

فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۙ(٢٠)

২০. অতএব তাদের কী হল যে তারা ঈমান আনে না?

৮। 'আয়িশাহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে বলতে শুনেছি যে, ক্বিয়ামাতের দিন যে ব্যক্তিরই হিসাব নেয়া হবে, সে ধ্বংস হয়ে যাবে। তিনি বলেন, তখন আমি বললাম, আল্লাহ্ আমাকে আপনার জন্য কুরবান করুন। আল্লাহ্ কি বলেননি, فَأَمَّا مَنْ أُوتِيَ كِتَابَهُ بِيَمِينِهِ فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَسِيرًا "যার 'আমালনামা তার ডান হস্তে দেয়া হবে, তার হিসাব নিকাশ সহজেই নেয়া হবে। এ কথা শুনে রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বললেন, এ আয়াতে 'আমালনামা কীভাবে দেয়া হবে সে ব্যাপারে উল্লেখ করা হয়েছে, নতুবা যার খুঁটিনাটি হিসাব নেয়া হবে সে ধ্বংস হয়ে যাবে। -বুখারী ৪৯৩৯ [১০৩; মুসলিম ২৮৭৬, তিরমিযী ২৪২৬, ৩৩৩৭; আবূ দাউদ ৩০৯৩, আহমাদ ২৩৬৮০, ২৪০৮৪]

১৯। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ এর অর্থ হচ্ছে, এক অবস্থার পর আরেক অবস্থা। তোমাদের নাবীই (ﷺ) এটা বলেছেন। -বুখারী ৪৯৪০

وَإِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْآنُ لَا يَسْجُدُونَ ۩ (٢١)

২১. আর তাদের কাছে যখন কুরআন পাঠ করা হয় তখন সেজদা করে না?[সেজদা]

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا يُكَذِّبُونَ (٢٢)

২২. (কুরআন শুনে সেজদা করা তো দূরের কথা) বরং কাফিররা ওটাকে অস্বীকারই করে।

وَاللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا يُوعُونَ (٢٣)

২৩. আল্লাহ খুব ভাল করেই জানেন তারা (তাদের অন্তরে) কী লুকিয়ে রাখে।

فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ أَلِيمٍ (٢٤)

২৪. কাজেই তাদেরকে মর্মান্তিক 'আযাবের সুসংবাদ দাও।

إِلَّا الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ (٢٥)

২৫. কিন্তু যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তারা বাদে; তাদের জন্য আছে অফুরন্ত প্রতিদান।

سُورَةُ الْبُرُوجِ

৮৫. সূরাহ আল-বুরূজ

আয়াতঃ ২২, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

وَالسَّمَاءِ ذَاتِ الْبُرُوجِ (١)

১. শপথ গ্রহ-নক্ষত্র শোভিত আকাশের

وَالْيَوْمِ الْمَوْعُودِ (٢)

২. আর সেদিনের যার ও'য়াদা করা হয়েছে,

وَشَاهِدٍ وَمَشْهُودٍ (٣)

৩. আর যে দেখে আর যা দেখা যায় তার শপথ

قُتِلَ أَصْحَابُ الْأُخْدُودِ (٤)

৪. ধ্বংস হয়েছে গর্ত ওয়ালারা

النَّارِ ذَاتِ الْوَقُودِ (٥)

৫. (যে গর্তে) দাউ দাউ করে জ্বলা ইন্ধনের আগুন ছিল,

إِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُودٌ (٦)

৬. যখন তারা গর্তের কিনারায় বসে ছিল

وَهُمْ عَلَى مَا يَفْعَلُونَ بِالْمُؤْمِنِينَ شُهُودٌ (٧)

৭. আর তারা মু'মিনদের সাথে যা করছিল তা দেখছিল

وَمَا نَقَمُوا مِنْهُمْ إِلَّا أَنْ يُؤْمِنُوا بِاللَّهِ الْعَزِيزِ الْحَمِيدِ (٨)

৮. তারা তাদেরকে নির্যাতন করেছিল একমাত্র এই কারণে যে, তারা মহাপরাক্রান্ত প্রসংসিত আল্লাহ্র প্রতি ঈমান এনেছিল।

৯. আসমান ও যমীনের রাজত্ব যাঁর, আর সেই আল্লাহ সব কিছুর প্রত্যক্ষদর্শী।	الَّذِي لَهُ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ط وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ط (٩)
১০. যারা মু'মিন পুরুষ ও নারীদের প্রতি যুল্‌ম পীড়ন চালায় অতঃপর তাওবাহ করে না, তাদের জন্য আছে জাহান্নামের শাস্তি, আর আছে আগুনে দগ্ধ হওয়ার যন্ত্রণা।	إِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ عَذَابُ الْحَرِيْقِ ط (١٠)
১১. যারা ঈমান আনে আর সৎকাজ করে তাদের জন্য আছে জান্নাত, যার পাদদেশ দিয়ে বয়ে চলেছে নির্ঝরিণী, এটা বিরাট সাফল্য।	إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ ط ۵ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ط (١١)
১২. তোমার প্রতিপালকের পাকড়াও অবশ্যই বড় কঠিন।	إِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ط (١٢)
১৩. তিনিই প্রথমবার সৃষ্টি করেন অতঃপর সৃষ্টির আবর্তন ঘটান।	إِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ج (١٣)
১৪. তিনি ক্ষমাশীল, প্রেমময়,	وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ لا (١٤)
১৫. 'আরশের অধিপতি, মহা সম্মানিত।	ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ لا (١٥)
১৬. যা করতে চান তাই করেন।	فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ط (١٦)
১৭. তোমার কাছে কি সৈন্য বাহিনীর খবর পৌঁছেছে?	هَلْ أَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ لا (١٧)
১৮. ফেরাউন ও সামূদের? (আল্লাহ্‌র ক্ষমতার বিরুদ্ধে তাদের লোক-লস্কর কোন কাজে আসেনি)।	فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ط (١٨)
১৯. তবুও কাফিররা সত্য প্রত্যাখ্যান করেই চলেছে।	بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ لا (١٩)
২০. আর আল্লাহ আড়াল থেকে ওদেরকে ঘিরে রেখেছেন।	وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ج (٢٠)
২১. (কাফিররা অমান্য করলেও এ কুরআনের কোনই ক্ষতি হবে না) বস্তুতঃ এটা সম্মানিত কুরআন,	بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ لا (٢١)
২২. সুরক্ষিত ফলকে লিপিবদ্ধ।	فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ع (٢٢)

৮৬. সূরাহ আত্-ত্বরিক্ব

سُوْرَةُ الطَّارِقِ

আয়াতঃ ১৭, রুকূ‘ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. শপথ আসমানের আর যা রাতে আসে তার,

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ لا (١)

২. তুমি কি জান যা রাতে আসে তা কী?

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا الطَّارِقُ لا (٢)

৩. উজ্জ্বল নক্ষত্র।

النَّجْمُ الثَّاقِبُ لا (٣)

৪. প্রত্যেক আত্মার সাথে একজন সংরক্ষক আছে।

إِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ط (٤)

৫. অতঃপর মানুষ চিন্তা করে দেখুক কোন্ জিনিস থেকে তাকে সৃষ্টি করা হয়েছে।

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ط (٥)

৬. তাকে সৃষ্টি করা হয়েছে সবেগে বের হয়ে আসা পানি থেকে।

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ لا (٦)

৭. যা বের হয় শিরদাঁড়া ও পাঁজরের মাঝখান থেকে।

يَّخْرُجُ مِنْ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ط (٧)

৮. তিনি মানুষকে আবার (জীবনে) ফিরিয়ে আনতে অবশ্যই সক্ষম।

إِنَّهُ عَلٰى رَجْعِهِ لَقَادِرٌ ط (٨)

৯. যেদিন (কাজকর্ম আকীদা বিশ্বাস ও নিয়্যাত সম্পর্কিত) গোপন বিষয়াদি যাচাই পরখ করা হবে।

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ لا (٩)

১০. সেদিন মানুষের না থাকবে নিজের কোন সামর্থ্য, আর না থাকবে কোন সাহায্যকারী।

فَمَا لَهُ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ط (١٠)

১১. ঘুরে ঘুরে আসা বৃষ্টিবাহী আকাশের শপথ,

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ لا (١١)

১২. এবং গাছপালার চারা গজানোর সময় বক্ষ দীর্ণকারী যমীনের শপথ, (বৃষ্টিপাতের মাধ্যমে বৃক্ষলতার উৎপাদন যেমন অকাট্য সত্য, তেমনি কুরআন যা ঘোষণা করে তাও অকাট্য সত্য)

وَالْأَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ لا (١٢)

১৩. কুরআন (সত্য-মিথ্যার পার্থক্যকারী) চূড়ান্ত সিদ্ধান্তকারী বাণী,

إِنَّهُ لَقَوْلٌ فَصْلٌ لا (١٣)

১৪. এবং তা কোন হাসি-ঠাট্টামূলক কথা নয়।

وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ط (١٤)

১৫. এবং তারা (সত্যের বিরুদ্ধে) ষড়যন্ত্র করছে,

إِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا لا (١٥)

وَّأَكِيْدُ كَيْدًا ﺻﻠﮯ (١٦)

১৬. আর আমিও (তাদের অন্যায় ধ্বংসাত্মক ষড়যন্ত্র ভণ্ডুল করার) কৌশল করছি।

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ أَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ع (١٧)

১৭. কাজেই (এই ষড়যন্ত্রকারী) কাফিরদেরকে অবকাশ দাও, তাদেরকে কিছু সময়ের জন্য অবকাশ দাও।

سُوْرَةُ الْأَعْلٰى

৮৭. সূরাহ আল-আ'লা

আয়াতঃ ১৯, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْأَعْلَى لا (١)

১. তোমার মহান প্রতিপালকের নামের পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা কর।

الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ص لا (٢)

২. যিনি সৃষ্টি করেছেন অতঃপর করেছেন (দেহের প্রতিটি অঙ্গকে) সামঞ্জস্যপূর্ণ।

وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ص لا (٣)

৩. যিনি সকল বস্তুকে পরিমাণ মত সৃষ্টি করেছেন, অতঃপর (জীবনে চলার) পথনির্দেশ করেছেন।

وَالَّذِيْٓ أَخْرَجَ الْمَرْعٰى ص لا (٤)

৪. যিনি তৃণ ইত্যাদি বের করেছেন।

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً أَحْوٰى ط (٥)

৫. অতঃপর তাকে কাল আবর্জনায় পরিণত করেছেন।

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى لا (٦)

৬. আমি তোমাকে পড়িয়ে দেব, যার ফলে তুমি ভুলে যাবে না।

إِلَّا مَا شَآءَ اللهُ ط إِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى ط (٧)

৭. তবে ওটা বাদে যেটা আল্লাহ (রহিত করার) ইচ্ছে করবেন। তিনি জানেন যা প্রকাশ্য আর যা গোপন।

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى ﺻﻠﮯ (٨)

৮. আমি তোমার জন্য সহজপথ (অনুসরণ করা) আরো সহজ করে দেব।

فَذَكِّرْ إِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى ط (٩)

৯. কাজেই তুমি উপদেশ দাও যদি উপদেশ উপকার দেয়।

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى لا (١٠)

১০. যে ভয় করে সে উপদেশ গ্রহণ করবে।

وَيَتَجَنَّبُهَا الْأَشْقَى لا (١١)

১১. আর তা উপেক্ষা করবে যে চরম হতভাগা।

اَلَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى ج (١٢)

১২. যে ভয়াবহ আগুনে প্রবেশ করবে।

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰي ط (١٣)

১৩. অতঃপর সেখানে সে না (মরার মত) মরবে, আর না (বাঁচার মত) বাঁচবে।

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى لا (١٤)

১৪. সাফল্য লাভ করবে সে যে নিজেকে পরিশুদ্ধ করে,

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى ط (١٥)

১৫. আর তার প্রতিপালকের নাম স্মরণ করে ও নামায কায়েম করে।

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْـحَيٰوةَ الدُّنْيَا لا (١٦)

১৬. কিন্তু তোমরা তো দুনিয়ার জীবনকেই প্রাধান্য দাও,

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّأَبْقٰى ط (١٧)

১৭. অথচ আখিরাতই অধিক উৎকৃষ্ট ও স্থায়ী।

إِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْأُوْلٰى لا (١٨)

১৮. আগের কিতাবগুলোতে এ কথা (লিপিবদ্ধ) আছে,

صُحُفِ إِبْرَاهِيْمَ وَمُوْسٰى ع (١٩)

১৯. ইব্রাহীম ও মূসার কিতাবে।

৮৮. সূরাহ আল-গাশিয়াহ

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ

আয়াতঃ ২৬, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

هَلْ أَتٰكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ ط (١)

১. (সব কিছুকে) আচ্ছন্নকারী কিয়ামাতের খবর তোমার কাছে পৌঁছেছে কি?

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ لا (٢)

২. কতক মুখ সেদিন নীচু হবে

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ لا (٣)

৩. হবে কর্মক্লান্ত, শ্রান্ত।

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً لا (٤)

৪. তারা জ্বলন্ত আগুনে প্রবেশ করবে।

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ ط (٥)

৫. টগবগে ফুটন্ত ঝর্ণা থেকে তাদেরকে পান করানো হবে।

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ إِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ لا (٦)

৬. কাঁটাযুক্ত শুকনো ঘাস ছাড়া তাদের জন্য আর কোন খাদ্য থাকবে না।

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ ط (٧)

৭. যা পুষ্টিসাধন করবে না, আর ক্ষুধাও মিটাবে না।

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ ۙ (٨)

৮. কতক মুখ সেদিন হবে আনন্দে উজ্জ্বল।

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۙ (٩)

৯. নিজেদের চেষ্টা-সাধনার জন্য সন্তুষ্ট।

فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۙ (١٠)

১০. উচ্চ মর্যাদাপূর্ণ জান্নাতে,

لَّا تَسْمَعُ فِيْهَا لَاغِيَةً ط (١١)

১১. সেখানে শুনবে না কোন অনর্থক কথাবার্তা,

فِيْهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۘ (١٢)

১২. সেখানে থাকবে প্রবহমান ঝর্ণা,

فِيْهَا سُرُرٌ مَّرْفُوْعَةٌ ۙ (١٣)

১৩. সেখানে থাকবে উন্নত মর্যাদাসম্পন্ন আসন,

وَّأَكْوَابٌ مَّوْضُوْعَةٌ ۙ (١٤)

১৪. পানপাত্র থাকবে প্রস্তুত।

وَّنَمَارِقُ مَصْفُوْفَةٌ ۙ (١٥)

১৫. সারি সারি বালিশ,

وَّزَرَابِيُّ مَبْثُوْثَةٌ ط (١٦)

১৬. আর থাকবে মখমল- বিছানো।

أَفَلَا يَنْظُرُوْنَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ وقفة (١٧)

১৭. (ক্বিয়ামত হবে একথা যারা অমান্য করে) তারা কি উটের প্রতি লক্ষ্য করে না, (সৃষ্টি কুশলতায় ভরপুর ক'রে) কী ভাবে তা সৃষ্টি করা হয়েছে?

وَإِلَى السَّمَآءِ كَيْفَ رُفِعَتْ وقفة (١٨)

১৮. এবং আসমানের দিকে, কীভাবে তা ঊর্ধ্বে উঠানো হয়েছে?

وَإِلَى الْـجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ وقفة (١٩)

১৯. এবং পর্বতমালার দিকে, কী রকম দৃঢ়ভাবে তাকে প্রতিষ্ঠিত করা হয়েছে?

وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ (٢٠)

২০. আর যমীনের দিকে, কীভাবে তাকে বিছিয়ে দেয়া হয়েছে?

فَذَكِّرْ قف إِنَّمَآ أَنْتَ مُذَكِّرٌ ط (٢١)

২১. কাজেই তুমি তাদেরকে উপদেশ দাও, তুমি একজন উপদেশদাতা মাত্র।

لَسْتَ عَلَيْهِمْ بِمُصَيْطِرٍ ۙ (٢٢)

২২. তুমি তাদের ওপর জবরদস্তিকারী নও।

إِلَّا مَنْ تَوَلّٰى وَكَفَرَ ۙ (٢٣)

২৩. তবে কেউ কুফুরি করলে এবং মুখ ফিরিয়ে নিলে

فَيُعَذِّبُهُ اللّٰهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ط (٢٤)

২৪. আল্লাহ তাকে মহাশাস্তিতে শাস্তি দেবেন।

إِنَّ إِلَيْنَآ إِيَابَهُمْ ۙ (٢٥)

২৫. তাদেরকে আমার কাছেই ফিরে আসতে হবে।

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُمْ ع (٢٦)

২৬. অতঃপর তাদের হিসাব নেয়া তো আমারই কাজ।

৮৯. সূরাহ আল-ফাজ্‌র

سُوْرَةُ الْفَجْرِ

আয়াতঃ ৩০, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. ঊষার শপথ,

وَالْفَجْرِ لا (١)

২. (জিলহাজ্জ মাসের প্রথম) দশ রাতের শপথ,

وَلَيَالٍ عَشْرٍ لا (٢)

৩. জোড় ও বেজোড়ের শপথ,

وَّالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ لا (٣)

৪. আর রাতের শপথ যখন তা গত হতে থাকে,

وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ج (٤)

৫. অবশ্যই এতে জ্ঞানী ব্যক্তির জন্য শপথ আছে।

هَلْ فِيْ ذٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِيْ حِجْرٍ ط (٥)

৬. তুমি কি দেখনি তোমার প্রতিপালক 'আদ জাতির সঙ্গে কী ব্যবহার করেছিলেন?

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ص لا (٦)

৭. উচ্চ স্তম্ভ নির্মাণকারী ইরাম গোত্রের প্রতি?

إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ص لا (٧)

৮. যার সমতুল্য অন্য কোন দেশে নির্মিত হয়নি।

الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ص لا (٨)

৯. এবং সামূদের প্রতি যারা উপত্যকায় পাথর কেটে গৃহ নির্মাণ করেছিল?

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ص لا (٩)

১০. এবং (সেনা ছাউনী স্থাপনের কাজে ব্যবহৃত) কীলক-এর অধিপতি ফেরাউনের প্রতি?

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْأَوْتَادِ ص لا (١٠)

১১. যারা দেশে সীমালঙ্ঘনমূলক আচরণ করেছিল,

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ص لا (١١)

১২. আর সেখানে বহু বিপর্যয় সৃষ্টি করেছিল।

فَأَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ص لا (١٢)

১৩. অতঃপর তোমার প্রতিপালক তাদের উপর শাস্তির চাবুক হানলেন

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ج لا (١٣)

১৪. তোমার প্রতিপালক অবশ্যই সতর্ক দৃষ্টি রাখছেন (যেমন ঘাঁটিতে শত্রুর প্রতি দৃষ্টি রাখা হয়)।

إِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ط (١٤)

১৫. মানুষ এমন যে, তার প্রতিপালক যখন তাকে পরীক্ষা করেন সম্মান ও অনুগ্রহ দান ক'রে, তখন

فَأَمَّا الْإِنْسَانُ إِذَا مَا ابْتَلٰهُ رَبُّهٗ فَأَكْرَمَهٗ

وَنَعَّمَهٗ ۙ۬ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ أَكْرَمَنِ ؕ (١٥)

সে বলে, 'আমার রব আমাকে সম্মানিত করেছেন।'

وَأَمَّآ إِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ۬ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ أَهَانَنِ ج (١٦)

১৬. আর যখন তিনি তাকে পরীক্ষা করেন তার রিয্‌ক সঙ্কুচিত ক'রে, তখন সে বলে, 'আমার রব আমাকে লাঞ্ছিত করেছেন।'

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۙ (١٧)

১৭. না (রিয্‌ক) কক্ষনো (মান-সম্মানের মানদণ্ড) নয়, বরং তোমরা ইয়াতীমের প্রতি সম্মানজনক আচরণ কর না,

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۙ (١٨)

১৮. আর তোমরা ইয়াতীম মিসকিনকে খাদ্য দেয়ার জন্য পরস্পরকে উৎসাহিত কর না,

وَتَأْكُلُوْنَ التُّرَاثَ أَكْلًا لَّمًّا ۙ (١٩)

১৯. আর তোমরা উত্তরাধিকারীদের সব সম্পদ খেয়ে ফেল।

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ؕ (٢٠)

২০. আর তোমরা ধনসম্পদকে অতিরিক্ত ভালবাস।

كَلَّآ إِذَا دُكَّتِ الْأَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۙ (٢١)

২১. এটা মোটেই ঠিক নয়, যখন পৃথিবীকে চূর্ণ বিচূর্ণ করে বালি বানিয়ে দেয়া হবে,

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ج (٢٢)

২২. আর যখন তোমার প্রতিপালক আসবেন আর ফেরেশতারা আসবে সারিবদ্ধ হয়ে,

وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۭ بِجَهَنَّمَ ۙ۬ يَوْمَئِذٍ يَّتَذَكَّرُ الْإِنْسَانُ وَأَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ؕ (٢٣)

২৩. আর জাহান্নামকে সেদিন (সামনাসামনি) আনা হবে। সেদিন মানুষ উপলব্ধি করবে, কিন্তু তখন এ উপলব্ধি তার কী কাজে আসবে?

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ج (٢٤)

২৪. সে বলবে, 'হায়! আমার (এখনকার) জীবনের জন্য যদি আমি (সৎকর্ম) আগে পাঠাতাম!

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ أَحَدٌ ۙ (٢٥)

২৫. অতঃপর সেদিন তাঁর শাস্তির মত শাস্তি কেউ দিতে পারবে না

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ أَحَدٌ ؕ (٢٦)

২৬. এবং তাঁর বাঁধনের মত কেউ বাঁধতে পারবে না।

يٰٓأَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ق ۙ (٢٧)

২৭. (অপর দিকে নেক্‌কার লোককে বলা হবে) হে প্রশান্ত আত্মা!

ارْجِعِيْٓ إِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ج (٢٨)

২৮. তোমার রব-এর দিকে ফিরে এসো সন্তুষ্ট হয়ে এবং (তোমার রব-এর) সন্তুষ্টির পাত্র হয়ে।

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبَادِيْ لا (٢٩)	২৯. অতঃপর আমার (নেক) বান্দাহদের মধ্যে শামিল হও
وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ع (٣٠)	৩০. আর আমার জান্নাতে প্রবেশ কর।

৯০. সূরাহ আল-বালাদ

سُوْرَةُ الْبَلَدِ

আয়াতঃ ২০, রুকূ'ঃ ১

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ	(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।
لَآ أُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ لا (١)	১. (কাফিররা বলছে দুনিয়ার জীবনই সবকিছু) না, আমি এই (মক্কা) নগরের শপথ করছি (যে নগরে সকলেই নিরাপদ),
وَأَنْتَ حِلٌّ بِهٰذَا الْبَلَدِ لا (٢)	২. আর তুমি এই নগরের হালালকারী।
وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ لا (٣)	৩. শপথ জন্মদাতা (আদম)-এর আর যা সে জন্ম দিয়েছে (সেই সমস্ত মানুষের),
لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ط (٤)	৪. আমি মানুষকে সৃষ্টি করেছি অত্যন্ত কষ্ট ও শ্রমের মাঝে, (দুনিয়ার প্রত্যেকটি মানুষ কোন না কোন কষ্টের মধ্যে পতিত আছে)।
أَيَحْسَبُ أَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ أَحَدٌ م (٥)	৫. সে কি মনে করে যে তার উপর কেউ ক্ষমতাবান নেই?
يَقُوْلُ أَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ط (٦)	৬. সে (গর্বের সঙ্গে) বলে যে, আমি প্রচুর ধন-সম্পদ উড়িয়েছি।
أَيَحْسَبُ أَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ أَحَدٌ ط (٧)	৭. সে কি মনে করে যে তাকে কেউ দেখেনি?
أَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ لا (٨)	৮. আমি কি তাকে দু'টো চোখ দিইনি?
وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ لا (٩)	৯. আর একটা জিহ্বা আর দু'টো ঠোঁট?
وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ج (١٠)	১০. আর আমি তাকে (পাপ ও পুণ্যের) দু'টো পথ দেখিয়েছি।
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ صلے ز (١١)	১১. (মানুষকে এত গুণবৈশিষ্ট্য ও মেধা দেয়া সত্ত্বেও) সে (ধর্মের) দুর্গম গিরি পথে প্রবেশ করল না।

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا الْعَقَبَةُ ط (١٢)

১২. তুমি কি জান দুর্গম গিরিপথ কী?

فَكُّ رَقَبَةٍ لا (١٣)

১৩. (তা হচ্ছে) দাসমুক্তি।

أَوْ إِطْعَامٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ لا (١٤)

১৪. অথবা দুর্ভিক্ষের দিনে খাদ্য দান

يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ لا (١٥)

১৫. নিকটাত্মীয় ইয়াতীমকে,

أَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ط (١٦)

১৬. অথবা দারিদ্র-ক্লিষ্ট মিসকীনকে।

ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ط (١٧)

১৭. তদুপরি সে মু'মিনদের মধ্যে শামিল হয় আর পরস্পরকে ধৈর্য ধারণের ও দয়া প্রদর্শনের উপদেশ দেয়।

أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ط (١٨)

১৮. তারাই ডানপন্থী (সৌভাগ্যবান লোক)।

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ط (١٩)

১৯. আর যারা আমার আয়াতকে অস্বীকার করে তারাই বামপন্থী (হতভাগা)।

عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ع (٢٠)

২০. তাদেরকে আচ্ছন্ন করবে অবরুদ্ধকারী আগুন।

৯১. সূরাহ আশ্-শামস্

سُوْرَةُ الشَّمْسِ

আয়াতঃ ১৫, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ص لا (١)

১. শপথ সূর্যের ও তার (উজ্জ্বল) কিরণের,

وَالْقَمَرِ إِذَا تَلٰهَا ص لا (٢)

২. শপথ চাঁদের যখন তা সূর্যের পিছনে আসে,

১৩। আবূ হুরাইরাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, কেউ কোন মুসলিম ক্রীতদাস মুক্ত করলে আল্লাহ সেই ক্রীতদাসের প্রত্যেক অঙ্গের বিনিময়ে তার এক একটি অঙ্গ (জাহান্নামের) আগুন হতে মুক্ত করবেন। সাঈদ ইবনু মারজানা (রহঃ) বলেন, এ হাদীসটি আমি আলী ইবনু হুসাইনের খিদমতে পেশ করলাম। তখন 'আলী ইবনু হুসাইন (রহঃ) তাঁর এক ক্রীতদাসের কাছে উঠে গেলেন যার বিনিময়ে 'আবদুল্লাহ ইবনু জা'ফার (রাঃ) তাকে দশ হাজার দিরহাম কিংবা এক হাজার দীনার দিতে চেয়েছিলেন এবং তিনি তাকে মুক্ত করে দিলেন। −বুখারী ২৫১৭ [৬৭১৫; মুসলিম ১৫০৯, তিরমিযী ১৫৪১, আহমাদ ৯১৫৪, ৯১৫৬]

وَالنَّهَارِ إِذَا جَلّٰهَا صلے (٣)

৩. শপথ দিনের যখন তা সূর্যকে উদ্ভাসিত করে,

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰهَا صلے (٤)

৪. শপথ রাতের যখন তা সূর্যকে ঢেকে নেয়,

وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا صلے (٥)

৫. শপথ আসমানের আর সেটা যিনি বানিয়েছেন তাঁর,

وَالْأَرْضِ وَمَا طَحٰهَا صلے (٦)

৬. শপথ যমীনের আর সেটা যিনি বিছিয়েছেন তাঁর,

وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰىهَا صلے (٧)

৭. শপথ প্রাণের আর তাঁর যিনি তা সামঞ্জস্যপূর্ণ করেছেন,

فَأَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰىهَا صلے (٨)

৮. অতঃপর তাকে তার অসৎকর্ম ও সৎকর্মের জ্ঞান দান করেছেন।

قَدْ أَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا صلے (٩)

৯. সেই সফলকাম হয়েছে যে নিজ আত্মাকে পবিত্র করেছে।

وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ط (١٠)

১০. সেই ব্যর্থ হয়েছে যে নিজ আত্মাকে কলূষিত করেছে।

كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰىهَآ صلے (١١)

১১. সামূদ জাতি সীমালঙ্ঘন ক'রে (তাদের নবীকে মেনে নিতে) অস্বীকার করেছিল।

إِذِ انْبَعَثَ أَشْقٰهَا صلے (١٢)

১২. যখন তাদের সবচেয়ে হতভাগা লোকটি মাথা চাড়া দিয়ে উঠল।

فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللهِ نَاقَةَ اللهِ وَسُقْيٰهَا ط (١٣)

১৩. তখন আল্লাহর রাসূল (সালিহ) তাদেরকে বলল, 'এটা আল্লাহর উটনি, একে পানি পান করতে বাধা দিও না।

فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا ٥ صلے فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰىهَا صلے (١٤)

১৪. কিন্তু তারা রসূলের কথা অগ্রাহ্য করল এবং উটনির পায়ের রগ কেটে দিল। শেষ পর্যন্ত তাদের পাপের কারণে তাদের প্রতিপালক তাদেরকে ধ্বংস করে মাটিতে মিশিয়ে দিলেন।

وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ع (١٥)

১৫. আর তিনি (তাঁর এ কাজের) কোন খারাপ পরিণতির ভয় মোটেই পোষণ করেন না।

১১-১৫। 'আবদুল্লাহ্ ইব্নু যাম'আহ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি নাবী (ﷺ) -কে খুতবাহ দিতে শুনেছেন, খুতবায় তিনি কওমে সামূদের প্রতি প্রেরিত উষ্ট্রী ও তার পা কাটার কথা উল্লেখ করলেন। তারপর রসূল (ﷺ) ﴿إِذِ انْبَعَثَ أَشْقَاهَا﴾ -এর ব্যাখ্যায় বললেন, ঐ উষ্ট্রীটিকে হত্যা করার জন্য এক হতভাগ্য শক্তিশালী ব্যক্তি তৎপর হয়ে উঠে যে সে সমাজের মধ্যে আবূ যাম'আর মত প্রভাবশালী ও অত্যন্ত শক্তিধর ছিল...... শেষ পর্যন্ত। -বুখারী ৪৯৪২ [৩৩৭৭; মুসলিম ২৮৫৫, তিরমিযী ৩৩৪৩, ইবনু মাজাহ ২৯৮৩, আহমাদ ১৫৭৮৮, দারিমী ২২২০]

৯২. সূরাহ আল-লায়ল

سُوْرَةُ اللَّيْلِ

আয়াতঃ ২১, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى ﴿١﴾

১. শপথ রাতের যখন তা (আলোকে) ঢেকে দেয়,

وَالنَّهَارِ إِذَا تَجَلّٰى ﴿٢﴾

২. শপথ দিনের যখন তা উদ্ভাসিত হয়ে উঠে।

وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى ﴿٣﴾

৩. আর শপথ তাঁর যিনি সৃষ্টি করেছেন পুরুষ ও নারী,

إِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ﴿٤﴾

৪. তোমাদের চেষ্টা সাধনা অবশ্যই বিভিন্নমুখী।

فَأَمَّا مَنْ أَعْطٰى وَاتَّقٰى ﴿٥﴾

৫. অতএব যে ব্যক্তি (আল্লাহ্‌র সন্তুষ্টির জন্য) দান করে ও (আল্লাহকে) ভয় করে,

وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ﴿٦﴾

৬. এবং উত্তম বিষয়কে সত্য মনে করে,

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ﴿٧﴾

৭. আমি তার জন্য সহজ পথে চলা সহজ করে দেব।

وَأَمَّا مَنْ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ﴿٨﴾

৮. আর যে ব্যক্তি কৃপণতা করে আর (আল্লাহ্‌র প্রতি) বেপরোয়া হয়,

---

৩। ইব্‌রাহীম (রহ.) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু মাস'উদ (رضي الله عنه)-এর কতক সঙ্গী আবুদ্ দারদা (رضي الله عنه)-এর কাছে আসলেন। তিনিও তাদেরকে তালাশ করে পেয়ে গেলেন। তিনি তাদেরকে জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের মধ্যে 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু মাস'উদ (رضي الله عنه)-এর কিরাআত অনুযায়ী কে কুরআন পাঠ করতে পারে। 'আলক্বামাহ (রহ.) বললেন, আমরা সকলেই। তিনি পুনরায় জিজ্ঞেস করলেন, তোমাদের মধ্যে সবচেয়ে ভাল হাফিয কে? সকলেই 'আলক্বামাহ্‌র প্রতি ইশারা করলে তিনি তাকে জিজ্ঞেস করলেন, আপনি 'আবদুল্লাহ্ ইব্‌নু মাস'উদকে ﴿وَاللَّيْلِ إِذَا يَغْشٰى﴾' কীভাবে পড়তে শুনেছেন? 'আলক্বামাহ (রহ.) বললেন, আমি তাকে ﴿الذَّكَرِ وَالْأُنْثٰى﴾ পড়তে শুনেছি। এ কথা শুনে আবুদ্ দারদা (رضي الله عنه) বললেন, তোমরা সাক্ষী থাক, আমিও নাবী (ﷺ) -কে এভাবেই পড়তে শুনেছি। অথচ এসব (সিরিয়াবাসী) লোকেরা চাচ্ছে, আমি যেন আয়াতটি ﴿وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْأُنْثٰى﴾ পড়ি। আল্লাহ্‌র কসম! আমি তাদের কথা মানবো না। –বুখারী ৪৯৪৪ [৩২৮৭; মুসলিম ৮২৪, তিরমিযী ২৯৩৯, আহমাদ ২৪০৫৯, ২৬৯৮৭, ২৬৯৯০]

৫। 'আলী (رضي الله عنه) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, বাকীউল গারকাদ নামক স্থানে এক জানাযায় আমরা নাবী (ﷺ) -এর সঙ্গে ছিলাম। সে সময় তিনি বলেছিলেন, তোমাদের মধ্যে এমন কোন ব্যক্তি নেই, যার স্থান জান্নাত বা জাহান্নামে নির্ধারিত হয়নি। এ কথা শুনে সকলেই বললেন, হে আল্লাহ্‌র রসূল! তাহলে কি আমরা ভাগ্যের উপর নির্ভর করে বসে থাকব? উত্তরে তিনি বললেন, তোমরা 'আমাল করতে থাক। কারণ, যাকে যে 'আমালের জন্য সৃষ্টি করা হয়েছে, তার জন্য সে 'আমাল সহজ করে দেয়া হয়েছে। এরপর তিনি পাঠ করেন, সুতরাং কেউ দান করলে, মুত্তাকী হলে এবং যা উত্তম তা গ্রহণ করলে, আমি তার জন্য সুগম করে দেব সহজ পথ এবং কেউ কার্পণ্য করলে ও নিজেকে স্বয়ংসম্পূর্ণ মনে করলে, আর যা উত্তম তা ত্যাগ করলে, তার জন্য আমি সহজ করে দেব কঠোর পরিণামের পথ। –বুখারী ৪৯৪৫ [১৩৬২; মুসলিম ২৬৪৭, তিরমিযী ২১৩৬, ৩৩৪৪; আবূ দাউদ ৪৬৯৪, ইব্‌নু মাজাহ ৭৮, আহমাদ ৬২২, ১০৭০]

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ۙ (٩)

৯. আর যা উত্তম তা অমান্য করে,

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ؕ (١٠)

১০. আমি তার জন্য কঠিন পথ (অর্থাৎ অন্যায়, অসত্য, হিংসা ও হানাহানির পথ) সহজ করে দিব।

وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗٓ إِذَا تَرَدّٰى ؕ (١١)

১১. যখন সে ধ্বংস হবে (অর্থাৎ মরবে) তখন তার (সঞ্চিত) ধন-সম্পদ কোনই কাজে আসবে না।

إِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ۖ (١٢)

১২. সঠিক পথ দেখানো অবশ্যই আমারই কাজ

وَإِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْأُوْلٰى (١٣)

১৩. আর পরকাল ও ইহকালের একমাত্র মালিক আমি।

فَأَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ۚ (١٤)

১৪. কাজেই আমি তোমাদেরকে দাউ দাউ ক'রে জ্বলা আগুন সম্পর্কে সতর্ক করে দিচ্ছি।

لَا يَصْلٰهَآ إِلَّا الْأَشْقَى ۙ (١٥)

১৫. চরম হতভাগা ছাড়া কেউ তাতে প্রবেশ করবে না।

الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ؕ (١٦)

১৬. যে অস্বীকার করে ও মুখ ফিরিয়ে নেয়

وَسَيُجَنَّبُهَا الْأَتْقَى ۙ (١٧)

১৭. তাথেকে দূরে রাখা হবে এমন ব্যক্তিকে যে আল্লাহকে খুব বেশি ভয় করে,

الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ۚ (١٨)

১৮. যে পবিত্রতা অর্জনের উদ্দেশে নিজের ধন-সম্পদ দান করে,

وَمَا لِأَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰٓى ۙ (١٩)

১৯. (সে দান করে) তার প্রতি কারো অনুগ্রহের প্রতিদান হিসেবে নয়,

إِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْأَعْلٰى ۚ (٢٠)

২০. একমাত্র তার মহান প্রতিপালকের চেহারা (সন্তোষ) লাভের আশায়।

وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ع (٢١)

২১. সে অবশ্যই অতি শীঘ্র (আল্লাহর নি'মাত পেয়ে) সন্তুষ্ট হয়ে যাবে।

৯৩. সূরাহ আয্-যুহা

سُوْرَةُ الضُّحٰى

আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالضُّحٰى ۙ (١)

১. সকালের উজ্জ্বল আলোর শপথ,

وَاللَّيْلِ إِذَا سَجٰى ۙ(٢)

২. রাতের শপথ যখন তা হয় শান্ত-নিঝুম,

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ؕ(٣)

৩. তোমার প্রতিপালক তোমাকে কক্ষনো পরিত্যাগ করেননি, আর তিনি অসন্তুষ্টও নন।

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْأُوْلٰى ؕ(٤)

৪. অবশ্যই পরবর্তী সময় পূর্ববর্তী সময়ের চেয়ে তোমার জন্য হবে অধিক উৎকৃষ্ট।

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ؕ(٥)

৫. শীঘ্রই তোমার প্রতিপালক তোমাকে (এত নি'মাত) দিবেন যার ফলে তুমি সন্তুষ্ট হয়ে যাবে।

أَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ص(٦)

৬. তিনি কি তোমাকে ইয়াতীম অবস্থায় পান নাই? অতঃপর তিনি আশ্রয় দিয়েছেন।

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ص(٧)

৭. তিনি তোমাকে পেয়েছিলেন পথের দিশা-হীন, অতঃপর দেখালেন সঠিক পথ।

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَأَغْنٰى ؕ(٨)

৮. তিনি তোমাকে পেলেন নিঃস্ব, অতঃপর করলেন অভাবমুক্ত।

فَأَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ؕ(٩)

৯. কাজেই তুমি ইয়াতীমের প্রতি কঠোরতা করবে না।

وَأَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ؕ(١٠)

১০. এবং ভিক্ষুককে ধমক দিবে না।

وَأَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ع(١١)

১১. আর তুমি তোমার রব-এর নি'মাতকে (তোমার কথা, কাজকর্ম ও আচরণের মাধ্যমে) প্রকাশ করতে থাক।

৯৪. সূরাহ আলাম নাশরাহ

سُوْرَةُ الشَّرْحِ

আয়াতঃ ৮, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

أَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ۙ(١)

১. (হে নবী! ওয়াহীর মাধ্যমে প্রকৃত জ্ঞান ও

৩। জুনদুব ইবনু সুফইয়ান (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, অসুস্থতার কারণে রসূল (ﷺ) দুই বা তিন রাত তাহাজ্জুদের জন্য উঠতে পারেননি। এ সময় এক মহিলা এসে বলল, হে মুহাম্মাদ (ﷺ)! আমার মনে হয়, তোমার শায়ত্বান তোমাকে ত্যাগ করেছে। দুই কিংবা তিনদিন যাবৎ তাকে আমি তোমার কাছে আসতে দেখতে পাচ্ছি না। তখন আল্লাহ্ তা'আলা অবতীর্ণ করলেন, শপথ পূর্বাহ্নের, "শপথ রজনীর যখন তা হয় নিঝুম, তোমার প্রতিপালক তোমাকে পরিত্যাগ করেননি এবং তোমার প্রতি বিরূপও হননি।" –বুখারী ৪৯৫০ [১১২৪; মুসলিম ১৭৯৭, আহমাদ ১৮৩১৯, ১৮৩২৯]

মানসিক শক্তি দিয়ে) আমি কি তোমার বক্ষদেশকে প্রসারিত করে দেইনি?

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ۙ (٢)

২. আর আমি তোমার হতে সরিয়ে দিয়েছি (সমাজের অনাচার, অশ্লীলতা ও পঙ্কিলতা দেখে তোমার অন্তরে জেগে উঠা দুঃখ, বেদনা, উদ্বেগ ও অস্থিরতার) ভার,

الَّذِيْٓ أَنْقَضَ ظَهْرَكَ ۙ (٣)

৩. যা তোমার কোমরকে ভেঙ্গে দিচ্ছিল।

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ؕ (٤)

৪. এবং আমি (মু'মিনদের যাবতীয় আবশ্যিক 'ইবাদাত আযান, ইক্বামাত, নামায, খুৎবাহ ইত্যাদির মাধ্যমে) তোমার স্মৃতিকে উচ্চ মর্যাদায় তুলে ধরেছি।

فَإِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ۙ (٥)

৫. কষ্টের সাথেই স্বস্তি আছে,

إِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ؕ (٦)

৬. নিঃসন্দেহে কষ্টের সাথেই স্বস্তি আছে।

فَإِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ۙ (٧)

৭. কাজেই তুমি যখনই অবসর পাবে, 'ইবাদাতের কঠোর শ্রমে লেগে যাবে,

وَإِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ع (٨)

৮. এবং তোমার রব-এর প্রতি গভীরভাবে মনোযোগ দিবে।

---

৯৫. সূরাহ আত্-তীন*

سُوْرَةُ التِّيْنِ

আয়াতঃ ৮, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ۙ (١)

১. শপথ তীন ও যায়তূন-এর (যা জন্মে সিরিয়া ও ফিলিস্তিন এলাকায় যে স্থান বহু পুণ্যময় নবী ও রসূলের স্মৃতিতে ধন্য)।

* বারা' (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আমি নাবী (ﷺ) -কে 'ইশার সলাতে সূরা ﴿وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ﴾ পড়তে শুনেছি। তাঁর চেয়ে সুন্দর স্বর কিংবা তাঁর চেয়ে সুন্দর কিরাআত আর কারো থেকে আমি শুনিনি। -বুখারী ৭৫৪৬ [৭৬৭; মুসলিম ৪৬৪, তিরমিযী ৩১০, নাসায়ী ১০০১, আবূ দাউদ ২১২১, ইবনু মাজাহ ৮৩৫, মালিক ১৭৬]

২. শপথ সিনাই পর্বতের (যা নবী মূসার স্মৃতি বিজড়িত),	وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ لا (٢)
৩. আর (ইবরাহীম ও ইসমাঈল কর্তৃক নির্মিত কা'বার) এই নিরাপদ নগরীর শপথ,	وَهٰذَا الْبَلَدِ الْأَمِيْنِ لا (٣)
৪. আমি মানুষকে সৃষ্টি করেছি অতি উত্তম আকার আকৃতি দিয়ে, (এবং জ্ঞান ও যোগ্যতা দিয়ে যার সুন্দরতম নমুনা হল নবী রসূলগণ)।	لَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ فِيْٓ أَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ز (٤)
৫. আবার উল্টোদিকে তাকে করেছি হীনদের হীনমত (যেমন আল্লাহ বিদ্রোহী কাফির, অত্যাচারী রাজা-বাদশা-শাসক, খুনী, পুতুল পূজারী ইত্যাদি)।	ثُمَّ رَدَدْنٰهُ أَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ لا (٥)
৬. কিন্তু তাদেরকে নয় যারা ঈমান আনে ও সৎ কাজ করে, তাদের জন্য তো আছে অফুরন্ত প্রতিদান।	إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ط (٦)
৭. (ভাল কাজের পুরস্কার দেয়া আর অন্যায় কাজের শাস্তি দেয়াই ইনসাফপূর্ণ কথা) কাজেই শেষ বিচারের দিনকে অস্বীকার করতে কিসে তোমাদেরকে উদ্বুদ্ধ করছে?	فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ط (٧)
৮. আল্লাহ কি বিচারকদের মধ্যে শ্রেষ্ঠতম (বিচারক) নন?	أَلَيْسَ اللهُ بِأَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ع (٨)

৯৬. সূরাহ আল-'আলাক্ব*

سُوْرَةُ الْعَلَقِ

আয়াতঃ ১৯, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

---

*নাবী (ﷺ) -এর সহধর্মিণী 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, ঘুমের অবস্থায় সত্য স্বপ্নের মাধ্যমে নাবী (ﷺ) -এর প্রতি ওয়াহী শুরু করা হয়েছিল। ঐ সময় তিনি যে স্বপ্ন দেখতেন, তা সকালের আলোর মতই সুস্পষ্ট হত। এরপর নির্জনতা তার কাছে প্রিয় হয়ে উঠল। তিনি হেরা গুহায় চলে যেতেন এবং পরিবার-পরিজনের কাছে আসার পূর্বে সেখানে লাগাতার কয়েকদিন পর্যন্ত তাহানণুছ করতেন। তাহাননুস মানে বিশেষ পদ্ধতিতে 'ইবাদাত করা। এ জন্য তিনি কিছু খাবার নিয়ে যেতেন। এরপর তিনি খাদীজাহ (رضي الله عنها)-এর কাছে ফিরে এসে আবার ওরকম কিছু কিছু খাবার নিয়ে যেতেন। শেষে হেরা গুহায় থাকা অবস্থায় হঠাৎ তার কাছে সত্যবাণী এসে পৌঁছল। ফেরেশতা তাঁর কাছে এসে বললেন, পড়ুন। রসূল (ﷺ) বললেন, আমি পড়তে পারি না। রসূল (ﷺ) বলেন, এরপর তিনি আমাকে ধরে খুব জোরে আলিঙ্গণ করলেন। এতে আমি প্রাণান্তকর কষ্ট অনুভব করলাম। তারপর তিনি আমাকে ছেড়ে দিয়ে বললেন, পড় ন। আমি বললাম, আমি তো পড়তে পারি না। রসূল (ﷺ) বলেন, এরপর তিনি আমাকে ধরে দ্বিতীয়বার খুব জোরে আলিঙ্গণ করলেন। এতেও আমি ভীষণ কষ্ট অনুভব করলাম। এরপর তিনি আমাকে ছেড়ে দিয়ে বললেন, পড় ন। আমি বললাম, আমি পড়তে পারি না। এরপর তিনি আমাকে ধরে তৃতীয়বার খুব জোরে আলিঙ্গণ করলেন। এবারও আমি খুব কষ্ট অনুভব করলাম। তারপর তিনি আমাকে ছেড়ে দিয়ে বললেন, পাঠ কর তোমার প্রতিপালকের নামে, যিনি সৃষ্টি করেছেন। সৃষ্টি করেছেন মানুষকে আলাক হতে। পাঠ কর, আর তোমার প্রতিপালক মহিমান্বিত। যিনি কলমের সাহায্যে শিক্ষা দিয়েছেন। শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে যা সে জানত না। এরপর রসূল (ﷺ) এ আয়াতগুলো নিয়ে বাড়ি ফিরলেন। এ সময় তাঁর কাঁধের গোশ্‌ত ভয়ে থরথর করে কাঁপছিল। খাদীজার কাছে পৌঁছেই তিনি বললেন, আমাকে বস্ত্রাবৃত কর, আমাকে বস্ত্রাবৃত কর। তখন সকলেই তাঁকে বস্ত্রাবৃত করে দিল। অবশেষে তার ভীতিভাব দূর হলে তিনি খাদীজাকে বললেন, খাদীজা আমার কী হল? আমি আমার নিজের সম্পর্কে আশংকাবোধ করছি। এরপর তিনি তাঁকে সব কথা খুলে বললেন। এ কথা শুনে খাদীজাহ (رضي الله عنها) বললেন, কখনো নয়। আপনি সুসংবাদ নিন। আল্লাহ্‌র শপথ, আল্লাহ্ কখনো আপনাকে লাঞ্ছিত করবেন না। আপনি আত্মীয়দের খোঁজ-খবর নেন, সত্য কথা বলেন, সহায়হীন লোকদের বোঝা লাঘব করে দেন, নিঃস্ব লোকদেরকে উপার্জন করে দেন, মেহমানদের আপ্যায়ন করেন এবং হক্বের পথে আসা বিপদাপদে পতিত লোকদেরকে সাহায্য করে থাকে। তারপর খাদীজাহ তাঁকে নিয়ে তাঁর চাচাত ভাই ওরাকা ইব্‌নু নাওফালের কাছে গেলেন। তিনি জাহিলী যুগে খৃস্ট ধর্ম গ্রহণ করেছিলেন। তিনি আরবী ভাষায় কিতাব লিখতেন। আর তিনি আল্লাহ্‌র ইচ্ছা মাফিক আরবী ভাষায় ইনজীল কিতাব অনুবাদ করে লিখতেন। তিনি খুব বৃদ্ধ ও অন্ধ হয়ে গিয়েছিলেন। খাদীজাহ (رضي الله عنها) তাঁকে বললেন, হে আমার চাচাত ভাই! আপনার ভাতিজা কী বলেন একটু শুনুন। তখন ওয়ারাকা বললেন, ভাতিজা, কী হয়েছে তোমার? নাবী (ﷺ) যা দেখেছিলেন, সব কিছুর ব্যাপারে তাকে জানালেন। সব কথা শুনে ওয়ারাকা বললেন, ইনিই সেই ফেরেশতা, যাকে মূসার কাছে পাঠানো হয়েছিল। আহ! সে সময় আমি যদি যুবক হতাম। আহ্! সে সময় আমি যদি জীবিত থাকতাম। তারপর তিনি একটি গুরুতর বিষয় উল্লেখ করলে রসূল (ﷺ) বললেন, সত্যিই তারা কি আমাকে বের করে দেবে? ওয়ারাকা বললেন, হ্যাঁ, তারা তোমাকে বের করে দেবে। তুমি যে দাওয়াত নিয়ে এসেছ, এ দাওয়াত যে-ই নিয়ে এসেছে তাকেই কষ্ট দেয়া হয়েছে। তোমার নবুয়তকালে আমি জীবিত থাকলে অবশ্যই আমি তোমাকে প্রবল ও সর্বতোভাবে সাহায্য করতাম। এরপর ওয়ারাকা অধিক দিন বাঁচেননি; বরং অল্পদিনের মধ্যেই তিনি মারা গেলেন। দীর্ঘ সময়ের জন্য ওয়াহী বন্ধ হয়ে গেল। এতে রসূল (ﷺ) খুবই চিন্তাযুক্ত হয়ে পড়লেন। -বুখারী ৪৫৯৩ [৩; মুসলিম ১৮৭৮, তিরমিযী ১৬৭০, ৩০৩১; নাসায়ী ৩১০১, আহমাদ ১৮১৬, ১৮৩৭; দারিমী ২৪২০]

اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ج (١)

১. পাঠ কর তোমার প্রতিপালকের নামে যিনি সৃষ্টি করেছেন,

خَلَقَ الْإِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ج (٢)

২. সৃষ্টি করেছেন মানুষকে জমাট-বাঁধা রক্তপিণ্ড হতে।

اِقْرَأْ وَرَبُّكَ الْأَكْرَمُ لا (٣)

৩. পাঠ কর, আর তোমার রব বড়ই অনুগ্রহশীল।

الَّذِيْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ لا (٤)

৪. যিনি শিক্ষা দিয়েছেন কলম দিয়ে,

عَلَّمَ الْإِنْسَانَ مَا لَمْ يَعْلَمْ ط (٥)

৫. শিক্ষা দিয়েছেন মানুষকে যা সে জানত না,

كَلَّآ إِنَّ الْإِنْسَانَ لَيَطْغٰى لا (٦)

৬. না (এমন আচরণ করা) মোটেই ঠিক নয়, মানুষ অবশ্যই সীমালঙ্ঘন করে,

أَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى ط (٧)

৭. কারণ, সে নিজেকে অভাবমুক্ত মনে করে,

إِنَّ إِلٰى رَبِّكَ الرُّجْعٰى ط (٨)

৮. নিঃসন্দেহে (সকলকে) ফিরে যেতে হবে তোমার প্রতিপালকের দিকে।

أَرَأَيْتَ الَّذِيْ يَنْهٰى لا (٩)

৯. তুমি কি তাকে (অর্থাৎ আবূ জাহলকে) দেখেছ যে নিষেধ করে,

عَبْدًا إِذَا صَلّٰى ط (١٠)

১০. এক বান্দাহকে [অর্থাৎ রসূলুল্লাহ (ﷺ)-কে] যখন সে নামায আদায় করতে থাকে?

أَرَأَيْتَ إِنْ كَانَ عَلَى الْهُدٰى لا (١١)

১১. তুমি কি ভেবে দেখেছ (যাকে নিষেধ করা হচ্ছে) সে যদি সৎ পথে থাকে,

أَوْ أَمَرَ بِالتَّقْوٰى ط (١٢)

১২. আর তাকওয়া অবলম্বনের নির্দেশ দেয় (তাহলে তার এ কাজগুলো কেমন মনে কর?)

أَرَأَيْتَ إِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ط (١٣)

১৩. তোমার কী ধারণা যদি সে (অর্থাৎ নিষেধকারী ব্যক্তি) সত্যকে অস্বীকার করে আর মুখ ফিরিয়ে নেয় (তাহলে তার এ কাজ কেমন মনে কর?)

أَلَمْ يَعْلَمْ بِأَنَّ اللهَ يَرٰى ط (١٤)

১৪. সে কি জানে না যে, আল্লাহ দেখেন?

كَلَّا لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ ۵لا لَنَسْفَعًا

১৫. না, (সে যা করতে চায়) তা কক্ষনো করতে পারবে না, সে যদি বিরত না হয় তাহলে আমি

১-৫। 'আয়িশাহ (رضي الله عنها) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -এর প্রতি সত্য স্বপ্নের মাধ্যমে ওয়াহীর শুরু হয়। এরপর তাঁর কাছে ফেরেশতা এসে বললেন, "পাঠ কর, তোমার প্রতিপালকের নামে , যিনি সৃষ্টি করেছেন, সৃষ্টি করেছেন মানুষকে আলাক হতে। পাঠ কর, আর তোমার প্রতিপালক মহা মহিমান্বিত।" –বুখারী ৪৯৫৬ [৩; মুসলিম ১৬১, তিরমিযী ৩৬৩২, আহমাদ ১৪৬১৫, ২৪৬৭৬]

بِالنَّاصِيَةِ لا (١٥)

অবশ্যই তার মাথার সামনের চুলগুচ্ছ ধরে হেঁচড়ে নিয়ে যাব–

نَاصِيَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ج (١٦)

১৬. মিথ্যাচারী পাপাচারী চুলগুচ্ছ

فَلْيَدْعُ نَادِيَهُ لا (١٧)

১৭. কাজেই সে তার সভাষদদের ডাকুক।

سَنَدْعُ الزَّبَانِيَةَ لا (١٨)

১৮. আমিও 'আযাবের ফেরেশতাদেরকে ডাকব,

كَلَّا ط لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ع السجدة (١٩)

১৯. না, তুমি কক্ষনো তার অনুসরণ করো না, তুমি সেজদা কর আর (আল্লাহ্‌র) নৈকট্য লাভ কর।[সেজদা]

سُوْرَةُ الْقَدْرِ

৯৭. সূরাহ আল-ক্বাদ্‌র

আয়াতঃ ৫, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِنَّآ أَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةِ الْقَدْرِ ج (١)

১. আমি কুরআনকে ক্বাদ্‌রের রাতে নাযিল করেছি,

وَمَآ أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ط (٢)

২. তুমি কি জান ক্বাদ্‌রের রাত কী?

لَيْلَةُ الْقَدْرِ لا خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ط (٣)

৩. ক্বাদ্‌রের রাত হাজার মাসের চেয়েও অধিক উত্তম,

تَنَزَّلُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ فِيْهَا بِإِذْنِ رَبِّهِمْ مِّنْ كُلِّ أَمْرٍ لا (٤)

৪. এ রাতে ফেরেশতা আর রূহ তাদের রব-এর অনুমতিক্রমে প্রত্যেক কাজে অবতীর্ণ হয়।

سَلٰمٌ قف هِيَ حَتّٰى مَطْلَعِ الْفَجْرِ ع (٥)

৫. (এ রাতে বিরাজ করে) শান্তি আর শান্তি– ফজর উদয় হওয়া পর্যন্ত।

১৫-১৬। ইব্‌নু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আবূ জাহ্‌ল বলেছিল, আমি যদি মুহাম্মাদকে কা'বার পাশে নামায আদায় করতে দেখি তাহলে অবশ্যই আমি তার ঘাড় পদদলিত করব। এ খবর নাবী (ﷺ) -এর কাছে পৌঁছার পর তিনি বললেন, সে যদি তা করে তাহলে অবশ্যই ফেরেশতা তাকে পাকড়াও করবে। –বুখারী ৪৯৫৮ [তিরমিযী ৩৩৪৮, আহমাদ ২২২৬, ৩৪৭৩]

১। 'আয়িশাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেন, তোমরা লাইলাতুল ক্বাদরকে রামযানের শেষ দশ দিনের বেজোড় রাতে তালাশ কর। –বুখারী ২০১৭ [২০২০; মুসলিম ১১৬৯, তিরমিযী ৭৯২, আহমাদ ২৩৭১৩, ২৩৭৭১]

৯৮.সূরাহ আল-বাইয়্যিনাহ*

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ

আয়াতঃ ৮, রুকূ'ঃ ১, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى تَأْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ۙ(١)

১. কিতাবধারীদের মধ্যে যারা কাফির ছিল তারা আর মুশরিকরা (তাদের ভ্রান্ত মত ও পথ হতে) সরে আসত না যতক্ষণ না তাদের কাছে আসত সুস্পষ্ট প্রমাণ।

رَسُوْلٌ مِّنَ اللهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ۙ(٢)

২. (অর্থাৎ) আল্লাহ্‌র নিকট হতে একজন রসূল, যে পাঠ করে পবিত্র গ্রন্থ।

فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ؕ(٣)

৩. যাতে আছে সঠিক বিধান।

وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ أُوْتُوا الْكِتٰبَ إِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ؕ(٤)

৪. যাদেরকে কিতাব দেয়া হয়েছিল তাদের মাঝে বিচ্ছিন্নতা দেখা দিয়েছিল তাদের কাছে সুস্পষ্ট প্রমাণ আসার পর।

وَمَآ أُمِرُوْآ إِلَّا لِيَعْبُدُوا اللهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۙ۰ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ؕ(٥)

৫. তাদেরকে এ ছাড়া অন্য কোন হুকুমই দেয়া হয়নি যে, তারা আল্লাহ্‌র 'ইবাদাত করবে খাঁটি মনে একনিষ্ঠভাবে তাঁর আনুগত্যের মাধ্যমে। আর তারা নামায প্রতিষ্ঠা করবে আর যাকাত দিবে। আর এটাই সঠিক সুদৃঢ় দ্বীন।

---

*আনাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) উবাই ইব্‌নু কা'ব (রাঃ)-কে বলেছিলেন, তোমাকে কুরআন পড়ে শোনানোর জন্য আল্লাহ্ তা'আলা আমাকে আদেশ করেছেন। উবাই ইব্‌নু কা'ব (রাঃ) বললেন, আল্লাহ্ তা'আলা কি আপনার কাছে আমার নাম উল্লেখ করেছেন? তিনি বললেন, হ্যাঁ, আল্লাহ্ তা'আলা তোমার নাম উল্লেখ করেছেন। এ কথা শুনে উবাই ইব্‌নু কা'ব (রাঃ) কাঁদতে শুরু করলেন। ক্বাতাদাহ (রহ.) বলেন, আমাকে জানানো হয়েছে যে, নাবী (ﷺ) তাঁকে ﴿لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا مِنْ أَهْلِ الْكِتَابِ﴾ পাঠ করে শুনিয়েছিলেন।
–বুখারী ৪৯৬০ [৩৮০৯; মুসলিম ৭৯৯, তিরমিযী ৩৭৯২, আহমাদ ১১৯১১, ১১৯৯৫]

৫। ত্বলহাহ ইব্‌নু 'উবাইদুল্লাহ্ (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, জনৈক নাজ্‌দবাসী আল্লাহর রসূল (ﷺ) -এর নিকট এলো। তার মাথার চুল ছিল এলোমেলো। আমরা তার কথার মৃদু আওয়ায শুনতে পাচ্ছিলাম, কিন্তু সে কী বলছিল, আমরা তা বুঝতে পারছিলাম না। এভাবে সে নিকটে এসে ইসলাম সম্পর্কে প্রশ্ন করতে লাগল। আল্লাহর রসূল (ﷺ) বললেনঃ 'দিন-রাতে পাঁচ ওয়াক্ত নামায'। সে বলল, 'আমার উপর এ ছাড়া আরো নামায আছে?' তিনি বললেনঃ 'না, তবে নফল আদায় করতে পার।' আল্লাহর রসূল (ﷺ) বললেনঃ 'আর রমাযানের সওম।' সে বলল, 'আমার উপর এছাড়া আরো সওম আছে?' তিনি বললেনঃ 'না, তবে নফল আদায় করতে পার।' বর্ণনাকারী বলেন, আল্লাহর রসূল (ﷺ) তার নিকট যাকাতের কথা বললেন। সে বলল, 'আমার ওপর এছাড়া আরো আছে?' তিনি বললেনঃ 'না; তবে নফল হিসেবে দিতে পার।' বর্ণনাকারী বলেন, 'সে ব্যক্তি এই বলে চলে গেলেন; 'আল্লাহ্‌র শপথ"

إِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ أَهْلِ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ط أُولٰٓئِكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ط(٦)

৬. কিতাবধারীদের মধ্যে যারা কুফুরী করে তারা আর মুশরিকরা জাহান্নামের আগুনে স্থায়ীভাবে থাকবে। এরাই সৃষ্টির অধম।

إِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لا أُولٰٓئِكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ط(٧)

৭. যারা ঈমান আনে আর সৎ কাজ করে তারা সৃষ্টির উত্তম।

جَزَآؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْأَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ أَبَدًا ط رَضِيَ اللهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ط ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ع(٨)

৮. তাদের প্রতিপালকের কাছে তাদের প্রতিদান আছে স্থায়ী জান্নাত, যার তলদেশ দিয়ে নদ-নদী প্রবাহিত, তাতে তারা চিরকাল স্থায়ীভাবে থাকবে। আল্লাহ তাদের প্রতি সন্তুষ্ট, আর তারাও তাঁর প্রতি সন্তুষ্ট। এ সব কিছু তার জন্য যে তার প্রতিপালককে ভয় করে।

সُوْرَةُ الزِّلْزَالِ

৯৯. সূরাহ আয্-যিলযাল

আয়াতঃ ৮, রুকূ'ঃ ১, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا لا(١)

১. পৃথিবীকে যখন তার প্রচণ্ড কম্পনে কাঁপিয়ে দেয়া হবে,

وَأَخْرَجَتِ الْأَرْضُ أَثْقَالَهَا لا(٢)

২. পৃথিবী তার (ভেতরের যাবতীয়) বোঝা বাইরে নিক্ষেপ করবে,

وَقَالَ الْإِنْسَانُ مَا لَهَا ج(٣)

৩. এবং মানুষ বলবে 'এর কী হয়েছে?'

يَوْمَئِذٍ تُحَدِّثُ أَخْبَارَهَا ط(٤)

৪. সে দিন পৃথিবী তার (নিজের উপর সংঘটিত) বৃত্তান্ত বর্ণনা করবে,

بِأَنَّ رَبَّكَ أَوْحٰى لَهَا ط(٥)

৫. কারণ তোমার প্রতিপালক তাকে আদেশ করবেন,

আমি এর চেয়ে অধিকও করব না এবং কমও করব না।' তখন আল্লাহর রসূল (ﷺ) বললেনঃ 'সে কৃতকার্য হবে যদি সত্য বলে থাকে।' –বুখারী ৪৬ [১৮৯১, ২৬৭৮, ৬৯৫৬; মুসলিম ১১, নাসায়ী ৪৫৮, ২০৯০, ৫০২৮; আবূ দাউদ ৩৯১, ৩৩৫২; আহমাদ ১৩৯৩, মালিক ৪২৫, দারিমী ১৫৭৮]

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ أَشْتَاتًا ۙ لِّيُرَوْا أَعْمَالَهُمْ ط (٦)

৬. সেদিন মানুষ বের হবে ভিন্ন ভিন্ন দলে যাতে তাদেরকে তাদের কৃতকর্ম দেখানো যায়,

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهُ ط (٧)

৭. অতএব কেউ অণু পরিমাণও সৎ কাজ করলে সে তা দেখবে,

وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهُ ع (٨)

৮. আর কেউ অণু পরিমাণও অসৎ কাজ করলে সেও তা দেখবে।

১০০. সূরাহ আল-'আদিয়াত

سُوْرَةُ الْعَادِيَاتِ

আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۙ (١)

১. শপথ সেই (ঘোড়া) গুলোর যারা ঊর্ধ্বশ্বাসে দৌড়ায়,

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۙ (٢)

২. অতঃপর (নিজের ক্ষুরের) ঘর্ষণে আগুন ছুটায়,

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۙ (٣)

৩. অতঃপর সকালে হঠাৎ আক্রমণ চালায়,

৭। আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) বলেছেন, তিন শ্রেণীর মানুষের ঘোড়া থাকে। এক শ্রেণীর মানুষের জন্য তা সওয়াব ও পুরস্কারের কারণ হয়, এক শ্রেণীর মানুষের জন্য তা (গুনাহ্ থেকে) আবরণস্বরূপ এবং এক শ্রেণীর মানুষের প্রতি তা হয় গুনাহ্‌র কারণ। যার জন্য তা সওয়াবের কারণ হয়, তারা সেসব লোক, যারা আল্লাহ্‌র পথে জিহাদের জন্য তা প্রস্তুত করে রাখে এবং কোন চারণ ক্ষেত্রে বা বাগানে লম্বা দড়ি দিয়ে তাকে বেঁধে রাখে। দড়ির আওতায় চারণ ক্ষেত্রে বা বাগানে সে যা কিছু খায় তা ঐ ব্যক্তির জন্য নেকী হিসাবে গণ্য হয়। যদি ঘোড়াটি দড়ি ছিঁড়ে ফেলে এবং নিজ স্থান পার হয়ে এক/দু' উঁচু স্থানে চলে যায়, তাহলে তার পদচিহ্ন ও গোবরের বিনিময়েও ঐ ব্যক্তি সওয়াব লাভ করবে। আর ঘোড়াটি যদি কোন নহরের কিনারায় গিয়ে নিজে নিজেই পানি পান করে নেয়–মালিকের সেখান থেকে পানি পান করানোর ইচ্ছা না থাকলেও– সে ব্যক্তি এর বিনিময়ে সওয়াবের অধিকারী হবে। এ ঘোড়া এ ব্যক্তির জন্য হল সওয়াবের কারণ। আরেক শ্রেণীর লোক যাদের জন্য এ ঘোড়া (গুনাহ্ হতে) আড়াল, তারা ঐ ব্যক্তি যারা মানুষের থেকে মুখাপেক্ষী না থাকার জন্য এবং মানুষের কাছে হাত পাতা থেকে বেঁচে থাকার জন্য তা পালন করে থাকে। কিন্তু তাতে আল্লাহ্‌র যে হক রয়েছে তা দিতে ভুলে যায় না। এ শ্রেণীর মানুষের জন্য এ ঘোড়া হচ্ছে পর্দা। আরেক শ্রেণীর ঘোড়ার মালিক যারা গর্ব দেখানোর মনোভাব ও দুশমনির উদ্দেশে ঘোড়া রাখে। এ ঘোড়া হচ্ছে গুনাহ্‌র কারণ। এরপর রসূলুল্লাহ্ (ﷺ) -কে গাধা সম্পর্কে জিজ্ঞেস করা হলে তিনি বললেন, একক ও ব্যাপক অর্থবোধক এ একটি মাত্র আয়াত ব্যতীত এ বিষয়ে আল্লাহ্ তা'আলা আমার প্রতি আর কোন আয়াত অবতীর্ণ করেননি। আয়াতটি এইঃ "কেউ অণু পরিমাণ সৎকর্ম করলে সে তা দেখবে এবং অণু পরিমাণ অসৎকর্ম করলে সে তাও দেখবে।" –বুখারী ৪৯৬২ [২৩৭১; মুসলিম ৯৮৭, তিরমিযী ১৬৩৬, নাসায়ী ৩৫৬৩, ৩৫৮২; ইবনু মাজাহ ২৭৮৮, আহমাদ ৭৫০৯, ৮৬৪৯; মালিক ৯৭৫]

فَأَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۙ(٤)

৪. আর সে সময় ধূলি উড়ায়,

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۙ(٥)

৫. অতঃপর (শত্রু) দলের অভ্যন্তরে ঢুকে পড়ে (এভাবে মানুষ নিজের শক্তি-সামর্থ্য ও আল্লাহ্‌র এক অতি বড় নি'মাত ঘোড়াকে অপরের সম্পদ লুণ্ঠন ও অন্যের প্রতি যুল্‌মের কাজে ব্যবহার করে),

إِنَّ الْإِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۚ(٦)

৬. বস্তুতঃ মানুষ তার রব-এর প্রতি বড়ই অকৃতজ্ঞ।

وَإِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۚ(٧)

৭. আর সে নিজেই (নিজের কাজ-কর্মের মাধ্যমে) এ বিষয়ের সাক্ষী।

وَإِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۗ(٨)

৮. আর ধন-সম্পদের প্রতি অবশ্যই সে খুবই আসক্ত।

أَفَلَا يَعْلَمُ إِذَا بُعْثِرَ مَا فِي الْقُبُوْرِ ۙ(٩)

৯. সে কি জানে না, কবরে যা আছে তা যখন উত্থিত হবে,

وَحُصِّلَ مَا فِي الصُّدُوْرِ ۙ(١٠)

১০. আর অন্তরে যা (কিছু লুকানো) আছে তা প্রকাশ করা হবে,

إِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۧ(١١)

১১. নিঃসন্দেহে তাদের প্রতিপালক সেদিন তাদের সম্পর্কে পুরোপুরি অবহিত থাকবেন।

---

১০১. সূরাহ আল-ক্বারি'আহ

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ

আয়াতঃ ১১, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

اَلْقَارِعَةُ ۙ(١)

১. মহা বিপদ

مَا الْقَارِعَةُ ۚ(٢)

২. কী সেই মহা বিপদ?

وَمَآ أَدْرٰكَ مَا الْقَارِعَةُ ۗ(٣)

৩. মহা বিপদ সম্পর্কে তুমি কী জান?

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۙ(٤)

৪. সে দিন মানুষ হবে বিক্ষিপ্ত পতঙ্গের মত

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۗ(٥)

৫. আর পর্বতগুলো হবে ধুনা রঙ্গিন পশমের মত।

فَأَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِينُهُ ۙ (٦)

৬. অতঃপর যার (সৎ কর্মের) পাল্লা ভারি হবে।

فَهُوَ فِيْ عِيشَةٍ رَّاضِيَةٍ ط (٧)

৭. সে সুখী জীবন যাপন করবে।

وَأَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِينُهُ ۙ (٨)

৮. আর যার (সৎকর্মের) পাল্লা হালকা হবে,

فَأُمُّهُ هَاوِيَةٌ ط (٩)

৯. (জাহান্নামের) অতলস্পর্শী গর্তই হবে তার বাসস্থান।

وَمَا أَدْرٰكَ مَا هِيَهْ ط (١٠)

১০. তুমি কি জান তা কী?

نَارٌ حَامِيَةٌ ع (١١)

১১. জ্বলন্ত আগুন।

১০২. সূরাহ আত্-তাকাসুর

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ

আয়াতঃ ৮, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

أَلْهٰكُمُ التَّكَاثُرُ ۙ (١)

১. অধিক (পার্থিব) সুখ সম্ভোগ লাভের মোহ তোমাদেরকে (অধিক গুরুত্বপূর্ণ বিষয় হতে) ভুলিয়ে রেখেছে।

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ط (٢)

২. এমনকি (এ অবস্থাতেই) তোমরা কবরে এসে পড়।

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ (٣)

৩. (তোমরা যে ভুল ধারণায় ডুবে আছো তা) মোটেই ঠিক নয়, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে,

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ط (٤)

৪. আবার বলি, মোটেই ঠিক নয়, শীঘ্রই তোমরা জানতে পারবে।

১-২। আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত। নাবী (সাঃ) বলেনঃ একদা এক ব্যক্তি পথ চলতে চলতে অত্যন্ত তৃষ্ণার্ত হলো। সে পথিমধ্যে একটা কূপ দেখতে পেয়ে তাতে নেমে পড়ল এবং পানি পান করল। তারপর সে (কূপ থেকে) উঠে এলে হঠাৎ তার নজরে পড়ল একটা কুকুর (জিহ্বা বের করে) হাঁপাচ্ছে আর পিপাসার দরুণ ভিজা মাটি চেটে খাচ্ছে। লোকটি ভাবলো, এ কুকুরটার আমার মতই তৃষ্ণা পেয়েছে। তারপর সে কূপের মধ্যে নামল এবং নিজের চামড়ার মোজায় পানি ভর্তি করে এনে কুকুরটাকে পান করাল। আল্লাহ তার এ কাজ কবুল করলেন। এবং তাকে ক্ষমা করলেন। এ ঘটনা শুনে লোকেরা বলল, হে আল্লাহর রসূল! পশুদের ব্যাপারেও কি আমাদের জন্য প্রতিদান রয়েছে? তিনি বললেন, প্রতিটি জীবন্ত প্রাণের (সেবার) মধ্যেই পূণ রয়েছে। –মুসলিম ১০৪৯ [বুখারী ৬৪৩৬, আহমাদ ৩৪৯১, ২০৬০৭, ২০৬৯৭]

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ؕ (٥)

৫. কক্ষনো না, তোমরা যদি নিশ্চিত জ্ঞানের ভিত্তিতে জানতে! (তাহলে সাবধান হয়ে যেতে)

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۙ (٦)

৬. তোমরা অবশ্য অবশ্যই জাহান্নাম দেখতে পাবে,

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۙ (٧)

৭. আবার বলি, তোমরা তা অবশ্য অবশ্যই দিব্য দৃষ্টিতে দেখতে পাবে,

ثُمَّ لَتُسْأَلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ع (٨)

৮. তারপর তোমাদেরকে অবশ্য অবশ্যই (যা কিছু দেয়া হয়েছে এমন সব) নি'মাত সম্পর্কে সেদিন জিজ্ঞেস করা হবে।

১০৩. সূরাহ আল-'আসর

سُوْرَةُ الْعَصْرِ

আয়াতঃ ৩, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَالْعَصْرِ ۙ (١)

১. কালের শপথ

إِنَّ الْإِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۙ (٢)

২. মানুষ অবশ্যই ক্ষতির মধ্যে (ডুবে) আছে,

إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ۬ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ع (٣)

৩. কিন্তু তারা নয় যারা ঈমান আনে ও সৎকর্ম করে এবং পরস্পরকে সত্যের উপদেশ দেয় এবং পরস্পরকে ধৈর্য ধারণের উপদেশ দেয়।

১০৪. সূরাহ আল-হুমাযাহ

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ

আয়াতঃ ৯, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۙ (١)

১. দুর্ভোগ এমন প্রত্যেক ব্যক্তির জন্য যে (সামনাসামনি) মানুষের নিন্দা করে আর (অসাক্ষাতে) দুর্নাম করে,

الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۙ (٢)

২. যে ধন-সম্পদ জমা করে আর বার বার গণনা করে,

يَحْسَبُ أَنَّ مَالَهٗٓ أَخْلَدَهٗ ج (٣)

৩. সে মনে করে যে, তার ধন-সম্পদ চিরকাল তার সাথে থাকবে,

كَلَّا لَيُنْبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ (٤)

৪. কক্ষনো না, তাকে অবশ্যই চূর্ণ-বিচূর্ণকারীর মধ্যে নিক্ষেপ করা হবে,

وَمَآ أَدْرٰكَ مَا الْحُطَمَةُ (٥)

৫. তুমি কি জান চূর্ণ-বিচূর্ণকারী কী?

نَارُ اللهِ الْمُوْقَدَةُ (٦)

৬. তা আল্লাহ্‌র প্রজ্জ্বলিত আগুন,

الَّتِيْ تَطَّلِعُ عَلَى الْأَفْئِدَةِ (٧)

৭. যা হৃদয় পর্যন্ত পৌঁছে যাবে।

إِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ (٨)

৮. তা তাদেরকে চতুর্দিক থেকে পরিবেষ্টন করে রাখবে,

فِيْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ (٩)

৯. (লেলিহান অগ্নিশিখার) উঁচু উঁচু স্তম্ভে।

১০৫. সূরাহ আল-ফীল

سُوْرَةُ الْفِيْلِ

আয়াতঃ ৫৮, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِأَصْحٰبِ الْفِيْلِ (١)

১. তুমি কি দেখনি (কা'বা ঘর ধ্বংসের জন্য আগত) হাতীওয়ালাদের সঙ্গে তোমার প্রতিপালক কীরূপ ব্যবহার করেছিলেন?

أَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِيْ تَضْلِيْلٍ (٢)

২. তিনি কি তাদের চক্রান্ত ব্যর্থ করে দেননি?

وَّأَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا أَبَابِيْلَ (٣)

৩. তিনি তাদের বিরুদ্ধে পাঠিয়েছিলেন ঝাঁকে ঝাঁকে পাখী।

تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ (٤)

৪. যারা তাদের উপর পাথরের কাঁকর নিক্ষেপ করেছিল।

فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّأْكُوْلٍ (٥)

৫. অতঃপর তিনি তাদেরকে করে দিলেন ভক্ষিত তৃণ-ভুষির মত।

১০৬. সূরাহ আল-কুরায়শ

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ

আয়াতঃ ৪, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময়

আল্লাহ্‌র নামে।

১. কুরাইশদের অভ্যস্ত হওয়ার কারণে,

لِإِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۙ(١)

২. (অর্থাৎ) শীত ও গ্রীষ্মে তাদের বিদেশ সফরে অভ্যস্ত হওয়ার (কারণে)

إٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۚ(٢)

৩. তাদের কর্তব্য হল এই (কা'বা) ঘরের রবের 'ইবাদাত করা,

فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۙ(٣)

৪. যিনি তাদেরকে (কা'বা ঘরের খাদিম হওয়ার কারণে নির্বিঘ্নে ব্যবসা-বাণিজ্যের মাধ্যমে) ক্ষুধায় খাদ্য দিচ্ছেন এবং তাদেরকে ভয়-ভীতি হতে নিরাপদ করেছেন।

الَّذِيْٓ أَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ۬ وَّاٰمَنَهُمْ مِّنْ خَوْفٍ ۚ(٤)

১০৭. সূরাহ আল-মা'ঊন*

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ

আয়াতঃ ৭, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. তুমি কি তাকে দেখেছ, যে কর্মফল (দিবসকে) অস্বীকার করে?

أَرَأَيْتَ الَّذِيْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۭ(١)

২. সে তো সেই (লোক) যে ইয়াতীমকে ধাক্কা দিয়ে সরিয়ে দেয়,

فَذٰلِكَ الَّذِيْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۙ(٢)

৩. এবং মিসকীনকে অন্ন দিতে উৎসাহ দেয় না

وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۭ(٣)

৪. অতএব দুর্ভোগ সে সব নামায আদায়কারীর

فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۙ(٤)

৫. যারা নিজেদের নামাযের ব্যাপারে উদাসীন,

الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۙ(٥)

৬. যারা লোক দেখানোর জন্য তা করে,

الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۙ(٦)

*আবূ হুরাইরাহ (رضي الله عنه) থেকে বর্ণিত। নাবী (ﷺ) বলেছেনঃ ঐ ব্যক্তি প্রকৃত মিসকীন নয় যে, দু' এক গ্রাস (খাদ্য) পেয়ে ফিরে যায় (অথবা দু' এক গ্রাস খাদ্য যাকে দ্বারে দ্বারে ফেরায়), বরং প্রকৃত মিসকীন সেই ব্যক্তি যার সচ্ছলতা নেই অথচ চাইতেও লজ্জাবোধ করে কিংবা ব্যাকুলভাবে লোকের নিকট কিছু চায় না। -বুখারী ১৪৭৬ [১৪৭৯, ৪৫৩৯; মুসলিম ১০৩৯, নাসায়ী ২৫৭১-২৫৭৩, আবূ দাউদ ১৬৩১, আহমাদ ৭৪৮৬, ৮৮৬৭, ৮৮৯৫; মুওয়াত্তা ১৪৩৭, দারিমী ১৬১৫]

وَيَمْنَعُوْنَ الْمَاعُوْنَ ع (٧)

৭. এবং প্রয়োজনীয় গৃহসামগ্রী দানের ছোট খাট সাহায্য করা থেকেও বিরত থাকে।

১০৮. সূরাহ আল-কাউসার*

سُوْرَةُ الْكَوْثَرِ

আয়াতঃ ৩, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِنَّآ أَعْطَيْنٰكَ الْكَوْثَرَ ط (١)

১. আমি তোমাকে (হাওযে) কাওসার দান করেছি।

فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ط (٢)

২. কাজেই তুমি তোমার প্রতিপালকের উদ্দেশ্যে নামায আদায় কর এবং কুরবানী কর,

إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ع (٣)

৩. (তোমার নাম-চিহ্ন কোন দিন মুছবে না, বরং) তোমার প্রতি বিদ্বেষ পোষণকারীরাই নাম চিহ্নহীন-নির্মূল।

১০৯. সূরাহ আল-কাফিরূন

سُوْرَةُ الْكَافِرُوْنَ

আয়াতঃ ৬, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

قُلْ يٰٓأَيُّهَا الْكٰفِرُوْنَ لا (١)

১. বল, 'হে কাফিররা!'

---

*আনাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, আকাশের দিকে নাবী (ﷺ) -এর মি'রাজ হলে তিনি বলেন, আমি একটি নহরের ধারে পৌছলাম, যার উভয় তীরে ফাঁপা মোতির তৈরি গম্বুজসমূহ রয়েছে। আমি বললাম, হে জিব্রীল! এটা কী? তিনি বললেন, এটাই (হাওযে) কাউছার। –বুখারী ৪৯৬৪ [৩৫৭০; মুসলিম ১৬২, ৪০০; তিরমিযী ৩৩৫৯, ৩৩৬০, নাসায়ী ৪৪৯, ৯০৪; আবূ দাউদ ৭৮৪, আহমাদ ১১৫৮৩, ১১৫৯৩]
আবূ হুরাইরাহ (রাঃ) থেকে বর্ণিত। রসূলুল্লাহ (ﷺ) বলেছেনঃ আমার উম্মাত ক্বিয়ামাতের দিন) আমার কাছে হাওযে কাওসারে উপস্থিত হবে। আর আমি লোকদেরকে তা থেকে এমনিভাবে বিতাড়িত করবো, যেভাবে কোনো ব্যক্তি তার উটের পাল থেকে অন্যের উটকে বিতাড়িত করে থাকে। (এ কথা শুনে) লোকেরা জিজ্ঞেস করলোঃ হে আল্লাহ্‌র নাবী, আপনি কি আমাদেরকে চিন্‌তে পারবেন ? জবাবে তিনি বললেন, হ্যাঁ। তোমাদের এমন এক চিহ্ন হবে যা অন্য কারো হবে না। ওযুর প্রভাবে তোমাদের মুখমণ্ডল ও হাত) পায়ের দীপ্তি ও উজ্জ্বল জ্যোতি বিচ্ছুরিত অবস্থায় তোমরা আমার নিকট উপস্থিত হবে। আর তোমাদের একদল লোককে জোরে করে আমার থেকে ফিরিয়ে দেয়া হবে। তাই তারা আমার কাছে পৌছতে পারবে না। তখন আমি বলবো, হে আমার প্রভু, এরাতো আমার লোক। এর জবাবে একজন মালাইকা আমাকে বলবে, আপনি জানেন না, আপনার অবর্তমানে (ইন্‌তিকালের পরে) তারা কি কি নতুন কাজ করেছে। –মুসলিম ২৪৭ [ইবনু মাজাহ ৪২৮২, আহমাদ ৭৯৩৩, ৮২০৮]

لَآ أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُوْنَ ۙ (٢)

২. তোমরা যার 'ইবাদাত কর, আমি তার 'ইবাদাত করি না,

وَلَآ أَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ أَعْبُدُ ج (٣)

৩. আর আমি যার 'ইবাদাত করি তোমরা তার 'ইবাদাতকারী নও,

وَلَآ أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدْتُّمْ ۙ (٤)

৪. আর আমি তার 'ইবাদাতকারী নই তোমরা যার 'ইবাদাত করে থাক,

وَلَآ أَنْتُمْ عٰبِدُوْنَ مَآ أَعْبُدُ ط (٥)

৫. আর আমি যার 'ইবাদাত করি তোমরা তার 'ইবাদাতকারী নও,

لَكُمْ دِيْنُكُمْ وَلِيَ دِيْنِ ع (٦)

৬. তোমাদের পথ ও পন্থা তোমাদের জন্য (সে পথে চলার পরিণতি তোমাদেরকেই ভোগ করতে হবে) আর আমার জন্য আমার পথ (যে সত্য পথে চলার জন্য আল্লাহ আমাকে নির্দেশ দিয়েছেন, এ পথ ছেড়ে আমি অন্য কোন পথ গ্রহণ করতে মোটেই প্রস্তুত নই)।

১১০. সূরাহ আন্-নাস্র

سُوْرَةُ النَّصْرِ

আয়াতঃ ৩, রুকূ'ঃ ১, মাদানী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

إِذَا جَآءَ نَصْرُ اللهِ وَالْفَتْحُ ۙ (١)

১. যখন আসবে আল্লাহ্‌র সাহায্য ও (ইসলামের চূড়ান্ত) বিজয়,

وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُوْنَ فِيْ دِيْنِ اللهِ أَفْوَاجًا ۙ (٢)

২. আর তুমি মানুষদের দেখবে দলে দলে আল্লাহ্‌র দীনে প্রবেশ করতে,

فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ط إِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا ع (٣)

৩. তখন তুমি (শুকরিয়া আদায়ের উদ্দেশে) তোমার প্রতিপালকের প্রশংসা সহকারে তাঁর পবিত্রতা ও মহিমা ঘোষণা করবে আর তাঁর কাছে ক্ষমা প্রার্থনা করবে। তিনি বড়ই তাওবা কবূলকারী।

১১১. সূরাহ আল-লাহাব

سُوْرَةُ اللَّهَبِ

আয়াতঃ ৫, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

تَبَّتْ يَدَآ أَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ ط (١)

১. আবূ লাহাবের হাত দু'টো ধ্বংস হোক, ধ্বংস হোক সে নিজে,

مَآ أَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ ط (٢)

২. তার ধন-সম্পদ আর সে যা অর্জন করেছে তা তার কোন কাজে আসল না,

سَيَصْلٰى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۚ (٣)

৩. অচিরে সে প্রবেশ করবে লেলিহান শিখাযুক্ত আগুনে,

وَّامْرَأَتُهٗ ط حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ج (٤)

৪. আর তার স্ত্রীও– যে কাঠবহনকারিণী (যে কাঁটার সাহায্যে নবী-কে কষ্ট দিত এবং একজনের কথা অন্যজনকে ব'লে পারস্পরিক বিবাদের আগুন জ্বালাত)।

فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ع (٥)

৫. আর (দুনিয়াতে তার বহনকৃত কাঠ-খড়ির পরিবর্তে জাহান্নামে) তার গলায় শক্ত পাকানো রশি বাঁধা থাকবে।

১-২। ইবনু 'আব্বাস (রাঃ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, একদা নাবী (ﷺ) বাত্হা প্রান্তরের দিকে চলে গেলেন এবং পর্বতে উঠে يَا صَبَاحَاهْ বলে উচ্চৈঃস্বরে ডাকলেন। কুরাইশরা তাঁর কাছে জমায়েত হল। তিনি বললেন, আমি যদি তোমাদেরকে বলি, শত্রু সৈন্যরা সকালে বা সন্ধ্যায় তোমাদের উপর আক্রমণ করার জন্য প্রস্তুত হয়ে আছে, তাহলে কি তোমরা আমাকে সত্য বলে বিশ্বাস করবে? তারা সকলেই বলল, হাঁ, আমরা বিশ্বাস করব। তখন তিনি বললেন; আমি তোমাদেরকে আসন্ন কঠিন শাস্তি সম্পর্কে সাবধান করছি। এ কথা শুনে আবূ লাহাব বলল, তুমি কি এজন্যই আমাদেরকে একত্রিত করেছ? তোমার ধ্বংস হোক। তখন আল্লাহ্ তা'আলা প্রথম থেকে শেষ পর্যন্ত সূরাহ লাহাব অবতীর্ণ করলেন, ধ্বংস হোক আবূ লাহাবের দু' হস্ত এবং ধ্বংস হোক সে নিজেও। তার ধন-সম্পদ এবং উপার্জন তার কোন কাজে আসেনি। অচিরে সে দগ্ধ হবে লেলিহান অগ্নিতে এবং তার স্ত্রীও, যে ইন্ধন বহন করে, তার গলায় পাকান দড়ি। –বুখারী ৪৯৭২ [১৩৯৪; মুসলিম ২০৮, তিরমিযী ৩৩৬৩, আহমাদ ২৫৪০, ২৭৯৮]

১১২. সূরাহ আল-ইখলাস*

سُوْرَةُ الْإِخْلَاصِ

আয়াতঃ ৪, রুকূ‘ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. বল, তিনি আল্লাহ, এক অদ্বিতীয়,

قُلْ هُوَ اللّٰهُ أَحَدٌ ج (١)

২. আল্লাহ কোন কিছুর মুখাপেক্ষী নন, সবই তাঁর মুখাপেক্ষী,

اَللّٰهُ الصَّمَدُ ج (٢)

৩. তিনি কাউকে জন্ম দেন না, আর তাঁকেও জন্ম দেয়া হয়নি।

لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ لا (٣)

৪. তাঁর সমকক্ষ কেউ নয়।

وَلَمْ يَكُنْ لَّهُ كُفُوًا أَحَدٌ ع (٤)

১১৩. সূরাহ আল-ফালাক্ব*

سُوْرَةُ الْفَلَقِ

আয়াতঃ ৫, রুকূ‘ঃ ১, মাক্কী

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্‌র নামে।

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

১. বল, ‘আমি আশ্রয় চাচ্ছি সকাল বেলার রব-এর,

قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ لا (١)

---

*আবূ হুরাইরাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, নাবী (ﷺ) বলেছেন, আল্লাহ্ তা'আলা ইরশাদ করেন, “বানী আদম আমার প্রতি মিথ্যারোপ করেছে; অথচ এরূপ করা তার জন্য সঠিক হয়নি। বানী আদম আমাকে গালি দিয়েছে; অথচ এমন করা তার জন্য উচিত হয়নি। আমার প্রতি মিথ্যারোপ করার অর্থ হচ্ছে এই যে, সে বলে, আল্লাহ্ আমাকে যে রকম প্রথমবার সৃষ্টি করেছেন, তেমনি তিনি আমাকে দ্বিতীয়বার জীবিত করবেন না। অথচ তাকে আবার জীবিত করা অপেক্ষা প্রথমবার সৃষ্টি করা আমার জন্য সহজ ছিল না। আমাকে তার গালি দেয়ার অর্থ হল, সে বলে, আল্লাহ্ তা'আলা সন্তান গ্রহণ করেছেন; অথচ আমি একক, কারো মুখাপেক্ষী নই। আমি কাউকে জন্ম দেইনি, আমাকেও জন্ম দেয়া হয়নি এবং কেউ আমার সমকক্ষ নয়।” –বুখারী ৪৯৭৪ [৩১৯৩; নাসায়ী ২০৭৮, আহমাদ ৮৩৯৮, ৮৮৭০, ২৭৪৪২]

* 'আয়িশাহ (ﷺ) হতে বর্ণিত। তিনি বলেন, যখন রসূলুল্লাহ (ﷺ) অসুস্থ হয়ে পড়তেন তখন তিনি আশ্রয় প্রার্থনার দু' সূরাহ (ফালাক ও নাস) পাঠ করে নিজ দেহে ফুঁক দিতেন এবং স্বীয় হাত দ্বারা শরীর মাসাহ করতেন। এরপর যখন মৃত্যু-রোগে আক্রান্ত হলেন, তখন আমি আশ্রয় প্রার্থনার সূরাহ দু'টি দিয়ে তাঁর শরীরে ফুঁ দিতাম, যা দিয়ে তিনি ফুঁ দিতেন। আর আমি তাঁর হাত দ্বারা তাঁর শরীর মাসাহ করিয়ে দিতাম। –বুখারী ৪৪৩৯ [৫০১৬, ৫৭৩৫, ৫৭৫১; মুসলিম ২১৯২, আবূ দাউদ ৩৯০২, ইবনু মাজাহ ৩৫২৯, আহমাদ ২৪২০৭, ২৪৩১০; মুওয়াত্তা ১৭৫৫]

مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ (٢)

২. তিনি যা সৃষ্টি করেছেন তার অনিষ্ট হতে,

وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ إِذَا وَقَبَ ۙ (٣)

৩. আর অন্ধকার রাতের অনিষ্ট হতে যখন তা আচ্ছন্ন হয়ে যায়।

وَمِنْ شَرِّ النَّفَّاثَاتِ فِي الْعُقَدِ ۙ (٤)

৪. এবং (জাদু করার উদ্দেশে) গিরায় ফুৎকারকারিণীদের অনিষ্ট হতে,

وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ إِذَا حَسَدَ ع (٥)

৫. এবং হিংসুকের অনিষ্ট হতে, যখন সে হিংসা করে।

১১৪. সূরাহ আন্- নাস

سُوْرَةُ النَّاسِ

আয়াতঃ ৬, রুকূ'ঃ ১, মাক্কী

بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

(আরম্ভ করছি) পরম করুণাময় অসীম দয়াময় আল্লাহ্র নামে।

قُلْ أَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ (١)

১. বল, 'আমি আশ্রয় চাচ্ছি মানুষের প্রতিপালকের,

مَلِكِ النَّاسِ ۙ (٢)

২. মানুষের অধিপতির,

إِلٰهِ النَّاسِ ۙ (٣)

৩. মানুষের প্রকৃত ইলাহর,

مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۙ (٤)

৪. যে নিজেকে লুকিয়ে রেখে বার বার এসে কুমন্ত্রণা দেয় তার অনিষ্ট হতে,

الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۙ (٥)

৫. যে কুমন্ত্রণা দেয় মানুষের অন্তরে

مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ع (٦)

৬. (এই কুমন্ত্রণাদাতা হচ্ছে) জিন্নের মধ্য হতে এবং মানুষের মধ্য হতে।

Contents

قائمة موضوعات القرآن الكريم

আল-কুরআনুল কারীমের বিষয়সূচী

Avj KiAv¥bi welqmPx GB wKZv¥ei Abà msÇ!iY ¤_¥K Ç!Àvb Kivq cvZvi b¼i Av¥Mi b¼¥i mv¥_ wgj¥e bv| Z¥e welqeÇ Z_v welqmPx bZb msÇ!i¥Yi mv¥_ AcwiewZZ Av¥Q Bbkv Avjvn| Ze| wKQ Awgj _vK¥j Avgv¥`i Rvbv¥Z wïav Ki¥eb bv| Avgiv ¤PĊv Ki¥ev bZb msÇ!iY ¤`qvi|

← চলমান পাতা

আল-কুরআনুল কারীম

পর্বভিত্তিক বিষয়সূচীর সংক্ষিপ্ত রূপ

← চলমান পাতা

বিষয়সূচীর বিন্যাসপদ্ধতি

১। আল-কুরআনুল কারীমের বিষয়গুলোকে ১২টি পর্বে ভাগ করা হয়েছে।

২। প্রতিটি পর্বে একাধিক অধ্যায় রয়েছে।

৩। প্রতিটি অধ্যায়ে একাধিক অনুচ্ছেদ রয়েছে।

৪। অধিকাংশ অনুচ্ছেদে ১।, ২। ৩। এভাবে একাধিক ধারা রয়েছে।

৫। অধিকাংশ ধারায় /১, /২, /৩, এভাবে একাধিক উপ-ধারা রয়েছে। যেমন ১। ধারায় ১/১, ১/২, ১/৩ ইত্যাদি।

৬। অধিকাংশ উপ-ধারায় রয়েছে ক), খ), গ), ঘ) এভাবে বর্ণধারা।

৭। কোন কোন বর্ণধারাকে বন্ধনীর মাধ্যমে পুনরায় (১), (২), (৩) এভাবে সাজানো হয়েছে।

যেমন ঃ

৩য় পর্ব ঃ পূর্ববর্তী উম্মাত। এতে রয়েছে ১২টি অধ্যায়।

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ নাবীগণ। এতে রয়েছে ১১টি অনুচ্ছেদ।

একাদশ অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের কিসসা। এতে রয়েছে। ২৮টি ধারা।

১৬। মূসা (عليه السلام)। এতে রয়েছে ২৩টি উপ-ধারা

১৬/৯। মূসা (عليه السلام) ও ফির'আউন। এতে রয়েছে ক) থেকে ণ) পর্যন্ত ১৫টি বর্ণধারা।

ঙ) মূসা (عليه السلام) ও ফির'আউনের সাক্ষাত। এতে রয়েছে ৭টি উপবর্ণধারা।

ঙ/(৭) যাদুকরদের ব্যর্থতা ও ঈমান আনয়ন। এ বিষয়ে রয়েছে সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৭/(১১৯, ১২১, ১২৩, ১২৫, ১২৬), ২০/(৭০, ৭২, ৭৩), ২৬/(৪৬, ৪৭, ৫০)

উপরোক্ত বর্ণনায় দেখা যাচ্ছে ৭নং সূরা আল-আ'রাফে ৫টি আয়াত, ২০নং সূরা ত্ব-হায় রয়েছে ৩টি আয়াত এবং ২৬নং সূরা শু'আরায় রয়েছে ৩টি আয়াত।

সুহৃদ পাঠক! এভাবে যদি আপনি আপনার কাঙ্ক্ষিত বিষয় বের করে তৎসংশ্লিষ্ট আয়াতগুলো স্ট্যাডি করেন তাহলে আল-কুরআনের সর্বোত্তম তাফসীরের সন্ধান আপনি লাভ করবেন ইনশাআল্লাহ।

← চলমান পাতা

الإيمان :
প্রথম পর্ব ঃ ঈমান

← চলমান পাতা

Contents

الإيمان :
প্রথম পর্ব ঃ ঈমান

فضل الإيمان وأجره
প্রথম অধ্যায় ঃ ঈমানের ফাযীলাত ও তার সাওয়াব

أمن المؤمن في الدنيا والآخرة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ দুনিয়া ও আখিরাতে মু'মিনগণের নিরাপত্তা

সর্বমোট ৪২টি আয়াত ঃ ২/(৩৮, ৬২, ১১২, ২৬২, ২৭৪, ২৭৭), ৩/(১০৩, ১০৭, ১৭০), ৪/১৭৩, ৫/৬৯, ৬/(১৬, ৪৮, ৮১, ৮২, ১২৭), ৭/(৩৫, ৪৩, ৪৯, ৯৬), ১০/(৬২, ৬৪, ১০৩), ১১/৫৮, ১৪/২৭, ১৫/৪৬, ১৬/(৩০, ৩২, ৯৭), ২০/(৪৭, ১২৩), ২১/(১০১, ১০৩), ২২/৫৪, ২৪/৫৫, ২৭/৮৯, ৩৭/৪০, ৩৯/৬১, ৪১/৩০, ৪৩/(৬৮, ৬৯), ৭২/১৩

المؤمن في حماية الله
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মু'মিনগণ আল্লাহর হিফাযাতে

সর্বমোট ১২৭টি আয়াত ঃ ২/(৩৮, ১৩৭, ১৯৪, ২৪৯, ২৫৭), ৩/(১৩, ৫৫, ১১১, ১২০, ১২২, ১৩৯, ১৭৫), ৪/(৪৫, ৯০, ১৫৮), ৫/(১১, ৪২, ৫৫, ৬৪, ৬৭), ৬/৫৪, ৭/(৬৪, ৭২, ৮৩, ১১৭, ১৬৫, ১৯৬, ২০০), ৮/(১৭, ১৯, ২৬, ৩০, ৪০, ৬২, ৬৮), ৯/(৪০, ৫১, ১১৭), ১০/৬২, ১১/(৪১, ৪৮, ৫৮, ৬৬, ৮১, ৯৪), ১২/২১, ১৪/২৭, ১৫/(৪০, ৪২, ৫৯), ১৬/(৯৯, ১০০, ১২৮), ১৭(৬৫, ১০৩), ১৮/১৬, ২০/(৩৮, ৩৯, ৪০, ৪৬, ৬৮, ৭৭, ১২৩), ২১/(৯, ৬৯–৭১, ৭৪, ৭৬, ৭৭, ৮৪, ৮৮), ২২/৩৮, ২৩/(২৭, ২৮), ২৬/(১৫, ৫২, ৬২, ৬৩, ১১৮, ১১৯, ১৭০, ২১৮), ২৭/(৫০, ৫৩, ৫৭), ২৮/(৭, ৯, ২০, ২৫, ৩১, ৩৫), ২৯/(১৫, ২৪, ৩২, ৩৩), ৩৪/(২০, ২১), ৩৭/(৭৬, ৯৮, ১১৫, ১৩৪, ১৪৬), ৩৮/৮৩, ৪০/(৪৫, ৫১), ৪১/১৮, ৪৪/(২০, ২৪, ৫৬), ৪৫/১৯, ৪৬/১৩, ৪৭/১১, ৪৮/(২০, ২৪, ২৭), ৫১/৩৫, ৫২/৪৮, ৫৪/(১৩, ১৪, ৩৪, ৩৫, ৩৭), ৫৮/২২, ৬৬/৪, ৬৮/৪৯, ৬৯/১১

نصر الله المؤمنين
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মু'মিনগণের প্রতি আল্লাহর সাহায্য

সর্বমোট ৯৫টি আয়াত ঃ ২/(২১৪, ২৫১), ৩/(১৩, ৬৮, ১২৩, ১২৪, ১২৫, ১২৬, ১৩৯, ১৪৮, ১৫০, ১৫২, ১৬০), ৪/(৭৩, ৮৪, ১৩৯, ১৪১), ৫/(২৩, ৫৬), ৬/৩৪, ৭/(৬৪, ৭২, ৮৩, ১১৭, ১১৮, ১২৯, ১৩৭), ৮/(১০–১২, ১৭–২০, ২৬, ৪৩, ৪৪, ৬৪, ৬৬), ৯/(১৪, ২৫, ২৬, ৩২, ৪০, ৪৮), ১০/(৯০, ১০৩), ১১/(৩০, ৪৯, ৯৪), ১৪/(১৪, ৪৭), ২০/(৬৮, ৬৯), ২১/(৯, ১০৫), ২২/(১৫, ৩৮, ৩৯, ৪০, ৬০, ৭৮), ২৪/৫৫, ২৫/৩১, ২৮/৬, ৩০/৪৭, ৩৩/(৯, ১০, ২৫, ২৬), ৩৬/৯, ৩৭/(১১৬, ১৭১–১৭৩), ৪০/৫১, ৪৭/(৪, ৭, ৩৫), ৪৮/(১, ৩, ৪, ১৮, ২০–২২), ৫৮/২১, ৫৯/২, ৬১/(৮, ১৩, ১৪), ৬৩/৮, ৮৪/১৯, ১১০/১, ১১০/২

تثبيت الله المؤمنين
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ মু'মিনগণকে আল্লাহর তাওহীদে প্রতিষ্ঠিত রাখা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৮/(১১, ১২), ৯/(২৬, ৪০), ১৪/২৭, ১৬/১০২, ৪৭/৭,

← চলমান পাতা

جزاء الإيمان

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ ঈমানের প্রতিদান

সর্বমোট ২৭৪টি আয়াত ঃ ২/(৫, ২৫, ৮২, ১০৩, ১২৬, ২০২, ২১২, ২১৮, ২২১, ২২৩), ৩/(৫৭, ১৪৮, ১৭৯, ১৯৮, ১৯৯), ৪/(৩৯, ৬৭, ৬৮, ১২২, ১৪৬, ১৫২, ১৬২, ১৭০, ১৭৩, ১৭৫), ৫/(৯, ৬৬, ৮৫), ৬/১২৭, ৭/(৪৩, ৪৪, ৪৯, ১২৮, ১৬৫, ১৭০), ৮/৭৪, ৯/(২০, ৭২, ৮৮), ১০/(৯, ২৬, ৬৪, ৯৮), ১১/১১, ১২/৫৭, ১৩/(১৮, ২৯), ১৪/(২৩, ৫১), ১৫/(৪৫, ৪৬, ৪৭, ৪৮), ১৬/(৩০, ৩১, ৩২, ৪১, ৯৭), ১৮/(২, ৩০, ৩১, ৮৮, ১০৭), ১৯/(৬০, ৬১, ৬৩, ৯৬), ২০/(৭৫, ৭৬, ১১২, ১৩২), ২২/(১৪, ২৩, ৫০, ৫৪, ৫৬, ৫৮, ৫৯), ২৩/(১, ৫৮, ৬১, ১০২, ১১১), ২৪/৫২, ২৫/(১৫, ৭৫), ২৯/(৯, ৫৮), ৩০/(১৫, ৪৫), ৩১/(৮, ৯), ৩২/(১৭, ১৯, ৩৫), ৩৩/(৪৩, ৪৪, ৪৭, ৭১, ৭৩), ৩৪/(৪, ৩৭), ৩৫/(৭, ৩৩, ৪৪, ৩৫), ৩৬/(১১, ২৬, ২৭), ৩৭/(৪০, ৪১, ৬১, ১০৫, ১১০, ১২১, ১৩১, ১৬০, ১৭২, ১৮১), ৩৮/(২৫, ৪৯, ৫০), ৩৯/(১০, ১৭, ২০, ২২, ৩১, ৩৪, ৩৫, ৬১, ৭৪), ৪০/(৪০, ৫১), ৪১/(৮, ১৮, ৩০, ৩১, ৩২), ৪২/২২, ৪৩/(৩৫, ৭০, ৭২, ৭৩), ৪৪/(৫১, ৫২, ৫৩, ৫৪, ৫৫, ৫৬, ৫৭), ৪৫/৩০, ৪৬/(১৪, ১৬, ৩১), ৪৭/(২, ১২, ১৭, ৩৬), ৪৮/(৫, ১৭, ২৩, ২৯), ৪৯/(৩, ১৫), ৫০/৩১, ৫১/(১৫, ১৬), ৫২/(১৭, ১৮, ১৯, ২০, ২২, ২৩, ২৪, ২৭), ৫৪/(১৩, ৫৪/১৪, ৫৪/৩৫, ৫৪/৫৪, ৫৫), ৫৫/৪৬, ৫৬/(১২, ২৪, ৮৯, ৯১), ৫৭/(৭, ১০, ১২, ১৯, ২১, ২৮), ৫৮/২২, ৬১/১০, ৬৮/(১১, ১২, ১৩, ১৪), ৬৪/(৯, ১১), ৬৫/১১, ৬৬/৮, ৬৭/১২, ৬৮/৩৪, ৬৯/(২১, ২৪), ৭০/৩৫, ৭১/৪, ৭২/(১৩, ১৬), ৭৪/৪০, ৭৬/(৫, ৬, ১১-২২), ৭৭/(৪১-৪৪), ৭৮/(৩১, ৩৪-৩৬), ৭৯/৪১, ৮০/(৩৮, ৩৯), ৮২/১৩, ৮৩/(১৮-২০, ২২-২৫, ২৮, ৩৪, ৩৫), ৮৪/(৮, ৯, ২৫), ৮৫/১১, ৮৭/১৪, ৮৮/(৮-১৬), ৮৯/(২৭-২৯), ৯০/১৮, ৯১/৯, ৯২/৬, ৯২/৭, ৯২/১৭, ৯৫/৬, ৯৮/(৭, ৮), ১০১/৭, ১০৩/৩

قلة عدد المؤمنين

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ মুমিনগণের সংখ্যা স্বল্পতা

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৬/১১৬, ৭/১০২, ৮/২৬, ২৬/(৮, ৬৭, ১০৩, ১২১, ১৩৯, ১৫৮, ১৭৪, ১৯০)

شعب الأيمان

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ ঈমানের শাখা।

العقيدة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আকীদাহ।

الإيمان بالله عز وجل

১। আল্লাহ 'আযযা ওয়া জাল্লাহর প্রতি ঈমান

وجوب معرفة الله وتوحيده

১/১। আল্লাহর পরিচয় ও তাওহীদ সংক্রান্ত জ্ঞানার্জনের অপরিহার্যতা

البراهن الدالة على وجود الله

ক) আল্লাহর অস্তিত্বের অকাট্য প্রমাণাদি

সর্বমোট ১৬৮টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ৬/(১, ১৪, ৭৫-৭৮, ৯৫, ৯৭, ৯৯), ৭/(৫৪, ৫৭, ১৮৫), ১০/(৩, ৫, ৬, ৩১, ৬৭, ১০১), ১২/(১০১, ১০৫), ১৩/(২-৪, ১২, ১৩, ১৭), ১৪/১০, ১৫/(১৬, ১৯, ২০, ২২), ১৬/(৩, ১০, ১১, ১৩-১৬, ৪৮, ৬৬-৬৯, ৭৮, ৭৯, ৮১), ২০/৫৪, ২১/(৩০-৩২), ২২/৬১, ২৩/(৮০, ৮৪), ২৪/(৪৩, ৪৪), ২৫/(৪৫-৪৯, ৫৩, ৫৪, ৫৯, ৬১, ৬২), ২৬/(৮, ২৪, ২৮, ২৮৪), ২৭/(৬০, ৬১, ৬৩, ৬৪), ২৮/৭৩, ২৯/(১৯, ৪৪, ৫১, ৬১), ৩০/(১৯, -২৫, ২৭, ৩৭, ৪৬, ৪৮), ৩১/(১০, ২০, ২৫,

← চলমান পাতা

৩৭-৪১, ৭১), ৪০/৭১, ৪২/(২৮, ৩২, ৩৩), ৪৩/৯, ৫০/(৬, ৭, ৯-১১), ৫১/(২০, ২১, ৪৯), ৫২/(৩৫-৩৮), ৫৫/(৫-৭), ৫৬/(৫৮-৬১, ৬৩-৬৫, ৬৮-৭২), ৫৭/(৪, ৬, ১৭), ৬৭/(২-৪, ১৯, ৩০), ৭৮/(৬-৮/১০-১৫), ৭৯/(২৮, ২৯, ৩১, ৩২), ৮৮/(১৭-২০), ৯১/(৫, ৬),

خضوع ما في الكون لله

খ) আল্লাহর উদ্দেশে পৃথিবীর সকল কিছুর আনুগত্য

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/৭৪, ৩/৮৩, ৫/(১৭, ১৮, ১২০, ৫৯), ৬/৭৩, ১০/৬৬, ২২/১৮, ৪১/১১, ৫৫/৬, ৮৪/(২, ৫), ৯৯/৫,

تهاوي الجبال لتجلي الحق عليها

গ) পাহাড়ের উপর আল্লাহর তাজাল্লী প্রকাশিত হওয়ায় তার বিধ্বস্ত হওয়া

৭/১৪৩,

توحيد الربوبية

ঘ) তাওহীদুর রুবূবিয়্যাহ

তাওহীদে রুবূবিয়্যাহ- সর্বমোট ৯২টি আয়াত ঃ ২/(২১, ১৩১, ১৩৯), ৩/(৫১, ১৯৩), ৫/(২৮, ৭২, ১১৭), ৬/(৪৫, ৭১, ১০০, ১০২, ১৬২-১৬৪), ৭/(৫৪, ৬১, ৬৭, ১০৪, ১২১, ১৭২), ৯/১২৯, ১০/(৩, ১০, ৩৭), ১১/৩৪, ১৩/(১৬, ৩০), ১৮/(১৪, ৩৮, ৫১), ১৯/(৩৬, ৬৫), ২১/(২২, ৫৬), ২২/৬৬, ২৬/(২৪, ২৬, ২৮, ৪৭, ৪৮, ৭৭, ১০৯, ১২৭, ১৪৫, ১৬৪, ১৮০, ১৯২), ২৭/(৮, ২৬, ৪৪, ৯১), ২৮/৩০, ২৯/৬১, ৩২/২, ৩৫/১৩, ৩৭/(৫, ৮৭, ১৮২), ৩৮/৬৬, ৩৯/৭৫, ৪০/(২৭, ৬২, ৪৪, ৬৫), ৪৪/৬৬, ৪১/৯, ৪২/(১৫, ৫৩), ৪৩/(৯, ৪৬, ৬৪, ৮২), ৪৪/(৭, ৮), ৪৫/৩৬, ৪৬/১৩, ৫১/২৩, ৫৩/৪৯, ৫৫/১৭, ৫৬/৮০, ৫৯/১৬, ৬৯/(৪৩, ৫২), ৭০/৪০, ৭৮/৩৭, ৭৯/১৯, ৮১/২৯, ৮৩/৬, ১০৬/৩, ১১৩/১, ১১৪/১,

توحيد الألوهية

ঙ) তাওহীদুল উলূহিয়্যাহ

তাওহীদে উলূহিয়্যাহ- সর্বমোট ১৬৩টি আয়াত ঃ ১/৫, ২/(২১-২৩, ২৬, ১৩১-১৩৩, ১৩৬, ১৩৯, ১৬৬, ১৭৭, ২৫৫, ২৫৬, ২৮৫), ৩/(২, ৬, ১৮, ৬২, ৬৪, ৬৭, ৬৯, ৮০, ৮৩, ৮৪, ১১০, ১১৪), ৪/(৩৬, ৩৯, ৮৭, ১৭১), ৫/৭৩, ৬/(১৯, ৭১, ৭৯, ১০২, ১০৬, ১৫১, ১৬২, ১৬৩), ৭/(৫৯, ৬৫, ৭০, ৭৩, ৮৫, ১৪০, ১৫৮), ৯/(১৮, ৩১, ১২৯), ১০/(৩, ৩০-৩২, ৯০, ১০৪, ১০৫), ১১/(২, ১৪, ২৬, ৫০, ৬১, ৮৪), ১২/(৩৭, ৩৮, ৪০, ১০৮), ১৩/(১৪, ১৫, ১৬, ৩০, ৩৩, ৩৬), ১৪/৫২, ১৬/(২, ২২, ৩৬, ৪৮, ৪৯, ৫১, ৫২, ৭৩), ১৭/(২২, ২৩, ৩৯, ১১১), ১৮/(১৪, ২৬, ৩৮, ১১০), ১৯/(৩৫, ৩৬, ৬৫), ২০/(৮, ১৪, ৯৮), ২১/(২২, ২৪, ২৫, ২৯, ১০৮), ২২/(৩৪, ৬২), ২৩/(২৩, ৩২, ৫৯, ৯১, ১১৬, ১১৭), ২৪/৫৫, ২৫/৬৮, ২৬/(৪৭, ৪৮, ৭৭), ২৭/(২৫, ২৬, ৭০), ২৮/(৭১, ৭২), ২৯/(১৬, ৪৬, ৬৩), ৩৪/(২২, ২৪, ৩৩), ৩৫/৩, ৩৬/২৩, ৩৭/(৪, ৩৫), ৩৮/৬৫, ৩৯/(৩, ৪, ৬, ৬৪, ৬৬), ৪০/(১২, ১৪, ৬২, ৬৫, ৬৬), ৪১/(৬, ৩৭), ৪৩/(৪৫, ৬৪, ৮৪), ৪৪/৮, ৪৭/১৯, ৫১/৫১, ৫২/৪৩, ৫৯/(২২, ২৩), ৬০/৪, ৬৪/১৩, ৭১/৩, ৭২/(২, ১৮, ২০), ৭৩/৯, ৯৮/৫, ১১২/(১, ৪), ১১৪/৩

ما جاء في العرش

চ) 'আরশ সম্পর্কে যা কিছু বর্ণিত হয়েছে

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৭/৫৪, ১০/৩, ১১/৭, ২০/৫, ২৩/(৮৬, ১১৬), ২৫/৫৯, ৩২/৪, ৩৯/৭৫, ৪০/১৫, ৫৭/৪, ৬৯/১৭, ৮৫/১৫

← চলমান পাতা

تبرئة الله من الند والولد

ছ) শির্ক ও সন্তানাদি থেকে আল্লাহর পবিত্রতা

সর্বমোট ৬২টি আয়াত ঃ ২/(২২, ১১৬), ৩/(১৮, ৭৯, ৮০), ৪/১৭১, ৬/১০১, ১০/৬৮, ১৩/৩০, ১৪/৩০, ১৬/(১৭, ২০, ২১, ৫৭), ১৭/(৪০, ৪২, ৪৩, ১১১), ১৮/৪, ১৯/(৩৫, ৮৯, ৯০, ৯২), ২১/(১৭, ২২, ২৬), ২৩/৯১, ২৫/২, ২৬/(৯৮, ২১৩), ২৭/(৫৯–৬৪), ২৮/৬৮, ৩৪/(২২, ২৭, ৩৩), ৩৫/৪০, ৩৭/(৪, ১৫২, ১৫৩, ১৫৮, ১৫৯, ১৮০), ৩৯/৪, ৪১/৯, ৪৩/(১৯, ৮১, ৮২), ৫২/(৩৯, ৪৩), ৫৩/(২৩, ৩৭), ৭২/(৩, ২০), ১১২/(১, ৩, ৪)

قيام حجة الله على العباد

জ) বান্দার বিপক্ষে আল্লাহর প্রমাণ পেশ

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৪/১৬৫, ৬/(১৪৯, ১৫৬, ১৫৭), ৭/(৭৩, ৭৪, ১৭২), ৮/৪২, ১০/(৩৪, ৩৫), ২০/১৩৪, ৩১/১১

حسن الظن بالله

ঝ) আল্লাহর প্রতি সুধারণা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৫৪, ১২/৮৩, ২২/১৫, ৩৩/১০

الافتراء على الله

ঞ) আল্লাহর প্রতি মিথ্যারোপ

সর্বমোট ১১৬টি আয়াত ঃ ২/(৭৯, ৮০, ৯৪, ১১১, ১১৬, ১৬৯), ৩/(২৪, ৭৫, ৭৮, ৯৪, ১৮১, ১৮৩), ৪/(৪৮, ৫০, ১৭১), ৫/(১৮, ৬৪, ৭২, ৭৩, ১০৩), ৬/(২১, ২৪, ৯১, ৯৩, ১০০, ১৩৬–১৪০, ১৪৪, ১৪৮, ১৫০), ৭/(২৮, ৩৩, ৩৭, ৫৩, ১৫২, ১৭৯), ৯/(৩০, ৩১), ১০/(১৭, ১৮, ৩৮, ৫৯, ৬০, ৬৬, ৬৮, ৬৯), ১১/(১৩, ১৮, ২১, ৩৫, ৫০), ১৬/(৩৫, ৫৬, ৫৭, ৬২, ১০৫, ১১৬), ১৭/(৪২, ৭৩), ১৮/(৫, ১৫), ১৯/(৩৪, ৩৫, ৮৮, ৯১), ২০/(৬১, ৮৮), ২১/(১৮, ২১, ২৪, ২৬, ৪৩), ২৩/(৯১, ১১৭), ২৮/৩৬, ২৯/(১৩, ৬৮), ৩২/৩, ৩৪/২২, ৩৫/৪০, ৩৭/(৮৬, ১২৫, ১৪৯–১৫৩, ১৫৮), ৩৮/২৭, ৩৯/(৩, ৩৮, ৪৩), ৪০/৩৫, ৪১/২৩, ৪৩/(১৫, ১৬, ১৭, ১৯, ৮১), ৪৪/(৩৪, ৩৫), ৪৬/(৪, ৫, ২৮), ৫২/৩৯, ৫৩/(২১, ২৭), ৬১/৭, ৬২/৬, ৬৯/৪৪, ৭২/(৪, ৫), ৭৯/২৪

سنن الله في خلقه

ট) আল্লাহর সৃষ্টি জগতে তার নীতি

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৬/১৩১, ৭/৯৪, ১৩/১১, ১৭/(১৫, ১৬), ২২/১৮, ২৬/২০৮, ৩৫/(২৪, ৪৩), ৪৭/৭, ৪৮/২৩, ৫৮/২১

ما يذكر في الذات والنعوت

১/২। আল্লাহর সত্ত্বা ও গুণাবলী সংক্রান্ত বিষয়

ليس كمثله الله شيء

ক) আল্লাহর সদৃশ্য কেউ নেই

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ৬/(৯১, ১০১, ১০৩), ১৭/১১১, ১৯/৬৫, ২০/(৫, ৫০), ২১/২৩, ২৫/৫৯, ২৮/৮৮, ৩০/২৭, ৩৫/৪১, ৩৯/৬৭, ৪২/১১, ৫৫/২৭, ১১২/(১–৪)

تنزيه الله عن النقائص

ক) সকল প্রকার ক্রটি, বিচ্যুতি থেকে আল্লাহর পবিত্রতা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/২৫৫, ৫/৬৪, ১৭/১, ১৯/৬৪, ২১/১৭, ২৩/১১৫, ৪৪/৩৮, ৫০/৩৮, ৯১/১৫

← চলমান পাতা

لا تأخذ الله سنة ولا نوم

গ) আল্লাহকে তন্দ্রা ও নিদ্রা আচ্ছন্ন করে না

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৫৫, ৬/১৩২, ৭/৭, ১৯/৬৪, ২০/৫২

الله خير من يرجى

ঘ) কামনা সমূহের মধ্যে আল্লাহকে কামনা করাই শ্রেষ্ঠতম কামনা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২১৮, ৪/১০৪, ১৭/৫৭, ১৮/৪৪, ৩৯/৯।

عروج الملائكة إلى الله

ঙ) ফেরেশতাগণের আল্লাহর দিকে উর্ধগমন–৭০/৪

إثبات الشفاعة لله وحده

চ) শাফা'আতের অধিকার একমাত্র আল্লাহর

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/(২৫৪, ২৫৫), ৬/(৫১, ৭০, ৯৪), ৩২/৪, ৩৪/২৩, ৩৯/৪৪, ৮২/১৯

لا شفاعة عند الله إلا بإذنه

ছ) আল্লাহর ইচ্ছা ব্যতীত শাফা'আত নেই

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/২৫৫, ১০/৩, ২০/১০৯, ২১/২৮, ৩৪/২৩, ৫৩/২৬

إثبات الملك لله وحده

জ) রাজ্য একমাত্র আল্লাহর জন্য

সর্বমোট ৯১টি আয়াত ঃ ১/৪, ২/(১০৭, ১১৬, ১৪২, ২৫৫, ২৮৪), ৩/(২৬, ১০৯, ১২৯, ১৫৪, ১৮০, ১৮৯), ৪/(৫৩, ১২৬, ১৩১, ১৩২, ১৭০, ১৭১), ৫/(১৭, ১৮, ৪০, ১২০), ৬/(১২, ১৩, ৭৩, ১০১), ৭/(৫৪, ১৫৮), ৯/১১৬, ১০/(৫৫, ৬৬, ৬৮), ১৪/২, ১৫/২১, ১৬/(৪৯, ৫২), ১৭/১১১, ১৯/(৪০, ৬৪, ৬৫), ২০/৬, ২১/১৯, ২২/(৫৬, ৬৪), ২৩/(৮৫, ৮৭–৮৯), ২৪/(৪২, ৬৪), ২৫/(২, ২৬), ২৭/৯১, ৩০/২৬, ৩১/২৬, ৩৪/(১, ২২), ৩৫/১৩, ৩৬/৮৩, ৩৭/৫, ৩৮/(৯, ১০), ৩৯/(৬, ৪৪, ৬৩), ৪০/(১৬, ৬২), ৪২/(৪, ১২, ৪৯, ৫৩), ৪৩/৮৫, ৪৫/(২৭, ৩৬), ৪৬/৪, ৪৮/(৪, ৭, ১৪), ৫৩/(২৫, ৩১), ৫৭/(২, ৫, ১০), ৬৩/৭, ৬৪/১, ৬৭/১, ৭৩/৯, ৭৮/৩৭, ৮৫/৯, ৯২/১৩, ১১৪/২

إثبات الكبرياء لله عز وجل

ঝ) আল্লাহর বড়ত্বের প্রতিষ্ঠা করণ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৫/৩৭, ৫৯/২৩

الاعتصام بالله

ঞ) আল্লাহকে শক্তভাবে ধারণ করা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(১০১, ১০৩), ৪/(১৪৬, ১৭৫), ২২/৭৮

الاستعانة بالله

ট) আল্লাহর নিকট সাহায্য কামনা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১/৫, ৭/১২৮, ১১/৪১, ১২/১৮, ২১/১১২

جود الله تعالى وكرمه

ঠ) আল্লাহ তা'আলার দানশীলতা–১৭/১০০

← চলমান পাতা

النافع والضار هو الله

ড) পরম উপকারী ও চরম অনিষ্টকারী আল্লাহ

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৫/৭৬, ৬/৭১, ৭/১৮৮, ১০/(১৮, ৪৯, ১০৬), ১৩/১৬, ২০/৮৯, ২১/৬৬, ২২/১২, ২৫/(৩, ৫৫), ২৬/৭৩, ৪৮/১১, ৬০/৩

الحكم لله تعالى

ঢ) নির্দেশ একমাত্র আল্লাহর

সর্বমোট ৪৫টি আয়াত ঃ ২/১১৩, ৪/(৪০, ৬৫, ১০৫, ১৪১), ৫/(১, ৪৩–৪৫, ৪৭–৫০), ৬/(৫৭, ৬২, ১১৪), ৭/৮৭, ১০/১০৯, ১১/(১০, ৪৫), ১২/(৬৭, ৮০), ১৩/(৩৭, ৪১), ১৬/১২৪, ১৮/২৬, ২১/১১২, ২২/৫৬, ২৪/(৪৮, ৫১), ২৭/৮৭, ২৮/(৭০, ৮৮), ৩৯/(৩, ৪৬), ৪০/(১২, ৪৮), ৪২/১০, ৫২/৪৮, ৬০/১০, ৬৮/৪৮, ৭৬/২৪, ৯৫/৮

شدة بطش الله

ণ) আল্লাহর পাকড়াও এর কঠোরতা

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(১৯৬, ২১১), ৩/১১, ৪/(১১৫, ১৩৮, ১৬৯), ৫/(২, ৩৬, ৭৩, ৯৮), ৬/(৬, ১৬৫), ৭/(১৬৫–১৬৭), ৮/(১৩, ২৫, ৪৮, ৫০, ৫২), ১৩/৬, ৩৯/৩৭, ৪০/(৩, ২২), ৫৮/১৫, ৫৯/(৪, ৭), ৬৫/৮, ৮৫/১২

عند الله مفاتح الغيب

ত) অদৃশ্যের চাবিকাঠি আল্লাহর নিকট

সর্বমোট ৪৩টি আয়াত ঃ ২/৩, ৩/(৫, ১৭৯), ৫/১০৯, ৬/(৫০, ৫৯, ৭৩), ৭/১৮৭, ৯/(৭৮, ৯৪, ১০৫), ১১/১২৩, ১২/(৮১, ১০২), ১৩/(৮, ৯), ১৬/৭৭, ১৮/২৬, ২৩/৯২, ২৫/৬, ২৭/(৬৫, ৭৪, ৭৫), ৩১/৩৪, ৩২/(৫, ৬), ৩৩/৬৩, ৩৪/(৩, ১৪, ৪৮), ৩৫/৩৮, ৩৯/৪৬, ৪১/৪৭, ৪৯/১৮, ৫২/৪১, ৫৯/২২, ৬২/৮, ৬৪/১৮, ৬৭/২৬, ৬৮/৪৭, ৭২/(২৬, ২৭), ৭৯/৪৪

حجب الغيب حتى عن الرسل

থ) গায়ব সম্পর্কে অজ্ঞতা রসূলদের বেলায়ও প্রযোজ্য

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৩/১৭৯, ৫/১৬, ৬/৫০, ৭/১৮৮, ১০/২০, ১১/(৩১, ৪৯), ১৯/৭৮, ২৭/৬৫, ৩৪/১৪, ৫২/৪১, ৫৩/৩৫, ৬৮/৪৭, ৭২/২৬

صبر الله على ما يسمعه من أذى

দ) আল্লাহ যা কিছু কষ্টদায়ক কথা শুনেন তার প্রতি তার ধৈর্যশীলতা

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/২৬, ১৩/৫, ১৬/(৫৪, ৫৭, ৬১, ৬২), ২৫/৭৭, ২৭/৭৩, ৩৭/(৪৯, ১৫০), ৪৩/(৩৩–৩৫)

تنزيه الله عن الشرك

ধ) শিরক হতে আল্লাহর পবিত্রতা

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ৬/১৬৩, ৭/১৯০, ৯/৩১, ১০/১৮, ১২/১০৮, ১৩/১৬, ১৬/(১, ৩), ১৭/৪৩, ১৮/৩৮, ২৭/৬৩, ২৮/৬৮, ৩০/(২৮, ৪০), ৩৪/(২২, ২৭), ৩৯/৬৭, ৫২/৪৩, ৫৯/২৩

رؤية أهل الجنة لله

ন) জান্নাতের অধিবাসীদের জন্য আল্লাহর দর্শন

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১০/২৬, ৩৬/৫৮, ৭৫/২৩

← চলমান পাতা

Contents

غنى الله عن خلقه

প) সৃষ্টিকুল হতে আল্লাহ মুখাপেক্ষীহীন

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৩/(৯৭, ১৭৭), ৪/(১৩১, ১৩৭), ৬/(১৪, ১৩৩), ১০/৬৮, ১৪/৮, ১৭/১১১, ১৮/৫১, ২২/৩৭, ২৫/২, ২৯/৬, ৩১/১২, ৩৫/১৫, ৩৯/৭, ৪৭/(৩২, ৩৬, ৩৮), ৪৯/১৭, ৫১/৫৭, ৫৫/২৯, ৫৭/২৪, ৬০/৬, ৬৪/৬

سعة علم الله

ফ) আল্লাহর 'ইল্‌মের বিশালতা

সর্বমোট ২৩১টি আয়াত ঃ ২/(২৯, ৩০, ৩১, ৩৩, ৭২, ৭৪, ৭৭, ৮৫, ১১৫, ১৪০, ১৪৯, ১৮১, ১৯৭, ২১৫, ২১৬, ২২০, ২৩১-২৩৩, ২৩৫, ২৫৫, ২৭০, ২৮২-২৮৪), ৩/(৭, ২৯, ৩৬, ৬৬, ৭৩, ১২০, ১২১, ১৫৪, ১৬৭), ৪/(৩২, ৪৫, ৬৩, ১০৮, ১১১, ১২৬, ১২৭, ১৪৮), ৫/(৭, ৮, ১৪, ৫৪, ৬১, ৭১, ৯৭, ৯৯, ১০৯, ১১৬), ৬/(৩, ৫৩, ৫৮-৬০, ৭৩, ৮০, ১০১, ১১৭, ১১৯, ১২৪, ১৩২), ৭/(৭, ৫২, ৮৯), ৮/(৬১, ৭৫), ৯/(৪২, ৭৮, ৯৪, ১১৫), ১০/(৩৬, ৬১), ১১/(৫, ৬, ৩১, ৪৬, ১১২, ১২৩), ১২/(১৯, ৩৭, ৭৬, ৭৭, ৮৬), ১৩/৮, ১৩/(৯, ১০, ৩৩, ৪২), ১৪/(৯, ৩৮, ৪২), ১৫/২৪, ১৬/(১৯, ২৩, ২৮, ৭০, ৭৪, ৭৭, ৯১, ১০১, ১২৫), ১৭/(৩০, ৩৬, ৫৪, ৫৫, ৬০, ৮৪, ৮৫), ১৮/(২২, ২৬, ৬৫, ৯১, ১০৯), ১৯/(৭০, ৯৪), ২০/(৭, ৫২, ৯৮, ১০৪, ১১০), ২১/(৪, ২৮, ৪৭, ৮১, ১১০), ২২/(৬৮, ৭০, ৭৬), ২৩/(১৭, ৫১, ৯২, ৯৬), ২৪/(১৯, ২৮, ২৯, ৩৫, ৪১, ৬৪), ২৫/(৬, ৫৮), ২৬/(১৮৮, ২২০), ২৭/(২৫, ৬৫, ৭৪, ৭৫, ৯৩), ২৮/(৩৭, ৫৬, ৬৯, ৮৫), ২৯/(৩, ১০, ১১, ৪২, ৪৫, ৫২, ৬২), ৩১/(১৬, ২৩), ৩২/৬, ৩৩/(২, ১৮, ৫১, ৫৪), ৩৪/(২, ৩, ১১, ৪৮), ৩৫/(৮, ১১, ৩৮), ৩৬/৭৬, ৩৯/(৭, ৪৬, ৭০), ৪০/১৯, ৪১/(৪৭, ৫৪), ৪২/(১২, ২৪, ২৫), ৪৩/(৮০, ৮৫), ৪৬/(৮, ২৩), ৪৭/(১৯, ২৬, ৩০), ৪৮/১৮, ৪৯/(১৬, ১৮), ৫০/(৪, ১৬, ৪৫), ৫৩/(৩০, ৩২), ৫৭/(৩, ৪, ৬), ৫৮/(৩, ৭), ৫৯/(১১, ২২), ৬০/(১, ১০), ৬২/৭, ৬৪/(৪, ১১, ১৮), ৬৫/১২, ৬৬/৩, ৬৭/(১৩, ১৪), ৬৮/৭, ৬৯/(১৮, ২৫), ৭২/৩৬, ৭৪/৩১, ৭৯/৮৪, ৮৪/২৩, ৮৫/২০, ৮৭/৭, ৯০/৭, ১০০/(১০, ১১)

مغفرة الله الواسعة

ব) আল্লাহর মাগফিরাতের বিশালতা

সর্বমোট ১৩৩টি আয়াত ঃ ২/(১৭৩, ১৮২, ১৯২, ১৯৯, ২১৮, ২২১, ২২৫, ২২৬, ২৩৫, ২৬৮, ২৮৪), ৩/(৩১, ১৩৩, ১৩৫, ১৩৬, ১৫৭), ৪/(২৩, ২৫, ৪৩, ৬৪, ৯৬, ৯৯, ১০০, ১০৬, ১১০, ১১৬, ১২৯, ১৫২), ৫/(৩, ৯, ১৮, ৩৪, ৩৯, ৪০, ৭৪, ৯৮, ১০১), ৬/(৫৪, ১৪৫, ১৬৫), ৭/(১৫৩, ১৫৫, ১৬৭), ৮/(২৯, ৩৩, ৬৯, ৭০, ৭৪), ৯/(৫, ৯১, ৯৯, ১০২), ১০/১০৭, ১১/(৩, ১১, ৪১, ৯০), ১২/৯৮, ১৪/৩৬, ১৫/৪৯, ১৬/(১৮, ১১০, ১১৫, ১১৯), ১৭/(২৫, ৪৪), ১৮/৫৮, ২০/৮২, ২২/(৫০, ৬০), ২৪/(৫, ২২, ২৬, ৩৩, ৬২), ২৫/(৬, ৭০), ২৭/(১১, ৪৬), ২৮/১৬, ৩৩/(৫, ২৪, ৩৫, ৫০, ৫৯, ৭১, ৭৪), ৩৪/(২, ৪, ১৫), ৩৫/(৭, ২৮, ৩৪, ৪১), ৩৬/(১১, ২৭), ৩৮/২৫, ৩৯/(৫, ৫৩), ৪০/(৩, ৪২), ৪১/(৬, ৩২, ৪৩), ৪২/(৫, ২৩), ৪৬/(৮, ৩১), ৪৭/১৫, ৪৮/(২, ১৪, ২৯), ৪৯/(৩, ১৪), ৫৩/৩২, ৫৭/(২০, ২১, ২৮), ৫৮/(২, ১২), ৬০/(৭, ১২), ৬১/১২, ৬৪/(১৪, ১৭), ৬৬/১, ৬৭/(২, ১২), ৭১/(৪, ১০), ৭৩/২০, ৭৪/৫৬, ৮৫/১৪

رحمة الله الواسعة

ভ) আল্লাহর রহমাতের বিশালতা

সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ১/(১, ৩), ৩/(৮, ১০৭, ১৫২, ১৫৯), ৪/(২৮, ৮৩, ৯৬, ১০৬, ১১০, ১৫২), ৫/(৩৪, ৩৯), ৬/(১২, ১৬, ১৪৭), ৭/(৭২, ১৫১, ১৫৩, ১৫৬), ৯/৯৯, ১১/৫৮, ১২/(৫৩, ৬৪), ১৭/(৫৭, ৮৭), ১৮/(৫৮, ৭৯, ৮০, ৯৮), ২৮/৮৬, ২৯/৫১, ৩০/(৪৬, ৪৯), ৪২/৩০, ৪৩/১৩, ৪৮/৪, ৭৬/৩১

← চলমান পাতা

وفاء الله بعهده

ম) আল্লাহর অঙ্গীকার পূরণ

সর্বমোট ৬৮টি আয়াত ঃ ২/(৪০, ৮০), ৩/(১৫২, ১৯৪), ৪/(৪৭, ৮৭, ১২২), ৬/(১১৫, ১৩৪), ৭/১৪৪, ৯/১১১, ১০/(৪, ৫৫, ৬৪), ১১/১১৯, ১৩/৩১, ১৪/(২২, ৪৭), ১৫/৪১, ১৬/৩৮, ১৭/১০৮, ১৮/(২১, ৯৮), ১৯/৬১, ২১/(৯, ৯৭, ১০৩, ১০৪), ২২/৪৭, ২৫/(১৫, ১৬), ২৬/২০৬, ২৮/(১৩, ৬১), ৩০/(৬, ৬০), ৩১/৯, ৩১/৩৩, ৩৩/২২, ৩৬/(৫২, ৬৩), ৩৮/৫৩, ৩৯/(২০, ৭৪), ৪০/(৮, ৫৫, ৭৭, ৭৮), ৪১/৩০, ৪৩/(৪২, ৮৩), ৪৫/৩২, ৪৬/(১৬, ১৭, ২৪, ৩৫), ৪৮/২০, ৫০/(১৪, ২০, ৩২), ৫১/(৫, ২৩), ৫২/(৭, ৮), ৭০/(৪২, ৪৪), ৭৩/১৮, ৭৭/৭

قدرة الله تعالى

য) আল্লাহর কুদরত

সর্বমোট ২৪০টি আয়াত ঃ ২/(৭৩, ১০৬, ১০৯, ১৪৮, ২৪৩, ২৫৯, ২৮৪), ৩/(৬, ২৭, ২৯, ৪০, ৪৭), ৪/(৩০, ৮৪, ১৩৩, ১৬৯), ৫/(১৭, ১৯, ৪০, ১২০), ৬/(৬, ১৭, ৩৭, ৩৮, ৬৪, ৬৫, ৯৫, ৯৮, ৯৯, ১০১, ১০২, ১৩৪, ১৪০), ৭/(৪, ৫, ৫৪), ৮/৫৯, ৯/(৩৯, ১১৬), ১০/(৩১, ৩৪, ৪৯), ১১/(৫৬, ৭২, ৭৩, ৮২), ১৩/(২, ৩, ৫, ১২, ১৩), ১৪/(২০, ৩৩, ৩৯), ১৫/(২৬, ২৭), ১৬/(৮, ১৬, ৪০, ৪৬, ৬৫–৭০, ৭৭, ৭৯), ১৭/(৬, ১২, ১৬, ৫০, ৫১, ৬০, ৬৬, ৬৮, ৬৯, ৮৬, ৯৯, ১০৪, ১০৮), ১৮/(৮, ১২, ১৮, ১৯, ৪০–৪২, ৪৫, ৪৭, ৪৮), ১৯/(৮, ৯, ২১, ৬৭, ৯৮), ২০/(২০–২২, ৫৩, ৬৯, ১০৫–১০৭, ১২৮), ২১/(১১, ৩০–৩২, ৪৪, ৪৭, ১০৪), ২২/(৬, ৩৯, ৬৬, ৭০), ২৩/(১৮, ৯৫), ২৪/৪৫, ২৫/(২, ৪৫–৪৯, ৫৩, ৫৪), ২৬/(৪, ৭), ২৮/৮২, ২৯/(১৯, ২০, ৪৪, ৬১), ৩০/(৪, ১১, ১৯, ২৫, ২৭, ৫০, ৫৪), ৩১/(১০, ১৬, ২৮), ৩২/৭, ৩৩/(১৭, ১৯, ২৭), ৩৪/৯, ৩৫/(১, ১১, ১২, ১৬, ১৭, ২৭, ৪১, ৪৪), ৩৬/(৯, ৩৭, ৮১, ৮২), ৩৯/(২১, ৫১, ৬৭), ৪০/(৫৭, ৬৮), ৪১/(৯, ১৫, ৩৯), ৪২/(১২, ৩২, ৩৩, ৩৪), ৪৩/(১০–১২, ৪২), ৪৪/৩৮, ৪৫/(২২, ২৬), ৪৬/(৩, ৩২, ৩৩), ৪৮/(১১, ২১), ৫০/(৬, ৯, ১৫, ৩৮, ৪৩, ৪৪), ৫১/(৩০, ৪৭–৪৯), ৫৩/(৪৩–৪৬), ৫৪/৫০, ৫৫/(১৯, ২০), ৫৬/(৫৯, ৬০, ৬১, ৬৪, ৬৫, ৬৯, ৭২, ৮৪, ৮৫), ৫৭/২২, ৫৮/১০, ৫৯/৬, ৬০/৬০, ৬৪/(১, ৭), ৬৫/১২, ৬৬/৮, ৬৭/(১, ১৬, ১৭, ১৯, ৩০), ৭০/(৪০, ৪১), ৭২/১২, ৭৫/(৪, ৪০), ৭৭/৩৮, ৭৯/২৭, ৮৫/১৩, ৮৬/৮, ৮৮/(১৭–২০), ৯২/১৩

مشيئة الله تعالى

র) আল্লাহর ইচ্ছা

সর্বমোট ১৬০টি আয়াত ঃ ২/(২০, ৯০, ১০৫, ১৪২, ২১২, ২১৩, ২২০, ২৪৭, ২৫১, ২৫৩, ২৫৫, ২৬১, ২৬৯, ২৭২, ২৮৪), ৩/(৬, ১৩, ২৬, ২৭, ৩৭, ৪০, ৪৭, ৭৩, ৭৪, ১৭৯), ৪/(৪৯, ৯০, ১১৬), ৫/(১৭, ১৮, ৪০, ৪৮, ৫৪, ৬৪), ৬/(৩, ৩৯, ৪১, ৮০, ৮৩, ৮৮, ১০৭, ১১১, ১১২, ১২৫, ১২৮, ১৩৩, ১৩৭, ১৪৮, ১৪৯), ৭/(৮৯, ১০০, ১২৮, ১৫৫, ১৫৬, ১৭৬, ১৮৮), ৯/(১৫, ২৭, ২৮, ১০৬), ১০/(১৬, ২৫, ৪৯, ৯৯, ১০৭), ১১/(৩৩, ১০৭, ১০৮, ১১৮), ১২/(৫৬, ৭৬, ৯৯, ১০০, ১১০), ১৩/(১৩, ২৭, ৩১, ৩৯), ১৪/(৪, ১১, ১৯, ২৭), ১৬/(২, ৯, ৩৫, ৯৩), ১৭/(৫৪, ৮৬), ১৮/(২৪, ৩৯), ২২/(৫, ১৮), ২৪/(২১, ৩৫, ৩৮, ৪৩, ৪৫, ৪৬), ২৫/১০, ২৬/৪, ২৭/৮৭, ২৮/(৫৬, ৬৮, ৮২), ২৯/(২১, ৬২), ৩০/(৫, ৩৭, ৪৮, ৫৪), ৩৩/২৪, ৩৪/(৩৬, ৩৯), ৩৫/(১, ৮, ১৬, ২২), ৩৬/(৪৩, ৪৭, ৬৬, ৬৭), ৩৯/(৪, ২৩, ৫২, ৬৮), ৪০/১৫, ৪২/(৮, ১২, ১৩, ১৯, ২০, ২৭, ২৯, ৩৩, ৪৯–৫২), ৪৩/(২০, ৬০), ৪৭/(৪, ৩০), ৪৮/(১৪, ২৫), ৫৩/২৬, ৫৬/৬৫, ৬৫/৭০, ৫৭/(২১, ২৯), ৫৯/৬, ৬২/৪, ৭৪/(৩১, ৫৬), ৭৬/(২৮, ২৮, ৩০, ৩১), ৮০/২২, ৮১/২৯, ৮২/৮, ৮৭/৭

← চলমান পাতা

إرادة الله تعالى

ল) আল্লাহর ইরাদা

সর্বমোট ৩১টি আয়াত ঃ ২/(১১৭, ১৮৫, ২৫৩), ৩/(৪৭, ৫৯, ১৭৬), ৪/(২৬-২৮), ৫/(১, ৬, ৪৯), ৬/১২৫, ৮/৭, ৯/(৫৫,৮৫), ১১/(৩৪, ১০৭), ১৬/৪০, ১৭/(৫, ১৮), ১৯/৩৫, ২২/(১৪, ১৬, ৬৫), ৩৫/২, ৩৬/৮২, ৩৯/(৪, ৩৮), ৪০/৬৮, ৮৫/১৬

كلام الله تعالى

শ) আল্লাহর কথোপকথন

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/(১৭৪, ২৫৩), ৪/১৬৪, ৬/৩০, ৭/(১৪৩, ১৪৪), ২০/(১১, ১২, ৮৩, ৮৪), ২৭/(৮, ৯, ১১), ২৮/(৩০-৩২, ৩৪, ৪৬), ৩১/২৭, ৩৭/১০৪, ৭৯/(১৬, ১৯)

سمع الله تعالى

ষ) আল্লাহর শ্রবণশক্তি

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/২৫৬, ৪/(১৩৪, ১৪৮), ৮/৬১, ১৪/৩৯, ২০/৪৬, ২২/(৬১, ৭৫), ২৪/(২১, ৬০), ২৬/(১৫, ২২০), ৩১/২৮, ৫৮/১

بصر الله تعالى

স) আল্লাহর দৃষ্টিশক্তি

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/১৩৪, ২০/৪৬, ২৬/২১৮, ৯৬/১৪

الله لا يرى في الدنيا

হ) পার্থিব জগতে আল্লাহর দর্শন অসম্ভব

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/১৪৩, ২৫/২১

ما يذكر في أسماء الله

১/৩। আল্লাহর নাম সম্পর্কিত বর্ণনা

السؤال بأسماء الله تعالى

ক) আল্লাহর নামে যাচঞা করা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/২৬, ৫/১১৪, ৭/১৮০, ১৭/১১০

دعوة الله بأسمائه الحسنى

খ) আল্লাহকে তার সুন্দর নামে ডাকা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/১৮০, ১৭/১১০, ৫৯/২৪

الإلحاد في أسماىٔ الله تعالى

গ) আল্লাহর নামসমূহের বিকৃতি সাধন-৭/১৮০

أسماىٔ الله كلها حسنى

গ) আল্লাহর সমস্ত নাম সুন্দর-২০/৮

ذكر أسماىٔ الله الحسنى

ঘ) আল্লাহর সুন্দর নামসমূহের বর্ণনা ঃ

الرب - الله الأول - الله الأخر - الله البارئ - الله الباطن - الله البديع - الله البر - البصير - الله التواب - الله الجامع - الله الجبار - الله الحسيب - الله الحفيظ - الله الحق - الله الحكيم - الله الحليم - الله الحميد - الله الحي - الله الخالق - الله الخبير - الله ذو الجلال والإكرام - الله ذو الطول - الله ذو

← চলমান পাতা

الفضل – الله الرؤوف – الله الرحمن – الرحيم – الله لارزاق – الله الرقيب – الله السلام – الله السميع – الله الشكور – الله الشهيد – الله الصمد – الله الظاهر – الله العفو – الله علام الغيوب – الله العلي – الله العليم – الله الغفار – الله الغفور – الله الغني – الله الفتاح – الله القادر – الله القاهر – الله القدوس – الله القدير – الله القريب – الله القهار – الله الحكم – الله القوي – الله القيوم– الله الكبير– الله الكريم– الله اللطيف – الله المؤمن – الله المتعالي – الله المتكبر – الله المتين – الله المجيب – الله المجيد – الله المحصي – الله المحيي والمميت – الله المصور – الله المقتدر – الله المقيط – الله مالك الملك – الله المبين – الله المحيط – الله الملك – الله المليك – الله المنتقم – الله المهيمن – الله المولى – الله نور – الله الهـادي – الله الواحـد – الله الوارث – الله الواسع – الله الودود – الله الوكيل – الله الولي – الله النصير – الله الوهاب

(১) রব্ব– ৮৪১টি আয়াত। (২) আল-আউয়াল– ৫৭/৩, (৩) আল-আখির– ৫৭/৩, (৪) আল-বারিয়ু– ৫৯/২৪, (৫) আল-বাতিন– ৫৭/৩, (৬) আল-বাদি'– ২/১১৭, ৬/১০১, (৭) আল-বাররু– ৫২/২৮, (৮) আল-বাসির– ৪২টি আয়াত (৯) আত-তাওয়াব– ১১টি আয়াত (১০) আল-জামি'– ৩/৯, ৪/১৪০, (১১) আল-জাব্বার– ৫৯/২৩, (১২) আল-হাসিব– ৪/(৬, ৮৬), ৩৩/৩৯, (১৩) আল-হাফিয– ১১/৫৭, ৩৪/২১, ৪২/৬, (১৪) আল-হাক্ক– ৬/৬২, ১০/(৩০, ৩২), ১৮/৪৪, ২০/১১৪, ২২/(৬, ৬২), ২৩/১১৬, ২৪/২৫, ৩১/৩০, (১৫) আল-হাকীম– ৯২টি আয়াত [সর্বোচ্চ সূরাহ আন,নিসায় ১২ বার] (১৬) আল-হালীম– ১১ বার (১৭) আল-হামীদ– ১৭ বার (১৮) আল-হাইয়ু– ২/২৫৫, ৩/২, ২০/১১১, ২৫/৫৮, ৪০/৬৫, (১৯) আল-খালিক্ব– ১২ বার (২০) আল-খাবীর– ৪৪ বার (২১) যুল জালালি ওয়াল ইকরাম– ৫৫/২৭, ৫৫/৭৮, (২২) যুত্-তাউল– ৪০/৩, (২৩) যুল-ফায্ল– ২৪ বার (২৪) যুল-মা'আরিজ– ৭০/৩, (২৫) আর্-রউফ– ২/(১৪৩, ২০৭), ৩/৩০, ৯/১১৭, ১৬/(৭, ৪৭), ২২/৬৫, ৩৪/২০, ৫৭/৯, ৫৯/১০, (২৬) আর-রহমান– ৫৬ বার (২৭) আর-রহীম– ১১৬ বার [সর্বোচ্চ সূরা আল-বাক্বারায় ১২ বার, আন-নিসায় ১১ বার] (২৮) আর-রায্যাক– ১৪ বার (২৯) আর-রাক্বীব– ৪/১, ৫/১১৭, ৩৩/৫২, (৩০) আস-সালাম– ৫৯/২৩, (৩১) আস-সামী'– ৪৫ বার (সর্বোচ্চ আল-বাক্বারায় ৭ বার] (৩২) আশ্-শাকুর– ২/১৫৮, ৪/১৪৭, ৩৫/(৩০, ৩৪), ৪২/২৩, ৬৪/১৭ (৩৩) আশ-শাহীদ– ১৯ বার (৩৪) আস্-সমাদ– ১১২/২, (৩৫) আয্-যহির– ৫৭/৩, (৩৬) আল-আযীয– ৮৯ বার (সর্বোচ্চ আশ্-শু'আরায় ৯ বার] (৩৭) আল-আযীম– ২/২৫৫, ৪২/৪, ৫৬/(৭৪, ৯৬), ৬৯/(৩৩, ৫২), (৩৮) আল-'আফুব্বু– ১১ বার (৩৯) 'আল্লামুল গুয়ূব– ৫/১০৯, ৫/১১৬, ৯/৭৮, (৪০) 'আলীয়ু– ২/২৫৫, ৪/৩৪, ২২/৬২, ৩১/৩০, ৩৪/২৩, ৪০/১২, ৪২/(৪, ৫১), ৮৭/১, (৪১) আল-'আলীম– ১৫৭ বার [সূরাহ আল-বাক্বারায় ২১ বার, আন-নিসায় ১৭ বার] (৪২) আল-গাফফার– ২০/৮২, ৩৮/৬৬, ৩৯/৫, ৪০/(৩, ৪২), ৭১/১০, (৪৩) আল-গফুর– ৯৩ বার [সূরাহ আন-নিসায় ১২ বার, আল-বাক্বারায় ৮ বার] (৪৪) আল-গানিয়ু– ১৮ বার (৪৫) আল-ফাত্তাহ– ৭/৮৯, ৩৪/২৬, (৪৬) আল-ক্বাদির– ৬/(৩৭, ৬৫), ১৭/৯৯, ২৩/(১৮, ৯৫), ৩৬/৮১, ৭০/৪০, ৭৫/৪, ৭৭/২৩, ৮৬/৮, (৪৭) আল-ক্বাহির– ৬/৬১, (৪৮) আল-কুদ্দুস– ৫৯/২৩, ৬২/১, (৪৯) আল-ক্বাদীর– ৪৬ বার [সর্বোচ্চা সূরাহ বাক্বারায় ৭ বার] (৫০) আল-ক্বারীব– ২/১৮৬, ১১/৬১, ৩৪/৫০, (৫১) আল-কাহ্হার– ৬/১৮, ১২/৩৯, ১৩/১৬, ১৪/৪৮, ৩৮/৬৫, ৩৯/৪, ৪০/১৬, (৫২) আল-হাকাম– ৬/৫৭, ৬/৬২, ৭/৮৭, ১২/৪০, ১২/৬৭, ২৮/৭০, ২৮/৮৮, ৪০/১২, (৫৩) আল-ক্বাওয়্যি– ১১ বার (৫৪) আল-ক্বাইয়ুম– ২/২৫৫, ৩/২, ২০/১১১, (৫৫) আল-কাবীর– ৪/৩৪, ১৩/৯, ২২/৬২, ৩১/৩০, ৩৪/২৩, ৪০/১২, (৫৬) আল-কারীম– ৪/৪০, ২৭/৪০, ৮২/৬, ৯৬/৩, (৫৭) আল-লাতীফ– ৬/১০৩, ১২/১০০, ২২/৬৩, ৩১/১৬, ৩৩/৩৪, ৪২/১৯, ৬৭/১৪, (৫৮) আল-মু'মিন– ৫৯/২৩, (৫৯) আল-মুতা'আলী– ৭/১৯০, ১০/১৮, ১৩/৯, ১৬/১, ২০/১১৪, ২৩/১১৬, ২৭/৬৩, ২৮/৬৮, ৩০/৪০, ৩৯/৬৭, (৬০) আল-মুতাকাব্বির– ৫৯/২৩, (৬১) আল-মাতীন– ৫১/৫৮, (৬২) আল-মুজীব– ১১/৬১, (৬৩) আল-মাজীদ– ১১/৭৩,

← চলমান পাতা

৮৫/১৫, (৬৪) আল-মু'মিন– ১৯/৯৪, (৬৫) আল-মাহইয়া ওয়াল মামাত– ২৩ বার (সর্বোচ্চ সূরা বাক্বারায় ৬ বার] (৬৬) আল-মুসাইয়্যির– ২০/৫০, ৫৯/২৪, (৬৭) আল-মুক্তাদির– ১৮/৪৫, ৪৩/৪২, ৫৪/৪২, ৫৪/৫৫, (৬৮) আল-মুকীত– ৪/৮৫, (৬৯) মালিকাল মুল্‌ক– ১/৪, ২/১০৭, ৩/২৬, ৭/৫৪, ৭/৬১, ১৩/৩১, (৭০) আল-মুবীন– ২৪/২৫, (৭১) আল-মুহীত্ব– ২/১৯, ৩/১২০, ৪/১০৮, ৪/১২৬, ৮/৪৭, ১১/৯২, ১৯/৯৪, ৪১/৫৪, ৮৫/২০, (৭২) আল-মালিক– ১/৪, ২০/১১৪, ২৩/১১৬, ৫৯/২৩, ৬২/১, ১১৪/২, (৭৩) আল,মালীক– ৫৪/৫৫, (৭৪) আল-মুন্তাকিম– ৩/৪, ৫/৯৫, ৩২/২২, ৪৩/৪১, ৪৪/১৬, ৬৯/(৫, ৬, ১০), ৯১/১৪, (৭৫) আল-মুহাইমিন– ৫৯/২৩, (৭৬) আল-মাওলা– ২/২৮৬, ৩/১৫০, ৬/৬২, ৮/৪০, ৯/৫১, ১০/৩০, ২২/৭৮, ৪৭/১১, ৬৬/(২, ৪), (৭৭) আন-নূর– ২৪/৩৫, (৭৮) আ-হাদী– ৩/৭৩, ১৭/৯৭, ২২/৫৪, ২৫/৩১, ২৮/(৫০, ৫৬), (৭৯) আল-ওয়াহিদ– ২১ বার (৮০) আল-ওয়ারিস ১৫/২৩, ২১/৮৯, ২৮/৫৮, (৮১) আল-ওয়াসি'– ২/(১১৫, ২৪৭, ২৬১, ২৬৮), ৩/৭৩, ৪/১৩০, ৫/৫৪, ২৪/৩২, ৫৩/৩২, (৮২) আল-ওয়াদুদ– ১১/৯০, ৮৫/১৪, (৮৩) আল-ওয়াকিল– ১৪ বার (৮৪) আল-ওয়ালি– ৩০ বার (৮৫) আন-নাসীর– ১২ বার (৮৬) আল-ওয়াহ্হাব– ৩/৮, ৩৮/(৯, ৩৫)।

الإيمان بالملائكة

২। ফেরেশতাদের প্রতি ঈমান

وجوب الإيمان بالملائكة

২/১। ফেরেশতাগণের প্রতি ঈমান আনার অপরিহার্যতা

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(৩, ৯৮, ১৭৭, ২৮৫), ৪/(১৩৬, ১৩৭, ১৬৪)

صفة الملائكة

২/২। ফেরেশতামণ্ডলীর গুণাবলী

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৬/৬১, ১১/৭০, ১৩/১৩, ১৫/৬২, ১৬/(৪৯, ৫০), ২১/(২, ২৮), ৩৫/১, ৩৭/(১, ১৬৪–১৬৬), ৪২/৫, ৫১/২৪, ৮০/১৬, ৮১/১৯, ৮২/১১

دعاء الملائكة للمسلمين

২/৩। মুসলিমদের জন্য ফেরেশতামণ্ডলীর দু'আ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১১/৭৩, ৩৩/(৪৩, ৫৬), ৪২/৫

اجتماع ملائكة الليل والنهار

২/৪। রাত ও দিনের ফেরেশতামণ্ডলীর সম্মিলন–১৭/৭৮

مشاركة الملائكة المؤمنين في القتال

২/৫। মুমিনদের সঙ্গে ফেরেশতামণ্ডলীর কিতালে অংশগ্রহণ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/(১২৪, ১২৫), ৮/(৯, ১০, ১২), ৯/২৬, ৩৩/৯

وظائف الملائكة

২/৬। ফেরেশতামণ্ডলীর দায়িত্ব ও কর্তব্য

সর্বমোট ১২১টি আয়াত ঃ ২/(৩০, ১০২, ২৪৮), ৩/(১৮, ৩৯, ৪২, ৪৫, ১২৪), ৪/(৯৭, ১৬৬), ৬/(৬১, ৯২, ১৫৮), ৭/(৩৭, ৪৩, ২০৬), ৮/৫০, ৯/৪০, ১০/২১, ১১/(৬৯, ৭০, ৭৭, ৮১), ১৩/(১১, ১৩, ২৩, ২৪), ১৫/(৮, ৪৬, ৫২–৫৫, ৫৭, ৫৮, ৬১, ৬৩–৬৫, ৭৩, ৭৪), ১৬/(২, ২৮, ৩২, ৩৩, ৪৯, ৫০), ১৯/(১৭, ১৯, ৬৪), ২১/(১৯, ২০, ২৭, ১০৩), ২২/৭৫, ২৫/(২৫, ৭৫), ২৯/(৩১–৩৩), ৩২/১১,

← চলমান পাতা

৩৩/৪৩, ৩৫/১, ৩৭/(১- ৩, ১৬৫, ১৬৬), ৩৯/৭৫, ৪০/৭, ৪১/(৩০, ৩১, ৩৮), ৪২/(৫, ৫১), ৪৩/(১৯, ৮০), ৪৪/(৪৭, ৪৮), ৪৭/২৭, ৫০/(১৬-১৮, ২১, ২৩, ২৪, ৪১), ৫১/(৪, ২৪, ২৮, ৩১-৩৩), ৫৪/(৬, ৫৩), ৬৬/(৪, ৬), ৬৯/১৭, ৭২/২৭, ৭৪/(৩০, ৩১), ৭৭/(১-৬), ৭৮/৩৮, ৭৯/(১-৫), ৮০/১৫, ৮২/(১০-১২), ৮৩/২১, ৮৬/৪, ৯৬/১৮, ৯৭/৪

جبريل عليه السلام

জিবরীল আলাইহিস সালাম

مهمة جبريل ووظيفته

ক) জিবরীল আলাইহিস সালামের দায়িত্ব ও কার্যক্রম

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(৯৭, ২৫৩), ৫/১১০, ১৬/১০২, ৮১/১৯

صفة جبريل عليه السلام

খ) জিবরীল আলাইহিস সালামের গুণাবলী

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২৬/১৯৩, ৫৩/৬, ৮১/(১৯-২১)

عداوة اليهود لجبريل

গ) জিবরীলের প্রতি ইয়াহূদীদের শত্রুতা।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(৯৭, ৯৮)

ملاقاة جبريل مع النبي

ঘ) নাবী (ﷺ)-এর সাথে জিবরীলের সাক্ষাৎ

لقاء جبريل في بدء الوحي

ঘ/(১) ওয়াহীর প্রারম্ভে জিবরীলের সাক্ষাৎ

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২৬/১৯৩, ৭৩/১, ৭৪/১, ৮১/২৩, ৯৬/(১-৫)

تعليم جبريل النبي أمور الدين

ঘ/(২) জিবরীল কর্তৃক নাবী (ﷺ)-কে দীন সম্পর্কীয় জ্ঞান প্রদান

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২০/১১৪, ৫৩/৫

الإيمان بالكتب

৩। আসমানী কিতাবের প্রতি ঈমান

وجوب الإيمان بالكتب وفضله

৩/১। আসমানী কিতাবসমূহের প্রতি ঈমান আনার অপরিহার্যতা ও তার ফাযীলাত

সর্বমোট ২৭টি আয়াত ঃ ২/(৩, ৪, ২৭, ১৩৬, ১৭৬, ১৭৭, ২৮৫), ৩/(৭, ৫৩, ৮৪, ১১৯), ৪/১৩৬, ৫/(৪৪, ৪৬, ৪৭, ৫৯, ৬৬, ৬৮, ৮১), ৬/(১৫৪, ১৫৬), ১৭/২, ২৯/৪৬, ৫৭/২৭, ৬৪/৮, ৮৭/(১৮, ১৯)

تصديق الكتب بعضها بعضا

আসমানী কিতাবগুলোর একে অপরের সত্যতার স্বীকৃতি প্রদান

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(৪, ৪১, ৮৯, ৯১, ৯৭, ১০১), ৩/(৩, ৫০, ৮১), ৪/৪৭, ৫/(৪৬, ৪৮), ৬/৯২, ৭/১৫৭, ৯/১০১, ১০/৩৭, ১২/১১২, ২১/(২৪, ১০৫), ২৭/৭৬, ৩৫/৩১, ৩৭/৩৭, ৪২/১৩, ৪৬/(১০, ১২, ৩০), ৬১/৬, ৮৭/(১৮, ১৯)

← চলমান পাতা

تحريف الكتب السماوية

আসমানী কিতাবে বিকৃতি সাধন

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(৭৫, ৭৯, ১৭৪), ৩/৯৩, ৬/৯১, ৩০/৩২

حفظ القرآن من التحريف

বিকৃতি হতে আল-কুরআনের নিরাপদ থাকা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৫/৯, ১৮/২৭, ২২/৫২, ৭৫/১৯, ৮৫/২২

الحكمة من نزول الكتب السماوية

আসমানী কিতাবসমূহের অবতরণের হিকমাত

সর্বমোট ৯৮টি আয়াত ঃ ২/(২, ৯৭, ১২৯, ১৮৫, ২১৩, ২৩১, ২৪২, ৩/(৪, ১০১, ১০৩, ১০৮, ১৩৮, ১৬৪), ৪/(১০৫, ১৭৪), ৫/(১৬, ৪৬), ৬/(১৯, ৫১, ৫৫, ৭০, ৯০, ১৫৪, ১৫৭), ৭/(২, ৩৫, ৫২, ১৪৫, ১৫৪, ১৭৪, ২০৩), ৯/৩৩, ১০/৫৭, ১১/১৭, ১২/(২, ১০৪, ১১১), ১৪/১, ১৬/(৪৪, ৬৪, ৮৯, ১০২), ১৭/(২, ৪১), ১৮/২, ১৯/৯৭, ২০/২, ৩০/(৩, ৯৯, ১১৩), ২১/(১০, ৪৮, ১০৬), ২২/১৬, ২৩/৪৯, ২৪/(১, ৩৪), ২৫/(১, ৩৩, ৫০), ২৬/২০৯, ২৭/২, ২৮/(২, ৪৩, ৮৬), ২৯/৫১, ৩১/৩, ৩২/(৩, ২৩), ৩৪/৫০, ৩৬/(৬, ৭০), ৩৮/(২৯, ৮৭), ৩৯/(২৮, ৭১), ৪০/(৫৩, ৫৪), ৪৩/(৩, ৪৪), ৪৪/৫৮, ৪৫/১১, ৪৬/১২, ৫০/৫৪, ৫৪/(১৭, ২২, ৩২, ৪০), ৬৫/(১০, ১১), ৬৮/৫২, ৬৯/৪৮, ৭৩/১৯, ৭৪/৫৪, ৭৬/২৯, ৮০/(১১, ১২), ৮১/২৭

موقف الناس من الكتب السماوية

আসমানী কিতাব সম্পর্কে মানুষের চিন্তাধারা

সর্বমোট ১৩৫টি আয়াত ঃ ২/(১৭০, ১৭৬, ২১৩), ৩/(৪, ৭, ১৯, ২৩, ৭৮, ১৮৪), ৪/(৫৫, ৫৬, ১৪০), ৫/(১০, ৮৬), ৬/(৭, ২৫, ৪৯, ৬৬, ৭০, ৮৯, ৯১, ১৫০, ১৫৭), ৭/(৯, ৩৬, ৪০, ১৪৬, ১৫৭, ১৬৯, ১৭০, ১৭৭, ১৮২), ৮/(২, ৩১), ৯/(৯, ৬৫, ১২৪, ১২৫, ১২৭), ১০/(১৫, ১৭, ৩৮-৪০, ৯৫), ১৩/(১, ১৯, ৩৬), ১৫/৯১, ১৬/(২৪, ৩০, ১০৩-১০৫), ১৮/(৫৬, ৫৭), ১৯/৭৩, ২১/(৫০, ৯৩), ২২/৭২, ২৩/(৫৩, ৬৬, ৭০, ৭১, ১০৫), ২৫/৩০, ২৬/(৫, ১৯৮-২০১), ২৮/(৪৯, ৫০, ৫২), ৩০/(১০, ৩২), ৩১/(৬, ৭, ২১), ৩২/৩, ৩৪/(৩১, ৪৩), ৩৫/(২৫, ৪৩), ৩৭/১৫, ৩৯/(৩২, ৫৯), ৪০/৭০, ৪১/(২৬, ৪০, ৪১, ৪৪, ৪৫, ৫২), ৪৩/(২৪, ৭৮), ৪৪/৯, ৪৫/(৬, ৮, ৯, ২০, ২৫, ৩১, ৩৫), ৪৬/(৭, ৮, ১০, ১১), ৪৭/৯, ৫০/(৫, ১২, ১৪), ৫১/৮, ৫২/৩৩, ৫৩/(৫৯, ৬০, ৬১, ১০৩), ৫৬/৮১, ৫৭/১৬, ৬২/৫, ৬৩/১০, ৬৮/(১৫, ৪৪, ৫১), ৬৯/৪৯, ৭৪/(১৬, ১৮, ২১-২৫, ৪৯), ৭৮/২৮, ৮৩/১৩

الإيمان بالرسل

৪। রসূলগণের প্রতি ঈমান

وجوب الإيمان بالرسل

৪/১। রসূলগণের প্রতি ঈমান আনার অপরিহার্যতা

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/(৩, ৮৭, ৯৮, ১৩৩, ১৩৬, ১৩৭, ১৭৭, ২৮৫), ৩/(৫৩, ৮৪, ১৭৯), ৪/(১৩৬, ১৫০, ১৫২, ১৭১), ৫/(১২, ১১১), ৭/৭৫, ২৩/৪৪, ৫৭/(১৯, ২১)

وجوب طاعة الرسل

৪/২। রসূলগণের আনুগত্যের অপরিহার্যতা

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/(৩২, ৫০, ১৩২), ৪/৮০, ৫/৯২, ৯/৬২, ২৬/(১৬৩, ১৭৯)

عدم التفضيل بين الأنبياء

← চলমান পাতা

৪/৩। নাবীগণের মধ্যে মর্যাদায় সমতা রক্ষা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(১৩৬, ২৮৫), ৩/৮৪, ৪/(১৫০, ১৫২)

الإيمان باليوم الآخر

৫। শেষ দিবসের প্রতি ঈমান

وجوب الإيمان باليوم الآخر

৫/১। শেষ দিবসের প্রতি ঈমান আনার অপরিহার্যতা

সর্বমোট ৩২টি আয়াত ঃ ১/৪, ২/(৩, ৪, ৪৬, ৬২, ১২৬, ১৭৭), ৩/(৯, ২৫, ১১৪), ৪/(৩৮, ৩৯, ৫৯, ১৩৬, ১৬২), ৬/(১১৩, ১৫০, ১৫৪), ৭/(৪৫, ১৪৭), ৯/(১৮, ১৯, ২৯, ৯৯), ১৩/(২, ৫), ২৭/৩, ৩১/৪, ৩৩/২১, ৫৬/২, ৭০/২৬, ৯২/৬

أسماء يوم القيامة

৫/২। কিয়ামাত দিবসের নামসমূহ

সর্বমোট ৭৪টি আয়াত ঃ ১/৪, ৪/(৩৮, ৩৯, ৮৭, ১৩৬, ১৬২), ৫/(৩৩, ৪১, ৬৯), ৬/(১৫, ৩১, ৪০, ১১৩), ৯/২৯, ১০/১৫, ১৯/৩৯, ২২/(১, ৫৫), ২৫/১১, ৩০/(১২, ১৪, ৫৫, ৫৬), ৩১/৩৪, ৩৩/৬৩, ৩৪/৩, ৩৭/(২০, ২১), ৩৮/(১৬, ২৬, ৫৩, ৭৮), ৪০/(১৫, ১৮, ২৭, ৩২), ৪২/(৭, ১৮), ৪৩/(৬১, ৬৬, ৮৫), ৪৪/৪০, ৪৫/(২৭, ৩২), ৫০/২০, ৫১/(৬, ১২), ৫৩/৫৭, ৫৪/৪৬, ৫৬/(১, ৫৬), ৬৪/৯, ৬৯/(১-৪, ১৫), ৭০/২৬, ৭৪/৪৬, ৭৭/(১৩, ১৪, ৩৮), ৭৮/১৭, ৭৯/৩৪, ৮০/৩৩, ৮২/(১৫, ১৭, ১৮), ৮৩/১১, ৮৫/২, ৮৮/১, ১০১/(১-৩)

الإعداد ليوم القيامة

৫/৩। কিয়ামত দিবসের জন্য প্রস্তুতি

সর্বমোট ৬৬টি আয়াত ঃ ২/(৪৮, ১১০, ১২৩, ২০০-২০৩, ২২৩, ২৫৪, ২৮১), ৩/(১৪, ১৮৫), ৪/১৩৪, ৬/(৩২, ৪৭, ১৩০), ৭/(৮. ১৮৫, ১৮৮), ১১/১০৩, ১৩/২১, ১৮/(৭, ১১০), ২১/(১, ১১১), ২২/১, ২৬/(৮৮, ৮৯, ১০২), ২৭/(৩, ৮৯), ২৮/৭৭, ৩০/৪৩, ৩১/৩৩, ৩২/১৪, ৩৮/২৬, ৩৯/(৫৪, ৫৫), ৪০/৫৯, ৪২/(১৭, ৪৭), ৪৩/৬১, ৫২/৪৬, ৫৩/৪০, ৫৯/১৮, ৬৩/১০, ৬৬/৬, ৬৯/২০, ৭০/(২৭, ২৮, ৩৫), ৭৩/(১৯, ২০), ৭৪/৩৭, ৭৫/২১, ৭৬/(৭, ২৭, ২৯), ৭৮/৩৯, ৭৯/(৪০, ৪৫), ৮১/১৪, ৮৪/২৬, ৮৯/২৪, ৯২/১৪

قرب قيام الساعة

৫/৪। কিয়ামতের সময় অত্যাসন্ন

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৭/১৮৫, ১৬/(১, ৭৭), ১৭/৫১, ২১/(১, ৯৭), ২২/৭, ২৯/৫, ৩৩/৬৩, ৪২/১৭, ৫৩/৫৭, ৫৪/১, ৭০/৭, ৭৮/৪০

ذكر الموت

৫/৫। মৃত্যুর বর্ণনা

الموت حق على كل نفس

ক) প্রতিটি নফসের জন্য মৃত্যু অবধারিত সত্য ঃ

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(৯৬, ২৪৩), ৩/(১৪৫, ১৫৬, ১৬৮, ১৮৫), ৪/৭৮, ১৫/৯৯, ১৬/৭০, ২১/৩৪, ২১/৩৫, ২৩/১৫, ২৮/৮৮, ২৯/৫৭, ৩৩/১৬, ৩৯/৩০, ৫০/১৯, ৫৫/২৬, ৬২/৮, ৭১/(৪, ১৮), ৭৪/৪৭, ৭৫/(২৬-৩০), ৮০/২১, ১০২/২

← চলমান পাতা

الخوف من الموت
খ) মৃত্যুকে ভয় করা
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(৯৪, ৯৫), ৪/৭৮, ২৩/৯৯, ৩৩/১৬, ৬২/৮

الاستعداد للموت
গ) মৃত্যুর জন্য প্রস্তুতি গ্রহণ-৩৬/৬৮

كراهة الموت
৫/৬। মৃত্যুকে অপছন্দ করণ

فضل طول العمر
ক) দীর্ঘায়ুর মর্যাদা-৩৬/৬৮

مراتب عمر الإنسان
খ) মানুষের আয়ুর স্তরসমূহ

سرعة انقضاء الأجل
খ/(১) নির্ধারিত সময় দ্রুত ফুরিয়ে যাওয়া ঃ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১০/৪৫, ৭৫/৩০

بلوغ الأربعين
খ/(২) চল্লিশে পৌছানো- ৪৬/১৫

الاحتضار
৫/৭। মৃত্যুর মুহূর্ত উপস্থিত হওয়া

احتضار المؤمن
ক) মুমিন ব্যক্তির মৃত্যুর মুহূর্ত
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ১৬/৩২, ৪১/৩০, ৫৬/(৮৮, ৯০), ৬৩/১০, ৭৫/(২৬-২৯)

احتضار الكافر
খ) কাফির ব্যক্তির মৃত্যুর মুহূর্ত
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২৩/৯৯, ২৩/১০০, ২৫/২২, ৭৫/(২৬-২৯)

وصية الميت
গ) মৃতের ওয়াসিয়াত-৫/১০৬

قبض الروح
৫/৮। রূহ কবয

حقيقة الروح
ক) রূহের হাকীকাত-১৭/৮৫

قبض الروح في النوم
খ) ঘুমন্ত অবস্থায় রূহ কবয ঃ সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৬০, ৩৯/৪২

فتح باب التوبة حتى الغرغرة
গ) মৃত্যুর গরগরা শব্দ শুরু হবার পূর্ব পর্যন্ত তাওবাহ্‌র দরজা উন্মুক্ত থাকা-৪/১৮

← চলমান পাতা

كيفية نزع الروح

ঘ) রূহ ছিনিয়ে নেয়ার পদ্ধতি ঃ সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৯/৪২, ৫৬/৮৩

خروج روح المؤمن

ঙ) মু'মিনের রূহ বেরিয়ে যাওয়া ঃ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৬/৩২, ৭৯/২, ৮৯/(২৭, ২৮)

خروج روح الكافر

চ) কাফিরের রূহ বেরিয়ে যাওয়া

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৬/৯৩, ৮/৫০, ১৬/২৮, ৪৭/২৭, ৫৬/৮৭ ৭৯/১

مصير الروح

ছ) রূহের প্রত্যাবর্তন –২০/৫

الدعاء للميت

জ) মৃতের জন্য দু'আ–৫৯/১০

الصلاة على الميت

৫/৯। মৃতের উপর সলাত আদায়

من يصلى عليه

ক) কাদের প্রতি সালাত আদায় করা যাবে

الصلاة على المنافق

ক/(১) মুনাফিকের জানাযার সালাত ঃ ৯/৮৪

الدفن وأحكام القبور

৫/১০। দাফন ও কবরের বিধানাবলী

حثو التراب على الميت

ক) মাইয়েতের উপর মাটি প্রদান ঃ সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭৭/২৫, ৭৭/২৬

القبر

৫/১১। কবর

بلاء الجثث في القبور

ক) কবরে লাশের পরীক্ষা ও শাস্তি–

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৭/৪৯, ৫০/(৩, ৪), ৭৫/৩, ৭৯/১১

عذاب القبر

খ) কবরের আযাব– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/১১১, ৪০/৪৬, ১০২/৩

← চলমান পাতা

الحداد على الميت

৫/১২। মৃতের জন্য শোক পালন

حداد المرأة في الإسلام

ক) ইসলামে নারীদের শোক পালন–২/২৩৪

التعرض للخطاب أثناء الحداد

খ) শোক পালন অবস্থায় বিবাহের পয়গামের সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(২৩৪, ২৩৫)

التعريض في خطبة المعتدة من الوفاة

গ) পুরুষ কর্তৃক আকার ইঙ্গিতে বিবাহের প্রস্তাব প্রদান– ২/২৩৫

(علامات الساعة) الصغرى

৫/১৩। কিয়ামতের আলামত (ছোট)

بعثة الرسول ووفاته بين يدي الساعة

ক) কিয়ামতের পূর্ব মুহূর্তে নাবী (ﷺ)-এর রিসালাত প্রাপ্তি ও তাঁর ওফাত

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৪/৪৬, ৪৭/১৮

انشقاق القمر في عهد الرسول

খ) রাসূলের যুগে চন্দ্র দিখণ্ডিত হওয়া– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৭/১৮, ৫৪/১

ظهور الفتن

গ) ফিতনাসমূহের আত্মপ্রকাশ

أنواع الفتن

গ/(১) ফিতনার প্রকারসমূহ

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৩/১৪, ৮/২৮, ৯/(২৪, ৫৫, ৮৫), ১৮/(৭, ৪৬), ২৩/(৫৫, ৫৬), ২৮/৭৯, ৪২/২০, ৬৩/৯, ৬৪/(১৪, ১৫), ৭২/১৬, ১০২/১

موقف المؤمن من الفتنة

গ/(২) ফিতনায় মুমিনের করণীয়

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৪/(৫৯, ৯৭), ৫/১০৫, ১৮/(১০, ১৬), ১৯/(৪৮, ৪৯), ২৯/(৩, ৫৬), ৩৯/১০

تفرق الأمة آخر الزمان

ঘ) শেষ যামানায় উম্মাতের বিভক্তি

أفضلية الأمة المحمدية

ঘ/(১) উম্মাতে মুহাম্মাদিয়ার শ্রেষ্ঠত্ব–

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৮৬, ৩/১১০, ৩৫/৩২, ৪৮/২৯

الأمر بلزوم الجماعة

ঘ/(২) অপরিহার্যভাবে জামাতবদ্ধ থাকার নির্দেশ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(১০৩, ১০৫, ১৫২), ৪/১১৫, ৬/১৫৩

← চলমান পাতা

Contents

عقوبة الانشقاق عن الأمة
ঘ/(৩) উম্মাত হতে বিচ্ছিন্নতার পরিণতি–
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১১৫, ৬/১৫৯, ৪৯/৯

خير قرون الأمة
ঘ/(৪) উম্মাতের শ্রেষ্ঠ যুগ–
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/(১০১, ১১০), ৪৯/৭, ৫৬/(১৩, ১৪, ৩৯, ৪০)

ضرورة التناضح بين الناس
ঘ/(৫) মানুষের পারস্পরিক নসীহত প্রদানের আবশ্যকতা
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২০৬, ৪৯/(৯, ১০)

علامات الساعة (الكبرى)
৫/১৪। কিয়ামাতের আলামত (বড়)

جهالة وقت الساعة
ক) কিয়ামতের সময় সম্পর্কে অজ্ঞতা
সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৬/৩১, ৭/১৮৭, ১৬/২১, ৪৩/৮৫, ৬৭/২৬, ৭২/২৫, ৭৮/১৭, ৭৯/(৪২, ৪৩, ৪৪)

الإيمان عند قيام الساعة
খ) কিয়ামাত মুহূর্তে ঈমান আনয়ন
সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৬/১৫৮, ৭/৫৩, ১০/৫৭, ৩০/৪৩, ৩২/২৯, ৩৪/৫২, ৪০/(৮৪, ৮৫), ৪৪/১২, ৪৭/১৮

ظهور الدخان قبل الساعة
গ) কিয়ামতের পূর্বে (বিশেষ) ধোঁয়ার আবির্ভাব
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/১৫৮, ৪৪/(১০, ১১)

نزول عيسى بن مريم قبل الساعة
ঘ) কিয়ামতের পূর্বে দুনিয়ায় ঈসা (ﷺ) অবতরণ
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৫৯, ৬/১৫৮, ৪৩/৬১

خروج يأجوج ومأجوج قبل الساعة
ঙ) কিয়ামতের পূর্বে ইয়াজুজ মা'জূজ এর বহিঃপ্রকাশ
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৬/১৫৮, ১৮/(৯৮, ৯৯), ২১/৯৬

طلوع الشمس من مغربها
চ) পশ্চিম দিক হতে সূর্যোদয় হওয়া–৬/১৫৮

خروج الدابة قبل الساعة
ছ) কিয়ামতের পূর্বে বিশেষ একটি জন্তুর বহিঃপ্রকাশ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/১৫৮, ২৭/৮২

النار التي تحشر الناس
জ) যে অগ্নি মানুষদের একত্রিত করবে–৬/১৫৮

← চলমান পাতা

القيامة

৫/১৫। কিয়ামাত

ثبوت يوم القيامة

ক) কিয়ামাতের প্রমাণ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/১৩, ৬/১৩৪, ১৮/২১, ২২/৭, ৫৬/২, ৭০/(১, ২)

النفخ في الصور

খ) শিঙ্গায় ফুৎকার প্রদান

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ৬/৭৩, ১৮/৯৯, ২০/১০২, ২৩/১০১, ২৭/৮৭, ৩৬/(৪৯, ৫১, ৫৩), ৩৭/১৯, ৩৮/১৫, ৩৯/৬৮, ৫০/(২০, ৪২), ৬৯/১৩, ৭৪/৮, ৭৮/১৮, ৭৯/(৬, ৭, ১৩)

يوم يكشف عن ساق

গ) পায়ের গোছা প্রকাশ পাবার দিন– ৮/৪২

قيام الساعة بغتة

ঘ) আকস্মিক কিয়ামাত সংঘটন

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৭/১৮৭, ১২/১০৭, ১৯/৭৫, ২০/১৫, ২১/৪০, ২২/৫৫, ২৬/২০২, ৩৩/৬৩, ৩৬/৪৯, ৩৮/১৫, ৩৯/৫৫, ৪৩/৬৬, ৪৭/১৮, ৬৭/২৭

هول يوم القيامة

ঙ) কিয়ামাতের ভয়াবহতা

সর্বমোট ১৪০টি আয়াত ঃ ২/২১০, ৬/(২৭, ৩০, ১৫৮), ৭/৫৯, ১৪/(৪২, ৪৩, ৪৮–৫০), ১৮/(৪৭, ৫৩, ৯৯), ২০/(১০৫, ১০৬, ১০৭, ১০৮), ২১/১০৪, ২২/১, ২২/২, ২৩/১০১, ২৪/৩৭, ২৫/(১২, ২৫), ২৬/(৯১, ১৩৫, ১৫৬), ২৭/(৬৬, ৮৭, ৮৮), ২৮/(৬১, ৭৫), ২৯/৫৫, ৩০/১৪, ৩১/৩৩, ৩৪/২৩, ৩৪/৫১, ৩৬/৫০, ৩৯/(৬৭, ৬৮), ৪০/(১৮, ৩১), ৪২/৪৭, ৪৪/(১০, ১১, ১৬), ৫০/৫৪, ৫২/(৯, ১০, ১১), ৫৪/(৭, ৮, ৫৬), ৫৫/(৩৫, ৩৭), ৫৬/(৪–৬), ৫৭/১৩, ৬৮/৪২, ৬৯/(১৪–১৭), ৭০/(৮, ৯), ৭৩/(১৪, ১৭, ১৮), ৭৪/(৯, ১০), ৭৫/(৭–১১), ৭৬/(৭, ১০, ২৭), ৭৭/(৮–১০, ১৪, ১৫, ১৯, ২৪, ২৮, ৩০–৩৪, ৩৭, ৪০, ৪৫, ৪৭, ৪৯), ৭৮/(১৯, ২০), ৭৯/(৬, ৭, ৩৬, ৪৬), ৮০/(৩৪–৩৭), ৮১/(১–৭, ১০–১২), ৮২/(১–৩, ১৭, ১৮), ৮৩/(৫, ১০), ৮৪/(১–৫), ৮৬/(৯, ১০), ৮৯/(২১–২৩), ৯৯/(১, ৩–৫), ১০১/(৪, ৫)

انقطاع الصلات بين الناس يوم القيامة

চ) কিয়ামাত দিবসে মানুষের সকল প্রকার সম্পর্কচ্ছেদ

সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ২/(৪৮, ১২৩, ১৬৬, ২৫৪), ৩/(১০, ১১৬), ৪/(১০৯, ১৭৩), ৬/৯৪, ১৪/৩১, ১৬/১১১, ১৯/(৮০, ৯৫), ২৩/১০১, ২৮/৬৬, ৩৩/৬৫, ৩৪/(৬১, ৩২), ৩৫/১৮, ৩৬/৫০, ৩৭/২৫, ৩৮/৬৪, ৩৯/৩১, ৪০/১৮, ৪২/৪৬, ৪৪/৪১, ৫৮/১৭, ৬০/৩, ৬৯/৩৫, ৭০/১০, ৮০/(৩৪–৩৭), ৮২/১৯

تفاضل أهل الأديان

ছ) ধর্মাবলম্বীদের পদমর্যাদার পার্থক্য

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ১১/১০৫, ২২/১৭, ৩৬/৫৯, ৩৮/(২৮, ৬২, ৬৩), ৩৯/৬০, ৪০/৫৮, ৪২/৭, ৪৫/২১, ৫৬/(৩, ৯), ৬৬/৮, ৬৮/৩৫, ৭৯/৩৭, ৮২/(১৩, ১৪), ৮৩/১৮, ৮৪/৭

← চলমান পাতা

افتداء الكافر نفسه يوم القيامة
জ) কিয়ামতের দিন কাফির কর্তৃক স্বীয় নাফ্‌সকে মুক্তিপণ হিসেবে পেশ করণ
সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/৪৮, ৩/(১০, ৩০, ৯১, ১১৬), ৫/৩৬, ৬/৭০, ১০/৫৪, ১৩/১৮, ৩৯/৪৭, ৫৭/১৫, ৭০/(১১-১৪), ৯২/১১, ১১১/২

البعث
৫/১৬। পুনরুত্থান

إنكار البعث
ক) পুনরুত্থান অস্বীকার করণ
সর্বমোট ১১৩টি আয়াত ঃ ৪/৩৮, ৬/(২, ২৯-৩১, ১৫০), ৭/(৪৫, ৫১, ১৪৭), ১০/(৭, ১১, ১৫, ৪৫, ৪৮, ৫৩), ১১/(৭, ১৯), ১৩/৫, ১৪/৪৪, ১৬/(২২, ৩৮), ১৭/(৪৯, ৫১, ৯৮), ১৮/(৩৫, ৩৬, ৪৮, ১০৫), ১৯/৬৬, ২১/৩৮, ২২/৫১, ২৩/(৩৫-৩৭, ৮১-৮৩), ২৫/(১১, ৪০), ২৬/১৩৮, ২৭/(৪, ৬৬-৬৮, ৭১), ২৮/৩৯, ২৯/২৩, ৩০/(৮, ১৬), ৩২/(১০, ১৪), ৩৪/(৩, ৭, ২৯, ৩১, ৫৪), ৩৬/(৪৮, ৭৮), ৩৭/(১৬, ৫২, ৫৩), ৪১/(৫০, ৫৪), ৪২/১৮, ৪৪/(৩৫, ৩৬), ৪৫/(২৪, ২৫, ৩২, ৩৩), ৪৬/(১৭, ১৮), ৫০/(৩, ১৫), ৫১/১২, ৫২/(১৪, ১৫), ৫৬/(৪৭, ৪৮, ৫৭, ৫৮), ৫৭/১৪, ৬৪/৭, ৬৭/(২৫, ২৭), ৭০/৬, ৭৪/(৪৬, ৫৩), ৫৭/(৩, ৫, ৬, ২১, ২৬), ৭৭/২৯, ৭৮/(১-৩, ২৭), ৭৯/(১০-১২), ৮২/৯, ৮৩/(১১, ১২, ১৭), ৭৪/১৪, ৯২/৯, ৯৫/৭, ১০৭/১

الآيات الدالة على البعث
খ) পুনরুত্থান সংক্রান্ত আয়াতসমূহ
সর্বমোট ৬৬টি আয়াত ঃ ২/(৫৬, ৭৩, ১৬৪, ২৪৩, ২৫৯, ২৬০), ৩/২৭, ৬/(২, ৯৫), ৭/(২৯, ৫৭), ১০/(৪, ৩১, ৩৪), ১৫/২৩, ১৬/৭০, ১৭/৫১, ২১/১০৪, ২২/(৫, ৬৩), ২৩/(১৬, ১০০, ১০১), ২৭/৬৩, ২৯/১৯, ৩০/(১৯, ২৪, ২৫, ২৭, ৪০, ৫০, ৫৬), ৩১/২৮, ৩২/১১, ৩৪/৩, ৩৫/৯, ৩৬/(১২, ৩৩, ৫১, ৫২, ৭৯, ৮১), ৩৭/১৮, ৩৯/২১, ৪০/১১, ৪১/(২১, ৩৯), ৪২/৯, ৪৩/১১, ৪৫/(৫, ২৬), ৪৬/৩৩, ৫০/(১১, ১৫), ৫৩/৪৪, ৫৬/৫৭, ৫৭/১৭, ৭৫/৪০, ৭৮/(১৫, ১৮), ৮০/(২২, ২৬), ৮৫/১৩, ৮৬/৮, ৮৭/৫

بعث الناس من القبور
গ) কবর হতে মানুষের পুনরুত্থান
সর্বমোট ৭৩টি আয়াত ঃ ২/(২৮, ১৪৮), ৬/৩৬, ৭/২৫, ১০/৫৩, ১৪/২১, ১৬/(৩৮, ৮৪), ১৭/(৫১, ৫২, ৮০), ২০/৫৫, ২২/(৬, ৭, ৬৬), ২৩/(১৬, ১১৫), ২২/(৫০, ৮৭), ২৭/(৬৪, ৬৫, ৮৭), ২৮/৭০, ২৯/১৯, ৩০/(২৫, ৫০, ৫৬), ৩১/২৮, ৩২/১১, ৩৫/৯, ৩৬/(৫১-৫৩), ৩৭/(১৮, ১৯), ৩৮/৭৯, ৩৯/(৭, ৪৪, ৬৮), ৪০/(১১, ৪৩), ৪১/৩৯, ৪২/৯, ৪৩/১১, ৪৬/৩৩, ৫০/(১১, ৪১-৪৪), ৫৩/৪৭, ৫৪/৭, ৫৬/(৪৯, ৫০), ৫৮/(৬, ১৮), ৬৪/৭, ৬৭/২৪, ৭০/৪৩, ৭১/১৮, ৭৫/৩, ৭৯/১৪, ৮০/(২২, ২৩), ৮২/৪, ৮৩/৪, ৮৫/১৩, ৮৬/৮, ৯৯/(২, ৬), ১০০/৯

شدة كرب الناس يوم البعث
ঘ) পুনরুত্থান দিবসে বিপদের ভয়াবহতা
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৬/(২৭, ২৮, ৩০), ১৪/২১, ২০/১০৮, ২৭/৮৭, ৫৪/৭

← চলমান পাতা

من لا يكلمهم الله يوم البعث

ঙ) পুনরুত্থান দিবসে যাদের সঙ্গে আল্লাহ কথোপকথন করবেন না

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭৪, ৩/৭৭

الحشر

৫/১৭। হাশর

ثبوت الحشر

ক) হাশরের প্রমাণ

সর্বমোট ১৪০টি আয়াত ঃ ২/(২৮, ৪৬, ৪৮, ২০৩, ২২৩, ২৪৫, ২৮১), ৩/(৯, ২৫, ২৮, ৩০, ৫৫, ৮৩, ১০৯, ১৫৮, ১৯৪), ৪/(৪২, ৮৭, ১৭২), ৫/(৪৮, ৯৬, ১০৫, ১০৯), ৬/(১২, ২২, ৩৬, ৩৮, ৫১, ৬০, ৭২, ১০৮, ১২৮, ১৫৯, ১৬৪), ৮/২৪, ৯/১০৫, ১০/(৪, ২৩, ২৮, ৪৫, ৪৬, ৫৫, ৫৬, ৭০), ১১/(৪, ৩৪, ১০৩, ১২৩), ১৩/৩১, ১৪/(২১, ৪, ৪৮), ১৫/(২৫, ৮৫), ১৬/(২৭, ১১১), ১৭/(৭১, ৯৭), ১৮/(৪৮, ৯৯), ১৯/(৪০, ৬৮, ৯৩, ৯৫), ২০/১০২, ২১/(৩৫, ৯৩), ২২/৭, ২৩/৭৯, ২৪/(৪২, ৬৪), ২৭/৮৩, ২৮/৮৮, ২৯/(৫, ৮, ১৭, ২১, ৫৭), ৩০/(১১, ৪৩), ৩১/(১৪, ১৫, ২৩), ৩৪/(২৬, ৩০), ৩৫/(৫, ১৮), ৩৬/(২২, ৩২, ৮৩), ৩৭/২১, ৩৯/৭, ৪০/(৩, ১৬, ৫৯, ৭৭, ৭৮), ৪১/১৯, ৪২/(৭, ১৫, ১৮, ২৯, ৫৩), ৪৩/(১৪, ৮৫), ৪৪/৪০, ৪৫/(১৫, ২৬, ৩২), ৪৬/৬, ৫০/৪৩, ৫০/৫৪, ৫১/(৬, ২৩, ৬০), ৫৩/৪২, ৫৪/৮, ৫৬/(৪৯, ৫০, ৯৫), ৫৭/৫, ৫৮/৯, ৬০/৪, ৬২/৮, ৬৪/(৩, ৯), ৬৭/(১৫, ২৪), ৭০/২৬, ৭৫/১২, ৭৭/(৭, ৩৮), ৭৮/৩৯, ৮০/২২, ৮৩/৪, ৮৪/৬, ৮৬/(১৩, ১৪), ৮৮/২৫, ৯৬/৮

حشر الناس وصفاتهم فيه

খ) মানুষের হাশর ও তথায় তাদের অবস্থা

সর্বমোট ৫১টি আয়াত ঃ ৩/(১০৬, ১০৭), ৬/৯৪, ৮/৩৭, ১০/২৬, ১৪/২১, ১৬/১১১, ১৭/(৭১, ৯৭), ১৮/(৪৭, ৪৮), ১৯/(৬৮, ৮৫), ২১/১০৩, ২২/২, ২৩/১০১, ২৮/৭৪, ৩০/১৪, ৩৭/২২, ৩৯/৩১, ৪০/১৬, ৪৫/২৮, ৫০/(২১, ২২), ৫৬/(৭–১০), ৬৩/৮, ৭৫/(১০, ২২), ৭৮/(১৮, ৩৭, ৩৮), ৭৯/৩৫, ৮০/(৩৪–৩৮, ৪০, ৪১), ৮৩/৬, ৮৪/(৭, ১০), ৮৮/(৮, ৯), ৮৯/৩২, ৯৯/৬, ১০০/১১, ১০১/৪

سجود الخلائق لله

গ) সমস্ত সৃষ্টিকুলের আল্লাহর উদ্দেশে সাজদাহ প্রদান

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২০/১১১, ৬৮/৪২

حال الكافر يوم الحشر

ঘ) হাশরের দিন কাফিরগণের অবস্থা

সর্বমোট ১৩৬টি আয়াত ঃ ২/(১২৩, ১৬৬, ১৬৭, ২৪৫), ৩/(১০৬, ১১৬, ১৯২), ৪/(৪২, ১২৩), ৬/(২৩, ২৪, ২৭, ২৮, ৩০, ৩১, ৯৪), ৭/৫৩, ১০/(২৭, ৫৪), ১৩/৫, ১৪/(২১, ৪২–৪৪, ৪৯, ৫০), ১৫/২, ১৬/(২৫, ২৭, ৮৪–৮৮), ১৭/৯৭, ১৮/(৫৩, ১০০), ১৯/(৮২, ৮৬), ২০/(১০২, ১০৩, ১২৪–১২৬), ২১/৯৭, ২৩/৭৭, ২৪/৩৯, ২৫/(১৭, ২৬–২৯), ২৬/(১০০–১০২), ২৭/(৫, ৮৩, ৮৫), ২৮/(৪১, ৪২, ৭৪, ৭৫), ৩০/(১২, ৫৭), ৩২/১২, ৩৪/(২৩, ৩১, ৩২, ৩৩, ৪০), ৩৭/(১৮, ২০, ২৬–৩৩), ৩৯/(৫৬–৫৮, ৬০), ৪০/(১৮, ৩৩), ৪১/(১৯, ৪৮), ৪২/(২২, ৪৪, ৪৫), ৪৩/(৩৮, ৩৯), ৪৪/১২, ৪৬/২০, ৫০/(২৭, ২৮),

← চলমান পাতা

৫২/৪৩, ৫৪/(৮, ৪৮), ৫৫/৪১, ৫৭/১৩, ৬৬/৭, ৬৭/২৭, ৬৮/(৪২, ৪৩), ৬৯/(২৫- ২৯), ৭০/৪৪, ৭২/২৪, ৭৪/১০, ৭৫/(২৪, ২৫), ৭৭/(৩৫, ৩৬, ৩৯), ৭৮/৪০, ৭৯/(৮, ৯, ৪৬), ৮০/(৪০-৪২), ৮৩/১৫, ৮৪/(১০-১২), ৮৭/(১২, ১৩), ৮৮/(২, ৩), ৮৯/২৪, ৯২/১১, ১০৪/৪

انقطاع المودة بين المشركين وآلهتهم

ঙ) মুশরিক ও তাদের মা'বূদদের মাঝে বন্ধুত্ব ছিন্নতা

সর্বমোট ৪৫টি আয়াত ঃ ২/(১৬৬, ১৬৭), ৩/১৯৩, ৪/(১২৩, ১৭৩), ৬/(২২, ৯৪), ৭/(৩৭, ৫৩), ১০/(২৮-৩০), ১৪/২১, ১৬/৮৬, ১৭/৫৬, ১৮/৫২, ১৯/৮২, ২৬/(৯৩, ১০০, ১০১), ২৮/(৬২-৬৪, ৭৪, ৭৫), ২৯/২৫, ৩০/১৩, ৩৩/৬৫, ৩৪/৪২, ৩৫/১৪, ৩৭/(২৫, ৩০), ৪০/(১৮, ৪৩, ৭৩, ৭৪), ৪১/(২৯, ৪৮), ৪২/(৮, ৪৪, ৪৬), ৪৩/৬৭, ৪৫/১০, ৪৬/৬, ৫৯/১৬

اتباع الأمم ما كانت تعبد

চ) পরবর্তী উম্মাত কর্তৃক পূর্ববর্তী উম্মাতের অনুসরণ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১১/৯৮, ৩৭/২২

اتباع الأمم أنبياءهم

ছ) উম্মাতসমূহের তাদের নাবীগণের অনুসরণ-৪/৪১

الحساب

৫/১৭। বিচার

سؤال الخلائق يوم الحشر

ক) বিচার দিবসে সৃষ্টিকুলের প্রার্থনা

সর্বমোট ৩৭টি আয়াত ঃ ৩/৩০, ৪/৪২, ৫/১০৯, ৬/(২২, ৩০, ১২৮, ১৩০), ৭/৬, ১৫/(৯২, ৯৩), ১৬/(২৭, ৫৬, ৯৩), ১৭/৩৬, ২৫/১৭, ২৬/৯২, ২৭/৮৪, ২৮/(৬২, ৬৩, ৬৫, ২৭৪, ৭৫), ২৯/১৩, ৩৪/(৪০, ৪১), ৩৭/২৪, ৪১/৪৭, ৪৩/(১৯, ৪৪), ৪৬/৩৪, ৫১/৬, ৫৫/৩৯, ৬৭/৮ ৮১/৮, ৮১/৯, ৮৪/৮, ৮৮/২৬

صحائف الأعمال

খ) আমলনামা

সর্বমোট ২৭টি আয়াত ঃ ৩/৩০, ৭/৭, ১০/৬১, ১৭/(১৩, ১৪, ৭১), ১৮/৪৯, ২১/৪৭, ২২/৭০, ২৩/৬২, ৩৬/১২, ৩৯/৬৯, ৪৫/(২৮, ২৯), ৫৪/(৫২, ৫৩), ৬৯/(১৯, ২৫), ৭৪/৫২, ৭৮/২৯, ৮০/(১৩, ১৪), ৮১/(১০, ১৪), ৮২/৫, ৮৪/(৭, ১০)

وزن الأعمال

গ) আমলের পরিমাপ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/৮, ৭/৯, ২৩/(১০২, ১০৩), ৯৯/(৭, ৮), ১০১/(৬, ৭)

شهادة الإنسان على نفسه

ঘ) মানুষের নিজের বিরুদ্ধে সাক্ষ্য প্রদান

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৬/১৩০, ২৪/২৪, ৩৬/৬৫, ৪১/(২০- ২২), ৫০/২১, ৭৫/(১৪, ১৫)

وصف يوم الحساب

ঙ) বিচার দিবসের বর্ণনা

সর্বমোট ১২৭টি আয়াত ঃ ৪/৪১, ১১/(১০৩, ১০৫), ১৩/(১৮, ৪১), ১৪/)৪৮, ৫১), ১৬/(৮৪, ৮৫, ১২৪), ১৮/(৪৮, ৪৯, ৯৯, ১০০), ১৯/৭৫, ২২/৬৯, ২৬/(৯০, ৯১), ২৭/(৮৪, ৮৫), ২৮/(৬৬, ৭৫), ২৯/(১৩, ২৫), ৩০/৫৭, ৩২/(১২, ২৫), ৩৬/(৫৯, ৬৫), ৩৭/(২৫, ২৭-৩১), ৩৯/(৩১, ৪৭, ৪৮, ৬৯, ৭০), ৪০/১৭, ৪১/(২০, ৪৭), ৪২/৭, ৪৩/৬৭, ৪৪/(৪১, ৪২), ৪৫/(১৭, ৩৪), ৫০/(২১-২৪, ৫০/২৬, ২৯-৩১, ৪১, ৪২, ৪৪, ৪৫), ৫২/৪৬, ৫৪/৬, ৬৯/(১৩-২০, ২৫-২৯), ৭০/(৮, -১৪), ৭৫/(১৩-১৫), ৭৭/(১১, ১২, ৩৫-৩৮, ৪০), ৭৯/(৪, ৬, ৭, ১৩, ৩৬), ৮১/(৮-১১, ১৩-১৪), ৮২/(৪, ৫, ১৯), ৮৩/(৫, ৬), ৮৪/(১-৫), ৮৬/(৯,১০), ৮৯/(২১-২৩), ৯৯/(১-৪, ৬), ১০১/৪, ১০৫/৫

عدل الله عز وجل في القضاء

চ) বিচারকার্যে আল্লাহর ন্যায়পরায়ণতা

সর্বমোট ১২৩টি আয়াত ঃ ২/(৪৮, ১২৩, ১৩৪, ১৪১, ২৭২, ২৭৯, ২৮১, ২৮৬), ৩/২৫, ৩/(৫৫, ৫৭, ১০৮, ১১৫, ১১৭, ১২৮, ১৬১, ১৭১, ১৮২, ১৮৫), ৪/৪০, ৪/৪৯, ৪/৭৭, ৪/(১২৩, ১২৪), ৬/(৩০, ৪৯, ৭০, ১৩১, ১৬০, ১৬৪), ৭/(৬, ৮, ৯, ৩৯, ৯৬, ১০০, ১৩৬, ১৪৭, ১৬২, ১৬৩, ১৬৫, ১৭০, ১৭৬, ১৮০), ৮/(৪২, ৫১-৫৪,৬০), ১০/(৪, ৭, ৩০, ৪৪, ৪৭, ৫২, ৫৪, ১০৯), ১১/(২৪, ১০১, ১০৯), ১৪/৫১, ১৬/(৩৩, ১১১, ১১৮, ১২৪), ১৭/(১৪, ১৫, ৭১), ১৮/(৩০, ৪৯), ১৯/৬০, ২০/১১২, ২১/(৪৭, ৯৪), ২২/১০, ২৪/২৫, ২৭/(৭৮, ৯০), ২৮/(৫৯, ৮৪), ২৯/(১৪, ৩১, ৩৪, ৪০, ৫৫), ৩০/৯, ৩২/(১৮, ২৫), ৩৪/(২৫, ২৬, ৩৩), ৩৫/১৮, ৩৬/৫৪, ৩৮/২৮, ৩৯/(৭, ৯, ২৯, ৬৯, ৭০, ৭৫), ৪০/(১৭, ২০, ৪৮), ৪১/৪৬, ৪৩/৭৬, ৪৫/(২১, ২২, ২৮, ৩৩), ৪৬/১৯, ৪৯/১৪, ৫০/২৯, ৫২/(১৬, ২১), ৫৩/(৩১, ৪১), ৬৬/৭, ৬৮/৩৫, ৭৮/২৬, ৯৫/৮, ৯৯/(৭, ৮)

الصراط

৫/১৮। সিরাত (পুল সিরাত)

المرور على الصراط

ক) পুলসিরাত অতিক্রমণ-১৯/৭১

الصراط وموقف المؤمنين فيه

খ) পুলসিরাত এবং সেখানে মুমিনদের অবস্থান

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৯/৭২, ৫৭/১২

الصراط وموقف الكافرين فيه

গ) পুলসিরাত এবং সেখানে কাফিরদের অবস্থান- ৩৭/২৩

الشفاعة

৫/১৯। শাফা'আত

من يملك الشفاعة يوم القيامة

ক) কিয়ামত দিবসে কে শাফা'আতের মালিক

الشفاعة لله عز وجل

ক/(১) শাফা'আত শুধুমাত্র আল্লাহর জন্য–

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৫৫, ২০/১০৯, ৩৯/৪৪, ৫৩/২৬, ৮২/১৯

شفاعة الأنبياء و الملائكة

ক/(২) নাবীগণ ও ফেরেশতামণ্ডলীর শাফা'আত

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/২৮, ৫৩/২৬

من تحل له الشفاعة

খ) কার জন্য শাফা'আত বৈধ হবে

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৯/৮৭, ২০/১০৯, ৪৩/৮৬

الجنة

৫/২০। জান্নাত

أسماء الجنة

ক) জান্নাতের নামসমূহ

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ৪/৯৫, ৬/১২৭, ৯/৭২, ১০/(৯, ২৫), ১৩/(১৮, ২৩, ২৯), ১৬/(৩০, ৩১, ৬২), ১৮/(৩১, ৮৮, ১০৭), ১৯/৬১, ২০/৭৬, ২১/১০১, ২২/৫৬, ২৩/১১, ২৫/(১৫, ৭৫), ২৬/৮৫, ৩১/৮, ৩৫/(৩৩, ৩৫), ৩৭/৪৩, ৩৮/৫০, ৪০/(৮, ৩৯), ৪১/৫০, ৫৬/(১২, ৮৯), ৫৭/১০, ৬১/১২, ৬৮/৩৪, ৬৯/২২, ৭০/৩৮, ৮৮/১০, ৯২/(৬, /৯), ৯৮/৮

خلود الجنة

খ) জান্নাতে চিরস্থায়ী বসবাস

সর্বমোট ৫১টি আয়াত ঃ ২/(২৫, ৮২), ৩/(১৫, ১০৭, ১৩৬, ১৯৮), ৪/(১৩, ৫৭, ১২২), ৫/(৮৫, ১১৯), ৭/৪২, ৯/(২১, ২২, ৭২, ৮৯, ১০০), ১০/২৬, ১১/(২৩, ১০৮), ১৩/৩৫, ১৪/২৩, ১৫/৪৮, ১৮/(৩, ১০৮), ১৯/৬১, ২০/৭৬, ২১/১০২, ২৩/১১, ২৫/(১৫, ১৬, ৭৬), ২৯/৫৮, ৩১/৯, ৩৭/(৫৮, ৫৯), ৩৮/৫৪, ৩৯/৭৩, ৪০/(৮, ৩৯), ৪২/৩৬, ৪৩/৭১, ৪৪/৫৬, ৪৬/১৪, ৪৮/৫, ৫০/৩৪, ৫৭/১২, ৫৮/২২, ৬৪/৯, ৬৫/১১, ৯৮/৮

صفة الجنة ونعيمها

গ) জান্নাতের বর্ণনা ও তার নিয়ামতসমূহ

সর্বমোট ১৬৭টি আয়াত ঃ ২/২৫, ৩/(১৫, ১৩৩, ১৩৬, ১৯৫, ১৯৮), ৪/(১৩, ৫৭, ১২২), ৫/(১২, ৮৫, ১১৯), ৭/৪৩, ৯/(২১, ২২, ৭২, ৮৯, ১০০), ১০/৯, ১১/৮, ১৩/(২৩, ২৯, ৩৫), ১৪/২৩, ১৫/(৪৫, ৪৭, ৪৮), ১৬/(৩০, ৩১), ১৮/৩১, ১৯/৬২, ২০/(৭৬, ১১৮, ১১৯), ২১/১০২, ২২/(১৪, ২৩), ২৫/(১০, ১৬, ২৪, ৭৬), ২৬/৮৫, ২৮/৬০, ২৯/৫৮, ৩০/১৫, ৩২/১৭, ৩৪/৩৭, ৩৫/৩৫, ৩৬/৫৭, ৩৭/(৪২–৪৯), ৩৮/(৫১, ৫২), ৩৯/২০, ৪০/৪০, ৪১/৩১, ৪২/২২, ৪৩/(৭১, ৭৩), ৪৪/(৫২–৫৬), ৪৭/(১২, ১৫), ৪৮/(৫, ১৭), ৫০/৩৫, ৫১/১৫, ৫২/(১৭, ১৮, ২০, ২২–২৪), ৫৪/৫৫, ৫৫/(৪৮, ৫০, ৫২, ৫৪, ৫৬, ৫৮, ৬৪, ৬৬, ৬৮, ৭০, ৭২, ৭৪, ৭৬), ৫৬/(১২, ১৫–২৩, ২৫, ২৬, ২৮–৩৭, ৮৯), ৫৭/(১২, ২১), ৫৮/২২, ৬১/১২, ৬৪/৯, ৬৫/১১, ৬৬/৮, ৬৮/৩৪, ৬৯/(২২, ২৩), ৭০/৩৫, ৭৬/(৫, ৬,

← চলমান পাতা

Contents

১১-২১), ৭৭/(৪১, ৪২), ৭৮/(৩২-৩৫), ৮১/১৩, ৮৩/(২২, ২৩, ২৫-২৮, ৩৫), ৮৫/১১, ৮৮/(১০-১৬), ৯৮/৮, ১০৮/১

أبواب الجنة

ঘ) জান্নাতের দরজাসমূহ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৮/৫০, ৩৯/৭৩

دخول الجنة

ঙ) জান্নাতে প্রবেশ

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৪/৩১, ৪/১২৪, ৪/১৭৫/ ৭/৪৯, ১৫/৪৬, ১৬/৩১, ১৬/৩২, ২৫/৭৫, ৩৫/৩৫, ৩৯/৭৩, ৪৪/৫৭, ৫০/৩৪, ৫২/২১/ ৫৭/২১

صفة أهل الجنة

চ) জান্নাতের অধিবাসীদের গুণাবলী

সর্বমোট ৫৮টি আয়াত ঃ ৪/৫৭, ৭/৪৩, ৭/৫০, ১০/২৬, ১৩/২৩, ১৩/২৪, ১৪/২৩, ১৫/৪৬, ১৫/৪৭, ১৫/৪৮, ১৬/৩১, ১৮/৩১, ১৮/১০৮, ১৯/৬২, ২০/১১৮, ২০/১১৯, ২২/২৩, ২২/২৪, ২৫/২৪, ২৫/৭৬, ৩৫/৩৩, ৩৬/৫৫, ৩৬/৫৬, ৩৮/৫১, ৩৮/৫২, ৫৫/৫৪, ৫৫/৭৬, ৫৬/৮, ৫৬/১০, ৫৬/১১, ৫৬/১২, ৫৬/১৫, ৫৬/১৬, ৫৬/১৭, ৫৬/১৮, ৫৬/১৯, ৫৬/২৫, ৫৬/২৭, ৫৬/২৮, ৫৬/২৯, ৫৬/৩৮, ৫৬/৯০, ৫৯/২০, ৭৪/৩৯, ৭৫/২২, ৭৬/১১, ৭৬/১৯, ৮০/৩৮, ৮০/৩৯, ৮২/১৩, ৮৩/২২, ৮৩/২৩, ৮৩/২৪, ৮৩/২৫, ৮৩/৩৫, ৮৪/৭, ৮৪/৮, ৮৪/৯

صفة نساء أهل الجنة

ছ) জান্নাতী নারীদের গুণাবলী

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ২/২৫, ৩/১৫, ৪/৫৭, ৩৭/৪৮, ৩৭/৪৯, ৩৮/৫২, ৪৪/৫৪, ৫২/২০, ৫৫/৫৬, ৫৫/৫৮, ৫৫/৭০, ৫৫/৭২, ৫৫/৭৪, ৫৬/২২, ৫৬/২৩, ৫৬/৩৫, ৫৬/৩৬, ৫৬/৩৭, ৭৮/৩৩

التمني في الجنة

জ) জান্নাতের ভিতর আকাঙ্ক্ষা-৪১/৩১

منازل الأنبياء والصديقين والشهداء

ঝ) নাবীগণ, সিদ্দীকগণ ও শহীদগণের গন্তব্যস্থল-৪/৬৯

تفاضل الدرجات في الجنة

ঞ) জান্নাতে শ্রেষ্ঠত্বের স্তর

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৪/৯৬, ৮/৪, ১৭/২১, ১৮/১০৭, ২০/৭৫, ২৩/১১, ২৫/৭৬, ২৬/৮৫, ২৯/৫৮, ৫৫/৬২, ৫৬/১১, ৮২/১৩, ৮৩/১৮, ৮৩/২২, ৮৩/২৩, ৮৫/১১

كلام أهل الجنة

ট) জান্নাতের অধিবাসীদের কথাবার্তা

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ৭/৫০, ১০/১০, ১৯/৬২, ৩৭/৫০, ৩৭/৫১, ৩৭/৫২, ৩৭/৫৩, ৩৭/৫৪, ৩৭/৫৬, ৩৭/৫৭, ৩৭/৫৮, ৩৭/৫৯, ৩৭/৬০, ৩৯/৭৪, ৫২/২৫, ৫২/২৬, ৫২/২৭, ৫২/২৮, ৭৪/৪০, ৭৪/৪২

← চলমান পাতা

كلام الله مع أهل الجنة

ঠ) জান্নাতের অধিবাসীদের সঙ্গে আল্লাহর কথাবার্তা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৪/৪৪, ৩৬/৫৮

السور بين الجنة والنار

ড) জান্নাত ও জাহান্নামের মধ্যে প্রাচীর

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/৪৬, ৫৭/১৩

أصحاب الأعراف

ঢ) জান্নাত ও জাহান্নামের মধ্যবর্তী প্রাচীরের অধিবাসী

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/৪৬, ৭/৪৭, ৭/৪৮, ৭/৪৯

طعام أهل الجنة وشرابهم

ণ) জান্নাতের অধিবাসীদের খাদ্য ও পানীয়

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/২৫, ১৩/৩৫, ৩৭/৪১, ৩৭/৪২, ৫২/১৯, ৫২/২২, ৫৫/৫২, ৫৫/৬৮, ৫৬/১৮, ৫৬/২০, ৫৬/২১, ৭৬/১৭, ৭৬/২১, ৭৭/৪২, ৭৮/৩২, ৮৩/২৫, ৮৩/২৭

الأعمال الصالحة سبب لدخول الجنة

ত) জান্নাতে প্রবেশের উপকরণ হচ্ছে নেক আমাল

সর্বমোট ৭৮টি আয়াত ঃ ২/২৫, ২/৮২, ২/১৫৪, ৩/১৫, ৩/১৩৩, ৩/১৯৫, ৪/১৩, ৪/৫৭, ৪/৬৯, ৪/১১৪, ৪/১২২, ৪/১২৪, ৫/৬৫, ৫/৮৫, ৫/১১৯, ৬/১৫৫, ৭/৪২, ৭/৪৩, ৯/২১, ৯/৭২, ৯/৮৯, ৯/১০০, ৯/১১১, ১০/৯, ১০/২৬, ১১/২৩, ১৩/২২, ১৫/৪৫, ১৭/৯, ১৮/১০৭, ১৯/৬০, ২০/৭৫, ২০/৭৬, ২৩/১০, ২৩/১১, ২৪/৩৮, ২৫/৭৫, ২৬/৯০, ২৮/৮৩, ২৯/৫৮, ৩০/১৫, ৩১/৮, ৩২/১৭, ৩২/১৯, ৩৩/২১, ৩৩/৩১, ৩৩/৩৫, ৩৪/৩৭, ৩৫/৭, ৩৮/৫০, ৩৯/২০, ৪০/৪০, ৪২/২২, ৪৩/৭০, ৪৪/৫১, ৪৫/৩০, ৪৬/১৬, ৪৭/১৫, ৪৮/৫, ৪৮/১৭, ৫০/৩১, ৫০/৩২, ৫০/৩৩, ৫১/১৫, ৫২/১৭, ৫৪/৫৪, ৫৫/৫৬, ৫৬/১২, ৫৭/১২, ৬৪/৯, ৬৫/১১, ৭০/৩৫, ৭৬/৭, ৭৬/৮, ৭৯/৪১, ৮২/৯, ৯০/১৮

لباس أهل الجنة

থ) জান্নাতের অধিবাসীদের পোষাক পরিচ্ছদ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৮/৩১, ২২/২৩, ৩৫/৩৩, ৪৪/৫৩, ৭৬/২১

النار

৫/২১। জাহান্নাম (অগ্নিকুণ্ড)

أسماء النار

ক) জাহান্নামের নামসমূহ

সর্বমোট ১১৫টি আয়াত ঃ ২/১১৯, ২/২০৬, ৩/১২, ৩/১৬২, ৩/১৯৭, ৪/৫৫, ৪/৯৩, ৪/৯৭, ৪/১১৫, ৪/১২১, ৪/১৪০, ৪/১৬৯, ৫/১০, ৫/৮৬, ৭/১৮, ৭/৪১, ৭/১৭৯, ৮/১৬, ৮/৩৬, ৮/৩৭, ৯/৩৫, ৯/৪৯, ৯/৬৩, ৯/৬৮, ৯/৭৩, ৯/৮১, ৯/৯৫, ৯/১০৯, ৯/১১৩, ১১/৮২, ১১/১১৯, ১৩/১৮, ১৪/১৬, ১৪/২৯, ১৫/৪৩, ১৬/২৯, ১৭/৮, ১৭/১৮, ১৭/৩৯, ১৭/৬৩,

← চলমান পাতা

১৭/৯৮, ১৮/১০০, ১৮/১০২, ১৮/১০৬, ১৯/৬৮, ১৯/৮৬, ২০/৭৪, ২১/২৯, ২১/৯৮, ২২/৫১, ২৩/১০৩, ২৫/৩৪, ২৫/৬৫, ২৬/৯১, ২৯/৫৪, ২৯/৬৮, ৩০/১০, ৩২/১৩, ৩৫/৩৬, ৩৬/৬৩, ৩৭/২৩, ৩৭/৬৩, ৩৭/১৬৩, ৩৮/৫৬, ৩৮/৮৫, ৩৯/৩২, ৩৯/৬০, ৩৯/৭১, ৩৯/৭২, ৪০/৭, ৪০/৪৯, ৪০/৬০, ৪০/৭৬, ৪৩/৬২, ৪৩/৭৪, ৪৪/৪৭, ৪৪/৫৬, ৪৫/১০, ৪৮/৬, ৫০/২৪, ৫০/৩০, ৫২/১৩, ৫২/১৮, ৫২/২৭, ৫৪/৪৮, ৫৬/৯৩, ৫৬/৯৪, ৫৭/১৯, ৫৮/৮, ৬৬/৯, ৬৭/৫, ৬৭/৬, ৬৭/৭, ৬৭/১০, ৬৭/১১, ৬৯/৩১, ৭২/১৫, ৭২/২৩, ৭৪/২৬, ৭৪/২৭, ৭৪/৪২, ৭৮/২১, ৭৯/১০, ৭৯/১৪, ৭৯/৩৬, ৭৯/৩৯, ৮১/১২, ৮২/১৪, ৮৩/১৬, ৮৫/১০, ৮৯/২৩, ৯৮/৬, ১০১/৯, ১০২/৬, ১০৪/৪, ১০৪/৫

خلود النار

খ) জাহান্নামে চিরস্থায়ী বসবাস

সর্বমোট ৪৬টি আয়াত ঃ ২/৩৯, ২/৮১, ২/১৬২, ২/১৬৭, ২/২১৭, ২/২৫৭, ২/২৭৫, ৪/১৪, ৪/১৬৯, ৫/৩৭, ৫/৮০, ৬/১২৮, ৭/৩৬, ৯/১৭, ৯/৬৩, ৯/৬৮, ১০/২৭, ১০/৫২, ১১/১০৭, ১৩/৫, ১৪/১৭, ১৬/২৯, ২০/৭৪, ২০/১০১, ২১/৯৯, ২৩/১০৩, ২৫/৬৬, ২৫/৬৯, ৩২/১৪, ৩৩/৬৫, ৩৯/৪০, ৩৯/৭২, ৪০/৩৯, ৪০/৭৬, ৪০/২৮, ৪২/৪৫, ৪৩/৭৪, ৪৩/৭৭, ৪৫/৩৫, ৪৭/১৫, ৫৮/১৭, ৫৯/১৭, ৬৪/১০, ৭৮/২৩, ৯৮/৬

دخول النار

গ) জাহান্নামে প্রবেশ

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ২/২৪, ৩/১৯২, ১৯/৮৬, ২৫/১৩, ২৫/১৪, ২৬/৯৪, ২৬/৯৫, ২৭/৯০, ৩৭/৬৮, ৩৯/৭১, ৪০/৬০, ৪০/৭১, ৪০/৭২, ৪০/৭৬, ৪৪/৪৭, ৫২/১৩, ৫২/১৬, ৫৪/৪৮, ৫৫/৪১, ৬৭/৭, ৬৭/৮, ৬৯/৩০, ৬৯/৩১, ৭৮/২১

خزنة النار

ঘ) জাহান্নামের রক্ষীগণ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩৯/৭১, ৪০/৪৯, ৪৩/৭৭, ৬৬/৬, ৬৭/৮, ৭৪/৩০, ৭৪/৩১, ৯৭/১৮

صفة النار

ঙ) জাহান্নামের বৈশিষ্ট্য

সর্বমোট ৮৯টি আয়াত ঃ ২/২৪, ৭/৩৮, ৭/৪১, ৯/৮১, ১১/১০৬, ১৩/১৮, ১৪/১৬, ১৪/১৭, ১৪/২৯, ১৫/৪৪, ১৬/২৯, ১৭/৮, ১৭/৯৭, ১৮/২৯, ১৮/৫৩, ২১/১০০, ২২/১৯, ২২/২০, ২২/২১, ২২/২২, ২৩/১০৪, ২৪/৫৭, ২৫/১২, ২৫/১৩, ২৫/৩৪, ২৫/৬৫, ২৫/৬৬, ২৫/৭৭, ২৯/৫৫, ৩৭/৬২, ৩৭/৬৩, ৩৭/৬৪, ৩৭/৬৫, ৩৭/৬৬, ৩৭/৬৭, ৩৮/৫৭, ৩৮/৫৮, ৩৯/১৬, ৪০/৪৯, ৪০/৫২, ৪৩/৭৫, ৪৪/৪৩, ৪৪/৪৪, ৪৪/৪৫, ৪৪/৪৬, ৪৪/৪৮, ৪৭/১৫, ৫০/৩০, ৫৪/৪৮, ৫৫/৪৪, ৫৬/৪২, ৫৬/৪৩, ৫৬/৪৪, ৫৬/৯৩, ৫৬/৯৪, ৫৮/৮, ৬৬/৬, ৬৭/৭, ৬৭/৮, ৬৯/৩১, ৬৯/৩২, ৭০/১৫, ৭০/১৬, ৭৩/১২, ৭৪/২৮, ৭৪/২৯, ৭৪/৩৫, ৭৬/৪, ৭৭/৩০, ৭৭/৩১, ৭৭/৩২, ৭৭/৩৩, ৭৮/২১, ৮৮/৪, ৮৮/৫, ৯০/১১, ৯০/১২, ৯০/২০, ৯২/১৪, ১০১/১০, ১০১/১১, ১০৪/৪, ১০৪/৫, ১০৪/৬, ১০৪/৭, ১০৪/৮, ১০৪/৯, ১১১/৩, ১১১/৫

← চলমান পাতা

صفة أهل النار وجزائهم

চ) জাহান্নামের অধিবাসীদের পরিচয় ও তাদের প্রতিদান

সর্বমোট ২২২টি আয়াত ঃ ২/২৪, ২/৩৯, ২/৮১, ২/১২৬, ২/১৬১, ২/১৬২, ২/১৭৫, ২/২০৬, ২/২১৭, ২/২৫৭, ২/২৭৫, ৩/১১, ৩/১২, ৩/১৫১, ৩/১৬২, ৪/১৪, ৪/৩৭, ৪/৫৫, ৪/৫৬, ৪/৯৩, ৪/৯৭, ৪/১১৫, ৪/১২১, ৪/১৪০, ৪/১৪৫, ৪/১৫১, ৪/১৬১, ৪/১৬৯, ৫/১০, ৫/২৯, ৫/৭২, ৫/৮০, ৫/৮৬, ৬/১২৮, ৬/১২৯, ৬/১৫৭, ৭/১৮, ৭/৩৬, ৭/৩৮, ৭/৩৯, ৭/৪১, ৭/৪৭, ৭/৫০, ৭/১৭৯, ৮/১৪, ৮/১৬, ৮/২৬, ৮/৩৭, ৮/৫০, ৯/১৭, ৯/৪৯, ৯/৬৩, ৯/৬৮, ৯/৭৩, ৯/৮১, ৯/৯৫, ৯/১০৯, ৯/১১৩, ১০/৪, ১০/২৭, ১০/৫২, ১১/১৬, ১১/১৭, ১১/১০৬, ১১/১১৯, ১৩/৫, ১৩/১৮, ১৩/২৫, ১৪/১৭, ১৪/২৯, ১৪/৩০, ১৫/৪৩, ১৬/২৯, ১৬/৬২, ১৭/৮, ১৭/১০, ১৭/১৮, ১৭/৩৯, ১৭/৬৩, ১৭/৯৭, ১৮/২৯, ১৮/১০২, ১৮/১০৫, ১৮/১০৬, ১৯/৬৮, ১৯/৭০, ১৯/৭২, ২০/৭৪, ২০/১০০, ২১/১০০, ২২/৫১, ২২/৫৭, ২২/৭২, ২৩/১০৩, ২৩/১০৪, ২৫/১১, ২৫/১৩, ২৫/৩৪, ২৫/৬৯, ২৫/৭৭, ২৬/৯১, ২৬/৯৪, ২৬/৯৫, ২৬/৯৬, ২৬/৯৭, ২৬/৯৮, ২৬/১০০, ২৬/১০১, ২৭/৫, ২৯/২৫, ২৯/৫৪, ২৯/৬৮, ৩০/১৬, ৩১/৬, ৩১/৭, ৩২/১৪, ৩২/২০, ৩৩/৬৪, ৩৩/৬৬, ৩৪/৫, ৩৪/৮, ৩৪/৪২, ৩৫/৩৬, ৩৫/৩৭, ৩৭/১৬১, ৩৮/২৭, ৩৮/৫৫, ৩৮/৫৬, ৩৯/৮, ৩৯/১৬, ৩৯/৩২, ৩৯/৬০, ৩৯/৭২, ৪০/৬, ৪০/১০, ৪০/৪৩, ৪০/৪৬, ৪০/৫২, ৪০/৬০, ৪০/৭১, ৪০/৭২, ৪০/৭৬, ৪১/১৯, ৪১/২৪, ৪১/২৮, ৪১/৪০, ৪৩/৭৪, ৪৩/৭৫, ৪৫/১০, ৪৫/৩৩, ৪৫/৩৪, ৪৫/৩৫, ৪৬/২০, ৪৬/৩৪, ৪৭/১২, ৪৮/৬, ৪৮/১৩, ৪৮/১৭, ৫০/২৪, ৫০/২৫, ৫০/২৬, ৫১/১৩, ৫১/১৪, ৫২/১৩, ৫৫/৪১, ৫৫/৪৩, ৫৫/৪৪, ৫৬/৯, ৫৬/৪১, ৫৬/৪৫, ৫৬/৪৬, ৫৬/৫১, ৫৬/৯২, ৫৭/১৩, ৫৭/১৫, ৫৭/১৯, ৫৮/৮, ৫৮/১৭, ৫৯/৩, ৫৯/১৭, ৬৪/১০, ৬৬/৯, ৬৬/১০, ৬৭/৬, ৬৭/১০, ৬৭/১১, ৭০/১৭, ৭০/১৮, ৭১/২৫, ৭২/১৫, ৭২/২৩, ৭৪/৪৩, ৭৪/৪৪, ৭৪/৪৫, ৭৪/৪৬, ৭৫/২৪, ৭৬/৩১, ৭৮/২২, ৭৮/২৩, ৭৮/২৪, ৮২/১৪, ৮৩/১১, ৮৩/১২, ৮৪/১০, ৮৪/১১, ৮৪/১২, ৮৪/১৩, ৮৫/১০, ৮৮/২, ৮৮/৩, ৮৮/৪, ৮৯/২৪, ৮৯/২৫, ৮৯/২৬, ৯০/১৯, ৯২/১৫, ৯২/১৬, ৯৮/৬, ১০১/৯, ১০৪/৪, ১০৪/৫, ১১১/৩

مضاعفة العذاب لأهل النار

ছ) জাহান্নামের অধিবাসীদের জন্য অধিকতর শাস্তি

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/১০১, ২৫/৬

الخالدون في النار

জ) জাহান্নামের চিরস্থায়ী অধিবাসীগণ

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৩/১১৬, ৪/৫৬, ৫/৩৭, ৫/৮০, ৬/১২৮, ৭/৩৬, ৯/৬৩, ৯/৬৮, ১০/২৭, ১০/৫২, ১৪/১৬, ১৪/১৭, ১৪/২৮, ২২/২২, ২৩/১০৩, ২৩/১০৮, ২৬/১০২, ৩৩/৬৫, ৪৫/৩৫, ৫৮/১৭, ৫৯/১৭, ৬৪/১০, ৭২/২৩, ৮৭/১৩, ৯৮/৬

طعام أهل النار وشرابهم

ঝ) জাহান্নামের অধিবাসীদের খাদ্য ও পানীয়

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ৬/৭০, ১০/৪, ১৪/১৬, ১৮/২৯, ২২/২০, ৩৭/৬২, ৩৭/৬৩, ৩৭/৬৪, ৩৭/৬৫, ৩৭/৬৬, ৪৪/৪৩, ৪৪/৪৪, ৪৪/৪৫, ৪৪/৪৬, ৫৬/৫২, ৫৬/৫৩, ৫৬/৫৩, ৫৬/৫৫, ৬৯/৩৬, ৬৯/৩৭, ৭৩/১৩, ৮৮/৫, ৮৮/৬, ৮৮/৭

← চলমান পাতা

شجرة الزقوم (الشجرة الملعونة)

ঞ) যাক্কুম গাছ (অভিশপ্ত বৃক্ষ)

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৭/৬০, ৩৭/৬২, ৩৭/৬৪, ৩৭/৬৫, ৩৭/৬৬, ৩৭/৬৭, ৪৪/৪৩

كلام أهل النار

ট) জাহান্নামের অধিবাসীদের কথাবার্তা

সর্বমোট ২৭টি আয়াত ঃ ৭/৩৮, ৭/৩৯, ৭/৪৪, ৭/৫০, ২৩/১০৬, ২৩/১০৭/ ২৫/১৩, ২৫/১৪, ২৬/৯৬, ২৬/৯৭, ২৬/৯৮, ৩৩/৬৭, ৩৩/৬৮, ৩৫/৩৭, ৩৮/৫৯, ৩৮/৬০, ৩৮/৬১, ৩৮/৬২, ৩৮/৬৩, ৩৯/৭১, ৪০/৪৭, ৪০/৪৮, ৪০/৪৯, ৪০/৫০, ৪৩/৭৭, ৬৭/৯, ৬৭/১০

الإيمان بالقدر خيره وشره

৬। তাকদীরের ভাল মন্দের প্রতি ঈমান

ثبوت القدر وحقيقته

৬/১। তাকদীরের প্রমাণ ও তার হাকীকত

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/১০২, ২/২৪৩, ৩/১৫৪, ৩/১৫৬, ৩/১৬৬, ৪/৭৮, ৭/৩৪, ৫/৪৯, ১২/৬৭, ১২/৬৮, ১৩/১১, ১৩/৩৯, ১৭/৫৮, ৩৯/১৯, ৪০/৬, ৪১/২৫, ৫৪/৪৯, ৫৮/১০, ৬৪/১১, ৬৫/৩, ৮১/২৯

تقدير المقادير قبل الخلق

৬/২। সৃষ্টির পূর্বে ভাগ্য নির্ধারিত হয়েছে

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৩/৬, ৬/৩৮, ৬/৫৯, ১৭/৫৮, ২৭/৭৫, ৫০/৪, ৫৭/২২, ৫৮/২১, ৮৩/৯, ৮৩/২০, ৮৭/৩

تصريف الله تعالى للقلوب

আল্লাহ কর্তৃক অন্তরসমূহের পরিবর্তন

সর্বমোট ১১৮টি আয়াত ঃ ২/২১৩, ২/২৭২, ৩/৮, ৪/৮৮, ৫/৪১, ৫/৬৭, ৫/১০৮, ৬/২৫, ৬/২৮, ৬/৩৫, ৬/৩৯, ৬/৫৩, ৬/৮৮, ৬/১০৭, ৬/১১০, ৬/১১১, ৬/১১৩, ৬/১২৫, ৬/১৪৪, ৬/১৪৯, ৬/১৬১, ৭/৩০, ৭/৪৩, ৭/৮৯, ৭/১০০, ৭/১০১, ৭/১৪৬, ৭/১৫৫, ৭/১৭৮, ৭/১৮৬, ৮/২৩, ৮/২৪, ৮/৬৩, ৯/১৯, ৯/২৪, ৯/৩৭, ৯/৮০, ৯/৮৭, ৯/৯৩, ৯/১০৯, ৯/১১৫, ৯/১১৭, ৯/১২৭, ১০/২৫, ১০/৩৫, ১০/৪২, ১০/৪৩, ১০/৭৪, ১০/৯৬, ১০/৯৯, ১০/১০০, ১১/৩৪, ১৩/২৭, ১৩/৩১, ১৪/৪, ১৪/২৭, ১৫/১২, ১৬/৯, ১৬/৩৬, ১৬/৩৭, ১৬/৯৩, ১৬/১০৪, ১৬/১০৭, ১৬/১০৮, ১৭/৪৫, ১৭/৪৬, ১৭/৯৭, ১৮/১৭, ১৮/২৮, ১৮/৫৭, ১২/১৬, ২৪/৩৫, ২৪/৪৬, ২৬/৪, ২৮/৫০, ৩০/২৯, ৩০/৫২, ৩০/৫৩, ৩০/৫৯, ৩২/১৩, ৩৩/৪, ৩৫/৮, ৩৫/২২, ৩৬/৭, ৩৬/১০, ৩৬/৬৬, ৩৯/৩, ৩৯/১৮, ৩৯/২২, ৩৯/২৩, ৩৯/২৬, ৩৯/২৭, ৪০/৩৩, ৪০/৩৪, ৪০/৩৫, ৪২/৮, ৪২/১৩, ৪২/৪৪, ৪২/৪৬, ৪২/৫২, ৪৫/২৩, ৫০/৪৫, ৫৯/১৯, ৬১/৫, ৬১/৭, ৬২/৫, ৬৩/৩, ৬৩/৬, ৬৪/২, ৬৮/৭, ৭৪/৩১, ৭৪/৫৬, ৭৬/৩০, ৮৩/১৪, ৮৭/৩, ৯১/৮, ৯২/৭, ৯২/১০

← চলমান পাতা

الآجال والأرزاق بقدر

সময় ও রিযক্ব ভাগ্য দ্বারা নিয়ন্ত্রিত

সর্বমোট ৫৫টি আয়াত ঃ ৩/২৭, ৩/৩৭, ৩/১৪৫, ৩/১৫৪, ৩/১৫৬, ৩/১৬৮, ৬/২, ৬/৭, ৬/৬১, ৬/১২৮, ৭/৩৪, ৭/১৩১, ১০/৪৯, ১০/৯৮, ১০/১০৪, ১১/৩, ১১/৬, ১৩/২৬, ১৪/১০, ১৫/৪, ১৫/১৫, ১৫/২১, ১৬/৬১, ১৬/৭০, ১৬/৭১, ১৭/৩০, ১৭/৩১, ১৭/৯৯, ২০/১২৯, ২২/৫, ২৩/৪৩, ২৮/৮২, ২৯/৫৩, ২৯/৬০, ২৯/৬২, ৩০/৩৭, ৩০/৪০, ৩১/৩৪, ৩৩/১৬, ৩৪/৩৬, ৩৪/৩৯, ৩৫/১১, ৩৫/৪৫, ৩৬/৪৪, ৩৯/৪২, ৩৯/৫২, ৪২/১২, ৪২/১৯, ৪২/২৭, ৪২/৫০, ৫১/৫৮, ৫৩/৪৮, ৫৭/২৯, ৬৩/১১, ৭১/৪

كل شيء بقدر

সবকিছুই ভাগ্যের আওতাধীন

সর্বমোট ৪৭টি আয়াত ঃ ২/১০২, ২/২৫৩, ৪/৭৮, ৬/২, ৮/৪২, ৯/৫১, ১০/৪৯, ১০/৯৬, ১০/১০০, ১০/১০৭, ১১/৬, ১১/৮, ১১/৩৩, ১১/১০৪, ১৩/২, ১৩/৮, ১৩/২৬, ১৩/৩৮, ১৫/২১, ১৮/২৩, ২০/১২৯, ২৩/১৮, ২৩/৪৩, ৩০/৪, ৩০/৮, ৩১/২৯, ৩২/৫, ৩৩/৩৮, ৩৪/৩০, ৩৬/৭, ৩৭/১৪৮, ৪০/৬৮, ৪২/২৭, ৪৩/১১, ৪৩/৩২, ৪৪/৫, ৪৬/৩, ৫৪/৪৯, ৫৫/৫, ৫৭/২২, ৫৭/২৩, ৬৪/১১, ৬৫/৩, ৭৭/২২, ৭৭/২৩, ৭৮/১৭, ৮৭/৩

الخير فيما اختاره الله

ভাল সেটাই যা আল্লাহ কর্তৃক মনোনীত

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/২১৬, ৪/১৯, ৪/৭৯, ৮/৫, ৮/৬, ৯/৫১, ৩৩/৩৬, ৫৭/২৩, ৬৬/৫

الإنسان بين التخيير والتسيير

মানুষ ইচ্ছাশক্তি প্রয়োগ ও বাধ্যবাধকতার আওতাধীন

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৬/১০৪, ৬/১১৭, ৬/১৪৮, ১৮/২৯, ৭৪/৩৭, ৭৪/৫৫, ৭৬/৩, ৭৬/২৯, ৮১/২৮, ৯০/১০, ৯১/৮, ৯১/৯, ৯১/১০

لا راد لقضاء الله

আল্লাহর ফায়সালার কেউ প্রতিরোধকারী নেই

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৩/৪৭, ৩/৫৯, ৩/১২৮, ৪/৭৮, ৬/৭৩, ৭/১৭৮, ৭/১৮৬, ৮/৪৪, ১৩/১১, ১৩/৩৩, ১৮/১৭, ১৮/২৭, ১৯/২১, ১৯/৭১, ২৯/২৩, ৪৫/২৩

الإيمان بالجن

৭। জ্বিনের উপর ঈমান

إبليس من الجن

৭/১। ইবলীস জ্বিনের অন্তর্ভুক্ত–১৮/৫০

صفة أبليس وجنوده

৭/২। ইবলীস ও তার সৈন্যবাহিনীর পরিচয়

সর্বমোট ৯৪টি আয়াত ঃ ২/৩৬, ২/১০২, ২/১৬৮, ২/১৬৯, ২/২৫৭, ২/২৬৮, ৩/১৫৫, ৩/১৭৫, ৪/৩৮, ৪/৬০, ৪/৭৬, ৪/১১৭, ৪/১১৯, ৪/১২০, ৫/৯০, ৫/৯১, ৬/৪৩, ৬/৬৮, ৬/৭১, ৬/১১২, ৬/১২১, ৬/১৪২, ৭/১৬, ৭/১৭, ৭/২০, ৭/২১, ৭/২২, ৭/২৭, ৭/৩০, ৭/২০০, ৭/২০১, ৭/২০২, ৮/১১, ৮/৪৮, ১২/৫, ১২/৪২, ১২/১০০, ১৪/২২, ১৫/২৭, ১৫/৩১, ১৫/৩২, ১৫/৩৩, ১৫/৩৯,

← চলমান পাতা

১৫/৪০, ১৬/৬৩, ১৬/৯৯, ১৬/১০০, ১৭/২৭, ১৭/৫৩, ১৭/৬৪, ১৮/৫০, ১৮/৬৩, ১৯/৪৪, ১৯/৪৫, ১৯/৮৩, ২০/৯৬, ২০/১১৭, ২০/১২০, ২২/৩, ২২/৪, ২২/৫২, ২২/৫৩, ২৪/২১, ২৫/২৯, ২৬/৯৯, ২৬/২২১, ২৬/২২২, ২৬/২২৩, ২৬/২২৪, ২৭/২৪, ২৮/১৫, ২৯/৩৮, ৩১/২১, ৩৪/২০, ৩৫/৬, ৩৬/৬২, ৪১/২৫, ৪৩/৩৭, ৪৩/৬২, ৪৭/২৫, ৫০/২৭, ৫৭/১৪, ৫৮/১০, ৫৮/১৯, ৫৯/১৬, ৭২/৪, ৭২/৫, ৭২/৬, ৭২/১১, ৭২/১৪, ১১৪/৪, ১১৪/৫

ثواب الجن وعقابهم

৭/৩। জিনদের পুরস্কার ও শাস্তি

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৬/১২৮, ৬/১৩০, ৭/৩৮, ৭/১৭৯, ৮/১১৯, ১৫/১৮, ৩৪/১২, ৩৭/৯, ৩৭/১০, ৪১/২৫, ৪১/২৯, ৫৫/৩১, ৫৫/৩৯, ৫৯/১৭, ৬৭/৫, ৭২/৯, ৭২/১৫, ৭২/১৭

إيمان الجن بالأنبياء

৭/৪। নাবীগণের প্রতি জিনের ঈমান

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/১৩০, ৭২/২, ৭২/১৩

تسخير الجن لطاعة سليمان

৭/৫। সুলায়মান (عليه السلام)-এর প্রতি জিনদের আনুগত্য

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/২০২, ২১/৮২, ২৭/১৭, ২৭/৩৯, ৩৪/১২, ৩৪/১৩, ৩৪/১৪, ৩৮/৩৭, ৩৮/৩৮

استراق الجن للسمع

৭/৬। জিনদের চুরি করে আল্লাহর বাণী শ্রবণ

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ১৫/১৭, ১৫/১৮, ২৬/২১২, ২৬/২২৩, ৩৭/৮, ৩৭/৯, ৩৭/১০, ৪১/১২, ৭২/৮, ৭২/৯

سماع الجن للقرآن

৭/৭। জ্বিনদের কুরআন শ্রবণ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৪৬/২৯, ৪৬/৩০, ৭২/১, ৭২/১৩, ৭২/১৯

إسلام طائفة من الجن

৭/৮। জিনদের এক সম্প্রদায়ের ইসলাম গ্রহণ

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৪৬/২৯, ৪৬/৩০, ৪৬/৩১, ৪৬/৩২, ৭২/১, ৭২/২, ৭২/৩, ৭২/৪, ৭২/৫, ৭২/৬, ৭২/৭, ৭২/৮, ৭২/৯, ৭২/১০, ৭২/১১, ৭২/১৩, ৭২/১৪, ৭২/১৯

قرين الإنسان من الجن

৭/৯। জিনের সাথে মানুষের বন্ধুত্ব

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩৭/৫১, ৪১/২৫, ৪৩/৩৬, ৪৩/৩৮, ৫০/২৭

إلهاء الجن الإنسان عن عبادته

৭/১০। জিনদের আল্লাহর ইবাদত হতে মানুষকে গাফিল করণ

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/১০২, ৫/৯১, ৬/৪৩, ৬/১২৮, ২০/১২০, ২২/৫২, ২৫/২৯, ৩৪/৪১, ৩৬/৬২, ৩৭/৩২, ৪৩/৩৬, ৫৮/১৯

إنساء الشيطان للإنسان وخذلانه

৭/১১। শয়তান কর্তৃক মানুষকে ভুলিয়ে দেয়া ও তাকে বিপদাপন্ন অবস্থায় ত্যাগ করা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/৪২, ১৮/৬৩, ৩৬/৬২

← চলমান পাতা

إيذاء الجن للإنسان

৭/১২। মানুষকে জিনের কষ্ট দান–২/২৭৫

إضلال الشيطان للإنسان وخذلانه

৭/১৩। মানুষকে শয়তানের বিভ্রান্তকরণ ও তাকে বিপদাপন্ন অবস্থায় ত্যাগ করা

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৪/৩৮, ৪/৬০, ৪/১২০, ৭/২০, ৭/২১, ৭/২২, ৭/১৭৫, ৮/৪৮, ২৬/৯৯, ২৭/২৪, ৩৬/৬২, ৩৭/৩২, ৪৩/৩৭, ৫৮/১৯, ৫৯/১৬

الوقاية من الشيطان

৭/১৪। শয়তান থেকে বেঁচে থাকা–

সর্বমোট ২৮টি আয়াত ঃ ২/১৬৮, ২/২০৮, ৩/৩৬, ৩/১৭৫, ৪/১১৯, ৫/৯০, ৫/৯১, ৬/১৪২, ৭/২২, ৭/২৭, ৭/২০০, ৭/২০১, ১৫/৪০, ১৫/৪২, ১৬/৯৮, ১৬/৯৯, ১৭/৫৩, ১৭/৬৫, ২৩/৯৭, ২৩/৯৮, ২৬/৯৯, ৩৪/২১, ৩৫/৬, ৩৬/৬০, ৩৭/৭, ৩৮/৮৩, ৪১/৩৬, ১১৪/৪

أولياء الرحمن وأولياء الشيطان

৭/১৫। রহমানের বন্ধুবর্গ ও শয়তানের বন্ধুবর্গ

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/২৫৭, ৩/৬৮, ৩/১৭৫, ৪/৭৬, ৪/১১৯, ৬/১২১, ৬/১২৮, ৭/২৭, ৭/৩০, ৭/১৯৬, ৭/২০২, ১০/৬২, ১৬/২৩, ১৯/৪৫, ২৯/৪১, ৩৯/৩, ৪২/৬, ৪২/৯, ৪৫/১০, ৪৫/১৯, ৫৮/১৯, ৫৮/২২

الإسلام

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ইসলাম

ظهور الإسلام

১। ইসলামের আত্মপ্রকাশ

إسلام أهل الكتاب

১/১। আহলে কিতাবগণের ইসলাম গ্রহণ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫/৬৯, ৭/১৫৭, ৭/১৫৯

خصائص الإسلام

১/২। ইসলামের বৈশিষ্ট্যসমূহ

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/২৫৬, ২/২৮৬, ৪/২৮, ৪/১০১, ৫/৩, ৫/৯৩, ৬/১৬০, ২৪/৩৩, ২৮/৮৪, ৬৪/১৬

لا يجتمع في الجزيرة دينان

১/৩। আরব উপদ্বীপে দু'টি ধর্মের সম্মিলন অসম্ভব

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৯/৩, ৯/৪, ৯/৫, ৯/৬, ৯/৭, ৯/২৮, ৫৯/২

فضل الإسلام

২ ইসলামের ফাযীলত

الدين عند الله الإسلام

← চলমান পাতা

২/১। ইসলামই আল্লাহর নিকট মনোনীত দ্বীন

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/১৩২, ৩/১৯, ৩/৮৩, ৩/৮৫, ৩/১০২, ৫/৩, ২২/৭৮, ৩৯/১২, ৩৯/২২

الدين الكامل هو الإسلام

২/২। ইসলামই পূর্ণাঙ্গ জীবন ব্যবস্থা- ৫/৩

الإسلام دين الأنبياء

২/৩। ইসলাম সমস্ত নাবীর দ্বীন

সর্বমোট ৮৭টি আয়াত ঃ ২/১২০, ২/১৩১, ২/১৩২, ২/১৩৩, ২/১৩৫, ২/১৩৬, ২/১৩৭, ২/২১৩, ৩/৫২, ৩/৬৪, ৩/৬৭, ৩/৬৮, ৩/৮০, ৩/৮৩, ৩/৮৪, ৩/৮৫, ৩/১৯৩, ৪/১২৫, ৬/১৬১, ৬/১৬৩, ৭/৫৯, ৭/৬৫, ৭/৭০, ৭/৭৩, ৭/৮৫, ৯/৩১, ১০/১৯, ১০/৭২, ১০/৯০, ১০/১০৪, ১০/১০৫, ১১/২, ১১/১৪, ১১/২৬, ১১/৫০, ১১/৬১, ১২/৩৮, ১২/৪০, ১২/১০১, ১৬/১২০, ১৬/১২৩, ১৯/৩৫, ১৯/৩৬, ২০/১৪, ২০/৯০, ২০/৯৮, ২১/২৪, ২১/২৫, ২১/৫৬, ২১/৬৬, ২১/৬৭, ২১/৭৩, ২১/৯২, ২১/১০১, ২২/২৬, ২২/৭৮, ২৩/২৩, ২৩/৩২, ২৩/৫২, ২৭/২৬, ২৭/৩১ ২৭/৪৪, ২৭/৯১, ২৮/৮৮, ২৯/৪৬, ৩০/৩০, ৩৭/৮৬, ৩৭/১২৫, ৩৭/১২৬, ৩৮/৫, ৩৮/৬৫, ৩৯/১১, ৩৯/১২, ৩৯/১৪, ৩৯/৬৪, ৪০/২৮, ৪০/৬৬, ৪১/১৪, ৪২/১৩, ৪৩/২৭, ৪৩/৪৫, ৪৩/৬৪, ৪৬/২১, ৫১/৫১, ৬০/৪, ৯৮/৫, ১০৯/৪

الإسلام دين الفطرة

২/৪। ইসলাম প্রকৃতির দ্বীন

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/১৩৮, ৩/৮৩, ৩/৮৪, ৩/৯৫, ৬/১৬১, ৭/১৫৭, ৭/১৭২, ১১/১৭, ২৯/৪৬, ৩০/৩০, ৯১/৭, ৯৮/৫

الترغيب في الإسلام

২/৫। ইসলামে উৎসাহব্যঞ্জক নাসীহাত

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ২/২৮৬, ৫/৯৩, ৬/১৪৭, ৬/১৬০, ৮/৩৮, ৮/৭০, ২২/৭৮, ২৩/৬২, ২৮/৮৪, ২৯/৭, ৩১/২২, ৩৩/৩৫, ৪০/৪০, ৭২/১৩, ৭২/১৪

سماحة الإسلام

২/৬। ইসলামের উদারতা

সর্বমোট ৪৪টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ২/১৮৪, ২/১৮৫, ২/১৮৭, ২/২০৩, ২/২২০, ২/২২৫, ২/২৩৩, ২/২৩৫, ২/২৩৯, ২/২৭৫, ২/২৮৬, ৪/২৮, ৪/৪৩, ৪/৬৬, ৪/৯৮, ৪/৯৯, ৪/১০১, ৪/১০২, ৫/৩, ৫/৬, ৫/৮৯, ৫/৯৫, ৬/১১৯, ৬/১৪৫, ৬/১৬০, ৭/৪২, ৭/১৫৭, ৮/৬৬, ৯/৯১, ৯/৯২, ২২/৭৮, ২৩/৬২, ২৪/৬১, ২৮/৮৪, ২৯/৭, ২৯/৪৬, ৪০/৪০, ৫৮/৩, ৫৮/৪, ৫৮/১২, ৬৪/১৪, ৬৪/১৬, ৬৫/৭

الإسلام يجب ما قبله

২/৭। ইসলাম তার পূর্বের সকলকিছুকে (পাপসমূহ) মুছে দেয়

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/২৭৫, ৫/৯৫, ৮/৩৮, ৮/৭০, ৯/১১, ১১/৩, ২০/৭৩, ৩৩/৭১, ৪৭/২

المسلمون شهداء الله على الناس

২/৮। মুসলিমগণ মানুষের বিরুদ্ধে আল্লাহর সাক্ষী

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৪৩, ২২/৭৮

← চলমান পাতা

Contents

تمكين المسلمين في الأرض
২/৯। পৃথিবীতে মুসলিমদের ক্ষমতায়ন
সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৭/১২৮, ৭/১৩৭, ১২/২১, ১২/৫৬, ১৩/৪২, ১৪/১৪, ১৮/৮৪, ২১/১০৫, ২২/৪১, ২৪/৫৫, ৩৩/২৭, ৩৭/৭৭, ৪৮/২৯

أركان الإسلام
৩। ইসলামের রুকনসমূহ

الشهادتان من الإسلام
৩/১। দু’ সাক্ষ্যবাণী ইসলামের অন্তর্ভুক্ত

إسلام قائل الشهادتين
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৯৪, ৪৯/১৪

دالة الشهادتين على الإيمان ظاهرا
খ) দু’সাক্ষ্যবাণী উচ্চারণকারীর ঈমান বাহ্যিকভাবে প্রমাণিত
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৯৪, ৪৯/১৪, ৬০/১০

الصلاة من الإسلام
৩/২। সালাত ইসলামের অন্তর্ভুক্ত
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/২৭৭, ৬/৯২, ৬/১৬২, ৭/২৯, ৯/৫, ৯/১১, ৯/১১২, ৭৩/২০, ৯৮/৫

الصيام من الإسلام
৩/৩। সওম ইসলামের অন্তর্ভুক্ত
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮৩, ৯/১১২

الزكاة من الإسلام
৩/৪। যাকাত ইসলামের অন্তর্ভুক্ত
সর্বমোট ৯টি আয়াতঃ ২/২৭৭, ৬/১৪১, ৯/৫, ৯/১১, ৪১/৭, ৭০/২৪, ৭০/২৫, ৭৩/২০, ৯৮/৫

الحج من الإسلام
৩/৫। হাজ্জ ইসলামের অন্তর্ভুক্ত
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/৯৬, ২/৯৭

حرمة المال والدم
৪। সম্পদ ও রক্তের মর্যাদা

الإقرار بالإيمان يعصم المال والدم
৪/১। ঈমানের স্বীকারোক্তি সম্পদ ও রক্তের রক্ষাকবচ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৯৪, ১৮/৮৮

الإقرار بالصلاة والزكاة يعصم النفس
৪/২। সালাত ও যাকাতের স্বীকারোক্তি আত্মার রক্ষাকবচ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/৫, ৯/১১

← চলমান পাতা

الولاء والبراء في الإسلام
৪/৩। ইসলামের দৃষ্টিতে শত্রুতা ও বন্ধুত্ব
وجوب موالاة المسلمين بعضهم لبعض
ক) মুসলিমদের পারস্পরিক বন্ধুত্বের অপরিহার্যতা
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/২৮, ৪/১৪৪, ৮/৭২, ৮/৭৩, ৮/৭৫
البراءة من الكفر والكافرين
খ) কুফর ও কাফিরগণ হতে নিজকে মুক্ত করণ
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/২৮, ৪/১৪৪, ৫/৫১, ৫/৫৭, ১১/৫৪, ১৮/৫০

نواقض الإيمان
তৃতীয় অধ্যায় ঃ ঈমান ভঙ্গকারী বিষয়সমূহ

الكفر
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ কুফুরী
الكفار بعضهم أولياء بعض
১। কাফিররা পরস্পর পরস্পরের বন্ধু–৮/৭৩
الأخذ بالشدة على الكفار
২। কাফিরদেরকে শক্তভাবে পাকড়াও করণ
সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/১৯৩, ৪/৮৯, ৫/৩৩, ৮/৫৭, ৯/৫, ৯/২৯, ৯/৭৩, ৯/১২৩, ৪৭/৪, ৫৮/২২, ৬০/১, ৬৬/৯
عاقبة الكافرين
৩। কাফিরদের পরিণতি
সর্বমোট ৭০৭টি আয়াত ঃ বাক্বারাহ ২৭টি, আলু 'ইমরান ৩০টি, আন-নিসা ১৯টি, আল-আ'রাফ ৩৩টি, আন-নাহল ২৩টি, আশ,শু'আরা ১৬টি, যুমার ১৬টি, আল-কামার ১৭টি উল্লেখযোগ্য।
إهدار عمل الكافر
৪। কাফিরদের আমাল বৃথা ও অকার্যকর
সর্বমোট ২৮টি আয়াত ঃ ২/২১৭, ২/২৬৬, ৩/২২, ৩/১১৭, ৫/৫,৬/৮৮, ৭/১৩৯, ৭/১৪৭, ৮/৩৬, ৯/১৭, ৯/৫৩, ৯/৫৪, ৯/৬৯, ১১/১৬, ১৩/১৪, ১৪/১৮, ১৮/১০৩, ১৮/১০৪, ১৮/১০৫, ২৪/৩৯, ২৫/২৩, ৩৩/১৯, ৩৯/৬৫, ৪৭/১, ৪৭/৮, ৪৭/৯, ৪৭/২৮, ৪৭/৩২
أعمال بمثابة الكفر
৫। কুফুরীর পর্যায়ভুক্ত কার্যসমূহ
الاستقسام بالأزلام بمثابة الكفر
৫/১। তীর দ্বারা ভাগ্য নির্ণয় করা কুফুরীর পর্যায়ভুক্ত
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৩, ৫/৯০
جحود الكافر وعصيانه
৬। কাফিরের অস্বীকৃতি ও তার নাফরমানী
সর্বমোট ৫৬৮টি আয়াত ঃ বাক্বারাহ ১৪টি, আল,আন'আম ২১টি, আল,আ'রাফ ২৪টি, ইউনুস ১১টি, হূদ ১৪টি, আল,ইসরা ১৫টি, আল,মু'মিন ১৯টি, আল,ফুরকান ১৮টি, শু'আরা ৩২টি, সাফফাত ২৪টি উল্লেখযোগ্য।

← চলমান পাতা

Contents

إمهال الله للكافرين في الدنيا

৭। দুনিয়াতে আল্লাহ কর্তৃক কাফিরদেরকে অবকাশ প্রদান

সর্বমোট ১২২টি আয়াত ঃ ২/১৫, ৩/১৭৮, ৩/১৮১, ৩/১৯৬, ৩/১৯৭, ৫/৭১, ৬/৮, ৬/৯, ৬/৪৪, ৬/৫৭, ৬/৫৮, ৬/৯১, ৬/১০৮, ৬/১১০, ৬/১১২, ৬/১৩৩, ৬/১৩৭, ৬/১৫৮, ৬/১৫৯, ৭/১৩, ৭/১৪, ৭/১৫, ৭/৯৫, ৭/১৫৫, ৭/১৮৩, ৮/৩৩, ৯/৫৫, ৯/৬৪, ৯/৬৯, ৯/৮৫, ১০/১১, ১০/১৯, ১০/২৩, ১০/৫০, ১০/৭০, ১১/৮, ১১/৪৮, ১১/৯৩, ১১/১১০, ১১/১২২, ১৩/৬, ১৩/৩২, ১৪/১০, ১৪/৩০, ১৪/৪২, ১৫/৩, ১৬/৩৩, ১৬/৪৫, ১৬/৫৫, ১৬/৬১, ১৬/১১৭, ১৭/১৮, ১৭/২০, ১৭/১০৪, ১৮/৫৮, ১৯/৭৫, ১৯/৮৪, ২০/১৩১, ২০/১৩৫, ২১/৩৭, ২১/৪৪, ২১/১০৯, ২১/১১১, ২২/৪৪, ২২/৪৭, ২২/৪৮, ২২/৫৫, ২৩/৪০, ২৩/৫৪, ২৩/৫৫, ২৩/৫৬, ২৬/২০৫, ২৭/৪, ২৮/৫৯, ২৮/৬১, ২৮/৭৬, ২৯/৫৩, ২৯/৬৬, ৩০/৩৪, ৩১/২৪, ৩২/২১, ৩২/২৯, ৩২/৩০, ৩৩/১৬, ৩৫/৪৫, ৩৭/১৭৪, ৩৭/১৭৫, ৩৭/১৭৮, ৩৭/১৭৯, ৩৯/৮, ৩৯/৩৯, ৪০/৪, ৪০/৭৫, ৪১/৪১, ৪১/৪৫, ৪২/১৪, ৪২/২০, ৪২/২১, ৪৩/২৯, ৪৩/৩৩, ৪৩/৩৪, ৪৩/৩৫, ৪৩/৮৩, ৪৪/৫৯, ৪৬/২৬, ৪৬/৩৫, ৪৭/১২, ৫১/৫৩, ৫১/৫৯, ৫২/১২, ৫২/৪৫, ৫৪/২৬, ৫৪/৪৬, ৫৫/৩১, ৫৯/৩, ৬৮/৪৪, ৭০/৪২, ৭২/১৬, ৭৩/১১, ৭৭/৪৬, ৮৬/১৭

العودة في الكفر

৮। কুফুরীতে প্রত্যাবর্তন

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/৮৬, ৩/৯০, ৫/১২, ৫/৫৪, ১৬/১০৬, ৪৭/২৫, ৪৭/৩২, ৪৭/৩৩

هوان الكافر على الله

৯। আল্লাহ কর্তৃক কাফিরদের শাস্তি

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/৭, ৪/৫৬, ৪/১৫১, ১১/৫৭, ২৫/৭৭, ২৮/৪১

سؤال الكافرين الرجعة يوم القيامة

১০। কিয়ামত দিবসে কাফিরদের দুনিয়ায় প্রত্যাবর্তনের কাকুতি।

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/২৭, ৭/৫৩, ২৬/১০২

سفاهة عقول الكافرين

১১। কাফিরদের বিবেকের অজ্ঞতা

সর্বমোট ৫৫টি আয়াত ঃ ২/৬, ৬/১৩৭, ৬/১৪০, ৭/১৩৯, ৭/১৯৩, ৭/১৯৫, ৭/১৯৭, ৭/১৯৮, ৮/২১, ৮/২২, ৮/২৩, ৮/৩২, ৮/৫৫, ৮/৬৫, ৯/১৯, ২১/৫৯, ২১/৬২, ২১/৬৩, ২১/৬৫, ২৩/৬৩, ২৫/৪২, ২৫/৪৩, ২৫/৪৪, ২৫/৫৫, ২৬/৭১, ২৬/৭২, ২৬/৭৩, ২৬/৭৪, ২৬/৭৫, ২৬/৭৬, ২৬/৯৭, ২৬/৯৮, ২৬/১৩৬, ২৬/১৩৭, ২৬/১৫১, ২৬/১৫২, ২৬/১৬৬, ২৬/১৮৬, ২৭/৪, ২৭/১৩, ২৭/২৪, ২৭/৪৭, ২৮/৫০, ২৯/৪, ২৯/১৭, ২৯/২৫, ২৯/৫২, ২৯/৬১, ২৯/৬৩, ২৯/৬৭, ৩৭/১৫৪, ৫৩/৩৫, ৫৯/১৩, ৬৩/৭, ৭০/৩৮

استمرارية عذاب الكافرين

১২। কাফিরদের আযাবের নিরবিচ্ছিন্নতা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৫৬, ২০/৭৪, ৮৭/১৩

عداوة الكافرين للمسلمين

১৩। কাফিরদের মুসলিমদের প্রতি বিদ্বেষ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/১০১, ৫/৮২, ৮/৬০, ৬০/১, ৬০/২, ৬৩/৪

← চলমান পাতা

توبيخ الله تعالى للكافرين

১৪। আল্লাহ কর্তৃক কাফিরদের ধমক

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ১০/৯১, ১৭/১০৭, ২৭/৫৯, ২৭/৬৪, ২৮/৭১, ২৮/৭২, ৩৪/২৪, ৩৪/২৭, ৬৭/১৬, ৬৭/২২, ৬৭/২৮, ৬৭/৩০

الاستدراج

১৫। ধীরে ধীরে পাকড়াও করণ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৬/৪৪, ৭/৯৫, ৭/১৮২, ৭/১৮৩, ৮/৪৮, ২৭/৪, ২৯/৩৮

الشرك

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ শিরক

حكم الشرك

১। শিরকের হুকুম

الشرك ظلم

১/১। শিরক হচ্ছে যুলম

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/৫১, ২/৫৪, ২/৫৭, ২/৫৯, ২/৯২, ২/১৬৫, ৬/৪৫, ৬/৮২, ৭/৫, ৩১/১৩

الشرك أكبر الكبائر

১/২। বড় শিরক কাবীরাহ গুনাহ

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ৪/৩৬, ৪/৪৮, ৪/১১৬, ৪/১১৭, ৫/১৭, ৫/৭২, ৫/৭৩, ৬/১৯, ৬/১৩৬, ৬/১৩৭, ৬/১৩৮, ৬/১৩৯, ৬/১৪০, ৬/১৫০, ৬/১৫১, ৭/৩৩, ৭/৩৭, ১০/১০৬, ১২/৩৮, ১২/৪০, ১৫/৯৬, ২৫/৬৮, ২৬/৭১, ২৬/৭৪

إجابة المشرك إذا طلب الأمان

২। মুশরিককে আশ্রয় প্রদান যখন সে নিরাপত্তা কামনা করবে–৯/৬

معاهدة المشركين

৩। মুশরিকদের অঙ্গীকারসমূহ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৯/১, ৯/৪, ৯/৭, ৯/১২

براءة الله من المشركين

৪। মুশরিকদের থেকে আল্লাহর মুক্ত থাকা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/১, ৯/৩

براءة الرسول من الشرك والمشركين

৫। শিরক ও মুশরিকদের হতে রাসূলের মুক্ত থাকা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৬/১৯, ৯/১, ৯/৩, ১০/৪১, ১১/৩৫, ১১/৫৪, ২৬/২১৬

الاستعانة بالمشركين

৬। মুশরিকদের নিকট সাহায্য প্রার্থনা

← চলমান পাতা

حكم الاستعانة بالمشركين

৬/১। মুশরিকদের নিকট সাহায্য প্রার্থনার হুকুম

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৯/২৩, ৩৩/১, ৬০/১, ৬০/৪, ৬০/৯, ৬০/১৩

عجز الآلهة من دون الله

৭। আল্লাহ ব্যতীত সকল মা'বূদের অপারগতা

সর্বমোট ১০৮টি আয়াত ঃ ৫/৭৬, ৬/৪০, ৬/৪১, ৬/৪৬, ৬/৫১, ৬/৬৩, ৬/৭০, ৬/৮০, ৬/৮১, ৬/৯৪, ৭/৩৭, ৭/৪৮, ৭/৫৩, ৭/১৪৮, ৭/১৯১, ৭/১৯২, ৭/১৯৩, ৭/১৯৪, ৭/১৯৫, ৭/১৯৭, ৭/১৯৮, ১০/১৮, ১০/৩০, ১০/৩৪, ১০/৩৫, ১০/৩৬, ১০/৬৬, ১০/১০৬, ১১/২১, ১১/১০১, ১৩/১৪, ১৩/১৬, ১৩/৩৩, ১৩/৩৪, ১৪/২২, ১৬/১৭, ১৬/২০, ১৬/২১, ১৬/৫৩, ১৬/৭৩, ১৬/৮৭, ১৭/৫৬, ১৯/৪২, ২০/৮৯, ২০/৯৭, ২১/২১, ২১/৪২, ২১/৪৩, ২১/৫৮, ২১/৫৯, ২১/৬৩, ২১/৬৫, ২১/৬৬, ২১/৯৮, ২১/৯৯, ২২/১২, ২২/১৩, ২২/৬২, ২২/৭৩, ২৫/৩, ২৫/১৭, ২৫/১৯, ২৫/৫৫, ২৬/৭২, ২৬/৭৩, ২৬/৯৩, ২৬/৯৮, ২৯/১৭, ২৯/৪১, ২৯/৪২, ৩০/৪০, ৩১/১১, ৩১/৩০, ৩৪/২২, ৩৪/৪২, ৩৫/৩, ৩৫/১৩, ৩৫/১৪, ৩৫/৪০, ৩৬/২৩, ৩৬/৭৫, ৩৭/৯১, ৩৭/৯২, ৩৭/৯৩, ৩৭/৯৫, ৩৭/১৬২, ৩৯/৩৮, ৩৯/৪৩, ৪০/২০, ৪০/২১, ৪০/৪৩, ৪০/৭৩, ৪০/৭৪, ৪০/৮৪, ৪২/৯, ৪৩/৮৬, ৪৫/১৯, ৪৬/৪, ৪৬/৫, ৪৬/২৮, ৫৩/৫৮, ৬৭/২০, ৬৭/২৮, ৬৭/৩০, ৬৮/৪০, ৭১/২৫, ৮৬/১০

التثليث

৮। ত্রিত্ববাদ– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১৭১, ৫/৭৩

عاقبة المشرك

৯। মুশরিকের পরিণতি

সর্বমোট ৬১টি আয়াত ঃ ২/২৭, ২/১২৩, ২/১৬৫, ২/১৬৭, ৩/১৫১, ৪/৪৮, ৪/১১৬, ৪/১১৯, ৪/১২১, ৫/৭২, ৫/৭৩, ৬/২২, ৬/৫৭, ৭/৩০, ৭/৩৭, ৭/৩৮, ৭/৭৮, ৭/১৪৬, ৭/১৫২, ৭/১৮৬, ৯/১১৩, ১০/১৭, ১৩/১৪, ১৩/৩৩, ১৪/২৯, ১৪/৩০, ১৪/৪৯, ১৪/৫০, ১৬/৮৬, ১৬/৮৮, ১৬/১০৪, ১৬/১০৬, ১৭/২২, ১৭/৩৯, ১৭/৯৭, ১৭/৯৮, ১৮/১০২, ২১/২৯, ২৩/১১৭, ২৫/১৯, ২৬/৯৪, ২৬/৯৫, ২৬/১০০, ২৬/২১৩, ২৯/২৫, ৩০/১৩, ৩০/২৯, ৩০/৪২, ৩৩/৬৭, ৩৩/৭৩, ৩৭/১৫৮, ৩৯/১৫, ৩৯/৪৭, ৩৯/৪৮, ৩৯/৬৫, ৪০/৪৩, ৪০/৫২, ৪৮/৬, ৫০/২৬, ৫৯/১৭

الأمر بمخالفة المشركين

১০। মুশরিকদের বিরুদ্ধাচরণের নির্দেশ

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/১২০, ২/১৩৫, ২/১৪৫, ৩/২৮, ৩/১৪৯, ৩/১৫৬, ৫/৫১, ৬/১০৬, ৬/১২১, ৬/১৫০, ৭/৩, ৮/৪৭, ১০/৮৯, ১১/১২১, ১৩/৩৭, ২৮/৮৬, ২৮/৮৭, ৩০/৩১, ৩৩/১, ৩৩/৪৮, ৪০/১৪, ৪২/১৫, ৪৫/১৮, ৬৮/৮, ৬৮/১০, ৭৬/২৪, ১০৯/২, ১০৯/৪, ১০৯/৬

اتخاذ المخلوقات آلهة من دون الله

১১। আল্লাহ ব্যতীত মাখলূকাতকে মা'বূদ প্রতিপন্ন করা–১৯/৮১

النفاق

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ কপটতা

خصال المنافق

১। মুনাফিকের বৈশিষ্ট্য

সর্বমোট ১১৬টি আয়াত ঃ ২/৮, ২/৯, ২/১০, ২/১১, ২/১২, ২/১৩, ২/১৪, ২/২০৪, ২/২০৫, ২/২০৬, ২/২৬৪, ৩/১১৮, ৩/১১৯, ৩/১২০, ৩/১৫৪, ৩/১৬১, ৩/১৬৭, ৩/১৬৮, ৪/৬০, ৪/৬১, ৪/৬২, ৪/৬৫, ৪/৭২, ৪/৭৩, ৪/৭৮, ৪/৮১, ৪/৮৩, ৪/৮৯, ৪/৯১, ৪/১০৭, ৪/১০৮, ৪/১৩৭, ৪/১৩৯, ৪/১৪০, ৪/১৪১, ৪/১৪২, ৪/১৪৩, ৫/৪১, ৫/৫২, ৫/৬১, ৮/২১, ৮/৪৯, ৯/৮, ৯/৪২, ৯/৪৫, ৯/৪৬, ৯/৪৭, ৯/৪৯, ৯/৫০, ৯/৫৪, ৯/৫৬, ৯/৫৭, ৯/৫৮, ৯/৫৯, ৯/৬২, ৯/৬৪, ৯/৬৫, ৯/৬৭, ৯/৬৯, ৯/৭৫, ৯/৭৭, ৯/৭৯, ৯/৮১, ৯/৮৩, ৯/৮৬, ৯/৮৭, ৯/৯০, ৯/৯৩, ৯/৯৫, ৯/৯৬, ৯/১০৭, ৯/১২৫, ৯/১২৬, ৯/১২৭, ২২/১১, ২২/৫৩, ২৪/৪৭, ২৪/৪৮, ২৪/৫০, ২৪/৫৩, ২৪/৫৪, ২৪/৬৩, ২৯/১০, ৩৩/১২, ৩৩/১৩, ৩৩/১৪, ৩৩/১৫, ৩৩/১৮, ৩৩/১৯, ৩৩/২০, ৪৭/১৬, ৪৭/২০, ৪৭/২৬, ৪৭/৩০, ৪৮/১১, ৪৮/১২, ৫৮/১৪, ৫৮/১৬, ৫৮/১৮/, ৫৮/১৯, ৫৯/১১, ৫৯/১৩, ৬৩/১, ৬৩/২, ৬৩/৩, ৬৩/৪, ৬৩/৫, ৬৩/৭, ৭৪/৩১, ১০৭/৪, ১০৭/৫, ১০৭/৬, ১০৭/৭

عاقبة المنافق

২। মুনাফিকের পরিণতি

সর্বমোট ৬৮টি আয়াত ঃ ২/১০, ২/১৫, ২/১৬, ২/১৭, ২/১৮, ২/১৯, ২/২০, ২/২০৬, ২/২৬৪, ৩/১০৬, ৪/৬২, ৪/১০৯, ৪/১৩৭, ৪/১৩৮, ৪/১৪০, ৪/১৪৩, ৪/১৪৫, ৫/৫৩, ৯/৪৯, ৯/৫২, ৯/৫৫, ৯/৬৩, ৯/৬৪, ৯/৬৬, ৯/৬৭, ৯/৬৮, ৯/৬৯, ৯/৭৩, ৯/৭৪, ৯/৭৯, ৯/৮১, ৯/৮২, ৯/৮৪, ৯/৮৫, ৯/৮৭, ৯/৯৪, ৯/৯৫, ৯/৯৬, ৯/১০১, ৯/১০৯, ২২/১১, ২৪/১১, ২৪/৫০, ২৯/১১, ৩৩/১৯, ৩৩/২৪, ৩৩/৬০, ৩৩/৬১, ৩৩/৬২, ৩৩/৭৩, ৩৫/১০, ৪৮/৬, ৫৭/১৩, ৫৭/১৪, ৫৭/১৫, ৫৮/১৪, ৫৮/১৬, ৫৮/১৭, ৫৮/১৮, ৫৮/১৯, ৬৩/৩, ৬৩/৬, ৬৬/৯, ১০৭/৪, ১০৭/৫, ৬১০৭/৬, ১০৭/৭

أحكام تتعلق بالمنافق

৩। মুনাফিক সম্পর্কিত বিধানাবলী

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/১১৮, ৪/৭২, ৪/৮৯, ৪/৯১, ৯/৭৩, ৯/৮৩, ৯/৮৪, ৬৬/৯

الرياء في العمل

৪। লোক দেখানো আমল

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/৮, ২/৯, ২/২৬৪, ৪/৩৮, ৪/৮১, ৪/১৪২, ৯/৫৬, ১১/১৫, ১১/১৬, ১২/১০৬, ৩০/৩৯, ৪৭/২৬, ৪৭/৩০, ৪৮/১১, ৫৭/১৪, ৬৩/১, ৬৩/২, ১০৭/৬

متى يقتل المنافق

৫। মুনাফিককে কখন হত্যা করা হবে

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৮৯, ৪/৯০, ৪/৯১

المنافق وعذاب القبر

৬। মুনাফিক ও কবরের আযাব—৯/১০১

موقف المنافقين من الإسلام

৭। ইসলাম সম্পর্কে মুনাফিকদের অবস্থান

সর্বমোট ৫৭টি আয়াত ঃ ২/৮, ২/৯, ২/১৩, ২/১৪, ২/২০৪, ৩/১১৮, ৩/১১৯, ৩/১২০, ৩/১৫৪, ৩/১৬৭, ৩/১৬৮, ৩/১৭৩, ৪/৬০, ৪/৬১, ৪/৭২, ৪/৭৩, ৪/৭৮, ৪/৮১, ৪/৮৯, ৪/৯১, ৪/১৩৯,

← চলমান পাতা

৪/১৪১, ৫/৪১, ৫/৫২, ৫/৬১, ৮/২২, ৯/৪৭, ৯/৪৮, ৯/৫০, ৯/৫২, ৯/৬১, ৯/৬৫, ৯/১০৭, ৯/১২৫, ৯/১২৭, ২৪/১১, ২৪/৪৭, ২৪/৪৮, ২৯/১০, ৩৩/১২, ৩৩/১৩, ৩৩/১৪, ৩৩/১৮, ৩৩/১৯, ৩৩/২০, ৪৭/১৬, ৪৭/২৬, ৪৭/২৯, ৫৭/১৪, ৫৮/১৪, ৫৯/১১, ৫৯/১২, ৬৩/২, ৬৩,৫, ৬৩,৭, ৬৩/৮, ৭৪/৩১

الابتداع في الدين

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ দ্বীনের মধ্যে বিদ'আত– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৬/১১৬, ৫৭/২৭

السحر

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ যাদু

حقيقة السحر

১। যাদুর হাকীকত– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১০২, ৭/১১৬

حكم السحر

২। যাদুর বিধান– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১০২, ৪/৫১

الاشتغال بالسحر

৩। যাদুর পেশা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১০২, ১১৩/৪

طلب الأجر على السحر

৪। যাদুর বিনিময় প্রার্থনা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/১১৩, ২৬/৪১

الطيرة

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ অশুভ আলামত (কুসাইত)

অশুভ আলামত ঃ সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/১৩১, ২৭/৪৭, ৩৬/১৮, ৩৬/১৯

الإيمان يزيد وينقص

চতুর্থ অধ্যায় ঃ ঈমান বাড়ে ও কমে

زيادة الإيمان ونقصانه

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ঈমানের বর্ধন ও হ্রাস

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৮/২, ৯/১২৪, ১৮/১৩, ১৯/৭৬, ৪৭/১৭, ৪৮/৪

الإيمان قول وعمل

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ঈমান- কথা ও কর্ম

সর্বমোট ৮৯টি আয়াত ঃ ২/৩, ২/২৫, ২/৬২, ২/৮২, ২/১৪৩, ২/১৭৭, ২/২১৭, ২/২৭৭, ২/২৭৮, ৩/৫৭, ৩/১১৪, ৪/৩৬, ৪/১২২, ৪/১২৪, ৪/১৭৩, ৫/৯, ৫/৫৫, ৫/৬৯, ৫/৯৩, ৬/৪৮, ৮/৭২, ৮/৭৪, ৮/৭৫, ৯/২০, ১০/৪, ১০/৯, ১০/৬৩, ১১/১১, ১১/২৩, ১৩/২৯, ১৪/২৩, ১৪/৩১, ১৭/৯, ১৮/৩০, ১৮/৮৮, ১৮/১০৭, ১৯/৬০, ১৯/৯৬, ২০/৭৫, ২০/৮২, ২১/৯৪, ২২/১৪, ২২/২৩, ২২/৫০, ২২/৫৬, ২২/৭৭, ২২/৭৮, ২৩/২, ২৩/৪, ২৩/৫, ২৩/৮, ২৩/৯, ২৪/৬২, ২৫/৬৩, ২৬/২২৭, ২৮/৬৭, ২৮/৭০, ২৯/৭, ২৯/৯, ২৯/৫৮, ৩০/১৫, ৩০/৪৪, ৩০/৪৫, ৩১/৮, ৩২/১৯, ৩৩/৩১, ৩৪/৪, ৩৪/১১, ৩৪/৩৭, ৩৫/৭, ৩৮/২৪, ৩৮/২৮, ৪১/৮, ৪১/৩৩, ৪২/২২, ৪২/২৩, ৪২/২৬, ৪৫/৩০, ৪৭/২, ৪৭/১২, ৪৭/৩৬, ৪৮/২৯, ৬৪/৯, ৬৫/১১, ৮৪/২৫, ৯০/১৭, ৯৫/৬, ৯৮/৭, ১০৩/৩

التفاضل بالأعمال

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আমল দ্বারা পদমর্যাদা নির্ণয়

تفاضل الناس بأعمالهم

১। আমলা দ্বারা মানুষের পদমর্যাদা

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ৩/১৬৩, ৬/৫৩, ৬/১৩২, ৬/১৬৫, ৯/১৯, ৯/২০, ১১/১০৫, ১৩/১৮, ১৬/৭৫, ১৬/৭৬, ৩২/১৮, ৩৫/৩২, ৩৮/২৮, ৩৯/৯, ৩৯/২৪, ৪১/৩৪, ৪১/৩৫, ৪৫/২২, ৪৭/১৪, ৪৯/১১, ৪৯/১৫, ৫৬/৭, ৫৬/৮, ৫৬/৯, ৫৬/১০, ৫৬/১১, ৫৬/২৭, ৫৭/১০, ৫৭/১৩, ৫৯/৮, ৫৯/২০, ৬৭/২, ৬৮/৩৫, ৯২/৪, ৯২/৫, ৯২/৬

أي الناس خير

২। কে সর্বোত্তম ব্যক্তি–৪৯/১৩

الطاعة والمعصية

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ আনুগত্য ও অবাধ্যতা

الطاعات والأعمال الصالحة

১। আনুগত্য ও নেক আমলসমূহ

حق الله على العباد

১/১। বান্দার প্রতি আল্লাহর হক

সর্বমোট ৩৭টি আয়াত ঃ ২/১৩৮, ২/১৭২, ৩/৩২, ৩/১০২, ৬/১০২, ৬/১৬২, ১০/৩, ১১/৬১, ১৩/১৫, ১৫/৯৯, ১৯/৬৫, ২২/৩১, ২২/৭৮, ২৩/৫২, ২৪/৫৫, ২৭/৪০, ২৮/৭৭, ২৯/১৬, ২৯/১৭, ২৯/৩৬, ২৯/৫৬, ৩০/৩১, ৩১/১২, ৩৩/৭০, ৩৪/১১, ৩৬/২২, ৩৬/৬১, ৩৯/২, ৩৯/১০, ৩৯/১১, ৩৯/১৬, ৩৯/৬৬, ৪০/১৪, ৪৮/৯, ৫১/৫৬, ৫৩/৬২, ৬৯/৩৩

مضاعفة الحسنة للمؤمن

১/২। মু'মিনদের জন্য নেকী বৃদ্ধিকরণ

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/২৪৫, ২/২৬১, ২/২৬৫, ৪/৪০, ৬/১৬০, ১০/২৬, ২৪/৩৮, ২৭/৮৯, ২৮/৮৪, ৩০/৩৯, ৩৩/৩১, ৩৪/৩৭, ৩৫/৩০, ৩৯/৩৫, ৪২/২০, ৪২/২৩, ৪২/২৬, ৫৭/১১, ৫৭/১৮, ৬৪/১৭, ৭৩/২০

أفضلية الإيمان

১/৩। ঈমানের শ্রেষ্ঠত্ব

সর্বমোট ১৬৯টি আয়াত ঃ ২/১৮৬, ২/২১৮, ২/২২১, ৩/১১০, ৩/১৩৯, ৩/১৯৫, ৪/৩৯, ৪/৫৭, ৪/৬৭, ৪/৬৮, ৪/৬৯, ৪/১২২, ৪/১৪৬, ৪/১৬২, ৪/১৭৪, ৪/১৭৫, ৫/৫৬, ৫/৬৯, ৫/৮৪, ৫/৮৫, ৫/১১৯, ৬/৪৮, ৬/৮১, ৬/৮২, ৬/১২৭, ৭/৪২, ৭/৯৬, ৭/১৫৬, ৭/১৫৭, ৭/২০৩, ৮/৪, ৮/৭২, ৮/৭৪, ৮/৭৫, ৯/১৯, ৯/২০, ৯/৭২, ৯/৮৮, ১০/৬২, ১০/৬৪, ১০/৯৮, ১০/১০১, ১০/১০৩, ১১/১১, ১১/২৩, ১৭/১৯, ১৮/৮৮, ২০/১২৩, ২১/৯, ২১/৮৮, ২১/১০৩, ২২/১৭, ২২/২৩, ২২/৩৮, ২২/৫০, ২২/৫৬, ২৩/১, ২৩/৫৮, ২৪/৫২, ২৭/৫৩, ২৭/৫৭, ২৯/৭, ২৯/৯, ২৯/৫৮, ২৯/৬৯, ৩০/১৫, ৩০/৩০, ৩০/৪৫, ৩১/৮, ৩২/১৭, ৩২/১৮, ৩২/১৯, ৩৩/৩৫, ৩৩/৪৭, ৩৩/৭৩, ৩৪/৪, ৩৪/৩৭, ৩৫/৭, ৩৫/৩৩, ৩৭/১৬০, ৩৮/৪৯, ৩৯/১৭, ৩৯/২০, ৩৯/৬১, ৪০/৪০, ৪০/৫১, ৪১/৮, ৪১/১৮, ৪২/২৬, ৪৩/৬৮, ৪৩/৬৯, ৪৩/৭০, ৪৩/৭২, ৪৪/৫১, ৪৪/৫৬, ৪৫/৩০, ৪৬/১৪,

← চলমান পাতা

৪৭/৩, ৪৭/১২, ৪৮/৫, ৪৮/২৯, ৫১/১৫, ৫১/১৬, ৫১/৫৫, ৫২/১৭, ৫২/১৯, ৫২/২০, ৫২/২২, ৫২/২৩, ৫২/২৪, ৫৪/৩৫, ৫৬/১২, ৫৬/১৩, ৫৬/১৪, ৫৬/২৪, ৫৭/৭, ৫৭/১২, ৫৭/১৯, ৫৭/২১, ৫৭/২৮, ৫৮/২২, ৬১/১০, ৬১/১১, ৬১/১২, ৬১/১৩, ৬৪/৯, ৬৫/১১, ৬৬/৮, ৭০/৩৫, ৭২/১৩, ৭৬/৫, ৭৬/৬, ৭৬/১১, ৭৬/১৩, ৭৬/১৪, ৭৬/১৫, ৭৬/১৬, ৭৬/১৭, ৭৬/১৮, ৭৬/১৯, ৭৬/২০, ৭৬/২১, ৭৬/২২, ৭৭/৪১, ৭৭/৪২, ৭৭/৪৩, ৭৮/৩১, ৭৮/৩৬, ৭৯/৪১, ৮০/৩৮, ৮০/৩৯, ৮২/১৩, ৮৩/১৮, ৮৩/২২, ৮৩/২৩, ৮৩/২৪, ৮৩/২৫, ৮৩/৩৪, ৮৩/৩৫, ৮৪/৮, ৮৪/৯, ৮৪/২৫, ৮৫/১১, ৮৭/১৪, ৮৮/৮, ৮৮/৯, ৯২/১৭, ৯৮/৭, ৯৮/৮

الأعمال بالنية

১/৪। নিয়তের উপর কর্মের ফলাফল

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ২/২১২, ২/১৪৩, ২/১৭৩, ২/২২৫, ২/২৬১, ২/২৬২, ২/২৬৪, ২/২৬৫, ২/২৭২, ৩/১৪৫, ৪/৬, ৪/৩৮, ৪/১০০, ৪/১১৪, ৪/১৪৬, ৫/২৭, ৫/৮৯, ৫/৯৩, ৫/৯৫, ৬/১৪৫, ৯/৯৮, ৯/৯৯, ১১/১৫, ১১/১৬, ১৬/৪১, ১৬/১০৬, ১৬/১১৫, ১৭/৮৪, ২২/৩৭, ২৪/৩৩, ৩৩/৫, ৪২/২০, ৫৭/১১, ৫৭/১৮, ৫৭/২৫, ৭৬/৯

الأخذ بالأسباب

১/৫। উপলক্ষ অবলম্বন করা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/১২১, ৪/৭১, ৪/১০২, ৫/২৩, ৮/৬০, ১২/৬৭, ১২/৮৭

خيرية الدار الآخرة

১/৬। পরকালের শ্রেষ্ঠত্ব

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ৩/১৪, ৩/১৫, ৩/৪৮, ৩/১৯৫, ৪/৭৭, ৬/৩২, ১২/৫৭, ১২/১০৯, ১৬/৩০, ১৬/৪১, ১৬/৯৫, ১৬/৯৬, ১৬/১০৭, ১৭/১৯, ১৭/২১, ১৭/৩১, ১৮/৪৪, ১৮/৪৬, ১৯/৭৬, ২৮/৬০, ২৮/৬১, ২৮/৮০, ২৯/৬৪, ৪০/৩৯, ৪২/৩৬, ৪৩/৩৫, ৬২/১১, ৭৩/২০, ৮৭/১৭

التجارة مع الله

১/৭। আল্লাহর সঙ্গে ব্যবসায়

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৯/৯, ৯/১১১, ৩৫/২৯, ৫৭/১১, ৫৭/১৮, ৬১/১০, ৬৪/১৭

واجب الرجل حمل أهله على طاعته

১/৮। মানুষের তার পরিবারকে তার আনুগত্যের প্রতি উৎসাহ প্রদানের অপরিহার্যতা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৯/৫৫, ২০/১৩২

المسارعة إلى العمل

১/৯। আমলের দিকে ধাবিত হওয়া

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/১৪৮, ৩/১১৪, ৩/১৩৩, ৫/৩৫, ৫/৪৮, ২১/৯০, ৩৯/৪৫, ৫৭/২১, ৮৩/২৬

الأعمال أبواب الخير

১/১০। আমলই সকল কল্যাণের দ্বার

সর্বমোট ৮৭টি আয়াত ঃ ২/৫, ২/২৫, ২/৬২, ২/৮২, ৪/৮৫, ৪/১১৪, ৪/১৭৫, ৫/৯, ৫/৯৩, ৫/১১৯, ৭/১৫৬, ৭/১৫৭, ৭/১৫৮, ৭/১৯৬, ৯/১২১, ১৭/৯, ১৭/১৯, ১৮/২, ১৮/৪৬, ১৮/১০৩, ১৮/১০৭, ১৮/১১০, ১৯/৬০, ১৯/৬৩, ১৯/৭২, ১৯/৭৬, ১৯/৮৭, ১৯/৯৬, ২০/৭৫, ২০/১১২,

← চলমান পাতা

২১/১০১, ২১/১০২, ২২/১৪, ২২/৩০, ২২/৫০, ২২/৭৭, ২৩/১০, ২৩/১১, ২৩/৭২, ২৩/১০২, ২৩/১১১, ২৬/৮৯, ২৬/৯০, ২৭/৮৯, ২৮/৮০, ২৮/৮৩, ২৯/৭, ২৯/৯, ২৯/৫৮, ৩০/১৫, ৩০/৩৮, ৩১/৫, ৩১/৮, ৩২/১৭, ৩৩/৩৫, ৩৩/৭১, ৩৪/৩৭, ৩৫/১০, ৩৫/৩০, ৩৭/৬১, ৩৭/৭৪, ৩৭/১২৮, ৩৭/১৬০, ৪০/৪০, ৪৩/৭২, ৪৬/১৬, ৫১/১৬, ৫৫/৬০, ৫৭/৭, ৫৭/১০, ৫৭/১১, ৫৭/১৮, ৬৪/৯, ৬৯/২১, ৬৯/২৪, ৭১/৪, ৭৩/২০, ৭৭/৪৩, ৭৭/৪৪, ৭৯/৪১, ৮৪/২৬, ৮৪/২৫, ৮৭/১৪, ৯৫/৬, ৯৮/৭, ৯৯/৭, ১০৩/৩

الأعمال مكفرات للصغائر

১/১১। আমলই সগীরাহ গুনাহর কাফফারা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৭১, ১১/১১৪, ২৮/৫৪

عدم الإصرار على المعصية

১/১২। ধারাবাহিক পাপাচারে লিপ্ত না হওয়া–৩/১৩৫

من عزم الأمور

১/১৩। সুকঠিন কাজসমূহ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/১৮৬, ২১/১৭, ৪২/৪৩

أهمية إتقان العمل

১/১৪। সুনিপুণভাবে কাজ সম্পাদনের গুরুত্ব

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৭/১৯, ২২/২৩, ২২/৩৭, ২৩/২, ৯৪/৭

العمل بالخواتيم

১/১৫। শুভ সমাপ্তি গ্রহণযোগ্য

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২১৭, ২/২৬৬, ২৩/৬০

التفاضل بين الأعمال

১/১৬। আমলের মধ্যে মর্যাদাগত পার্থক্য

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/২৬৩, ৯/১৯, ৯/২০, ১৭/২১, ৩৫/৩২, ৪০/৪০, ৪১/৩৪, ৪১/৪৬, ৪৭/১৪, ৪৯/১১, ৪৯/১৩, ৪৯/১৫, ৫৬/৭, ৫৬/৮, ৫৬/৯, ৫৬/১০, ৫৬/১১, ৫৬/২৭, ৫৭/১০, ৫৭/১৩, ৬৮/৩৫, ৯২/৪

حاجة المسلم للعمل الصالح

১/১৭। মু'মিন ব্যক্তির নেক কাজের প্রয়োজনীয়তা

সর্বমোট ৬১টি আয়াত ঃ ২/৬২, ২/৮২, ২/২৭২, ৩/৩০, ৩/৯২, ৪/৫৭, ৪/১২২, ৪/১২৪, ৪/১৭৪, ৫/৯, ৫/৩৯, ৫/৬৯, ৫/৯৩, ৫/১১৯, ৬/৪৮, ৬/৫৪, ৬/১৫৮, ৯/১১২, ১১/১১, ১৪/২৩, ১৬/৯৭, ১৮/২, ১৮/১০৩, ১৯/৬০, ১৯/৬৩, ১৯/৭৬, ১৯/৯৬, ২০/৭৫, ২০/১১২, ২১/৯৪, ২১/১০১, ২২/১৪, ২২/৩৭, ২২/৫০, ২২/৭৭, ২৩/১০২, ২৬/৮৯, ২৭/৮৯, ২৭/৯২, ২৮/৬৭, ২৯/৬, ৩০/৪৪, ৩৫/১০, ৩৫/১৮, ৩৭/৬১, ৩৯/৪১, ৩৯/৫৫, ৪০/৪০, ৪২/২০, ৪৬/১৪, ৫১/১৬, ৫৩/৩৯, ৬৪/৯, ৬৫/১১, ৮৪/৬, ৮৪/২৫, ৮৭/১৪, ৯৫/৬, ৯৮/৭, ৯৯/৭, ১০৩/৩

الأجر والثواب من الله

১/১৮। আল্লাহর পক্ষ হতেই সওয়াব ও প্রতিদান

সর্বমোট ৭১টি আয়াত ঃ ২/৬২, ২/১১২, ২/১২৭, ২/১৬২, ২/১৭৪, ২/১৭৭, ৩/১৩৬, ৩/১৭১, ৩/১৭২, ৩/১৭৯, ৩/১৯৯, ৪/৪০, ৪/৬৬, ৪/৬৭, ৪/৭৪, ৪/৯৫, ৪/১১৪, ৪/১৩৪, ৪/১৪৬,

← চলমান পাতা

৪/১৫২, ৪/১৬২, ৫/৯, ৮/৪, ৮/২৮, ৯/২২, ৯/১২০, ৯/১২১, ১০/৭২, ১১/১১, ১১/২৯, ১১/৫১, ১১/১১৫, ১২/৫৬, ১২/৫৭, ১২/৯০, ১৬/৪১, ১৬/৯৬, ১৬/৯৭, ১৮/২, ১৮/৩, ২৬/১০৯ ২৬/১২৭, ২৬/১৪৫, ২৬/১৬৪, ২৬/১৮০, ২৯/২৭, ২৯/৫৮, ৩৩/২৯, ৩৩/৩১, ৩৩/৩৫, ৩৩/৪৪, ৩৪/৪৭, ৩৫/৭, ৩৬/১১, ৩৬/২১, ৩৮/৮৬, ৪৮/১০, ৪৮/১৬, ৪৮/২৯, ৪৯/৩, ৫৭/৭, ৫৭/১১, ৫৭/১৮, ৬৪/১৫, ৬৫/৫, ৬৭/১২, ৬৮/৩, ৬৮/৪৬, ৭৩/২০, ৮৪/২৫, ৯৫/৬

الهداية من الله

১/১৯। আল্লাহর পক্ষ হতেই হিদায়াত

সর্বমোট ১২৮টি আয়াত ঃ

التوفيق من الله

১/২০। আল্লাহর পক্ষ হতেই তাওফীক বা সামর্থ্য

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৩৫, ১১/৮৮

رفع الحرج عن المسلمين

১/২১। মুসলিমদেরকে সংকীর্ণতা থেকে মুক্ত করা

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ২/২৩৯, ৫/৬, ৫/৯৩, ৫/১০১, ৬/১৫২, ৭/৪২, ৮/৬৬, ৯/৯১, ২০/২, ২২/৭৮, ২৩/৬২, ২৪/১০, ৪৯/৭, ৫৮/১৩, ৬৪/১৬, ৬৫/৭, ৭৩/২০

الاقتصاد في الأعمال

১/২২। আমলে মধ্যম পন্থা অবলম্বন

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৮৬, ৬/১৪১, ৭/৪২, ২৫/৬৭, ৭৩/২০

الأخذ بالرخصة

১/২৩। অনুমতির পথ অবলম্বন করা–২৩/৬২

الأعمال التي تزحزح عن النار

১/২৪। যে আমলসমূহ জাহান্নাম হতে মুক্তি দিবে।

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/২৫, ৩/১০৩, ৩/১৯৮, ৫/৬৫, ৯/১১১, ১১/২৩, ৬৪/৯, ৯০/১৩, ৯০/১৪, ৯০/১৫, ৯০/১৬, ৯২/১৮

بذل الوسع في طاعة الله

১/২৫। আল্লাহর আনগর্তে সর্বাত্মক প্রচেষ্টা চালানো

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/৬৩, ২/৯৩, ২/২০৭, ২/২০৮, ৩/১০২, ৭/১৪৪, ৭/১৬৪, ৭/১৭০, ৭/১৭১, ১৯/১২, ২০/৮৪

المداومة على العمل

১/২৬। ধারাবাহিক আমলে অভ্যস্থ থাকা–৩/২০০

ابتغاء الوسيلة

১/২৭। ওয়াসিলা (আমালে সলেহ এর মাধ্যমে) অনুসন্ধান করা–

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৩৫, ১৭/৫৭

عدم تحقير المعروف

১/২৮। সৎকাজকে তুচ্ছ মনে না করা–

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২১৯, ৯৯/৭

← চলমান পাতা

شفاعة الأعمال الصالحة لأهلها

১/২৯। সৎকর্মশীলদের জন্য তার আমলের সুপারিশ করা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/১৩৪, ২/১৪১, ১৯/৮৭, ৪১/৪৬

إحصاء الأعمال

১/৩০। আমলের পরিসংখ্যান–

সর্বমোট ১০৯টি আয়াত ঃ

الإخلاص في العمل

১/৩১। আমলে একনিষ্ঠতা–

সর্বমোট ৪৮টি আয়াত ঃ

تحذير الله لعباده

১/৩২। আল্লাহ কর্তৃক স্বীয় বান্দাকে ভীতি প্রদর্শন করা।

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/২৩৫, ৩/২৮, ৩/৩০, ৫/৯২, ৮/৬৮, ১৭/৫৭, ২৪/৬৩

حب الله لعباده الصالحين

নেক বান্দাদের প্রতি আল্লাহর ভালবাসা–১/৩৩।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/৭৬, ৪/৬৯, ৫/৫৪, ৫/৯৩

المعصية والذنوب

২। অবাধ্যতা ও পাপাচার

الكبائر

২/১। কবীরাগুনাহসমূহ–

সর্বমোট ৩৪টি আয়াত ঃ ২/২৭৫, ৪/১০, ৪/১৬, ৪/২৯, ৪/৩০, ৪/৯৩, ৫/২৯, ৫/৩২, ৫/৩৩, ৫/৯০, ৫/৯১, ৬/১৩৬, ৬/১৩৭, ৬/১৩৮, ৬/১৩৯, ৬/১৪০, ৬/১৪৪, ৬/১৫১, ৬/১৫৭, ৭/৯, ৭/২৮, ৭/৩৩, ৭/৪০, ৭/১৬, ৯/৩৯, ১৬/১০৬, ১৯/৫৯, ২৪/২, ২৪/৪, ২৪/১৫, ২৪/২৩, ২৫/৬৮, ৩১/১৩, ৪৯/১২

كفارات الكبائر

২/২। কবীরা গুনাহর কাফফারা–

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৩/৮৯, ৪/১৬, ৪/৯২, ৫/৩৪, ৫/৩৯, ৫/৭৪, ৭/১৫৩, ৯/১০২, ২৪/৫

الإثم الباطن

২/৩। গোপন পাপ–

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/১২০, ৬/১৫১, ৭/৩৩

أعظم الذنب

২/৪। সর্ববৃহৎ অপরাধ–

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/১৬৫, ৪/১১৬, ৪/১১৭, ৫/৭২, ৫/৭৩, ৬/১৯, ৬/১৩৬, ৬/১৪৪, ৬/১৫১, ৭/৩৩, ৭/৩৭, ৭/৪০, ৯/৮০, ১০/১০৬, ১২/৩৮, ১৩/১৪, ১৮/৫৭, ১৯/৯০

كفارات الصغائر

২/৫। সগীরা গুনাহর কাফফারা–

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৭১, ৪/৩১, ৪/৪৮, ৭/১৫৩, ২৮/৫৪

← চলমান পাতা

Contents

الإصرار على المعصية

২/৬। পাপাচারের ধারাবাহিকতা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪৫/৮, ৫৬/৪৬, ৭১/৭

معاقبة العصاة

২/৭। পাপীদের পরিণতি–

সর্বমোট ২৩৪টি আয়াত ঃ

ما تحبط به الأعمال

২/৮। যে কারণে আমল বিনষ্ট হয়–

সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ২/২১৭, ২/২৬৪, ৩/২২, ৩/৮৫, ৩/৯০, ৩/৯১, ৩/১১৭, ৪/২২, ৫/৫, ৫/৩৬, ৫/৫৩, ৬/৮৮, ৭/১৪৭, ৯/১৭, ৯/৫৩, ৯/৫৪, ৯/৬৯, ১১/১৬, ১৮/১০৫, ৩৩/১৯, ৩৯/৬৫, ৪৭/৯, ৪৭/২৮, ৪৭/৩২, ৪৭/৩৩, ৪৯/২

تجاوز الله عن العصاة

২/৯। পাপীদের ব্যাপারে আল্লাহর ছাড়–

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ২/(৫২, ৫৮, ৬৪, ২৮৪, ২৮৬) ৩/(১৫৫, ১৯৩, ১৯৫) ৪/(৩১, ৪৮, ৬৪, ১১০, ১১৬, ১২৯, ১৪৬, ১৪৯, ১৫৩) ৫/(১২, ৩৪, ৬৫) ৬/৫৪ ৭/(১৫৩, ১৬১), ৮/৭০, ৯/৬৬, ১৬/১১৯, ২৩/৭৫, ২৯/২১, ৩৩/২৪, ৩৯/৩৫, ৪২/৩০, ৪২/৩৪, ৪৬/১৬, ৪৬/৩১, ৪৭/২, ৪৮/৫, ৫৭/২০, ৬৪/৯, ৬৫/৫, ৬৬/৮

الدعاء بمغفرة الذنوب

২/১০। ক্ষমা প্রার্থনার দু'আ–

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/২৮৫, ২/২৮৬, ৩/১৬, ৩/১৩৫, ৩/১৪৭, ৩/১৯৩, ৭/২৩, ৭/১৫১, ৭/১৫৫, ১১/৪৭, ৫৯/১০, ৬০/৫, ৬৬/৮

حمل الأوزار

২/১১। পাপ বহন করা–

সর্বমোট ৫২টি আয়াত ঃ ২ (১২৩, ১৩৪, ১৩৯, ১৪১), ৪/(৮৫, ১১, ১২), ৬/৩১, ৬/১৬৪, ১০/২৩, ১০/৪১, ১০/১০৮, ১১/৩৫, ১৪/৫১, ১৬/২৫, ১৬/৩৪, ১৭/৭, ১৭/১৫, ২০/১৫, ২০/১০১, ২২/১০, ২৪/৫৪, ২৭/৯২, ২৯/১২, ২৯/১৩, ৩০/৪৪, ৩১/১২, ৩৪/২৫, ৩৪/৩৩, ৩৪/৫০, ৩৫/১৮, ৩৫/৩৯, ৩৬/৫৪, ৩৭/৩৯, ৩৯/৭, ৩৯/৩১, ৪০/১৭, ৪০/২৮, ৪১/৪৬, ৪২/১৫, ৪৫/১৪, ৪৫/১৫, ৪৫/২২, ৪৫/২৮, ৪৬/১৯, ৪৬/২০, ৫০/২৯, ৫২/১৬, ৫২/২১, ৫৩/৩৮, ৫৩/৩৯, ৭৪/৩৮

الجزاء من جنس العمل

২/১২। যেমন কর্ম তেমন ফল–

সর্বমোট ১০০টি আয়াত ঃ

الوعيد للكفار والعصاة

২/১৩। কাফির ও পাপীষ্ঠদের ভীতিপ্রদর্শন–

সর্বমোট ৪৬০টি আয়াত ঃ

← চলমান পাতা

العقاب على قدر المنزلة

২/১৪। গুরুত্ব অনুসারে পাপের হ্রাস বৃদ্ধি

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৭/৭৫, ৩৩/৩০

ما تستوجب غضب الله

২/১৫। যে বদ আমল আল্লাহর ক্রোধকে অবধারিত করে দেয়–

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৩/৪, ৪/২২, ৪/৯৩, ৪/৯৭, ৪/১৫১, ৬/৩০, ৭/৭১, ৮/১৬, ২০/৮১, ২৪/৯, ৪২/১৬, ৪৮/৬

كيف يرى الناس ذنوبهم

৩। মানুষ কিভাবে তাদের পাপকে দেখে

غفران الله ورحمته

১/১। আল্লাহর ক্ষমা ও দয়া

সর্বমোট ৬১টি আয়াত ঃ ৩/(৮৯, ১২৯, ১৩৫, ১৩৬, ১৯৫), ৪/(১০৬, ১১০, ১২৯, ১৫২), ৫/(৯, ৩৪, ৩৯, ৬৫,৭৪, ৯৮), ৬/৫৪, ৭/(১৫১, ১৫৫, ১৫৬, ১৬১), ৮/(২৯, ৬৯,৭০), ৯/(২৭,৭১), ১২/৯২, ১৭/(৮, ২৫), ২০/৮২, ২৩/(৭৫, ১০৯, ১১৮), ২৭/৪৬, ২৯/(৭, ২১), ৩৩/(২৪/৭১), ৩৬/২৭, ৩৮/২৫, ৩৯/(৩৫, ৫৩), ৪০/(৩, ৭), ৪২/২৫, ৪৪/৪২, ৪৬/৩১, ৪৮/১৪, ৪৯/৩, ৫৩/৩২, ৫৭/(২০,২৮), ৬১/১২, ৬৪/(৯, ১৭), ৬৫/৫, ৬৬/৮, ৭১/৪, ৭৩/২০, ৭৪/৫৬

ضعف الإيمان

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ ঈমানের দুর্বলতা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/১৩৫, ৩/১৬৭, ৭/২০১

صفات المؤمنين

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ মুমিনদের গুণাবলী

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ৭/২০১, ৮/৭৪, ৯/১৭, ৯/২০, ১৩/২০, ১৩/২১, ১৩/২৮, ১৪/৩১, ১৫/৪২, ১৬/৪২, ২৫/৬৩, ২৫/৬৪, ২৫/৬৫, ২৫/৬৭, ২৫/৬৮, ২৫/৭২, ২৫/৭৩, ২৫/৭৪, ২৭/৩, ২৯/৫৯, ৫৮/২২

Contents

العلم :

দ্বিতীয় পর্ব ঃ 'ইল্‌ম

← চলমান পাতা

العلم

দ্বিতীয় পর্ব ঃ 'ইল্‌ম (জ্ঞান)

فضل العلم

প্রথম অধ্যায় ঃ 'ইল্‌মের ফাযীলাত

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/(২৩৭, ২৬৯), ৩/৭, ৪/১৬২, ১২/৬৮, ১৭/১০৭, ২২/৫৪, ২৭/(১৫, ৪০, ৫২) ২৮/(১৪, ৮০), ২৯/(৪১, ৪৩, ৪৯, ৫৪), ৩০/৫৬, ৩৪/৬, ৩৯/৯, ৫৫/৪, ৫৮/১১, ৯৬/৪

منزلة العلماء

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ 'আলিমগণের মর্যাদা

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ২/২৪৭, ৩/১৮, ৪/৮৩, ৫/২৩, ৬/১০৫, ৭/১৬৩, ১৭/১০৭, ২১/৭, ২২/৫৪, ২৭/(৪০,৫২), ২৮/(১৪,৮০), ২৯/(৪১,৪৩,৪৯,৬৪), ৩৫/৬৮, ৩৯/৯, ৫৮/১১

طلب العلم والعمل به

তৃতীয় অধ্যায় ঃ জ্ঞানান্বেষণ ও তার উপর 'আমাল

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/১৫১, ৩/১৩৭, ৫/৬৩, ৭/(১৭৫,১৭৬), ৯/১২২, ১৭/১২, ১৮/৬৬, ২০/১১৪, ৬২/৫

الجهل وعاقبة الجاهلين

চতুর্থ অধ্যায় ঃ মূর্খতা ও মূর্খদের পরিণতি

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/(১১৯,১৪৪)

مجالس العلم

পঞ্চম অধ্যায় ঃ 'ইল্‌মের মজলিস

القعود في الحلقة

প্রথম **অনুচ্ছেদ ঃ জ্ঞানের মজলিসে বসা–৫৮/১১**

مقاطعة المعلم

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ শিক্ষকের (ছাত্র হতে) বিচ্ছিন্নতা–সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৮(৭০,৭৫,৭৮)

تبليغ العلم

ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ 'ইল্‌মের তাবলীগ

الشاهد يبلغ الغائب

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ উপস্থিত অনুপস্থিতের নিকট পৌঁছে দিবে

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৯/১২২, ৪৬/(২৯–৩১)

العلم فرض كفاية

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ইলম অর্জন ফরযে কিফায়াহ–৯/১২২

← চলমান পাতা

Contents

كتمان العلم
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ইলম গোপন করা
সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ২/(১৪৪, ১৪৬, ১৫৯, ১৭৪), ৩/(৭০, ৭১, ৭৫, ১৮৭), ৪/(১৩৭, ১৪৬, ১৫১), ৫/(১৩, ১৫, ৪৪, ৬৩, ৬৭), ৬/১১৪, ৭/(১৬২, ১৬৯)

آداب العلم
সপ্তম অধ্যায় ঃ 'ইল্‌মের আদব

آداب العالم
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আলিমের আদব

مراعاة حال السامع
১। শ্রোতার অবস্থা বিবেচনা করা
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৮/(৬৭,৬৮,৭৩,৮২), ৮৭/৯

سعة صدر العالم
২। আলিমের হৃদয়ের প্রশস্ততা– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/১৯৯, ১৮/(৭২,৭৩,৭৫,৭৮)

رد العلم إلى الله
৩। (না জানা অবস্থায়) ইলমকে আল্লাহর দিকে হাওয়ালা করা
সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/৩২, ৩/(৫,৭,২২), ৪/(২৫,৪৫), ৭/(৬২,১৮৭), ১০/৪০, ১২/(৭৬,৭৭,৯৬), ১৬/(৭০,৯১,১০১,১২৫), ১৭/(৫৪,৫৫,৬০,৮৪,৮৫), ২১/৮০

عمل العالم بعلمه
৪। আলিমের স্বীয় ইলম অনুযায়ী আমল করা
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/(৪৪,১৮৮), ৭/(১৫৯,১৮১), ৪১/৩৩, ৬১/(২,৩), ৬২/৫

واجبات العالم
৫। আলিমের কর্তব্যসমূহ– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/(১৫৯,১৬৪,১৮১)

آداب المتعلم
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ শিক্ষার্থীর শিষ্টাচারসমূহ

احترام المعلم
১। শিক্ষককে সম্মান প্রদর্শন– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৮/(৭০,৭৩,৭৫,৭৬,৭৮)

الإنصات للعالم
২। আলিমের প্রতি মনোযোগী হওয়া–
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৮/(৭০,৭২,৭৩,৭৫,৭৬,৭৮), ৬০/১১৪

الصبر على تحصيل العلم
৩। ইলম অর্জনের জন্য ধৈর্য ধারণ–১৮/৬৯

← চলমান পাতা

آداب مجلس العلم

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ইলমের মজলিসের আদবসমূহ

التفسح في المجالس

১। ইলমের মজলিসকে প্রশস্তকরণ−৫৮/১১

آداب النجوى

২। কানাঘুষা করার আদব− সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫৮/(৮,১২,১৩)

رد المعلم إذا أخطأ

৩। শিক্ষকের ভুল হলে তা শুধরে দেয়া−১৮/(৭১,৭৪,৭৭)

التعليم عن طريق السؤال

৪। প্রশ্ন করার মাধ্যমে শিক্ষাদান

সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ২/২১৫, ৬/(৪৬, ৪৭, ৬৩, ৮১), ৭/(৯৭−১০০), ১৮/১০৩, ২৩/(৮৪, ৮৬, ৮৮, ১১২), ২৬/(৭২, ৭৩, ২২১), ২৭/(৬০−৬৪), ৬১/(২, ১০), ৮৩/(৮, ১৯)

علم الحديث

অষ্টম অধ্যায় ঃ 'ইল্‌মে হাদীস

منزلة السنة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সুন্নাতের মর্যাদা

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ৪/(৫৯,৬৫,৬৯), ৭/১৫৮, ৮/(১,২০,২৪,৪৬), ৯/৭১, ১৬/৪৪, ২৪/৫৬, ৩৩/(২১,৩৬), ৪৭/৩৩, ৫৮/১৩, ৫৯/৭, ৬৪/১২

التمسك بالحديث

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ হাদীসকে আঁকড়ে ধরা

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৩/(৩২,১৩২), ৪/(৬৫,৬৯), ৭/১৫৭, ৮/(১,২০,২৪,৪৬), ৯/৭১, ২৪/৫৬, ৩৩/২১, ৪৭/৩৩, ৫৮/১৩, ৫৯/৭, ৬৪/১২

التثبت من الحديث

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ হাদীসের প্রতি আস্থাবান হওয়া− সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৮৩, ৪৯/৬

كراهية الاختلاف في الحديث

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ হাদীসের ব্যাপারে মতবিরোধ করা অপছন্দনীয় হওয়া−৪/৮৮

الفتيا

নবম অধ্যায় ঃ ফাতাওয়াসমূহ

التحليل والتحريم

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ **হালাল ও হারাম করণ**

التدرج في التحريم

১। পর্যায়ক্রমে হারাম করণ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২১৯, ৪/৪৩

← চলমান পাতা

وضوح الحلال والحرام
২। হালাল ও হারামের সুস্পষ্টতা
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৪/(১৩,২৬), ২৪/১

امتثال أوامر الله ورسوله
৩। আল্লাহ ও তদ্বীয় রসূলের নির্দেশ পালন
সর্বমোট ৯০টি আয়াত ঃ

الابتعاد عن الشبهات
৪। সংশয় পরিহার করা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/১০০, ৭/১৯৯

التحايل في الحرام
৫। হারাম থেকে বাঁচার চাতুরতা–৭/১৬৩

تحريم الحلال وتحليل الحرام
৫। হারামকে হালাল করা ও হালালকে হারাম করা
সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৩/৯৩, ৪/২, ৫/(৮৭,১০৩)– ৬/(১৩৮–১৪০, ১৪৩, ১৪৪, ১৫০), ৭/(৩২, ৮১), ৯/৩৭, ১০/৫৯, ১৬/(৩৫, ১১৬), ৬৬/১, ৬৮/১২

آداب الفتيا
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ফাতাওয়ার আদব

عدم التعجل بالفتوى
১। ফাতাওয়ার ব্যাপারে তাড়াহুড়া না করা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৮৩, ১৭/৩৬

الإفتاء بغير علم
২। বিনা জ্ঞানে ফাতাওয়া প্রদান
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৭/৩৬, ১৮/২২, ২২/(৩,৮), ৩১/২০, ৪০/(৩৫,৫৬)

عمل المفتي بفتواه
৩। মুফতীর ফাতাওয়া অনুযায়ী আমল করা
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/৪৪, ৭/(১৫৯,১৮১), ৪১/৩৩, ৬১/(২,৩), ৬২/৫

آداب السؤال
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ প্রশ্ন করার আদব

طرح المسألة على أهل العلم
১। বিদ্বানগণকে মাসআলাহ জিজ্ঞেস করা
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/২১৫, ৪/৮৩, ৪/(১২৭,১৭৬), ১২/(৪৩,৪৬), ১৬/৪৩, ২১/৭

التكلف في السؤال
২। প্রশ্ন করতে সংকোচ বোধ করা
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৫/(১০১,১০২), ৭/১৮৭, ১০/১৪৮, ৪৯/৭, ৭৯/৪২

← চলমান পাতা

آداب الإجابة

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ উত্তর দানের আদব

توجيه السائل إلى ما فيه فائدة

১। প্রশ্নকারীকে ভাল কিছুর দিক নির্দেশনা দেয়া

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ২/(১৫,১৭,১৯,২২,১৮৯,২১৫,২১৯,২২০,২২২), ৫/৪, ৭/১৮৭, ৮/১, ১৭/৮৫, ১৮/৮৩, ২০/১০৫

الإجابة بالدليل العملي

২। ইলমী দলীল সহকারে উত্তর প্রদান–৫/৩১

الرؤيا

দশম অধ্যায় ঃ স্বপ্ন

أنواع الرؤيا

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ স্বপ্নের প্রকারভেদ

الرؤيا من الله

১। স্বপ্ন আল্লাহর পক্ষ হতে

الرؤيا يوسف

১/১। ইউসুফ (ﷺ)-এর স্বপ্ন

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/(৪,৫,১০০)

تعبير الرؤيا

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ স্বপ্নের তা'বীর

وقوع الرؤيا بعد تعبيرها

১। স্বপ্নের তা'বীরের পর তা সংঘটিত হওয়া–১২/৪১

الطب

একাদশ অধ্যায় ঃ চিকিৎসা বিজ্ঞান

المرض

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ রোগ

الدعاء في المرض

১। অসুস্থতায় দু'আ–২১/৮৩

التداوي

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ চিকিৎসা গ্রহণ

الشفاء

১। আরোগ্য

الشفاء شفاء الله

১/১ আল্লাহর শিফাই হচ্ছে প্রকৃত শিফা–২৬/৮০

← চলমান পাতা

حساب السنين
দ্বাদশ অধ্যায় ঃ বর্ষপঞ্জী

Contents

الأمم السابقة

তৃতীয় পর্ব ঃ পূর্ববর্তী উম্মাত

← চলমান পাতা

الأمم السابقة
তৃতীয় পর্ব ঃ পূর্ববর্তী উম্মাত

بدء الخلق
প্রথম অধ্যায় ঃ সৃষ্টির সূচনা

خلق ما سوى الإنسان
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ মানুষ ব্যতীত অন্যকিছু সৃষ্টি করা

خلق العرش

১। আরশ সৃষ্টি– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/৫৪, ১৩/২, ২৫/৫৯

ماجاء في الكرسي

২। কুরসী সম্পর্কিত বিবরণ–২/২৫৫

خلق اللوح

৩। লাওহে মাহফূয সৃষ্টি– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৩/৩৯, ১৭/৫৮, ২০/৫২, ৮৫/২২

خلق السموات والأرض

৪। আকাশসমূহ ও পৃথিবী সৃষ্টি–

সর্বমোট ৫১টি আয়াত ঃ

خلق الجبال

৫। পর্বতমালা সৃষ্টি– সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৩/৩, ১৬/১৫, ৭৭/২৭, ৭৮/৭, ৯/৩২, ৮৮/১৯

خلق البحار والأنهار

৬। সাগরসমূহ ও নদ-নদী সৃষ্টি

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৩/৩, ১৬/(১৪, ১৫), ২৫/৫৩, ২৭/৬১, ৪৫/১২, ৫৫/২২

خلق الحيوان

৭। প্রাণীজগত সৃষ্টি

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(১৬৪, ২৫৯), ৩/১৪, ১৬/৫, ২২/১৮, ২৪/৪৫, ৩৫/২৮, ৪০/৭৯, ৪২/১১, ৪২/২৯, ৪৩/১২, ৪৭/১২

خلق الحشرات

৮। কীট পতঙ্গ সৃষ্টি

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৬/৬৮, ২২/৭৩, ৩৪/১৪

خلق الكائنات المائية

৯। পানি জগত সৃষ্টি– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৬/১৪, ১৮/(৬১, ৬৩)

خلق الزواحف

১০। সরীসৃপ প্রাণী সৃষ্টি– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২০/২০, ২৪/৪৫

← চলমান পাতা

خلق النبات

১১। উদ্ভিদজগত সৃষ্টি–

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/২৬১, ৬/(৯৯, ১৪১), ১৩/৪, ১৬/(১১, ৬৭), ১৭/৯১, ১৮/৩২, ৩৪/১৬, ৫০/১০, ৫৫/(১১, ১২), ৮৬/১২, ৯৫/১

خلق البلدان

১২। শহর নগর সৃষ্টি

فضل مكة والحرم المكي

১২/১। মাক্কাহ ও মাক্কাহ'র হারামের মর্যাদা

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/(৯৬, ৯৭), ১৪/৩৫, ২৭/৯১, ২৮/৫৭, ২৯/৬৭, ৯০/১, ৯৫/৩

فضل بيت المقدس والشام

১২/২। বাইতুল মুকাদ্দাস ও শামের মর্যাদা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৭/১, ২১/৭১, ২১/৮১

فضل مصر

১২/৩। মিসরের মর্যাদা– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১০/৮৭, ১২/(২১, ৯৯), ৪৩/৫১

ماجاء في النجوم

১৩। তারকারাজী সম্পর্কিত বিবরণ

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৬/৯৭, ৭/৫৪, ১৬/(১২, ১৬), ৮১/(১৫, ১৬), ৮২/(১–৩)

ماجاء في الرياح

১৪। বায়ু সম্পর্কিত বিবরণ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ৩৪/১২, ৪৫/৫, ৫১/(১, ৪১, ৪২), ৭৭/(১, ২)

خلق الشمس والقمر

১৫। সূর্য ও চন্দ্র সৃষ্টি– সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৭/৫৪, ১৬/১২, ২১/৩৩, ৩৬/৩৯, ৯১/(১, ২)

صفة الشمس والقمر

১৬। সূর্য ও চন্দ্রের বিবরণ– সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৬/৯৬, ১০/৫, ১৩/২, ১৪/৩৩, ১৬/১২, ৮৭/১৩

ماجاء في السحاب والغيوم

১৭। মেঘ-বাদল সম্পর্কিত– সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/(১৯, ২০, ১৬৪), ৭/৫৭, ১৩/১২, ২৪/৪৩, ৪৩/১১, ৫১/২, ৭৮/১৪

خلق الليل والنهار

১৮। রাত ও দিন সৃষ্টি–

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ৩/২৭, ৬/(১, ৯৬), ৭/৫৪, ১৩/৩, ১৬/১২, ১৭/১২, ২১/৩৩, ২৪/৪৪, ২৭/৮৬, ২৮/(৭১, ৭৩), ৩৬/৩৭, ৭৮/১০, ৭৯/২৯, ৮১/(১৭, ১৮), ৮৯/৪, ৯১/(৩, ৪)

← চলমান পাতা

خلق الجن
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ জিন সৃষ্টি

خلق الجن من مارج من نار
১। জিন সৃষ্টি অগ্নিশিখা হতে
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/১২, ১৫/২৭, ৩৮/৭৬, ৫৫/১৫

طرد إبليس من رحمة الله
তৃতীয় অধ্যায় ঃ আল্লাহর রহমত হতে ইবলীসকে বিতাড়ন

أمر الملائكة بالسجود لآدم
১। আদমের জন্য ফেরেশতাদের প্রতি সাজদাহর নির্দেশ
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/৩৪, ৭/(১১, ১২), ১৫/২৯, ১৭/৬১, ৩৮/৭২

استكبار إبليس ومجادلته
২। ইবলীসের অহংকার ও তার বিতর্ক
সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ২/৩৪, ৭/(১১-১৪), ১৫/(৩১-৩৩, ৩৯), ১৭/(৬১, ৬২), ১৮/৫০, ২০/১১৬, ৩৮/(৭৪-৭৬)

طرد إبليس ولعنه إلى يوم الدين
৩। ইবলীসকে বিতাড়ণ ও কিয়ামত পর্যন্ত তার উপর অভিসম্পাত
সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/৩৮, ৪/১১৮, ৭/(১৩-১৫, ১৮), ১৫/(৩৪-৩৮), ১৭/৬৩, ৩৮/(৭৭-৮০)

وعيد الشيطان لابن آدم
৪। আদম সন্তানদের প্রতি শয়তানের হুমকি ও ওয়াদা। সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৪/(১১৮, ১১৯), ৭/(১৬, ১৭), ১৫/৩৯, ১৭/(৬২, ৬৪), ২০/১১৭, ৩৮/৮২

الأنبياء
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ নাবীগণ

اختيار الأنبياء
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের মনোনয়ন
সর্বমোট ৪৮টি আয়াত ঃ ২/১২৪, ৩/(৩৩, ৩৯, ৪৫, ১৫৯, ১৬১, ১৭৯), ৬/(৮৩-৮৭, ৮৯, ১২৪), ৭/(৬১, ৬৩, ৬৭-৬৯, ৭৩, ৮৫, ১০৩, ১০৫, ১৪৪), ১২/(৬, ২৩, ২৪, ১০৯), ১৪/১১, ১৬/(২, ১২১), ১৯/৫৮, ২০/৪১, ২১/(৮৫, ৮৬), ২২/৭৫, ২৬/(১৩, ১১৪), ২৮/(১৪, ২৬, ৪৭, ৪৮), ৪০/১৫, ৪২/১৩, ৬২/২, ৬৮/৫০, ৮১/২৪, ৯৩/৭

شهادة الله على صدق الأنبياء
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের সত্যবাদিতা সম্পর্কে আল্লাহর সাক্ষ্য
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৪/(৮, ১৬৬), ১৩/৪৩, ১৭/৯৬, ৪৮/২৮

شهادة الأنبياء على قومهم
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আপন কওমের বিরুদ্ধে নাবীগণের সাক্ষ্য
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/(৪১, ১৫৯), ১৬/(৮৪, ৮৯)

← চলমান পাতা

خصائص الأنبياء

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের বৈশিষ্ট্যসমূহ

معاتبة الله النبي

১। নাবীকে আল্লাহর তিরস্কার

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৬/৫২, ৮/(৬৭, ৬৮), ৯/(৪৩, ১১৩), ৩৩/৩৭, ৬৬/১, ৮০/১

لكل نبي حواريون وأصحاب

২। প্রত্যেক নাবীর জন্য শিষ্য ও সঙ্গী

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/৫২, ৫/১১, ২০(২৯-৩২), ৫৮/২৭, ৬১/১৪

بطانة الأنبياء

৩। নাবীগণের সঙ্গী সাথী

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২০/(২৯-৩২)

صفات النبوة

৪। নুবুওয়াতের গুণাবলী

صبر الأنبياء

৪/১। নাবীগণের ধৈর্য

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৩/(২১, ১৮৪), ৫/(৪১, ৪৯, ৭০), ১২/(১৮, ৩২, ৩৩, ৪২, ৫০, ৮৩, ১১০), ১৩/৩২, ১৪/১২, ১৭/(৪৭, ৪৮, ৭৪), ১৮/৬৯, ২০/(৫৬, ১৩০), ২১/(৮৪, ৮৫), ২৫/২০, ২৮/(২৪, ৪৯)

الأنبياء على لسان أقوامهم

৪/২। নাবীগণ তাদের জাতির ভাষায় প্রেরিত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৪/৪, ২০/২৮

أتباع الأنبياء

৫। নাবীগণের অনুসারী

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৩/(৫২, ৫৩, ৬৮, ১৪৬), ৬/৫২, ১০/(৮৩, ৮৫), ৩৫/১৮, ৫৭/২৭, ৬০/৪

رؤيا الأنبياء وحي

৬। নাবীদের স্বপ্ন হচ্ছে ওয়াহী। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৭/৬০, ৩৭/(১০২, ১০৫), ৪৮/২৭

نسب الرسل

৭। রসূলগণের বংশকুল

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৩/(৩৩, ৩৪), ৪/৫৪, ৬/(৮৪-৮৭), ১২(৬, ৪৮), ১৯/৫৮, ২৯/২৭, ৩৮/(৩০, ৪৫), ৫৭/২৬

تعرض الأنبياء للبلاء

৮। নাবীগণের বিপদের সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ১৯৯টি আয়াত ঃ ২/(৮৭, ৯১), ৩/৫৪, ৫/(৪৯, ১১০), ৬/(১০, ২৫, ৩৩, ৩৪, ১১২), ৭/(৬০, ৬১, ৬৬, ৬৭, ৭৭, ৮২, ৮৮, ৯০, ১০৯, ১২৭, ১৩১), ৮/৩০, ৯/(৪০, ৬১), ১০/(৬৫, ৭১, ৭৬, ৭৮), ১১/(১২, ২৭, ৩২, ৫৩-৫৫, ৮৮), ১২/(২৩, ২৫-২৮, ৩২, ৩৩, ৩৫, ৪২, ৭৭,

← চলমান পাতা

১১০), ১৩/৩২, ১৪/(৯, ১২, ১৩), ১৫/(৬, ১১, ৬৮, ৭১, ৮০, ৯০, ৯৫, ৯৭), ১৬/(১০১, ১২৬, ১২৭), ১৭/(৪৭, ৪৮, ৫৯, ৭৩, ৭৬, ৯৬, ১০১, ১০৩), ১৮/১০৬, ১৯/৪৬, ২০/(৪৫, ৫৭, ৫৮, ৬৩, ৬৪, ৬৭, ১৩০), ২১/(৩, ৫, ৩৬, ৪১, ৫৫, ৬১, ৬৮, ৭৪, ৭৬, ৮৭), ২২/(৪০, ৪২-৪৪, ৬৮), ২৩/(২৪, ২৫, ৩৩, ৩৪, ৩৮, ৭০), ২৫/(৪, ৫, ৭-৯, ২০, ৩১, ৩৭, ৪১, ৪২, ৫২), ২৬/(১৪, ২৭, ২৯, ৩৪, ৩৫, ১১১, ১১২, ১১৬, ১১৭, ১৪১, ১৫৩, ১৫৪, ১৬০, ১৬৭, ১৬৯, ১৭৬, ১৮৫-১৮৭), ২৭/(১৩, ৪৭, ৪৯, ৫৬, ৭০), ২৮, (২৪, ৩৬, ৪৮), ২৯/(২৪, ২৯, ৩০), ৩৩/৬৯, ৩৪/(৩৪, ৪৩), ৩৫/(৪, ২৫), ৩৬/(১৪, ১৫, ১৮, ৩০, ৬৯), ৩৭/(৩৬, ৯৬, ১০৬), ৩৮/(৪, ৬, ৭, ৮, ১৪), ৪০/(৫, ২৪-২৬, ২৮, ৩৭), ৪৩/(৭, ৩০, ৫২, ৫৩), ৪৪/১৪, ৪৬/(৮, ২২), ৫০/(১২-১৪), ৫১/(৩৯, ৫২), ৫২, (৩০, ৩৩), ৫৪/(২, ৯, ১৮, ২৩-২৫, ৩৩), ৬০/১, ৬১/৫, ৬৮/(২, ৫১), ৬৯/(৪১, ৪২), ৭২/১৯, ৮১/২২, ৯১/১৪, ৯৬/(৯-১১), ১০৮/৩, ১১১/৪

اتهام الأنبياء بالسحر والجنون

৯। নাবীগণকে যাদুকর ও পাগল অপবাদ দেয়া

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৫/১১০, ৭/১০৯, ১১/৫৪, ১৭/১০১, ২৩/২৫, ২৬/(২৭, ৩৪, ৩৫, ৪৯, ১৫৩, ১৮৫), ২৮/(৩৬, ৪৮), ৫৪/৯, ৬১/৬

عصمة الأنبياء

১০। নাবীগণের **নিষ্পাপ হওয়া**। **সর্বমোট** ১৩টি **আয়াত** ঃ ৭/১০৫, ৯/৪৩, ১২/(২৩, ২৪), ১৭/৭৪, ২২/৫২, ৩৮/৮৬, ৩৯/৬৫, ৫৩/(২-৪), ৬৯/৪৪, ৮০/১

بشرية الأنبياء

১১। নাবীগণের মানব হওয়া

সর্বমোট ৫২টি আয়াত ঃ ৩/(৭৯, ১৪৪, ১৬৪), ৪/১৭১, ৫/৭৫, ৬/৫০, ৭/(৬৩, ৬৯, ১৫০, ১৫৪, ১৮৮), ৯/(৪৩, ১২৮), ১০/২, ১১/(৩১, ৫০), ১২/১০৯, ১৩/৩৮, ১৪/(১০, ১১), ১৬/৪৩, ১৭/(৯৩-৯৫), ১৮/১১০, ২০/৬৭, ২১/(৭, ৮, ৩৪), ২৩/(২৪, ২৫, ৩৩, ৩৪, ৪৭, ৫১), ২৫/(৭, ২০), ২৬/১৮৬, ২৭/১০, ২৮/(১৮, ৩৩), ২৯/৩৩, ৩৬/১৫, ৩৯/৩০, ৪১/৬, ৪২/৫১, ৪৩/৫৯, ৫০/২, ৫৪/২৪, ৬২/২, ৬৪/৬

السعي للكسب والتجارة

১২। উপার্জন ও ব্যবসার প্রচেষ্টা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৮২, ২৫/৪৭

معجزات الأنبياء

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের মু'জিযাসমূহ

تأييد الأنبياء بالمعجزات

১। মু'জিযা দ্বারা নাবীগণকে সাহায্যকরণ

সর্বমোট ৮১টি আয়াত ঃ ২/(৬০, ৮৭, ৯২, ৯৯), ৩/(৪৯, ৫০, ৫৫, ১৮৩, ১৮৪), ৫/(১১০, ১১৫), ৭/(৭৩, ৮৫, ১০১, ১০৩, ১০৫-১০৮, ১১৭, ১৬০, ১৭১), ৯/৭০, ১০/(১৩, ৭৪, ৭৫), ১১/(৬৪, ৯৬), ১২/(৯৩, ৯৬), ১৪/(৫, ১১), ১৫/৮১, ১৬/৪৪, ১৭/(৫৯, ১১০), ২০/(১৭-২২, ৪৭, ৬৯, ৭৭), **২৩/৪৫**, ২৬/(১৫, ৩০, ৩২, ৩৩, ৪৫, ৬৩, ১৫৫, ১৫৬), ২৭/(১০, ১২, ৩৬, ৩৭), ২৮/৩২, **৩৫/২৫**, ৪০/(২২, ২৩, ২৮, ৩৪, ৫০, ৭৮, ৮৩), ৪৩/(৪৬, ৪৮), ৪৪/(১৯, ৩৩), ৫১/৩৮, **৫৪/(২৭, ২৮)**, ৫৭/২৫, ৫৮/৫, ৬১/৬, ৬৪/৬, ৭২/২৭, ৭৯/২০, ৯১/১৩

الحكمة من تنزيل المعجزات

২। মু'জিযা নাযিলের হিকমত। সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/(১১৮, ২৪৮), ৩/(৪৯, ৫০), ১৪/৫, ১৭/৫৯, ২৬/৬৭, ২৮/৩২, ৪৪/(১৯, ৩৩), ৫৪/৫

موقف الناس من المعجزات

৩। মু'জিযা সম্পর্কে মানুষের অবস্থান

সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ২/(৮৭, ৯২, ৯৯), ৩/(৮৬, ১৮৪), ৪/১৫৩ ৫/১১০, ৬/(৫, ২১, ২৫), ৭/(৭৭, ১০৩, ১০৯, ১১১, ১১২, ১২৩, ১৩২, ১৩৬, ১৪৬), ৯/৭০, ১০/(১৩, ৩৮, ৩৯, ৭৪–৭৭), ১৩/২৭, ১৫/৮১, ৩০/৫৮, ৪৩/(৪৭, ৪৮), ৫৮/৫, ৬৪/৬, ৭৮/২৮, ৭৯/(২১, ২২)

عطاء الله للأنبياء

৪। নাবীগণের জন্য আল্লাহর দান। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৬/৮৪, ১১/৬৩, ১৯/(৪৯, ৫০, ৫৩), ২১/(৭২, ৯০), ২৯/২৭, ৩৮/(৩০, ৪৩)

تثبيت الله للأنبياء

৫। আল্লাহ কর্তৃক নাবীগণকে দৃঢ় ও অবিচল রাখা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১১/৩৬, ১৭/৭৪, ২৬/(১৫, ৫২, ৬২, ৬৩), ২৮/৩৫

تفضيل الأنبياء بعضهم على بعض

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের একজনকে আরেকজনের উপর মর্যাদা প্রদান

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৫৩, ৩/৩৩, ১৭/৫৫

ميثاق الله على الأنبياء

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের প্রতি আল্লাহর প্রতিশ্রুতি

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৮১, ৩৩/৭

كيفية نزول الوحي على الأنبياء

অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের উপর ওয়াহী অবতরণের পদ্ধতি

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪২/৫১, ৫৩/(৪, ৯)

اختلاف شرائع الأنبياء

নবম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের শরীয়তের পার্থক্য

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৩/(৩৫, ৫০, ১৮৩), ৬/১৪৬, ৭/১৫৭, ১৯/২৬, ২২/(৩৪, ৬৭), ৫৭/২৭

أولو العزم من الرسل

দশম অনুচ্ছেদ ঃ দৃঢ় প্রত্যয়ী রসূলগণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/৭, ৪৬/৩৫

قصص الأنبياء

একাদশ অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের কিসসা

آدم عليه السلام

১। আদম আলাইহিস সালাম

آدم أبو البشر

১/১। আদম (عليه السلام) মানব জাতির পিতা।

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/৩০, ৪/১, ৬/৯৮, ৭/১৮৯, ১৫/২৯

← চলমান পাতা

خلق آدم وذريته

১/২। আদম ও তার সন্তান-সন্ততি সৃষ্টি। সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ২/(২৮, ৩০), ৪/১, ৬/(২, ৯৮), ৭/(১১, ১২, ১৮৯), ১৫/(২৬, ২৮, ২৯, ৩৩), ১৯/৬৭, ৩২/৭, ৩৯/৬, ৪৯/১৩, ৫৫/(৩, ১৪), ৬৭/২৩, ৭৬/১, ৮০/(১৮–২০), ৯১/৮, ৯২/৩, ৯৬/২

طينة آدم

১/৩। আদমের গঠন প্রকৃতি

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/৫৯, ৬/২, ১১/৬১, ১৫/(২৬, ২৮, ২৯, ৩৩), ৭১/১৭

تعليم آدم الأسماء كلها

১/৪। আদমকে সকল কিছুর নাম শিক্ষাদান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(৩১, ৩৩)

سجود الملائكة لآدم

১/৫। আদমের জন্য ফেরেশতাদের সাজদাহ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/৩৪, ৭/১১, ১৫/৩০, ১৮/৫০, ২০/১১৬, ৩৮/(৭২, ৭৩)

الشجرة التي أكل منها آدم

১/৬। যে বৃক্ষ হতে আদম ফল খেয়েছিলেন

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/(৩৫, ৩৬), ৭/(১৯, ২০, ২২), ২০/(১২০, ১২১)

هبوط آدم للأرض

১/৭। আদমের পৃথিবীতে অবতরণ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(৩৬, ৩৮), ৭/(২৪, ২৫, ২৭), ২০/১২৩

آدم أول الأنبياء

১/৮। আদম নাবীগণের প্রথম।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৩৩, ২০/১২২

العهد على بني آدم

১/৯। বানী আদমের নিকট হতে অঙ্গীকার গ্রহণ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(২৭, ৮৪), ৭/১৭২, ২০/১১৫, ৩৩/৭২, ৩৬/৬০

طبائع البشر

১/১০। মানুষের স্বভাব

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/(৩০, ৩৬), ৪/(২৮, ৩২, ১২৮), ১৭/১১, ২০/১১৫, ৮৯/(১৫, ১৬)

إدريس

২। ইদরীস (عليه السلام)

ذكر إدريس في القرآن

২/১। আল-কুরআনে ইদরীস (عليه السلام)'র বিবরণ।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৯/(৫৬, ৫৭)

فضل إدريس وصفته

২/২। ইদরীস (عليه السلام)-এর মর্যাদা ও গুণাবলী।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৯/(৫৬, ৫৭)

← চলমান পাতা

نوح

৩। নূহ (ﷺ)

أول رسول إلى الأرض

৩/১। পৃথিবীতে প্রথম রসূল। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ৬/৮৪, ১১/২৫, ২৬/১০৭, ২৯/১৪, ৩৭/৭৫, ৫৭/২৬, ৭১(১, ২, ৫)

دعوة نوح

৩/২। নূহ (ﷺ)-এর দাওয়াত

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ৭/(৫৯, ৬১–৬৪), ১০/(৭১, ৭২), ১১/(২৫, ২৬, ২৮–৩১, ৪২), ২৩/২৩, ২৬/(১০৫, ১০৬, ১০৮, ১১০), ৭১/(১–৩, ৮–২০)

تعرض نوح للبلاء

৩/৩। নূহ (ﷺ)-এর বিপদের সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ৩২টি আয়াত ঃ ৭/(৬০, ৬১), ১০/৭১, ১১/(২৭, ৩২), ১৪/৯, ২৩/(২৪–২৬), ২৫/৩৭, ২৬/(১০৫, ১১১–১১৩, ১১৬–১১৮), ৩৮/১২, ৪০/৫, ৫০/১২, ৫৩/৫২, ৫৪/(৯, ১০), ৬৬/১০, ৭১/(৬, ৭, ২১–২৪, ২৬, ২৭)

العبد الشكور

৩/৪। শুকরগুজার বান্দা–১৭/৩

استجابة دعاء نوح

৩/৫। নূহ (ﷺ)'র দু'আ কবূল হওয়া

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২১/(৭৬, ৭৭), ২৬/১১৯, ৩৭/৭৫, ৫৪/(১১১, ১১২)

إهلاك الله القوم نوح

৩/৬। আল্লাহ কর্তৃক নূহ (ﷺ)-এর কওমের ধ্বংস সাধন

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৭/৬৪, ৯/৭০, ১০/৭৩, ১১/(৩৭, ৪৩, ৪৪, ৮৯), ২৩/২৭, ২৫/৩৭, ২৬/১২০, ২৯/১৪, ৩৭/৮২, ৪০/৩১, ৫১/৪৬, ৫৩/৫২, ৫৪/(১১, ১২), ৭১/২৫

نجاة نوح على الفلك

৩/৭। নৌকার ওপর নূহ (ﷺ)-এর পরিত্রাণ লাভ

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ৭/৬৪, ১০/৭৩, ১১/(৩৭, ৩৮, ৪০–৪৪, ৪৮), ২৩/(২৭–২৯), ২৬/১১৯, ২৯/১৫, ৩৭/৭৬, ৫৪/(১৩, ১৫), ৬৯/১১

الثناء على نوح

৩/৮। নূহ (ﷺ)-এর প্রশংসা।

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৭/৩, ৩৭/(৭৮–৮১), ৬৬/১০

هود

৪। হূদ (ﷺ)

تعمير عاد لأرضهم

৪/১। 'আদ কর্তৃক তাদের বসত নির্মাণ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/৬৯, ২৬/(১২৮, ১২৯, ১৩৩, ১৩৪), ৮৯/(৭, ৮)

← চলমান পাতা

دعوة هود

৪/২। হূদ (ﷺ)-এর দাওয়াত

সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ৭/(৬৫–৭২), ১১/(৫০–৫৭), ২৩/৩২, ২৬/(১২৪, –১২৭, ১৩১, ১৩২, ১৩৫), ৪৬/(২১, ২৩)

تعرض هود للبلاء

৪/৩। হূদ (ﷺ)-এর পরীক্ষার সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৭/(৬৬, ৬৭), ১১/(৫৩–৫৫), ১৪/৯, ২৬/(১২৩, ১৩৬, ১৩৭), ৩৮/১২, ৪৬/২২, ৫০/১৩, ৫৪/১৮

إهلاك عاد

৪/৪। 'আদ জাতির ধ্বংস সাধন

সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ৭/৭২, ৯/৭০, ১১/(৫৮, ৮৯), ২৩/৪১, ২৫/৩৮, ২৬/১৩৯, ২৯/(৩৮, ৪০), ৪০/৩১, ৪১/(১৩, ১৬), ৪৬/(২৪, ২৫), ৫১/(৪১, ৪২), ৫৩/৫০, ৫৪/(১৯, ২০), ৬৯/(৬–৮), ৮৯/৬

صالح

৫। সালিহ (ﷺ)

إنعام الله على ثمود

৫/১। সামূদ জাতির প্রতি আল্লাহর অনুগ্রহ বর্ষণ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/৭৪, ১৫/৮২, ২৬/(১৪৬–১৪৯), ৫১/৪৩, ৮৯/৯

دعوة صالح

৫/২। সালিহ (ﷺ)-এর দাওয়াত

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৭/(৭৩–৭৯), ১১/(৬১–৬৩), ২৬/(১৪১–১৫২), ২৭/(৪৫–৪৭)

ناقة صالح

৫/৩। সালিহ (ﷺ)-এর উটনী

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/৭৩, ১১/(৬৪, ৬৫), ২৬/(১৫৫, ১৫৬), ৫৪/(২৭, ২৮), ৯১/১৩

عقر ناقة صالح

৫/৪। সালিহ (ﷺ)-এর উটনীকে হত্যা করা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৭/৭৭, ১১/৬৫, ১৭/৫৯, ২৬/১৫৭, ৫৪/২৯, ৫১/(১২, ১৪)

تعرض صالح للبلاء

৫/৫। সালিহ (ﷺ)-এর পরীক্ষার সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ৭/(৭৫–৭৭), ১১/৬২, ১৪/৯, ১৫/(৮০, ৮১, ৯০), ২৬/(১৪১, ১৫৩), ২৭/(৪৫, ৪৭–৪৯), ৩৮/১৩, ৫০/১২, ৫৪/(২৩–২৫), ৯১/(১১, ১৪)

نزول العذاب على ثمود

৫/৬। সামূদ জাতির উপর আযাব নাযিল হওয়া

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ৭/৭৮, ৯/৭০, ১১/(৬৬–৬৮, ৮৯), ১৫/(৮৩, ৮৪), ২৫/৩৮, ২৬/১৫৮, ২৭/(৫১, ৫২), ২৯/৩৮, ৪০/৩১, ৪১/(১৩, ১৭), ৫১/(৪৪, ৪৫), ৫৩/৫১, ৫৪/৩১, ৬৯/৫, ৮৫/(১৭, ১৮), ৯১/১৪

Contents

إبراهيم

৬। ইবরাহীম (ﷺ)

صفة إبراهيم

৬/১। ইবরাহীম (ﷺ)-এর গুণাবলী

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১২৪, ১১/৭৫, ১৬/(১২০, ১২১, ১২৩)

فضل إبراهيم

৬/২। ইবরাহীম (ﷺ)-এর মর্যাদা

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ২/(১৩০, ১৩১), ৪/১২৫, ৬/(৮৩, ৮৪, ১৬১), ৯/১১৪, ১১/৭৩, ১২/৬, ১৬/(১২০-১২৩), ১৯/(৪১, ৪৭), ২১/৫১, ২৬/(৮৩-৮৫), ২৯/২৭, ৩৭/(৮৪, ৮৮, ১০৪, ১০৫, ১০৮-১১১, ১১৩), ৩৮/(৪৫-৪৭), ৪৩/২৮, ৫৩/৩৭, ৫৭/২৬, ৬০/৪

اختبار الله لإبراهيم

৬/৩। ইবরাহীম (ﷺ)-এর জন্য আল্লাহর পরীক্ষা।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১২৪, ৩৭/১০২

دعوة إبراهيم

৬/৪। ইবরাহীম (ﷺ)-এর দাওয়াত

সর্বমোট ৫৯টি আয়াত ঃ ২/(১৩০, ১৩১, ১৩৫, ১৩৬, ১৪০), ৩/(৬৭, ৬৮, ৮৪, ৯০), ৪/(১২৫, ১৬৩), ৬/(৭৪, ৭৬-৮১, ৮৩, ১৬১), ১৪/(৩৫-৩৭, ৪০), ২১/(৫২, ৫৪, ৫৬, ৫৭, ৬৭), ২২/(২৬, ৭৮), ২৬/(৬৯-৭৩, ৭৫, ৭৮-৮০, ৮৭), ২৯/(১৬, ১৭, ২৫), ৩৭/(৮৩, ৮৫-৮৭, ৮৯, ৯১-৯৬), ৪৩/(২৬-২৮), ৬০/৪

بناء إبراهيم الكعبة

৬/৫। ইবরাহীম (ﷺ) কর্তৃক কা'বা নির্মাণ-২/১২৭

تأدية إبراهيم مناسك الحج

৬/৬ ইবরাহীম (ﷺ) কর্তৃক হাজ্জের কার্যাবলী সম্পাদন

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১২৮, ২২/২৭

إبراهيم خليل الله

৬/৭। ইবরাহীম (ﷺ) আল্লাহর খলীল (বন্ধু)-৪/১২৫

إنزال العذاب بقوم إبراهيم

৬/৮। ইবরাহীম (ﷺ)-এর কওমের উপর আযাব নাযিল হওয়া-৯/৭০

هجرة إبراهيم إلى بلاد الشام

৬/৯। ইবরাহীম (ﷺ)-এর শামে হিজরত- সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/৭১, ২৯/২৬

إبراهيم وهاجر وإسماعيل

৬/১০। ইবরাহীম (ﷺ), হাজেরা (ﷺ) ও ইসমাঈল (ﷺ)

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৪/৩৭, ৩৭/১০১

رؤية إبراهيم إحياء الموتى

৬/১১। ইবরাহীম (ﷺ)-কে মৃতবস্তুকে জীবিত করণ প্রদর্শন-২/২৬০

← চলমান পাতা

مناظرة إبراهيم للنمرود

৬/১২। নমরূদের সঙ্গে ইবরাহীম (ﷺ)-এর বাহাস-বিতর্ক–২/২৫৮

إبراهيم عليه السلام وأبوه

৬/১৩। ইবরাহীম (ﷺ) ও তাঁর পিতা

دعوة إبراهيم أباه

ক) ইবরাহীম (ﷺ)-এর পিতাকে ইবরাহীমের দাওয়াত

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৬/৭৪, ১৯/(৪২–৪৫), ২১/৫২, ২৬/৭০, ৩৭/৮৫, ৪৩/২৬

كفر أبي إبراهيم

খ) ইবরাহীম (ﷺ)-এর পিতার কুফুরী

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/৭৪, ১৯/৪৬, ২৬/৭১

استغفار إبراهيم لأبيه

গ) পিতার জন্য ইবরাহীম (ﷺ)-এর ক্ষমা প্রার্থনা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/১১৪, ১৯/৭৪, ৬০/৪

حوار إبراهيم مع قومه

ঘ) কওমের সাথে ইবরাহীম (ﷺ)-এর পর্যালোচনা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২১/(৬২, ৬৩, ৬৫, ৬৬)

اعتزال إبراهيم قومه

ঙ) ইবরাহীম (ﷺ) কর্তৃক স্বীয় কওমকে পরিত্যাগ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৯/(৪৮, ৪৯), ২৯/২৬, ৩৭/৯৯, ৪৩/২৬, ৬০/৪

وعيد إبراهيم لأصنام قومه

চ) ইবরাহীম (ﷺ) কর্তৃক তার জাতির মূর্তিগুলোকে হুমকি প্রদান

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২১/(৫৭, ৫৮, ৬০), ৩৭/৯৩

إلقاء إبراهيم في النار

ছ) ইবরাহীম (ﷺ)-কে অগ্নিকুণ্ডে নিক্ষেপ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২১/৬৮, ২৯/২৪, ৩৭/৯৭

نجاة إبراهيم من النار

জ) অগ্নি থেকে ইবরাহীম (ﷺ)-এর পরিত্রাণ লাভ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২১/(৬৯, ৭০), ২৯/২৪, ৩৭/৯৮

استشفاع إبراهيم لأبيه

ঝ) পিতার জন্য ইবরাহীম (ﷺ)-এর সুপারিশ–১৪/৪১

بشرى إبراهيم بإسحق ويعقوب

৬/১৪। ইসহাক ও ইয়া'কূব সম্পর্কে ইবরাহীম (ﷺ)-এর সুসংবাদ লাভ

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৬/৮৪, ১১/(৬৯, ৭১, ৭৪), ১৪/৩৯, ১৫/(৫৩–৫৫), ২১/৭২, ২৯/২৭, ৩৭/১১২, ৫১/(২৮–৩০)

← চলমান পাতা

رؤيا إبراهيم بذبح إسماعيل

৬/১৫। ইবরাহীম (ﷺ) কর্তৃক ইসমাঈল (ﷺ)-কে যবহ করার স্বপ্ন দর্শন

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৭/(১০২, ১০৩)

لوط

৭। লূত (ﷺ)

فاحشة قوم لوط

৭/১। লূত (ﷺ)-এর কওমের অশ্লীলতা

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ৭/(৮০, ৮১), ১১/(৭৮, ৭৯), ১৫/(৬৭–৭০, ৭২), ২১/৭৪, ২৬/(১৬৫, ১৬৬, ১৬৮), ২৭/(৫৪, ৫৫), ২৯/(২৮, ২৯), ৫৪/৩৭, ৬৯/৯

فضل لوط وتكريمه

৭/২। লূত (ﷺ) এর মর্যাদা ও তার সম্মান

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৬/৮৬, ২১/(৭৪, ৭৫), ২৬/১৬২, ২৯/২৬, ৩৭/১৪৩

دعوة لوط لقومه

৭/৩। কওমের প্রতি লূত (ﷺ)-এর দাওয়াত

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৭/(৮০–৮২), ২৬/(১৬০–১৬৪, ১৬৮), ২৭/(৫৪, ৫৫), ২৯/(২৮, ২৯), ৫৪/৩৬

تعرض لوط للبلاء

৭/৪। লূত (ﷺ)-এর পরীক্ষার সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৭/৮২, ১১/৭৮, ২৬/(১৬০, ১৬৭, ১৬৯), ২৭/৫৬, ২৯/৩০, ৩৮/১৩, ৫০/১৩, ৫৪/(৩৩, ৩৭), ৬৬/১০

إيواء لوط إلى الركن

৭/৫। লূত (ﷺ)-এর শক্তির আশ্রয় গ্রহণ–১১/৮০

نجاة لوط وأهله

৭/৬। লূত (ﷺ) ও তার বংশধরের পরিত্রাণ লাভ

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৭/৮৩, ১১/৮১, ১৫/(৫৯, ৬৫), ২৬/১৭০, ২৭/৫৭, ২৯/(৩২, ৩৩), ৩৭/১৩৪, ৫১/(৩৫, ৩৬), ৫৪/৩৪

تنزيل العذاب بقوم لوط

৭/৭। লূত (ﷺ)-এর কওমের উপর আযাব নাযিল হওয়া

সর্বমোট ৩৪টি আয়াত ঃ ৭/৮৪, ৯/৭০, ১১/(৭০, ৭৪, ৭৬, ৭৭, ৮১–৮৩, ৮৯), ১৫/(৬৩, ৬৪, ৬৬, ৭৩, ৭৪), ২৫/৪০, ২৬/(১৭১–১৭৩), ২৭/৫৮, ২৯/(৩১, ৩৪), ৩৭/(১৩৫, ১৩৬), ৫১/(৩২–৩৪, ৩৭), ৫৩/(৫৩, ৫৪), ৫৪/(৩৪, ৩৮), ৬৯/১০

إسماعيل

৮। ইসমাঈল (ﷺ)

صفة إسماعيل في القرآن

৮/১। আল-কুরআনে ইসমাঈল (ﷺ) এর বিবরণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৯/৫৪, ৩৭/(১০১, ১০২),

← চলমান পাতা

إسماعيل الذبيح

৮/২। ইসমাঈল আল্লাহর উদ্দেশ্যে যবহকৃত

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩৭/(১০২, ১০৩, ১০৭)

فداء إسماعيل

৮/৩। ইসমাঈল (ﷺ)-এর উৎসর্গ–৩৭/১০৭

بناء إسماعيل مع أبيه الكعبة

৮/৪। পিতার সাথে ইসমাঈল (ﷺ)-এর কা'বা নির্মাণ–২/১২৭

دعوة إسماعيل وفضله

৮/৫। ইসমাঈল (ﷺ)-এর দাওয়াত ও তার মর্যাদা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/(১৩৬, ১৪০), ৩/৮৪, ৪/১৬৩, ৬/৮৬, ১৯/৫৫, ৩৮/৪৮

إسحاق

৯। ইসহাক (ﷺ)

فضل إسحاق

৯/১। ইসহাকের মর্যাদা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৬/৮৪, ১২/৬, ১৯/৫০, ২১/(৭২, ৭৩), ৩৭/১১৩, ৩৮/(৪৫–৪৭),

نبوة إسحاق

৯/২। ইসহাকের নবুওয়াত লাভ

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(১৩৩, ১৩৬, ১৪০), ৩/৮৪, ৪/১৬৩, ৬/৮৪, ১২/৬, ১৯/৪৯, ২১/৭৩, ৩৭/১১২

يعقوب

১০। ইয়া'কূব (ﷺ)

فضل يعقوب

১০/১। ইয়া'কূব (ﷺ)-এর মর্যাদা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৬/৮৪, ১৯/৫০, ২১/(৭২, ৭৩), ৩৮/(৪৫–৪৭)

نبوة يعقوب

১০/২। ইয়া'কূবের নবুওয়াত লাভ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ৬/৮৪, ১২/৬, ১৯/৪৯, ২১/৭৩

دعوة يعقوب

১০/৩। ইয়া'কূবের দাওয়াত

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(১৩২, ১৩৩, ১৩৬, ১৪০), ৩/৮৪, ২১/৭৩-

تسمية يعقوب بإسرائيل

১০/৪। ইয়া'কূবের ইসরাঈল নামকরণ। ৩/৯৩-

امتناع يعقوب عن بعض الأطعمة

১০/৫। ইয়া'কূব (ﷺ)-এর কতিপয় খাবার বর্জন–৩/৯৩

← চলমান পাতা

حب يعقوب ليوسف

১০/৬। ইউসুফের জন্য ইয়া'কূবের ভালবাসা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১২/(৮, ১৩, ৮৪, ৮৫, ৮৭, ৯৪, ৯৫)-

صفات يعقوب

১০/৭। ইয়া'কূব (ﷺ)'র গুণাবলী। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/(৮৬, ৯৬), ৩৮/৪৫-

الأسباط

১১। ইয়া'কূব (ﷺ)'র বংশধর।

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(১৩৬, ১৪০), ৩/৮৪, ৪/১৬৩, ৭/১৬০

يوسف

১২। ইউসুফ (ﷺ)

يوسف والرؤيا

১২/১। ইউসুফ (ﷺ) ও স্বপ্ন। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/(৪, ৫, ১০০)

يوسف وإخوته

১২/২। ইউসুফ (ﷺ) ও তার ভ্রাতৃবর্গ

সর্বমোট ২৮টি আয়াত ঃ ১২/(৭-১৮, ৫৮-৬১, ৬৫, ৬৯-৭১, ৭৭, ৮০, ৮৯-৯৩, ৯৭)-

إلقاء يوسف في البئر

১২/৩। ইউসুফ (ﷺ)-কে কূপে নিক্ষেপ-১২/১৫-

إنجاء الله ليوسف

১২/৪। ইউসুফ (ﷺ)-কে আল্লাহর পরিত্রাণ দান-১২/১৯-

بيع يوسف بثمن زهيد

১২/৫। সামান্য বিনিময়ে ইউসুফ (ﷺ)-কে বিক্রয়-১২/২০

سفر يوسف إلى مصر

১২/৬। ইউসুফ (ﷺ)-এর মিসর সফর-১২/২১-

فتنة امرأة العزيز

১২/৭। মিসর প্রধানের স্ত্রীর ফিতনা।

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ১২/(২৩-৩০, ৩২)

دخول يوسف السجن

১২/৮। ইউসুফ (ﷺ)-এর কারাগারে প্রবেশ।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১২/(৩২, ৩৩, ৩৫, ৩৬)

نبوة يوسف

১২/৯। ইউসুফ (ﷺ)-এর নবুওয়াত লাভ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৬/৮৪, ১২/৬, ১২/২২, ৪০/৩৪

تأويل يوسف للرؤيا

১২/১০। ইউসুফ (ﷺ) কর্তৃক স্বপ্নের তা'বীর পেশ

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ১২/(৬, ২১, ৩৬, ৩৭, ৪১, ৪৬-৪৯, ১০১)-

Contents

دعوة يوسف
১২/১১। ইউসুফ (ﷺ)-এর দাওয়াত। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১২/(৩৭-৪০)
ملك مصر ويوسف
১২/১২। মিসরের বাদশাহ ও ইউসুফ (ﷺ)
رؤيا ملك مصر
ক) মিসরের বাদশাহর স্বপ্ন। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১২/(৪৩-৪৬)
مكانة يوسف عند الملك
খ) বাদশাহর নিকট ইউসুফের পদমর্যাদা লাভ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১২/(৫০, ৫৪)
براءة يوسف
গ) ইউসুফ (ﷺ)-এর নিস্কৃতি লাভ
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১২/(২৮, ৫১, ৫২, ১০০)
ولاية يوسف على بيت المال
১২/১৩। ইউসুফ (ﷺ) কর্তৃক বাইতুল মালের কর্তৃত্ব লাভ
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ১২/(৫৫, ৫৬, ৫৯, ৬০, ৬২, ৮৮, ৯০, ১০১)
يوسف وأخوه
১২/১৪। ইউসুফ (ﷺ) ও তাঁর ভ্রাতৃবৃন্দ
طلب يوسف إحضار أخيه
ক) ইউসুফ (ﷺ)-এর স্বীয় ভাইকে উপস্থিত করার আবেদন
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/(৫৯-৬১)
إقناع يعقوب بإرسال بنيامين
খ) বিন ইয়ামীনকে পাঠানোর জন্য ইয়া'কূব (ﷺ)-কে বুঝানো
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১২/(৬৩-৬৬)
حيلة يوسف
গ) ইউসুফ (ﷺ)-এর কৌশল
সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ১২/(৬২, ৬৩, ৬৫, ৬৯, ৭০, ৭২, ৭৪-৭৭, ৭৯-৮২)-
اجتماع بني إسرائيل
১২/১৫। বানী ইসরাঈলের বৈঠক
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/(৯৩, ৯৯, ১০০)
يوسف أكرم الناس
১২/১৬। ইউসুফ (ﷺ) সবচেয়ে সম্মানিত
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১২/(৫৯, ৬২, ৬৫)-
صفة يوسف
১২/১৭। ইউসুফ (ﷺ)'র গুণ
১২/১৭। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ১২/(২২, ২৪, ২৭, ৩১, ৩৬, ৫১, ৫৪, ৫৫, ৫৯, ৭৮)-

← চলমান পাতা

شعيب

১৩। শু'আয়ব (عليه السلام)

سوء خلق قوم شعيب

১৩/১। শু'আয়ব (عليه السلام)-এর জাতির চরিত্রহীনতা

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৭/(৮৫, ৮৬), ১১/(৮৪, ৮৫, ৮৭, ৯১, ৯২), ২৬/(১৮১-১৮৩),

إرسال شعيب لأصحاب الأيكة

১৩/২। আইকাবাসীর জন্য শু'আয়ব (عليه السلام)-কে প্রেরণ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৫/৭৮, ২৬/১৭৮-

دعوة شعيب لقومه

১৩/৩। শু'আয়ব (عليه السلام)-এর স্বীয় কওমের প্রতি দাওয়াত

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ৭/(৮৫-৯০, ৯৩), ১১/(৮৪, ৮৬, ৮৭, ৮৯, ৯০, ৯২, ৯৩), ২৬/(১৭৬-১৮৪), ২৯/৩৬-

بلاء شعيب من قومه

১৩/৪। কওমের নিকট হতে শু'আয়ব (عليه السلام) এর কষ্ট ক্লেশ

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৭/(৮৭-৯০), ১১/(৮৭, ৮৮, ৯১), ২৬/(১৭৬, ১৮৫-১৮৮), ৩৮/১৩, ৫০/১৪-

نزول العذاب بقوم شعيب

১৩/৫। শু'আয়ব (عليه السلام)-এর কওমের উপর আযাব নাযিল

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/(৯১, ৯২), ৯/৭০, ১১/(৯৪, ৯৫), ১৫/৭৯, ২৬/১৮৯, ২৯/৩৭-

أيوب

১৪। আইয়ূব (عليه السلام)

نبوة أيوب

১৪/১। আইয়ূব (عليه السلام)-এর নুবুওয়াত লাভ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ৬/৮৪-

اغتسال أيوب

১৪/২। আইয়ূব (عليه السلام)-এর গোসল-৩৮/৪২

ابتلاء أيوب وصبره

১৪/৩। আইয়ূব (عليه السلام)-এর কষ্ট ক্লেশ ও তার ধৈর্যধারণ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২১/(৮৩, ৮৪), ৩৮/(৪১, ৪২, ৪৪)-

ذو الكفل

১৫। যুল কিফল (عليه السلام)-৩৮/৪৮

موسى

১৬। মূসা (عليه السلام)

فضل موسى

১৬/১। মূসা (عليه السلام)-এর মর্যাদা। সর্বমোট ২৭টি আয়াত ঃ ২/১৩৬, ৪/১৬৪, ৬/(৮৪, ১৫৪), ৭/(১৩৪, ১৪২), ১৯/(৫১, ৫২), ২০/(৯, ১৩, ৩৬, ৩৭, ৪১), ২৫/৩৫, ২৬/(১০, ২১), ২৭/(৮, ৯), ৮/(৭, ১৪), ৩৩/৬৯, ৩৭/(১১৪, ১১৮-১২০, ১২২), ৪৪/১৭-

← চলমান পাতা

صفة موسى

১৬/২। মূসা (عليه السلام)-এর গুণ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭/১৫০, ২০/৯৪, ২৮/(১৫, ১৯, ২৬)-

أول نبوة موسى

১৬/৩। মূসা (عليه السلام)-এর নুবুওয়াতের প্রাথমিক অবস্থা

সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ৭/১৪৪, ২০/(১০-২৪), ২৬/(১০, ২১), ২৭/(৭-১০, ১২), ২৮/(২৯-৩২, ৩৪, ৩৫, ৪৬), ৭৯/(১৫-১৯)-

موسى كليم الله

১৬/৪। মূসা (عليه السلام) আল্লাহর সঙ্গে কথোপকথনকারী

সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ২/২৫৩, ৪/১৬৪, ৭/(১৪৩, ১৪৪), ১৯/৫২, ২০/(১১-১৯, ২১-২৪, ৮৩, ৮৪), ২৬/(১০-১৪, ১৬), ২৭/(৮, ৯, ১১), ২৮/(৩০-৩২, ৩৪, ৩৫, ৪৬), ৭৯/(১৬-১৯)-

ذكر التوراة

১৬/৫। তাওরাতের বর্ণনা

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৩/(৪৮, ৫০, ৬৫, ৯৩), ৫/(৪৩, ৪৪, ৪৬, ৬৬, ৬৮, ১১০)- ৭/১৫৭, ৯/১১১, ৪৮/২৯, ৬১/৬, ৬২/৫-

الوادي الذي نودي فيه موسى

১৬/৬। যে উপত্যকায় মূসা (عليه السلام)-কে ডাকা হয়েছিল

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২০/(১২, ২০), ২৮/৩০, ৭৯/১৬,

نتزيل التوراة على موسى

১৬/৭। মূসা (عليه السلام)-এর উপর তাওরাত অবতীর্ণ হওয়া

সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ২/(৪১, ৪৪, ৫৩, ৮৭), ৩/৩, ৬/(৯১, ১৫৪, ১৫৭), ৭/(১৪৫, ১৫৪), ১১/১১০, ১৭/২, ২১/৪৮, ২৩/৪৯, ২৫/৩৫, ২৮/৪৩, ৩২/২৩, ৩৭/১১৭, ৪০/৫৩, ৪১/৪৫, ৪৬/১২, ৫৩/৩৬, ৮৭/১৯,

معجزات موسى

১৬/৮। মূসা (عليه السلام)-এর মু'জিযাসমূহ

সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ২/(৫৬, ৬০, ৯২, ২১১), ৭/(১০৭, ১০৮, ১১৭, ১২০, ১৬০), ১১/৯৬, ১৭/১০১, ২০/(১৭, ২২, ৬৯, ৭৭), ২৬/(৩০, ৩২, ৩৩, ৪৫, ৬৩), ২৭/(১০, ১২), ২৮/(৩১, ৩২), ৪০/(২৩, ২৮), ৪৩/৪৬, ৪৪/(১৯, ৩৩), ৫১/৩৮, ৭৯/২০

موسى وفرعون

১৬/৯। মূসা (عليه السلام) ও ফির'আউন

نشأة موسى في رعاية فرعون

ক) ফির'আউনের তত্ত্বাবধানে মূসা (عليه السلام)-এর প্রতিপালন

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২০/(৩৮, ৩৯), ২৬/১৮, ২৮/(৮-১২)-

← চলমান পাতা

عودة موسى لأمه
খ) মূসা (ﷺ)-এর স্বীয় মায়ের নিকট প্রত্যাবর্তন
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২০/৪০, ২৮/(১২, ১৩)-
وحي الله لأم موسى
গ) মূসা (ﷺ)-এর মায়ের প্রতি আল্লাহর নির্দেশ
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২০/(৩৮, ৩৯), ২৮/(৭, ১০)-
دعوة موسى
ঘ) মূসা (ﷺ)-এর দা'ওয়াত
সর্বমোট ৩৮টি আয়াত ঃ ৭/(১০৩-১১৩, ১১৭, ১২৩, ১২৮, ১২৯), ১০/৮৪, ২০/(২৪, ৪২-৪৭, ৪৯-৫১), ২৩/৪৫, ২৬/(১০, ১২, ১৬, ১৭, ২২), ২৮/৩, ৪৩/৪৬, ৪৪/১৮, ৫১/৩৮, ৭৩/১৫, ৭৯/১৭-
لقاء موسى وفرعون
ঙ) মূসা (ﷺ) ও ফির'আউনের সাক্ষাৎ
موعد لقاء موسى وفرعون
ঙ/(১) মূসা ও ফির'আউনের সাক্ষাতের সময় নির্ধারণ
সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২০/(৫৮, ৫৯, ৬৪-৬৬), ২৬/(৩৮-৪০, ৪৩, ৪৪)-
استحضار فرعون السحرة
ঙ/(২) ফির'আউন কর্তৃক জাদুকরদের উপস্থিত করণ
সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ৭/(১১১-১১৩, ১১৫, ১১৬), ১০/(৭৯, ৮০), ২০/(৬০, ৬৩, ৬৪), ২৬/(৩৭, ৩৮, ৪০-৪৪)-
موسى والسحرة
ঙ/ (৩) মূসা এবং যাদুকরবৃন্দ
সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ৭/(১১৫-১২২), ১০/(৮০, ৮১), ২০/(৬১-৭০), ২৬/(৪৩-৪৮)-
تنازع السحرة فيما بينهم
ঙ/ (৪) যাদুকরদের পারস্পরিক বিরোধ-২০/৬২
تحذير موسى للسحرة
ঙ/ (৫) যাদুকরদের প্রতি মূসা (ﷺ)-এর ভীতি প্রদর্শন
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১০/৮১, ২০/৬১-
اتهام موسى وهارون بالسحر
ঙ/ (৬) মূসা ও হারূন (ﷺ)-কে যাদুকরের অপবাদ প্রদান
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/(১০৯, ১৩২), ১০/(৭৬, ৭৭), ১৭/১০১, ২০/৬৩, ৪০/২৪, ৪৩/৪৯,
ذهول السحرة وإيمانهم
ঙ/ (৭) যাদুকরদের ব্যর্থতা ও ঈমান আনয়ন
সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৭/(১১৯, ১২১, ১২৩, ১২৫, ১২৬), ২০/(৭০, ৭২, ৭৩), ২৬/(৪৬, ৪৭, ৫০)

← চলমান পাতা

فضل ابتلاء آل فرعون

চ) ফির'আউনের স্ত্রীর পরীক্ষার মর্যাদা

২২/১১,

ابتلاء آل فرعون

ছ) ফির'আউনের স্ত্রীর পরীক্ষা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭/(১৩০-১৩৫),

عجز فرعون وعناده

জ) ফির'আউনের অপারগতা ও তার অবাধ্যতা

সর্বমোট ৫৬টি আয়াত ঃ ৭/(১০৩, ১০৬, ১১০, ১১৩, ১১৪, ১২৩, ১২৬), ১০/৭৫, ১১/(৯৭, ৯৮), ১৭/১০২, ২০/(৫১, ৫৬-৫৮, ৭১), ২৩/(৪৬, ৪৭), ২৫/৩৬, ২৬/(১১, ২৩, ২৫, ২৭, ২৯, ৩১, ৩৪-৩৬, ৪৯), ২৮/(৩৬, ৩৮, ৩৯), ২৯/৩৯, ৩৮/১২, ৪০/(২৪, ২৬, ২৯, ৩৬, ৩৭), ৪৩/(৫১-৫৪), ৪৪/(১৭, ২০, ২২), ৫০/১৩, ৫১/৩৯, ৫৪/(৪১, ৪২), ৬৯/৯, ৭৩/১৬, ৭৯/(২১-২৪)-

فرار موسى وأصحابه

ঝ) মূসা (ﷺ) ও তার সাথীদের পলায়ন

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২০/৭৭, ২৬/(৫২-৫৬, ৬০-৬৩), ৪৪/(২৩, ২৪),

نجاة موسى وأصحابه

ঞ) মূসা (ﷺ) ও তার সাথীদের পরিত্রাণ লাভ

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/৫০, ৭/১৩৮, ১০/৯০, ১৭/১০৩, ২০/(৭৮, ৮০), ২৬/৬৫, ৩৭/(১১৫, ১১৬), ৪৪/(৩০, ৩১)-

إيمان فرعون

ট) ফির'আউনের ঈমান আনয়ন। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১০/(৯০, ৯১),

هلاك فرعون وجنوده

ঠ) ফির'আউন ও তার সৈন্যবাহিনীর ধ্বংস সাধন

সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ২/৫০, ৩/১১, ৭/(১৩৬, ১৩৭), ৮/(৫২, ৫৪), ১০/(৮৮, ৯০, ৯২), ১৭/১০৩, ২০/(৭৮, ৭৯), ২৩/৪৮, ২৫/৩৬, ২৬/(৬৪, ৬৬), ২৮/৪০, ২৯/৪০, ৪০/৪৫, ৪৩/(৫৫, ৫৬), ৪৪/(২৪-২৯), ৫১/৪০, ৫৪/৪২, ৬৯/১০, ৭৩/১৬, ৭৯/২৫, ৮৫/(১৭, ১৮), ৭৯/১৩,

مؤمن آل فرعون

ড) ফির'আউন বংশের একজন মু'মিন। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৪০/(২৮-৩২, ৩৮, ৩৯, ৪১-৪৫)

تعذيب فرعون بني إسرائيل

ঢ) ফির'আউন কর্তৃক বানী ইসরাঈলের উপর নির্যাতন

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/৪৯, ৭/(১২৪, ১২৭, ১২৯, ১৩৭, ১৪১), ১০/৮৩, ১৪/৬, ২০/৭১, ২৬/(২২, ৪৯), ২৮/৪, ৪০/২৫,

ذم فرعون وهامان

ণ) ফির'আউন ও হামানের প্রতি নিন্দাবাদ। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ১০/৮৩, ১১/৯৭, ২৮/(৪, ৬, ৮, ৩২, ৪২), ২৯/৩৯, ৪০/৩৬, ৪৪/৩১,

قتل موسى للمصري

১৬/১০। মূসা (عليه السلام) কর্তৃক একজন মিসরীকে হত্যা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২০৪০, ২৬/(১৯-২১), ২৮/(১৫, ১৬, ১৮, ১৯, ৩৩),

سفر موسى إلى مدين

১৬/১১। মূসা (عليه السلام), এর মাদায়েন সফর

موسى وصاحب مدين

ক) মূসা (عليه السلام) ও মাদায়েনওয়ালা।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৮/(২৫-২৮)-

قصة موسى مع بنتي صاحب مدين

খ) মাদায়েনওয়ালার কন্যাদ্বয়ের সঙ্গে মূসা (عليه السلام)-এর কিসসা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২৮/(২৩-২৭)-

رمي اليهود موسى بالمرض

১৬/১২ ইয়াহূদ কর্তৃক মূসা (عليه السلام)-কে অসুস্থতার অপবাদ প্রদান ৩৩/৬৯

خروج موسى إلى بيت المقدس

১৬/১৩। বাইতুল মুকাদ্দাসের উদ্দেশে মূসা (عليه السلام)-এর বের হওয়া

دخول بني إسرائيل بيت المقدس

ক) বাইতুল মুকাদ্দাসে বানী ইসরাঈলের প্রবেশ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/৫৮, ৫/(২১-২৩)-

ميقات موسى مع ربه

খ) মূসা (عليه السلام)-এর সঙ্গে তার প্রতিপালকের সাক্ষাৎসূচি

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/৫১, ৭/(১৪২, ১৪৩, ১৫৫), ২০/(৮৩, ৮৪)-

عبادة بني إسرائيل للعجل

গ) বানী ইসরাঈল কর্তৃক বাছুরের উপাসনা

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/(৫১, ৫৪, ৯২, ৯৩), ৪/১৫৩, ৭/(১৪৮, ১৫০, ১৫২), ২০/(৮৫, ৮৭-৮৯, ৯১, ৯২)-

ميقات بعض بني إسرائيل مع الله

ঘ) কতিপয় বানী ইসরাঈলের সঙ্গে আল্লাহর সাক্ষাৎসূচি-৭/১৫৫

موسى والسامري

ঙ) মূসা (عليه السلام) ও সামিরী।

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২০/(৯৫-৯৭)-

رؤية موسى لربه

চ) মূসা (عليه السلام) কর্তৃক তার প্রতিপালককে দর্শন-৭/১৪৩-

جبن بني إسرائيل وخوفهم

১৬/১৪। বানী ইসরাঈলের কাপুরুষতা ও তাদের ভীতি

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(২৪৬, ২৪৯), ৩/১১১, ৫/(২২, ২৫), ৫৯/১৪-

← চলমান পাতা

عيد اليهود
১৬/১৫। ইয়াহূদদের ঈদ
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/৬৫, ৭/১৬৩, ১৬/১২৪-
طبائع الهيود
১৬/১৬। ইয়াহূদদের স্বভাব চরিত্র
সর্বমোট ৮৬টি আয়াত ঃ ২/(৪১, ৪২, ৪৪, ৫৫, ৫৯, ৬১, ৬৫, ৬৭-৭১, ৭৪, ৭৬, ৮৩, ৮৫-৮৭, ৮৯, ৯০, ৯৩-৯৬, ১০০, ১০১, ১০৪, ১০৮, ১৪০, ১৪২, ২৪৬-২৪৯), ৩/(২৪, ৭১, ৭৫, ১১২, ১৮১, ১৮৩), ৪/(৪৪, ৪৬, ৪৭, ৪৯, ৫১, ৫৩, ৫৪, ১৫৩, ১৫৫, ১৫৬, ১৬১), ৫/(১৩, ২০, ২৪, ৪২, ৪৩, ৫৭, ৫৮, ৬২-৬৪, ৭০, ৭৯-৮২), ৭/(১৩৪, ১৩৮, ১৩৯, ১৪৯, ১৬০, ১৬২, ১৬৩, ১৬৯), ৯/(৩০, ৩১, ৩৪), ১৬/১১৮, ১৭/(৪, ১০১), ২০/(৮৫-৮৭, ৯২), ৫৮/৮, ৫৯/১৪
موسى والخضر عليهما السلم
১৬/১৭। মূসা ও খাযির (আলাইহিমাস সালাম)
الحوت آية لموسى
ক) মূসা (ﷺ)-এর জন্য নিদর্শন মাছ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৮/(৬১, ৬৩)
قصة موسى والخضر في القرآن
খ) আল-কুরআনে মূসা ও খাযির এর কিসসা। সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ১৮/(৬০-৮২)
خرق الخضر السفينة
গ) খাযির কর্তৃক নৌকা ছেদন। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৮/(৭১, ৭৯),
الغلام الذي قتله الخضر
ঘ) যে বালককে খাযির হত্যা করলেন। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৮/(৭৪, ৮০)
إقامة الخضر الجدار
ঙ) খাযির কর্তৃক দেয়াল পুনর্নির্মাণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৮/(৭৭, ৮২)
سبب سفر موسى للقاء الخضر
চ) খাযির (ﷺ)-এর সঙ্গে মূসা (ﷺ)-এর সাক্ষাতের কারণ-১৮/৬৬
سعة علم الخضر
ছ) খাযির (ﷺ)-এর জ্ঞানের বিশালতা-১৮/৬৬
قارون
১৬/১৮। কারূন
ذم قارون
ক) কারূনের প্রতি নিন্দাবাদ
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৮/(৭৬, ৭৮), ২৯/৩৯
كنوز قارون
খ) কারূনের সঞ্চিত ধনভাণ্ডার
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৮/(৭৬, ৭৮, ৭৯),

← চলমান পাতা

الخسف بقارون
গ) কারূনের মাটিতে দেবে যাওয়া
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৮/(৮১, ৮২), ২৯/৪০

مسخ بني إسرائيل
১৬/১৯। বানী ইসরাঈলের বিবর্তন
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/৬৫, ৫/৬০, ৭/১৬৬-

مخالفة المسلمين لليهود
১৬/২০। মুসলিমদের ইয়াহূদী বিরোধিতা
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ১/৭, ২/(১০৪, ১০৮, ১২০, ১৪৫), ৩/১০৫, ৫/৫১, ৫৭/১৬, ৫৮/৯,

قتال اليهود إلى آخر الزمان
১৬/২১ কিয়ামত পর্যন্ত ইয়াহূদীদের বিরুদ্ধে কিতাল করা–১৭/৫,

لعن كفار بني إسرائيل
১৬/২২। বানী ইসরাঈলের অভিশপ্ত কাফিরগণ
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/৮৮, ৪/(৪৬, ৪৭, ৫২), ৫/(১৩, ৬০, ৬৪, ৭৮), ৯/৩০-

العداوة بين اليهود والنصارى
১৬/২৩। ইয়াহূদ ও নাসারাদের মধ্যে দুশমনি
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(১১৩, ১৪৫), ৫/১৪-

هارون
১৭। হারূন (عليه السلام)

نبوة هارون في القرآن
১৭/১। আল-কুরআনে হারূনের নুবুওয়াত
সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ৬/৮৪, ১০/(৭৫, ৮৭), ১৯/৫৩, ২১/৪৮, ২৩/৪৫, ২৫/৩৫, ২৬/১৩, ২৮/(৩৪, ৩৫), ৩৭/(১১৪, ১১৮–১২০, ১২২)

حكمة هارون
১৭/২। হারূনের হিকমত
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/১৫০, ২০/৯৪

داود
১৮। দাঊদ (عليه السلام)

فضل داود
১৮/১। দাঊদ (عليه السلام)-এর মর্যাদা
সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২১/৭৯, ২৭/১৫, ২৪/১০, ৩৮/(১৭, ২১, ২৪–২৬)

نبوة داود
১৮/২। দাঊদ (عليه السلام)-এর নুবুওয়াত লাভ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৫১, ৬/৮৪

← চলমান পাতা

حسن عناية داود بولده

১৮/৩। দাউদ (عليه السلام)-এর স্বীয় সন্তানের প্রতি যত্নবান হওয়া

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/৭৮, ২১/৭৯

ذكر الزبور

১৮/৪। যাবূরের বর্ণনা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/১৩৪, ৪/১৬৩, ১৬/৪৪, ১৭/৫৫, ২১/১০৫

تنزيل الزبور على داود

১৮/৫। দাউদ (عليه السلام)-এর উপর যাবূর অবতীর্ণ হওয়া

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ১৭/৫৫

داود قدوة للمتقين

১৮/৬। দাউদ (عليه السلام) মুত্তাকীনদের জন্য দৃষ্টান্ত–৩৮/১৭

نبأ داود والخصم في القرآن

১৮/৭। আল-কুরআনে দাউদ (عليه السلام) ও বিবাদীদের বর্ণনা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩৮/(২১–২৪)

فتنة داود

১৮/৮। দাউদ (عليه السلام)-এর পরীক্ষা–৩৮/২৪

ثبات داود عند القتال

১৮/৯। যুদ্ধের ময়দানে দাউদ (عليه السلام)-এর অবিচল থাকা–২/২৫১

أكل داود من عمل يده

১৮/১০। দাউদ (عليه السلام) নিজ হাতে কাজ করে জীবিকা নির্বাহ করতেন

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/৮০, ৩৪/১৩

حكمة داود

১৮/১১। দাউদ (عليه السلام)-এর হিকমত– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৫১, ৩৮/২০

ملك داود

১৮/১২। দাউদ (عليه السلام)-এর রাজত্ব– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৫১, ২১/৭৯, ৩৪/১০, ৩৮/২৬

سليمان

১৯। সুলাইমান (عليه السلام)

فضل سليمان وتكريمه

১৯/১। সুলাইমান (عليه السلام)-এর মর্যাদা ও তার সম্মান

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৬/৮৪, ২৭/(১৫–১৯, ২১, ৩৬), ৩৮/(৩০, ৩৯, ৪০)

عظم ملك سليمان

১৯/২। সুলাইমান (عليه السلام)-এর রাজত্বের বিশালতা

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২১/(৮১, ৮২), ২৭/(১৬–১৮, ২০–২৩, ৩৬–৩৯, ৪৪), ৩৪/(১২, ১৩), ৩৮/(৩১, ৩৫–৩৮)

← চলমান পাতা

دعوة سليمان

১৯/৩। সুলাইমান (عليه السلام)-এর দাওয়াত

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ২৭/(২৫, ৩১, ৪৪)

حكم سليمان في القضايا

১৯/৪। বিচারকার্যে সুলাইমান (عليه السلام)-এর ফায়সালা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/(৭৮, ৭৯)

فتنة سليمان

১৯/৫। সুলাইমান (عليه السلام)-এর পরীক্ষা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩৮/(৩২-৩৪)

قصة سليمان مع بلقيس

১৯/৬। বিলকীসের সঙ্গে সুলাইমান (عليه السلام)-এর কিসসা

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ২৭/(২৮-৩১, ৩৪-৪৪)

وصف مملكة سبأ

১৯/৭। সাবা রাজ্যের বর্ণনা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৭/২৩, ৩৪/(১৫, ১৮)

وفاة سليمان عليه السلام

১৯/৮। সুলাইমান (عليه السلام)-এর মৃত্যু-৩৪/১৪

إلياس

২০। ইলইয়াস

فضل إلياس

২০/১। ইলইয়াসের মর্যাদা। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৬/৮৫, ৩৭/(১২৯-১৩২)

نبوة إلياس

২০/২। ইলইয়াসের নুবুওয়াত লাভ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৮৫, ৩৭/১২৩

دعوة إلياس

২০/৩। ইলইয়াসের দাওয়াত। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩৭/(১২৪-১২৬)

تكذيب قوم إلياس له

২০/৪। ইলইয়াসের প্রতি তার কওমের মিথ্যারোপ-৩৭/১২৭

اليسع

২১। ইয়াসা' (عليه السلام)

ইয়াসা' (عليه السلام)- সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৮৬, ৩৮/৪৮

يونس

২২। ইউনুস (عليه السلام)

فضل يونس

২২/১। ইউনুস (عليه السلام)-এর মর্যাদা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৬/৮৬, ২১/৮৮, ৩৭/(১৩৯, ১৪৩, ১৪৬), ৬৮/(৪৯, ৫০)

← চলমান পাতা

دعوة يونس
২২/২। ইউনুস (ﷺ)-এর দাওয়াত। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৬৩, ৩৭/(১৪৭, ১৪৮)
يونس والحوت
২২/৩। ইউনুস (ﷺ) ও মাছ
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২১/৮৭, ৩৭/(১৪০-১৪২, ১৪৪, ১৪৫), ৬৮/(৪৮, ৪৯)
إيمان قوم يونس
২২/৩। ইউনুস (ﷺ)-এর কওমের ঈমান আনয়ন
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১০/৯৮, ৩৭/১৪৮

زكريا
২৩। যাকারিয়া (ﷺ)
فضل زكريا
২৩/১। যাকারিয়া (ﷺ)-এর মর্যাদা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/৮৫, ১৯/৭, ২১/৯০
رحمة الله زكريا
২৩/২। যাকারিয়া (ﷺ)-এর উপর আল্লাহর রহমত। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৯/(২, ৭, ৮)
تولي زكريا أمر مريم
২৩/৩। যাকারিয়া (ﷺ) কর্তৃক মারইয়ামের দায়িত্বভার গ্রহণ-৩/৩৭
قصة زكريا في القرآن
২৩/৪। আল-কুরআনে যাকারিয়ার কিসসা
سؤال زكريا الذرية
ক) যাকারিয়ার সন্তান-সন্ততি লাভের প্রার্থনা
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/৩৮, ১৯/(৩-৬), ২১/৮৯
استجابة دعاء زكريا
খ) যাকারিয়ার দু'আ কবূল
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/৩৯, ১৯/(৭-৯), ২১/৯০
إمساك زكريا عن الكلام آية
গ) যাকারিয়া (ﷺ)-এর কথা বলা হতে বিরত থাকা নিদর্শনস্বরূপ
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/৪১, ১৯/(১০, ১১)

يحيى
২৪। ইয়াহইয়া (ﷺ)
فضل يحيى
২৪/১। ইয়াহইয়া (ﷺ)-এর মর্যাদা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৬/৮৫, ১৯/(৭, ১২-১৫)
نبوة يحيى
২৪/২। ইয়াহইয়া (ﷺ)-এর নুবুওয়াত লাভ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/৩৯, ৬/৮৫, ১৯/১২
خصائص يحيى
২৪/৩। ইয়াহইয়া (ﷺ)-এর বিশেষ বৈশিষ্ট্যাবলী
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/৩৯, ১৯/(১৩, ১৪)

← চলমান পাতা

عيسى

২৫। ঈসা (ﷺ)

فضل مريم بنت عمران

২৫/১। ইমরান তনয় মারইয়ামের মর্যাদা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/(৩৭, ৪২, ৪৩, ৪৫), ৫/৫৭, ২৩/৫০, ৬৬/১২

طهارة مريم وعفتها

২৫/২। মারইয়ামের পবিত্রতা ও চারিত্রিক নিষ্কলুষতা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/৪৭, ৪/১৫৬, ১৯/২০, ২১/৯১, ৬৬/১২

فضل نبي الله عيسى

২৫/৩। আল্লাহর নাবী 'ঈসা (ﷺ)-এর মর্যাদা

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/১৩৬, ৩/(৪৫, ৪৮), ৪/(১৬৩, ১৭২), ৬/৮৫, ১৯/(১৯, ২১, ৩০–৩৪), ২৩/৫০, ৪৩/(৫৯, ৬৩), ৫৭/২৭

ماجاء في الحمل بعيسى وولادته

২৫/৪ 'ঈসা (ﷺ)-কে গর্ভে ধারণ ও তার জন্ম সম্পর্কিত

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(৪৫, ৪৭, ৫৯), ২১/৯১, ৬৬/১২

عيسى كلمة الله ورحمته

২৫/৫ 'ঈসা (ﷺ) আল্লাহর কালিমা ও তাঁর রহমত

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/৪৫, ৪/১৭১, ২১/৯১

كلام عيسى في المهد

২৫/৬ মাতৃকোলে 'ঈসা (ﷺ)-এর কথা বলা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/৪৬, ৫/১১০, ১৯/(২৯–৩৩)

تأييد عيسى بروح القدس

২৫/৭ জিবরীল কর্তৃক 'ঈসা (ﷺ)-কে সাহায্য করণ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(৮৭, ২৫৩), ৫/১১০

ذكر نشأة عيسى ومعجزاته

২৫/৮ 'ঈসা (ﷺ)-এর লালনপালন ও তার মু'জিযাসমূহ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/(৪৬, ৪৮, ৪৯), ৫/১১০

صفة عيسى وشمائله

২৫/৯ 'ঈসা (ﷺ)-এর গুণ ও তাঁর স্বভাবসমূহ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৪৫, ৪৬)

بعثة عيسى إلى بني إسرائيل

২৫/১০। বানী ইসরাঈলের প্রতি 'ঈসা (ﷺ)-কে প্রেরণ

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৩/(৪৯, ৫০), ৫/(৪৬, ৭৮, ১১০), ৪৩/(৬৩, ৬৪), ৬১/(৬, ১৪)

← চলমান পাতা

سؤال الحواريين المائدة

২৫/১১। হাওয়ারিয়্যীন কর্তৃক দস্তরখানের দাবী। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/(১১২, ১১৩)

عزم اليهود على قتل عيسى

২৫/১২। ঈসা (ﷺ)-কে হত্যার ব্যপারে ইয়াহূদীদের প্রত্যয়−৪/১৫৭

رفع عيسى إلى السماء

২৫/১৩। ঈসা (ﷺ) কে আকাশে উত্তোলন। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৫৫, ৪/১৫৮

نزول عيسى آخر الزمان

২৫/১৪। শেষ যামানায় ঈসা (ﷺ)-এর অবতরণ−৪/১৫৯

اتخاذ عيسى إلها من دون الله

২৫/১৫। ঈসা (ﷺ)-কে আল্লাহ ব্যতিরেকে মা'বূদ হিসেবে গ্রহণ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৫/(১৭, ৭২, ৭৭, ১১৬), ৯/৩১, ৪৩/(৫৮, ৬৫)

براءة عيسى مما نسب إليه

২৫/১৬। ঈসা (ﷺ) কর্তৃক তার সম্পর্কে যা বলা হয় তা প্রত্যাখ্যান

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/(৭২, ৭৫, ১১৬, ১১৭), ৪৩/৫৯

مخالفة المسلمين للنصارى

২৫/১৭। মুসলিমদের খৃস্টান বিরোধিতা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১/৭, ২/(১২০, ১৪৫), ৩/১০৫, ৫/৫১, ৫৭/১৬, ৫৮/৯

بغض النصارى لليهود

২৫/১৮। খৃস্টানদের ইয়াহূদীদের প্রতি বিদ্বেষ ভাব। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(১১৩, ১৪৫), ৫/১৪

تنزيل الإنجيل على عيسى

২৫/১৯। ঈসা (ﷺ)-এর প্রতি ইঞ্জিলের অবতরণ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(৮৭, ২৫৩), ৩/৩, ৫/৪৬

ذكر الإنجيل

২৫/২০। ইঞ্জিলের বর্ণনা। সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৩/(৩, ৪৮, ৬৫), ৫/(৪৭, ৬৬, ৬৮, ১১০), ৭/১৫৭, ৯/১১১, ৪৮/২৯, ৫৭/২৭

صالحون مشكوك في نبوتهم

২৬। নেককার বান্দাগণ যাদের নাবী হওয়ার ব্যাপারে সন্দেহ করা হয়

لقمان

২৬/১। লুকমান (ﷺ)

فضل لقمان

ক) লুকমান (ﷺ)-এর মর্যাদা−৩১/১২

موعظة لقمان لابنه

খ) লুকমান (ﷺ) কর্তৃক স্বীয় পুত্রের প্রতি উপদেশমালা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩১/(১৩, ১৬−১৯)

←—— চলমান পাতা

Contents

ذو القرنين

২৬/২। যুল কারনাইন-

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ১৮/(৮৩-৯৮)

الخضر

২৬/৩। খাযির-

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ১৮/(৬৫-৮২)

أحداث وقعت في الأمم السابقة

২৭। পূর্ববর্তী উম্মতের মাঝে সংঘটিত ঘটনাবলী

أصحاب الأخدود

২৭/১। আসহাবুল উখদূদ।

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৮৫/(৪-৯)

أصحاب الكهف

২৭/২। আসহাবে কাহাফ।

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ১৮/(৯-২২, ২৫, ২৬)

الثلاثة الذين تكلموا في المهد

২৭/৩। তিন ব্যক্তি যারা মাতৃকোলে কথা বলেছিলেন।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৪৬, ৫/১১০

ماجاء في عزير

৪। উযাইর (ﷺ) প্রসঙ্গ-২/২৫৯

الاتعاظ من قصص الأمم السابقة

২৮। পূর্ববর্তী জাতির কিসসা থেকে উপদেশ গ্রহণ

সর্বমোট ২০৮টি আয়াত ঃ ২/(৬৬, ২৫২, ২৫৮), ৩/(১১, ১১২, ১৩৭, ১৪০, ১৪৬), ৫/(২৭, ১০২), ৬/(৬, ১০, ১১, ৩৪, ৪২, ১৪৮), ৭/(৪, ৫, ৬৪, ৭২, ৭৮, ৭৯, ৮৪, ৮৬, ৯২-৯৫, ১০০, ১০১, ১০৩, ১৭৫-১৭৭), ৮/(৫২, ৫৪), ৯/(৬৯, ৭০), ১০/(১৩, ৩৯, ৭৩, ৯২, ১০২), ১১/(৪৯, ৮৯, ১০০-১০৩, ১২০), ১২/(৭, ১০৯, ১১১), ১৩/(৬, ৩০), ১৪/(৫, ৯, ৪৫), ১৫/(৪, ১৩, ৭৫-৭৯, ৯০), ১৬/(২৬, ৩৩, ৩৬, ৬৩), ১৭/(১৭, ৭৭), ১৮/(৫৫, ৫৯), ১৯/(৭৪, ৯৮), ২০/(৯৯, ১২৮), ২১/(১১, ৪৪), ২২/(৪৫, ৪৬, ৪৮), ২৩/(৩০, ৩১, ৪২, ৪৪), ২৪/৩৪, ২৫/(৩৬-৪০), ২৬/(৬৯, ১০৩, ১০৫, ১২১, ১২৩, ১৩৯, ১৫৮, ১৬০, ১৭১-১৭৪, ১৭৬, ১৮৯, ১৯০, ২০৯), ২৭/(১৪, ৪৫, ৫১, ৫২, ৫৮, ৬৯), ২৮/(৩, ৪০, ৪৩, ৫১, ৫৮, ৭৮, ৮১), ২৯/(১৪, ১৫, ১৮, ২০, ২৪, ২৮, ৩৪-৩৮, ৪০), ৩০/(৯, ৪২, ৪৭), ৩২/(২৬, ৬৯), ৩৪/(১৯, ৪৫), ৩৫/(২৬, ৪৩, ৪৪), ৩৬/(১৩/৩১), ৩৭/(৭৩, ১৩৭, ১৩৮), ৩৮/(৩, ১২, ১৩, ৪৯), ৩৯/(২৫, ২৬, ৫০), ৪০/(৫, ২১, ৩০, ৩১, ৮২), ৪১/১৩, ৪৩/(৮, ২৫, ৫৬), ৪৪/৩৭, ৪৬/২৭, ৪৭/(১০, ১৩), ৫০/(১২-১৪, ৩৬, ৩৭), ৫১/৩৭, ৫৩/(৫০-৫৪), ৫৪/(৪, ৫, ১৫, ৩২, ৪৩, ৫১), ৫৭/১৬, ৫৮/৫, ৫৯/১৫, ৬০/(৪, ৬), ৬১/১৪, ৬৪/৫, ৬৫/(৮-১০), ৬৭/১৮, ৬৯/১২, ৭৭/(১৬, -১৮), ৭৯/২৬, ৮৯/(৬-১২)

← চলমান পাতা

وظائف الأنبياء

তৃতীয় অধ্যায় ঃ নাবীগণের কর্তব্যসমূহ

الدعوة إلى الله

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আল্লাহর পথে দাওয়াত

دعوة الأنبياء إلى التوحيد

১। তাওহীদের পথে নাবীগণের দাওয়াত

সর্বমোট ১২৫টি আয়াত ঃ ২/(৮৩, ৯১, ১৩১-১৩৩, ১৩৫-১৩৭, ২১৩), ৩/(৫১, ৫২, ৬৪, ৬৭, ৬৮, ৭৯, ৮০, ৮৫, ৯৫, ১৯৩)- ৪/১২৫, ৫/(৭২, ১১৭), ৬/(১৪, ৫৬, ৭৪, ৭৯, ১৬১), ৭/(৫৯, ৬৫, ৭০, ৭৩, ৮৫, ১৩৮, ১৪০), ৯/৩১, ১০/১০৪, ১১/(২, ২৬, ৫০, ৬১, ৮৪), ১২/(৩৭-৪০), ১৩/৩৬, ১৪/৩৫, ১৬/(২, ৩৬, ১২০, ১২৩), ১৭/২, ১৯/(৩৫, ৩৬), ২০/(১৪, ৫০, ৯০, ৯৮), ২১/(২৪, ২৫, ৫২, ৫৬, ৬৬, ৬৭, ৯২, ১০৮), ২২/(২৬, ৬৭), ২৩/(২৩, ৩২, ৫২), ২৬/(২৪, ২৬, ২৮, ৭৭, ১০৮, ১১০, ১২৫, ১২৬, ১৪৪, ১৫০, ১৬১-১৬৩, ১৭৭, ১৭৯, ১৮৪), ২৭/(২৫, ২৬, ৩১, ৪৪, ৪৫, ৯১), ২৮/(৮৭, ৮৮), ২৯/(১৬, ৩৬,), ৩৩/৪৬, ৩৭/(৮৬, ৯৬, ১২৫, ১২৬), ৩৮/(৫, ৬৫), ৩৯/(১১, ১২, ১৪, ৬৪), ৪০/(২৮, ৬৬), ৪১/১৪, ৪২/১৩, ৪৩/(২৭, ৪৫, ৬৪), ৪৬/২১, ৫১/৫১, ৫৭/৮, ৬০/৪, ৭১/৩, ৭৪/৫, ৭৯/১৯, ৯৮/৫, ১০৯/২,

أسلوب الدعوة إلى الله

২। আল্লাহর পথে দাওয়াতের পদ্ধতি

২। সর্বমোট ১৮০টি আয়াত ঃ ২/(২৫৬, ২৫৮), ৩/(১০৪, ১১০, ১৫৯), ৪/৬৩, ৬/(৫২, ৬৯, ৭৩, ৯০, ৯১, ১০৮, ১৪৩, ১৪৪১৪৮, ১৪৯), ৭/(২৯, ৫৯, ৬১, ৬৫, ৭৩, ৭৪, ৮০, ৮১, ৮৫, ১০৪, ১২৮, ১৯৯), ৯/(৬, ১২২), ১০/৭৭, ৮৪, ১১/(২৮-৩১, ৩৪, ৫০, ৫২, ৮৮, ৮৯), ১২/১০৮, ১৪/(৫, ৬, ১০) ১৫/৯৪, ১৬/১২৫, ১৮/(২, ২২, ২৮, ৩৭, ৩-৪১) ১৯/(৪২-৪৫) ২০/(২৭-২৯, ৩১, ৩২, ৪২, ৪৪, ৪৭, ৫৩), ২১/(৬৩, ৬৬), ২৩/৯৬, ২৫/৫৬, ২৬/(১৬, ২৪, ২৬, ২৮, ৩০, ৭০, ৭২, ৭৩, ৭৫, ৭৬, ৭৮-৮০, ১০৬-১১০, ১১২-১১৪, ১২৪, ১২৬, ১৩১-১৩৫, ১৪২-১৫০, ১৬১-১৬৬, ১৬৮, ১৭৭-১৮৪, ২১৪, ২১৫) ২৭/(২৮, ৪৬, ৫৪, ৫৫), ২৮/(৩৪, ৩৭), ২৯/(২৮, ২৯, ৪৬), ৩৩/৪৮, ৩৪/(২৪-২৬, ৪৬), ৩৭/৮৮, ৪০/(২৯-৩৩, ৩৮), ৪১/(৩৩, ৩৪), ৪২/(৭, ১৫), ৪৩/৮৯, ৪৪/১৮, ৪৫/১৮, ৪৬/১৬, ৫৩/২৯, ৭১/(৫, ৮-২০), ৭৩/১০, ৭৯/(১৭-১৯), ৮০/(১, ৩, ৪, ৮), ৮৭/৯, ৮৮/২১

الأمر بالمعروف والنهي عن المنكر

৩। সৎকাজের আদেশ ও অন্যায় থেকে নিষেধ করণ

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ২/২০৬, ৩/(২১, ১০৪, ১১০, ১১৪), ৪/১০৪, ৫/(৬৩, ৭৯), ৭/(৮০, ৮১, ৮৫, ৮৬, ১৫৭, ১৬৪, ১৬৫, ১৯৯), ৯/(৭১, ১১২), ১১/১১৬, ১৫/(৬৯, ৭১), ১৬/৯০, ২২/৪১, ৩১/১৭

البلاء في سبيل الدعوة

৪। দাওয়াতের পথে প্রতিবন্ধকতা

← চলমান পাতা

সর্বমোট ১৯৪টি আয়াত ঃ ২/(৮৭, ৯১, ২১২, ২১৪, ২১৭), ৩/(২১, ৫৪, ১১১, ১২০, ১৬১, ১৬৬, ১৮৩, ১৮৪, ১৮৬, ১৯৫), ৪/(৭৫, ১০০, ১৫৭), ৫/(৪১, ৪৯, ৫৭, ৭০, ১১০), ৬/(১০, ২৫, ৩৩, ৩৪, ১১২), ৭/(৬০, ৬১, ৬৬, ৬৭, ৭৭, ৮২, ৮৮, ৯০, ১০৯, ১২৪, ১২৭, ১৩১), ৮/(৩০, ৪০, ৬১), ১০/(৬৫, ৭৬, ৮৩), ১১/(১২, ২৭, ৩২, ৫৩-৫৫, ৬২, ৭৮, ৮৮), ১২/(৩২, ৩৩, ৩৫, ৪২), ১৪/(৯, ১৩), ১৫/(৬, ১১, ৬৮, ৮০, ৯০, ৯৫, ৯৭), ১৬/(১০১, ১২৬, ১২৭), ১৭/(৬০, ৭৩), ২০/(৪০, ৪৫, ৬৮, ৭২), ২১/(৩, ৫), ২২/(৪০, ৪২-৪৪, ৬৮), ২৩/(২৪, ২৫, ৩৩, ৩৪, ৩৮, ৭০, ১১০), ২৫/(৪, ৫, ৭-৯, ২০, ২১, ৪১, ৪২, ৫২), ২৬/(১৪, ২৭, ২৯, ৩৪, ৩৫, ১০৫, ১১১, ১১২, ১১৬, ১১৭, ১৩৭, ১৪১, ১৫৩, ১৫৪, ১৬০, ১৬৭, ১৬৯, ১৭৬, ১৮৫-১৮৭), ২৭/(১৩, ৪৭, ৪৯, ৫৬, ৭০, ৩৬, ৪৮), ২৯/(২৪, ২৯), ৩৪/(৪৩, ৪৫), ৩৫/(৪, ২৫), ৩৬/(১৪, ১৫, ১৮, ৩০, ৬৯), ৩৭/(৩৬, ৯৭), ৩৮/(৪, ৬, ৭, ১৪), ৪০/(৫, ২৪-২৬, ২৮, ৩৭), ৪৩/(৭, ৩০, ৫২, ৫৩), ৪৪/১৪, ৪৬/(৮, ২২), ৫০/(১২-১৪), ৫১/(৩৯, ৫২), ৫২/(৩০, ৩৩), ৫৪/(২, ৯, ১৮, ২৩-২৫, ৩৩), ৫৯/৮, ৬০/১, ৬১/৫, ৬৮/(২, ৫১), ৬৯/(৪১, ৪২), ৭২/১৯, ৮১/২২, ৮৩/(২৯-৩৩), ৮৫/৮, ৯১/১৪, ৯৬/(১০, ১২), ১০৮/৩, ১১১/৪

صراع الحق والباطل

৫। হক ও বাতিলের সংঘর্ষ

সর্বমোট ৬০টি আয়াত ঃ ২/(৩৬, ২৫০, ২৫১, ২৫৩), ৩/(১৩, ৫৫, ৬৯, ১০০, ১৪০, ১৪৬), ৪/(৭৬, ৮৪, ৮৯, ১০১, ১০৪, ১৪১), ৫/(৫৬, ৮২), ৬/(৩৪, ১১২, ১১৩, ১১৬, ১২১, ১২৩, ১৩৫, ১৫০), ৭/(৮৮-৯০, ১১৮), ৮/(৬-৮, ৩৬), ৯/(৫, ৩২, ১০৯), ১০/৮২, ১১/(৩৮, ৩৯, ৫৪, ৫৫, ১১৮), ১৩/১৭, ১৭/(৬, ৮১), ১৮/২০, ২০/১২৩, ২১/১৮, ২২/১৯, ২৫/৫২, ২৭/(৩৭, ৪৫), ৩৪/৪৯, ৪৮/(২২, ২৩), ৬০/(২, ৪), ৬১/৮, ৮৫/৮

إنما على الرسول البلاغ

৬। রাসূলের দায়িত্ব শুধু পৌঁছানো

সর্বমোট ৬৬টি আয়াত ঃ ২/(১১৯, ২৭২), ৩/২০, ৪/৮০, ৫/(৬৭, ৯২, ৯৯), ৬/(৫২, ৬৬, ৬৯, ৯০, ১০৪, ১০৭), ৭/(৬২, ৬৩, ৬৮, ৭৯), ১০/(৪২, ৪৩, ৯৯, ১০৮), ১১/(১২, ৫৭, ৮৬), ১৩/(৭, ৪০), ১৫/৯৪, ১৬/(৩৫, ৮২), ১৭/৫৪, ১৮/(৬, ২৯), ২১/১০৯, ২২/৬৭, ২৪/৫৪, ২৫/(৪৩, ৫৬), ২৬/(৩, ১১৫, ২০৮, ২১৪, ২১৬), ২৭/৯২, ২৮/৫৬, ২৯/১৮, ৩০/(৫২, ৫৩), ৩৩/৩৯, ৩৫/২৩, ৩৬/১৭, ৩৯/৪১, ৪২/(৬, ৪৮), ৪৩/৪০, ৪৬/২৩, ৫০/৪৫, ৫১/(৫৪, ৫৫), ৫২/২৯, ৬৪/১২, ৬৭/২৬, ৭২/(২৩, ২৮), ৮০/৭, ৮৮/(২১, ২২)

تبشير الأنبياء قومهم وإنذارهم

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণ কর্তৃক নিজেদের জাতিকে সুসংবাদ দান ও ভীতি প্রদর্শন

সর্বমোট ১১১টি আয়াত ঃ ২/(৬, ২৫, ১১৯, ২১৩), ৩/(৫০, ১৬৪, ১৯৩), ৪/১৬৫, ৫/(১৯, ৬৭), ৬/(১৯, ৪৮, ৫১, ৯০, ৯২, ১৩০, ১৪৭), ৭/(২, ৬২, ৬৩, ৬৯, ৭৩, ৭৯, ৮৬, ৯৩, ১৮৪, ১৮৮), ১০/(২, ৮৭), ১১/(২, ১২, ২৫, ২৬, ১১০), ১৩/(৭, ৩০), ১৪/(৪৪, ৫২), ১৫/(৪৯, ৫০, ৮৯),

১৬/(২, ৬৩, ৮৯), ১৭/(১৫, ১০৫), ১৮/(২, ৪, ৫৬), ১৯/৯৭, ২১/৪৫, ২২/৪৯, ২৫/৫৬, ২৬/(১১৫, ১৩৫, ১৯৪, ২০৮, ২১৪), ২৭/৯২, ২৮/৪৬, ২৯/৫০, ৩২/৩, ৩৩/(৩৯, ৪৫, ৪৭), ৩৪/(২৮, ৩৪, ৪৬), ৩৫/(১৮, ২৩, ২৪, ৩৭), ৩৬/(৬, ১০, ১১), ৩৭/৭২, ৩৮/(৪, ৬৫, ৭০), ৩৯/(১৭, ৭১), ৪০/(১৫, ১৮), ৪১/(৪, ১৩), ৪২/৭, ৪৩/২৩, ৪৪/৩, ৪৬/(৯, ২১), ৪৮/৮, ৫০/২, ৫১/(৫০, ৫১), ৫৩/৫৬, ৫৪/(১৬, ১৮, ২১, ২৩, ৩০, ৩৬, ৪১), ৬১/১৩, ৬৭/(৮, ৯, ২৬), ৭১/(১, ২), ৭৪/২, ৭৯/৪৫, ৯২/১৪

سياسة الأنبياء أقوامهم

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণ কর্তৃক নিজেদের জাতিকে পরিচালনা

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/২১৩, ৬/(৯০, ১৪৩–১৪৫, ১৪৮, ১৪৯, ১৬৪), ৭/(২৯, ৬৯, ১২৮)

السيرة

চতুর্থ পর্ব ঃ সীরাত (জীবন চরিত)

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

السيرة
চতুর্থ পর্ব ঃ সীরাত (জীবন চরিত)

الجاهلية
প্রথম অধ্যায় ঃ জাহিলিয়্যাত

عادات الجاهلية

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ জাহিলিয়্যাতের প্রথাসমূহ

সর্বমোট ৬৭টি আয়াত ঃ ২/(১৭০, ১৮৯), ৩/(১০৩, ১৩০), ৪/(৪, ৭, ১৯, ২২, ২৩, ১১৯, ১২৭), ৫/(৩, ১০৩, ১০৪), ৬/(১৩৬-১৪০, ১৪৩, ১৪৪, ১৫০-১৫২), ৭/(২৮, ৩১, ৩২, ১৭৩), ৮/৩৫, ৯/৩৭, ১০/(৫৯, ৭৮), ১১/(৬২, ৮৭, ১০৯), ১৬/(৩৫, ৫৬, ৫৮, ৫৯, ৬২), ১৭/৩১, ২১/৫৩, ২৩/২৪, ২৪/৩১, ৩৩/(৩৩, ৩৭), ৩৬/৭৪, ৩৭/(৬৯, ৭০), ৪৩/(১৭, ২২, ২৩), ৪৭/২২, ৪৮/২৬, ৪৯/১১, ৫৩/২৩, ৫৭/২০, ৫৮/২, ৬০/১২, ৮১/(৮, ৯), ৮৩/(১-৩), ৮৯/১৯, ১০৬/(১, ২)

عبادة الأصنام

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মূর্তি পূজা

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৭/৭১, ২২/৭১, ২৬/(৭১-৭৬), ২৯/(১৭, ২৫), ৩৬/৭৪, ৩৭/(৯৫, ১২৫), ৩৯/৩, ৫৩/(১৯, ২০, ২৩), ৭১/২৩

فخر الجاهلية

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ জাহেলিয়্যাতের অহংকার-৯/১৯

أمية الأمة

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ উম্মতের নিরক্ষরতা-৩/২০

أبرهة والطير

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ আবরাহা এবং পাখি- সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১০৫/(৩, ৫)

بشريات بعثة النبي
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ নাবী (ﷺ)-আবির্ভাবের পূর্বাভাষ

تبشير الأنبياء ببعثة الرسول

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণ কর্তৃক রসূল (ﷺ) এর আবির্ভাবের সুসংবাদ প্রদান

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/১২৯, ৬/২০, ৭/১৫৭, ২৬/(১৯৬, ১৯৭), ৪৬/১০, ৬১/৬

صفة النبي في التوراة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ তাওরাতে নাবীর বর্ণনা-৪৮/২৯

الفترة ما بين عيسى ومحمد

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মুহাম্মাদ (ﷺ) ও ঈসা (عليه السلام) মধ্যবর্তী সময়-৫/১৯

← চলমান পাতা

سيرة ما قبل البعثة
তৃতীয় অধ্যায় ঃ নবুওয়াত প্রাপ্তির পূর্বের সীরাত

مولد النبي
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীর জন্ম–৯৩/৬

حضانة جد النبي
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ দাদা কর্তৃক নাবীর প্রতিপালন–৯৩/৬

البعثة
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নুবুওয়াত

العلامات الدالة على نبوة الرسول
১। রাসূলের (ﷺ)'র নুবুওয়াতের নিদর্শনসমূহ
সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৩/৪৪, ৭/(১৫৭, ১৫৮), ১০/(১৫, ১৬), ১১/১০০, ১২/(৩, ১০২), ১৬/১০৩, ২৮/(৪৪–৪৬), ২৯/৪৮, ৩৮/৬৯, ৬২/২

بدء الوحي
চতুর্থ অধ্যায় ঃ ওয়াহীর সূচনা

رؤية النبي جبريل عليه السلام
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ) কর্তৃক জিবরীলকে দর্শন।
সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৫৩/(৭–১৮), ৮১/২৩

أمية النبي
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবীর নিরক্ষরতা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/(১৫৭, ১৫৮), ৬২/২

انقطاع الوحي
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ওয়াহী বন্ধ হওয়া–৯৩/৩

ما يلاقيه النبي من شدة الوحي
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ ওয়াহীর তীব্র প্রভাব যা নাবী (ﷺ)'র উপর পড়ত–৭৩/৫

السيرة المكية
পঞ্চম অধ্যায় ঃ মাক্কী জীবন

الجهر بالدعوة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ প্রকাশ্য দাওয়াত

الأمر بالجهر بالدعوة
১। প্রকাশ্য দাওয়াতের নির্দেশ–১৫/৯৪

خوف النبي على قومه
২। নাবী (ﷺ) কর্তৃক স্বীয় কওমকে ভীতি প্রদর্শন
সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ৩/১৭৬, ৫/(৪১, ৬৮), ৭/(৩৩/৩৫), ৯/(৮০, ১২৮), ১০/৯৯, ১৫/৮৮, ১৬/(৩৭, ১২৭), ১৮/৬, ২৬/(৩, ২১৪), ২৭/৭০, ৩৪/৪৬, ৩৬/১০, ৩৯/১৯, ৪২/২৩, ৪৩/৪০, ৫০/৪৫, ৮০/৬

← চলমান পাতা

دعاء النبي عشيرته الأقربين

৩। নিকটাত্মীয়দের প্রতি নাবী (ﷺ)-এর আহ্বান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৯২, ২৬/২১৪

إعراض الناس عن النبي

৪। নাবী (ﷺ) থেকে মানুষের বিমুখতা

সর্বমোট ৪৬টি আয়াত ঃ ২/১৭০, ৩/(৬৩, ১৭৬, ১৮৪), ৫/১০৪, ৬/(৫০, ১৪৭), ৯/১২৯, ১১/(৫, ১৪), ১৭/(৪৫–৪৭), ১৮/(৬, ৫৭), ২১/(২, ৬, ৩৬), ২২/(১৫, ৬৮), ২৩/৬৯, ২৫/(৪, ৫, ৯, ৩০, ৬০), ২৬/(৫, ২১৬), ২৭/(৮০, ৮১), ২৮/৫০, ৩৫/৪২, ৩৮/৬৮, ৩৯/৬৪, ৪১/(৪, ৫, ২৬), ৪২/১৩, ৪৩/৩১, ৫২/৪০, ৫৪/(২, ৩, ৪৪), ৬৮/৯, ৭০/(৩৬, ৩৭)

تثبيت الله لرسوله

৫। আল্লাহ কর্তৃক রাসূল (ﷺ)-কে অবিচল রাখা

সর্বমোট ১৯১টি আয়াত ঃ ২/(১৪৭, ২৫২, ২৫৮), ৩/(১২, ৫৮, ১২০, ১২৬, ১৩৯, ১৪৬, ১৭৪, ১৭৬, ১৮৪, ১৮৬, ১৯৬), ৪/(৪৫, ৬৩, ৮১, ৮৪, ১১৩, ১৬৬), ৫/(৪১, ৪২, ৬০, ৬৭, ১০৫), ৬/(১০, ৩৩–৩৫, ৪২, ৫৭, ৫৮, ৭০, ১০৬, ১১২, ১১৪, ১১৬, ১২৩, ১৩৫, ১৪৭, ১৫০), ৭/(২, ১০১, ১৮৪, ১৯৬, ২০৩), ৮/(৬২, ৬৪), ৯/(৫৫, ৮৫, ১২৯), ১০/(২০, ৪১, ৪৬, ৬৫, ৭১, ৯৪, ৯৮, ৯৯, ১০৯), ১১/(১২, ১৪, ১৭, ৪৯, ১০৯, ১১২, ১২০), ১২/(১০২, ১০৩, ১১০), ১৩/(৩২, ৩৮, ৪১–৪৩), ১৪/৯, ১৫/(১০, ১১, ৮৫, ৮৮, ৯১, ৯৪), ১৬/(২৬, ৪৩, ৬৩, ১২৭), ১৭/(৪৮, ১০৭), ১৯/৬৫, ২০/(৯, ৯৯, ১৩০, ১৩১), ২১/৪১, ২২/(৪২–৪৪, ৫২, ৬৭, ৬৯), ২৩/(২৪, ৭২), ২৪/৫৫, ২৫/(২০, ৩১–৩৩, ৩৬–৩৯, ৪৩, ৫২), ২৬/(৬৯, ১০৫, ১২৩, ১৩৯, ১৫৮, ১৬০, ১৭৪, ১৭৬, ১৯০, ১৯৪), ২৭/(৬, ১৪, ৪৫, ৭০, ৭৯), ২৮/(৫০, ৮৭), ২৯/(১৪, ৩৬, ৩৮), ৩০/(৪৭, ৬০), ৩১/২৩, ৩২/৩০, ৩৩/৪৮, ৩৪/৩৪, ৩৫/(৪, ৮, ২৫), ৩৬/৭৬, ৩৭/(১৭৪, ১৭৫, ১৭৮, ১৭৯), ৩৮/(১৭, ৪১, ৪৫–৪৮), ৩৯/৩৬, ৪০/(৫, ৫৫, ৭৭, ৭৮), ৪১/৪৩, ৪৩/(৬–৮, ২৩, ৪৩), ৪৪/১৭, ৪৬/(২১, ৩৫), ৪৭/১৩, ৪৮/২৬, ৫০/(১২, ১৪, ৩৯), ৫১/(৫২, ৫৪), ৫২/(৪৫, ৪৮), ৬৮/৪৮, ৭০/৫, ৭৩/১০, ৭৬/২৪, ৭৯/১৫, ৮৫/(১৭, ১৮), ৮৭/৮, ৯৩/(৪–৮), ৯৬/১৯

إثبات رسالة النبي

৬। নাবী (ﷺ)'র রিসালাতের প্রমাণ

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/১১৯, ৩/(৬১, ৬২, ৮১, ১৬৪), ৪/(৭৯, ১৬৬, ১৭০), ৫/(১৫, ১৯), ৭/১৫৮, ৯/৩৩, ১০/১০৮, ৩৬/৩, ৪৩/৪৩, ৪৭/২, ৪৮/২৮

إيذاء قريش

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ কুরাইশগণকে শাস্তি প্রদান

تكذيب قريش للنبي

১। কুরাইশ কর্তৃক নাবী (ﷺ)-কে মিথ্যা প্রতিপন্ন করা

সর্বমোট ৯১টি আয়াত ঃ ৩/৬১, ৬/(২৫, ২৬, ৩৩, ৩৫, ৫৭, ৬৬, ১৩৫, ১৪৭, ১৫০, ১৫৬, ১৫৭), ৯/৯, ১০/(১৫, ৩৯, ৪১, ৫৩), ১৩/(২৭, ৩১, ৪৩), ১৫/৭, ১৬/(১০৩, ১১৩), ১৭/(৯০–৯৩), ২১/(২, ৩, ৫, ৬), ২৫/৪, ২৬/২১৬, ২৭/(৭০, ৮০, ৮১), ২৮/(৪৮, ৪৯), ৩২/৩, ৩৪/(৭, ৮, ২৯, ৪৩, ৫৩), ৩৫/(৪, ৪২), ৩৬/(৬৯, ৭৬), ৩৭/(১২, ৩৬, ১৭০), ৩৮/(৪–৮, ৬৮), ৩৯/৬৪, ৪১/(৪, ৫), ৪২/(১৩, ২৪), ৪৩/(২৪, ৩০, ৩১, ৫৭, ৫৮, ৮৮), ৪৪/১৪, ৪৬/(৭, ৮, ১০), ৫০/২,

← চলমান পাতা

৫২/(২৯, ৩০, ৪০, ৪২), ৫৪/(২, ৩, ৪৪), ৬৮/৯, ৬৯/৪১, ৭০/(৩৬, ৩৭), ৭৪/৫২, ৭৫/(৩১, ৩২), ৮০/(৫, ৬), ১০৯/(৩, ৫)

بلاء المسلمين من قريش

২। কুরাইশগণ কর্তৃক মুসলিম নির্যাতন

সর্বমোট ৩২টি আয়াত ঃ ২/২১৭, ৩/(১৪০, ১৮৬, ১৯৫), ৫/(৫৭, ৫৮), ৯/(১৩, ৪০), ১৬/(১২৬, ১২৭), ১৭/(৪৭, ৭৬), ২১/(৫, ৬, ৩৬), ২২/৪০, ২৫/৪, ২৭/৭০, ২৯/১২, ৩৪/৫৩, ৪৭/১৩, ৫২/(৩০, ৪২), ৬০/(১, ২, ৯), ৭২/১৯, ৮৩/(২৯–৩৩)

سخرية المشركين من المؤمنين

৩। মু'মিনদের প্রতি মুশরিকগণের তিরস্কার

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/২১২, ৩৪/৭, ৩৮/৬৩, ৮৩/(২৯–৩২)

سؤال قريش المعجزات

৪। কুরাইশগণ কর্তৃক মু'জিযার দাবী

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/১১৮, ৬/(৮, ৩৭, ১০৯, ১১১), ৭/২০৩, ১০/২০, ১১/১২, ১৩/(৭, ২৭, ৩৮), ১৫/৭, ১৭/(৯, ৯১, ৯৩), ২০/১৩৩, ২১/৫, ২৫/(৭, ৮), ২৯/৫০, ৯৮/১

تحالف قريش على الكفر

৫। কুফুরীর উপর অবিচল থাকার জন্য কুরাইশগণের জোট গঠন

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৮/৩০, ৩৮/(৬, ৭), ৪১/২৬, ৫১/৫৩, ১০৯/(৩, ৫, ৯)

إيذاء أبي جهل للنبي

৬। আবূ জাহাল কর্তৃক নাবী (ﷺ)-কে কষ্ট প্রদান

عداوة أبي جهل

৬/১। আবূ জাহালের পক্ষ হতে শত্রুতা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৯৬/(৯–১২)

عداوة أبي لهب

৭। আবূ লাহাবের পক্ষ হতে শত্রুতা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১১১/(১–৩)

تعذيب المستضعفين ممن آمن

৮। দুর্বল মু'মিনগণের ওপর নির্যাতন

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/৭৫, ১৬/(৪১, ১১০), ৫৯/১১, ৬০/(১, ৯)

افتراءات المشركين على القرآن

৯। কুরআনের প্রতি মুশরিকগণের অপবাদসমূহ

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৪/১৪০, ৬/(২৫, ২৮), ৮/৩১, ১০/(১৫, ৩৭, ৩৮), ১১/(১৩, ৩৫), ১৫/৯১, ১৬/২৪, ২১/৫, ২৫/৪, ৩২/৩, ৩৪/(৮, ৪৩), ৩৬/৬৯, ৩৭/১৫, ৪২/২৪, ৪৬/(৭, ১১), ৫২/৩৩, ৬৮/৪৪, ৮১/২৫, ৮৩/১৩

ادعاء المشركين كتمان النبي الوحي

১০। নাবী (ﷺ) কর্তৃক ওয়াহী গোপন করার ব্যাপারে মুশরিকগণের দাবী পেশ–৮১/২৪

ادعاء المشركين معرفة النبي بالغيب

১১। নাবী (ﷺ)'র গায়েব জানার ব্যাপারে মুশরিকগণের দাবী পেশ– ৭/১৮৮

ادعاء قريش تعليم اليهود للنبي

১২। ইয়াহূদীগণ কর্তৃক নাবী (ﷺ)-কে শিক্ষা দান করা হয়েছে কুরাইশদের এমন দাবী উত্থাপন–৬/১০৫

اتهام النبي بالسحر

১৩। নাবী (ﷺ)'র উপর যাদুকর হওয়ার অপবাদ আরোপ–

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৬/৭, ১০/২, ১১/৭, ১৭/৪৭, ২১/৩, ২৫/৮, ৩৪/৪৩, ৩৭/১৫, ৩৮/৪, ৪৩/৩০, ৪৬/৭, ৫২/২৯, ৬৯/৪২, ৭৪/২৪

اتهام النبي بالجنون

১৪। নাবী (ﷺ)'র উপর পাগল হওয়ার অপবাদ আরোপ

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৭/১৮৪, ১৫/৬, ২৩/৭০, ৩৪/(৮, ৪৬), ৩৭/৩৬, ৪৪/১৪, ৫২/২৯, ৬৮/(২, ৫১), ৮১/২২

اتهام النبي بالكذب

১৫। নাবী (ﷺ)'র প্রতি মিথ্যার অপবাদ আরোপ–১৭/৪৮

اتهام النبي بأنه شاعر

১৬। নাবী (ﷺ)'র প্রতি কবি হওয়ার অপবাদ আরোপ– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২১/৫, ৩৬/৬৯, ৩৭/৩৬, ৫২/৩০, ৬৯/৩১

الإسراء والمعراج

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ইসরা ও মি'রাজ

عروج الملائكة بالنبي

১। নাবী (ﷺ)-কে নিয়ে ফেরেশতাদের উর্দ্ধারোহণ–১৭/১

شق صدر النبي واستخراج قلبه

২। নাবী (ﷺ)'র বক্ষ বিদারণ ও তাঁর হৃদয় উন্মোচন–৯৪/১

رؤية النبي لجبريل في صورته الأصلية

৩। নাবী (ﷺ) কর্তৃক জীবরীল (عليه السلام)-কে আসল সুরতে দর্শন সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫৩/(১৪–১৮)

رؤية النبي للجنة في المعراج

৪। মী'রাজে নাবী (ﷺ) কর্তৃক জান্নাত দর্শন। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৫৩/(১৫–১৮)

تكذيب قريش للإسراء والمعراج

৫। ইসরা ও মি'রাজ সম্পর্কে কাফিরদের মিথ্যারোপ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৭/৬০, ৫৩/(১০, ১২)

العقبة الكبرى

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ আকাবায়ে কুবরা

المبايعة على التوحيد واجتناب الشرك

১। তাওহীদে সুপ্রতিষ্ঠা ও শির্ক বর্জনে বায়'আত

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫/৭, ৫৭/৮, ৬০/১২

مبايعة النساء ليلة العقبة

২। আকাবা রজনীতে নারীদের বায়'আত–৬০/১২

← চলমান পাতা

Contents

الهجرة
ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ হিজরাত

الإعداد للهجرة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ হিজরাতের প্রস্তুতি

إذن النبي لأصحابه بالهجرة
১। সাহাবীগণের প্রতি নাবী (ﷺ) কর্তৃক হিজরাতের অনুমতি প্রদান–৪/৯৭

الإذن للنبي بالهجرة
২। নাবী (ﷺ)-কে হিজরাতের অনুমতি প্রদান–২৯/৫৬

العذر في التخلف عن الهجرة
৩। হিজরাত থেকে পিছিয়ে থাকার জন্য ওজর আপত্তি পেশ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(৯৮, ৯৯)

الهجرة في سبيل الله
৪। আল্লাহর পথে হিজরাত
সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/২১৮, ৩/১৯৫, ৪/(৮৯, ৯৭, ১০০), ৮/(৭২, ৭৪), ৯/২০, ১৬/৪১, ২২/৫৮, ২৪/২২, ২৯/৮, ৫৯/৮

غار ثور
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সওর পর্বতের গুহা–৯/৪০

دخول النبي المدينة
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর মদীনায় প্রবেশ–১৭/৮০

السيرة المدنية
সপ্তম অধ্যায় ঃ মাদানী জীবন

بلاء المسلمين في المدينة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ মাদীনায় মুসলিমদের উপর পরীক্ষা ও নির্যাতন

إيذاء المنافقين لرسول الله
১। মুনাফিকগণ কর্তৃক রাসূলুল্লাহ (ﷺ)-কে কষ্ট প্রদান
সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৪/(৬১, ৭৮, ৮১, ১১৩), ৫/৪১, ৯/(৪৮, ৫০, ৫৮, ৬১, ৬৫, ৭৪), ২৪/১১, ৬৩/(৫, ৮)

إيذاء الوافدين في طلب الإسلام
২। ইসলামের অন্বেষণে আগন্তুকদের উপর নির্যাতন
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/২৬, ৪২/১৬

إيذاء اليهود للمسلمين
৩। ইয়াহূদগণ কর্তৃক মুসলিমদের উপর নির্যাতন
সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ২/১৪২, ৩/(৬৯, ৭২, ১০০, ১১১, ১১৮, ১৮৬), ৪/(৪৪, ৪৬, ৫১), ৫/(৪১, ৫৭, ৫৮, ৬৪), ৫৮/৮

← চলমান পাতা

موقف الأعراب من الإسلام
৪। ইসলামের ব্যাপারে বেদুইনদের অবস্থান
সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৯/(৯৭-৯৯, ১০১), ৪৮/(১১, ১২, ১৫, ১৬), ৪৯/(১৪, ১৭)

أحداث السنة الثانية
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ দ্বিতীয় হিজরীর ঘটনাবলী

تحويل القبلة إلى الكعبة
১। কা'বা অভিমুখে কিবলার পরিবর্তন
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(১৪২-১৪৪, ১৫০)

معركة بدر الكبرى
২। বদর যুদ্ধ- সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/(৮, ৯)

معركة بني قينقاع
৩। বানু কায়নুকার যুদ্ধ-৫৯/১৪

أحداث السنة الثالثة
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ তৃতীয় হিজরীর ঘটনাবলী

غزوة حمراء الأسد
১। হামরাউল আসাদ যুদ্ধ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/(১৭২-১৭৪)

أحداث السنة الخامسة
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ পঞ্চম হিজরীর ঘটনাবলী

الافتراء على عائشة
১। 'আয়িশাহ (রাঃ)-এর প্রতি মিথ্যা অপবাদ আরোপ। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২৪/(১১-১৬)

الغزوات
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধসমূহ

غزوة بدر
১। বদর যুদ্ধ

رؤيا النبي في شأن بدر
১/১। বদর যুদ্ধের ব্যাপারে নাবী (ﷺ) স্বপ্ন-৮/৪৩

التحريض على القتال يوم بدر
১/২। বদর যুদ্ধে কিতালের ব্যাপারে উৎসাহ প্রদান- সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/(৫, ৭)

استغاثة الرسول بالله في بدر
১/৩। বদর প্রান্তরে রসূল (ﷺ) কর্তৃক আল্লাহর নিকট ফরিয়াদ-৮/৯

أول مبارزة وقعت في الإسلام
১/৪। ইসলামের প্রথম দ্বন্দ্ব-যুদ্ধ-২২/১৯

وصف يوم بدر
১/৫। বদর যুদ্ধের বিবরণ- সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৮/(১১, ৪১-৪৪, ৪৮, ৪৯)

← চলমান পাতা

شهود الملائكة يوم بدر

১/৬। বদর যুদ্ধে ফেরেশতাদের উপস্থিতি। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(১২৪, ১২৫), ৮/(৯, ১০, ১২)

نتيجة غزوة بدر

১/৭। বদর যুদ্ধের ফলাফল

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/(১৩, ১২৩, ১৬৫), ৮/(৮, ১৭), ৫৪/৪৫

فداء المشركين من أسرى بدر

১/৮। বদর যুদ্ধের বন্দীদের পক্ষে মুশরিকদের মুক্তিপণ প্রদান

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/(৬৭, ৬৮, ৭০)

غنائم بدر

১/৯। বদর যুদ্ধের গনীমতসমূহ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/(১, ৪১)

غزوة أحد

২। উহুদ যুদ্ধ

موقعة أحد وتنظيم الصفوف

২/১। উহুদ প্রান্তর ও সুশৃংখল কাতারবন্দী–৩/১২১

ما يتعلق بالقتال و المقاتلين يوم أحد

২/২। উহুদের যুদ্ধ ও যোদ্ধা সম্পর্কিত বিবরণ–৩/১৪৪

شدة الكرب يوم أحد

২/৩। উহুদ যুদ্ধের ভয়াবহতা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/(১৪৩, ১৫৩)

عمل الشيطان في غزوة أحد

২/৪। উহুদ যুদ্ধে শয়তানের কাজ–৩/১৫৫

عودة المنافقين يوم أحد

২/৫। উহুদ যুদ্ধে মুনাফিকদের (যুদ্ধ না করে) ফিরে যাওয়া

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/(১৬৭, ১৬৮), ৪/৮৮

إصابة النبي يوم أحد

২/৬। উহুদ যুদ্ধে নাবী (ﷺ)-এর আক্রান্ত হওয়া–৩/১৪৪

هزيمة المسلمين في أحد

২/৭। উহুদ যুদ্ধে মুসলিমদের পরাজয়

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/(১৪০, ১৫২–১৫৫, ১৬৫, ১৬৬, ১৭২)

غزوة حنين

৩। হুনাইনের যুদ্ধ

انهزام المسلمين أولا في حنين

৩/১। প্রাথমিক অবস্থায় হুনাইনে মুসলিমদের পরাজয়–৯/২৫

نتيجة غزوة حنين

৩/২। হুনাইন যুদ্ধের ফলাফল–৯/২৬

← চলমান পাতা

مبايعة أسرى حنين على الإسلام

৩/৩। হুনাইন যুদ্ধ বন্দীদের ইসলামের উপর বায়'আত-৯/২৭

غزوة الخندق

৪। খন্দক যুদ্ধ

شدة يوم الأحزاب

৪/১। আহযাব যুদ্ধের ভয়বাহতা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(১১, ২২)

ظهور المنافقين يوم الأحزاب

৪/২। আযহাব যুদ্ধের দিন মুনাফিকদের আত্মপ্রকাশ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩৩/(১২, ১৩, ১৫, ১৮, ২০)

فشل الأحزاب واندحارهم

৪/৩। বহুজাতিক বাহিনীর পরাজয়। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩৩/(৯, ১০, ২৫-২৭)

صلح الحديبية

৫। হুদাইবিয়ার সন্ধি

صد المشركين المسلمين عن العمرة

৫/১। মুসলিমদের উমরাহ পালনে মুশরিকদের বাধা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/(১১৪, ১৯৪, ১৯৬, ২১৭), ৫/২, ২২/২৫, ৪৮/(২৪-২৬)

بيعة الرضوان تحت الشجرة

৫/২। গাছের নীচে বাই'আতে রিদওয়ান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৮/(১০, ১৮)

فضل المبايعين تحت الشجرة

৫/৩। গাছের নীচে বাই'আতকারীদের মর্যাদা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪৮/(১০, ১৮-২০)

تخلف الأعراب في عمرة الحديبية

৫/৪। হুদাইবিয়ার উমরাহ হতে বেদুইনদের বিরত থাকা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪৮/(১১, ১২, ১৫, ১৬)

شروط صلح الحديبية

৫/৫। হুদাইবিয়া সন্ধির শর্তাবলী-৬০/১০

غنائم خيبر لمن شهد الحديبية

৫/৬। হুদায়বিয়ায় উপস্থিতদের জন্য খায়বার গানীমাতের অংশ-৪৮/১৫

غزوة بني النضير

৬। বানী নাযীর যুদ্ধ

تحالف المنافقين مع بني النضير

৬/১। বানী নাযীরের সাথে মুনাফিকদের জোট- সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫৯/(১১-১৩)

إجلاء بني النضير

৬/২। বানী নাযীরদের বিতাড়ন- সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫৯/(২, ৩, ৫)

ما أفاء الله به من بني النضير

৬/৩। বানী নযীর হতে আল্লাহ কর্তৃক ফাই (বিনা যুদ্ধে অর্জিত সম্পদ) প্রদান-৫৯/৬

← চলমান পাতা

غزوة تبوك

৭। তাবূক যুদ্ধ

مقاساة الصحابة في غزوة تبوك

৭/১। তাবূক যুদ্ধে সাহাবীদের কষ্ট-ক্লেশ–৯/১১৭

غزوة تبوك غزوة العسرة

৭/২। তাবূক যুদ্ধ সংকটের যুদ্ধ–৯/১১৭

تخلف بعض الصحابة عن تبوك

৭/৩। তাবূক যুদ্ধ হতে কতক সাহাবীর বিরত থাকা– সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৯/(৩৮, ৩৯, ৪৫, ১০২, ১০৬, ১১৮)

موقف المنافقين في تبوك

৭/৪। তাবূক যুদ্ধে মুনাফিকদের অবস্থান

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৯/(৪২, ৪৪–৪৭, ৪৯, ৮১, ৮৩, ৮৬, ৮৭, ৯০, ৯৩–৯৬)

مسجد الضرار

৭/৫। মাসজিদে যিরার– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/(১০৭, ১০৮, ১১০)

فتح مكة

৮। মাক্কাহ বিজয়

التبشير بفتح مكة

৮/১। মাক্কাহ বিজয়ের সুসংবাদ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৮/৮৫, ৪৮/২১

رؤيا النبي فتح مكة في المنام

৮/২। স্বপ্ন যোগে নাবী (ﷺ)-এর মাক্কাহ বিজয়–৪৮/২৭

قصة حاطب بن أبي بلتعة

৮/৩। হাতেব বিন আবূ বালতা'আহ'র কিসসা–৬০/১

دخول النبي وأصحابه مكة

৮/৪। নাবী (ﷺ) ও তাঁর সাহাবীগণের মাক্কায় প্রবেশ–

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪৮/(১, ২৭), ১১০/১

فتح خيبر

৯। খায়বার বিজয়

التبشير بفتح خيبر

৯/১। খায়বার বিজয়ের সুসংবাদ–৪৮/২১

الرسائل والمعاهدات (علاقات دبلوماسية)

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ চিঠিপত্র ও চুক্তিনামা (কূটনৈতিক সম্পর্ক)

الوفاء بالعهود والوعود

১। ওয়াদা ও অঙ্গীকারসমূহ পূরণ

সর্বমোট ২৪টি আয়াত ঃ ২/(১০০, ১৭৭), ৩/(৭৬, ৮১), ৪/৯০, ৫/১, ৬/১৫২, ৮/৫৬, ৯/(৪, ৭), ১২/৬৬, ১৩/২০, ১৬/(৯১, ৯২, ৯৪, ৯৫), ১৭/৩৪, ২৩/৮, ৩৩/(১৫, ২৩), ৪৮/১০, ৬১/(২, ৩), ৭০/৩২

← চলমান পাতা

شمائل النبي صلى الله عليه وسلم
অষ্টম অধ্যায় ঃ নাবী (ﷺ)-এর স্বভাব চরিত্র

صفات النبي الخلقية و هيئته الشريفة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর দৈহিক গঠনপ্রকৃতি

أسماء النبي
১। নাবী (ﷺ)-এর নামসমূহ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/১৪৪, ৩৩/৪০, ৪৭/২, ৪৮/২৯, ৬১/৬

أخلاق النبي
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর চরিত্র

حسن أخلاق النبي
১। নাবী (ﷺ)-এর চারিত্রিক মাধুর্য
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/১২৮, ৬৮/৪

تواضع النبي
২। নাবী (ﷺ)-এর নম্রতা

التواضع خلق الأنبياء
২/১। নাবীগণের চারিত্রিক বিনয়-নম্রতা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৫০, ১১/৩১

قول النبي إنما أنا بشر
২/২। নাবী (ﷺ)-এর বাণী ঃ নিশ্চয় আমি একজন মানুষ–১৭/৯৩

زهد النبي
৩। নাবী (ﷺ)-এর পার্থিব বিমুখতা–২০/১৩১

رحمة النبي
৪। নাবী (ﷺ)-এর দয়া ও করুণা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/১৫৯, ৯/(৬১, ১২৮)

تقوى النبي
৫। নাবী (ﷺ)-এর তাকওয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/১৫, ১০/১৫

لطف النبي في المعاملة
৬। লেনদেনে নাবী (ﷺ)-এর বিনয়। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৫৯, ১৫/৮৮, ২৩/৯৬, ২৬/২১৫

رفق النبي
৭। নাবী (ﷺ)-এর নম্রতা–৯/১২৮

عبادة النبي (النوافل)
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর ইবাদত (নফলসমূহ)

صلاة النبي
১। নাবী (ﷺ)-এর সলাত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২০/১৩০, ৭৩/২০

قراءة النبي للقرآن
২। নাবী (ﷺ)-এর কুরআন তিলাওয়াত
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৭/১১০, ৪৬/২৯, ৭৫/১৬

← চলমান পাতা

معجزات النبي

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর মু'জিযাসমূহ

نزول القرآن على النبي

১। নাবী (ﷺ)-এর উপর আল-কুরআন অবতরণ

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ২/(২৩, ৯৯, ১৮৫), ৩/(৩, ৭, ৮৪), ৪/(১০৫, ১১৩, ১৩৬), ৫/৬৭, ৬/(১৫৬, ১৫৭), ৭/২০৩, ১৭/(৮৬, ১০৫, ১০৬), ১৮/(১, ২৭), ২০/১৩৩, ২১/(১০, ৫০), ২৬/(১৯২–১৯৪), ২৭/৬, ২৯/৫১, ৩২/২, ৩৮/(৮, ২৯), ৩৯/(২, ৪১), ৪২/(৩, ৭, ১৭), ৪৪/৩, ৫৬/৮০, ৬৯/(৪০, ৪৩), ৭৬/২৩, ৯৮/২

فضائل النبي

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর মর্যাদাসমূহ

إرضاء الله للنبي

১। নাবী (ﷺ)–এর জন্য আল্লাহর সন্তুষ্টি। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৬৮/৩, ৯৩/(৫, ৭), ৯৪/(১, ৪)

النبي شاهد وبشير ونذير

২। নাবী (ﷺ) সাক্ষী, সুংবাদদাতা ও ভীতি প্রদর্শনকারী

সর্বমোট ৬১টি আয়াত ঃ ২/(১১৯, ১৪৩), ৪/৪১, ৫/১৯, ৬/(১৯, ৯২), ৭/(২, ১৮৪, ১৮৮), ১০/২, ১১/(২, ১২), ১৩/৭, ১৪/(৪৪, ৫২), ১৫/৮৯, ১৬/৮৯, ১৭/১০৫, ১৮/(৪, ৫৬), ২১/৪৫, ২২/(৪৯, ৭৮), ২৫/৫৬, ২৬/(১৯৪, ২১৪), ২৭/৯২, ২৮/৪৬, ২৯/৫০, ৩২/৩, ৩৩/৪৫, ৩৪/(২৮, ৪৪, ৪৬), ৩৫/(১৮, ২৩, ২৪, ৪২), ৩৬/(৬, ১০, ১১), ৩৮/(৪, ৬৫, ৭০), ৩৯/১৭, ৪০/১৮, ৪১/(৪, ১৩), ৪২/৭, ৪৪/৩, ৪৬/৯, ৪৮/৮, ৫০/২, ৫১/(৫০, ৫১), ৫৩/৫৬, ৬১/১৩, ৬৭/২৬, ৭৩/১৫, ৭৪/২, ৭৯/৪৫

شهادة النبي على أمته

৩। উম্মতের জন্য নাবী (ﷺ)-এর সাক্ষ্য প্রদান

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/১৪৩, ৪/৪১, ১৬/৮৯, ২২/৭৮, ৩৩/৪৫, ৪৮/৮, ৭৩/১৫

النبي أولى بالمؤمنين من أنفسهم

৪। নাবী (ﷺ) মুমিনদের নিকট তাদের স্বীয় আত্মা থেকেও আপন–৩৩/৬

وجود النبي أمان لأمته

৫। নাবী (ﷺ)-এর অস্তিত্ব তাঁর উম্মতের জন্য নিরাপত্তা স্বরূপ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/৩৩, ৬৭/২৮

فضل الصلاة على النبي

৬। নাবী (ﷺ)-এর সলাত পাঠের মর্যাদা–৩৩/৫

الرسول قاسم والله معطي

৭। রাসূল (ﷺ) বন্টনকারী ও আল্লাহ দানকারী–৮/৪১

← চলমান পাতা

خصوصيات النبي
ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর বিশেষ বৈশিষ্ট্যসমূহ

بعثة النبي للناس كافة
১। নাবী (ﷺ)-কে বিশ্ব মানবতার জন্য প্রেরণ
সর্বমোট ৩৭টি আয়াত ঃ ৩/(৬৪, ১৯৯), ৪/(৪৭, ৭৯, ১৬২, ১৭০, ১৭১, ১৭৪), ৫/(১৫, ১৯, ৬৬, ৬৮, ৮১, ৮৩), ৬/(১৯, ২০, ৯০, ১১৪), ৭/১৫৮, ১০/(১০৪, ১০৮), ১৩/৩৬, ১৬/৬৪, ২১/১০৭, ২২/৪৯, ২৫/(১, ৫১), ৩৪/২৮, ৩৯/৪১, ৬১/(৬, ৯), ৬২/৩, ৬৮/৫২, ৮১/২৭, ৯৮/(১, ৪, ৬)

حل الغنائم للنبي
২। নাবী (ﷺ)-এর জন্য গনীমতের মাল হালাল হওয়া
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/(৮, ৪১, ৬৯)

إعطاء النبي الكوثر
৩। নাবী (ﷺ)-কে কাওসার প্রদান–১০৮/১

غفران ذنوب النبي
৪। নাবী (ﷺ)-এর সকল পাপ ক্ষমাকৃত– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৯/৪৩, ৪৮/২, ৯৪/(২, ৩)

نصر النبي بالرعد
৫। বজ্র দ্বারা নাবী (ﷺ)-কে সাহায্য প্রদান– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৫১, ৮/১২, ৩৩/২৬, ৫৯/২

نصر النبي بالريح
৬। বাতাস দ্বারা নাবী (ﷺ)-কে সাহায্য প্রদান–৩৩/৯

زواج النبي بأكثر من أربع
৭। নাবী (ﷺ)-এর চার জনের অধিককে স্ত্রী হিসেবে গ্রহণ–৩৩/৫০

زواج النبي من الموهوبة
৮। নাবী (ﷺ)-এর বিবাহ আল্লাহ কর্তৃক দানস্বরূপ–৩৩/৫০

آخر النبيين
৯। নবীগণের সর্বশেষ– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৪৪, ৯/৩৩, ৩৩/৪০, ৭২/৭

إحلال مكة للنبي وحده
১০। শুধুমাত্র নাবী (ﷺ)-এর জন্য মাক্কাহকে (রক্ত প্রবাহের জন্য) হালাল করণ–৯০/২

وجوب التهجد على النبي
১১। নাবী (ﷺ)-এর জন্য তাহাজ্জুদ সালাত অপরিহার্য হওয়া
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৭/৭৯, ২০/১৩০, ৭৩/(২, ২০), ৭৬/২৬

أزواج النبي
সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ নবী সহধর্মিণীগণ

آية التخيير
১। অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ পছন্দের স্বাধীনতার আয়াত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(২৮, ২৯)

القسم بين أزواج النبي
২। নাবীসহধর্মিণীদের মাঝে সমতা বিধান–৩৩/৫১

حجاب أزواج النبي

৩। নাবীসহধর্মিণীদের হিজাব বা পর্দা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৫৩, ৫৯)

قصة زاوج النبي بأزواجه

৪। সহধর্মিণীদের সঙ্গে নাবী (ﷺ)-এর বিবাহের কিসসা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৩৭, ৩৮)

المناقب والفضائل
নবম অধ্যায় ঃ গুণাবলী ও মর্যাদাসমূহ

مناقب المهاجرين

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ মুহাজিরদের গুণাবলী

فضل المهاجرين

১। মুহাজিরগণের মর্যাদা

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/২১৪৮, ৩/১৯৫, ৭/১৫৭, ৮/(৭২, ৭৪, ৭৫), ৯/(২০, ২১, ১০০, ১১৭), ১৬/(৪১, ৪২, ১১০), ২২/(৪০, ৪১, ৫৮), ৫৯/১০

الفقر والحاجة في صدر الإسلام

২। ইসলামের প্রাথমিক যুগে অভাব ও দারিদ্র

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২১৪, ৮/২৬, ৫৭/১০, ৯৩/৮

فضل فقراء المهاجرين

৩। নিঃস্ব মুহাজিরগণের মর্যাদা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫৭/১০, ৫৯/৮

مناقب الأنصار

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আনসারগণের গুণাবলী

فضل الأنصار

১। আনসারগণের মর্যাদা– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭/১৫৭, ৯/(১০০, ১১৭), ৫৯/(৯, ১০)

نصرة الأنصار للإسلام

২। ইসলামের জন্য আনসারগণের সহযোগিতা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/১৫৭, ৮/(৭২, ৭৪), ৫৯/৯

إيثار الأنصار

৩। **আনসারগণের** আত্মত্যাগ–৫৯/৯,

التوارث بين المهاجرين والأنصار

৪। **মুহাজির ও আনসারগণের** মধ্যে সম্পত্তি বন্টন–৮/৭২

مناقب الخلفاء الراشدين

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ **খুলাফায়ে** রাশেদীনের গুণাবলী

مناقب أبي بكر الصديق

১। আবূ বাকর সিদ্দীকের **গুণাবলী**

تبشير أبي بكر بالجنة

১/১। আবূ বাকরের জান্নাতের সুসংবাদ লাভ–৯২/২১

← চলমান পাতা

Contents

اختلاف أبي بكر مع عمر

১/২। উমারের সঙ্গে আবূ বাকরের মতপার্থক্য–৪৯/২

هجرة أبي بكر مع النبي

১/৩। নাবী (ﷺ)-এর সঙ্গে আবূ বাকরের হিজরাত–৯/৪০

صفات أبي بكر

১/৪। আবূ বাকরের গুণাবলী

سخاء أبي بكر

ক) আবূ বাকরের দানশীলতা–৯২/১৮

مناقب عمر بن الخطاب

২। উমার বিন খাত্তাবের গুণাবলী

موافقات عمر للقرآن الكريم

২/১। কুরআনুল কারীমে উমারের ইচ্ছার অনুমোদন

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১২৫, ৮/(৬৭, ৬৮), ৯/৮৪, ৩৩/৫৯

مناقب آل بيت النبي

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ নাবী (ﷺ)-এর পরিবারের গুণাবলী–৩৩/৩৩

مناقب أزواج النبي

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীসহধর্মিণীদের গুণাবলী

فضل أزواج النبي

১। নাবীসহধর্মিণীদের মর্যাদা– সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৩৩/(৬, ২৯–৩৪, ৫২, ৫৩)

مناقب عائشة بنت الصديق

২। 'আয়িশা সিদ্দীকার গুণাবলী

حادثة الإفك

২/১। [আয়িশা (রাযিয়াল্লাহু আনহা)-এর] অপবাদের ঘটনা

نزول البراءة عائشة من فوق سبع سموات

ক) সাত আসমানের উপর হতে আয়িশার নির্দোষিতার প্রমাণ নাযিল–

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩৪/(১১, ১৩, ১৬)

مناقب زينب بنت جحش

৩। যায়নাব বিনতে জাহাশের গুণাবলী

الأمر بزواج زينب من قبل الله

৩/১। আল্লাহর পক্ষ হতে যায়নাব (রাযিয়াল্লাহু আনহা)-কে বিবাহের নির্দেশ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৩৭-৩৮)

مناقب الصحابة

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ সাহাবীগণের গুণাবলী

فضل الصحابة

১। সাহাবীগণের মর্যাদা– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/১০৮, ৩৯/৩৩, ৫৯/১০

← চলমান পাতা

مناقب زيد بن حارثة

২। যায়দ বিন হারিসার গুণাবলী

شكوى زيد زوجته إلى رسول الله

২/১। যায়দ কর্তৃক রাসূল (ﷺ)-এর নিকট তার স্ত্রী সম্পর্কে অভিযোগ–৩৩/৩৭

تبني الرسول لزيد بن حارثة

২/২। যায়দকে রাসূল (ﷺ)-এর পালকপুত্র হিসেবে গ্রহণ–

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৩৭, ৪০)

مناقب العرب

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ আরবের গুণাবলী

مناقب قريش

১। কুরাইশের গুণাবলী–১০৬/৪

القرآن

পঞ্চম পর্ব ঃ আল-কুরআন

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

القرآن
পঞ্চম পর্ব ঃ আল-কুরআন

حفظ القرآن
প্রথম অধ্যায় ঃ কুরআন সংরক্ষণ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৫/৯, ৫৭/১৭

فضائل القرآن
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ ফাযাইলুল কুরআন

القرآن تفصيل كل شيء
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআন সব কিছুর বর্ণনা
সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৭/৫২, ১০/৩৭, ১১/১, ১২/১১১, ১৬/৮৯, ১৭/৮৯, ১৮/৫৪, ২৬/২, ২৭/১, ২৮/২

القرآن كلام الله
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআন আল্লাহর কালাম
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৪/৮২, ১১/১৭, ১২/১১১, ২০/৯৯, ৪২/৫২, ৪৫/(৮/২৫), ৭৫/১৯

القرآن حق من عند الله
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআন আল্লাহর পক্ষ হতে চিরন্তন সত্য
সর্বমোট ৭১টি আয়াত ঃ ২/(২, ২৩), ৩/(৩, ৭, ৬০, ৬২, ১০৮), ৪/৮২, ৫/৬৪, ৬/(৯১, ৯২, ১০৬, ১১৪, ১৫৫, ১৫৭), ৭/(২, ৩, ১৯৬), ১০/(১৫, ৩৭), ১২/৩, ১৩/১, ১৫/৯, ১৭/(৮৮, ১০৫, ১০৭), ১৮/(১, ২৭), ২০/৪, ২৫/৬, ২৬/(১৯২-১৯৪, ২১০, ২১১), ২৭/৬, ২৮/(৩, ৪৪, ৪৫, ৫৩, ৮৫, ৮৬), ২৯/(৪৮, ৫১), ৩২/২, ৩৫/৩১, ৩৬/৫, ৩৭/৩৭, ৩৮/(৮, ২৯, ৮৮), ২৯/(১, ২৩, ৪১, ৫৫), ৪০/২, ৪১/(২, ৪২, ৫২), ৪২/(১৭, ৫২), ৪৫/(২, ৬), ৪৬/২, ৫৫/২, ৫৬/৮০, ৭৯/৪৩, ৭৬/২৩, ৮১/২৫, ৮৬/(১৩, ১৪)

أفضلية كلام الله
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ আল্লাহর কালামের শ্রেষ্ঠত্ব
সর্বমোট ১২৪টি আয়াত ঃ ২/২, ৩/(৩, ১৩৮), ৪/(৫৯, ৮৩), ৫/(১৫, ১৬, ৪৭-৫০), ৬/(৬৬, ৯২, ১৫৫, ১৫৭), ৭/(৫২, ২০৩), ৮/২৪, ৯/৩৩, ১০/(১, ৩৭, ৫৭, ৫৮), ১১/(১, ১৭), ১২/(১, ৩, ১০৪, ১১১), ১৩/৩১, ১৪/১, ১৫/(১, ৮৭), ১৬/(৪৪, ৬৪, ৮৯, ১০২), ১৭/(৯, ৪১, ৭৮, ৮২, ৮৯, ১০৫), ১৮/১, ২০/৯৯, ২১/৫০, ২৪/৪৬, ২৫/১, ২৬/(২, ২১০, ২১১), ২৭/(১, ২, ৬, ৭৬, ৭৭), ২৮/(২, ৪৯, ৫৩, ৮৬), ২৯/(৪৯, ৫১), ৩১/(২, ৩), ৩২/৩, ৩৪/৫০, ৩৫/৩১, ৩৬/(২, ৪, ৬৯), ৩৭/৩৭, ৩৮/(১, ২৯, ৭৬, ৮৭, ৮৮), ৩৯/(২৩, ২৭, ২৮, ৩৩), ৪১/(৩, ৪১, ৪২, ৪৪, ৫৩), ৪২/(১৭, ৫২), ৪৩/(২, ৪, ৪৩), ৪৪/২, ৪৫/(৬, ২০), ৪৬/৩০, ৪৭/২, ৫০/১, ৫২/২, ৫৬/(৭৬-৭৯), ৫৯/২১, ৬১/৯, ৬২/২, ৬৪/৮, ৬৫/১১, ৬৮/৫২, ৬৯/(৪০, ৪৮, ৫১), ৭২/(২, ১৩), ৭৪/৫৪, ৭৬/২৯, ৭৭/৫০, ৮০/(১১, ১২), ৮১/(২৫, ২৭), ৮৫/(২১, ২২), ৮৬/১৩, ৯৮/(২, ৩)

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

الاختلا ف في القرآن

পঞ্চম অধ্যায় ঃ আল-কুরআন সম্পর্কে মতানৈক্য

২/১৭৬

المحكم والمتشابه من القرآن

ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ আল-কুরআনে মুহকাম (স্পষ্ট) ও মুতাশাবিহ (অস্পষ্ট) আয়াতসমূহ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৭, ১১/১

نزول القرآن

সপ্তম অধ্যায় ঃ আল-কুরআন নাযিল

وقت نزول القرآن

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআন নাযিলের সময়কাল। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮৫, ৯৭/১

نزول القرآن بلغة قريش

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ কুরাইশ ভাষায় আল-কুরআন নাযিল হওয়া

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ১২/২, ১৩/৩৭, ১৬/১০৩, ১৯/৯৭, ২০/১১৩, ২৬/(১৯৫, ১৯৮), ৩৯/২৮, ৪১(৩, ৪৪), ৪২/৭, ৪৩/৩, ৪৪/৫৮, ৪৬/১২

نزول القرآن منجما

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ পর্যায়ক্রমে কুরআন নাযিল হওয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৭/১০৬, ২৫/৩২

حكمة نزول القرآن متفرقا

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ পৃথক পৃথক ভাবে কুরআন নাযিলের হিকমত

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৭/১০৬, ২৫/৩২

أول الآيات نزولا

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ সর্বপ্রথম অবতীর্ণ আয়াত। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৯৬/(১-৫)

النسخ في القرآن

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে রহিতকরণ

ثبوت النسخ في القرآن

১। আল-কুরআনে রহিতকরণের প্রমাণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১০৬, ১৩/৩৯, ১৬/১০১

الآيات الناسخة

২। নাসিখ (রহিতকারী) আয়াতসমূহ

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/(১৮৭, ১৯১, ২৩৪, ২৮৬), ৫/৯০, ৮/(৬৬, ৭৫), ৯/৫, ২২/৩৯, ৩৩/(৬, ৫১), ৫৮/১৩, ৬৬/৯

الآيات المنسوخة

৩। মানসূখ (রহিতকৃত) আয়াতসমূহ

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/(১৮০, ১৮৪, ২৪০, ২৮৪), ৪/(৮, ১৫, ১৬, ৩৩, ৪৩, ৯০, ৯১), ৫/(১৩, ৪২), ৮/(৬৫, ৭২), ৩৩/৫২, ৫৮/১২

← চলমান পাতা

Contents

استذكار جبريل والنبي للقرآن

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ জিবরীল ও নাবীর আল-কুরআন মুখস্থ করণ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭৫/(১৬-১৯), ৮৭/৬

الوعيد لمن جادل في القرآن

অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআন সম্পর্কে বিতর্ককারীর শাস্তি

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/৭৮, ৪০/৫৬, ৪০/৬৯, ৪২/৩৫

الوعيد لمن حرف القرآن

নবম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআন বিকৃতকারীর শাস্তি

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(৭, ৭৮), ৪/৪৬, ৫/(১৩, ৪১)

رجال أنزل الله فيهم قرآنا

দশম অনুচ্ছেদ ঃ যে পুরুষদের সম্পর্কে আল-কুরআনে আয়াত নাযিল হয়েছে

ما نزل في أبي بكر الصديق

১। আবূ বাক্র সিদ্দীক সম্পর্কে যা অবতীর্ণ

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৯/৪০, ২৪/২২, ৪৬/১৫, ৪৯/২, ৫৮/২২, ৯২/(১৭-২১)

ما نزل في أبي جهل

২। আবূ জাহাল সম্পর্কে যা অবতীর্ণ

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ১৭/(৯০-৯৩), ২৫/(৩১, ৪১, ৫৫), ৪৪/৪৯, ৯৬/(৬, ৭, ৯-১৩)

ما نزل في أبي سفيان

৩। আবূ সুফইয়ান সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৮/৩৬, ১৭/(৯০-৯৩)

ما نزل في أبي طالب بن عبد المطلب

৪। আবূ তৃলিব বিন আবদুল মুত্তালিব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/(১১৩, ১১৪), ২৮/৫৬

ما نزل في أبي عامر الراهب

৫। আবূ 'আমির আর-রাহিব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-৯/১০৭

ما نزل في أبي عبيدة بن الجراح

৬। আবূ 'উবাইদাহ বিন জাররাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-৫৮/২২

ما نزل في أبي عقيل

৭। আবূ 'উক্বায়ল সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-৯/৭৯

ما نزل في أبي لبابة بن المنذر

৮। আবূ লুবাবাহ বিন মুনযির সম্পর্কে যা অবতীর্ণ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/(২৭, ২৮), ৯/১০২

ما نزل في أبي لهب

৯। আবূ লাহাব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১১১/(১-৩)

ما نزل في ابن أم مكتوم

১০। ইবনে উম্মে মাকতূম সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৮০/(১-১০)

← চলমান পাতা

ما نزل في الأخنس بن شريق الثقفي
১১। আখনাস বিন শারীক আসসাকফী সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/২০৪, ৬৮/(১০-১৬), ১০৪/(১-৯)
ما نزل في أسد بن سعية
১২। আসাদ বিন সা'ঈয়াহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/১৬২
ما نزل في أسد بن عبيد
১৩। আসাদ বিন উবায়দ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/১১৩, ৪/১৬২
ما نزل في الأشعث بن قيس
১৪। আশআত বিন ক্বায়স সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৩/৭৭
ما نزل في أمية بن خلف
১৫। উমাইয়াহ বিন খাল্ফ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৭/(৯০-৯৩), ২৫/(২৮, ২৯), ১০৯/১
ما نزل في أنس بن النضر
১৬। আনাস বিন নাযর সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৩৩/২৩
ما نزل في أوس بن الصامت
১৭। আউস বিন সামিত সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৫৮/(১-৪)
ما نزل في بلال بن رباح
১৮। বিলাল বিন রবাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৫২, ১৮/২৮
ما نزل في ثعلبة بن سعية
১৯। সা'আলাবা বিন সা'ঈয়াহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/১১৩, ৪/১৬২
ما نزل في جابر بن عبد الله
২০। জাবির বিন 'আবদুল্লাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/১৭৬
ما نزل في الجد بن قيس
২১। বিন কায়সের দাদা সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৯/৪৯
ما نزل في حاطب بن أبي بلتعة
২২। হাতিব বিন আবূ বালতা'আহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৬০/১
ما نزل في حمزة بن عبد المطلب
২৩। হামযাহ বিন 'আবদুল মুত্তালিব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(১৬৯, ১৭০), ১৬/(১২৬, ১২৭), ২২/১৯
ما نزل في حيي بن أخطب
২৪। হাই বিন আখত্বব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(৫১, ৫২)
ما نزل في خباب بن الأرت
২৫। খাব্বাব বিন আরত সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৫২, ১৮/২৮
ما نزل في الزبير بن العوام
২৬। যুবায়র বিন 'আওয়াম সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/৬৫

← চলমান পাতা

ما نزل في زيد بن أرقم
২৭। যায়দ বিন আরক্বাম সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬৩/(৭, ৮)
ما نزل في زيد بن حارثة
২৮। যায়দ বিন হারিসাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৪, ৩৭)
ما نزل في سعد بن أبي وقاص
২৯। সা'আদ বিন আবূ ওয়াক্কাস সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৫/৯০, ৬/৫২, ৮/১, ১৮/২৮, ২৯/৮, ৩১/(১৪, ১৫)
ما نزل في سلمان الفارسي
৩০। সালমান ফারসী সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/৬২, ৬/৫২
ما نزل في شيبة بن ربيعة
৩১। শাইবাহ বিন রবী'আহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৭/(৯০–৯৩)
ما نزل في صفوان بن أمية
৩২। সফওয়ান বিন উমাইয়াহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৮/৩৬
ما نزل في صهيب الرومي
৩৩। সুহায়ব আর রূমী সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২০৭, ৬/৫২, ১৮/২৮
ما نزل في ضمرة بن جندب
৩৪। যমরাহ বিন জুনদাব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/১০০
ما نزل في عائذ بن عمرو المزني
৩৫। 'আয়িয বিন 'আমূর আল মাযনী সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৯/৯১
ما نزل في طعمة بن أبيرق
৩৬। ত্ব'মাহ বিন উবাইরিক সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/১০৫
ما نزل في العاص بن وائل
৩৭। আল-'আস বিন ওয়ায়িল সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ১৯/(৭৭–৮০), ১০৭/(১–৩), ১০৮/৩, ১০৯/১
ما نزل في عبادة بن الصامت
৩৮। 'উবাদাহ বিন সামিত সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫/(৫১–৫৩)
ما نزل في العباص بن عبد المطلب
৩৯। 'আব্বাস বিন 'আবদুল মুত্তালিব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/৭০, ৯/১৯
ما نزل في عبد الله بن أبي السرح
৪০। 'আবদুল্লাহ বিন আবূ সারহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৬/৯৩
ما نزل في عبد الله بن أبي ابن سلول
৪১। 'আবদুল্লাহ বিন আবূ ইবনু সালূল সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ৪/৭২, ৫/(৫১–৫৩), ৯/(৭৪, ৮০, ৮৪), ২৪/(১১, ৩৩), ৬৩/(১–৮)
ما نزل في عبد الله بن أمية
৪২। 'আবদুল্লাহ বিন উমাইয়াহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৭/(৯০–৯৩)

← চলমান পাতা

ما نزل في عبد الله بن جحش وسريته

৪৩। 'আবদুল্লাহ বিন জাহাশ ও সারীতাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–২/২১৭

ما نزل في عبد الله بن حذافة

৪৪। 'আবদুল্লাহ বিন হাযাফাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/৫৯

ما نزل في عبد الله بن رواحة

৪৫। 'আবদুল্লাহ বিন রাওয়াহা সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–২/২২১

ما نزل في عبد الله بن سلام

৪৬। 'আবদুল্লাহ বিন সালাম সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(১৪৬, ২০৮), ৩/১১৩, ৪/১৬২, ৫/৫৫, ৪৬/১০

ما نزل في عبد الله بن مسعود

৪৭। 'আবদুল্লাহ ইবনু মাসঊদ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৫২, ১৮/২৮

ما نزل في عبيد الله بن أبي ربيعة

৪৮। 'উবাইদুল্লাহ বিন আবূ রবী'আহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৮/৩৬

ما نزل في عبيدة بن الحارث

৪৯। 'উবাইদুল্লাহ বিন হারিস সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–২২/১৯

ما نزل في عتبة بن ربيعة

৫০। 'উত্বাহ বিন রবী'আহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৭/(৯০–৯৩), ২২/১৯

ما نزل في عثمان بن طلحة الجحمي

৫১। 'উসমান বিন ত্বালহা আল জাহমী সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৪/৫৮

ما نزل في عثمان بن عفان

৫২। 'উসমান বিন 'আফফান সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৩৯/৯

ما نزل في عثمان بن مظعون

৫৩। 'উসমান বিন মায'উন সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/(৮৭, ৮৮)

ما نزل في عقبة بن أبي معيط

৫৪। 'উকবাহ বিন আবূ মু'ঈত সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৫/(২৭–২৯)

ما نزل في عقيل بن أبي طالب

৫৫। 'উকায়ল বিন আবূ ত্বালিব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৮/৭০

ما نزل في عكرمة بن أبي جهل

৫৬। 'ইকরামাহ বিন আবূ জাহাল সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৮/৩৬

ما نزل في علي بن أبي طالب

৫৭। 'আলী বিন আবূ ত্বালিব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২২/১৯, ৩২/১৮

ما نزل في عمار بن ياسر

৫৮। 'আম্মার বিন ইয়াসির সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৬/১০৬, ১৮/২৮

ما نزل في عمر بن الخطاب

৫৯। 'উমার বিন খাত্তাব সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪৫/(১৪, ১৫), ৪৯/২

← চলমান পাতা

ما نزل في فنحاص
৬০। ফানাহিস সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/১৮১, ৫/৬৪
ما نزل في قتادة بن النعمان
৬১। ক্বাতাদাহ বিন নু'মান সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/(১১০-১১২)
ما نزل في قدار بن سالف
৬২। ক্বিদার বিন সালাফ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-৯১/১২
ما نزل في قيس بن صرمة
৬৩। ক্বায়স বিন সরমাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-২/১৮৭
ما نزل في كعب بن الأشرف
৬৩। কা'ব বিন আশরাফ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/(৫১, ৫২, ৬০)
ما نزل في كعب بن عجرة
৬৫। কা'ব বিন 'উজরাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-২/১৯৬
ما نزل في كعب بن مالك
৬৬। কা'ব বিন মালিক সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/(১০৬, ১১৮)
ما نزل في مرارة بن الربيع العمري
৬৭। মিরারাহ বিন রবী' আল-'উমরী সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/(১০৬, ১১৮)
ما نزل في مسطح بن أثاثة
৬৮। মুসতিহ বিন উসাসাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-২৪/২২
ما نزل في مصعب بن عمير
৬৯। মাস'আব বিন 'আমীর সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/(১৬৯, ১৭০), ৫৮/২২
ما نزل في معقل بن يسار
৭০। মা'ক্বাল বিন ইয়াসার সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-২/২৩২
ما نزل في المقدار بن الأسود
৭১। মিক্বদার বিন আল-আসওয়াদ সম্পর্কে যা অবতীণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৯৪, ১৮/২৮
ما نزل في النضر بن الحارث
৭২। নাযর বিন হারিস সম্পর্কে যা অবতীর্ণ।
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৮/(৩১, ৩২), ১৭/(৯০-৯৩), ৭০/১
ما نزل في نوفل بن الحارث
৭৩। নাওফিল বিন হারিস সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-৮/৭০
ما نزل في هلال بن أمية
৭৪। হিলাল বিন উমাইয়াহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৯/(১০৬, ১১৮), ২৪/(৬-৯)
ما نزل في الوليد بن عتبة
৭৫। ওয়ালীদ বিন 'উত্বাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ-২২/১৯

← চলমান পাতা

ما نزل في الوليد بن عقبة

৭৬। ওয়ালীদ বিন 'উক্ববাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩২/১৮, ৪৯/(৬, ৭)

ما نزل في الوليد بن المغيرة

৭৭। ওয়ালীদ বিন মুগীরাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ

সর্বমোট ২৬ টি আয়াত ঃ ১৭/(৯০–৯৩), ৫৩/(৩৩–৩৬), ৭৪/(১১–২৭), ১০৯/১

نساء أنزل الله فيهن قرآنا

একাদশ অনুচ্ছেদ ঃ যে নারীদের সম্পর্কে আল-কুরআনে আয়াত অবতীর্ণ

ما نزل في أسماء بنت أبي بكر

১। আসমা বিনতে আবূ বাক্র সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৬০/৮

ما نزل في أم جميل

২। উম্মে জামীল সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১১১/(৪, ৫)

ما نزل في أم شريك الدوسية

৩। উম্মে শারীক দুসিয়াহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৩৩/৫০

ما نزل في أم كلثوم بنت عقبة

৪। উম্মে কুলসুম বিনতে 'উক্ববাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৬০/১০

ما نزل في حفصة بنت عمر

৫। হাফসাহ বিনতে 'উমার সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৬৬/(১–৫)

ما نزل في خولة بنت ثعلبة

৬। খাওলাহ বিনতে সা'লাবাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৫৮/(১–৪)

ما نزل في رملة بنت أبي سفيان

৭। রামলাহ বিনে আবূ সুফইয়ান সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৬০/৭

ما نزل في زينب بنت جحش

৮। যায়নাব বিনতে জাহাশ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩৩/(৩৬–৩৮)

ما نزل في عائشة بنت الصديق

৯। 'আয়িশা বিনতে সিদ্দীক সম্পর্কে যা অবতীর্ণ।

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২৪/(১১–১৬), ৬৬/(১–৫)

ما نزل في فاطمة بنت رسول الله

১০। ফাতিমাহ বিন রসূলিল্লাহ সম্পর্কে যা অবতীর্ণ–৩৩/৩৩

سجود تلاوة القرآن

অষ্টম অধ্যায় ঃ আল-কুরআন তিলাওয়াতে সাজদাহ

آيات سجود التلاوة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ তিলাওয়াতে সাজদাহর আয়াতসমূহ

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৭/২০৬, ১৩/১৫, ১৬/৪৯, ১৭/১০৭, ১৯/৫৮, ২২/(১৮, ৭৭), ২৫/৬০, ২৭/২৫, ৩২/১৫, ৩৮/২৪, ৪১/৩৭, ৫৩/৬২, ৮৪/২১, ৯৬/১৯

← চলমান পাতা

معجزة القرآن
নবম অধ্যায় ঃ আল-কুরআনের মু'জিযাহ

التحدي في القرآن

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে চ্যালেঞ্জ

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ২/(১, ২৩), ৩/১ ৭/১, ১০/(১, ৩৮), ১১/(১, ১৩), ১২/১, ১৩/১, ১৪/১, ১৫/১, ১৭/৮৮, ১৯/১, ২০/১, ২৬/১, ২৮/৪৯, ৩১/(১, ১১)- ৩২/১, ৩৬/১, ৩৭/১৫৭, ৩৮/১, ৪০/১, ৪১/১, ৪২/(১, ২), ৪৩/১, ৪৪/১, ৪৫/১, ৪৬/(১, ৪), ৫২/(৩৪, ৩৭, ৩৮), ৬৮/১

الإعجاز اللغوي في القرآن

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে ভাষাগত মু'জিযাহ

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ২/(১, ২৩), ৩/১, ৪/৮২, ৭/১, ১০/(১, ৩৮), ১১/১৩, ১২/১, ১৩/১, ১৪/১, ১৫/১, ১৬/১০৩, ১৯/১, ২০/১, ২৬/১, ২৭/১, ২৮/(১, ৭), ২৯/১, ৩০/১, ৩১/১, ৩২/১, ৩৬/১, ৩৮/১, ৪০/১, ৪১/১, ৪২/(১, ২), ৪৩/১, ৪৪/১, ৪৫/১, ৪৬/১, ৫০/১, ৬৮/১

الإعجاز العلمي في القرآن

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে বৈজ্ঞানিক মু'জিযাহ

علم الأجنة في القرآن

১। আল-কুরআনে গর্ভজাত শিশু বিজ্ঞান

مراحل تكون الجنين

১/১। গর্ভজাত শিশুর স্তরসমূহ

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ১৬/৪, ২২/৫, ২৩/(১৩, ১৪), ৩৫/১১, ৩৬/৭৭, ৩৯/৬, ৪০/৬৭, ৭১/১৪, ৭৫/(৩৭, ৩৮), ৭৬/২, ৭৭/২০, ৮০/১৯, ৮৬/(৬, ৭), ৯৬/২

حماية الجنين في الرحم

১/২। গর্ভাশয়ে গর্ভজাত শিশুর রক্ষণাবেক্ষণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৩/১৩, ৩৯/৬, ৭৭/২১

تحديد جنس المولود

১/৩। নবজাতকের লিঙ্গ নির্ধারণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৬, ১৩/৮

تطور حواس المولرد

১/৪। নবজাতকের পঞ্চ ইন্দ্রিয়ের বিকাশ।

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৬/৭৮, ২৩/৭৮, ৩২/৯, ৬৭/২৩, ৭৬/২

مدة الحمل

১/৫। গর্ভধারণের সময়সীমা-৪৬/১৫

علم النبات في القرآن

২। আল-কুরআনে উদ্ভিদ বিজ্ঞান

ذكر النبات

২/১। উদ্ভিদের আলোচনা

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/(৬১, ২৬১), ৬/৯৯, ১০/২৪, ১৫/১৯, ১৬/১১, ১৮/৪৫, ২০/৫৩, ২২/৫, ২৩/(১৯, ২০), ২৬/৭, ২৭/৬০, ৩১/১০, ৩৬/(৩৬, ৩৬), ৩৭/১৪৬, ৫০/(৭, ৯), ৭৮/১৫, ৮০/২৭

حاجة النبات إلى الماء

২/২। উদ্ভিদে পানির প্রয়োজনীয়তা

সর্বমোট ৩২টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ৬/৯৯, ৭/৫৭, ১০/২৪, ১৩/(৪, ১৭), ১৪/৩২, ১৫/২২, ১৬/(১০, ১১, ৬৫), ১৮/৪৫, ২০/৫৩, ২২/(৫, ৬৩), ২৩/১৯, ২৫/৪৯, ২৭/৬০

أثر الرياح في تلقيح النبات

২/৩। উদ্ভিদ পরাগায়নে বায়ুর প্রভাব−১৫/২২

أهمية الجذور للنبات

২/৪। উদ্ভিদে শিকড়ের গুরুত্ব। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৪/(২৪, ২৬)

تأثير التربة على النبات

২/৫। উদ্ভিদে মাটির প্রভাব। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৬৫, ৭/৫৮, ১৩/৪, ১৬/৬৫

اهتزاز الأرض وأثره في الإنبات

২/৬। ভূমিতে কম্পন ও উদ্ভিদে তার প্রভাব। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২২/৫, ৪১/৩৯

المادة الخضراء (الكلوروفيل) في النبات

২/৭। উদ্ভিদে ক্লোরোফিল (শ্যামলতা)।

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৬/৯৯, ১২/(৪৩, ৪৬), ২২/৬৩, ৩৬/৮০

تنوع النباتات واختلافها

২/৮। উদ্ভিদের প্রকারভেদ ও বৈচিত্র

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ২/(২২, ৬১), ৬/(৯৯, ১৪১), ৭/৫৭, ১৩/৪, ১৫/১৯, ১৬/(১০, ১১, ১৩, ৬৭), ৩৫/২৭, ৫৫/(১১, ১২), ৭৮/১৫, ৮০/(২৮−৩১), ৮৭/৪

تكاثر النبات بالبذور

২/৯। বীজ দ্বারা উদ্ভিদ বর্ধন। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/২৬১, ৬/৯৯, ৩১/১৬, ৮০/২৭

أنسب أسلوب لتخزين الحبوب

২/১০। বীজ সংরক্ষণের সর্বোত্তম পদ্ধতি−১২/৪৭

علم الحيوان في القرآن

৩। আল-কুরআনে প্রাণীবিজ্ঞান

لغة الحيوان

৩/১। প্রাণীর ভাষা।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৬/৩৮, ২৭/(১৬, ১৮), ৩৪/১০

← চলমান পাতা

ذكر الحيوانات

৩/২। প্রাণীজগতের বিবরণ

সর্বমোট ৮৭টি আয়াত ঃ ২/(৬৫, ৬৭- ৬৯, ৭১, ১৬৪, ১৭৩, ২৫৯), ৩/১৪, ৪/(১১৯, ১৫৩), ৫/(১, ৩, ৪, ৭), ৬/(৩৮, ১৩৬, ১৩৮, ১৩৯, ১৪২–১৪৬), ৭/(৪০, ৭২, ৭৭, ১৬৬, ১৭৬, ১৭৯), ৮/৬০, ১০/২৪, ১১/(৬৪, ৬৯), ১২/(১৩, ১৪, ১৭, ৪৩, ৪৬, ৯৪), ১৬/(৫, ৮, ৬৬, ৮০, ১১৫), ১৭/৫৯, ১৮/(১৮, ২২), ২০/(১৮, ৫৪), ২১/৭৮, ২২/(১৮, ২৮, ৩০, ৩৪), ২৩/২১, ২৪/৪৫, ২৫/(৪৪, ৪৯), ২৬/(১৩৩, ১৫৫), ৩১/১৯, ৩৪/১০, ৩৫/২৮, ৩৬/৭১, ৩৭/১৪২, ৩৮/(১৯, ২৩, ২৪, ৩১), ৩৯/৬, ৪০/৭৯, ৪২/(১১, ২৯), ৪৩/১২, ৪৫/৪, ৪৭/১২, ৫১/২৬, ৫৪/২৭, ৫৯/৬, ৬২/৫, ৬৭/১৯, ৭৪/(৫০, ৫১), ৭৯/৩৩, ৮০/৩২, ১০৫/১

علم الطير في القرآن

৪। আল-কুরআনে পক্ষীবিজ্ঞান

نظرية الطيران في القرآن

৪/১। আল-কুরআনে উড্ডয়নের ধারণা–৬৭/১৯

طيور ذكرت في القرآن

৪/২। আল-কুরআনে বর্ণিত পাখিসমূহ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/৫৭, ৫/(৪, ৩১), ৭/১৬০, ১২/৪১, ২০/৮০, ২৭/২০

علم الزواحف في القرآن

৫। আল-কুরআনে স্বরিসৃপবিজ্ঞান

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/১০৭, ২০/২০, ২৪/৪৫, ২৬/৩২

علم الكائنات المائية في القرآن

৬। আল-কুরআনে পানি জগত

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৫/৯৬, ৭/(১৩৩, ১৬৩), ১৬/১৪, ১৮/(৬১, ৬৩), ৩৫/১২, ৩৭/১৪২, ৬৮/৪৮

علم الحشرات في القرآن

৭। আল-কুরআনে কীটপতঙ্গ বিজ্ঞান

بيت العنكبوت

৭/১। মাকড়সার ঘর–২৯/৪১

مملكة النحل

৭/২। মৌমাছির রাজ্য

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৬/(৬৮, ৬৯)

مملكة النمل

৭/৩। পিপিলিকার রাজ্য–২৭/১৮

ذكر الذباب

৭/৪। মাছির বর্ণনা–২২/৭৩

← চলমান পাতা

ذكر البعوض

৭/৫। মশার বর্ণনা–২/২৬

ذكر القمل

৭/৬। উকুনের বর্ণনা–৭/১৩১

ذكر الجراد

৭/৮। পঙ্গপালের বর্ণনা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/১৩৩, ৫৪/৭

حساسية الجلد

৮। চামড়ার অনুভূতির বর্ণনা–৪/৫৬

الشجر الأخضر مصدر الطاقة

৯। সবুজ বৃক্ষ শক্তির উৎস। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৪/৩৫, ৩৬/৮০, ৫৬/৭২

تكوين اللبن

১০। দুধ উৎপাদনের রহস্য। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৬/৬৬, ২৩/২১

الزوجية في خلق الله

১১। আল্লাহর সৃষ্টিতে যুগলবন্ধন। সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ৪/১, ৬/১৪৩, ১৩/৩, ১৬/৭২, ২০/৫৩, ২২/৫, ২৬/(৭, ১৬৬), ৩০/২১, ৩১/১০, ৩৫/১১, ৩৬/৩৬, ৩৯/৬, ৪২/(১১, ৫০), ৪৩/১২, ৫০/৭, ৫১/৪৯, ৫৩/৪৫, ৫৫/৫২, ৭৫/৩৯, ৭৮/৮, ৯২/৩

تفرد بصمة إبهام الإنسان

১২। প্রতিটি মানুষের বৃদ্ধাঙ্গুলির ছাপের স্বাতন্ত্র্য–৭৫/৪

فائدة التمر في المخاض

১৩। গর্ভকালে খেজুরের উপকারিতা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৯/(২৩, ২৫, ২৬)

أهمية التوازن الغذائي

১৪। খাদ্যের ভারসাম্যতার প্রয়োজনীয়তা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/১৪১, ৭/৩১

طاقة الرياح

১৫। বায়ুর শক্তি

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ১০/২২, **১৭/৬৯, ২১/৮১,** ২৫/৪৮, ৩০/৪৬, ৩৫/৯, ৪২/৩৩, ৭৭/৩

الماء عصب الحياة

১৬। পানি জীবনের মূল শক্তি

সর্বমোট ৩২টি আয়াত ঃ ২/(১৬৪, ২৬৫), ৬/৯৯, ১০/২৪, ১৪/৩২, ১৬/(১০, ১১, ৬৫), ২০/৫৩, ২১/৩০, ২২/(৫, ৬৩), ২৩/১৯, ২৪/৪৫, ২৫/(৪৯, ৫৪), ২৭/৬০, ২৯/৬৩, ৩০/(২৪, ৫০), ৩১/১০, ৩২/২৭, ৩৫/(৯, ২৭), ৩৯/২১, ৪১/৩৯, ৪৩/১১, ৪৫/৫, ৫০/(৯, ১১), ৭৮/১৪, ৮০/২৫

ضرر المواد الكحولية على الإنسان

১৭। মানবদেহে এলকোহলের অপকারিতা–২/২১৯

ضرر الاكمال الجنسي أثناء الحيض

১৮। ঋতুকালে যৌনসম্ভোগের অপকারিতা–২/২২২

← চলমান পাতা

الظواهر الجغرافية في القرآن

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে ভৌগোলিক বর্ণনা

دورة المياه في الكون

১। পৃথিবীতে পানির কার্যকারিতা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/৭৪, ৭/৫৭, ১০/২৪, ১৫/২২, ২৩/১৮, ৭৯/৩১, ৮৬/১১

ظاهرة التوتر السطحي

২। ভূপৃষ্ঠের জটিলতার ধরন

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ১০/২২, ১৪/৩২, ১৬/১৪, ১৭/৬৬, ২২/৬৫, ২৫/৫৩, ৩৭/৬১, ৩১/৩১, ৩৫/১২, ৩৬/৪১, ৪০/৮০, ৪২/৩২, ৪৩/১২, ৪৫/১২, ৫৫/(১৯, ২০)

ظاهرة الأمواج السحيقة والسطحية

৩। (সাগরে) তলদেশে ও উপরিভাগে স্রোতের ধরন

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১১/৪২, ২৪/৪০, ৩১/৩২

الحاجز بين ماء البحر وماء النهر

৪। সাগর ও নদীর পানির মাঝে প্রতিবন্ধকতা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৫/৫৩, ২৭/৬১, ৫৫/(১৯, ২০)

السحب الركامية

৫। ঘনমেঘ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/৪৩, ৫২/৪৪

تناقص الضغط الجوي مع الارتفاع

৬। বায়ুমণ্ডলের উপরিভাগে বায়ুচাপের স্বল্পতা–৬/১২৫

تكوين المطر والرياح

৭। মেঘ ও বায়ু সৃষ্টি

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ৭/৫৭, ১৩/১২, ১৬/১০, ২৪/৪৩, ২৫/৪৮, ৩০/৪৮, ৩৫/৯, ৭৮/১৪, ৮৬/১১

كروية الأرض ودورانها

৮। পৃথিবীর গোলাকৃতি ও ঘূর্ণায়ন

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/২৭, ২২/৬১, ৩১/২৯, ৩৫/১৩, ৩৯/৫, ৫০/৭, ৭৯/৩০

الجاذبية الأرضية

৯। পৃথিবীর মাধ্যাকর্ষণ শক্তি। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/৫৯, ১৯/২৫

الظواهر الكونية في القرآن

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে মহাজগতের দৃশ্যাবলী

الحث على النظر والتدبر

১। চিন্তাগবেষণায় উৎসাহ। সর্বমোট ১০০টি আয়াত ঃ ২/(৪৪, ১১৮, ২১৯, ২৬৬), ৩/(৬৫, ১১৮), ৪/৮২, ৬/(৩২, ৫০, ৮০, ১৫১), ৭/(৩, ২৬, ১৬৯, ১৭৬, ১৭৯, ১৮৪, ১৮৫), ৮/৫৭, ১০/(৩, ৫,

← চলমান পাতা

১৬, ১০১), ১১/(২৪, ৩০, ৫১), ১২/(২, ১০৯), ১৩/১৯, ১৪/(৫, ৫২), ১৬/(১৭, ৪৪, ৪৮, ৬৯, ৭৯, ৯০), ২১/(১০, ৩০, ৬৭), ২৩/(৬৮, ৮৫), ২৪/৪৩, ২৬/৭, ২৭/(৬০–৬৪, ৮৬), ২৮/(৬০, ৭১, ৭২), ২৯/(১৯, ২০), ৩০/(৮, ২১, ২৮, ৪২, ৫০), ৩১/২৯, ৩২/(২৬, ২৭), ৩৩/৯, ৩৪/৯, ৩৫/(৩, ২৭, ৪৪), ৩৬/(৬২, ৬৮, ৭৩, ৭৭), ৩৭/(৭৩, ১৩৮, ১৫৫), ৩৯/(২১, ৪২), ৪৩/৩, ৪৫/(৪, ২০, ২৩), ৪৭/২৪, ৫১/২১, ৫২/৩৬, ৫৪/(১৫, ১৭, ২২, ৩২, ৪০), ৫৬/(৫৮, ৬২, ৬৮), ৬৯/(২, ২১), ৬৭/(৩, ৪, ১৯), ৭০/২৪, ৮৬/৫, ৮৮/১৭

النظر والتدبر في خلق الله

২। আল্লাহর সৃষ্টিতে চিন্তা গবেষণায় উৎসাহ

সর্বমোট ৯১টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ৩/(১৯০, ১৯১), ৬/(১১, ৭৫–৭৮, ৯৯), ৭/৫৭, ১০/(৬, ২৪, ৬৭), ১২/১০৫, ১৩/(২, ৩, ৪), ১৫/(১৬, ২২), ১৬/(১১–১৩, ১৫, ৬৫–৬৯, ৭৮), ১৭/১২, ২০/৫৪, ২১/(১৬, ৩১–৩৩), ২৩/(৮৪, ৮৬, ৮৮), ২৪/৪৪, ২৫/(৬১, ৬২), ২৬/(২৪, ২৮), ২৮/৭৩, ২৯/(৪৪, ৬১), ৩০/(২১–২৩, ৪৮), ৩৫/(৯, ১২, ২৮), ৩৬/(৩৩, ৩৪, ৩৭, ৪১), ৩৭/(৬, ৮৮), ৩৯/(৫, ৪২), ৪০/(১৩, ৫৭, ৬১), ৪১/(১০, ৩৭, ৩৯, ৫৩), ৪২/(২৯, ৩২), ৪৫/(৩–৫, ১২, ১৩), ৫০/(৬, ৭, ৯, ১০), ৫১/২০, ৮০/(২৫–৩২), ৮৮/(১৮–২০)

المادة الكونية الأولى

৩। মহা জগতের প্রথম ধাতু। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/৩০, ৪১/১১

ضوء الشمس ذاتي

৪। সূর্যের আলো নিজস্ব। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৫/৬১, ৭৫/১১, ৭৮/১৩

ضوء القمر ليس ذاتيا

৫। চন্দ্রের আলো নিজস্ব নয়। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১০/৫, ২৫/৬১, ৭১/১৬

التوازن الكوني

৬। মহাজগতের ভারসাম্যতা

التوازن الأرضي

৬/১। ভূপৃষ্ঠের ভারসাম্যতা

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ২/২২, ১৩/৩, ১৫/১৯, ১৬/১৫, ২০/৫৩, ২১/৩১, ২৭/৬১, ৩১/১০, ৩৫/৪১, ৪১/১০, ৪৩/১০, ৫০/৭, ৫১/৪৮, ৫৫/১০, ৭১/১৯, ৭৭/২৭, ৭৮/(৬, ৭), ৭৯/৩২, ৯১/৬,

توازن الأجرام السماوية

৬/২। আকাশযানের ভারসাম্যতা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৩/২, ২১/৩৩, ২৫/৬১, ৩১/২৯, ৩৫/(১৩, ৪১), ৩৬/৪০,

إختلال التوازن يوم القيام

৬/৩। কিয়ামত দিবসে ভারসাম্যে বিঘ্নতা। সর্বমোট ৩৪টি আয়াত ঃ ২৫/২৫, ২৭/৮৮, ৫০/৪৪, ৫২/(৯, ১০), ৫৫/৩৭, ৫৬/(৪–৬), ৬৯/(১৪, ১৬), ৭০/(৮, ৯), ৭৫/৯, ৭৭/(৯, ১০), ৭৮/(১৯, ২০), ৭৯/(৬, ৭), ৮১/(১–৩, ৬, ১১), ৮২/(১–৩), ৮৪/(১, ৩), ৮৯/২১, ৯৯/(১, ২), ১০১/৫,

← চলমান পাতা

Contents

السنة الشمسية و القمرية

৭। সৌর ও চান্দ্র বর্ষ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১৩/২, ১৪/৩৩, ১৬/১২, ১৭/১২, ১৮/২৫

تعاقب الليل و النهار

৮। পর্যায়ক্রমে রাত ও দিনের আগমন

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/৬৪, ৩/(২৭/১৯০), ৬/৯৬, ১০/৬, ১৩/(২, ৩), ১৪/৩৩, ১৬/১২, ১৭/১২, ২১/৩৩, ২২/৬১, ২৩/৮০, ২৪/৪৪, ২৫/৬২, ২৭/৮৬, ৩১/২৯, ৩৫/১৩, ৩৬(৩৭, ৪০), ৩৯/৫, ৪১/৩৭, ৪৫/৫, ৫৭/৬, ৭৯/২৯, ৯১/(৩, ৪), ৯২/২, ৯৩/২

دورة الشمس و القمر

৯। সূর্য ও চন্দ্রের পরিভ্রমণ। সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ২/(১৬৪, ১৮৯, ২৫৮), ৩/(২৭, ১৯০), ৬/৯৬, ১০/৫, ১৩/২, ১৪/৩৩, ১৬/১২, ২১/৩৩, ২২/৬১, ৩৫/১৩, ৩৬/(৩৮, ৪০), ৩৯/৫, ৪০/৬১, ৪১/৩৭, ৪৫/৫, ৫৫/৫, ৯১/(২-৪)

دورة الجبال في اتزان الأرض

১০। পৃথিবীর ভারসাম্য রক্ষায় পাহাড়ের ভূমিকা।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৭/৬১, ৩১/১০, ৫০/৭, ৭৭/২৭

الصواعق و الرعد في القرآن

১১। আল-কুরআনে বজ্র ও মেঘগর্জন। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(১৯, ২০), ১৩/(১২, ১৩)

ظاهرة الظل في القرآن

১২। আল-কুরআনে ছায়ার রূপ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/১৩, ১৬/(৪৮, ৮১), ২৫/(৪৫, ৪৬)

ظاهره السراب في القرآن

১৩। আল-কুরআনে মরীচিকার রূপ-২৪/৩৯

ظاهرة انتشار الضوء

১৪। আলো বিকাশের রূপ-২/১৭

تمدد الكون

১৫। মহাজগতের বিস্তৃতি-৫১/৪৭

نهاية الكون

১৬। মহাজগতের সমাপ্তি। সর্বমোট ৫৪টি আয়াত ঃ ২/২১০, ১৪/৪৮, ১৮/৪৭, ২০/(১০৫-১০৭), ২১/১০৪, ২৫/২৫, ২৭/৮৭, ৩৯/৬৮, ৪৪/১০, ৫০/৪৪, ৫৫/(২৬, ৩৭), ৫৬/(১, ৩-৬), ৬৯/(১৪, ১৬), ৭০/(৮, ৯), ৭৩/(১৪, ১৮), ৭৫/(৭-৯), ৭৭/(৮-১০), ৭৮/(১৯, ২০), ৮১/(১-১২), ৮২/(১-৩), ৮৪/(১-৩, ৫), ১০১/(৪, ৫)

القبة الزرقاء

১৭। নীল আকাশ

تكوين السماء في القرآن

১৭/১। আল-কুরআনে আকাশ সৃষ্টির কথা

সর্বমোট ৩০টি আয়াত ঃ ২/২৯, ১১/৭, ১৩/২, ১৫/(১৪, ১৭), ১৭/৪৪, ২১/৩০, ২২/৬৫, ২৩/৮৬, ৩৫/৫৯, ৩১/১০, ৩২/৪, ৩৭/৬, ৪০/৬৪, ৪১/(১১, ১২), ৫০/(৬, ৩৮), ৫১/৭, ৫২/৫, ৫৫/৭, ৫৭/৪, ৬৫/১২, ৬৭/৩, ৭১/১৫, ৭৮/১২, ৭৯/২৮, ৮৫/১, ৯১/৫

النجوم الكواكب في القرآن

১৭/২। আল-কুরআনে তারকারাজি ও গ্রহসমূহ

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ৬/(৭৬, ৯৭), ১০/৫, ১৩/২, ১৪/৩৩, ১৫/১৬, ১৬/(১২, ১৬), ২৫/৬১, ৩৭/৬, ৪১/১২, ৫০/৬, ৫৬/৭৫, ৬৭/৫, ৭১/১৬, ৭৮/১৩, ৮৬/(১-৩)

الشهب والنيازك في القرآن

১৭/৩। আল-কুরআনে উল্কাপিণ্ড ও ধুমকেতু

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ১৫/১৮, ৩৭/(৮, ১০), ৪১/১২, ৬৭/৫, ৭২/(৮, ৯), ৮৬/(১-৩)

الحكمة من سرد الآيت الكونية

১৮। মহাজগত সম্পর্কিত আয়াত বর্ণনার হিকমাত

সর্বমোট ৪০টি আয়াত ঃ ১০/(৫, ২৪, ৬৭), ১১/৭, ১২/১০৫, ১৩/(৩, ৪), ১৬/(১১-১৫, ৭৯), ৩৫/৬২, ৩৬/(৮, ২৪), ৩০/(২১-২৪, ৪৬), ৩১/৩১, ৩২/(৪, ৭), ৩৫/১২, ৩৬/৩৫, ৩৯/২১, ৪০/১৩, ৪২/৩৩, ৪৩/১০, ৪৫/(৩-৫, ১২, ১৩), ৫০/৮, ৫১/৪৯, ৫৬/৭৩, ৫৭/২৫

علم الجيولوجيا في القرآن

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে ভূ-বিজ্ঞান

ذكر الجبال

১। পর্বতমালার বর্ণনা। সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ৭(৭৪, ১৭১), ১১/(৪২, ৪৩), ১৩/৩১, ১৪/৪৬, ১৫/৮২, ১৬/(৬৮, ৮১), ১৭/৩৭, ১৮/৪৭, ১৯/৯০, ২০/১০৫, ২১/৭৯, ২২/১৮, ২৬/১৪৯, ২৭/৮৮, ৩৩/৭২, ৩৪/১০, ৩৫/২৭, ৩৮/১৮, ৫২/১০, ৫৬/৫, ৫৯/২১, ৬৯/১৪, ৭০/৯, ৭২/১৪, ৭৩/১৪, ৭৭/১০, ৭৮/(৭, ২০), ৭৯/৩২, ৮১/৩, ৮৮/১৯, ১০১/৫

أنواع التربة

২। মৃত্তিকার প্রকারভেদ-৩৫/২৭

أنواع الصخور

৩। শিলা পাথরের প্রকারভেদ-২/৭৪

المعادن والأحجار الكريمة

৪। খণি ও মূল্যবান পাথরসমূহ

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৩/(১৪, ৯১), ৭/১৪৮, ৯/৩৪, ১৩/১৭, ১৬/১৪, ১৭/৫০, ১৮/৯৬, ৩৪/(১০, ১২), ৩৫/(১২, ৩৩), ৪৩/(৩৩, ৫৩), ৫৫/২২, ৫৭/২৫, ৭৬/(১৯, ২১)

الإشارات التاريخية في القرآن

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে ঐতিহাসিক নির্দেশনা

فترات علو اليهود في الأرض

১। পৃথিবীতে ইয়াহূদীদের দাম্ভিকতার সময়কাল। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৭/(৪-৬)

← চলমান পাতা

انتصار الروم على الفرس

২। পারস্যের উপর রোমের বিজয়। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩০/(২-৪)

العلاقة بين اليهود والنصارى

৩। ইয়াহূদী-খ্রীস্টান সম্পর্ক-৫/১৪

القصص والأمثال في القرآن
দশম অধ্যায় ঃ আল-কুরআনে কিসসা ও উপমাসমূহ

القصص القرآني

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ কুরআনী কিসসা

قصة خلق الإنسان

১। মানুষ সৃষ্টির কিসসা

مادة خلق الإنسان

১/১। মানব সৃষ্টির ধাতু।

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ৩/৫৯, ৬/২, ৭/১২, ১৫/(২৬, ২৮, ২৯, ৩৩), ১৭/৬১, ১৮/৩৭, ২০/৫৫, ২২/৫, ২৩/১২, ২৫/৫৪, ৩০/২০, ৩২/৭, ৩৫/১১, ৩৭/১১, ৩৮/(৭১, ৭৬), ৪০/৬৭, ৫৫/১৪, ৭১/১৭

كيفية تناسل الإنسان

১/২। মানব প্রজনন পদ্ধতি

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ৪/১, ৬/৯৮, ৭/১৮৯, ১৬/(৪, ৭২), ২২/৫, ৩২/৮, ৩৫/১১, ৪০/৬৭, ৪২/১১, ৭১/১৪, ৭৫/(৩৭, ৩৯), ৭৮/৮, ৮৬/(৫-৭), ৯২/৩

العداوة بين الإنسان والشيطان

১/৩। মানুষ ও শয়তানের মধ্যে শত্রুতা

সর্বমোট ৪৫টি আয়াত ঃ ২/(৩৪, ৩৬, ১৬৮, ১৬৯, ২০৮), ৪/(১১৮-১২০), ৫/৯১, ৬/১৪২, ৭/(১১, ১২, ১৬, ১৭, ২০-২২, ২৪, ২৭), ১২/৫, ১৪/২২, ১৫/(৩৩, ৩৬, ৩৮, ৩৯), ১৭/(৫৩, ৬২, ৬৪), ১৮/৫০, ২০/(১১৬, ১১৭, ১২০,), ২৮/১৫, ৩১/২১, ৩৪/২০, ৩৫/৬, ৩৬/(৬০, ৬২), ৩৭/(৩০, ৩২), ৩৮/(৭৪-৭৬, ৮২), ৪৩/৬২

مهمة الإنسان على الأرض

১/৪। পৃথিবীতের মানবকুলের দায়িত্ব ও কর্তব্য

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/(২১, ৩০, ১৩৮), ৬/১৬৫, ৭/১২৯, ১০/১৪, ১১/(৭, ৬১), ২১/১০৫, ২২/৪১, ২৩/১১৫, ২৪/৫৫, ২৭/৬২, ২৮/৫, ৩৫/৩৯, ৪৩/৬০, ৬৭/২, ৯০/৪

خلق الإنسان شعوبا وقبائل

১/৫। মানুষের গোষ্ঠী ও জাতি হিসেবে সৃষ্টি

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩০/২২, ৪৯/১৩

← চলমান পাতা

أنواع النفس

১/৬। নাফ্সের প্রকারভেদ

النفس الأمارة بالسوء

ক) নাফ্সে আম্মারাহ (অন্যায়ের প্রতি আদেশকারী নাফ্স)

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৭৯, ১২/৫৩

النفس اللوامة

খ) নাফ্সে লাওয়ামাহ (তিরস্কারকারী নাফ্স)–৭৫/২

النفس المطمئنة

গ) নাফ্সে মুতমাইন্নাহ (আশ্বস্ত নাফ্স)–৭৯/২৭

صفات الإنسان

১/৮। মানব গুণাবলী

تعجل الإنسان

ক) মানুষের তাড়াহুড়া। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২১৪, ১৭/১১, ২১/৩৭, ২৬/২০৪

هلع الإنسان وجزعه

খ) মানুষের অস্থিরচিত্ততা ও হায়-হুতাশ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৬/৬৩, ১০/১২, ১১/৯, ১৪/৩৪, ৪১/৪৯, ৭০/(১৯, ২০), ৮৯/১৬

طمع الإنسان وبخله

গ) মানুষের লোভ-লালসা ও কৃপণতা। সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৪/(২২, ১২৮), ১৭/১০০, ৬৪/১৬, ৭০/(১৮, ২১), ৭৪/১৫, ৮৯/(১৯, ২০), ১০০/৮, ১০২/১

جدل الإنسان وعناده

ঘ) মানুষের বিবাদ ও অবাধ্যতা। সর্বমোট ৫৩টি আয়াত ঃ ৬/১৪৩, ৭/৭১, ৮/৬, ১০/১৫, ১১/(৮, ৩২), ১৬/৪, ১৮/(৫৪, ৫৫), ১৯/৬৬, ২০/(৫১, ১৩৪), ২১/(২, ৩, ৫, ৬, ৩৮, ৫৫, ৯৩), ২২/(৩, ৮, ৪৬), ২৬/২০৩, ২৯/(১৮, ২৪, ২৯), ৩১/(২০, ২১), ৩২/২৮, ৩৪/৩৫, ৩৬/(৪৮, ৭৭), ৪০/(৪, ৩৫), ৪৩/৫৮, ৪৬/(১৭, ২২), ৫২/৩২, ৬৭/২৫, ৬৮/(৩৬–৪১), ৭৪/(১৮, ২১, ২২, ৫২), ৮২/৬, ৯০/(৫–৭)

خلق الإنسان في أحسن تقويم

ঙ) উত্তম অবয়বে মানব সৃষ্টি

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২৩/১৪, ৪০/৬৪, ৬৪/৩, ৮২/(৭, ৮), ৮৭/২, ৯০/(৮, ৯), ৯৫/৪

جحود الإنسان نعم الله

চ) মানুষ কর্তৃক আল্লাহর নি'আমত অস্বীকার

সর্বমোট ১২৪টি আয়াত ঃ ২/(৪৯, ২১৪, ২৪৩), ৫/(২০, ৭৫, ৮৬), ৬/(৬, ২১, ৩৩, ৪৬, ৬৪, ৬৬, ১০৪, ১৩০, ১৫৭), ৭/(১০, ৪০, ৫১, ৬৩, ৬৯, ৭৪, ৮৬, ১৮২), ১০/(১২, ২১, ২৩, ৬০), ১১/৯, ১২/৩৮, ১৪/৩৪, ১৬/(৪, ৪৫, ৫৮, ৫৯, ৭১, ৭২, ৮২, ৮৩, ১১২), ১৭/(৬৭,

৮৩), ১৮/৫৭, ২১/(৩২, ৪২), ২২/(৩৮, ৬৬), ২৩/(৭৫, ৭৮), ২৫/৫০, ২৬/(৮, ৬৭, ১৩৬, ১৩৭), ২৭/(৬০, ৭৩, ৮৩), ২৮/(৫৭, ৭৮), ২৯/(৪৯, ৬১, ৬৫–৬৭), ৩০/(৩৩, ৩৬, ৫১), ৩১/(২০, ৩২), ৩২/৯, ৩৩/৭২, ৩৪/(১৩, ১৬, ১৯/২৮), ৩৬/(৩৫, ৭৩), ৩৯/(৮, ৪৯), ৪০/৬১, ৪১/(৫০, ৫১), ৪২/৪৮, ৪৩/১৫, ৪৬/২৬, ৫৩/৫৫, ৫৫/(১৩, ১৬, ১৮, ২১, ২৩, ২৫, ২৮, ৩০, ৩২, ৩৪, ৩৬, ৩৮, ৪০, ৪২, ৪৫, ৪৭, ৪৯, ৫১, ৫৩, ৫৫, ৫৭, ৫৯, ৬১, ৬৩, ৬৫, ৬৭, ৬৯, ৭১, ৭৩, ৭৫, ৭৭), ৫৬/৮২, ৬৭/(২১, ২৩), ৯৬/(৬, ৭), ১০০/(৬, ৭)

قلة علم الإنسان

ছ) মানুষের জ্ঞানের স্বল্পতা।

সর্বমোট ৩৭টি আয়াত ঃ ২/(১৪০, ২১৬, ২৩২, ২৩৯, ২৫৫), ৩/(৭, ৬৬), ৪/১৫৭, ৫/১০৯, ৬/৩৭, ৭/১৮৭, ১২/(২১, ৬৮, ৭৬), ১৬/(৩৮, ৪১, ৭৪, ১০১), ১৭/৮৫, ১৮/৫, ২০/১১০, ২৪/১৯, ২৭/(৬১, ৬৫, ৬৬, ৮৪), ২৮/১৩, ৩০/(৬, ৭, ২৯), ৩৩/৭২, ৪০/৮৩, ৪৩/২০, ৪৫/২৪, ৭৯/৪৩, ৮৯/(১৫, ১৬)

ضعف الإنسان

জ) মানবকূলের দুর্বলতা

সর্বমোট ৪০টি আয়াত ঃ ৪/২৮, ৫/৩০, ৬/১৩৪, ৭/১৪৩, ৮/৫৯, ৯/(২, ৩, ২৫), ১০/(২৪, ৫৩), ১১/(২০, ৩৩, ৫৭), ১৩/১১, ১৬/৪৬, ১৮/৪১, ২১/৪০, ২৪/৫৭, ২৫/১৯, ২৯/২২, ৩০/(৯, ৫৪), ৩৬/৪৩, ৩৯/৫১, ৪০/(২৯, ৮২), ৪২/৩১, ৫১/৪৫, ৫৫/(৩৩, ৩৫), ৫৬/(৬৬, ৬৭, ৮৭), ৬০/৪, ৬৯/৪৭, ৭২/২১, ৭৭/৩৯, ৯০/(৫–৭)

فضل الله على الإنسان

১/৯। মানবকূলের উপর আল্লাহর মর্যাদা

إرسال الرسل بالهداية

ক) হিদায়াতের সাথে রসূলগণকে প্রেরণ

সর্বমোট ১৭৯টি আয়াত ঃ ২/(৫৩, ১২৯, ১৫১, ১৭০, ১৭৬, ১৯৮, ২০৯, ২১১, ২১৩, ২৩১, ২৫৩), ৩/(৪, ১০৩, ১০৮, ১৬৪, ১৮৩, ১৮৪), ৪/(৭৯, ৮০, ১৬৫, ১৭০, ১৭৪), ৫/(৩, ৭, ১৫, ১৬, ১৯, ২২, ৩২, ৭৫, ১০৪, ১১০), ৬/(৫, ১৯, ৪২, ৪৮, ৮৪, ৮৫, ৮৬, ৮৭, ৮৯, ৯১, ১০৪, ১০৫, ১৩০, ১৫১, ১৫৩, ১৫৪), ৭/(৩৫, ৪৩, ৫৩, ৫৯, ৬১–৬৪, ৬৭–৭০, ৭৩, ৮০, ৮৫, ৮৯, ১০১, ১০৪, ১৪৫), ৯/(৩৩, ৭০, ১১৫, ১২৮), ১০/(১৩, ৪৭, ৭১, ৭৪, ৭৫, ১০৮), ১১/২৫, ১২/(৩৮, ১০৪), ১৩/(৭, ৩০, ৩৮), ১৪/(৪, ৫, ৯, ৩৬), ১৬/(৩৬, ৪৩, ৪৪, ৬৩, ১১৩), ১৯/২১, ২০/(৫০, ১২৩, ১৩৪), ২১/(২৫, ৪৮, ১০৭), ২২/(৪৯, ৭৫, ৭৮), ২৩/৭৩, ২৫/৫১, ২৬/(১০, ১৬, ১০৭, ১২৫, ১৪৩, ১৬২, ১৭৮, ২০৮), ২৭/১২, ২৮/(৪৬, ৪৭, ৫৯), ২৯/৪৭, ৩০/(৯, ৪৭), ৩৪/৩৪, ৩৫/(২৪, ৪২), ৩৬/(৩, ১৩, ১৪, ১৬), ৩৭/(৭২, ১২৩, ১৩৩, ১৩৯, ১৪৭), ৩৯/৭১, ৪০/(১৫, ২২, ২৩, ৫০, ৫৩, ৫৪, ৭৮), ৪১/১৪, ৪৩/(৫–৭, ২৪, ২৯, ৪৬, ৬৩), ৪৪/(৫, ৬, ১৩), ৪৬/(৯, ২১), ৪৮/(৯, ২৮), ৪৯/১৭, ৫০/২৮, ৫১/৫৫, ৫৩/২৩, ৫৭/(৯, ২৫–২৭), ৬১/(৬, ৯), ৬২/২, ৬৪/৬, ৬৫/(১০, ১১), ৬৭/(৮, ৯), ৭১/(১, ২), ৭৩/১৫, ৭৬/৩, ৭৯/(১৭, ১৮), ৯২/১২, ৯৮/(১, ৪)

← চলমান পাতা

عظم فضل الله على الإنسان

ঝ) মানবকূলের উপর আল্লাহর দয়ার বিশালতা

সর্বমোট ১১৬টি আয়াত ঃ ২/২৪৩, ৪/(৭০, ১১৩, ১৭৫), ৫/২০, ৬/(৪৬, ১০৪, ১৪১-১৪৪), ৭/(১০, ২৬, ৩২, ৬৩, ৬৯, ৭৪, ১৪৩, ১৪৫, ১৭২), ৮/২৬, ১০/(৩১, ৬০), ১৩/(৩, ৪, ১১), ১৪/(৩২-৩৪), ১৫/(১৯, ২০, ২২), ১৬/(৫-৮, ১০, ১১, ১৩-১৬, ১৮, ৫৩, ৬৫-৬৯, ৭১, ৭২, ৭৮, ৮০, ৮১), ১৭/(১২, ৬৬, ৭০, ৮৭), ২১/৪২, ২৫/(৪৭-৫০, ৫৩), ২৬/(৭, ১৩২-১৩৪, ১৪৭-১৪৯), ২৭/(৬০-৬৪, ৭৩, ৮৬), ২৮/(৫, ৬, ১৩, ৫৭, ৭১-৭৩, ৭৬), ২৯/(৫১, ৬১), ৩০/৫৪, ৩১/২০, ৩৪/১৮, ৩৫/৩, ৩৬/৪২, ৩৯/(৬, ২১), ৪৫/(১২, ১৩), ৫৭/২৫, ৭৩/৭, ৭৪/৬, ৭৬/২৮, ৭৮/(৯-১১, ১৬), ৮০/(২০, ২৫-৩২), ৮২/৭, ৯৬/৫

قصة اليهود في القرآن

২। আল-কুরআনে ইয়াহূদ সম্পর্কিত কিসসা

ملة اليهود

২/১। ইয়াহূদ সম্প্রদায়। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(৪৩, ৮৩, ৮৪, ৯১, ১১১, ১১৩, ১৮৩), ৩/২০, ৯/(৩০, ৩১), ১৭/২, ৯৮/৫

فضل الله على اليهود

২/২। ইয়াহূদ সম্প্রদায়ের উপর আল্লাহর দয়া

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ২/(৪০, ৪৭, ৪৯, ৫০, ৫২, ৫৩, ৫৬, ৫৭, ৫৮, ৬০, ৬১, ৬৪, ১২২), ৪/(৫৪, ১৫৩), ৫/(১২, ১৫, ২০, ৭১), ৭/(১৪০, ১৪১, ১৬০, ১৬১), ১০/৯৩, ১৪/৬, ১৭/৪, ২০/(৮০, ৮১), ২৬/৫৯, ২৮/(৫, ৬), ৪০/৫৩, ৪৪/(২৫-২৮, ৩০-৩২), ৪৫/(১৬, ১৭)

أنبياء بني إسرائيل

২/৩। বানী ইসরাইলের নাবীগণ। সর্বমোট ২৮টি আয়াত ঃ ২/১৩৩, ৩/(৪৯, ৯৩), ৪/১৫৩, ৫/(১২, ২০, ৪৬, ৭০, ৭৮, ১১০), ১৪/(৫, ৬, ৮), ২০/(২৪, ২৯, ৩০, ৪২-৪৪, ৪৭, ৯০), ২৩/৪৫, ২৮/(৩৪, ৩৫), ৪০/(২৩, ৩৪), ৪৩/(৪৬, ৫৯)

كتمان اليهود الحق

২/৪। ইয়াহূদী কর্তৃক হক গোপন করা।

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(৪২, ৮৯, ১০১, ১০৯, ১৪০, ১৪৪, ১৪৬, ১৫৯, ১৭৪, ১৭৫), ৩/(১৯, ৭০-৭২, ৭৫, ৭৮, ৯৯, ১৮৭), ৪/(৪৬, ৫১), ৫/(১৩, ১৫, ৪১, ৪৩), ৬/(২০, ৯১, ১১৪), ৭/(১৬২, ১৬৯)

دعوة اليهود إلي الجهاد

২/৫। জিহাদের দিকে ইয়াহূদীদের দা'ওয়াত

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(৫৮, ২৪৬), ৫/(২১, ২৩, ২৪), ৭/১৬১

تعذيب اليهود وتشريدهم

২/৬। ইয়াহূদীদেরকে শাস্তি প্রদান ও তাদের বিতাড়ণ

إذلال بني إسرائيل وتشريدهم

ক) বানী ইসরাইলকে লাঞ্ছিত করণ ও বিতাড়ণ

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/৬১, ৩/১১২, ৭/(১৫২, ১৬৫-১৬৮), ১৪/৬, ১৭/(৫, ৭), ২৬/(৫৭, ৫৮)

← চলমান পাতা

غضب الله على اليهود

খ) ইয়াহূদীদের উপর আল্লাহর গযব

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ১/৭, ২/(৬১, ৯০), ৩/১১২, ৫/৬০, ৭/১৫২, ২০/৮৬, ৫৮/১৪, ৬০/১৩

تيه اليهود في صحراء سيناء

গ) সায়না পর্বতে ইয়াহূদীদের পথভ্রান্ত হওয়া–৫/২৬

ذكر طور سيناء

ঘ) তূরে সায়না পাহাড়ের বিবরণ।।

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(৬৩, ৯৩, ১৫৪), ১৯/৫২, ২০/৮০, ২৩/২০, ২৮/(২৯, ৪৬), ৫২/১, ৯৫/২

رفع جبل الطور فوق اليهود

ঙ) ইয়াহূদীদের উপর তূর পাহাড় উত্তোলন।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(৬৩, ৯৩), ৪/১৫৪, ৭/১৭১

إهلاك بني إسرائيل بالصاعقة

চ) বজ্রপাতে বানী ইসরাইলকে ধ্বংস করণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/৫৫, ৪/১৫৩, ৭/১৫৫

المؤمنون من اليهود

২/৭। ইয়াহূদীদের মু'মিনগণ

সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ২/৬২, ৩/(১১৩, ১১৪, ১৯৯), ৪/১৬২, ৫/(৪৪, ৬৬, ৬৯), ৭/(১২০, ১২১, ১২৩–১২৬, ১৫৭, ১৫৯, ১৬৮, ১৭০), ১০/(৮৩, ৮৫–৮৭), ১৩/(৩৬, ৪৩), ১৭/১০৭, ২০/(৭০, ৭২, ৭৩), ২৬/(৪৬–৪৮, ৪৯–৫৫), ২৯/৪৭, ৩২/২৪

القرية التي اعتدت في السبت

২/৮। শনিবারে সীমালঙ্ঘনকারী গ্রাম। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/৬৫, ৪/১৫৪, ৭/(১৬৩, ১৬৬)

قصة البقرة

২/৯। গাভীর কিসসা। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(৬৭–৭১)

موقف اليهود من الكتب السماوية

২/১০। আসমানী কিতাব সম্পর্কে ইয়াহূদীদের অবস্থান। সর্বমোট ২৭টি আয়াত ঃ ২/(৭৫, ৭৮, ৭৯, ৮৫, ৮৭, ৮৯, ৯১, ১০১, ১৭৪, ১৭৬, ২১১), ৩/(২৩, ৭৮, ৯৮), ৪/৪৬, ৫/(১৫, ৬৪, ৬৮), ৬/(২০, ৯১), ৭/(১৬৯–১৭১), ১১/১১০, ১৫/৯০, ৪১/৪৫, ৬২/৫

موقف اليهود من الأديان السماوية

২/১১। আসমানী দ্বীন সম্পর্কে ইয়াহূদীদের অবস্থান

ضعف إيمان اليهود

ক) ইয়াহূদীদের ঈমানের দুর্বলতা। সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ২/(৪৪, ৪৫, ৬৮–৭১, ৭৪–৭৬, ১০০, ২৪৭, ২৪৯), ৩/৭৫, ৪/(১৫৩, ১৬১), ৫/৭১, ৭/(১২৯, ১৩৪, ১৩৮, ১৪৮, ১৫০, ১৬০, ১৬৩, ১৬৯), ১৬/১১৮, ১৭/১০১, ২০/(৮৫–৮৮, ৯২, ৯৬), ২৬/৬১, ৪৩/(৪৯, ৫০, ৫৪), ৪৫/১৭, ৬২/(৬, ৭)

← চলমান পাতা

جحود اليهود وعنادهم

খ) ইয়াহূদীদের কুফ্‌রী ও অবাধ্যতা

সর্বমোট ১০৬টি আয়াত ঃ ২/(৪১, ৪২, ৫১, ৫৪, ৫৫, ৫৯, ৬১, ৬৫, ৬৮–৭১, ৭৪–৭৬, ৮০, ৮৩, ৮৫–৯৩, ১০১–১০৩, ১০৮, ১১১, ১৩৭, ১৪০, ১৪৫, ১৪৬, ১৭৪, ২১১, ২৪৬, ২৪৭), ৩/(১৯, ২১, ২৩, ২৪, ৫২, ৫৫, ৬৫, ৭০, ৯৩, ৯৮, ৯৯, ১১২, ১৮১, ১৮৩, ১৮৭), ৪/(৪৪, ৪৬, ৫১, ১৫৩, ১৫৫, ১৫৬, ১৬০), ৫/(১৩, ২২, ২৪, ২৫, ৩২, ৪৩, ৫৯, ৬০, ৬৪–৬৬, ৭০, ৭১, ৭৯, ৮০, ৮১, ১১০), ৬/(২০, ৯১, ১১৪, ১৪৬), ৭/(১৩৩, ১৩৫, ১৩৬, ১৩৮, ১৪৮, ১৫০, ১৬০, ১৬২, ১৬৬, ১৬৯), ৯/৩৪, ১০/৯৩, ১৪/৮, ১৬/১১৮, ১৭/১০১, ২০/৯১, ২৬/(৬৭, ১৯৭), ২৭/৭৬, ৪৪/২১, ৪৫/১৭, ৫৮/৮, ৬১/৬, ৯৮/৪

تعنت اليهود وتشددهم

গ) ইয়াহূদীদের কঠোরতা

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(৬৮–৭১, ১০৮), ৪/১৬০, ৬/(৯১, ১৪৬), ৭/(১৩২, ১৩৩), ৪৩/(৪৯, ৫০)

تطاول اليهود على الأنبياء

ঘ) ইয়াহূদীদের নাবীদের উপর বাড়াবাড়ি

সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ২/(৬১, ৮৭, ৯১, ১০৪, ১৪০, ২৪৭), ৩(২১, ৫৫, ৬৬, ১১২, ১৮১, ১৮৩), ৪/(৪৬, ১৫৩, ১৫৫, ১৫৭), ৫/৭০, ৪৩/(৪৯, ৫২, ৫৩), ৫৮/৮, ৫৯/৪, ৬১/৫

موقف اليهود من الإسلام

ঙ) ইসলাম সম্পর্কে ইয়াহূদীদের অবস্থান

সর্বমোট ৫০টি আয়াত ঃ ২/(৭৬, ৮৯, ৯০, ১০১, ১০৫, ১০৯, ১১১, ১২০, ১৩৫, ১৩৭, ১৩৯, ১৪২, ১৪৪–১৪৬), ৩/(১৯, ২০, ২৩, ৬৯, ৭০, ৭২, ৭৩, ৭৫, ৯৮–১০০, ১১০, ১১৮, ১৮৬, ১৮৭), ৪/(৪৪, ৪৬, ৪৭, ৫১, ৫৪, ১৫০, ১৫৩), ৫/(১৩, ৪১, ৫৭–৫৯, ৬১, ৮২), ৬/(২০, ৯১, ১১৪), ৯/৩২, ৫৮/৮, ৬১/৬

بخل اليهود وطمعهم

চ) ইয়াহূদীদের কৃপণতা ও লোভ-লালসা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/৫৩, ৫/(৬২, ৬৩), ৯/৩৪

بغض اليهود للنصارى

ছ) ইয়াহূদীদের খৃস্টানদের প্রতি ঘৃণা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(১১৩, ১৪৫)

العلاقة بين اليهود والمؤمنين

২/১২। ইয়াহূদী ও মুমিনদের মাঝে সম্পর্ক। সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ২/(৭৬, ১৩৬), ৩/(২৮, ৬৪), ৫/(৫, ৫১, ৫৭, ৮২), ৯/২৯, ৩৩/২৬, ৫৮/(১৪, ২২), ৫৯/২, ৬০/(১, ১৩)

قصة النصارى في القرآن

৩। আল-কুরআনে নাসারাদের কিসসা

عقيدة النصارى

৩/১। নাসারাদের আকীদাহ

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/(১১১, ১১৩, ১৮৩), ৩/২০, ৪/(৪৭, ১৭১), ৫/(১৭, ৭২, ৭৩), ৯/(৩০, ৩১), ১৯/(৩৫, ৩৬), ৯৮/৫

← চলমান পাতা

علاقة المسلمين بالنصارى

৩/২। মুসলিমদের খৃস্টানদের সঙ্গে সম্পর্ক

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/১৩৬, ৩/(২৮, ৬৪, ১১৮), ৫/(৫, ৫১, ৫৭, ৮২), ৯/২৯, ৫৮/২২, ৬০/১

المؤمنون من النصارى

৩/৩। খৃস্টানদের মু'মিনগণ

সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ২/৬২, ৩/(৫২, ৫৩, ১১০, ১১৩, ১১৪, ১৯৯), ৫/(৬৬, ৬৯, ৮২-৮৫, ১১১-১১৩), ৭/১৫৭, ১৩/(৩৬, ৪৩), ১৭/১০৭, ২৮/(৫২-৫৫), ২৯/৪৭, ৫৭/২৭

موقف النصارى

৩/৪। নাসারাদের অবস্থান।

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(৫২, ৫৩), ৪/১৭১, ৫/১৭, ১৯/৩৭

صفات النصارى

৩/৫। নাসারাদের গুণাবলী

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৩/(৬৫, ৬৬), ৫/(১৪, ৫৭, ৫৮, ৬৮), ৬/১১৪, ৯/৩৪, ৫৭/২৭, ৯৮/৪

موقف النصارى من الإسلام

৩/৬। ইসলাম সম্পর্কে নাসারাদের অবস্থান

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(১০৫, ১০৯, ১২০, ১৩৫, ১৩৭, ১৩৯, ১৪৫, ১৪৬), ৩/(১৯, ২০, ২৩, ৭০, ৭১, ৯৮-১০০, ১১৮, ১৮৬, ১৮৭), ৪/(৪৭, ১৫০), ৫/(৫৭-৫৯, ৮২, ৮৩), ৬/(২০, ১১৪), ৯/৩২

غضب الله على النصارى

৩/৭। খৃস্টানদের প্রতি আল্লাহর গযব। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১/৭, ৯/৩০

المحاجة بين النبي والنصارى

৩/৮। নাবী ও খৃস্টানদের মাঝে বিতর্ক–৩/৬১

قصة مريم في القرآن

৪। আল-কুরআনে মারইয়ামের কিসসা

ولادة مريم

৪/১। মারইয়ামের জন্ম–৩/৩৬

تفضيل مريم على نساء العالمين

৪/২। দুনিয়ার সব নারীদের উপর মার্‌য়ামের শ্রেষ্ঠত্ব। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৪২, ৬৬/১২

تربية مريم ونشأتها

৪/৩। মারইয়ামের লালন-পালন

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/(৩৭, ৪৪), ১৯/(১৬, ১৭, ১৯, ২৮), ২১/৯১

حمل مريم بعيس وولادتها

৪/৪। 'ঈসা (عليه السلام)-কে মারইয়ামের গর্ভে ধারণ ও তাকে প্রসব করণ

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ১৯/(১৬-৩০), ৬৬/১২

← চলমান পাতা

قصة أصحاب الجنة

৫। জান্নাতের অধিবাসীদের কিসসা। সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৬৮/(১৭-৩২)

قصة أصحاب الفيل

৬। হাতি বাহিনীর কিসসা। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১০৫/(১-৫)

قصة صاحب الجنتين

৭। দু'টি বাগান মালিকের কিসসা। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ১৮/(৩২-৪৩)

قصة ذي القرنين

৮। যুলকারনাইনের কিসসা। সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ১৮/(৮৩-৯৮)

قصة أصحاب الكهف

৯। কাহাফবাসীর কিসসা। সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ১৮/(৯-২২, ২৫, ২৬)

قصة أصحاب الأخدود

১০। উখদূদ (পরিখা) বাসীর কিসসা। সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৮৫/(৪-১০)

قصة أصحاب القرية

১১। গ্রামবাসীর কিসসা। সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৩৬/(১৩, ১৫-২৯)

قصة ضيف إبراهيم

১১। ইবরাহীম (ﷺ)-এর মেহমানদের কিসসা।
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৫/(৫১, ৫৭), ৫১/(২৪-২৭)

الأمثال في القرآن

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল-কুরআনে উপমাসমূহ

الغاية من ضرب المثل في القرآن

১। আল-কুরআনে উপমার উদ্দেশ্য

সর্বমোট ৩২টি আয়াত ঃ ২/(১৭, ১৯, ২০, ২৬, ১৭১, ২৬১, ২৬৪-২৬৬), ৩/১১৭, ১০/২৪, ১৩/(১৪, ১৭), ১৪/(১৮, ২৫, ৪৫), ১৬/(৬০, ৯২, ১১২), ১৮/(৩২, ৪৫, ৫৪, ১০৯), ২৪/৩৫, ২৯/৪৩, ৩০/(২৮, ৫৮), ৩৯/২৭, ৪৩/৫৭, ৪৫/২৩, ৫৯/(১৫, ২১)

ضرب المثل لما يحتقر من الأمور

২। তুচ্ছ বস্তু দ্বারা উপমা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৬, ২২/৭৩

مثل علم الله

৩। আল্লাহর ইলমের উপমা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৮/১০৯, ৩১/(১৬, ২৭)

مثل الكفر والشرك بالله

৪। আল্লাহর সাথে কুফুরী ও শিরকের দৃষ্টান্ত

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ২/(১৯, ৭৪, ১৭১, ২৬৬), ৫/১৬, ৬/(৩৯, ৭১), ৭/(১৭৬, ১৭৭), ১৩/(১৪, ১৬, ১৭), ২২/(৩১, ৭৩), ২৪/৪০, ২৯/৪১, ৪১/১৭, ৫৭/৯, ৬৫/১১

مثل النفاق

৫। কপটতার দৃষ্টান্ত

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(১৬-২০, ২৬৪, ২৬৬), ৮/(২১, ২২), ৯/১০৯, ২২/১১, ৬৩/৪

تمثيل البعث

৬। পুনরুত্থানের উপমাসমূহ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/৫৭, ২২/৫, ৪৩/১১

مثل نعيم الجنة

৭। জান্নাতের নি'আমতের দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৩/৩৫, ৪৭/১৫

مثل الكافر والمؤمن

৮। কাফির ও মুমিনের দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ২/(৩৬, ৫০, ১২২), ৭/(৫৮, ১৭৯), ৮/৩৭, ১০/(৪২, ৪৩), ১১/(২০, ২৪), ১৩/(১৬, ১৯), ১৬/(৭৫, ৭৬), ১৮/৩২, ২১/৪৫, ২২/৪৬, ২৫/৪৪, ২৬/১৯৮, ২৭/(৮০, ৮১), ৩০/(৫২, ৫৩), ৩৫/(১৯-২২), ৩৯/(২২, ২৯), ৪০/৫৮, ৪৩/৪০, ৪৫/২৩, ৪৭/১২, ৬২/৫, ৬৭/২২

تمثيل العلاقة الزوجية

৯। বৈবাহিক সম্পর্কের দৃষ্টান্ত।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮৭, ৩০/২১

مثل المجتمع المسلم

১০। মুসলিম সমাজের দৃষ্টান্ত-৪৮/২৯

مثل الغيبة

১১। গীবাত (পরনিন্দা) করার দৃষ্টান্ত-৪৯/১২

مثل الحياة الدنيا

১২। দুনিয়াবী জিন্দেগীর দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১০/২৪, ১৮/৩৫, ৫৭/২০

مثل عمل الكافر

১৩। কাফিরের 'আমালের দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১১৭, ১৪/১৮, ২৪/(৩৯, ৪০)

مثل النفقة وفعل الخيرات

১৪। ব্যয় ও উত্তম কাজের দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(২৬১, ২৬৫), ৩৫/২৯, ৫৭/(১১, ১৮), ৭৩/২০

مثل نور الله

১৫। আল্লাহর নূরের দৃষ্টান্ত-২৪/৩৫

مثل الإيمان

১৬। ঈমানের দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/১৬, ৯/১০৯, ১৩/১৭, ৫৭/৯, ৬৫/১১

مثل نقض العهد

১৭। ওয়াদা ভঙ্গের দৃষ্টান্ত-১৬/৯২

مثل الكلمة الطيبة

১৮। কালিমা ত্বয়্যিবাহর (উত্তম কথা) দৃষ্টান্ত।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৪/(২৪, ২৫)

مثل الكلمة الخبيثة

১৯। কালিমা খাবীসার (নিকৃষ্ট কথা) দৃষ্টান্ত-১৪/২৬

مثل الله تعالى

২০। আল্লাহর দৃষ্টান্ত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/৩৫, ৩৯/২৯

مثل القرية التي كفرت بنعم الله

২১। আল্লাহর নি'মাত অস্বীকারকারী গ্রামের দৃষ্টান্ত-১৬/১১২

← চলমান পাতা

الأخلاق والآداب

ষষ্ঠ পর্ব ঃ আখলাক ও আদব

← চলমান পাতা

الأخلاق والآداب
ষষ্ঠ পর্ব ঃ আখলাক ও আদব

الأخلاق
প্রথম অধ্যায় ঃ আখলাক (চরিত্র)

مكارم الأخلاق
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ উত্তম চরিত্র

الإحسان

১। ইহসান (দয়া)

সর্বমোট ৪৪টি আয়াত ঃ ২/(৮৩, ১১২, ১৭৭, ১৯৫, ২২৯), ৩/(১৩৪, ১৪৮, ১৭২), ৪/(১২৫, ১২৮), ৫/(৮৫, ৯৩), ৭/৫৬, ১৬১), ৯/(৯১, ১০০, ১২০), ১০/২৬, ১১/১১৫, ১২/(২২, ৭৮, ৯০), ১৬/(৩০, ৯০, ১২৮), ১৭/৭, ২২/৩৭, ২৮/(১৪, ৭৭) ২৯/৬৯, ৩১/৩, ২২), ৩৭, (৮০, ১০৫, ১১০, ১২১, ১৩১) ৩৯/(১০, ৩৪), ৪৬/১২, ৫১/১৬, ৫৩/৩১, ৫৫/৬০, ৭৭/৪৪

أداء الأمانة

২। আমানত আদায় করা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/২৩৮, ৩/৭৫, ৪/(২, ৫৮), ৮/২৭, ২৩/৮, ৭০/৩২

الأدب مع الله

৩। আল্লাহর সাথে আদব

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/৩২, ৭/১৪৩, ১১/(৪৫, ৪৭), ১৮/২৪, ২০(১২, ৮৪) ২৬/৫১, ২৭/১৯

الأدب مع النبي

৪। নাবীর সাথে আদব

مناداة النبي باسمه

৪/১। নাবীকে তার নামসহ ডাকা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৪/৬৩, ৪৯/(৪, ৫)

رفع الصوت فوق صوت النبي

৪/২। নাবীর কণ্ঠস্বরের উপর কণ্ঠস্বর উঠানো

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪৯/(১-৩)

الأدب في مخاطبة النبي

৪/৩। নাবীকে সম্বোধন করার আদব। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/১০৪, ৪৯/(৩–৫)

استئذان النبي عند مغادرة مجلسه

৪/৪। মজলিস ত্যাগ করার পূর্বে নাবীর অনুমতি গ্রহণ–২৪/৬২

مناجاة النبي

৪/৫। নাবীর সাথে কানাঘুষা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫৮/(১২, ১৩)

الاستقامة

৫। অবিচল থাকা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১০/৮৯, ১১/১১২, ৪১/৬, ৪২/১৫, ৪৫/১৮, ৪৬/১৩

← চলমান পাতা

الإصلاح بين الناس

৬। মানুষের মধ্যে সংশোধন করণ

فضل الإصلاح بين الناس

৬/১। মানুষের মধ্যে সংশোধন করণের ফযীলত

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ২/(১৮২, ২২৪), ৪/(৩৫/৮৫, ১১৪), ৭/১৪২, ৮/১, ৪৯/(৯, ১০)

الإصلاح بين الرجل وزوجه

৬/২। স্বামী-স্ত্রীর মাঝে সংশোধন

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৩২, ৪/(৩৫, ১২৮)

الإنابة

৭। আনুগত্য

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ১১/৭৫, ১১/৮৮, ১৩/২৭, ৩০/(৩১, ৩৩), ৩১/১৫, ৩৪/৯, ৩৮/(২৪, ৩৪), ৩৯/(৮, ১৭, ৫৪), ৪০/১৩, ৪২/(১০, ১৩) ৫০/(৮, ৩৩), ৬০/৪

الإنفاق

৮। ব্যয়

الحث على الإنفاق

৮/১। ব্যয়ের প্রতি উৎসাহ প্রদান

সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ২/(২৫৪, ২৬১), ৩/(১৭, ৯২, ১৮০), ১৪/৩১, ১৭/২৯, ২৫/৬৭, ২৫/৮৮, ৩২/১৬, ৩৫/২৯, ৩৬/৪৭, ৪২/৩৮, ৫১/১৯, ৫৭/(৭, ১০, ১১, ১৮), ৬৩/১০, ৬৪/(১৬/১৭), ৭৩/২০, ১০৭/৩

الإنفاق وقاية من النار

৮/২। ব্যয় জাহান্নামের আগুনের রক্ষাকবচ। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/১৭৭, ৩/১৭, ১৩৪, ৪/৩৯, ৮/৬০, ৩৪/৩৯, ৫১/১৯, ৯০/(১৪–১৬), ৯৩/১৮, ১০৭/৩

الوعيد لمن أمسك ماله

৮/৩। স্বীয় ধন-সম্পদ ধরে রাখার শাস্তি

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/২৫৪, ৩/১৮০, ৪/৩৭, ৯/(৩৪, ৩৫), ৫০/২৫, ৯২/৮

رعاية الأرامل والمساكين

৮/৪। বিধবা ও মিসকীনদের রক্ষণাবেক্ষণ

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(১৭৭, ২১৫), ৪/(৮, ৩৬), ১৮/৭৯, ২৪/২২, ৬৯/৩৪, ৭৪/৪৪, ৭৬/৮, ৮৯/১৮, ৯০/১৬, ১০৭/৩

الإيثار

৯। আত্মত্যাগ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭৭, ৫৯/৯

الإيفاء بالكيل والميزان

১০। সঠিক মাপ প্রদান। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৬/১৫২, ৭/৮৫, ১১/(৮৪, ৮৫), ১২/(৫৯, ৮৮), ১৭/৩৫, ২৬(৮১–৮৩), ৫৫/(৮, ৯)

← চলমান পাতা

العبر

১১। উপদেশাবলী

حقيقة البر

১১/১। কল্যাণের হাকীকত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(১৭৭, ১৮৯)

فضل البر

১১/২। কল্যাণের ফযীলত

فضل صلة الرحم

ক) আত্মীয়তা রক্ষার ফযীলত

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৪/১ ৮/৭৫, ১৩/(২১, ২৫), ৩০/৩৮, ৩৩/৬, ৬০/৮

البر من أحب الأعمال إلى الله

খ) কল্যাণ আল্লাহর নিকট সবচেয়ে উত্তম আমল

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২২৪, ৩/(৯৬, ১৩৪)

الإحسان إلى الوالدين

১১/৩। পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার

عقوق الوالدين من الكبائر

ক) পিতা-মাতার অবাধ্যতা কবীরা গুনাহ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/১৫১, ১৭/২৩, ৪৬/১৭

أحق الناس بحسن الصحبة

খ) সর্বোত্তম ব্যবহার পাবার সবচেয়ে বেশি হকদার

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১২/(৯৯, ১০০)

صلة المؤمن مع الوالدين الكافرين

গ) কাফের পিতার মাতার সাথে সম্পর্ক

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২৯/৮, ৩১/১৫, ৫৮/২২, ৬০/(১, ৮, ১৩)

صلة الرحم

১১/৪। আত্মীয়তার সম্পর্ক

إثم قاطع الرحم

ক) সম্পর্কচ্ছেদের পাপ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৭, ১৩/২৫, ৪৭/২৩, ৫০/২৫

الصدقة لذوي الأرحام

খ) আত্মীয়দের প্রতি সদাকাহ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২১৫, ৫০/২৫

صلة المشرك ذي الرحم

গ) মুশরিক আত্মীয়ের সাথে সম্পর্ক

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৯/২৩, ২৯/৮, ৩১/১৫, ৫৮/২২, ৬০/(১, ২, ৮, ৯)

النهي عن قتل الولد خشية الفقر

ঘ) অভাবের ভয়ে সন্তান হত্যা

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৬/(১৩৭, ১৪০, ১৫১), ১৭/৩১

← চলমান পাতা

التضرع والخشوع

১২। বিনয় ও ভীতি

সর্বমোট ৩০টি আয়াত ঃ ২/২৩৮, ৩/(১৭, ৪৩, ১৯৯), ৫/৮৩, ৭/৫৫, ১১/২৩, ১৪/(৩৭, ৩৮, ৪০, ৪১), ১৭/১০৯, ১৯/(৩, ৪), ২১(৮৩, ৮৭, ৯০), ২৩/(২, ৭৬), ২৫/(৬৪, ৬৫), ৩০/২৬, ৩২/১৬, ৩৩/৩৫, ৩৮/৪১, ৩৯/৯, ৪৬/১৫, ৫৭/১৬, ৬০/৫, ৭৯/৪৫

التعاون

১৩। সহযোগিতা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/২, ৪৮/২৯

التفويض

১৪। সমর্পণ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২০/৭২, ২৬/৫০, ৩৯/৩৮, ৪০/৪৪

التقوى

১৫। তাকওয়া

فضل التقوى

১৫/১। তাকওয়ার মর্যাদা

সর্বমোট ৫২টি আয়াত ঃ ২/(১০৩, ১৮৯, ১৯৭, ২০৩, ২২৪), ৩/(১৫, ৭৬, ১২০, ১২৩, ১৩৩, ১৭২, ১৭৯, ১৮৬, ১৯৮, ২০০), ৪/(৭৭, ১২৮, ১২৯), ৫/(৩৫ , ৬৫, ৯৩, ১০০), ৬/১৫৫, ৭/(২৬, ৩৫, ৯৬, ১৫৬, ১৬৯, ২০১), ৮/২৯, ৯/(৪, ৭৩৬, ১০৮), ১২/৫৭, ৯০, ১০৯), ১৬/(৩১, ১২৮), ১৯/৬৩, ২৪/৫২, ২৭/৫৩, ৩৬/৪৬, ৩৯/(৬১, ৭৩), ৪৩/৬৭, ৪৯/১৩, ৬৫/(২-৫), ৯২/৫

صفات المتقين

১৫/২। তাকওয়াশীলদের গুণাবলী

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(৩, ৪), ৩/১১৫, ৭/২০১, ৮/৩৪, ২২/৩২, ২৩/(৫৭, ৬১), ৪৯/৩, ৫৩/৩২

الحض على التقوى

১৫/৩। তাকওয়ার প্রতি উৎসাহ

সর্বমোট ৬৬টি আয়াত ঃ ২/(৪১, ৪৮, ১৯৪, ১৯৬, ১৯৭, ২০৩, ২২৩, ২৩১, ২৩৩, ২৪১, ২৭৮, ২৮১, ২৮২, ২৮৩), ৩/(৫০, ১০২, ১২৩, ১২৫, ১৩০, ২০০), ৪/(১, ৯, ১২৮, ১২৯, ১৩১), ৫/(২, ৪, ৭, ৮, ১১, ৩৫, ৫৭, ৮৮, ৯৩, ৯৬, ১০০, ১০৮, ১১২), ৬/(৫১, ৬৯, ৭২, ১৫৩, ১৫৫,) ৭/২৮, ৮/(১, ৬৯), ৯/১১৯, ২২/১, ৩০/৩১, ৩৩/(৫৫, ৭০), ৩৬/৪৫, ৩৭/১২৪, ৩৯/১০, ১৬), ৪/(১, ১২), ৫৭/২৮, ৫৮/৯, ৫৯/(৭, ১৮) ৬০/১১, ৬৪/১৬, ৬৫/(১, ১০), ৭১/৩

سبيل التقوى

১৫/৪। তাকওয়ার পথ। সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/(২১, ৬৩, ১৭৭, ১৭৯, ১৮৩, ১৮৭) ৭/১৭১

عاقبة التقوى

১৫/৫। তাকওয়ার পরিণতি

تعظيم شعائر الله دليل تقوى القلوب

সর্বমোট ৩৫টি আয়াত ঃ ২/২১২, ৩/(১৫, ১২০, ১৩৩, ১৭২, ১৭৯, ১৯৮), ৪/(৭৭, ৫/৬৫, ১০০), ৬/৩২, ৮/২৯, ৯/(৪, ৭, ৩৬, ১০৯, ১২৩,), ১০/(৬২, ৬৩), ১২/(৫৭/১০৯,) ১৫/৪৫,

← চলমান পাতা

Contents

১৬/৩০, ১৯/(৬৩, ৮৫), ২৪/৫২, ২৫/১৫, ২৭/৫৩, ৪৯(২০, ৭৩), ৬৪/১৬, ৬৫/২, ৬৮/৩৪, ৭৭/৪১, ৭৮/৩১

১৫/৬। আল্লাহর নিদর্শনকে সম্মান প্রদর্শন অন্তরের তাকওয়ার দলীল

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/২, ২২/(৩০, ৩২, ৩৬, ৩৭)

التواضع

১৬। বিনয়

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৭/১৯৯, ১৫/৮৮, ১৭/৩৭, ২২/৩৪, ২৫/৬৩, ২৬/২১৫, ৩১/(১৮, ১৯)

التوبة

১৭। তাওবাহ

فضل التوبة

১৭/১। তাওবাহর মর্যাদা। সর্বমোট ৩০টি আয়াত ঃ ২/(১৬০, ২২২), ৪/(২৬, ২৭৬৪), ৫/(৩৪, ৩৯), ৭/১৫৩, ৮/৩৮, ৯/(৩, ১১/৭৪, ১১), ১১/৩, ৫২, ৯০), ১৩/২৭, ১৭/২৫, ১৯/৬০, ২০/৮২, ২৪/৩১, ২৫/(৭০, ৭১), ২৮/৬৭, ৩৮/(২৪, ২৫), ৩৯/৫৪, ৪০/৭, ৬৬/(৪, ৮)

الأمر بالتوبة

১৭/২। তাওবাহর নির্দেশ। সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৫/৭৪, ৭/(১৫৩, ১৬১), ৯/১০৪, ১১/(৫২, ৬১), ২৪/৩১, ৩৯/৫৪, ৬৬/(৪, ৮), ১১০/৩

وقت قبول التوبة

১৭/৩। তাওবাহ কবূলের সময়।

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/৯০, ৪/(১৭, ১৮), ৬/১৫৮, ১০/(৯০, ৯১)

كيفية التوبة

১৭/৪। তাওবাহর পদ্ধতি

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/(৩৭, ৫৪, ১৬০), ৩/৩৫, ৪/(৬৪, ৯২, ১১০, ১৪৬), ৫/৭৪, ৬/৫৪, ৭/২৩, ১১/৩, ১২/৯৭, ১৬/১১৯, ২৪/৫, ২৫/(৭০, ৭১), ৬৬/৮

عدم القنوط من المغفرة

১৭/৫। আল্লাহর ক্ষমা থেকে নিরাশ না হওয়া

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ৩/১৩৫, ৪/(১১৬, ১৪৬), ৫/(৩৪, ৩৯), ৯/(১০২, ১১৮), ১৫/৫৯, ১৬/১১৯, ২০/৮২, ২৫/(৭০, ৭১), ২৭/১১, ৩৯/৫৩, ৭১/১০

الندم توبة

১৭/৬। অনুতপ্ত হওয়াই তাওবাহ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/১৩৫, ২৮/১৫, ৬৮/৩২

الندم حيث لا ينفع

১৭/৭। যেখানে অনুতপ্ত হওয়া অকার্যকর

সর্বমোট ৪২টি আয়াত ঃ ৫/(৩১, ৫২), ৬/২(২৭, ৩১), ৭/৫, ৯/৮২, ১০/(৫১, ৫৪), ১৮/৪২, ১৯/৩৯, ২১/(১৪, ৪৬, ৯৭), ২৩/(১০৬, ১০৭), ২৫/(২৭, ২৮), ২৬/(১০০, ১০২, ১৫৭), ২৮/(৪৭, ৬৪), ৩৩/৬৬, ৩৪/৩৩, ৩৭/(২০, ২৭, ২৮), ৩৯/(৫৬–৫৮), ৪০/৫২, ৪১/২৯, ৪৩/৩৮, ৬৩/১০, ৬৬/৭, ৬৭/১০, ৬৮/৩১, ৬৯/(২৮, ৫০), ৮৯/২৪

← চলমান পাতা

من تقبل توبته ومن لا تقبل

১৭/৮। কার তাওবাহ কবূল হবে আর কার তাওবাহ কবূল হবে না

توبة الزاني

ক) ব্যাভিচারীর তাওবাহ–৪/১৬

توبة السارق

খ) চোরের তাওবাহ–৫/৩৯

توبة القاتل

গ) হত্যাকারীর তাওবাহ–৪/৯২

توبة القاذف

ঘ) অপবাদদাতার তাওবাহ–২৪/৫

توبة الكافر

ঙ) কাফিরের তাওবাহ–৩/৮৯

توبة المرتد

চ) মুরতাদের তাওবাহ–৩/৮৯

توبة المنافق

ছ) মুনাফিকের তাওবাহ– ৪/১৪৬

التوكل

১৮। তাওয়াক্কুল (আল্লাহর উপর ভরসা)

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ৩/(১২২, ১৫৯, ১৬০, ১৭৩), ৪/৮১, ৫/(১১, ২৩), ১৭/৮৯, ৮/(২, ৪৯, ৬১), ৯/(৫১, ৫৯, ১২৯), ১০/(৭১, ৮৪, ৮৫), ১১/(৫, ৮৮, ১২৩), ১২/৬৭, ১৩/৩০, ১৪/(১১, ১২), ১৬/(৪২, ৯৯), ২৫/৫৮, ২৬/২১৭, ২৭/৭৯, ২৯/৫৯, ৩৩/(৩, ৪৮), ৩৯/৩৮, ৪২/(১০, ৩৬), ৫৮/১০, ৬০/৪, ৬৪/১৩, ৬৫/৩, ৬৭/২৯, ৭৩/৯

الثبات

১৯। প্রতিষ্ঠিত থাকা

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(২৪৯, ২৫০), ৩(৮, ১৪৪, ১৪৬, ১৪৭, ১৫৩), ৪/১০৪, ৮/৪৫, ২৬/৫০, ৩৩/২২, ৪৭/৩৫

الحب في الله

২০। আল্লাহর জন্য ভালবাসা

وجوب محبة الله ورسوله

২০/১। আল্লাহ ও তাঁর রাসূলকে ভালবাসার অপরিহার্যতা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১৬৫, ৩/৩১, ৯/২৪

علامة الحب في الله

২০/২। আল্লাহর জন্য ভালবাসার নিদর্শনাবলী। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/৩১, ৫/৫৪, ৫৯/৯

حب الخير للأخ من الإيمان

২০/৩। ভাইয়ের জন্য কল্যাণ কামনা ঈমানের অন্তর্ভুক্ত–৫৯/১০

← চলমান পাতা

فضائل الأخوة في الله

২০/৪। আল্লাহর পথে ভ্রাতৃত্বের ফযীলত

المحبة الإلهية للأخوة في الله

ক) আল্লাহর পথে ভ্রাতৃত্ববোধ–৮/৬৩

التفاعل مع الإخوة

২০/৫। ভ্রাতৃবর্গের সাথে করণীয়

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৮/(৭২, ৭৪), ২৪/৬১, ৪৯/১০, ৯০/১৭, ১০৩/৩

حفظ السر

২১। গোপনীয়তা রক্ষা করা–৬৬/৩

الحكمة

২২। হিকমত

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(১২৯, ১৫১, ২৩১, ২৫১, ২৫৯), ৩/(৪৮, ৭৯, ৮১, ১৬৪), ৪/(৫৪, ১১৩), ৫/১১০, ৬/৮৯, ১২/২২, ১৬/১২৫, ১৭/(১, ৩৯), ২১/(৭৪, ৭৯), ২৬/(২১, ৮৩), ২৮/১৪, ৩১/১২, ৩৩/৩৪, ৩৮/২০, ৪৩/৬৩, ৪৫/১৬, ৫৪/৫, ৬২/২

الحلم

২৩। ধৈর্য। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/১৩৪, ২৩/৯৬

الحياء

২৪। লজ্জা

الحياء من الحق

২৪/১। হক বলায় লজ্জাবোধ–৩৩/৫৩

الخوف من الله

২৫। আল্লাহর প্রতি ভয়

সর্বমোট ৬০টি আয়াত ঃ ২/(৪০, ১৫০, ১৯৭, ২৭৯, ২৮৩), ৩/(২৮, ৩০), ৪/(৯, ৭৭), ৫/(৩, ২৮, ৪৪, ৯৪), ৬/১৫, ৭/(৫৬, ১৪৯, ২০৫), ৮/(২, ৪৮), ৯/(১৩, ১৮), ১৩/(১০, ১২, ২১), ১৪/১৪, ১৬/(৫০, ৫১), ১৭/৫৭, ২০/৩, ২১/(৪৯, ৯০), ২২/৩৫, ২৩/(৫৭, ৬০), ২৪/৫২, ২৭/১০, ৩১/৩৩, ৩২/১৬, ৩৩/(৩৭, ৩৯), ৩৫/১৮, ৩৬/১১, ৩৯/(১৩, ১৬, ২৩), ৪৯/১০, ৫০/৩৩, ৫২/২৬, ৫৫/৪৬, ৫৯/১৩, ৬৭/১২, ৭০/(২৭, ২৮), ৭১/১৩, ৭৪/৩৬, ৭৬/১০, ৭৯/৪০, ৮৭/১০, ৯৮/৮

الرجاء

২৬। আশা

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৪/১০৪, ৫/৮৪, ১২/৮৭, ১৩/১২, ১৫/৫৬, ১৭/৫৭, ১৮/১১০, ৩৯/৯

الرحمة

২৭। রহমত

فضل الرحمة والحض عليها

২৭/১। রহমতের ফযীলত ও তার প্রতি উৎসাহ প্রদান

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৭/২৪, ২৪/২২, ৯০/১৭

← চলমান পাতা

رحمة الله سبقت غضبه

২৭/২। আল্লাহর রহমত তার ক্রোধের উপর বিজয়ী

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/৬৪, ৩/(৮৯, ১৫৫), ৪/(২৯, ৬৪, ৬৬, ১৪৭), ৬/১৩৩, ৭/৫৬, ১৪/১০, ২৩/(৭৫, ১০৯), ২৪/(১৪, ২০, ২১), ২৭/১১, ৩৩/২৪, ৩৬/(৪৩, ৪৪), ৪০/(৭, ৯)

القنوط من رحمة الله

২৭/৩। আল্লাহর রহমত থেকে নিরাশ হওয়া

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১২/৮৭, ১৫/(৫৫, ৫৬), ১৭/৮৩, ৩০/৩৬, ৩৯/৫৩

الرحمة بين المؤمنين

২৭/৪। মুমিনদের মাঝে রহমত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/১৯৯, ৪৮/২৯

الرضا

২৮। সন্তুষ্টি– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৯/(৫১, ৫৯), ৮৮/৯, ৯৩/৫, ৯৮/৮

الرفق

২৯। নম্রতা– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/১৯৯, ১৭/২৮, ২৫/৬৩, ৪৮/২৯

الزهد

৩০। অল্পেতুষ্টি

وصف الدنيا

৩০/১। দুনিয়ার বর্ণনা

الدنيا سجن المؤمن وجنة الكافر

ক) দুনিয়া মুমিনের জন্য জেলখানা ও কাফিরের জন্য জান্নাত স্বরূপ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/২১৪, ৩/১৪, ৭/৫১, ২০/১৩১, ২৮/৬১, ৪২/৩৬

هوان الدنيا

খ) দুনিয়ার ক্ষুদ্রতা

সর্বমোট ৪০টি আয়াত ঃ ৩/(১৪, ১৫৭, ১৮৫, ১৯৭), ৪/(৭৪, ৭৭, ৯৪), ৬/(৩২, ১৩০), ৭/(৫১, ১৬৯, ১৭৬), ৮/৬৭, ১০/৫৮, ১১/(১৫, ৯৫), ১৩/২৬, ১৬/(৯৬, ১০৭, ১১৭), ১৮/(৮, ৪৫), ২০/৭২, ২২/৪৭, ২৬/(৮৮, ২০৫, ২০৭), ২৮/(৬০, ৬১), ২৯/৬৪, ৩০/৫৫, ৪০/৩৯, ৪২/৩৬, ৪৩/(৩২, ৩৫), ৪৭/৩৬, ৫৭/২০, ৮৭/১৭, ৯৩/৪

قصر عمر الدنيا

গ) দুনিয়াবী জীবনের সংকীর্ণতা

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ৭/২৪, ৯/৩৮, ১০/(২৪, ৪৫), ১১/(৬৮/৯৫), ১৭/৫২, ২০/(১০৩, ১০৪), ২৩/(১১২–১১৪), ২৮/৬১, ৩০/৫৫, ৪০/৩৯, ৪৬/৩৫, ৭৭/৪৬, ৭৮/৪০, ৭৯/৪৬, ৮৭/১৭

الدنيا دار ابتلاء

ঘ) দুনিয়া পরীক্ষাগৃহ

সর্বমোট ৫৭টি আয়াত ঃ ২/(১৫৫, ২১২, ২১৪), ৩/(১৪০–১৪২, ১৫২, ১৬৬, ১৭৯, ১৮৬), ৫/৪৮, ৬/(৪২, ৫৩, ৭০, ১৩০, ১৬৫), ৭/(৫১, ৯৪, ১২৯, ১৬৩, ১৬৮), ৮/(১৭, ২৮), ৯/(১৬, ১২৬), ১১/১১৮, ১৬/১১২, ১৮/৭, ২০/৭২, ২১/৩৫, ২৩/৩০, ২৫/২০, ২৭/৪০, ২৯/(২, ৩,

← চলমান পাতা

১০), ৩০/৪১, ৩১/৩৩, ৩২/২১, ৩৩/(১১, ২৮, ২৯, ৭২), ৩৪/২১, ৩৫/৩৭, ৩৯/৪৯, ৪৬/২০, ৪৭/(৪, ৩১), ৫২/৪৭, ৬৭/২, ৬৮/১৭, ৭২/১৭, ৭৫/৩৬, ৭৬/২, ৮৯/(১৫, ১৬)

ذم الدنيا

ঙ) দুনিয়ার নিন্দা

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ৬/(৭০, ১৩০), ৭/(৫১, ১৬৯, ১৭৬), ৮/৬৭, ৯/৩৮, ১০/২৩, ১৩/২৬, ১৪/৩, ২৮/(৬০, ৬১), ২৯/৬৪, ৪২/৩৬, ৭৯/৩৮, ৮৭/১৭, ৯৩/৪

حقيقة الزهد في الدنيا

৩০/২। দুনিয়াতে অল্পেতুষ্টির হাকীকত

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/১৫৭, ৪/৭৪, ১৩/২৬

فضل الزهد وقصر الأمل

৩০/৩। অল্পেতুষ্টি ও সীমিত আকাংক্ষার ফযীলত

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৫৭, ২০/১৩১, ২৮/৭০, ৪২/২০

الاهتمام بالدنيا

৩০/৪। দুনিয়ার প্রতি গুরুত্বারোপ

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ২/(৯৬, ২০০, ২০৪, ২১২), ৩/(১৪, ১৪৫, ১৫২), ৪/১৩৪, ৭/(৫১, ১৬৯, ১৭৬), ৯/(৩৮, ৫৫, ৮৫), ১০/৭, ১১/১৫, ১৩/২৬, ১৪/৩, ১৬/১০৭, ২৮/৮৩, ২৯/৬৪, ৩০/৭, ৩১/৩৩, ৩৫/৫, ৪২/২০, ৪৫/৩৫, ৪৬/২০, ৫৩/২৯, ৫৬/৪৫, ৫৭/১৪, ৬২/১১, ৬৩/৯, ৬৪/১৫, ৭৫/২০, ৭৬/২৭, ৭৯/৩৮, ৮৭/১৬, ১০২/(১, ২), ১০৪/(২, ৩)

السكينة

৩১। স্থিতিশীলতা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৩/২৮, ৩৯/২৩, ৪৮/(১৮, ২৬)

سلامة الصدر

৩২। পরিষ্কার অন্তর। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/১৩৪, ৭/১৯৯, ২৪/১২, ৩৭/৮৪, ৫৯/(৯, ১০)

الشكوى إلى الله

৩৩। আল্লাহর নিকট অভিযোগ–২৬/১১৭

الشكر

৩৪। শুকর (কৃতজ্ঞতা)

شكر الله على نعمه

৩৪/১। আল্লাহর নি'আমতের প্রতি কৃতজ্ঞতা

সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/(১৫২, ১৭২, ২৩৯), ৩/(৪৩, ১২৩, ১৪৪, ১৪৫), ৫/(৬, ৮৯), ৭/(৫৮, ১৪৪, ১৮৯), ১৪/৭, ১৬/১২১, ২৭/৪০, ২৮/(১৭, ৭৩), ২৯/১৭, ৩১/১২, ৩৪/১৩, ৩৯/৬৬

الصبر

৩৫। সবর (ধৈর্য)

صبر الله على الأذى

৩৫/১। কষ্টে আল্লাহর ধৈর্যধারণ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/১৮১, ৪/৫০, ৬/১০৮, ১৬/৫৪, ১৭/(৪০, ৪২)

← চলমান পাতা

أشد الناس بلاء الأنبياء

৩৫/২। নাবীগণ সবচেয়ে কঠিন পরীক্ষার সম্মুখীন

সর্বমোট ১৫৩টি আয়াত ঃ ২/(৮৭, ৯১, ২১৭), ৩/(২১, ১৬১, ১৮৩, ১৮৪), ৪/১১৩, ৫/(৪৯, ৭০/১১০), ৬/(১০, ২৫, ৩৪, ১১২), ৭/(৭৬০, ৬১, ৬৬, ৬৭, ৭৭, ৮২, ৮৮, ৯০, ১০৯, ১২৭, ১৩১), ৮/৩০, ৯/(৪০, ৬১), ১০/(৬৫, ৭১, ৭৬, ৭৮), ১১/(১২, ২৭, ৩২, ৫৩, ৫৪, ৫৫, ৬২), ১৭/(৪৭, ১০৩), ১৮/১০৬, ২৯/৪৬, ২০/(৪০, ৬৩), ২১/(৩, ৫, ৩৬, ৪১, ৬৮, ৭৪, ৭৬, ৮৭), ২২/(৪২-৪৪), ২৩/(৩৩, ৩৮, ৭০), ২৫/(৪, ৫, ৭-৯, ২০, ৩১, ৪১), ২৬/(১৪, ২৭, ২৯, ৩৪, ১১১, ১১২, ১১৬, ১১৭, ১২৩, ১৪১, ১৫৩, ১৫৪, ১৬০, ১৬৭, ১৬৯, ১৭৬, ১৮৫-১৮৭), ২৭/(১৩, ৪৭, ৪৯, ৫৬, ৭০), ২৮/(২৪, ৩৬, ৪৮), ২৯/(২৪, ২৯), ৩৪/(৪৩, ৪৫), ৩৫/(৪, ২৫), ৩৬/(১৪, ১৫, ১৮, ৩০, ৬৯), ৩৭/(৩৬, ৯৭, ১০৬), ৩৮/(৪, ৬, ৭, ১৪, ৪১), ৪০/(৫, ২৪, ২৫, ২৬, ২৮, ৩৭), ৪৩/(৭, ৩০, ৫২, ৫৩), ৪৪/১৪, ৪৬/(৮, ২২), ৫০/(১২-১৪), ৫১/(৩৯/৫২), ৫২/(৩০, ৩৩), ৫৪/(৯, ১৮, ২৩-২৫, ৩৩), ৬০/১, ৬১/৫, ৬৬/১০, ৬৮/(২, ৫১), ৬৯/(৪১, ৪২), ৭২/১৯, ৮১/২২, ৯৬/১০, ১০৮/৩, ১১১/৪

الأمر بالصبر

৩৫/৩। ধৈর্য ধারণের আদেশ

সর্বমোট ৩১টি আয়াত ঃ ২/(৪৫, ১৫৩), ৩/(১৩০, ১৪৬, ১৮৬, ২০০), ৭/১২৮, ৮/৪৬, ১০/১০৯, ১১/(৪৯, ১১৫), ১৬/১২৭, ১৮/২৮, ১৯/৬৫, ২০/১৩২, ২৫/২০, ৩০/৬০, ৩১/১৭, ৩৮/১৭, ৪০/(৫৫, ৭৭), ৪৬/৩৫, ৫০/৩, ৫২/৪৮, ৫৪/২৭, ৬৮/(৪৮, ৪৯), ৭০/৫, ৭৩/১০, ৭৪/৭, ৯০/১৭

أجر الصبر

৩৫/৪। ধৈর্যের সওয়াব

সর্বমোট ৩৩টি আয়াত ঃ ২/(১৫৩, ১৫৫, ১৫৭, ১৭৭, ২৪৯), ৩/(১৪২, ২০০), ৭/১৩৭, ৮/(৪৬, ৬৬), ১১/(১১, ১১৫), ১২/(৯০, ৯৪), ১৬/(৯৬, ১১০, ১২৬), ২২/৩৫, ২৩/১১১, ২৫/৭৫, ২৮/(৫৪, ৮০), ২৯/৫৯, ৩২/২৪, ৩৩/৩৫, ৩৮/৪৪, ৩৯/১০, ৪১/৩৫, ৪২/৪৩, ৪৯/৫, ৭৬/১২, ৯০/১৮, ১০৩/৩

متى نصبر

৩৫/৫। কখন ধৈর্য ধারণ করব

الصبر على المرض

ক) অসুস্থতায় ধৈর্যধারণ-২/২১৪

الصبر على شيء نكرهه

খ) অপছন্দনীয় কোন কিছুতে ধৈর্য ধারণ

সর্বমোট ১৫টি আয়াত ঃ ২/(১৫৫-১৫৭, ১৭৭, ২১৪, ২১৭), ৩/১৮৬, ৭/(১২৫, ১২৬), ১৬/৪২, ১৮/৬৯, ২৮/২৪, ৩৭/১০২, ৯৪/(৫, ৬)

الصبر في الحرب

গ) যুদ্ধে ধৈর্য ধারণ

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/(১৭৭, ২৫০)- ৩/(১২৫, ১৪২, ১৪৬, ১৫৩, ২০০), ৮/(১৫, ১৬, ৪৫, ৪৬, ৬৫, ৬৬), ৩৩/২২

← চলমান পাতা

الصدق

৩৬। সত্যবাদিতা

فضل تحري الصدق

৩৬/১। সত্যান্বেষণের ফযীলত। সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/১৭৭, ৩/১৭, ৫/১১৯, ৯/১১৯, ৩৩/(৮, ২৩, ২৪, ৩৫), ৩৯/৩৩, ৪৭/২১, ৪৯/১৫

طاعة ولاة الأمور

৩৭। প্রশাসকদের প্রতি আনুগত্য

وجوب طاعة ولاة الأمور

৩৭/১। প্রশাসকদের আনুগত্যের অপরিহার্যতা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৫৯, ২৪/(৪৮, ৫১),

السمع والطاعة في غير المعصية

৩৭/২। অন্যায় পথ ব্যতিরেকে শোনা ও আনুগত্য করা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৪/৫৯, ২৬/(১৫১, ১৫২), ২৯/৮, ৩১/১৫, ৩৪/(৩১−৩৩), ৬০/১২

اتباع الأمير في الجهاد

৩৭/৩। জিহাদে নেতার আনুগত্য। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/(১৪৬, ১৫২, ১৫৩, ১৭২), ৪/৫৯

العدل والقسط

৩৮। ন্যায় বিচার ও ইনসাফ। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৩/১৮, ৪/(৩, ৫৮), ৫/(৮, ৪২), ৬/১৫২, ৭/২৯, ১৬/(৭৬, ৯০, ১১৮), ৪৯/৯, ৫৭/২৫

العفة

৩৯। চারিত্রিক পবিত্রতা। সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/২৭৩, ৪/(৬, ২৫), ৫/৫, ২৩/৫, ২৪/(৩০, ৩১, ৩৩, ৬০), ৩৩/৩৫, ৬৬/১২, ৭০/(২৯, ৩০)

العفو عن المسيء

৪০। দোষীকে ক্ষমা করা। সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ২/১০৯, ৩/১৩৪, ৪/(৩১, ১৪৯), ৫/১৩, ৭/১৯৯, ১৫/৮৫, ২৩/৯৬, ২৪/২২, ৪১/৩৪, ৪২/(৩৭/৪০, ৪৩), ৪৩/৮৯, ৪৫/১৪, ৬৪/১৪

القناعة

৪১। অল্পেতুষ্টি− সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/৫৯, ২০/১৩১

الكرم والضيافة والقرى

৪২। দানশীলতা ও আতিথেয়তা। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১১/৬৯, ১৮/৭৭, ২৮/২৫, ৫১/(২৬, ২৭)

اللجوء إلى الله

৪৩। আল্লাহর নিকট আশ্রয় গ্রহণ

সর্বমোট ৬২টি আয়াত ঃ ২/২৫০, ৩/১২২, ৪/৪৫, ৫/২৩, ৬/(১৭, ৪০, ৪১, ৪৩), ৭/(৫৫, ১২৫, ১৪৯, ১৫৫, ১৫৬, ২০০), ৮/৪৯, ৯/(৫১, ৫৯, ১১৮, ১২৯), ১০/২২, ১১/(৫৬, ৮০, ১২৩), ১২/(৬৭, ৮৬), ১৩/৩০, ১৬/৫৩, ১৮/২৭, ১৯/৪৮, ২১/১১২, ২৩/(২৬, ২৯), ২৫/(৩০, ৬৫), ২৬/(১২, ৬২, ১১৭), ২৭/৬২, ২৮/(২১, ২২, ২৪, ৩৩), ২৯/৩০, ৩০/৩৩, ৩৩/৩, ৩৯/৮, ৪০/(৫৬, ৮৪), ৪৪/২০, ৫১/৫০, ৫৪/১০, ৫৫/২৯, ৫৮/(১, ১০), ৬০/৪, ৬৪/১৩, ৬৭/২৯, ৭১/২৫, ৭২/২২, ৭৫/(১০, ১১), ১১৩/১

← চলমান পাতা

المدح

৪৪। প্রশংসা

مدح الله لنفسه

৪৪/১। আল্লাহ কর্তৃক স্বীয় নফসের প্রশংসা

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৬/১, ৭/(৫৪, ১৯০), ৮/৪০, ১৩/(৯, ১২), ২৫/(১, ৬১), ২৮/(৬৮/৭০), ৩০/১৮, ৩১/(১১, ৩০), ৩২/৭, ৩৫/১৪, ৬৭/১

مدح الإنسان لنفسه

৪৪/২। মানুষের স্বীয় নাফসের প্রশংসা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৯, ৫৩/৩২

المرابطة

৪৫। পারস্পরিক সম্পর্ক। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭১, ৩/২০০

المراقبة

৪৬। পারস্পরিক দেখাশোনা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৮৪, ৩/২৯, ১৩/১০

المودة

৪৭। ভালবাসা– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/১৯৯, ৩০/২১, ৪৮/২৯

النصيحة

৪৮। নসীহত (উপদেশ দান)। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৪/৬৩, ৫/৭৯, ৭/১৫৯, ১১/৩৪, ২৪/১৭, ২৮/(২০, ৭৬), ৩৬/২০, ৯০/১৭, ১০৩/৩

اليقين

৪৯। পূর্ণ বিশ্বাস। সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/২৪৯, ২৬/(২৪, ৫০, ৬২), ২৭/৩, ৩৩/২২, ৩৭/১০২

مساوئ الأخلاق

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ অসৎ চরিত্র

اتباع الأهواء

১। প্রবৃত্তির অনুসরণ। সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ২/(১২০, ১৪৫), ৪/১৩৫, ৫/(৪৮, ৪৯, ৭৭), ৬/(৫৬, ১১৯, ১৫০), ৭/১৭৬, ১৮/২৮, ১৯/৫৯, ২০/১৬, ২২/৭১, ২৫/৪৩, ২৮/৫০, ৩০/২৯, ৩৮/২৬, ৪২/১৫, ৪৫/(১৮, ২৩), ৪৭/(১৪, ১৬), ৫৩/২৩, ৫৪/৩

اتباع الظن

২। ধারণার অনুসরণ

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৩/১৫৪, ৪/১৫৭, ৬/(১১৬, ১৪৮), ১০/(৩৬, ৬৬), ৫৩/(২৩, ২৮)

مخالطة الجاهلين

৩। জাহিলদের সংস্পর্শ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৪১, ৬/৬৮, ৭/১৯৯

شر الناس عند الله

৪। আল্লাহর নিকট সর্বনিকৃষ্ট ব্যক্তি। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/(২২, ৫৫)

إساءة الأدب مع الله

৫। আল্লাহর সাথে বেয়াদবি।

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(২৬, ৫৫, ৬৮–৭০, ১১৮)– ৫/২৪, ৮/৩১, ২৫/(২১, ২৬)

← চলমান পাতা

الاختيال والفخر

৬। অংকার ও গর্ববোধ

ذم الفخر

৬/১। অংকারের নিন্দা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৪/৩৬, ১১/১০, ১৭/৩৭, ২৮/৮৩, ৩১/১৮, ৫৭/(২০, ২৩)

ذم الاختيال

৬/২। দাম্ভিকতার নিন্দা

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/৩৬, ১৭/৩৭, ২৮/৮৩, ৩১/১৮, ৪০/৭৫, ৫৭/২৩

عاقبة المختال

৬/৩। দাম্ভকতার পরিণতি

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৯/২৫, ২৮/৮১, ৩১/১৮, ৭৫/(৩৪, ৩৫)

الفخر بكثرة العيال

৬/৪। অধিক সন্তান সন্ততি দ্বারা গর্ববোধ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৮/৩৪, ৫৭/২০, ১০২/১

الفخر بكثره المال

৬/৫। অধিক ধন-সম্পদ দ্বারা গর্ববোধ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৮/৩৪, ৫৭/২০, ১০২/১

الاستكبار

৭। বড়ত্ব প্রদর্শন

সর্বমোট ৫৮টি আয়াত ঃ ২/(৩৪, ২০৬, ২৪৭), ৪/(৩৬, ১৭২, ১৭৩), ৬/(৯৩, ১৫৭), ৭/(৩৬, ৪০, ৪৮, ৭৫, ৭৬, ১৩৩, ১৪৬, ২০৬), ১০/৭৫, ১৫/(৩১, ৩৩), ১৬/(২৩, ২৯), ১৭/৩৭, ২২/৯, ২৩/(৪৬, ৬৭), ২৫/(২১, ৬০), ২৬/৫, ২৭/১৪, ২৮/৩৯, ২৯/৩৯, ৩১/(৭, ১৮), ৩২/১৫, ৩৪/(৩১, ৪৩), ৩৫/৪৩, ৩৭/(১৩, ৩৫), ৩৮/(৭৪, ৭৫), ৩৯/(৫৯, ৬০, ৭২), ৪০/(৩৫, ৬০, ৭৬), ৪১/১৫, ৪৫/(৮, ৩১), ৪৬/(১০, ২০), ৫৪/২, ৫৭/২৩, ৬৩/৫, ৭১/৭, ৭৪/(২৩, ৪৯)

الغرور

৮। আত্মম্ভরিতা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/১২০, ১৭/৬৪, ১৮/৩৪, ২৬/৪৪, ৬৭/২০, ৭৪/৬

الإسراف

৯। অপব্যয়

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৩/৪৭, ৪/৬, ৬/১৪১, ৭/(৩১, ৮১), ১০/৮৩, ১৭/(২৬, ২৭, ২৯), ২৫/৬৭

إشاعة الفاحشة

১০। অশ্লীলতার প্রসার। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/২৭, ২৪/(১১, ১৫, ১৯)

الاعتداء

১১। সীমালঙ্ঘন

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/(১৭৮, ১৯০, ১৯৪, ২৩১), ৫/(২, ৮৭), ৬/১১৯, ৭/৫৫, ৯/১০, ২৬/১৬৬, ৪৮/২৫, ৬৮/১২

← চলমান পাতা

أكل الربا

১২। সুদ খাওয়া– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(২৭৫, ২৭৯), ৩/১৩০, ৪/১৬১, ৩০/৩৯

الاستنكاف

১৩। সংকোচন। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(১৭২, ১৭৩)

الإفساد

১৪। সন্ত্রাস

সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ২/(১১, ২৭, ৬০, ২০৫, ২৫১), ৩/৬৩, ৪/২৭, ৫/(৩২, ৩৩, ৬৪), ৭/(৫৬, ৭৪, ৮৫, ৮৬, ১০৩), ৮/৭৩, ৯/১০৭, ১১/৮৫, ১২/৭৩, ১৩/২৫, ১৬/৮৮, ১৭/১৬, ১৮/৯৪, ২৬/(১৩০, ১৫২, ১৮৩), ২৭/(১৪, ৩৪, ৪৮), ২৮/(৪, ১৯, ৭৭, ৮৩), ২৯/(৩০, ৩৬), ৩০/৪১, ৩৮/২৮, ৪৭/২২, ৮৯/১২

البخل و الشح

১৫। কৃপণতা

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/২৬৮, ৩/১৮০, ৪/৩৭, ৯/(৬৭, ৭৬), ১৭/(২৯, ১০০), ২৫/৬৭, ৩৬/৪৭, ৪৭/(৩৭, ৩৮), ৫৩/৩৪, ৫৭/২৪, ৫৯/৯, ৬৪/১৬, ৬৮/২৪, ৭০/২১, ৮৯/(১৭, ১৮), ৯২/৮, ১০৭/(৩, ৭)

المن والأذى

১৬। উপকারের খোটা দেয়া ও কষ্ট দেয়া

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(২৬২, ২৬৪), ৭৪/৬

البطر

১৭। অহংকার– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/৪৭, ১১/১০, ২৮/৫৮

البغض

১৮। ঘৃণা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৯১, ১০২/৩

البغي

১৯। বিদ্রোহ– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৬/৯০, ৪২/৪২, ৪৯/৯

البهتان

২০। অপবাদ– সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/(২০, ১১২, ১৫৬), ২৪/১৬, ৩৩/৫৮, ৬০/১২

التبذير

২১। অপব্যয়– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৬/১৪১, ৭/৩১, ১৭/(২৬, ২৭)

التجسس

২২। গোয়েন্দাগিরি–৪৯/১২

التمني

২৩। আকাঙ্ক্ষা– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/৩২, ১৫/৮৮, ২৮/৭৯, ৫৩/২৪

التنابز بالألقاب

২৪। খারাপ নামে ডাকা–৪৯/১১

التواكل

২৫। অন্যের প্রতি ভরসা–৫/২৪

Contents

الجبن
২৬। কাপুরুষতা
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/২৪৬, ৪/৭৭, ৫/(২২, ২৪), ৮/১৫, ৩৩/(১৩, ১৯), ৪৭/২০
الحسد
২৭। হিংসা
العين حق
২৭/১। কুদৃষ্টি বাস্তব–১৩/৫
الابتعاد عن الحسد والظلم
২৭/২। হিংসা ও যুলম থেকে দূরে থাকা–৪/৩২
قول ما شاء الله لا قوة إلا بالله
২৭/৩। ما شاء الله لا قوة إلا بالله বলা–১৮/৩৯
لخبث
২৮। অপবিত্রতা। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/১৭৯, ৫/১০০, ৬/১৩৬, ৭/৫৮, ২৪/২৬
الخيانة
২৯। খিয়ানত–
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৩/৭৫, ৪/১০৭, ৫/১৩, ৮/(২৭, ৫৮, ৭১), ১২/৫২, ২২/৩৮, ৬৬/১০
ذو الوجهين
৩০। দ্বিমুখী স্বভাব– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(১৪, ৩৬), ৩/১১৯, ৪/৮১, ৯/৮
الرياء
৩১। লোক দেখানো আমল। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৬৪, ৪/(৩৮, ১৪২), ৮/৪৭, ১০৭/৬
السباب
৩২। গালি দেয়া
النهي عن اللعن والسباب
৩২/১। অভিসম্পাত ও গালি দেয়া থেকে বিরত থাকা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১৪৮, ৪৯/১১
لعن الكفار وسبهم
৩২/২। কাফিরদের প্রতি অভিসম্পাত ও তাদের গালি দেয়া
সর্বমোট ৩০টি আয়াত ঃ ২/(৮৮, ৮৯, ১৫৯, ১৬১), ৩/৮৭, ৪/(৪৬, ৪৭, ৫২), ৫/(১৩, ৬০, ৬৪, ৭৮), ৭/৪৪, ৯/(৩০, ৬৮), ১১/(১৮, ৬০, ৬৮, ৯৫, ৯৯), ১৩/২৫, ৩৩/(৫৭, ৬৪, ৬৮), ৪৮/৬, ৫১/১০, ৬৩/৪, ৭৪/(১৯, ২০), ৮০/১৭
السخرية
৩৩। তিরস্কার
সর্বমোট ৩৯টি আয়াত ঃ ২/(১৪, ১৫, ৬৭, ২০২), ৪/১৪০, ৫/(৫৭, ৫৮), ৬/(৫, ১০), ৯/(৬৪, ৬৫, ৭৯), ১১/(৮, ৩৮), ১৫/(১১, ৯৫), ১৬/৩৪, ১৮/(৫৬, ১০৬), ২১/(৩৬, ৪১), ২৩/১১০, ২৫/৪১, ২৬/(৬, ২৫), ২৭/৫৬, ৩১/৬, ৩৬/৩০, ৩৭/(১২, ১৪), ৩৯/(৪৮, ৫৬), ৪০/৮৩, ৪৩/(৭, ৩২), ৪৫/(৯, ৩৩, ৩৫), ৪৯/১১

← চলমান পাতা

سوء الظن

৩৪। কুধারণা

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৩/১৫৪, ৬/১১৬, ১০/(৩৬, ৬০, ৬৭), ৩৮/২৭, ৪১/৫০, ৪৫/৩২, ৪৮/(৬, ১২), ৪৯/১২, ৫৩/২৩

الشك والريبة

৩৫। সন্দেহ পোষণ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১০, ৯/(৪৫, ১১০), ২২/১১, ৫০/২৫

الصد عن الحق

৩৬। হক থেকে বিরত রাখা

সর্বমোট ৩০টি আয়াত ঃ ২/২১৭, ৩/(৭০–৭২, ৯৯), ৪/(৬১, ১৬০, ১৬৭), ৫/(৪৩, ৭৫), ৭/(৪৫, ৮৬), ৮/(৩৪, ৩৬, ৪৭), ৯/(৯, ৩৪), ১১/১৯, ১৪/(৩, ৩০), ১৬/(৮৮, ৯৪), ১৭/৭৩, ২২/২৫, ৩১/৬, ৪৭/(১, ২৩, ২৪), ৫৮/১৬, ৬৩/২

الظلم

৩৭। যুলম

عاقبة الظلم

৩৭/১। যুলমের পরিণতি

সর্বমোট ৩৩টি আয়াত ঃ ২/(৫৯, ১১৪, ১২৪), ৩/১১৭, ৪/(২০, ৩০, ১৫৩, ১৬৮), ৫/(২৯, ৩১), ৬/(২১, ১২৯, ১৩৫, ১৪৪), ৭/(৫, ৯, ৪১, ৪৪, ৪৭, ১৬২, ১৬৫, ১৬৬), ৮/৫৪, ১১/(১৮, ১১৩), ২০/১১১, ২৫/(২৭, ৩৭), ২৮/(৩৭, ৫৯), ২৯/৪০, ৪২/৪২, ৫৩/৫২

الانتصار من الظالم

৩৭/২। অত্যাচারির উপর বিজয় লাভ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৪৮, ৪২/(৩৯, ৪১)

عفو المظلوم

৩৭/৩। মাযলূমের ক্ষমা করা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৪৯, ২৩/৯৬, ৪২/৪০

الظلم ظلمات يوم القيامة

৩৭/৪। যুলম কিয়ামতের দিবসে এক অন্ধকার। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২০/১১১, ৪২/৪২

قصاص المظالم

৩৭/৫। যুলুমের প্রতিশোধ–৪২/৪১

الغدر

৩৮। বিশ্বাসঘাতকতা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৭, ৮/(৫৬, ৫৮, ৭১)

الغش

৩৯। ধোঁকাবাজি। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৬/১৫২, ৮৩/(১–৩)

الغضب

৪০। গযব (ক্রোধ)

الغضب لله

৪০/১। আল্লাহর গযব।

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭/(৭১, ১৫০, ১৫৪), ২০/৮৬, ২১/৮৭

← চলমান পাতা

الغيبة

৪১। পরনিন্দা ও পরচর্চা

التنفير من الغيبة

৪১/১। গীবত থেকে দূরে রাখা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৯/১২, ৬৮/১১

عاقبة المغتاب

৪১/২। গীবতকারীর পরিণতি–৪৯/১২

اغتياب الظالم

৪১/৩। অত্যাচারির গীবত করা–৪/১৪৮

قتل النفس

৪২। প্রাণ হত্যা

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৪/(২৯, ৩০, ৯২, ৯৩), ৫/(২৯, ৩০, ৩২), ৬/(১৩৭, ১৪০, ১৫১), ১৭/৩৩, ২৫/৬৮, ২৮/১৫, ৬০/১২

القذف

৪৩। অপবাদ– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৪/(৪, ১১, ২৩), ৩/৫৮

الكذب

৪৪। মিথ্যা বলা

ذم الكذب

৪৪/১। মিথ্যার নিন্দা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/৫০, ৫/৪১, ৬, ৯৩, ৭/৩৭, ১৬/১০৫, ২৯/৬৮

عاقبة الكذب

৪৪/২। মিথ্যার পরিণতি

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৪/৫০, ৬/(৯৩, ১৫০), ৭/(৩৬–৩৮), ৯/৭৭, ১৬/৬২, ২৯/৬৮

الأمر باجتناب الظن

৪৪/৩। ধারণা থেকে বেঁচে থাকার আদেশ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৯/(৬, ১২)

الكفران

৪৫। কুফুরী

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ৬/৬৪, ১০/১২, ২২/(৩৮, ৬৬), ২৭/৪০, ২৯/(৬৫–৬৭), ৩০/৩৩, ৩১/(১২, ৩২), ৩৯/(৮, ৪৯), ৪১/৫১, ৪২/৪৮, ৮০/১৭

لغو الحديث

৪৬। বাজে কথা বলা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৩/৩, ৩১/৬, ৮৮/১১

إتيان الذكران

৪৭। পুরুষে পুরুষে যৌন সম্ভোগ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৭/(৮০, ৮১), ১১/৭৮, ২৬/১৬৫, ২৭/৫৫, ২৯/২৯

← চলমান পাতা

المكر

৪৮। চক্রান্ত

সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ৩/৫৪, ৬/(১২৩, ১২৪), ৭/(৯৯, ১২৩), ৮/৩০, ১০/২১, ১২/(১৬, ৩১, ১০২), ১৩/(৩৩, ৪২), ১৪/৪৬, ১৬/(২৬/৪৫), ২৭/(৫০, ৫১), ৩৪/৩৩, ৩৫/(১০, ৪৩), ৪০/৪৫, ৭১/২২, ৮৬/১৫

النجوى المذمومة

৪৯। খারাপ কানাঘুষা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/১১৪, ২১/৩, ৫৮/(৭-১০)

نقض العهد

৫০। অঙ্গীকার ভঙ্গ করা

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ২/২৭, ৩/(৭৭, ৮২), ৪/(২১, ১৫৫), ৫/১৩, ৭/(১০২, ১৩৫, ১৬৯), ৮/৫৬, ৯/(১২, ১৩, ৭৭), ১৩/২৫, ১৬/(৯১, ৯২, ৯৪, ৯৫), ৪৩/৫০, ৪৮/১০

النميمة

৫১। পরনিন্দা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/৪৭, ৬৮/১১

الهمز واللمز

৫২। দোষত্রুটি বের করা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৯/(৫৮, ৫৯), ৪৯/১১, ৬৮/১১, ৮৩/৩০, ১০৪/১

الآداب والحقوق العامة
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ আদব ও সাধারণ অধিকারসমূহ

آداب الكلام

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ কথা বলার আদব

قل خيرا أو اصمت

১। ভাল কথা বল অথবা চুপ থাক-১৭/৫৩

فضل الكلمة الطيبة

২। উত্তম কথার মর্যাদা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২২/২৪, ৩৫/১০

الكلمة الطيبة والكلمة الخبيثة

৩। কালিমা তয়্যিবাহ ও কালিমা খাবীসা

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৪/(২৪-২৬), ২৪/২৬, ২৮/৫৫, ৩৯/১৮

قول الحق

৪। সত্য বলা।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৩২, ৭০)

خير الكلام

৫। উত্তম কথা-৩৯/১৮

← চলমান পাতা

النهي عن الفحش والتفحش
৬। অশ্লীলতা হতে বিরত রাখা
সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ৪/১৪৮, ৬/১৫১, ৭/৩৩, ১৬/৯০, ২৩/৩, ২৪/(১৫, ১৬, ১৯, ২১), ২৫/৭২, ২৬/১৬৫, ২৭/(৫৪, ৫৫), ২৯/২৮

خفض الصوت عند الكلام
৭। কথা বলার সময় ধীরে কথা বলা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩১/১৯, ৪৯/৩

خضوع المرأء في القول
৮। কথা বলার সময় নম্রস্বরে কথা বলা–৩৩/৩২

نظم الشعر
৯। কবিতা আবৃত্তি

ما يجوز من الشعر
৯/১। বৈধ কবিতাসমূহ–২৬/২২৭

ما لا يجوز من الشعر
৯/২। অবৈধ কবিতাসমূহ– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২৬/(২২৪–২২৬)

آداب المجالس
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মজলিসের আদব

ما جاء في خير المجالس وشرها
১। ভাল ও মন্দ মজলিসসমূহ।
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৪০, ৬/৬৮, ২৩/৬৭

اختيار رفيق المجلس
২। মজলিসের সাথী নির্বাচন
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/১৪৪, ৬/(৫২, ৬৮), ৭৪/৪৫

التفسح والقيام للغير
৩। অন্যের জন্য জায়গা প্রশস্তকরণ ও তার জন্য দাঁড়ানো–৫৮/১১

التناجي في المجلس
৪। মজলিসে কানাঘুষা করা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫৮/(৮, ৯)

آداب الانصراف من المجلس
৫। মজলিস হতে বিদায়ের আদব–২৪/৬২

آداب المشي
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ চলার আদব

الخيلاء في المشي
১। দম্ভভরে চলা– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৩৬, ১৭/৩৭, ৩১/১৮

القصد في المشي
২। চলায় মধ্যম পন্থা অবলম্বন– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৫/৬৩, ৩১/১৯

إلقاء السلام

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ সালাম প্রদান

كيفية السلام

১। সালামের পদ্ধতি

صيغ السلام و التحية

১/১। সালামের শব্দ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৫/৫২, ১৬/৩২, ১৯/১৫, ৫১/২৫

سلام أهل الكتاب

১/২। আহলে কিতাবদের সালাম–৫৮/৮

تحية الملائكة

১/৩। ফেরেশতাদের সালাম

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৩/২৪, ১৫/(৪৬, ৫২), ১৬/৩২, ২৫/৭৫, ৫১/২৫

رد السلام

২। সালামের জবাব প্রদান

كيفية رد السلم

২/১। সালামের জবাব প্রদান পদ্ধতি। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৮৬, ৫১/২৫

الاستئذان

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ অনুমতি গ্রহণ

آداب الاستئذان

১। অনুমতি গ্রহণের আদবসমূহ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২৪/(২৭, ২৮, ৫৮, ৫৯), ৩৩/৫৩

كيفية الاستئذان ولفظه

২। অনুমতি গ্রহণের পদ্ধতি ও তার শব্দ–২৪/৬১

الاستئذان من أجل البصر

৩। অনুমতি চোখের কারণে–২৪/৫৮

الاستئذان في الفنادق والأماكن العامة

৪। হোটেল রেস্তোঁরা ও সাধারণ জায়গায় অনুমতি গ্রহণ–২৪/২৯

الاستئذان عند الخروج

৫। বের হবার অনুমতি গ্রহণ–২৪/৬২

حق الضيف

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ মেহমানের হক

إكرام الضيف وخدمته

১। মেহমানের সম্মান ও তার খেদমত

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৮/৭৭, ৫১/(২৬, ২৭)

صنع الطعام والتكلف للضيف

২। খাদ্য প্রস্তুত ও মেহমানের জন্য কষ্টভোগ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১১/৬৯, ২৪/৬১, ৩৩/৫৩, ৫১/(২৬, ২৭)

← চলমান পাতা

حق الطريق

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ রাস্তার হক

غض البصر

১। চক্ষু নিম্নগামী রাখা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/(৩০, ৩১)

حقوق الجار

অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ প্রতিবেশীর হক

إكرام الجار

১। প্রতিবেশীর সম্মান–৪/৩৬

الجار الأدنى وحقوقه

২। নিকতম প্রতিবেশী ও তার হক– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৩৬, ১০৭/৭

معاملة الحيوان

নবম অনুচ্ছেদ ঃ জীবজন্তুর সাথে লেনদেন

التمثيل بالحيوان

১। জীবজন্তু দ্বারা দৃষ্টান্ত পেশ–৭/১৭৯

قلادة الحيوان

২। জীবজন্তুর হার– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/(২, ৯৭)

معاملة العبيد

দশম অনুচ্ছেদ ঃ দাসদের সাথে লেনদেন

مأكل العبد ومشربه

১। দাসের খাদ্য-পানীয়–৪/৩৬

ملبس العبد

২। দাসের পোশাক পরিচ্ছদ–৪/৩৬

تكليف العبد بما يطيق

৩। দাস তার সাধ্যানুযায়ী কষ্ট দেয়া–৪/৩৬

معاملة العبد بالرفق

৪। দাসের সাথে নম্রভাবে লেনদেন–৪/৩৬

← চলমান পাতা

العبادات

সপ্তম পর্ব ঃ 'ইবাদাতসমূহ

← চলমান পাতা

নবম অধ্যায় ঃ কসম ও নযর নেওয়াজ

দশম অধ্যায় ঃ যিক্‌র

একাদশ অধ্যায় ঃ দু‘আ

← চলমান পাতা

العبادات
সপ্তম পর্ব ঃ 'ইবাদাতসমূহ
الطهارة
প্রথম অধ্যায় ঃ পবিত্রতা

فضل الطهارة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ পবিত্রতার মর্যাদা।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২২, ৯/১০৮
طهارة الأواني
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ পাত্রের পবিত্রতা
أواني طاهرة
১। পবিত্র পাত্রসমূহ
أواني الجلد المدبوغ
১/১। প্রক্রিয়াজাতকৃত চামড়ার পাত্র–১৬/৮০
طهارة الثوب
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ পোশাক পরিচ্ছদের পবিত্রতা
تطهير الثوب
১। পোশাক পরিচ্ছদকে পবিত্র করণ–৭৪/৪
طهارة البدن
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ শারীরিক পবিত্রতা
ما يحرم على الحائض
১। ঋতুবতীর জন্য যা হারাম
مس الحائض المصحف وقراءة القرآن
১/১। ঋতুবতী কুরআন স্পর্শ ও কুরআন তিলাওয়াত–৫৬/৭৯
النجاسات
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ অপবিত্রতা (নাজাসাত)
نجاسة الدم
১। রক্তের অপবিত্রতা
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৬/১৪৫, ১৬/১১৫
نجاسة لحم الخنزير
২। শুকরের গোশতের অপবিত্রতা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬/১৪৫, ১৬/১১৫
نجاسة الميتة
৩। মৃত বস্তুর অপবিত্রতা–২/১৭৩

← চলমান পাতা

الوضوء
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ উযূ

← চলমান পাতা

الغسل
তৃতীয় অধ্যায় ঃ গোসল

حكم الغسل
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ গোসলের হুকুম

وجوب الغسل
১। গোসলের ওয়াজিবসমূহ

الغسل من الجنابة
১/১। জানাবাতের গোসল। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

ما يحرم على الجنب وما يجوز له
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ জুনুবী ব্যক্তির জন্য বৈধ ও অবৈধসমূহ

مس الجنب المصحف وحمله
১। জুনুবী ব্যক্তির আল-কুরআন স্পর্শ ও বহন–৫৬/৭৯

صلاة الجنب
২। জুনুবীর সলাত–৫/৬

التيمم
চতুর্থ অধ্যায় ঃ তায়াম্মুম

مشروعية التيمم
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ তায়াম্মুমের বিধান

مشروعية التيمم من القرآن
আল-কুরআনে তায়াম্মুমের বিধান–৪/৪৩

أركان التيمم
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ তায়াম্মুমের রুকনসমূহ

مسح الوجه واليدين في التيمم
১। তায়াম্মুমে মুখমণ্ডল ও হস্তদ্বয় মাসহ করণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

كيفية التيمم
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ তায়াম্মুমের পদ্ধতি–৪/৪৩

ما يباح له التيمم
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ তায়াম্মুমে যা বৈধ

التيمم للجراح
১। আহত ব্যক্তির তায়াম্মুম–৪/৪৩

تيمم المحدث
২। বায়ু নিস্মরণকারীর তায়াম্মুম

← চলমান পাতা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

تيمم الجنب

৩। জুনুবী ব্যক্তির তায়াম্মুম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

التيمم في السفر

৪। সফরে তায়াম্মুম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

التيمم في الحضر

৫। মুকীম অবস্থায় তায়াম্মুম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

تيمم المريض

৬। রোগীর তায়াম্মুম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৪৩, ৫/৬

الصلاة

পঞ্চম অধ্যায় ঃ সলাত

فضل الصلاة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সলাতের মর্যাদা

أجر الصلاة

১। সলাতের সওয়াব

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৪/১৬২, ৫/১২, ৭/১৭০, ৯/১৮, ৭১)১১/১১৪, ১৩/২২, ২৩/২, ২৪/৫৬, ৩১/৫, ৩৩/৩৩, ৩৫/২৯

الصلاة أحد الأركان

২। সলাত রুকনসমূহের একটি

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ২/(৪৩, ৮৩, ১১০, ১৭৭, ২৭৭)৪/(৭৭, ১০৩, ১৬২)৫/(১২, ৫৫), ৬/৭২, ৭/১৭০, ৮/৩, ৯/(৫, ১১, ১৮, ৭১), ২২/৪১, ২৩/৯, ২৪/৫৬, ২৭/৩, ২৯/৪৫, ৩১/৪, ৩৫/(১৮, ২৯)৫৮/১৩, ৭০/৩৪, ৭৩/২০, ৯৮/৫

أجر المحافظة على الصلاة

৩। সলাতের হিফাযতের সাওয়াব

সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৬/৯২, ৭/১৭০, ২২/৩৫, ২৩/(১০, ১১), ২৪/(৩৭, ৩৮, ৫৬), ৭০/(২৩, ৩৪, ৩৫), ৮৭/১৫

الصلاة والجنة

৪। সলাত ও জান্নাত

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৩/(১০, ১১), ৪২/৩৮, ৭০/৩৫

سوء عاقبة من أضاع الصلاة

৫। সলাত বিনষ্টকারীর ভয়াবহ পরিণতি

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৯/৫৯, ৭৩/৪৩, ৭৫/৩১

← চলমান পাতা

الصلاة حد بين المسلم والكافر
৬। সলাত মুসলিম ও কাফিরের মধ্যে সীমারেখা
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১৪৩, ৯/(৫, ১১), ৩১/৪, ৭৭/৪৮
الصلاة قربان
৭। সলাত আল্লাহর নিকবর্তী হওয়ার মাধ্যম
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/৪৫, ১৫/৯৮, ১৯/৩১, ২০/১৪, ২১/৭৩, ২৬/২১৮
الصلاة تقوم سلوك الإنسان
৮। সলাত মানুষের আচরণকে সঠিক করে। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৯/৪৫, ৭০/২২

حكم الصلاة
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সলাতের হুকুম
وجوب الصلاة
১। সলাতের ওয়াজিবসমূহ
সর্বমোট ২৩টি আয়াত ঃ ২/(১১০, ১৭৭, ২৭৭), ৪/(১০৩, ১৬২), ৫/১২, ৬/(৭২, ৯২), ৭/২৯, ৮/৩, ৯(১১, ১৮, ৭১), ১৩/২২, ১৪(৩১, ৩৭, ৪০), ২০/১৩২, ২২/৭৮, ২৪/৫৬, ৩০/৩১, ৩৩/৩৩, ৫৮/১৩

شروط الصلاة
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সলাতের শর্তাবলী
استقبال القبلة في الصلاة
১। সলাতে কিবলামুখী হওয়া
تحويل القبلة
১/১। কিবলা পরিবর্তন। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(১৪২-১৪৪)
فرض القبلة وفضل استقبالها
১/২। কিবলার ফারযিয়াত ও কিবলামুখী হওয়ার ফাযীলাত
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(১৪২-১৪৪, ১৪৯, ১৫০)
سقوط استقبال القبلة
১/৩। কিবলামুখী হওয়া ছুটে গেলে
الصلاة حال شدة القتال
ক) কিতালের ভয়াবহ অবস্থায় সলাত
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩৯, ৪/১০২
الطهارة في الصلاة
২। সলাতে পবিত্রতা অর্জন
الطهارة من شروط الصلاة
২/১। পবিত্রতা অর্জন সলাতের শর্তাবলীর অন্তর্ভুক্ত-৫/৬
طهارة بدن المصلي
২/২। সলাত আদায়কারীর শারীরিক পবিত্রতা-৪/৪৩

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

المساجد

২। মাসজিদসমূহ

فضل المساجد

২/১। মাসজিদসমূহের মর্যাদা

حب الله المساجد

ক) মাসজিদের প্রতি আল্লাহর ভালবাসা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/২৯, ২৪/৩৬

فضل وأجر بناء المساجد

খ) মাসজিদ নির্মাণের মর্যাদা ও তার সাওয়াব–২৪/৩৬

بيوت الله في الأرض المساجد

গ) মাসজিদ পৃথিবীতে আল্লাহর ঘর

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(১১৪, ১৮৭), ৯/(১৭, ১৮) ২২/৪০, ৭২/১৮

اتخاذ المساجد على القبور

ঘ) কবরের উপর মাসজিদ নির্মাণ–১৮/২১

آداب المساجد

২/২। মাসজিদের আদবসমূহ

المباشرة أثناء الاعتكاف في المسجد

ক) মাসজিদে ই‘তিকাফকালীন স্ত্রীকে স্পর্শ করার বিধান–২/১৮৭

تنظيف المساجد وتطييبها

খ) মাসজিদকে পরিষ্কার ও সুগন্ধযুক্ত রাখা।

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১২৫, ২২/৩৬, ২৪/৩৬

هيئة إتيان المساجد

গ) মাসজিদে আগমনের নিয়ম–৭/৩১

من يدخل المساجد

২/৩। কে মাসজিদে প্রবেশ করবে

دخول الجنب المسجد ومروره

ক) জুনুবী ব্যক্তির মাসজিদে প্রবেশ ও অতিক্রম–৪/৪৩

دخول المشرك المسجد

খ) মুশরিকের মাসজিদে প্রবেশ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/(১৭, ২৮)

المواقيت

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ সালাতের ওয়াক্তসমূহ

تحديد أوقات الصلوت

১। সালাতের ওয়াক্তসমূহ নির্ধারিত করণ–১৭/৭৮

فضل الصلاة لوقتها

২। নির্ধারিত সময়ে সালাত আদায়ের মর্যাদা

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৩৮, ৭/১৭০, ২০/১৪

← চলমান পাতা

وقت العصر

৩। 'আসরের ওয়াক্ত

فضل صلاة العصر

৩/১। আসর সলাতের মর্যাদা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৩৮, ২০/১৩০, ৫০/৩৯

وقت الصبح

৪। ফাজর সলাতের ওয়াক্ত

فضل صلاة الصبح

৪/১। ফাজর সলাতের মর্যাদা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৭/৭৮, ২০/১৩০, ৫০/৪৯, ৮৯/১

الأذان

অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ আযান

مشروعية الأذان

১। আযানের বিধান–৫/৫৮

وقت الأذان

২। আযান দেয়ার সময়

أذان الجمعة

২/১। জুমু'আর আযান–৬২/৯

قضاء الصلاة

নবম অনুচ্ছেদ ঃ সালাত কাযা করণ

الانشغال عن الصلاة

১। সালাত হতে গাফিল হওয়া।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩৮/(৩২, ৩৩), ১০৭/(৪, ৫)

قصر الصلاة في السفر

দশম অনুচ্ছেদ ঃ সফরে সালাত কসর করণ

مشروعية قصر الصلاة

১। কসর সালাতের বিধান–৪/১১১

صلاة الجمعة

একাদশ অনুচ্ছেদ ঃ জুমু'আহর সালাত

فضل يوم الجمعة

১। জুমু'আহর দিনের মর্যাদা

فضل صلاة الجمعة

১/১। জুমু'আহর সলাতের মর্যাদা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬২/৯, ৮৫/৩

حكم صلاة الجمعة

২। জুমু'আহ সলাতের হুকুম

وجوب صلاة الجمعة

২/১। জুমু'আহর সলাত আদায় করা ওয়াজিব–৬২/৯

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

صلاة الخوف

ত্রয়োদশ অনুচ্ছেদ ঃ ভয়ের সলাত

صفة صلاة الخوف

১। ভয়ের সলাতের বিবরণ–৪/১০২

مشروعية صلاة الخوف

২। ভয়ের সলাতের বিধান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩৯, ৪/১০২

قصر صلاة الخوف

৩। ভয়ের সলাত কসর করণ–৪/১০২

الصلاة أثناء القتال

৪। যুদ্ধকালীন সলাত–২/২৩৯

صلاة العيد

চতুর্দশ অনুচ্ছেদ ঃ ঈদের সালাত

سنن العيد

১। ঈদের সুন্নাত

النحر بعد صلاة العيد

১/১। ঈদের সলাত আদায়ের পর কুরবানী–১০৮/২

سجود التلاوة

পঞ্চদশ অনুচ্ছেদ ঃ তিলাওয়াতের সাজদাহসমূহ

مواضع سجود التلاوة

১। তিলাওয়াতে সাজদাহ্‌র স্থানসমূহ

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ১৩/১৫, ১৬/৪৯, ১৭/১০৭, ১৯/৫৮, ২২/(১৮, ৭৭), ২৫/৬০, ২৭/২৫, ২৩/১৫, ৩৮/২৪, ৪১/৩৭, ৫৩/৬২, ৮৪/২১, ৯৬/১৯

الزكاة

ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ যাকাত

المال

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সম্পদ

فتنة المال

১। সম্পদের ফিতনা

সর্বমোট ২০টি আয়াত ঃ ৩/১৪, ৮/২৮, ৯/(২৪, ৫৫, ৮৫), ১৭/৬৪, ১৮/৪৬, ২৩/(৫৫, ৫৬), ২৬/৮৮, ২৮/(৭৬, ৭৭, ৭৯), ৬৩/৯, ৬৪/১৫, ৮৯/২০, ১০০/৮, ১০২/১, ১০৪/(২, ৩)

حب المال

২। সম্পদের প্রতি ভালবাসা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৮/(৭৬, ৭৯) ৫৩/(৩৪, ৩৫)

حفظ المال

৩। সম্পদের হিফাযাত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৫, ২৫/৬৭

حق المال

৪। সম্পদের হক

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২৮/৭৭, ৩০/৩৮, ৫১/১৯, ৫৭/৭, ৭০/(২৪, ২৫), ৯২/৫

← চলমান পাতা

إنفاق المال

৫। সম্পদ খরচ করা। সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/(১৫, ৫৪, ২৬১), ৪/৩৭, ২৫/৬৭, ২৮/৫৪, ৯২/৫

سؤال المال

৬। সম্পদ চাওয়া–৪/৩২

أخذ المال بغير حق

৭। অন্যায়ভাবে সম্পদ গ্রহণ করা

সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/(১৮৮, ২৭৯) ৪/(২, ৬, ২০, ২১, ২৯, ৩০, ১৬১), ৫/৬২ ৯/৩৪, ২৬/(১৮১, ১৮৩), ৮৯/১৯

المال قوام الحياة

৮। সম্পদই জীবনের চালিকাশক্তি–৪/৫

حكم الزكاة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যাকাতের হুকুম

وجوب الزكاة

১। যাকাতের ওয়াজিবসমূহ

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/(১১০, ১৭৭, ১৮০), ৪/৩৭, ৫/(১২, ৫৫), ৬/১৪১, ৯/(৫, ১১, ১৮, ৩৪, ৭১), ২২/৭৮, ৩৩/৩৩, ৪১/৭, ৫৮/১৩, ৭০/(২৪, ২৫)

الزكاة أحد الأركان

২। যাকাত রুকনসমূহের একটি

সর্বমোট ১৮টি আয়াত ঃ ২/(৪৩, ৮৩, ১১০, ১৭৭, ২৭৭), ৪/(৭, ১৬২), ৫/(১২, ৫৫), ৯/(৫, ১১, ১৮, ৭১), ২২/৪১, ৩১/৪, ৫৮/১৩, ৭৩/২০, ৯৮/৫

الزكاة شريعة كل الرسل

৩। যাকাত প্রত্যেক রসূলের শরীয়ত। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৯/(৩১, ৫৫), ২১/৭৩, ৯৮/৫

أجر الزكاة وفضلها

৪। যাকাতের সাওয়াব ও তার ফাযীলাত

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ২/২৭৭, ৭/৫৬ ৯/(৫, ১১, ১৮৭১), ২৩/(৪, ১০, ১১) ২৪/(৩৭, ৩৮৫৬), ৩০/(৩৮, ৩৯), ৩১/৫, ৩৩/৩৫, ৩৪/৩৯, ৩৫/২৯, ৪২/৩৮, ৪৭/৩৭, ৫১/১৯, ৫৭/১৮, ৭৩/২০, ৯২/(৫, ১৮)

عقاب تارك الزكاة

৫। যাকাত আদায় না করা ব্যক্তির শাস্তি

عظم عقوبة تارك الزكاة

৫/১। যাকাত আদায় না করা ব্যক্তির শাস্তির ভয়াবহতা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/৭৭, ৯২/৮

المقصود بالكنز

৫/২। রক্ষিত সম্পদের বলতে কি বোঝায়–৯/৩৪

إحماء الكنز يوم القيامة

← চলমান পাতা

الصيام
সপ্তম অধ্যায় ঃ সওম

←— চলমান পাতা

أركان الصيام
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সিয়ামের রুকনসমূহ

الإمساك في الصيام
১। সওম অবস্থায় বিরত থাকা

وقت الإمساك في الصيام
১/১। সওম অবস্থায় বিরত থাকার সময়–২/১৮৭

الإمساك أول فرض الصيام
১/২। বিরত থাকা সওমের প্রথম ফার্‌য–২/১৮৭

مبطلات الصيام
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সওম ভঙ্গকারী বিষয়সমূহ

الأكل والشرب أثناء الصيام
১। সওম অবস্থায় পানাহার–২/১৮৭

جماع الصائم
২। সওম পালনকারী ব্যক্তির যৌন সম্ভোগ–২/১৮৭

شهر رمضان
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ রামাযান মাস

فضل رمضان
১। রামাযানের ফযীলত

إنزال القرآن في رمضان
১/১। রামাযানে আল-কুরআন অবতীর্ণ হওয়া।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮৫, ৯৭/১

حكم صوم رمضان
২। রামাযানের সওমের হুকুম

التخيير في صوم رمضان في أول الأمر
২/১। প্রাথমিক অবস্থায় রমাযানের সওম ঐচ্ছিক হওয়া প্রসঙ্গ–২/১৮৪

وجوب صوم رمضان
২/২। রমাযানের সওম পালন অপরিহার্য
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(১৮৩, ১৮৫)

الصيام أحد الأركان
২/৩। সিয়াম রুকনমূহের একটি–২/১৮৩

ثبوت شهر رمضان
৩। রামাযান মাসের প্রমাণ

إثبات رمضان برؤية الهلال
৩/১। রামাযানের প্রমাণে নতুন চাঁদ দর্শন–২/১৮৯

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

الحج والعمرة
অষ্টম অধ্যায় ঃ হাজ্জ ও 'উমরাহ

الحج
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ হাজ্জ

حكم الحج
১। হাজ্জের হুকুম

وجوب الحج
১/১। হাজ্জের ওয়াজিবসমূহ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৯৭, ২২/২৭

الحج أحد الأركان
১/২। হাজ্জ রুকনসমূহের একটি–২/১৯৬

حج المشركين
১/৩। মুশরিকদের হাজ্জ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৯/(২, ৩, ১৭, ২৮)

شروط الحج
২। হাজ্জের শর্তাবলী–৩/৯৭

الحج ماشيا وراكبا
৩। পায়ে হেটে ও সওয়ার অবস্থায় হাজ্জ–২২/২৭

الإحرام
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ইহরাম

مواقيت الإحرام
১। ইহরামের স্থান

مواقيت إحرام زمانية
১/১। ইহরামের সময়সীমা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(১৮৯, ১৯৭)

أنواع الإحرام
২। ইহরামের প্রকারভেদ

تمتع الحاج
২/১। হাজ্জে তামাত্তু–২/১৯৬

محظورات الإحرام
৩। ইহরাম অবস্থায় নিষিদ্ধ বিষয়সমূহ

الفسق في الحج
৩/১। হাজ্জে অশ্লীলতা–২/১৯৭

الجدال في الحج
৩/২। হাজ্জে ঝগড়া বিবাদ–২/১৯৭

صيد المحرم
৩/৩। ইহরাম পালনকারী ব্যক্তি পশু শিকার। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/(১, ২৯, ৪–৯৫)

وطء المحرم
৩/৪। ইহরাম পালনকারী ব্যক্তির সহবাস–২/১৯৭

← চলমান পাতা

Contents

ما يباح للمحرم

৪। মুহরিম অবস্থায় যা কিছু করা বৈধ

اشتغال المحرم بالتجارة

৪/১। মুহরিমের ব্যবসা বাণিজ্যে জড়িত হওয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৯৮, ২২/২৮

التحلل من الإحرام

৫। মুহরিম অবস্থা থেকে হালাল হওয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/২, ২২/২৯

دخول الحرم

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ হারামে প্রবেশ

الكعبة

১। কা'বা

بناء الكعبة

১/১। কা'বা নির্মাণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১২৭, ২২/২৬

إزالة الأصنام من الكعبة

১/২। কা'বা হতে মুর্তি অপসারণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১২৫, ২২/২৬

تطييب الكعبة

১/৩। কা'বাকে সুগন্ধিকরণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১২৫, ২২/২৬

فضل الحرم المكي

২। মাক্কার হারামের মর্যাদা

الأمن في الحرم المكي

২/১। মক্কার হারামের নিরাপত্তা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ১৪/৩৫, ২২/২৫, ২৮/৫৭, ২৯/৬৭, ৯৫/৩, ১০৫/(২-৫)

الحرم المكي أول المساجد

২/২। মাক্কার হারাম সর্বপ্রথম মসজিদ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১২৫, ৩/৯৬, ২২/৩৩

ذكر البيت الحرام

২/৩। বাইতুল হারামের বিবরণ

সর্বমোট ৩৩টি আয়াত ঃ ২/(১২৫, ১২৭, ১৪৪, ১৪৯, ১৫০, ১৫৮, ১৯১, ১৯৪, ১৯৬, ২১৭), ৩/(৯৬, ৯৭), ৫/(২, ৯৭), ৮/(৩৪, ৩৫), ৯/(৫, ৭, ১৯, ২৮), ১৪/৩৭, ১৭/(১, ৭), ২২/(২৫, ২৬, ২৯, ৩৩), ২৮/৫৭, ২৯/৬৭, ৪৮/(২৫/২৭), ৫২/৪, ১০৬/৩

حرمة مكة المكرمة

৩। মাক্কা মুকাররমার হুরমাত

حرمة الحرم المكي

৩/১। মাক্কার হারামের হুরমাত। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(২৫, ২৬, ১৯১), ৩/৯৭, ১৪/৩৭, ২২/২৫, ২৭/৯১, ২৮/৫৭, ২৯/৬৭, ১০৫/১

الإلحاد في الحرم

৩/২। হারামে নাস্তিকতা-২২/২৫

← চলমান পাতা

Contents

القتال في الحرم
৩/৩। হারামের ভিতর কিতাল। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১৯১, ৩/৯৭, ৫/২
القتال في الأشهر الحرم
৩/৪। হারাম মাসসমূহে কিতাল। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(১৯৪, ২১৭), ৯/৫
قتل الدواب في الحرم
৩/৫। হারামের সীমায় পশুহত্যা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৫/(১, ২, ৯৫, ৯৬)
لجوء العاصي إلى الحرم
৩/৬। অপরাধীর হারামে আশ্রয় গ্রহণ–৩/৯৭
إحلال مكة للنبي
৩/৭। নাবী (ﷺ)-এর মাক্কা হালালকরণ–৯০/২
دخول المشركين مكة
৩/৮। মক্কায় মুশরিকদের প্রবেশ। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৯/(২, ৩, ৬, ৭, ১৭, ২৮)

الطواف
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ তাওয়াফ

أنواع الطواف
১। তাওয়াফের প্রকাভেদ
طواف الإفاضة
১/১। তাওয়াফে ইফাযা (তাওয়াফে যিয়ারাহ)–২২/২৯
سنن الطواف
২। তাওয়াফের সুন্নাতসমূহ
الصلاة بعد الطواف
২/১। তাওয়াফ শেষে সলাত–২/১২৫
الشرب من ماء زمزم
৩। যমযমের পানি পান
سقاية الحاج
৩/১। হাজীদের পানি পান করানো–৯/১৯

السعي بين الصفا والمروة
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ সাফা মারওয়া পাহাড়ের সায়ী

حكم السعي بين الصفا والمروة
১। সাফা মারওয়ার সা'য়ীর হুকুম–২/১৫৮
ما يبدأ به الحاج في السعي
২। সায়ীকালীন হাজী কিভাবে আরম্ভ করবে–২/১৫৮

الوقوف بعرفة
ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ আরাফায় অবস্থান

فضل يوم عرفة
১। 'আরাফাহ দিবসের মর্যাদা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮৫/৩, ৮৯/২

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

نتاج الهدي
৪/৭। হাজ্জের পশু থেকে উপকৃতি হওয়া–২২/৩৩
الأضحية
৫। কুরবানী
وقت ذبح الأضحية
৫/১। কুরবানী যবহের সময়। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২২/২৮, ১০৮/২
الحلق
দশম অনুচ্ছেদ ঃ মাথা মুণ্ডানো
مشروعية الحلق
১। মাথা মুণ্ডানোর বিধান–৪৮/২৭
وقت الحلق في الحج والعمرة
২। হাজ্জ ও 'উমরাহ্‌য় মাথায় মুণ্ডানোর সময়। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৯৬, ২২/২৯
الحلق قبل الذبح
৩। যবহের পূর্বে মাথা মুণ্ডানো–২/১৯৬
الحلق والتقصير بعد العمرة
৪। 'উমরাহ্‌র পর চুল ছাটা ও মাথা মুণ্ডানো–৪৮/২৭
الرجوع من الحج والعمرة
একাদশ অনুচ্ছেদ ঃ হাজ্জ ও উমরাহ হতে প্রত্যাবর্তন
مكان دخول البيوت
১। গৃহে প্রবেশের স্থান–২/১৮৯
الإحصار
দ্বাদশ অনুচ্ছেদ ঃ প্রতিবন্ধকতা
معنى الإحصار في الحج
১। হাজ্জে প্রতিবন্ধকতার অর্থ–৪৮/২৫
أحصار الحاج
২। হাজ্জ আদায়কারীর প্রতিবন্ধকতা–২/১৯৬
إحصار المعتمر
৩। উমরাহ আদায়কারীর প্রতিবন্ধকতা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৯৬, ৪৮/২৫
كفارة الإحصار
৪। প্রতিবন্ধকতার কাফফারা–২/১৯৬
الكفارات في الحج
ত্রয়োদশ অনুচ্ছেদ ঃ হাজ্জের কাফফারাসমূহ
كفارة حلق الرأس في الحج
১। হাজ্জে মাথা মুণ্ডানোর কাফফারা–২/১৯৬
ما يجب في كفارة الحج
২। হাজ্জের কাফফারায় কি আদায় করা ওয়াজিব–২/১৯৬

← চলমান পাতা

الأيمان والنذور
নবম অধ্যায় ঃ কসম ও নযর নেওয়াজ

الأيمان
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ কসমসমূহ

إقسام اليمين

১। কসম করা

اليمين المنعقدة

১/১। দৃঢ়ভাবে কসম করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২২৫, ৫/৮৯

اليمين اللغو

১/২। ফালতু কসম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২২৫, ৫/৮৯

اليمين الغموس

১/৩। মিথ্যা কসম। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/৭৭, ৬/১০৯, ৯/(৪২, ১০৭), ৫৮/১৪

ما يحلف به

২। কি দ্বারা কসম করবে

ما يقسم به الله

২/১। কিভাবে আল্লাহর কসম করবে

সর্বমোট ৮৪টি আয়াত ঃ ১৫/(৭২, ৯২), ১৯/(৫৬/৬৩), ৩৬/২, ৩৭/(১–৩) ৩৮/৮৪, ৪৩/২ ৪৪/২, ৫০/১ ৫১/(১–৪, ৭, ২৩), ৫২/(১–৬) ৫৩/১, ৫৬/৭৭, ৬৮/১, ৬৯/(৩৮/৩৯), ৭০/৪০, ৭৪/(৩২–৩৪), ৭৫/১, ২ ৭৭/(১–৫), ৭৯/(১–৫) ৮১/(১৫–১৮), ৮৪/(১৬–১৮) ৮৫/(১–৩) ৮৬/(১, ১১, ১২), ৮৯/(১–৫), ৯০/(১, ৩) ৯১/(১–৭), ৯২/(১–৩), ৯৩(১, ২), ৯৫/(১–৩) ১০০/(১–৩), ১০৩/১

الحلف بالله

২/২। আল্লাহর নামে কসম

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ৪/৬২, ৫/(১০৬, ১০৭), ৬/১০৯, ৯/(৬২, ৭৪, ৯৫), ১২/(৭৩, ৮৫, ৯১, ৯), ১৬(৫৬/৬৩), ২১/৫৭, ২৪/(৬, ৮), ২৬/৯৮

الحنث باليمين

৩। কসম ভঙ্গকরা

الأمر بإبرر القسم

৩/১। কসম পূর্ণ করার নির্দেশ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৮৯, ১৬/৯৫

ما يعد حنثا باليمين

৩/২। কসম ভঙ্গ করাকে কি আখ্যায়িত করা হয়–২/২২৫

تغيير اليمين لرؤية الأفضل

৩/৩। ভাল কিছু দেখার কারণে কসম পরিবর্তন করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২২৪, ২৪/২২

كفارة الحنث باليمين

৩/৪। কসম ভঙ্গ করার কাফফারা

مشروعية كفارة الحنث باليمين

ক) কসম ভঙ্গ করার কাফফারার বিধান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৮৯, ৬৬/২

← চলমান পাতা

ما يجزئ في كفارة الحنث
খ) কসম ভঙ্গের কাফফারায় কি আদায় করবে-৫/৮৯
التخيير في كفارة الحنث باليمين
গ) কসম ভঙ্গের কাফফারা আদায়ে ঐচ্ছিক বিষয়-৫/৮৯

القضاء باليمين
৪। কসম আদায় করা

أيمان اللعان
৪/১। লি'আনের কসম। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৪/(৬-৯)

ما يتعلق بالمقسم
৫। কসম সংশ্লিষ্ট বিষয়াবলী

اليمين في قطيعة الرحم
৫/১। আত্মীয়তার সম্পর্কচ্ছেদের কসম-২৪/২২

النذور
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নযর নেওয়াজ

الوفاء بالنذور
১। নযর পূর্ণ করণ

حكم الوفاء بالنذر
১/১। নযর পূর্ণ করার বিধান। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২২/২৯, ৩৮/৪৪, ৭৬/৬

ما يوفى به من النذر
১/২। যা দ্বারা নযর পর্ণ করা হবে-২/২৭০

بعض صور النذر في القرآن
১/৩। আল-কুরআনে নযরের কিছু নমুনা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৩৫, ১৯/৩৬

الذكر
দশম অধ্যায় ঃ যিক্‌র

فضل مجالس الذكر
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যিক্‌রের মজলিসের ফযীলত

فضل الذكر
১। যিক্‌রের ফযীলত

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/(১৫২, ১৫৬, ১৮৫, ১৯৮, ২০৩), ৮/৪৫, ৯/১১২, ১৩/২৮, ১৮/২৪, ২০/৩৪, ২৪/৩৭, ২৯/৪৫, ৩৩/(২১, ৩৫), ৬২/১০, ৬৩/৯, ৮৭/১৫

ذكر الله كثيرا
২। অধিকমাত্রায় আল্লাহর যিক্‌র

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/২০০, ৩/৪১, ৪/১০৩, ৮/৪৫, ২০/(৩৩, ৩৪, ১৩০), ২২/৪০, ২৬/২২৭, ৩৩/(২১, ৩৫, ৪১), ৬২/১০

← চলমান পাতা

أفضل الذكر

৩। সর্বোত্তম যিক্‌র। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৩/২৮, ১৮/৪৬, ১৯/৭৬

آداب ذكر الله عز وجل

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল্লাহর যিক্‌রের আদব

الذكر على كل حال

১। সর্বাবস্থায় যিক্‌র। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/১৯১, ৪/১০৩

الخشية والبكاء عند ذكر الله

২। আল্লাহর যিক্‌র অবস্থায় ভীত হওয়া ও ক্রন্দন করা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭/২০৫, ৮/২, ১৭/১০৯, ১৯/৫৮, ২২/৩৫

البكاء أثناء قراءة القرآن

৩। কুরআন তিলাওয়াতের সময় ক্রন্দন করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৩৮, ১৯/৫৮

خفض الصوت بالذكر

৪। যিক্‌রের সময় স্বর নিচু রাখা–৭/২০৫

أنواع الذكر

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যিক্‌রের প্রকারভেদ

الاستغفار

১। ইসতিগফার

فضل الاستغفار

১/১। ইসতিগফারের ফাযীলাত

সর্বমোট ৩০টি আয়াত ঃ ২/১৯৯, ৩/১৭, ৪/(৬৪, ১০৬, ১১০), ৫/৭৪, ৭/(১৫৩, ১৬১), ৮/৩৩, ১১/(৩, ৫২, ৯০), ১২/২৯, ১৮/৫৫, ২৪/(৫, ৬২), ২৬/(৫১, ৮২), ২৭/৪৬, ২৮/১৬, ৩৮/২৫, ৪০/৩, ৫১/(১৫, ১৬), ৬০/১২, ৭১/(১০–১২), ৭৩/২০, ১১০/৩

مواطن الاستغفار

১/২। ইসতিগফারের স্থানসমূহ–২/১৯৯

الأمر بالاستغفار

১/৩। ইসতিগফারের নির্দেশ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১৯৯, ১১/(৫২, ৬১, ৯০), ৭৩/২০

استغفار النبي

১/৪। নাবীর ইসতিগফার

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৩/১৫৯, ৪/(৬৪, ১০৬), ৯/৮০, ২৩/১১৮, ২৪/৬২, ৪০/৫৫, ৪৭/১৯, ৬০/১২, ১১০/৩

استغفار الأنبياء

১/৫। আম্বীয়াগণের ইসতিগফার

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৩/১৫৯, ৭/(২৩, ১৪৩, ১৫৫), ১১/৪৭, ১২/(৯২, ৯৭, ৯৮), ১৪/৪১, ১৯/৪৭, ২৩/১১৮, ২৪/৬২, ২৬/(৮২, ৮৬), ২৮/১৬, ৩৮/(২৪, ৩৫), ৪০/৫৫, ৪৭/১৯, ৬০/(৪, ১২), ৬৩/(৫, ৬), ৭১/২৮, ১১০/(৩, ৭)

← চলমান পাতা

استغفار المؤمنين

১/৬। মু'মিনগণের ইসতিগফার। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(১৯৯, ২৮৫, ২৮৬), ৩/(১৬, ১৭, ১৯৩), ২৩/১০৯, ৫১/১৮, ৫৯/১০, ৬৬/৮

استغفار الرجل لوالديه

১/৭। পিতা-মাতার জন্য ইসতিগফার

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ৯/(১১৩, ১১৪), ১৪/৪১, ১৭/২৪, ১৯/৪৭, ২৬/৮৬, ৬০/৪, ৭১/২৮

استغفار الرجل لأخيه

১/৮। ভাইয়ের জন্য ইসতিগফার–৭/১৫১

الاستغفار للمشركين

১/৯। মুশরিকদের জন্য ইসতিগফার। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/(৮০, ১১৩, ১১৪)

استغفار الملائكة للمسلمين

১/১০। মুসলিমগণের জন্য ফেরেশতাদের ইসতিগফার

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪০/(৭–৯) ৪২/৫

متى يستجب الاستغفار

১/১১। ইসতিগফার কবূল হওয়ার সময়। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/(১৭, ১৩৫)

الاستعاذة

২। আশ্রয়প্রার্থনা

أنواع من الاستعاذات

২/১। আশ্রয়প্রার্থনার প্রকারভেদ

الاستعاذة من العين

ক) বদ নযর হতে আশ্রয় প্রার্থনা–১১৩/৫

الاستعاذة من المكاره

খ) অপছন্দনীয় বা কষ্টদায়ক বিষয় হতে আশ্রয় প্রার্থনা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৯/১৮, ৪০/৫৬

الاستعاذة من شر الريح والمطر والسحاب

গ) বায়ু, বৃষ্টি ও মেঘের অনিষ্ট হতে আশ্রয় প্রার্থনা–১১৩/২

الاستعاذة من شر جار المقام

ঘ) প্রতিবেশীর অনিষ্ট হতে আশ্রয় প্রার্থনা–১১৩/২

الاستعاذة من شر غاسق

ঙ) রাতের অনিষ্টতা হতে আশ্রয় প্রার্থনা–১১৩/৩

الاستعاذة من شياطين الإنس والجن

চ) জিন শয়তান ও মানুষ শয়তান হতে আশ্রয় প্রার্থনা। সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৩/৩৬, ৭/২০০, ১৬/৯৮, ২৩/(৯৭, ৯৮), ৪০/২৭, ৪১/৩৬, ১১৩/২, ১১৪/(৪–৬)

من استعاذ بالله أعاذه

ছ) আল্লাহর নিকট আশ্রয় প্রার্থনাকারীকে আল্লাহর আশ্রয় প্রদান

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১১৩/১, ১১৪/১

Contents

الاستعاذة من النار

জ) জাহান্নাম হতে আশ্রয় প্রার্থনা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২০১, ৩/(১৬, ১৯১), ২৫/৬৫

البسملة

৩। বিসমিল্লাহ বলা

البسملة عند الذبح

৩/১। যবহের সময় বিসমিল্লাহ বলা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/(১১৮, ১১৯, ১২১)

البسملة عند الصيد

৩/২। শিকারের সময় বিসমিল্লাহ বলা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/(১১৮, ১১৯, ১২১)

البسملة في كل حال

৩/৩। সর্বাবস্থায় বিসমিল্লাহ বলা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১/১, ১১/৪১, ২৭/৩০

التكبير

৪। তাকবীর প্রদান

التكبير أيام التشريق

৪/১। আইয়ামে তাশরীকে তাকবীর দেয়া–২/২০৩

التكبير بين عرفة والمزدلفة

৪/২। 'আরাফাহ ও মুযদালিফায় তাকবীর দেয়া–২/১৯৮

التكبير تعظيما لله

৪/৩। আল্লাহর বড়ত্ব প্রকাশে তাকবীর দেয়া। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৭/১১১, ২২/৩৭, ৭৪/৩

الذكر في الصلاة

৫। সালাতে যিক্‌র

الذكر بعد الصلاة

৫/১। সালাতের পর যিক্‌র। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১০৩, ৫০/৪০, ৭৬/২৬

التسبيح

৬। তাসবীহ পাঠ

تسبيح الخلائق بحمد الله

৬/১। আল্লাহর প্রশংসায় সৃষ্টিকূলের তাসবীহ পাঠ

সর্বমোট ২৭টি আয়াত ঃ ১/২, ৭/২০৬, ১৩/১৩, ১৬(৪৮, ৪৯), ১৭/৪৪, ২১/(২০, ৭৯), ২২/১৮, ২৪/৪১, ২৫/৫৮, ৩৫/৩৪, ৩৭/১৬৬, ২৮/১৮, ৩৯/৭৫, ৪০/৭, ৪১/৩৮, ৪২/৫, ৫০/(৩৯, ৪০), ৫৫/৬, ৫৭/১, ৫৯/(১, ২৪) ৬১/১, ৬২/১, ৬৪/১

دلالة التسبيح على التنزيه

৬/২। তাসবীহ তার পবিত্রতা বর্ণনার স্মারক

সর্বমোট ৪১টি আয়াত ঃ ২/১১৬, ৩/১৯১, ৪/১৭১, ৫/১১৬, ৬/১০০, ৭/১৪৩, ৯/৩১, ১০/(১৮/৬৮), ১২/১০৮, ১৫/৯৮, ১৬/(১, ৫৭), ১৭/(১, ৪৩, ৪৪, ৯৩, ১০৮), ১৯/৩৫, ২১/২২, ২৩/৯১, ২৫/১৮, ২৭/৮, ৩০/৪০, ৩৪/৪১, ৩৬/(৩৬, ৩৮), ৩৭/(১৫৯, ১৮০) ৩৯/(৪, ৬৭), ৪৩/(১৩, ৮২) ৫২/(৪৩, ৪৯), ৫৬/(৭৪, ৯৬) ৫৯/২৩, ৬৮/২৯, ৬৯/৫২, ৭৮/১

← চলমান পাতা

التسبيح عند شكر النعمة
৬/৩। আল্লাহর নি'মাতের শুকর আদায়ের সময় তাসবীহ পাঠ
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৩/৪১, ১০/১০, ১৯/১১, ৪৩/১৩, ১১০/৩

التسبيح عند التعجب
৬/৪। আশ্চর্য হলে তাসবীহ পাঠ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৭/৯৩, ২৪/১৬

التسبيح عند سماع الرعد
৬/৫। বজ্রপাতের আওয়াজ শ্রবণে তাসবীহ পাঠ-১৩/১৩

فضل التسبيح و التحميد و التهليل
৬/৬। তাসবীহ, তাহমীদ ও তাহলীলের ফাযীলাত
সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৯/১১২, ২১/৮৭, ২৪/৩৬, ৩৭/১৪৩, ৪০/৫৫, ৪৮/৯, ৫২/(৪৮, ৪৯), ৫৮/২৮

الحمد
৭। হামদ (আল্লাহর প্রশংসা)

استحقاق الحمد لله
৭/১। আল্লাহর সমুদয় প্রশংসার একমাত্র হকদার হওয়া
সর্বমোট ২৬টি আয়াত ঃ ১/২, ৬/(১, ৪৫), ১০/১০, ১৪/৩৯, ১৬/(৭৫, ১১৪) ১৭/১১১, ১৮/১, ২৩/২৮, ২৭/(১৫, ৫৯, ৯৩), ২৮/৭০, ৩৯/৬৩, ৩০/১৮, ৩১/২৫, ৩৪/১, ৩৫/৩৪, ৩৭/১৮২, ৩৯/(২৯, ৭৪, ৭৫), ৪০/৭, ৪৫/৩৬, ৬৪/১

حمد الله على النعم
৭/২। নি'মাতে আল্লাহর প্রশংসা
সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ১/২, ৫/(২০, ৮৯), ৬/(১, ৪৫), ৭/(৪৩, ১৪, ৩৯), ১৬/(৭৮, ১১৪, ১২১), ২৩/২৮, ২৫/৫৮, ২৭/(১৫, ১৬, ১৯, ৫৯), ৩০/১৮, ৩৪/১, ৩৫/৩৪, ৩৭/১৮২, ৯৩/১১

مواطن الذكر
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ যিকরের স্থানসমূহ

الذكر عند المشعر الحرام
১। মাশআরুল হারামে যিক্র-২/১৯৮

الذكر في منى
২। মিনায় যিক্র-২/২০৩

الذكر في أيام التشريق
৩। আইয়ামে তাশরীকে যিক্র-২/২০৩

أوقات الذكر
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ যিক্রের ওয়াক্তসমূহ

الذكر بعد العبادة
১। 'ইবাদাতের পর যিক্র
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(১৮৫, ২০০), ৪/১০৩, ২২/২৮

Contents

الذكر عند الابتلاء

২। কষ্টভোগকালীন যিক্‌র। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/৫৬, ৩/১৭৩, ২০/(২৫, ২৬, ৩৩, ৩৪)

الذكر عند النسيان

৩। ভুলে গেলে যিক্‌র–১৮/২৪

الذكر في جميع الأوقات

৪। যিক্‌রের যাবতীয় ওয়াক্তসমূহ

সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৩/৪১, ৭/২০৫, ৩০/(১৭, ১৮), ৩৩/(৪১/৪২), ৩৮/১৮, ৪০/৫৫, ৪৮/৯, ৫২/(৪৮, ৪৯), ৭৩/৮, ৭৬/২৫

أذكار الصباح والمساء

৫। সকাল সন্ধ্যার যিক্‌র–৭/২০৫

الترهيب من الغفلة عن ذكر الله

৬। আল্লাহর যিক্‌র হতে গাফিল হওয়ার ব্যাপারে ভীতি প্রদর্শন

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৪/১৪২, ৫/৯১, ৭/২০৫, ১০/৯২, ২০/১২৪, ২১/১, ২৪/৩৭, ২৫/১৮, ৬৩/৯

الذكر عند لقاء العدو

৭। শত্রুর মুকাবিলা করার সময় যিক্‌র–৮/৪৫

مناسبات الذكر

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ যিক্‌রের উপলক্ষ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৫/৪, ৬/(১১৮, ১১৯, ১২১), ২২/(২৮, ৩৪, ৩৬)

الدعاء

একাদশ অধ্যায় ঃ দু'আ

فضل الدعاء

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ দু'আর ফাযীলাত

সর্বমোট ২২টি আয়াত ঃ ২/১৮৬, ২০১), ৩/(৩৮, ৩৯), ১৯/৭, ২০/(৩৬, ৩৭), ২১/(৭৬, ৮৪, ৮৮, ৯০), ২৬/(১১৯, ১৭০), ২৭/৬২, ২৮/(১৬, ২১) ৩৫/১০, ৩৭/১০১, ৩৮/(৩৬, ৪৩), ৪০/৬০

الحث على الدعاء

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ দু'আর ব্যাপারে উৎসাহ প্রদান। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/(২৯, ৫৫, ৫৬) ৯/১০৩

آداب الدعاء

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ দু'আর আদব

الإخلاص في الدعاء

১। দু'আয় একাগ্রচিত্ত হওয়া। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৭/২৯, ১০/২২, ২৯/৬৫, ৩১/৩২, ৪০/(১৪, ৬৫)

الدعاء بين الجهر والمخافتة

২। স্বশব্দে ও চুপিসারের মধ্য পন্থা অবলম্বনের মাধ্যমে দু'আ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৭/(৫৫, ২০৫), ১৭/১১০

← চলমান পাতা

Contents

الإلحاح في الدعاء

৩। দু‘আয় অধিকমাত্রায় পীড়াপীড়ি করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১১/৪৫, ১৯/৪

أوقات الدعاء ومناسباته

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ দু‘আর সময় ও তার উপলক্ষ

الدعاء إذا أراد الغزو

১। যুদ্ধ করার ইচ্ছাকালীন দু‘আ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৫০, ৩/১৪৭

الدعاء بالشر

২। খারাপ জিনিসের দু‘আ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১০/১১, ১৭/১১

الدعاء بالهداية

৩। হিদায়াত প্রাপ্তির জন্য দু‘আ। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১/৬, ২/৭০, ৭/৮৯, ১৮/২৪, ২৮/২২

الدعاء بحسن المصير

৪। ভাল মৃত্যুর জন্য দু‘আ

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ১/৬, ৩/(৮, ১৬, ১৯১, ১৯৩, ১৯৪), ৭/(১২৬, ১৫৭), ১২/১০১, ২৬/(৮৩, ৮৪, ৮৫, ৮৭), ২৭/১৯, ৫২/২৮, ৬৬/১১

الدعاء بغفران الخطايا

৫। গুনাহ মোচনের জন্য দু‘আ। সর্বমোট ২১টি আয়াত ঃ ২/(৫৮, ২৮৫), ৩/(১৬, ১৩৫, ১৪৭, ১৯৩), ৭/(২৩, ১৫১, ১৫৫), ১১/৪৭, ১৪/৪১, ২৩/১০৯, ২৩/১১৮, ২৬/(৫১, ৮২, ৮৬) ২৮/১৬, ৫৯/১০, ৬০/৫, ৬৩/৮, ৭১/২৮

الدعاء بطلب الولد

৬। সন্তান লাভের দু‘আ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩/৩৮, ৭/১৮৯, ২১/৮৯

الدعاء بعد الحج

৭। হাজ্জের পর দু‘আ−২২/২৮

الدعاء على الأعداء

৮। শত্রুর উপর বদ দু‘আ। সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/২৮৬, ৩/১৪৭, ১০/৮৮, ২১/১১২, ২৯/৩০, ৫৪/১০, ৭১/(২৪, ২৬, ২৮), ১১১/১

الدعاء عند الخوف

৯। ভয়ের সময় দু‘আ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৭৩, ৬/৬৩, ২৮/(২১, ৩৩)

الدعاء عند المرض

১০। অসুস্থতার সময় দু‘আ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/৮৩, ৩৮/৪১

الدعاء عند ركوب الدابة

১১। জন্তুর উপর আরোহণের দু‘আ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৩/(১৩, ১৪)

الدعاء عند وقوع المصيبة

১২। বালা মুসীবতের সময় দু‘আ

সর্বমোট ২৯টি আয়াত ঃ ৬/(৪০, ৪১, ৬৩), ৭/(৯৪, ১২৬), ১০/(১২, ২২, ৮৬), ১৭/৬৭, ১৮/১০, ২১/৮৭, ২৩/(২৬, ৩৯), ২৬(১১৭−১১৯, ১৬৯), ২৭/৬২, ২৮/(১৬, ১২, ২৪, ৪৭), ২৯/৬৫, ৩০/৩৩, ৩১/৩২, ৩৯/(৮, ৪৯), ৪১/৫১, ৪৪/২২

← চলমান পাতা

الدعاء للمسلمين

১৩। মুসলিমদের জন্য দু'আ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫৯/১০, ৭১/২৮

دعاء الأنبياء

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ নাবীগণের দু'আ

সর্বমোট ৯৫টি আয়াত ঃ ২/(১২৪-১২৯, ২৬০), ৩/(৩৮, ৪১) ৫/১১৪, ৭/(২৩, ৮৯, ১৩৪, ১৩৫, ১৪৩, ১৫১, ১৫৫), ৯/১২৯, ১০/(৮৮, ৮৯), ১১/৪৫, ১২/(৩৩, ৩৪, ৮৩, ৯২, ১০১), ১৪/(১৫, ৩৫-৪১), ১৭/৮০, ১৯/(৪-৭, ১০), ২০/(২৫-৩৫), ২১/(৭৬, ৮৩, ৮৪, ৮৭, ৮৯, ৯০), ২৩/(২৬, ২৯, ৩৯, ৯৩, ৯৪, ৯৭, ৯৮, ১১৮) ২৬/(১৩, ৭৮-৮৯, ১১৭, ১১৮, ১৮৯), ২৭/১৯, ১৮/৩৪, ২৯/৩০, ৩৭/(৭৫, ১০০), ৩৮/৩৫, ৪০/২৭, ৪৪/(২০, ২২), ৪৫/১০, ৬০/৪, ৬৮/৪৮, ৭১/(২৬-২৮)

دعاء المؤمنين

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ মু'মিনগণের দু'আ

সর্বমোট ৩৮টি আয়াত ঃ ১/(৫, ৬), ৩/(৩৫, ৩৬, ৫৩, ১৯১-১৯৪), ৪/৭৫, ৫/৮৩, ১০/(৮৫, ৮৬), ১৭/(২৪, ৮০, ১১০, ১১১), ১৮/২৪, ২৩/১০৯, ২৫/(৬৫/৭৪), ৪০/৪৪, ৪৬/১৫, ৫২/২৮, ৬০/(৪, ৫), ৬৬/১১, ১১৩/(১-৫) ১১৪/(১-৬)

دعاء الملائكة للمؤمنين

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ মু'মিনদের জন্য ফেরেশতাদের দু'আ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১১/৭৩, ৪০/(৭-৯)

استجابة الدعاء

অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ দু'আ কবূল হওয়া

استجابة دعاء الأنبياء

১। নাবীগণের দু'আ কবূল হওয়া

সর্বমোট ৩৬টি আয়াত ঃ ২/২৬০, ৩/৩৯, ৪১), ৫/১১৫, ১০/৮৯, ১২/৩৪, ১৯/(৭, ১০), ২০/৩৬, ২১/(৭৬, ৭৭, ৮৪, ৮৮, ৯০), ২৬/(১১৯, ১২০, ১৭১-১৭৩), ২৮/৩৫, ২/৩১-৩৪), ৩৭/(৭৫, ১০১), ৩৮/(২৫/৩৬, ৩৯), ৪৪/(২৩, ২৪), ৪৫/(১১-১৩), ৬৮/৫০

استجابة دعاء المؤمنين

২। মুমিনগণের দু'আ কবূ হওয়া

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/১৮৬, ৩/(৩৭, ১৯৫), ৮/৯, ৪০(৪৫, ৪৬, ৬০), ৪২/২৬

التوجه بالدعاء لغير الله

নবম অনুচ্ছেদ ঃ গাইরুল্লাহর জন্য দু'আর সম্মুখীন হওয়া

সর্বমোট ২৫টি আয়াত ঃ ৬/৭১, ৭/(১৯৪, ১৯৫, ১৯৭), ১০/১০৬, ১১/১০১, ১৩/১৪, ১৭/(৫৬/৫৭), ১৮/৫২, ২২/(১২, ৬২, ৭৩), ২৬/২১৩, ২৮/৬৪, ৩১/৩০, ৩৪/৩২, ৩৫/(১৩, ১৪, ৪০), ৩৯/৩৮, ৪০/২০, ৪১/৪৮, ৪৩/৮৬, ৪৬/৫

← চলমান পাতা

الأشربة والأطعمة

অষ্টম পর্ব ঃ পানীয় ও খাদ্য

প্রথম অধ্যায় ঃ পানীয়

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ খাদ্য

الأشربة والأطعمة
অষ্টম পর্ব ঃ পানীয় ও খাদ্য

الأشربة
প্রথম অধ্যায় ঃ পানীয়

ما يحرم من الشراب
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যা পান করা হারাম

شرب الخمر
১। মদ পান

تحريم الخمر والتدرج فيه
১/১। পর্যায়ক্রমে মদ্যপান হারাম হওয়া। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২১৯, ৪/৪৩, ৫/(৯০, ৯১), ১৬/৬৭

الأطعمة
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ খাদ্য

أنواع الأطعمة
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ খাদ্যের প্রকারভেদ

أطعمة مباحة
১। বৈধ খাবার

الأصل إباحة الطيبات
১/১। পবিত্র খাবার বৈধ হওয়ায় মূল কথা।
সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ২/(৫৭, ১৬৮, ১৭২), ৫/(১, ৪, ৫, ৮৮), ৬/(১৪১, ১৪৫), ৭/(১৫৭, ১৬০), ১৬(৭২, ১১৪), ১৭/৭০, ২২/৩০, ২৩/৫১

تحريم طيبات ما أحل الله
১/২। আল্লাহ প্রদত্ত পবিত্র বস্তুকে হারাম করা।
সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ৩/৯৩, ৫/(৮৭, ১০৩), ৬/(১৩৮, ১৩৯, ১৪৩, ১৪৪), ৭/৩২, ১০/৫৯, ১৬/(৩৫, ১১৬), ৬৬/১

أكل الخيل
১/৩। ঘোড়ার গোশত ভক্ষণ–১৬/৮

أكل ميتة البحر
১/৪। সামুদ্রিক মৃত বস্তু ভক্ষণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫/৯৬, ১৬/১৪, ৩৫/১২

أكل السمك
১/৫। মাছ ভক্ষণ।
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৫/৯৬, ১৬/১৪, ৩৫/১২

طعام أهل الكتاب
১/৬। আহলে কিতাবদের খাদ্য–৫/৫

← চলমান পাতা

أطعمة محرمة
২। হারাম খাদ্য
تحريم أكل الدم
২/১। রক্ত ভক্ষণ হারাম।
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৫/৩, ৬/১৪৫, ৭/১৩৩, ১৬/১১৫
تحريم الخبائث
২/২। অপবিত্র বস্তু হারাম।
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(১৭৩, ২১৯), ৭/১৫৭
حكم الميتة
২/৩। মৃত বস্তুর হুকুম
أكل الميتة
ক) মৃত বস্তু খাওয়ার হুকুম।
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৫/৩, ৬/১৪৫, ১৬/১১৫
أكل لحم الخنزير
২/৪। শুকরের গোশত ভক্ষণ।
সর্বমোট ৪টি আয়াত ২/১৭৩, ৫/৩, ৬/১৪৫, ১৬/১১৫
الرخصة للمضطر في أكل المحرم
২/৫। নিরুপায় ব্যক্তির হারাম খাদ্য ভক্ষণের অনুমতি
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৫/৩, ৬/(১১৯, ১৪৫), ১৬/১১৫
آداب الطعام
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ খাদ্যের আদব
الحذر من الإسراف
১। অপব্যয় হতে সাবধানতা।
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/১৪১, ৭/৩১, ৯০/৬
الدعوة إلى طعام
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ খাবারের নিমন্ত্রণ
الاجتماع على الطعام
১। খাদ্যের জন্য একত্রিত হওয়া–২৪/৬১
حقوق الناس من الطعام
২। খাদ্যে মানুষের অধিকার
حق الجائع من الطعام
২/১। ক্ষুধার্থ ব্যক্তির খাদ্য অধিকার। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬৮/২৪, ৯০/১৪
حق الفقير من الطعام
২/২। ফকীরের খাদ্য অধিকার।
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭৪/৪৪, ৭৬/৮, ৮৯/১৮, ৯০/১৬
تفضيل بعض الطعام على بعض
৩। এক খাদ্যকে অন্য খাদ্যের উপর প্রাধান্য প্রদান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৩/৪, ১৮/১৯

← চলমান পাতা

Contents

الانصراف بعد الطعام

৪। খাবার শেষে ফিরে যাওয়া–৩৩/৫৩

المصر مع الضيف

৫। মেহমানের সাথে পীড়াপীড়ি করা–৩৩/৫৩

الذبح

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ যবহ

كيفية الذبح

১। যবহের পদ্ধতি

التسمية قبل الذبح

১/১। যবহের পূর্বে আল্লাহর নাম নেয়া। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৬/১১৫, ২২/(৩৪, ৩৬)

وضع الحيوان عند الذبح

১/২। যবহের সময় জন্তু শোয়ানো–২২/৩৬

ذكات المتردية و النافرة

১/৩। উপর থেকে পড়ে যাওয়া জন্তুর গোশত খাওয়ার বিধান–৫/৩

شروط أكل الذبيحة

২। যবহকৃত পশুর গোশত খাওয়ার শর্তাবলী

ذكر اسم عند الذبح

২/১। যবহ করার সময় নাম নেয়া

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৫/৩, ৬/(১৮, ১৯, ২১), ২২/(৩৪, ৩৬)

الذبح و التسمية لغير الله

২/২। গাইরুল্লাহর জন্য যবহ করণ ও তার নাম নেয়া

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৫/৩, ৬/(১২১, ১৩৮, ১৪৫), ১৬/১১৫

تحريم ما ذبح لغير الله

২/৩। গাইরুল্লাহর জন্য যবহকৃত পশুর গোশত হারাম হওয়া

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/১৭৩, ৫/৩, ৬/১৪৫, ১৬/১১৫

الصيد

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ শিকার

مشروعية الصيد

১। শিকারের বিধান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/(৪, ৯৬)

أدوات الصيد

২। শিকারের অস্ত্র

الصيد بالخذف

২/১। পাথর দ্বারা শিকার–৫/৩

الصيد بالرمح

২/২। বল্লম দ্বারা শিকার–৫/৯৪

← চলমান পাতা

Contents

الصيد بالكلب
২/৩। কুকুর দ্বারা শিকার
أكل الكلب من الصيد
ক) শিকারী কুকুর দ্বারা (কিয়দংশ) ভক্ষিত পশুর গোশত খাওয়া−৫/৩
الكلب المعلم
খ) প্রশিক্ষণপ্রাপ্ত কুকুর−৫/৪
أحكام تتعلق بالصيد
৩। শিকার সংক্রান্ত আহকাম
تحريم ما أكل السبع إلا بعد التزكية
৩/১। হিংস্রপ্রাণীর ভক্ষিত প্রাণী যবহ করা ব্যতীত খাওয়া হারাম−৫/৩
التسمية عند الصيد
৩/২। শিকারের সময় আল্লাহর নাম নেয়া−৫/৪
صيد المحرم في حال إحرامه
৩/৩। ইহরাম অবস্থায় শিকার করা।
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৫/(১, ২, ৯৪, ৯৫, ৯৬)
كفارة صيد المحرم
৩/৪। মুহরিম অবস্থায় শিকারের কাফফারা−৫/৯৫

← চলমান পাতা

اللباس والزينة

নবম পর্ব ঃ পোশাক পরিচ্ছদ ও বেশভূষা

প্রথম অধ্যায় ঃ পোশাক পরিচ্ছদ

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ পোশাক পরিচ্ছদের আদব
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নারীদের পোশাক পরিচ্ছদ

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ যীনাত (সৌন্দর্য) প্রকাশ

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যে সমস্ত সৌন্দর্য প্রকাশ করা অবৈধ
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ খেল-তামাশা

← চলমান পাতা

اللباس والزينة
নবম পর্ব ঃ পোশাক পরিচ্ছদ ও বেশভূষা

اللباس
প্রথম অধ্যায় ঃ পোশাক পরিচ্ছদ

الزينة
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ যীনাত (সৌন্দর্য) প্রকাশ

← চলমান পাতা

Contents

مواصلة الشعر
২। চুল সংযোজন–৪/১১৯
التفلج للحسن
৩। সৌন্দর্যের জন্য দাঁত মসৃণ করা–৪/১১৯
اللهو و اللعب
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ খেল-তামাশা
لعب الميسر
১। জুয়া খেলা
حكم لعب الميسر
১/১। জুয়া খেলার হুকুম।
সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২১৯, ৫/(৯০, ৯১)
مفاسد الميسر
১/২। জুয়ার ক্ষতিকর দিকসমূহ–৫/৯১
اللهو بالغناء
২। গান দ্বারা খেল তামাশা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৭/৬৪, ৫৩/৬১

الأحوال الشخصية

দশম পর্ব ঃ মুসলিম আইন

প্রথম অধ্যায় ঃ সন্তান-সন্ততি

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ বিবাহ

তৃতীয় অধ্যায় ঃ বিবাহ বিচ্ছেদ

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

الأحوال الشخصية
দশম পর্ব ঃ মুসলিম আইন

الأولاد
প্রথম অধ্যায় ঃ সন্তান-সন্ততি

الحمل

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ গর্ভধারণ

تكوين الجنين

১। ভ্রূণ সৃষ্টি। সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ৩/৬, ৭/১৮৯, ২২/৫, ২৩/(১২-১৪), ৩২/(৮, ৯), ৩৫/১১ ৩৬/৭৭, ৩৯/৬, ৫৩/৪৬, ৭০/৩৯, ৭১/১৪, ৭৫/(৩৭, ৩৮), ৭৬/২, ৭৭/(২০, ২১)

أقل الحمل

২। গর্ভধারণের সর্বনিম্ন সময়। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩১/১৪, ৪৬, ১৫

الولادة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সন্তান প্রসব

طلب الولد

১। সন্তান প্রার্থনা। সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/৩৮, ১৮/৪৬, ১৯(৩-৬), ৩৭/১০০

تسمية المولود

২। সন্তানের নামকরণ-৩/৩৬

قتل الأبناء

৩। সন্তান হত্যা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৬/(১৩৭, ১৪০, ১৫১), (১৬/৫৮, ৫৯), ২৫/৬৮, ৬০/১২, ৮১/(৮, ৯)

الولد على دين أبيه

৪। পিতার ধর্মই সন্তানের ধর্ম-৭১/২৭

النسب

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ বংশ

إلحاق النسب بالأب

১। পিতার বংশের সাথে সম্বন্ধীকরণ-৩৩/৫

أنتساب الولد إلى غير أبيه

২। সন্তানকে স্বীয় পিতা ব্যতীত অন্যের সম্বন্ধীকরণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৪, ৫)

التبني

৩। পালকপুত্র। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৩৩/(৪, ৫, ৩৭)

إدخال غير الولد على الزوج

৪। সন্তান ব্যতীত অন্যকে স্ত্রীর কাছে প্রেরণ-৬০/১২

إثبات الأمومة

৫। মাতৃত্ব প্রতিষ্ঠা-৫৮/২

← চলমান পাতা

الرضاعة

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ দুগ্ধদান

وقت الرضاعة المحرمة

১। অবৈধ দুগ্ধপানের সময়। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩৩, ৪৬/১৫

استئجار المرضع

২। দুগ্ধদাত্রী ভাড়া করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩৩, ৬৫/৬

الحضانة

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ প্রতিপালন

الأحق بالحضانة

১। প্রতিপালনে বেশি হকদার। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/(৩৭, ৪৪)

عاطفة الأمومة

২। মাতৃত্বের মমত্ববোধ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৮/(১০, ১৩)

أحقية الأم في الحضانة

৩। প্রতিপালনে মায়ের অগ্রাধিকার–২/২৩৩

النفقة على الأهل

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ পরিবাবর্গের জন্য ব্যয়

الحث على النفقة على الأهل

১। পরিবাবর্গের জন্য ব্যপারে ব্যাপারে উৎসাহ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(১৭৭, ২১৫), ১৭/২৬

أحق الناس بالنفقة

২। ব্যয়ের সর্বাধিক হকদার

সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/(১৭৭, ২১৫, ২৩৩, ২৭৩), ৪/(৮, ৩৬), ১৭/২৬, ২৪/২২

الاعتدال في النفقة على الأهل

৩। পরিবারবর্গের ব্যয়ে মধ্যমপন্থা অবলম্বন করা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৩৩, ১৭/২৯, ২৫/৬৭, ৬৫/৬, ৬৫/৭

تربية الأولاد

সপ্তম অনুচ্ছেদ ঃ সন্তানদের সুশিক্ষা প্রদান

حب الوالدين للأبناء

১। পিতা-মাতা কর্তৃক সন্তানদের ভালবাসা।

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১২/(১৩, ৬৪, ৬৬, ৬৭, ৮৪, ৮৫)

فتنة الأولاد

২। সন্তানাদির ফিতনা

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৩/১৪, ৮/২৮, ৯/৮৫, ১৮/৪৬, ৬৩/৯, ৬৪/১৫

الدعاء للأولاد بالبركة

৩। সন্তানদের জন্য বারাকাতের দু'আ করা। সর্বমোট ৩ট আয়াত ঃ ১৯/৬, ২৫/৭৩, ৪৬/১৫

صلاح الآباء ينفع الأبناء

৪। পিতাদের কল্যাণ সন্তানদের জন্য উপকারী–১৮/৮২

← চলমান পাতা

العدل بين الأبناء

৫। সন্তানদের প্রতি ইনসাফ–১২/৮

نصح الوالد لولده

৬। পিতা কর্তৃক পুত্রকে নসীহত প্রদান। সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/১৩২, ১৩৩, ১১/(৪২, ৪৩), ১২/(৫, ৬৭, ৮৭)৩১/(১৩, ১৬, ১৭, ১৮, ১৯)

حث الأبناء على الخير

৭। পুত্রদেরকে কল্যাণের কাজে উৎসাহ প্রদান। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩১/(১৩, ১৭, ১৮, ১৯)

تعليم الأبناء

৮। সন্তানদের শিক্ষাদান

تعليم الأبناء التصرف في الأمور

৮/১। সন্তানদের লেনদেন শিক্ষাদান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২১/(৭৮, ৭৯)

تعليم الأبناء العبادات

৮/২। সন্তানদের ইবাদত শিক্ষাদান। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(৩২, ৩৩), ৩১/১৭, ৬৬/৬

اليتيم

অষ্টম অনুচ্ছেদ ঃ ইয়াতীম

فضل كفالة اليتيم

১। ইয়াতীমের রক্ষণাবেক্ষণের ফাযীলাত। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৩৬, ৮৯/১৭, ৯৩/৯

أكل مال اليتيم

২। ইয়াতীমের সম্পদ ভক্ষণ

حكم الأكل من مال اليتيم وعقوبته

২/১। ইয়াতীমের সম্পদ ভক্ষণের হুকুম ও তার পরিণতি

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/(২, ৬, ১০), ১০৭২

أكل الولي من مال اليتيم بالحق

২/২। অভিভাবকের ন্যায়ভাবে ইয়াতীমের সম্পদ ভক্ষণ

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৬, ৬/১৫২, ১৭/৩৪

كفالة اليتيم

৩। ইয়াতীমের রক্ষণাবেক্ষণ

مشاركة اليتيم في الطعام

৩/১। ইয়াতীমকে খাবারে অংশগ্রহণ করানো–২/২২০

رد مال اليتيم إليه

৩/২। ইয়াতীমকে তার সম্পদ ফিরিয়ে দেয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৬, ৬/১৫২

الصدقة على اليتامى

৪। ইয়াতীমদের জন্য সাদাকাহ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২(৮৩, ১৭৭, ২১৫), ৪/৮, ৭৬/৮, ৯০/১৫

انقطاع اليتم

৫। ইয়তীম অবস্থার সমাপ্তি। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৬, ৬/১৫২

← চলমান পাতা

Contents

حقوق الوالدين على الأبناء
নবম অনুচ্ছেদ ঃ সন্তানাদির উপর পিতা-মাতার হক

طاعة الوالدين
১। পিতা-মাতার আনুগত্য। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৯/২৩, ১৭(২৩, ২৪), ২৯/৮, ৩১/১৫, ৩৭/১০২

بر الوالدين
২। পিতা-মাতার প্রতি সদ্ব্যবহার
সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ২/৮৩, ৪/৩৬, ৬/১৫১, ১২/৯২, ১২/১০০, ১৭/(২৩, ২৪), ১৯/(১৪, ৩২), ২৯/৮, ৩১/১৪, ৪৬/১৫

الإنفاق على الوالدين
৩। পিতা-মাতার জন্য ব্যয়। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২১৫, ৩০/৩৮

نصح الولد والديه
৪। সন্তান কর্তৃক পিতা-মাতাকে নসীহত প্রদান। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ১৯/(৪৩–৪৫)

الدعاء للوالدين
৫। পিতা মাতার জন্য দু'আ
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ১৪/৪১, ১৭(২৩, ২৪), ১৯/৪৭, ২৬/৮৬, ৩১/১৪, ৭১/২৮

رعاية الوالدين
৬। পিতা-মাতার দেখাশোনা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ১৭(২৩, ২৪), ২৯/৮, ৩১/(১৪, ১৫), ৪৬/১৫

النكاح
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ বিবাহ

الحث على النكاح
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ বিবাহের প্রতি উৎসাহ প্রদান। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/৩, ২৪/৩২, ৩০/২১

النكاح من سنن المرسلين
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ বিবাহ সকল নাবীর সুন্নাত–১৩/৩৮

المحرمات من النساء
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যে সমস্ত নারীকে বিবাহ করা হারাম

حرمة زوجات النبي
১। নাবীগণের স্ত্রীদের হুরমত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(৬, ৫৩)

المحرمات من النسب
২। বংশ হতে যাদের বিবাহ করা হারাম

ما يحرم من النساء بالنسب
২/১। বংশের কারণে যে নারীদের বিবাহ করার হারাম–৪/২৩

الجمع بين الأختين
২/২। দুই বোনকে একত্রিত করণ–৪/২৩

← চলমান পাতা

المحرمات من الرضاع
৩। দুগ্ধপানের কারণে যাদের বিবাহ করা হারাম–৪/২৩
المحرمات من المصاهرة
৪। বিবাহের সম্পর্কের কারণে যে সকল নারীকে বিবাহ করা হারাম
ما يحرم من النساء بالمصاهرة
৪/১। নারীদের মধ্যে বিবাহের কারণে যাদের বিবাহ করা হারাম–৪/২৩
حرمة الربيبة (بنت الزوجة)
৪/২। স্ত্রী কন্যাকে বিবাহ করা হারাম–৪/২৩
حرمة زوجة الأب
৪/৩। পিতার স্ত্রীকে বিবাহ করা হারাম–৪/২২
الزيادة على أربع
৫। চারের অধিক বিবাহ করা
زيادة النبي على أربع زوجات
৫/১। নাবী (ﷺ)-এর চারের অধিক বিবাহ করা–৩৩/৫০
الزواج من غير المسلمة
৬। অমুসলিম নারীকে বিবাহ করা
نكاح الكتابيات
৬/১। আহলে কিতাবের নারীদের বিবাহ করা–৫/৫
نكاح المشركات
৬/২। মুশরিক নারীদের বিবাহ করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২২১, ৬০/১০
نكاح من أسلم من المشركات
৬/৩। মুশরিকদের মধ্যে ইসলাম গ্রহণকারীণী নারীকে বিবাহ করা–২/২২১
المحرم
৭। মাহরাম
محارم المرأة
৭/১। নারীদের মাহরাম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/৩১, ৩৩/৫৫
اطلاع المحارم على زينة المرأة
৭/২। মাহরামদের নারীর সৌন্দর্য অবগত হওয়া–৩৩/৫৫
نكاح المعتدة
৮। ইদ্দতপালনকারীণীর বিবাহ করা–২/২৩৫
نكاح المحصنات
৯। স্বামী থাকা নারীকে বিবাহ করা
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(২৪, ২৫)
الخطبة
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ বিবাহের পয়গাম
مشروعية الخطبة
১। পয়গামের বিধান–২/২৩৫

← চলমান পাতা

ما يباح للخاطب
২। বিবাহের প্রস্তাবদাতার জন্য যা বৈধ
اختيار المرأة
২/১। নারীদের পছন্দের এখতিয়ার
حرية اختيار المرأة
ক) পছন্দের ব্যাপারে নারী স্বাধীনতা-২/২৪০
حسن اختيار المرأة
খ) পাত্রী পছন্দের ব্যাপারে উত্তম পছন্দ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/২৫, ২৪/৩, ২৫/৭৪
نكاح الأبكار
গ) কুমারীদের বিবাহ-৬৬/৫
نكاح الثيب
ঘ) স্বামী পরিত্যাক্তা নারীদের বিবাহ-৬৬/৫
نكاح الزانية
ঙ) ব্যাভিচারিণীর বিবাহ-২৪/৩
اختيار المرأة الصالحة
চ) সতীসাধ্বী নারী পছন্দ করা। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/৩৪, ২৪/২৬, ২৫/৭৪, ৬৬/৫
نكاح الأمة
ছ) দাসীর বিবাহ।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/২৫, ২৪/৩২
النظر إلى المرأة
২/২। পাত্রী দেখা-২৪/৩০
نظر المرأة إلى الرجل
২/৩। পাত্রী কর্তৃক পাত্র দেখা-২৪/৩১
عرض المرأة على الخاطب
৩। পয়গাম দাতার সম্মুখে পাত্রী পেশ করা-২৮/২৭
حكم النكاح
৪। বিবাহের হুকুম-২৪/৩২
نكاح المحلل
৫। হিলা বিবাহ-২/২৩০
عقد النكاح
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ বিবাহের চুক্তিনামা
شروط عقد النكاح
১। বিবাহের চুক্তির শর্তাবলী
الولاية في عقد النكاح
১/১। বিবাহের চুক্তিতে ওলী থাকা
اشتراط الوالي في عقد النكاح
ক) বিবাহ চুক্তিতে হওয়া শর্ত-২/২৩২

← চলমান পাতা

Contents

ولاية الكافر على المسلمة

খ) মুসলিম নারীর উপর কাফিরের অভিভাবকত্ব-৬০/১০

عضل الولي

গ) অলির প্রতিবন্ধকতা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩২, ৪/১২৭

اشتراط الصداق في النكاح

১/২। বিবাহে মোহর শর্ত

المهر من حقوق الزوجة

ক) মোহরানা স্ত্রীদের অধিকার। সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৪/(৪, ২০, ২১, ২৪, ২৫)৫/৫, ৬০/১০

الزواج دون مهر

খ) বিনা মোহরানায় বিবাহ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩৬, ৪/৪

أقل المهر وأكثره

গ) মোহরের সর্বনিম্ন ও সর্বাধিক পরিমাণ-৪/২০

الاعتدال في الصداق

ঘ) মোহরানায় মধ্যমপন্থা অবলম্বন করা-৪/২৫

إبراء الزوج من المهر

ঙ) মোহর হতে স্বামীকে মুক্তি প্রদান।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৩৭, ৪/৪

حبس الصداق عن المرأة

চ) স্ত্রীর মোহর আটকে দেয়া। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২২৯, ৪/(৪, ২০, ২১)

ما يصلح مهرا

ছ) মোহর কি হতে পারে

جعل المنفعة صداقا

ছ/(১) উপকার সাধনকে মোহর হিসেবে গণ্য করা-২৮/২৭

ما يثبت به الصداق

ছ/(২) কিসের দ্বারা মোহরানা প্রমাণিত হবে। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(২১, ২৪)

حقوق الزوجين

ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ স্বামী-স্ত্রীর অধিকার

حق الزوج على الزوجة

১। স্ত্রীর উপর স্বামীর অধিকার

طاعة الزوجة زوجها

১/১। স্ত্রীর স্বামীর প্রতি আনুগত্য-৪/৩৪

نشوز المرأة

১/২। স্ত্রীর অবাধ্যতা

التصرف مع الناشز

ক) অবাধ্যের সাথে লেনদেন-৪/৩৪

← চলমান পাতা

الإصلاح بين الناشز وزوجها
খ) অবাধ্য নারী ও তার স্বামীর মাঝে সংশোধন–৪/৩৫

حفظ الزوج وبيته
১/৩। স্বামী ও তার গৃহের হিফাযাত করা

حفظ الزوجة بيت زوجها
ক) স্বামীর গৃহকে স্ত্রী কর্তৃক সংরক্ষণ করণ–৪/৩৪

حفظ مال الزوج
খ) স্বামীর সম্পদের সংরক্ষণ করণ–৪/৩৪

حق الزوجة على الزوج
২। স্বামীর প্রতি স্ত্রীর কর্তব্য

الترفق بالنساء
২/১। নারীদের প্রতি নম্রতা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/(১৯, ৩৪), ৬৫/৬

نفقة الزوجة
২/২। স্ত্রীর খোরপোষ প্রদান

مقدار النفقة على الأهل
ক) পরিবারের খরচের পরিমাণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৩৩, ৬৫/(৬, ৭)

العشرة
২/৩। মুআমেলা

حسن العشرة
ক) সুন্দর মুআমেলা। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(২২৮, ২২৯, ২৩১), ৪/১৯, ৬৫/২

الميل إلى بعض الزوجات
খ) কোন স্ত্রীর প্রতি বেশি আকৃষ্ট হওয়া–৪/১২৯

آداب الجماع
গ) মিলনের আদব। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(২২২, ২২৩)

طبائع المرأة وأخلاقها
ঘ) নারী স্বভাব ও তার চরিত্র। সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১২/(২৮, ৩০, ৫০) ৪৩/১৮, ৫১/২৯

وطء الحائض
ঙ) ঋতুবতী নারীর সাথে সহবাস–২/২২২

وطء ملك اليمين
চ) দাসীর সাথে সহবাস।
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/(৩, ২৪), ২৩/৬, ৩৩(৫০, ৫২), ৭০/৩০

حقوق مشتركة
৩। যৌথ অধিকারসমূহ

حسن الصحبة
৩/১। উত্তম সাহচর্য। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১২৯, ৭/১৯৯

← চলমান পাতা

←— চলমান পাতা

طلاق البدعة

৩/২। বিদআত ত্বালাক–৬৫/১

طلاق الثلاث

৩/৩। তিন ত্বালাক–২/২২৯

الفاظ الطلاق

৪। ত্বালাকের শব্দাবলী

تخيير الزوجة

৪/১। স্ত্রীদের স্বাধীনতা।

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/(২৮, ২৯)

الرجعة

৫। স্ত্রীকে ফেরত নেয়া

الطلاق الرجعي

৫/১। রাজ‘ঈ ত্বালাক।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(২২৮, ২২৯, ২৩১) ৬৫/৬

الطلاق البائن

৫/২। বায়েন ত্বালাক

الطلاق البائن بينونة كبرى

ক) ত্বালাকে বায়ন হচ্ছে বড় (অফেরতযোগ্য) বিচ্ছেদ–২/৩০

الطلاق قبل الدخول

৫/৩। যৌন মিলন সংঘটিত হবার পূর্বে ত্বালাক

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/(২৩৬, ২৩৭), ৩৩/৪৯

الخلع

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ খোলা ত্বালাক

المضارة بالزوجة

১। স্ত্রীর ক্ষতিসাধন। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(২২৯, ২৩১), ৪/১৯, ৬৫/৬

حكم الخلع

২। খোলা ত্বালাকের বিধান–২/২২৯

اللعان

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ লি‘আন

حكم اللعان

১। লি‘আনের হুকুম–২৪/৬

كيفية اللعان

২। লি‘আনের পদ্ধতি। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২৪/(৬–৯)

إسلام أحد الزوجين

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ স্বামী-স্ত্রীর মধ্যে কোন এক জনের ইসলাম গ্রহণ

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬০/(১০, ১১)

الإيلاء

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ ইলা (স্ত্রীর ব্যাপারে কসম)–২/২২৬

← চলমান পাতা

آثار الفرقة
ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ বিচ্ছেদের পূর্বাভাষ
العدة
১। ইদ্দত
آيات العدة
১/১। ইদ্দতের আয়াতসমূহ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২২৮, ৬৫/৪
عدة الآيسة
১/২। বার্ধক্যজনিত ঋতুবন্ধ নারীর ইদ্দত–৬৫/৪
عدة الحامل
১/৩। গর্ভবতীর ইদ্দত–৬৫/৪
عدة الصغيرة
১/৪। নাবালিকার ইদ্দত–৬৫/৪
عدة الوفاة
১/৫। মৃত্যুর ইদ্দত
مدة عدة الوفاة
ক) মৃত্যুর ইদ্দতের সময়কাল–২/২৩৪
مكان عدة الوفاة
খ) মৃত্যুর ইদ্দত পালনের স্থান–২/২৪০
عدة المدخول بها
১/৬। যৌনমিলন হওয়া নারীর ইদ্দত–২/২২৮
عدة غير المدخول بها
১/৭। যৌন মিলন না হওয়া নারীর ইদ্দত–৩৩/৪৯
مكان العدة
১/৮। ইদ্দত পালনের স্থান
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৬৫/(১, ৬)
التزين للخطاب بعد العدة
১/৯। ইদ্দত পূর্ণ হবার পর পয়গামের উদ্দেশে নারীর সাজসজ্জা গ্রহণ–২/২৩৪
مراجعة الزوجة بعد العدة
১/১০। ইদ্দত পালনের পর স্ত্রীকে ফিরিয়ে নেয়া–২/২৩০
النفقة في العدة
২। ইদ্দতে খোরপোশ প্রদান
النفقة على المعتدة
২/১। ইদ্দত পালনকারিণীর জন্য খোরপোশ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৩৩, ৬৫/(৬, ৭)
مسكن المعتدة
২/২। ইদ্দতের স্থান। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৪০, ৬৫(১, ৬)

← চলমান পাতা

المتعة للمطلقة

২/৩। ত্বালাকপ্রাপ্তার জন্য কিছু প্রদান।

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(২৩৬, ২৩৭, ২৪১), ৩৩/৪৯

الظهار

চতুর্থ অধ্যায় ঃ যিহার (স্ত্রীকে মায়ের সাথে তুলনা করা)

سبب نزول آية الظهار

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যিহারের আয়াত নাযিলের কারণ–৫৮/১

حكم الظهار

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যিহারের হুকুম। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩৩/৪, ৫৮/২

كفارة الظهار

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যিহারের কাফফারা সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫৮/(৩, ৪)

الميراث

পঞ্চম অধ্যায় ঃ সম্পদের অংশিদারিত্ব

الميراث في بداية الإسلام

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ইসলামের প্রাথমিক যুগে সম্পত্তিবন্টন। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১৮০, ৪/৭, ৮/৭২

الحقوق المتعلقة بالتركة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ছেড়ে যাওয়া সম্পত্তি সম্পর্কিত হকসমূহ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(১১, ১২)

أسباب الميراث

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মীরাসের কারণসমূহ

الميراث بالقرابة

১। নিকটাত্মীয়ের কারণে অংশিদারিত্ব। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/(১১, ১৭৬), ৮/৭৫

الميراث بالزوجية

২। বৈবাহিক অংশিদারিত্ব–৪/১২

الميراث بعقد الولاء

৩। ওয়ালার (আযাদকৃত গোলাম) সঙ্গে সম্পর্কের কারণে অংশিদারিত্ব–৪/৩৩

أقسام الورثة

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ ওয়ারিসদের প্রকারভেদ

الميراث بالولاء

১। ওয়ালার কারণে অংশিদারিত্ব–৪/৩৩

العصبة

২। অনির্ধারিত অংশিদার

التعصيب من جهة البنوة

২/১। সন্তান হবার কারণে অনির্ধারিত অংশিদার–৪/১১

← চলমান পাতা

← চলমান পাতা

المعاملات

একাদশ পর্ব ঃ লেনদেন

← চলমান পাতা

Contents

المعاملات
একাদশ পর্ব ঃ লেনদেন
المعاوضات
প্রথম অধ্যায় ঃ বিনিময়

البيع
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ক্রয় বিক্রয়

مشروعية البيع وفضله
১। ক্রয় বিক্রয়ের বিধান ও ফাযীলাত–২/২৭৫

الحث على الكسب
২। উপার্জনের প্রতি উৎসাহ প্রদান।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৮২, ১৭/১২

التجارة في البر
৩। স্থল পথে ব্যবসা–১০৬/২

التجارة في البحر
৪। নদীপথে ব্যবসা।
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/১৬৪, ১৬/১৪, ১৭/৬৬, ৩০/৪৬, ৩৫/১৬

آداب البيع
৫। ক্রয় বিক্রয়ের আদব

توقي الحرام في البيع
৫/১। ক্রয় বিক্রয়ে হারাম থেকে বেঁচে থাকা
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৬/১৫২, ২৬/(১৮১–১৮৩), ৫৫/(৮, ৯)

شروط البيع
৬। ক্রয়-বিক্রয়ের শর্তাবলী

اشتراط الرضا في البيع
৬/১। ক্রয়-বিক্রয়ে সম্মতি শর্তের অন্তর্ভুক্ত–৪/২৯

الربا
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সুদ

حكم الربا
১। সুদের হুকুম।
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(২৭৫, ২৭৬, ২৭৮), ৩/১৩০, ৩০/৩৯

عقوبة الربا
২। সুদের শাস্তি।
সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(২৭৬, ২৭৯)

← চলমান পাতা

الإجارة

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ভাড়া প্রদান

المعقود عليه في الإجارة

১। ভাড়ায় চুক্তিবদ্ধ ব্যক্তি

الاستئجار على عمل مستقبل

১/১। ভবিষ্যৎ কাজের জন্য ভাড়ার চুক্তি–২৮/২৭

مدة الإجارة

২। ভাড়া প্রদানের সময়কাল

تحديد مدة الإجارة

২/১। ভাড়ার সময়কাল নির্ধারণ–২৮/২৭

جواز الإجارة

২/২। ভাড়া বৈধ হওয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১৮/৯৪, ২৮/২৭

القرض

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ ঋণ

إنظار المعسر

১। অভাগ্রস্তকে ছাড় দেয়া–২/২৮০

وضع الديون

২। ঋণ মওকুফ করা–২/২৮০

اغتياب المدين المماطل

৩। টালবাহানীকারী ঋণ গ্রহিতার অনুপস্থিতি–৪২/৪১

دين الميت

৪। মৃতের ঋণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/(১১, ১২)

القرض إلى أجل مسمى

৫। নির্ধারিত সময়ের জন্য ঋণ প্রদান–২/২৮২

توثيق الديون

৬। ঋণ নথিভুক্তকরণ। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(২৮২, ২৮৩)

المكاتبة

৭। পরস্পর লিপিবদ্ধকরণ–২৪/৩৩

التبرعات

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ অনুদানসমূহ

الوصية

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ওয়াসীয়াত

مشروعية الوصية

১। ওয়াসীয়াতের বিধান

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৮০, ৪/(১১, ১২), ৫/১০৬

← চলমান পাতা

تغيير الوصية والرجوع فيها

২। ওয়াসীয়াত পরিবর্তন ও প্রত্যাহার। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮২, ৫/১০৭

الشهادة على الوصية

৩। ওয়াসীয়াতের সাক্ষ্যপ্রদান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮১, ৫/১০৬

صدقة التطوع

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নফল সদাক্বাহ

الحث على الصدقة

১। সদাক্বাহ প্রদান উৎসাহ প্রদান

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ২/(১৯৫, ২৫৪, ২৬১, ২৬৭), ৪/৩৯, ৮/৩, ৯/১০৪, ১২/৮৮, ১৩/২২, ১৬/(৭৫, ৯০), ৩৫/২৯, ৫৭/(৭, ১০), ৬৬/১০, ৯৩/১০

فضل صدقة التطوع

২। নফল সদাক্বার ফাযীলাত

أجر صدقة التطوع

২/১। নফল সদাক্বার সাওয়াব।

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(২৪৫, ২৬১, ২৬২, ২৬৮, ২৭৪), ১৩/২২

تنمية المال بالصدقة

২/২। সদাক্বায় সম্পদের প্রবৃদ্ধি। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(২৬৮, ২৭৬), ৯/১০৩, ৩৪/৩৯

الصدقة للجهاد في سبيل الله

২/৩। আল্লাহর পথে জিহাদের জন্য সদাক্বাহ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(১৯৫, ২৬১, ২৬২), ৮/৬০, ৯/২০, ৬১/১১

سؤال الصدقة

৩। সাদাকাহ প্রার্থনা

الاستقصاء في السؤال

৩/১। যাচঞার বিষয় খতিয়ে দেখা–২/২৭৩

الاستعفاف عن المسألة

৩/২। যাচঞা হতে বিরত থাকা–২/২৭৩

رد السؤال

৩/৩। যাচঞায় ফিরিয়ে দেয়া

التلطف في رد السؤال

ক) যাচঞাকারীকে ফিরিয়ে দেয়ার সময় নম্রতা অবলম্বন করা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৬৩, ১৭/২৮

التصدق بفحش وغلظة

খ) দান করে খোঁটা দেয়া ও রূঢ় আচরণ করা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/(২৬৩, ২৬৪)

← চলমান পাতা

شروط الصدقة
৪। সদাক্বাহ্‌র শর্তাবলী
النية في الصدقة
৪/১। সদাক্বায় নীয়্যাত
সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ২/(১৬১, ২৬২, ২৬৪, ২৬৫, ২৭২), ৪/১১৪, ৯/(৯৮, ৯৯), ৭৬/৯, ৯২/২০
طيب المال في الصدقة
৪/২। সদাক্বাহ্‌য় উত্তম মাল–২/২৬৭
أولى الناس بالصدقة
৫। সদাক্বাহ্‌র যোগ্যতর ব্যক্তি
الصدقة على القرابة
৫/১। নিকটাত্মীয়ের জন্য সদাক্বাহ
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২১৫, ৪/৮, ১৬/৯০, ১৭/২৬
الصدقة على المعسر
৫/২। অভাবগ্রস্তদের জন্য সদাক্বাহ–২/২৮০
إخفاء الصدقة
৬। সদাক্বাহ্‌য় গোপনীয়তা
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(২৭১, ২৭৪), ১৪/৩১, ৩৫/২৯

الإطلاقات

তৃতীয় অধ্যায় ঃ সাধারণ ওয়াসীয়াত

(الإيصاء) الوصاية
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ওয়াসীয়াত
الوصاية على اليتيم
১। ইয়াতীমের জন্য ওয়াসীয়াত
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২২০, ৪/(৩, ৬, ১২৭)
أكل الوصي مال اليتيم
২। ওয়াসীয়াতকৃত ব্যক্তির ইয়াতীমের সম্পদ ভক্ষণ
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৪/(৬, ১০, ১২৭)– ৬/১৫২, ১৭/৩৪

التقييدات

চতুর্থ অধ্যায় ঃ নির্দিষ্ট ওয়াসীয়াত

الحجر
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সম্পদ প্রদানে বাধা
حكم إضاعة المال
১। সম্পদ অপচয় করার বিধান–৪/৫

← চলমান পাতা

من يحجر عليه

২। কাকে বাধা দেয়া হবে

الحجر على الصبي

২/১। নাবালককে সম্পদ প্রদান হতে বিরত থাকা

رفع الحجر عن الصبي

ক) নাবালকের উপর থেকে নিষেধাজ্ঞা উঠিয়ে নেয়া

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৬, ১৭/৩৪

الحجر على السفيه

২/২। নির্বোধকে সম্পদ প্রদানে বাধা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/২৮২, ৪/৫

التوثيقات

পঞ্চম অধ্যায় ঃ দলীলদস্তাবেজ

الرهن

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ বন্ধক

مشروعية الرهن

১। বন্ধকের বিধান–২/২৮৩

الكفالة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ অভিভাবকত্ব

مشروعية الكفالة

১। অভিভাবকত্বের বিধান–১২/৭২

الضمانات

ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ জামানত রাখা

الغصب

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ছিনতাই

عاقبة الغصب

১। ছিনতাইয়ের পরিণতি–৪/৩০

← চলমান পাতা

الأقضية والأحكام

দ্বাদশ পর্ব ঃ বিচার ফায়সালা

প্রথম অধ্যায় ঃ শরঈ প্রশাসনসমূহ

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সাধারণ প্রশাসন
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ বিশেষ প্রশাসন

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ বিচার ফায়সালা

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ইনসাফের ফায়সালা প্রদানের ফাযীলাত
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ফায়সালার আদব
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ বিচারালয়
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ বিচারক কি দ্বারা ফায়সালা করবে
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ মোকাদ্দমা

তৃতীয় অধ্যায় ঃ সাক্ষ্য প্রদান

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সাক্ষ্য প্রদানের শর্তাবলী
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যার উপর সাক্ষী দেয়া হয়
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সাক্ষীর মাধ্যমে বিচার ফায়সালা প্রদান

← চলমান পাতা

الأقضية والأحكام

দ্বাদশ পর্ব ঃ বিচার ফায়সালা

الولايات الشرعية

প্রথম অধ্যায় ঃ শরঈ প্রশাসনসমূহ

الولاية العامة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সাধারণ প্রশাসন

ولاية الإمامة

১। নেতৃত্বের প্রশাসন

صفات الإمام

১/১। নেতার গুনাগুণ–২/২৪৭

ولاية غير المسلم

১/২। অমুসলিমদের কর্তৃত্ব। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/(১৩৯, ১৪১, ১৪৪), ৮/৭৩

الأئمة المضلون

১/৩। পথভ্রষ্ট নেতাগণ

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ৫/৭৭, ৯/(১২, ৩৪), ১১/(৫৯, ৯৭, ৯৮), ১৪/২৮, ২৯/(১২, ১৩), ৩৪/(৩১–৩৩), ৪০/(২৯, ৪৭), ৪৩/৫৪, ৪৫/১৯, ৭১/২৪

بطانة ولاة الأمور

১/৪। প্রশাসকদের সাথে ঘনিষ্টতা

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ৩/১১৮, ৯/(১৬, ২৩, ২৪), ১১/১১৩, ৩৩/১, ৫৮/১৪, ৬০/(১, ৪, ৯, ১৩)

طرق تولي الإمامة

২। মামত গ্রহণের পদ্ধতি

الاستخلاف في الحكم

২/১। বিচারে নেতৃত্ব দান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/(১৪২, ১৫০)

واجبات الإمام

৩। নেতার অপরিহার্যতাসমূহ

مسئولية الأمير أو الراعي

৩/১। অধিনস্তদের ব্যাপারে নেতার জবাদিহিতা

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৫/৪২, ২৬/২১৫, ২৭/২০, ৩৩/৬, ৩৮/২৬, ৪৯/৭

محاسبة العمال

৩/২। শ্রমিকদের আত্মসমালোচনা

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৭/১৫০, ২০/(৯২, ৯৩), ২৭/(২১, ২৭)

عطاء الإمام من بيت المال

৩/৩। ইমামকে বায়তুল মাল থেকে প্রদান–১২/৭২

← চলমান পাতা

حقوق الإمام

৪। ইমামের হক

السمع والطاعة للإمام

৪/১। ইমামের শ্রবণ ও আনুগত্য–২৪/৪৮

مبادئ نظام الحكم الإسلامي

৪/২। ইসলামী হুকুমের নীতিমালা

الشورى في الحكم

ক) বিচারকার্যে পরামর্শ গ্রহণ। সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৩/১৫৯, ২৭/(৩২, ৩৩), ৪২/৩৮

العدل في الحكم

খ) বিচারকার্যে ন্যায় ইনসাফ

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/(৫৮, ১৩৫), ৫/৮, ৩৮/২৬, ৪২/১৫, ৪৯/৯

الولايات الخاصة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ বিশেষ প্রশাসন

استعمال العمال والولاة

১। শ্রমিক ও অভিভাবক নিযুক্ত করণ

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৭/(১৪২, ১৫০), ২০/(২৯–৩২), ২৮/৩৪

الأقضية

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ বিচার ফায়সালা

فضل القضاء بالعدل

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ইনসাফের ফায়সালা প্রদানের ফাযীলাত

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/(৫৮, ১৩৫), ৫/৪২

آداب القضاء

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ফায়সালার আদব

الإنصاف في الحكم

১। বিচারকার্যে ইনসাফ

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৪/(৫৮, ১৩৫), ৬/১৫২, ৩৮/২২, ৪২/১৫

تجنب الرشوة والهدية

২। ঘুষ ও উপহার গ্রহণ হতে বিরত থাকা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৮৮, ২৭/৩৬

كراهية التسرع في الحكم

৩। বিচারকার্যে তাড়াহুড়া করা অপছন্দ হওয়া। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৭/১৫০, ৪৯/৬

القضاء بالظاهر

৪। বাহ্যিক অবস্থা দেখে ফায়সালা প্রদান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ১২/৭৯, ২০/৯৩

التزام الشريعة في الحكم

৫। বিচারকার্যে শরীয়তের পাবন্দ হওয়া। সর্বমোট ১৪টি আয়াত ঃ ২/২১৩, ৩/২৩, ৪/(৬০, ১০৫), ৫/(৪৩–৪৫, ৪৭–৫০, ৬৮), ৭/১৪২, ৪৫/১৮

← চলমান পাতা

Contents

(مجلس القضاء (المحكمة

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ বিচারালয়

سماع القاضي حجج الخصوم

১। বিচারক কর্তৃক প্রতিপক্ষের বাদানুবাদ শ্রবণ

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৭/১৫০, ১২/৫২, ২৭/(২২, ২৩)

ما يقضي به القاضي

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ বিচারক কি দ্বারা ফায়সালা করবে

القضاء باليمين

১। শপথের মাধ্যমে বিচার

التشديد في اليمين الفاجرة

১/১। মিথ্যা শপথের ব্যাপারে কঠোরতা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/(৭, ৯)

تغليظ اليمين

১/২। শপথের কাঠিন্য

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/(৭, ৯)

كيفية الاستحلاف

১/৩। শপথ করানোর পদ্ধতি–৫/১০৭

(القضاء بالإقرار (الاعتراف

২। স্বীকারোক্তির মাধ্যমে বিচার করা–১২/৫৬

الخصومة

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ মোকাদ্দমা

(استيفاء الحق بغير قضاء (مسألة الظفر

১। বিনা বিচারে অধিকার গ্রহণ করা–৪২/৪১

الشهادة (البينة)

তৃতীয় অধ্যায় ঃ সাক্ষ্য প্রদান

شروط الشاهد

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সাক্ষ্য প্রদানের শর্তাবলী

عدالة الشهود

১। সাক্ষ্য প্রদানের বিচারালয়

اشتراط عدالة الشاهد

১/১। আদালতে সাক্ষী থাকার ব্যাপারে শর্তারোপ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৩৫, ৫/১০৬, ৬৫/২

شهادة الزور

১/২। মিথ্যা সাক্ষী। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১৩৫, ৫/৮

انتفاء التهمة عن الشاهد

১/৩। সাক্ষীকে অভিযুক্ত মুক্ত হওয়া

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/১৩৫, ৬/১৫২

← চলমান পাতা

شهادة النساء
২। নারীদের সাক্ষ্য–২/২৮২

المشهود عليه
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যার উপর সাক্ষী দেয়া হয়

الشهادة على جور
১। অত্যাচারের উপর সাক্ষ্য–২৫/৭২

الشهادة بالزنا
২। ব্যাভিচারের সাক্ষ্য–৪/১৫

الشهادة بالطلاق و الرجعة
৩। ত্বালাক ও রাজাআতের সাক্ষ্য–৬৫/২

الشهادة بالدين و المال
৪। ঋণ ও সম্পদের সাক্ষ্য। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৮২, ৪/৬, ৫/১০৬

القضاء بالشهادة
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সাক্ষীর মাধ্যমে বিচার ফায়সালা প্রদান

الأمر بالإشهاد
১। সাক্ষ্য দেয়ার নির্দেশ–২/২৮২

اختيار الشهود
২। সাক্ষী নির্ধারণ–২/২৮২

خير الشهود
৩। উত্তম সাক্ষ্য–৭০/৩৩

عدد الشهود
৪। সাক্ষ্যের সংখ্যা। সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/২৮২, ৪/১৫, ৫/১০৬, ২৪/(৪, ১৩), ৬৫/২

التماس البينة
৫। প্রমাণ চাওয়া। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/২৮২, ২১/৬১, ৪৯/৬

كتمان الشهادة
৬। সাক্ষ্য গোপন করা
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/(১৪০, ২৮২, ২৮৩), ৪/১৩৫, ৫/১০৬, ৭০/৩৩

تغيير الشهادة
৭। সাক্ষ্য পরিবর্তন করা। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৩৫, ৫/(৮, ১০৮)

اختلاف الشهود
৮। সাক্ষ্যের বৈপরীত্য। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/(১০৭, ১০৮)

التسارع إلى الشهادة
৯। সাক্ষী দেয়ার ব্যাপারে অতি উৎসাহী হওয়া–২/২৮২

القرعة في المشكلات
১০। অসুবিধায় লটারী করা। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/৪৪, ৩৭/১৪১

← চলমান পাতা

الجنايات

ত্রয়োদশ পর্ব ঃ অপরাধসমূহ

← চলমান পাতা

الجنايات

ত্রয়োদশ পর্ব ঃ অপরাধসমূহ

العقوبات

প্রথম অধ্যায় ঃ শাস্তিসমূহ

أنواع العقوبات

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ শাস্তির প্রকারভেদ

عقوبات محددة (الحدود)

১। নির্ধারিত শাস্তিসমূহ– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭৮, ৫/৪৫

جريمة الردة

দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ মুরতাদ হবার পাপ

ما يعد ردة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যা মুরতাদ হিসেবে বিবেচিত

ردة من سب النبي

১। নাবী (ﷺ) যে গালি দিল সে মুরতাদ–৯/১২

الإكراه على الردة

২। যবরদস্তি মুরতাদ বানানো–১৬/১০৬

عقوبة الردة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মুরতাদের শাস্তিসমূহ

عقوبة الردة في الآخرة

১। আখিরাতে মুরতাদের শাস্তিসমূহ–২/২১৭

جريمة القتل (الجناية على النفس)

তৃতীয় অধ্যায় ঃ হত্যা অপরাধ

حكم القتل

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ হত্যার হুকুম

ذم القتل

১। হত্যার নিন্দা– –১৭/৩৩

القتل أحد الكبائر

২। হত্যা কাবীরাহ গুনাহর অন্তর্ভুক্ত

সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ২/৮৪, ৪/(২৯, ৩০, ৯২, ৯৩), ৫/৩২

الترهيب من القتل

৩। হত্যার ব্যাপারে ভীতি প্রদান

সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/৮৫, ৪/(৯২, ৯৩), ৫/৩২

← চলমান পাতা

تحريم القتل

৪। হত্যার নিষেধাজ্ঞা

قتل الأولاد

৪/১। সন্তান-সন্ততি হত্যা

সর্বমোট ৯টি আয়াত ঃ ৬/(১৩৭, ১৪০, ১৫১), ১৬/(৫৮, ৫৯), ২৫/৬৮, ৬০/১২, ৮১/(৮, ৯)

أول من سن القتل

৪/২। সর্বপ্রথম হত্যার প্রবর্তক–সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৫/(২৭–৩০)

أقسام القتل

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ হত্যার প্রকারভেদ

القتل العمد

১। ইচ্ছাকৃত হত্যা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭৮, ৪/৯৩

قتل الخطأ

২। ভুলক্রমে হত্যা–৪/৯২

عقوبة القتل

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ হত্যার শাস্তিসমূহ

القصاص

১। কিসাস (প্রতিশোধ গ্রহণ)

مشروعية القصاص

১/১। কিসাসের বিধান

সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/(১৭৮, ১৭৯), ৫/৪৫, ৬/১৫১, ১৭/৩৩

الحكمة في القصاص

১/২। কিসাসের হিকমত–২/১৭৯

القصاص في بني إسرائيل

১/৩। বানী ইসরাঈলের মধ্যে কিসাস–৫/৪৫

العفو عن القصاص

১/৪। কিসাস থেকে ক্ষমা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭৮, ৫/৪৫

الخيار في القصاص

১/৫। কিসাসে শ্রেষ্ঠতা–২/১৭৮

القود بين النساء والرجال

১/৬। নারী ও পুরুষের মধ্যে কিসাস গ্রহণ–২/১৭৮

قتل العبد بالعبد

১/৭। দাসের বদলে দাস হত্যা–২/১৭৮

تمكين ولي الدم من القصاص

১/৮। নিহত ব্যক্তির উত্তরাধিকারীকে কিসাস গ্রহণের ক্ষমতা প্রদান

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৫/৪৫, ১৭/৩৩

Contents

طلب دم امرئ بغير حق

১/৯। অন্যায়ভাবে কিসাস গ্রহণ। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৬/১৫১, ১৭/৩৩, ২৫/৬৮

دية النفس

২। নফসের ক্ষতিপূরণ

مشروعية الدية

২/১। ক্ষতিপূরণের বিধান। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৭৮, ৪/৯২

القتل بعد قبول الدية

২/২। ক্ষতিপূরণ দিতে স্বীকার করার পর হত্যা–২/১৭৮

كفارة القتل

৩। হত্যার কাফফারা–৪/৯২

ندم القاتل وتوبته

৪। হত্যাকারীর অনুতপ্ত হওয়া ও তার তাওবাহ–৪/৯২

الجناية على ما دون النفس
চতুর্থ অধ্যায় ঃ হত্যা অপেক্ষা নিম্নস্তরের অপরাধসমূহ

عقوبة الجراح

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ আহত করার শাস্তি

القصاص في الجراح

১। আহত হওয়ায় প্রতিশোধ গ্রহণ–৫/৪৫

سقوط عقوبة الجراح

২। আহত করার শাস্তি কার্যকর না হওয়া–৫/৪৫

جريمة الزنا
পঞ্চম অধ্যায় ঃ ব্যভিচারের পাপ

حكم الزنا

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ব্যভিচারের হুকুম

ذم الزنا

১। ব্যভিচারের নিন্দা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৪/(২৪, ২৫), ৫/৫, ১৭/৩২, ১৯/২৮, ২৩/৭, ৭০/৩১

فضل ترك الفواحش

২। অশ্লীল কাজ পরিত্যাগের মর্যাদা

সর্বমোট ১০টি আয়াত ঃ ৪/৩১, ১৭/৩২, ২৩/(৫, ১০, ১১), ৪২/৩৭, ৫৩/৩২, ৭০/(২৯–৩১)

الإكراه على الزنا

৩। ব্যভিচারে যবরদস্তি করা–২৪/৩৩

← চলমান পাতা

زنا الجوارح

৪। অঙ্গ প্রতঙ্গের ব্যাভিচার – সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/(৩০, ৩১),

إثبات الزنا

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ব্যাভিচারের প্রমাণ

الشهادة على الزنا

১। ব্যভিচারের সাক্ষ্য। সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/১৫, ২৪/(৪, ১৩)

عقوبة الزنا

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ব্যভিচারের শাস্তিসমূহ

جلد الزاني

১। ব্যভিচারিকে বেত্রাঘাত

عدد جلدات الزنا

১/১। ব্যাভিচারিকে বেত্রাঘাতের সংখ্যা–২৪/২

جلد البكر الزاني

১/২। অবিবাহিত ব্যভিচারীকে বেত্রাঘাত–২৪/২

جلد الأمة الزانية

১/৩। ব্যভিচারী দাসিকে বেত্রাঘাত–৪/২৫

صفة جلد الزاني

১/৪। ব্যভিচারীর উপর চাবুক মারার বর্ণনা–২৪/২

جريمة القذف بالفاحشة

ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ ব্যভিচারের অপবাদের অপরাধ

حكم القذف بالفاحشة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ব্যভিচারের অপবাদের হুকুম

القذف من الكبائر

১। অপবাদ দেয়া কাবীরা গুনাহর অন্তর্ভুক্ত। সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৪/(৪, ২৩)

عقوبة القذف بالفاحشة

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ব্যভিচারের অপবাদের শাস্তি

جلد القاذف

১। অপবাদ দাতাকে বেত্রাঘাত–২৪/৪

رد شهادة القاذف

২। অপবাদ দাতার সাক্ষ্য প্রত্যাহার–২৪/৪

رجوع القاذف وندمه

৩। অপবাদ দাতার প্রত্যাবর্তন ও তার অনুশোচনা–২৪/৫

← চলমান পাতা

Contents

جريمة السرقة
সপ্তম অধ্যায় ঃ চুরির অপরাধ

جريمة الحرابة (قطع الطريق)
অষ্টম অধ্যায় ঃ ডাকাতির অপরাধ (রাহাজানি)

جريمة البغي (الخروج على الإمام)
নবম অধ্যায় ঃ বিদ্রোহের অপরাধ

← চলমান পাতা

Contents

الجهاد
চতুর্দশ পর্ব ঃ জিহাদ

← চলমান পাতা

الجهاد
চতুর্দশ পর্ব ঃ জিহাদ

فضل الجهاد والمجاهدين
প্রথম অধ্যায় ঃ জিহাদ ও মুজাহিদদের মর্যাদা

فضل الجهاد

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ জিহাদের মর্যাদা

الترغيب في الجهاد

১। জিহাদের জন্য উৎসাহ প্রদান–

সর্বমোট ১৯টি আয়াত ঃ ২/২১৮- ৩/(১৪৫-১৫৭-২০০)- ৪/(৭৪-৭৬-৭৭-৮৪-৯৫-১০৪)- ৫/৩৫- ৮/(৬০-৬৫)- ৯/(১১১-১২০)- ৪৯/১৫- ৬১/(৪-১১)- ৬৬/৯-

أفضل الجهاد

২। সর্বোত্তম জিহাদ

সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ২/২৫৮, ৪০/(২৮–৩৫, ৩৮–৪৪)

فضل المجاهدين

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মুজাহিদদের মর্যাদা

عظم فضل المجاهدين

১। মুজাহিদদের মর্যাদার বিশালতা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/১৫৪, ৩/(১৪২, ১৯৫), ৯/(২০, ৮৮, ১১১, ১২০),

فضل المجاهدين على القاعدين

২। জিহাদ হতে বিরতদের উপর মুজাদিগণের মর্যাদা

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৩/১৪২, ৪/৯৫

اغبرار القدم في سبيل الله

৩। আল্লাহর রাস্তায় পা ধূলিময় হওয়া–৯/১২০

العمل في سبيل الله

৪। আল্লাহর রাস্তায় কাজ করা

সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/(২১৮, ২৬১, ২৬২), ৪/(৭৪, ৯৪, ৯৫, ১০০), ৫/৫৪, ৮/(৬০, ৭২, ৭৪), ৯/(২০, ৪১, ৬০), ৪৯/১৫, ৫৭/১০

درجات المجاهدين

৫। মুজাহিদদের স্তর– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৪/(৯৫, ৯৬), ৫৭/১০

فضل النفقة في سبيل الله

৬। আল্লাহর রাস্তায় ব্যয় করার মর্যাদা

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/(১৯৫, ২৬১), ৪/৯৫, ৮/৬০, ৯/(১১১, ১২১)

← চলমান পাতা

حكم الجهاد
দ্বিতীয় অধ্যায় ঃ জিহাদের হুকুম

تشريع الجهاد
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ জিহাদের বিধান

الأمر بالصبر في بدء الدعوة
১। দাওয়াত দানের সূচনায় ধৈর্যধারণের নির্দেশ
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/১০৯, ৪/৭৭, ৬/১০৬, ১৫/৮৫, ৪৫/১৪, ৫০/৩৯, ৭৩/১০, ৭৬/২৪

بدء الإذن بالقتال
২। কিতালের নির্দেশের সূচনা– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ২/১৯০, ৪/৭৭, ২২/৩৯

مشروعية الجهاد
৩। জিহাদের শরীয়ত
সর্বমোট ১৭টি আয়াত ঃ ২/(১৯০, ২১৬, ২৪৪), ৫/৫৪, ৮/(৬, ৮, ৩৯, ৫৭), ৯/(৫, ১২, ১৪, ২৯, ৩৬, ৭৩, ১২৩), ৪৭/(৪, ২২)

حكمة تشريع الجهاد
৪। শরীয়তে জিহাদের হিকমত
সর্বমোট ৮টি আয়াত ঃ ২/(১৯৩, ২৫১), ৮/৩৯, ৯/(১৩–১৬), ৪৭/৪

التشديد في ترك الجهاد
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ জিহাদ পরিত্যাগে কঠোরতা আরোপ
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৮/(১৫, ১৬), ৯/(২৪, ৮১)

استمرار الجهاد ودوامه
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ জিহাদের নিরবিচ্ছিন্নতা ও তার ধারাবাহিকতা
সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ২/১৯৩, ৮/৩৯, ৯/(৫, ১২, ২৯, ৩৬, ১২৩)

كراهية القتال
চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ অপছন্দনীয় কিতাল–সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২১৬, ৪/৭৭, ৮/(৫, ৬)

فرض الجهاد
পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ জিহাদের ফরয হওয়া

أصل فرض الجهاد
১। জিহাদ ফরয হওয়ার কারণ– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪৭/(২০, ২১)

الحرب سجال
ষষ্ঠ অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধ হচ্ছে সুযোগের সন্ধান লাভ করা–৩০/৩

← চলমান পাতা

التخلف عن الغزو
তৃতীয় অধ্যায় ঃ যুদ্ধ হতে বিরত থাকা

التخلف عن الغزو بغير عذر
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ ওযর ব্যতিরেকে যুদ্ধ হতে বিরত থাকা

تحريم التخلف عن الغزو
১। যুদ্ধ হতে বিরত থাকা হারাম হওয়া– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৪/৭২, ৯/(৩৮, ৩৯, ১২০)

العذر في التخلف عن الغزو
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধ হতে বিরত থাকার ওজর

جواز التخلف عن الجهاد لعذر
১। ওজর বশত জিহাদ হতে বিরত থাকার বৈধতা– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৯/(৯১, ৯২), ৪৮/১৭

تخلف المريض والضعيف عن الجهاد
২। রোগী ও দুর্বল ব্যক্তির জিহাদ হতে বিরত থাকা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৯৫, ৯/৯১

تخلف من لم يجد النفقة عن الجهاد
৩। যে যুদ্ধের পাথেয় না পায় তার যুদ্ধ হতে বিরত থাকা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/(৯১, ৯২)

صفات المجاهدين
চতুর্থ অধ্যায় ঃ মুজাহিদদের গুণাবলী

نية المجاهد
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ মুজাহিদের নীয়্যাত

الجهاد لإعلاء كلمة الله
১। আল্লাহর বাণীকে উত্তোলণের জন্য জিহাদ
সর্বমোট ১৬টি আয়াত ঃ ২/(১৯০, ১৯৩, ২১৮, ২৪৪), ৩/১৩, ৪/(৭৫, ৭৬, ৯৫), ৮/(৭২, ৭৪), ৯/(২০, ৩৮, ৪১), ৪৭/৪, ৬১/(৪, ১১)

صفات المجاهد
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মুজাহিদের গুণাবলী

إخلاص النية في الجهاد
১। জিহাদে নীয়্যাতের ইখলাস– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৯১, ৪৭/৪

السمع والطاعة للأمير
২। নেতার নির্দেশ শ্রবণ ও আনুগত্য– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৫৯, ২৪/৪৮

صبر المجاهد عند اللقاء
৩। মুকাবিলার সময় মুজাহিদের সবর– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/(২৪৯, ২৫০), ৮/৪৫, ৩৩/২২

الشجاعة في الجهاد وترك الجبن
৪। জিহাদে বীরত্ব প্রকাশ ও কাপুরুষতা ত্যাগ–
সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ৪/(৭৭, ১০৪), ৮/(১৫, ৪৫), ৯/৩৮

← চলমান পাতা

صفات القائد (الأمير)
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ নেতার গুণাবলী

الواجب على قائد الجيش
১। সেনা প্রধানের করণীয়–২৭/২১

التحريض على القتال
২। কিতালে উদ্বুদ্ধকরণ– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ২/২৪৯, ৪/(৭৬, ৮৪), ৮/(৬০, ৬৫)

مشاورة القائد أهل الرأي
৩। বিশেষজ্ঞদের সাথে নেতার পরামর্শ– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২৭/(৩২, ৩৩)

عناصر المعركة

পঞ্চম অধ্যায় ঃ যুদ্ধের উপাদান

معدات القتال
প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধোপকরণ

دواب القتال
১। যুদ্ধের পশু

القتال على الخيل
১/১। ঘোড়ার উপর যুদ্ধ

فضل الخيل
ক) ঘোড়ার মর্যাদা– সর্বমোট ৫টি আয়াত ঃ ১০০/(১–৫)

تدريب المجاهدين
দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ মুজাহিদদের প্রশিক্ষণ

إعداد المجاهد جسديا ونفسيا
১। শারীরিক ও মানসিকভাবে মুজাহিদের প্রস্তুতি–
সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ২/২৪৯, ৪/৮৪, ৮/(৬০, ৬৫)

تدريب المجاهدين على آلات القتال
২। কিতালের ব্যাপারে মুজাহিদদের প্রশিক্ষণ–৮/৬০

تعبئة الجيش
তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ সেনাবাহিনীর সজ্জিতকরণ

تأهب الجيش في جميع الحالات
১। সর্বাবস্থায় সেনা প্রস্তুত রাখা–৪/১০২

تجهيز الغزاة من بيت المال
২। বায়তুল মাল থেকে যুদ্ধের রসদ যোগানো–৯/৯২

← চলমান পাতা

فضل تجهيز الغازي

৩। যোদ্ধার রসদ যোগানোর ফযীলত– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/১৯৫, ৪/৯৫

فضل الانفاق في سبيل الله

৪। আল্লাহর রাস্তায় খরচের ফযীলত–
সর্বমোট ১২টি আয়াত ঃ ৪/৯৫, ৫/১২, ৮/(৬০, ৭২), ৯/(২০, ৪১, ৮৮, ১১১, ১২১), ৪৯/১৫, ৬১/১১, ৬৪/১৭

الاستعانة بالمشركين في الجهاد

৫। জিহাদে মুশরিকদের সহযোগিতা কামনা– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৯/৮৩, ৬০/১

أساليب مطلوبة للمعركة

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধ ময়দানে কাঙ্ক্ষিত কৌশল গ্রহণ

استنفار جميع الجيش

১। সম্পূর্ণ সেনাদলের বেরিয়ে পড়া– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৪/৭১, ৯/১২২

الاحتيال والحذر مع من يخشي غدره

২। যার উপর খেয়ানতের ভয় থাকে তার থেকে সাবধানতা অবলম্বন করা
সর্বমোট ৬টি আয়াত ঃ ৪/(৭১, ১০১, ১০২), ৮/৫৮, ৬৩/৪, ৬৪/১৪

التحرف للقتال

৩। যুদ্ধের জন্য ভিন্ন পথ অবলম্বন করা–৮/১৬

تخويف العدو

৪। শত্রুকে ভীতি প্রদর্শন– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/(৫৭, ৬০)

تنظيم الجيش

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ সেনা সুশৃংখল করণ

ترتيب السرايا والجيوش

১। সেনাদলের শৃংখলা আনয়ন–৬১/৪

مراحل المعركة

ষষ্ঠ অধ্যায় ঃ যুদ্ধের স্তরসমূহ

بداية المعركة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধের সূচনা

الإعلام بنقض العهد

১। চুক্তিভঙ্গের ঘোষণা– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/৫৮, ৯/(২, ৩)

آداب القتال

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ কিতালের আদব

← চলমান পাতা

الاستنصار بالضعفاء والصالحين

১। দুর্বল ও নেকারদের মাধ্যমে আল্লাহর সাহায্য–২/২৪৯

قتل النساء والأطفال والشيوخ

২। নারী, শিশু ও বৃদ্ধ হত্যা–২/১৯০

النهي عن المثلة

৩। অঙ্গহানী করার ব্যাপারে নিষেধাজ্ঞা–২/১৯০

العقاب بالمثل

৪। অপরাধের অনুরূপ শাস্তি প্রদান–

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ১৬/১২৬, ২২/৬০, ৪২/৪০

النهي عن حرق الأعداء

৫। শত্রুপক্ষকে পুড়িয়ে মারা নিষেধ–২/১৯০

التعذيب بالنار والحرق

৬। আগুন দ্বারা জ্বালিয়ে কষ্টপ্রদান–২/১৯০

الفتك بأهل الحرب

৭। আকস্মিক আক্রমণ–

সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/৫৭, ৪৭/৪, ৬৬/৯

الشهادة في سبيل الله

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ আল্লাহর রাস্তায় শহীদ হওয়া

أجر الشهادة في سبيل الله وفضلها

১। আল্লাহর রাস্তায় শহীদ হওয়ার প্রতিদান ও তার মর্যাদা

সর্বমোট ১১টি আয়াত ঃ ২/১৫৪, ৩/(১৫৭, ১৬৯–১৭১, ১৯৫), ৪/(৬৯, ৭৪), ৯/১১১, ৪৭/(৪, ৫)

فضل الشهيد

২। শহীদের মর্যাদা

عظم أجر الشهيد

২/১। শহীদের প্রতিদানের বিশালতা–

সর্বমোট ৭টি আয়াত ঃ ৩/(১৬৯, ১৭০), ৪/৭৪, ২২/৫৮, ৪৭/(৪–৬)

الجنة تحت بارقة السيوف

২/২। তরবারীর উজ্জ্বলতার নীচে জান্নাত–৪৭/৬

طرق إنهاء المعركة

চতুর্থ অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধের সমাপ্তি ঘন্টা

دخول العدو في الإسلام

১। শত্রুদের ইসলামে প্রবেশ

الكف عمن أسلم من العدو

১/১। শত্রুপক্ষের যে ইসলাম গ্রহণ করেছে তার ব্যাপারে বিরত থাকা–২/১৯৩

← চলমান পাতা

نتائج المعركة

পঞ্চম অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধের পরিণতি

أسباب النصر وشروطه

১। সহযোগিতার কারণসমূহ ও তার শর্তাবলী। সর্বমোট ১৩টি আয়াত ঃ ২/(২৪৯, ৫০), ৩/(১২২, ১২৫, ১৪৭, ২০০)– ৫/২৩, ৮/(৪৫, ৪৬, ৬৫, ৬৬), ২২/৪০, ৪৭/৭

الجزية

২। কর প্রদান

من تؤخذ منه الجزية

২/১। কার নিকট থেকে কর নেয়া হবে–৯/২৯

الأسرى

৩। যুদ্ধবন্দী

أسترقاق الأسير

৩/১। যুদ্ধবন্দীদের দাস বানানো– সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ২/৫৮, ৪৭/৪

عفو الإمام عن الأسرى

৩/২। নেতা কর্তৃক যুদ্ধবন্দীদের ক্ষমা প্রদর্শন–৪৭/৪

معاملة الأسرى

৩/৩। যুদ্ধবন্দী লেনদেন–৮/৬৭

الغنائم والفيء

সপ্তম অধ্যায় ঃ গানীমাত ও ফাই

حكم الغنائم

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ গানীমাতের হুকুম– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/১, ৪৮/(১৯, ২০)

قسمة الغنائم

দ্বিতীয় অনুচ্ছেদ ঃ গানীমাত বণ্টন

تخميس الغنائم

১। গানীমাতকে পাঁচ ভাগ করা–৮/৪১

حل الغنائم للمقاتلين

২। যোদ্ধাদের জন্য গানীমতে মাল হালাল– সর্বমোট ৩টি আয়াত ঃ ৮/৫৯, ৪৮(১৯, ২০)

سهم من لم يشهد القتال

৩। যুদ্ধে অংশগ্রহণ নাকারীর অংশ পাওয়া–৪৮/১৫

الفيء

তৃতীয় অনুচ্ছেদ ঃ ফাই

الغلول من المغنم

১। গানীমাতের মালে খিয়ানত করা–৩/১৬১

قسمة الفيء

২। ফাই বণ্টন–৫৯/৭

← চলমান পাতা

العهود والمواثيق

অষ্টম অধ্যায় ঃ চুক্তিনামা

الصلح

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ সন্ধি

موادعة المشركين

১। মুশরিকদের বর্জন করা–৯/৮

الوفاء بالعهد للمشركين

২। মুশরিকদের সাথে কৃত ওয়াদা পূর্ণ করা–৯/৪

نكث العهود والمواثيق

৩। ওয়াদা ও চক্তি ভঙ্গ করা

نبذ المسلمين العهد

৩/১। মুসলিমদের ওয়াদা ভঙ্গ করা–৮/৫৮

غدر المشركين

৩/২। মুশরিকদের গাদ্দারী– সর্বমোট ৪টি আয়াত ঃ ৯/(৮, ১০, ১২, ১৩)

الهدنة

প্রথম অনুচ্ছেদ ঃ যুদ্ধ বিরতি

أحكام الهدنة

১। যুদ্ধ বিরতির হুকুম

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/৬১, ৯/৪,

مهادنة النبي للمشركين

২। মুশরিকদের উদ্দেশে নাবী (ﷺ)-এর যুদ্ধ বিরতি

সর্বমোট ২টি আয়াত ঃ ৮/৬১, ৯/৪,

← চলমান পাতা